'चन्द्रकान्ता' व 'चन्द्रकान्ता-सन्तति' की परम्परा में एक और कड़ी–
भूतनाथ
बाबू देवकीनंदन खत्री

भूतनाथ

बाबू देवकीनन्दनखत्री

पहला भाग

भारत पुस्तक भण्डार

पहला भाग

पहला ब्यान

मेरे पिता ने तो मेरा नाम गदाधर सिंह रखा था और बहुत दिनों तक मैं इसी नाम से प्रसिद्ध भी था परन्तु समय पड़ने पर मैंने अपना नाम भूतनाथ रख लिया था और इस समय यही नाम बहुत प्रसिद्ध हो रहा है । आज मैं श्रीमान् महाराज सुरेन्द्रसिंह जी की आज्ञानुसार अपनी जीवनी लिखने बैठा हूँ , परन्तु मैं इस जीवनी को वास्तव में जीवनी के ढंग और नियम पर न लिख कर उपन्यास के ढंग पर लिलूँगा , क्योंकि यद्यपि लोगों का कथन यही है , " तेरी जीवनी से लोगों को नसीहत होगी ' परन्तु ऐवों और भयानक घटनाओं से भरी हुई मेरी नीरस जीवनी कदाचित् लोगों को रुचिकर न हो , इस खयाल से जीवनी का रास्ता छोड़ इस लेख को उपन्यास के रूप में लाकर रस पैदा करना ही मुझे आवश्यक जान पड़ा , प्रेमी पाठक महाशय यही समझें कि किसी दूसरे ही आदमी ने भूतनाथ का हाल लिखा है , स्वयं भूतनाथ ने नहीं , अथवा इसका लेखक कोई और ही है ।

जेठ का महीना और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी का दिन है । यद्यपि रात पहर - भर से कुछ ज्यादा हो चुकी है और आँखों में ठंडक पहुँचाने वाले चन्द्रदेव भी दर्शन दे रहे हैं परन्तु दिन भर की धूप और लू की बदौलत गरम भई हुई जमीन , मकानों की छतें और दीवारें अभी तक अच्छी तरह ठंडी नहीं हुई , अब भी कभी - कभी सहारा दे देने वाले हवा के झपटे में गर्मी पड़ती है और वदन से पसीना निकल रहा है , बाग में सैर करने वाले शौकीनों भी पंखे की जरूरत है , और जंगल में भटकने वाले मुसाफिरों को भी पेड़ों की आड़ बुरी मालूम पड़ती है ।

ऐसे समय में मिर्जापुर से बाईस कोस दक्खिन की तरफ हट कर छोटी - सी पहाड़ी के ऊपर जिस पर बड़े - बड़े घने पेड़ों की कमी तो नहीं है । मगर इस समय पत्तों की कमी के सबब नसकी खूबसूरती नष्ट हो गई है , एक पत्थर की चट्टान पर हम ढाल - तलवार तथा तीर - कमान लगाए हुए दो आदमी को बैठे देखते हैं जिनमें से एक औरत और दूसरा मर्द है । औरत की उम्र चौदह या पन्द्रह वर्ष की होगी की उम्र बीस वर्ष से

कम मालूम नहीं होती । यद्यपि इन दोनों की पोशाक मामूली सादी और विलकुल ही साधार [की है मगर सूरत - शक्ल से यही जान पड़ता है कि ये दोनों साधारण व्यक्ति नहीं हैं बल्कि किसी अमीर बहादुर

क्षत्रीय खानदान के होनहार हैं । जिस तरह मर्द चपकन , पायजामा , कमरबंद और मुड़ासे से अपनी सूरत ढंग की बना रखी है । यकायक सरसरी निगाह देख कर कोई यह नहीं कह सकता कि यह औरत है , मगर हम खूब जानते हैं कि यह कमसिन औरत नौजवान लड़की है जिसकी खूबसूरती मर्दानी पोशाक पहिरने पर ही यकताई का दावा करती है , मगर जिसकी शर्मीली आँखें कह देती हैं कि इसमें ढिठाई और दबंगता बिलकुल नहीं है , चेहरे पर गर्द पड़ी है , सुस्त होकर पत्थर की चट्टान पर बैठ गए हैं , तथा रात्रि का समय भी है , इसलिए यहाँ पर इन दोनों की खूबसूरती तथा नखशिख का वर्णन करके हम शृंगार रस पैदा करना उचित नहीं समझकर केवल इतना ही कह देना काफी समझते हैं कि ये दोनों सौ - दो सौ खूबसूरतों में खूबसूरत हैं । इन दोनों की अवस्था इनकी बातचीत से जानी जाएगी अस्तु आइए और छिपकर सुनिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं ।

औरत : वास्तव में हम लोग बहुत दूर निकल आए ।

मर्दः अब हमें किसी का डर भी नहीं है ।

औरत : है तो ऐसा ही परन्तु घोड़ों की तरफ से जरा - सा खुटका होता है , क्योंकि हम दोनों के मरे हुए घोड़े अगर कोई जान - पहिचान का आदमी देख लेगा तो जरूर इसी प्रांत में हम लोगों को खोजेगा ।

मर्द फिर भी कोई चिंता नहीं , क्योंकि उन घोड़ों को भी हम लोग कम - से - कम दो कोस पीछे छोड़ आए हैं ।

औरत : बेचारे घोड़े अगर मर न जाते तो हम लोग और भी कुछ दूर आगे निकल गए होते ।

मर्द : यह गर्मी का जमाना , इतने कड़ाके की धूप और इस तेजी के साथ इतना लंबा सफर करने पर भी घोड़े जिंदा रह जाएँ तो बड़े ताज्जुब की बात है !!

औरत : ठीक है , अच्छा यह बताइए कि अब हम लोगों को क्या करना होगा ?

मर्दः इसके सिवाय और किसी बात की जरूरत नहीं है कि हम लोग किसी दूसरे राज्य की सरहद में जा पहुँचे । ऐसा हो जाने पर फिर हमें किसी का डर न रहेगा , क्योंकि हम लोग किसी का खून करके नहीं भागे हैं , न किसी की चोरी की है , और न किसी के साथ अन्याय या अधर्म करके भागे हैं , बल्कि एक अन्यायी हकिम के हाथ से अपना धर्म बचाने के लिए भागे हैं । ऐसी अवस्था में किसी न्यायी राजा के राज्य में पहुँच जाते ही हमारा कल्याण होगा ।

औरत : निःसन्देह ऐसा ही है , फिर आपने क्या विचार किया , किसके राज्य में जाने का इरादा है ?

मर्दः मुझे तो राजा सुरेन्द्रसिंह का राज्य बहुत ही पसन्द है , वह राजा धर्मात्मा और न्यायी है तथा उनका राज्य भी बहुत दूर नहीं है , यहाँ से केवल तीन ही चार कोस और आगे निकल चलने पर उनकी सरहद में पहुँच जाएँगे । औरत : वाह वाह ! तो इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है । आप यहाँ क्यों जहाँ इतनी तकलीफ उठाई वहाँ थोड़ी ही सही । मर्द : मैं भी इसी खयाल में हूँ मगर अपने नौकरों का इंतजार कर रहा हूँ उन्हें अपने से मिलने के लिए यही ठिकाना बताया हुआ है । औरत : जब राजा सुरेन्द्रसिंह की सरहद इतनी नजदीक है और

के हुए हैं ? आगे बढ़ कर चलिए ,

आपका देखा हुआ है तो ऐसी अवस्था में यहाँ ठहरकर नौकरों का इंतजार करना मेरी राय में तो ठीक नहीं है । मर्द : तुम्हारा कहना कठिन है और नौगढ़ का रास्ता भी मेरा देखा हुआ है परन्तु रात का समय है और इस तरफ का जंगल बहुत ही घना और भयानक है तथा रास्ता भी पथरीला और पेचीदा है , संभव है कि रास्ता भूल जाऊँ और किसी दूसरी ही तरफ जा निकलूँ । यदि मैं अकेला होता तो कोई गम न था मगर तुमको साथ लेकर रात्रि के समय भयानक जानवरों से भरे हुए ऐसे घने जंगल में घुसना उचित नहीं जान पड़ता । मगर देखो तो सही (गर्दन उठाकर और गौर से नीचे की तरफ देखकर) वे शायद हमारे ही आदमी तो आ रहे हैं । मगर गिनती में कम मालूम होते हैं ।

औरत : (गौर से देख कर) ये तो केवल तीन ही चार आदमी हैं , शायद कोई और हों ।

मर्द : देखो ये लोग भी इसी पहाड़ी के ऊपर चले आ रहे हैं , अगर ये कोई और हैं तो यहाँ आकर तुम्हें देख लेना अच्छा | न होगा ! इसलिए मैं जरा आगे बढ़कर देखता हूँ कि कौन हैं ।

इतना कहकर वह नौजवान उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ बढ़ा जिधर से वे लोग आ रहे थे । कुछ ही दूर आगे बढ़ने और पहाड़ी से नीचे उतरने पर उन लोगों का सामना हो गया । यद्यपि रात का समय था और केवल चाँदनी ही का सहारा था , तथापि सामना होते ही एक ने दूसरे को पहचान लिया । हमारे नौजवान को मालूम हो गया कि ये हमारे दुश्मन के आदमी हैं और उन लोगों को निश्चय हो गया कि हमारे मालिक को इसी नौजवान के गिरफ्तारी की जरूरत है ।

ये लोग जो दूर से गिनती में तीन - चार मालूम पड़ते थे वास्तव में छः आदमी थे जो हर तरह से मजबूत और लड़ाई के दुरुस्त थे । ढाल - तलवार के अलावे सभों के कमर में खंजर और हाथ में नेजा था , उन सभों में से एक ने आगे बढ़कर नौजवान से कहा , " बड़ी खुशी की बात है कि आप स्वयम् हम लोगों के सामने चले आए । कल से हम लोग आपकी खोज में परेशान हो रहे हैं बल्कि सच तो यह है कि ईश्वर ही ने हम लोगों को यहाँ तक पहुँचा दिया और यहाँ आपका

सामना हो गया । क्षमा कीजिएगा , आप हमारे अफसर और हाकिम रह चुके हैं इसलिए हम लोग आपके साथ वेअदबी नहीं करना चाहते मगर क्या करें मालिक के हुक्म से लाचार हैं , जिसका नमक खाते हैं । इस बात को हम लोग खूब जानते हैं कि आप बिलकुल बेकसूर हैं और आप पर व्यर्थ ही जुल्म किया जा रहा है , परन्तु ..

नौजवान : ठीक है , ठीक है , मेरे प्यारे गुलाबसिंह ! मैं तुम्हें अभी तक वैसा ही समझता हूँ और प्यार करता हूँ क्योंकि तुम वास्तव में नेक हो और मुझसे मुहब्बत रखते हो । तुम वेशक मुझे गिरफ्तार करने के लिए आये हो और मालिक के नमक का हक अदा किया चाहते हो , अस्तु में खुशी से तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि तुम मुझे गिरफ्तार करके अपने मालिक के पास ले चलो , परन्तु क्षत्रियों का धर्म निवाहने के लिए में गिरफ्तार न होकर तुमसे लड़ाई अवश्य करूँगा , इसी तरह तुम्हें भी मेरा मुलाहिजा न करना चाहिए ।

गुलाबसिंह : ठीक है , वेशक ऐसा ही चाहिए , परन्तु (कुछ सोच कर) मेरा हाथ आपके ऊपर कदापि न उठेगा ! मुझे अपने जालिम मालिक की तरफ से वदनामी उटाना मंजूर है परन्तु आप ऐसे वहादुर और धर्मात्मा के आगे लज्जित होना स्वीकार नहीं है । हाँ मैं अपने साथियों को ऐसा करने के लिए मजबूर न करूँगा , ये लोग जो चाहें करें ।

यह सुनते ही गुलाबसिंह के साथियों में से एक आदमी बोल उठा , " नहीं नहीं , कदापि नहीं , हम लोग आपके विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकते और आपकी ही आज्ञा पालन अपना धर्म समझते हैं । सज्जनों और धर्मात्माओं की आज्ञा पालने का नतीजा कभी बुरा नहीं होता ! "

इसके साथ ही गुलाबसिंह के बाकी साधी भी बोल उठे , “ वेशक ऐसा ही है , बेशक ऐसा ही है ! "

गुलाबसिंह : (प्रसन्नता से) ईश्वर की कृपा है कि मेरे साथी लोग से) अव आप ही आज्ञा कीजिए कि हम लोग क्या करें ? क्यों

इच्छानुसार चलने के लिए तैयार हैं । (नौजवान भी मैं अपने को आपका दास ही समझता हूँ ।

नौजवान : मेरे प्यारे गुलाबसिंह , शाबाश ! इसमें सन्देह कि तुम्हारे ऐसे नेक और वहादुर आदमी का साथ बड़े भाग्य से होता है । मैं तुम्हें अपने आधीन पाकर बहुत प्रसन्न था और अब भी ही इच्छा रहती है कि ईश्वर तुम्हें मेरा साथी बनाये , मगर क्या करूँ , लाचार हूँ , क्योंकि आज मेरा वह समय नहीं है । आज मुसीबत के फंदे में फँस जाने से मैं इस योग्य नहीं रहा कि तुम्हारे ऐसे बहादुरों का साथ ... (लंबी साँस लेकर) अस्तु ईश्वर की मर्जी , जो कुछ वह करता है अच्छा ही करता है , कदाचित् इसमें भी मेरी कुछ भलाई ही होगी । (कुछ सोच कर) मैं तुम्हें क्या बताऊँ कि क्या करो ? तुम्हारे मालिक ने वेश धोखा खाया कि मेरी गिरफ्तारी के लिए तुम्हें भेजा , इतने दिनों तक साथ रहने पर भी उसने तुम्हें और मुझे नहीं पहिचाना । मुझे इस समय कुछ भी नहीं सूझता कि तुम्हें क्या नसीहत करूँ किस तरह उस दुष्ट का नमक खाने से तुम्हें रोकूँ ! गुलावसिंह : (कुछ सोच कर) खैर कोई चिंता नहीं , जो होगा देखा जाएगा । इस समय में आपका साथ कदापि न छोड़ूंगा और इस मुसीबत में

आपको अकेले भी न रहने दूंगा , जो कुछ आप पर वीतेगी उसे मैं भी सहूँगा । (अपने साथियों से) भाइयो , अब तुम लोग जहाँ चाहे जाओ और जो मुनासिव समझो करो , मैं तो आज इनके दुःख - सुख का साथी बनता हूँ । यद्यपि ये (नौजवान) उम्र में मुझसे बहुत छोटा है परन्तु मैं इन्हें अपना पिता समझता हूँ और पिता ही की तरह इन्हें मानता हूँ , अस्तु जो कुछ पुत्र का धर्म है मैं उसे निवाहूँगा । मैं इनको गिरफ्तार करने की आशा पाकर बहुत प्रसन्न था और यही सोचे हुए था कि इस बहाने से इन्हें ढूँढ़ निकालूँगा और सामना होने पर इनकी सेवा स्वीकार करूँगा ।

गुलाबसिंह की बातें सुनकर उसके साथियों ने जवाब दिया , " ठीक है , जो कुछ उचित था आपने किया परन्तु आप हम लोगों का तिरस्कार क्यों कर रहे हैं ? क्या हम लोग आपकी सेवा करने योग्य नहीं हैं ? या हम लोगों को आप बेईमान समझते हैं ? "

गुलावसिंह : नहीं - नहीं , ऐसा कदापि नहीं है , मगर बात यह है कि जो कोई मुसीबत में पड़ा हो उसका साथ देने वाले को भी मुसीबत झेलनी पड़ती है , अस्तु मुझ पर तो जो कुछ बीतेगी उसे झेल लूँगा , तुम लोगों को जान - बूझकर क्यों मुसीबत

में डालूँ ! इसी खयाल से कहता हूँ कि जहाँ जी में आवे जाओ और जो कुछ मुनासिब समझो करो ।

गुलाबसिंह के साथी : नहीं - नहीं , ऐसा कदापि न होगा और हम लोग आपका साथ कभी न छोड़ेंगे । आप आज्ञा दें कि अब हम लोग क्या करें ।

गुलाबसिंह : (कुछ सोच कर) अच्छा , अगर तुम लोग हमारा साथ देना ही चाहते हो तो जो कुछ हम चाहते हैं उसे करो । यहाँ से इसी समय चले जाओ । (नौजवान तरफ बता कर) इनके मकान में जिसे राजा साहब ने जब्त कर लिया है रात के समय जिस तरह संभव हो घुसकर जहाँ तक दौलत हाथ लगे और उठा सको निकाल कर ले आओ और पिपलिया घाटी में जहाँ का पता तुम लोगों को मालूम है हमसे मिलो , अगर वहाँ , हमसे मुलाकात न हो तो टिक कर हमारा इंतजार करो ।

गुलाबसिंह की बात सुनकर उसके साथियों ने " जो आज्ञा " कह कर सलाम किया और वहाँ से चले गए । उनके जाने के वाद गुलाबसिंह ने नौजवान से कहा , " इस

समय इन लोगों को विदा कर देना ही मैंने उचित जाना । यद्यपि ये लोग मेरे साथ रहने में प्रसन्नता प्रकट करते हैं परन्तु कुछ टेढ़ा काम लेकर जाँच कर लेना जरूरी है । "

नौजवान : ठीक है तुम्हारे ऐसे होशियार आदमी के लिए यह कोई नई बात नहीं है ।

इस विषय में आपको कुछ जाँच करने

गुलाबसिंह : अच्छा अब यह बताइए कि आपको मुझ पर विश्वास है या नहीं ? की आवश्यकता है ?

नौजवान : नहीं - नहीं , मुझे कुछ जाँच करने की जरूरत नहीं है , मुझे । पर पूरा - पूरा विश्वास और भरोसा है , मैं तुमसे मिल कर बहुत ही प्रसन्न हुआ , ऐसी अवस्था में यकायक जाने पर मुझे किसी तरह का खुटका नहीं हुआ

था ।

यह बताइए कि आप मुझे अकेले क्यों दिखाई देते हैं और अब

गुलावसिंह : ईश्वर आपका मंगल करे , अब कृपा आपका इरादा क्या है ?

नौजवान : मैं अकेला नहीं हूँ , मेरी मेरे साथ है (हाथ का इशारा करके) इस पहाड़ी के ऊपर उसे अकेला छोड़ आया हूँ । हम दोनों आदमी अपने नौकरों का इंतजार कर रहे थे कि यकायक तुम लोगों पर निगाह पड़ी , अस्तु उसे उसी जगह छोड़ कर तुम लोगों का पता लगाने के लिए मैं नीचे उतर आया था , अब तुम मेरे साथ वहाँ चलो और उससे मिलो , वह तुम्हें देखकर बहुत ही प्रसन्न होगी । इस आफत में भी वह तुम्हें बराबर याद करती रही ।

गुलाबसिंह : चलिए , शीघ्र चलिए ।

गुलावसिंह को साथ लेकर नौजवान उस तरफ रवाना हुआ जहाँ अपनी स्त्री को अकेला छोड़ आया था ।

गुलावसिंह क्षत्री खानदान का एक बहादुर और ताकतवर आदमी था , वह बहुत ही नेक , रहमदिल और धर्म का सच्चा पक्षपाती था , साध - ही - साथ वह बदमाशों की चालबाजियों को खूब समझता था और अच्छे लोगों में से बेईमानों और दगावाजों को छाँट निकालने में भी विचित्र कारीगर था । वह उस नौजवान और उसकी स्त्री से

सच्ची मुहब्बत और हमदर्दी रखता था , जिसका बहुत बड़ा सबव यह था कि उस स्त्री के पिता ने बहुत संकट के समय में गुलाबसिंह की सच्ची सहायता की थी और गुलाबसिंह को लड़के की तरह मानता था ।

इस जगह पर हम इस नौजवान और इसकी सुशीला स्त्री का नाम खोल देना उचित समझते हैं । मगर इस बात को अभी न खोलेंगे कि दोनों कौन हैं और इनके इस तरह बेसरोसामान भागने का सबब क्या है ।

नौजवान का नाम प्रभाकर सिंह और स्त्री का नाम इंदुमति । प्रभाकर सिंह की शादी इंदुमति के साथ भये हुए आज एक

वर्ष और सात महीने हो चुके हैं ।

प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह बातचीत करते हुए इंदुमति की तरफ रवाना हुए और बहुत जल्द वहाँ जा पहुँचे इंदुमति चिंता - निमग्न बैठी हुई अपने पति का इंतजार कर रही थी । पति को देखकर वह प्रसन्नता के साथ उठ बैठी और जब उसने गुलाबसिंह को पहिचाना तो बहुत खुश होकर बोली इंदुमति : में पहिले ही कहती थी कि गुलाबसिंह को हम लोगों के विषय में बड़ी चिंता होगी और वे जरूर हमारी सुध लेंगे ।

गुलाबसिंह : वेशक ऐसा ही है । इसीलिए जिस समय राजा साहब ने आप लोगों की गिरफ्तारी का काम मेरे सुपुर्द किया तो मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ और ..

गुलाबसिंह अपनी बात पूरी न करने पाये थे कि लगभग चालीस - पचास गज की दूरी पर से सीटी बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़े और उसी तरफ देखने लगे । वेचारी इंदु को दुश्मन का खयाल आया गया और वह डरी हुई आवाज में बोली , “ यहाँ तक भाग आने पर भी हम लोगों का खुटका न गया , इसी से मैं कहती थी कि जहाँ तक जल्द हो सके नोगढ़ की सरहद में हमें पहुँच जाना चाहिए ! "

गुलाबसिंह : (इंदु से) डरो मत , हम दोनों क्षत्रियों के रहते किसकी मजाल है कि किसी तरह की तकलीफ पहुँचा सके । इसके अतिरिक्त इस बात को भी समझारखी कि आज दिन सिवाय बेईमान राजा के और कोई तुम्हारा दुश्मन नहीं है और उसकी तरफ से इस काम के लिए मैं ही भेजा गया हूँ , अवस्था में किसी वास्तविक दुश्मन का ध्यान लगाना वृधा है , हाँ चोर - डाकू में से यदि कोई हो तो मैं कह सकत

इंदुमति : खैर पेड़ों की आड़ में तो हो जाइए ।

गुलाबसिंह : हाँ इसके लिए कोई हर्ज नहीं ।

इतने ही में पुनः सीटी की आवाज आई , मगर अबकी दफे की आवाज कुछ अजीब ढंग की थी । मालूम न होता था कि कोई बँधे हुए इशारे के साथ झिरनी आवाज देकर सीटी बुला रहा है । इस आवाज को सुनकर गुलाबसिंह हँस पड़ा और इंदु तथा प्रभाकर सिंह की तरफ देख के बोला , " बस मालूम हो गया , डरने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि यह मेरे एक दोस्त की बजाई हुई सीटी है , मैं अभी जरूरी बातों से छुट्टी पाकर थोड़ी ही देर में आप लोगों से कहने वाला था कि यहाँ मेरे एक दोस्त का मकान है जिससे मिलकर आप बहुत प्रसन्न होंगे , और उनसे आपको सहायता भी पूरी - पूरी मिल सकती है । मैं अब इस सीटी का जवाब देता हूँ । बहुत अच्छा जो अकस्मात् वे खुद यहाँ आ पहुँचे । मालूम होता है कि मेरा यहाँ आना उन्हें मालूम हो गया ! "

इतना कहकर गुलाबसिंह ने भी कुछ अजीब ढंग की सीटी बजाई अर्थात् उस सीटी का जवाब दिया ।

प्रभाकर सिंह : भला अपने इस अनूठे दोस्त का नाम तो बता दो ?

गुलावसिंह : आजकल इन्होंने अपना नाम भूतनाथ रख छोड़ा है ।

प्रभाकर सिंह : (कुछ सोच कर) यह नाम तो कई दफे मेरे कानों में पड़ चुका है और एक दफे ऐसा भी सुन चुका हूँ कि इस नाम का एक आदमी बड़ा ही भयानक है जिसके रहन - सहन का किसी को कुछ पता नहीं चलता ।

गुलाबसिंह : ठीक है , आपने ऐसा ही सुना होगा , परन्तु यह केवल दुष्टों और पापियों के लिए भयानक है ।

गुलाबसिंह इससे ज्यादा कुछ कहने न पाया था कि सीटी बजाने वाला अर्थात् भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा । प्रभाकर सिंह को

सलाम करने के बाद भूतनाथ गुलाबसिंह के गले मिला और इसके बाद चारों आदमी पत्थर को ।।। १

तरह बातचीत करने लगे :

गुलाबसिंह : (भूतनाथ से) यहाँ यकायक आपका इस तरह आ पहुँचना बड़े आश्चर्य की बात है ।।

भूतनाथ : आश्चर्य काहे का है ! यहाँ तो मेरा ठिकाना ही ठहरा , या यों कहिए कि यह दिन रात का रायता ।।।।

गुलाबसिंह : ठीक है , मगर फिर भी आपका घर यहाँ से आधे घंटे की दूरी पर होगा ऐसी अणा

आप दिन - रात इसी पहाड़ी पर दिखाई दें ?

भूतनाथ : (हँसकर) हाँ सो तो सच है , मगर आप जो यहाँ आ पहुँचे तो फिर क्या किया जाय , आखिर गलाकात करना

भी तो जरूरी ठहरा !

गुलाबसिंह : (हँसी के साथ) बस तो सीधे यही क्यों नहीं कहते कि मेरा यहाँ आना आपको मालूम हो गया ।

भूतनाथ : वेशक आपका आना मुझे मालूम हो गया बल्कि और भी कई बातें मालूम हुई हैं जिनसे आप लोगों को

हाशियार कर देना जरूरी है । (प्रभाकर सिंह की तरफ देख कर) अभी तक दुश्मनों से आपका पीछा नया साल)

गुलाबसिंह ही आपकी गिरफ्तारी के लिए नहीं भेजे गये बल्कि इनको भेजने के आपके राजा साहब ने और भी बहुत

से आदमी आप लोगों को पकड़ने के लिये भेजे जो इस समय इस पहाड़ी पर - उधर आ गये हैं और आप

आदमियों को भी उन लोगों ने गिरफ्तार कर लिया है जिनका शायद इंतजार करते होंगे ।

प्रभाकर सिंह : (ताज्जुब में आकर) आपकी जुबानी बहुत - सी

आप तो इस तरह बयान कर रहे हैं जैसे कोई जादूगर

बयान करता हो !

मालूम हुई ! मुझे इन सबकी कर भी खबर न थी ।

अन्दर जमाने भर की हालत देख - देख कर सभा में

गुलाबसिंह : यही तो इनमें एक अनूठी बात है जिससे बड़े - बड़े नामी ऐयार दंग रहा करते हैं । इनसे किसी भेद का लिया

रहना बहुत ही कठिन है । (भूतनाथ । तो मेरे प्यारे दोस्त , में प्रभाकर सिंह और इंदुमति को आपको सुपुर्द करता

हूँ । जिससे इनका कल्याण हो सो कीजिए । यह बात आपसे छिपी हुई नहीं है कि में इन्हें कैसा मानता हूँ ।

भूतनाथ : मैं सब जानता हूँ और इसीलिए यहाँ आया भी हूँ , परन्तु अब विशेष बातचीत करने का मौका नही , आप

ठहरिए और मेरे पीछे आइए ।

प्रभाकर सिंह : (उठते हुए) मुझे अपने लिए कुछ भी फिक्र नहीं है , केवल बेचारी इंदु के लिए मुझे नामों की तमा नागने

|- की और अदने - अदने आदमियों से छिपकर चलने ...

भूतनाथ : (बात काटकर) मैं खूब जानता हूँ , मगर क्या कीजिएगा , समय पर सब कुछ करना पड़ता है , आँख सात

टटोलना पड़ता है !

सब कोई उठकर भूतनाथ के पीछे - पीछे रवाना हुए ।

जो कुछ हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं इसमें कई घंटे गुजर गये ।

पिछले पहर की रात बीत रही है , चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है , इन चारों के पैरों के तले दबने वाले राखो पत्तों की

चरमराहट के सिवाय और किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं देती । भूतनाथ इन तीनों को साथ लिए । । ।

और अनजान रास्ते से वात - की - बात में पहाड़ी के नीचे उतर आया और इसके बाद दक्षिण की तरफ जाने लगा ।

जंगल - ही - जंगल लगभग आधा कोस के जाने के बाद ये लोग पुनः एक पहाड़ के नीचे पहुँचे । इस जगह का जंगल भी

घना तथा रास्ता घूमघुमौवा और पथरीला था । भूतनाथ इस तरह घूमता और चक्कर देता हुआ पेचीली पगडंडियों पर जाने लगा कि कोई अनजान आदमी उसकी नकल नहीं कर सकता था , अथवा ये समझना चाहिए कि एक - दो दफे का जानकार आदमी भी धोखे में आकर भटक सकता था , किसी अनजान का जाना तो बहुत ही कठिन बात है । कुछ ऊपर चढ़ने के बाद घूमता - फिरता भूतनाथ एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ पत्थरों के बड़े - बड़े ढोकों के अन्दर छिपी हुई एक गुफा थी । इन तीनों के लिए हुए भूतनाथ उस गुफा के अन्दर घुसा । आगे - आगे भूतनाथ , उसके पीछे गुलाबसिंह , उसके बाद इंदुमति और सबसे पीछे प्रभाकर सिंह जाने लगे । कुछ दूर गुफा के अन्दर जाने के बाद भूतनाथ ने अपने ऐयारी के बटुए में से समान निकाल कर मोमबत्ती जलाई और उसकी रोशनी के सहारे अपने साथियों को ले जाने लगा । लगभग पचीस गज के जाने के बाद एक चौमुहानी मिली अर्थात् जहाँ से एक रास्ता सीधी तरफ चला गया था , दूसरा बाईं तरफ , और तीसरी सुरंग दाहिनी तरफ चली गई थी , तथा चौथा रास्ता वह था जिधर से ये लोग आये थे । यहाँ तक तो रास्ता खुलासा था मगर आने का रास्ता बहुत ही बारीक और तंग था जिसमें दो आदमी बराबर से मिलकर नहीं चल सकते थे ।

यहाँ पर आकर भूतनाथ अटक गया और मोमबत्ती की रोशनी में आगे की दोनों सुरंगों को बताकर अपने साथियों से बोला , “ हमारे मकान में जाने वाले को इस दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसना चाहिए । सामने अथवा बाईं तरफ वाली सुरंग में जाने वाला किसी तरह जीता नहीं बच सकता है । "

इतना कहकर भूतनाथ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में घुसा और कुछ दूर जाने के र

उसने मोमबत्ती बुझा दी ।

लगभग दो सौ कदम चले जाने के बाद यह सुरंग खतम हुई और उसका दूसरा मुहाना नजर आया । सबके पहले भूतनाथ सुरंग से बाहर हुआ , उसके बाद गुलाबसिंह और उसके पीछे रवाना हुई , मगर प्रभाकर सिंह न निकले तीन आदमी घूम कर उनका इंतजार करने लगे कि शायद पीछे गए हों मगर कुछ देर इंतजार करने पर भी वे नजर न आये । इंदुमति का कलेजा उछलने लगा , उसकी दाहिनी फड़क उठी और आँखों में आँसू डबडबा आये । भूतनाथ ने इंदुमति और गुलाबसिंह को कहा , " तुम जरा इसी दम लो , मैं सुरंग में घुस कर प्रभाकर सिंह का पता लगाता हूँ । " इतना कहकर भूतनाथ पुनः उसी सुरंग में घुस गया

प्रभाकर सिंह पीछे - पीछे चले आते थे , यकायक कैसे और कहाँ गायब हो गये ? क्या उस सुरंग में कोई दुश्मन छिपा हुआ था जिसने उन्हें पकड़ लिया ? या उन्होंने खुद हमें धोखा देकर हमारा साथ छोड़ दिया ? इत्यादि तरह - तरह की बातें सोचती हुई इंदु बहुत ही परेशान हुई , मगर इस आशा ने कि अभी - अभी भूतनाथ उनका पता लगा के सुरंग से लौटाता ही होगा , उसे बहुत कुछ सम्हाला और वह एकदम सुरंग की तरफ टकटकी लगाये खड़ी देखती रही , परन्तु थोड़ी ही देर में उसकी यह आशा भी जाती रही जब उसने भूतनाथ को अकेले ही लौटते देखा और दुःख के साथ भूतनाथ ने बयान किया कि " उनसे मुलाकात नहीं हुई ! मेरी समझ में नहीं आता कि क्या भेद है और उन्होंने हमारा साथ क्यों छोड़ा ? क्योंकि अगर किसी छिपे हुए दुश्मन ने हमला किया होता तो कुछ मुँह से आवाज तो आई होती या चिल्लाते तो सही ' !

गुलाबसिंह : नहीं भूतनाथ , ऐसा तो नहीं हो सकता । प्रभाकर सिंह पर हम भागने का इलजाम तो नहीं लगा सकते ।

भूतनाथ : जी तो मेरा भी नहीं चाहता कि उनके विषय में मैं ऐसा कहूँ परन्तु घटना ऐसी विचित्र हो गई कि में किसी तरफ अपनी राय पक्की कर नहीं सकता । हाँ इंदुमति कदाचित् इस विषय में कुछ कह सकती हों !

इतना कह कर भूतनाथ ने इंदु की तरफ देखा मगर इंदु ने कुछ जवाब न दिया , सिर जमीन को देखती रही , मानो उसने कुछ सुना ही नहीं ! अबकी दफे गुलाबसिंह ने उसे संबोधन किया जिससे और एकदम फूट - फूट कर रोने और कहने लगी , " वस मेरे

लिए दुनिया इतनी ही धी । मालूम हो गया कि बदकिस्मती मेरा साथ न छोड़ेगी । में व्यर्थ ही आशा में पड़ कर दुखी हुई और उन्हें भी दुःख दिया । मेरे ही लिए इतना कष्ट भोगना पड़ा और मुझ अभागिन के ही कारण उन्हें जंगल की खाक छाननी पड़ी । हाय , क्या अब दुनिया में रहकर उनके दर्शन कर सकती हूँ ? क्यों न इसी समय अपने दुखांत नाटक का अंतिम पर्दा गिरा निश्चिन्त हो जाऊँ ? "

इस

इत्यादि इसी ढंग की बातें करती हुई इंदु प्रलापवास्था

लांघकर बेहोश हो गई और जमीन पर गिर पड़ी ।

गुलाबसिंह और भूतनाथ को उसके विषय में बड़ी चिंता हुई और वे लोग उसे होश में लाकर समझाने - बुझाने तथा शान्त करने की चिंता करने लगे ।

भूतनाथ का यह स्थान कुछ का था । इसमें भूतनाथ की कोई कारीगरी न थी , इसे प्रकृति ही ने कुछ अनूठा और सुन्दर बनाया हुआ था । इसके विषय में अगर भूतनाथ की कुछ कारीगरी थी तो केवल इतनी ही कि उसने इसे खोज निकाला था , जिसका रास्ता बहुत ही कठिन और भयानक था । जिस जगह इंदुमति , भूतनाथ और गुलाबसिंह खड़े हैं वहाँ से दिन के समय यदि आप आँख उठाकर चारों तरफ देखिए तो आपको मालूम होगा कि लगभग चौदह या पन्द्रह

बिगहे के चौरस जमीन , चारों तरफ के ऊँचे - ऊँचे और सरसन्न पहाड़ों से सुन्दर और सुहावने सरोवर के जल की तरह • घिरी हुई है । जिस तरह चारों तरफ के पहाड़ों पर खुशरंग फूल - पत्ती की बहुतायत दिखाई दे रही है उसी तरह यह जमीन

भी नरम घास की बदौलत सब्ज मखमली फर्श का नमूना बन रही है और जगह - जगह पर पहाड़ से गिरे हुए छोटे - छोटे चश्मे भी बह रहे हैं । यद्यपि आजकल पहाड़ों के लिये सरसब्जी का मौसम नहीं है मगर यहाँ पर कुछ ऐसी कुदरती तरावट है कि जिसके सबब से ' पतझड़ के मौसम का कुछ पता नहीं लगता , यों समझ सकते हैं कि बरसात के मौसम में आजकल से कहीं बढ़ - चढ़कर खुबी , खूबसूरती और सरसब्जी नजर आती होगी ।

इस स्थान में किसी तरह की इमारत बनी हुई न थी मगर चारों तरफ के पहाड़ों में सुन्दर और सुहावनी गुफाओं और कंदराओं की इतनी बहुतायत थी कि हजारों आदमी बड़ी खुशी और आराम के साथ यहाँ गुजारा कर सकते थे । इन् । गुफाओं में भूतनाथ तथा उसके तीस - चालीस संगी - साथियों का डेरा था और इन्हीं गुफाओं में उसके जरूरत की सब चीजें और हर्वे इत्यादि रहा करते थे , तथा उसके पास जो कुछ दौलत थी वह भी कहीं इन्हीं जगहों में होगी , जिसका ठीक ठीक पता उसके साथियों को भी न था । भूतनाथ का कथन ऐसे - ऐसे कई स्थान उसके कब्जे में हैं और इस बात का कोई निश्चय नहीं है कि कव या कितने दिनों तक यह किस स्थान में अपना डेरा रखता या रखेगा ।

सुबह की सफेदी अच्छी तरह फैल चुकी थी अब भूतनाथ और गुलाबसिंह के उद्योग से इंदुमति होश में आई । यद्यपि वह खुद इस खोह के बाहर होकर प्रभाकर सिंह की खोज में जान तक देने के लिए तैयार थी और ऐसा करने के लिए वह जिद्द भी कर रही थी मगर भूतनाथ और गुलाबसिंह ने उसे बहुत समझा - बुझाकर ऐसा करने से बाज रखा और वादा किया कि बहुत जल्दी उनका पता लगाकर उनके दुश्मनों को नीचा दिखाएँगे ।

ये सब बातें हो ही रही थीं कि भूतनाथ के आदमी गुफाओं और कंदराओं में से निकलकर वहाँ आ पहुँचे जिन्हें भूतनाथ ने अपनी ऐयारी भाषा में कुछ समझा - बुझाकर विदा किया । इसके बाद एक स्वच्छ और प्रशस्त गुफा में जो उसके डेरे के बगल में थी इंदुमति का डेरा दिलाकर और गुलावसिंह को उसके पास छोड़कर वह भी उन दोनों से विदा हुआ और अपने एक शागिर्द को साथ लेकर उसी सुरंग की राह अपनी इस दिलचस्प पहाड़ी के बाहर हो गया ।

1 जब भूतनाथ सुरंग के बाहर हुआ तो सूर्य भगवान उदय हो चुके थे । उसे जरूरी कामों अथवा नहाने - धोने , खाने - पीने की कुछ भी फिक्र न थी , वह केवल प्रभाकर सिंह का पता लगाने की धुन में था ।

यह वह जमाना था जब चुनार की गद्दी पर महाराज शिवदत्त को बैठे दो वर्ष का समय बीत चुका था । उसकी ऐयाशी की चर्चा घर - घर में फैल रही थी और बहुत से नालायक तथा लुच्चे शोहदे उसकी जात से फायदा उठा रहे थे । उधर जमानिया में

दारोगा साहब की बदौलत तरह - तरह के साजिशें हो रही थीं और उनकी का दौरदौरा खूब अच्छी तरह तरक्की कर रहा था ' अस्तु इस समय खड़े होकर सोचते हुए भूतनाथ का एक दफे जमानिया की तरफ और फिर दूसरी दफे चुनारगढ़ की तरफ गया ।

अपने शागिर्द से , जिसका नाम भोलासिंह था ,

सुरंग से बाहर निकल एक घने पेड़ के नीचे भूतनाथ बैठ गया और कहा

भूतनाथ : भोलासिंह , मुझे इस बात का शक होता है पाकर उसने प्रभाकर सिंह को पकड़ लिया ।

दुश्मन ने इस खोह का रास्ता देख लिया और मौका

भोलासिंह : मगर गुरुजी , मेरे चित्त में तो बात नहीं बैठती । क्या प्रभाकर सिंह इतने कमजोर थे कि आपके पीछे आते समय एक आदमी ने उन्हें पकड़ और उनके मुँह से आवाज तक न निकली ? इसके अतिरिक्त यह तो संभव ही न था कि बहुत से आदमी आपके पीछे - पीछे आते और आपको आहट भी न मिलती ।

भूतनाथ : तुम्हारा कहना ठीक है और इन्हीं बातों को सोचकर मैं कह रहा हूँ कि दुश्मन के आने का शक होता है , यह नहीं कहता कि निश्चय होता है अस्तु जो कुछ हो , मैं प्रभाकर सिंह का पता लगाने के लिए जाता हूँ और तुमको इसी जगह छोड़कर ताकीद कर जाता हूँ कि जब तक मैं लौट कर न आऊँ तब तक सूरत बदले हुए यहाँ पर रहो और चारों तरफ घूम - फिर कर टोह लो कि किसी दुश्मन ने इस सुरंग का पता तो नहीं लगा लिया है । अगर ऐसा हुआ होगा तो कोई - न - कोई यहाँ आता - जाता तुम्हें जरूर दिखाई देगा । यदि कोई जरूरत पड़े तो तुम निःसन्देह अपने डेरे पर (सुरंग के अंदर) चले जाना , मैं इसके लिए तुम्हें मना नहीं करता मगर जो कुछ मेरा मतलब है उसे तुम जरूर अल्छी तरह समझ गए होंगे ।

भोलासिंह : हाँ मैं अच्छी तरह समझ गया , जहाँ तक हो सकेगा मैं इस काम को होशियारी के साथ करूँगा , आप जहाँ इच्छा हो जाइए और इस तरफ से बेफिक्र रहिए ।

भूतनाथ : अच्छा तो अब मैं जाता हूँ ।

इतना कहकर भूतनाथ भोलासिंह से विदा हुआ और उसी घूमघुमौवे रास्ते से होता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर आया , और इधर भोलासिंह देहाती ब्राह्मण की सूरत बना जंगल में इधर - उधर घूमने लगा ।

ठीक दोपहर का समय था । धूप खूब कड़ाके की पड़ रही थी और गर्म - गर्म लू के झपेटे बदन का झुलसा रहे थे । ऐसे समय में भूतनाथ का शागिर्द भोलासिंह गर्मी से परेशान होकर एक घने पेड़ के नीचे बैठा आराम कर रहा था । यह स्थान यद्यपि उस सुरंग से लगभग दो - ढाई सौ दम की दूरी पर होगा परन्तु यहाँ से घूमघुमौवे रास्ते और जंगली पेड़ों तथा लताओं की झाड़ियों के कारण बहुत ध्यान देने पर भी उस सुरंग का मुहाना दिखाई नहीं देता था । भोलासिंह बैठा कुछ सोच रहा था कि यकायक उसके कान में कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई । हमारे पाठकों में से जो महाशय जंगल की हवा खा चुके या पहाड़ों की सैर कर चुके हैं उन्हें यह वात जरूर मालूम होगी कि जंगल में सन्नाटे के समय मुसाफिरों के बातचीत करते हुए चलने की आहट बहुत दूर - दूर तक के लोगों को मिल जाती है , यहाँ तक कि आध कोस की दूरी पर यदि दो - चार आदमी बातचीत करते हुए जाते हों तो ऐसा मालूम होगा कि थोड़ी दूर पर आदमी बातें कर रहे हैं परन्तु शब्द साफ - साफ सुनाई न देंगे , साथ ही इसके इस बात का पता लगाना भी जरा कठिन होगा कि ये बातचीत करते हुए जाने वाले आदमी किधर और कितनी दूर होंगे । अस्तु जब भोलासिंह को कुछ आदमियों के बोलने की आहट मालूम हुई तो ठीक - ठीक पता लगाने और जाँच करने की नीयत से वह उस पेड़ के ऊपर चढ़ गया और चारों तरफ गौर से देखने लगा मगर कुछ पता न लगा और न कोई आदमी ही दिखाई पड़ा । लाचार वह पेड़ के नीचे उतर आया और उसी आहट की सीध पर खूब गौर करता हुआ उत्तर की तरफ चल पड़ा जिधर के जंगली पेड़ बहुत घने और गुंजान थे ।

कुछ दूर तक चले जाने पर भी भोलासिंह को किसी आदमी का तो पता न लगा एक छोटे से पेड़ के नीचे बेहोश प्रभाकर सिंह पड़े जरूर दिखाई दिए यद्यपि उसने आज रात के समय प्रभाकर । को देखा न था क्योंकि उस घाटी में जहाँ भूतनाथ का डेरा था पहुँचने के पहिले ही वह गायव हो चुके थे , परन्तु प्रभाकर सिंह एक अमीर बहादुर और नामी आदमी थे इसलिए भोलासिंह उन्हें पहिचानता जरूरत था और कई ऐयारी की धुन में शहर में घूमते हुए उसने प्रभाकर सिंह को देखा भी था । इसके अतिरिक्त

आज भूतनाथ ने उसे यह भी बता दिया था कि जिस समय प्रभाकर सिंह हमारे साथ से गायब हुए हैं उस समय उनकी पोशाक् ढंग की थी तथा उनके पास अमुक हर्वे थे । इन सब कारणों से भोलासिंह को उनके पहिचानने में किसी तरह कोई दिक्क्त नहीं हुई और वह उन्हें ऐसी अवस्था में पड़े हुए देखते ही चौंक पड़ा । वह उनके पास बैठ गया और गौर से देखने लगा कि क्या उन्हें किसी तरह की चोट आई है या कोई आदमी जान से मार कर छोड़ गया किसी तरह की चोट का पता तो न लगा मगर इतना मालूम हो गया कि मरे नहीं हैं बल्कि बेहोश पड़े हैं ।

भोलासिंह ने अपने ऐयारी के बटुए में से लखलखा निकाला और सुँघाने लगा थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह होश में आ गए ओर उन्होंने अपने सामने एक देहाती ब्राह्मण को बैठा देखा ।

प्रभाकर सिंह : आप कौन हैं ? कृपा कर अपना परिचय दीजिए । मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूँ क्योंकि आज निःसन्देह आपने मेरी जान बचाई ।

भोलासिंह : मैं एक गरीब देहाती ब्राह्मण हूँ । इस राह से जा रहा था कि यकायक आपको इस तरह पड़े हुए देखा , फिर जो कुछ बन सका किया ।

प्रभाकर सिंह : (सिर हिलाकर) नहीं , कदापि नहीं , आप ब्राह्मण भले ही हों परन्तु देहाती और गरीब नहीं हो सकते , आप जरूर कोई ऐयार हैं ।

भोलासिंह : यह शक आपको कैसे हुआ ?

प्रभाकर सिंह : यद्यपि मैं ऐयारी नहीं जानता परन्तु ऐसे मौके पर आपको पहिचान लेना कोई कठिन काम न था क्योंकि आपको बहुत उम्दा लखलखा सुंघाकर मेरी बेहोशी दूर की है जिसकी खुशबू अभी तक मेरे दिमाग में गूंज रही है । क्या कोई आदमी जो ऐयारी नहीं जानता हो ऐसा लखलखा बना सकता है ? आप ही बताइए !

भोलासिंह : आपका कहना ठीक है मगर में ..

प्रभाकर सिंह : (बात काट कर) नहीं - नहीं , इसमें कुछ सोचने और वात बनाने की जरूरत नहीं है , मैं आपसे मिलकर बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि मुझे निश्चय है कि आप जरूर मेरे दोस्त भूतनाथ के ऐयार हैं जिनसे सिवाय भलाई के बुराई की आशा हो ही नहीं सकती ।

भोलासिंह : (कुछ सोच कर) बात तो बेशक ऐसी ही है , मैं जरूर भूतनाथ का ऐयार हूँ और वे आपका पता लगाने के लिए गए हैं , मगर यह तो बताइए कि आप यकायक गायब क्यों हो गए और आपकी ऐसी दशा किसने की है ?

प्रभाकर सिंह : मैं यह सब हाल तुमसे बयान करूँगा और यह भी बताऊँगा कि क्योंकर मेरी जान बच गई , मगर इस समय नहीं क्योंकि दुश्मनों के हाथ से तकलीफ उठाने के कारण मैं बहुत ही कमजोर हो रहा हूँ और जब मुझमें ज्यादा बात करने की ताकत नहीं है , अस्तु जिस तरह हो सके मुझे अपने डेरे पर ले चलो , वहाँ सब कुछ सुन लेना और उसी समय इंदुमति तथा गुलाबसिंह को भी मेरा हाल मालूम हो जाएगा । यद्यपि मुझमें चलने की ताकत नहीं है मगर तुम्हारे मोढ़े का सहारा लेकर धीरे - धीरे वहाँ तक पहुँच ही जाऊँगा ।

भोलासिंह : अच्छी बात है , मैं तो आपको अपनी पीठ पर लादकर भी ले जाव सकता

प्रभाकर सिंह : ठीक है मगर इसकी कोई जरूरत नहीं है , अच्छा अब आप अपना नाम तो बता दो ।

भोलासिंह : मेरा नाम भोलासिंह है ।

इतना कहकर भोलासिंह उठ खड़ा हुआ और उसने हाथ का सहारा देकर प्रभाकरसिंह को उठाया । वह बहुत ही सुस्त और कमजोर मालूम हो रहे थे इसलिये भोलासिंह उन्हें टेकाता और सहारा देता हुआ बड़ी कठिनता से सुरंग के मुहाने पर ले आया । वहाँ पर प्रभाकर सिंह ने बैठकर कुछ सुस्ताने की इच्छा प्रकट की अस्तु उन्हें बैठाकर भोलासिंह भी उनके पास बैठ गया । इस समय दिन पहर लगभग रह गया होगा । आह , यहाँ पर भोलासिंह ने बेढव धोखा खाया । यह जो प्रभाकर सिंह उसके साथ भूतनाथ की घाटी में जा रहे हैं वह वास्तव में प्रभाकर सिंह नहीं है बल्कि उनके दुश्मनों में से एक ऐयार है जिसका खुलासा हाल आगे के किसी बयान में मालूम होगा , यह उसे तथा भूतनाथ और उसके ऐयारों को धोखा दिया । है और इंदुमति पर कब्जा कर लेने की धुन में है यद्यपि भोलासिंह भी ऐयार और बुद्धिमान हैं मगर साथ ही इसके उसे भांग का बहुत शौक है । सुबह , दोपहर और शाम तीनों वक्त छाने विना उसका जी नहीं मानता । इतने पर भी बस नहीं , कभी - कभी वह नशे को कमी समझ कर दो - चार दम गाँजे के भी लगा लिया करता है और यही सबब है कि वह कभी - कभी

बेढब धोखा खा जाता है । मगर यह ऐयार भी बड़ा ही मक्कार है जो उसके साथ जा रहा है , देखना चाहिए दोनों में क्योंकर निपटती है । भोलासिंह तो खुश है कि हमने प्रभाकर सिंह को खोज निकाला , और वह ऐयार सोचता है कि अव इंदुमति पर कब्जा करना कौन बड़ी बात है ?

कुछ देर के बाद दोनों आदमी उठ खड़े हुए और भोलासिंह उस नकली प्रभाकर सिंह को साथ लिए सुरंग के अन्दर चला

गया ।

बेचारी इंदुमति बड़े ही संकट में पड़ गई है । प्रभाकर सिंह का इस तरह यकायक गायब हो जाना उसके लिए बड़ा ही दुःखदायी हुआ इस समय उसके आगे दुनिया अंधकार हो रही है । उसे कहीं भी किसी तरह का सहारा नहीं सूझता । उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता कि अब उसका भविष्य कैसा होगा । उसे न तो तनोबदन की सुध है और न नहाने - धोने की फिक्र , वह सिर झुकाए अपने प्यारे पति की चिंता में डूबी हुई है । गुलाबसिंह उसके पास बैठे हुए तरह - तरह की बातों से उसे संतोष दिलाना चाहते हैं मगर किसी तरह भी उसके चित्त को शान्ति नहीं होती और वह अपने मन की दो - चार बातें कह कर चुप हो जाती है ! हाँ जब - जब उसके कान में ये शब्द पड़ जाते हैं कि ' भूतनाथ का उद्योग कदापि वृथा नहीं हो सकता , वह जरूर प्रभाकर सिंह को खोज निकालेंगे और यह अपने साथ लेकर ही आयेंगे ' तब - तब वह चौंक पड़ती है । आशा के फेर में पड़ कर उसका ध्यान सुरंग के मुहाने की तरफ जा पड़ता है और कुछ देर के लिए उधर की टकटकी बँध जाती है ।

इस बीच में इंदु ने कई दफे गुलाबसिंह से कहा , " तुम मुझे साथ लेकर इस सुरंग के बाहर निकलो , मैं खुद मर्दाना भेष वनाकर उसका पता लगाऊँगी । " मगर गुलाबसिंह ने ऐसा करना स्वीकार न किया जिससे उसका चित्त और भी दुखी हो गया और उसने रोते ही कलपते बची हुई रात और अगला दिन बिता दिया । अन्त में दिन बीत जाने पर संध्या के समय जब सूर्य अस्त हो रहे थे लाचार होकर गुलाबसिंह ने इंदु से वादा किया कि अच्छा अगर कल तक भूतनाथ लौटकर न आ जाएँगे तो मैं तुम्हें साथ लेकर सुरंग के बाहर निकल चलूँगा और फिर जैसा कहोगी वैसा ही करूँगा ।

गुलाबसिंह के इस वादे से इंदु को थोड़ी - सी ढाढस मिल गई और उसने साहस करके अपने को सम्हाला । इसके बाद गुलाबसिंह से बोली कि ' इस समय तो मैं स्नान इत्यादि कुछ भी करूँगी , हाँ यदि तुम आज्ञा दो तो मैं थोड़ी देर के लिए नीचे उतर कर मैदान में टहलूँ और दिल बहलाऊँ । ने उसकी इस बात को भी गनीमत समझा और घूमने - फिरने की इजाजत दे दी ।

वह

इंदुमति का घूमने - फिरने के लिए गुलाबसिंह से ले लेना केवल इसी अभिप्राय से न था कि वह अपना दिल बहलाये बल्कि उसका असल मतलब यह था कि । में बैठकर या घूम - फिर कर इस विषय पर विचार करे कि अब उसे क्या करना चाहिए क्योंकि गुलाबसिंह मझाने - बुझाने वाली बातों से दुखी हो गई थी । उसका हरदम पास बैठे रह कर दिलासा देना या ढाँढस बँधाना बहुत बुरा मालूम हुआ और इस बहाने से उसने अपना पीछा छुड़ाया ।

उदास और पति की जुदाई से व्याकुल इंदुमति गुलाबसिंह के पास से उठी और धीरे - धीरे चलकर नीचे वाले सरसब्ज मैदान में पहुँचकर टहलने लगी । उधर गुलाबसिंह भी दिन भर का भूखा - प्यासा था । अतः जरी कामों से निपटने और कुछ खाने - पीने की फिक्र में लगा ।

धीरे - धीरे घूमती - फिरती इंदुमति उस सुरंग के मुहाने के पास आ पहुँची जो यहाँ आने - जाने का रास्ता था और पहाड़ी के साथ एक पत्थर की साफ चट्टान पर बैठकर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए । उसका मुँह सुरंग की तरफ था और इस आशा से बराबर उसी तरफ देख रही थी कि प्रभाकर सिंह को लिए हुए भूतनाथ अब आता ही होगा । उसी समय नकली प्रभाकर सिंह को लिए हुए भोलासिंह वहाँ आ पहुँचा और सुरंग के बाहर निकलते ही इंदु की निगाह उन पर पड़ी तथा उन दोनों ने भी इंदु को देखा ।

इस समय भोलासिंह अपनी असली सूरत में था और उसे भूतनाथ के साथ जाते हुए इंदु ने देखा भी था इसलिए वह जानती थी कि वह भूतनाथ का ऐयार है अस्तु निगाह पड़ते ही उसे विश्वास हो गया कि भूतनाथ ने मेरे पति को भोलासिंह के साथ वहाँ भेज दिया है और पीछे - पीछे भूतनाथ खुद भी आता होगा ।

नकली प्रभाकर सिंह और भोलासिंह सुरंग से निकल कर पाँच कदम आगे न बढ़े होंगे कि प्रभाकर सिंह को देखते ही इंदुमति पागलों की तरह दौड़ती हुई उनके पास पहुँची और उनके पैरों पर गिर पड़ी ।

हाय , बेचारी इंदु को क्या खबर थी कि यह वास्तव में मेरा पति नहीं बल्कि कोई मक्कार उसकी सूरत बना मुझे धोखा देने के लिए यहाँ आया है । तिस पर भोलासिंह के साथ रहने से उसे इस बात पर शक करने का मौका भी न मिला । वह उसे अपना पति समझकर उसके पैरों पर गिर पड़ी और वियोग के दुःख को दूर करती हुई प्रसन्नता ने उसे गद्गद् कर दिया । कंठ रुद्ध हो जाने के कारण वह कुछ बोल न सकी , केवल गरम - गरम आँसू गिराती रही । भोलासिंह भी चुपचाप खड़ा आश्चर्य के साथ उसकी इस अवस्था को देखता रहा ।

नकली प्रभाकर ने इंदुमति से कुछ न कहकर भोलासिंह से कहा , " भाई भोलासिंह , अब तो मैं बिलकुल ही थक गया हूँ । मेरी कमजोरी अब मुझे एक कदम भी आगे नहीं चलने देती । इंदु से मिलने का उत्साह मुझे यहाँ तक साहस देकर ले आया यही गनीमत है , नहीं दुश्मनों के दिए हुए जहर की बदौलत बिलकुल ही कमजोर हो गया हूँ । इत्तिफाक की बात है कि इंदु मुझे इसी जगह मिल गई । अब मैं कुछ देर तक सुस्ताए बिना एक कदम भी आगे नहीं चल सकता अस्तु तुम जाओ , गुलाबसिंह को भी खुशखबरी देकर इसी जगह बुला लाओ तब तक मैं भी अच्छी तरह आराम कर लूँ । ' डेरा सैकड़ों कदम की दूरी पर था , तमाम मैदान पार करने के बाद पहाड़ी पर चढ़कर वह गुफा थी जिसमें गुलाबसिंह का डेरा था , अस्तु वहाँ तक जाने और आने में घड़ी भर से भी ज्यादा देर लग सकती थी तथापि भोलासिंह दौड़ा - दौड़ा जाकर गुलाबसिंह से मिला और उन्हें प्रभाकर सिंह के आने की खुशखबरी सुनाई । उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम छोड़ दिया और प्रभाकर सिंह के आने की खुशखबरी सुनाई । उस समय गुलाबसिंह रसोई बनाने की फिक्र में थे मगर यह खबर सुनते ही उन्होंने सब काम और प्रभाकर सिंह से मिलने के लिए भोलासिंह के साथ चल पड़े ।

जिस समय गुलाबसिंह को साथ लिए हुए भोलासिंह सुरंग के मुहाने पर । तो वहाँ सन्नाटा छाया हुआ था । न तो प्रभाकर सिंह दिखाई पड़े और न इंदुमति ही नजर आई

। ऐसी अवस्था देख भोलासिंह सन्नाटे में आ गया और अब उसे मालूम हुआ कि उसने धोखा खाया । वह घबड़ाकर चारों तरफ बाद यह कहता हुआ जमीन पर बैठ गया “ हाय , मैंने बुरा धोखा खाया । प्रभाकर सिंह के साथ - ही - साथ भी हाथ से खो बैठा । "

अब हम यहाँ पर कुछ हाल प्रभाकर सिंह का लिखना जरूरी समझते हैं । पहिले बयान में हम लिख आए हैं कि ' प्रभाकर

सिंह इंदुमति और गुलाबसिंह को लेकर भूतनाथ अपनी घाटी में गया तो रास्ते में सुरंग के अन्दर से यकायक प्रभाकरसिंह

गायब हो गए । ' अस्तु इसी जगह से हम प्रभाकर सिंह का हाल लिखना शुरू करते हैं ।

जब भूतनाथ उन लोगों को साथ लिए हुए सुरंग में गया और कुछ दूर जाने के बाद चौमुहानी पर पहुँचा तो रास्ते का

हाल बताकर कुछ आगे चलने के बाद भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझा दी और उसे यही खयाल रहा कि हमारे तीनों मेहमान

हमारे पीछे - पीछे चले आ रहे हैं , मगर वास्तव में ऐसा न था । नीमुहानी से थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने के बाद किसी ने

प्रभाकर सिंह के दाहिने मोढ़े पर अपना हाथ रखा जो सबके पीछे - पीछे जा रहे थे । प्रभाकर सिंह ने चौंककर पीछे की

तरफ देखा मगर अंधकार में कुछ भी दिखाई न दिया , हाँ एक हलकी - सी आवाज या सनाई पड़ी लहरो , और जरा मेरी

बात सुन कर तब आगे बढ़ो । ' ठहरें या न ठारे , ' भूतनाथ को रोक अथवा चुप रहें इत्यादि सोचते हुए प्रभाकर सिं कुछ

ही देर रुके थे कि उनके कान में पुनः एक बारीक आवाज आई , " घबड़ाओ मत , जरा - सा रुककर सुनते जाओ कि अब

तुम कैसी आफत में फंसना चाहते हो और उससे छुटकारा पाने की क्या तदवीर है ! "

इन शब्दों ने प्रभाकर सिंह को और भी रोक लिया और वह कुछ ठिठके - से राकर सोचने लगे कि क्या करना चाहिए ।

इतने ही में पिछली तरफ रोशनी मालूम हुई जो उसी चौराहे पर थी जिसे याह छोड़कर कुछ दूर आगे बढ़ आये थे ।

उस रोशनी में दो औरतें दिखाई पड़ी और यह भी मालूम पड़ा कि जिसने सिंह के मोटे पर हाथ रख कर उन्हें

रोका था वह भी एक औरत ही है जो अब कुछ पीछे हट इन पुनः तरफ बुला रही है ।

भूतनाथ पहला भाग

यद्यपि इस कार्रवाई में बहुत देर लगी तथापि इसी बीच में

लिए भूतनाथ इतना आगे बढ़ गया कि न तो वह इन

उसकी निगाह पड़ी । कुछ वर्तमान और कुछ भविष्य

नाजुक और सुन्दर थीं डरना व्यर्थ समझ कर

था ।

। और पेचीली सुरंग में गुलाबसिंह और इंदमति को

वात ही सुन सका और न चोमुहानी वाली रोशनी ही पर

हुए प्रभाकर सिंह अटके और उन औरतों से जो कम उम्र ,

की तरफ मुड़कर उस औरत की तरफ चले जिसने इन्हें रोका सोचते

इन तीनों औरतों का नखशिख बयान करने और इनकी खूबसूरती के बारे में लिखने की यहाँ कुछ जरूरत नहीं है । यहाँ

इतना ही कहना काफी है जितना आये हैं अर्थात् तीनों कम उम्र की थीं , नाजुक थीं , सुन्दर थी भड़कीली पोशाक

पहिरे हुए थीं ।

जब चौमुहानी पर पहुँचे तो उन दोनों औरतों में से एक ने जो पहिले ही से वहाँ खड़ी थी प्रभाकर सिंह का हाथ पकड़

लिया और कहा , " भूतनाथ ने जरूर आप को कहा होगा कि चौमुहानी से उसके घर का रास्ता छोड़कर वाकी दोनों तरफ

जाना खतरनाक है , मगर नहीं , वह विलकुल झूठा है । आप जरा इधर आइए और देखिए मैं आपको कैसा अनूठा तमाशा

दिखाती हूँ । "

इतना कहकर दोनों बल्कि तीनों औरतें प्रभाकर सिंह को सुरंग के उस रास्ते में ले चली जिधर जाने के लिए भूतनाथ ने

मना किया था । हम नहीं कह सकते कि क्या सोच - समझकर प्रभाकर सिंह ने इन औरतों की बात मान ली और भूतनाथ

की नसीहत पर कुछ भी ध्यान न दिया अथवा भूतनाथ का साथ छोड़ दिया । क्या संभव है कि वे इन तीनों औरतों को

पहिले से पहिचानते हो ?

लगभग पन्द्रह या वीस कदम जाने के बाद उस तीसरी औरत ने जिसके हाथ में रोशनी थी नखरे के साथ हाथ से

मोमबत्ती गिरा दी जिससे अंधकार हो गया । उसने यही जाहिर किया कि यह बात धोखे में उससे हो गई । उसके बाद

उस औरत ने इनका हाथ भी छोड़ दिया । प्रभाकर सिंह अटक कर कुछ सोचने लगे और बोले " जो हुआ सो हुआ , अब

रोशनी करी तो मैं तुम्हारे साथ आगे बढुंगा नहीं तो पीछे की तरफ मुड़ जाऊँगा । " मगर उनकी इस बात का किसी ने

भी जवाब न दिया । आश्चर्य के साथ प्रभाकर सिंह ने पुनः पुकारा मगर फिर जवाब न मिला , मानो वहाँ कोई था ही

नहीं ।

आश्चर्य और चिंता के शिकार प्रभाकर सिंह कुछ देर तक खड़े सोचने के बाद अफसोस करते हुए पीछे की तरफ लौटे मगर अपने ठिकाने पर पहुँच सके । आठ ही दस कदम पीछे हटे थे कि दीवार से टकराकर खड़े हो गए और सोचने लगे " हैं , यह क्या मामला है ! अभी - अभी तो हम लोग इधर से आ रहे हैं , फिर यह दीवार कैसा ? रास्ता क्योंकर बंद हो गया ? क्या अब इस तरफ का रास्ता बंद हो ही गया ! " इत्यादि ।

वास्तव में पीछे फिरने का रास्ता बंद हो गया मगर अँधेरे में इस बात का पता नहीं लग सकता था कि यह कोई दीवार बीच में आ पड़ी है या किसी तरह के तख्ते या दरवाजे ने बगल से निकल कर रास्ता बंद कर दिया है अथवा क्या है ! जो हो , प्रभाकर सिंह को निश्चय हो गया कि अब पीछे की तरफ लौटना असंभव है अस्तु यही अच्छा होगा कि आगे की तरफ बढ़ें , शायद कहीं उजाले की सूरत दिखाई दे तब जान बचे , आह ! मैं इन औरतों को ऐसा नहीं समझता था और इस बात का स्वप्न में भी गुमान नहीं होता था कि ये मेरे साथ दगा करेंगी ।

लाचार प्रभाकर सिंह अँधेरे में अपने दोनों हाथों को फैलकर टटोलते हुए आगे की तरफ बढ़े मगर बहुत धीरे - धीरे जाने लगे जिसमें किसी तरह का धोखा न हो । रास्ता पेचीला और ऊँचा था तथा आगे की तरफ से तंग भी होता जाता था । अढ़ाई - तीन सौ कदम जाने के बाद रास्ता इतना तंग हो गया कि एक आदमी से ज्यादा के चलने की जगह न रही । कुछ आगे बढ़ने पर रास्ता खत्म हुआ और एक बंद दरवाजे पर हाथ पड़ा । धक्का से वह दरवाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह जो उनके सामने की तरफ बढ़ती हुई मालूम पड़ती थी । लगभग पच्चीस - तीस कदम जाने के बाद प्रभाकर सिंह खोह के बाहर निकले और तब उन्होंने अपने को एक सरसब्ज पहाड़ की ऊँचाई पर किसी गुफा के बाहर खड़ा पाया ।

इस समय सवेरा हो चुका था और पूरब तरफ पहाड़ चोटी के पीछे सूरज की लालिमा दिखाई दे रही थी । प्रभाकर सिंह ने अपने को एक ऐसे स्थान में पाया जिसे सुन्दर और सोहावनी घाटी कह सकते हैं । यह घाटी त्रिकोण अर्थात तीन तरफ से पहाड़ के अन्दर दबी हुई थी जमीन के बीचोंबीच में एक सुन्दर बंगला बना हुआ था जो इस

जगह से जहाँ प्रभाकर सिंह वहाँ पहुँचने के लिए तलाश करने लगे मगर सुभीते से उतर जाने के लायक कोई पगडंडी नजर न आई , तथापि प्रभाकर सिंह हतोत्साह न हुआ और किसी - न - किसी तरह से उद्योग करके नीचे की तरफ उतरने ही लगे । वह सोच रहे थे कि देखें हमारा दिन कैसा कटता है , किस ग्रह दशा के फेर में पड़ते हैं , किसका सामना पड़ता है और खाने - पीने के लिए क्या चीज मिलती है अथवा यहाँ से निकलने का रास्ता ही क्योंकर मिलता है । उस बंगले तक पहुँचने में प्रभाकर सिंह को दो घंटे से ज्यादा देर लगी । पहाड़ी की चोटियों पर धूप अच्छी तरह फैल चुकी थी मगर बंगले के पास अभी धूप का नाम - निशान नहीं था ।

| - बंगले के दरवाजे पर दो जवान लड़के पहरा दे रहे थे जिन्होंने प्रभाकर सिंह को रोका और पूछा , " तुम यहाँ क्योंकर

आए ? "

इसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने क्रोध में आकर कहा , " जिस तरह हम आए हैं वह जरूर तुम्हें मालूम होगा और जरूर वे तीनों कमबख्त औरतें भी इसी बंगले के भीतर होंगी जिन्होंने मुझे धोखा देकर गुमराह किया है । तुम जाओ , उन्हें इत्तिला दो कि प्रभाकरसिंह आ पहुँचे । "

उन दोनों पहरेवालों ने प्रभाकर सिंह की बात का कुछ भी जवाब न दिया । प्रभाकरसिंह गुस्से में आकर कुछ कहा ही चहाते थे कि उनकी निगाह एक मौलसिरी के पेड़ के ऊपरी हिस्से पर जा पड़ी जो इसी बंगले के पूरब और दक्षिण के कोने पर बड़ी खूबसूरती के साथ खड़ा था । इस बंगले के चारों कोनों पर चार मौलसिरी के बड़े - बड़े दरख्त थे जो इस समय खूब ही हरे - भरे थे और उनके फूलों से वहाँ की जमीन ढक रही थी तथा खुशबू से प्रभाकर सिंह का दिमाग मुअत्तर हो रहा था ।

जिस मौलसिरी के पेड़ के ऊपर प्रभाकर सिंह की निगाह पड़ी उसके ऊपरी हिस्से में रेशमी डोर के साथ एक हिंडोला

लटक रहा था जो झुकी हुई डालियों की आड़ में छिपा हुआ था मगर जब हवा के झपेटों से उसकी डालियाँ हिलती और

इधर - उधर हटती थीं तो उस हिंडोले पर एक सुन्दर औरत बैठी हुई दिखाई देती थी और इसी पर प्रभाकर सिंह की

निगाह पड़ी थी। गौर से देखने पर प्रभाकर सिंह को इंदुमति का गुमान हुआ और ये दौड़ कर उस पेड़ के नीचे जा खड़े

प्रभाकर सिंह ने सर उठाकर पुनः उस औरत को देखा इस आशा से कि यह इंदुमति है या नहीं , इस बात का निश्चय

कर लें , मगर प्रभाकर सिंह का खयाल गलत निकला क्योंकि वह वास्तव में इंदुमति न थी , हाँ , इंदुमति से उसकी सूरत

रुपये में बाहर आना जरूर मिलती - जुलती थी यहाँ तक कि यदि यह औरत केवल अपने दोनों होठ और अपनी ठुड्डी

हाथ से ढाँक कर प्रभाकर सिंह की तरफ देखती होती तो दोपहरी की चमकचमाती हुई रोशनी में और दस हाथ की दूरी

से भी वे इसे न पहिचान सकते और यही कहते कि जरूर मेरी इंदुमति है।

इस समय वह औरत भी प्रभाकर सिंह की तरफ देख रही थी। जब वे उस पेड़ के नीचे आए तब उसने हाथ के इशारे

से उन्हें भाग जाने को कहा जिसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने कहा , “ तुम इस बात का गुमान भी करो कि तुम्हारा हाल

जाने बिना में यहाँ से चला जाऊँगा। "

औरत : (अपने माथे पर हाथ रख कर) वात तो अब यह है कि आप अब यहाँ से

जाने का रास्ता ही मिल सकता है।

प्रभाकर सिंह : तुम्हारे इस कहने से तो निश्चय होता है कि तुम्हारी

जाएगा और मैं अपने दुश्मनों से बदला ले सकूँगा।

औरत : नहीं क्योंकि एक तो मुझे यहाँ का पूरा - पूरा हाल

मौका मिलना कठिन है , क्योंकि अगर कुछ कहने

जाएँगे ।

नहीं , दूसरे अगर कुछ मालूम भी है तो उसके कहने का

करूँगी तो मेरी ही तरह से आप भी कैद कर लिए

औरत : (आँचल से आँसू पोंछक प्रभाकर सिंह : तो तुम कैदी हो ?

प्रभाकर सिंह : तुम्हें यहाँ कौन ले आया ?

:

औरत : मेरी बदकिस्मती !

मुझे यहाँ का सच्चा - सच्चा हाल मालूम हो

प्रभाकर सिंह : तुम्हारा क्या नाम है ?

नहीं सकते और न आपको निकल

औरत : तारा

प्रभाकर सिंह : (ताज्जुब से) तुम्हारे बाप का क्या नाम है ?

औरत : (रोकर) वही जो आपकी इंदुमति के बाप का नाम है !! अफसोस , आपने मुझे अभी तक नहीं पहिचाना !

इतना कहके वह और भी खुलकर रोने लगी जिससे प्रभाकर सिंह का दिल बेचैन हो गया और उन्होंने पहिचान लिया कि

यह बेशक उनकी साली है । वह चाहते थे कि पेड़ पर चढ़कर उसे नीचे उतारें और अच्छी तरह बात करें मगर इसी बीच

में कई आदमियों ने आकर उन्हें घेर लिया । बंगले के दरवाजे पर पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने प्रभाकर सिंह

को जब उस औरत से बातचीत करते देखा तब तेजी के साथ वहाँ से चले गए और थोड़ी ही देर में कई आदमियों ने

आकर उनको घेर लिया ।

संध्या का समय था जब नकली प्रभाकर सिंह इंदुमति को बहकाकर और धोखा देकर भूतनाथ की विचित्र घाटी से उसी

सुरंग की राह ले भागा जिधर से वे लोग गए थे । उस समय इंदुमति की वैसी ही सूरत थी जैसी कि हम पहिले बयान में

लिख आए हैं अर्थात् मर्दानी सूरत में तीर - कमान और ढाल - तलवार लगाए हुए थी । संभव था कि नकली प्रभाकर सिंह

को उसके पहिचानने में धोखा होता परन्तु नहीं , उसको इंदुमति से कुछ ऐसा संबंध था कि उसने उसके पहिचानने में

जरा भी धोखा नहीं खाया बल्कि इंदुमति को हर तरह से धोखे में डाल दिया । इंदुमति ने प्रभाकर सिंह को वैसे ही ढंग

और पोशाक् में पया जैसा छोड़ा था परन्तु यदि वह विकल दुखित और घबड़ाई हुई न होती तो उनके लिए नकली

प्रभाकर सिंह को पहिचान लेना कुछ कठिन न था ।

सुरंग के बाहर होने बाद आसमान की तरफ देखकर इंदुमति को इस बात का खयाल हुआ कि रात हुआ ही चाहती है ।

वह सोचने लगी कि इस भयानक जंगल में क्योंकर पार होंगे और रात - भर कहाँ पर आराम से बिता सकेंगे , साथ ही उसे

यकायक इसी तरह पर गुलाबसिंह को छोड़ना और भूतनाथ की घाटी से निकल भागना भी ताज्जुब में डाल रहा था ।

पूछने पर भी प्रभाकर सिंह ने उसको ठीक - ठीक सबब नहीं बताया था , हाँ बताने का वादा किया , मगर इससे उसकी

बेचैनी दूर नहीं हुई थी । उसका जी तरह - तरह के खुटकों में पड़ा हुआ था और यह जानने के लिए वह वेचैन हो रही थी

कि गुलाबसिंह ने उनका क्या नुकसान किया था जो उसको भी छोड़ दिया गया ।

सुरंग के मुहाने से थोड़ी दूर आगे जाने वाद इंदुमति ने प्रभाकर सिंह से कहा , " आपकी चाल इतनी तेज है कि मैं

आपका साथ नहीं दे सकती । "

भूतनाथ पहला भाग

नकली प्रभाकर : (धीमी चाल करके) अच्छा लो मैं धीरे - धीरे ।

चलना चाहिए ।

इंदुमतिः यही कहते - कहते तो यहाँ

बड़ा सफर करना पड़ेगा ?

इसका सबब बताऊँगा ।.

इंदुमति : आखिर इसका सबब क्या है , कुछ बताओ भी तो सही ?

नकली प्रभाकर : अभी नहीं , थोड़ी देर के

आ पहुँचे । अच्छा यही बताओ कि हम लोगों को कहाँ जाना होगा और कितना

नकली प्रभाकर : कुछ नहीं , थोड़ी ही दूर और चलना है । इसके बाद सवारी तैयार मिलेगी जिस पर चढ़कर हम लोग

निकल जाएँगे ।

सवारी का नाम सुन इंदुमति चौंकी और उसके दिल में तरह - तरह की बातें पैदा होने लगी । कई सायत सोचने के बाद

उसने पुनः नकली प्रभाकर सिंह से पूछा , " ऐसे मुसीबत के जमाने में यकायक आपको सवारी कैसे मिल गई ? "

नकली प्रभाकर : इसका जवाब भी आगे चलकर देंगे ।

प्रभाकर की इस बात ने इंदुमति को और भी तरदुद में डाल दिया । वह चलते - चलते रुककर खड़ी हो गई और इस

बीच में नकली प्रभाकर सिंह जो आगे जा रहा था कई कदम आगे निकल गया ।

हम नहीं कह सकते कि अब यकायक इंदुमति के जी में क्या आया कि वह प्रभाकर सिंह के साथ जाते - जाते एकदम रुक

ही नहीं गई बल्कि जब प्रभाकर सिंह अपनी तेजी और जल्दबाजी में पीछे की सुध न करके इंदुमति से कुछ आगे बढ़

गया तो दाहिनी तरफ हटकर एक गुंजान पेड़ पर चढ़ गई और छिपकर इंतजार करने लगी कि देखें अब जमाना क्या

दिखाता है ।

हूँ मगर जहाँ तक जल्दी हो सके यहाँ से निकल ही

नकली प्रभाकर सिंह लगभग दो - सौ कदम से भी ज्यादे आगे बढ़ गया तब उसे मालूम हुआ कि उसके पीछे इंदुमति नहीं

है । वह घबराकर पीछे की तरफ लौटा और “ इंदुमति , इंदुमति " कह कर कुछ ऊँचे स्वर से पुकारने लगा ।

इंदुमति पेड़ पर चढ़कर छिपी हुई उसकी आवाज सुन रही थी मगर उसे खूब याद था कि उसे प्यारे पति ने आवश्यकता

पड़ने पर कभी उसे इंदुमति कहकर नहीं पुकारा । यह एक ऐसी वात थी जो केवल उन दोनों पति - पत्नी ही से संबंध

रखती थी , कोई तीसरा आदमी इसके जानने का अधिकारी न था ।

नकली प्रभाकर सिंह इंदुमति को पुकारता हुआ उससे ज्यादा पीछे हट गया जहाँ इंदु छिपी हुई थी और इस बीच में उसने

तीन दफे जफील (सीटी) भी बुलाई , साथ ही इसके यह भी उसके मुँह से निकल पड़ा , “ कमबख्त ठिकाने पहुँचकर गायब

हो गई ! " यह बात इंदुमति ने भी सुन ली ।

जफील की आवाज से वहाँ कई आदमी और भी आ पहुँचे तथा नकली प्रभाकर सिंह के साथी बन गये जिन्हें देख

इंदुमति को विश्वास हो गया कि जो कुछ उसने यहाँ आकर सोचा था वही ठीक निकला , वास्तव में उसने पूरा धोखा

खाया , और अब वह बेतरह दुश्मनों के काबू में पड़ी हुई है ।

इंदुमति को खोजने वाली अब कई आदमी हो गये और वे इधर - उधर फैलकर पेड़ों की

लगे ।

तिथि के अनुसार रात की पहिली कालिमा (अँधेरी) बीत चुकी थी और

जिससे इंदु घबरा गई और मन में सोचने लगी कि यह तो बड़ा अँधेर

अपना - सा किया चाहता है । अब मैं क्या करूँ ? "

उदय होकर धीरे - धीरे ऊँचे उठने लगे थे

| चाहता हैं एक छिपे हुए इंदु को यह

प्रभाकर सिंह के साथ ही साथ जमाने ने भी उसे बहुत

लगाना वह बखूबी जानती थी , बल्कि तीरंदाजी में

मौजूद भी था । जैसा कि हम ऊपर इशारा कर

हम पहिले बयान में दिखा चुके हैं । '

सिखला दिया था । तलवार चलाना और तीर का निशाना

तरह का घमंड था और इस समय उसके पास यह सामान

कि ' इस समय इसकी पोशाक् और सूरत वैसी ही थी जैसी कि

जब कई दुश्मनों ने इंदुमति को घेर लिया और चाँदनी भी फैल कर वहाँ की हर एक चीज को दिखाने लगी तब उसे

विश्वास हो गया कि अब वह किसी तरह छिपी नहीं रह सकती , लोग जरूर उसे देख लेंगे और गिरफ्तार कर लेंगे ।

अतएव उसने कमान पर तीर चढ़ाया और संभलकर बैठ गई , सोच लिया कि जब तक तरकश में एक भी तीर मौजूद

रहेगा किसी को अपने पास फटकने न दूंगी ।

इसी बीच में मौका पाकर उसने नकली प्रभाकर सिंह को अपने तीर का निशाना बनाया । इंदु के हाथ से निकला हुआ

तीर नकली प्रभाकर सिंह के पैर में लगा और वह , " हाय " करके बैठ गया । उसके साथी उसके चारों तरफ जमा हो गए

और बोले , “ बेशक वह इसी जगह कहीं है और यह तीर उसी ने मारा है । अब उसे हम जरूर पकड़ लेंगे । तीर पूरब

तरफ से आया है ! "

एक और तीर आया और वह एक आदमी की पीठ को छेद कर छाती की तरफ से पार निकल गया ।

अब तो उन लोगों में खलबली पड़ गई और खोजने की हिम्मत जाती रही बल्कि जान बचाने की फिक्र पड़ गई , मगर

इस खयाल से कि तीर पूरब तरफ से आया है और मारने वाला भी उसी तरफ किसी पेड़ पर छिपा हुआ होगाा , दोनों

व्यक्तियों को छोड़कर बाकी के लोग इंदु की तरफ झपटे और चाँदनी की मदद पाकर बहुत जल्दी उस पेड़ को घेर लिया

जिस पर इंदु छिपी हुई थी ।

अब इंदु ने अपने को जाहिर कर दिया और जरा ऊँची आवाज में उसने दुश्मनों से कहा , " हाँ , हाँ बेशक मैं इसी पेड़ पर

तथा झुरमुट में उसे खोजने

हूँ , मगर याद रखो कि तुम लोगों को अपने पास आने न दूँगी बल्कि देखते ही देखते इस दुनिया को उठा दूंगी । "

इतना कहकर उसने पेड़ के नीचे के और भी एक आदमी को तीर से घायल किया । इसी समय ऊपर की तरफ से

आवाज आई , " शाबाश इंदु , शाबाश ! इन लोगों की बातचीत से मैं पहिचान गया कि तू इंदुमति है ! "

यह बोलने वाला भी उसी पेड़ पर था जिस पर इंदु थी मगर उससे ऊपर की एक ऊँची डाल पर बैठा हुआ जिसकी

आवाज सुन कर इंदुमति घबड़ा गई और सोचने लगी कि यह कोई दुश्मन तो नहीं है ! उसने पूछा , “ तू कौन है और यहाँ

कव से बैठा हुआ है ? "

जवाब : मैं तुमसे थोड़ी देर पहिले यहाँ आया हूँ बल्कि यों कहना चाहिए कि दूर से तुम लोगों को आते देखकर इस पेड़

पर चढ़ बैठा था , मैं तुम्हारा पक्षपाती हूँ और मेरा नाम भूतनाथ है । तुम तीर - कमान मुझको दो , मैं अभी तुम्हारे दुश्मनों

को जहन्नमुम में पहुँचा देता हूँ ।

इंदुमति : बस - बस - बस , मैं ऐसी बेवकूफ नहीं हूँ कि इस समय तुम्हारी बातों पर विश्वास कर लूँ जो अपना तीर - कमान ,

जिससे मैं अपनी रक्षा कर सकती हूँ । तुम्हारे हवाले करके अपने को तुम्हारी दया पर छोड़ दूँ । यद्यपि में औरत हूँ और

मेरी कमान कड़ी नहीं है तथा मेरे फेंके तीर दूर तक नहीं जाते , तथापि मेरा निशाना नहीं चूक सकता और मैं नजदीक

के दुश्मनों को बच कर नहीं जाने दे सकती । खैर तुम जो कोई भी हो समझ रखो कि इस समय मैं तुम्हारी बातों पर

विश्वास न करूँगी और तुम्हें कदापि नीचे न उतरने दूंगी , जरा भी हिलोगे तो मैं तीर मारकर तुम्हें दूसरी दुनिया में पहुँचा

दूंगी ।

इतने ही में नीचे कोलाहल बढ़ा और इंदुमति ने तीर मारकर और

आई " शाबाश इंदु शाबाश ! तू मुझे नीचे उतरने दे , फिर देख

इंदुमति : कदापि नहीं , मैं अपने दुश्मनों से आप समझ

आदमी को गिरा दिया । फिर ऊपर से आवाज

दुश्मनों से कैसा बदला लेता हूँ ! "

।

आवाज : और जब तुम्हारे तीर खत्म हो जाएँगे तब तुम क्या करोगी ?

इंदुमति : मेरे तीरों की गिनती दुश्मनों गिनती से बहुत ज्यादा है , तुम इसकी चिंता मत करो और चुपचाप बैठे रहो ।

आवाज : नहीं इंदु नहीं , तुम्हें मालूम नहीं है कि तुम्हारे दुश्मन यहाँ बहुत ज्यादा हैं । थोड़ी देर में वे सब इकट्ठे हो

जाएँगे और तब तुम्हारे तीरों की गिनती कुछ काम न करेगी ।

इंदुमति : ऐसी अवस्था में तुम्हीं क्या कर सकते हो जो एक औरत का मुकाबला करके नीचे नहीं उतर सकते ! खबरदार !

व्यर्थ की बकवास करके मेरा समय नष्ट न करो !!

फिर नीचे कोलाहल बड़ा और इंदुमति के तीर ने पुनः एक आदमी का काम तमाम किया । इंदु के ऊपर की तरफ बैठा

हुआ आदमी नीचे उतरने लगा और बोला , " खबरदार इंदु , मुझ पर तीर न चलाइए और सच जानियो कि मैं भूतनाथ हूँ

और अब नीचे उतरे बिना नहीं रह सकता ! "

इंदुमति : मैं जरूर तीर मारूँगी और भूतनाथ के नाम का मुलाहिजा न करूँगी ।

इतना कहकर इंदु ने उसकी तरफ तीर सीधा किया मगर घवड़ाकर दिल में सोचने लगी कि कहीं वह भूतनाथ ही न हो ।

उसी समय किसी हर्वे की चमक उसकी आँखों में पड़ी और उसकी तेज अक्ल ने तुरन्त समझ लिया कि यह बरछी है

जिससे कुछ आगे बढ़कर वह जरूर मुझ पर हमला करेगा , अस्तु दिल कड़ा करके इंदु ने उस पर तीर चला ही दिया जो

कि उसके मोढ़े में लगा , मगर इस चोट को सहकर और कुछ नीचे उतरकर उसने इंदु पर बरछी का वार किया , साथ ही

इंदु का दूसरा तीर पहुँचा जो कि न मालूम कहाँ लगा कि वह लुढ़क कर जमीन पर आ रहा और बेहोश हो गया । परन्तु

उसकी बरठी का वार भी खाली नहीं गया । इंदु के जंये में चोट आई । खून का तरारा बह चला और दर्द से वह बेचैन हो गई । कुशल हुआ कि वह बखूबी इंदु के पास नहीं पहुंचा था । अंदाज से कुछ दूर हो था इसलिए बरछी को चोट भी पूरी न बैटी , और कुछ और नजदीक आ गया होता तो इंदु भी पेड़ पर न ठहर सकती , जरूर नीचे गिर पड़ती ।

इंदु जनाना थी मगर उसका दिल मर्दाना था । यद्यपि इस समय वह दुश्मनों से घिरी हुई थी और बचने को आशा बहुत कम थी तथापि उसने अपने दिल को खूब सम्हाला और दुश्मनों को अपने पास फटकने न दिया । पेड़ पर से जिस आदमी ने इंदु को जख्मी किया था , इंदु के हाथ से जख्मी होकर उसके गिरने के साथ ही नीचे वालों में खलबली मच गई । सभी ने गौर के साथ उसे देखना और पहिचानना चाहा । एक ने कहा , “ यह तो भूतनाथ है ! " दूसरे ने कहा , " फिर इंदु ने इसे क्यों मारा ! "

इत्यादि बातें होने लगी जो इंदु के दिल में तरह - तरह का खुटका पैदा करने वाली थीं मगर उसने उसको कुछ भी परवाह न की और दुश्मनों पर तीर का वार करने लगी । ग्यारह दुश्मनों में से सात को उसने जख्मी किया जिसमें उसके बारह तीर खर्च हुए मगर चार - पाँच दुश्मनों ने बड़ी चालाकी से अपने को बचाया और सर पर दाल रख

के इंदु को पकड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ने लगे । इंदु ने पुनः तीर मारना आरम्भ किया मगर उसका कोई अच्छा नतीजा न निकला क्योंकि उसके चलाए हुए तीर अब ढाल पर टक्कर खाकर बेकार हो जाते थे ।

अब इंदु का कलेजा धड़कने लगा । वह जख्मी हो चुकी थी और उसका तरकस भी खाली हो चला था , पेड़ पर चढ़ने वाले बड़े ही कट्टर और लड़ाके आदमी थे अतएव उन्होंने इंदु के तोरों को कुछ भी परवाह न की और उसके पास पहुँचकर उसे गिरफ्तार करने

ही तुल गए । ऐसी हालत देख इंदु ने अपने को उनके हाथ में फंसने की बनिस्वत दे देना अच्छा समझा लुड़ककर पेड़ के नीचे गिर पड़ी

संत चोट खाकर बेहोश हो गई ।

जब इंदु होश में आई और उसने आँखें खोली तो अपने को एक सुन्दर मसहरी पर पड़े पाया और मय सामान कई

लौडियों की खिदमत के लिए हाजिर देखकर ताज्जुब करने लगी ।

आँख खुलने पर इंदु ने एक ऐसी औरत को भी अपने सामने इज्जत के साथ बैठे देखा जिसे अब हकीमिन जी के नाम

से संबोधन करती थी और जिसके विषय में जाना गया कि वह इंदुमति का इलाज कर रही है ।

निःसन्देह इंदुमति को गहरी चोट लगी थी और उसे करवट बदलना भी बहुत कठिन हो रहा था । उसे इस बात का बड़ा

ही दुःख था कि वह जीती बच गई और दुश्मनों के हाथ में फँस गई , परन्तु उस समय जितनी औरतें वहाँ मौजूद थीं ,

सभी खूबसूरत , कमसिन , खुशदिल , हँसमुख और हमदर्द मालूम होती थीं । सभी को इस बात की फिक्र थी कि इंदुमति

शीघ्र अच्छी हो जाय और उसे किसी तरह की तकलीफ न रहे । सभी प्यार के साथ उसकी खिदमत करती थीं , दिल

बहलाने की बातें करती थीं , और कई उसके पास बैठी सर पर हाथ फेरती हुई प्रेम से पूछतीं कि ' कहो बहन , मिजाज

कैसा है ? अब तुम किसी बात की चिंता न करो , यह घर तुम्हारे दुश्मनों का नहीं है बल्कि दोस्तों का है जो कि बहुत

जल्द तुम्हें मालूम हो जाएगा कि दुश्मनों के हाथों से तुम किस तरह छुड़ा ली गई । जरा तबीयत अच्छी हो जाय

तो मैं सब रामकहानी कह सुनाऊँगी , तुम किसी तरह की चिंता न करो ' ! इत्यादि !

इन बातों से मालूम होता था कि ये सब - की - सब लोंडी ही न थी बल्कि अच्छे खानदान की लड़कियाँ थीं और दो - एक तो

ऐसी थीं जो बराबरी का (बल्कि उससे भी बढ़कर होने का दावा रखती

भूतनाथ पहला भाग

यह सब कुछ था परन्तु इंदुमति को इस बात ठीक पता नहीं

दोस्तों की । यद्यपि उसकी हर तरह से खिदमत होती थीं ,

और जिससे वह खुश हो , वह करने के लिए सब तैयार

नहीं होता था ।

था कि वह वास्तव में दुश्मनों की मेहमान है या

खातिरदारी की जाती थी , उसे भरोसा दिलाया जाता था

थीं , यह सब कुछ था मगर फिर भी उसके दिल को भरोसा

इसी तरह समय बीतता गया और इंदु सम्हलती गई । उसे होश में आये आज तीसरा दिन है , दर्द में भी

बहुत कमी है और वह दस - बीस कदम भी सकती है । आज ही उसने कुछ थोड़ा - बहुत भोजन भी लिया है और इस

फिक्र में तकिए का सहारा लगाए है कि आज किसी - न - किसी तरह इस बात का निश्चय जरूर करूंगी कि वास्तव में

मैं किसके कब्जे में हूँ ।

उसकी खातिर करने वालियों में दो औरतें ऐसी थीं जिन पर इंदु का भरोसा हो गया था और जिन्हें इंदु सबसे बढ़कर

उच्च कुल की नेक और होनहार समझती थी । एक का नाम कला और दूसरी का नाम बिमला था । सबसे ज्यादे ये ही

- दोनों इंदु के साथ रहा करती थीं ।

रात पहर भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी । चिंता निमग्न इंदु अपनी चारपाई पर लेटी तरह - तरह की बातें सोच रही

थीं । उसी के पास दो चारपाइयाँ और बिछी हुई थीं जो कला और बिमला के सोने के लिए थीं । कला अपनी चारपाई पर

नहीं बल्कि इंदु के पास उसकी चारपाई का ढासना लगाये बैठी हुई थी मगर बिमला अभी तक यहाँ आई न थी । कई

सायत तक सन्नाटा रहने के बाद इंदु ने बातचीत शुरू की ।

इंदुमति : कला , कुछ समझ नहीं आता कि तू मुझसे यहाँ का भेद क्यों छिपाती है और साफ - साफ क्यों नहीं कहती कि

यह किसका मकान है ?

कला : बहिन , मैं जो तुमसे कह चुकी कि यह तुम्हारे दुश्मन का मकान नहीं है बल्कि तुम्हारे दोस्त का है तो फिर क्यों

ताजुब करती हो ?

इंदमति : तो क्या में अपने दोस्त का नाम नहीं सुन सकती ? आखिर नाम छिपाने का सबब ही क्या है ?

कला : छिपाने का सबब केवल इतना ही है कि यहां का हाल सनकर जितना तुम्हें आनन्द होगा उतना ही बल्कि उससे ज्यादे दुख होगा और हकीमिन जी का हुक्म है कि अभी तुम्हें कोई ऐसी बात न कही जाय जिससे रंज हो ।

इंदमति : यह कोई बात नहीं है , अगर है तो हकीमिनजी का केवल नखरा है और तुम लोगों का बहाना ।

कला : अगर तुम ऐसा ही समझती हो तो लो आज मैं यह सब हाल कह दूँगी , मगर शर्त यह है कि सिवाय विमला के और किसी को भी मालूम न हो कि मैंने तुमसे कुछ कहा था ।

इंदमति : नहीं नहीं , मैं कसम खाकर कहती हूँ कि अपनी जुबान से किसी से भी कुछ न कहूँगी ।

कला : अच्छा तो कुछ रात बीत जाने दो और विमला को भी आ जाने दो ।

इतने ही में विमला ने भी चौखट के अन्दर पैर रखा !

इंदुमति : लो बिमला भी आ गई ।

कला : अच्छा हुआ मगर जरा सन्नाटा हो जाने दो !

बिमला : (कला के पास बैठ कर) क्या बात है ?

कला : (धीरे से) ये यहाँ का हाल जानने के लिए बेताब हो

विमला : इनका बेताब होना उचित ही है मगर (इंदु था नहीं तो ..

तरफ देख के) आप तंदुरुस्त हो जाती तब इसे पूछतीं तो अच्छा

इंदुमति : यही हठ तो और भी उत्कंठित करती है ।

विमला : सुनने से आपको जितनी खुशी होगी उससे ज्यादे रंज होगा ।

इंदुमति : बला से , जो होगा देखा जाएगा ! मगर (उदासी से) तुमसे तो मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि ..

विमला : (इंदु का हाथ प्रेम से दबाकर) बहिन , मैं तुमसे कोई बात नहीं छिपाऊँगी , कहूँगी और जरूर कहूंगी ।

इंदुमति : तो फिर कहो ।

विमला : अच्छा सुनो मगर किसी के सामने इस बात को कभी दोहराना मत ।

इंदुमति : कदापि नहीं ।

विमला : अच्छा खैर ... यह बताओ कि तुम्हें अपना मायका (बाप का घर) छोड़े कितने दिन हुए ?

इंदुमति : (कुछ सोच के) लगभग एक वर्ष और सात महीने के हुए होंगे , शादी भई और मायका छूटा । तब से आज तक दुःख - ही - दुःख उठाती रही । मैं अपनी माँ और मौसेरी बहिनों को फूट - फूट कर रोती हुई छोड़ कर पति के साथ रवाना हुई थी , वह दिन कभी भूलने वाला नहीं ।

इतना सुनते ही कला और विमला की आँखों में आँसू आ गये ।

बिमला : (आँसू पोंछ कर) मुझे भी वह दिन नहीं भूलने का !

इंदुमति : (आश्चर्य से) बहिन , तुम्हें वह दिन कैसे याद है , तुम वहाँ कहाँ थीं ?

विमला : मैं थी और जरूर थी , बल्कि हम दोनों बहनें (कला की तरफ इशारा करके) वहाँ थीं ।

इंदुमति : सो कैसे , कुछ कहो भी तो ।

बिमला : बस इतना ही तो असल भेद है , सब बातें इसी से संबंध रखती हैं । (धीरे से) तुम्हारी वे दोनों मौसेरी बहिनें हम

दोनों कला और बिमला के नाम से आज साल - भर से यहाँ निवास करती हैं । यद्यपि देखने में हर तरह से सुख भोग रही

हैं मगर वास्तव में हमारे दुःख का कोई पारावार नहीं !

इंदुमति : (बड़े ही आश्चर्य से) यह तो तुम ऐसी बात कहती हो कि जिसका स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता ! यद्यपि

तुम दोनों की उम्र वही होगी , चाल - ढाल , बातचीत सब उसी ढंग की है , मगर सूरत - शक्ल जमीन - आसमान का फर्क है ,

ओह ! नहीं , यह कैसे हो सकता है । मुझे कैसे विश्वास हो सकता है ?

बिमला : (मुसकराकर) हम दोनों की सूरत - शक्ल में भी किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा । मैं सहज ही में विश्वास दिला

दूंगी कि जो कुछ कहती हूँ वह बाल - बाल सच है । अच्छा ठहरो , मैं तुम्हें बता देती हूँ ।

इतना कहकर बिमला उठी और उसने इस कमरे के कुल दरवाजे

कर दिए ।

इंदु जबसे यहाँ आई है तबसे इसी कमरे में है , उसे इसके का हाल कुछ भी मालूम नहीं है , वह नहीं जानती कि

इस कमरे के बाहर कोठरी है या दालान , बारहदरी सायबान , पहाड़ है या बियाबान । होश में आने के बाद उसमें

अभी बाहर निकलने की ताकत ही नहीं आई । इसके भीतर की तरफ दो कोठरी , एक पायखाना और एक नहाने का

घर है , इन्हें इंदु जरूर जानती है क्योंकि इन कोठरियों से उसे वास्ता पड़ चुका है ।

विमला इंदु के पास से उठकर

लौटकर मुसकराती हुई इंदु के

पाजा बंद करने के बाद उसी नहाने वाली कोठरी में चली गई और थोड़ी ही देर में

आई और बोली , “ अब तुम मुझे गौर से देखो और पहचानो कि मैं कौन हूँ ! "

यद्यपि इंदु बीमार , कमजोर और हतोत्साह थी तथापि विमला की नवीन सूरत देखते ही चौंकी और उठकर गले से लिपट

गई ।

बिमला : वस समझ लो कि इसी तरह कला भी सूरत बदले हुए हैं । हम दोनों बहनें एक साथ एक ही अनुष्ठान साधन

के लिए सूरत बदल कर ग्रहदशा के दिन काट रही हैं । जब तक कमबख्त भूतनाथ से बदला न ले लेंगी तब तक ..

' इंदुमति : (बिमला को छोड़ कर) अहा ! मुझे कब आशा थी कि इस तरह अपनी बहिन जमना , सरस्वती को देखूगी , मगर

भूतनाथ ..

कला : (बिमला से) बस बहिन , अब बातें पीछे करना पहिले अपनी सूरत बदलो और उस झिल्ली ' को चढ़ाकर बिमला

बन जाओ , दरवाजे खोल दो और आराम से बातें करो ।

विमला उठी और पुनः उसी कमरे में जाकर अपनी सूरत पहिले जैसी बनाकर लौट आई । काम केवल इतना ही था कि

एक अद्भुत झिल्ली जो अपने चेहरे से उतारी थी फिर चढ़ाकर जैसी - की - तैसी बन बैठी । कला ने कमरे के दरवाजे खोल

दिए और आराम के साथ बैठकर फिर तीनों बातचीत करने लगीं ।

इंदुमति : वहिन , तुमसे मिलकर मैं बहुत प्रसन्न हुई , अब तुम अपना हाल कह जाओ और यह बताओ कि यह मकान किसका है , मेरी मौसी का या मेरी माँ का !

बिमला : दोनों में किसी का भी नहीं ।

इंदुमति : (ताज्जुब से) तो क्या तुम दोनों लावारिस हो गईं ? कोई तुम्हारा मालिक नहीं रहा ?

विमला : रहा और नहीं भी रहा !

इंदुमति : सो कैसी बात ? यह मैं जानती हूँ कि दयारामजी के मरने से तुम दोनों विधवा हो गईं क्योंकि भाग्यवश दोनों बहिनें एक ही साथ ब्याही गई थीं फिर भी हम लोगों के माँ - बाप ऐसे गए - गुजरे नहीं कि हम लोग लावारिस समझी

जायें ।

विमला : (अपनी आँखों से आँसू पोंछ कर) नहीं लावारिस तो नहीं हैं मगर अभागी और दैव की सताई हुई जरूर हैं । हम दोनों बहिनों को मालूम हो गया कि हमारे निर्दोष पति को गदाधरसिंह ने मारा है और बस यही जान लेना हमारी इस ग्रहदशा का कारण है ।

इंदुमति : (चौंककर) हैं ! कौन गदाधरसिंह ?

बिमला : वही जो हमारे ससुर का ऐयार और हमारे पति का दिलीदोस्त इंदुमति : (बड़े ही आश्चर्य से) यह बात तबीयत में नहीं जमती । ऐयारी के फन से यह बिलकुल ही विरुद्ध है । ऐयार चाहे कैसा ही बेईमान क्यों न हो मगर मालिक के साथ ऐसा कभी नहीं करेगा और गदाधरसिंह तो एक नेक ऐयार गिना जाता है , एक दफे मैंने भी उसकी सूरत देखी है ।

बिमला : बहिन , बेशक ऐसा ही है । यद्यपि अभी किसी को इस बात की खबर नहीं है , यहाँ तक कि मेरे माँ - बाप और ससुर को भी इस बात का विश्वास नहीं

। मगर मुझे तो जो कुछ पता लगा है वह यही है और बहुत ठीक भी

कला : और इतना भी मैं कहूँगी कि मेरे ससुर को भी इस बात का शक जरूर हो गया , खास करके तबसे जबसे गदाधरसिंह ने अपना काम या हमारे यहाँ का रहना एक प्रकार से छोड़ दिया है , यद्यपि हमारे ससुर इस विचार को प्रकट नहीं करते ।

बिमला : इस समय वही गदाधरसिंह तुम्हारा रक्षक बना है और भूतनाथ के नाम से तुम्हारे साथ दोस्ती दिखलाता है , मगर हम दोनों कब उस पर विश्वास करने लगीं !

इंदुमति : (चौंक कर) हैं !! क्या वही गदाधरसिंह भूतनाथ बना है ?

बिमला : हाँ वही भूतनाथ है जिसके फंदे से बचाकर मैं तुमको यहाँ ले आई ।

कला : बहिन , हम दोनों वे बातें जानती हैं जो अभी दुनिया में किसी को मालूम नहीं हैं या अगर मालूम हैं भी तो केवल दो ही चार आदमियों को ।

बिमला : मैं भी भूतनाथ को वह मजा चखाऊँगी कि उसे नानी याद आ जाएगी और वह समझ जाएगा कि दुनिया में औरतें कहाँ तक कर सकती हैं ।

इंदुमति : तुम्हारी वातों ने तो मुझे पागल बना दिया ! मैं वे बातें सुन रही हूँ जिसके सुनने की आशा न थी । तो तुम यह

भी कहोगी कि गुलाबसिंह ने भी हम लोगों के साथ दगा की और जान - बूझकर हम दोनों को भूतनाथ के हवाले कर

दिया ?

विमला : कौन गुलावसिंह ?

इंदुमति : वही गुलावसिंह , भानुमति वाला ।

बिमला : (कुछ सोचकर) इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकती , क्योंकि अभी तक मैंने तुम्हारी जुबानी तुम्हारा हाल कुछ

भी नहीं सुना । मैं नहीं जानती कि तुम क्योंकर घर से निकलीं , तुम पर क्या आफतें आईं , और गुलाबसिंह ने तुम्हारे साथ

क्या सलूक किया । तथापि गुलाबसिंह पर शक करने की इच्छा नहीं होती क्योंकि वह बड़ा नेक और ईमानदार आदमी है

तथा हमारे घर के कई एहसान भी उसके ऊपर हैं यदि वह मानें । यों तो आदमी का ईमान बिगड़ते कुछ देर नहीं लगती

क्योंकि आदमी का शैतान हरदम आदमी के साथ रहता है ।

इंदुमति : ठीक है , अच्छा मैं भी अपना हाल कह सुनाऊँगी मगर पहिले यह सुन लूँ कि क्योंकर यहाँ आई हो क्योंकर

तुमने मुझे दुश्मनों के हाथ से बचाया है ।

विमला : हाँ - हाँ , मैं कहती हूँ सुनो । अच्छा यह बताओ कि तुम उन दुश्मनों को

इंदुमति : नहीं , बिलकुल नहीं ।

बिमला : वे महाराज शिवदत्त के आदमी थे !

इंदुमति : ओफ ओह , जिसके खौफ से हम लोग भागे

हाथ से बचाया है ।

बिमला : हाँ , बेशक वैसा भी कह सकते

शिवदत्त ही के आदमियों के हाथ में

उन लोगों के हाथ से तुम्हें छुड़ा

क्योंकि भूतनाथ तो हम लोगों का सबसे बड़ा दुश्मन ठहरा , मगर इधर तुम

थीं । इत्तिफाक से हम लोग भी उसी समय वहाँ जा पहुँचे और लड़ - भिड़ कर

बस यही तो मुख्तसर हाल है ।

इंदुमति : (आश्चर्य से) तुममें इतनी ताकत कहाँ से आ गई कि उन लोगों से लड़ कर मुझे छुड़ा लाईं ?

बिमला : (मुसकुराती हुई) हाँ इस समय मुझमें इतनी ताकत है । मेरे पास दो ऐयार हैं तथा बीस - पच्चीस सिपाही भी

रखती हूँ ।

इंदुमति : तो ये सब तुम्हारे बाप या ससुर के नौकर होंगे ? जरूरत पड़ने पर तुम्हें उनसे इजाजत लेनी पड़ती होगी ?

' बिमला : (एक लंबी साँस लेकर) नहीं बहिन , ऐसा नहीं है । हम दोनों अपने घर और ससुराल से मंजिलों दूर पड़े हुए हैं ।

हम लोगों की किसी को कुछ खबर ही नहीं बल्कि यों कहना कुछ अनुचित न होगा कि अपने नातेदारों के खयाल से हम

दोनों बहिनें मर चुकी हैं और किसी को खोजने या पता लगाने की भी जरूरत नहीं ।

इंदुमति : (आश्चर्य से) तुम्हारी बातें तो बड़ी ही विचित्र हो रही हैं । अच्छा तो तुम यहाँ किसके भरोसे पर बैठी हो और

तुम्हारा मददगार कौन है ?

बिमला : यह बहुत ही गुप्त बात है , तुम भी किसी से इसका जिक्र न करना । मैं यहाँ इन्द्रदेव के भरोसे पर हूँ । वही मेरे

मददगार हैं और यह उन्हीं का स्थान है । वही मेरे बाप हैं , वही मेरे ससुर हैं , और इस समय वहीं मेरे पूज्य इष्टदेव हैं !

मगर अभी तुम कह चुकी हो कि मैंने तुम्हें भूतनाथ के

हो जिनके हाथ में फंसी थीं ?

इंदुमति : कौन इन्द्रदेव ?

विमला : वही तिलिस्मी इन्द्रदेव ! मेरे ससुर के सच्चे मित्र !!

इंदुमति : (सिर हिला कर) आश्चर्य ! आश्चर्य !! और तुम्हारे ससुर को इस बात की खबर नहीं है ।

विमला : हाँ बिलकुल नहीं है ।

इंदुमति : यह कैसी बात है ?

विमला : ऐसी ही बात है । मैं जो कह चुकी कि उन लोगों के खयाल से हम दोनों इस दुनिया में नहीं है ।

इंदुमति : आखिर उन्हें इस बात का विश्वास कैसे हुआ कि जमना और सरस्वती मर गईं ? बिमला : सो मैं नहीं जानती क्योंकि यह कार्रवाई इन्द्रदेव जी की है , मैं सूर्यमासी (इन्द्रदेव की स्त्री) के यहाँ न्यौते में आई थी , उसी जगह उन्होंने (इन्द्रदेव ने) मुझे गुप्त भाव से बताया कि भूतनाथ ने मेरे पति के साथ कैसा सलूक किया । मालूम होते ही मेरे तन - बदन में आग - सी लग गई और मैंने उसी समय उनके सामने प्रतिज्ञा की कि ' भूतनाथ से इसका बदला जरूर लूँगी । (एक लंबी साँस लेकर) गुस्से से प्रतिज्ञा तो कर गई मगर अब विचारा तो कहाँ मैं और कहाँ भूतनाथ । पहाड़ और राई का मुकाबला कैसा ? ऐसा खयाल आते ही मैं इन्द्रदेव पैरों पर गिर पड़ी और बोली कि ' मेरी इस प्रतिज्ञा की लाज आपकी है , बिना आपकी मदद के मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो सकती और वैसी अवस्था में मुझे आपके सामने ही प्राण दे देना पड़ेगा ' इत्यादि ।

इन्द्रदेव को भी इस अनुचित घटना का बड़ा दुःख था परन्तु उस अवस्था ने उन्हें और दुःखित कर दिया तथा मेरी प्रार्थना पर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया बल्कि मेरी प्रतिज्ञा करना उन्होंने आवश्यक और धर्म समझ लिया । बस फिर क्या था , मेरे मन की भई ! जैसा कि मैं चाहती थी बढ़कर उन्होंने मुझे मदद दी और सच तो यह है कि उनसे बढ़कर इस दुनिया में मुझे कोई मदद दे ही सकता । खैर मैं खुलासा हाल फिर कभी सुनाऊँगी , मुखसर यह है कि उन्होंने हर प्रकार की मदद करने का बंदोब करके हम दोनों को समझाया कि अब किसी तरह की जिंदगी हम दोनों को अख्रियार करनी चाहिए ।

सबसे पहिले इन्द्रदेव जी ने यही बताया कि ' प्रकट में तुम दोनों बहिनों को इस दुनिया से उठ जाना चाहिए अर्थात् तुम्हारे रिश्तेदारों के साथ - ही - साथ और सभी को यह मालूम हो जाना चाहिए कि जमना और सरस्वती मर गईं । यह बात मुझे पसन्द आई । आखिर इन्द्रदेव ने हम दोनों की सूरत बदलकर रहने और अपना काम करने का बंदोबस्त करके न

मालूम हमारे रिश्तेदारों को कैसे क्या समझा दिया और क्योंकर विश्वास दिला दिया कि सब कोई हमारी तरफ से • निश्चिन्त हो गए । उनकी इच्छानुसार बहुत ही गुप्त भाव से हम दोनों यहाँ कला और बिमला के नाम से रहती हैं । जो

लोग हमारे साथ हैं वे सब इन्द्रदेव जी के अदमी हैं मगर उनको भी यह नहीं मालूम है कि हम दोनों वास्तव में जमना और सरस्वती हैं !

इंदुमति : (आश्चर्य से) क्या तुम्हारे घर में जितने आदमी हैं उनमें से किसी को भी तुम्हारा सच्चा हाल मालूम नहीं है ?

बिमला : किसी को भी नहीं ।

इंदुमति : तो फिर मेरे बारे में तुमने लोगों को क्या समझाया है ?

बिमला : मैंने यही किसी को भी नहीं कहा कि तुम मेरी रिश्तेदार हो , केवल यही कहा कि तुम्हें भूतनाथ तथा शिवदत्त के हाथ से बचाना हमारा धर्म है । अस्तु अब उचित यही है कि हमारी तरह तुम भी अपनी सूरत बदल कर यहाँ रहो और अपने दुश्मनों से बदला लो , हम लोगों का बाकी हालचाल तुम्हें आप ही धीरे - धीरे मालूम हो जाएगा ।

इंदुमति : ठीक है , और जैसा तुम कहती हो मैं वैसा ही करूँगी , मगर (सिर झुका कर) मेरे पति का मुझसे ..

बिमला : (बात काट कर) नहीं - नहीं , उनके बारे में तुम कुछ भी चिंता मत करो , आज मैं उनको तुम्हें जरूर दिखा दूंगी और फिर ऐसा बंदोबस्त करूँगी कि तुम दोनों एक साथ

इंदुमति : (प्रसन्न होकर) इससे बढ़ कर मेरे लिए और कोई दूसरी बात नहीं हो सकती , मगर यह तो बताओ कि इस समय वे कहाँ हैं :

विमला : (मुसकुराती हुई)

इस समय वे मेरे ही घर में हैं और मेरे कब्जे में हैं ।

इंदुमति : (घबड़ाकर) यह कैसी बात ? अगर यहीं हैं तो मुझे दिखाओ ।

बिमला : में दिखाऊँगी , मगर जरा रुकावट के साथ ।

इंदुमति : सो क्यों ?

बिमला : (कुछ सोच कर) अच्छा चलो पहिले मैं तुम्हें उनके दर्शन करा दूं फिर सलाह - विचार करके जैसा होगा देखा जाएगा । मगर इस सूरत में मैं तुम्हें उनके सामने न ले जाऊँगी ।

इंदुमति : सो क्यों ?

विमला : तुम अपनी सूरत बदलो और इस वात का वादा करो कि जब मैं उनके सामने तुम्हें ले जाऊँ तो चुपचाप देख लेने के सिवाय उनके सामने एक शब्द भी मुँह से

इंदुमति : आखिर इसका सबब क्या है ?

बिमला : सबब पीछे बताऊँगी ।

इंदुमति : अच्छा तो फिर जो कुछ तुम कहती हो मुझे मंजूर है ।

“ अच्छा लो मैं बंदोबस्त करती हूँ । " यह कहकर बिमला उठी और कुछ देर के लिए कमरे के बारह चली गई । जब लौटी

तो उसके हाथ में एक छोटी - सी संदूकड़ी थी। उसी में से सामान निकालकर उसने इंदुमति की सूरत बदली और वैसी ही • एक झिल्ली उसके चेहरे पर भी चढ़ाई जैसी आप पहिरे हुए थी। जब हर तरह से सूरत दुरुस्त हो गई तब हाथ का

सहारा देकर उसने इंदु को उठाया और कमरे के बाहर ले गई।

कमरे के बाहर एक दालान था जिसके एक बगल में तो ऊपर की मंजिल में चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ थीं तथा उसी के बगल में नीचे उतर जाने की रास्ता था और दालान के दूसरी तरफ बगल में सुरंग का मुहाना था मगर उसमें मजबूत दरवाजा लगा हुआ था। इंदु को उसी सुरंग में बिमला के साथ जाना पड़ा।

सुरंग बहुत छोटी थी , तीस - पैंतीस कदम जाने के बाद उसका दूसरा मुहाना मिल गया जहाँ से सुबह की सफेदी निकल आने के कारण मैदान की सूरत दिखाई दे रही थी। जब इंदुमति वहाँ हद पर पहुँची तब उसकी आँखों के सामने वही सुन्दर घाटी या मैदान तथा बंगला था जिसका हाल हम इस भाग के चौथे बयान में लिख आए हैं या यों कहिए कि जहाँ पर एक पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर प्रभाकर सिंह ने तारा को बैठा देखा था।

वही त्रिकोण घाटी और वही सुन्दर बंगला जिसके चारों कोनों पर मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ थे इंदुमति की आँखों के

सामने था जिन्हें वह बड़े गौर से देख रही थी बल्कि यों कहना चाहिए कि वहाँ की सुंदरता और कुदरती गुलबूटों ने इंद की निगाह पड़ने के साथ ही लुभा लिया और इसके साथ ही प्रभाकर सिंह की याद ने आँसू बनकर निगाह के आगे पदा डाल दिया।

आँखें साफ करके वह हर एक चीज को गौर से देखने लगी। इसी बीच एक चट्टान पर बैठे हुए प्रभाकर सिंह पर उसकी निगाह पड़ी जिनके चारों तरफ कुदरती सुन्दर पौधे और खुशरंग फूलों के पेड़ बहुतायत से थे जो उदास आदमी के दिल को भी अपनी तरफ खींच लेते थे और जिन पर सूर्य भगवान की ताजी - ताजी किरणें पड़ रही थीं।

आह , प्रभाकर सिंह को देखकर इंदुमति की कैसी अवस्था हो गई यह लिखना हमारी सामर्थ्य के बाहर है । वह कुछ देर तक एकटक उनकी तरफ देखती रही । न तो वहाँ से नीचे की तरफ उतरने का कोई रास्ता था और न वह यही जानती थी कि वहाँ तक क्योंकर पहुँच सकेगी , अस्तु वह बैचेन होकर घूमी और यही कहती हुई बिमला के गले से लिपट गई कि ' बहिन , तुम वेशक् तिलिस्म की रानी हो गई हो ' !

विमला : बहिन , घबड़ाओ मत , जरा गौर से देखो तो ..

इंदुमति : (बिमला को छोड़ कर) तो क्या जो कुछ मैं देख रही हूँ केवल भ्रम है ?

बिमला : नहीं , ऐसा नहीं है ।

इंदुमति : तो फिर यह स्थान किसका है ?

बिमला : इस समय तो मेरा ही है ।

इंदुमति : तो क्या ये भी तुम्हारे ही मेहमान हैं ?

बिमला : बेशक ।

इंदुमति : कब से ?

बिमला : कई दिनों से , या यों

कि जबसे तुम आई हो उससे भी पहिले

इंदुमति : (आश्चर्य , दुःख और क्लेश से) तब तुमने इनसे मुझे मिलाया क्यों नहीं बल्कि हाल तक नहीं कहा , ऐसा क्यों ?

बिमला : इसके कहने का मौका ही कब मिला ! आज ही तो इस योग्य हुई हो कि कुछ बातें कर सकूँ , इसके अतिरिक्त तुम्हारी मुलाकात के बाधक वे स्वयं भी हो रहे हैं । जिस तरह तुम मेरा साथ दिया चाहती हो उस तरह वे मेरा साथ नहीं दिया चाहते , जिस तरह तुमसे मुझे उम्मीद है उस तरह उनसे नहीं , जिस तरह तुम मेरा पक्ष कर सकती हो और करोगी उस तरह वे नहीं करते बल्कि आश्चर्य यह है कि वे भूतनाथ के पक्षपाती हैं और इसी बात का उन्हें हठ है , फिर तुम ही ' सोचो कि मैं क्योंकर ..

इंदुमति : (जोर देकर) नहीं बहिन ! ऐसी भला क्या बात है , उन्हें सच्चे मामले की खबर न होगी !

बिमला : सब कुछ खबर है , इसी वास्ते मैं उन्हें यहाँ लाई थी और भूतनाथ के कब्जे से पहिले ही दिन , जब तुम लोग सुरंग में घुसे थे छुड़ाने का उद्योग किया था परन्तु खेद यह है कि वे (प्रभाकर सिंह) तो मेरे कब्जे में आ गए और तुम आगे निकल गईं जिससे तुम्हें इतना कष्ट भी भोगना पड़ा ।

इंदुमति : (आश्चर्य से) सो कैसी बात ? तुम्हीं ने उन्हें मुझसे जुदा किया था ?

विमला : हाँ ऐसा ही है । (हाथ का इशारा करके) बस इसी घाटी के बगल ही में उस तरफ भूतनाथ का स्थान है , रास्ता

भी करीब - करीब मिलता - जुलता है । भूतनाथ की घाटी में जाने के लिए जो रास्ता या सुरंग है उसी में से एक रास्ता हमारे

यहाँ भी जाने के लिए है । इसके अतिरिक्त यहाँ आने के लिए एक रास्ता और भी है जिससे प्रायः हम लोग जाया जाया

करते हैं । जिस समय तुम लोग भूतनाथ के साथ सुरंग में घुसे थे उस समय मैं देख रही थी ।

इंदुमति : फिर तुमने कैसे उन्हें बुला लिया ?

इसके जवाब में बिमला ने खुलासा हाल जिस तरह प्रभाकर सिंह को सरंग के अन्दर धोखा देकर अपने कब्जे में ले आई

थी बयान किया जो कि हम चौधे बयान में लिख चुके हैं ।

अब हमारे पाठक समझ गए होंगे कि भूतनाथ के पीछे - पीछे सुरंग के अन्दर चलने वाले प्रभाकर सिंह को जिन्होंने धोखा

देकर गायब किया वे बिमला और कला यही दोनों बहिनें थीं और यह काम उन्होंने नेकनीयती के साथ किया था ऐसा

ही इंदुमति का विश्वास है ।

खुलासा हाल सुनकर इंदुमति कुछ देर तक चुप रही फिर बोली

इंदुमति : अच्छा यह बताओ कि मेरे आने की उन्हें खबर भी है या नहीं ?

बिमला : कुछ - कुछ खबर है ! तुम्हारे लिए वे बहुत ही बेचैन हैं , कलपते हैं ,

छोड़ते ।

है मगर तुम हरएक बात को अच्छी तरह सोच - विचार लो । इंदुमति : तुमने अपने को उन पर प्रकट कर दिया ?

बिमला : हाँ , भेद छिपा रखने की कसम खिलाकर मैंने

जिसे जान कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए मगर इस

गुलावसिंह भूतनाथ का दोस्त है और गुलाबसिंह

बतला दिया कि हम दोनों बहिनें जमना और सरस्वती हैं

उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि भूतनाथ मेरे पति के घातक हैं ,

उन्हें पूरा विश्वास है ।

चलो , देखें वे क्योंकर राजी नहीं होते और कैसे तुम्हारा साथ नहीं देते ।

इंदुमति : अच्छा तुम मुझे उनके सामने

बिमला : मुझे इसमें कोई उन ।

इंदुमति : (जोर देकर) कोई परवाह नहीं , तुम वहाँ चलो , (कुछ सोचकर) मगर मैं अपनी असली सूरत में उनके सामने

जाऊँगी !

बिमला : जैसी तुम्हारी मर्जी , चलो पीछे की तरफ लौटी , एक सुरंग के रास्ते पहिले (उँगली का इशारा करके) उस बीच

वाले बंगले में पहुँचना होगा तब उनके पास जा सकोगी ।

मगर फिर भी भूतनाथ का पक्ष नहीं

प्रभाकर सिंह को इस घाटी में आए यद्यपि आज लगभग एक सप्ताह हो गया मगर दिली तकलीफ के सिवाय और किसी

बात की उन्हें तकलीफ नहीं हुई । नहाने - धोने , खाने - पीने , सोने - पहिरने इत्यादि सभी तरह का आराम था परन्तु इंदु के

लिए वे बहुत ही बेचैन और दुखी हो रहे थे । जिस समय वे उस घाटी में आये थे उस समय वे बल्कि उसके दो - तीन घंटे

बाद तक वे बड़े ही फेर और तरदुद में पड़े रहे क्योंकि कला और विमला ने उनके साथ बड़ी दिल्लगी की थी , मगर

इसके बाद उनकी घबराहट कम हो गई जब कला और विमला ने उन्हें बता दिया कि वे दोनों वास्तव में जमना और

सरस्वती हैं ।

पेड़ के साथ लटकते हुए हिंडोले पर बैठने वाली औरत ने उन्हें थोड़ी देर के लिए बड़े ही धोखे में डाला । जब उन्हें पेड़

पर चढ़ने का इरादा किया तो वहाँ पहरा देने वाले दोनों नौजवान लड़कों ने गड़बड़ मचा दिया । दौड़ते हुए और कई

आदमियों को बुला लाए जिन्होंने प्रभाकर सिंह को घेर लिया मगर किसी तरह की तकलीफ नहीं दी और न कोई कड़ी

बात ही कही ।

दोनों नौजवान लड़कों के हल्ला मचाने पर जितने आदमी वहाँ इकट्ठे हो गए थे वे सब कद में छोटे बल्कि उन्हीं दोनों

नौजवान सिपाहियों के बराबर थे जिन्हें देख प्रभाकर सिंह ताज्जुब करने लगे और लगे कि क्या वे लोग वास्तव

में मर्द हैं ?

पहिले तो क्रोध के मारे प्रभाकर सिंह की आँखें लाल हो गईं मगर जब सोचने - विचारने पर उन्हें मालूम हो गया कि

ये सब मर्द नहीं औरतें हैं तब उनका गुस्सा कुछ शान्त हुआ और सभों की इच्छानुसार वे उस बंगले के अन्दर चले

गए जिसमें छोटे - बड़े सब मिलाकर ग्यारह कमरे थे ।

होता है कि यह मकान आप ही का है ! " बीच वाले बड़े कमरे में साफ और सुथरा फर्श बिछा था । वहाँ पहुँचने के साथ ही विमला पर उनकी निगाह पड़ी

और वे पहिचान गए कि मुझे भुलावा देकर यहाँ वालियों में से यह भी एक औरत है जो बड़ी ढिठाई के साथ इस

अनूठे ढंग पर इस्तकबाल कर रही है ।

भूतनाथ पहला भाग

प्रभाकर सिंह ने बिमला से कहा ,

विमला : जी हाँ समझ लीजिए कि आप ही का है ।

प्रभाकरसिंह : अच्छा तो मैं पूछता हूँ कि तुमने मेरे साथ ऐसा खोटा बर्ताव क्यों किया ?

विमला : मैंने आपके साथ कोई बुरा बर्ताव नहीं किया बल्कि सच तो यों है कि आपको एक भयानक खोटे वेईमान और

झूठे ऐयार के पंजे से बचाने का उद्योग किया जो कि सिवाय बुराई के कभी कोई भलाई का काम करके आपके साथ

नहीं कर सकता था । अफसोस , आपको तो हम उसके फंदे से निकाल लाए मगर बेचारी इंदु फँसी रह गई जिसे बचाने

के लिए हम लोग तन - मन - धन सभी अर्पण कर देंगे ।

प्रभाकर सिंह : इसमें कोई सन्देह नहीं कि इंदु के लिए मुझे बहुत बड़ी चिंता है और मैं यह नहीं चाहता कि वह किसी

अवस्था में भी मुझसे अलग हो , मगर मैं इस बात का कभी विश्वास नहीं कर सकता कि भूतनाथ हम लोगों के साथ

खोटा वर्ताव करेगा । मैं गुलाबसिंह की बात पर दृढ़ विश्वास रखता हूँ जिसने उसकी बड़ी तारीफ मुझसे की थी ।

विमला : नहीं , ऐसा नहीं है , वह ..

प्रभाकर सिंह : (बात काट कर) तुम्हारी बात मान लेना सहज नहीं है जिसने खुद मेरे साथ बुराई की ! (क्रोध की मुद्रा

से) वेशक तुमने मेरे साथ दुश्मनी की कि इंदु को मुझसे जुदा करके एक आफत में डाल दिया ! क्या जाने इस समय उस

पर क्या बीत रही होगी !! हाँ , कहाँ है वह जिसे मैं अपनी साली समझता था और जिसकी बात मान कर मैंने यह कष्ट

उठाया ! क्या अब वह अपना मुँह न दिखलावेंगी ?

विमला : आप क्रोध न करें , आपकी साली जरूर आपके सामने आवेगी और उसके साथ - साथ मैं भी इस बात को

साबित कर दूंगी कि हम लोग आपके साथ दुश्मनी नहीं करते । इंदु हमारी बहुत ही प्यारी बहिन है और उसे हम लोग

हद से ज्यादे प्यार करते हैं , जिस तरह

प्रभाकर सिंह : (सिर हिलाकर) नहीं - नहीं , अगर तुम इंदु को प्यार करती होती तो उसे इस तरह मुझसे अलग करके संकट

में न डालतीं । कुछ देर के लिए यह भी मान लिया जाय कि भूतनाथ हमारा दुश्मन है , गुलावसिंह ने हमसे जो कुछ कहा

वह झूठ था , और तुमने वास्तव में हमें एक दुश्मन के हाथ से बचाना चाहा , मगर फिर भी यह कहना पड़ेगा कि वहाँ से

बचा लाने के लिए वह ढंग अच्छा न था जो तुमने किया । अच्छा होता यदि तुम मुझे यहाँ ले आने के बदले में उस

जगह केवल इतना ही कह देतीं कि ' देखो खवरदार हो जाओ , भूतनाथ का विश्वास मत करो , इंदु को लेकर निकल भागो

और फलानी राह से मेरे पास चले आओ ' । बस अगर तुम ऐसा करतीं तो मैं तुम्हारी इज्जत करता ।

विमला : ठीक है मगर मुझे विश्वास नहीं था कि आप यकायक मेरी बात मान जाएँगे ।

" यह सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं । " इतना कहकर प्रभाकर सिंह एक उचित स्थान पर बैठ गए और बिमला भी उनके

सामने बैठ गई ।

प्रभाकर सिंह : (कई सायत तक कुछ सोचने के बाद) खैर पहिले यह

तक आया ?

बिमला : वे भी इसी जगह कहीं है , डर के मारे आपके

कि ' जीजाजी से मेरा प्रणाम कहो और यह कहो कि

कारणवश हर वक्त अपनी सूरत बदले रहती

आप मेरी रक्षा करने और मेरा भेद छिपाये

नहीं आतीं । उन्होंने मुझे यह कहकर आपके पास भेजा है

बड़े संकट में पड़ी हुई ग्रहदशा के दिन काट रही हूँ । किसी

। पड़ोस में है जिसका हरदम डर ही लगा रहता है , अस्तु यदि

की प्रतिज्ञा करें तो मै । आपके सामने आऊँ नहीं तो

प्रभाकर सिंह : (आश्चर्य से) वाह वाह वाह !! (कुछ देर तक सोच कर) खैर जो कुछ हो , जमना को मैं इज्जत के साथ

प्यार करता हूँ , वह मेरी बहुत ही नेक साली है । यद्यपि उसका यहाँ होना मेरे लिए एक ताज्जुब की बात है तथापि उसे

देखकर मैं बहुत प्रसन्न होऊँगा । यदि यह उसी का मकान है तो मैं विशेष चिंता भी न करूँगा । तुम शीघ्र जाकर उसे

कह दो कि मेरे सबब से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती , तुम्हारे भेद तुम्हारी इच्छानुसार मैं जरूर

छिपाऊँगा ।

प्रभाकर सिंह की बात समाप्त होते ही प्रसन्नता के साथ बिमला ने अपने चेहरे पर से झिल्ली उतार कर अलग रख दी

और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी ।

प्रभाकर सिंह : (बिमला को पैरों पर से उठा कर) जमना ! अहा , क्या तुम वास्तव में जमना हो ?

विमला : जी हाँ , मैं वास्तव में जमना हूँ , इसमें आप कुछ ही देर सन्देह न करें । ज्यादे देर तक तरबुद में न डाल कर मैं

अभी आपका भ्रम दूर कर देती हूँ ! अपने जमना होने के सबूत में मैं आपको उस दिन की चिकोटी याद दिलाती हूँ जिस

दिन मेरे यहाँ सत्यनारायण की कथा थी और जिसका हाल सिवाय आपके और किसी को मालूम नहीं है ।

प्रभाकर सिंह : (प्रसन्न होकर) वेशक , बेशक , अव मुझे कुछ सन्देह नहीं रहा , परन्तु आश्चर्य ! आश्चर्य !! तुम्हारे ससुर ने

हाल ही से अपने हाथ में मुझे चिट्ठी लिखी थी कि जमना और सरस्वती दोनों मर गई हैं ! मैंने यह हाल अभी तक

तुम्हारी बहिन इंदु से नहीं कहा क्योंकि इस संकट के जमाने में इस खबर को सुनाकर उन्हें और भी दुःख देना मैंने

| कि जमना कहाँ है जिसके कारण मैं यहाँ

उचित नहीं जाना । मगर अब मुझे कहना पड़ा कि तुम्हारे ससुर ने मुझे झूठ लिखा , न मालूम क्यों ?

बिमला : नहीं - नहीं , उन्होंने झूठ नहीं लिखा , उन्हें यही मालूम है कि जमना - सरस्वती दोनों मर गईं , मगर वास्तव में हम दोनों जीती हैं ।

प्रभाकर सिंह : यह तो तुम और भी आश्चर्य की बात सुनाती हो !

बिमला : आपके लिए बेशक आश्चर्य की बात है । इसी से तो मैंने आपसे प्रतिज्ञा करा ली कि मेरे भेद आप छिपाये रहें , जिनमें से एक यह भी बात है कि हमारा जीते रहना किसी को मालूम न होने पाये ।

इतना कहकर विमला ने ताली बजाई । उसी समय तेजी के साथ सरस्वती (कला) एक दरवाजा खोल कर कमरे के अन्दर आई और प्रभाकर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी । प्रभाकर सिंह ने प्रेम से उसे उठाया और कहा , " आह ! मैं इस समय तुम दोनों को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ क्योंकि सुरंग में तुम दोनों को देखना विश्वास के योग्य न था । अब यह मालूम होना चाहिए कि तुम लोग यहाँ क्यों , किसके भरोसे पर और किस नीयत से रहती हो , तथा बाहर मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ पर मैंने किसे देखा ? नहीं - नहीं , वह इस सरस्वती के सिवाय कोई और न थी , में पहिचान गया , इसी की सूरत इंदु से विशेष मिलती है ! "

विमला : बेशक वह सरस्वती ही थी , क्षण - भर के लिए इसने आपके साथ दिल्लगी की थी ।

कला : (मुसकुराती हुई) मगर जो कुछ में किया चाहती थी वह न कर

प्रभाकर सिंह : वह क्या ?

कला : बस अब उसका कहना ठीक नहीं ।

प्रभाकर सिंह : अच्छा यह बताओ कि तुम लोग

छिपकर क्यों रहती थीं ?

बिमला : इसलिए कि कमवत भूतनाथ घातक है । उसने अपने हाथ में उन्हें

बदला लेकर कलेजा कुछ ठंडा करें । आपको नहीं मालूम कि वह मेरे पति का हम दोनों बहिनों को विधवा बना दिया !!

प्रभाकर सिंह : (आश्चर्य से) यह तुम क्या कह रही हो ?

चारों

विमला : बेशक ऐसा ही है । आपने उस कमीने को पहिचाना नहीं ! वह वास्तव में गदाधरसिंह है , सूरत बदले तरफ घूम रहा है । आजकल वह अपनी नौकरी पर अर्थात् मेरे ससुर के यहाँ नहीं रहता ।

.

प्रभाकर सिंह : यह तो मुझे भी मालूम है , गदाधरसिंह लापता हो रहा है और किसी को उसका ठीक हाल मालूम नहीं है , मगर यह बात मेरे दिल में नहीं बैठती कि भूतनाथ वास्तव में वही गदाधरसिंह है ।

बिमला : मैं जो कहती हूँ बेशक ऐसा ही है ।

प्रभाकर सिंह : (सिर हिलाकर) शायद हो । (कुछ सोचकर) खैर पहिले मैं इंदु को उसके यहाँ से हटाऊँगा और तब साफ - साफ उससे पूलूंगा कि बताओ तुम गदाधरसिंह हो या नहीं ? मगर फिर भी इसका सबूत मिलना कठिन होगा कि दयाराम को उसी ने मारा है ।

विमला : नहीं - नहीं , आप ऐसा कदापि न करें नहीं तो हमारा सब उद्योग मिट्टी में मिल जाएगा ।

प्रभाकर सिंह : नहीं , मैं जरूर पूलूंगा और यदि तुम्हारा कहना ठीक निकला तो मैं स्वयं उससे लगा ।

बिमला : (उदासी से) ओह ! तव तो आप और भी अँधेर करेंगे !!

प्रभाकर सिंह : नहीं , इस विषय में मैं तुमसे राय न लूँगा ।

बिमला : तव आप अपनी प्रतिज्ञा भंग करेंगे ।

प्रभाकर सिंह : ऐसा ही न होने पावेगा (कुछ सोच कर) खैर यह तो पीछे देखा जाएगा पहिले इंदु की फिक्र करनी

चाहिए । यद्यपि गुलाबसिंह उसके साथ है अभी यकायक उसे किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती ।

विमला : मैं उसके लिए बंदोबस्त कर चुकी हूँ , आप वेफिक्र रहें ।

प्रभाकर सिंह : भला मैं बेफिक्र क्योंकर रह सकता हूँ ? मुझे यहाँ से जाने दो , भूतनाथ के घर जाकर सहज ही में यदि

तुम चाहती हो तो उसे यहाँ तुम्हारे पास ले आऊँगा !

बिमला : जी नहीं , ऐसा करने से मेरा भेद खुल जाएगा । वह बड़ा ही कांइयाँ है , वात - ही - बात में आपसे पता लगा लेगा

कि उसकी घाटी के साथ एक और स्थान है जहाँ कोई रहता है । अभी उसे यह मालूम

प्रभाकर सिंह : नहीं - नही , मैं किसी तरह तुम्हारा भेद खुलने न दूंगा ।

बिमला : अस्तु इस समय तो आप रहने दीजिए , पहिले जरूरी कामों से

इत्यादि से छुट्टी पाइए , फिर जैसी राय होगी देखा जाएगा । मैं कुछ

होने दूंगी बल्कि आपसे ज्यादे मुझे खुटका लगा हुआ है । अगर

स्नान , ध्यान , पूजा - पाठ कीजिए , भोजन

की दुश्मन तो हूँ नहीं जो उसे तकलीफ

न आई तो मैंने किया ही क्या !

प्रभाकर सिंह : खैर जैसी तुम्हारी मर्जी , थोड़ी देर के लिए ज्यादे जोर देने की भी अभी जरूरत नहीं ।

बिमला : अच्छा तो अब आप कुछ देर के लिए दोनों को छुट्टी दीजिए , मैं आपके लिए खाने - पीने का इंतजाम करूँ ,

तब तक आप इस (उँगली का इशारा करक) कोठरी में जाइए और फिर बंगले के बाहर जाकर मैदान और कुदरती बाग

में जहाँ चाहिए घूमिए - फिरिए , मैं बहुत जल्दी ह हाजिर होऊँगी , मगर आप इस बात का खूब खयाल रखिएगा कि अब हम

दोनों को जमना और सरस्वती के नाम से संबोधित न कीजिएगा और न हम दोनों घड़ी - घड़ी जमना और सरस्वती की

सूरत में आपको दिखाई देंगी । हम दोनों का नाम बिमला और कला बस यही ठीक है ।

इसके बाद और भी कुछ समझा - बुझाकर कला को साथ लिए हुए बिमला कमरे के बाहर चली गई ।

प्रभाकर सिंह भी उठ खड़े हुए और कुछ सोचते हुए उस कमरे में टहलने लगे । वे सोचने लगे क्या जमना का कहना सच

है ? क्या भूतनाथ वास्तव में गदाधरसिंह ही है ? फिर मैंने उसे पहिचाना क्यों नहीं ? संभव है कि रात का समय होने के

कारण मुझे धोखा हुआ हो या उसी ने कुछ सूरत बदली हुई हो ! मेरा ध्यान भी तो इस तरफ नहीं था कि गौर से उसे

देखता और पहिचानने की कोशिश करता , लेकिन अगर वह वास्तव में गदाधरसिंह है तो निःसन्देह खोटा है और कोई

भारी घात करने के लिए उसने यह ढंग पकड़ा है । ऐयार भी तो पहले दर्जे का है , वह जो न कर सके थोड़ा है , मगर

ऐसा तो नहीं हो सकता कि उसने दयाराम को मारा हो । अच्छा उसने रणधीरसिंह का घर क्यों छोड़ दिया जिनका ऐयार

था और जो बड़ी खातिर से उसे रखते थे ? संभव है कि दयाराम के मारे जाने पर उसने उदास होकर अपना काम छोड़

दिया हो , या यह भी हो सकता है कि दयाराम के दुश्मन और खूनी का पता लगाने ही के लिए उसने अपना रहन - सहन

का रंग - ढंग बदल दिया हो । अगर ऐसा है तो रणधीरसिंह जी इस बात को जानते होंगे । गुलाबसिंह ने वह भेद मुझ पर

क्यों नहीं खोला ? हो सकता है कि उन्हें यह सब मालूम न हो या वे धोखे में आ गए हों , परन्तु नहीं , गदाधरसिंह तो

ऐसा आदमी नहीं था , अस्तु जो हो , बिना विचारे और अच्छी तरह तहकीकात किए किसी पक्ष को मजबूती के साथ

पकड़ लेना उचित नहीं है । इसके अलावे यह भी तो मालूम करना चाहिए कि जमना और सरस्वती इस तरह स्वतंत्र क्यों

हा रही हैं और उन्होंने अपने को मुर्दा क्यों मशहूर कर दिया तथा यह अनूठा स्थान इन्हें कैसे मिल गया और यहाँ किसका सहारा पाकर ये दोनों रहती हैं । भूतनाथ से दुश्मनी रखना और बदला लेने का व्रत धारण करना कुछ हंसी - खेल नहीं है और इस तरह रहने से रुपये - पैसे की भी कम जरूरत नहीं है । आखिर यह है क्या मामला ! यह तो हमने पूछा ही नहीं कि यह स्थान किसका है और तुम लोग आजकल किसकी होकर रहती हो । खैर अब पूछ लेंगे । कोई - न - कोई भारी आदमी इनका साथी जरूरी है , उसे भी भूतनाथ ने दुश्मनी है । क्या इन दोनों पर व्यभिचार का दोष भी लगाया जा सकता है ? कैसे कहें ' हाँ ' या ' नहीं ' ऐसे खोटे दिल की तो ये दोनों थी नहीं , मगर ये सती और साधवी हैं तो इनका मददगार भी कोई इन्हीं का रिश्तेदार जरूर होगा , मगर वह भी कोई साधारण व्यक्ति न होगा जिसका यह अनूठा स्थान है । हाँ यह भी तो है कि यदि ये व्यभिचारिणी होती तो मुझे यहाँ न लाती और इंदु को भी लाने की चेष्टा न करती ... मगर अभी यह भी क्योंकर कह सकते हैं कि इंदु को यहाँ लाने की चेष्टा कर रही हैं ! अच्छा जो होगा देखा जाएगा , चला पहिले मैदान में घूम आवें तब फिर उन दोनों के आने पर बातचीत से सब मामले की थाह लेंगे । "

प्रभाकर सिंह दरवाजा खोल कर उस कोठरी में घुस गए जिसकी तरफ बिमला ने इशारा किया था । उसके अंदर नहाने तथा संध्या - पूजा करने का पूरा - पूरा सामान

करीने से रखा हुआ था , बल्कि एक छोटी - सी आलमारी में कुछ जरूरी कपड़े और भोजन करने के अच्छे - अच्छे पदार्थ भी मौजूद थे । प्रभाकर सिंह ने अपनी ढाल - तलबार एक खूटी से लटका दी और तीर - कमान भी एक चौकी पर रख कर कपड़े का कुछ बोझ हलका किया और जल से भरा हुआ लोटा उठा कर कोठरी के बाहर निकले । कई कदम आगे गए होंगे कि कुछ सोच कर लौटे और उस कोठरी में जाकर अपनी तलवार खूटी पर से उतार लाये और बंगले के बाहर निकले ।

दिन पहर भर से ज्यादे चढ़ चुका था और धूप में गर्मी ज्यादे आ चुकी मगर उस सुन्दर घाटी में जिसमें पहाड़ी से सटा हुए एक छोटा - साथ चश्मा भी बह रहा था , गुलबूटे पेड़ों की बहुतायत होने के कारण हवा बुरी नहीं मालूम होती थी । प्रभाकर सिंह पूरब तरफ मैदान की हद चले गए और नहर लाँच कर पहाड़ी के कुछ ऊपर बढ़ गए जहाँ पेड़ों का एक बहुत अच्छा छोटा - सा झुरमुट कुछ देर बाद वहाँ से लौटे तो नहाने और संध्या - पूजा के लिए इन्हें वह चश्मा ही प्यारा मालूम हुआ अस्तु उसके किनारे एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गए । घंटे - डेढ़ - घंटे के अन्दर ही प्रभाकर सिंह सब जरूरी कामों से निश्चिन्त हो गए तथा अपने कपड़े भी धोकर सुखा लिए । इसके बाद उस बंगले में पहुँचे और इस आशा में थे कि जमना और सरस्वती यहाँ आ गई होंगी मगर एक लोंडी के सिवाय वहाँ और किसी को भी न देखा जिसकी जुबानी हुआ कि ' उनके आने में अभी घंटे भर की देर है , तब तक आप कुछ जल - पान खा लीजिए जिसका सामान नहाने वाली कोठरी में मौजूद है । '

" अच्छा " कहकर प्रभाकर सिंह ने उस लौंडी को तो विदा कर दिया और आप एक किनारे फर्श पर तकिए का सहारा लेकर लेट गए और कुछ चिंता करने लगे ।

घंटे भर क्या कई घंटे बीत गये पर जमना और सरस्वती न आईं और प्रभाकर सिंह तरह - तरह की चिंता में डूबे रहे , यहाँ तक कि उन्होंने कुछ जलपान भी न किया । जब थोड़ा - सा दिन वाकी रह गया तब वह घबड़ाकर बंगले के बाहर निकले और मैदान में घूमने लगे । अभी उन्हें घूमते हुए कुछ ज्यादे देर नहीं हुई थी कि एक लौंडी बँगले के अन्दर से निकली और दौड़ती हुई प्रभाकर सिंह के पास आई तथा एक चिट्ठी उनके हाथ में देकर जवाब का इंतजार किए बिना ही वापस चली गई ।

प्रभाकर सिंह ने चिट्ठी खोलकर पड़ी , यह लिखा हुआ था

" श्रीमान् जीजाजी ,

मैं एक बड़े ही तरबुद में पड़ गई हूँ , मुझे मालूम हुआ कि इंदु बहिन बुरी आफत में पड़ा चाहती हैं , अस्तु मैं उन्हीं की फिक्र में जाती हूँ , लौट कर आपसे सब समाचार कहूँगी । आशा है कि तब तक आप सबके साथ यहाँ रहेंगे ।

बिमला । "

इस चिट्ठी ने प्रभाकर सिंह को बड़े ही तरद में डाल दिया और तरह - तरह की चिंता करते हुए वह उस मैदान में

टहलने लगे । उन्हें कुछ भी सुध न रही कि किस तरफ जा रहे हैं और किधर जाना चाहिए । उत्तर तरफ का मेदान

समाप्त करके वे पहाड़ी के नीचे पहुँचे और कई सायत तक रुके रहने के बाद एक पगडंडी देख ऊपर की तरफ चलने

लगे ।

लगभग तीस या चालीस कदम के ऊपर गये होंगे कि एक छोटा - सा काठ का दरवाजा नजर आया कि जिस पर साधारण

जंजीर चढ़ी हुई थी ।

वे इस दरवाजे को देखकर चौंके और चारों तरफ निगाह दौड़ाकर सोचने लगे , " हें ! यह दरवाजा कैसा ? मैं तो बिना

इरादा किए ही यकायक यहाँ आ पहुँचा । मालूम होता है कि यह कोई सुरंग है । मगर इसके मुंह पर किसी तरह की

हिफाजत क्यों नहीं है ? यह दरवाजा तो एक लात भी नहीं सह सकता । शायद इसके अन्दर किसी तरह की रुकावट हो

जैसी कि उस सुरंग के अन्दर थी जिसकी राह से में यहाँ आया था ? खैर इसके अन्दर चल के देखना तो चाहिए कि

क्या है । कदाचित् इस कैदखाने के बाहर ही निकल जाऊँ , बेशक यह स्थान सुन्दर और सुहावना होने पर भी मेरे लिए

कैदखाना ही है । यदि इस राह से मैं बाहर निकल गया तो बड़ा ही अच्छा होगा , में इंदु को जरूर बचा लूँगा जिसे इस

आफत के जमाने में भी मैंने अपने से अलग नहीं किया था । अच्छा जो हो , मैं के अन्दर जरूर चलूंगा मगर

इस तरह निहत्थे जाना तो उचित नहीं पहिले बंगले के अन्दर चलकर अपनी । पोशाक् पहिरना और अपने हरबे लगा

लेना चाहिए , न मालूम इसके अन्दर चल कर कैसा मौका पड़े ! न भी पड़े तो क्या ? कदाचित् इस घाटी के बाहर

ही हो जाएँ तो अपने हदें क्यों छोड़ जायें ? "

इस तरह सोच - विचार कर प्रभाकर सिंह वहाँ से लौटे और

अपनी पूरी पोशाक् पहिर और हर्वे लगाकर वे बाहर

पहुँचे ।

के साथ बँगले के अन्दर चले गये । बात - की - बात में

और मैदान तय करके फिर उसी सुरंग के मुहाने पर जा

दरवाजा खोलने में किसी तरह की कठिनाई थी अतएव वे सहज ही में दरवाजा खोल उस सुरंग के अन्दर चले गये ।

सुरंग बहुत चौड़ी - ऊँची न थी , केवल क आदमी खुले ढंग से उसमें चल सकता था , अगर सामने से कोई दूसरा आदमी

आता हुआ मिल जाय तो बड़ी से दोनों एक - दूसरे को निकालकर अपनी - अपनी राह ले सकते थे । हाँ , लंबाई में

यह सुरंग बहुत छोटी न थी बल्कि चार - साढ़े चार सौ कदम लंबी थी । सुरंग में पूरा अंधकार था और साथ ही इसके वह

भयानक भी मालूम होती थी , मगर प्रभाकर सिंह ने इसकी कोई परवाह न की और हाथ फैलाए आगे की तरफ बढ़े चले

गए । जैसे - जैसे आगे जाते थे सुरंग तंग होती जाती थी ।

जब प्रभाकर सिंह सुरंग खतम कर चुके तो आगे रास्ता बंद पाया , लकड़ी या लोहे का कोई दरवाजा नहीं लगा हुआ था

जिसे बंद कहा जाय बल्कि अनगढ़ पत्थरों से ही वह रास्ता बंद था । प्रभाकर सिंह ने बहुत अच्छी तरह टटोलने और गौर

करने पर यही निश्चय किया कि बस अब आगे जाने का रास्ता नहीं है , मालूम होता है कि सुरंग बनाने वालों ने इसी

जगह तक बनाकर छोड़ दिया है और यह सुरंग अधूरी रह गई ।

इस विचार पर भी प्रभाकर सिंह का दिल न जमा , उन्होंने सोचा कि जरूर इसमें कोई बात है और यह सुरंग व्यर्थ नहीं

बनाई गई होगी । उन्होंने फिर अच्छी तरह आगे की तरफ टटोलना शुरू किया । मालूम होता था कि आगे छोटे - बड़े कई

अनगढ़ पत्थरों का ढेर लगा हुआ है । इस बीच में दो - तीन पत्थर कुछ हिलते हुए भी मालूम पड़े जिन्हें प्रभाकर सिंह ने

बलपूर्वक उखाड़ना चाहा । एक पत्थर तो सहज ही में उखड़ आया और जब उन्होंने उसे उठाकर अलग रखा तो

छोटे - छोटे दो छेद मालूम पड़े जिनमें से उस पार की चीजें दिखाई दे रही थीं और यह भी मालूम होता था कि अभी कुछ

दिन बाकी है । अब उन्हें और भी विश्वास हो गया कि अगर इसी तरह और दो - तीन पत्थर अपने ठिकाने से हटा दिए

जाएँ तो जरूर रास्ता निकल आएगा अस्तु उन्होंने फिर जोर करना शुरू किया ।

तीन पत्थर और भी अपने ठिकाने से हटाए गए और अब छोटे - छोटे कई सूराख दिखाई देने लगे मगर इस बात का निश्चय नहीं हुआ कि कोई दरवाजा भी निकल आवेगा ।

उन सूराखों से प्रभाकर सिंह ने गौर से दूसरी तरफ देखना शुरू किया । एक बहुत ही सुंदर घाटी नजर पड़ी और कई आदमी भी इधर - उधर चलते - फिरते नजर आये ।

यह वही घाटी थी जिसमें भूतनाथ रहता था , जहाँ जाते हुए यकायक प्रभाकर सिंह गायब हो गए थे , और जहाँ इस समय गुलाबसिंह और इंदुमति मौजूद हैं । प्रभाकर सिंह ने उसे घाटी को देखा नहीं था इसलिए बड़े गौर से उसकी सुंदरता को देखने लगे । उन्हें इस बात की क्या खबर थी कि यह भूतनाथ का स्थान है और इस समय इसी में इंदुमति विराज रही है तभी इस समय उनके देखते - ही - देखते वह एक भारी आफत में फँसना चाहती है ।

प्रभाकर सिंह बराबर उद्योग कर रहे थे कि कदाचित् पत्थरों के हिलाने - हटाने से कोई दरवाजा निकल आये और साथ ही इसके घड़ी - घड़ी उन सूराखों की राह से उस पार की तरफ देख भी लेते थे । इस बीच में उनकी निगाह यकायक इंदुमति पर पड़ी जो पहाड़ की ऊँचाई पर से धीरे - धीरे नीचे की तरफ उतर रही थी । बस फिर क्या था ! उनका हाथ पत्थरों को हटाने के काम से रुक गया और वे बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगे , साथ ही इसके उन्हें इस बात का विश्वास हो गया कि यही भूतनाथ का वह स्थान है जहाँ हम इंदुमति के साथ आने वाले थे ।

थोड़ी ही देर में इंदु भी नीचे उतर आई और धीरे - धीरे उस कुदरती बगीचे में : सिंह थे और अंत में एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गई जो प्रभाकर सिंह से होगी ।

हुई उस तरफ बढ़ी जिधर प्रभाकर पचास - साठ कदम की दूरी पर

अब प्रभाकर सिंह उससे मिलने के लिए बहुत ही बेचैन हुए मगर क्या कर सकते थे , लाचार थे , तथापि उन्होंने उसे पुकारना शुरू किया । अभी दो ही आवाज दी थी कि उनकी निगाह और भी दो आदमियों पर पड़ी जो इंदु से थोड़ी दूर पर एक मुहाने या सुरंग के अन्दर से निकले थे और इंदु की तरफ बढ़ रहे थे , उन्हें देखते ही इंदु भी घबराकर उनकी तरफ लपकी और पास पहुँचकर एक आदमी पर गिर पड़ी जो

शक्ल - सूरत में बिलकुल ही प्रभाकर सिंह से मिलता था या यों कहिए कि वह सचमुच दूसरा प्रभाकर सिंह था ।

प्रभाकर सिंह के कलेजे में एक बिजली - सी चमक गई , अपनी - सी सूरत बने हुए एक ऐयार का वहाँ पहुँचना और इंदु का उसके पैरों पर गिर पड़ना उनके लिए कैसा दुखदाई हुआ इसे पाठक स्वयं विचार सकते हैं । केवल इतना ही नहीं उनके देखते - ही - देखते नकली प्रभाकर सिंह ने अपने साथी को विदा कर दिया और इसके बाद वह इंदुमति को कुछ समझाकर अपने साथ ले भागा । प्रभाकर सिंह चुटीले साँप की तरह पेंच खाकर रह गए , कर ही क्या सकते थे ? क्योंकि वहाँ तक इनका पहुँचना बिलकुल ही असंभव था ।

उन्होंने पत्थरों को हटाकर रास्ता निकालने का फिर एक दफे उद्योग किया और जब नतीजा न निकला तो पेचोताव खाते हुए वहाँ से लौट पड़े । अव सुरंग के बाहर हुए तो देखा कि सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं और अँधकार चारों तरफ से घिरा आ रहा है अस्तु तरह - तरह की बातें सोचते और विचारते हुए प्रभाकर सिंह बंगले की तरफ लौटै और जब वहाँ पहुँचे देखा कि हर एक स्थान में मौके - मौके से रोशनी रही है ।

प्रभाकर सिंह उसी कमरे में पहुँचे जिसमें बिमला से मुलाकात हुई थी और फर्श पर तकिए के सहारे बैठकर चिंता करने लगे । वे सोचने लगे

" वह कौन आदमी होगा जिसने आज इंदु को इस तरह धोखे में डाला ? इंदु की बुद्धि पर भी कैसा परदा पड़ गया कि उसने उसे बिलकुल नहीं पहिचाना ! पर वह पहिचानती ही क्योंकर ? एक तो वह स्वयं घबड़ाई हुई थी दूसरे संध्या होने के

कारण कुछ अंधकार - सा भी हो रहा था , तीसरे वह ठीक - ठीक मेरी सूरत बनकर वहाँ पहुँचा भी था , मुझमें और उसमें कुछ भी फर्क नहीं था , कमबख्त पोशाक भी इसी ढंग की पहिने हुए था , न मालूम इसका पता उसे कैसे लगा ! नहीं , वह कोई आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि इस समय भी मेरी पोशाक् वैसी ही है जैसी हमेशा रहती थी , इससे मालूम होता है कि वह आदमी मेरे लिए कोई नया नहीं हो सकता । अस्तु जो हो मगर इस समय इंदु मेरे हाथ से निकल गई । न मालूम अब उस बेचारी पर क्या आफत आवेगी ! हाय , यह सब खराबी बिमला की बदौलत हुई , न वह मुझको बहका के यहाँ लाती और न यह नौवत पहुँचती । हाँ , यह भी संभव है कि यह

कार्रवाई विमला ही ने की हो क्योंकि अभी कई घंटे बीते हैं कि उसने मुझे लिखा भी था कि इंदु किसी आफत में फँसना चाहती है , उसकी मदद को जाती हूँ । शायद उसका मतलब इसी आफत से हो ! क्या यह भी हो सकता है कि विमला ही ने यह ढंग रचा हो और उसी ने किसी आदमी को मेरी सूरत बनाकर इंदु को निकाल लाने के लिए भेजा हो ! नहीं , अगर ऐसा होता तो वह यह न लिखती कि ' इंदु बहिन बुरी आफत में पड़ना चाहती है । ' हाँ , यह हो सकता है कि इस होने वाली घटना का पहिले से उसे पता लगा हो और इसी दुष्ट के कब्जे से इंदु को छुड़ाने के लिए वह गई हो । जो हो , कौन कह सकता है कि इंदु किन मुसीबत में गिरफ्तार हो गई ! अफसोस इस बात का है कि मेरी आँखों के सामने यह सब कुछ हो गया और मैं कुछ न कर सका । "

इसी तरह की बातें प्रभाकर सिंह को सोचते कई घंटे बीत गए मगर इस बीच में कोई शान्ति दिलाने वाला वहाँ न पहुँचा । कई नौजवान लड़के जो बँगले के बाहर पहरे पर दिखाई दिए थे इस समय उनका भी पता न था । दिनभर उन्होंने कुछ भोजन नहीं किया था मगर भोजन करने की उन्हें कोई चिंता भी न थी , वे केवल इंदुमति की अवस्था और अपनी बेबसी पर विचार कर रहे थे , हाँ , कभी - कभी इस बात पर भी उनका ध्यान जाता कि देखो अभी तक किसी ने भी मेरी सुध न ली और न खाने - पीने के लिए ही किसी ने पूछा !

में तरह - तरह के भयानक स्वप्न देखते रहे ।

चिंता करते - करते उनकी आँखें लग गई और नींद में भी वे इंदुमति आधी रात जा चुकी जब एक लौंडी ने आकर उन्हें जगाया !

प्रभाकर सिंह : (लौंडी से) क्या है ?

लौंडी : मैं आपके लिए भोजन की सामग्री लाई

प्रभाकर सिंह : कहाँ है ?

लौंडी : (उँगली से इशारा करके) उस कमरे में । प्रभाकर सिंह : मैं भोजन न करूँगा , जो कुछ लाई हो उठा ले जाओ ।

लौंडी : मैं ही नहीं कला जी भी आई हैं जो कि उस कमरे में बैठी आपका इंतजार कर रही हैं ।

कला का नाम सुनते ही प्रभाकर सिंह उठ बैठे और उस कमरे में गए जिसकी तरफ लौंडी ने इशारा किया था। यह वही कमरा था जिसको दिन के समय प्रभाकर सिंह देख चुके थे और जिसमें नहाने - धोने का सामान तथा जलपान के लिए भी ' कुछ रखा हुआ था।

कमरे के अन्दर पैर रखते ही कला पर उनकी निगाह पड़ी जो एक कंबल पर बैठी हुई थी। प्रभाकर सिंह को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और उसने बड़े आग्रह से उन्हें यह कंबल पर बैठाया जिसके आगे भोजन की सामग्री रखी हुई थी। बैठने के साथ ही प्रभाकर सिंह ने कहा

प्रभाकर सिंह : कला , आज तुम लोगों की बदौलत मुझे बड़ा ही दुःख हुआ।

कला : (बैठकर) सो क्या ?

प्रभाकर सिंह : (चिढ़े हुए ढंग से) मेरी आँखों के सामने से इंदु हर ली गई और मैं कुछ न कर सका !! कला : ठीक है , आपने किसी सुरंग से यह हाल देखा होगा।

प्रभाकर सिंह : सो तुमने कैसे जाना ?

कला : यहाँ दो सुरंगें ऐसी हैं जिनके अन्दर से भूतनाथ की घाटी बखूबी दिखाई देती है। उनमें से एक के अन्दर के सूराख पत्थर के ढोकों से मामूली ढंग से बंद किए हुए हैं और दूसरी के सूराख खुले हुए हैं जिनकी राह से हम लोग बराबर भूतनाथ के घर का रंग - ढंग देखा करती हैं।

प्रभाकर सिंह : ठीक है , इत्तिफाक से मैं उसी सुरंग के अन्दर पहुँच गया था जिसमें देखने के सूराख पत्थर के ढोकों से बंद किए हुए थे।

कला : जी हाँ , मगर हम लोगों को आपसे पहिले इस बात की खबर लग चुकी थी।

प्रभाकर सिंह : तब तुम लोगों ने क्या किया ?

कला : यही किया कि इंदु बहिन को उस आफत से छुड़ा लिया।

प्रभाकर सिंह : (प्रसन्नता से) तो इंदु कहाँ है ?

कला : एक सुरक्षित और स्वतंत्र स्थान में । अब आप भोजन करते जाइए और बातें किए जाइए , नहीं तो मैं कुछ न कहूँगी , क्योंकि आप - दिन - भर के भूखे हैं बल्कि ताज्जुब नहीं । दिन ही के भूखे हों । यहाँ जो कुछ खाने - पीने का सामान पड़ा हुआ था उसके देखने से मालूम हुआ कि आपने दिन को भी कुछ नहीं खाया था ।

मजबूर होकर प्रभाकर सिंह ने भोजन करना आरंभ किया और साथ - ही - साथ बातचीत भी करने लगे ।

प्रभाकर सिंह : अच्छा तो मैं इंदु को देखना चाहता हूँ ।

कला : जी नहीं , अभी देखने का । न कीजिए , कल जैसा होगा देखा जाएगा क्योंकि इस समय उसकी तबीयत खराव है , दुश्मनों के हाथ से चोट खा चुकी है , यद्यपि उसने बड़े साहस का काम किया और अपने तीरों से कई दुश्मनों को मार गिराया ।

इस खबर ने भी प्रभाकर सिंह की तरबुद में डाल दिया । वे इंदु को देखना चाहते थे और कला समझाती जाती थी कि अभी ऐसा करना अनुचित होगा और वैद्य की भी यही राय है ।

बड़ी मुश्किल से कला ने प्रभाकर सिंह को भोजन कराया और कल पुनः मिलने का वादा करके वहाँ से चली गई । प्रभाकर सिंह को इस बात का पता न लगा कि यह किस राह से आई थी और किस राह से चली गई ।

क्या हम कह सकते हैं कि प्रभाकर सिंह इंदु की तरफ से बेफिक्र हो गए ? नहीं कदापि नहीं ! उन्हें कुछ ढाँढस हो जाने पर भी कला की बातों पर पूरा विश्वास न हुआ । उनका दिल इस बात को कबूल नहीं करता था कि यदि कला और विमला दूर से या किसी छिपे ढंग से इंदु को दिखला देती तो कोई हर्ज होता । बात तो यह है कि कला तथा बिमला का इस तरह गुप्त रीति से आना - जाना और रास्ते का पता न देना भी उन्हें बुरा मालूम होता था और उन लोगों पर विश्वास नहीं जमने देता था , हाँ , इस समय इतना जरूर हुआ कि उनकी विचार - प्रणाली का पक्ष कुछ बदल गया और वे पुरानी चिंता के साथ - ही - साथ किसी और चिंता में भी निमग्न होने लगे ।

कई घंटे तक कुछ सोचने - विचारने के बाद वे उठ खड़े हुए और दालानों , कमरों तथा कोठरियों में घूमने - फिरने और टोह लगाने के साथ - ही - साथ दीवारों , आलों

और आलमारियों पर भी निगाहें डालने लगे। पिछली रात का समय , इनके सिवाय कोई दूसरा आदमी बँगले के अन्दर न होने के कारण सन्नाटा छाया हुआ था , मगर जहाँ तक देखने में आता था कमरों और कोठरियों में रोशनी जरूर हो रही थी ।

कमरों और कोठरियों में छोटी - बड़ी आलमारियाँ देखने में आई जिनमें से कई में तो ताला लगा हुआ था कई विना ताले की थीं और कई में किवाड़ के पल्ले भी न थे ।

इन्हीं कोठरियों में से एक कोठरी ऐसी भी थी जिसमें अंधकार था अर्थात् चिराग नहीं जलता था अतएव प्रभाकर सिंह ने चाहा कि इस कोठरी को भी अच्छी तरह देख लें। उसके पास वाली कोठरी में एक फर्शी शमादान जल रहा था जिसे उन्होंने उठा लिया मगर जब उस कोठरी के दरवाजे के पास पहुँचे तो अन्दर से कुछ खटके की आवाज आई। वे ठमक गये और उस तरफ ध्यान देकर सुनने लगे। आदमी के पैरों की चाप - सी मालूम हुई जिससे गुमान हुआ कि कोई आदमी इसके अंदर जरूर है , मगर फिर कुछ मालूम न हुआ और प्रभाकर सिंह शमादान लिए हुए कोठरी के अन्दर चले गए ।

और कोठरियों की तरह यह भी साफ - सुथरी थी तथा जमीन पर एक मामूली फर्श विछा हुआ था। हाँ , छोटी - छोटी आलमारियाँ इसमें बहुत ज्यादे थीं जिनमें से एक खुली हुई थी और उसका ताला उसकी कुंडी के साथ अड़ा हुआ था। वह सिर्फ एक ही ताली न थी बल्कि तालियों का एक गुच्छा ही था ।

ये शमादान लिए हुए उस आमलारी के पास चले गये और उसका पल्ला तरह खोल दिया। उसमें तीन दर बने हुए थे जिनमें से एक में हाथ की लिखी हुई किताबें थीं , दूसरे में कागज - प छोटे - बड़े कई मुठे थे , और तीसरे में लोहे की कई बड़ी - बड़ी तालियाँ थीं और सबके साथ एक - एक पुर्जा बँधा हुआ था , उन्होंने एक ताली उठायी और उसके साथ का पुर्जा खोल कर पढ़ा और फिर ज्यों - का - त्यों उसी तरह करके रख दिया , इसके बाद दूसरी ताली का पुर्जा पढ़ा और उसी तरह रख देने के बाद फिर क्रमशः सभी तालिय साथ वाले पुर्जे पढ़ डाले और अंत में एक ताली पुर्जे सहित उठाकर अपनी जेब में रख ली ।

तालियों की जाँच करने के बाद उन कागज मुट्ठों पर हाथ डाला और घंटे - भर तक अच्छी तरह देखने - जाँचने के बाद उसमें से भी तीन मुठे लेकर अपने लिए और फिर

किताबों की जाँच शुरू की । इसमें उनका समय बहुत ज्यादे लगा मगर इनमें से कोई किताब ली नहीं ।

पास

उस आलमारी की तरफ से निश्चिन्त होने के बाद फिर उन्होंने किसी और आलमारी को जाँचने या खोलने का इरादा नहीं किया । वे वहाँ से लौटे और शमादान जहाँ से उठाया था वहाँ रख कर अपने उसी कमरे में चले आये जहाँ आराम कर चुके थे । वहाँ भीद वे ज्यादे देर तक नहीं ठहरे सिर्फ अपने कपड़ों और हों की दुरुस्ती करके बंगले के बाहर निकले । आसमान की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि रात बहुत कम बाकी है और आसमान पर पूरब तरफ सफेदी फैलना ही चाहती है ।

" कुछ देर तक और ठहर जाना मुनासिब है , " यह सोचकर वे इधर - उधर घूमने और टहलने लगे । जब रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी तब दक्खिन और पश्चिम कोण की तरफ रवाना हुए । जब मैदान खतम कर चुके और पहाड़ी के नीचे पहुँचे तो उन्हें एक हलकी - सी पगडंडी दिखाई पड़ी जो कि बहुत ध्यान देने से पगडंडी मालूम होती थी , हाँ , इतना कह सकते हैं कि उस राह से पहाड़ी के ऊपर कुछ दूर तक चढ़ने में सुभीता हो सकता था अस्तु प्रभाकर सिंह पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे । लगभग पचास कदम चढ़ जाने के बाद उन्हें एक छोटी - सी गुफा दिखाई दी जिसके अन्दर वे बेधड़क चले गए और फिर कई दिनों तक वहाँ से लौट कर बाहर न आए ।

आज प्रभाकर सिंह उस छोटी - सी गुफा के बाहर आए हैं और साधारण रीति पर वे प्रसन्न मालूम होते हैं । हम यह नहीं कह सकते कि वे इतने दिनों तक निराहार या भूखे रह गए होंगे क्योंकि उनके चेहरे से किसी तरह की कमजोरी नहीं मालूम होती । जिस समय वे गुफा के बाहर निकले सूर्य भगवान उदय हो चुके थे । उन्होंने बँगले के अन्दर जाना कदाचित् उचित न जाना या इसकी कोई आवश्यकता न समझी हो अस्तु वे उस सुन्दर घाटी में प्रसन्नता के साथ चारों तरफ टहलने लगे । नहीं - नहीं , हम यह भी नहीं कह सकते कि वे वास्तव में प्रसन्न थे क्योंकि बीच - बीच में उनके चेहरे पर गहरी उदासी छा जाती थी और वे एक लंबी साँस लेकर रह जाते थे । संभव है कि यह उदासी इंदुमति की जुदाई से संबंध रखती हो और वह प्रसन्नता किसी ऐसे लाभ के कारण हो जिसे उन्होंने उस गुफा के अन्दर पाया हो । तो क्या उन्हें उस गुफा के

अन्दर कोई चीज मिली थी या उस गुफा की राह से वे इस घाटी के बाहर हो गए थे अथवा उन्हें किसी तिलिस्म का दरवाजा मिल गया जिसमें उन्होंने कई दिन बिता दिए ? जो हो , बात कोई अनूठी जरूर है और घटना कुछ आश्चर्यजनक अवश्य है ।

बहुत देर तक इधर - उधर घूमने के बाद वे एक पत्थर की सुन्दर चट्टान पर बैठ गए और साथ ही किसी गंभीर चिंता में निमग्न हो गए । इसी समय इन्हें इंदुमति ने पहाड़ी के ऊपर से देखा था मगर इस बात प्रभाकर सिंह को कुछ खबर न थी ।

बहुत देर तक चट्टान पर बैठे कुछ सोचने - विचारने के बाद उन्होंने सर उठाया इस नियत से बँगले की तरफ देखा कि चलें उसके अन्दर चलकर किसी और विष की टोह लगावें , परन्तु । समय बँगले के अन्दर से आती हुई तीन औरतों पर उनकी निगाह पड़ी जिनमें से एक इंदुमति , दूसरी बिमला और तीसरी कला थी ।

| भी इन्हें देखते ही दीवानी - सी होकर दौड़ी और प्रभाकर

इंदुमति को देखते ही वे प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए , इधर सिंह के पैरों पर गिर पड़ी ।

सकता ।

प्रभाकर सिंह : (इंदु को उठा कर) अहा इन्दे ! समय तुझे देख मैं कितना प्रसन्न हुआ यह कहने के लिए मेरे पास केवल एक ही जुबान है अस्तु मैं कुछ कह इंदुमति : नाथ , मुझे आपने धोखे में डाला ! (मुसकराती हुई) मुझे तो इस बात का गुमान भी न था कि आप मेरे साथ चलते हुए रास्ते में किसी चुलबुली औरत को देखकर अपने आपे से बाहर हो जाएँगे और मेरा साथ छोड़ कर उसके साथ दौड़ पड़ेंगे ! क्या इस विपत्ति के समय में मुझे अपने साथ लाकर ऐसा ही वर्ताव करना आपको उचित था ? क्या आप की उन प्रतिज्ञाओं का यही नमूना था !

प्रभाकर सिंह : (हँसते हुए) वाह , तुम अपनी बहिन को और अपने ही मुँह से चुलबुली बनाओ ! क्या मैं किसी चुडैल के पीछे दौड़ा था ? तुम्हारी बहिन इस विमला ही ने तो मुझे रोका और कहा कि जरूरी बात कहनी है । मैंने समझा कि यह अपनी है जरूर कुछ भलाई की बातें कहेंगी , अस्तु इनके फेर में पड़ गया ओर तुम्हें खो बैठा । तुम्हारे साथ गुलावसिंह मौजूद ही थे और इधर विमला से मैं कुछ सुनना चाहता था । ऐसी अवस्था में यह कब आशा हो सकती थी कि साधारण मामले पर इतना पहाड़ टूट

पड़ेगा ! सच तो यह है कि तुम्हारी बहिन ने मुझे धोखा दिया जिसका मुझे बहुत रंज है और मैं उसके लिए इनसे बहुत बुरा बदला लेता मगर आज इन्होंने तुमसे मुझे मिला दिया इसीलिए मैं इनका कसूर माफ करता हूँ मगर इस बात की शिकायत

जरूर करूँगा कि मुझे यहाँ फँसा इन्होंने भूखों मार डाला , खाने तक को न पूछा । आओ - आओ बैठ जाओ , सब कोई बैठ कर बातें करें ।

विमला : वाह ! बहुत अच्छी कही , आपने तो मानो अनशन व्रत ग्रहण किया था ! साफ - साफ क्यों नहीं कहते कि किसी

की फिक्र और तरबुद के कारण खाना - पीना कुछ अच्छा ही नहीं लगता था ।

कता : (मुसकराती हुई) रात - रात भर जाग के कोने - कोने की तलाशी लिया करते थे कहीं छेद - सुराख और आले - अलमारी

में से इंदुमति निकल आये ।

प्रभाकर सिंह : (चौंककर , कला से) सो क्या ?

बिमला : बस इतना ही तो ! खैर इन बातों को जाने दीजिए यह बताइए कि आप मुझसे संतुष्ट हुए कि नहीं ? अथवा

आपको इस बात का निश्चय हुआ या नहीं कि हम लोगों ने जो कुछ किया वह नेकनीयती के साथ था ?

प्रभाकर सिंह : चाहे यह बात ठीक हो , चाहे तुम पर हर तरह से निर्दोष हो , चाहे तुम दोनों बहिनों पर किसी तरह का

ऐब का धब्बा लगाना कठिन अथवा असंभव ही क्यों न हो , परन्तु इतना तो में जरूर कहूँगा कि तुम्हारी यह कर्रवाई

बदनीयती के साथ नहीं तो बेवकूफी के साथ जरूर हुई । संभव था कि जिस दुश्मन पर फतह पाके तुम इंदुमति को छुड़ा

लाई वह और जबर्दस्त होता या तुम पर फतह पा जाता तो फिर इंदुमति पर कैसी मुसीबत गुजरती ! मेरी समझ में नहीं

आता कि इस अनुचित और टेढ़ी बात से तुम्हें या हमें क्या फायदा पहुँचा , हाँ , इंदुमति जख्मी हुई यह मुनाफा जरूर हुआ

जिस तरह तुमने मुझे बहकाया था उस तरह वहाँ यही समझा दिया होगा कि इंदुमति को साथ लेकर वहाँ से हट जाना

मुनासिब है तो ..

बिमला : (बात काट कर) नहीं - नहीं , यदि मैं ऐसा करती तो आप मुझ पर

गुलाबसिंह का साथ न छोड़ते , साथ ही इसके यह भी असंभव था कि

समझाती , भूतनाथ के ऐबों को दिखाती अथवा उचित - अनुचित बहस

विश्वास न करते और भूतनाथ तथा

पर मैं सविस्तार अपना हाल कहकर आपको

बल्कि ..

इंदुमति : (बात काट कर , प्रभाकर सिंह से) खैर इन सब क्या फायदा , जो कुछ हुआ सो हुआ अब आगे के

लिए सोचना चाहिए कि हम लोगों का कर्तव्य क्या क्या करना उचित होगा । मै । इतना जरूर कहूँगी कि हमारी

ये दोनों जमाने के हाथों से सताई हुई बहिनें नहीं हैं कि इन पर बदनीयती का धब्बा लगाया जाय । हाँ यदि

कुछ भूल समझी जाय तो वह बड़े - बड़े बुद्धिमान लोगों से भी हो जाया करती है । साथ ही इसके यह भी मानना पड़ेगा

कि ग्रहदशा के फेर में पड़े हुए कई आदमी एक साथ मिलकर मुसीबत के दिन काटना चाहें तो सहज में काट सकते हैं

बनिस्बत इसके कि वे सब अलग - अलग होकर कोई कार्रवाई करें , आप यह सुन ही चुके हैं कि ये दोनों (कला और

बिमला) किस तरह जमाने अथवा भूतनाथ के हाथों से सताई जा चुकी हैं अस्तु हम लोगों का एक साथ रहना लाभदायक

होगा ।

प्रभाकर सिंह : (इंदु से) तुम्हारा कहना कुछ - कुछ जरूर ठीक है , मैं इस बात को पसन्द करता हूँ कि तुम यहाँ रहो जब

तक कि मैं अपने दुश्मनों पर फतह पाकर स्वतंत्र और निश्चिन्त न हो जाऊँ । मुझे इस बात की जरूर खुशी है कि

तुम्हारे लिए एक अच्छा ठिकाना निकल आया है । मगर मैं हाथ - पैर तुड़ाकर नहीं रह सकता ।

इंदुमति : मगर आपको इन दोनों की मदद जरूर करनी चाहिए ।

प्रभाकर सिंह : इसके लिए मैं दिलोजान से तैयार हूँ , मगर अभी मैं भूतनाथ के साथ दुश्मनी न करूंगा जब तक कि

अच्छी तरह जाँच न लूं और अपने दोस्त गुलाबसिंह से राय न मिला लूँ ।

विमला : (कुछ घबराहट के साथ) तो क्या आप हम लोगों के बारे में गुलाबसिंह से कुछ जिक्र करेंगे ?

प्रभाकर सिंह : बेशक !

विमला : तब तो आप चौपट ही करेंगे क्योंकि गुलाबसिंह भूतनाथ का दोस्त है और उससे हमारा हाल जरूर कह देना ,

ऐतो अवस्था में मेरे मनसूबों पर बिलकुल ही ताला पड़ जाएगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि सहज ही में इस दुनिया से ... (लंबी साँस लेकर) ओफ ! यदि मैं आपसे भलाई को आशा न करूँ तो दुनिया में किससे कर सकती हूँ ? वह कौन - सा दरख्त है जिसके साये तले मैं बैठ सकता हूँ और वह कौन - सा मकान है जिसमें स्वतंत्र परू से रह कर जिंदगी बिता सकती है : एक इन्द्रदेव जिन्होंने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा है , और दूसरे आप जिनसे मैं भलाई की उम्मीद कर सकती है । यदि आप हो मेरो प्रतिज्ञा भंग करने के कारण हो जाएंगे तो हमारी रक्षा करने वाला और हमारे सतीत्व को बचाने

वाला , हमारे धर्म का प्रतिपालन करने वाला और कुम्हलाई हुई शुभ मनोरथलता में जीवन संचार करने वाला और कौन होगा : मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि भूतनाथ कदापि आपके साथ भलाई न करेगा चाहे गुलाबसिंह आपका दिली दोस्त हो और चाहे भूतनाथ गुलाबसिंह को इष्टदेव के तुल्य मानता हो , साथ ही इसके मैं डंके की चोट पर कह सकती हूँ कि यदि आप मुझे धर्म - पथ से विचलित हुई पावें , यदि आपको मेरे निर्मल आँचल में किसी तरह का धब्बा दिखाई दे , और यदि जाँच करने पर मैं झूठी साबित होऊँ तो आपको अख्तियार है और होगा कि मेरे साथ ऐसा बुरा सलूक करें जो कि अनपढ़ , उजड़ और अधर्मी दुश्मन के किए भी न हो सके । बेशक आप मुझे ..

इतना कहते - कहते बिमला का गला भर आया और उसकी आँखों से आँसू की धारा बह चली ।

प्रभाकर सिंह : (बात काट कर दिलासे के ढंग से) बस - बस बिमला बस , मुझे विश्वास हो गया कि तू सच्ची है और दिल का गुबार निकालने के लिए तेरी प्रतिज्ञा सराहने के योग्य है । मैं शपथपूर्वक कहता हूँ । तेरे भेदों को तुझसे ज्यादा छिपाऊँगा और तेरी इच्छा के विरुद्ध कभी किसी पर प्रकट न करूँगा चाहे वह मेरा कैसा ही प्यार क्यों न हो , साथ ही इसके विश्वास दिलाता हूँ कि तू मुझसे स्वप्न में भी बुराई की आशा न रखियो मगर हाँ , मैं भूतनाथ की जाँच जरूर करूँगा कि वह कितने पानी में है ।

विमता : (खुशी से प्रभाकर सिंह को प्रणाम करके) बस मैं इतना सुनना चाहती थी , आपकी इतनी प्रतिज्ञा मेरे लिए बहुत है । आप शौक से भूतनाथ की बल्कि साथ ही इसके भी जाँच कीजिए मैं इसके लिए कदापि न रोकूँगी , मगर मैं खुद जानती हूँ कि भूतनाथ परले सिरे का बेईमान , बाज और खुदगर्ज ऐयार है और ऐयारी के नाम में धब्बा लगाने वाला है । मै । आपको एक चीज दूँगी जो पड़ने पर आपको बचावेगी , वह चीज मुझे इन्द्रदेव ने दी है और वह आप ऐसे बहादुर के पास रहने योग्य है । आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो तो मैं इन्द्रदेव से भी आपकी मुलाकात कराऊँगी ।

प्रभाकर सिंह : मैं बड़ी खुशी से से मिलने के लिए तैयार हूँ , उनसे मिलकर मुझे कितनी खुशी होगी मैं बयान नहीं कर सकता । वे निःसन्देह महात्मा हैं और मुझे उनसे

मिलने की सख्त जरूरत है ! मैं यह भी जानता हूँ कि वह मुझ पर कृपादृष्टि रखते हैं और ऐसे समय में मेरी भी पूरी सहायता कर सकते हैं ।

बिमला : निःसन्देह ऐसा ही है । आप इस घाटी में तीन दिन के लिए मेरी मेहमानी कबूल करें , इन तीन दिनों में कई अद्‌भुत चीजें आपको दिखाऊँगी और इन्द्रदेव जी से भी मुलाकात कराऊँगी क्योंकि कल वे यहाँ जरूर आयेंगे ।

कला : (मुसकराती हुई दिल्लगी के साथ) मगर ऐसा न कीजिएगा कि उस रात की तरह ये तीन दिन भी आप इस स्थान की तलाशी में ही बिता दें और हर रोज सुबह को एक नई घाटी से बाहर निकला करें ।

प्रभाकर सिंह : मैं पहिले ही आवाज देने पर समझ गया था कि तुमने उस रात की कार्रवाई देख ली है , इसे दोहराने की कोई जरूरत न थी ! अगर खुशी से तुम अपना घर न दिखाओगी तो मैं बेशक इसी तरह जबर्दस्ती देखने का उद्योग

करूँगा ।

कला : जबर्दस्ती से कि चोरी से !

इतना कहकर कला खिलखिलाकर हँस पड़ी और तब तक कुछ देर तक इन सभों में इधर - उधर की बातें होती रहीं , इसके - बाद धूप ज्यादा निकल आने के कारण सब कोई उठ कर बँगले के अन्दर चले गए और वहाँ भी कई घंटे तक

हँसी - दिल्लगी तथा ताने और उलाहने की बातें होती रही । इस बीच में इंदु ने अपनी दर्दनाक कहानी कह सुनाई और प्रभाकर सिंह ने भी अपनी बेबसी में जो कुछ देखा - सुना था इससे बयान किया ।

दो पहर से ज्यादे दिन चढ़ चुका था जब बिमला सभों को लिए हुए अपने महल में आई । इतनी देर तक खुशी में किसी को भी नहाने - धोने अथवा खाने की सुध न रही ।

तीन दिन नहीं बल्कि पाँच दिन तक मेहमानी का आनन्द लूरकर आज प्रभाकर सिंह उस अदभुत खोर के बाहर निकले हैं । इन पांच दिनों के अन्दर उन्होंने क्या क्या देखा सना , किस किस स्थान की सेरकी , कस कस से मिले जुले , सो ॥ यहाँ पर कुछ भी न कहेंगे सिवाय इसके कि वेदमतिको विमला और कला के पास गए हैं और इस काम से

बहुत प्रसन्न भी हैं । साथ ही इसके यह भी कर देना उचित जान पड़ता है कि जब उनके विचारों में बात बड़ा परिवर्तन हो गया है ।

दिन पहर भर से कुछ कम बाकी है । प्रभाकर सिंह सिर शकार का सोचते हुए पहाड़ के किनारे भूतनाथ की पारी की तरफ धीरे - धीरे चले जा रहे हैं । वे जानते हैं कि भूतनाथ की पारी का दरवाजा अब दूर नहीं है तथा उन्हें यह भी गुमान है कि भूतनाथ या गुलाबसिंह ताज्जुब नहीं कि बाहर ही मिल जाए । इसलिए कर धीर दम उलाते हैं , इधर इधर चौकन्ने होकर देखते हैं और कभी - कभी पत्थर की किसी सुन्दर महान पर बैठ जाते हैं ।

प्रभाकर सिंह का सोचना बहुत ठीक निकला । वे एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर कुछ सोच रहे थे कि भूतनाथ ने उन्हें देख लिया और तेजी के साथ लपक कर इनके पास आया , मगर इन्हें सस्त और उदास देखकर उसे ताव और दुःख हुआ क्योंकि जिस तपाक के साथ का प्रभाकर सिंह से मिलना चाहता था उस साथ पभाकर सिंह उससे नहीं मिले , न तो उसका इस्तकबाल किया और उसे आवभगत के साथ लिया । इतना जरूर किया कि भूतनाथ को देख उठ खड़े हुए और एक लंबी साँस लेकर बोले , " बस भूतनाथ ! तुमसे मुला । हो गई जब केवल गलाबसिंह से मिलने की अभिलाषा है । इसके बाद फिर कोई भी मुझे प्रभाकर सिंह की नहीं देख सकेगा । "

भूतनाथ : (आश्चर्य से) क्यों - क्यों , सो क्यों ?

प्रभाकर सिंह : तुम जानते हो कि इस दुनिया में मेरा गई , जहाँ कोई भी जाकर उससे मिल भी नहीं सकर

भी नहीं है , एक इंदमति थी सो वह भी ऐसे ठिकाने पहुँच

भूतनाथ : नहीं - नहीं प्रभाकर सिंह , ये शब्द बहादुरों के मुंह से निकलने योग्य नहीं हैं । क्या इंदुमति का कुछ हाल आपको मालूम हुआ ?

प्रभाकर सिंह : कुछ क्या

बहुत ।

भूतनाथ : किस रीति से ?

प्रभाकर सिंह : आश्चर्यजनक रीति से ।

भूतनाथ : किसकी जुबानी ?

' प्रभाकर सिंह : एक निर्जीव मूरत की जवानी ।

भूतनाथ : बस इस पहेल से तो काम नहीं चलता , खुलासा कहिए नहीं तो . ,

प्रभाकर सिंह : अच्छा वेठो और सुनो ।

दोनों बैठ गए और तब भूतनाथ ने प्रभाकर से पूछा

' भूतनाथ : अच्छा अब कहिए कि क्या हुआ और किसकी जुबानी आपको इंदमति का हाल मालूम हुआ ?

प्रभाकर सिंह : मैं कह चुका हूँ कि एक निर्जीव मूरत की जुबानी मुझे बहुत कुछ हाल मालूम हुआ जिसे सुनकर तुम ताज्जुब करोगे । सुनो और आश्चर्य करो कि तुम्हारे पड़ोस में कैसा एक विचित्र स्थान है ! (रुककर) नहीं नहीं , यह मेरी भूल है कि मैं ऐसा कहता हूँ , निःसन्देह उस विचित्र स्थान का हाल सबसे ज्यादे तुम्हीं को मालूम होगा , मैं तो नया मुसाफिर हूँ ।

भूतनाथ : आखिर किस स्थान के विषय में आप कह रहे हैं ? कुछ समझाइए भी तो ।
प्रभाकर सिंह : (हाथ का इशारा करके) बस इसी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक शिवालय है जिसके अन्दर शिवजी की नहीं बल्कि किसी तपस्वी ऋषि की मूर्ति है जो कि पूरे आदमी के कद की ...

भूतनाथ : हाँ हाँ ठीक है इस तरफ के जंगली लोग उसे अगस्तमुनि की मूर्ति कहते हैं , खूब लंबी - लंबी जटा है और मूर्ति के आगे एक छोटा - सा कुंड है जिसमें हरदम जल भरा रहता है न मालूम वह जल कहाँ से आता है चाहे जितना भी खर्च करो कम होता ही नहीं । वह स्थान ' अगस्ताश्रम ' के नाम से पुकारा जाता है ।

प्रभाकर सिंह : बस - बस , वही स्थान है ।

भूतनाथ : फिर , उससे क्या मतलब ?

प्रभाकर सिंह : उसी मूर्ति की जुबानी मुझे कई बातें मालूम होती हैं , तुम्हें शक्ति है ।

ही होगा कि उसमें बात करने की

भूतनाथ : (दिल्लगी के तौर पर हँसकर) बहुत खासे ! यह आपसे । कि जो कुछ उसे कहोगे वह विश्वास कर लेगा !

कह दिया कि भूतनाथ ऐसा पागल हो गया है

प्रभाकर सिंह : तो क्या मैं गप्प उड़ा रहा हूँ ?

भूतनाथ : अगर गप्प नहीं तो दिल्लगी ही

प्रभाकर सिंह : नहीं कदापि नहीं , आश्चर्य होता है कि तुम यहाँ के रहने वाले होकर उस मूर्ति का हाल कुछ नहीं जानते और यदि मैं कुछ कहता भी हूँ तो दिल्लगी उड़ाते हो ! अस्तु जाने दो अब मैं इस विषय में कुछ भी नहीं कहूँगा हाँ , तुम चाहो तो साबित कर दूंगा कि वह मूर्ति बोलती है और त्रिकालदर्शी है । अच्छा जाओ गुलाबसिंह को जल्द भेजो कि मैं उससे मिल कर विदा होऊँ ।

भूतनाथ : तो आप मेरे स्थान पर ही क्यों नहीं चलते ? उस जगह आपको बहुत आराम मिलेगा , गुलाबसिंह से मुलाकात भी होगी और साथ ही इसके मेरा भ्रम भी दूर हो जाएगा ।

प्रभाकर सिंह : नहीं , अब मैं वहाँ न जाऊँगा । मैं उसी शिवालय में चल कर बैठता हूँ तुम गुलाबसिंह को उसी जगह भेज दो मैं मिल लूँगा , बस अब इस विषय में जिद न करो ।

भूतनाथ : प्रभाकर सिंह जी , मैं खूब जानता हूँ कि आप क्षत्रिय हैं और सच्चे बहादुर हैं , आपकी वीरता मौरूसी है , खानदानी है , निःसन्देह आपके बड़े लोग जैसे वीर पुरुष होते आए हैं वैसे ही आप भी हैं , मगर आश्चर्य है कि आप मुझे कुछ ऐयारी ढंग की बातें करके धोखे में डालना चाहते हैं ... अच्छा - अच्छा , मेरी बातों से यदि आपकी भृकुटी चढ़ती है तो जाने दीजिए , मैं कुछ न कहूँगा , जाता हूँ और गुलावसिंह को बुलाए लाता हूँ ।

इतना कहकर भूतनाथ ने जफील बजाई जिसकी आवाज सुनकर उसके तीन शागिर्द वात - की - बात में वहाँ आ पहुँचे । भूतनाथ उन्हें इशारे में कुछ समझा कर विदा

हुआ और अपनी घाटी की तरफ चला गया। प्रभाकर सिंह को मालूम हो गया कि भूतनाथ इन तीनों ऐयारों को मेरी निगरानी के लिए छोड़ गया है।

कुछ सोच - विचारकर प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और धीरे - धीरे ईशरान कोण की तरफ जाने लगे। एक घड़ी बरावर चले जाने के बाद वह उस शिवालय के पास पहुँचे जिसका जिक्र अभी थोड़ी देर हुई भूतनाथ से कर चुके थे और जिसका नाम भूतनाथ ने अगस्तमुनि का आश्रम बतलाया था।

यह स्थान बहुत ही सुन्दर और सुहावना था और पहाड़ की तराई में कुछ ऊँचे की तरफ बढ़कर बना हुआ था। इस जगह दूर - दूर तक बेल के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और बेलपत्र की छाया से यह जगह बहुत ठंडी जान पड़ती थी। मंदिर यद्यपि बहुत बड़ा न था मगर एक खूबसूरत छोटी - सी चारदीवारी से घिरा हुआ था। आगे की तरफ एक मामूली सभामंडप और बीच में मूर्ति के आगे एक छोटा - सा कुंड बना हुआ था जिसमें पानी हरदम भरा रहता था। वह कुंड यद्यपि बहुत छोटा अर्थात् डेढ़ हाथ चीड़ा तथा लंबा और उसी अंदाज का गहरा था मगर उसके साफ और निर्मल जल से सैकड़ों आदमियों का काम चल सकता था। किसी पहाड़ी सोते का मुँह उसके अन्दर जरूर था जिसमें से जल बराबर आता और बह कर ऊपर की तरफ से निकलता जाता था। इस कुंड के विषय में लोग तरह - तरह की गप्पें उड़ाया करते थे जिसके लिखने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं।

प्रभाकर सिंह आकर इस मंदिर के सभामंडप में बैठ गए और भूतनाथ तथा गुलाबसिंह का इंतजार करने लगे। उन्होंने देखा कि भूतनाथ के शागिर्द ऐयारों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा है बल्कि इधर - उधर चलते - फिरते दिखाई दे रहे हैं।

संध्या हुआ ही चाहती थी जब गुलाबसिंह को लिए भूतनाथ वहाँ आ पहुँचा प्रभाकर सिंह बैठे उन दोनों का इंतजार कर रहे थे। प्रभाकर सिंह को देखकर गुलाबसिंह ने प्रसन्नता प्रकट दो - चार मामूली बातचीत के बाद कहा " भूतनाथ की जुबानी आपका हाल सुन कर मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। आपने भूतनाथ को यह समझाने की कोशिश की थी कि यह अगस्तमुनि की मूर्ति बोलती है और इसकी जुबानी आपको इंदुमति का बहुत कुछ हाल मालूम हुआ

प्रभाकर सिंह : निःसन्देह ! मेरा कहना केवल आश्चर्य बढ़ाने के लिए नहीं है बल्कि इस विषय पर विश्वास दिलाने के लिए है , अब तुम आ गए हो तो अपने से सुन लेना कि मूर्ति क्या कहती है , मुझे यह बात अकस्मात् मालूम हुई । मैं नहीं जानता था कि इस मूर्ति में गुण भरे हुए हैं , मगर अफसोस इस बात का है कि यह मूर्ति रोज नहीं बोलती और न हर वक्त किसी के सवाल का जवाव का देती है । इसके बोलने का खास - खास दिन मुकर्रर है जिसका ठीक हाल मुझे मालूम नहीं है मगर इतना मैं जान गया हूँ कि बातचीत करते समय यह मूर्ति अंत में खुद बता देती है कि अब आगे किस दिन और किस समय बोलेगी । इसकी जुबानी सुनकर मैं कहता हूँ कि आज ग्यारह घड़ी रात जाने के बाद यह मूर्ति पुनः बोलेगी और इसके बाद पुनः रविवार के दिन बातचीत करेगी । आह , ईश्वर की लीला का किसी को भी अंत नहीं मिलता ! मेरी अक्ल हैरान है और कुछ भी समझ में नहीं आता कि क्या मामला है ?

गुलाबसिंहः निःसन्देह यह आश्चर्य की बात है ! खैर अब जो कुछ होगा हम लोग देख ही सुन लेंगे परन्तु यह तो बताइए कि आप इस मूर्ति की जुबानी क्या - क्या सुन चुके हैं ?

प्रभाकर सिंह : सो मैं अभी कुछ नहीं कहूँगा , थोड़ी ही देर की तो बात है सब्र करो , समय आना ही चाहता है , जो कुछ पूछना हो खुद इस मूर्ति से पूछ लेना । तब तक मैं जरूरी कामों से निपटकर संध्योपासना में लगता हूँ , अगर उचित समझें तो आप लोग भी निपट लीजिए ।

भूतनाथ : मैं आपके लिए खाने - पीने की सामग्री लेता आया हूँ ।

रात लगभग ग्यारह घड़ी के जा चुकी है । भूतनाथ , गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह उत्कंठा के साथ उस (अगस्तमुनि की) मूर्ति की तरफ देख रहे हैं । एक आले पर मोमबत्ती जल रही है जिसकी रोशनी से उस मंदिर के अन्दर की सभी चीजें दिखाई दे रही हैं । भूतनाथ और गुलाबसिंह का कलेजा उछल रहा है कि देखें अब यह मूर्ति क्या बोलती है ।

वकायक कुछ गाने की आवाज आई , ऐसा मालूम हुआ मानो मूर्ति गा रही है , सब कोई बड़े गौर से सुनने लगे :

।। बिरह ।।

सबहि दिन नाहिं बराबर जात । कबहूँ कला बला पुनि कबहूँ कबहूँ करि पछितात । कबहूँ राजा रंक पुनि कबहुँ ससि उगन दिखलात ।। पै करनी अपनी सब चाखें , फल बोये को खात । अनरथ करम छिपे नहिं कबहूँ , अन्त सबै खुल जात ।। सबहि दिन नाहिं बराबर जात ।

इसके बाद मूर्ति इस तरह बोलने लगी

" आहा ! आज मैं अपने सामने किस - किस को बैठा देख रहा हूँ ? धर्मात्मा कैसे कहूँ , क्या संभव है कि भविष्य में भी यह धर्मात्मा

। प्रभाकर सिंह ! धर्मात्मा गुलाबसिंह ! मैं अभी रहेगा ?

“ खैर जो कुछ होगा देखा जाएगा । हाँ , यह तीसरा मेरे सामने कौन था ! वही गदाधरसिंह जिसने एकदम से अपनी काया पलट कर दी और एक सुन्दर नाम को छोड़ भूतनाथ नाम से प्रसिद्ध होना पसन्द किया ! आह , दुनिया में किसी पर विश्वास और भरोसा न करना चाहिए किसी की मित्रता पर किसी को घमंड करना चाहिए । क्या दयाराम के स्वप्न में भी इस बात का गुमान रहा होगा मैं अपने दोस्त गदाधरसिंह के हाथ से मारा जाऊँगा , दोस्त ही नहीं बल्कि गुलाम और ऐयार गदाधरसिंह ! "

मूर्ति की यह बात सुनकर का कलेजा दहल उठा और गुलाबसिंह तथा प्रभाकर सिंह आश्चर्य के साथ भूतनाथ का मुँह देखने लगे । मूर्ति ने फिर इस तरह कहना शुरू किया

" अफसोस ! अपनी चूक का प्रायश्चित करना उचित न था कि ढंग बदल कर पुनः पाप में लिप्त होना । भूतनाथ , क्या तुम समझते हो कि इस दुष्कर्म का अच्छा फल पाओगे ? क्या तुम समझते हो कि गुप्त रहकर पृथ्वी का आनन्द लूटोगे ? क्या तुम समझते हो कि बेईमान दारोगा से मिलकर स्वर्ग की सम्पत्ति लूटोगे और मायारानी की बदौलत कोई अनमोल पदार्थ बन जाओगे ? नहीं - नहीं , कदापि नहीं ! गदाधरसिंह , तुम्हारी किस्मत में दुःख भोगना बदा है अस्तु भोगो , जो जी में आवे करो मगर ऐ गुलाबसिंह , तुम ऐसे दुष्ट का साथ क्यों दिया चाहते हो जो बिना कदम लगाए आसमान पर चढ़ जाने का हौंसला करता है , खुद गिरेगा और तुम्हें भी गिरावेगा , और ऐ प्रभाकर सिंह , तुम अब अपनी आँखों के आँसू पोंछ डालो , इंदुमति को बिलकुल भूल जाओ , अपने कातर हृदय को ढांढस देकर वीरता का स्मरण करो , दुनिया में कुछ नाम पैदा करो ।

यदि तुम धर्म - पथ पर दृढ़ता के साथ चलोगे तो मैं बराबर तुम्हारी सहायता करता रहूँगा । मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम अवश्य उस पथ का अवलंबन करो जो मैं तुमसे उस दिन कह चुका हूँ , खबरदार , अपने भेद के मालिक आप बने रहो और किसी दूसरे को उसमें हिस्सेदार मत बनाओ । क्या तुम्हें मुझसे और कुछ पूछना है ? "

इतना कहकर मूर्ति चुप हो गई और प्रभाकर सिंह ने उससे यह सवाल किया :

प्रभाकर सिंह : मुझे यह पूछना है कि मैं किसी को अपना साथी बनाऊँ या न बनाऊँ ?

मूर्ति : बनाओ और अवश्य बनाओ । पहिली बरसात के दिन एक आदमी से तुम्हारी मुलाकात होगी , उसे तुम अपना साथी बनाओगे तो शुभ होगा । अच्छा और कुछ पूछोगे ? " भूतनाथ : अव मैं कुछ पूलूँगा ।

मूर्ति : पूछो क्या पूछते हो ?

भूतनाथ : पहिले यह बताओ कि अब तुम किस दिन और किस समय बोलोगे ?

मूर्ति : यदि तुम्हारी नीयत खराब न हुई और तुमने कोई उत्पात न मचाया तो इसी अमावस वाले दिन सोलह घड़ी रात बीत जाने के बाद हम पुनः बोलेंगे ।

गुलाबसिंह : हमें भी कुछ पूछना है ।

मूर्ति : तुम्हारी बातों का जवाब आज नहीं मिल सकता , हाँ यदि तुम चाहो तो आज के अट्ठारहवें दिन इसी समय यहाँ आ सकते हो परन्तु अकेले ।

गुलाबसिंहः अच्छा तो अब यह बताइए कि हम भूतनाथ के मेहमान बने रहें या ..

मूर्ति : नहीं , अगर अपनी भलाई चाहते हो तो दो पहर के अन्दर भूतनाथ साथ छोड़ दो और प्रभाकर सिंह की आज्ञानुसार काम करो । बस अब कुछ मत पूछो । इसके बाद मूर्ति ने बोलना बंद कर दिया । भूतनाथ , गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह ने कई तरह के सवाल किए मगर मूर्ति ने कुछ जवाब न दिया अस्तु तीनों आदमी मंदिर के बाहर निकले और सभा - मंडप में बैठकर यों बातचीत करने लगे :

मालूम हुई है । मैं स्वप्न में भी नहीं जान सकता था कि दयाराम जी

गुलाबसिंहः क्यों भूतनाथ , यह तो हमें एक नई को तुमने मारा होगा ! अफसोस !!

भूतनाथ : गुलाबसिंह , आश्चर्य की बात है कि तुम इतने बड़े होशियार होकर इस पत्थर की मूर्ति की बातों में फंस गए और जो कुछ उसने कहा उसे सच समझने लगे ! इतना तक नहीं विचारा कि यह असंभव वात वास्तव में क्या है ? निःसन्देह यह धोखे की टट्टी है और इसमें कोई अनूठा रहस्य है बल्कि यों कहना चाहिए कि यह कोई तिलिस्म है और इसका परिचालक (इस समय जो भी हो) जरूर हमारा दुश्मन है ।

गुलाबसिंहः नहीं - नहीं भूतनाथ , अब तुम हमें धोखे में डालने की कोशिश मत करो और न अब हम लोग तुम्हारी बातों पर विश्वास ही कर सकते हैं । ऐसी आश्चर्यमय और अनूठी घटना का प्रभाव जैसा हम लोगों के ऊपर पड़ा उसे हमी लोग जान सकते हैं ।

' भूतनाथ : खैर , तुम जानो , जो जी में आये करो और जहाँ चाहो चले जाओ , मैं तुम्हें अपने पास रहने के लिए जोर नहीं देता , मगर तुम दोस्त हो अस्तु निश्चिन्त रहो , मैं तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न दूंगा । इसके बाद इन तीनों में किसी तरह की बातचीत न हुई , गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह पूरब की तरफ रवाना हुए और भूतनाथ ने पश्चिम की तरफ का रास्ता लिया ।

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन उसी अगस्ताश्रम के पास आधी रात के समय हम एक आदमी को टहलते हुए देखते

हैं । हम नहीं कह सकते कि यह कौन तथा किस रंग - ढंग का आदमी है , हाँ , इसके कद की ऊँचाई से साफ मालूम होता

है कि यह औरत नहीं है बल्कि मर्द है मगर यह नहीं मालूम पड़ता कि अपनी पोशाक् के अन्दर यह किस ठाठ से है

अर्थात् यह आदमी जिसने स्याह लवादे से अपने को अच्छी तरह छिपा रखा है सिपाहियों और बहादुरों की तरह के

हर्वे - हथियारों से सजा हुआ है या चोरों की तरह संधियों और हस्थियों वगैरह से । जो हो , हमें इसके ब्यौरे से इस समय

कोई मतलब नहीं , हमें सिर्फ इतना ही कहना है कि यह यद्यपि टहल कर अपना समय बिता रहा है मगर इसमें कोई

शक नहीं कि अपने को हर तरह से छिपाए रखने की भी कोशिश कर रहा है । दिन का मुकाबला करने वाली चाँदनी

यद्यपि अच्छी तरह छिटकी हुई है मगर उस अंधकार को दूर करने की शक्ति उसमें नहीं है जो इस समय पेड़ों के झुरमुट

के अन्दर पैदा हो रहा है और जिससे उस टहलने वाले व्यक्ति को अच्छी सहायता मिल रही है । अगस्ताश्रम की तरफ

घड़ी - घड़ी अटक कर देखने और आहट लेने से यह भी मालूम होता है कि वह किसी आने वाले की राह देख रहा है ।

इसे टहलते हुए घंटा भर से ज्यादे हो गया और तब इसने दो आदमियों को आते और अगस्ताश्रम की तरफ जाते देखा

ये दोनों कद के छोटे तथा ढाल - तलवार तथा तीर - कमान से सुसज्जित थे मगर इनकी के बारे में हम इस समय

किसी तरह की निंदा या प्रशंसा नहीं कर सकते ।

मालूम होता है कि वह टहलने वाला स्याहपोश इन्हीं दोनों आदमियों का कर रहा था क्योंकि जैसे ही वे दोनों

अगस्ताश्रम की चारदीवारी के अन्दर घुसे वैसे ही इसने उनका पीछा उनके कुछ ही देर बाद यह स्याहपोश भी

चारदीवारी के अन्दर जा पहुँचा मगर वहाँ उन दोनों पर निगाह न । पहिले इसने मंदिर के चारों तरफ की परिक्रमा

की और उन दोनों को ढूंढा और जब पता न लगा तब मंदिर अन्दर पैर रखा मगर वहाँ भी कोई न था ।

हम पहिले कह आए हैं कि यह मंदिर बहुत छोटा

करना बेशक पागलपन समझा जा सकता है

तरह खोज डाला यहाँ तक कि उस छोटे - से

साधारण था अतएव इसके अन्दर किसी को खोजने में विलंब

स्याहपोश ने इसका कुछ भी विचार न किया और खूब अच्छी

में भी तलवार डाल कर जाँच लिया जिसमें हरदम पानी भरा रहता था ।

उस स्याहपोश को बड़ा जी ताज्जुब हुआ और आश्चर्य के साध सोचने लगा " वे दोनों आदमी कहाँ गायब हो गए ! इस

छोटे - से मंदिर में किसी तरह छिप नहीं सकते , इसके अतिरिक्त वहाँ विशेष अँधकार भी नहीं है क्योंकि सभा मंडप में

चंद्रमा की चाँदनी जो आड़ होकर पहुंच रही है उसकी चमक से मंदिर के अन्दर का अंधकार भी इस योग्य नहीं रह गया

है कि अपनी स्याह चादर के अन्दर भी किसी को छिपा सके , अस्तु यही कहना पड़ता है कि यहाँ की जमीन उन दोनों

को खा गई । जो हो , इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह मंदिर मेरे दुश्मन का मुँह है । खैर कोई चिंता नहीं , अब मैं बाहर

चलता हूँ क्योंकि गरमी से जी व्याकुल हो रहा है तिस पर भारी पोशाक् ने और भी तंग कर रखा है । "

इस तरह की बातें सोचता और कुछ बुदबुदाता हुआ वह आदमी मंदिर के बाहर निकला और फिर उसी जगह पेड़ों की

झुरमुट और आड़ में जा पहुँचा जहाँ हम इसे पहले टहलते हुए देख चुके हैं । इस समय यहाँ एक आदमी और खड़ा है

जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और जिसे देखते ही उस स्याहपोश ने पूछा , " केम ? " इसके जवाब में उसने कहा ,

" चहा । "

जवाब सुनते ही स्याहपोश ने अपने ऊपर से स्याह लबादा उतार कर उसके हवाले किया और कहा , " अब मैं इसे नहीं

ओढ़ सकता क्योंकि इस गरमी में तकलीफ होने के सिवाय अब इसकी जरूरत भी न रही , मैं भूतनाथ की सूरत में अच्छा

हूँ मुझे कोई पहिचानने वाला नहीं । केवल गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह के खयाल से ओढ़ लिया था सो उनके मिलने

की अब कोई उम्मीद नहीं रही ! "

दूसरे नकाबपोश ने यह लबादा ले लिया और जवाब में कहा , “ मेरे लिए अब क्या आज्ञा होती है ? "

पाठक अब समझ गए हों यह स्याहपोश वास्तव में भूतनाथ है अस्तु उसने अपने साथी नकाबपोश से कहा , " तुम्हारी यहाँ कोई जरूरत नहीं रही , तुम जाओ जो कुछ मैं पहिले हुक्म दे चुका हूँ उसी के अनुसार काम करो , मैं जब यहाँ से जल्दी नहीं टल सकता क्यांकि इस मंदिर ने मुझे अपने जाल में फंसा लिया है ।

नकाबपोश चला गया और भूतनाथ फिर उसी अंधकार में टहलने लगा । कुछ देर बाद उस मंदिर में अन्दर से दो आदमी बाहर निकले और दक्खिन की तरफ चल पड़े । हम नहीं कह सकते कि ये वे ही थे जो पहिले मंदिर में जाकर गायब हो गए थे अथवा कोई दूसरे ।

भूतनाथ ने उन दोनों का पीछा किया मगर बड़ी कठिनता से अपने को छिपाता और उन्हें देखता हुआ जाने लगा क्योंकि चाँदनी उसके काम में बाधा डाल रही थी । लगभग आध कोस जाने के बाद वे दोनों एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ की जमीन पत्थर के बड़े - बड़े ढोकों से कुछ भयानक - सी हो रही थी उसी जगही खोह का एक मुहाना भी था जिसे भूतनाथ ने सहज ही में समझ लिया और यह इरादा कर लिया कि इन दोनों को यहाँ पर खोह के अन्दर घुसने के पहिले ही रोक लेना चाहिए , ताज्जुब नहीं कि खोह के अन्दर जाने पर ये फिर मेरे हाथ न लगें ।

वे दोनों आदमी खोह के मुहाने पर पहुँच कर रुके और आपस में कुछ बातें करने लगे । उसी समय भूतनाथ उनके पास जाकर खड़ा हो गया और यह देखकर कि उसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है बोला , दोनों कौन हो ? "

एक : तुम्हें इससे मतलब ?

भूतनाथ : मतलब यही है कि यह स्थान हमारी हुकूमत के अन्दर है और तुम्हारे उस अगस्ताश्रम के मंदिर जाने - आने का कारण क्या

र हम जानना चाहते हैं कि तुम दोनों कौन हो

एक : न तो इस सरजमीन के तुम मालिक ही हो और । तुम्हें कुछ पूछने का कोई अधिकार ही है । जिस तरह एक बेईमान और नमक हराम ऐयार बेईज्जती के साथ जिंदगी बिता सकता है उसी तरह तुम भी अपनी जिंदगी के दिन बिताने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते खूब जानते हैं कि तुम्हारा नाम गदाधरसिंह है और अब अपनी असलियत को छिपाते हुए तुम भूतनाथ के प्रसिद्ध हुआ चाहते हो !

भूतनाथ : (गुस्से से पेच खाकर) मालूम होता है कि तुम दोनों की शामत आई है जिससे मेरी बातों के साफ - साफ जवाब न देकर जली - कटी बातें करते और मुझे गदाधरसिंह के नाम से संबोधन करते हो । मैं नहीं जानता कि गदाधरसिंह किस चिड़िया का नाम है पर संभव है कि यह कोई भेद की बात हो , इसलिए मैं गदाधरसिंह के बारे में कुछ नहीं पूछता और एक दफे तुम्हारी इस ढिठाई को माफ करके फिर कहता हूँ कि तुम दोनों आदमी अपना परिचय दो नहीं तो ..

एक : नहीं तो क्या , तुम हमारा कर ही क्या सकते हो ? पहिले तुम अपनी जान बचाने का बंदोबस्त तो कर लो । हम लोग तुम्हारी झूठी बातों से धोखा नहीं खा सकते , बस चले जाओ और अपना काम करो , हम लोगों का पीछा करके तुम अच्छा नतीजा नहीं निकाल सकते ।

भूतनाथ खिलखिलाकर हँस पड़ा और उसने फिर पूछा ।

भूतनाथ : मैं समझता हूँ कि तुम दोनों मर्द नहीं बल्कि औरत हो । खैर इससे भी कोई मतलब नहीं । मैं वह आदमी नहीं हूँ जो किसी तरह का मुलाहिजा कर जाऊँ , इस तलवार को देख लो और जल्द बताओ कि तुम कौन हो !

इतना कहकर भूतनाथ ने म्यान से तलवार निकाल ली मगर उन दोनों का दिल फिर भी न हिला और एक ने पुनः कड़क कर भूतनाथ से कहा " चल दूर हो मेरे सामने से । तेरी निर्लज्ज तलवार से हम डर नहीं सकते ! समझ ले कि तू इस ढिठाई की सजा पावेगा और पछतावेगा । "

इसके जबाब में भूतनाथ ने हाथ बढ़ाकर एक की कलाई पकड़ ली , मगर साथ ही इसके दूसरे नकाबपोश ने मना ।। छुरी का वार किया जिसके लिए शायद वह पहिले ही से तैयार था । वह छुरी यद्यपि बहुत बड़ी न थी मगर ‖ उसकी चोट खाकर सम्हल न सका । छुरी भूतनाथ के बगल में चार अंगुल धंस गई और साथ ही भूतनाथ यह कहता हुआ जमीन पर गिर पड़ा “ ओफ , यह जहरीली छुरी ...। "

दिन पहर - भर से ज्यादे चढ़ चुका था जब भूतनाथ की बेहोशी दूर हुई और वह चैतन्य होकर ताज्जुब के साथ चारों तरफ निगाहें दौड़ाने लगा । उसने अपने को एक ऐसा कैदखाने में पाया जिसमें से उसकी हिम्मत और जवाँमर्दी उसे बाहर नहीं कर सकती थी । यद्यपि वह कैदखाना बहुत छोटा और अंधकार से खाली था मगर तीन तरफ से उसकी दीवारें बहुत मजबूत और संगीन थीं तथा चौथी तरफ लोहे का मजबूत जंगला लगा हुआ था जिसमें आने के लिए छोटा दरवाजा भी था जो इस समय बहुत बड़े ताले से बंद था । इस कैदखाने के अन्दर बैठा - बैठा भूतनाथ अपने सामने के दृश्य बहुत अच्छी तरह देख सकता था । थोड़ी देर इधर - उधर निगाह दौड़ाने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और जंगले के पास आकर बड़े गौर से देखने लगा । उसके सामने वही सुन्दर जमीन और खुशनुमा घाटी थी जिसका हाल हम ऊपर बयान कर चुके हैं , जो कला और विमला के कब्जे में है , अथवा जहाँ की सैर अभी - अभी प्रभाकर सिंह कर आए हैं । बीच वाले सुन्दर कमरे को भूतनाथ बड़े गौर के साथ देख रहा था क्योंकि वह कैदखाना जिसमें भूतनाथ कैद था पहाड़ की ऊँचाई पर बना हुआ था जहाँ से इस घाटी का हर एक हिस्सा साफ - साफ दिखाई दे रहा था । उसकी चालाक और चंचल निगाहें इस बात की जाँच कर रही थीं कि वह किस जगह पर कैद है और उसको कैद करने वाला कौन है ।

इस घाटी में न कभी वह आया था इसे कभी देखा था और न इसका हाल ही कुछ जानता था , अतएव उसे किसी तरह का गुमान भी न हुआ कि यह उसके पड़ोस की

घाटी है अथवा उसके पास ही में निजी मकान है जहाँ वह रहता है ।

थोड़ी देर तक बड़ी गौर से इधर - उधर देखने के बाद भूतनाथ हताश र बैठ गया और तरह - तरह की बातें सोचने लगा । उसे इस बात का बहुत ही दुःख था कि उसके हरवे छीन । गए थे और उसका ऐवारी का वटुआ भी उसके पास न था मगर उसके उस जख्म में कोई विशेष तकलीफ जिसकी बदौलत वह बेहोश होकर कैदखाने की हवा खा रहा था ।

aaspora

दोपहर की टनटनाती धूप भूतनाध की आँखों सामने चमक रही थी । भूख तो कोई बात नहीं मगर प्यास के मारे उसका गला चटका जाता था । वह सोच रहा कि उसे दाना - पानी देने के लिए भी कोई आवेगा या वह भूखा ही पिंजरे में बंद रहेगा क्योंकि अभी तक आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी थी ।

थोड़ी देर और बीत जाने के बाद एक औरत वहाँ आई जिसके पास भूतनाथ के लिए खाने - पीने का सामान था । उसने वह सामान बड़ी होशियारी से जंगले के अन्दर खास रास्ते से जो इसी काम के वास्ते बना हुआ था रख दिया और कहा , " लो गदाधरसिंह , तुम्हारे लिए खाने - पीने का सामान आ गया है । इसे खाओ और मौत का इंतजार करो । "

भूतनाथ : (पानी का लोटा उठाकर) हाँ , ठीक है , बस मेरे लिए यही काफी है , मैं सिर्फ पानी ही पीकर मौत का इंतजार करूँगा क्योंकि जब तक मैं जंगल - मैदान और स्नान इत्यादि कर्म न कर लूँ भोजन नहीं कर सकता ।

औरत : खैर तुम्हारी खुशी , मेरा जो काम था उसे मैं पूरा कर चुकी । मगर मैं अपनी तरफ से यह पूछती हूँ कि तुम कै दिन तक इस तरह गुजारा कर सकोगे ? (कुछ सोचकर) नहीं , मेरा यह सवाल करना ही वृथा है क्योंकि मैं खूब जानती हूँ कि दो - तीन दिन के अन्दर ही तुम्हारा फैसला हो जाएगा और तुम इस दुनिया से उठा दिए जाओगे ।

भूतनाथ : अगर ऐसा ही है तो यह दो - तीन दिन का विलंब भी क्यों ?

औरत : इसलिए कि तुम्हारी मौत का ढंग निश्चय कर लिया जाय ।

भूतनाथ : ढंग कैसा मैं नहीं समझा !

औरत : मतलब यह है कि तुम एकदम से नहीं मार डाले जाओगे बल्कि तरह - तरह की तकलीफ देकर तुम्हारी जान ली

जाएगी , अस्तु यह निश्चय किया जा रहा है कि किस तरह की तकलीफ तुम्हारे लिए उचित है ।

भूतनाथ : ये बातें कौन तजवीज कर रहा है ?

ओरत : हमारे मालिक लोग ।

भूतनाथ : मालूम होता है कि तुम्हारे मालिक लोग मर्द नहीं हैं हीजड़े हैं या औरत । ऐसे विचार मर्दो के नहीं होते !

औरतः बेशक ऐसा ही है , हमारे मालिक औरत हैं ।

भूतनाथ : (आश्चर्य से) औरत है !!

औरत : हाँ औरत ।

भूतनाथ : मगर मैंने किसी औरत के साथ कभी दुश्मनी नहीं कि बल्कि कोई मर्द भी ऐसा न मिलेगा जो मुझे अपना

दुश्मन बतावे और कहे कि गदाधरसिंह ने मुझे बर्बाद कर दिया ।

औरत : जो हो , इस विषय में मैं नहीं कह सकती , आखिर कोई बात होगी ही तो !!

भूतनाथ : क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारी मालकिन का नाम क्या है

इसके बदले में मैं तुम्हें इतनी दौलत दूँगा कि कभी तुमने आँखों से

वह कौन है ? तुम यकीन रखो कि

होगी ।

औरत : मैं ऐसा नहीं कर सकती कि तुम्हें इस कैद से छुड़ा

इसके अतिरिक्त इस कैदखाने की ताली खुद मालकिन

तब तुम मुझे बेअंदाज दौलत देकर मालामाल कर दो ,

में है ।

भूतनाथ : नहीं , नहीं , मैं यह नहीं कहता , तुम

औरत : अगर ऐसा नहीं है तो तुम मुझे

भूतनाथ : मेरे मकान में जो कुछ दौलत है उसका तो कोई ठिकाना ही नहीं , मगर मेरे पास ही हरदम बटुए में दो - चार

लाख रुपए की जमा मौजूद रहती है । तुम कह सकती हो कि इस समय तो तुम्हारे पास तुम्हारा बटुआ भी नहीं है ..

औरत : हाँ - हाँ , मैं यही कहने वाली थी , बल्कि यह भी समझ रखना चाहिए कि इस समय वह बटुआ जिसके कब्जे में

होगा उसने वह रकम भी जरूर निकाल ली होगी ।

भूतनाथ : (बनावटी हँसी के साथ) नहीं नहीं , इसका तो तुम गुमान ही न करो कि वह रकम निकाली गई होगी , क्योंकि

उसके कोई जवाहिरात की डिबिया नहीं है या कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई देखते ही दौलत समझ ले , बल्कि उस

बटुए में कोई ऐसी चीज है जिसे मेरे सिवाय कोई बता नहीं सकता कि यह दौलत है और जो किसी अनजान की निगाह

में विलकुल रद्दी चीज है , बल्कि यों समझो कि जहाँ वह दौलत रखी हुई है वहाँ की ताली उस बटुए में है जिसकी

कलई मेरे सिवाय कोई खोल नहीं सकता और न मेरे वताए विना कोई पा ही सकता है । वह दौलत जो लगभग

चार - पाँच लाख रुपये की होगी मैं सिर्फ इतने ही काम के बदले में दे देना चाहता हूँ कि मेरा बटुआ मुझे ला दिया जाय

और बता दिया जाय यह स्थान किसका है और मैं किसका कैदी हूँ । मैं समझता हूँ कि मैं जरूर मार ही डाला जाऊँगा ,

अस्तु ऐसी अवस्था में अगर वह दौलत किसी नेक , रहमदिल और गरीब के काम आ जाय तो इससे बढ़कर खुशी की

वात और क्या हो सकती है ।

अहा , दुनिया में रुपया भी एक अजीब चीज है ! इसकी आँच को सह जाना हँसी - खेल नहीं है । इसे देखकर जिसके मुँह

इस कैदखाने से बाहर कर दो ।

काम के लिए और कहाँ से दौलत दे सकते हो !

में पानी न भर आवे समझ लो कि वह पूरा महात्मा है , पूरा तपस्वी है और सचमुच का देवता है । इस कम्बख्त की बदौलत बड़े - बड़े घर सत्यानाश हो जाते हैं , भाई - भाई में बिगाड़ हो जाता है , दोस्तों की दोस्ती में बट्टा लग जाता है , जोरू और खसम का रिश्ता कच्चे धागे से भी ज्यादे कमजोर होकर टूट जाता है , और ईमानदारी की साफ और सफेद चादर में ऐसा धब्बा लग जाता है जो किसी तरह छुड़ाए नहीं छुटता , इसे देखकर जो धोखे में न पड़ा , इसे देखकर जिसका ईमान न टला , और इसे जिसने हाथ - पैर का मैल समझा , बेशक कहना पड़ेगा कि उस पर ईश्वर की कृपा है और वही मुक्ति का वास्तविक पात्र है ।

इसकी आँच के सामने एक लौंडी का दिल भला कब तक कड़ा रह सकता था ? यद्यपि उस औरत ने अपने चेहरे के उतार - चढ़ाव को बहुत सम्हाला फिर भी भूतनाथ जान ही गया कि यह लालच के फंदे में फंस गई ।

भूतनाथ : सच तो यों है कि उस दौलत को मैं बहुत ही सस्ते दाम में बल्कि मुफ्त मोल बेच रहा हूँ , अब भी अगर तुम न खरीदो तो मैं जोर देकर कहूँगा कि तुमसे बढ़कर बदनसीब इस दुनिया में दूसरा कोई नहीं है । क्या वह दौलत कम है ? क्या उसे पाकर फिर भी किसी को नौकरी की जरूरत रह सकती है ? क्या उसकी बदौलत सुख का सामान इकट्ठा होने में किसी तरह की त्रुटि हो सकती है : बिलकुल नहीं फिर सोच - विचार करना क्यों और विलंब कैसा ? केवल हमारा ऐयारी का बटुआ ला देना और

बता देना कि मैं किसका कैदी हूँ और इस स्थान का मालिक कौन है । सिर्फ इतने ही के बदले में अभी - अभी वह रकम तुम्हें मिल सकती है सो भी ऐसी कि उसे कोई छीन भी न सकेगा ।

औरत : तुम यकीन जानो कि मैं एक अमीर की लौंडी हूँ । मेरी मालकिन बेअंदाज दौलत लुटाने वाली है , और उसकी बदौलत मुझे किसी बात की परवाह नहीं है ...

भूतनाथ : (बात काटकर) मगर लौंडीपन का तौक गले में जरूर

हुआ है । स्वतंत्र नहीं , लापरवाह और वेफिक्र नहीं ।

औरत : हाँ , यह सच है मगर उनकी नौकरी मुझे गढ़ाती नहीं और वे मुझसे बहिनापे का - सा बर्ताव करती हैं , मगर फिर भी तुम खुशी से दोगे तो मैं उस दौलत को जरूर ले लेकिन सिर्फ ऐसी अवस्था में जब कि मुझ पर नमकहरामी का धब्बा न लग सके ।

ग्रंधकर्ता : सत्यवचन ! नमकहराम !! भला

भी कोई बात है !!

भूतनाथ : नहीं नहीं , तुम पर का धब्बा नहीं लग सकेगा और तुम्हारी मालकिन का भी कुछ नुकसान नहीं होगा क्योंकि मैं इस कैदखाने से छूटकर भाग नहीं जाना चाहता , केवल इतना ही जानना चाहता हूँ कि मैं किसकी कैद में हूँ और अपना बटुआ केवल इतने ही के लिए माँगता हूँ कि उस खजाने की ताली निकालकर तुम्हें दे दूँ और तुम्हें बता दूं कि वह खजाना कहाँ है ।

औरत : अच्छा पहिले मैं बटुआ लाकर तुम्हें दे दूँ तब पीछे बता दूंगी कि तुम किसके कैदी हो , सब्र करो और दिन बीत जाने दो , देखो वह दूसरी लौंडी आती है , अब मैं विदा होती हूँ ।

इतना कहकर वह लौंडी भूतनाथ के दिल में खुशी और उम्मीद का पौधा जमाकर चली गई ।

भूतनाथ बड़ा ही कट्टर और दुःख - सुख बर्दाश्त करने वाला ऐयार था । कठिन से कठिन समय आ पड़ने पर भी उसकी हिम्मत टूटती न थी और वह अपनी कार्रवाई से बाज नहीं आता था ।

खाने - पीने का सामान जो कुछ उसके सामने आ गया था उसमें से पानी के सिवाय बाकी सब कुछ ज्यों - का - त्यों पड़ा रह गया । भूतनाथ को सिर्फ इस बात का इंतजार था कि दिन बीते , अँधेरा हो और वह लौंडी आवे , इस बीच में बारी - बारी से आठ - दस लौंडियाँ उसके पास आईं , उन्होंने तरह - तरह की बातें कीं और खाने के लिए समझाया बल्कि यह तक कहा कि तुम्हारे मैदान जाने और नहाने का भी सामान किया जा सकता है मगर भूतनाथ ने कुछ भी न माना बल्कि उनकी

बातों का जवाब तक न दिया और वे सब निराश होकर लौटती गईं ।

दिन बीत गया , संध्या हुई और अँधकार ने अपना दखल जमाना शुरू किया । दो घंटे रात जाते - जाते तक निशादेवी का शून्यमय राज्य हो गया । उस कैदखाने के पास जिसमें भूतनाथ बंद था । पेड़ों की बहुतायत होने के कारण इतना अंधकार था कि किसी का आना - जाना दूर से मालूम नहीं हो सकता था ।

भूतनाथ जंगले का सीखचा पकड़े हुए खड़ा कुछ सोच रहा था कि वही लौंडी जिसके ऊपर भूतनाथ का मोहिनी मंत्र चल चुका था और जो लालच के सुनहरे जंगले के सुराख 1 से हाथ बढ़ाकर धीरे से बोली , " लो गदाधरसिंह , यह तुम्हारा बटुआ हाजिर है । इसके लिए मुझे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी । "

भूतनाथ : बेशक , हमारा और तुम्हारा दोनों का काम चल गया । (संभलकर , क्योकि उसके मुँह से हमारा नाम निकल गया यह शब्द भी खुशी के मारे निकल आये थे जो कि वह निकालना नहीं चाहता था) मेरा काम तो सिर्फ इतना ही कि मुझे अपने कैद करने वालों का पता लग जाएगा मगर तुम अब हर तरह से प्रसन्न और स्वतंत्र हो जाओगी ।

इतना कहकर भूतनाथ ने बटुआ उसके हाथ से ले लिया और कहा , " क्या इसमें मेरा सामान ज्यों - का - त्यों पड़ा हुआ

लौंडी : वेशक् ।

भूतनाथ : तब मैं रोशनी करके देखू और वह ताली निकालूँ ?

लौंडी : नहीं नहीं , रोशनी करने का मौका नहीं है , जो कुछ तुम्हें करना है अंधेरे ही में करो और जो कुछ निकालना है उसे टटोलकर निकालो , मैं तुम्हें फिर भी विश्वास

दिलाती तुम्हारी सब चीजें इसमें ज्यों - की - त्यों रखी हैं ।

भूतनाथ : खैर कोई चिंता नहीं , मैं सब काम अँधेरे ही में कर सकूँगा , अगर मेरी चीजें ज्यों - की - त्यों रखी हैं और इधर - उधर नहीं की गई तो मुझे रोशनी की भी जरूरत नहीं है । अच्छा अब वह असल काम हो जाना चाहिए अर्थात् मुझे मालूम हो जाना चाहिए कि मैं किसका कैदी हूँ ।

लौंडी : हाँ मैं बताती हूँ (कुछ सोच कर) मगर मैं फिर सोचती हूँ कि यह काम मेरे लिए बिलकुल ही अनुचित होगा , मालिक का नाम तुम्हें बता देना निःसन्देह मालिक के साथ दुश्मनी करना है ।

भूतनाथ : यह सोचना तुम्हारी बुद्धिमानी नहीं है बल्कि बेवकूफी है , हाँ यदि मैं स्वतंत्र होता और मैदान में तुमसे मुलाकात हुई होती तो तुम्हारा यह सोचना कुछ उचित भी हो सकता था । तुम देख रही हो कि मैं किस अवस्था में हूँ और मेरी तकदीर में क्या लिखा हुआ है । फिर भी इस समय कर ही क्या सकता हूँ , सोचो तो ..

लौंडी : हाँ , एक तौर पर तुम्हारा कहना भी ठीक है , अच्छा मैं बताए देती हूँ कि तुम्हारा दुश्मन कौन है और तुम्हें किसने कैद किया ।

भूतनाथ : बस मैं इतना ही सुनना चाहता हूँ ।

लौंडी : तुम्हें उसी ने कैद किया है जिसके पति को तुमने बेईमानी और नमकहरामी करके बड़ी निर्दयता के साथ बेकसूर मारा है । दयाराम को मार कर तुम इस दुनिया में सुखी नहीं हो सके और न भविष्य में तुम्हारे सुखी होने की आशा है ।

भूतनाथ : (चौंक कर ताज्जुब के साथ) है , क्या दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं ? और उनकी इस बात का विश्वास है कि दयाराम को मैंने ही मार डाला है ।

लौंडी : हाँ , वे दोनों जीती हैं , और उन्हें इस बात का विश्वास है ।

भूतनाथ : मगर यह बात सच नहीं है , अपने प्यारे मित्र दयाराम को मैंने नहीं मारा बल्कि किसी दूसरे ही ने मारा है ।

लौंडी : खैर इन बातों से तो मुझे कोई संबंध नहीं , मैं तो लौंडी ठहरी , जो कुछ सुनती हूँ वही जानती हूँ !!

भूतनाथ : अच्छा - अच्छा , मुझे इन बातों से कुछ फायदा भी नहीं है , बस विश्वास इसी बात का हो जाना चाहिए कि तुम सच कहती हो और वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जीती हैं । मुझे खूब याद है कि उनके मर जाने की खबर बड़ी सच्चाई के साथ उड़ी थी और उनके क्रियाकर्म में बहुत ज्यादा रुपया खर्च किया गया था जिसे मैं निजीतौर पर बहुत अच्छी तरह जानता हूँ । इस बारे में तुम मुझे क्योंकर धोखा दे सकती हो !!

लौंडी : तुम जो चाहो समझो और कहो , मैं तुमसे बहस करने के लिए नहीं आई हूँ और न ही रहस्यों को जानती हूँ , बात जो सच है वही कह दी है ।

भूतनाथ : मगर मुझे विश्वास नहीं आता ।

लौंडी : विश्वास नहीं आता तो जाने दो ।

भूतनाथ : ऐसी अवस्था में मैं इनाम भी नहीं दे सकता ।

लौंडी : मुझे इसकी कोई परवाह नहीं है ।

भूतनाथ : अच्छा तो जाओ अपना काम देखो ।

लौंडी : बटुआ मुझे वापस कर दो , जहाँ से मैं लाई

रिख आऊँ और बदनामी से बचूँ ।

भूतनाथ उस लौंडी से बातें भी करता जाता और अपने बटुए में से जिसे लौंडी ने ला दिया था अँधेरे में टटोल - टटोल कर कुछ निकालता भी जाता था जिसकी खबर उस लौंडी को कुछ भी न थी और न अँधकार के कारण वह कुछ देख ही सकती थी । अस्तु लौंडी की बात का भूतनाथ ने पुनः

उत्तर दिया

भूतनाथ : बदनामी से तो तुम किसी तरह बच सकती हो , अगर मैं यह बटुआ तुम्हें वापस न दूँ तो तुम क्या करोगी ?

लौंडी : मैं खूब चिल्लाऊँगी कि किसी लौंडी ने यह बटुआ लाकर भूतनाथ को दे दिया है ।

भूतनाथ : लेकिन लोगों के इकट्ठा हो जाने पर मैं यही कह दूँगा कि इसी लौंडी ने लाकर दिया है ।

लौंडी : मगर इस बात का किसी को विश्वास न होगा ।

भूतनाथ : (हँस कर) मालूम होता है कि तुम विश्वासपात्र समझी जाती हो , खैर तुम नहीं तो कोई दूसरी तुम्हारी साथिन पकड़ी जाएगी ।

लौंडी : जो होगा देखा जाएगा ।

भूतनाथ : मगर नहीं , ये मैं ऐसा बेईमान नहीं हूँ , लो यह बटुआ देता हूँ , जहाँ से तुम लाई हो रख आओ । क्या कहूँ , मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास ही नहीं होता , नहीं तो मैं यह खजाना जरूर तुम्हें दे देता ।

इतना कह कर भूतनाथ ने वह बटुआ लौंडी की तरफ बढ़ाया । उसने जिस तरह दिया था उसी तरह ले लिया और यह

कहती वहाँ से चली गई , " बुरे लोगों से बातचीत करना भी बुरा ही है , इस काम के लिए मुझे जिंदगी - भर पछताना पड़ेगा । "

जब लौंडी कुछ दूर चली गई तो भूतनाथ ने धीरे - से यह जवाब दिया जिसे वह खुद ही सुन सकता था " तुम्हारे लिए चाहे जो हो मगर मेरा काम निकल ही गया । अब मैं इस पेचीले मामले की गुत्थी अच्छी तरह सुलझा लूँगा । "

भूतनाथ ने बात करते - करते उस बटुए में से जो कई चीजें निकाल ली थीं उनमें कुछ शीशियाँ भी थीं जिनमें किसी तरह का अर्क था । एक शीशी का अर्क किसी ढंग से भूतनाथ ने कैदखाने के कई सींखचों की जड़ में लगाया और उसके कुछ देर बाद दूसरी शीशी का अर्क भी उसी जगह पर लगाया जिससे उतनी जगह का लोहा गल कर मोमबत्ती की तरह हो गया और ' भूतनाथ ने उसे बड़ी आसानी से हटाकर अपने निकलने लायक रास्ता बना लिया । बात - की - बात में भूतनाथ कैद खाने के बाहर हो गया और मैदान की हवा खाने लगा ।

भूतनाथ कैदखाने के बाहर हो गया सही , मगर उसके लिए इस घाटी से बाहर हो जाना बड़ा ही कठिन था । एक तो अँधेरी रात दूसरे पहाड़ की ढालवी और अनगढ़

ढोकों वाली पथरीली जमीन , तिस पर पगडंडी और रास्ते का कुछ पता नहीं । मगर खैर जो होगा देखा जाएगा , भूतनाथ को इन बातों की कुछ परवाह न थी ।

अब हम थोड़ा - सा हाल उस लौंडी का बयान करेंगे जो भूतनाथ के हाथ से बटुआ

लेकर चली गई थी ।

उसे अपने किये पर बड़ा ही पछतावा था । उसे इस बात का बड़ा ही दुःख कि उसने भूतनाथ से अपने मालिकों का नाम बता दिया अपने को बहुत ही छिपाकर इस घाटी में रहती । अब वह इस बात को खूब समझने लगी कि अगर भूतनाथ किसी तरह छूटकर निकल गया तो मेरे इस कर्म । बहुत ही बुरा नतीजा निकलेगा और भेद खुल जाने के कारण मेरे मालिकों को सख तकलीफ उठानी पड़ेगी । वह यही सोचती जा रही थी कि मैंने बहुत ही बुरा किया जो लालच में पड़ कर अपने बेकसूर मालिकों के साथ ऐसी का बर्ताव किया ! अब क्या किया जाय और मैं इस पाप का क्या प्रायश्चित करूँ ?

भूतन

साथ ही इसके उसने यह भी सोचा कि का यह बटुआ कुछ हल्का मालूम पड़ता है । इसमें अब वह वजन नहीं है जो पहिले था जब मैं लाई थी । मालूम होता है , भूतनाथ ने अँधेरे में टटोलकर अपने मतलब की चीज निकाल ली । अपने हाथ की रखी हुई चीज निकालने के लिए बुद्धिमान आदमी को रोशनी की जरूरत नहीं पड़ती । भूतनाथ ने बड़ी चालाकी की , अपना काम कर लिया और मुझे बेवकूफ बना कर विदा किया ! मैं ही ऐसी कमबख्त थी जो उसके फंदे में आ गई , अब मुझे जरूर अपने इस पाप का प्रायश्चित्त करना पड़ेगा !!

इसी तरह की बातें सोचती वह लोंडी वहाँ से चली गई ।

रात आधी से ज्यादे बीत जाने पर भी कला , विमला और इंदुमति की आँखों में नींद नहीं है । न मालूम किस गंभीर विषय पर ये तीनों विचार कर रही हैं ! संभव है कि भूतनाथ के विषय ही में कुछ विचार कर रही हों , अस्तु जो कुछ हो इनकी बातचीत सुनने से मालूम हो जाएगा ।

इंदुमति : (बिमला की तरफ देख कर) बहिन , जब इस बात का निश्चय हो गया कि तुम्हारे पति को गदाधरसिंह (भूतनाथ) ने मार डाला है तब उसके लिए बहुत बड़े जाल फैलाने और सोच - विचार करने की जरूरत ही क्या है ? जब वह कमबखन तुम्हारे कब्जे में आ गया तो उसे मार कर सहज ही में बखेड़ा तै करो !

बिमला : (ऊँची साँस लेकर) हाय बहिन , तुम क्या कहती हो ? इस कमीने को यों - ही सहज में मार डालने से क्या मेरे दिल की आग बुझ जाएगी ? क्या कहा जाएगा कि मैंने इसे मार कर अपना बदला ले लिया ? किसी को मार डालना और बात है और बदला लेना और बात है । इसने मेरे दिल को जो कुछ सदमा पहुँचाया है उससे सौ गुना ज्यादे दुःख और इसे हो तब मैं समझें कि मैंने कुछ बदला लिया ।

यह

कब्जे से निकल गया या तुम्हारे

इंदुमति : बहिन , तुम खुद कह चुकी हो कि यह बहुत बुरी बला है अस्तु यदि असल भेद की इसे खबर हो गई तो बहुत बुरा हो जाएगा ।

विमला : वल्कि अनर्थ हो जाएगा । तुम्हारा कहना बहुत कठिन है , मगर और न यहाँ से निकल कर भाग ही जा सकता है ।

हमारा भेद कुछ भी मालूम नहीं हो सकता

इंदुमति : ईश्वर करे ऐसा ही हो मगर ..

कला : कल इन्द्रदेव जी यहाँ आएगे , उनसे राय

कोई - न - कोई कार्रवाई बहुत जल्दी हो जाएगी ।

विमला : मैं सोच रही हूँ कि तब तक उसकी (पड़ोस वाली) घाटी पर कब्जा कर लिया जाय , उसका सदर दरवाजा जिधर से वे लोग आते - जाते हैं बंद कर दिया जाय , उसके आदमी सब मार डाले जायें और उसका माल - असबाब सब लूट लिया जाय और इन बातों की खबर को भी दे दी जाएँ ।

इंदुमति : बहुत अच्छी बात है ।

बिमला : और इतना काम मैं सहज ही में कर सकूँगी ।

इंदुमति : सो कैसे ?

विमला : तुम देखती रहो , सब काम तुम्हारे सामने ही तो होगा । इंदुमति : हाँ , कल ही इस काम को करके छुट्टी पा लेना चाहिए जिससे इन्द्रदेव जी जाएँ तो उनके दिल को भी ढांढस पहुंचे ।

बिमला : कल नहीं आज बल्कि इसी समय उस घाटी का रास्ता बंद कर दिया जाय जिसमें लोग भाग कर बाहर न चले जाएँ ।

कला : ऐसा हो जाय तो बहुत अच्छी बात है , मगर दूसरे के घर में तुम इस तरह की कार्रवाई ..

विमला : (मुसकुराकर) नहीं बहिन , तुम व्यर्थ इतना सोच कर रही हो । वात यह है कि जिस तरह यह स्थान और घाटी

जिसमें हम लोग रहती हैं इन्द्रदेव जी के अधिकार में है , उसी तरह वह घाटी भी जिसमें भूतनाथ रहता है इस घाटी का

एक हिस्सा होने के कारण इन्द्रदेव जी के अधिकार में है । यह दोनों घाटी एक ही हैं , या यों कहो कि एक ही मान का

यह जनाना हिस्सा और वह मर्दाना हिस्सा है और इसलिए इन दोनों जगहों का पूरा - पूरा भेद इन्द्रदेव जी को मालूम है

और उन्होंने जो कुछ भी मुझे बताया है मैं जानती हूँ , इस बात की खबर भूतनाथ को कुछ भी नहीं है । यह घाटी जिसमें

मैं रहती हूँ हमेशा बंद रहती थी मगर उस घाटी का दरवाजा बरावर न जाने क्यों खुला ही रहता था , शायद इसका सबब

यह हो कि उस घाटी में कोई जोखिम की चीज नहीं है और न कोई अच्छी इमारत ही है , अस्तु भूतनाथ वह भी नहीं

जानता कि उस घाटी का दरवाजा कहाँ है तथा क्योंकर खुलता और बंद होता है या इस स्थान का कोई मालिक भी है

या नहीं । भूतनाथ को घूमते - फिरते इत्तिफाक से या और किसी वजह से वह घाटी मिल गई और उसने उसे अपना घर

वना लिया और जब यह खबर इन्द्रदेव जी को और मुझको मालूम हुई तब उन्होंने मेरी इच्छानुसार यह स्थान मुझे देकर

यहाँ के बहुत से भेद बता दिए । बस अब मैं समझती हूँ कि तुम्हें मेरी वातों का तत्व मालूम हो गया होगा ।

इंदुमति : हाँ अब मैं समझ गई , ऐसी अवस्था में तम जो चाहो सो कर सकती हो ।

विमला : अच्छा तो मैं जाती हूँ और जो कुछ सोचा है उस काम को ठीक करती हूँ ।

इतना कहकर बिमला उठ खड़ी हुई और इंदुमति तथा कला को उसी जगह बैठे रहने की ताकीद कर घर के बाहर

निकलने लगी , मगर इंदु ने साथ जाने के लिए जिद्द की और बहुत कुछ समझाने न मानी , लाचार बिमला इंदु

को साथ ले गई और कला को उसी जगह छोड़ गई । मी ,

भूतनाथ का साथ छोड़कर प्रभाकर सिंह के इस घटी आने का हाल

भूतनाथ की घाटी के अन्दर जाने वाली सुरंग के बीच में एक

इंदुमति का साथ छोड़ा था और कला तथा बिमला के साथ

विमला पुनः उसी जगह जाती है ।

पाठक भूले न होंगे । उन्हें याद होगा कि

थी जहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने भूतनाथ और

राह पर चल पड़े थे । आज इंदुमति को साथ लिए

उस सुरंग के अन्दर वाली चौमुहानी से एक । भूतनाथ की घाटी के लिए था , दूसरा रास्ता सुरंग के बाहर निकल

जाने के लिए था , और तीसरा तथा चौथा (या सुरंग) कला और बिमला के घाटी में आने के लिए था । एक रास्ता

तो ठीक उस घाटी में आता था जिधर से प्रभाकर सिंह आए थे और दूसरा रास्ता बिमला के महल में जाता था ।

बिमला के घर आने वाले दोनों रास्ते एक रंग - ढंग के बने हुए थे और इनके अन्दर के तिलिस्मी दरवाजे भी एक ही तरह

के साथ गिनती में एक बराबर थे , अस्तु एक सुरंग का हाल पढ़कर पाठक समझ जाएँगे कि दूसरी तरफ वाली सुरंग की

अवस्था भी वैसी ही है जो बिमला के घर को जाती है ।

उस सुरंग की चौमुहानी पर पहुँचकर जब विमला की घाटी से आने वाली सुरंग की तरफ बढ़िए तो कई कदम जाने के

बाद एक (कम ऊँची) दहलीज मिलेगी जिसके अन्दर पैर रख कर ज्यों - ज्यों आगे बढ़िए त्यों - त्यों वह दहलीज ऊँची होती

जाएगी , यहाँ तक कि बीस - पच्चीस कदम आगे जाते - जाते वह दहलीज ऊँची होकर सुरंग की छत के साथ मिल जाएगी

और फिर पीछे को लौटने के लिए रास्ता न रहेगा । उसके पास ही दाहिनी तरफ दीवार के अन्दर एक पेंच है जिसे

कायदे के साथ घूमाने पर वह दरवाजा खुल सकता है । अगर वह पेंच न घुमाया जाय और दहलीज के अन्दर कोई न

हो , और जाने वाला आगे निकल गया हो , तो खुद - ब - खुद भी वह रास्ता बारह घंटे के बाद खुल जाएगा और वह दहलीज

धीरे - धीरे नीची होकर करीब - करीब जमीन के बराबर अर्थात् ज्यों - की - त्यों हो जाएगी ।

रास्ता कैसा पेचीदा और तंग है इसका हाल हम चौथे बयान में लिख जाए हैं पुनः लिखने की कोई आवश्यकता नहीं ।

लगभग तीन सौ कदम जाने के बाद एक और बंद दरवाजा मिलेगा जो किसी पेंच के सहारे पर खुलता और बंद होता

है । पेंच घुमाकर खोल देने पर भी उसके दोनों पल्ले अलग नहीं होते , भिड़के रहते हैं । हाथ का धक्का दीजिए तो खुल

जाएँगे और कुछ देर बाद आप - से - आप बंद भी हो जाएँगे मगर पुनः दूसरी बार केवल धक्का देने से वह दरवाजा न

खुलेगा असल पेंच घुमाने की जरूरत पड़ेगी । दोनों दरवाजों के दोनों तरफ एक ही ढंग के तिलिस्मी पेंच दरवाजा खोलने

और बंद करने के लिए बने हुए थे और इसका हाल भूतनाथ को कुछ भी मालूम न था । इसके अतिरिक्त उस सुरंग का सदर दरवाजा भी (जिसके अन्दर घुसने के बाद चौमुहानी मिलती थी) बंद हो सकता था और यह बात बिमला के अधीन थी । कंवल इतना ही नहीं , उस चीमुहानी से मृतनाथ की घाटी की तरफ जाने वाली सुरंग में भी एक दरवाजा (इन दोनों सुरंगों की तरफ) था और उसका हाल भी यद्यपि भूतनाथ को तो मालूम न था मगर विमला उसे भी बंद कर सकती थी ।

इंदु को साथ लिए हुए विमला उसी सुरंग में बुसी और उस सुरंग के भेद इंदु को समझाती तथा दरवाजा खोलती और बंद करती हुई उस चौमुहानी पर पहुंची जिसका हाल ऊपर कई दफे लिखा जा चुका है और जहाँ प्रभाकर सिंह ने इंदु का साथ छोड़ा था । वहाँ पहुँचकर कुछ देर के लिए विमला अटकी और आहट लेने लगी कि भूतनाथ की घाटी में आने वाला कोई आदमी तो इस समय इस सुरंग में मौजूद नहीं है । जब सन्नाटा मालूम हुआ और किसी आदमी के बहाँ होने का गुमान न रहा तब वह भूतनाथ वाली घाटी की तरफ जो रास्ता गया था उस सुरंग में बुसी और दस - बारह कदम जाने के बाद दीवार के अन्दर बने हुए किसी कल - पुरजे को घुमाकर उस सुरंग का

रास्ता उसने बंद कर दिया । लोहे का एक मोटा तख्ता दीवार के अन्दर से निकला और रास्ता बंद करता हुआ दूसरी दीवार के अन्दर कुछ घुस कर अटक गया । इसके बाद विमला सुरंग के सदर दरवाजे पर दरवाजे बंद करने के लिए पहुँची ही थी कि सुरंग के अन्दर घूमते हुए भूतनाथ के शागिर्द भोलासिंह पर निगाह पड़ी और उसने भी इन दोनों औरतों को देख लिया । वह इंदु को अच्छी तरह देख चुका था अस्तु निगाह पड़ते ही पहिचाना गया और आश्चर्य के साथ देखता बोला " आह , मेरी रानी

तुम

यहाँ कहाँ ? तुम्हारे लिए तो हमारे गुरुजी बहुत परेशान हैं !! "

इस जगह बखूबी उजाला था इसलिए इंदु ने भोलासिंह को और भोला ने इंदु बखूबी

चान लिया । इंदु पर क्या - क्या मुसीबतें गुजरी और प्रभाकर सिंह कहाँ गए इन बातों । खबर भोलासिंह को कुछ भी न थी , इसलिए वह इस समय इंदु को देख कर खुश हुआ और ताज्जुब करने लगा । धीरे से बिमला को समझाया कि वह भूतनाथ का शागिर्द है ।

इंदु उसे पहिचानती थी सही मगर नाम कदाचित जानती थी । वह उसकी बात का जवाब दिया ही चाहती थी कि विमला न उँगली दवाकर उसे चुप रहने का इशारा किया और कुछ आगे बढ़कर कहा , “ तुम्हारे गुरुजी ने इन्हें मौत के पंजे से छुड़ाया और इनकी बदौलत आफत से मेरी भी जान बची है ! "

भोलासिंह : गुरुजी कहाँ हैं ?

विमला : हमारे साथ आओ और उनसे मुलाकात करके सुनी कि उन्होंने इस बीच में कैसे - कैसे अनूठे काम किए हैं ।

भोलासिंह : चलो - चलो , मैं बहुत जल्द उनसे मिलना चाहता हूँ ।

विमला ने इंदु को अपने आगे किया और भोलासिंह को पीछे आने का इशारा करके अपनी घाटी की तरफ रवाना हुई ।

विमला इस सुरंग का सदर दरवाजा बंद न कर सकी , खैर इसकी उसकी ज्यादे परवाह भी न थी । चौमुहानी से जो भूतनाथ की घाटी की तरफ रास्ता बन गया था

उसी को बंद कर उसने संतोष लाभ कर लिया। बिमला के पीछे - पीछे चल कर भोलासिंह उस चौमुहाने तक पहुँचा मगर जब विमला अपनी घाटी की तरफ अर्थात् सामने वाली सुरंग में खाना हुई तव भोलासिंह रुका और बोला , " इस तरफ तो हमारे गुरुजी कभी जाते न थे उन्होंने दूसरों को भी इधर जाने को मना कर दिया था। आज वे इधर कैसे गए ! "

विमला : हाँ पहिले उनका शायद ही खयाल था मगर आज तो इसी मकान में बैठे हुए है ।

भोलासिंह : क्या इसके अन्दर कोई मकान है ?

बिमला : हाँ , बहुत सुन्दर मकान है ।

भोलासिंह : कितनी दूरी पर ?

विमला : बहुत थोड़ी दूर पर , तुम आओ तो सही ।

" ये दोनों औरतें बेचारी भला मेरे साथ क्या दगा करेंगी ! " यह सोच भोलासिंह आगे बढ़ा और इनके साथ सुरंग के अन्दर घुस गया ।

जो हाल प्रभाकर सिंह का इस सुरंग में हुआ था वही हाल इस समय भोलासिंह का हुआ अर्थात् पीछे की तरफ लौटने का रास्ता बंद हो गया और विमला तथा इंदु के आगे बढ़ जाने तथा चुप हो जाने के कारण वह जोर - जोर से पुकारने और टटोल - टटोल कर आगे की तरफ बढ़ने लगा ।

प्रभाकर सिंह को इसके आगे का दरवाजा खुला हुआ मिला था मगर भोलासिंह को आगे का दरवाजा खुला हुआ न मिला। उसे दोनों दरवाजों के अन्दर बंद करके विमला और इंदु अपने डेरे की तरफ निकल गईं ।

समाप्त

भूतनाथ

भूतनाथ

दूसरा भाग

देवकीनन्दनखत्री।

भारत पुस्तक भण्डार

दूसरा भाग

पहला व्यान

रात बहुत कम बाकी थी जब विमला और इंदुमति लौट कर घर में आई जहाँ कला को अकेली छोड़ गई थीं । यहाँ आते ही विमला ने देखा कि उसकी प्यारी लौंडी चंदो जमीन पर पड़ी हुई मौत का इंतजार कर रही है । उसका दम टूटा ही चाहता है , आँखें बंद हैं , और अधखुले मुँह से रुक कर साँस आती - जाती है , बीच - बीच में हिचकी भी आ जाती है । कला झारी में गंगाजल लिए उसके मुँह में शायद टपकाना चाहती है ।

यह अवस्था देखकर विमला घबरा गई और ताज्जुब करने लगी कि उसकी इस थोड़ी सी गैरहाजिरी में क्या हो गया और चंदो यकायक किसी बीमारी में फंस गई जो इस समय उसकी जिंदगी का चिराग इस तरह टिमटिमा रहा है बल्कि बुझना चाहता है । विमला ने घबराकर कला से पूछा , “ यह क्या मामला है और कमबख्त को हो क्या गया है !! "

कला : मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि चंदो अब इस संसार को छोड़ना ही चाहती है , अपने पाप का प्रायश्चित करने के लिए इस कमवत ने जहर खा लिया है और जब रग - रग में जहर भी न गया है तब यहाँ आकर सब हाल कहा हैं मैंने जहर उतर जाने के लिए दवा इसे खिलाई है मगर कुछ फायदा होने का रंग नहीं है क्योंकि देर बहुत हो गई , कुछ और दवा पहुँचती तो अच्छा था ।

विमला : राम - राम , मगर यह इस कमबख्त को सूझी क्या ? और इसने कौन पाप किया है जिसके लिए ऐसा प्रायश्चित करना पड़ा !

कला : बहिन , पाप तो इसने निःसन्देह बहुत भारी किया है , जिसका प्रायश्चित इसके सिवा और कुछ यह कर ही नहीं सकती थी , परन्तु मुझे इसके मरने का दुःख अवश्य है । काम इसने किया है उसके करने की आशा इससे कदापि नहीं हो सकती थी और जब इससे ऐसा काम हो गया किसी और लौंडी पर अब हम लोग इतना विश्वास भी नहीं कर सकतीं । हाँ , लालच में पड़कर इस चुडैल ने दोनों बहिनों का असल

हाल गदाधरसिह को बतला दिया और कह दिया कि तुमसे बदला लेने के लिए यह सब खेल रचे गए हैं , और साथ ही भूतनाथ का बटुआ भी यहाँ से लेकर जाकर उसे दे दिया । परन्तु इतना करने पर भी भूतनाथ ने इसे सूखा ही टकरा दिया तब इसे ज्ञान उत्पन्न हुआ और ग्लानि में आकर जहर खा लिया । जब जहर अच्छी तरह तमाम बदन में भीन गया तब यह हम दोनों से मिलने और अपना पाप कहने के लिए यहाँ आयी थी , इसे यहाँ आये बहुत देर नहीं हुई ।

विमला : (हाथ से अपना माथा ठोंक कर) हाय हाय हाय , इस कमबख्त ने तो बहुत ही बुरा किया ! क्या जाने यह इससे और भी कुछ ज्यादे कर गुजरी हो ! जिस भेद को छिपाने के लिए तरह - तरह की तरकीबें की गई थीं उस भेद का आज इसने सहज ही में सत्यानाश कर दिया । हाय , अब भूतनाथ भी जरूर हमारे कब्जे से निकल गया होगा । जब उसे ऐयारी का बटुआ मिल गया तब वह उस कैदखाने के भी बाहर हो गया हो तो आश्चर्य नहीं । वह बड़ा ही धूर्त और मक्कार है जिसके फेर में पड़ कर चंदो ने हम लोगों को वर्वाद कर दिया और खुद भी दीन - दुनिया दोनों में से कहीं के लायक न रही !!

कला : वेशक ऐसा ही है , यद्यपि इस बात की आशा नहीं हो सकती कि भूतनाथ इस घाटी के बाहर हो जाएगा तथापि उसका कैदखाने से बाहर निकल जाना ही कम घबराहट की बात नहीं है , और इससे भी ज्यादे बुरी बात यह हुई कि हमारा भेद उसे मालूम हो गया । हाय , ऐसी रात में किसकी हिम्मत पड़ सकती है कि अकेले वहाँ जाकर भूतनाथ का हाल मालूम करे ? अगर वह छूट गया होगा तो जरूर उसी जगह कहीं छिपा होगा , ताज्जुब नहीं कि सूरज निकलने तक वह कोई आफत ...

विमला : मेरा भी यही खयाल है ! (चंदो के पास जाकर) हाय , शैतान की बच्ची , तूने यह क्या किया ! हाय , अगर तू जीती रहती तो तुझसे पूछती कि दुष्ट , तूने इतना ही किया कि कुछ और ?

चंदो यद्यपि मौत के पंजे में फँसी हुई थी और उसकी जान बहुत जल्द निकलने वाली थी मगर वह कला और विमला की बातें सुन रही थी , यद्यपि उसमें जवाब देने की ताकत न थी । उसने विमला की आखिरी बात सुनकर आँखें खोल दी , बिमला की तरफ देखा और इस प्रकार मुँह खोला मानो कुछ कहने के लिए बेचैन हो है , बहुत

उद्योग कर रही है मगर उसमें इतनी शक्ति न रही , उसकी आँखें पुनः बंद हो गईं और अब वह पूरी तरह से बेहोश हो गई । देखते - देखते दस - पाँच हिचकियाँ लेकर उसने बिमला और कला के सामने दम तोड़ दिया ।

अब कला और विमला को यह फिक्र पैदा हुई कि पहिले इसे ठिकाने पहुँचाया जाय चा चलकर भूतनाथ की खबर ली जाय , मगर इंदुमति की राय हुई इन दोनों कामों के पहिले बंगले की हिफाजत की जाय (जो इस घाटी के बीच में था और जहाँ प्रभाकर सिंह पहिले - पहिले पहुँचे थे) क्योंकि उसमें बहुत - सी जरूरी चीजें रखी हुई हैं और साथ ही उसकी जाँच करने से बहुत - से भेद भी मालूम हो सकते हैं ।

इंदु की इस राय को बिमला और कला ने बहुत पसन्द किया और तीनों औरतें हों और जरूरी चीजों से अपने को सजाकर गुप्त राह से बँगले की तरफ रवाना हुईं ।

इस बँगले का हाल हम पहिले खुलासा तौर पर लिख चुके हैं , इसके दरवाजे ऐसे न थे कि बंद कर देने पर कोई जबर्दस्ती वा सहज ही में खोल सके तथा और बातों में भी वह एक छोटा - मोटा तिलिस्म या कारीगरी का खजाना ही समझा जाता था । यद्यपि वह बँगला ऐसी हिफाजत की जगह में था जहाँ बदमाशों गुजर नहीं हो सकता था तथापि उसकी हिफाजत के लिए कई लौंडियाँ मुकर्रर थी जो मर्दानी सूरत में पहरेदारी के कायदे से उसके चारों तरफ बराबर घूमा करती थीं ।

कला , बिमला और इंदु ने वहाँ पहुँचकर उस बँगले के दरवाजे बंद करने शुरू कर दिये । पहिले वाहर से भीतर आने का रास्ता रोका , इसके बाद कई जरूरी चीजें उनमें से निकालने वाद आलमारियों में ताले लगाये और तब भीतर के कमरे सब बंद कर दिये गये । इतना करके एक छोटे गुप्त दरवाजे को बंद करती हुई बाहर निकली ही थीं कि एक पहरेदार लौंडी के जोर से चिल्लाने की आवाज आई ।

तीनों औरतें कदम बढ़ाती हुई बँगले के सदर दरवाजे पर पहुंची जहाँ नाममात्र के लिए पहरा रहा करता था या जिधर से पहरेदार लौंडी के चिल्लाने की आवाज आई थी । वह लौंडी मरदाने भेष में थी और घबराई हुई मालूम पड़ती थी। बिमला ने पूछा " क्या मामला है , तू क्यों चील्लाई

लौंडी : मेरी रानी , देखो उस पहाड़ी की तरफ जिधर कैदखाना है और जहाँ भूतनाथ कैद है कई उस जगह आग की धूनी जल रही है । मालूम होता है मानो वहुत - से आदमियों ने आकर उस पहाड़ी पर दखल जमा लिया है । अगर ये आग की धूनियाँ आपकी तरफ से नहीं सुलगाई गई हैं तो जरूरी किसी आने वाली आफत की निशानी हैं और मुझे विश्वास है कि आपने इसके लिए कोई हुक्म नहीं दिया होगा ।

बिमला : (ताज्जुब के साथ उस पहाड़ी की तरफ देख कर) बेशक यह नई बात है , मैंने ऐसा करने के लिए किसी को हुक्म नहीं दिया मगर घबराने की कोई बात नहीं है , जहाँ तक मैं समझती हूँ यह भूतनाथ की कार्रवाई है क्योंकि चंदो की मदद से भूतनाथ कैद से छूट गया और हम लोग उसी के बंदोबस्त कर रही हैं ।

लौंडी : (ताज्जुब के साथ) हैं , भूतनाथ कैदखाने से छूट गया ! और चंदो बीबी की मदद से !!

विमला : हाँ , ऐसी ही बात है , किसी दूसरे वक्त इसका खुलासा हाल तुम्हें मालूम होगा इस समय मैं उसी पहाड़ी पर जाती हूँ और भूतनाथ को गिरफ्तार करती हूँ ।

कला : मगर वहिन , मैं इस राय के विरुद्ध हूँ !

विमला : क्यों ?

कला : देखो , सोचो तो सही कि इस तरह कई जगहों पर आग सुलगाने या वालने से भूतनाथ का क्या मतलब है ?

बिमला : (कुछ सोच कर) जहाँ तक मैं समझती हूँ इस कार्रवाई से भूतनाथ का यही मतलव होगा कि हम लोगों को धोखा देकर उस तरफ वुलावे और किसी जगह पर आड़ में छिपे रहकर हमारे ऊपर वार करे ।

कला : वेशक् , क्योंकि आग के पास पहुँच कर हम लोग उसे ढूँढ़ न सकेंगे । दस्तूर की बात है कि जो कोई सुलगती हुई आग के पास रहता है वह सामने की किसी चीज को नहीं देख सकती । वहाँ तो कई जगह पर आग सुलग रही है , उस वीच में जाकर हम लोग किसी भी तरफ निगाह करके दुश्मन को नहीं देख सकेंगे ।

विमला : टीक है मगर हम लोगों पर इस समय उसका कोई हर्वा काम नहीं कर सकता । कला : तथापि हर तरह से बच के काम करना चाहिए , विशेष करके इसलिए कि इंदु वहिन हमारे साथ हैं , यद्यपि ये यहाँ के सब भेदों को जान गई हैं और हम लोगों का साथ हर तरह से दे सकती हैं ।

इंदुमति : मेरे लिए कोई तरवुद न करो , मैं तुम लोगों के साथ बखूबी चल सकती हूँ मगर मैं यह पूछती हूँ कि ऐसा करने की जरूरत क्या है और इस काम में जल्दी किये बिना हर्ज ही क्या होता है ? संभव है कि भूतनाथ ने वहाँ ऐयारी का कोई जाल फैलाया हो और इस रात के समय वह कुछ कर भी सके । थोड़ी- तो रात हो गई है , अच्छा होता अगर यह बिता दी जाती । प्रातःकाल हम लोग देखेंगे कि भूतनाथ कहाँ जाता करता है , यद्यपि वह स्वतंत्र हो गया है मगर इस घाटी के बाहर नहीं जा सकता और हमारे मकान तथा बँगले | उसकी गुजर नहीं हो सकती ।

कला : मैं भी इस राय को पसन्द करती हूँ , चलो बँगले के ऊपर

पर चल कर बैठे ।

विमला : अच्छा चलो ।

इंदुमति : (चलते हुए) मगर ताज्जुब है कि इतनी जल्दी भूतनाथ को आग सुलगाने के लिए इतना सामान कैसे मिल गया !

कला : बहिन , यह कोई ताज्जुब बात नहीं है ! हम लोगों की जरूरत के लिए जंगल की लकड़ियाँ बहुत बटोरी गई थीं जिसके बहुत बड़े - बड़े दो - तीन ढेर वहाँ कैदखाने के पास ही में लगे हुए थे । मालूम होता है कि उन्हीं लकड़ियों से भूतनाथ ने काम लिया है ।

इंदुमति : हाँ , तब तो उसे बहुत सुबीता मिल गया होगा , मगर क्या तुम खयाल कर सकती हो कि भूतनाथ की यह कार्रवाई किसी और मतलब से भी हुई है ?

बिमला : मैं नहीं कह सकती , सम्भव है कि उसका और ही कोई मतलब हो । खैर देखा जाएगा ।

इसी तरह की बातें करती तथा दरवाजों को खोलती और बंद करती हुई तीनों बहिनें बँगले की छत पर चढ़ गईं और एक अच्छे ठिकाने बैठकर उस तरफ देखने और सुबह का इंतजार करने लगीं ।

उस समय कला और बिमला से बहुत बड़ी भूल हो गई , क्योंकि वे तीनों अद्भुत बँगले की हिफाजत के लिए जब आई तो उन्होंने रोशनी का कोई खास बंदोबस्त नहीं किया , बँगले का इंतजाम करने के बाद वे तीनों बहिनें जब पहरे वाली लौंडी के चिल्लाने की आवाज सुनकर सदर दरवाजे पर गईं तब उनके पास किसी तरह की रोशनी मौजूद न थी और न इस काम के लिए रोशनी की जरूरत ही थी । परन्तु जब तक वे पहरा देने वाली लौंडी से बातचीत करतीं और पहाड़ी के ऊपर वाली रोशनी की तरफ देखती रही तब तक एक आदमी जो अपने को स्याह कपड़े से छिपाए हुए था आड़ देता हुआ सदर दरवाजे के पास पहुँचा और न मालूम किस ढंग से उस बँगले के अन्दर दाखिल हो गया क्योंकि वे तीनों

बहिनें और पहरा देने वाली लौंडी पहाड़ी की रोशनी को ताज्जुब के साथ देखती हुई सदर दरवाजे से कुछ आगे की तरफ बढ़ गई थीं और उन्हें इस बात का कुछ खयाल न था कि दुश्मन बगल में आ पहुँचा और अपना काम किया चाहता है ! खैर ये तीनों बंगले के अन्दर घुसी तो दरवाजा बंद करती हुई छत पर चढ़ गई जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है ।

वे तीनों बहिनें उन कई जंगल में जलती आग की रोशनियों को गौर से देख रही थीं जो अब धीरे - धीरे ठंडी हो रही थी ।

कला : अब आग बिलकुल ठंडी हो जाएगी ।

विमला : हाँ और इससे मालूम होता है कि भूतनाथ कहीं आगे की तरफ बढ़ गया ।

" आगे की तरफ नहीं बढ़ गया बल्कि इस तरफ चला आया और विश्वास दिलाना चाहता है कि वह आपका दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त है । "

यह आवाज छत के ऊपर जाने वाले दरवाजे की तरफ से आई थी जो उन तीनों बहिनों के पास ही था ।

इस आवाज ने उन तीनों को चौंका दिया , वे उठ खड़ी हुईं और उस दरवाजे के तरफ देखने लगीं । अब यहाँ पर वैसा अँधकार न था जैसा नीचे खास करकं पेड़ों की छाँह के सवव से था । चन्द्रदेव उदय हो चुके थे और उनकी चाँदनी पल - पल में बराबर बढ़ती चली जा रही थी अस्तु उन तीनों बहिनों ने साफ देखा कि दरवाजे के अंदर एक पैर बाहर और दूसरा भीतर किए कोई आदमी स्याह लबादा ओड़े रहा है ।

विमला : (उस आदमी से) तुम कौन हो ?

आदमी : गदाधरसिंह ।

विमला : (निडर रहकर) तुमने बड़ी चालाकी से

खुद को कैद से छुड़ा लिया !

गदाधरसिंह : वात तो ऐसी ही है ।

विमला : मगर तुम भाग कर इस घाटी के बाहर नहीं जा सकते !

गदाधरसिंह : शायद ऐसा ही

मगर

मुझे भागने की जरूरत ही क्या है ?

विमला : क्यों , अपनी जान बचाने के लिये तुम जरूर भागना चाहते होगे ?

गदाधरसिंह : नहीं , मुझे अपनी जान का यहाँ कोई खौफ नहीं है क्योंकि तुम्हारी एक नमकहराम लौंडी ने मुझे बता दिया है कि तुम मेरे प्यारे दोस्त दयाराम की स्त्री हो ...

विमला : (बात काटकर) जिस प्यारे दोस्त को तुमने अपने हाथ से हलाल किया !!
गदाधरसिंह : नहीं ! नहीं , कदापि नहीं , जिसने यह बात तुमसे कही है यह बिलकुल झूठ है और उसने तुम लोगों को धोखे में डाल दिया है , यही समझाने और विश्वास दिलाने के लिए मैं यहाँ अटक गया हूँ और भागना पसन्द नहीं करता । मुझे विश्वास था कि तुम दोनों बहिनों का देहांत हो चुका है जैसा कि दुनिया में प्रसिद्ध किया गया है , मगर अब तुम दोनों का हाल जानकर भी क्या मैं भागने की इच्छा करूँगा ? नहीं , क्योंकि तुम दोनों को अब भी मैं उसी निगाह से देखता हूँ जैसे अपने प्यारे दोस्ते की

जिंदगी में देखता था और यही सबब है कि मुझे तुम दोनों से किसी तरह का डर नहीं लगता ।

विमला : मगर नहीं , तुम्हें हम लोगों से डरना चाहिए , हम लोग तुम्हारे हितेच्छु कभी नहीं हो सकते क्योंकि हम लोगों ने

जो कछ सुना कह कदापि झुठ नहीं हो सकता ।

गदाधरसिंह : (दरवाजे से बाहर निकल कर और बिमला के पास आकर) में विश्वास दिला दूंगा कि मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया गया है ।

विमला : (कई कदम पीछे हटकर और नफरत के साथ) बस दूर रह मुझसे दुष्ट ! मैं तेरी सूरत नहीं देखना चाहती !! गदाधरसिंह : (अपने ऊपर से स्याह कपड़ा हटाकर) नहीं , तुम मेरी सूरत देखो और पहिचानो और सुनो कि मैं क्या चाहता हूँ ।

बिमला : सिवाय बात बनाने के तू और क्या कहेगा ? तू अपने माथे से कलंक का टीका किसी तरह नहीं धो सकता और न वह बात झूठी हो सकती है जो में सुन चुकी हूँ । दलीपशाह और शम्भू अभी तक दुनिया में मौजूद हैं और मैं भी खास तौर पर इस बात को जानती हूँ ।

गदाधरसिंह : मगर सच बात यह है कि लोगों ने तुम्हें धोखा दिया और असल भेद को छिपा रखा । खैर तुम अगर मुझ पर विश्वास नहीं करती तो मुझे ज्यादे खुशामद करने की जरूरत नहीं , अब मैं सिर्फ दो - चार बातें पूछ कर चला जाऊँगा । एक तो यह कि तुम मुझे गिरफ्तार करके यहाँ लाई थीं , मगर मैं अपनी चालाकी से छूट गया । अब बताओ मेरे साथ क्या सलूक करोगी ?

विमला : अपने दिल का बुखार निकालने के लिए जो कुछ मुझसे वन पड़ा करूँगी , इसे तुम खुद सोच सकते हो । गदाधरसिंह : पर मैं तो अब स्वतंत्र हूँ , अगर चाहूँ तो तुम्हे इसी जग खत्म कर रख दूँ , मगर नहीं में नमक का खयाल करता हूँ ऐसा कदापि न करूँगा , हाँ ? तुमसे बचने का उद्योग जरूर करूंगा ।

विमला : कदाचित् ऐसा ही हो ।

इतना कह बिमला ने कला की तरफ देखा ।

मगर उसे इस बात की खबर न थी कि कला क्या कर रही है अथवा क्या किया चाहती है

गदाधरसिंह विमला से बातें कर रहा था ।

कला ने अपने बगल से एक छोटा - सा बाँस का बना हुआ तमंचा निकाला और गदाधरसिंह (भूतनाथ) की तरफ उसका मुँह करके चलाया ।

इस अद्‌भुत तमंचे में वेहोशी की बारूद भरी जाती थी और इसका तेज तथा जल्द बेहोश कर देने वाला धुआँ छूटने के साथ ही तेजी से कई विगहे तक फैलकर लोगों को बेहोश कर देता था । यहाँ पर फैलने के लिए विशेष जगह तो थी नहीं इसलिए उस धुएँ के गुब्बार ने गदाधरसिंह को चारों तरफ से घेरकर एक तरह का अंधकार कर दिया । “ गदाधरसिंह धुएँ के असर से वेहोश हो जाएगा " यह सोच कर विमला , कला और इंदुमति तीनों बहिनें भाग कर नीचे उतर जाने के लिए उठीं और नाक दवाए हुए सीढ़ी की तरफ बढ़ गईं ।

गदाधरसिंह वेशक इस धुएँ के असर से बेहोश हो जाता मगर उसने पहिले ही से अपने बचाव का बंदोबस्त कर लिया था अर्थात् ऐसी दवा खा ली थी कि कई घंटे तक उस पर बेहोशी का असर नहीं हो सकता था तथापि उस धुएँ ने एक दफे उसका सर घुमा दिया ।

वे तीनों वहिनें वहाँ से भागीं तो सही मगर अफसोस , विमला और इंदु तो नीचे उतर गईं परन्तु कला को फूती । से

गदाधरसिंह ने पकड़ कर कब्जे में कर लिया और हाल विमला को नीचे उतरकर और कई कमरों में घूम - फिरकर छिप जाने के बाद मालूम हुआ जब चित्त स्थिर हो जाने पर उसने कला को अपने साथ न देखा ।

दूसरा व्यान।

दिन पहर भर से कुछ ज्यादे हो चुका है । यद्यपि अभी दोपहर होने में बहुत देर है तो भी धूप की गर्मी इस तरह बढ़ रही है कि अभी से पहाड़ के पत्थर गर्म हो रहे हैं और उन पर पैरी रखने की इच्छा नहीं होती , दो पहर दिन चढ़ जाने के वाद यदि ये पत्थर आग के अंगारों का मुकाबला करने लग जायें तो क्या आश्चर्य है !

पहाड़ के ऊपरी हिस्से पर एक छोटा - सा मैदान है जिसका फैलाव लगभग डेढ़ या दो बिगहे का होगा । इसके ऊपर की तरफ सिर उठा कर देखने से मालूम होता है कि कुछ और चढ़ जाने से पहाड़ खतम हो जाएगा और फिर सरपट मौन दिखाई देगा पर वास्तव में ऐसा नहीं है ।

इस छोटे मैदान में पत्थर के कई ढोंके मौजूद हैं जो मैदान की मामूली सफाई में बाधा डालते हैं और पत्थर के बड़े चद्दान भी बहुतायत से दिखाई दे रहे हैं जिनकी वजह से वह जमीन कुछ सुन्दर मालूम होती है मगर इस वक्त धूप की गर्मी के समय सभी बातें बुरी और भयानक जान पड़ रही हैं ।

इस मैदान में केवल ढाक (पलास) के कई पेड़ दिखाई दे रहे हैं सो भी एक साथ नहीं जिनसे किसी तरह का आराम मिलने की आशा हो सके । इन्हीं पेड़ों में से एक के साथ हम बेचारी कला को कमन्द के र सहारे बँधे हुए और उसके सामने गदाधरसिंह अर्थात् भूतनाथ को खड़े देख रह हैं , अब सुनिए कि इन दोनों में क्या बातें हो रही हैं ।

कला : तो क्या उस समय तुमने वहाँ पर कला और विमला को अच्छी

देखा या पहिचाना था ?

वे बातें भी ऐसे ढंग की थीं जिनसे उनका कला

गदाधरसिंह . : नहीं , पहिचाना तो नहीं था मगर बातें जरूर की और बिमला ही होना साबित होता था ।

कला : वह तुम्हारा भ्रम था , इस घाटी में कला और

नहीं रहतीं ।

गदा धरसिंह : (हँसकर) बहुत खासे ! अब

। देर में कह दोगी कि मैं कला और बिमला को जानती ही नहीं !

कला : नहीं ऐसा तो मैं नहीं कह सकती कि मैं दोनों को पहिचानती तक नहीं , मगर

यह जरूर कहूँगी कि वे दोनों वहाँ नहीं रहतीं और हम लोगों को उनसे कोई वास्ता नहीं ।

गदाधरसिंह : तो फिर तुम्हारी तरफ से इस ढंग की बातें क्यों की गईं कि मानो तुम ही कला या बिमला हो ? कला : यह तो उनसे पूछो तो मालूम हो जिन्होंने तुमसे बातें की थी , मैंने तो तुमसे एक बात भी नहीं की थी ।

गदाधरसिंह : वे कौन थीं जो मुझसे बातें कर रही थीं ?

कला : मेरी मालकिन ।

गदाधरसिंह : आखिर उनका कुछ नाम - पता भी है या नहीं ?

कला : यह बताने की तो कोई जरूरत नहीं ।

गदाधरसिंह : तुझे झख मार कर बताना ही पड़ेगा और यह भी बताना पड़ेगा कि कला और विमला कहाँ है ? तेरा यह कहना मैं नहीं मान सकता कि कला - बिमला इस घाटी में नहीं रहतीं और तुम लोगों का उनसे कोई संबंध नहीं । आखिर तुमने मुझसे दुश्मनी क्यों की और मैं क्यों इस घाटी में कैद करके लाया गया ? तुम लोगों का मैंने क्या विगाड़ा था ?

कला : हम लोगों को तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है मगर तुम्हारी गिरफ्तारी में हम लोग शरीक जरूर हैं

वह गिरफ्तारी कला और विमला के हुक्म ही से हुई थी । खूब जानती हूँ में कि यहाँ की एक लोंडी ने तुम्हें कला और

विमला को खबर दी थी और कहा था कि कला और विमला ने तुम्हें गिरफ्तार किया है । बेशक उसका यह कहना सब

था मगर अफसोस , तुमने उसके साथ दगा किया । यह में इसीलिए कहती हूँ कि वह मेरी बहिन थी । अगर तुम उसके

साथ दगा न करते तो वह जरूर तुम्हें पूरा - पूरा भेद बता देती । एक तौर पर उसने भंडा फोड़ ही दिया मगर तुम्हारी

सच्चाई जानने के लिए बहुत कुछ बचा भी रखा , अगर तुम अपना वादा पूरा करते तो वह जरूर बचा हुआ भेद भी बता

देती और यह भी कह देती कि कला और विमला कहाँ रहती हैं । मेरे कहने का मतलब यही है कि तुम सब बातों को

सच न समझना ।

गदाधरसिंह : नहीं , बल्कि तुम्हारा मतलब यह है कि मुझे कुछ दो तो यहाँ का भेद बताऊँ ।

कला : नहीं , ऐसा है तो नहीं मगर तुम जैसा चाहे खयाल कर सकते हो ।

गदाधरसिंह : (मुसकराकर) ठीक है , अच्छा पहिले तुम मेरी उस बात का जवाब तो दो जो में पूछ चुका हूँ , पीछे और

बातें की जाएंगी ।

कला : कौन - सी बात का जवाब ?

गदाधरसिंह : यही कि इस रात का मुझसे इस ढंग की बातें क्यों की गईं

कला : मैं समझती हूँ कि तुम्हें ठीक तरह से पहिचान लेने ही के

को इस बात का निश्चय नहीं था कि वास्तव तुम गदाधररि

उन्होंने इस ढंग की बातें की थी क्योंकि हम लोगों

तो हो और तुम्हारी गिरफ्तारी में धोखा नहीं हुआ ।

गदाधरसिंह : (मुसकराते हुए) वात बनाने में तुम भी

मगर कह सकता कि शायद तुम्हारा कहना

विमला का हाल मुझे बता सकती हो या नहीं ?

तेज हो , यद्यपि मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं कर सकता

अच्छा अब यह कहो कि तुम यहाँ के भेद और कला तथा

कला : नहीं ।

गदाधरसिंह : इसलिए कि मैंने

कला : सिर्फ इसीलिए नहीं बल्कि इसलिए भी कि यह काम बड़ा ही नाजुक है और करने के बाद मै । किसी तरह जीती

नहीं रह सकती ।

गदाधरसिंह : क्यों तुम्हें मारने वाला कौन है ? यहाँ जितने हैं वे सभी तुम्हारे अपने हैं इसके अतिरिक्त किसी को मालम

ही क्योंकर हो सकता है कि तुमने मुझे बताया है ।

कला : यह बात छिपी नहीं रह सकती , यह घाटी तिलिस्मी है और यहाँ के हर पेड़ - पत्तों और पत्थरों के ढोकों के भी

कान हैं , मेरी बहिन ने इस बात का कुछ खयाल नहीं किया और इसीलिए आखिरकार जान से मारी गई ।

गदाधरसिंह : (आश्चर्य से) क्या तुम्हारी बहिन मारी गई ?

कला : हाँ , क्योंकि मालकिन को तुम्हारी और उसकी बातों का किसी तरह पता लग गया ।

गदाधरसिंह : रात का समय था , संभव है किसी ने छिपकर सुन लिया हो । इसके अतिरिक्त और किसी तिलिस्मी बात

का मैं कायल नहीं । इस समय दिन है चारों तरफ आँखें खोलकर देखो किसी की सूरत दिखाई नहीं देती अस्तु

बहिन के साथ दगा किया , यदि वास्तव में वह तुम्हारी बहिन थी !

कला और विमला ही कर सकती हैं ।

मेरी - तुम्हारी बातें कोई सुन नहीं सकता , तुम बेखौफ होकर यहाँ का हाल इस समय मुझे बता सकती हो । कला : नहीं , कदापि नहीं ।

गदाधरसिंह : (कमर से खंजर निकाल कर और दिखाकर) नहीं तो फिर इसी से तुम्हारी खबर ली जाएगी !

कला : जो हो बताने के बाद भी तो मैं किसी तरह बच नहीं सकती , फिर ऐसी अवस्था में क्यों अपने मालिक को नुकसान पहुँचाऊँ ? चाहे तिलिस्मी बातों का तुम्हें विश्वास न हो पर मैं समझती हूँ कि और तुम्हारे बीच जो - जो बातें हो रही हैं वह सब मेरी मालकिन सुन रही होगी ...

गदाधरसिंह : (खिलखिलाकर हँसकर) ठीक है , तुम्हारी बातें ...

कला : वेशक ऐसा ही है , अगर मैं इस घाटी के बाहर होती तो इस बात का खयाल न होता और यहाँ के भेद शायद बता देती ।

गदाधरसिंह : (मुसकुराते हुए) यही सही , तुम मुझे इस घाटी के बाहर ले चलो और यहाँ के भेद बता दो तो मैं तुम्हें ...

कला : नहीं - नहीं , किसी तरह का वादा करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि उस मुझे विश्वास न होगा , हाँ , यदि मुझे दलीपशाह के पास पहुँचा दो तो मैं यहाँ का पूरा - पूरा भेद तुम्हें बता सकती बल्कि हर तरह से तुम्हारी मदद भी कर सकती हूँ !

गदाधरसिंह : (चौंक कर) दलीपशाह ! दलीपशाह से और तुमसे

वास्ता ?

कला : वे मेरे रिश्तेदार हैं और यहाँ से भाग कर मैं उनके

। अपनी जान बचा सकती हूँ ।

गदाधरसिंह : अगर ऐसा ही है तो तुम स्वयं

पास क्यों नहीं चली जाती ?

कला : पहिले तो मुझे यहाँ से भागने जरूरत ही नहीं , भागने का खयाल तो सिर्फ इसी सबब से होगा कि तुम्हें यहाँ के भेद बताऊँगी दूसरे यह कि आजकल न - जाने किस कारण से उन्होंने अपना मकान छोड़ दिया है और किसी दूसरी जगहर जाकर छिपव रहे

गदाधरसिंह : अगर ऐसा ही है तो तम स्वयं उनके पास क्यों नहीं चली जाती ?

कला : पहिले तो मुझे यहाँ से भागने की कोई जरूरत ही नहीं , भागने का खयाल तो सिर्फ इसी सबब से होगा कि तुम्हें यहाँ के भेद बताऊँगी दूसरे यह कि आजकल न - जाने किस कारण से उन्होंने अपना मकान छोड़ दिया है और किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं ।

गदाधरसिंह : अगर किसी दूसरी जगह जाकर छिप रहे हैं तो भला मुझे क्योंकर उनका पता लगेगा ?

कला : तुम्हें उनका पता जरूर मालूम होगा क्योंकि तुम उनके साढू और दोस्त भी हो ।

गदाधरसिंहः यह बात तुम्हें क्योंकर मालूम हुई ?

कला : भला मैं दलीपशाह के नाते की होकर यह नहीं जानूँगी कि तुम उनके कौन हो ।

गदाधरसिंह : (आश्चर्य के साथ कुछ सोच कर) अगर तुम्हारी बात सच है तो तुम मेरी भी नातेदार होवोगी ।

कला : जरूर ऐसा ही है , मगर यहाँ में इस बारे में कुछ भी न कहूँगी , दलीपशाह के मकान पर चलने ही से तुम्हें सब हाल मालूम हो जाएगा तथा और भी कई बातें ऐसी मालूम होंगी जिन्हें जान कर तुम खुश हो जाओगे इन्हीं बातों का खयाल करकं और तुम्हें अपना नजदीकी नातेदार समझ के में चाहती हूँ कि तुम्हें इस घाटी के बाहर कर

दूं और खुद भी भाग जाऊँ नहीं तो यहाँ रह कर तुम्हारी जान किसी तरह बच नहीं सकती और बिना मेरी मदद के तुम घाटी के बाहर भी नहीं जा सकते ।

गदाधरसिंह : (सोचकर) अगर एसा ही है तो तुम मेरी नातेदार होकर यहाँ क्यों रहती हो ?

कला : यहाँ पर मैं इन सब बातों का कुछ भी जवाब न दूंगी । कला की बातें सुन कर गदाधरसिंह सोच और तरबुद में पड़ गया । वह यहाँ का भेद जानने के लिए अवश्य ही कला को तकलीफ देता या गुस्से में आकर शायद मार ही डालता मगर कला की वातों ने उसे उलझन में डाल दिया और वह सोच में पड़ गया कि अब क्या करना चाहिए । वह जानता था बल्कि उसे विश्वास था कि बिना किसी मदद के वह इस घाटी के बाहर नहीं निकल सकता और यहाँ फंसे रहना भी उसके लिए अच्छा नहीं चाहे वह किसी तरह की ऐयारी करके कितना भी उपद्रव मचा ले , अतएव वह बाहर निकल जाना बहुत पसन्द करता था और समझाते था कि इत्तिफाक ही ने इस समय उसे कए मदद दिला दी है और अब इससे काम न लेना निरी बेवकूफी है । मगर कला की बातों ने उसे चक्कर में डाल दिया था । यद्यपि वह दलीपशाह का पता जानता था मगर कई कारणों से उसके पास या सामने जाना अथवा कला को ले जाना पसन्द नहीं करता था , उधर कला से उसकी इच्छानुसार बात करने की उसे सख्त जरूरत थी क्योंकि उसे इस बात का शक हो रहा था कि गला से दलीपशाह के पास का वादा न करूँगा तो शायद यह मुझे इस खोह के बाहर भी न ले जाएगी । वह कला को धोखा देने और वादा करने के लिए तैयार था मगर वह चाहता था कि कला मुझसे वादा पूरा करने के लिए कसम न खिलावे , सूरत में कसम खाकर मुँह फेर लेने की आदत अभी तक उसमें नहीं पड़ी थी और वह अपने को बहादुर

गदाधरसिंह के दिल में ये बातें भी पैदा हो रही थीं । इस घाटी के मालिक का पता लगाना चाहिए और यहाँ के भेदों को जानना चाहिए परन्तु उसने सोचा कि यहाँ और बिना किसी मददगार के रहकर मैं कुछ भी न कर सकूँगा । यहाँ के रहने वाले बिलकुल ही सीधे - सादे मालूम होते और यद्यपि अभी तक यहाँ किसी मर्द की सूरत दिखाई न दी परन्तु औरतें भी यहाँ की ऐयारी ही जान पड़ती है ।। क्या वह औरत भी मुझसे ऐयारी के ढंग पर बातें कर रही हैं ? संभव है कि ऐसा ही हो और मुझे घाटी के

बाहर ले जाने के बहाने से यह किसी खोह या कन्दरा में फँसकर पुनः कैद करा दे । अभी तक तो मैंने इस बात की भी जाँच नहीं की कि इसकी सूरत असली है या बनावटी । खैर मैं अभी - अभी इस बात की भी जाँच कर लूँगा और इसके बाद जब इस घाटी के बाहर निकल जाने के लिए इसके साथ किसी खोह या सुरंग के अन्दर घुसूंगा तो पूरा होशियार रहूँगा कि यह मुझसे दगा न करे , न इसे अपने आगे चलने दूंगा और न पीछे रहने दूंगा बल्कि इसका हाथ पकड़े रहूँगा या कमर में कमंद बाँध कर थामे रहूँगा । इस खोह के बाहर निकल जाने पर मैं सब कुछ कर सकूँगा क्योंकि तब वहाँ का रास्ता भी देखने में आ जाएगा , तब अपने दो - एक शागिर्दों को मदद के लिए साथ लेकर पुनः यहाँ आऊँगा और यहाँ रहने वालों से समभुंगा जिन्होंने मुझे गिरफ्तार किया था ।

इत्यादि तरह - तरह की बातें गदाधरसिंह बहुत देर तक सोचता रहा और इसके बाद कला से बोला , “ अच्छा मैं तुम्हें दलीपशाह के पास ले चलूँगा मगर तुम पानी से अपना मुँह धोकर मुझे विश्वास दिलाओ कि तुम्हारी सूरत बदली हुई नहीं है या तुम ऐयार नहीं हो और मुझे कोई धोखा नहीं दिया चाहती । "

कला : हाँ - हाँ , मैं अपना चेहरा धोने के लिए तैयार हूँ , पानी दो । गदाधरसिंह : (अपने बटुए में से पानी की एक छोटी - सी बोतल निकाल कर और कला की ओर बढ़ाकर) लो यह पानी तैयार है ।

कला ने गदाधरसिंह के हाथ से पानी लेकर अपना चेहरा धो डाला । उसके चेहरे पर किसी तरह का रंग तो चढ़ा हुआ

था ही नहीं जो धोने से दूर हो जाता बल्कि एक प्रकार की झिल्ली चढ़ी हुई थी जिस पर पानी का कुछ भी असर नहीं हो सकता था , अस्तु गदाधरसिंह को विश्वास हो गया कि इसकी सूरत बदली हुई नहीं है । भूतनाथ ने उसके हाथ - पैर खोल दिए और घाटी के बाहर चलने के लिए कहा ।

गदाधरसिंह : क्या तुम इस दिन के समय मुझे यहाँ से बाहर ले जा सकती हो ?

कला : हाँ , ले जा सकती हूँ ।

गदाधरसिंह : मगर तुम्हारे संगी - साथी किसी जगह से छिपे हुए देख सकते हैं ।

कला : अब्बल तो शायद ऐसा न होग , दूसरे अगर कोई दूर से देखता भी होगा तो जब तक वह मेरे पास पहुँचेगा तब तक मैं तुम्हें लिए हुए इस घाटी के बाहर हो जाऊँगी , फिर मुझे बचा लेना तुम्हारा काम है ।

गदाधरसिंह : (जोश के साथ) ओह , वाटी के बाहर हो जाने पर फिर तुम्हारा कोई क्या बिगाड़ सकता है !

कला : तो बस फिर जल्दी करो , मगर हाँ एक बात तो रह ही गई ।

गदाधरसिंह : वह क्या ?

कला : तुमने मुझसे इस बात की प्रतिज्ञा नहीं की कि दलीपशाह से मुलाक

करा दोगे ।

गदाधरसिंह : मैं तो पहले ही वादा कर चुका हूँ कि तुम्हें दलीपशाह पास ले चलूँगा । कला : वादा और बात है , प्रतिज्ञा और बात है , मैं इस बारे में तुमसे कसम खिला के प्रतिज्ञा करा लेना चाहती हूँ , तुम क्षत्रिय हो अस्तु खंजर , जिसे दुर्गा समझते हो , हाथ में है प्रतिज्ञा करो कि वादा पूरा करोगे । गदाधरसिंह : (कुछ देर तक सोचने के वाद खंजर हाथ में लेकर) अच्छा लो मैं कसम खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हें दलीपशाह के घर पहुँचा दूंगा ।: कला : हाँ , बस मेरी दिलजमयी हो गयी।

इतना कहकर कला उठ खड़ी हुई और गदाधरसिंह को साथ लिए हुए पहाड़ी के नीचे उतरने लगी ।

पाठकों को समझ रखना चाहिए कि इस सुन्दर घाटी से बाहर निकल जाने के लिए केवल एक ही रास्ता नहीं है बल्कि कई रास्ते हैं जिन्हें मौके - मौके से समयानुसार ये लोग अर्थात् कला और बिमला काम में लाया करती हैं और इनका हाल किसी मौके पर आगे चल कर मालूम होगा । इस समय हम केवल उसी रास्ते का हाल दिखाते हैं जिससे गदाधरसिंह को साथ लिए हुए कला बाहर जाने वाली है ।

कला पहाड़ी के कोने की तरफ दबती हुई नीचे उतरने लगी । धूप बहुत तेज हो चुकी थी और गरमी से उसे सख्त तकलीफ हो रही थी तथापि वह गौर से कुछ सोचती हुई पहाड़ी के नीचे उतरने लगी । जब करीब जमीन के पास पहुँच गई तो एक ऐसा स्थान

मिला जहाँ जंगली झाड़ियाँ बहुतायत से थी और वहाँ पत्थर का एक छोटा बुर्ज भी था जिस पर चढ़ने के लिए उसके अंदर की तरफ छोटी - छोटी तीस या पैंतीस सीढ़ियाँ बनी हुई थीं । उस बुर्ज के ऊपर लोहे की चौरुखी झंडी लगी हुई थीं , अर्थात् लोहे के बनावटी बाँस पर लोहे के ही तपरों की बनी चौरुखी झंडी इस ढंग से बनी हुई थी कि यह घुमाने से घूम सकती थी । एक झंडी का रंग सफेद , दूसरी का स्याह , तीसरी का लाल और चौथी झंडी का पीला था । इस समय पीले रंग वाली झंडी का रुख बँगले की तरफ घूमा हुआ था । वहाँ पार खड़ी होकर कला ने गदाधरसिंह से कहा , “ बस इसी जगह बाहर निकल जाने के लिए एक सुरग है और यह बुर्ज उसकी ताली है अर्थात्

दरवाजा खोलने के लिए पहिले मुझे इस बुर्ज के ऊपर जाना होगा अस्तु तुम इसी जगह खड़े रहो , मैं क्षण - भर के लिए ऊपर जाती हूँ । "

गदाधरसिंह : (कुछ सोचकर) तो मुझे भी अपने साथ लेती चलो , मैं देखूगा कि वहाँ तुम क्या करती हो ।

कला : (मुसकराकर) तो तुम इस रास्ते का भेद जानना चाहते हो ?

गदाधरसिंह : हाँ बेशक और इसीलिए तो मैंने तुमसे दलीपशाह के पास पहुँचा देने का वादा किया है ।

कला : अब चलो ।

गदाधरसिंह कला के साथ उस बुर्ज के अन्दर घुस गया । उसने देखा कि कला ने ऊपर चढ़ कर उस झंडी के बाँस को जो बुर्ज के बीचोंबीच से छत फोड़ कर अन्दर निकला हुआ था कि घुमा दिया । बस इसके अतिरिक्त उसने और कुछ भी नहीं किया और बुर्ज के नीचे उतर आई । बाहर निकलने पर गदाधरसिंह ने देखा कि जिस रुख पर पीले रंग की झंडी थी , अब उस रुख पर लाल रंग की झंडी है । मगर इस काम से और इस सुरंग के दरवाजे से क्या संबंध हो सकता है सो उसकी समझ में न आया । कुछ गौर करने पर यकायक खयाल आया कि ये झंडियाँ यहाँ रहने वालों के लिए इशारे का काम करती हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं है । वह सोचने लगा कि निःसन्देह औरत बड़ी चालाक और धूर्त है , पहिले भी इसी ने मुझ पर वार किया था ,

बेहोशी की दवा से भरा हुआ तमंचा इसी ने तो मुझ पर चलाया था और इस समय भी इसी से मुझे पाला पड़ा है , देखना चाहिए वह क्या रंग लाती है. इस समय भी अगर यह मेरे साथ दगा करेगी तो मैं इसे दुरुस्त ही करके छोड़ूंगा इत्यादि ।

गदाधरसिंह को सोच और विचार में पड़े हुए देखकर कला भी समझ गई कि वह मेरी ही विषय में चिंता कर रहा है इसे इस झंडी के घुमाने पर शक हो गया और अस्तु उसने और जल्दी से खोह के अन्दर घुसकर

और से मुद्रा दिखाते हुए गदाधरसिंह से कहा , " वस आओ क्योंकि पहिला दरवाजा

खुल गया है । "

बुर्ज के नीचे उतर जाने के बाद गदाधरसिंह साध लिए हुए कला यहाँ से पश्चिम तरफ ढालवी जमीन पर चलने लगी और लगभग तीस या चालीस कदम चलने बाद एक ऐसी जगह पहुँची जहाँ चार - पाँच पेड़ परिजात के लगे हुएथे और उनके बीच में जंगली लताओं से छिपा एक छोटा दरवाजा था । कला ने गदाधरसिंह की तरफ देख के कहा , " यही उस खोह का दरवाजा है जिस हम लोगों का आना - जाना होता है , अब मैं इसके अन्दर घुसती हूँ , तुम पीछे चले जाओ । "

गदाधरसिंह : जहाँ तक मेरा खयाल है मैं यह कह सकता हूँ कि इस खोह के अन्दर जरूर अँधकार होगा । कहीं ऐसा न हो कि तुम आगे चलकर गायब हो जाओ और मैं अँधेरे में तुम्हें टटोलता , पुकारता और पत्थरों से ठोकरें खाता हुआ परेशानी में फँस जाऊँ , क्योंकि नित्य आने - जाने के कारण यह रास्ता तुम्हारे लिए खेल रहा होगा । इसके अतिरिक्त यह रास्ता एकदम सीधा कभी न होगा , जरूर रास्ते में गिर ही पड़ी होगी । या यों कहा जाय कि इसके बीच में दो - एक तिलिस्मी दरवाजे जरूर लगे होंगे ।

कला : नहीं - नहीं , तुम वेखौफ मेरे पीछे चले आओ , यह रास्ता बहुत साफ है ।

गदाधरसिंह : नहीं , मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूँ , बेहतर होगा कि तुम अपनी कमर में मुझे कमंद बाँधने दो , मैं उसे पकड़े हुए तुम्हारे पीछे - पीछे चला चलूँगा ।

कला : अगर तुम्हारी यही मर्जी है तो मुझे मंजूर है ।

आखिर ऐसा ही हुआ , गदाधरसिंह ने कला की कमर में कमन्द बाँधी और उसे आगे चलने के लिए कहा और उस

कमन्द का दूसरा सिरा पकड़े हुए पीछे - पीछे आप रवाना हुआ । गदाधरसिंह को इस बात का बहुत खयाल था कि सुरंग

की राह से आने - जाने का रास्ता किसी तरह मालूम कर ले , मगर कला किसी दूसरी ही फिक्र में थी , वह यह नहीं चाहती

थी कि इसी सुरंग के अन्दर भूतनाथ अर्थात् गदाधरसिंह को फँसा कर मार डाले , इस समय उसे इस सुरंग से निकाल

देना ही वह पसन्द करती थी , अस्तु वह धीरे - धीरे सुरंग के अन्दर से रवाना हुई ।

पंद्रह या वीस कदम आगे जाने के बाद सुरंग में एकदम अंधकार मिला इसलिए गदाधरसिंह को टटोल - टटोलकर चलने

की जरूरत पड़ी मगर कला तेजी के साथ कदम बढ़ाए चली जा रही थी और एकतौर पर गदाधरसिंह को खैंचे लिए

जाती थी ।

कला : अब तुम जल्दी चलते क्यों नहीं ? रास्ता बहुत चलना है और तुम्हारी सताई हुई प्यास के मारे मैं वेचैन हो रही हूँ ,

इस खोह के बाहर निकलकर तब पानी पीऊँगी , और तुम्हारा यह हाल है कि चींटी की तरह कदम बढ़ाते हो , मेरे

पीछे - पीछे आने में भी तुम्हारी यह दशा है , तुम कैसे ऐयार हो ?

गदाधरसिंह : मालूम होता है कि मुझे आज तुमसे भी कुछ सीखना पड़ेगा , मेरी ऐयारी में जो कुछ कसर थी उसे अब

कदाचित् तुम लोग ही पूरा करोगी ।

कला : वास्तव में ऐसी ही बात है , देखो यहाँ एक दरवाजा आया है , जरा संभलकर

उसी समय किसी तरह के खटके की आवाज आई और मालूम हुआ कि

से इस नीयत से हाथ बढ़ा कर टटोलता हुआ आगे बढ़ा कि दरवाजे का मालूम करे
किसी तरह से खुलता है मगर चौखट लाँघ जाने पर भी जब इस
कुछ पता न लगा तब उसने चिढ़ कर कला से
कहा , “ क्या खाली चौखट ही थी या यहाँ तुमने दरवाजा खोला।

कला : इस बात के जानने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं ,

गदाधरसिंह : मैं यहाँ के भेद जानना नहीं चाहता मगर इस सुरंग का हाल तो तुम्हें बताना ही पड़ेगा ।

कला : इस भरोसे मत रहना , मैं वादे के मुताबिक तुम्हें इस जगह से बाहर कर दूंगी और तुम प्रतिज्ञानुसार मुझे
दलीपशाह के पास पहुँचा देना ।

गदा धरसिंह : क्या तुम नहीं जानती कि अभी तक तुम मेरे कब्जे में हो और मैं जितना चाहे तुम्हें सता सकता हूँ ?

कला : तुम्हारे ऐसे बेवकूफ ऐयार के मुँह से ऐसी बात निकले तो कोई ताज्जुब की बात नहीं ! अजी तुम यही गनीमत
समझो कि इस घाटी के अन्दर हम लोगों ने तुम्हें किसी तरह का दुःख नहीं दिया क्योंकि हम लोग तुम्हारे साथ कोई
और ही सलूक किया चाहती हैं और किसी दूसरे ढंग पर बदला लेने का इरादा है । यह तुम्हारी भूल है कि तुम मुझे
अपने कब्जे में समझते हो , अगर अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप चले जाओ ।

कला की ऐसी बातें सुनकर गदाधरसिंह झल्ला उठा और उसने क्रोध के साथ कमन्द खैंची । उसे आशा थी कि कला
इसके साथ खिंचती चली आवेगी मगर ऐसा न हुआ और खाली कमन्द खिंचकर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई , क्योंकि

रास्ता चलते - चलते कला ने वह कमंद खोल डाली थी , इसलिए कि उसके हाथ खुले थे । गदाधरसिंह ने इस खयाल से

उसके हाथ नहीं बाँधे थे और कला ने भी ऐसा ही बहाना किया था कि सुरंग के अंदर कई कठिन दरवाजे खोलने पड़ेंगे ।

जिस समय खाली कमंद खिंचकर गदाधरसिंह के हाथ में आ गई उसका कलेजा दहल उठा और वह वास्तव में

बेवकूफ - सा बनकर चुपचाप खड़ा रह गया मगर साथ ही कला की आवाज आई " कोई चिंता मत करो , चुपचाप कदम

तुमसे यह वादा नहीं किया है कि यहाँ के सब भेद बता

लाँघना नहीं ठोकर खाओगे ।

बढ़ाते चले आओ और समझ लो कि यहाँ भी तुम्हें बहुत कुछ सीखना पड़ेगा । "

एक खटके की आवाज आई और आहट से उसी समय यह भी मालूम हो गया कि जिस चौखट को लाँघकर वह आया था उसमें किसी तरह का दरवाजा था जो उसके इधर आ जाने के बाद आप - से - आप बंद हो गया । पीछे की तरफ हटकर और हाथ बढ़ाकर देखा तो अपना खयाल सच पाया और विश्वास हो गया कि अब उसका पीछे की तरफ लौट जाना असंभव हो गया ।

वहाँ की अवस्था और कला की बातों से गदाधरसिंह का गुस्सा बराबर बढ़ता ही गया और इस बात की उसे बहुत ही शर्म आई कि एक साधारण औरत ने उसे उल्लू बना दिया । मगर वह कर ही क्या सकता था , उन अनजान सुरंग और अंधकार में उसका क्या बस चल सकता था ? परन्तु इतने पर भी उसने मजबूर होकर कला के पीछे - पीछे टटोलते हुए जाना पसन्द नहीं किया ।

कई सायत तक चुपचाप खड़े रहकर कुछ सोचने के बाद उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और आँखें फाड़ कर चारों तरफ देखने लगा । उसने देखा कि यह सुरंग बहुत बड़ी चौड़ी और कुदरती दंग पर बनी हुई है तथा ऊँचाई भी

किसी तरह कम नहीं है , तीन आदमी एक साथ खड़े होकर उसमें बखूबी चल सकते हैं क्योंकि सुरंग लंबी है।

आगे की तरफ बिलकुल अंधकार मालूम होता था । पीछे की तरफ देखा तो दरवाजा बंद पाया जिसमें किसी तरह की कुंडी , खटके या ताले का निशान नहीं मालूम होता था ।

गदाधरसिंह हाथ में बत्ती लिए हुए आगे की तरफ कदम बढ़ाये रवाना हुआ । लगभग डेढ़ सौ कदम जाने के बाद उसे पुनः दूसरी चौखट लाँघने की जरूरत पड़ी । उसके पार हो जाने के दरवाजा भी आप - से - आप बंद हो गया । उसने अपनी आँखों से देखा कि लोहे का बहुत बड़ा तख्ता एक से निकल कर रास्ता बंद करता हुआ दूसरी तरफ जाकर हाथ भर तक दीवार के अन्दर घुस गया , क्योंकि वह फिर कर देखता हुआ आगे बढ़ा था । वह पुनः आगे की तरफ बढ़ा मगर अब क्रमशः सुरंग तंग और नीची लगी । उसे कला का कहीं पता न लगा जिसे गिरफ्तार करने के लिए वह दाँत पीस रहा था ।

कई सौ कदम चले जाने के बाद पिछले दो की तरह उसे और भी तीन दरवाजे सामने पड़े और सब वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ रास्ता दो तरफ को फूट गया था । वहाँ पर वह अटक गया और सोचने लगा कि किस तरफ जाय । कुछ ही सायत बाद एक तरफ आवाज आई , " अगर सुरंग के बाहर निकल जाने की इच्छा हो तो दाहिनी तरफ चला जा और अगर यहाँ के रहने वालों की ऐयारी का इम्तिहान लेना हो और किसी को गिरफ्तार करने की प्रबल अभिलाषा हो तो बाईं तरफ का रास्ता पकड़ ! "

गदाधरसिंह चौकन्ना होकर उस तरफ देखने लगा जिधर से आवाज आई थी मगर किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी । आवाज पर गौर करने से विश्वास हो गया कि यह उसी औरत (कला) की आवाज है जिसकी बदौलत वह यहाँ तक आया था । आवाज किस तरफ से आई या आवाज देने वाला कहाँ है और वहाँ तक पहुँचने की क्या तरकीब हो सकती है इत्यादि बातों पर गौर करने के लिए भी गदाधर वहाँ न अटका और गुस्से के मारे पेचोताव खाता हुआ दाहिनी तरफ वाली सुरंग में रवाना हुआ । थोड़ी देर तक तेजी के साथ चलकर वह सुरंग से बाहर निकल आया और ऐसे

स्थान पर पहुँचा जहाँ बहुत सुन्दर और सुहावने वेल और परिजात के पेड़ लगे हुए थे और हरी - हरी लताओं से सुरंग का मुँह ढका हुआ था ।

जहाँ पर गदाधरसिंह खड़ा था उसके दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर सुन्दर झरना था जो पहाड़ की ऊँचाई से गिरता हुआ तेजी के साथ बह रहा था । यद्यपि इस समय उसके जल की चौड़ाई चार या पाँच हाथ से ज्यादा न थी मगर दोनों तरफ के कगारों पर ध्यान देने से विश्वास होता था कि मौसम पर जरूर चश्मा छोटी - मोटी नदी का रूप धारण कर लेता होगा ।

गदाधरसिंह ने देखा कि उस चश्मे का जल मोती की तरह साफ और निखरा हुआ बह रहा है और उसके उस पार वही

औरत (कला) जिसने उसे धोखा दिया था हाथ में तीर - कमान लिए खड़ी उसकी तरफ देख रही है । वह अकेली नहीं है , बल्कि और भी चार औरतें उसी की तरह हाथ में तीर - कमान लिए उसके पीछे हिफाजत के खयाल में खड़ी हैं ।

गदाधरसिंह क्रोध से भरा हुआ लाल आँखों से उस औरत (कला) की तरफ देखने लगा और कुछ बोलना ही चाहता था कि सामने से और भी दो आदमी आते हुए दिखाई दिए जिन्हें नजदीक आने पर भी उसने नहीं पहिचाना मगर उसे खयाल हुआ कि इन दोनों के ऐयारी के ढंग पर अपनी सूरतें बदली हुई हैं ।

ये दोनों आदमी गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह थे जिनकी सूरत इस समय वास्तव में बदली हुई थीं । प्रभाकर सिंह ने निगाह पड़ते ही कला को पहचान लिया क्योंकि उसे बदली हुई सूरत में कला और बिमला को देख चुके थे , हाँ , कला ने प्रभाकर सिंह को नहीं पहचाना जो उस समय भी सुन्दर सिपाहियाना ठाठ में सजे हुए थे ।

कला को इस जगह ऐसी अवस्था में देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ और वे उससे कुछ पूछना ही चाहते थे कि उनकी निगाह गदाधरसिंह पर जा पड़ी जो चश्मे के उस पार पत्थर की चट्टान पर खड़ा इन लोगों की तरफ देख रहा था ।

मेरे

प्रभाकर सिंह ने इस ढंग पर अपनी सूरत बदली हुई थी कि उन्हें यकायक पहिचानना बड़ा कठिन था मगर एक बँधे हुए इशारे से उन्होंने कला पर अपने को प्रकट कर

दिया और यह बतला दिया कि जो साथ है वह मेरा सच्चा खैरख्वाह गुलाबसिंह है । गुलाबसिंह का हाल कला को मालूम था क्योंकि वह उसकी तमारीफ इंदुमति से सुन चुकी थी और जानती थी कि ये प्रभाकर सिंह के विश्वासपात्र हैं इसलिए इनसे कोई बात छिपाने की नहीं है अस्तु पूछने पर उसने अपने साथ वाली औरतों को अलग करके सब हाल अपना और भूतनाथ का बयान कर दिया जिसे सुनते ही प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह हँस पड़े ।

ज

प्रभाकर सिंह : वास्तव में तुम बेतरह इसके हाथ फंस

थीं मगर खूब ही चालाकी से अपने को बचाया !

गुलावसिंह : (प्रभाकर सिंह की तरफ देख गदाधरसिंह इनका कसूरवार है और आजकल उसने अजीब तरह का ढंग पकड़ रखा है तथापि मैं कह सकता हूँ कि गदाधरसिंह ने इन्हें पहिचाना नहीं , अगर पहिचान लेता तो कदापि इनके साथ वेअदबी का बर्ताव न

कला : (गुलावसिंह से) आज जो चाहें कहें क्योंकि वह आपका दोस्त है मगर हम लोगों को उस पर कुछ भी विश्वास नहीं है । (प्रभाकर सिंह से) मालूम होता है कि हम लोगों का हाल आपने इनसे कह दिया है ।

प्रभाकर सिंह : हाँ , बेशक ऐसा ही है मगर तुम लोगों को इन पर विश्वास करना चाहिए क्योंकि ये मेरे सच्चे सहायक , हितैपी और दोस्त हैं । तुम लोगों को भी इनसे बड़ी मदद मिलेगी ।

कला : ठीक है और मैं जरूर इन पर विश्वास करूँगी क्योंकि इनका पूरा - पूरा हाल वहिन इंदुमति से सुन चुकी हूँ , यद्यपि ये गदाधरसिंह के दोस्त हैं और हम लोग उनके साथ दुश्मनी का बर्ताव कर रहे हैं ।

गुलाबसिंह : (कला से) यद्यपि गदाधरसिंह मेरा दोस्त है मगर (प्रभाकर सिंह की तरफ वताकर) इनके मुकाबले में मैं उस दोस्ती की कुछ भी कदर नहीं करता । इनके लिए मैं उसी को नहीं बल्कि दुनिया के हर एक पदार्थ को जिसे मैं प्यार करता हूँ छोड़ देने के लिए तैयार हूँ । अच्छा जाने दो इस समय पर इन बातों की जरूरत

नहीं , पहिले उस (गदाधरसिंह) से बातें करके उसे विदा कर लो फिर हम लोगों से बातें होती रहेंगी । हाँ , यह तो बताओ कि जब तुमने इसे गिरफ्तार ही कर लिया था तो फिर मार क्यों नहीं डाला ?

कला : हम लोग इसे मार डालना पसन्द नहीं करतीं बल्कि यह चाहती हैं कि जहाँ तक हो सके इसकी मिट्टी पलीद करें

और इसे किसी लायक न छोड़ें । यह किसी के सामने मुँह दिखाने के लायक न रहे बल्कि आदमी की सूरत देखकर भागता फिरे , और इसके माथे पर कलंक का ऐसा टीका लगे कि किसी के छुड़ाए न छूट सके और यह घबड़ाकर पछताता हुआ जंगल - जंगल छिपता फिरे ।

गुलाबसिंह : वेशक यह बहुत बड़ी सजा है , अच्छा तुम उससे बात करो ।

गदाधरसिंह दूर खड़ा हुआ इन लोगों की तरफ बराबर देख रहा था मगर इन लोगों की बातें उसे कुछ भी सुनाई नहीं देती थीं और न वह हाव - भाव ही से कुछ समझ सकता था , हाँ इतना जानता था कि अब वह कला का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता ।

कला : (कुछ आगे बढ़ कर ऊँची आवाज में गदाधरसिंह से) अब तो तुम इस घाटी के बाहर निकल आए , मैंने जो कुछ वादा किया था सो पूरा हो गया अब तुम मुझे दलीपशाह के पास ले चलकर अपना वादा पूरा करो ।

गदाधरसिंह : (कला की तरफ बढ़ कर) वेशक तुम्हारी ऐयारी मुझ पर चल गई और मैं बेवकूफ बन गया । मैं यह भी खूब समझता हूँ कि दलीपशाह से मुलाकात करने की तुम्हें कोई जरूरत न थी , वह केवल बहाना था , और न अब तुम मेरे साथ दलीपशाह के पास जा ही सकती हो । अस्तु कोई चिंता नहीं , तुम मेरे हाथ से निकल गईं और मैं तुम्हारे पंजे से छूट गया । अच्छा अब मैं जाता हूँ मगर कहे जाता हूँ कि तुम लोग व्यर्थ ही

करती हो । दयाराम जी के विषस में जो कुछ तुम लोगों ने सुना है या जो कुछ तुम लोगों का खयाल है झूट है , वह मेरे सच्चे प्रेमी थे और मैं अभी तक उनके लिए रो रहा हूँ , यदि जमना और सरस्वती वास्तव जीती हैं और तुम लोग उनके साथ रहती हो तो जाकर कह देना कि गदाधरसिंह तुम लोगों के साथ दुश्मनी न करेगा , यद्यपि

तुम्हारा हाल जानने के लिए वह तुम्हारे आदमियों को दुःख दे और सतावे तो हो सकता है दोनों को कदापि दुःख न देगा । तुम यदि इच्छा हो तो गदाधरसिंह को सता लो , उसे तुम्हारे लिए जान में भी

कुछ उन न होगा ।

कदापि

तुम

इतना कहकर भूतनाथ वहाँ से पलट पड़ा और देखते - देखते नजरों से गायब हो गया ।

गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़कर प्रभाकर कला के साथ घाटी के अन्दर चले गये और गुलाबसिंह से कह गये कि तुम इसी जगह ठहरकर मेरा इंतजार , इंदुमति तथा बिमला से मिलकर आता हूँ तो चुनार की तरफ चलूँगा क्योंकि जब तक शिवदत्त से बदला न ले तब तक मेरा मन स्थिर न होगा ।

संध्या हो चुकी थी जब प्रभाकर सिंह लौट कर गुलाबसिंह के पास आए और दोनों आदमी धीरे - धीरे बातचीत करते हुए चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए ।

इन दोनों को इस बात की कुछ भी खबर नहीं है कि भूतनाथ इनका पीछा किये चला आ रहा है और चाहता है कि इन दोनों को किसी तरह पहिचान ले । इन दोनों के खयाल से भूतनाथ उसी समय कला के सामने ही चला गया था मगर वास्तव में वह थोड़ी दूर जाकर छिप रहा था और अब मौका पाकर इन दोनों के पीछे - पीछे छिपता हुआ रवाना हुआ ।

तीसरा व्यान.

क्या भूतनाथ को कोई अपना दोस्त कह सकता था ? क्या भूतनाथ के दिल में किसी की मुहब्बत कायम रह सकती धी ? क्या भूतनाथ किसी के एहसान का पावंद रह सकता था ? क्या भूतनाथ पर किसी का दवाव पड़ सकता था ? क्या भूतनाथ पर कोई भरोसा रख सकता था ? इसका जवाब देना बहुत कठिन है । जो गुलाबसिंह भूतनाथ को अपना दोस्त कहता था आज वही गुलावसिंह भूतनाथ पर भरोसा नहीं करता और इसी तरह भूतनाथ भी उसे अपना दोस्त नहीं समझता । जिस प्रभाकर सिंह की मदद के लिए भूतनाथ कमर वाँध कर तैयार हुआ था आज उसी प्रभाकर सिंह पर ऐवारी का वार करके इंदुमति को सताने के लिए वह तैयार हो रहा है ।

सूरत वदले हुए प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह को यद्यपि भूतनाथ ने पहिचाना न था मगर उसे किसी तरह का शक जरूर हो गया था और यही जाँच करने के लिए उसने इन दोनों का पीछा किया था ।

रात पहर भर से ज्यादे हो चुकी थी । गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह आपस में बातें करते हुए चुनारगढ़ की तरफ जा रहे थे । वे दोनों इस विचार में थे कि कोई गाँव या वस्ती आ जाय तो वहाँ थोड़ी देर के लिए आराम करें । कुछ दूर और जाने के बाद वे दोनों ऐसी जगह पहुँचे जहाँ जंगली पेड़ बहुत ही कम होने के कारण वह जमीन मैदान का नमूना बन रही थी और पगडंडी रास्ते से कुछ हट कर दाहिनी तरफ एक सुन्दर कुआँ भी था ।| देख इन दोनों की इच्छा हुई कि इस कुएँ पर बैठकर कुछ देर आराम कर लें तब आगे बढ़ें ।

कर रहा है और डोरी तथा लोटा उसके

कुएँ के पास जाकर देखा कि एक आदम गमछा विछाए उसी जगह पर सिरहाने की तरफ पड़ा हुआ है ।

गुलाबसिंह ने प्रभाकर सिंह की तरफ देखकर कहा , " कुछ लिए यहाँ आराम कीजिए , पानी पीजिए , और हाथ - मुँह धो ठंडे होकर सफर की हरारत मिटाइए ! " इसके जवाब में प्रभाकर सिंह ने कहा , “ पानी पीने के लिए हम लोगों के पास लोटा - डोरी तो है नहीं , हाँ आगे किसी ठिकाने पर तो सभी कुछ हो सकता है , बल्कि वहाँ खाने - पीने का भी सुवीता होगा ! "

इन दोनों की बातें सुनकर वह जो कुएँ की जगत पर लेटा हुआ था उठ बैठा और बोला , " हाँ हाँ , आप क्षत्री जान पड़ते हैं और मैं भी गौड़ ब्राह्मण हूँ , अभी - अभी यह लोटा माँज कर मैंने रखा है आप पानी खींच लीजिए । "

" अति उत्तम " कह कर गुलाबसिंह ने लोटा - डोरी उठा ली और प्रभाकर सिंह उसी जगत पर बैठ गये ।

गुलाबसिंह ने कुएँ से जल निकाला और दोनों दोस्तों ने हाथ - मुँह धोया । इसके बाद पुनः जल निकाल कर दोनों ने थोड़ा - थोड़ा पीया फिर लोटा माँज मुसाफिर के सिरहाने उसी जगह रख दिया ।

गुलाबसिंह यद्यपि होशियार आदमी थे मगर इस जगह एक मामूली बात में भूल कर गये । उन्हें उचित था कि अपने हाथ से लोटा माँज कर तब जलपान करते या मुँह - हाथ धोते , मगर ऐसा न करने से दोनों ही को तकलीफ उठानी पड़ी ।

वह आदमी जो कुएँ पर पहिले ही से आराम कर रहा था वास्तव में भूतनाथ था । वह इन दोनों की आहट लेता हुआ इनसे कुछ ही दूर आगे - आगे सफर कर रहा था बल्कि कहना चाहिए कि कभी आगे , कभी पीछे , कभी पास कभी दूर जब जैसा मौका पाता उसी तरह उन दोनों के साथ सफर कर रहा था और इस समय पहिले ही से यहाँ आकर इन लोगों को धोखा देने के लिए अटका हुआ था ।

प्रभाकर सिंह : (गुलाबसिंह से) यह कुआँ है तो अच्छे मौके पर मगर इसका पानी अच्छा नहीं है ।

गुलावसिंह : हाँ पानी में कुछ बदबू मालूम पड़ती है , मगर यह बात पहिले न थी , मैं कई दफे इस कुएँ का पानी पी चुका

हूं. , यहाँ चार - पांच कोस के घेरे में यही एक कुआं है ।

इसके बाद दोनों आदमी कुछ देर तक मामूली बातचीत करते रहे क्योंकि अनजान मुसाफिर पास होने के खयाल से मतलब की या भेद की कोई बात नहीं कर सकते थे । इसके बाद वे दोनों चादर बिछाकर लेट गये और बात की बात में बेखबर होकर खराटे लेने लगे । उस समय भूतनाथ अपनी जगह से उठा और दोनों के पास आकर गौर से देखने लगा कि अभी ये बेहोश हुए हैं या नहीं ।

भूतनाथ ने अपने लोटे के अन्दर बेहोशी की दवा लगा दी थी जिसका कुछ हिस्सा पानी में मिल घुलकर इनके पेट में उतर गया था और इसी दवा के महक इन दोनों की नाक में गई थी जिसका असल मतलब न समझ कर इन्होंने पानी की शिकायत की थी ।

जब भूतनाथ ने देखा कि वे दोनों अच्छी तरह बेहोश हो गये तब अपने बटुए में से सामान निकालकर उसने रोशनी की , इसके बाद कुएं में से पानी निकाला और रूमाल तर करके इन दोनों का चेहरा साफ किया । उस समय अच्छी तरह देखने से भूतनाथ का शक जाता रहा और उसने पहिचान लिया कि ये दोनों गुलाबसिंह और प्रभाकर सिंह हैं ।

गुलाबसिंह ऐयार नहीं था मगर अकल का तेज होशियार आदमी था तथा ऐयारों के साथ दोस्ती रहने के कारण कुछ - कुछ ऐयारी का काम भी कर सकता था और इसी सबब से उसने अपनी और प्रभाकर सूरत मामूली दंग पर बदल

ली थी ।

भूतनाथ ने इन दोनों को अच्छी तरह पहिचान लेने के बाद सिंह को पीठ पर लाद कर अपने घर का रास्ता लिया ।

सूरत पुनः उसी तरह की बना दी और प्रभाकर

तेजी के साथ चलकर दो ही घंटे में वह अपनी घाटी के । पर जा पहुँचा जहाँ रहता था तथा जो कला और विमला की घाटी के साथ सटी हुई थी । वहाँ उसके शागिर्द । उसका इंतजार कर रहे होंगे यह सोच भूतनाथ तेजी से कदम बढ़ाता हुआ उस सुरंग के अन्दर घुसा ।

सुरंग के अन्दर घुसने के बाद उसी चौमुहानी पर पहुँचा जिसका जिक्र ऊपर कई दफे आ चुका है । इसके बाद यह अपनी घाटी की तरफ घूमा और उस सुरंग में घुसा मगर दो ही चार कदम आगे जाने के बाद दरवाजा बंद देख उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ , उसका दिमाग हिल

गया और हिम्मती होने पर भी वह एक दफे काँप उठा ।

प्रभाकर सिंह की गठरी उसने जमीन पर रख दी और बटुए में से सामान निकाल रोशनी करने के बाद अच्छी तरह गौर करके देखने लगा कि रास्ता क्योंकर बंद हो गया , मगर उसकी समझ में कुछ भी न आया । उसने सिर्फ इतना देखा कि लोहे का एक बहुत बड़ा तख्ता सामने खड़ा हुआ है जिसके कारण यह बिलकुल नहीं जान पड़ता कि उसका घर किस तरफ है । उसने दरवाजा खोलने की बहुत कोशिश की और बड़ी देर तक हैरान रहा मगर सब बेकार हुआ । यह सोच कर उसकी आँखों में आँसू भर आये कि हाय उसके कई शागिर्द जो इस घाटी के अन्दर हैं सब बेचारे भूख के मारे तड़प कर मर जाएँगे , क्योंकि इस रास्ते के सिवाय बाहर निकलने के लिए उन्हें कोई दूसरा रास्ता न मिलेगा ।

प्रभाकर सिंह की गठरी लिए भूतनाथ घबड़ाया हुआ सुरंग के बाहर निकल आया और एक घने पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए ? इस समय यहाँ मेरा कोई शागिर्द या नौकर भी नहीं मिल सकता जिससे किसी तरह का काम निकाला जाय । जिस खयाल से प्रभाकर सिंह को ले आया था वह काम भी न हुआ । हाय मेरे आदमी एकाएक जहन्नुम में मिल गये और मैं उनकी कुछ भी मदद न कर सका ! मालूम होता है कि यहाँ का कोई सच्चा जानकार आ पहुँचा जिसने इस घाटी पर कब्जा कर लिया । क्या दयाराम की दोनों स्त्रियाँ तो यहाँ नहीं आ पहुँची जो पड़ोस में रहती हैं ? अगर ऐसा हो भी तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है , क्योंकि बगल वाली घाटी जिसमें वे दोनों रहती हैं कोई तिलिस्म मालूम पड़ती है और यह घाटी उससे कुछ संबंध रखती हो तो आश्चर्य ही क्या है । मैं नहीं चाहता था कि उन दोनों को सताऊँ या किसी तरह की तकलीफ दूँ , मगर दोस्तों और शागिर्दों को छुड़ाने के लिए अब

मुझे सभी कुछ करना पड़ेगा ।

चौथा व्यान।

गुलाबसिंह की जब आँख खुली तो रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी में पूरव तरफ लालिमा दिखाई देने लग गई थी । वह घबराकर उठ बैठा और इधर - उधर देखने लगा । जब प्रभाकर सिंह को वहाँ न पाया तब बोल उठा , " वेशक मैं धोखा खा गया । वह मुसाफिर न था बल्कि कोई ऐयार था जिसने लोटे में किसी तरह की दवा लगा दी होगी । क्या मैं कह सकता हूँ कि प्रभाकर सिंह को वही उठा ले गया होगा ? "

इतना कह वह जगत के नीचे उतरा और घूम - घूमकर प्रभाकर सिंह की तलाश करने लगा । जब वे न मिले तो तरह - तरह की बातें मन में सोचता हुआ आगे की तरफ बढ़ा

" वेशक वह कोई ऐयार था जो प्रभाकर सिंह को उठाकर ले गया । ताज्जुब नहीं कि वह भूतनाथ हो । यद्यपि मुझे उससे ऐसी आशा न थी परन्तु आजकल वह जमना और सरस्वती के खयाल से प्रभाकर सिंह को भी अपना दुश्मन समझने लग गया है । यह भी किसी को क्या उम्मीद थी कि जमना और सरस्वती जीती होंगी । खैर मुझे इस समय प्रभाकर सिंह के लिए कुछ बंदोबस्त करना चाहिए , बेहतर होगा यदि मैं स्वयं भूतनाथ के पास चला जाऊँ और उससे प्रभाकर सिंह को माँग लूँ । मगर नहीं , यद्यपि वह मेरा दोस्त है परन्तु इस समय वह दोस्ती पर कुछ भी ध्यान न देगा । अगर उसे ऐसा ही खयाल होता तो प्रभाकर सिंह को ले जाता ही क्यों ? , मुझे भी इस समय उससे किसी तरह की उम्मीद न रखनी चाहिए , क्योंकि अब हम लोग दयाराम के खयाल से जमना और सरस्वती के पक्षपाती | गये हैं , अस्तु अब उसके लिए कोई दूसरा ही बंदोबस्त करना चाहिए । अगर उस खोह का रास्ता मुझे मालूम होता तो मैं जमना और सरस्वती को भी इस वात की खवर दे देता । अब मुझे दलीपशाह के पास चलना चाहिए और उससे मदद मांगनी चाहिए , क्योंकि मैं अकेले भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकता । दलीपशाह जरूर मेरी

मदद

उस पर मेरा जोर भी है और उसने मेरे साथ अपनी मुहब्बत भी दिखाई है , मगर पहिले अपने आदमियों को समझा देना चाहिए जो अभी तक हम लोगों का इंतजार कर रहे होंगे ! "

इत्यादि तरह - तरह की बातें सोचता हुआ गुलाबसिंह आगे की तरह बढ़ा चला जाता था । लगभग एक या डेढ़ कोस गया होगा कि सामने से दो सिपाही ढाल - तलवार दो घोड़ों की बागडोर थामे आते हुए दिखाई पड़े । जब वे गुलाबसिंह के पास पहुंचे तो सलाम करके खड़े हो गए और गुलाबसिंह भी रुक गया ।

गुलाबसिंह : तुम लोग कहाँ जा

हो ?

एक : आप ही की खोज में जा रहे हैं , क्योंकि रात भर इंतजार करके हम लोग ...

गुलाबसिंह : (वात काट कर) बेशक तुम लोग तरदुद में पड़ गए होंगे , मगर क्या करें लाचारी है , अच्छा यह कहो कि बाकी आदमी कहाँ हैं ?

एक : अभी तक सब उसी जगह अटके हुए हैं ।

गुलाबसिंह : अच्छा एक काम करो , तुम घोड़ा वहीं छोड़ दो और लौट जाओ , हमारे आदमियों को इत्तिला दो कि हमारे घर पर चले जाएँ , पुराने घर पर नहीं आजकल जहाँ हम रहते हैं उस घर पर चले जाएँ , और जब तक हम या प्रभाकर सिंह वहाँ न आवें तब तक कहीं न जाएँ । मैं इस घोड़े पर सवार होकर किसी काम के लिए जाता हूँ । (दूसरे सिपाही की तरफ देखकर) तुम इस दूसरे घोड़े पर सवार हो लो और मेरे साथ - साथ चलो ।

इतना कहकर गुलाबसिंह घोड़े पर सवार हो गया । “ जो हुक्म ' कहकर एक सिपाही तो पीछे की तरफ लौट गया और दूसरा घोड़े पर सवार होकर गुलाबसिंह के साथ रवाना हुआ ।

पांचवा व्यान।

ऊपर लिखी वारदात को गुजरे आज कई दिन हो चुके हैं । इस बीच में कहाँ और क्या - क्या नई बातें पैदा हुईं उनका हाल तो पीछे मालूम होगा , इस समय हम पाठकों को कला और बिमला की उसी सुन्दर घाटी में ले चलते हैं जिसकी सैर वे पहिले भी कई दफे कर चुके हैं ।

उस घाटी के बीचोंबीच में जो सुन्दर बँगला है उसी में चलिए और देखिए कि क्या हो रहा है ।

रात घंटे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी है । बँगले के अन्दर एक कमरे में साफ और सुथरा फर्श विछा हुआ है और उस पर कुछ आदमी बैठे आपस में बातें कर रहे हैं । एक तो इन्द्रदेव हैं , दूसरी कला , तीसरी बिमला और चौथी इंदुमति है , जिसका नाम आजकल ' चंदा ' रखा गया है । खैर सुनिए कि इनमें क्या - क्या बातें हो रही हैं ।

बिमला : (इन्द्रदेव से) आपका कहना बहुत ठीक है , मैं भी भूतनाथ से इसी तरह पर बदला लेना पसन्द करती हूँ , तभी तो उसे यहाँ से निकल जाने का मौका दिया , नहीं तो यहाँ पर उसको मार डालना कोई कठिन काम न था ।

इन्द्रदेव : ठीक है , किसी दुश्मन को मार डालने से मेरी तबीयत तो प्रसन्न नहीं होती । समझता हूँ कि मरने वाले को कई सायत तक की मामूली तकलीफ तो होती है मगर मरने के बाद उसे कुछ भी नहीं रहता कि उसने किसके साथ कैसा सलूक किया था और उसने किस तरह पर उससे बदला लिया । प्राण संबंध शरीर से नहीं छूटता , उसे कोई - न - कोई शरीर अवश्य ही धारण करना पड़ता है । एक शरीर को छोड़ दूसरा धारण करना पड़ा । यह उसकी इच्छानुसार नहीं होता बल्कि सर्वशक्तिमान जगदीश्वर के रचे हुए । जगत् का यह एक अकाट्य नियम ही है और इसी नियम के अनुसार ईश्वर भले - बुरे कर्मों का बदला मनुष्य है । एक देह को छोड़कर जब जीव दूसरी देह में प्रवेश करता है तब अपने भले - बुरे कर्मों का फल

दूसरी भोगता है , मगर इसका उसे कुछ भी परिज्ञान नहीं होता और उस सुख - दुःख का कारण न समझकर वह सहज उस कर्म - फल को अथवा सुख - दुःख को भोग लेता है या भोग करता है । वह इस बात की नहीं समझ सकता पूर्व जन्म में मैंने यह पाप किया था जिसका बदला इस तरह पर मिल रहा है , बल्कि उसे वह एक मामूली बात समझता है , और दुःख को दूर करने का उद्योग किया करता है , यही कारण है कि वह पुनः पाप - कर्म में प्रवृत्त | जाता है । अगर मनुष्य जानता कि यह दुःख उसके किस पाप - कर्म का फल है तो कदाचित् वह पुनः उस पाप - कर्म में प्रवृत्त होने का साहस न करता परन्तु उस महामाया की माया कुछ कही नहीं जाती और समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों होता है कदाचित् उस दयामय के दया भाव ही के कारण हो । इसी से मैं कहता हूँ कि दुश्मन को मार डालने से कोई फल नहीं होता । उसके पाप - कर्म का बदला ईश्वर तो उसे देगा ही परन्तु मैं भी तो कुछ बदला दे दूँ " यही मेरी इच्छा रहती है । चाहे किसी मत के पक्षपाती लोग इसे भी ईश्वर की इच्छा ही कहें परन्तु मेरे चित्त को जो संतोष होता है वह विशेषता इसमें अधिक अवश्य है ।

बिमला : निःसन्देह ऐसा ही है ।

इन्द्रदेव : दुश्मन बहुत दिनों तक जीता रहकर पाप का प्रायश्चित भोगता रहे सो अच्छा , जितने ही ज्यादे दिनों तक वह पश्चात्ताप करे उतना ही अच्छा , उसके शरीर को जितना ही कष्ट भोगना पड़े उतना ही उत्तम वह अपने सच्चाई के साथ बदला देने वाले को प्रसन्न और हँसता हुआ देखकर जितना ही कुड़े , जितना ही शर्मिन्दा हो और जितना दुःख पा सके उतना ही शुभ समझना चाहिए । इसी विचार से मैं कहता हूँ कि भूतनाथ को मारो मत , बल्कि उसे जहाँ तक बने सताओ और दुःख दो , भला वह समझे तो सही कि मेरे किस कर्म का यह क्या फल मिल रहा है !!

मगर एक बात और विचारने के योग्य है , वह यह कि इस तरह पर दुश्मन से बदला लेना कुछ सहज काम नहीं है , इसके लिए बड़े ही उद्योग , बड़े ही साहस और बड़े ही धैर्य की जरूरत है और इसके लिए अपने चित्त के भाव को बहुत ही छिपाना पड़ता है , सो ये बातें मनुष्य से जल्दी निभती नहीं , इसी से कई विद्वानों का मत है कि ' दुश्मन को जहाँ तक हो सके जल्द मिटा देना चाहिए , नहीं तो किसी विचार से तरह दे देने पर कहीं ऐसा न हो कि मौका पाकर वह बलवान हो

जाय और तुम्हीं को अपने कब्जे में कर ले ' । यह सच है परन्तु यदि ईश्वर सहायक हो और मनुष्य धैर्य के साथ निर्वाह कर सके तो इस बदले से वह पहिला ही बदला अच्छा है जिसे मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ

भूतनाथ के साथ इस तरह का बर्ताव करने से एक फायदा यह भी हो सकता है कि सच्चे और झूठे मामले की जाँच भी हो जाएगी । कदाचित् उसने तुम्हारे पति को धोखे ही से मारा हो जान - बूझकर न मारा हो , जैसा कि उसका कथन है ! भूतनाथ ऐसा बुद्धिमन और धुरंधर यदि अपने कर्मों का प्रायश्चित पाकर सुधर जाय और अच्छी तरह राह पर लगे तो अच्छी ही बात है क्योंकि ऐसे वहादुर लोग दुनिया में कम पैदा होते हैं ।

इन्द्रदेव की आखिरी बात कला और विमला को पसन्द न आई मगर उन्होंने उनकी खातिर से यह जरूर कह दिया कि ' आपका कहना ठीक है ।

कला : खैर अब तो भूतनाथ को मालूम ही हो गया है कि जमना और सरस्वती जीती हैं , देखें हम लोगों के लिए क्या उद्योग करता है ।

इन्द्रदेव : कोई चिंता नहीं , मालूम हो गया तो होने दो , तुम होशियारी के साथ इस घाटी के अन्दर पड़ी रहो , किसी को यहाँ का रास्ता मत वताओ और जब कभी इस घाटी के बाहर जाओ तो उन अद्भुत हर्बों को जरूर अपने साथ रखो जो मैंने तुम लोगों को दिये हैं ।

बिमला : जो आज्ञा ।

कला : यहाँ का रास्ता अभी तक तो सिवाय प्रभाकर सिंह के और नए आदमी को मालूम नहीं हुआ , मगर इधर प्रभाकर सिंह जी की जुबानी यह जाना गया कि हम लोगों का हाल उन्होंने अपने दोस्त गुलाबसिंह को जरूर कह दिया है , मगर यहाँ का रास्ता , घाटी या इसका असल भेद भी नहीं बताया है ।

इन्द्रदेव : (कुछ सोचकर) प्रभाकर सिंह बुद्धिमान हैं , उन्होंने जो कुछ किया होगा उचित किया होगा , इसके विषय में तुम लोग चिंता मत करो । इसके अतिरिक्त पर मैं भी विश्वास करता हूँ । वह निःसंदेह उनका सच्चा हितैषी है और साथ ही इसके साहसी और बहादुर हैं । यदि गुलाबसिंह को वे इस घाटी के अन्दर भी ले आयें तो

कोई चिंता की बात नहीं है । (मुसकुराकर) और तुमने तो प्रभाकर सिंह को यहाँ का राज्य ही दे दिया , यहाँ के तिलिस्म की ताली ही दे दी है ।

विमला : सो आपकी आज्ञा से , मैंने अपनी तरफ से कुछ भी नहीं किया , परन्तु फिर भी आपकी पसन्द पाये विना वे कुछ कर न सकेंगे । हाँ , एक बात कहना तो मैं भूल ही गई ।

इन्द्रदेव : वह क्या ?

बिमला : भूतनाथ की घाटी का रास्ता मैंने बंद कर दिया है , अब भूतनाथ अपने स्थान पर नहीं पहुँच सकता और उसके साथी और दोस्त लोग उसी के अन्दर पड़े - पड़े सड़ा करेंगे ।

यह कहकर बिमला ने अपनी बेईमान लौंडी चंदो की मौत और भूतनाथ की घाटी का दरवाजा बंद कर देने तक का हाल पूरा - पूरा इन्द्रदेव से बयान किया ।

इन्द्रदेव : (कुछ सोच कर) मगर यह काम तो तुमने अच्छा नहीं किया ! तुम लोगों को मैंने इस घाटी में इसलिए स्थान दिया था कि अपने दुश्मन भूतनाथ का हाल - चाल बराबर जाना करोगी ? वह इस घाटी के पड़ोस में रहता है और यहाँ से उस घाटी का हाल बखूबी जाना जा सकता है , इसी सुबीते को देखकर मैंने तुम लोगों को यहाँ छोड़ा था , सो सुवीता तुमने अपने से बिगाड़ दिया । यद्यपि भूतनाथ के संगी - साथी इससे परेशान होकर मर जाएगे मगर इससे भूतनाथ का कुछ

नहीं बिगड़ेगा । वह इस स्थान को छोड़कर दूसरी जगह चला जाएगा , फिर तुम्हें उसके काम - काज की भी कुछ खबर नहीं मिला करेगी । तुम ही सोचो कि यदि वह तुम्हारे किसी साथी या दोस्त को गिरफ्तार करता तो जरूर इस घाटी में ले आता और तुम्हें उसकी खबर लग जाती , तब तुम उसको छुड़ाने का उद्योग करतीं , मगर अब क्या होगा ? अब तो अगर वह तुम्हारे किसी साथी को पकड़ेगा तो दूसरी जगह ले जाएगा और ऐसी अवस्था में तुम्हें कुछ भी पता न लगेगा ।

विमला : (सिर झुका कर) वेशक यह बात तो है ।

कला : निःसन्देह भूल हो गई ! इंदुमति : गहरी भूल हो गई । आखिर हम लोग औरत की जात , इतनी समझ कहाँ अब इस भूल का सुधार क्योंकर हो ? इन्द्रदेव : अब इस

भूल का सुधार होना जरा कठिन है , भूतनाथ जरूर चौकन्ना हो गया होगा और अब वह अपने लिए दूसरा स्थान मुकर्रर करेगा । (कुछ विचार कर) मगर खैर एक दफे में इसके लिए उद्योग जरूर करूँगा , कदाचित् काम निकल जाय ।

कला : क्या उद्योग कीजिएगा ?

इन्द्रदेव : सो अभी से कैसे कहूँ ? वहाँ जाने पर और मौका देखने पर जो कुछ बन जाय । यदि भूतनाथ इस घाटी में बना रहेगा तो बहुत काम निकलेगा ।

विमला : तो क्या आप अकेले भूतनाथ की तरफ या उस घाटी में इन्द्रदेव : हाँ , जा सकता हूँ क्योंकि वे लोग मेरा कुछ भी बिगाड़ सकते और न मुझे भूतनाथ की कुछ परवाह ही है , मगर मेरा इरादा है कि इस काम के लिए दलीपशाह अपने साथ लेता जाऊँ ।

इतना कहकर इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और उस कमरे में चले गए जो यहाँ नहाने - धोने के लिए मुकर्रर था ।

छठवा व्यान।

दिन तीन पहर से ज्यादे बढ़ चुका है । इस समय हम भूतनाथ को एक घने जंगल में अपने तीन साथियों के साथ पेड़ के

नीचे बैठे हुए देखते हैं । यह जंगल उस घाटी से बहुत दूर न था जिसमें भूतनाथ रहता था और जिसका रास्ता विमला ने

बंद कर दिया था ।

भूतनाथ : (अपने सथियों से) मुझे इस बात का बड़ा ही दुःख है कि मेरे साथी लोग इस घाटी में कैदियों की तरह बंद

होकर दुःख भोग रहे हैं । यद्यपि वहाँ पानी की कमी नहीं है और खाने के लिए भी इतना सामान है कि लोग महीनों तक

निर्वाह कर सकें , मगर फिर कब तक ! आखिर जब यह सामान चुक जाएगा तो फिर वे लोग क्या करेंगे ?

एक : ठीक है मगर साथ ही इसके यह खयाल भी तो होता है कि शायद हमारे दोस्तों को भी तकलीफ दी गई हो !

भूतनाथ : हो सकता है लेकिन इस विचार पर मैं विशेष भरोसा नहीं करता , क्योंकि दरवाजा बंद कर देना सिर्फ एक

जानकार आदमी का काम है मगर हमारे साथियों से लड़ कर वीस या पच्चीस आदमी पार नहीं पा सकते ।

दूसरा : है तो ऐसी ही बात , इसी से आशा होती है कि अभी तक वे सब जीते होंगे ,

बचाना चाहिए ।

भूतनाथ : मैं इसी फिक्र में पड़ा हूँ और सोच रहा हूँ कि उनको बचाने के

एक : पहिले तो उसका पता लगाना चाहिए जिसने दरवाजा बंद

है । क्या इंतजाम किया जाय ।

भूतनाथ : हाँ और इस विषय में मुझे उन्हीं औरतों पर है , जो इस पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं , जहाँ मैं कैद

होकर गया था , और जहाँ सुनने में आया के जमना सरस्वती अभी तक जीती - जागती हैं और मुझसे दयाराम का

बदला लेने के लिए उद्योग कर रही हैं । वास्तव घाटी बड़ी विचित्र है । निःसन्देह वह तिलिस्म है और अगर मेरा

खयाल ठीक है तो वहाँ की रहने वालियाँ आस - पड़ोस की भी घाटियों का हाल जानती होंगी , बल्कि मेरी इस घाटी से भी

संबंध रखती हों तो ताज्जुब नहीं !

तीसरा : आपका विचार बहुत ठीक है । अगर वास्तव में जमना और सरस्वती जीती हैं और उसी घाटी में रहती है तो

निःसन्देह यह काम उन्हीं का है और उन्हीं लोगों में से किसी को गिरफ्तार करने से हमारा काम निकल सकता है । भूतनाथ : बेशक , और मैं उन लोगों में से किसी को जरूर गिरफ्तार करूँगा ।

एक : आप जब गिरफ्तार होकर वहाँ गए तो वहाँ की अवस्था देखकर और उन लोगों की बातें सुनकर जमना व

सरस्वती के विषय में आपने क्या विश्वास किया ?

भूतनाथ : मुझे विश्वास होता है कि जरूर वे दोनों जीती हैं ।

दूसरा : तो यह घाटी उन लोगों को किसने रहने के लिए दी और इन लोगों का मददगार कौन है ?

जिस तरह हो सके उन्हें

भूतनाथ : यही तो एक विचार करने की बात है । मेरे खयाल से अगर इन्द्रदेव उन दोनों के पक्षपाती बने हों तो कोई

ताज्जुब की बात नहीं क्योंकि दयाराम जी मेरे हाथ से मारे गये इस बात को दुनिया में मेरे सिवाय सिर्फ दो ही आदमी

और जानते हैं , एक तो दलीपशाह दूसरा शम्भू । शम्भू तो इन्द्रदेव का शागिर्द ही ठहरा और दलीपशाह इन्द्रदेव का दिली

दोस्त ! यद्यपि दलीपशाह मेरा नातेदार है और उसने इस बात को छिपा रखने के लिए मुझसे कसम भी खाई है , मगर

अव मालूम होता है कि उसने अपनी कसम तोड़ दी ओर इस भेद को खोल दिया । इस बात का सबसे बड़ा सबूत एक

यह है कि जब में कैद होकर उस घाटी में गया था तो एक औरत ने जोर देकर मुझसे बयान किया था कि तुमने दयाराम को मारा है और इसके सबूत में पेश करने के लिए दलीपशाह और शम्भू अभी तक जीते हैं । अस्तु मेरा यह विचार पक्का है कि निःसन्देह शम्भू और दलीपशाह ने भेद खोल दिया और सबसे पहिले उन्होंने जरूर अपने दोस्त इन्द्रदेव से वह हाल बयान किया होगा । ऐसी अवस्था में ताज्जुब नहीं कि इन्द्रदेव ही इन दोनों के पक्षपाती बने हों । एक : तो इन्द्रदेव को क्या आपसे कुछ दुश्मनी है ?

भूतनाथ : नहीं इस बात का तो मुझे गुमान भी नहीं होता ।

एक : और यदि इन्द्रदेव चाहे तो क्या आपको कुछ सता नहीं सकते ? या आपको गिरफ्तार करके सजा नहीं दे सकते ?

भूतनाथ : बेशक इन्द्रदेव जो कुछ चाहें कर नहीं सकते हैं , उनकी ताकत का कोई अंदाजा नहीं कर सकता , वे एक बहुत बड़े तिलिस्म के राजा समझे जाते हैं , मुझसे वे बहुत ज्यादे जबर्दस्त हैं और ऐयारी में भी मैं उन्हें अपने से बढ़कर मानता हूँ । यद्यपि एक विषय में अपने को उनका कसूरवार मानता हूँ मगर फिर भी कह सकता हूँ कि वे मेरे दोस्त हैं ।

दूसरा : तो आप ऐसे दोस्त पर इस तरह का शक क्यों करते हैं ?

भूतनाथ : दिल ही तो है , खयाल ही तो है ! जब आदमी किसी मुसीवत में गिरफ्तार होता है तो उसके सोच - विचार और शक का कोई हिसाब नहीं रहता । मै । इस समय मुसीबत की जिंदगी बिता मुझसे दो - तीन काम बहुत बुरे हो गये हैं जिनमें एक दयाराम वाली वारदात है । इसमें मुझे बहुत ही बड़ा धोखा

मैंने

कुछ जान - बूझकर अपने दोस्त को नहीं मारा , मगर खैर वह जो कुछ होना था हो गया , अव क्या मैं दुश्मन के हाथ सहज ही में सौंप दूंगा ! यद्यपि इन्द्रदेव को मैं अद्‌भुत व्यक्ति मानता हूँ मगर मैं अपने कुछ समझता हूँ , मुझे अपनी ऐयारी पर भी घमंड है , इसलिए मैं इन्द्रदेव से नहीं डरता और तुम लोगों से हूँ कि दलीपशाह इन्द्रदेव का दोस्त है तो क्या हुआ मगर मैं उसे मारे बिना कभी न छोड़ूंगा , उस कमबख्त अपना बदला जरूर लूँगा । केवल उसी को नहीं मारूँगा बल्कि उसके खानदान में किसी को जीता न रहने दूंगा इस बात को जरा भी न सोचूँगा कि वह मेरा नातेदार है , क्योंकि खुद उसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया और मेरी बर्बादी के पीछे लग गया । मुझे यह खबर लगी कि दलीपशाह ने जमानिया के दारोगा से भी दोस्ती पैदा कर ली है और उसकी तरफ से भी मुझे सताने के लिए तैयार है ।

एक : ऐसी अवस्था में जरूर का नाम - निशान मिटा देना चाहिए क्योंकि जब तक वह जीता रहेगा आप बेफिक्र नहीं हो सकते , साथ ही इसके श शम्भू को भी मार डालना चाहिए । उन दोनों के मारे जाने पर आप इन्द्रदेव को अच्छी तरह समझा लेंगे और विश्वास दिला देंगे कि आपके हाथों से दयाराम नहीं मारे गये और अगर दलीपशाह और शम्भू ने उनसे ऐसा कहा तो यह बात बिलकुल ही झूठ है ।

भूतनाथ : ठीक है , मैं जरूर ऐसा ही करूँगा , लेकिन इतने पर भी काम न चलेगा और यह बात मशहूर ही होती दिखाई देगी तो लाचार होकर मुझे और भी अनर्थ करना पड़ेगा , नाता और रिश्ता भूल जाना पड़ेगा , दोस्ती और मुरौवत को तिलांजली दे देनी पड़ेगी , और जिन - जिन को यह बात मालूम हो गई है , उन सभी को इस दुनिया से उठा देना पड़ेगा ।

एक : जमना , सरस्वती , इंदुमति और प्रभाकर सिंह को भी ?

भूतनाथ : बेशक , बल्कि गुलाबसिंह को भी ।

दूसरा : यह बड़े कड़े कलेजे का काम होगा !

भूतनाथ : मुझसे बढ़कर कठिन और बड़ा कलेजा किसका होगा जिसने लड़के - लड़की और स्त्री को भी त्याग दिया है ? मगर अफसोस , इस समय मैं पाप पर पाप करने के लिए मजबूर हो रहा हूँ ।

एक : खैर यह बताइए कि सबसे पहले कौन काम किया जाएगा और इस समय आप हम लोगों को क्या हुक्म देते हैं ?

भूतनाथ : सबसे पहले मैं अपने दोस्तों को छुड़ाऊँगा और इसके लिए उस पड़ोस की घाटी में रहने वाली औरतों में से किसी को गिरफ्तार करना चाहिए । खैर अब बताता हूँ कि तुम लोगों को क्या करना चाहिए । (चोंककर) देखो तो वह साधु कौन है ! ऐसा गुमान होता है कि इसे मैंने कभी देखा है । यह तो हमारे उसी खोह की तरफ जा रहा है । पहिले इसी की सुध लेनी चाहिए फिर वताएँगे कि तुम लोगों को क्या करना चाहिए ।

यह साधु जिस पर भूतनाथ की निगाह पड़ी बहुत ही बुड्ढा और तपस्वती जान पड़ता था । इसके सर और दाढ़ी के बाल वहुत ही घने और लंबे थे । लंवा कद , वृद्ध होने पर भी गठीला बदन ओर चेहरा रोआबदार मालूम होता था । कमर में क्या पहिरे हुए था इसका पता नहीं लगता था क्योंकि इसके बदन में बहुत लंबा गेरुए रंग का ढीला कुरता था जो घुटने से एक वित्ता नीचे तक पहुंच रहा था , मगर साथ ही इसके यह जान पड़ता था कि उसने अपने तमाम बदन में हलकी विभूति लगाई हुई है । इसके अतिरिक्त उसके पास और किसी तरह का सामान दिखाई न देता था अर्थात् कोई माला या सुमिरनी तक इसके पास न थी ।

भूतनाथ अपने साथियों को इसी जगह रहने का हुक्म देकर धीरे - धीरे उस साधु के पीछे रवाना हुआ मगर इस लापरवाह साधु को इस बात का कुछ भी खयाल न था कि उसके पीछे कोई आ रहा है ।

थोड़ी ही देर में वह साधु उस खोह के मुहाने पर जा पहुंचा जिसमें भूतनाथ रहता था । जब खोह के अन्दर घुसने लगा तव भूतनाथ भी लपककर उसके पास पहुँचा ।

साधु : (भूतनाथ को देखकर) तुम कौन हो ?

भूतनाथ : जी मेरा नाम गदाधरसिंह ऐयार है ।

साधु : ठीक है , मैं तुम्हारा नाम सुन चुका हूँ , बहुत अच्छा हुआ कि तुमसे मुलाकात हो गई , मालूम होता है कि तुम्हीं ने इस घाटी में दखल जमा रखा है और जो लोग इसके अन्दर हैं वे सब तुम्हारे ही संगी - साथी हैं ?

भूतनाथ : जी हाँ , बात ऐसी ही है

साधु : मैं इसी फिक्र में पड़ा हुआ था और सोच रहा था कि इस घाटी में किसने अपना दखल जमा लिया है । शायद तुम्हें यह बात मालूम नहीं है , खैर अब समझ लो कि इस घाटी में पचास वर्ष से रहता हूँ और यह यहाँ का हाल जितना मैं जानता हूँ किसी दूसरे को मालूम नहीं है । इधर कई वर्ष हुए हैं कि इस घाटी को छोड़कर तीर्थयात्रा के लिए चला गया था । मेरा विचार था कि फिर लौट कर यहाँ न आऊँ और इसीलिए इसका दरवाजा खुला छोड़ गया था , पर ईश्वर की प्रेरणा से मैं घूमता - फिरता फिर यहाँ चला आया और जब इस घाटी के अन्दर गया तो देखा कि इसमें किसी दूसरे की अमलदारी हो रही है । अस्तु मैं इसका दरवाजा बंद करता हुआ बाहर निकल आया और फिक्र में पड़ा कि इसके मालिक का पता लगाना चाहिए , क्योंकि इसके अन्दर जितने आदमी दिखाई पड़े उनमें से कोई भी ऐसा नजर न आया जिसे मैं यहाँ का मालिक समझू । इसीलिए मैं इसके अन्दर किसी से मिला नहीं और न किसी ने मुझे देखा । खैर यह जान कर मुझे प्रसन्नता होगी कि तुम यहाँ रहते हो , मैं बहुत ही प्रसन्न होता यदि तुम्हारी गृहस्थी या तुम्हारी बाल - बच्चे भी यहाँ दिखाई देते । मगर खैर जो कुछ है वही गनीमत है । मैं तुम्हें मुहब्बत की निगाह से देखता हूँ क्योंकि तुमसे मुझे एक गहरा संबंध है ।

भूतनाथ : (आश्चर्य से) वह कौन - सा संबंध है ?

साधु : सो कहने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि भूलता हूँ जो तुम्हें संबंध रखने की बात कहता हूँ । जो साधु है और जिसने दुनिया से संबंध छोड़ दिया उसे फिर

किसी से संबंध रखने की जरूरत ही क्या है , मगर खैर फिर कभी जब तुमसे

मिलूँगा तव बताऊँगा कि मैं कौन हूँ , उस समय तुम मुझे मुहब्बत की निगाह से देखोगे और समझ जाओगे कि मैं तुम पर क्यों कृपा करता हूँ अस्तु जाने दो । अच्छा तुम खुशी से इस घाटी में रहो , मैं इसका दरवाजा खोल देता हूँ बल्कि यह भी वताए देता हूँ कि किस तरह यह दरवाजा खुलता और बंद होता है ।

भूतनाथ : (प्रसन्नता से) ईश्वर ही ने मुझे आपसे मिलाया ! मैं बड़े ही तरवुद में पड़ा हुआ था । अपने दोस्तों की तरफ से मुझे बड़ी ही फिक्र थी जो इस घाटी के अन्दर पड़ा हुआ था । अपने दोस्तों की तरफ से मुझे बड़ी ही फिक्र थी जो इस घाटी के अन्दर इस समय कैद हो रहे हैं । मैं समझ रहा था कि मेरा कोई दुश्मन यहाँ आ पहुँचा जो इस घाटी का हाल अच्छी तरह जानता है और उसी ने मेरे साथ ऐसा बर्ताव किया है , मगर अब मेरा तरबुद जाता रहा और यह जान कर प्रसन्नता हुई कि इसके मालिक आप हैं , मगर आप मुझे बेहतर खुटके में डाल रहे हैं जो अपने पूरा परिचय नहीं देते । में क्योंकर समयूँ कि आप मेरे बड़े और सरपरस्त हैं ?

साधु : (मुसकराकर) खैर तुम मुझे अपना सरपरस्त या मददगार न भी समझोगे तो इसमें मेरी या तुम्हारी किसी भी हानि नहीं है परन्तु फिर भी मैं वादा करता हूँ कि बहुत जल्द एक दफे पुनः तुमसे मिलूंगा और तव अपना ठीक - ठीक परिचय तुमको दूंगा , इस समय तुम मेरी फिक्र न करो और अपने दुश्मनों से बेफिक्र होकर इस घाटी में रहो । यहाँ थोड़ी - सी दौलत भी है जिसका पता तुम्हें मालूम न होगा , चलो वह भी मैं तुम्हें देता हूँ , जो कि तुम्हारे काम आवेगी , अब क्योंकि मुझे दौलत की कुछ जरूरत नहीं रही और यदि आवश्यकता पड़े भी तो मुझे किसी तरह की कमी नहीं है ।

भूतनाथ : (प्रसन्न होकर) केवल धन्यवाद देकर मैं आपसे उऋण नहीं हो सकता आप मुझ पर बड़ी ही कृपा कर रहे हैं ।

। विलंब न करो और शीघ्रता से चलो , जो कुछ

साधु : इसे कृपा नहीं कहते , यह केवल प्रेम के कारण है , अस्तु अब मुझे करना है उसे जल्द निपटा करके बद्रिकाश्रम की यात्रा करूँगा

भूतनाथ के दिल में इस समय तरह - तरह के विचार उठ वह न मालूम किन - किन बातों को सोच रहा था मगर प्रकट में यही जान पड़ता कि वह बड़ी होशियारी के सचेत बना हुआ खुशी - खुशी साधु के साथ सुरंग के अन्दर जा रहा है । जब उस चौमुहानी पर पहुँचा जिसका कई दफे हो चुका है तो भूतनाथ ने साधु से पूछा

भूतनाथ : ये बाकी के दोनों रास्ते किधर को गये हैं और उधर क्या है ?

साधु : इस घाटी के साथ ही और भी दो घाटियाँ हैं और उन्हीं में जाने के लिये ये दोनों रास्ते हैं मगर उन्हें मैंने बहुत ही अच्छी तरह से बंद कर दिया है क्योंकि उन घाटियों में रहने वालों के आने - जाने के लिए और भी कई रास्ते मौजूद हैं , अब इन रास्तों में से कोई आ - जा नहीं सकता , तुम इस तरफ से बिलकुल बेफिक्र रहो । मगर इस राह से उस तरफ जाने का उद्योग कभी न करना ।

भूतनाथ : जी नहीं , मैं तो उस तरफ जाने का खयाल कभी करता ही नहीं परन्तु आज उस तरफ वाली घाटी में बहुत से आदमी आकर बस गये हैं और वे सब मेरे साथ दुश्मनी करते हैं बस इसीलिए जरा खयाल होता है ।

साधु : (लापरवाही के साथ) खैर अगर उस घाटी में आकर कोई रहता भी होगा तो यहाँ अर्थात् इस घाटी में आकर तुम्हारे साध कोई बुरा बर्ताव नहीं कर सकता । यों तो दुनिया में सभी जगह दोस्त और दुश्मन रहा करते हैं , उसका बंदोबस्त दूसरे ढंग पर कर सकते हो ।

भूतनाथ : जैसी मर्जी आपकी ।

साधु : हाँ बेहतर वही है कि तुम बेफिक्री के साथ यहाँ रहकर अपने दुश्मनों का प्रबंध करो और मेरा इंतजार करो , मैं बहुत जल्द इसी घाटी में आकर तुमसे मिलूँगा । उसी समय मैं तुमको कुछ और भी लाभदायक बस्तुएँ दूंगा और कुछ उपदेश भी करूँगा ।

इतना कहकर साधु आगे की तरफ बढ़े और बहुत जल्द उस दरवाजे के पास जा पहुंचे जिसे विमला ने बंद कर दिया था । जिस तरह से विमला ने उस दरवाजे को बंद किया था उसी तरह साधु ने उसे खोला और खोलने तथा बंद करने का ढंग भी भूतनाथ को बता दिया ।

अब भूतनाथ सहज ही में साधु के साथ घाटी के अन्दर जा पहुँचा और अपने साथियों से मिलकर बहुत प्रसन्न हुआ । वातचीत करने पर मालूम हुआ कि उसके साथी लोगों ने कई दर्फ इस घाटी के बाहर निकलने का उद्योग किया था मगर रास्ता बंद होने के कारण बाहर न जा सके और इस वजह से वे लोग बहुत घबरा रहे थे ।

भूतनाथ ने अपने सब साथियों से बाबाजी की मेहरवानी का हाल बयान किया और उन सभों के महात्मा के परों पर गिराया ।

भूतनाथ यद्यपि जानता था कि साधु महाशय मुझ पर बड़ी कृपा कर रहे हैं और उन्हें मुझसे किसी तरह का फायदा भी नजर नहीं आता , तथापि वह अभी तक उन पर अच्छी तरह भरोसा करने का साहस नहीं रखता था , यह बात चाहे ऐयारी नियम के अनुसार कहिए चाहे भूतनाथ की प्रकृति के कारण समझिए , हाँ , इतना जरूर था कि बाबाजी की मेहरबानियों से भूतनाथ दवा जाता था और सोचता था कि यदि इन्होंने कोई खजाना मुझे दे दिया जैसा कि कह चुके हैं , तो मुझे मजबूर होकर इन पर भरोसा करना पड़ेगा और समझना पड़ेगा कि ये वास्तव में मुझसे स्नेह रखते हैं और मेरे कोई अपने ही हैं ।

साधु महाशय की आज्ञानुसार भूतनाथ ने उन्हें वे सब गुफाएँ दिखाई जिनमें वह अपने साथियों के साथ रहता था और बताया कि इस ढंग पर इस स्थान को हम लोग बरतते हैं , इसके महाशय उसे अपने साथ लिये पूरब तरफ की चट्टान पर चले गये जिधर छोटी - बड़ी कई गुफाएँ थीं ।

साधु : देखो भूतनाथ , मैं जब यहाँ रहता था इसी तरफ गुफाओं में गुजारा करता था और इस पड़ोस वाली घाटी में जिसे तुम अपने दुश्मनों का स्थान बता रहे हो , रहता था जिसे तुम पहिचानते होगे ।

भूतनाथ : जी हाँ , मैं खूब जानता हूँ ।

साधु : उन दिनों इन्द्रदेव का दिमाग बहुत ही बड़ा - चढ़ा था और वह मुझसे दुश्मनी रखता था , क्योंकि जिस तरह वह एक तिलिस्म का दारोगा है उसी तरह मैं भी एक तिलिस्म का दारोगा हूँ , अस्तु वह चाहता था कि मेरे कब्जे में जो तिलिस्म है उसका भेद जान ले और उस पर कब्जा कर ले , मगर वह कुछ भी न कर सका और कई

साल तक यहाँ रहने पर भी वह यह न जान सका कि फलाना ब्रह्मचारी इस पड़ोस वाली घाटी में रहता है । इस समय मैं तुमसे ज्यादा न कहूँगा और न ज्यादे देर तक रहने की मुझे फुरसत ही है , तुम्हें बड़ा ही ताज्जुवह होगा जब मैं अपना परिचय तुम्हें दूंगा और उस समय तुम भी मुझसे उतनी ही मुहब्बत करोगे जितना इस समय मैं तुमसे करता हूँ । भूतनाथ : ठीक है , मैं परिचय देने के लिये इस समय जिद्द भी नहीं कर सकता क्योंकि आप बड़े हैं । आपकी आज्ञानुसार मुझे चलना ही चाहिए , अच्छा यह तो वताएँ कि वह तिलिस्म जिसके आप दारोगा हैं अभी तक आपके कब्जे में है या नहीं ?

साधु : हाँ अभी तक वह तिलिस्म मेरे ही कब्जे में है ।

भूतनाथ : वह किस स्थान में है ?

साधु : इसी घाटी में वह तिलिस्म है , मैं अगली दफे जव यहाँ आकर तुमसे मिलूँगा तो उसका कुछ हाल कहूँगा और अगर तुम इस घाटी में अपना कब्जा बनाये रहोगे और तुम्हारा चाल चलन अच्छी देखूगा तो एक दिन तुमको उस तिलिस्म का दारोगा भी बना दूंगा क्योंकि अब मैं बहुत बुड्ढा हो गया हूँ और तिलिस्म के नियमानुसार अपने वाद के

लिए किसी - न - किसी को दारोगा बना देना बहुत जरूरी है ।

साधु महाशय की इस आखिरी बात को सुनकर भूतनाथ बहत ही प्रसन्न हुआ । वह जानता था कि तिलिस्म का दारोगा

बनना कोई मामूली बात नहीं है । उसके कब्जे में वेअंदाज दौतल रहती है और उसकी ताकत तिलिस्मी सामान की

बदौलत मनुष्य की ताकत से कहीं बढ़ - चढ़कर रहती है । उसी समय भूतनाथ का खयाल एक दर्फ इन्द्रदेव की तरफ गया

और उसने मन में कहा कि देखो तिलिस्मी दारोगा होने के कारण ही इन्द्रदेव कैसे चैन और आराम के साथ रहता है ,

दुश्मनों का उसे जरा भी डर नहीं है और वास्तव में उसके दुश्मन उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते । मगर अफसोस !

भूतनाथ ने इस बात पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया कि इन्द्रदेव कैसा नेक , ईमानदार और साधु आदमी है तथा उसमें

सहनशीलता और क्षमा - शक्ति कितनी भरी हुई है , तिस पर भी वह दुश्मनों के हाथ कैसा सताया गया ।

भूतनाथ : (बहुत नरमी के साथ) तो आप पुनः कब तक लौटकर यहाँ आयेंगे ?

साधु : इस विषय में जो कुछ मेरे विचार हैं उसे प्रकट करना अभी मैं उचित नहीं समझता ।

भूतनाथ : जैसी मर्जी आपकी । आजकल मेरे वार्षिक दशा बहुत ही खराब हो रही है , रुपये - पैसे की तरफ से मैं बहुत ही

तंग हो रहा हूँ ।

साधु : तो इस समय जो खजाना मैं तुम्हें दे रहा हूँ वह तुम्हारे लिए कम नहीं है ,

करोगे तो वर्षों तक अमीर बने रहोगे और राज्य - सुख भोगोगे , आओ मेरे ।

इतना कहकर साधु एक गुफा की तरफ बढ़ा और भूतनाथ खुशी - खुशी उसके पीछे रवाना हुआ ।

तुम उसे उचित ढंग पर खर्च

चले आओ ।

खोह के अन्दर बहुत अँधकार था मगर भूतनाथ बेधड़क

कदम चला गया तो साधु ने कहा , " लड़के देख , मैं

मगर तुझे इस काम में तकलीफ होगी क्योंकि तेरे

ऐयारी के बटुए में से सामान निकाल कर रोशन

होशियार आदमी को रोशनी जरूरत न

पीछे - पीछे दूर तक चला गया । जब लगभग दो - तीन सौ

के अन्दर अंदाज से चला आकर सब काम कर सकता हूँ

यह पहिला मौका है , इसलिये मैं उचित समझता हूँ , कि तू अपने

लें और अच्छी तरह से सब कुछ देख लें , फिर दूसरी दफे तेरे ऐसे

भूतनाथ ने ऐसा ही किया अर्थात् करके अच्छी तरह से देखता हुआ साधु के पीछे - पीछे जाने लगा और ऐसा कहने

से साधु पर उसका विश्वास भी ज्यादे हो गया ।

करीब - करीब पाँच सौ कदम चले जाने के बाद रास्ता बंद हो गया और साधु महाशय ने खड़े होकर भूतनाथ से कहा ,

" बस आगे जाने के लिये रास्ता नहीं है , देख वह बगल वाले में कैसा अच्छा नाग बना हुआ है जिसे देखकर डर मालूम

होता है । यह वास्तव में लोहे का है । इसको पकड़ कर जब तू अपनी तरफ बैंचेगा तो यहाँ का दरवाजा खुल जाएगा ,

मगर इस बात से होशियार रहियो कि इसके सिर अथवा फन के ऊपर कभी हाथ न लगने पावे नहीं तो धोखा

खाएगा । "

भूतनाथ : जो आज्ञा , पहिले आप अभी ही इसे खै , जिससे मैं अच्छी तरह समझ लूँ ।

साधु : (जोर से हँसकर) अभी तक तुझको मुझ पर भरोसा नहीं होता ! मगर खैर कोई चिंता नहीं , ऐयारों के लिये यह

ऐसा अनुचित नहीं है ।

इतना कहकर साधु ने साँप की दुम पकड़ ली और अपनी पूरी ताकत के साथ बैंचा , दो हाथ के लगभग वह दुम

खिंचकर आले के बाहर निकल आई , इसके साथ ही बगल में एक छोटा - सा दरवाजा खुला हुआ दिखाई दिया ।

भूतनाथ को लिए हुए वह साधु उसके अन्दर घुस गया और उसी समय वह दरवाजा आप - से - आप बन्द हो गया । उस

समय साधु ने भूतनाथ से कहा , " देख गदाधरसिंह इधर भी उसी तरह का नाग बना हुआ है , बाहर निकलते समय इधर से भी उसी तरह दरवाजा खोलना पड़ेगा । "

भूतनाथ ने उसे अच्छी तरह देखा और फिर उस कोठरी की तरफ निगाह दोड़ाई जिसमें इस समय वह मौजूद था । उसने देखा कि वहाँ चाँदी के कितने ही बड़े - बड़े देग या हंडे रखे हुए हैं कि जिनके मुँह सोने के ढक्कनों से ढके हुए हैं , भूतनाथ ने साधु की आज्ञा पाकर उन हंडों का मुँह खोला और देखा कि उनमें अशर्फियाँ भरी हुई हैं ।

इस समय भूतनाथ की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और उसने सोचा कि निःसन्देह ऐसे कई खजाने इस घाटी में होंगे मगर उनका पता जानने के लिए साधु से इस समय जिद करना ठीक न होगा , अवश्य यह पुनः यहाँ आवेंगे और मुझ पर कृपा करेंगे । लौटते समय आज्ञा पाकर भूतनाथ ने अपने हाथ से वह दरवाजा बंद किया और साधु के पीछे - पीछे चलकर खोह के बाहर निकल आया । उस समय साधु ने कहा , " गदाधरसिंह , अब मैं जाता हूँ , जव लौट कर पुनः यहाँ आऊँगा तो ऐसे - ऐसे कई खजाने तुझे दूंगा और तिलिस्म का दारोगा भी बनाऊँगा मगर में तुझे समझाए जाता हूँ कि इन्द्रदेव के साथ , दुश्मनी का ध्यान भी कभी अपने दिल में न लाइयो नहीं तो बर्बाद हो जाएगा । और

भोगेगा तुझसे बहुत ज्यादा जबर्दस्त है । अच्छा अब मैं जाता हूँ , मेरे साथ आने की कोई जरूरत नहीं है । "

।वह

इतना कहकर साधु महाशय रवाना हो गये और आश्चर्य में भरे हुए भूतनाथ को उसी जगह छोड़ गये ।

भूतनाथ बड़ी देर तक खड़ा - खड़ा इस बात को सोचता रहा कि यह साधु महाशय कौन हैं और मझ पर इतनी कृपा करने का सबब क्या है ? सोचते - साचते उसका खयाल देवदत्त ब्रह्मचारी की तरफ गया जिन्होंने उसे पाला था और ऐयारी सिखाकर इस लायक बना दिया था कि किसी राजा या रईस के यहाँ इज्जत और हुर्मत पैदा करे ।

भूतनाथ सोचने लगा कि ताज्जुब नहीं यदि यह मेरे गुरु न देवदत्त ब्रह्मचारी हों जो बहुत दिनों से लापता हो रहे हैं । मुझे रणधीरसिंह जी के यहाँ नौकर रखा देने के बाद यह कर चले गये थे कि " अब में योगाभ्यास करने के लिए उत्तराखंड चला जाऊँगा , तुम मुझसे मिलने के लिये मत करना । " या संभव है कि उनके भाई ज्ञानदत्त ब्रह्मचारी हों जिनकी प्राय गुरुजी तारीफ किया करते थे और थे कि वे एक अद्‌भुत तिलिस्म के दारोगा भी हैं , जहाँ तक मेरा खयाल है उन्हीं दोनों में से कोई - न - कोई । ताज्जुब नहीं कि मैं कुछ दिनों में तिलिस्म का दारोगा बन जाऊँ । अब मैं इस घाटी को कदापि न छोड़ूंगा और | कि किस्मत क्या दिखाती है । अब प्रभाकर सिंह को भी लाकर इसी घाटी में रखना चाहिए । मगर वास्तव में । आजकल मैं बड़े संकट में पड़ गया हूँ । मैं अपने मित्र इन्द्रदेव पर किस तरह सरस्वती बिना किसी मदद के मुझसे दुश्मनी करने के लिए तैयार हो रही हैं । खैर जो कुछ होगा देखा जाएगा अब प्रभाकर सिंह को शीघ्र इस घाटी में ले लाना चाहिए और उसके बाद इन्द्रदेव से मिलना चाहिए । उनसे मुलाकात होने पर बहुत - सी बातों का पता लग जाएगा , मैं इन्द्रदेव के सिवाय और किसी से डरने वाला भी नहीं हूँ । इत्यादि तरह - तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने दोस्तों और साथियों के पास चला गया और उनसे अपने कर्त्तव्य के विषय में बातचीत करने लगा , मगर साधु महाशय की कृपा से खजाना मिलने का हाल उसने उन लोगों से नहीं कहा ।

सातवा व्यान।

जमानिया वाला दलीपशाह का मकान बहुत ही सुन्दर और अमीराना ढंग पर गुजारा करने लायक बना हुआ है । उसमें

जनाना और मर्दाना किला इस ढंग से बना है कि भीतर से दरवाजा खोलकर जब चाहे एक कर ले और अगर भीतर

रास्ता बंद कर दिया जाय तो एक का दूसरे से कुछ भी संबंध न मालूम पड़े , यहाँ तक कि अगर मर्दाने मकान में कोई

मेहमान आकर टिके तो उसे यकायक इस बात का पता भी न लगे कि जनाने लोग कहाँ रहते हैं और उस तरफ

आने - जाने के लिये इस तरफ से कोई रास्ता भी है या नहीं ।

इस मकान के सामने एक छोटा - सा सुन्दर नजरबाग बना हुआ था और उसके सामने अर्थात् पूरब तरफ ऊँची दीवार और

फाटक था । मकान के बाईं तरफ लंबा खपरैल था जिसका एक सिरा तो मकान के साथ सटा हुआ था और दूसरा सिरा

सामने अर्थात् फाटक वाली दीवार के साथ । उसके बीच में छोटे - बड़े कई दालान और कोठरियाँ बनी हुई थीं जिनमें

दलीपशाह के खिदमतगार और सिपाही लोग रहा करते थे । इसी तरह मकान के दाहिनी तरफ इस सिरे से लेकर उस

सिरे तक कुछ ऐसी इमारतें बनी हुई थीं जिनमें कई गृहस्थियों का गुजारा हो सकता था और उनमें दलीपशाह के शागिर्द

ऐयार लोग रहा करते थे । इस ढंग पर वह नजरबाग बीच में अर्थात् चारों तरफ से घिरा हुआ था । सरसरी तौर पर

खयाल करने से भी साफ मालूम होता था कि दलीपशाह बहुत ही अमीराना ढंग पर रह जिंदगी के दिन बिता रहा

है ।

भूतनाथ - दूसरा भाग

इस इमारत के बगल ही में दलीपशाह का एक बहुत बड़ा खुला बाग था

इसी तरह के और भी बहुत किस्म के दरख्त लगे हुए थे ।

दलीपशाह अपने मर्दाने मकान में एक सुन्दर सजे हुए कमरे

दोस्त इन्द्रदेव से बातचीत कर रहे हैं । इस जगह से सामने

रहा है । आज इन्द्रदेव इनसे मिलने के लिये आये हुए

सलाह और बातचीत कर रहे हैं ।

दालान में चौकी के ऊपर फर्श पर बैठे हुए अपने

नजरबाग और उसके बाद फाटक अच्छी तरह दिखाई दे

इस समय इनके पास बैठे हुए कई जरूरी मामलों पर

दलीपशाह : भाई साहब , गदाधरसिंह आपका दोस्त है इसलिए मैं लाचार होकर उसे अपना दोस्त मानता हूँ , मगर सच तो

यों है कि उसके साथ रिश्तेदारी होने पर भी मैं उसे दिल से पसन्द नहीं करता ।

इन्द्रदेव : हाँ , उसका चाल - चलन तो कुछ खराब जरूर है मगर आदमी बड़े ही जीवट का है और ऐयारी का ढंग बहुत

अच्छा जानता है ।

दलीपशाह : इस बात को मैं जरूर मानता हूँ बल्कि जोर देकर कह सकता हूँ कि अगर वह ईमानदारी के साथ काम

करता हुआ रणधीरसिंह जी के यहाँ कायदे से बना रहता तो एक दिन ऐयारों का सिरताज गिना जाता ।

इन्द्रदेव : ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह का साथ छोड़ तो नहीं दिया !

दलीपशाह : अब इसे छोड़ना नहीं तो क्या कहते हैं ? दो - दो महीने तक गायब रहना और मालिक को मुँह तक नहीं

दिखाना , क्या इसी को नौकरी कहते हैं ? आप ही कहिए कि अबकी के महीने के बाद आया था ? सिर्फ दो दिन रह कर

चला गया । उससे तो उसकी स्त्री अच्छी है जो अपने मालिक अर्थात् रणधीरसिंह की स्त्री का साथ नहीं छोड़ती ।

इन्द्रदेव : ठीक है मगर उसने रणधीरसिंह के यहाँ अपने बदले में अपना शागिर्द रख दिया है , इसके अतिरिक्त जब

रणधीरसिंह जी को उसकी जरूरत पड़ती है तो उसी शागिर्द की मार्फत उसे बुलवा भेजते हैं । अभी हाल ही में देखिए

उसने कैसी बहादुरी के काम किये ।

दलीपशाह : अजी यह तो मैं खुद कह रहा हूँ कि वह ऐयार परले सिरे का है , मगर इस जगह बहस तो ईमानदारी की हो

बड़े - बड़े आम , नीबू और अमरूद तथा

इन्द्रदेव : (दबी जुबान से) हाँ , वह लालची तो जरूर है मगर अभी नई जबानी है , संभव है आगे चलकर सुधर जाय !

दलीपशाह : (हँसकर) जी हाँ , बात तो यह है कि वह कमवत आपके सामने ढोंग रचता है और दयाराम जी के मामले पर उदासी दिखलाकर कहता है कि अब मैं दुनिया ही ठोड़ दूंगा , मगर मैं इस बात को कभी नहीं मान सकता , हाँ उसका यह कहना शायद सच हो कि दयाराम जी के मामले में उसने धोखा खाया ।

इन्द्रदेव : भाई , उसकी यह बात तो जरूर सच है , वह जान - बूझकर दयाराम को कदापि नहीं मार सकता है ।

दलीपशाह : जी हाँ , मैं भी वही सोचता हूँ मगर आप देख लीजिएगा कि कुछ दिन के बाद वह हमारे और आपके ऊपर भी सफाई का हाथ जरूर फरेगा । आपके ऊपर चाहे मेहरबानी भी कर जाये क्योंकि आपसे डरता है और उसे विश्वास है कि आप ऐयारी में किस तरह उससे कम नहीं हैं मगर मुझे तो कभी न छोड़ेगा ।

इन्द्रदेव : अजी भविष्य में जैसा करेगा बैसा पावेगा , इस समय तो वह हमारा - आपका किसी का भी कसूरवार

नहीं है ! दलीपशाह : (खिलखिलाकर हँसने के बाद धीरे से) तब क्यों आपने बेचारे के पीछे सरस्वती को लगा दिया

है , नहीं तो तुम ही सोचो कि बेचारी

इन्द्रदेव : केवल उन दोनों का प्रण पूरा करने के लिये मैंने यह कार्रवाई कर लड़कियाँ उसका क्या बिगाड़ सकती हैं ।

दलीपशाह : तो आप उन लड़कियों के साथ धोखेबाजी का

करते हैं , सच्चे दिल से उनकी मदद नहीं करते !

इन्द्रदेव : (दाँत से जुबान दबाने के बाद) नहीं - नहीं , गदाधरसिंह मारा न जाये और दोनों लड़कियों

उनकी मदद करता हूँ मगर मेरी इच्छा यही है कि भी पूरी हो जाये ।

दलीपशाह : यह एक अनूठी बात है , जरूर जमना और सरस्वती को मार

| खा भी लें और वह काटा भी न जाये ! मैं तो समझता हूँ वह एक दिन

इन्द्रदेव : नहीं ऐसा तो न

दलीपशाह : अजी आप तो निरे ही साधु हैं , इतने बड़े ऐयार होकर भी धोखा खाते हैं । मगर इसमें आपका कोई कसूर नहीं है , ईश्वर ने आपका दिल ही ऐसा नरम बनाया है कि किसी की बुराई पर ध्यान नहीं देते , मगर भाईजान , मैं तो उससे बरावर खटका रहता हूँ । इसमें आप यह न समझिए कि मैं उनका दुश्मन हूँ , आपकी तरह मैं भी यही चाहता हूँ कि वह किसी तरह अच्छे ढर्रे पर आ जाये मगर यह उम्मीद नहीं

। अच्छा यह बताइए कि उन लोगों के विषय में आजकल क्या कार्रवाई हो रही है अर्थात् जमना और सरस्वती क्या कर रही हैं ?

इन्द्रदेव : बस गदाधरसिंह के पीछे पड़ी हुई है , आज कई दिन हुए कि उसे गिरफ्तार भी कर लिया था मगर सिर्फ डरा - धमका के छोड़ दिया , क्योंकि मैंने अच्छी तरह समझा दिया है कि दुश्मन को सता के और दुःख दे के बदला लेना चाहिए न कि जान से मार के । वे बेचारियाँ तो मेरी बात मान जाएँगी मगर गदाधरसिंह की तरफ से मैं डरता हूँ , ऐसा न हो कि वह उन दोनों का सफाया कर दे ।

दलीपशाह : (मुसकराकर) मगर आप तो उसे नेक बना रहे हैं , उस पर भरोसा कर रहे हैं ! अभी - अभी कह चुके हैं कि वह उन दोनों के साथ बुराई कभी न करेगा ।

इन्द्रदेव : आशा तो ऐसी ही है जो में कह चुका हूँ , फिर भी डरता हूँ क्योंकि आजकल उसका रंग - ढंग और रहन - सहन

ठीक नहीं है ।

दलीपशाह : आप तो अच्छा दोतर्फी बात करते हैं !

इन्द्रदेव : ऐसा नहीं है मेरे दोस्त , मैं खूब समझता हूँ कि वह आजकल बिगड़ा हुआ है मगर में उसे सुधारना चाहता हूँ ,

मेरा खयाल है कि वह दुःख भोगकर सुधर सकता है , मगर उसकी यातना की जाये तो ताज्जुब नहीं कि वह राह पर आ

जाये ।

दलीपशाह : तो क्या बेचारी जमना और सरस्वती ही के हाथ से उसकी यातना कराइएगा ?

इन्द्रदेव : नहीं , वे बेचारियाँ भला क्या कर सकेंगी । मैं अब आपके पास इसीलिए आया हूँ कि इस काम में आपसे मदद

लूँ ।

दलीपशाह : वह क्या ? मैं आपके लिए हर तरह से तैयार हूँ ।

इन्द्रदेव : आप जानते ही हैं कि मैं अपना स्थान किसी तरह छोड़ नहीं सकता ।

इन्द्रदेव : इसलिए मैं चाहता था कि आप कुछ दिनों तक उन लड़कियों के साथ रहकर उनकी मदद करें मगर देखता हूँ

कि आप बेतरह गदाधरसिंह पर टूटे हुए हैं । मैं यह नहीं चाहता कि वह मारा जाय ।

दलीपशाह : तो क्या आप समझते हैं कि मैं आपकी इच्छा के विपरीत चलूँगा ?

इन्द्रदेव : नहीं - नहीं , ऐसा तो मुझे स्वप्न में भी गुमान

विरुद्ध कहीं न हो ।

दलीपशाह : चाहे जो हो मगर मैं आपकी बात कभी न टालूँगा , इसके अतिरिक्त आप जानते हैं कि वह मेरा रिश्तेदार है ,

उसकी स्त्री शान्ता है तो मेरी साली , मगर मैं उसे बहिन की तरह मानता और प्यार करता हूँ , ऐसी अवस्था में मैं कब

चाहूँगा कि गदाधरसिंह मारा जाये उसकी स्त्री विधवा होकर मेरी आँखों के सामने आये ! मगर बात जो असल है

वह जरूर करने में आती है ।

इन्द्रदेव : ठीक है मगर गदाधरसिंह खुद अपने पैर में कुल्हाड़ी मार रहा है । खैर जैसा करेगा वैसा पावेगा । हम लोग जहाँ

तक हो सकेगा उसके सुधारने की कोशिश करेंगे , आगे जो ईश्वर की मर्जी ।

दलीपशाह : खैर मुझे आप क्या काम सुपुर्द करते हैं सो कहिए ?

इन्द्रदेव : मैं चाहता हूँ कि आप कुछ दिनों तक जमना और सरस्वती के साथ रहकर उनकी मदद कीजिए , मगर इस तरह

पर नहीं कि जो कुछ वे कहती जाएँ आप करते जाएँ ।

दलीपशाह : तब किस तरह से ?

इन्द्रदेव : इस तरह से कि दोनों जिस तरह चाहें स्वयं काम करके अपना हौसला पूरा करें और यही उनकी इच्छा भी है ,

मगर इस तरह पर नहीं कि जो कुछ वे कहती जाएँ या किसी मुसीबत में फँस जाएँ तब आप उनकी रक्षा करें ।

दलीपशाह : यह तो बड़ा कठिन काम है !

इन्द्रदेव : बेशक कठिन है और इसे सिवाय आपके दूसरा पूरा नहीं कर सकता ।
दलीपशाह : (कुछ सोचकर) बहुत अच्छा ,

सकता । हाँ यह सोचता हूँ कि मेरा कहना आपकी इच्छा के

मैं तैयार हूँ ।

इन्द्रदेव : तो बस आज ही आप मेरे साथ चलिए , मैं उन दोनों को आपके सुपुर्द कर दूँ और उस घाटी के भेद भी आपको बता दूं तथा जो कुछ मैं कर आया हूँ उसे भी समझा हूँ ।

दलीपशाह : जब आपकी इच्छा हो चलिए । (फाटक की तरफ खयाल करके) देखिए गुलाबसिंह चले आ रहे हैं , इन्हें चुनार से क्योंकर छुट्टी मिली !

इन्द्रदेव : इनका हाल आपको मालूम नहीं है पर मैं सुन चुका हूँ और इस समय आपसे कहने ही वाला था कि इंदुमति भी आजकल जमना और सरस्वती के पास पहुँची हुई हैं , मगर अब कहने की कोई जरूरत नहीं , खुद गुलाबसिंह की जुबानी आप सब कुछ सुन लेंगे और शायद इसीलिए वह यहाँ आए भी हैं ।

दलीपशाह : शिवदत्त भी नया राज्य पाकर आजकल अंधा हो रहा है ।

इन्द्रदेव : बेशक ऐसा ही है ।

इतने ही में दरवान ने ऊपर आकर गुलाबसिंह के आने की इत्तिला की और इन्हें ले का हुक्म पाकर चला गया । थोड़ी ही देर में गुलाबसिंह वहाँ आ पहुँचे और उन्होंने बड़े अदप के साथ सलाम किया और दलीपशाह से मिले ।

इशारा पाकर गुलाबसिंह एक कुर्सी पर बैठ गए और इस तरह बातचीत

लगी

दलीपशाह : कहो भाई गुलाबसिंह जी , आज तो बहुत दिनों

आपसे मुलाकात हुई है , सब कुशल तो है ?

गुलाबसिंह : जी कुशलता तो नहीं है , और इसीलिए

चुनारगढ़ से भागना पड़ा ।

दलीपशाह : क्या महाराज शिवदत्त की नौकरी आपने छोड़ दी ?

गुलाबसिंह : हाँ , मजबूर होकर मुझे कर सकता था ।

करना पड़ा , क्योंकि मैं प्रभाकर सिंह के साथ किसी तरह का बुरा बर्ताव नहीं

दलीपशाह : प्रभाकर सिंह भी तो उन्हीं के यहाँ सेनापति का काम करते हैं ?

गुलाबसिंह : हाँ , मगर महाराज ने उनके साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया , उनकी इंदुमति पर हजरत आशिक हो गए और बड़ी - बड़ी चालबाजियों से अपने महल में बुलवा लिया , मगर जब वह किसी तरह राजी न हुई और जान देने पर तैयार हो गई तब लाचार उसे महल के अंदर कैद करके रखा और प्रभाकर सिंह को मार डालने का बंदोबस्त करने लगे जिसमें निश्चिन्त होकर इंदुमति को काम में लावें , परंतु प्रभाकर सिंह को इस बात का पता लग गया और वे महल में घुसकर बड़ी बहादुरी से इंदुमति को छुड़ा लाए । तो भी शिवदत्त का मुकाबला नहीं कर सकते थे इसलिए अपनी स्त्री को साथ लेकर वहाँ से भाग खड़े हुए । इसके बाद शिवदत्त ने उनकी गिरफ्तारी के लिए मुझे मुकर्रर किया , मैंने इसी बात का गनीमत समझा और कई आदमियों को साथ लेकर उनकी खोज में निकला । आखिर उनसे मुलाकात हो गई और तब से उनकी तावेदारी में रहने लगा क्योंकि उनके बुजुर्गों ने जो कुछ भलाई मेरे साध की है | मैं भूल नहीं सकता । नौगढ़ की सरहद के पास ही उनसे मुलाकात हुई थी और अकस्मात् उसी जगह भूतनाथ भी मुझसे मिल गया । मैंने भूतनाथ से मदद माँगी और वह मदद देने के लिए तैयार होकर हम लोगों को अपना डेरे पर ले गया , मगर कई मामले ऐसे हो गए कि भूतनाथ दोस्ती का इस्तीफा देकर दुश्मन बन बैठा और उसे सबब से भी हमें तकलीफ ही उठानी पड़ी !

इतना कहकर गुलावसिंह ने इन्द्रदेव की तरफ देखा ।

इन्द्रदेव : हाँ - हाँ गुलाबसिंह , तुम कहते जाओ रुको , मत , दलीपशाह से कोई बात छिपी हुई नहीं है ।

गुलाबसिंह : (हाथ जोड़कर) जी नहीं , अब जो कुछ कहना बाकी है आप ही इन्हें समझा दें , मैं डरता हूँ कि कदाचित् मेरी जवान से ऐसी कोई बात निकल पड़े जिसे आप नापसंद करते हों तो ...

इन्द्रदेव : (मुसकराकर) अजी नहीं गुलावसिंह , मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ तुम बड़े ही नेक और सज्जन आदमी हो , जमना और सरस्वती ने जो कुछ भेद की बातें प्रभाकर सिंह से कहीं हैं सो मुझे मालूम हैं और प्रभाकर सिंह ने जो कुछ तुम्हें बताया है उसे भी मैं कदाचित् जानता हूँ , अस्तु तुम जो कहना चाहते हो बेधड़क कहते जाओ ।

गुलाबसिंह : जो आज्ञा । अच्छा तो मैं संक्षेप में कह डालता हूँ , (दलीपशाह से) भूतनाथ जिस घाटी में रहता है उसके पास ही जमना और सरस्वती भी रहती हैं । वह किसी तरह प्रभाकर सिंह को अपने यहाँ ले गई मगर इसके बाद ही इंदुमति पुनः दुश्मनों के हाथ में फंस गई , उसे भी दोनों बहिनें छुड़ाकर अपने यहाँ ले गई । तब से इंदुमति उन्हीं के यहाँ रहती हैं । प्रभाकर सिंह उस खोह के बाहर आए और कई दिनों के बाद हम दोनों आदमी चुनारगढ़ की तरफ रवाना हुए इसलिए कि कुछ सिपाहियों का बंदोबस्त करके दुश्मन से बदला लें । मगर भूतनाथ जिसे जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार करके नीचा दिखाया था हम लोगों का दुश्मन बन बैठा और धोखा देकर प्रभाकर सिंह को कैद कर अपने घर ले गया , कहाँ रखा मुझे मालूम नहीं ।

इसके बाद गुलाबसिंह ने वह किस्सा खुलासे तौर पर दलीपशाह और इन्द्रदेव से किया । इन्द्रदेव को प्रभाकर सिंह की गिरफ्तारी का हाल अभी तक मालूम नहीं हुआ था अस्तु उन्हें यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने दलीपशाह से कहा , ' मेरे दोस्त , मुझे प्रभाकर सिंह के हाल पर अफसोस होता है । ने भी यह काम अच्छा नहीं किया । खैर कोई चिंता नहीं , प्रभाकर सिंह को उसके कब्जे से निकाल लेना बड़ी बात नहीं है । अब तुम सफर की तैयारी करो , और जमना तथा सरस्वती के साथ -

ही - साथ प्रभाकर सिंह की करो , मैं खुद तुम्हारे साथ चल कर प्रभाकर सिंह को कैद से छुट्टी दिलाऊँगा ! "

इतना कहकर इन्द्रदेव दलीपशाह को कमरे के गये और आधे घंटे तक एकांत में न मालूम क्या समझाते रहे , इसे बाद बाहर आए और बहुत देर तक गुलाबसिंह से बातचीत करते रहे ।

आठवा व्यान।

भूतनाथ को जब अपनी घाटी में घुसने का रास्ता नहीं मिला तो वह प्रभाकर सिंह को एक दूसरे ही स्थान में ले जाकर रख आया था और अपने दो आदमी उनकी हिफाजत के लिए छोड़ दिये थे । अब जब भूतनाथ महात्मा जी की कृपा से अपनी सुहावनी घाटी में पहुँच गया , सुरंग का रास्ता उसके लिए साफ हो गया , दरवाजा खोलने और बंद करने की तरकीब मिल गई बल्कि उसके साथ - ही - साथ वेअंदाज दौलत का भी मालिक बन बैठा , तो उसका हौंसला बनिस्बत पहिले के सौगुना बढ़ गया और उसने चाहा कि प्रभाकर सिंह को भी लाकर उसी घाटी में रख ठोड़े अस्तु महात्मा जी को विदा करने क बाद दूसरे दिन वहाँ से रवाना हुआ और संध्या होते - होते तक प्रभाकर सिंह को इस घाटी में ले आया । प्रभाकर सिंह दवा के नशे में बेहोश थे और उनके हाथ में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी पड़ी हुई थीं ।

भूतनाथ ने उन्हें एक बहुत बड़ी साफ और सुन्दर चट्टान पर रख दिया , पैर की बेड़ी खोल दी , और लखलखा सुंघाकर उनकी बेहोशी दूर की । जब प्रभाकर सिंह उठ कर बैठ गये तो इस तरह बातचीत होने लगी :

प्रभाकर सिंह : (चारों तरफ देखकर) क्या अभी तक मेरी गिनती कैदियों ही में है ? मैं पुनः बेहोश करके इस घाटी में क्यों लाया गया और तुम क्यों नहीं बताते कि किस तरह दुःख देने से तुम्हारा क्या मतलब है ?

भूतनाथ : प्रभाकर सिंह , तुम खूब जानते हो कि ऐयारों को जरा - जरा से काम के बड़े - बड़े नाजुक और अमीर आदमियों को तकलीफ देनी पड़ती है । मैं सच कहता हूँ कि तुमसे मुझे किसी की दुश्मनी न थी , बल्कि मैं हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए तैयार हो गया था , अगर तुम धोखा देकर अपना न बदलते तो देखते कि मैं किस खूबी और खूबसूरती के साथ तुम्हारे दुश्मनों से तुम्हारा बदला लेता और हर तरह से वेफिक्र कर देता , मगर अफसोस , तुमने मेरे दुश्मनों से मिलकर मुझे धोखा दिया और गुलाबसिंह जो मेरा दोस्त था बहका दिया !

प्रभाकर सिंह : मैंने तुम्हारे किस दुश्मन से मिलकर

क्या नुकसान किया सो साफ - साफ क्यों नहीं कहते ?

भूतनाथ : क्या तुम नहीं जानते जो साफ - साफ की जरूरत है ? जमना और सरस्वती ने मुझे तकलीफ देने के लिए ही अवतार लिया है और तुम उनके पक्षपाती बन गये हो । वे तो भला औरत की जात हैं , नासमझ कहलाती हैं , पर तुम्ही ने उनका भ्रम क्यों नहीं दूर कर दिया भूतनाथ ने दयाराम को कदापि न मारा होगा क्योंकि वह उनके साथ मुहब्बत रखता था और उनका दोस्त था

प्रभाकर सिंह : (हँसकर) तुमको भी तो वे गिरफ्तार करके उस घाटी में ले गई थीं , फिर तुम्हीं ने क्यों नहीं उनका भ्रम दूर कर दिया ? तुम ऐयार कहलाते हो , हर तरह से बात बनाना जानते हो !

भूतनाथ : मुझे तो कसूरवार ही समझती हैं , फिर भला मेरी बात क्यों मानने लगीं ?

प्रभाकर सिंह : इसी तरह मैं भी तो उनका रिश्तेदार ठहरा , मैं उनकी इच्छा के विरुद्ध क्यों करने लगा ? तुम जानो और वे जानें मुझे इन झगड़ों से मतलब ही क्या ? बेचारी औरत की जात अबला कहलाती है और तुम इतने बड़े नामी ऐयार हो फिर भी जरा से मामले के लिए मुझसे मदद माँगते हो और चाहते हो कि मैं तेरे लिए अपने एक ऐसे रिश्तेदार के साथ बेमुरौवती करूँ जो दया करने के लायक है ! तुम्हें शर्म नहीं आती ! हाँ अगर मैं खुद तुम्हारे साथ किसी तरह की करूँ तो जरूर मुझसे बदला लेना उचित था ।

भूतनाथ : (मुसकुराकर) सत्य वचन ! मालूम हुआ कि आप बड़े सच बोलने वाले हैं और सिवाय सच के कभी झूठ नहीं वोलते । अच्छा खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं , मैं तुमसे बहस करना पसन्द नहीं करता । मैं जो कुछ पूछता हूँ उसका साफ - साफ जवाब दो नहीं तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा ।

प्रभाकर सिंह : अव इस धमकी में तुम्हारी बातों का जवाब नहीं दे सकता , मुलायमियत से अगर पूछते तो शायद कुछ

जवाब दे देता क्योंकि न तो तुम्हारे किसी अहसान का बोझ मेरी गर्दन पर है और न मैं तुमसे डरता ही हूँ । भूतनाथ : ऐसी अवस्था में भी तुम मुझसे नहीं डरते ? देख रहे

हो कि तुम्हारे हर्वे छीन लिए गए , हथकड़ी तुम्हारे हाथों में पड़ी हुई हैं , और इस समय तुम हर तरह से मजबूर और कमजोर हो !

" यह हथकड़ी तो कोई चीज नहीं है , मेरे ऐसे क्षत्री के लिए तुमने इसे पसन्द किया यह तुम्हारी भूल है ! " इतना कहकर बहादुर प्रभाकर सिंह ने एक झटका ऐसा दिया कि हथकड़ी टूट कर उनके हाथों से अलग हो गई और साथ ही इसके वे अपनी कमर से तलबार बैंच कर भूतनाथ के सामने खड़े हो गये और बोले , " वताओ क्या अब भी में तुम्हारा कैदी हूँ ? "

प्रभाकर सिंह की कमर में एक ऐसी तलवार थी जो बदन के साथ पेटी की तरह लपेटकर बाँधी जा सकती थी , चमड़े की मुलायम म्यान उसके ऊपर चढ़ी हुई थी और उसे प्रभाकर सिंह कपड़े के अन्दर कमर में लपेटकर धोती और कमरबंद से छिपाए हुए थे । अभी तक उस पर भूतनाथ की निगाह नहीं गई थी , बल्कि उसे इस बात का कुछ गुमान भी न था । वह तिलिस्मी तलवार विमला ने प्रभाकर सिंह को दी थी और बिमला ने इन्द्रदेव से पाई थी । इन्द्रदेव का बयान है कि उन्हें इसी तरह के कई हर्वे कुँवर गोपालसिंह ने अपने जमानिया के तिलिस्म में से निकाल कर दिये थे ।

इस तलवार में भी करीब - करीव वही गुण थे जो उस तिलस्मी खंजर और नेजे में था जिसका हाल हम चंद्रकांता सन्तति में लिख आये हैं , फर्क बस इतना था कि जिस तरह उन खंजरों में कब्जा दवाने से पैदा होती थी उस तरह इसमें चमक नहीं पैदा होती थी और न इसके छूने से आदमी बेहोश ही होता था । इसका जख्म लगने से बिजली के असर से आदमी बेहोश हो जाता था । उसकी तरह इसके जोड़ की भी बसूरत अंगूठी जरूर थी जो इस समय प्रभाकर सिंह की तर्जनी उँगली में पड़ी हुई थी । इस अँगूठी में यह भी [था कि अगर धोखे में उन्हीं हो इसका जख्म लग जाय तो उन्हें कुछ असर न हो ।

प्रभाकर सिंह की हिम्मते - मरदानगी और ताकत देखकर हैरान हो गया बल्कि यों कह सकते हैं कि घबरा गया , यद्यपि भूतनाथ भी मरदे - मैदान और लड़ाका था तथा पास ही में उसके कई मददगार भी थे जो उसके आवाज देने के साथ ही पहुँच सकते थे मगर फिर भी थोड़ी के लिए उसके ऊपर प्रभाकर सिंह का रोब छा गया और वह खड़ा होकर उनका मुँह देखने लगा ।

प्रभाकर सिंह : हाँ बताओ तो क्या मैं अब भी कैदी हूँ ।

भूतनाथ : (बनावटी मुसकुराहट के साथ) हाँ बेशक तुम ताकतवर और बहादुर हो , मगर समझ रखो कि ऐयारों का मुकाबला करना तुम्हारा काम नहीं है ।

प्रभाकर सिंह : हाँ बेशक इस बात को मैं मानता हूँ , मगर खैर जैसा मौका होगा देखा जाएगा , इस समय तुम्हारा क्या इरादा है सो साफ - साफ कह डालो , अगर लड़ना चाहते हो तो मैं लड़ने के लिए तैयार हूँ ।

भूतनाथ : मुझे न तो तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी ही है और न मैं व्यर्थ लड़ना ही चाहता हूँ , हाँ , इतना जरूर चाहता हूँ कि जमना और सरस्वती का सच्चा - सच्चा हाल मुझे मालूम हो जाय । न - मालूम कि नसालायक ने उन्हें समझा दिया है कि मैं अपने दोस्त दयाराम जी का घातक हूँ तथा इस बात पर उन्होंने विश्वास करके मेरे साथ दुश्मनी करने पर कमर वाँध ली है , और ...

प्रभाकर सिंह : (वात काट कर) ओफ , इन पचड़ों को मैं सुनना पसन्द नहीं करता , इस बारे में मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि तुम जानो और वे जानें , मैं तुम्हारा तावेदार नहीं हूँ कि तुम्हारे लिए उनको समझाने जाऊँ ।

भूतनाथ : (क्रोध के साथ) तुम अजब ढंग पर बातें कर रहे हो ! तुम्हारा मिजाज तो आसमान पर चढ़ा हुआ है !!

प्रभाकर सिंह : बेशक ऐसा ही है , तुम धोखा देकर मुझे गिरफ्तार कर लाए हो इसलिए मैं तुमसे बात करना भी पसन्द

नहीं करता ।

भूतनाथ : फिर ऐसा करने से तो नहीं चलता , तुम्हें झख मार कर मेरी बातों का जवाब देना पड़ेगा ।

यह कहकर भूतनाथ ने भी म्यान से तलवार निकाली और पैतरा बदलकर सामने खड़ा हो गया ।

प्रभाकर सिंह : तुम्हारी तलवार बिलकुल बेकार है , कुछ भी काम नहीं देगी , चलाओ और देखो क्या होता है ।

भूतनाथ : हाँ हाँ , देखो यह तलवार कैसा मजा करती है , मैं तुम्हें जान से न मारूँगा बल्कि बेकार करके छोड़ दूंगा ।

इतना कहके भूतनाथ ने प्रभाकर सिंह पर वार किया जिसे उन्होंने बड़ी चालाकी के साथ अपनी तलवार पर रोका ।

प्रभाकर सिंह की तलवार पर पड़ने के साथ ही भूतनाथ की तलवार कटकर दो टुकड़े हो गई क्योंकि वह हर एक हर्वे को

काट सकती थी । भूतनाथ ने टूटी हुई तलवार फेंक दी और कमर से खंजर निकालकर वार किया चाहता था कि प्रभाकर

सिंह ने अपनी तलवार से उसे भी काट कर दो टुकड़े कर दिया । भूतनाथ को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वह सोचने लगा

कि यह अनूठी तलवार किस लोहे की बनी हुई है जो दूसरे हों को इतने सहज ही में काट डाला करती है !

थोड़ी ही दूर पर भूतनाथ के कई आदमी खड़े यह तमाश देख रहे थे मगर

सकते थे । इस समय भूतनाथ ने इशारा किया और वे लोग जो गिनती

देखकर प्रभाकरसिंह ने कहा , “ भूतनाथ , मैं केवल तुम्हीं से नहीं बल्कि

का इशारा पाये विना पास नहीं आ

थे वहाँ आ मौजूद हुए । यह कैफियत

साथ इन सभों से लड़ने के लिए तैयार हूँ । "

यह बात भूतनाथ को बहुत बुरी मालूम हुई और अपने एक के हाथ से तलवार लेकर उसने पुनः प्रभाकर सिंह पर

वार किया और साथ - साथ अपने साथियों की मदद के । इशारा किया ।

प्रभाकर सिंह बड़ा ही बहादुर आदमी था और के फन में तो वह लासानी था । अगर वह चाहता तो सहज ही में

अपनी तिलिस्मी तलवार जख्मी करके बेहोश कर देता , मगर नहीं , उसने कुछ देर तक लड़ कर सभों को

दिखला दिया कि हमारे सामने तुम लोग कुछ भी नहीं हो ! यद्यपि उसके बदन पर भी कई जख्म लगे , मगर उसने सभों

के हवे वेकार कर दिये और अंत में भूतनाथ तथा उसके सभी साथी जख्मी होकर तलवार वाली बिजली के असर से

बेहोश हो जमीन पर गिर पड़े । प्रभाकर सिंह धीरे - धीरे मस्तानी चाल से चलते हुए वहाँ से रवाना हुए , मगर जब सुरंग में

आये और दरवाजा बंद पाया तब मजबूर होकर उन्हें रुक जाना पड़ा ।

प्रभाकर सिंह पुनः लौटकर वहाँ आये जहाँ भूतनाथ और उसके साथी लोग बेहोश पड़े हुए थे । तिलिस्मी तलवार के जोड़

की अंगूठी उन्होंने भूतनाथ के बदन से लगाई , उसी समय भूतनाथ की बेहोशी जाती रही । वह उठकर खड़ा हो गया और

ताज्जुब के साथ प्रभाकर सिंह का मुँह देखने लगा ।

भूतनाथ : मैं समझ गया कि तुम बहादुर आदमी हो और तुम्हारे हाथ की यह तलवार बड़ी ही अनूठी है जिसके सबब से

तुम और भी जबर्दस्त हो रहे हो । (मुसकुराकर) सच कहना यह तलवार तुमने कहाँ से पाई ! पहिले तो यह तुम्हारे पास न

थी , अगर होती तो वेइज्जती के साथ तुम चुनारगढ़ से न भागते !

प्रभाकर सिंह : ठीक है मगर इससे तुम्हें क्या मतलब , चाहे कहीं से यह तलवार मुझे मिली हो ।

भूतनाथ : (मुलायमियत के साथ) नहीं - नहीं प्रभाकर सिंह , बुरा मत मानो , मेरी बातों का जवाब देने से तुम कुछ छोटे नहीं

हो जाओगे । बताओ तो सही क्या यह तलवार जहर में बुझाई हुई है ? क्योंकि इसका जख्म लगने के साथ ही नशा चढ़

आता है ।

प्रभाकर सिंह : कदाचित् ऐसा ही हो , मैं ठीक नहीं कह सकता !

भूतनाथ : देखो मेरे साथी लोग अभी तक बेहोश पड़े हुए हैं ।

प्रभाकर सिंह : अभी बड़ी देर तक ये बेहोश पड़े रहेंगे मगर मरेंगे नहीं । तुम्हारी बेहोशी तो मैंने दूर कर दी है , खैर यह बताओ कि अब तुम मेरे साथ क्या किया चाहते हो ?

भूतनाथ : कुछ भी नहीं , मैं जो कुछ कर चुका हूँ उसके लिए आपसे माफी माँगता हूँ और चाहता हूँ कि आइन्दा के लिए हमारे और आपके बीच सुलह हो जाय । प्रभाकर सिंह : जैसा तुम वर्ताव करोगे में वैसा ही जवाब दूंगा , मुझे खासतौर पर तुम्हारे साथ किसी तरह की दुश्मनी नहीं है ।

भूतनाथ : अच्छा तो चलिए मैं आपको इस घाटी के बाहर कर आऊँ क्योंकि बिना मेरी मदद के आप यहाँ से बाहर नहीं जा सकते ।

प्रभाकर सिंह : चलो ।

भूतनाथ : मगर में देखता हूँ कि आप बहुत जख्मी हो रहे हैं और खून से आपका कपड़ा तरबतर हो रहा है , मुझे आज्ञा दीजिए तो आपके जख्मों को धोकर उन पर गीले कपड़े की पट्टी बाँध दूं

प्रभाकर सिंह : नहीं , इसकी कोई जरूरत नहीं है , घाटी के बाहर

में इसका उपाय कर लूँगा ।

भूतनाथ : आखिर क्यों ऐसा किया जाय , जितनी देर होगी उतना ज्यादे खून निकल जाएगा , आप इसके लिए जिद न करें । आप मुझ पर भरोसा करें और आज्ञा दें कि इन पर पट्टी बाँध हूँ ।

प्रभाकर सिंह : खैर जैसी तुम्हारी मर्जी , मैं तैयार हूँ ।

भूतनाथ तेजी के साथ उस गुफा में चला जिसमें उसका डेरा था और पीतल की गगरी पानी से भरी हुई और एक लोटा तथा कुछ कपड़ा पट्टी बाँधने के लिए लेकर प्रभाकर सिंह के पास लौट आया ।

प्रभाकर सिंह ने कपड़े उतारे और भूतनाथ ने जख्मों को धोकर उन पर पट्टियाँ बाँधी । इसके बाद प्रभाकर सिंह कपड़ा पहिन कर चलने के लिए तैयार हो गए । भूतनाथ ने अपने आदमियों के विषय में प्रभाकर सिंह से पूछा कि इन सभों की बेहोशी खुद - ब - खुद जाती रहेगी या इसके लिए कोई इलाज करना होगा ?

पहिले तो प्रभाकर सिंह के जी में आया कि अपने हाथ की अंगूठी छुआकर उन सभों को बेहोशी दूर कर दें मगर फिर कुछ सोच कर रुक गए और बोले , " नहीं इनकी बेहोशी आप - से - आप थोड़ी देर में जाती रहेगी , कुछ उद्योग करने की

जरूरत नहीं "

आगे - आगे भूतनाथ और पीछे - पीछे प्रभाकर सिंह वहाँ से रवाना हुए । सुरंग में घुसकर भूतनाथ ने वह दरवाजा खोला जो बंद था मगर प्रभाकर सिंह को यह नहीं मालूम हुआ कि वह दरवाजा किस ढंग से खोला गया ।

घाटी के बाहर निकल जाने पर भी भूतनाथ बहुत दूर तक पहुँचाने के लिए प्रभाकर सिंह के साथ मीठी - मीठी बातें करता हुआ चला गया । लगभग आध कोस तक दोनों आदमी चले गये होंगे जब प्रभाकर सिंह का सर घूमने लगा और धीरे - धीरे बेहोश होकर ये जमीन पर गिर पड़े ।

भूतनाथ बड़ा ही चालाक और काइयाँ था और उसने प्रभाकर सिंह को बुरा धोखा दिया । हमदर्दी दिखाकर जख्म देने के बहाने से वह बेहोशी की दवा का बर्ताव कर गया । जो पानी वह अपनी गुफा में से लेकर आया था उसमें जहरीली दवा मिली हुई थी मगर वह दवा ऐसी न थी जिससे जान जाती रहे बल्कि ऐसी थी कि खून के साथ मिलकर बेहोशी का असर पैदा करे ।

जब प्रभाकर सिंह बेहोश हो गए तब भूतनाथ ने पहिले तो अँगूठी और तलवार पर कब्जा किया और बहुत ही खुश हुआ , इसके बाद प्रभाकर सिंह को गठरी में बाँध

पीठ पर लाद अपनी घाटी की तरफ रवाना हुआ। बेचारे प्रभाकर सिंह पुनः भूतनाथ के फंदे में फंस गए , देखना चाहिए अब भूतनाथ उनके साथ क्या सलूक करता है !

नौवा व्यान।

अबकी दफे भूतनाथ ने प्रभाकर सिंह को बड़ी सख्ती के साथ कैद किया , पैरों में बेड़ी और हाथों में दोहरी हथकड़ी डाल दी और उसी गुफा के अन्दर रख दिया जिसमें स्वयं रहता था और उसके (गुफा के) बाहर आप चारपाई डाल रात को पहरा देने लगा ।

भूतनाथ ने बहुत कुछ दम - दिलासा देकर प्रभाकर सिंह से जमना और सरस्वती का हाल पूछा मगर उन्होंने उनका कुछ भी भेद न बताया , इस पर भी भूतनाथ ने प्रभाकर सिंह को किसी तरह का दुःख नहीं दिया , हाँ इस बात का जरूरी खयाल रखा कि वे किसी तरह भाग न जाएँ ।

इसी तरह प्रभाकर सिंह की हिफाजत करते - करते बहुत दिन गुजर गए मगर भूतनाथ की इच्छानुसार कोई कार्रवाई नहीं हुई । भूतनाथ ने जमना और सरस्वती के विषय में भी पता लगाने के लिए बहुत उद्योग किया मगर कुछ नतीजा न

निकला ।

भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दों को तरह - तरह का काम सुपुर्द करके चारों तरफ दौड़ाया और कइयों को उस सुरंग के इर्द - गिर्द घूमकर टोह लगाने के लिए मुकर्रर किया जिसकी राह से कला ने इस खोह वाहर किया था ।

भूतनाथ को अपने शागिर्द भोलासिंह की बड़ी फिक्र थी क्योंकि वह मुद्दत से था और हजार कोशिश करने पर भी उसका कुछ पता नहीं लगता था । वह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासी था और भूतनाथ उसे दिल से मानता था ।

एक दिन दोपहर के समय भूतनाथ अपनी घाटी से बाहर निकला सुरंग के मुहाने पर बाहर की तरह पेड़ों की ठंडी छाया में टहलने लगा । संभव है कि वह अपने किसी शागिर्द इंतजार कर रहा हो । उसी समय दूर से आते हुए भोलासिंह पर उसकी निगाह पड़ी । वह बड़ी खुशी के भोलासिंह की तरफ बढ़ा और भोलासिंह भी भूतनाथ

को देखकर दौड़ता हुआ आया और उसके पैरों पर गिर ।। भूतनाथ ने भोलासिंह को गले से लगा लिया और पूछा , " इतने दिन तक तुम कहाँ थे ? मुझे तुम्हारे लिए बड़ी फिक्र थी और दिन - रात खटके में जी लगा रहता था ! "

भोलासिंह : गुरुजी , मैं तो बड़ी आफत फँस गया था , ईश्वर ही ने मुझे बचाया नहीं तो मैं बिलकुल ही निराश हो चुका था ।

भूतनाथ : क्या तुम्हें किसी दुश्मन ने गिरफ्तार कर लिया था !

भोलासिंह : जी हाँ ।

भूतनाथ : किसने ?

भोलासिंह : दो औरतों ने , जिन्हें मैं बिलकुल ही नहीं पहिचानता ।

भूतनाथ : मालूम होता है कि तुम्हें भी जमना और सरस्वती ने गिरफ्तार कर लिया था ?

भोलासिंह : जमना और सरस्वती कौन ?

भूतनाथ : हमारे प्यारे दोस्त और मालिक दयाराम की स्त्रियाँ जिनका जिक्र मैं कई दफे तुमसे कर चुका हूँ ।

भोलासिंह : हाँ - हाँ , अब मुझे याद आया , मगर आपने तो कहा था कि वे मर गईं ?

भूतनाथ : हाँ , मुझे ऐसा ही विश्वास था , मुझे क्या तमाम दुनिया यही जानती है कि दोनों मर गईं मगर अब मुझे मालूम

हुआ कि वे दोनों जीती हैं और (हाथ का इशारा करके) इसी पड़ोस वाली घाटी में रहती हैं तथा उन्होंने अपने को कला और विमला के नाम से मशहूर किया है , इसलिए कि मुझे सता कर अपना कलेजा ठंडा करें क्योंकि किसी ने दोनों को विश्वास दिलाया है कि दयाराम को भूतनाथ ही ने मार डाला है ।

भोलासिंह : शिव शिव शिव ! भला यह भी कोई बात है ! अच्छा तो यह सब बातें आपको किस तरह मालूम हुई ?

भूतनाथ : मैं एक दफे उनके फंदे में पड़ गया था , वे मुझे गिरफ्तार करके अपनी घाटी में ले गईं और कैद कर दिया ।

भोलासिंह : फिर आप छूटे किस तरह से ?

भूतनाथ : वहाँ मैंने एक लौंडी को धोखा देकर अपना बटुआ जो छिन गया था मैंगवा लिया । फिर कैदखाने से बाहर निकल जाना मेरे लिए कोई कठिन काम न था । इसके बाद मैंने उसी अँधेरी रात में पुनः एक लौंडी को गिरफ्तार किया और लालच दे कुछ पता लगाना चाहा मगर वह लालच में न पड़ी , तब मैंने अपने चाबुक से काम लिया , मुख्तसर यह कि वह मार खाते - खाते मर गई पर इससे ज्यादे और कुछ भी न बताया कि हाँ जमना और सरस्वती यहाँ रहती हैं और उन्होंने अपना नाम कला और बिमला रखा है । इसके बाद एक ऐसा मौका हाथ आया कि मैंने कला को पकड़ लिया , मगर दिन के समय जब मैंने उसकी सूरत देखी तो मालूम हुआ कि जमना , सरस्वती दोनों में से कोई नहीं है क्योंकि ' नाम बदल दिया तो क्या हुआ मैं उन दोनों को अच्छी तरह पहिचानता हूँ , पहिले तो शक हुआ कि शायद ऐयारी ढंग पर इसने सूरत बदल ली है , मगर नहीं पानी से मुँह धुलवाने पर वह शक भी जाता

इतना कहकर भूतनाथ ने अपना खुलासा हाल उसी घाटी में गिरफ्तार जाने और फिर बाहर निकलने का तथा प्रभाकर सिंह को गिरफ्तार करने का बयान किया और कहा , होता है कि उन्हीं में से किसी ने तुम्हें गिरफ्तार कर लिया था , खैर खुलासा हाल कहो तो कुछ मालूम हो ! "

भोलासिंह : जी हाँ , बेशक उन्हीं लोगों ने मुझे गिरफ्तार लिया था । जब तक मैं उनके वहाँ कैद रहा तब तक रोज उन दोनों से मुलाकात होती रही , क्योंकि वह रोज मुझे समझाने - बुझाने के लिए आया करती थीं , मैंने यहाँ पर एक नया ही ढंग रचा , जिस पर कई दिनों तक तो उन्हें विश्वास ही न हुआ मगर अंत में उन्होंने मान लिया कि जो कुछ मैं कहता हूँ वह सब सच है । मैंने इन्हें यह भी समझाया कि मैं भूतनाथ का नौकर या शागिर्द नहीं हूँ बल्कि राजा सुरेन्द्रसिंह का ऐयार हूँ , जिनसे चुनार के राजा शिवदत्त से आजकल से लड़ाई हुआ हो चाही है । महाराज सुरेन्द्रसिंह ने सुना है कि गदाधरसिंह राजा शिवदत्त की मदद पर है इसलिए उन्होंने मुझे तथा अपने कई ऐयारों को गदाधरसिंह को गिरफ्तार करने के लिए भेजा है ।

भूतनाथ : (मुसकराकर) खूब समझाया , अच्छी सूझी !

भोलासिंह : जी हाँ , आखिर उन्हें मेरी बातों पर विश्वास हो गया और कई तरह के वादे करा के उन्होंने मुझे छोड़ दिया ।

भूतनाथ : किस राह से तुम्हें बाहर निकाला ?

भोलासिंह : सो मैं नहीं कह सकता , क्योंकि उस समय मेरी आँखों पर पट्टी बाँध दी गई थी , जब पट्टी खोली गई तो मैंने देखा कि वहाँ बहुत - से सुन्दर और सुहाने बेल तथा पारिजात के पेड़ लगे हुए हैं और दाहिनी तरफ कई कदम की दूरी पर साफ पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बह रहा है ...

भूतनाथ : (बात काट के) ठीक है , ठीक है , मैं समझ गया , मैं भी उसी सुरंग से बाहर निकाला गया था । परन्तु मैं समझता हूँ कि उसके अतिरिक्त और भी कोई रास्ता उस घाटी में जाने के लिए जरूर है , क्योंकि जब मैं गिरफ्तार हुआ था तो किसी दूसरे ही मुहाने पर था । उस समय मुझे छुरी का एक जख्म लगा था जो अभी तक तकलीफ दे रहा है ।

भोलासिंह : संभव है , हो सकता है । इसमें आश्चर्य ही क्या है !

इसके बाद दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर देर तक बातें करते रहे । भूतनाथ पर जो कुछ बीती थी उसने व्योरेवार बयान किया और भोलासिंह ने जो कुछ कहा , बड़े गौर से सुना ।

भोलासिंह भूतनाथ का बहुत ही विश्वासपात्र था इसलिए साधु महाशय की कृपा का हाल भूतनाथ ने यद्यपि अपने किसी शागिर्द या आदमी से बयान नहीं किया था मगर भोलासिंह से साफ और पूरा - पूरा बयान कर दिया चाहे अभी यह नहीं बताया कि उस खजाने का दरवाजा किस तरह खुलता और बंद होता है । हाँ , अंत में इतना जरूर कह दिया कि मैं तुम्हें उस खजाने वाले घर में ले चलूँगा और दिखाऊँगा कि यहाँ कितनी वेशुमार दौलत है !

संध्या होते ही भोलासिंह को लेकर भूतनाथ अपनी अनूठी घाटी में चला गया । रास्ते में उस दरवाजे का हाल और भेद भोलासिंह को बताया गया जिसे बिमला ने बंद कर दिया था और जिसे साधु महाशय की कृपा से भूतनाथ ने खोला था । भोलासिंह जब

उस घाटी के अन्दर पहुँच गया तो भूतनाथ ने सबसे पहिले प्रभाकर सिंह से उसकी मुलाकात कराई । भोलासिंह को देखकर और यह सुनकर कि इसका नाम भोलासिंह है प्रभाकर सिंह चौंके और गौर से उसकी तरफ देखकर चुप ही रहे ।

इसके बाद भोलासिंह को साथ लेकर भूतनाथ उस गुफा की तरफ रवाना हुआ खजाना था , वह खजाना जो साधु महाशय की कृपा से मिला था । रोशनी न करके अँधेरे ही में भोलासिंह को के अन्दर अपने पीछे - पीछे आने के लिए भूतनाथ ने कहा और भोलासिंह भी बेखौफ कदम बढ़ाए चला गया । मगर अंत में जब भूतनाथ खजाने के दरवाजे पर पहुँचा और वह दरवाजा खोल चुका था तब उसने ऐयारों के बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और भोलासिंह की कोठरी के अन्दर आने के लिए कहा ।

सब चाँदी के देग अशर्फियों से नकानक भरे हैं । इसमें से सिर्फ

भूतनाथ : देखो भोलासिंह , इस तरफ निगाह दौड़ाओ एक देग मैंने खाली किया है ।

भोलासिंह : (देगों या हंडों की तरफ देख

बेशक यह बहुत दिनों तक काम देंगे ।

भूतनाथ : वेशक् , साथ ही इसके मुझे देंगे !

भी सुन रखो कि वह साधु महाराज पुनः यहाँ आयेंगे तो ऐसे और भी कई खजाने

भोलासिंह : ईश्वर की कृपा है आपके ऊपर ! हाँ , यदि आप आज्ञा दीजिए तो मैं भी जरा इन अशर्फियों के दर्शन कर

भूतनाथ : हाँ हाँ , अपने हाथों से ही ढकना खोलते जाओ और देखते जाओ , बल्कि मैं यह भी हुक्म देता हूँ कि इस समय जितनी अशर्फियाँ तुमसे उठाते बने उठा लो और अपने घर ले जाकर बाल - बच्चों को दे आओ । तुम खूब जानते हो कि मैं तुम्हें अपने लड़के की तरह मानता हूँ ।

भोलासिंह : निःसन्देह ऐसा ही है मगर मैं इस समय अशफियाँ लेकर क्या करूँगा , आपकी बदौलत मुझे किसी बात की कमी तो है ही नहीं ।

भूतनाथ : नहीं - नहीं - नहीं , तुम्हें जरूर लेना पड़ेगा ।

भोलासिंह : (कई देगों के ढकने उठाकर देखने के बाद) मगर इनमें से तो कई हंडे खाली है , आप कहते हैं कि सिर्फ एक ही हंडे की अशर्फियाँ निकाली गई हैं ।

भोलासिंह : संभव है कि आपके पीछे - पीछे आकर किसी ने देख लिया हो और यह भेद मालूम कर लिया हो ।

भूतनाथ : (ताज्जुब से) क्या कई हंडे खाली पड़े हैं !

इतना कहकर भूतनाथ ने एक - एक करके उन हंडों को देखना शुरू किया मगर यह मालूम करके उसके आश्चर्य का

ठिकाना न रहा कि उसका आधा खजाना एकदम से खाली हो गया है अर्थात् आधे हंडों में अशर्फियों की जगह एक

कौड़ी भी नहीं है ।

भूतनाथ : हैं , यह क्या हुआ ! मैं खूब जानता हूँ कि इन सब हंडों में अशर्फियाँ भरी हुई थीं । मैंने अपने हाथ से इन सभों

को ढकना उठाया था और अपनी आँखों से देखा था ...

भोलासिंह : (वात काटकर) वेशक - वेशक आपने देखा होगा मगर बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी हिफाजत के साथ

रहने पर भी अशर्फियाँ गायब हो गई । मैं कह तो नहीं सकता मगर हमारे साथियों में से किसी - न - किसी की नीयत ...

भूतनाथ : जरूर खराब हो गई , मैंने अपनी जुबान से इस खजाने का हाल अपने किसी साथी से भी नहीं कहा तिस पर

यह हाल !

भूतनाथ : अगर ऐसा नहीं हुआ तो हुआ क्या ? इसका पता लगाना चाहिए और

किस - किस का दिल बेईमान हो गया है , क्योंकि इसमें तो कोई शक नहीं कि

की है ।

चाहिए कि हमारे साथियों में से

साथियों ही में से किसी ने यह चोरी

भोलासिंह : मेरा खयाल तो वह है कि कई आदमियों ने मिलकर

भूतनाथ : हो सकता है , भला तुम ही कहो कि अब मैं :

भोलासिंह : कभी नहीं , मेरा विश्वास अब इन

नमकहरामी ! समो के ऊपर से उठ गया है । हाय - हाय , इतना बड़ा खजाना और ऐसी

भूतनाथ : देखो तो सही मैं कैसा इन लोगों को छकाता हूँ ।

भोलासिंह : आप जल्दी न

भूतनाथ : कहीं ऐसा न हो कि एक - दो दिन ठहरने से यह भी जो बचा है जाता रहे ।

अपने साथियों का विश्वास कर सकता हूँ ।

एक - दो रोज और देख लीजिए ।

की है ।

इतना कहकर भूतनाथ कोठरी के बाहर निकल आया और दरवाजा बंद कर पेचौबात खाता हुआ सुरंग बाहर हो उस

तरफ रवाना हुआ जिधर उसका डेरा था ।

भूतनाथ को इन अशर्फियों के गायब होने का बड़ा ही दुःख हुआ । रात के समय उसने किसी को कुछ कहना मुनासिब न

समझा और चुप ही रहा । मगर रात - भर उसे अच्छी तरह नींद न आई और क्रोध के मारे उसने कुछ भोजन भी नहीं

किया । भोलासिंह कुछ देर के बाद उसके पास से हट गया और किसी दूसरी ही गुफा के बाहर बैठकर उसने रात बिताई ,

जब घंटे - भर रात बाकी रही तब वह घबड़ाया हुआ भूतनाथ के पास आया और देखा कि वह गहरी नींद में सो रहा है ।

भोलासिंह ने हाथ से हिलाकर भूतनाथ को सचेत किया । वह घबराकर उठा बैठा और बोला , " क्यों गया है ! "

भोलासिंह : मालूम होता है कि आज फिर आपकी चोरी हुई !

भूतनाथ : सो कैसे ?

भोलासिंह : मैंने कई आदमियों को उस खजाने वाले सुरंग के अन्दर जाते और वहां से लदे हुए बाहर निकलते देखा है ।

भूतनाथ : फिर वे लोग कहाँ गए ?

भोलासिंह : मालूम होता है कि सब घाटी के बाहर निकल गये , में उन लोगों को नीचे उतरकर उस सुरंग में जो बाहर निकलने का रास्ता है जाते देख लपका हुआ आपके पास आया हूँ , अतः आप शीघ्र उठिए और उन लोगों का पीछा

कीजिए ।

भूतनाथ घबराकर उठ बैठा और बोला , “ जरा देख तो लो कि यहाँ से कौन - कौन गायब हैं ? "

भोलासिंह : इस देखा - देखी में तो बहुत देर हो जाएगी और वे लोग दूर निकल जाएँगे ।

भूतनाथ : अच्छा चलो पहिले बाहर ही चलें ।

दोनों आदमी तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे उतर आए और सुरंग में घुसकर उस घाटी के बाहर निकले । यहाँ बिलकुल ही सन्नाटा था । थोड़ी देर तक ये दोनों इधर - उधर घूमते रहे मगर जब कुछ पता न लगा तो लोटकर सुरंग के मुहाने पर चले आए और यों बातचीत करने लगे

भोलासिंह : मालूम होता है कि वे लोग दूर निकल गये , किस तरफ गये हैं इसका पता लगाना जल्दी में नहीं हो सकता । भूतनाथ : अच्छा तो तुम घाटी के अन्दर जाओ

और वहाँ जो लोग हैं उनका खयाल रखो , मैं पुनः घूमकर टोल लगाता हूँ कि वे लोग कहाँ गये ।

भोलासिंह : नहीं , आप ही घाटी के अन्दर जाइए और लोगों का पता लगाने की आज्ञा दीजिए , क्योंकि जो लोग यहाँ से गए हैं वे अगर अपने ही आदमी हैं तो आखिर लौटकर यहाँ आयेंगे जरूर , ऐसी अवस्था में ज्यादे देर तक पीछा करने की कोई जरूरत नहीं , इसके अतिरिक्त आप घाटी में जाकर इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि वहाँ से कौन - कौन आदमी गायब हैं क्योंकि यह बात मुझे बिलकुल ही नहीं मालूम है कि आजकल किस - किस को आपने किस - किस काम पर मुस्तैद किया है तथा घाटी के अन्दर कौन - कौन रहता है ।

भूतनाथ : ठीक है , अच्छा मैं ही घाटी के अन्दर जाकर पता लगाता हूँ कि कौन - कौन गायब है , अफसोस ! सुरंग के अन्दर दरवाजा खोलना - बंद करना मैंने अपने सब आदमियों को बता दिया है , अगर बताता नहीं तो काम भी नहीं चल सकता था क्योंकि नित्य ही लोग आते - जाते रहते हैं , मेरी गैरहाजिरी में भी उन लोगों को आना - जाना पड़ता था ।

भोलासिंह : ठीक है , बिना बताए काम नहीं चल सकता था ।

भूतनाथ : इसके अतिरिक्त मैंने उन सभों को यह भी हुक्म दे रखा है कि नित्य ही प्रातःकाल सूर्योदय के पहिले बारी - बारी से दो - चार आदमी घाटी के बाहर निकलकर इधर - उधर घूमा - फिरा करें , अगर वे लोग जिन्हें तूने जाते देखा है लौटकर आयेंगे भी तो यही कहेंगे कि हम बालादवी के लिए बाहर गए थे , फिर उन्हें कायल करने और चोर सिद्ध करने के लिए क्या तरकीब हो सकती है ?

भोलासिंह : ठीक ही तो है , फिर जानिए जो मुनासिब समझिएगा कीजिएगा मगर पहले जाकर देखिए तो सही कि कौन गायव है और उस खजाने को भी एक नजर देख लीजिएगा कि बनिस्बत कल के कुछ और भी कम हुआ है या नहीं । जरूर कम हुआ होगा क्योंकि मैंने अपनी आँखों से उन लोगों की कार्रवाई देखी है ।

“ खैर मैं जाता हूँ ' इतना कहकर भूतनाथ घाटी के अन्दर चला गया , सबके पहिले उसने खजाने को देखना मुनासिब समझा और पहिले उसी तरफ गया जिधर खजाने

वाली गुफा थी ।

गुफा के अन्दर घुसकर और खजाने वाली कोठरी का दरवाजा खोल जब भूतनाथ और अन्दर गया और रोशनी करके गौर से उन हंडों को देखा तो मालूम हुआ कि और भी कई हंडे खाली हो गये हैं , भोलासिंह को लेकर जिस समय वह इस कोठरी में आया था उस समय जिन हंडों या देगों में भोलासिंह ने अशर्फियाँ देखी थीं और भूतनाथ ने भी देखी थीं उनमें से चार हंडे इस समय बिलकुल खाली दिखाई दे रहे थे । भूतनाथ ने मन में सोचा कि ' भोलासिंह का कहना बहुत ठीक है , जरूर हमारे आदमियों ने रात को चोरी की है , खैर अब मैं इन हरामखोरों से जरूर समझूंगा । मगर मामला बड़ा कठिन आ पड़ा है , अगर इन शैतानों को यहाँ से निकाल दूँ तब भी काम नहीं चल सकता है क्योंकि यहाँ का रास्ता इन लोगों का देखा हुआ है । अब तो कुछ डरते भी हैं , फिर दुश्मनी की नियत से यहाँ छिपकर आया करेंगे , और यदि मैं खुद इस घाटी को छोड़ दूँ और बचा हुआ खजाना लेकर दूसरी जगह जा रहूँ तो वाबाजी से मुलाकात करनी है । फिर इन सभों को निकाल देने से मैं निश्चित नहीं हो सकता क्योंकि ये सब दुश्मन हो जाएँगे और दुश्मनों से जा मिलेंगे , इससे यही बेहतर है इन सभों को जान से मारकर बखेड़ा तै किया जाय ! "

इसी तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ अपने डेरे की तरफ गया जहाँ प्रभाकर सिंह को कैद रखा था । वहाँ पहुँच कर देखा तो प्रभाकर सिंह भी गायब है ।

क्रोध के मारे भूतनाथ की आँखें लाल हो गईं , उसे विश्वास हो गया कि यह काम भी उसके आदमियों का ही है ।

भूतनाथ ने अपनी गुफा के बाहर निकलकर इशारे की जफील वुलाई जिसके सुनते ही सब शागिर्द और ऐयार उसके पास आकर इकट्ठे हो गए जो इस समय वहाँ मौजूद थे । ये लोग गिनती में बारह जिनमें चार आदमी कुछ रात रहते ही वालादवी के लिए चले गए थे और वाकी आठ आदमी मौजूद थे जो इस भूतनाथ के सामने आये । कौन - कौन आदमी बाहर गया हुआ है यह पूछने के बाद भूतनाथ ने कहा

भूतनाथ : (सभों की तरफ देखकर) बड़े ताज्जुब की बात है

प्रभाकर सिंह इस गुफा के अन्दर से गायब हो गये !

एक : यह तो आप ही जानिए , क्योंकि रात को आप

उनके पहरे पर थे , हम लोगों में से तो कोई यहाँ था नहीं !

भूतनाथ : सो तो ठीक है मगर तुम्हीं सोचो

यकायक यहाँ से उनका गायब हो जाना कैसी बात है !

दूसरा : बेशक ताज्जुब की बात है

भूतनाथ : इसके अतिरिक्त और भी एक बात सुनने लायक है (उँगली से बता के) इस गुफा के अन्दर हमारा खजाना रहता है , उसमें से भी आज लाखों रुपये की जमा चोरी हो गई है , इसके पहिले भी एक दफा चोरी हो चुकी है ।

एक : यह तो आप ताज्जुब की बात सुनाते हैं ! भला यहाँ चोर क्योंकर आ सकता है ? इसके सिवाय उस गुफा में पचासों दफे हम लोग गए हैं मगर वहाँ खजाना वगैरह तो कभी नहीं देखा , न आप ही ने हम लोगों से कहा कि वहाँ खजाना रख आये हैं ।

भूतनाथ : उस गुफा के भीतर एक दरवाजा है और उसके अन्दर जो कोठरी है उसी में खजाना था । उस दिन जो साधु महाशय आए थे उन्हीं का वह खजाना था और वे ही मुझ दे गए थे तथा वे उस कोठरी को खोलने - बंद करने की तरकीब भी बता गए थे , मगर अब हम जो देखते हैं तो वह खजाना आधा भी नहीं रह गया ।

तीसरा : अब ये सब बातें तो आप जानिए , हमें तो कभी आपने इनकी इत्तिला नहीं दी थी इसलिए हम लोगों को उस तरफ कुछ खयाल भी नहीं था ।

भूतनाथ : तो क्या हम झूठ कहते हैं ?

चौथा : यह तो हम लोग नहीं कर सकते मगर इसके जिम्मेदार भी हम लोग नहीं हैं ।

भूतनाथ : फिर कौन इसका जिम्मेदार है ?

चौथा : आप जिम्मेदार हैं या फिर जो चुरा ले गया है वह जिम्मेदार है ! आप तो हम लोगों से इस तरह पूछते हैं जैसे कोई लौंडी या गुलाम से आँख दिखाकर पूछता है । हम लोग आपके पास शागिर्दी का काम करते हैं , ऐयारी सीखते हैं , आपके लिए दिन - रात दौड़ते परेशान होते हैं और हरदम हथेली पर जान लिए रहते हैं , मरने की

भी परवाह नहीं करते , तिस पर आप हम लोगों को चोर समझते हैं और ऐसा बर्ताव करते हैं ! यह हम लोगों के लिए एक नई बात है , आज के पहिले कभी आप ऐसे बेरुख नहीं हुए

थे ।

भूतनाथ : हाँ , बेशक आज के पहिले हम तुम लोगों को ईमानदार समझते थे , यह तो आज मालूम हुआ कि तुम लोग ऐयार नहीं बल्कि चोर और बेईमान हो ।

पाँचवाँ : देखिए जुबान सम्हालिए , हम लोगों को ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं है ।

भूतनाथ : अगर आदत नहीं होती तो ऐसा काम नहीं करते ।

छठा : (क्रोध में भर कर) सीधी तरह से यह क्यों नहीं कह देते कि यहाँ से चले जाओ । इस तरह इज्जत लेने और देने की जरूरत ही क्या है ?

जाओ और इसके बदले में हम बस

भूतनाथ : वाह - वाह , क्या अच्छी बात कही है । तमाम खजाना उठाकर हजम इतना ही कहकर रह जाएँ कि चले जाओ ।

इस तरह की बातें हो रही थीं कि वे बाकी के चार आदमी भी गये जो वालादवी के लिए कुछ रात रहते घाटी के बाहर निकल गये थे । भूतनाथ ने उन सभों से भी इसी तरह बातें की और अच्छी तरह डाँट बताई । उन लोगों ने भी इसकी जानकारी से इनकार किया और कहा कि हम को कुछ भी नहीं मालूम कि कहाँ आपका खजाना रहता है , कब कौन उठाकर ले गया तथा प्रभाकर सिंह को यहाँ से भगा दिया ।

भूतनाथ बड़ा ही लालची आदमी था , रुपये- के लिए वह बहुत जल्द बेमुरौवत बन जाता था और खोटे - से - खोटा काम करने के लिए तैयार हो जाता था । बात तो यह है कि रुपये - पैसे के विषय में वह किसी का एतबार ही नहीं करता था । आज उसकी बहुत बड़ी रकम गायब हो गई थी और मारे क्रोध के वह जल - भुन कर खाक हो गया था । अपने आदमियों पर उसने इतने ज्यादे सख्ती की और ऐसे बुरे शब्दों का प्रयोग किया कि वे सब एकदम बिगड़ खड़े हुए क्योंकि ऐयार लोग इस तरह की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकते ।

इन आदमियों या शागिर्दो के अतिरिक्त भूतनाथ के पास और भी कई आदमी थे जो दूसरी जगह रहते थे तथा और कामों पर मुकर्रर कर दिए गए थे मगर इस घाटी के अन्दर आजकल ये ही बारह आदमी रहते थे जो आज भूतनाथ की बातों से नाराज होकर बेदिल हो गए थे मगर भूतनाथ ने उन्हें सीधी तरह जाने भी नहीं दिया बल्कि तलवार बैंचकर सभों को सजा देने के लिए तैयार किया गया ।

भूतनाथ की कमर में वही अनूठी तलवार थी जो उसने प्रभाकर सिंह से पाई थी , इस तलवार को वह बहुत प्यार करता था और उसे अपनी फतहमंदी का सितारा समझता था । उसके आदमियों को इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस तलवार में कौन - सा गुण हैं । अस्तु लाचार हो वे लोग भी खंजर और तलवारें खींच मुकाबला करने के लिए तैयार हो गये ।

भूतनाथ अकेला ही सभों से लड़ने के लिए तैयार हो गया बल्कि बहुत देर तक लड़ा । भूतनाथ के बदन पर छोटे - छोटे कई जख्म लगे मगर भूतनाथ के हाथ की तलवार का जिसको जरा - सा भी चरका लगा वह बेकार हो गया और तुरन्त बेहोश होकर जमीन पर गिर गया । यह देख उन लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा था । थोड़ी ही देर में कुल आदमी

जख्मी होने के कारण बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े और भूतनाथ ने सभों की मुश्क बाँधकर एक गुफा में कैद कर लिया ।

इसके बाद भूतनाथ घाटी के बाहर निकला और भोलासिंह की खोज में चारों तरफ घूमने लगा मगर तमाम दिन बीत जाने पर भी भोलासिंह का कहीं पता न लगा ।

संध्या होने पर भूतनाथ पुनः लौटकर अपनी घाटी में आया और यह देखने के लिए उस गुफा के अन्दर गया जिसमें अपने शागिर्दो को कैद किया था कि उन सभों की बेहोशी अभी दूर हुई या नहीं , मगर अफसोस , भूतनाथ ने वह तमाशा देखा जो कभी उसके खयाल में भी नहीं आ सकता था , अर्थात् उसके कैदी शागिर्दो में से वहाँ एक भी मौजूद न था , हाँ उनके बदले वह सब सामान वहाँ जमीन पर जमा दिखाई दे रहा था जिससे उनके हाथ - पैर बेकार कर दिये गये थे या उनकी मुश्क बाँधी गई थी ।

अपने शागिर्दों को कैदखाने में न देखकर भूतनाथ को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि वे सब कैदखाने में से निकलकर किस तरह भाग गये ! मैं इनके हाथ - पैर बड़ी मजबूती के साथ बाँध गया था जो बिना किसी की मदद के किसी तरह भी खुल नहीं सकते थे फिर ये लोग क्योंकर निकल गये ? मालूम होता है कि उनका कोई - न - कोई मददगार यहाँ जरूर आया चाहे वह मेरे शागिर्दों का दोस्त हो या मेरा दुश्मन । इधर कई दिनों से ऐसी बातें हो रही हैं कि मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता है । क्या संभव है कि इन लोगों ने होश में आने के आपस में मिल - जुलकर किसी तरह अपने हाथ - पैर खोल लिए हों ? हाँ हो भी सकता है ! अस्तु अब मुझे मानना कि मेरे दुश्मनों की गिनती बढ़ गई क्योंकि वे लोग भी अब मेरे साथ जरूर दुश्मनी की गिनती बढ़ाना अच्छा मगर अफसोस तो यह है कि अब मैं अकेला क्या करूँगा ? दो - चार साथी अगर और है भी तो अब उनका भरोसा ? ये लोग जरूर उनको भी भड़कावेंगे और उन लोगों को जब यह मालूम हो जाएगा कि मैं | शागिर्दों को इस तरह सजा दिया करता हूँ तो वे लोग भी मेरा साथ छोड़ देंगे , बल्कि ताज्जुव नहीं कि भविष्य कोई भी मेरा साथी बनना पसन्द न करे , आह में मुफ्त परेशान उठा रहा हूँ , व्यर्थ का दुःख भोग रहा हूँ ! अगर मालिक के पास चुपचाप बैठा रहता तो , कहो क्या इस तरदुद में पड़ता , मगर अब तो मैं वहाँ भी जाना नहीं करता क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियाँ वहाँ मुझे और भी विशेष कष्ट देंगी । अफसोस , यह बात रणधीररि जी ने मुझसे व्यर्थ ही छिपाई और कह दिया कि दयाराम की दोनों स्त्रियों का देहान्त हो गया । मगर जहाँ खयाल करता हूँ इसमें उनका कसूर कुछ भी नहीं जान पड़ता , संभव है कि मेरी तरह से वे भी धोखे में गए हों और अभी तक उन्हें इस बात की खबर भी न हो कि जमुना और सरस्वती जीती हैं । मगर अब मुझे क्या करना चाहिए वह सोचने की बात है । मैं तो ऐसा गायव हो सकता हूँ कि हवा को भी मेरी खबर न लगे मगर इस घाटी को छोड़ना जरा कठिन हो रहा है क्योंकि अगर मैं यहाँ से चला जाऊँगा तो फिर साधु महाशय से मुलाकात न होगी और मैं उस दौलत को न पा सकूँगा जो उनकी बदौलत मिलने वाली है , मगर यहाँ पर रहना भी अब कठिन हो रहा है । अच्छा कुछ दिन के लिए उस स्थान को अब छोड़ ही देना चाहिए और जो कुछ बचा हुआ खजाना है उसे निकाल ले जाना चाहिए ।

इस तरह की बातें सोचता हुआ भूतनाथ उस गुफा की तरह रवाना हुआ जिसमें उसका खजाना था । जब गुफा के अन्दर जाने के बाद रोशनी लिए हुए खजाने वाली कोठरी में पहुँचा तो देखा कि अब उन हंडों में एक भी अशर्फी बाकी नहीं है , सब - की - सब गायब हो गईं , बल्कि वे हंडे तक भी अब नहीं दिखाई देते जिनमें अशर्फियाँ रखी गई थीं । भूतनाथ का दिमाग हिल गया और वह अपना सिर पीट कर उसी जगह बैठ गया ।

थोड़ी देर बाद भूतनाथ उठा और मोमबत्ती की रोशनी में उसने उस कोठरी को अच्छी तरह देखा , इसके बाद दरवाजा बंद करके निकल आया और गुफा की जमीन को बड़े गौर से देखता तथा यह सोचता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर गया कि " अब यहाँ रहना उचित नहीं है । "

दसवा व्यान।

दोपहर का समय है मगर सूर्यदेव नहीं दिखाई देते । आसमान गहरे बादलों से भरा हुआ है । ठंडी - ठंडी हवा चल रही है और जान पड़ता है कि मूसलाधार पानी बरसा ही चाहता है ।

भूतनाथ अपनी घाटी के बाहर निकल कर अकेला ही तैयार और जंगल की सैर कर रहा है । उसके दिल में हर तरह की बातें उठ रही हैं , तरह - तरह के विचार पैदा हो और मिट रहे हैं । कभी वह अटक कर इस तरह चारों तरफ देखने लग जाता है जैसे किसी के आने की आहट लेता हो और कभी अफील बजाकर उसके जवाब का इंतजार करता है ।

इसी तरह वह बहुत देर तक घूमता रहा , आखिर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गया और कुछ सोचने लगा । थोड़ी देर बाद उसने पुनः जफील बुलाई और उसी समय उसका जवाब भी पाया । भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उसी तरफ रवाना हुआ जिधर से जफील की आवाज आई थी । थोड़ी दूर जाने पर उसने अपने एक शागिर्द को देखा जिसका नाम रामदास था । इसे भूतनाथ बहुत ही प्यार करता और अपने लड़के के समान मानता था वास्तव में रामदास बहुत चालाक और धूर्त था भी । यद्यपि उसकी उमर बीस साल के ऊपर होगी मगर देखने में वह बारह या तेरह वर्ष से ज्यादे का नहीं मालूम होता था । उसकी रेख बिलकुल ही नहीं आई थी और उसकी सूरत में कुदरती तौर पर जनानापन मालूम होता और हाव - भाव में भी उससे किसी तरह की त्रुटि नहीं होती थी । इस समय उनकी पर एक गठरी लदी हुई थी जिसे देख भूतनाथ को आश्चर्य हुआ और उसने आगे बढ़कर पूछा , “ कहो रामदास , रियत तो है ? यह तुम किसे लाद लाये हो ? मालूम होता है कोई अच्छा शिकार किया है ? "

रामदास : (कानी आँख से प्रणाम करके) हाँ , चाचा , मैं बहुत अच्छा शिकार कर लाया हूँ !

भूतनाथ : (प्रसन्न होकर) अच्छा - अच्छा आओ इस पत्थर

चट्टान पर बैठ जाओ , देखो तुम्हारा शिकार कैसा है ?

भूतनाथ ने गठरी उतारने में उसे मदद दी और दोनों आदमी एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये । भूतनाथ ने गठरी खोल कर देखा तो एक बेहोश औरत पर निगाह उसने पूछा , " यह कौन है ? "

रामदास : यह जमना और सरस्वती की लौंडी है ।

भूतनाथ : अच्छा , तुमने इसे कहाँ पाया ?

रामदास : उसी घाटी के बाहर जिसमें वे दोनों रहती हैं । यह किसी काम के लिए बाहर आई थी और मैं आपकी आज्ञानुसार उसी जगह छिपकर पहरा दे रहा था , मौका मिलने पर मैंने इसे गिरफ्तार कर लिया और जबर्दस्ती बेहोश करके एक गुफा के अन्दर छिपा आया जहाँ किसी को यकायक पता नहीं लग सकता था । इसके बाद मैं इसी की सूरत बनकर उस सुरंग के पास चला आया जो उस घाटी के अन्दर जाने का रास्ता है और जहाँ मैंने इसे गिरफ्तार किया था । मेरी यह प्रबल इच्छा थी कि उस घाटी के अन्दर जाऊँ मगर इस बात की कुछ भी खबर न थी कि यह औरत जिसे मैंने गिरफ्तार किया है किस दर्जे की है या किस काम पर मुकर्रर है और इसका नाम क्या है , अस्तु इसके जानने के लिए मुझे कुछ पाखंड रचना पड़ा जिसमें एक दिन की देर तो हुई मगर ईश्वर की कृपा से मेरा काम बखूबी चल गया । मैंने सूरत बदलने के बाद इस लौंडी के कपड़े तो पहिर ही लिए थे जिस पर भी मैं चुटीला बनकर एक पत्थर की चट्टान पर वैट गया और इंतजार करने लगा कि घाटी के अन्दर से कोई आवे तो मैं उसके साथ भीतर पहुँच जाऊँ । थोड़ी देर बाद जमना और सरस्वती स्वयं घाटी के बाहर आईं , उस समय मुझे यह नहीं मालम हुआ कि यह जमना और सरस्वती हैं मगर जब घाटी के अन्दर चला गया और तरह - तरह की बातें सुनने में आईं तब मालूम हुआ कि यही जमना और सरस्वती हैं । यद्यपि ये दोनों कला और बिमला नाम से पुकारी जाती थीं मगर यह तो मैं आपसे सुन ही चुका था कि इन्होंने अपना नाम कला और बिमला रखा हुआ है इसलिए मुझे असल बात जानने में कोई कठिनता न हुई । खैर जब सुरंग के बाहर मुझे कला और विमला ने देखा तो पूछा , " अरी हरदेई , अभी तक इसी जगह बैठी हुई है ? " मैंने धीरे से

इसका जवाब दिया , " मैं पहाड़ी के ऊपर से गिरकर बहुत चुटीली हो रही हूँ , मुझमें दस कदम चलने की भी ताकत नहीं है बल्कि बात करने में भी तकलीफ मालूम होती है । " इसके बाद मैंने कई जगह छिले और कटे हुए जख्म दिखाए जो कि अपने हाथों से बनाये थे । मेरी अवस्था पर उन दोनों को बहुत अफसोस हुआ और वे दोनों मदद देकर मुझे अपनी घाटी के अंदर ले गई और दवा - इलाज करने लगीं । दो दिन तक मैं चारपाई पर पड़ा रहा और इस बीच मुझे बहुत - सी बात मालूम हो गई जिन्हें मैं बहुत ही संक्षेप के साथ इस समय बयान करूँगा । दो दिन के बाद में चंगा हो गया और उन सभों के साथ मिल - जुलकर काम करने लगा क्योंकि इस बीच में मतलब की सभी बातें मुझे मालूम हो चुकी थीं ।

भूतनाथ : निःसन्देह तुमने बड़ी हिम्मत का काम किया , अच्छा तो कौन - कौन बातें वहाँ तुम्हें मालूम हुई ?

रामदास : पहिली बात तो यह मालूम हुई कि बेचारा भोलासिंह उन दोनों के हाथ से मारा गया । खुद कला और बिमला ने उसे मारा था , यद्यपि यह नहीं मालूम हुआ कि कब किस ठिकाने और किस तरह से उसे मारा मगर इसे कई सप्ताह हो गये ।

भूतनाथ : (आश्चर्य से) क्या वह मारा गया ?

रामदास : निःसन्देह मारा गया ।

भूतनाथ : अभी तो कल - परसों वह मेरे साथ था !

रामदास : वह कोई दूसरा होगा जिसने भोलासिंह बनकर आपको धोखा

भूतनाथ : (कुछ सोचकर) वेशक वह कोई दूसरा ही था , अब जो सोचता हूँ तो तुम्हारा कहना ठीक मालूम होता है । हाय मुझसे बड़ी भूल हो गई और मैंने अपने को बर्बाद कर दिया । मेरे साथी - शागिर्द लोग बेचारे अपने दिल में क्या कहते होंगे ! वे लोग अगर मेरे साध दुश्मनी करें तो इसमें

कसूर नहीं ।

रामदास : यह क्या बात हुई , भला कुछ मैं

भूतनाथ : तुमसे कुछ छिपा न रहेगा ,

कुछ तुमसे बयान करूँगा , पहले तुम अपना किस्सा कह जाओ ।

रामदास : नहीं - नहीं , पहिले मैं आपका यह हाल सुन लूँगा तब कुछ कहूँगा ।

रामदास ने इस बात पर बहुत जिद्द किया , आखिर लाचार होकर भूतनाथ को अपना सब हाल बयान करना ही पड़ा जिसे सुनकर रामदास को बड़ा ही दुःख हुआ ।

भूतनाथ : अच्छा और क्या तुम्हें मालूम हुआ ?

रामदास : और यह मालूम हुआ कि जिस साधु महाशय का अभी - अभी आपने जिक्र किया है , जिन्होंने आपको खजाना दिया , वह कला और बिमला के पक्षपाती हैं । जो रंग - ढंग आपने उनके अभी बयान किये हैं ठीक उसी सूरत - शक्ल में मैंने उन्हें वहाँ देखा और वह कहते अपने कानों से सुना था कि ' भूतनाथ को मैंने खूब ही लालच में फँसा लिया है , अब वह इस घाटी को कदापि न छोड़ेगा और प्रभाकर सिंह को भी इसी जगह ले आवेगा , तब हम लोग उन्हें सहज ही में छुड़ा लेंगे ' । इसके अतिरिक्त मुझे यह भी निश्चय हो गया कि वह साधु अपनी असली सूरत में नहीं है बल्कि कोई ऐयार है । मेरे सामने ही उसने बिमला से कहा था कि “ अब मैं इसी सूरत में आया करूँगा । "

भूतनाथ : वेशक वह कोई ऐयार था , मगर अशर्फियाँ किस तरह निकल गईं इसका भी पता कुछ लगा ?

रामदास : इस विषय में तो मैं कुछ भी नहीं कह सकता ।

भूतनाथ : खैर इस बारे में फिर सोचेंगे , अच्छा और क्या देखा - सुना ?

रामदास : और यह भी मालूम हुआ कि गुलाबसिंह आपकी शिकायत लेकर दलीपशाह के पास गये थे , उस समय भी उस बुड्ढे साधु को मैंने उन दोनों के साथ देखा था ।

भूतनाथ : खैर तो अब मालूम हुआ कि दलीपशाह के सिर में भी खुजलाहट होने लगी ।

रामदास : बात तो ऐसी ही है , यह आपका बगली दुश्मन ठीक नहीं । उससे होशियार रहना चाहिए ।

भूतनाथ : बेशक वह बड़ा ही दुष्ट है , आश्चर्य नहीं कि वही भोलासिंह बनकर मेरे पास आया हो ।

रामदास : हो सकता है वही आया हो ।

भूतनाथ : खैर उससे समझ लिया जाएगा । अच्छा यह बताओ कि कुछ इन्द्रदेव का हाल भी तुम्हें मालूम हुआ या नहीं ? मुझे शक होता है कि इन्द्रदेव उन दोनों की मदद पर हैं , ताज्जुब नहीं कि वहाँ वे भी जाते हों । रामदास : इन्द्रदेव को तो मैंने वहाँ नहीं देखा और न उनके विषय में कुछ सुना मगर आपके मित्र हैं फिर आपके विरुद्ध क्यों कोई कार्रवाई करेंगे ?

भूतनाथ : हाँ , मैं भी यही खयाल करता हूँ , खैर अब और बताओ क्या - क्या ...

रामदास : प्रभाकर सिंह मेरे सामने ही वहाँ पहुँचे गये थे मगर में विषय में कुछ विशेष हाल न जान सका क्योंकि और ज्यादे दिन वहाँ रहने की हिम्मत न पड़ी । मुझे मालूम | कि अब अगर और यहाँ रहूँगा तो मेरा भेद खुल जाएगा क्योंकि दलीपशाह ने दो - तीन दफे मुझे जाँच की से देखा , अस्तु लाचार हो मैं बहाना करके एक लोंडी के साथ जो सुरंग का दरवाजा खोलना और बंद करना थी , घाटी के बाहर निकल आया ।

भूतनाथ : तुम्हें सुरंग का दरवाजा खोलने और बंद करने की तरकीब मालूम हुई या नहीं ?

रामदास : नहीं , लेकिन अगर दो - चार दिन और वहाँ रहता तो शायद मालूम हो जाती । इतने ही में पानी बरसने लगा और हवा में भी तेजी आ गई ।

रामदास : अव यहाँ से उठना चाहिए ।

भूतनाथ : हाँ , चलो किसी आड़ की जगह में चलकर आराम करें । मेरी राय में तो अब इस घाटी में रहना मुनासिब न होगा , और साथ ही अब भविष्य के लिए बचे हुए आदमियों को आपस में कोई इशारा कायम कर लेना चाहिए जिसे मुलाकात होने पर हम लोग जाँच के खयाल से बरता करें । जिसमें फिर कभी ऐसा धोखा न हो जैसा भोलासिंह के विषय में हुआ है । तुम्हारा इशारा अर्थात् एक आँख बंद करके प्रणाम करना तो बहुत ठीक है , तुम्हारे विषय में किसी तरह धोखा नहीं हो सकता ।

रामदास : बहुत मुनासिब होगा , अब यह सोचना चाहिए कि हम लोग अपना डेरा कहाँ कायम करेंगे ?

भूतनाथ : तुम ही बताओ ।

रामदास : मेरी राय में तो लामाघाटी उत्तम होगी ।

भूतनाथ : खूब कहा , इस राय को मैं पसन्द करता हूँ !

इतना कह के भूतनाथ ने पुनः उस औरत की गठरी बाँधी जिसे रामदास ले आया था और अपनी पीठ पर लाद वहाँ से खाना हुआ । रामदास भी उसके पीछे - पीछे चल पड़ा ।

ग्यारहवा व्यान।

भूतनाथ के हाथ से छुटकारा पाकर प्रभाकर सिंह अपनी स्त्री से मिलने के लिये उस घाटी में चले गये जिसमें कला और

बिमला रहती थीं । संध्या का समय था जब वे उस घाटी में पहुँचकर कला , बिमला और इंदुमति से मिले । उस समय वे

तीनों बँगले के सुन्दर मैदान में पत्थर की चट्टानों पर बैठी आपस में बातें कर रही थीं । प्रभाकर सिंह को देखकर वे तीनों

बहुत प्रसन्न हुई , कई कदम आगे बढ़कर उनका इस्तकबाल किया तथा उसी जगह लाकर अपने पास बैठाया जहाँ वे सब

बैठी हुई थीं ।

बिमला : मैं भूतनाथ के हाथ से छुट्टी मिलने पर आपको मुबारकबाद देती हूँ । वास्तव में इन्द्रदेव जी ने इस विषय में

बड़ी चालाकी की , नहीं तो हम लोगों से गहरी भूल हो गई थी कि भूतनाथ की घाटी का रास्ता बंद कर दिया था ।

उन्होंने साधु बनकर भूतनाथ को ऐसा धोखा दिया कि वह जन्म - भर याद रखेगा ।

प्रभाकर सिंह : बेशक ऐसी ही बात है , मुझे अभी थोड़ी देर हुई है यहाँ आते समय इन्द्रदेव जी रास्ते में मिले थे जो

तुम्हारे पास होकर जा रहे थे , उन्होंने सब हाल मुझसे कहा था और उस समय भी वे उसी तरह साधु महात्मा बने हुए

थे ।

बिमला : जी हाँ , अब वे बराबर उसी सूरत में यहाँ आया करेंगे , उनका खयाल

भूतनाथ को जरूर पता लग जाएगा और भूतनाथ उनसे खटक जाएगा क्योंकि

असली सूरत में आने - जाने से कभी

बड़ा ही चांगला है ।

प्रभाकर सिंह : उनका खयाल बहुत ही ठीक है , मुझसे भी ऐसा ही थे । उन्होंने मुझसे यह भी पूछा था कि अब

तुम्हारा क्या इरादा है , भूतनाथ का पीछा करोगे या नहीं ? इसके में मैंने कहा कि भूतनाथ का पीछा करने की

बनिस्बत में नौगढ़ के राजा से मिलकर चुनारगढ़ पर चढ़ाई करना अच्छा समझता हूँ क्योंकि राजा शिवदत्त से बदला लिए

विना मेरा जी ठिकाने न होगा और इस काम को मैं बढ़कर समझता हूँ । इन्द्रदेव जी ने मेरी यह बात स्वीकार कर

ली और इस विषय में जो - जो बातें मैंने सोची थी पसन्द किया । भी

इंदुमति : तो क्या अब आप नौगढ़ जाकर चुनार की लड़ाई में शरीक होंगे ।

प्रभाकर सिंह : हाँ मैं जरूर ऐसा ही करूँगा , आजकल कुमारी चन्द्रकान्ता की बदौलत वीरेन्द्रसिंह से और शिवदत्त से खूब

खिंचाखिंची हो रही है , मेरे लिए इससे बढ़कर और कौन - सा मौका मिलेगा !

विमला : आप स्वयं फौज तैयार करके चुनार पर चढ़ाई कर सकते हैं । इस काम में मैं आपकी मदद करूँगी वे सब

अशर्फियाँ जो भूतनाथ को दिखाई गई थीं और पुनः ले ली गई मैं आपको दे सकती हूँ क्योंकि इन्द्रदेव जी ने सब मुझे दे

दी हैं । आप जानते ही हैं कि उस घाटी में जाने के लिए कई रास्ते हैं , इसी तरह उस खजाने वाली कोठरी में भी जाने

के लिए एक रास्ता यहाँ से है और इसी रास्ते से हम लोग उन अशर्फियों को उठा लाये थे ।

प्रभाकर सिंह : मुझे मालूम है , यह हाल इन्द्रदेव जी से सुन चुका हूँ । मगर चुनार के विषय में मैं इस राय को पसन्द नहीं

करता और न इस मामले में किसी से विशेष मदद ही लूँगा । हाँ मेरे दोस्त गुलाबसिंह जरूर मेरा साथ देंगे मगर सुना

कि वे इस समय दलीपशाह के साथ कहीं गये हैं और दलीपशाह भी सुबह - शाम में यहाँ आने वाले हैं ।

विमला : भोलासिंह की सूरत बनाकर दलीपशाह जब से गए हैं तब से पुनः मुझसें नहीं मिले ।

प्रभाकर सिंह : क्या हुआ अगर नहीं मिले तो , इन्द्रदेव जी जब से गए हैं तब से पुनः मुझसे नहीं मिले ।

बिमला : मालूम होता है कि आपने इन्द्रदेव जी से अपने बारे में सब बातें तै कर ली हैं !

प्रभाकर सिंह : हाँ जो कुछ मुझे करना है कम - से - कम उसके विषय में तो मैंने सभी बातें तै कर ली हैं ।

बिमला : तो आप जरूर नौगढ़ जाएँगे ? प्रभाकर सिंह : जरूर ।

विमला : दूसरे ढंग से बदला नहीं लेंगे ? प्रभाकर सिंह : नहीं ।

इंदुमति : तव मैं कहाँ रहूँगी ? प्रभाकर सिंह : तुम्हारे बारे में यह निश्चय हुआ है कि तुम्हें मैं तब तक के लिए जमानिया में राजा साहब के यहाँ रख हूँ , क्योंकि इस समय वे ही मेरे बड़े और बुजुर्ग जो कुछ हैं सो हैं ।

विमला : (चौंककर) मगर ऐसा करने से तो मेरा भेद खुल जाएगा ।

प्रभाकर सिंह : तुम्हारा भेद क्यों खुलेगा ? मैं इन्द्रदेव जी से वादा कर चुका हूँ कि इन सब बातों का वहाँ कभी जिक्र तक न करूँगा , मेरी जुवानी तुम्हारा हाल उन्हें कभी मालूम न होगा , इंदु को भी मैं ऐसा ही करने के लिए ताकीद करूँगा और तुम भी अच्छी तरह समझा देना । क्या मैं नहीं समझता कि तुम्हारा भेद खुल जाने से आपस

में कई आदमियों की खटपट हो जाएगी और वेदाग दोस्ती तथा मुहब्बत में बट्टा लग जाएगा ।

विमला : अगर भूतनाथ किसी तरह इंदु को वहाँ देख ले तो क्या होगा , क्योंकि

अकसर जमानिया जाया करता है ?

प्रभाकर सिंह : तब क्या होगा ? भूतनाथ अपने मुँह से इन सब बातों

जिक्र कदापि न करेगा ।

विमला : मगर दुश्मनी तो जरूर करेगा , क्योंकि इस बात का से खोल न दे ।

जाएगा कि कहीं इंदु इन सब बातों का भेद किसी

प्रभाकर सिंह : एक तो वह जमानिया विशेष जाता ही नहीं है दूसरे अगर कभी गया भी तो महल के अन्दर उसकी गुजर नहीं होगी , तीसरे अगर वह किसी तरह इंदु देख भी लेगा तो वहाँ कुछ गड़बड़ी करने की उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ेगी । फिर इसके अतिरिक्त और मैं कर ही क्या सकता हूँ , मेरे लिए दूसरा कौन - सा घर है ? हाँ अपने साथ नौगढ़ ले चलूँ तो हो सकता है , वहाँ भूतनाथ के जाने का डर नहीं है ।

इंदुमति : मेरा खयाल तो यही है कि जमानिया की बनिस्वत नौगढ़ में मैं ज्यादा निडर रहूँगी ।

विमला : तो आप इन्हें इसी जगह हमारे पास क्यों नहीं छोड़ जाते ?

प्रभाकर सिंह : यहाँ तुम लोग स्वयं ही तरदुद में पड़ी हुई हो , इसके सबब से और भी ...

बिमला : नहीं नहीं , इनके सवव से किसी तरह की तकलीफ मुझे नहीं हो सकती है , और फिर अगर मैं ज्यादे बखेड़ा देखूगी तो इन्हें इन्द्रदेव जी के सुपुर्द कर दूंगी वे अपने घर ले जाएँगे ।

प्रभाकर सिंह : यह सबसे ठीक है , इन्द्रदेव जी का घर हमारे लिए सबसे अच्छा है और उन्होंने ऐसा कहा भी था कि अगर तुम्हारी राय हो तो इंदु को मेरे घर पर रख सकते हो ।

बिमला : तो बस यही ठीक रखिए और इन्हें मेरे पास छोड़ जाइए ।

प्रभाकर सिंह और कला , विमला तथा इंदुमति में इस विषय पर बड़ी देर तक बहस होती रही और अंत में लाचार होकर प्रभाकर सिंह को विमला की बात माननी पड़ी अर्थात् इंदुमति को बिमला ही के पास छोड़ देना पड़ा ।

रात - भर प्रभाकर सिंह वहाँ रहे और प्रातःकाल सभों से मिल - जुलकर नौगढ़ की तरफ रवाना हुए ।

बारहवा व्यान।

गुलाबसिंह को साथ लेकर प्रभाकर सिंह नौगढ़ चले गये । वहाँ उन्हें फौज में एक ऊँचे दर्जे की नोकरी मिल गई और

चुनार पर चढ़ाई होने से उन्होंने दिल का हौंसला खूब ही निकाला । वे मुद्दत तक लौटकर इंदुमति के पास न आये और

न इस तरफ का कुछ हाल ही उन्हें मालूम हुआ ।

जब चुनारगढ़ फतह हो गया , राजा शिवदत्त उदासीन होकर भाग गए , चन्द्रकान्ता की शादी हो गई और चुनार की गद्दी

पर राजा वीरेन्द्रसिंह बैठ गये तब बहुत दिनों के बाद प्रभाकर सिंह को इस बात का मौका मिला कि वे जाकर इंदुमति से

मुलाकात करें ।

प्रभाकर सिंह के दिल में तरह - तरह का खुटका पैदा हो रहा था और यह जानने के लिए वे बहुत - ही उत्सुक हो रहे थे कि

उनके पीछे कला , विमला और इंदुमति पर क्या - क्या बीती , अस्तु वे गुलाबसिंह को साथ लिए हुए बहुत तेजी के साथ

कूच और मुकाम करते एक दिन दोपहर के समय उस पहाड़ी के पास पहुँचे जिसके अन्दर वह सुन्दर घाटी थी जिसमें

कला और बिमला रहती थी । सोच रहे थे कि अब थोड़ी ही देर में उन लोगों से मुलाकात हुआ चाहती है जिनसे मिलने

के लिए जी बेचैन हो रहा है ।

आज कई वर्ष के बाद प्रभाकर सिंह इस घाटी के अन्दर पैर रखेंगे । आज पहिले

नहीं है , बल्कि जाड़े के दिनों में प्रभाकर सिंह उस घाटी के अन्दर जा रहे हैं ,

देता है ।

तरह गर्मी या बरसात का मौसम

चाहिए वहाँ का मौसम कैसा दिखाई

अन्दर सुरंग का दरवाजा खोलना और बंद करना उन्हें बखूबी मालूम बल्कि इस घाटी के विषय में वे और भी बहुत - कुछ

जान चुके थे अस्तु गुलाबसिंह को बाहर ही छोड़कर वे सुरंग घुसे और दरवाजा खोलते और बंद करते हुए उस

घाटी के अन्दर चले गये । मगर उन्हें पहुँचने के साथ कुछ उदासी - सी मालूम हुई । ताज्जुब के साथ चारों तरफ

देखते हुए बँगले के अंदर गये और वहाँ बिलकुल सन्नाटा पाया । जिस बँगले को ये पहिले सजा हुआ देख चुके थे

और जिसके अन्दर पहिले तरह - तरह के सामान [मौजूद थे आज वह बँगला बिलकुल ही खाली दिखाई दे रहा है । घबराहट

की बात तो दूर रही वहाँ एक चटाई बैठने लिये और एक लुटिया पानी पीने के लिए भी मौजूद न थी । यही हाल

वहाँ की आलमारियों का भी था जिनमें से एक भी पहिले खाली नहीं दिखाई देती थी । आज वहाँ हर तरह से सन्नाटा

छाया हुआ है और ऐसा मालूम होता है कि वर्षों से इस बँगले के अन्दर किसी आदमी ने पैर नहीं रखा ।

इस बँगले में से एक रास्ता उस मकान के अन्दर जाने के लिए था जिसमें कला और बिमला खासतौर पर रहती थीं

अथवा जिस प्रकार में पहिले - पहल इंदुमति की बेहोशी दूर हुई थी । प्रभाकर सिंह हैरान और परेशान उस मकान में पहुंचे

मगर देखा कि वहाँ की उदासी उस बँगले से भी ज्यादे बढ़ी - चढ़ी है और एक तिनका भी वहाँ दिखाई न देता ।

" यह क्या मामला है , यहाँ ऐसा सन्नाटा क्यों छाया हुआ है ? कला , विमला और इंदुमति कहाँ चली गईं ? अगर कहीं

किसी आपस वाले के घर में चली गईं तो यहाँ इस तरह उजाड़कर जाने की क्या जरूरत थी ? कहीं ऐसा तो नहीं हुआ

कि वे तीनों भूतनाथ के कब्जे में पड़ गई हों और भूतनाथ ने ही इस मकान को ऐसा उजाड़ बना दिया हो ! " इन सब

बातों को सोचते हुए प्रभाकर सिंह उदास और दुखित चित्त से बहुत देर तक चारों तरफ घूमते रहे और तब यह निश्चय

कर वहाँ से चल पड़े कि अब भूतनाथ की घाटी का हाल मालूम करना चाहिए और देखना चाहिए कि वह किस अवस्था

में है ।

पहिले प्रभाकर सिंह उस सुरंग में घुसे जिसमें से उन्होंने पहिले दिन भूतनाथ की घाटी में इंदुमति को एक अपनी ही सूरत

वाले के साथ ठगे जाते हुए देखा था । सुरंग के अंत में पहुँच सूराख की राह से उन्होंने देखा कि भूतनाथ की घाटी में भी

बिलकुल सन्नाटा छाया हुआ है अर्थात् यह नहीं जान पड़ता कि इसमें कोई आदमी रहता है । कुछ देर तक देखने और

गौर करने के बाद प्रभाकर सिंह सुरंग के बाहर निकल आये । तब उनकी हिम्मत न पड़ी कि एक सायत के लिए भी उस

घाटी के अन्दर ठहरें । उदास और दुखित चित्त से सोचते और गौर करते हुए वे वहाँ से रवाना हुए और सुरंग की गह से कहीं निकलकर संध्या होने के पहिले ही उस टिकाने पहुंचे जहाँ गुलाबसिंह को छोड़ गये थे । दूर ही से प्रभाकर सिंह की सूरत और चाल देखकर गुलाबसिंह समझ गए कि कुछ दान में काला है , रंग अच्छा नहीं

दिखाई देता । जब गुलाबसिंह के पास प्रभाकर सिंह पहुंचे तो सब हाल बयान किया और उदास होकर उनके पास बैठ गए । गुलाबसिंह को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और वे सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए ।

प्रभाकर सिंह के दिल पर क्या गुजरी होगी इसे पाठक स्वयं समझ सकते हैं । उनके लिए दुनिया ही उजाड़ हो गई थी और चुनारगढ़ की लड़ाई में जो कुछ बहादुरी कर आये थे वह सब व्यर्थ ही जान पड़ती थी । दोनों बहादुरों ने मुश्किल से उस जंगल में रात बिताई और सवेरा होने पर अच्छी तरह निश्चय करने के लिए भूतनाथ की घाटी में जाने का इरादा किया । दोनों आदमी वहाँ से रवाना हुए और कुछ देर के बाद उस सुरंग के मुहाने पर जा पहुँचे जिस राह से भूतनाथ अपनी घाटी में आया - जाया करता था । रास्ते तथा दरवाजे का हाल प्रभाकर सिंह से कुछ छिपा न था अस्तु वे दोनों शीघ्र ही घाटी के अन्दर जा पहुंचे और देखा कि वास्तव में यहाँ भी सब उजाड़ पड़ा हुआ है और लक्षणों से जान जाता था कि यहाँ वर्षों से कोई नहीं आया और न कोई रहता है । अब कहाँ चलना चाहिए !

तरह - तरह की बातें सोचते - विचारते प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह घाटी के बाहर निकल आये और एक पेड़ के नीचे बैठकर इस तरह बातचीत करने लगे

गुलाबसिंह : आश्चर्य की बात तो यह है कि दोनों घाटियाँ एकदम से खाली । । अब रणधीरसिंह के यहाँ चलकर पता लगाना चाहिए कि भूतनाथ का क्या हाल है , क्योंकि असल में भूतनाथ ही इस बखेड़े की जड़ है और ताज्जुब नहीं कि वे तीनों औरतें भूतनाथ के कब्जे में आ गई हों । वहाँ चलने से कुछ- -न - कुछ पता जरूर जाएगा ।

प्रभाकर सिंह : रणधीरसिंह जी के यहाँ तो मैं किसी तरह नहीं जा सकता । यद्यपि वे मेरे रिश्तेदार हैं मगर इस समय में उनके दामाद (शिवदत्त) से लड़कर आ रहा हूँ , इसलिए देखते ही वे आग ही जाएँगे क्योंकि उन्हें अपने दामाद और अपनी लड़की की अवस्था पर बहुत दुःख हो रहा

गुलाबसिंह : ठीक है , ऐसा जरूर होगा , मगर यह तो नहीं कहता कि आप सीधे रणधीरसिंह के पास चले चलिए , मेरा मतलब यह है कि हम लोग सौदागरों । सूरत में

वहाँ जाकर किसी सराय में डेरा डालें तथा ऊपर - ही - ऊपर लोगों से मिल - जुलकर भूतनाथ का पता लगायें और जो कुछ हाल हो मालूम करें ।

प्रभाकर सिंह : हाँ यह हो सकता है । अच्छा तो अब यहाँ ठहरना व्यर्थ है , चलो उठो , मैं समझता हूँ कि इन्द्रदेव जी से मुलाकात किये बिना दिल को तसल्ली न होगी ।

गुलाबसिंह : जरूर , वहाँ भी चलना ही होगा , मगर पहिले भूतनाथ की खबर लेनी चाहिए ।

इतना कहकर गुलाबसिंह उठ खड़े हुए , प्रभाकर सिंह ने भी उसका साथ दिया और दोनों आदमी मिर्जापुर की तरफ रवाना हुए , इस बात का कुछ भी खयाल न किया कि समय कौन है और रास्ता कैसा कठिन है ।

तेरहवा व्यान।

प्रेमी पाटक महाशय , अभी तक भूतनाथ के विषय में जो कुछ हम लिख आये हैं उसे आप भूतनाथ के जीवनी की भूमिका ही समझें , भूतनाथ का मजेदार हाल जो अद्‌भुत घटनाओं से भरा हुआ है पढ़ने के लिए अभी आप थोड़ा - सा और सब्र कीजिए , अब उसका अनूठा किस्सा आया ही चाहता है , यद्यपि चन्द्रकान्ता सन्तति में प्रभाकर सिंह और इंदुमति का नाम नहीं आया है मगर भूतनाथ की जीवनी का इन दोनों व्यक्तियों से बहुत ही बड़ा संबंध है और भूतनाथ की बरावरी या ढिठाई का जमाना शुरू होने से बहुत दिन पहिले ही से भूतनाथ का इन दोनों से वास्ता पड़ चुका था और इन्हीं दोनों के सबब से इन्द्रदेव और दलीपशाह के ऊपर भी भूतनाथ की निगाह पड़ चुकी थी इसलिए हमें सबसे पहिले प्रभाकर सिंह और इंदुमति का परिचय देना पड़ा , तथापि आपको आगे चलकर प्रभाकर सिंह और इंदुमति की अवस्था पर आश्चर्य करना पड़ेगा । यद्यपि इंदुमति का पता न लगने से प्रभाकर सिंह को बहुत दुःख हुआ परंतु इन्द्रदेव का खयाल उन्हें ढाँढस दे रहा था । वे समझते थे कि इंदुमति अपनी दोनों बहिनों के साथ जरूर इन्द्रदेव के यहाँ चली गई होगी , अस्तु सबसे पहिले इन्द्रदेव के यहाँ चलकर उसका पता लगाना चाहिए , इस बात का निश्चय कर गुलाबसिंह को साथ लिए हुए प्रभाकर सिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए रवाना हुए ।

जमना और सरस्वती की जुबानी प्रभाकर सिंह को मालूम हो चुका था कि इन्द्रदेव वास्तव में किसी तिलिस्म के दारोगा हैं परंतु इन्द्रदेव ने अपने को ऐसा मशहूर नहीं किया था और न साधारण लोगों उनके विषय में ऐसा खयाल ही था । उसके मुलाकातियों में से भी बहुत कम आदमियों को यह बात मालूम इन्द्रदेव किसी तिलिस्म के दारोगा हैं और यदि कोई इस बात को जानता भी था तो उसे तिलिस्म के विषय में कुछ ज्ञान ही न था । अगर कोई इन्द्रदेव से तिलिस्म के विषय में कुछ पूछता भी तो इन्द्रदेव समझा देते कि यह सब दिल्लगी की बातें हैं । हाँ , दो - चार आदमियों

को इस बात का पूरा - पूरा विश्वास था कि इन्द्रदेव किसी भारी तिलिस्म दारोगा हैं , मगर अपनी जुवान से उन्हें भी पूरा - पूरा पता नहीं लगने देते थे । इसके अतिरिक्त इन्द्रदेव का ऐसा था कि किसी को उनके विषय में जानने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी और न वे विशेष दुनियादारी के मामले में ही पड़ते थे , वह वास्तव में साधु और महात्मा की तरह अपनी जिंदगी बिताते थे मगर ढंग अमीराना था । मतलब यह है कि सर्वसाधारण को इन्द्रदेव के विषय में पूरा - पूरा ज्ञान नहीं था , हाँ इतना मशहूर था कि इन्द्रदेव ऊँचे दर्जे के ऐयार हैं और उनके बुजुर्गों ने ऐयारी के फन में बहुत दौलत पैदा की है बदौलत आज तक इन्द्रदेव बहुत रईस और अमीर बने हुए हैं ।

यह सब कुछ था सही परंतु इन्द्रदेव के दो - चार दोस्त ऐसे भी थे जिन्हें इन्द्रदेव का पूरा - पूरा हाल मालूम था । मगर इन्द्रदेव की तरह वे लोग भी इस बात को मंत्र की भाँति छिपाए रहते थे ।

इन्द्रदेव का रहने का स्थान कैसा था और वहाँ जाने के लिए कैसी - कैसी कठिनाइयाँ उठानी पड़ती थीं इसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है यहाँ पुनः लिखने की आवश्यकता नहीं है , हाँ इतना कह देना आवश्यक जान पड़ता है कि जिन दिनों का हाल इस जगह लिखा जा रहा है उन दिनों इन्द्रदेव निश्चित रूप से उस तिलिस्मी घटी में नहीं रहा करते थे बल्कि अपने लिए उन्होंने एक मकान तिलिस्मी घाटी के बाहर उसके पास ही एक पहाड़ी पर बनवाया हुआ था जिसका नाम " कैलाश " रखा था और इसी मकान मे वह ज्यादा रहा करते थे , हाँ , जब जमाने के हाथों से वह ज्यादे सताए गये और उन्होंने उदास होकर दुनिया ही को तुच्छ समझ लिया तब उन्होंने बाहर का रहना एकदम से बंद कर दिया जैसा कि चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है ।

प्रभाकर सिंह जब इन्द्रदेव से मिलने गये तब उस " कैलाश भवन " में मुलाकात हुई । उन दिनों इन्द्रदेव बीमार थे , यद्यपि उनकी बीमारी ऐसी न थी कि चारपाई पर पड़े रहते परन्तु घर के बाहर निकलने योग्य भी वह न थे । प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह से मिलकर इन्द्रदेव ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और बड़ी खातिरदारी से इन दोनों को अपने यहाँ रखा । प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह ने भी इन्द्रदेव की बीमारी पर खेद प्रकट किया और इसी के साथ अपने आने

का सबब भी प्रभाकर सिंह ने बयान किया जिसे सुनकर इन्द्रदेव की आँखें डबडवा आई और एकांत होने पर उन दोनों में से इस तरह बातचीत होने लगी , इस वातचीत में गुलाबसिंह शरीक नहीं थे ।

इन्द्रदेव : प्रभाकर सिंह , तुम्हें यह सुनकर बहुत दुःख होगा कि तुम्हारी स्त्री इंदुमति हमारे यहाँ नहीं है तथा जमना और सरस्वती का भी कुछ पता नहीं लगता कि वे दोनों कहाँ गायब हो गईं । अफसोस , उन दोनों ने मेरी शिक्षा पर कुछ ध्यान नहीं दिया और अपनी बेवकूफी से अपने को थोड़े ही दिनों में जाहिर कर दिया । अगर वे मेरी आज्ञानुसार अपने को छिपाए रहतीं और धीरे - धीरे कार्य करतीं तो धोखा न उठातीं ।

प्रभाकर सिंह : (दुखित चित्त से) निःसन्देह ऐसा ही है , उस घाटी में पहिले जब मुझसे मुलाकात हुई थी तब उन्होंने कहा था कि ऐसे स्थान में रहकर भी हम लोग अपने को हर वक्त छिपाए रहती हैं , यहाँ तक कि अपनी लौंडियों को भी अपनी असली सूरत नहीं दिखाती ...

इन्द्रदेव : (दुखित चित्त से) वेशक ऐसी ही बात थी और मैंने ऐसा ही प्रबंध कर दिया था कि उनके साथ रहने वाली लौंडियों को भी इस बात का ज्ञान न था कि ये दोनों वास्तव में जमना - सरस्वती हैं । वे सब उन दोनों को कला और विमला ही जानती थीं मगर इस बात को जमना ने बहुत जल्द चौपट कर दिया और लौंडियों पर भरोसा करके शीघ्र ही अपने को प्रकट कर दिया । अगर लौंडियों को यह भेद मालूम न हो गया होता तो भूतनाथ की समझ में खाक न आता कि वे दोनों कौन हैं और क्या चाहती हैं ।

प्रभाकर सिंह : आपका कहना बहुत ठीक है ।

इन्द्रदेव : बड़ों ने सच कहा है कि स्त्रियों के विचार में स्थिरता नहीं और वे किसी भेद को ज्याद दिनों तक छिपा नहीं सकती , कइयों का कथन तो यह है कि स्त्रियों की वद्धि करने वाली होती है । और में भी इसी बात का

पक्षपाती हूँ ।

प्रभाकर सिंह : अफसोस करने के सिवाय और में कहूँ , इन बखेड़ों में मैं तो व्यर्थ ही पीसा गया , मेरे हौंसले सब मटियामेट हो गये और मैं कहीं का भी न रहा । क्या कहूँ

कि कैसी उम्मीदें अपने साथ लेकर आपके पास आया था ,

मगर ...

इन्द्रदेव : प्रभाकर सिंह , तुम एकदम से हताश न हो जाओ और उद्योग का पल्ला मत छोड़ो क्या कहूँ , मैं बहुत दिनों से बीमार पड़ा हुआ हूँ और इस योग्य नहीं कि स्वयं कुछ कर सकूँ तथापि मैंने अपने कई आदमी उन सभों की खोज में दौड़ा रखे हैं । दलीपशाह का भी बहुत दिनों से पता नहीं है , वे भी उन सभों के साथ ही गायब हैं ।

प्रभाकर सिंह : और भूतनाथ ?

इन्द्रदेव : भूतनाथ अपने मालिक के यहाँ स्थिर भाव से बैठा हुआ है । मुद्दत से वह कहीं आता - जाता नहीं है , रणधीरसिंह जी की जो कुछ उसकी तरफ से रंज हो गया था उसे भी भूतनाथ ने ठीक कर लिया । अब तो ऐसा मालूम होता है कि मानो भूतनाथ ने कभी रंग बदला ही न था । इधर साल - भर में चार - पाँच दफे भूतनाथ मुझसे मिलने के लिए आया था मगर जमना और सरस्वती के विषय में न तो मैंने ही कुछ जिक्र किया और न उसने ही कुछ छेड़ा , यद्यपि मालूम होता है कि भूतनाथ उसी विषय में छेड़छाड़ करने के लिए आया था मगर मैंने कुछ चर्चा उठाना मुनासिब न समझा । प्रभाकर सिंह : अस्तु अब क्या करना चाहिए सो कहिए । मैं तो आपका बहुत भरोसा रख के यहाँ आया था परन्तु यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि आपने जमना , सरस्वती के लिए कुछ भी नहीं किया ।

इन्द्रदेव : ऐसा मत कहो , मैंने उन सभों के लिए बहुत उद्योग किया मगर लाचार हूँ कि उद्योग का कोई अच्छा नतीजा न निकला , हाँ यह जरूर मानना पड़ेगा कि मैं स्वयं अपने हाथ - पैर से कुछ न कर सका , इसका सबसे बड़ा सबब तो यह है

कि मैं इस मामले में अपने को प्रकट करना उचित नहीं समझता । दूसरे बीमारी से भी लाचार हो रहा हूँ । खैर जो होना था सो तो हो गया । अब तुम आ गये हो तो उद्योग करो । ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा और में भी हर तरह से तुम्हारी मदद के लिए तैयार हूँ । मेरी यह प्रवल इच्छा है कि किसी तरह उन तीनों का पता लगे । यदि मुझे इस बात का निश्चय हो जाएगा कि उन तीनों से भूतनाथ ने कोई अनुचित व्यवहार

किया है तो मैं निःसन्देह भूतनाथ से बदला लूँगा मगर जब तक इस बात का निश्चय न होगा मैं कदापि भूतनाथ से संबंध न तोड़ूंगा , हाँ , तुम्हें हर तरह से मदद बराबर देता रहूँगा ।

प्रभाकर सिंह : अच्छा तो फिर मुझे शीघ्रता वताइए कि अब क्या करना चाहिए , अब मुझमें बैठे रहने की सामर्थ्य नहीं

इन्द्रदेव : जल्दी न करो , मैं सोच - विचारकर कल तुमसे कहूँगा कि अब क्या करना चाहिए , एक दिन के लिए और सब करो ।

प्रभाकर सिंह : जो आज्ञा , परन्तु ...

लाचार होकर प्रभाकर सिंह को इन्द्रदेव की बात माननी पड़ी परन्तु इस बात का उनको आश्चर्य बना ही रहा कि इन्द्रदेव ने जमना और सरस्वती के लिए इतनी सुस्ती क्यों की और वास्तव में जमना और गायब हो गई हैं या इसमें भी कोई भेद है ।

चौदहवा व्यान।

अब हम कुछ हाल जमना , सरस्वती और इंदुमति का बयान करना उचित समझते हैं । जब महाराज शिवदत्त से बदला लेने का का विचार करके प्रभाकर सिंह नौगढ़ की तरफ रवाना हो गये तो उनके चले जाने के बाद बहुत दिनों तक जमना और सरस्वती के कोई भी ऐसा मौका हाथ न आया कि भूतनाथ से कुछ छेड़छाड़ करें और न भूतनाथ ही ने उनके साथ कोई बदसलूकी की , हाँ यह जरूर होता रहा कि जमना और सरस्वती भूतनाथ की घाटी में ताक - झाँक करके इस बात की वरावर टोह लगाती रहीं कि भूतनाथ क्या करता है अथवा किस धुन में है ।

थोड़े ही दिनों में उन दोनों को मालूम हो गया कि भूतनाथ अब इस घाटी में नहीं रहता , न - मालूम वह कहीं चला गया उसने जगह बदल दी । बहुत दिनों तक उनकी लौंडियाँ और ऐयार इस विषय का पता लगाने के लिए इधर - उधर दौड़ती रहीं मगर सफल - मनोरथ न हो सकीं । कुछ दिन बीत जाने के बाद यह मालूम हुआ कि भूतनाथ अपने मालिक रणधीरसिंह के यहाँ चला गया तथा वरावर एक चित्त से उन्हीं का काम किया करता है और उन्हीं के यहाँ स्थिर भाव से रहता है । यह बात इन दोनों को अच्छी नहीं मालूम हुई और इन दोनों ने समझा कि अब भूतनाथ से बदला लेना कठिन हो गया तथा अव बिना प्रकट भये काम नहीं चलेगा । कई दफे उन दोनों ने सोचा कि रणधीरसिंह के यहाँ चली जाए और जो कुछ मामला हो चुका है उसे साफ कह के भूतनाथ को सजा दिलावें , परन्तु इन्द्रदेव ने ऐसा करने से मना किया और समझाया कि अगर तुम वहाँ चली जाओगी तो रणधीरसिंह मुझसे इस बात के लिए रंज हो जाएँगे कि मैंने इतने दिनों तक तुम दोनों को छिपा रखा और झूठ ही मशहूर कर दिया कि जमना सरस्वती मर गयीं , साथ ही इसके हमसे और भूतनाथ से भी खुल्लम - खुल्ला लड़ायी हो जाएगी । केवल इतना नहीं , यह भी सोच रखना चाहिए कि रणधीरसिंह भूतनाथ का

बिगाड़ न सकेंगे , सिवाय इसके कि उसे यहाँ से निकाल दें बल्कि ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ रणधीरसिंह से रंज होकर उन्हें भी किसी तरह की तकली पहुँचाये ।

इन्द्रदेव का यह विचार भी बहुत ठीक था , इसलिए दोनों भी न गई ।

दिनों तक चुपचाप बैठी रह गयी और रणधीरसिंह के यहाँ

इसी तरह सोचते - विचारते और समय का इंतज करते वर्षों बीत गये और इस बीच में जमना , सरस्वती और इंदुमति प्रायः घूमने - फिरने के लिए इस घाटी से बाहर निकलती रहीं ।

एक दिन माघ के महीने में दोपहर के समय अपनी कई लौडियों को साथ लिए हुए वे तीनों भेष बदले हुए उस घाटी के बाहर निकलीं और जंगल में चारों तरफ घूम - फिरकर दिल बहलाने लगीं । यकायक उनकी निगाह एक मरे घोड़े पर पड़ी जिस पर अभी तक चारजामा कसा हुआ था । वे सब ताज्जुब में आकर उसके पास गईं और गौर से देखने लगीं । यह घोड़ा कई जगह से जख्मी हो रहा था जिससे गुमान होता था कि किसी लड़ाई में इसके सवार ने बहादुरी दिखाई और अंत में किसी सबब से यह भाग निकला है , संभव है कि इसका सवार लड़ाई में गिर गया हो । मगर इस बात पर भी विमला का विचार नहीं जमा , वह यही सोचती थी कि जरूर यह अपने सवार को लेकर भागा है , अस्तु विमला आँख फैलाकर चारों तरफ इस खयाल से देखने लगी कि शायद इस घोड़े की तरह गिरा हुआ कोई आदमी भी कहीं दिखाई दे

जाय ।

विमला , कला और इंदुमति घूम - घूमकर इसका पता लगाने लगीं और आखिर थोड़ी देर में एक आदमी पर उनकी निगाह पड़ी । ये सब तेजी के साथ घबराई हुई उसके पास गई और देखा कि प्रभाकर सिंह बेहोश पड़े हैं , उनका कपड़ा खून से तरबतर हो रहा है , और उनके बदन में कई जगह तलवार के जख्म लगे हुए हैं तथा सर में भी एक भारी जख्म लगा हुआ है जिससे निकले हुए खून के छींटे चेहरे पर अच्छी तरह पड़े हुए हैं । लड़ाई के समय जो तलवार उनके हाथ में थी इस समय भी उसका कब्जा उनके हाथ ही में है ।

प्रभाकर सिंह को इस अवस्था में देखते ही इंदुमति एक दफे चिल्ला उठी और उसकी आँखों में आँसू भर आए , परन्तु तुरन्त ही उसने अपने दिल को संभाल लिया तथा जमना और सरस्वती की तरफ देखा जिनकी आँखों में आँसू की धारा

वह रही थी और खैर जो बड़े गौर से प्रभाकर सिंह के चेहरे पर निगाह जमाए हुए थी ।

इंदुमति : (जमना से) बहिन , तुम इनके चेहरे की तरफ क्या देख रही हो ? जो बातें देखने लायक हैं पहिले उन्हें देखो इसके बाद रोने - धोने का खयाल करना ।

जमनाः (ताज्जुब से) सो क्या है ?

इंदुमति : पहिले तो यह देखो कि इनके पीठ में भी कोई जख्म लगा है या नहीं जिससे यह मालूम हो सके कि इन्होंने लड़ाई में पीठ तो नहीं दिखाई है , इसके बाद इस बात की जाँच करो कि इनमें कुछ दम है या नहीं । अगर इन्होंने लड़ाई में वीरता दिखाई और बहादुरी के साथ प्राण - त्याग किया है तो कोई चिंता नहीं , मैं बड़ी प्रसन्नता से इनके साथ सती होकर कर्त्तव्य पूरा करूँगी , और इनके हाथ की तलवार मुझे पूरा विश्वास दिलाती है कि उन्होंने लड़ाई में पीठ नहीं दिखाई ।

जमनाः मेरा भी यही खयाल है , और वीर पत्नियों के लिए रोना कैसा ? उन्हें तो हरदम अपने पति के साथ जाने के लिए तैयार रहना चाहिए ।

सरस्वती : (प्रभाकर सिंह की नाक पर हाथ रख कर) जीते हैं ! जख्मी होने के सबब से

हो गये हैं !!

सरस्वती की बात सुनकर जमना और इंदुमति ने भी उन्हें अच्छी तरह देखा निश्चय कर लिया कि प्रभाकर सिंह मरे नहीं हैं और इलाज करने से बहुत जल्द अच्छे हो जाएँगे । अब पुनः इंदुमति की आँखों से आँसू की धारा वहने लगी तथा जमना और सरस्वती ने उसे समझाया और दिलासा दिया । इसके बाद सब कोई मिल - जुलकर प्रभाकर सिंह को उठाकर घाटी के अन्दर ले गईं और बँगले के बाहर दालान में एक सुन्दर चारपाई पर लेटाकर उन्हें होश में लाने का उद्योग करने लगीं ।

से थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह चैतन्य हो गए और जमना

मुँह पर केवड़ा और वेदमुश्क छिड़कने तथा लखलखा की तरफ देखकर बोले , " मैं कहाँ हूँ ? "

जमनाः आप घाटी में हैं जहाँ हम दोनों बहिनों तथा इंदुमति से मुलाकात हुई थी ।

प्रभाकर सिंह : (चारों तरफ देखकर) ठीक है , मगर मैं यहाँ कैसे आया ?

जमनाः पहिले ये बताइए कि आपकी तबीयत कैसी है ?

प्रभाकर सिंह : अब मैं अच्छा हूँ , होश में हूँ और सब कुछ समझ सकता हूँ । मगर आश्चर्य में हूँ कि यहाँ कैसे आया !

जमनाः हम लोग घाटी के बाहर घूमने के लिए गई हुई थी जहाँ आपको बेहोश पड़े हुए देखकर उठा लाईं । उस जगह एक घोड़ा भी मरा हुआ दिखाई दिया , कदाचित् वह आप ही का घोड़ा हो ।

प्रभाकर सिंह : वेशक वह मेरा ही घोड़ा होगा , जानवर होकर भी उसने मेरी बड़ी सहायता की और आश्चर्य है कि इतनी दूर तक उड़ाए हुए ले आया ।

इंदुमति : क्या वह घोड़ा लड़ाई में से आपको भगा लाया था ?

प्रभाकर सिंह : हाँ , लड़ाई ऐसी गहरी हो गई थी कि संध्या हो जाने पर भी दोनों तरफ की फौजें बरावर दिल तोड़कर उड़ती ही रह गईं यहाँ तक कि आधी रात हो जाने पर मैं और महाराज सुरेन्द्रसिंह का सेनापति तथा कुँअर बीरेन्द्रसिंह लड़ते हुए दुश्मन की फौज में घुस गए और मारते हुए उस जगह पहुँचे जहाँ कमबख्त शिवदत्त खड़ा हुआ अपने

सिपाहियों को लड़ने के लिए ललकार रहा था । चाँद की रोशनी खूब फैली हुई थी और बहुत से माहताब भी जल रहे थे इसलिए एक - दूसरे के पहिचानने में किसी तरह तकलीफ नहीं मालूम हो सकती थी । महाराज शिवदत्त मुझे अपने सामने देखकर झिझका और घोड़ा धमाकर भागने लगा , मगर मैंने उसे भागने की मोहलत नहीं दी और एक हाथ तलवार का उसके सर पर ऐसा मारा कि वह घोड़े की पीठ पर से लुढ़क कर जमीन पर आ रहा । मुझे उस समय बहुत जख्म लग चुके थे और में

सुबह से उस समय तक बराबर लड़ते रहने के कारण बहुत ही सुस्त हो रहा था , जिस पर महाराज शिवदत्त के गिरते ही बहुत से दुश्मनों ने एक साथ मुझ पर हमला किया और चारों तरफ से घेरकर मारने लगे गर में हताश न हुआ , दुश्मनों के वार को रोकता और तलवार चलाता हुआ उस मंडली को चीरकर बाहर निकला । उस समय मेरा सर घूमने लगा और में दोनों हाथों से घोड़े का गला धाम उससे चिपट गया । फिर मुझे कुछ भी खबर न रही , मैं नहीं कह सकता कि इसके आगे क्या हुआ !

इंदुमति : (प्रसन्न होकर) वेशक आपने बड़ी बहादुरी की । घोड़ा भी उस समय समझ गया कि अब आप बेहोश हो गए हैं और इसलिए आपको यहाँ से ले भागा ।

प्रभाकर सिंह : बेशक ऐसा ही हुआ होगा ।

जमना : अब आप आज्ञा दीजिए तो कपड़े उतार कर आपके जख्म धोए जाएँ ।

प्रभाकर सिंह : जरा और ठहर जाओ क्योंकि मैं उठकर मैदान जाने का इरादा रहा हूँ । जम मुझे बहुत गहरे नहीं लगे हैं , इन पर कुछ दवा लगाने की जरूरत न पड़ेगी , केवल धोकर साफ देना ही काफी होगा ! मेरे लिए एक धोती और गमछे का बंदोबस्त करो और दो आदमी सहारा देकर उठाओ की तरफ ले चलो ।

जमना : बहुत अच्छा , ऐसा ही होगा ।

इतना कहकर जमना ने एक लोंडी की तरफ देखा । सामान दुरुस्त करने के लिए वहाँ से चली गई और दूसरी लोंडी ने बाहर जाने के लिए जल का लोटा भरकर । रख दिया । प्रभाकर सिंह ने उठने का इरादा किया , जमना , सरस्वती और इंदु ने सहारा देकर उन्हें उठाया बल्कि कर दिया । जमना और इंदु का हाथ थामे हुए प्रभाकर सिंह धीरे - धीरे वहाँ से मैदान की तरफ रवाना हुए तथा कई लौंड़ियाँ भी जाने लगीं । उस समय वहाँ हरदेई लोंडी भी मौजूद थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिख आए हैं । हरदेई ने जल से भरा हुआ लोटा उठा लिया और प्रभाकर सिंह के साथ जाने लगी ।

कुछ दूर आगे जाने पर प्रभाकर सिंह ने कहा , " इस तरह चलने और घूमने से तबीयत साफ हो जाती है , तुम लोग अब ठहर जाओ मैं अब सिर्फ एक लौंडी के हाथ का सहारा लेकर और आगे जाऊँगा । " इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने हरदेई की तरफ देखा और जमना तथा इंदु का साथ छोड़ दिया । हरदेई जल का लोटा लिए

आगे बढ़ आई और अपने दूसरे हाथ से प्रभाकर सिंह का हाथ थाम कर धीरे - धीरे आगे की तरफ बढ़ी ।

जमना , सरस्वती और इंदुमति वहाँ से पीछे हटकर एक सुन्दर चट्टान पर बैठ गईं और इंतजार करने लगी कि प्रभाकर सिंह मैदान में होकर लौटें और चश्मे पर जाएँ तो हम लोग भी उनके पास चलें मगर ऐसा न हो सका क्योंकि घंटे - भर से भी कम देर में सब कामों से छुट्टी पाकर हरदेई के हाथ का सहारा लिए हुए प्रभाकर सिंह धीरे - धीरे चलते हुए उस जगह आ पहुंचे जहाँ जमना , सरस्वती और इंदुमति बैठी हुई उनका इंतजार कर रही थीं । जख्मों के विषय में सवाल करने पर प्रभाकर सिंह ने उत्तर दिया कि नहर के जल से मैं सब जख्मों को साफ कर चुका हूँ अब उनके विषय में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है ।

प्रभाकर सिंह भी उन तीनों के पास बैठ गये और लड़ाई के विषय में तरह - तरह की बातें करने लगे । जब संध्या होने में थोड़ी देर रह गई और हवा में सर्दी बढ़ने लगी तब सब कोई वहाँ से उठ कर बँगले के अन्दर चले गये । एक कमरे के अन्दर जाकर प्रभाकर सिंह चारपाई पर लेट रहे । थोड़ी देर तक वहाँ सन्नाटा रहा क्योंकि जरूरी कामों से छुट्टी पाने तथा

भोजन की तैयारी करने के लिए जमना और सरस्वती वहाँ से चली गईं और केवल चारपाई की पाटी पकड़े हुए इंदुमति तथा पैर दवाती हुई हरदेई वहाँ रह गई ।

कुछ देर तक प्रभाकर सिंह और इंदुमति में मामूली ढंग पर धीरे - धीरे बातचीत होती रही इसके बाद प्रभाकर सिंह ने यह कहकर इंदुमति को विदा किया कि ' मैं भूख से बहुत दुखी हो रहा हूँ । जो कुछ तैयार हो थोड़ा - बहुत खाने के लिए जल्द

लाओ ।

आज्ञानुसार इंदुमति वहाँ से उठकर कमरे के बाहर चली गई और तब प्रभाकर सिंह और हरदेई में धीरे - धीरे इस तरह की वातचीत होने लगी

प्रभाकर सिंह : हाँ तुम्हें दरवाजा खोलने का ढंग अच्छी तरह मालूम हो चुका है ?

हरदेई : जी हाँ , उसके लिए कोई चिंता न करें ।

प्रभाकर सिंह : मैं तो इसी फिक्र में लगा हुआ था कि पहले किसी तरह दरवाजा खोलने की तरकीव मालूम कर लूँ तब दूसरा काम करूँ ।

करना अब मेरे लिए कोई कठिन

हरदेई : नहीं , अब आप अपनी कार्रवाई कीजिए , सुरंग का दरवाजा खोलना और काम नहीं है ।

प्रभाकरसिंह : (अपने जेब में से एक निकाल और हरदेई के हाथ में दे कर) अच्छा तो अब तुम इस दवा को भोजन के किसी पदार्थ में मिला देने का उद्योग करो , फिर मैं

हरदेई : अब इंदुमति आ जाएँ तो मैं जाऊँ ।

प्रभाकर सिंह : हाँ मेरी भी यही राय है ।

थोड़ी देर बाद चाँदी की रकावी में कुछ जल और एक गिलास लिए हुए थी

लिए हुए इंदुमति वहाँ आ पहुँची । उसके साथ एक लौंडी चाँदी के लोटे में

प्रभाकर सिंह ने मेवा खाकर जल पीया और इसी बीच में हरदेई किसी काम के बहाने से उठकर कमरे के बाहर चली

गई ।

पंद्रहवा व्यान।

रात आधी से कुछ ज्यादे जा चुकी है । बँगले के अन्दर जितने आदमी हैं सभी बेहोशी की नींद सो रहे हैं क्योंकि हरदेई ने जो बेहोशी की दवा खाने की वस्तुओं में मिला दी थी उसके सबब से सभी आदमी (उस अन्न के खाने से) बेहोश हो रहे हैं । हरदेई एक विश्वासी लौंडी थी और जमना तथा सरस्वती उसे जी - जान से मानती थीं इसलिए कोई आदमी उस पर शक नहीं कर सकता था , परन्तु इस समय हमारे पाठक बखूबी समझ गये होंगे कि यह हरदेई नहीं है बल्कि जिस तरह भूतनाथ प्रभाकर सिंह का रूप धारण किये हैं उसी तरह भूतनाथ का शागिर्द रामदास हरदेई की सूरत में काम कर रहा है , असली हरदेई को तो वह गिरफ्तार करके ले गया था । और सभों की तरह नकली प्रभाकर सिंह भी अपनी चारपाई पर बेहोश पड़े हुए हैं । हरदेई ने आकर प्रभाकर सिंह को लखलखा सुँघाया और जब वे होश में आ गए तो उनसे कहा , " अब उठिए , काम करने का समय आ गया । "

प्रभाकर सिंह : कितनी रात जा चुकी है ? हरदेई : आधी से ज्यादे ।

प्रभाकर सिंह : सभों के साथ मुझे भी वही अन्न खाना पड़ा , यद्यपि मैंने बहुत कम भोजन किया था तथापि बेहोशी का असर ज्यादे रहा ।

इतना कह प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और सब तरफ घूम कर देखने लगे कि कहाँ कौन सोया हुआ है । जमना , सरस्वती , और इंदुमति तो उसी कमरे में फर्श के ऊपर सोई हुई थी जिसमें प्रभाकर और बाकी की सब लौडियाँ एक ऐयार दूसरे कमरे में पड़े हुए थे । प्रभाकर सिंह ने जमना और सरस्वती की तरफ देखकर हरदेई से कहा , “ पहिले तो मुझे यह देखना है कि इन लोगों ने किस ढंग पर अपना चेहरा रंगा हुआ है । "

हरदेई : मैं आपसे कह चुका हूँ कि इन लोगों ने नहीं होता ।

प्रकार की झिल्ली चेहरे पर चढ़ाई हुई है जिस पर पानी का असर

प्रभाकर सिंह : (जमना और सरस्वती रलूँगा ।

चेहरे पर से झिल्ली उतारकर) वेशक यह अनूठी चीज है , इसे मैं अपने पस

हरदेई : (अथवा रामदास) बेशक यह चीज रखने योग्य है ।

प्रभाकर सिंह : इन लोगों ने भी बड़ा ही उत्पात मचा रखा था , आज इनकी चालबाजियों का अंत हुआ । अब उन्हें शीघ्र ही दुनिया से उठा देना चाहिए नहीं तो एक - न - एक दिन इन दोनों की बदौलत बड़ा ही अनर्थ हो जाएगा और मैं किसी को अपना मुँह दिखाने लायक न रहूँगा । (कुछ सोचकर) मगर मुसे इनके गले पर छुरी न चलाई जाएगी , यद्यपि मैं इनकी जान लेने के लिए तैयार हूँ मगर लाचारी से ।

हरदेई : यदि दया आती हो तो इन्हें किसी कुएँ में ढकेल कर निश्चिन्त हो जाइए । जंगल के पीछे की तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़ के एक कुआँ है जो इस काम के लिए बहुत ही मुनासिब होगा । मैं अच्छी तरह जाँच कर चुका हूँ कि वह बहुत गहरा और अँधेरा है , उसमें गया हुआ आदमी फिर नहीं निकल सकता ।

प्रभाकर सिंह : अच्छी बात है , दोनों को ले चलकर उसी कुएँ में डाल दो , मगर इंदुमति को मैं अपने घर अर्थात् लामाघाटी में ले जाऊँगा क्योंकि इसकी जुबानी बहुत - सी बातों का पता लगाना है ।

हरदेई : मैं इस राय को पसन्द नहीं करता , मैं इंदुमति को भी उसी कुएँ में पहुँचाना मुनासिब समझता हूँ ।

प्रभाकर सिंह : (कुछ सोचकर) अच्छा खैर इसे भी उसी में दाखिल करो ।

इतना कह कर नकली प्रभाकर सिंह ने जमना को और रामदास ने सरस्वती को उठाकर पीठ पर लाद दिया और उस

कुएँ पर चले गये जिसका पता रामदास ने दिया था ।

यह कुआँ बँगले के पश्चिम तरफ पहाड़ी के कुछ ऊपर चढ़कर पड़ता था । कुआँ बहुत प्रशस्त और गहरा था मगर इसका

मुँह इतना छोटा था कि वहाँ के रहने वालों ने एक मामूली पत्थर की चट्टान से उसे ढाँक रखा था । कदाचित् रामदास को

इसका पता अच्छी तरह लग चुका था इसलिए वह नकली प्रभाकर सिंह को लिए हुए बहुत जल्द वहाँ जा पहुँचा । जमना

और सरस्वती को जमीन पर रख दोनों ने मिलकर उस कुएँ का मुँह खोला और फिर उन दोनों औरतों को एक - एक

करके उसके अन्दर फेंक दिया । अफसोस ! अफसोस ! अफसोस ! भूतनाथ को इस दुष्कर्म का क्या नतीजा भोगना पड़ेगा

इस पर उसने कुछ भी ध्यान न दिया !

दोनों बेचारियों को कुएँ में ढकेल कर भूतनाथ ने ध्यान देकर और कान लगा कर सुना कि नीचे गिरने की आवाज आती

है या नहीं , मगर किसी तरह भी आवाज उसके कान में न गई जिससे उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ ।

उन दोनों को कुएँ में ढकेलने के बाद रामदास दौड़ा हुआ गया और इंदुमति को उठा लाया । भूतनाथ ने उसे भी कुएँ के

अन्दर ढकेल दिया और फिर पत्थर से उसका मुँह उसी तरह ढाँक दिया जैसा पहिले था ।

इस काम से छुट्टी पाकर भूतनाथ और रामदास ने यह सोचा कि अब वाकी

मार कर बखेड़ा तय कर देना चाहिए क्योंकि इनमें से अगर एक भी

जाएगा , अस्तु यह निश्चय किया गया कि उन सभों के लिए कोई

जमना और सरस्वती तथा इंदु को डाला है उसके अन्दर घुसकर

उसके अन्दर का क्या हाल है ।

औरतें जो इस घाटी में मौजूद हैं उन्हें भी

जाएगी तो भंडा फूटने का डर लगा ही रह

कुआँ खोजना चाहिए , क्योंकि जिस कुएँ में

उचित है कि उसमें पानी है कि नहीं अथवा

आखिर ऐसा ही हुआ। उस कुएँ से थोड़ी दूर पहाड़ ऊपर चढ़कर एक कुआँ और था जिसका मुँह बहुत चौड़ा था।

भूतनाथ और रामदास दोनों आदमी सब लौंड़ियों को बँगले के अन्दर और बाहर से उठा लाए और एक - एक करके

उस कुएँ के अन्दर डाल दिया। आह , भूतनाथ का कैसा कड़ा कलेजा था और यह कैसा घृणित काम उसने किया ! अब

उस घाटी के अन्दर कोई भी न इन दोनों खबर ले।

अव सवेरा हो गया बल्कि सूर्य भगवान भी उदयाचल से निकलकर अपनी आँखों से भूतनाथ और रामदास के कुकर्म

देखने लगे।

भूतनाथ और रामदास उस कुएँ पर आये जिसमें जमना , सरस्वती और इंदुमति को ढकेल दिया था। भूतनाथ ने रामदास

से कहा कि तू कमन्द के सहारे इस कुएँ के अन्दर उतर जा और देख कि इसमें पानी है या नहीं।

भूतनाथ की आज्ञानुसार रामदास कमन्द थामकर उसके अन्दर उतर गया। कमन्द का दूसरा सिरा भूतनाथ ने एक पत्थर

से मजबूती के साथ अड़ा दिया था। रामदास ने नीचे आकर आवाज दी “ गुरुजी , यह कुआँ इस लायक नहीं था कि

इसके अन्दर दुश्मनों को डाला जाता बल्कि यह तो स्वर्ग से भी बढ़ कर सुख देने वाला है। लीजिए अब कमन्द को

छोड़ता हूँ बैंच लीजिए , क्योंकि अब मैं बाहर आने की इच्छा नहीं करता। "

रामदास की बात सुनकर भूतनाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ और जब उसने कमन्द बैंच कर देखा तो वास्तव में उसे ढीला

पाया ।

सोलहवा व्यान।

धीरे - धीरे बिलकुल कमन्द खिंचकर भूतनाथ के हाथ में आ गया और तब वह बड़ी ही बेचैनी के साथ कुएँ के अन्दर झाँककर देखने लगा मगर अंधकार के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं दिया । रामदास भूतनाथ का बहुत ही प्यारा शागिर्द था और साथ ही इसके भूतनाथ को उस पर विश्वास भी परले सिरे का था । इस मौके पर हरदेई की सूरत में जो यह होनहार शागिर्द निःसन्देह किसी दिन मेरा ही स्वरूप हो जाएगा केवल इतना ही नहीं , जिस तरह भूतनाथ उसे लड़के के समान मानता था उसी तरह रामदास भी भूतनाथ को पिता - तुल्य मानता था , अस्तु ऐसे रामदास का इस तरह कुएँ के अन्दर जाकर वेमुरोवत हो जाना कोई मामूली बात न थी । इससे भूतनाथ को बड़ा ही सदमा हुआ और उसने ऐसा समझा कि मानो पला - पलाया और दुनिया में नाम पैदा करने वाला बरावर का लड़का जिसे निधिरूप समझता था हाथ से निकला जा रहा है । भूतनाथ इस सदमे को बर्दाश्त नहीं कर सकता था और उससे यह नहीं हो सकता था कि रामदास को ऐसी अवस्था में छोड़कर वहाँ से चला जाय ।

कुछ देर तक सोचने और विचारने के बाद भूतनाथ ने कमन्द का एक सिरा पत्थर के साथ अड़ाया और तब खुद भी उसी के सहारे नीचे उतर गया ।

भूतनाथ को विश्वास था कि कुएँ के नीचे या तो पानी होगा या बिलकुल सूखे में कला , विमला और इंदुमति की लाश पावेगा और वहीं अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी देखेगा मगर ये सब वातें न थीं । न तो वह कुआँ सूखा था और न उसमें पानी ही दिखाई दिया । इसी तरह कला , विमला , रामदास का भी वहाँ नामोनिशान न था । कमर वरावर मुलायम और गुदगुदी घास कुएँ की तह में जमी हुई । जिस पर खड़े होकर भूतनाथ ने सोचा कि कोई आदमी ऊपर से इस घास पर गिरकर चुटीला नहीं हो सकता , अतएव निश्चय है कि कला , विमला और इंदुमति मरी न होगी , मगर

आश्चर्य है कि यहाँ उनमें से एक भी नजर नहीं आती और न रामदास ही का कुछ पता है ।

उस कुएँ की तह में बिलकुल ही अँधकार था इसति अच्छी तरह देखने - ढूँढ़ने और जाँच करने के लिए भूतनाथ नले अपने ऐयारी के बटुए में से मोमबत्ती निकाल रोशनी की और बड़े गौर से चारों तरफ देखने लगा ।

अन्दर से वह कुआँ बहुत चौड़ा था और उसकी दीवारें संगीन थीं । जब कोई आदमी वहाँ नजर न आया तब भूतनाथ ने उस घास के अंदर टटोलना और ढूँढ़ना शुरू किया मगर इससे भी कोई काम न चला । हाँ , दो बातें जरूर ताज्जुब की वहाँ दिखाई पड़ीं । एक तो उस कुएँ की दीवार में से (चारों तरफ) थोड़ा - थोड़ा पानी टपक कर तह में आ रहा था जिससे सिर्फ वहाँ की घास जो एक अजीव किस्म की थी बराबर तर और ताजा बनी रहती थी , दूसरे छोटे - छोटे दो दरवाजे भी दीवार में दिखाई दिये जो एक - दूसरे के मुकाबले में थे । भूतनाथ बड़े ही आश्चर्य से उन दरवाजों को देख रहा था क्योंकि जब कुएँ में इधर - उधर घूमता तो कभी कोई दरवाजा (उन दोनों में से) बंद हो जाता और कोई खुल जाता । मगर जब वह कुछ देर तक एक ही ढंग पर कायम रह जाते अर्थात् जो खुल जाता वह खुला ही रह जाता और जो बंद होता वह बंद ही रह जाता । अस्तु भूतनाथ ने समझा कि इन दरवाजों के खुलने और बंद होने के लिए वहाँ की जमीन ही में कदाचित् कोई कमानी लगी हुई है वह बहुत देर तक इधर - उधर घूम कर इन दरवाजों के खुलने और बंद होने का तमाशा देखता रहा ।

इसी बीच में एकाएक गाने की सुरीली आवाज भूतनाथ के कानों में पड़ी जो किसी औरत की मालूम पड़ रही थी और उन्हें दोनों में से एक दरवाजे के अन्दर से आ रही थी तथा थोड़ी देर बाद ही पखावज तथा कई पाजेबों के बजने की आवाज आई जो सम और ताल से खाली न थी । कभी - कभी गाने की आवाज एक - दम बंद हो जाती और केवल पाजेब की आवाज सुनाई देती जिससे भास होता कि वे सब औरतें (यों जो कोई हों) पखावज की गत के साथ मिलकर नाच रही हैं ।

अव भूतनाथ से ज्यादे देर तक ठहरा न गया और वह हाथ में मोमबत्ती लिए हुए उस दरवाजे के अन्दर घुस गया जिसके

अन्दर से गाने तथा घूंघरू के बजने की आवाज आ रही थी ।

दरवाजे के अन्दर पैर रखते ही भूतनाथ को मालूम हो गया कि यहाँ तो खासी लंबी - चौड़ी इमारत बनी हुई है और ताज्जुब नहीं कि कुछ और आगे बढ़ने से बड़े - बड़े दालान और कमरे भी दिखाई पड़े । वास्तव में बात भी ऐसी ही थी ।

कुछ दूर आगे बढ़ते ही भूतनाथ ने उजाला पाया और देखा कि एक सुन्दर दालान में चार - पाँच औरतें हाथ में मशाल लिए खड़ी हैं और कई औरतें गा - बजा तथा कई नाच रही हैं । यद्यपि भूतनाथ के दिल में आगे बढ़कर देखने और उन लोगों को पहिचानने का उत्साह भरा हुआ था मगर साथ ही इसके वह डरता भी था कि आगे बढ़ने से कहीं मुझ पर कोई आफत न आवे ।

भूतनाथ ने मोमबत्ती बुझाकर बटुए में रख ली और हाथ में खंजर लेकर दवे कदम धीरे - धीरे आगे बढ़ने लगा । ओफ ! यह क्या भूतनाथ के लिए कोई कम आश्चर्य की बात है कि उन औरतों में भूतनाथ ने अपने प्यारे शागिर्द रामदास को भी नाचते हुए देखा और मालूम किया कि वह अपनी धुन में ऐसा मस्त हो रहा है कि उसे किसी बात की मानो परवाह ही नहीं है । सबसे ज्यादे आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह (रामदास) भूतनाथ को देखकर बहुत रंज हुआ और कड़े शब्दों की बौछार करते हुए उसने भूतनाथ को निकल जाने के लिए कहा ।

दूसरा भाग समाप्त।

भूतनाथ

भूतनाथ

तीसरा भाग

बाबू देवकीनन्दन खत्री

भारत पुस्तक भण्डार

तीसरा भाग

पहला व्यान।

काशी शहर के बाहर उत्तर तरफ लाट भैरव का एक प्रसिद्ध स्थान है , पास में एक पक्का तालाव है और स्थान के इर्द - गिर्द कई पके कुएँ भी हैं । वही पक्का तालाब कपालमोचन तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है । काशी खंड में वहाँ स्नान करने का बड़ा ही महात्म्य लिखा है । इस तालाब के कोने पर (कुछ हट के) एक कुआँ है जिससकी जगत बहुत ऊँची है और ऊपर बैठने का स्थान भी बहुत प्रशस्त है तथा सीढ़ी के दोनों तरफ छोटे - छोटे दो दालान भी बने हैं जिनसे मुसाफिरों और यात्रियों का बहुत उपकार होता है तथा काशी के मनचले और आशिक - मिजाज लोगों को सैर - सपाटे के समय (यदि बरसात का मौसम हो तो) रोटी - बाटी बनाने में भी अच्छी सहायता मिलती है ।

इस तालाव या कुएँ के पास में सिवाय जंगल - मैदान के किसी गृहस्थ का कोई कच्चा या पक्का मकान नहीं है । अगर यहाँ दस - पाँच आदमी आपस में लड़ - भिड़ जाएँ तो पास के किसी अड़ोसी - पड़ोसी की सहायता भी नहीं मिल सकती ।

इसी कुएँ पर संध्या होने से कुछ पहिले हम काशी के पांच - सात खुशमिजाज आदमियों को बैठे हँसी - दिल्लगी करते तथा भंग - बूटी के इंतजाम में व्यस्त देख रहे हैं । कोई भंग धो रहा है , कोई पसीने का चिकना पत्थर धोकर जगह साफ करने की धुन में है , कोई टिकिया सुलगा रहा है और कोई गौरैया (मिट्टी के हुक्के) में पानी भर रहा है , इत्यादि तरह - तरह के काम में सब लगे हुए हैं और साथ - ही - साथ अपनी बनारसी अधकचरी तथा अक्खड़ भाषा में हँसी - दिल्लगी भी करते जाते हैं । उनकी बातें भी सुनने के ही लायक हैं । यद्यपि इससे किसी तरह का उपकार तो नहीं हो सकता परन्तु मन - बहलाव जरूर है और इस प्रकार की जानकारी भी हो सकती है अस्तु सुनिए तो सही ।

एक : (जो भंग धो रहा था) यार , देखो साले दुकानदार ने मुफ्त ही चार पैसे ले लिए , हमें तो यह भंग दो पैसे की भी जमा नहीं दिखाई देती । यह देखो निचोड़ने पर मुट्ठी - भर के भी नहीं होती !

दूसरा : (उचक के देख के) हाँ यार , यह तो कुछ भी नहीं है । तू हूँ निरे गौखे ही रह्यो , पहिले काहे नहीं कहा , साले की टोपी उतार लेते और ऐसे गड्डो देते कि जनम - भर याद रखता ।

तीसरा : ऐसे ही तो जमा मार के सरवा मुटा गया है । तोंद कैसी निकली हुई है सारे की !

चौधा : अच्छा अब कल समझेंगे चोंधर से ।

पाँचवाँ : कल आती दफे धीरे - से उसकी दौरी ही उलट देंगे , ज्यादे बोलेगा तो लड़ जाएंगे और गुल करेंगे कि चार आना पैसा तो ले लिहिस है मगर भाँग देता ही नहीं ।

छठा : (जो भला आदमी और कुछ पैसे वाला ही मालूम होता है क्योंकि उसके गले में सोने की सिकरी पड़ी हुई थी) नहीं - नहीं ऐसा न करना , कोई जान - पहिचान का देख लेगा और जाकर कह देगा तो मुफ्त की झाड़ । सुननी पड़ेगी । दूसरा : अरे रहो बाबू साहब , हम लोगन के साथ आया करो तो ऐसी भलमानसी घर छोड़ आया करो , हम लोग ऐसे दवा करें तो दिन - दुपहरिया लुट जाएँ !

(लेखक : कंगाल बाँकड़े भी खूब ही लुटा करते होंगे !)

सातवाँ : (सुलग गई हुई टिकिया हाथ में हिलाते हुए) अरे यारी , ये वाबू साहब ठहरे महाजन आदमी , भला ई लोग लड़ना - भिड़ना का (क्या) जानें , चाहे कोई धोती उतार के ले जाय । ई (यह) हम ही लोगन (लोगों) के काम हो कि कोई

आँख दिखाये तो कान उपार (उखाड़) लेई । हमी लोगन की बदौलत बाबू साहब बचत भी जात हैं , नहीं तो गूदड़ सफरदा सरया ऐसा रंग बाँधे लगा था कि बस कुछ पूठा ही नहीं , ओ रोज (उस दिन) चिथट्ट न होते तो गले की सिकरिए उतार लिए होता ।

छटा : (अर्थात् बाबू साहब) हाँ यह बात तो टीक है और जी में तो उसी रोज आ गया था कि अब आज से इस रास्ते को छोड़ दें और रंडी - मुंडी का नाम भी न लें बल्कि कसम खाने लिए भी तैयार हो गया था मगर क्या करें , ' नागर ' की मुहब्बत ने ऐसा करने नहीं दिया , वह वेशक मुझे प्यार करती है और मुझ पर आशिक है ।

सातवाँ : (मुसकुराते हुए) बल्कि तुम पर मरती है ! एक दिन हमसे कहती थी कि बाबू साहब हमें छोड़ देंगे तो हम जहर खा लेंगे !!

इसी तरह ये लोग बेतुकी और अक्खड़पन लिए हुए मिश्रित भाषा में बातचीत कर रहे थे कि यकायक विचित्र ढंग का एक नया मुसाफिर यहाँ आ पहुँचा और उसने कुएँ के ऊपर चढ़ते हए इस सातवें आदमी की आखिरी बात बखूबी सुन ली । इस आदमी की उम्र का पता लगाना जरा कठिन है , तथापि बाबू साहब की निगाह में वह पैंतीस वर्ष का मालूम पड़ता था । कद जरा लंबा और चेहरा रोआबदार था , कपड़े की तरफ ध्यान देकर कोई नहीं कह सकता था कि यह किस देश का रहने वाला है । भीतर चाहे जैसी पोशाक् हो मगर ऊपर एक स्याह अबा डाले हुए था और एक छोटी - सी गठरी हाथ में थी ।

पहिले से जो लोग उस कुएँ पर बैठे हँसी - दिल्लगी कर रहे थे उनके दिल में आया कि इस नये मुसाफिर से कुछ छेड़छाड़ करें और वहाँ से भगा दें क्योंकि वास्तव में काशी के रहने वाले अक्खड़ मिजाज लोगों की आदत ही ऐसी होती है , जहाँ इस मिजाज के चार - पाँच आदमी इकट्ठे होते हैं वहाँ वे लोग अपने आगे किसी को कुछ समझते ही नहीं और दूसरे लोगों से बिना दिल्लगी किये नहीं रहते ।

एक : (नये मुसाफिर से) कहाँ रहते हो साहब ?

मुसाफिर : गयाजी ।

दूसरा : यहाँ कब आये ?

मुसाफिर : आज ही तो आये हैं ।

दूसरा : तभी आप इस कुएँ पर आए हैं , अगर कोई जानकार होता तो यहाँ कभी न आता ।

मुसाफिर : सो क्यों ?

चौधा : यहाँ शैतान और जिन्न लोग रहते हैं , जो कोई नया मुसाफिर आता है उसे चपत लगाए बिना नहीं रहते ।

मुसाफिर : ठीक है , तो तुम लोगों को भी उन्होंने चपत लगाया होगा ? दूसरा : (चिढ़कर , जोर से) हम लोगों से वे लोग नहीं बोल सकते क्योंकि हम लोग यहाँ के रहने

वाले हैं और उन सभों के दोस्त हैं !

मुसाफिर : वेशक शैतान के दोस्त शैतान ही होते हैं !

चौथा : क्यों वे , मुँह सम्हाल के नहीं बोलता !

मुसाफिर : अबे - तचे करोगे बच्चा तो ठीक करके रख देंगे ! हमें कोई मामूली मुसाफिर न समझना !! पाँचवाँ : (ललकार कर) मार साले के , वे अड़या चपत ।

इतना कहकर पाँचवाँ आदमी उटा और मुक्का तान कर उस मुसाफिर की तरफ झपटा । मारना ही चाहता था कि मुसाफिर ने हाथ पकड़ लिया और ऐसा झटका दिया कि वह कुएँ के नीचे जा गिरा और बहुत चुटीला हो गया । यह कैफियत देखते ही बाबू साहब तो डर के मारे कुएँ के नीचे उतर गए और किसी झाड़ी में जाकर छिप रहे मगर वाकी के सब आदमी उस मुसाफिर पर जा टूटे और एक ने अपनी कमर से एक छुरी भी निकाल ली । मगर मुसाफिर ने उन सभों की कुछ भी परवाह न की । बात - की - बात में उसने और तीन आदमियों को कुएँ के नीचे ढकेल दिया और उसके बाद कमर से खंजर निकालकर मुकाबिले को तैयार हो गया । खंजर की चमक देखते ही सभों का मिजाज ठंडा हो गया और मेल - माकफत के ढंग की बातचीत करने लगे , मगर मुसाफिर का गुस्सा कम न हुआ और उसने लात तथा मुक्कों में खूब सभी की मरम्मत की , इसके बाद एक किनारे हटकर खड़ा हो गया और बोला , " कहो अब क्या इरादा है ? "

मुसाफिर की हिम्मत और मर्दानगी देखकर सभों को बड़ा आश्चर्य हुआ । उनको इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यह अर्कला आदमी हम लोगों को इस तरह नीचा दिखा देगा । सभों ने समझा कि यह जरूरी कोई राक्षस या जिन्न है जो आदमी का रूप धर के हम लोगों को छकाने के लिए आया है , अस्तु किसी ने भी उसकी बातों का जवाब नहीं दिया बल्कि डरते हुए अपना सामान और कपड़ा - लत्ता उठा कर भागने के लिए तैयार हो गये मगर मुसाफिर ने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा , " देखो तुम लोगों ने जान - बूझकर मुझसे छेड़खानी की और तकलीफ उठायी अस्तु अब शान्त होकर बैठो और अपना - अपना काम करो । तुम्हारे कई साथियों को सख्त चोट आ गई है सो उसे धोकर पट्टी बाँधी और कुछ देर आराम लेने दो , और हाँ यह तो बताओ कि तुम्हारे वह सुन्दर - सलोने बाबू साहब कहाँ चले गये जिन पर बीवी नागर आशिक हो गई हैं ? "

एक : न - मालूम कहाँ चला गया , ऐसा भग्गू आदमी ..

दूसरा : जाने दो , अगर भाग गया तो जहन्नुम में जाय , उसी के सबब से तो हम लोग तकलीफ उठाते हैं ।

मुसाफिर : नहीं - नहीं , भागो मत , अपने साथी को आने दो बल्कि खोजो कि वह कहाँ चला गया है । यह कोई भलमनसी की बात नहीं है कि उसे इस तरह छोड़कर सब कोई चले जाओ , हम तुम लोगों को भी कभी न जाने देंगे और खास करके तुम्हारे सुन्दर सलोने से तो जरूर ही बातचीत करेंगे ।

मुसाफिर की बातों ने उन लोगों को और भी परेशान कर दिया । उसका रोब इन सभों पर ऐसा छा गया था कि उसकी तरफ आँख उठाकर देख नहीं सकते थे और उसे आदमी नहीं बल्कि देवता या राक्षस समझने लग गये थे , अस्तु उसका रोकना इन लोगों को और भी बुरा मालूम हुआ और सभों ने डरते हुए हाथ जोड़ कर कहा , “ बस अब कृपा कीजिए और हम लोगों को जाने दीजिए । "

मुसाफिर : नहीं - नहीं , यह कभी न होगा , पहले तुम अपने साथी को तो खोजो ..

एक : अब हम उसे कहाँ खोजें ?

मुसाफिर : चलो हम भी तुम लोगों के साथ मिलकर उसे खोजें । वह कहीं दूर न गया होगा , इसी जगह किसी झाड़ी में छिपा होगा । तुम लोग डरो मत , अब हमारी तरफ से तुम्हें किसी तरह की तकलीफ न पहुंचेगी ।

यद्यपि मुसाफिर ने उन लोगों को बहुत दिलासा दिया और समझाया मगर उन लोगों का जी ठिकाने न हुआ और डर उनके दिल से न गया बल्कि इस बात का खयाल हुआ कि यह मुसाफिर बाबू साहब को खोजने के बाद जिद्द करता है तो इसमें कोई भेद जरूर है , बेशक बाबू साहब को खोज कर उन्हें तकलीफ देगा । मगर जो हो उन सभों को खोजना ही

पड़ा ।

उधर वाबू साहब उस कुएँ के पास ही एक झाड़ी में छिपे हुए सब देख - सुन रहे थे और डर के मारे उनका तमाम बदन काँप रहा था । जब उन्होंने देखा कि वह राक्षस सभों को

लिए हुए उनकी खोज में कुएँ के नीचे उतरा है तव तो वह एकदम घबड़ा उठे और उनके मुँह से हजार कोशिश करके रोकने पर भी एक चीख की आवाज निकल ही पड़ी । आवाज सुनते ही वह मुसाफिर समझ गया कि इसी झाड़ी के अन्दर बाबू साहब छिपे हुए हैं , झपटकर वहाँ जा पहुँचा और झाड़ी के अन्दर से हाथ पकड़ के वाबू साहब को बाहर निकाला । मालूम होता था कि बाबू साहब को इस समय जडैया बुखार चढ़ आया है । उनका तमाम बदन तेजी के साथ काँप रहा था । बाबू साहब जल्दी से मुसाफिर के पैरों पर गिर पड़े और आँसू बहाते हुए बोले , “ ईश्वर के लिए मुझे माफ करो , में बड़ा ही गरीब हूँ किसी के भले - बुरे से मुझे कुछ सरोकार नही , मैंने आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ा है ! "

मुसाफिर : डरो मत , मैंने तुम्हें किसी बुरी नीयत से नहीं ढूँढा है , ये लोग तुम्हें वहाँ जंगल में छोड़कर भागे जाते थे , इसीलिए मैंने सभी को रोक लिया और कहा कि अपने साथी को खोज कर अपने साथ लिए जाओ । अब तुम वेफिक्र होकर अपने दोस्तों के साथ अपनी प्यारी नागर के पास चले जाओ , मुझसे बिलकुल मत डरो ।

मुसाफिर की बातों से बाबू साहब को कुछ ढाँढस हुई , वे सम्हल कर उठ खड़े हुए और मुसाफिर से कुछ कहा ही चाहते थे कि पास की दूसरी झाड़ी में से एक दूसरा आदमी निकलकर झपटता हुआ उन सभों के पास आ पहुँचा और मुसाफिर की तरफ देख के बोला , “ तुम क्यों इस बेचारे सीधे और डरपोक आदमी को तंग कर रहे हो , नहीं जानते कि तुम्हारा गुरु चन्द्रशेखर इसी जगह छिपा हुआ तुम्हारी शैतानी का तमाशा देख रहा है ! "

उस आदमी की सूरत - शक्ल का अंदाजा नहीं मिल सकता था क्योंकि उसका तमाम बदन स्याह कपड़े से छिपा हुआ था और चेहरे पर भी स्याह नकाब पड़ी हुई थी , मगर वह मुसाफिर उसकी बात सुन कर बड़े गौर में पड़ गया और आश्चर्य के साथ उसकी तरफ देखने लगा ।

मुसाफिर : तुम कौन हो , पहिले अपना परिचय दो तब मैं तुमसे कुछ बात करूँ ।

नया आदमी : तुम्हारा मुँह इस योग्य नहीं है कि मुझ से बात करो और परिचय के लिए यही काफी है कि मेरा नाम चन्द्रशेखर है । लेकिन अगर इससे भी विशेष कुछ जानने की इच्छा हो तो मैं और भी कुछ कहने के लिए तैयार हूँ ! आह , वह धोखा देने वाली

चाँदनी रात ! बात की बात में चन्द्रमा बादलों में छिप गया और अँधकार हो जाने के कारण तरह - तरह की भयानक सूरतें दिखाई देने लगीं । उसी समय पहिले एक स्याह रंग का ऊँट दिखाई दिया जिसके सिर पर लंबे - लंबे सींघ बिजली की तरह चमक रहे थे ।

मुसाफिर : (डर के मारे काँपता और पीछे की तरफ हटता हुआ) बस ! बस ! मैं समझ गया कि तुम कौन हो !! चन्द्रशेखर : उसके बाद एक सफेद रंग का हाथी दिखाई दिया जिसके ऊपर नागर और मनोरमा मशाल लिए हुई थी और जोर - जोर से श्यामलाल को पुकार रही थीं क्योंकि वे चाहती थीं कि किसी तरह खून से लिखी हुई किताब उनके हाथ लगे ।

मुसाफिर : (हाथ जोड़ कर) मैं कह चुका और फिर भी कहता हूँ कि बस करो , माफ करो , दया करो , मैं तुम्हें पहिचान गया , अगर तुम्हें कुछ कहना ही हो तो किनारे चलकर कहो जिसमें कोई तीसरा न सुनने पावे ।

चन्द्रशेखर : नहीं - नहीं , मैं इसी जगह सबके सामने ही कहूँगा क्योंकि इन बाबू साब का इस मामले से बहुत ही घना संबंध है तथा इसके साथी लोग भी इसी जगह आकर इकट्ठे हो गये हैं और आश्चर्य भरी निगाहों से हम दोनों का तमाशा देख रहे हैं । हाँ तो मैं क्या कह रहा था ? अच्छा , अब याद आया , उसी अँधेरी रात में एक विल्ली भी आ पहुँची जो अपने मुँह से लंबी गर्दन वाला स्याह रंग का ऊँट दवाए हुए थी और ऊँट के माथे पर लिखा हुआ था

" सर्वगुण सम्पन्न चांचला सेठ "

“ बस बस बस ! " कहता हुआ मुसाफिर पीछे की तरफ हटा और काँपता हुआ जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो

गया ।

इस नए आए हुए व्यक्ति तथा इस मुसाफिर की बातचीत से सभी को आश्चर्य तो हुआ ही था परन्तु मुसाफिर की अन्तिम अवस्था देखकर सभी को बड़ा विस्मय और आनन्द भी हुआ । इसके बाद जब मुसाफिर खोफ से बेहोश हो गया और नये आदमी अर्थात् चन्द्रशेखर ने बाबू साहव तेथा उनके साथियों को बहुत जल्द वहाँ से चले जाने के लिए

कहा तब वे लोग इस तरह वहाँ से भागे जैसे बाज के झपट्टे से बची हुई चिड़ियाएँ भागती जब वे लोग तेजी के साथ चलकर घने मुहल्ले में पहुंचे तब उन लोगों का जी ठिकाने हुआ और उन्होंने समझा कि जान बची ।

दूसरा व्यान।

पाटक महाशय , अब हम कुछ हाल जमानिया का लिखना मुनासिब समझते हैं और उस समय का हाल लिखते हैं जब राजा गोपालसिंह की कम्बली का जमाना शुरू हो चुका था और जमानिया में तरह - तरह की घटनाएं होने लग गई थीं ।

जमानिया तथा दागंगा और जपाल वगेरह के संबंध की बातें जो चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखी जा चुकी हैं उन्हें हम इस ग्रंथ में बिना कारण लिखना उचित नहीं समझते , उनके अतिरिक्त और जो बातें हुई हैं उन्हें लिखने की इच्छा है , हों यदि मजबूरी में कोई जरूरत आ ही पड़ेगी तो बेशक पिठली बातें संक्षेप के साथ दोहराई जाएंगी ओर गजा गोपालसिंह की शादी के पहिले का कुछ हाल लिखा जाएगा । इसका कारण यही है कि यह भूतनाथ चन्द्रकान्ता सन्तति का परिशिष्ट भाग समझा जाता है ।

अपने संगी - साथियों को साथ लिए हुए बाबू साहब जो भागे तो सीधे अपने घर की तरफ नहीं गये बल्कि नागर रंडी के मकान पर चले गये क्योंकि बनिस्बत अपने घर के उन्हें उसी का घर प्यारा था और उसी को वे अपना हमदर्द और दोस्त समझते थे , जिस समय वे उस जगह पहुंचे तो मना कि नागर अभी तक बेटी हुई उनका इंतजार कर रही है । वाव साहब को देखते ही नागर उट खड़ी हुई और बड़ी खातिरदारी के साथ उनका हाथ पकड़कर अपने पास एक ऊंची गद्दी पर बेटाया और मामूल के खिलाफ आज देर हो जाने का सबब पृठा , मगर बाबू साहब ऐसे बदहवास हो रहे थे कि उनके मुंह से कोई बात न निकलती थी । उनकी ऐसी अवस्था देख नागर को बड़ा ही आश्चर्य हुआ और उसने लाचार होकर उनके साथियों से उनकी परेशानी और बदहवासी का कारण पूछा ।

बाबू साहब कोन हैं और उनका नाम क्या है इसका पता अभी तक नहीं मालूम हुआ । खेर इसकं जानने की विशेष आवश्यकता भी नहीं जान पड़ती इसलिए अभी उन्हें बाबू साहब के नाम ही से संबोधित करने दीजिए , आगे चल कर देखा जाएगा ।

वाबू साहब ने अपनी जुबान से अपनी परेशानी का हाल यद्यपि नागर से कुछ भी नहीं कहा मगर उनके साथियों की जुवानी उनका कुछ हाल नागर को मालूम हो गया और

तव नागर ने दिलासा देते हुए वायू साहब से कहा , " यह तो मामूली घटना थी । "

बाबू साहब : जी हाँ , मामूली घटना थी ! अगर उस समय आप वहाँ होती तो मालूम हो जाता कि मामूली घटना कैसी होती है !

नागर : (मुसकुराती हुई) खैर किसी तरह मुँह से बोले तो सही !

बाबू साहब : पहिले यह तो बताओ कि नीचे का दरवाजा तो बंद है ? कहीं कोई आ न जाय और हम लोगों की बातें न सुन लें ।

नागर : आप जानते हैं कि आपके आने के साथ ही लोड़ियाँ फाटक बंद कर दिया करती हैं । हमारे यहाँ सिवाय आपर्क दूसरे किसी ऐसे सरदार का आना - जाना तो है ही नहीं कि जिससे मुझे किसी तरह का लगाव या मुहब्बत हो , हा बाजार में बैठा करती हूँ इसलिए कभी - कभी कोई मारा पीटा आ ही जाया करता है , सो भी जब आप आते हैं तो उसी वक्त फाटक बंद कर दिया जाता है ।

बाबू साहब इसका कुछ जवाब दिया ही चाहते थे कि एक आदमी यह कहता हुआ कमरे के अन्दर दाखिल हुआ , “ झूठ भी बोलना तो मुंह पर ! "

इस आदमी की सूरत देखते ही वायू साहब चौंक पड़े और घबराहट के साथ बोल उठे , “ यही तो है ! "

यह वही आदमी था जिसे वाबू साहब और उनके संगी - साथियों ने कपालमोचन के कुएँ पर देखा था और जिसके डर से अभी तक बाबू साहब की जान पर सदमा हो रहा था ।

बाबू साहब की ऐसी हालत देखकर उस आदमी ने जो अभी - अभी आया था कहा , “ डरो मत , मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ वल्कि दोस्त हूँ ! " इतना कह उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी एक किनारे रख दी और मामूली कपड़े उतार कर इस तरह झूटियों पर सजा दिये कि जैसे यह उसी का घर हो या इस घर पर उसका बहुत बड़ा अधिकार हो और नित्य ही वह यहाँ आता - जाता हो ।

यह आदमी असल में भूतनाथ (गदाधरसिंह) था जिससे नागर की गहरी दोस्ती थी मगर बाबू साहब को इसकी कुछ भी खबर न थी और न कभी ऐसा ही इत्तिफाक हुआ

था कि इस जगह पर इन दोनों का सामना हुआ हो । हाँ बाबू साहब ने गदाधरसिंह का नाम जरूर सुना था और यह भी सुना था कि वह मामूली आदमी नहीं है ।

नागर ने जिस खातिरदारी और आवाभगत के साथ भूतनाथ का सम्मान किया और प्रेम दिखाया उसने बाबू साहब को मालूम हो गया कि नागर बनिस्बत मेरे इस आदमी को बहुत प्यार करती है । खूटियों पर कपड़े रखकर भूतनाथ बाबू साहब के पास बैठ गया और बोला , " भला मैंने आपको क्या तकलीफ दी है जो आप मुझसे इतना डरते हैं ? एक ऐयाश और खुशदिल आदमी को इतना डरपोक न होना चाहिए । आप मुझे शायद पहिचानते नहीं , मेरा नाम गदाधरसिंह है , आपने अगर मुझे देखा नहीं तो नाम जरूर ही सुना होगा । " बाबू साहब : (आश्चर्य और डर के साथ) हाँ , मैंने आपका नाम सुना है और अच्छी तरह सुना है ।

नागर : (मुसकुराती हुई , बाबू साहब से) आपके तो अब ये गहरे रिश्तेदार हो गये हैं फिर भी आप इन्हें न पहिचानेंगे ।

वाबू साहब : (कुछ शरमाते हुए) हा - हाँ , में बखूबी जानता हूँ मगर पहिचानता नहीं था , अफसोस की बात है कि इतने दिनों तक इनसे कभी मुलाकात नहीं हुई ।

नागर : (बाबू साहब से) आपसे इनसे कुछ नातेदारी भी तो है ?

वाबू साहब : हाँ , मेरी मौसेरी बहिन रामदेई । इनके साथ व्याही है । आज अगर मुझे इस बात की चाबर होती कि आप ही मेरे बहनोई हैं तो में उस कुएं पर इतना परेशान न होता बल्कि खुशी के साथ मुलाकात होती । (भूतनाथ से) हां , यह तो बताइए कि वह चन्द्रशेखर कौन था जिसके खौफ से आप परेशान हो गये थे !

गदाधरसिंह : (कुछ डर और संकोच के साथ) वह मेरा बहुत पुराना दुश्मन है । मेरे हाथ से कई दफे जक उठा चुका और नीचा देख चुका है , अब वह मुझसे बदला लेने की धुन में लगा हुआ है । आज बड़े बेमौके मिल गया था क्योंकि मैं वेफिक्र था और वह हर तरह का सामान लेकर मेरी खोज में निकला था ।

बाबू साहव : आखिर हम लोगों के चले आने के वावद क्या हुआ ? आप से और उससे कैसी निपटी ?

गदाधरसिंह : मैं इस मौके को बचा गया और लड़ता हुआ धोखा देकर निकल भाग ! खैर फिर कभी देखा जाएगा , अबकी दफे उस साले को ऐसा छकाऊँगा कि वह यरद करेगा ।

चन्द्रशेखर का नाम सुनकर नागर चौंक पड़ी और उसके चेहरे की रंगत बदल गई । मालूम होता था कि वह भूतनाथ से कुछ पूछने के लिए उतावली हो रही है मगर बाबू साहब के खयाल से चुप है और चाहती है कि किसी तरह बाबू साहब यहाँ से चले जाएं तो बात करे ।

बाबू साहब : (भूतनाथ से) ठीक है वह वेशक आपका दुश्मन है आज आठ - दस दिन हुए होंगे कि मुझसे बरना 2 के किनारे एकान्त में मिला था । उस समय उसके साथ तीन - चार औरतें भी थीं जिनमें से एक का नाम विमला था । गदाधरसिंह : (चौंककर) विमला ?

बाबू साहब : हाँ विमला , और एक मर्द भी उसके साथ था जिसे उसने एक दफे प्रभाकर सिंह के नाम से संबोधन किया

था. ।

गदाधरसिंह : (घबड़ाकर) क्या तुम उस समय उसके सामने मौजूद थे ?

बाबू साहब जी नहीं , मै उन सभों को वहाँ आते देख एक झाड़ी में छिप गया था ।

गदाधरसिंह : तब तो तुमने और भी बहुत - सी बातें सुनी होंगी ।

बाबू साहब नहीं में कुछ विशेष बातें न सुन सका , हाँ इतना जरूर मालूम हुआ कि वह मनोरमा से और जमानिया के राजा से मिलने का उद्योग कर रहा है ।

गदाधरसिंह : (कुछ सोच कर और बाबू साहब की तरफ खिसक कर) बेशक आपने और भी बहुत - सी बातें सुनी होंगी , और यह भी मालूम किया होगा कि वे औरतें वास्तव में कौन थीं ।

बाबू साहब : सो में कुछ भी न जान सका कि वे औरतें कौन थीं या वहाँ पहुँचने से उन लोगों का क्या मतलब था ।

गदाधरसिंह खैर मैं थोड़ी देर के लिए आपकी बातें मान लेता हूँ ।

नागर : (बाबू साहब से) मगर मेंने तो सुना था कि आपका और उन लोगों का सामना हो गया था और आप उसी समय उनके साथ कहीं चले भी गये थे ।

बाबू साहब : (घबड़ाने से होकर) नहीं नहीं , मेरा - उनका सामना बिलकुल नहीं हुआ बल्कि मैं उन लोगों को उसी जगह छोड़कर छिपता हुआ किसी तरह निकल भागा और अपने घर चला आया क्योंकि मुझे उन लोगों की बातों से कोई संबंध नहीं था , फिर मुझे जरूरत ही क्या थी कि छिपकर उन लोगों की बात सुनता या उन लोगों के साथ कहीं जाता ।

नागर : शायद ऐसा ही हो , मगर जिसने मुझे यह खबर दी थी उसे झूठ बोलने की आदत नहीं है ।

बाबू साहब : तो उसने धोखा खाया होगा । अथवा किसी दूसरे को मौके पर देखा होगा ।

नागर ने इस मौके पर जो कुछ बाबू साहब से कहा वह केवल धोखा देने की नियत से था और वह चाहती थी कि वातों के हेर - फेर में डालकर बाबू साहब से कुछ और पता लगा ले , अस्तु जो कुछ हो मगर इस खबर ने भूतनाथ को बहुत ही परेशान कर दिया और वह सर नीचा कर तरह - तरह की बातें सोचने लगा । उसे इस बात का निश्चय हो गया कि बाबू साहब ने जो कुछ कहा है वह बहुत कम है अथवा जान - बूझकर वे असल बातों को छिपा रहे हैं । कुछ देर तक सिर झुकाकर सोचते - सोचते भूतनाथ को क्रोध चढ़ आया और उसने कुछ तीखी आवाज में वावू साहब से

कहा

गदाधरसिंह : सुनिए रामलाल जी ' , इसमें कोई सन्देह नहीं कि आप मेरे नातेदार हैं और इस खयाल से मुझे आपका मुलाहिजा करना चाहिए मगर ऐसी अवस्था में जब कि आप मुझसे झूठ बोलने और मुझे धोखा देने की कोशिश करते हैं अथवा यों कह सकते हैं कि आप मेरे दुश्मन से मिलकर उसके मददगार बनते हैं तो में आपका मुलाहिजा कुछ भी न करूँगा ! हाँ यदि आप मुझसे सब - कुछ साफ - साफ कह दें तो फिर में भी ..

रामलाल : (अर्थात् बाबू साहब) ठीक है अब मुझे मालूम हो गया कि उन औरतों से और प्रभाकर सिंह से आप डरते हैं , यदि यह बात सच है तो डरपोक और कमजोर होने

पर भी मैं आपसे डरना पसन्द नहीं करता ..

रामलाल ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि सीढ़ियों पर से जिसका दरवाजा इन लोगों के सामने ही था तेजी के साथ एक नकाबपोश आया और एक लिफाफा भूतनाथ के सामने फेंककर यह कहता हुआ वहाँ से निकल गया " वेशक टुरने की कोई जरूरत नहीं है , और खासकर ऐसे आदमी से जो पूरा नमक हराम और बेईमान है तथा जिसने अपने मालिक और दोस्त दयाराम को अपने हाथ से जख्मी किया था , ईश्वर की कृपा थी कि वह बेचारा बच गया और जमानिया में बैठा हुआ भूतनाथ के इस्तकबाल की कोशिश कर रहा है । "

इस आवाज ने भूतनाथ को एकदम परेशान कर दिया । उसने लिफाफा खोल कर चिट्ठी पढ़ने का इंतजार न किया और खंजर के कब्जे पर हाथ रखता हुआ तेजी के साथ दरवाजे पर और फिर सीढ़ियों पर जा पहुँचा मगर किसी आदमी की सूरत उसे दिखाई न पड़ी । वह धड़धड़ाता हुआ सीढ़ियों के नीचे उतर आया और फाटक के बाहर निकलने पर उस नकाबपोश को कुछ ही दूरी पर जाते हुए देखा । भूतनाथ ने उसका पीछा किया मगर वह गलियों में घूम - फिरकर ऐसा गायब हुआ कि भूतनाथ को उसकी गंध तक न मिली और अंत में वह लाचार होकर नागर के मकान में लोट आया । आने पर उसने देखा कि वावू साहव नहीं हैं , कहीं चले गये । तब उसने उस लिफाफे की खोज की जो नकाबपोश उसके सामने फेंक गया था और देखना चाहा कि उसमें क्या लिखा हुआ है ।

लिफाफा वहाँ मौजूद न देखकर भूतनाथ ने नागर से पूछा , " क्या वह लिफाफा तुम्हारे पास है ? " नागर : हाँ , तुमको उस नकाबपोश के पीछे जाते देख मैं भी तुम्हारे पीछे - पीछे सीढ़ियाँ उतरकर फाटक चली गई थी । जब तुम दूर निकल गये तब में वापस लौट आई और देखा कि बाबू साहब उस लिफाफे को खोलकर चिट्ठी पढ़ रहे हैं , मुझको उसकी ऐसी नालायकी पर क्रोध चढ़ आया और मैंने उसके हाथ से वह चिट्ठी छीनकर बहुत - कुछ बुरा - भला कर जिस पर वह नाराज होकर यहाँ से चला गया ।

भूतनाथ : यह बहुत बुरा हुआ कि यह चिट्ठी उसने पढ़ ली । फिर तुमने उसे जाने क्यों दिया ? मैं उसे बिना ठीक किये कभी न रहता और बता देता कि इस तरह की बदमाशी का क्या नतीजा होता है ।

नागर : खैर अगर भाग भी गया तो क्या हर्ज है , जब तुम उसे मजा देने पर तैयार ही हो जाओगे तो क्या वह तुम्हारे हाथ न आवेगा ?

भूतनाथ : खैर वह चिट्ठी कहाँ है जरा दिखाओ तो सही ।

नागर : (खुला हुआ लिफाफा भूतनाथ के हाथ में देकर) लो यह चिट्ठी है । भूतनाथ : (चिट्ठी पढ़कर) क्या तुमने यह चिट्ठी पढ़ी है ?

नागर : नहीं , मगर यह सुनने की इच्छा है कि इसमें क्या लिखा है ?

भूतनाथ : (पुनः उस चिट्ठी को अच्छी तरह पढ़ के और लिफाफे को गौर से देख कर) अंदाज से मालूम होता है कि इस लिफाफे में केवल यही एक चिट्ठी नहीं बल्कि और भी कोई कागज था ।

नागर : शायद ऐसा ही हो और बाबू साहब ने कोई कागज निकाल लिया हो तो मैं नहीं कह सकता ।

भूतनाथ : खैर देखा जाएगा , मेरा द्रोही मुझसे बच के कहाँ जा सकता है । फिर भी आज मैं जिस नियत से तुम्हारे पास आया था वह न हो सका , अच्छा अब मैं जाता हूँ ।

नागर : नहीं - नहीं , में तुम्हें इस समय जाने न दूंगी , मुझे बहुत - सी बातें तुमसे पूछनी और कहनी हैं , मुझे इस बात का दिन - रात खुटका बना रहता है कि कहीं तुम अपने दुश्मनों के फेर में न पड़ जाओ क्योंकि कंवल तुम्हारे ही तक मेरी जिंदगी है , मुझे सिवाय तुम्हारे इस दुनिया में और किसी का भी भरोसा नहीं है , और तुम्हारे दुश्मनों की गिनती दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है ।

भूतनाथ : हाँ ठीक है । (कुछ सोच कर) मगर इस समय में यहाँ पर नहीं रह सकता और ..

नागर : कल मनोरमा जी भी तो तुमसे मिलने के लिए वहाँ आने वाली है ।

भूतनाथ : खैर देखा जाएगा , बन पड़ेगा तो में कल फिर आ जाऊँगा ।

इतना कहकर भूतनाथ खड़ा हुआ और सीढ़ियों के नीचे उतर कर देखते - देखते नजरों से गायब हो गया ।

भूतनाथ के चले जाने के बाद नागर आधे घंटे तक चुपचाप बेटी रही , इसके बाद उसने उटकर अपनी लॉडियों को बुलाया और कुछ बातचीत करने के बाद एक लौंडी के साथ लिए हुए सीढ़ियों के नीचे उतरी ।

चन्द्रकान्ता सन्तति में नागर के जिस मकान का हाल हम लिख आये हैं वह मकान इस समय नागर के कब्जे में नहीं है क्योंकि अभी तक जमानिया राज्य की वह हालत नहीं हुई थी और न इस इज्जत को अभी नागर पहुंची थी । इस समय नागर रड़ियों की - सी अवस्था में है और उसके कब्जे में एक मामूली छोटा - सा मकान है , फिर भी मकान सुन्दर और मजबूत है तथा उसके सामने एक छोटा - सा नजरबाग भी है । यद्यपि अभी तक कम उम्र नागर की हैसियत बढ़ी नहीं है फिर भी उसकी चालाकियों का जाल अच्छी तरह फैल चुका है जिसका एक सिरा जमानिया राजधानी में जा पहुंचा है क्योंकि उस मनोरमा से इसकी दोस्ती अच्छी तरह हो चुकी है जिसने जमानिया की खराबी में सबसे बड़ा हिस्सा लिया हुआ था ।

नागर सीढ़ियों से नीचे उतर कर नजरबाग में होती हुई सदर फाटक पर पहुँची और उसे बंद करके एक मजबूत ताला उसकी कुंडी में लगा दिया । इसके बाद लौटकर मकान की सीढ़ियों पर चढ़ने वाला दरवाजा भी अच्छी तरह बंद करके अपने कमरे में चली आई ।

लौंडी को कमरे का फर्श साफ करने की आशा देकर नागर ऊपर छत पर चढ़ गई जहाँ एक बँगला था और इस समय उसके बाहर ताला लगा हुआ था जिसे खोलकर नागर बँगले के अन्दर चली गई ।

यह बँगला बहुत खुलासा और मामूली ढंग पर सजा हुआ था । जमीन पर साफ - सुथरा फर्श विछा हुआ था , एक तरफ सुन्दर मसहरी थी तथा छोटे - बड़े कई तकिए फर्श पर पड़े थे । मगर यह कमरा खाली न था , इसमें इस समय मनोरमा बैठी हुई थी और जमानिया राजधानी का बेईमान दारोगा (बिजली) भी उसके साथ था । नागरें भी उन दोनों के पास जाकर बैठ गई ।

तीसरा व्यान।

अब हम अपने पाठकों को पुनः उस घाटी में ले चलते हैं जिसमें कला और विमला रहती थीं और जिसमें

भूतनाथ

ने पहुँचकर बड़ी ही संगदिली का काम किया था अर्थात् कला , विगला और इंदुमति के साथ - साथ कई लोड़ियों को भी कुएँ में ढकेलकर अपनी जिंदगी का आईना गंदला किया था ।

भूतनाथ यद्यपि अपने शागिर्द रामदास की मदद से उस घाटी में पहुँच गया था और अपनी इच्छानुसार उसने सब कुछ करके अपने दिल का गुबार निकाल लिया था मगर घाटी के बीच वाले उस बँगले के सिवाय वह वहाँ का और कोई स्थान नहीं देख सका जिसमें कला और विमला रहती थीं जहाँ जख्मी इंदुमति का इलाज किया गया था , और न वहाँ का कोई भेद ही भूतनाथ को मालूम हुआ । वह कंवल अपने दुश्मनों को मारकर उस घाटी के बाहर निकल आया और फिर कभी उसके अन्दर नहीं गया । मगर प्रभाकर सिंह को उस घाटी का बहुत ज्यादा हाल मालूम हो गया था । कुछ तो उन्होंने बीच वाले बंगले की तलाशी लेते समय कई तरह के कागजों - पुों और किताबों को देखकर मालूम कर लिया था और कुछ कला , विमला ने बताया था और बाकी का भेद इन्द्रदेव ने वताकर प्रभाकर सिंह को खूब पक्का कर दिया

था ।

आज प्रातःकाल सूर्योदय के समय हम उस घाटी में प्रभाकर सिंह को एक पत्थर की चट्टान पर बैठे हुए देखते हैं । उनके बगल में ऐयारी का बटुआ लटक रहा है और हाथ में एक छोटी - सी किताब है जिसे वे बड़े गौर से देख रहे हैं । यह किताव हाथ की लिखी हुई है और इसके अक्षर बहुत ही बारीक हैं तथा इसमें कई तरह के नक्शे भी दिखाई दे

रहे हैं जिन्हें वे बार - बार उलट कर देखते हैं और फिर कोई दूसरा मजमून पढ़ने लगते हैं ।

इस काम में उन्हें कई घंटे बीत गये । जब धूप की तेजी ने उन्हें परेशान कर दिया तब वे वहाँ से उठ खड़े हुए तथा बड़े गौर से दक्षिण और पश्चिम कोण की तरफ देखने लगे और कुछ देर तक देखने के बाद उसी तरफ चल निकले । नीचे उतर कर मैदान खत्म करने के बाद जब दक्षिण और पश्चिम कोण वाली पहाड़ी के नीचे पहुँचे तब इधर - उधर बड़े गौर से देखकर उन्होंने एक पगडंडी का पता लगाया और उसी सीध पर चलते हुए पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे । करीब - करीय साठ कदम चले जाने के बाद उन्हें एक छोटी - सी गुफा मिली और वे लापरवाही के साथ उस गुफा के अन्दर चले गये ।

यह गुफा बहुत बड़ी न थी और इसमें केवल दो आदमी एक साथ मिलकर चल सकते थे , फिर भी ऊँचाई इसकी ऐसी कम न थी कि इसके अन्दर जाने वाले का सिर छत के साथ टकराए , अस्तु प्रभाकर सिंह धीरे - धीरे टटोलते हुए इसके अन्दर जाने लगे । जब लगभग दो सो कदम चले गये तब उन्हें एक छोटी - सी कोठरी मिली जिसके अन्दर जाने के लिए दरवाजे की किस्म से किसी तरह की रुकावट न थी सिर्फ एक चौखट लाँघने ही के सबब से कह सकते हैं कि चे उस कोठरी के अन्दर जा पहुँचे । अंधकार के सवव से प्रभाकर सिंह को कुछ दिखाई नहीं देता था इसलिए वे बैठकर वहाँ की जमीन हाथ से इस तरह टटोलने लगे मानो किसी खास चीज को ढूँढ़ रहे हैं ।

एक छोटा - सा चबूतरा कोठरी के बीचोंबीच मिला जो हाथ - भर चौड़ा और इसी कदर लंबा था । उसके बीच में किसी तरह का खटका था जिसे प्रभाकर सिंह ने दवाया और साथ ही इसके चबूतरे के ऊपर वाला किवाड़ के पल्ले की तरह खुल गया , मानो वह पत्थर का नहीं बल्कि किसी धातु या लकड़ी का बना हो ।

अव प्रभाकर सिंह ने अपने बटुए में से मोमबत्ती निकाली और इसके बाद चकमक पत्थर निकालकर रोशनी की । प्रभाकर सिंह ने देखा कि ऊपर का भाग खुल जाने से उस चबूतरे के अन्दर नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ लगी दिखाई देती हैं । प्रभाकर सिंह ने रोशनी में उस कोठरी को बड़े गौर से देखा । वहाँ चारों तरफ दीवार में चार आले (ताक) थे जिनमें से सिर्फ सामने वाले एक आले में गुलाब का बनावटी एक पेड़ बना हुआ था

जिसमें बेहिसाय कलियाँ लगी हुई थी और सिर्फ चार फूल खिले हुए थे । बाकी के तीनों आले खाली थे ।

प्रभाकर सिंह ने उस गुलाब के पेड़ और फूलों को बड़े गौर से देखा और यह जानने के लिए वह पेड़ किस चीज का बना

हुआ है उसे हाथ से अच्छी तरह टटोला । मालूम हुआ कि वह पत्थर या किसी और मजबूत चीज का बना हुआ है ।

प्रभाकर सिंह उन खिले हुए चार फूलों को देखकर बहुत ही खुश हुए और इस तरह धीरे - धीरे बुदबुदाने लगे जैसे कोई अपने मन से दिल खोलकर बातें करता हो । उन्होंने ताज्जुब के साथ कहा , " हैं यह चार फूल कैसे ! खैर मेरा परिश्रम तो सफल हुआ चाहता है । इन्द्रदेव जी का खयाल ठीक निकला कि वे तीनों औरतें (जमना , सरस्वती और इंदु) जरूर उस तिलिस्म के अन्दर चली गई होंगी । अब इन खिले फूलों को देखकर मुझे भी विश्वास होता है कि उन तीनों से तिलिस्म में मुलाकात होगी और में उन्हें खोज निकालूंगा , मगर इन्द्रदेव जी ने कहा था कि जितने आदमी इस तिलिस्म में जाएँगे इस पेड़ के उतने ही फूल खिले दिखाई देंगे इसके अतिरिक्त उस कागज में भी ऐसा ही लिखा है अस्तु , यह चौथा आदमी इस तिलिस्म में कौन जा पहुँचा ? इस बात का मुझे विश्वास नहीं होता कि किसी लौंडी को भी वे तीनों अपने साथ ले गई होंगी ? क्योंकि ऐसा करने के लिए इन्द्रदेव जी ने उन्हें सख्त मनाही कर दी थी । यह संभव है कि विशेष कारण से वे किसी लीडी को अपने साथ ले भी गई हों , खेर जो होगा देखा जाएगा मगर ऐसा किया तो यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया ।

इस तरह बहुत - सी बातें वे देर तक सोचते रहे , साथ ही इसके इस बात पर भी गौर करते रहे कि उन तीनों को तिलिस्म के अन्दर जाने की जरूरत ही क्या पड़ी ।

प्रभाकर सिंह बेखटके उन सीढ़ियों के नीचे उतर गये । नीचे उतर जाने के बाद उन्हें पुनः एक सुरंग मिली जिसमें तीस या चालीस हाथ से ज्यादे जाना न पड़ा , जब वे उस सुरंग को खत्म कर चुके तब उन्हें रोशनी दिखाई दी तथा सुरंग के वाहर निकलने पर एक छोटा - सा बाग और कुछ इमारतों पर उनकी निगाह पड़ी । आसमान पर निगाह करने से खयाल हुआ कि दोपहर ढल चुकी है और दिन का तीसरा पहर बीत रहा है ।

इस बाग में मकान , बारहदरी , कमरे , दालान , चबूतरे या इसी तरह की इमारतों के अतिरिक्त और कुछ भी न था अर्थात् फूल के अच्छे दरख दिखाई नहीं देते थे या अगर कुछ धे भी तो केवल जंगली पेड़ जो कि यहाँ बहते हुए चश्मे के सबब से कदाचित् बराबर ही हरे - भरे बने रहते थे , हाँ केले के दरख्त यहाँ बहुतायत से दिखाई दे रहे थे और उनमें फल भी बहुत लगे हुए थे ।

प्रभाकर सिंह थक गये थे इसलिए कुछ आराम करने की नीयत से नहर के किनारे एक चबूतरे पर बैठ गये और वहाँ की इमारतों को बड़े गौर से देखने लगे । कुछ देर बद उन्होंने अपने बटुए में से मेवा निकाला और उसे खाकर चश्मे का बिल्लौर की तरह साफ बहता हुआ जल पीकर संतोप किया ।

प्रभाकर सिंह सिपाही और वहादुर आदमी थे , कोई ऐयार न थे , मगर आज हम इनके बगल में ऐयरी का बटुआ लटका हुआ देख रहे हैं इससे मालूम होता है कि इन्होंने समयानुकूल चलने के लिए कुछ ऐयारी जरूर सीखी है , मगर इनका उस्ताद कौन है सो अभी मालूम नहीं हुआ ।

हम कह चुके हैं कि वह वाग नाममात्र को बाग था मगर इसमें इमारतों का हिस्सा बहुत ज्यादे था । बाग के बीचोंबीच में एक गोल गुंबद था जिसके चारों तरफ छोटी - छोटी पाँच कोठरियाँ थीं और वह गुंबद इस समय प्रभाकर सिंह की आँखों के सामने था जिसे वह बड़े गौर से देख रहे थे । बाग के चारों तरफ चार बड़ी - बड़ी बारहदरियाँ थीं और उनके ऊपर उतने ही खूबसूरत कमरे बने हुए थे जिसके दरवाजे इस समय बंद थे , सिर्फ पूरब तरफ वाले कमरे के दरवाजे में से एक दरवाजा खुला हुआ था और प्रभाकर सिंह को अच्छी तरह दिखाई दे रहा था ।

प्रभाकर सिंह और कमरों तथा दालानों को छोड़ कर उसी बीच वाले गुंबद को बड़े गौर से देख रहे थे जिसके चारों तरफ वाली कोटरियों के दरवाजे बंद मालूम होते थे । कुछ देर बाद प्रभाकर सिंह उठे और उस गुंबद के पास चले गये । एक कोठरी के दरवाजे को हाथ से हटाया तो यह खुल गया अस्तु वह कोठरी के अन्दर चले गये । इस कोठरी की जमीन संगमरमर की थी और बीच में स्याह पत्थर का एक सिंहासन था जिस पर हाथ रखते ही प्रभाकर सिंह का शरीर काँपा और वे चक्कर खाकर जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गये तथा उसी समय उस कोठरी का दरवाजा भी बंद हो

गया ।

दिन बीत गया । आधी रात का समय था जब प्रभाकर सिंह की आँख खुली । अँधेरी रात होने के कारण वे स्थिर नहीं कर सकते थे कि वे कहाँ पर हैं , घबराहट में उन्होंने पहिले अपने हों को टटोला और फिर ऐयारी का बटुआ खोला , ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे सब चीजें उनके पास मौजूद थीं । इसके बाद वे विचारने लगे कि यह स्थान कैसा है तथा हमको अब क्या करना चाहिए । बहुत देर के बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे किसी छोटे दालान में हैं और उनके सामने एक घना जंगल है । इस अंधकार के समय में उनकी हिम्मत न पड़ी कि उठकर तिलिस्म में इधर - उधर घूमें या किसी बात का पता लगावें । अस्तु उन्होंने चुपचाप उसी दालान में पड़े रह कर रात बिता दी ।

रात बीत गई और सूर्य भगवान का पेशखेमा आसमान पर अच्छी तरह बन गया । प्रभाकर सिंह उठ खड़े हुए और यह जानने के लिए उस दालान में घूमने और दरोदीवार को अच्छी तरह देखने लगे कि वे क्योंकर इस स्थान में पहुँचे तथा उनके यहां जाने का जरिया क्या है , परन्तु इस बात को उन्हें कुछ भी पता न लगा । उस दालान के सामने जो जंगल था वह वास्तव में बहुत घना धा और सिर्फ देखने से इस बात का पता नहीं लगता था कि वह कितना बड़ा है तथा उसके वाद किसी तरह की इमारत है या कोई पहाड़ , साथ ही इसके उन्हें इस बात की फिक्र भी थी कि अगर कोई पानी का चश्मा दिखाई दे तो स्नान इत्यादि का काम चले ।

जंगल में घूमकर क्या करें और किसको ढूँदें इस विचार में वे बहुत देर तक सोचते और इधर - उधर घूमते रह गये , यहाँ तक कि सूर्य भगवान ने चौधाई आसमान का सफर ते कर लिया और धूप में कुछ गर्मी मालूम होने लगी । उसी समय प्रभाकर सिंह के कान में यह आवाज आई , " हाय , बहुत ही बुरे फंसे , यह मेरे कर्मों का फल है , ईश्वर न करे किसी ... " बस इसके आगे की आवाज इतनी बारीक हो गई थी कि प्रभाकर सिंह उसे अच्छी तरह समझ न सके ।

इस आवाज ने प्रभाकर सिंह को परेशान कर दिया और खुटके में डाल दिया । आवाज जंगल के बीच में से आई थी अतएव उसी आवाज को सोध पर चल पड़े और उस घने जंगल में ढूँढने लगे कि वह दुखिया कौन और कहाँ है जिसके मुँह से ऐसी आवाज आई है ।

प्रभाकर सिंह को ज्यादा हूँढ़ना न पड़ा । उस जंगल में थोड़ी ही दूर जाने पर उन्हें पानी का एक सुन्दर चश्मा दिखाई दिया और उसी चश्मे के किनारे उन्होंने एक औरत को देखा जो बदहवास और परेशान जमीन पर पड़ी हुई थी और न - मालूम किस तरह की तकलीफ की करवटें बदल रही थी । प्रभाकर सिंह बड़े गौर से उस औरत को देखने लगे क्योंकि वह कुछ जानी - पहचानी - सी मालूम पड़ी थी । उस औरत ने प्रभाकर सिंह को देख के हाथ जोड़ा और कहा , “ मेरी जान बचाइए , में बेतरह इस आफत में फंस गई हूँ । मुझे उम्मीद थी कि अब कुछ ही देर में इस दुनिया से कूच कर जाऊँगी , परन्तु आपको देखने से विश्वास हो गया कि अभी थोड़ी जिंदगी बाकी है । आप बड़े गौर से देख रहे हैं , मालूम होता है कि आपने मुझे पहिचाना नहीं । में आपकी तावेदार लोंडी हरदेई हूँ , आपकी स्त्री और सालियों की बहुत दिनों तक खिदमत कर चुकी हूँ । "

प्रभाकर सिंह : हाँ , अब मैंने तुझे पहिचाना , कला और बिमला के साथ मैंने तुझे देखा था मगर सामना बहुत कम हुआ इसलिए पहचानने में जरा कठिनाई हुई , अच्छा यह तो बता कि तीनों कहाँ हैं ?

हरदेई : में उन्हीं की सताई होने पर भी उनकी ही खोज में यहाँ आई थी , एक दफे वे तीनों दिखाई देकर पुनः गायब हो गई आह अब मुझसे बोला नहीं जाता ।

प्रभाकर सिंह : तुझे किस बात की तकलीफ है ?

हरदेई : मैं भूख से परेशान हो रही हूँ । आज कई दिन से मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला ... बस .... अब ... प्राण निकला ही ..

प्रभाकर सिंह : तुझे यहाँ आये कितने दिन हुए ?

हरदेई : आज से सात ..

बस इससे ज्यादे हरदेई कुछ भी न बोल सकी अस्तु प्रभाकर सिंह ने अपने बटुए में से कुछ मेवा निकाल कर खाने के लिए दिया और हाथ का सहारा देकर उसे बैटाया । मेवा देखकर हरदेई खुश हो गई , भोजन किया और नहर का जल पीकर सम्हल बैटी और बोली , " अब मेरा जी टिकाने हुआ , अब में बखूबी बातचीत कर सकती हूँ । "

प्रभाकर सिंह : (उसके पास बैठकर) अच्छा अव बता कि तुझे यहाँ आये कितने दिन हुए और तूने कला , विमला तथा इंदु को कहाँ और किस अवस्था में देखा तथा क्योंकर

उनका साथ छूटा । क्या तू भी उन तीनों के साथ ही इस तिलिस्म में आई थी ?

हरदेई : नहीं , में तो बेसबब और बिना कसूर के मारी गई । मैंने आज तक अपने मालिकों के साथ कोई बुराई नहीं कि मगर न मालूम उन्होंने क्यों मुझे इस तरह की सजा दी ! यद्यपि उन्होंने अपना धर्म बिगाड़ दिया था और जिस तरह सती - साध्वियों को चलना चाहिए उस तरह नहीं चलती थीं , अपनी सफेद और साफ चादर में बदनामी के कई धब्बे लगा चुकी थीं , मगर मैंने आपसे भी इस बात की कभी शिकायत नहीं की और उनका भेद किसी तरह प्रकट होने न दिया , फिर भी अंत में में ही कसूरवार समझी गई और मुझी को प्राणदंड दिया गया , परन्तु ईश्वर की कृपा से में जीती वच गई । अब मेरी समझ में नहीं आता कि में क्या करूँ और जो कुछ कहने को बातें हैं वह आपसे ..

प्रभाकर सिंह : (कुछ घबराकर) तू क्या कह रही है ! क्या कला और विमला के सतीत्व में धब्बा लग चुका है ? और क्या उन दोनों ने अपनी चाल - चलन खराब कर डाली है ?

हरदेई : वेशक ऐसी बात है । आज से नहीं बल्कि आपसे मुलाकात होने के पहिले ही से वे दोनों बिगड़ी हुई है और दो आदमियों से अनुचित प्रेम करके अपने धर्म को बिगाड़ चुकी हैं , बड़े अफसोस की बात है कि इंदुमति को भी उन्होंने अपनी पंक्ति में मिला लिया है । ईश्वर ने इसी पाप का फल उन्हें दिया है । मेरी तरह वे भी इस तिलिस्म में कैद कर दी गई हैं और आश्चर्य नहीं कि वे भी इसी तरह की तकलीफें उठा रही हो । बस इससे ज्यादे और कुछ भी नहीं कहूँगी क्योंकि ...

प्रभाकर सिंह : नहीं - नहीं , रुक मत । जो कुछ तू जानती है बेशक कहे जा , मैं खुशी से सुनने के लिए तैयार हूँ ।

हरदेई : अगर मैं ऐसा करूँगी तो फिर मेरी क्या दशा होगी , यही मैं सोच रही हूँ ।

हरदेई की बातों ने प्रभाकर सिंह के दिल में एक तरह का दर्द पैदा कर दिया । ' कला और विमला बदकार हैं और उन्होंने इंदु को भी खराव कर दिया ' , यह सुन कर उनका क्या हाल हुआ सो वे ही जानते होंगे । नेक और पतिव्रता इंदु की कोई बदनामी करे यह बात प्रभाकर सिंह के दिल में नहीं जम सकती थी मगर कला और विमला पर उन्हें पहले भी एक दफ शक हो चुका था । जब वे उस घाटी में थे तभी उनकी स्वतंत्रता देख कर

उनका मन आशंकित हो गया था मगर जाँच करने पर उनका दिल साफ हो गया था । आज हरदेई ने उन्हें फिर उसी चिंता में डाल दिया , और साथ ही इसके इंदु का भी आँचल गंदला सुनकर उनका कलेजा काँप उठा तथा वे सोचने लगे कि क्या यह बात सच हो सकती है ?

केवल इतना ही नहीं , प्रभाकर सिंह के चित्त में चिंता और घृणा के साथ - ही - साथ क्रोध की भी उत्पत्ति हो गई और बहुत विचार करने के बाद उन्होंने सोचा कि यदि वास्तव में हरदेई का कहना सच है तो मुझे फिर उन दुष्टाओं के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता ही क्या है , परन्तु सत्य की जाँच तो आवश्यक है इत्यादि सोचते हुए फिर उन्होंने हरदेई से पूछा

प्रभाकर सिंह : हाँ तो जो कुछ असल मामला है तू बेखौफ होकर कहे जा , मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तेरी रक्षा करूँगा और

तुझे इस आफत से बचाऊँगा ।

हरदेई : यदि आप वास्तव में प्रतिज्ञा करते हैं तो फिर में सब बातें साफ - साफ कह दूंगी ।

प्रभाकर सिंह : बेशक में प्रतिज्ञा करता हूँ मगर साथ ही इसके यह भी कहता हूँ कि अगर तेरी बात झूट निकली तो तेरे लिए सबसे बुरी मौत का ढंग तजवीज करूँगा ।

हरदेई : बेशक मैं इसे मंजूर करती हूँ । प्रभाकर सिंह : अच्छा तो जो कुछ टीक - ठीक मामला है तू कह जा और बात कि वह सब कहाँ गई और क्या हुई और क्योंकर इस दशा को पहुंची ।

हरदेई : अच्छा तो मैं कहती हूँ , सुनिए । कला और विमला की चालचलन अच्छी नहीं है । आप स्वयं सोच सकते हैं कि जिन्हें ऐसी नौजवानी में इस तरह की स्वतंत्रता मिल गई हो और रहने तथा आन्नद करने के लिए ऐसा स्वर्ग - नुल्य स्थान मिल गया हो तथा दौलत की भी किसी तरह कमी न हो तो वे कहाँ तक अपने चित्त को रोक सकती हैं ? खैर जो कुछ हो , कला और विमला दोनों ही ने अपने लिए दो प्रेमी खोज निकाले और दोनों को औरतों के भेष में टीक करके अपने यहाँ रख छोड़ा तथा नित्य नया आनन्द करने लगी , मगर साथ ही इसके भूतनाथ से बदला लेने का भी ध्यान उनके दिल में बना

रहा और उन दोनों मर्दो से भी इस काम में बराबर मदद मांगती रहीं । वे दोनों मर्द कुछ दिन तक इस घाटी में रह आनन्द करते और फिर कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाया करते थे ।

प्रभाकर सिंह : (बात काट कर) उन दोनों का नाम क्या था ?

हरदेई : सो में नहीं कह सकती क्योंकि कला और बिमला ने बड़ी कारीगरी से उन दोनों का भेष बदल दिया , कभी - कभी मरदाने भेष में रहने पर भी उसकी सूरत दिखाई नहीं देती थी , इसलिए में उनके नाम और ग्राम के विषय में टीक तोर पर कुछ भी नहीं कह सकती , हाँ इतना जरूर है कि अगर मुझे कुछ मदद मिले तो में उन दोनों का पता जरूर लगा सकती हूँ क्योंकि एकांत की अवस्था में छिप - लुक कर इन लोगों की बहुत - सी बातें सुन चुकी हूँ जिसका ..

प्रभाकर सिंह : खैर इस बात को जाने दे फिर देखा जाएगा , अच्छा तय क्या हुआ ?

हरदेई : बहुत दिनों तक कला और विमला ने दोनों से संबंध रखा मगर जब इंदु इस घाटी में लाई गई और आपका आना भी यहाँ हुआ तब वे दोनों कुछ दिन के लिए गायब कर दिये गये । मैं टीक नहीं कह सकती कि वे कहाँ चले गये या क्या हुए । मैं इस किस्से को बहुत मुरलसर में बयान करती हूँ । फिर जब आप विजयगढ़ और चुनार की लड़ाई में चले गये ओर बहुत दिनों तक आपके जाने की उम्मीद न रही तब पुनः वे दोनों इस घाटी में दिखाई देने लगे । संग और कुसंग का असर मनुष्य के ऊपर अवश्य पड़ा करता है । कुछ ही दिनों के बाद इंदुमति को मैंने उन दोनों में से एक के साथ मुहब्बत करते देखा और इसी कारण से कला , विमला और इंदुमति में अन्दर - अन्दर कुछ खिंचाव भी आ गया था ।

में समझती हूँ कि भूतनाथ को इस विषय का हाल जरूर मालूम होगा जिसने उन दोनों को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया और उस घाटी में आने - जाने का रास्ता देख लिया । इसी बीच में मैंने आपको उस घाटी में देखा । पहिले तो मझे विश्वास हो गया कि वास्तव में प्रभाकर सिंह ही लड़ाई में नामवरी हासिल करके यहाँ आ गये हैं परन्तु कुछ दिन के बाद मेरा खयाल जाता रहा और निश्चय हो गया कि असल में आपकी सूरत बनाकर यहाँ आने वाला कोई दूसरा ही था ।

में इस विषय में कला और विमला को बार - बार टोका करती थी और कहा करती थी कि तुम लोगों के रहन - सहन का यह ढंग अच्छा नहीं है , एक - न - एक दिन इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकलेगा , मगर वे दोनों इस बात का कुछ खयाल नहीं करती थी और मुझे यह कहकर टाल दिया करती थीं कि खैर जो कुछ भी हुआ सो हुआ अब ऐसा न होगा । मगर

मुझे इस बात की कुछ भी सबर न थी कि मेरे रोक - टोक करने से उसके दिल में रंज बैठता जाता है । मैंने अपने काम में और भी कई लोडियों को शरीक कर लिया मगर इसका नतीजा मेरे लिए अच्छा न निकला ।

एक दिन वह आदमी जो आपकी सूरत बना हुआ था जब उस घाटी में आया तो उसके साथ और भी दस - बारह आदमी आये । जब वे लोग कला , विमला और इंदुमति से मिले तो उनका रंग - टंग देखकर में डर गई और एक किनारे हटकर उनका तमाशा देखने लगी । थोड़ी देर के बाद जब संध्या हुई तब कला , विमला ओर इंदमति उन सभों को साथ लिए हए बंगले के अन्दर चली गई अस्तु इसके बाद क्या - क्या हुआ सो में कुछ भी न जान सकी , लाचार में अपनी हमजोलियों के साथ जा मिली और भोजन इत्यादि को सामग्री जुटाने के काम में लगी ।

पहर रात बीत जने के बाद जब भोजन तैयार हुआ तब सभों ने मिल - जुल कर भोजन किया , तत्पश्चात् हम लोगों ने भी खाना खाया मगर भोजन करने के थोड़ी देर बाद हम लोगों का सिर घूमने लगा जिससे निश्चय हो गया कि आज के भोजन में बेहोशी की दवा मिलाई गई है । खेर जो हो , आधी रात जाते - जाते तक हम सब - ही - सब बेहोश होकर दीन - दुनिया को भूल गई । प्रातःकाल जब मेरी आंख खुली तो मैंने अपने - आपको इसी स्थान पर पड़े हुए पाया । घबड़ाकर उट बेटी और आश्चर्य के साथ चारों तरफ देखने लगी , उस समय मेरे सिर में बेहिसाब दर्द हो रहा था ।

तीन दिन और रात मैं घबड़ाई हुई इस जंगल में और (हाथ का इशारा करके) इस पास वाली इमारत और दालान में घूमती रही मगर न तो किसी से मुलाकात हुई और न यहाँ से निकल भागने के लिए कोई रास्ता ही दिखाई दिया । चौथे दिन भूख से बेचैन होकर मैं इसी जंगल में घूम रही थी कि यकायक इंदुमति कुछ दूरी पर दिखाई पड़ी जो कि आपके गले में हाथ डाले हुए धीरे - धीरे पूरव की तरफ जा रही थी । मैं नहीं कह सकती कि

वह वास्तव में आप हो के गले में हाथ डाले हुए थी या किसी दूसरे ऐयार के गले में जो आपकी सूरत बना हुआ था ।

उसी के पीछे मैंने कला और विमला जी को जाते हुए देखा । मैं खुशी - खुशी लपकती उनकी तरफ बढ़ी मगर नतीजा कुछ भी न निकला । देखते - ही - देखते इसी जंगल और झाड़ियों में घूम - फिर वे सब - की - सब न जाने कहां गायब हो गई , तब से आज तक कई दिन हुए मैं उनकी खोज में परेशान हूँ , अंत में भूख के मारे बदहवास होकर इसी जगह गिर पड़ी और कई पहर तक तन - बदन की भी सुध न रही , जब होश में आई तब आपसे मुलाकात हुई । बस यही तो मुरतसर हाल

हरदेई की बात सुनकर प्रभाकर सिंह के तो होश उड़ गये । वे ऐसे बेसुध हो गये कि उन्हें तनोबदन की सुध बिलकुल ही जाती रही । थोड़ी देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा कि वे प्रभाकर सिंह नहीं बल्कि कोई पत्थर की मूरत हैं . इसके बाद उन्होंने एक लंबी साँस ली और बड़े गौर से हरदेई के चेहरे की तरफ देखने लगे । कई क्षण बाद उन्होंने सिर नीचा कर लिया और किसी गहरे चिंता - सागर में डुबकियाँ लगाने लगे । हरदेई मन - ही - मन प्रसन्न होकर उनके चेहरे की तरफ देखने लगी जिसका रंग थोड़ी - थोड़ी देर पर गिरगिट के रंग की तरह बराबर बदल रहा था ।

प्रभाकर सिंह के चेहरे पर कभी तो क्रोध , कभी दुःख , कभी चिंता , कभी घबराहट और कभी घृणा की निशानी दिखाई देने लगी । आह , प्रभाकर सिंह के जिस हृदय में इंदुमति का अगाध प्रेम भरा हुआ था उसमें इस समय भयानक रस का संचार हो रहा था । जो वीर हृदय सदैव करुण रस से परिपूरित रहता था वह क्षण मात्र के लिए अद्भुत रस का स्वाद लेकर रौद्र और तत्पश्चात् वीभत्स रस की इच्छा कर रहा है ! जिस हृदय में इंदुमति पर निगाह पड़ते ही शृंगार रस की लहरें उठने लगती थीं वह अपनी भविष्य जीवनी पर हास्य करता हुआ अब सदैव के लिए शान्त हुआ चाहता है । आह . इंदुमति के विषय में स्वप्न में भी ऐसे शब्दों के सुनने की क्या कर सिंह आशा हो सकती थी ? कदापि नहीं । यह प्रभाकर सिंह की भूल है कि हरदेई की जुबान से विष - भरी अघटित घटना को सुन अनुचित चिंता करने लग गये हैं । वह नहीं जानते कि यह हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है । परन्तु हमारे प्रेमी पाठक इस बात को जरूर समझ रहे होंगे कि यह भूतनाथ का शागिर्द रामदास है जिसकी मदद से भूतनाथ ने उस

घाटी में पहुंचकर बड़ा ही अनुचित और घृणित व्यवहार किया था । निःसन्देह भूतनाथ ने जमना , सरस्वती और इंदुमति के साथ जो कुछ किया वह ऐयारी के नियम के बिलकुल ही बाहर था । ऐयारी का यह मतलब नहीं है कि वह बेकसूरों के खून से अपने जीवन के

पवित्र चादर में धब्बा लगाए । यदि प्रभाकर सिंह उसकी कार्रवाई का हाल सच्चा - सच्चा सुनते तो न - मालूम उनकी क्या अवस्था हो जाती ; परन्तु इस समय रामदास ने उन्हें बड़ा ही धोखा दिया और ऐसी बेढंगी बातें सुनाई कि उनका पवित्र हदय काप उटा और इंदुमति तथा कला और विमला की तरफ से उन्हें एकदम घृणा उत्पन्न हो गई । तब क्या प्रभाकर सिंह ऐसे बेवकूफ थे कि एक मामूली ऐयार अथवा लोंडी के मुँह से ऐसी अनहोनी वात सुनकर उन्होंने उस पर कुछ विचार न किया और उसे सच्चा मान कर अपने आपे से बाहर हो गये ? नहीं , प्रभाकर सिंह तो ऐसे न थे परन्तु प्रेम ने उनका हृदय ऐसा बना दिया था कि इंदु के विषय में ऐसी बातें सुन कर वे अपने चित्त को सम्हाल नहीं सकते थे । प्रेम का अगाध समुद्र थोड़ी ही - सी आँच लगने से सूख सकता है , और प्रेमी का मन - मुकुर जरा ही से टेस लगने से चकनाचूर हो जाता है । अस्तु जो हो प्रभाकर सिंह के दिल की उस समय क्या अवस्था थी वे ही ठीक जानते होंगे या उनको देखकर रामदास कुछ - कुछ समझता होगा क्योंकि वह उनके सामने बैठा हुआ उनके चेहरे की तरफ बड़े गौर से देख रहा था ।

नकली हरदेई अर्थात् रामदास के दिल की अवस्था भी अच्छी न थी । वह कहने के लिए तो सब कुछ कह गया परन्तु इसका परिणाम क्या होगा यह सोचकर उसका दिल डावाँडोल होने लगा । यद्यपि इस तिलिस्म में फंसकर वह बर्बाद हो चुका था बल्कि थोड़ी देर पहिले तो मौत की भयानक सूरत अपनी आँखों के सामने देख रहा था परन्तु प्रभाकर सिंह पर निगाह पड़ते ही उसकी कायापलट हो गई और उसे विश्वास हो गया कि अब किसी - न - किसी तरह उसकी जान बच जाएगी । परन्तु इंदुमति को बदनाम करके उसका चित्त भी शान्त न रहा और थोड़ी ही देर बाद सोचने लगा कि मैंने यह काम अच्छा नहीं किया । यदि मैं कोई दूसरा ढंग निकालता तो कदाचित् यहाँ से छुटकारा मिल जाता परन्तु अब जल्दी छुटकारा मिलना मुश्किल है क्योंकि मेरी बात का निर्णय किये बिना प्रभाकर सिंह मुझे यहाँ से बाहर नहीं जाने देंगे । अफसोस भूतनाथ को मदद पहुंचाने के खयाल से मैंने व्यर्थ ही इंदु को बदनाम किया । इंदुमति निःसन्देह सती और साध्वी है , उस पर कलंक लगाने का नतीजा मुझे अच्छा न मिलेगा । अफसोस , खैर

अब क्या करना चाहिए , जबान से जो बात निकल गई वह तो लोट नहीं सकती । तब ? मुझे अपने बचाव के लिए शीघ्र ही कोई तरकीब सोचनी चाहिए । कहीं ऐसा न हो कि इंदुमति , कला और बिमला घूमती - फिरती इस समय यहाँ आ पहुँचे । यदि ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा होगा , मेरी कलई खुल जाएगी और में तुरन्त ही मारा जाऊँगा । यदि में उन सभी को बदनाम न किये होता तो इतना डर न था ।

इसी तरह की बातें सोचते हुए रामदास का दिल बड़ी तेजी के साथ उछल रहा था । वह बड़ी बेचैनी से प्रभाकर सिंह की सूरत देख रहा था ।

बहुत देर तक तरह - तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह ने पुनः नकली हरदेई से सवाल किया प्रभाकर सिंह : अच्छा यह तो बता कि कला और बिमला किसी विषय में किसी दिन तुझसे रंज भी हुई थीं ? हरदेई : (मन में) इस सवाल का क्या मतलब ? (प्रकट) नहीं अगर कभी कुछ रंज हुई थीं तो केवल उसी विषय में जो आपसे बयान कर चुकी हूँ ।

इस जवाब को सुनकर प्रभाकर सिंह चुप हो गये और फिर कुछ गौर करके बोले , " खैर कोई बात नहीं देखा जाएगा , यह जगत ही कर्म - प्रधान है , जो जैसा करेगा वैसा फल भोगेगा । यदि वे तीनों इस तिलिस्म के अन्दर हैं तो मैं उन्हें जरूर खोज निकालूंगा , तू सब कर और मेरे साथ - साथ रह । "

इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने फिर वही छोटी किताब निकाली और पढ़ने लगे जिसे इस तिलिस्म के अन्दर घुसने के पहिले एक दफे पढ़ चुके थे ।

प्रभाकर सिंह घंटे भर से ज्यादे देर तक वह किताब पढ़ते रहे और तब तक रामदास बराबर उनके चेहरे की तरफ गौर से देखता रहा । जब वे उस किताव में अपने मतलब की बात अच्छी तरह देख चुके तव यह कहते हुए उठ खड़े हुए कि ' कोई चिंता नहीं , यहाँ हमारे लिए खाने - पीने का सामान बहुत कुछ मिल जाएगा और हम उन सभी को जल्द ही खोज

निकालेंगे । (नकली हरदेई से) आ तू भी हमारे साथ चली आ ' ।

रामदास उस किताब के पढ़ने और इन शब्दों के कहने से समझ गया कि उस किताब में जरूर इस तिलिस्म का ही हाल लिखा हुआ है . अगर किसी तरह वह किताब मेरे हाथ

लग जाय तो सहज ही मैं यहाँ से निकल भागं बल्कि और भी बहुत - सा काम निकालूं ।

रामदास अर्थात् नकली हरदेई को साथ लिए हुए प्रभाकर सिंह उसी जंगल में घुस गये और दक्षिण झुकते हुए पूरब की तरफ चल निकले । आधे घंटे तक बराबर चले जाने के बाद उन्हें एक बहुत ऊंची दीवार मिली जिसकी लंबाई का वे कुछ अंदाज नहीं कर सकते थे और न इसकी जाँच करने की उन्हें कोई जरूरत ही थी । इस दीवार में बहुत दूर तक ढूँढ़ने के बाद उन्हें एक छोटा - सा दरवाजा दिखाई दिया । वह दरवाजा लोहे का बना हुआ था मगर उसमें ताला या जंजीर वगैरह का कुछ निशान नहीं दिखाई देता था । रामदास का ध्यान किसी दूसरी तरफ था तथापि वह जानना चाहता था कि यह दरवाजा क्योंकर खुलता है , परन्तु प्रभाकर सिंह ने उसे खोलने के लिए जो कुछ कार्रवाई की वह देख न सका । यकायक दरवाजा खुल गया और प्रभाकर सिंह ने उसके अन्दर कदम रखा तो रामदास को भी अपने साथ आने के लिए कहा । प्रभाकर सिंह और रामदास दरवाजे के अन्दर जाकर कुछ ही दूर आगे बढ़े होंगे कि दरवाजा पुनः ज्यों - का - त्यों बंद हो गया । प्रभाकर सिंह एक ऐसे वाग में पहुँचे जहाँ केले और अनार के पेड़ बहुतायत के साथ लगे हुए थे और पानी का एक सुन्दर चश्मा भी बड़ी खूबसूरती के साथ चारों तरफ वह रहा था । इस वाग के अन्दर एक छोटा - सा बंगला भी बना हुआ था , जिसमें कई कोटरिया धीं और इस बँगले के चारों तरफ संगमरमर के चार चबूतरे बने हुए थे । बस इस बाग में इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था । प्रभाकर सिह ने वहाँ के पकं हुए स्वादिष्ट केले और अनार से पेट भरा और चश्मे का जल पीकर कुछ शान्त हुए तथा नकली हरदेई से ऐसा ही करने के लिए कहा ।

जब अदमी की तबीयत परेशान होती है तो थोड़ी - सी भी मेहनत बुरी मालूम होती है और वह बहुत जल्द थक जाता है । प्रभाकर सिंह का चित्त बहुत ही व्यग्र हो रहा था और चिंता ने उदास और हताश भी कर दिया था अतएव आज थोड़ी ही मेहनत से थककर वे संगमरमर के चबूतरे पर आराम करने का नियत से लेट गये और साथ ही निद्रादेवी ने भी उन पर अपना अधिकार जमा लिया ।

यहाँ प्रभाकर सिंह ने बहुत ही बुरा धोखा खाया । नकली हरदेई की बातों ने उन्हें अधमरा कर ही दिया था और इस दुनिया से वे एक तोर पर विरक्त हो चुके थे , कारण यही था कि उन्होंने नकली हरदेई को पहचाना न था , अगर इन बातों के हो जाने के

बाद भी ये जाँच कर लेते तो कदाचित् सम्हल जाते परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और नकली हरदेई को वास्तव में हरदेई मानकर अपने भाग्य का सब दोष समझ लिया , यही सबब था कि यहाँ पर भी वे रामदास की तरफ से बिलकुल ही वेफिक्र बने रहे और चबूतरे पर लेटकर बेफिक्री के साथ खुर्राटे लेने लगे ।

प्रभाकर सिंह को निद्रा के वशीभूत देखकर रामदास चौकन्ना हो गया । उसने ऐयारी के बटुए में से जिसे वह बड़ी सावधानी से छिपाए हुए था , बेहोशी की दवा निकाली और होशियारी से प्रभाकर सिंह को सुंघाया । जब उसे विश्वास हो गया कि अब ये बेहोश हो गये तब उनकी जेब में से वह किताब निकाल ली जिसमें इस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था और जिसे प्रभाकर सिंह दो दफे पढ़ चुकं थे ।

किताब निकालकर उसने बड़े गौर से थोड़ा - सा पढ़ा तब बड़ी प्रसन्नता के साथ सिर हिलाकर उठ खड़ा हुआ और दिल्लगी के ढंग पर बेहोश प्रभाकर सिंह को झुककर सलाम करता हुआ एक तरफ को चला गया ।

बेहोशी का असर दूर हो जाने पर जब प्रभाकर सिंह की आँखें खुली तो वे घबड़ाकर उठ बैठे और बेचैनी से चारों तरफ देखने लगे । आसमान की तरफ निगाह दौड़ाई तो मालूम हुआ कि सूर्य भगवान का रथ अस्तांचल को प्राप्त कर चुका है परन्तु अभी अंधकार को मुँह दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ती , वह कंवल दूर ही से ताक - झांक रहा है । हरदेई को जब देखना चाहा तो निगाहों की दौड़ - धूप से उसका कुछ भी पता न लगा । तब वे लाचार होकर उठ बैठे और उसे इधर - उधर ढूँढ़ने लगे , परन्तु बहुत परिश्रम करने पर भी उसका पता न लगा । आखिर वे पुनः उस चबूतरे पर बैठकर तरह - तरह की

बातें सोचने लगे ।

" हरदेई कहाँ चली गई । इस वाग में जहाँ तक संभव था अच्छी तरह खोज चुका मगर उसका कुछ भी पता न लगा । तब वह गई कहाँ ? इस वाग के बाहर हो जाना तो उसके लिए बिलकुल ही असंभव है , तो क्या उसे किसी तरह की मदद मिल गई ? मगर मदद भी मिली होती या कोई उसका दोस्त यहाँ आया होता तो भी बिना मेरी आज्ञा के यहाँ से चले जाना मुनासिब न था (अपना सर पकड़ के) ओफ , सर में वेहिसाव दर्द हो रहा है । मालूम होता है कि जैसे किसी ने बेहोशी की दवा का मुझ पर प्रयोग किया हो । ठीक है , बेशक यह सरदर्द उसी ढंग का है । तो यह हरदेई की सूरत में वह कोई ऐयार तो

नहीं था जिसने मुझे धोखा दिया हो । (घबराहट के साथ जेब टटोल के) आह वह किताब तो जेब में है ही नहीं ! क्या कोई ले गया ? या हरदेई ले गई ? (पुनः उस किताब को अच्छी तरह खोज कर) हैं , वह किताब निःसन्देह गायव हो गई और ताज्जुब नहीं कि वही किताब लेने की नियत से उसे ऐयार ने मुझे बेहोशी की दवा दी हो और इसी किताव की मद पाकर यहाँ से चला गया हो । अगर वास्तव में ऐसा हुआ तो बहुत ही बुरा हुआ और मैंने वेढ़व धोखा खाया । लेकिन अगर वह वास्तव में कोई ऐयार था तो कला , विमला और इंदुमति वाली बात भी उसने झूठ ही कही होगी । ऐसी अवस्था में में उसका पता लगाए विना नहीं रह सकता और इस काम में सुस्ती करना अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना है । " इत्यादि वातों को सोच कर प्रभाकर सिंह पुनः उठ खड़े हुए नकली हरदेई को खोजने लगे । अबकी दफै उनका खोजना बड़ी सावधानी के साथ था यहाँ तक कि एक - एक पेड़ के नीचे और खोज - खोज कर वे उसकी टोह लेने लगे । यकायक केलों के झुरमुट में उन्हें कोई कपड़ा दिखाई दिया , जब उसके पास गये और अच्छी तरह देखा तो मालूम हुआ कि वह हरदेई का कपड़ा है । मुलाकात होने के समय बह वही कपड़ा पहिने हुए थी । और भी अच्छी तरह देखने पर मालूम हुआ कि वह साड़ी का एक भाग है और खून से तर हो रहा है । वहाँ जमीन और पेड़ों के निचले हिस्से पर भी खून के टीट दिखाई दिये ।

अव प्रभाकर सिंह का खयाल वदल गया और वह सोचने लगा कि क्या यहाँ कोई हमारा दुश्मन आ पहुँचा और हरदेई उसके हाथ से मारी गई या जख्मी हुई ! ताज्जुब नहीं कि वह हरदेई को गिरफ्तार भी कर ले गया हो । परन्तु यहाँ दूसरे आदमी का आना विलकुल ही असंभव है ? हाँ हो सकता है कि कला , विमला और इंदु यहाँ आ पहुँची हों और उन्होंने हरदेई को दुश्मन समझ के उसका काम तमाम कर दिया हो ? ईश्वर हो जाने क्या मामला है , पर वह तिलिस्मी किताव मेरे कब्जे से निकल गई , वह बहुत ही बुरा हुआ । इत्यादि बातें सोचते हुए प्रभाकर सिंह बहुत ही परेशान हो गये । वे और भी घूम - फिरकर हरदेई के विषय में कुछ पता लगाने का उद्योग करते परन्तु रात की अंधेरी घिर आने के कारण कुछ भी न कर सके । साथ ही इसके सर्दी भी मालूम होने लगी और आराम करने के लिए वे आड़ की जगह तलाश करने लगे ।

आज की रात प्रभाकर सिंह ने उसी वाग के बीच वाले बँगले में विताई और तरह - तरह की चिंता में रात - भर जागते रहे । तिलिस्मी किताब के चले जाने का दुःख तो उन्हें था

ही परन्तु इस बात का खयाल उन्हें बहुत ज्यादे था कि अगर वह किताब किसी दुश्मन के हाथ में पड़ गई होगी तो वह इस तिलिस्म में पहुँचकर बहुत कुछ नुकसान पहुँचा सकेगा और यहाँ की बहुत - सी अनमोल चीजें भी ले जाएगा ।

यद्यपि वह किताव इस तिलिस्म की चाभी न थी और न उसमें यहाँ का पूरा - पूरा हाल लिखा हुआ था तथापि वह यहाँ के मुख्तसर हाल का गुटका जरूर थी और उसमें की बहुत - सी बातें इन्द्रदेव ने जरूरी समझ कर नोट करा दी थीं । प्रभाकर सिंह उसे कई दफे पढ़ चुके थे परन्तु फिर भी उसके पढ़ने की जरूरत थी । इस समय अपनी भूल से ये शर्मिन्दा हो रहे थे और सोचते थे कि इस विषय में इन्द्रदेव के सामने मुझे बेवकूफ बनाना पड़ेगा ।

ज्यों - त्यों करके रात बीत गई । सवेरा होते ही प्रभाकर सिंह बँगले के बाहर निकले । मामूली कामों से छुट्टी पाकर चश्मे के जल से स्नान किया और संध्या - पूजा करके पुनः बँगले के अन्दर चले गये । कई कोठरियों में घूमते - फिरते वे एक ऐसी

कोठरी में पहुंचे जिसकी लंबाई - चौड़ाई यहाँ की सब कोठरियों से ज्यादे थी । यहाँ चारों तरफ की दीवारों में बड़ी - बड़ी अलमारियाँ बनी हुई थी और उन सभी के ऊपर नंबर लगे थे । सात नंबर की अलमारी उन्होंने किसी गुप्त रीति से खोली और उसके अन्दर चले गये । नीचे उतर जाने के लए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं अस्तु उसी राह से प्रभाकर सिंह नीचे उतर गये और एक दालान में पहुँचे । बटुए में से मोमबत्ती निकालकर रोशनी की तो मालूम हुआ कि यह दालान लंबा - चौड़ा है और यहाँ की जमीन में बहुत - सी लोहे की नालियाँ बनी हुई हैं जो सड़क का काम देने वाली हैं तथा उन पर छोटे - छोटे बहुत - सी गाड़ियाँ रखी हुई हैं जिन पर सिर्फ एक आदमी के बैठने की जगह है । दालान के चारों तरफ दीवारों में बहुत - से रास्ते बने हुए हैं जिनमें से होकर वे लोहे की सड़कें न - मालूम कहाँ तक चली गई हैं ।

गौर से देखने पर प्रभाकर सिंह को मालूम हुआ कि उन छोटी - छोटी गाड़ियों पर पीठ की तरफ नंबर लगे हुए हैं और उन नंबरों के नीचे कुछ लिखा हुआ भी है । प्रभाकर सिंह बड़ी उत्कंटा से पढ़ने लगे । एक गाड़ी पर लिखा हुआ था ' जमानिया दुर्ग ' दूसरी पर लिखा हुआ था ' खास बाग ' तीसरी पर लिखा हुआ था ' चुनार विक्रमी केंद्र चौथी पर लिखा हुआ था केंद्र ' इसी तरह किसी पर ' मुकुट ' किसी पर ' सूर्य ' और किमी पर ‘

सभा - मंडप ' लिखा हुआ था , मतलब यह है कि सभी गाड़ियों पर कुछ - न - कुछ लिखा हुआ था । सवार होने के साथ ही वह गाड़ी चलने लगी । दालान के बाहर हो जाने पर मालूम हुआ कि वह किसी सुरंग के अन्दर जा रही है । जैसे - जैसे वह गाड़ी आगे बढ़ती जाती थी तैसे - तैसे उसकी चाल भी तेज होती जाती थी और हवा के झपेटे में भी अच्छी तरह लग रहे थे , यहाँ तक कि उनके हाथ की मोमबत्ती बुझ गई और हवा के झपेटों से मजबूर होकर उन्होंने अपनी दोनों आँखें बंद कर ली ।

आधे घंटे तक तेजी के साथ चले जाने के बाद गाड़ी एक ठिकाने पहुँचकर रुक गई । प्रभाकर सिंह ने आंखें खोलकर देखा तो उजाला मालूम हुआ । वे गाड़ी से नीचे उतर पड़े और गौर से चारों तरफ देखने लगे । वह स्थान टीक उसी तरह का था कि कला और बिमला के रहने का स्थान था और उसे देखते ही प्रभाकर सिंह को शक हो गया कि हम पुनः उसी टिकाने पहुंच गये जहाँ कला और विमला और इंदु मुलाकात हुई थी परन्तु वहाँ की जमीन पर पहुंचकर उनका खयाल बदल गया और वे पुनः दूसरी निगाह से उस स्थान को देखने लगे ।

यहाँ भी टीक उसी ढंग का बंगला बना हुआ था । जैसा कि कला और विमला के रहने वाली घाटी में था मगर इसके पास मौलसिरी (मालश्री) के पेड़ न थे । दक्षिण तरफ पहाड़ के ऊपर चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दे रही थी और जहाँ पर वह सीढ़ियाँ खत्म हुई थी वहाँ एक सुन्दर मंदिर बना हुआ था जिसके ऊपर का सुनहरा शिखर ध्वजा और त्रिशूल सूर्य की रोशनी पड़ने से बड़ी तेजी के साथ चमक रहा था ।

जब प्रभाकर सिंह गाड़ी से नीचे उतर पड़े तो वह गाड़ी पीछे की तरफ से तेजी के साथ चली गई जिस तेजी के साध यहाँ आई थी । प्रभाकर सिंह चारों तरफ अच्छी तरह देखने के बाद दक्षिण तरफ वाली पहाड़ी के नीचे चले गये और सीढ़ियाँ चढ़ने लगे । जब तमाम सीढ़ियाँ खतम कर चुके तब उस मंदिर के अन्दर जाने वाला फाटक मिला अस्तु प्रभाकर सिंह उस फाटक के अन्दर चले गये ।

इस पहाड़ी के ऊपर चढ़ने वाला इस मंदिर के अन्दर जाने के सिवाय और कहीं भी नहीं जा सकता था क्योंकि मंदिर के चारों तरफ बहुत दूर तक फैली हुई ऊँची - ऊँची जालीदार चारदीवारी थी जिसके उत्तर तरफ सिर्फ एक फाटक था जो इन सीढ़ियों के साथ मिला हुआ था अर्थात् इस सिलसिले की कई सीढ़ियाँ फाटक के अन्दर तक चली

गई थी। सीढ़ियों के अगल - बगल से भी कोई रास्ता या मौका ऐसा न था जिसे लाँघ या कूदकर आदमी दूसरी तरफ निकल जा सके। यह पहाड़ बहुत बड़ा और ऊपर से प्रशस्त था बल्कि यह कह सकते हैं कि ऊपर से कोसों तक चौड़ा था परन्तु इस मंदिर में से न तो कोई उस तरफ जा सकता था और न उस तरफ से कोई इस मंदिर के अन्दर आ सकता था।

प्रभाकर सिंह ने उस मंदिर और चारदीवारी को बड़े गौर से देखा। मंदिर के अन्दर किसी देवता की मूर्ति न थी, केवल एक फव्वारा बीचोंबीच बना हुआ था और दीवारों पर तरह - तरह की सुन्दर तस्वीरें लिखी हुई थीं। मंदिर के आगे सभामंडल में लोहे के बड़े - बड़े सन्दूक रखे हुए थे मगर उनमें ताले का स्थान बिलकुल खाली था अर्थात् यह नहीं जाना जाता था कि इसमें ताला लगाने की भी कोई जगह है या नहीं।

उन लोहे के सन्दूकों को भी अच्छी तरह देखते प्रभाकर सिंह मंदिर के बाहर निकले और खड़े होकर कुछ सोच ही रहे थे कि उस जालीदार चारदीवारी के बाहर मैदान में मंदिर की तरफ आती हुई कई औरतों पर निगाह पड़ी। प्रभाकर सिंह घबरा कर दीवार के पास चले गए और इसके सूराखों में से उन औरतों को देखने लगे। इस दीवार के सूराख बहुत बड़े - बड़े थे, यहाँ तक कि आदमी का हाथ बखूबी उन सूराखों के अन्दर जा सकता था।

प्रभाकर सिंह ने देखा कि कला, विमला और इंदुमति धीरे - धीरे इसी मंदिर की तरफ चली आ रही हैं और उन तीनों के चेहरे से हद दरजे की उदासी और परेशानी टपक रही है। उस समय प्रभाकर सिंह को हरदेई वाली बात भी याद आ गई मगर क्रोध आ जाने पर भी उनका दिल उन तीनों के पास गये विना बहुत बेचैन होने लगा। तथा वे दीवार के पार जाकर उन सभों से मिल नहीं सकते थे तथापि सोचने लगे कि अब इन लोगों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए? हरदेई की जुबानी जो कुछ सुना है उसे साफ - साफ कह देना चाहिए या धीरे - धीरे सवाल करके उन बातों की जाँच करनी

चाहिए।

धीरे - धीरे चलकर वे तीनों औरतें भी मंदिर की दीवार के पास आ पहुँची और एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर इस तरह बातचीत करने लगी।

इंदुमति : (कला से) बहिन , अभी तक समझ में नहीं आया कि हम लोग किस तरह इस तिलिस्म के अन्दर आकर फंस गई ।

कला : मेरी बुद्धि भी किसी बात पर नहीं जमती और न खयाल ही को आगे बढ़ने का मौका मिलता है । अगर कोई दुश्मन भी हमारी घाटी में आ पहुँचा होता तो समझते कि यह सब उसी की कार्रवाई है मगर ..

बिमला : भला यह कैसे कह सकते हैं कि कोई दुश्मन वहाँ नहीं आया ? अगर नहीं आया तो यह मुसीवत किसके साथ आई ? हाँ यह जरूर कहेंगे कि प्रकट में सिवाय प्रभाकर सिंह जी के और कोई आया हुआ मालूम नहीं हुआ और न इसी वात का पता लगा कि हमारी लोडियों में से किसी की नीयत खराब हुई या नहीं ।

इंदुमति : (लंबी साँस लेकर) हाय ! इस बात का भी कुछ पता नहीं लगा कि उन पर (प्रभाकर सिंह) क्या बीती ? एक तो लड़ाई में जख्मी होकर वे स्वयं कमजोर हो रहे थे , दूसरे यह नई आफत और आ पहुँची ! ईश्वर ही कुशल करे !

बिमला : हाँ बहिन , मुझे भी जीजाजी के विषय में बड़ी चिंता लगी हुई है परन्तु साथ ही इसके मेरे दिल में इस बात का भी बड़ा ही खटका लगा हुआ है कि उन्होंने बदन खोलकर अपने जख्म जो घोर संग्राम में लगे थे हम लोगों को क्यों नहीं देखन दिये । इसके अतिरिक्त हम लोगों के भोजन में बेहोशी की दवा देने वाला कौन था ? इस बात को जब में विचारती हूँ ... (चौंककर) इस चारदीवारी के अन्दर कौन है ?

कला : अरे , यह तो जीजाजी मालूम पड़ते हैं !

बात करते - करते विमला की निगाह मंदिर की चारदीवारी के अन्दर जा पड़ी जहाँ प्रभाकर सिंह खड़े थे और नजदीक होने के कारण इन सभों की बातें सुन रहे थे । दीवार के जालीदार सूराख बहुत बड़े होने के कारण इनका चेहरा विमला को अच्छी तरह दिखाई दे गया था ।

कला , विमला और इंदु लपक कर प्रभाकर सिंह के पास आ गईं । प्रभाकर सिंह भी अपने दिल का भाव छिपाकर इन लोगों से बातचीत करने लगे ।

प्रभाकर सिंह : तुम तीनों यहाँ पर किस तरह आ पहुँचीं ? मैं तुम लोगों की खोज में बहुत दिनों से बेतरह परेशान हो रहा हूँ । लड़ाई से लौटकर जब मैं तुम्हारी घाटी में गया

तो उसे बिलकुल ही उजाड़ देखकर मैं हैरान रह गया ।

इंदुमति : यही बात में आपसे पूछने वाली थी मगर ..

बिमला : ताज्जुब की बात है कि आप कहते हैं कि लड़ाई से लौटकर जब उस घाटी में आये तो उसे बिलकुल उजाड़ पाया । क्या लड़ाई से लौटने के बाद आप हम लोगों से नहीं मिले ? और आपको घायल देखकर हम लोगों ने इलाज नहीं करना चाहा ? या यह कहिए कि आपका जख्मी घोड़ा आपको लड़ाई में से बचाकर भागता हुआ क्या हमारी घाटी के बाहर तक नहीं आया था !

प्रभाकर सिंह : नमालूम तुम क्या कह रही हो ? मैं लड़ाई से भाग कर नहीं आया बल्कि प्रसन्नता के साथ महाराज सुरेन्द्रसिंह से विदा होकर तुम्हारी तरफ आया था ।

इंदुमति : (ऊँची साँस लेकर) हाय , बड़ा ही अनर्थ हुआ ! हम लोग वेढ़ब धोखे में डाले गये ? हाय , आपका जख्मों को छिपाना हमें खुटकं में डाल चुका था , परन्तु प्रेम ! तेरा बुरा हो ! तूने ही मुझे सम्हलने नहीं दिया ।

प्रभाकर सिंह : (मन में) मालूम होता है कि हरदेई का कहना टीक है और कोई दूसरा गैर आदमी मेरी सूरत बन कर इन लोगों के पास जरूर आया था , परन्तु इंदु के भाव से यह नहीं जाना जाता कि इसने जान - बूझकर उसके साथ..अस्तु जो हो , संभव है कि यह अपने बचाव के लिए मुझे बनावटी भाव दिखा रही हो , हाँ यह निश्चय हो गया कि हरदेई एकदम झूटी नहीं है , कुछ - न - कुछ दाल में काला अवश्य है । (प्रकट) मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कर रही हो , खुलासा कहते तो मालूम हो और विचार किया जाय कि मामला क्या है ? क्या तुम्हारे कहने का वास्तव में यही मतलब है कि मैं लड़ाई से लौटकर तुम लोगों से मिल चुका हूँ ? इंदुमति : वेशक् ! आपका जख्मी घोड़ा आपके शरीर को बचाता हुआ वहाँ तक ले आया था और हम लोग आपको जबकि आप बिलकुल बेहोश थे उठा कर घाटी के अन्दर ले आए थे ।

प्रभाकर सिंह : मगर ऐसा नहीं हुआ । हरदेई ने तुम लोगों का पर्दा खोलते समय यह भी कहा था कि कोई गैर आदमी प्रभाकर सिंह बन कर इस घाटी में आया था और बहुत दिनों तक इंदुमति ने उनके साथ ..

इंदुमति : (बात काट कर) क्या यह बात हरदेई ने आपसे कही थी ?

प्रभाकर सिंह : हाँ बेशक ! साथ ही इसके (बिमला की तरफ देख के) तुम लोगों के गुप्त प्रेम का हाल भी हरदेई ने मुझसे कह दिया था ।

इंदुमति : हाय ! अब में क्या करूँ ? (आसमान की तरफ देख के) हे सर्वशक्तिमान जगदीश ! तू ही मेरा न्याय करने वाला है ।

इतना कहते - कहते इंदुमति की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी ।

विमला : मालूम होता है कि हरदेई ने मेरे साथ दुश्मनी की ।

प्रभाकर सिंह : बेशक ।

विमला : और उसी ने घाटी में आपसे मिल कर ..

प्रभाकर सिंह : (बात काट कर) नहीं , वह मुझसे घाटी में नहीं मिली बल्कि तुम लोगों की सताई हुई हरदेई इसी तिलिस्म के अन्दर मुझसे मिली थी । वेशक उसने तुम लोगों का भंडा फोड़ के , तुम लोगों के साथ बड़ी दुश्मनी की , मगर वह ऐसा क्यों न करती ? तुम लोगों ने भी तो उसके साथ बड़ी बेदर्दी का बर्ताव किया था ।

प्रभाकर सिंह के मुंह से इतना सुनते ही कला , बिमला और इंदुमति ने अपना माथा ठोंका और इसके बाद इंदुमति ने एक लंबी साँस लेकर प्रभाकर सिंह से कहा । " अगर मुझमें सामर्थ्य होती तो मैं जरूर अपना कलेजा फाड़कर आपको दिखाती , हाँ जरूरी दिखाती , नहीं - नहीं दिखाऊँगी , मेरे में इतनी सामर्थ्य है , परन्तु अफसोस ! हम लोगों के पास इस समय कोई हर्वा नहीं है , और आप ऐसी जगह खड़े हैं जहाँ ..

विमला : अच्छा कोई चिंता नहीं जिसने धर्म को नहीं छोड़ा है ईश्वर आपका मददगार है ! आप पहिले हम लोगों के पास आइए फिर जो कुछ होगा देखा जाएगा ।

प्रभाकर सिंह : मैं भी यही चाहता हूँ परन्तु क्योंकर तुम लोगों के पास आ सकता हूँ , यह विचारने की बात है ।

बिमला : आप यदि उस सामने वाली पहाड़ी के ऊपर चढ़ते तो ऊपर - ही - ऊपर यहाँ तक आ जाते जहाँ में खड़ी हूँ और अब भी आप ऐसा कर सकते हैं , या आज्ञा कीजिए तो हम लोग स्वयं उस राह से घूमकर आपके पास ..

विमला और कुछ कहना ही चाहती थी कि राक्षस की तरह की भयानक सूरत का एक आदमी हाथ में नंगी तलवार लिए हुए कला , विमला और इंदमति की तरफ आता प्रभाकर सिंह को दिखाई पड़ा क्योंकि वह तीनों के पीछे की तरफ से आ रहा था जिधर प्रभाकर सिंह का सामना पड़ता था ।

प्रभाकर सिंह : (ताज्जुब के साथ) विमला , क्या बता सकती हो कि वह आदमी कौन है जो तुम लोगों की तरफ आ रहा

बिमला , कला और इंदुमति ने घबड़ाकर पीछे की तरफ देखा और तीनों एकदम चिल्ला उठीं । बिमला ने चिल्लाते हुए आँसू गिराते हुए प्रभाकर सिंह से कहा । " बचाइए वचाइए , आप जल्दी यहाँ आकर हम लोगों की रक्षा कीजिए , यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है । "

इतना कहकर वे वहाँ से भागने की चेष्टा करने लगीं परन्तु भागकर जा ही कहाँ सकती थीं । वात - की - बात में वह दुष्ट इन तीनों के पास आ पहुँचा और अपनी जलती हुई क्रोध से भरी आँखों से विमला की तरफ देख कर बोला : " क्यों कम्बल ! अब बता कि तू मेरे हाथ से बचकर कहाँ जा सकती है ? आज में तुम लोगों के खून से अपनी प्यासी तलवार को संतुष्ट करूँगा और ... "

बस इससे ज्यादे उसने क्या कहा सो प्रभाकर सिंह सुन न सके और न सुनने के लिए वे वहाँ खड़े रह सके । इस पहाड़ी के नीचे उतरकर और सामने वाले पहाड़ पर चढ़कर ऊपर उन लोगों के पास पहुँचने की नीयत से प्रभाकर सिंह दौड़े और तेजी के साथ सीढ़ियाँ उतरने लगे ।

प्रभाकर सिंह का मन इस समय बहुत ही व्यग्र हो रहा था और वे सोचते जाते थे कि क्या वहाँ पहुँचते - पहुँचते तक मैं उन तीनों को जीती पाऊँगा और क्या वे दुष्ट मेरा मुकाबला करने के लिए वहाँ मुझे तैयार मिलेगा !

चौथा ब्यान।

अब देखना चाहिए कि नागर से विदा होकर भूतनाथ कहाँ गया और उसने क्या कार्रवाई की ।

नागर के मकान से उतरकर भूतनाथ सीधे दक्खिन की तरफ रवाना हुआ और रात - भर बराबर चलता गया । सुबह होते - होते तक वह एक पहाड़ के दालान में पहुँचा जिसके पास एक सुन्दर तालाब था । उस तालाब पर भूतनाथ टहर गया और कुछ देर आराम करने के बाद जरूरी कामों से निपटने के फेर में पड़ा । जब स्नान - संध्या इत्यादि से छुट्टी पा चुका तो बटुए में से मेवा निकाल कर खाया , जल पिया और इसके बाद पहाड़ पर चढ़ने लगा ।

यहाँ से पहाड़ों का सिलसिला बराबर बहुत दूर तक चला गया । भूतनाथ पहाड़ के ऊपर चढ़कर दोपहर दिन चढ़े तक बराबर चलता गया । इसी बीच में उसने कई बड़े - बड़े और भयानक जंगल पार किये और अंत में वह एक गुफा के मुहाने पर पहुंचा जहाँ साख और शीशम के बड़े - बड़े पेड़ों से अंधकार हो रहा था । भूतनाथ वहाँ एक पत्थर की चट्टान पर बैट गया और किसी का इंतजार करने लगा ।

भूतनाथ को वहाँ बैठे हुए घंटे - भर से कुछ ज्यादे देर हुई होगी कि उसका एक शागिर्द वहाँ आ पहुँचा जो इस समय एक देहाती जमीदार की सूरत बना हुआ था । उसने भूतनाथ को , जो इस समय अपनी असली सूरत में था , देखते ही प्रणाम किया और बोला , “ मैं श्यामदास हूँ , आपको खोजने के लिए काशी गया हुआ था । "

भूतनाथ सिंहः आओ हमारे पास बैठ जाओ और बोलो कि वहाँ तुमने क्या - क्या देखा और किन - किन बातों का पता लगाया ।

श्यामदास : वहाँ बहुत कुछ टोह लेने पर मुझे मालूम हुआ कि प्रभाकर सिंह सही - सलामत लड़ाई पर से लौट आये और जब वे उस घाटी में गये तो जमना , सरस्वती और

इंदुमति को न पाकर बहुत ही परेशान हुए । इसके बाद वे इन्द्रदेव के पास गये और अपने दोस्त गुलाबसिंह के साथ कई दिनों तक वहाँ मेहमान रहे ।

भूतनाथ सिंह : ठीक है यह खबर मुझे भी वहाँ लगी थी , में इन्द्रदेव को देखने के लिए वहाँ गया था क्योंकि आजकल वे बीमार पड़े हुए हैं । अच्छा तब क्या हुआ ?

श्यामदास : इसके बाद में जमानिया गया , वहाँ मालूम हुआ कि कुँअर गोपाल सिंह की शादी के बारे में तरह - तरह की खिचड़ी पक रही है जिसका खुलासा हाल में फिर किसी समय आपसे बयान करूंगा । इसके अतिरिक्त आज पन्द्रह दिन से भैया राजा (गोपालसिंह के चाचा) कहीं गायब हो गये हैं । बाबाजी (दारोगा) वगैरह उनकी खोज में लगे हुए हैं , बहुत - से जासूस भी चारों तरफ भेजे गये हैं , मगर अभी तक उनका पता नहीं लगा ।

भूतनाथ : ऐसी अवस्था में कुँअर गोपालसिंह तो बहुत ही परेशान और दुखी हो रहे होंगे !

श्यामदास : होना तो ऐसा ही चाहिए था मगर उनके चेहरे पर उदासी और तरद की कोई निशानी मालूम नहीं पड़ती और इस बात से लोगों को बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है । आज तीन - चार दिन हुए होंगे कि कुँअर गोपालसिंह इन्द्रदेव से मिलने के लिए ' कैलाश ' गये थे , दोपहर तक रहकर वह पुनः जमानिया लौट गये । सुनते हैं कि इन्द्रदेव भी दो - चार दिन जमानिया जाने वाले हैं ।

भूतनाथ : इन्द्रदेव के बारे में जो कुछ सुना करो उसका निश्चय मत माना करो , वह बड़े विचित्र आदमी हैं और यद्यपि मुझे विश्वास है कि वह मेरे साथ कभी कोई बुराई न करेंगे मगर फिर भी मैं उनसे डरता हूँ । दूसरी बातों को जाने दो उनके चेहरे से इस बात का भी शक नहीं लगता कि आज वह खुश हैं या नाखुश ।

श्यामदास : इन्द्रदेव जी चाहे आपके दोस्त हों मगर इस बात का शक जरूर है कि वे जमना और सरस्वती को मदद दे रहे हैं।

मैं उस समय भी हरदेई की सूरत में था । प्रभाकर सिंह ने मुझसे कई तरह के सवाल किए और मैंने उन्हें खूब ही धोखे में डाला । उनके पास एक छोटी - सी किताब थी जिसमें उस तिलिस्म का हाल लिखा हुआ था । उसी किताब की मदद से वे तिलिस्म के

अन्दर गए थे । मैंने धोखा देकर यह किताव उनकी जेब में से निकाल ली और उसी की मदद से मुझे छुटकारा मिला । तिलिस्म के निकलते ही में सीधा आपसे मिलने के लिए इस तरफ रवाना हुआ और उन सभी को तिलिस्म के अन्दर ही छोड़ दिया । (बटुए में से किताब निकाल और भूतनाथ के हाथ में देकर) देखिए यही वह तिलिस्मी किताब है , अब आप इसकी मदद से बखूबी उस तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं ।

भूतनाथ : (किताब देखकर और दो - चार पन्ने उलट - पुलट कर रामदास की पीठ ठोंकता हुआ) शाबाश , तुमने वह काम किया जो आज मेरे किए भी कदाचित् नहीं हो सकता था ! वाह वाह वाह ! अब मेरे बरावर कौन हो सकता है ? अच्छा अब तुम हमारे साथ इस खोह के अन्दर चलो और कुछ खा - पीकर निश्चिन्त होने के बाद मुझसे खुलासे - तोर पर कहो कि उस कुएं में जाने के बाद क्या हुआ ! निःसंदेह तुमने बड़ा काम किया , तुम्हारी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है ! अच्छा यह तो बताओ कि यह तिलिस्मी किताब प्रभाकर सिंह को कहाँ से मिली , क्या इस बात का भी कुछ पता लगा ?

रामदास : इसके विषय में मैं कुछ भी नहीं जानता ।

भूतनाथ : खैर इसके जाँच करने की कुछ विशेष जरूरत भी नहीं है ।

रामदास : मैं समझता हूँ कि आप उस तिलिस्म के अन्दर जरूर जाएँगे और जमना , सरस्वती तथा इंदुमति को अपने कब्जे में करेंगे ।

भूतनाथ : जरूर , क्या इसमें भी कोई शक है । अभी घंटे - डेढ़ - घंटे में हम और तुम यहाँ से रवाना हो जाएंगे और आधी रात बीतने के पहिले ही वहाँ जा पहुंचेंगे । अब तो हम लोग पास आ गये हैं सिर्फ तीन - चार घंटे का ही रास्ता है । आज के पहिले जमना और सरस्वती का इतना डर न था जितना अव है । अब उनके खयाल से में काँप उटता हूँ क्योंकि पहिले तो सिवाय दयाराम के मारने के और किसी तरह का इल्जाम वे मुझ पर नहीं लगा सकती थीं और उस बात का सबूत मिल भी नहीं सकता था क्योंकि मैंने ऐसा किया ही नहीं , परन्तु अब तो वे लोग कई तरह के इल्जाम मुझ पर लगा सकती हैं और वेशक इधर मैंने उन सभी के साथ बड़ी - बड़ी बुराइयाँ भी की हैं , ऐसी अवस्था में उनका बच जाना मेरे लिए बड़ा ही अनर्थकारक होगा । अस्तु जिस तरह हो सकेगा में जमना , सरस्वती , इंदुमति , प्रभाकर सिंह और गुलाबसिंह को भी जान से मारकर

बखेड़ा ते करूंगा । हाँ , गुलाबसिंह का पता है , वह कहाँ है और क्या कर रहा है ? क्योंकि तुम्हारी जुबानी जो कुछ सुना है उससे मालूम होता है कि वह प्रभाकर सिंह के साथ तिलिस्म के अन्दर नहीं

गया ।

रामदास : हाँ ठीक है , पर गुलाबसिंह का हाल मुझे कुछ भी मालूम नहीं हुआ । अच्छा मैं एक बात आपसे पूछना चाहता

भूतनाथ : वह क्या ?

रामदास : आपने अभी जो अपना हाल बयान किया है उसमें चन्द्रशेखर का हाल सुनने से मुझे बड़ा ही ताज्जुब हो रहा है । कृपा कर यह वताइए कि वह चन्द्रशेखर कौन है और आप उससे इतना क्यों डरते हैं ? क्या उसे अपने कब्जे में करने की सामर्थ्य आप में नहीं है ?

.

भूतनाथ : (उसकी याद से काँप कर) इस दुनिया में मेरा सबसे बड़ा दुश्मन वही है , ताज्जुब नहीं एक दिन उसी की बदौलत जीते - जागते रहने पर भी मुझे यह दुनिया छोड़नी पड़े , वह बड़ा ही बेढब आदमी है , बड़ा ही भयानक आदमी है , तथा ऐयारी में वह कई दफे मुझे जक दे चुका है ! आश्चर्य होता है कि उसके बदन पर कोई हर्वा असर नहीं करता ! नमालूम उसने किसी तरह का कवच पहिर रखा है या ईश्वर ने उसका बदन ही ऐसा बनाया है । उसके बदन पर मेरी दो तलवारें टूट चुकी हैं । उसकी तो सूरत ही देखकर मैं बदहवास हो जाता हूँ ।

रामदास : (आश्चर्य के साथ) आखिर वह है कौन ?

भूतनाथ : (कुछ सोच कर) अच्छा फिर कभी उसका हाल तुमसे कहेंगे , इस समय जो कुछ बातें दिमाग में पैदा हो रही हैं उन्हें पूरा करना चाहिए अर्थात् जमना सरस्वती और इंदुमति के बखेड़े से तो छुट्टी पा लें फिर चन्द्रशेखर को भी देख लिया जाएगा , आखिर वह अमृत पीकर थोड़े ही आया होगा ।

इतना कहकर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और अपने दोनों शागिर्दों को साथ लिए हुए खोह के अन्दर चला गया । इस समय रात घंटे भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी ।

पांचवा व्यान।

दूसरी पहाड़ी पर चढ़कर ऊपर - ही - ऊपर जमना , सरस्वती और इंदुमति के पास पहुँचने पर जल्दी करने पर भी प्रभाकर सिंह को आधे घंटे से ज्यादे देर लग गई । " क्या इतनी देर तक दुश्मन टहर सकता है ? क्या इतनी देर तक ये नानक औरतें ऐसे भयानक दुश्मन के हाथ से अपने को बचा सकती हैं ? क्या इस निर्जन स्थान में कोई उन औरतों का मददगार पहुंच सकता है ? नहीं , ऐसी बात तो नहीं हो सकती ! " यही सब कुछ सोचने हा प्रभाकर सिंह वही जी के साथ गन्ता ते करकं वहाँ पहुंचे जहाँ जमना , मरम्बती अर इंदुमति को छोड़ गये थे । उन्हें यह आशा न थी कि उन नीनों

मुलाकात होगी , मगर नहीं , ईश्वर बड़ा की कारसाज है , उसने इस निर्जन स्थान में भी उन औरतों के लिए एक बहुत बड़ा मददगार भेज दिया जिसकी बदौलत प्रभाकर सिंह के पहुंचने तक वे तीनों दुश्मन के हाथ में बनी रह गई ।

प्रभाकर सिंह ने वहाँ पहुँचकर देखा कि जमना , सरस्वती और इंदुमति दुश्मन के खौफ से बदहवास होकर मैदान की तरफ भागी जा रही हैं और एक नौजवान बहादुर आदमी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है . नलवार मे उस दुश्मन का मुकाबला कर रहा है जो उन तीनों औरतों को मारने के लिए वहाँ आया था । यह तमाशा देख प्रभाकर सिंह नदद में पड़ गये और सोचने लगे कि हम उन भागती हुई औरतों को ढाँढस देकर लोटा लावें या पहिले हम बहादर की मदद करें जो इस समय हमारे दुश्मन का मुकाबला बड़ी बहादुर के साथ कर रहा है । उन दोनों बहादुगे की अद्भुत लाई को देखकर प्रभाकर सिंह प्रसन्न हो गये । थोड़ी देर के लिए उनके दिल से तमाम कुलफत जाती रही , और वे एकटक उन दोनों को लड़ाई का तमाशा देखने लगे । शैतान जो जमना इत्यादि को माग्ने आया था यद्यपि बहादुर था और लड़ाई में अपनी तमाम कारीगरी खर्च कर रहा था । मगर उस नकाबपोश के मुकाबले वह बहुत दवा हुआ मालूम पड़ने लगा , यहाँ तक कि उसका दम फूलने लगा और नकाबपोश के मोढ़े पर बैठकर उसकी तलवार दो टुकड़े हो गई ।

कुछ देर के लिए लड़ाई रुक गई और दोनों बहादुर हटकर खड़े हो गये । उस शैतान दुश्मन को जिसका नाम इस मोकं के लिए हम बेताल रख देते हैं , विश्वास था कि तलवार टूट जाने पर नकाबपोश उस पर ज़रूर हमला करंगा , मगर नकाबपोश ने ऐसा न किया । वह हटकर खड़ा हो गया और बेताल से बोला , “ कहो जब किस चीज से लड़ोगे ? में उस आदमी पर हवा चलाना उचित नहीं समझता जिसका हाथ हथियार से खाली हो । "

इसका जवाब बेताल ने कुछ न दिया , उसी समय नकाबपोश में प्रभाकर सिंह की तरफ देखा और कहा , “ मुझे तुम्हारी मदद को कोई जरूरत नहीं है , तुम (हाथ का इशारा करके) उन औरतों को सम्हालो और ढाढ़स दो जो इस शैतान के डर से बदहवास होकर भागी जा रही हैं या दुश्मन का मुकाबला करी तो में उन्हें जाकर समझाऊँ और यहाँ लोटा न ले आऊँ । "

प्रभाकर सिंह के लिए में यह खयाल विजली की तरह दौड़ गया कि में उन औरतों की तरफ जाता हूँ तो नकाबपोश मुझे नामर्द समझेगा और अगर स्वयं दुश्मन का मुकाबला करके नकाबपोश को औरतों की तरफ जाने के लिए कहता हूँ तो क्या जाने यह भी उन सभी का दुश्मन ही हो और उन औरतों के पास जाकर कोई बुराई का काम कर बेटे । इस खयाल से क्षणमात्र के लिए प्रभाकर सिंह को चुप कर दिया , इसके बाद प्रभाकर सिंह ने कहा , " जो तुम कहो वही करूँ । "

नकाबपोश बेहतर होगा कि तुम उन्हीं औरतों की तरफ जाओ !

“ बहुत अच्छा " कह प्रभाकर सिंह बड़ी तेजी के साथ उनकी तरफ लपक पड़े जो भागती हुई अब कुछ - कुछ आँखों की ओट हो चली थीं । वे भागती चली जाती थीं और पीछे की तरफ फिर - फिर कर देखती जाती थी । दोड़त - दाइते वे एक ऐसे स्थान पर पहुँची जिसके आगे एक दरवाजा बना हुआ था जो इस समय खुला था । इन औरतों को इतनी फुर्सत कहा कि दीवार की लंबाई - चौड़ाई की जाँच करती या दूसरी तरफ भागने की कोशिश करती ? वे सीधी उस दरवाजे के अन्दर घुस गईं , खास करके इस खयाल से भी कि अगर इसके अन्दर दरवाजा बंद कर लेंगे तो दुश्मन से बचाव हो जाएगा ।

उसी समय प्रभाकर सिंह भी नजदीक पहुंच गये और इंदुमति की निगाह प्रभाकर सिंह के ऊपर जा पड़ी । प्रभाकर सिंह ने हाथ के इशारे से उसे रुक जाने के लिए कहा परन्तु उसी समय वह दरवाजा बंद हो गया जिसके अन्दर जमना , सरस्वती और इंदुमति घुस गई थी । प्रभाकर सिंह को यह चिंता उत्पन्न हुई कि यह दरवाजा खुद बंद हो गया या इंदुमति ने जान - बूझकर बंद कर दिया ।

थोड़ी ही देर में प्रभाकर सिंह उस दरवाजे के पास पहुंचे और धक्का देकर उसे खोलना चाहा मगर दरवाजा न खुला । प्रभाकर सिंह ने चाहा कि आगे बढ़कर देखें कि यह दीवार कहाँ तक गई है परन्तु उसी समय सरस्वती की आवाज कान में पड़ने से वे रुक गए और ध्यान देकर सुनने लगे । यह आवाज उस दरवाजे के पास दीवार के अन्दर से आ रही थी मानो सरस्वती किसी दूसरे आदमी से बातचीत कर रही है , जैसा कि नीचे लिखा जाता है

सरस्वती : हाय , यहाँ भी दुष्टों से हम लोगों का पिंड न छूटेगा ! ये लोग इस तिलिस्म के अन्दर आ क्योंकर गये यही

ताज्जुब है !

जवाब : (जो किसी जानकार आदमी के मुँह से निकली हुई आवाज मालूम पड़ती थी) खैर अब तो आ ही गये , अब तुम लोगों के निकाले हम लोग नहीं निकल सकते और अब तुम लोग जान बचा ही कर क्या करोगी क्योंकि प्रभाकर सिंह की निगाह में तुम लोगों की कुछ भी इज्जत न रही , उन्हीं की नहीं बल्कि मुझे भी वह सव हाल मालूम हो गया । इस समय तुम लोग उसी पाप का फल भोग रहे हो ! अफसोस , मुझे तुम लोगों से ऐसी आशा कदापि न थी ! अगर मैं ऐसा जानता तो इस पवित्र घाटी को तुम लोगों के पापमय शरीर से कभी अपवित्र होने न देता ।

प्रभाकर सिंह : (ताज्जुब से मन में) हैं ? क्या यह आवाज इन्द्रदेव की है !

सरस्वती : मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो ! क्या किसी दुष्ट ने हम लोगों को बदनाम किया है ? क्या किसी कमीने ने हम लोगों पर कलंक का धच्या लगाना चाहा है ? नहीं कदापि नहीं , स्वप्न में भी ऐसा नहीं हो सकता ! हम लोगों के

पवित्र मनों को डावाँडोल करने वाला इस संसार में कोई भी नहीं है ! में इसके लिए खुले दिल से कसम खा

सकती हूँ ।

जवाबः दुनिया में जितने बदकार आदमी होते हैं वे कसम खाने में बहुत तेज होते हैं ! मुझसे तुम लोगों की यह चालाकी नहीं चल सकती । जो कुछ में इस समय कह रहा हूँ वह केवल किसी से सुनी - सुनाई वातों के कारण नहीं है बल्कि मुझे इस बात का बहुत ही पक्का सबूत मिल चुका है जिससे तुम कदापि इनकार नहीं कर सकती ।

प्रभाकरसिंह : (मन में) बेशक वह बात टीक मालूम होती है जो हरदेई ने मुझ से कही थी ।

सरस्वती : कैसा सबूत और कैसी बदनामी ? भला में भी तो उसे सुनें ।

जवावः तुम तो जरूर ही सुनोगी , अभी नहीं तो और घंटे भर में सही । प्रभाकर सिंह के सामने ही मैं इस बात को खोलूँगा और इस कहावत को चरितार्थ करके दिखा दूंगा कि ' छिपत न दुष्कर पाप , कोटि जतन कीजे तऊ ' ।

सरस्वती : कोई चिंता नहीं , मैं भी अच्छी तरह उस आदमी का मुँह काला करूँगी जिसने हम लोगों को बदनाम किया है और अपने को अच्छी तरह निर्दोष साबित कर दिखाऊँगी ।

आवाज : अगर तुम्हारे किये हो सकेगा तो जरूर ऐसा करना ।

सरस्वती : हॉ - हाँ जरूर ही ऐसा करूंगी । मेरा दिल उसी समय खटका था जब प्रभाकर सिंह ने कुछ व्यंग्य के साथ बातें की थीं । मैं उस समय उनका मतलब कुछ नहीं समझ सकी थी मगर अब मालूम हो गया कि कोई महापुरुष हम लोगों को बदनाम करके अपना काम निकालना चाहते हैं ।

जनाबः इस तरह की बातें तुम प्रभाकर सिंह को समझाना , मुझ पर इसका कुछ भी असर नहीं हो सकता , यदि में तुम्हारा नातेदार न होता तो मुझे इतना कहने की कुछ जरूरत भी न थी , मैं तुम लोगों का मुंह भी न देखता और अब भी ऐसा ही करूँगा । में नहीं चाहता कि अपना हाथ औरतों के खून से नापाक करूँ । तथापि एक दफे प्रभाकर

सिंह के सामने इन बातों को साबित जरूर करूंगा जिसमें कोई यह न कहे कि जमना , सरस्वती और इंदुमति पर किसी ने व्यर्थ ही कलंक लगा ! अच्छा अब में जाता हूँ , फिर मिलूंगा ।

सरस्वती : अच्छा - अच्छा देखा जाएगा , इन चालबाजियों से काम नहीं चलेगा ।

बस इसके बाद किसी तरह की आवाज न आई , अस्तु कुछ देर तक और कान लगा कर ध्यान देने के बाद प्रभाकर सिंह पुनः उस दीवार के अन्दर जाने का उद्योग करने लगे । इस खयाल से कि देखें यह दीवार कहाँ पर खतम हुई है वे दीवार के साथ - ही - साथ पूरब तरफ रवाना हुए । दीवार बहुत दूर तक नहीं गई थी , कंवल चार या पाँच विगहे के बाद मुड़ गई थी , अस्तु प्रभाकर सिंह भी घूमकर दूसरी तरफ चल पड़े । वीस - पच्चीस कदम आगे जाने के बाद उन्हें एक खुला दरवाजा मिला । प्रभाकर सिंह उस दरवाजे के अन्दर चले गए और दूर में जमना , सरस्वती और इंदमति को एक पेड़ के नीचे बेटे देखा जो नीचे की तरफ सिर हुए आँखों से गरम - गरम ऑसू गिरा रही थी । क्रोध में भरे हुए प्रभाकर सिंह उन तीनों के पास चले गये और सरस्वती की तरफ देखकर बोले , " वह कौन आदमी था जो अभी तुमसे बातें कर रहा था ? "

सरस्वती : मुझे नहीं मालूम कि वह कौन था ।

प्रभाकर सिंह : फिर तुमसे इस तरह की बात करने की उसे जरूरत ही क्या थी ?

सरस्वती : सो भी में कुछ कह नहीं सकती ।

प्रभाकर सिंह : हाँ टीक है , मुझसे कहने की तुम्हें जरूरत ही क्या है ! खैर जाने दो , मुझे भी विशेष सुनने की आवश्यकता नहीं है , तो मैं पहिले ही हरंदेई की जुबानी तुम लोगों की वदकारियों का हाल सुनकर अपना दिल ठंडा कर चुका था , अब इस आदमी की बातें सुनकर और भी रहा - सहा शक जाता रहा , यद्यपि तुम लोग इस योग्य थीं कि इस दुनिया से उटा दी जाती और यह पृथ्वी तुम्हारे असह्य बोझ से हल्की कर दी जाती , परन्तु नहीं , उस आदमी की तरह जो अभी तुमसे बातें कर रहा था में भी तुम लोगों के खून से अपना हाथ अपवित्र नहीं करना चाहता । खैर तुम दोनों बहिनों से तो मुझे कुछ विशेष कहता नहीं है , रही इंदुमति सो इसे में इस समय से सदेव के लिए त्याग करता हूँ । शास्त्र में लिखा हुआ है कि किसी का त्याग कर देना मार डालने के ही बराबर है ।

इंदुमति : (रोती हुई हाथ जोड़कर) प्राणनाध ! क्या तुम दुश्मनों की जुवानी गढ़ी - गढ़ाई बातें सुन कर मुझे त्याग कर दोगे !!

प्रभाकर : हाँ त्याग कर दूँगा , क्योंकि जो कुछ बातें तुम्हारे विषय में मैंने सुनी हैं उन्हें यह दूसरा सबूत मिल जाने के कारण मैं सत्य मानता हूँ । केवल इतना ही नहीं , तुम्हारी ही जुबान से उन बातों की पुष्टि हो चुकी है । अब इसकी भी कोई जरूरत नहीं कि तुम लोगों को इस तिलिस्म के बाहर ले जाने का उद्योग करूँ , अस्तु अब में जाता हूँ । (छाती पर हाथ रख कर) में इस वज्र की चोट को इसी छाती पर सहन करूँगा और फिर जो कुछ ईश्वर दिखावेगा देलूँगा , मुझे विश्वास हो गया कि बस मेरे लिए दुनिया इतनी ही थी ।

इतना कहकर प्रभाकर सिंह वहाँ से रवाना हो गए । इंदुमति रो - रोकर पुकारती ही रह गई मगर उन्होंने उसकी कुछ भी न सुनी । जिस खिड़की की राह वे इस दीवार के अन्दर गये थे उसी राह से वे बाहर चले आये और उस तरफ रवाना हुए जहाँ नकाबपोश और वैताल को लड़ते हुए छोड़ आये थे ।

वहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने दोनों में से एक को भी न पाया , न तो वैताल ही पर निगाह पड़ी और न नकाबपोश ही की सूरत दिखाई दी । ताज्जुब के साथ प्रभाकर सिंह चारों तरफ देखने और सोचने लगे कि कहीं में जगह तो नहीं भूल

गया या वे दोनों ही तो आपस में फैसला करके कहीं नहीं चले गये ।

कुछ देर तक इधर - उधर ढूँढने के बाद प्रभाकर सिंह एक पत्थर की चट्टान पर बैठ गये और झुकी हुई गर्दन को हाथ का सहारा दे कर तरह - तरह की बातें सोचने लगे । इन्हें इंदमति को त्याग देने का बहुत ही रंज था और वे आपनी जल्दबाजी पर कुछ देर के बाद पटनाने लग गये थे । वे अपने दिल में कहने लगे कि अफसोस , मैंने इस काम में जल्दबाजी की । यद्यपि इंदमति की बदकारी का हाल सुनकर मेरे सिर से पैर तक आग लग गई थी । मगर मुझे उसका कुछ सबूत भी तो हँट लेना चाहिए था । संभव है कि हरदेई इन सभी की दुश्मन बन गई हो और उसने हम लोगों को रंज पहुंचाने के खयाल से ऐसी मनगढंत कहानी कहकर और इंदुमति पर इलज़ाम लगाकर अपना कलेजा ठंडा किया हो । अगर वास्तव में यही बात हो तो कोई तान्नुव नहीं क्योंकि हरदेई का उन तीनों के साथ न रहकर अलग ही तिलिस्म के अन्दर दिखाई देना कोई मामूली बात नहीं है

बल्कि इसका कोई खास सबब जरूर है । अच्छा तो वह दूसरा आदमी कोन हो सकता है जिसने उस दीवार के अन्दर सरस्वती से बातचीत की थी ? संभव है कि बेताल की तरह वह भी इंदुमति , जमना और सरस्वती का दुश्मन हो और मुझे मनाने और धोखे में डालने के लिए उसने यह ढंग रचा हो । हो सकता है , यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है । साथ ही इसके यह भी तो सोचना चाहिए कि अगर जमना , मरम्पती का ऐसा ही बुरा काम करना होता तो वे मुझे और इंदुमति को अपने घर क्यों लाती और मेरे साथ ऐमा अच्छा सलूक क्यों करती नहीं - नहीं , इंदुमति से मझे ऐसी आशा नहीं हो सकती । वह इंदुमति जो लड़कपन से आज तक अपने विशुद्ध आचरण के कारण बरावर अच्छी और नेक गिनी गई है आज ऐसा कर्म कर यह कब संभव है ? और हो भी तो क्या आश्चर्य है , आदमी के दिल को बदलते क्या देर लगती है ? जो हो मगर मुझे ऐसी जल्दी न करनी चाहिए थी । और कुछ नहीं तो इंदुमति से हरदेई वाली बात खुलासे - तोर पर कहकर उसका जवाब भी तो सुन लेना उचित था । आह , मैंने जो कुछ किया वह कर्तव्य के विरुद्ध धा । हरदेई ने जरूर मुझे धोखे में डाला , वह दगाबाज थी , अगर ऐसा न होता तो मेरे जेब से तिलिस्मी किताब चुराकर क्यों भाग जाती ? परन्तु उसके भाग जाने का भी तो कोई सबूत नहीं है । उसका खून से भरा हुआ

झुरमुट में मिला था जिसमें खयाल हो सकता है कि वह दुश्मनों के हाथ पड़ गई । लेकिन अगर ऐसा ही था और दुश्मन उसके सर पर आ गया था तो उसने चिल्लाकर मुझे जगा क्यों न दिया ! संभव है कि वह खून से भरा हुआ कपड़ा हरदेई ही के हाथ का रखा हो ।

कपड़ा कलां के

इस तरह की बातें थोड़ी देर तक प्रभाकर सिंह सोचते और दिल में तरह - तरह की बातें पैदा होने से बेचैन होते रहे , परन्तु इस बात का टीक निश्चय नहीं कर सकते थे कि उन्होंने जो कुछ बर्ताव इंदुमति के साथ किया वह उचित था या अनुचित ।

इस तरह की चिंता करते - करते संध्या हो गई । सूर्य भगवान इस दुनिया को छोड़ किसी दूसरी दुनिया को अपनी चमक - दमक से प्रफुल्लित करने के लिए चले गये । यह बात औरों को चाहे बुरी मालूम हो परन्तु खुले दिल से मुंह दिखाने वालों से आसमान के सितारों को बहुत भली मालूम हुई । अस्तु वे दुनिया के विचित्र मामले को लापरवाही के

साथ देखने के लिए निकल आये और औरों के साथ ही प्रभाकर सिंह की अवस्था पर अफसोस करने लगे । प्रभाकर सिंह अपने विचारों में ऐसे डूबे हुए थे कि उनको इस बात की कुछ खबर ही न थी ।

जब रात कुछ ज्यादे बीत गई और सर्दी लगने लगी तब प्रभाकर सिंह चैतन्य हुए और आसमान की तरफ देखकर आश्चर्य करने लगे तथा अपने ही आप बोल उठे , " ओह बहुत देर हो गई । मैंने इस तरफ कुछ ध्यान ही नहीं दिया और न अपने लिए कुछ बंदोबस्त ही किया । अस्तु अब तो रात इसी जंगल मैदान में बिता देनी पड़ेगी । "

अपनी चिंता में निमग्न प्रभाकर सिंह को खाने - पीने की तथा और किसी जरूरी काम की फिक्र न रही वे पुनः उसी तरह सिर नीचा करके सोचने लग गये । ऐसी अवस्था में निद्रादेवी ने भी उनका साथ छोड़ दिया और उन्हें अपने खयाल में डूबे रहने दिया ।

आधी रात बीत जाने के बाद अपनी बाईं तरफ कुछ उजाला देख प्रभाकर सिंह चौंक पड़े और उजाले की तरफ देखने लगे । यह रोशनी उसी दीवार के अन्दर से आ रही थी जिसके अन्दर जाकर प्रभाकर सिंह ने जमना , सरस्वती और

इंदुमति से मुलाकात की थी और अनुचित अवस्था में उनका तिरस्कार किया था ।

यह रोशनी मामली नहीं थी बल्कि बहुत ज्यादे और दिल में खुटका पैदा करने वाली थी । मालूम होता था कि कई मन लकड़ियाँ बटोरकर उसमें किसी ने आग लगा दी हो । प्रभाकर सिंह का दिल धड़कने लगा और वे घबराहट के साथ उस पल - पल में बढ़ती हुई रोशनी को बड़े गौर से देखते हुए उठ खड़े हुए ।

प्रभाकर सिंह के दिल की इस समय क्या अवस्था थी इसका कहना बड़ा ही कठिन है । यद्यपि वे उस दीवार के अन्दर जाकर उस रोशनी का कारण जानने के लिए उत्कंठित हो रहे थे परन्तु दिल की परेशानी और घबराहट ने मानो उनकी ताकत छीन ली थी और पैर उटाना भारी हो गया था । तथापि उन्होंने बड़ी कठिनता से अपने दिल को सम्हाला और धीरे - धीरे कदम उटाकर उसी दीवार की तरफ आने लगे । जब उस दीवार के पास पहुंचे तो उसी खिड़की की राह उसके अन्दर घुसे जिस राह से पहिले गये थे । इस समय वह रोशनी जो एक दफै बड़ी तेजी के साथ बढ़ चुकी थी धीरे - धीरे कम होने लगी थी ।

जहाँ पर जमना , सरस्वती और इंदुमति से मुलाकात हुई थी वहाँ पहुँचकर प्रभाकर सिंह ने देखा कि एक बहुत बड़ी चिता सुलग रही है और बहुत ध्यान देने पर मालूम होता है कि उसके अन्दर कोई लाश भी जल रही है जो अब अन्तिम अवस्था को पहुँचकर भस्म हुआ ही चाहती है । धुएँ में वदवू होने से भी इस बात की पुष्टि होती थी ।

प्रभाकर सिंह का दिल बड़ी तेजी के साथ उठल रहा था और वे बेचैनी और घबराहट के साथ उस चिता को देख रहे थे कि यकायक उनकी आँखें डबडबा आई और गरम - गरम आँसू उनके गुलाबी गालों पर मोतियों की तरह लुड़कने लगे । इससे भी उनके दिल की हालत न सम्हली और वे बड़े जोर से पुकार उठे , " हाय इन्द ! क्या यह धधकती हुई अग्नि के अन्दर तू ही तो नहीं है ? इतना कहकर प्रभाकर सिंह जमीन पर बैठ गए और सिर पर हाथ रखकर अपने दिल को काबू में लाने की कोशिश करने लगे ।

घंटे भर तक अपने को सम्हालने का उद्योग करने पर भी वे कृतकार्य न हुए और फिर उठ कर बड़ी बेदिली के साथ पुनः उसी चिता की तरफ देखने लगे जो अब लगभग निघूम हो रही थी परन्तु उसकी रोशनी दूर - दूर तक फैल रही थी ।

यकायक प्रभाकर सिंह की निगाह किसी चीज पर पड़ी जो उस चिता से कुछ दूरी पर थी परन्तु आग की रोशनी के कारण अच्छी तरह दिखाई दे रही थी । प्रभाकर सिंह उसके पास चले गये और बिना कुछ सोचे - विचार उसे उठाकर बड़े गौर से देखने लगे । यह कपड़े का एक टुकड़ा था जो हाथ भर से कुछ ज्यादे बड़ा था । प्रभाकर सिंह ने पहिचाना कि यह इंदुमति की उसी साड़ी में का टुकड़ा है जिसे पहिरे हुए उसे आज उन्होंने उस जगह पर देखा था । इस टुकड़े ने उनके लिद को चकनाचूर कर दिया और उस समय तो उनकी अजीब हालत हो गई जब उसे टुकड़े के एक कोने में कुछ बंधा हुआ उन्होंने देखा । खोलने पर मालूम हुआ कि वह एक चिट्ठी है जिसकी लिखावट ठीक इंदुमति के हाथ की लिखावट की - सी है , परन्तु अफसोस कि इस रोशनी में तो वह पढ़ी ही नहीं जाती और चिता की आंच अपने पास आने की इजाजत नहीं देती । अब उस चिता में इतनी रोशनी भी नहीं रह गई थी कि दूर ही से इस लिखावट को पढ़ सकें ।

इस समय कोई दुश्मन भी प्रभाकर सिंह की बेचैनी को देखता तो कदाचित् उनके हाथ हमदर्दी का बर्ताव करता ।

धीरे - धीरे चिता ठंडी हो गई मगर प्रभाकर सिंह ने उसका पीछा न छोड़ा , उस के पास ही बैठकर रात बिता दी । हाथ में वह कागज लिए हुए कई तक प्रभाकर सुबह की सुफेदी का इंतजार करते रहे और जब पत्र पढ़ने योग्य चाँदना हो गया तब उसे बड़ी बेचैनी के साथ पढ़ने लगे । यह लिखा हुआ था

" प्राणनाथ ! बस हो चुका , दुनिया इतनी ही थी । मैं अब जाती हूँ और तुम्हें दयामय परमात्मा के सुपुर्द करती हूँ । मैं जब तक इस दुनिया में रही बहुत ही सुखी रही , तरह - तरह के दुःख भोगने पर भी मुझे विशेष कष्ट न हुआ क्योंकि तुम्हारे प्रेम का सहारा हरदम मेरे साथ था । इसे अतिरिक्त आशालता की हरियाली जिसका सब कुछ संबंध तुम्हारे ही शरीर के साथ था , मुझे सदेव प्रसन्न रखती थी , परन्तु अब इस दुनिया में मेरे लिए कुछ नहीं रहा और मेरी वह आशालता भी

बिलकुल ही सूख गई । तुम्हारे अतिरिक्त यदि और कुछ इस दुनिया में मुझे देना होता तो में अवश्य जीती रहती परन्तु नहीं , जब तुम्हीं ने मुझे त्याग दिया तो अब क्यों और किसके लिए जीऊँ ? में इसी विचार से बहुत संतुष्ट हूँ कि तुम्हारे मेरे लिए दुःख न होगा क्योंकि किसी दुष्ट की कृपा से तुम मुझसे रुष्ट हो चुके हो इसलिए तुमने मुझे त्याग दिया और तुम्हें मेरे मरने का कुछ भी दुखी न होगा , परन्तु यदि कदाचित् किसी समय इस जालसाजी का भंडा फूट जाय और तुम्हारे विचार से में बेकसूर समझी जाऊँ तो यही प्रार्थना है कि तुम मेरे लिए कदापि दुखी न होना , बस ... "

इस पत्र को पढ़कर प्रभाकर सिंह बहुत बेचैन हुए । मालूम होता था कि किसी ने अन्दर घुस और हाथ से पकड़ के उनका कलेजा ऐंठ दिया है । यद्यपि उन्होंने इंदुमति का तिरस्कार कर दिया था परन्तु इस समय उनके दिल ने गवाही दे दी कि ' हाय , तूने व्यर्थ इंदुमति को त्याग दिया ! वह वास्तव में निर्दोष थी इसी कारण तेरे उन शब्दों को बर्दाश्त न कर सकी जो उसके सतीत्व में धब्बा लगाने के लिए तूने कहे थे ! हाय इन्दे ! अब मुझे मालूम हो गया कि तू वास्तव में निर्दोष थी , आज नहीं तो कल इस बात का पता लग ही जाएगा । ' इतना कहकर प्रभाकर ने पुनः उस चिता की तरफ देखा और कुछ सोचने के वाद गरम - गरम आँसू बहाते हुए वहाँ से रवाना हुए मगर उनकी भृकुटी , उनके फड़कते हुए होंठ और उनकी लाल - लाल आँखों से जाना जाता है कि इस समय किसी से बदला लेने का ध्यान उनके दिल में जोश मार रहा था ।

उस दीवार के बाहर हो जाने के बाद प्रभाकर सिंह को वकायक यह खयाल पैदा हुआ कि इंदुमति का हाल तो जो हुआ मालूम हो गया , परन्तु जमना और सरस्वती के विषय में कुछ मालूम न हुआ , संभव है कि वहाँ उन लोगों ने भी इसी तरह कुछ लिखकर रख दिया ही मुलाकात हो गई तो उनकी जुबानी इंदुमति की अन्तिम अवस्था का टीक - ठाक हाल मालूम हो जाएगा । यह सोचकर प्रभाकर सिंह पुनः पलट पड़े और उस चिता के पास जाकर इधर - उधर देखने लगे परन्तु और किसी बात का पता न लगा , लाचार प्रभाकर सिंह लौटकर उस दीवार के बाहर निकल आये ।

अब दिन घंटे भर से ज्यादे चढ़ चुका था । दीवार के बाहर निकलकर प्रभाकर सिंह कुछ सोचने लगे और इधर - उधर देखने के बाद कुछ सोच कर एक पेड़ के ऊपर चढ़ गये और दूर तक निगाह दौड़ा कर देखने लगे । यकायक उनकी निगाह हरदई के ऊपर पड़ी जो उसी दीवार की तरफ बढ़ी जा रही थी जिकसे अन्दर जमना , सरस्वती और इंदुमति को प्रभाकर सिंह ने छोड़ा था । हरदेई को देखते ही प्रभाकर सिंह पेड़ के नीचे उतरे और बड़ी तेजी के साथ उसी तरफ जाने लगे ।

यह हरदेई बही नकली हरदेई थी जो एक दफे प्रभाकर सिंह को धोखे में डाल चुकी थी अर्थात् भूतनाथ का शागिर्द रामदास इस समय भी हरदेई की सूरत बना हुआ भूतनाथ के साथ ही इस तिलिस्म के अन्दर आया हुआ था और पुनः जमना , सरस्वती , इंदुमति और प्रभाकर सिंह को धोखे में डालकर अपना या अपने ओस्ताद का कुछ काम निकालना चाहता था , मगर इस समय उसे यह खबर न थी कि प्रभाकर सिंह मुझे देख रहे हैं और न प्रभाकर सिंह से मिला ही

चाहता था ।

रामदास ने जब आशा के विरुद्ध प्रभाकर सिंह को अपनी तरफ आते देखा तो ताज्जुब में आकर चौंक पड़ा तथा भाग जाना मुनासिब समझकर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए ।

प्रभाकर सिंह : (नकली हरदेई के पास पहुँचकर) हरदेई , तू यहाँ कैसे आई ?

हरदेई : मेरी किस्मत मुझे यहाँ ले आई । मैं तो उसी समय अपनी जान से हाथ धो चुकी थी जिस समय आपसे अलग हुई थी , मगर मेरी किस्मत में अभी कुछ और जीना बदा

था इसलिए एक महापुरुप की मदद से बच गई ।

प्रभाकर सिंह : आखिर तुम पर क्या आफत आई थी सो तो सुनूँ ?

हरदेई : आप जब थकावट मिटाने के लिए चबूतरे पर लेट गये तो उसी समय आपकी आँख लग गई , मैं बड़ी देर तक चुपचाप बैठी - बैटी घबड़ा गई थी इसलिए उठ कर इधर - उधर टहलने लगी । घूमती - फिरती मैं कुछ दूर निकल गई , उसी

समय यकायक पत्तों के झुरमुट में से एक आदमी निकल आया जो स्याह कपड़े और नकाब से अपने बदन और चेहरे को छिपाए हुए था । मैं उसे देखकर घबड़ा गई और दौड़ कर आपकी तरफ आने लगी मगर उसने झपटकर मुझे पकड़ लिया और एक मुक्का मेरी पीठ पर इस जोर से मारा कि में तिलमिला कर बैठ गई । उसने मुझे जबरदस्ती कोई दवा सूंघ दी जिससे मैं बेहोश हो गई और तनोबदन की सुधि जाती रही । दूसरे दिन जब में होश में आई तो अपने को मेदान और जंगल में पड़े हुए पाया , तब से मैं आपको बराबर खोज रही हूँ ।

प्रभाकर सिंह : (हरदेई की बेतुकी बातों को ताज्जुब से सुनकर) आखिर उसने तुझे इस तरह सता कर क्या फायदा

उठाया ?

हरदेई : (कुछ घबड़ानी सी होकर) सो तो मैं कुछ भी नहीं जानती ।

प्रभाकर सिंह : उसने छुरी या खंजर से तुझे जख्मी तो नहीं किया ?

हरदेई : जी नहीं ।

प्रभाकर सिंह : में जब सोकर उठा तो तुझे ढूँढ़ने लगा । एक जगह केले के झुरमुट में तेरे कपड़े का टुकड़ा खून से भरा हुआ देखा धा जिससे मुझे खयाल हुआ कि हरदेई को किसी ने खंजर या छुरी से जखमी किया है ।

हरदेई : जी नहीं , मुझे तो इस बात की कुछ भी खबर नहीं । प्रभाकर सिंह : और वह महात्मा पुरुष कौन थे जिन्होंने तुझे बचाया ? अभी - अभी तो तू कह चुकी है कि ' बेहोशी के बाद जब मैं होश में आई तो अपने को मैदान और जंगल में पड़े हुए पाया ' अस्तु कैसे समझा जा कि किसी महापुरुष ने तुझे

बचाया ?

नकली हरदेई के चेहरे पर घबराहट की निशानी छा गई और वह इस भाव को छिपाने के लिए मुड़ कर पीछे की तरफ देखने लगी मगर प्रभाकर सिंह इस ढंग को अच्छी तरह समझ गए और जरा तीखी आवाज में बोले , " वस मुझे ज्यादे देर तक टहरने की फुरसत नहीं है , मेरी बात का जवाब जल्दी - जल्दी देती जा ! " हरदेई : जी हाँ , जब में खुलासे - तौर पर अपना हाल कहूँगी तब आपको मालूम हो जाएगा कि वह महात्मा कौन था और अब कहाँ हैं जिसने मुझे बचाया था , मैंने संक्षेप में ही अपना हाल आपसे कहा था ।

प्रभाकर सिंह : खैर तो वह खुलासा हाल कहने में देर क्या है ! अच्छा जाने दे खुलासा हाल में भी सुन लूँगा , पहिले तेरी तलाशी लिया चाहता हूँ

हरदेई : (घबड़ाकर) तलाशी कैसी और क्यों ?

प्रभाकर सिंह : इसका जवाब में तलाशी लेने के बाद दूंगा ।

हरदेई : आखिर मुझ पर आपको किस तरह का शक हुआ ?

प्रभाकर सिंह : मुझे कई बातों का शक हुआ जो मैं अभी कहना नहीं चाहता । इतना कहते ही कहते प्रभाकर सिंह ने हरदेई का हाथ पकड़ लिया क्योंकि उसने रंग - ढंग से मालूम होता था कि वह भागना चाहती है । हरदेई ने पहिले तो चाहा कि झटका देकर अपने को प्रभाकर सिंह के कब्जे से छुड़ा ले मगर ऐसा न हो सका । प्रभाकर सिंह ने जब देखा कि यह धोखा देकर भाग जाने की फिक्र में है तब उन्हें बेहिसाब क्रोध चढ़ आया और एक मुक्का उसकी गरदन पर मार कर जवरदस्ती उन्होंने उसके ऊपर का कपड़े बैंच लिया ।

रामदास यद्यपि प्यार था मगर उसमें इतनी तात नवी मार सिकाला कामाला । प्रभार के हाथ कामना खाकर का.येवेन हो गया और उसकी जाया । आगया गया जो गिन पड़ी कि वह भाग जाने के लिए उयोग करे । पनाहर सिहोगी योगया । याद नहीं कि कोई गार है । मामूली कपड़ा उतार लेने के साथ ही प्रभाकर सिंह का नागवाया शक भी जाता सा , सायली इसा उन्हों । यह भी निश्चय कर लिया कि हमारी तिलिस्मी किताब जरूर इसी ऐयार में पूराई है ।

तिलिस्मी किताब पा जाने की उम्मीद में प्रभाकर सिंह ने जहाँ तक हो सका ही होशियारी के साथ उसकी तलाशी ली और उसके ऐयारी के बटवे में भी , जिसे वह रिपाकर मेरा था , देवा मगर किताब हाथ न लगी । तलाशी में केवल ऐयारी का बटुआ , खंजर और एक कटार उसके पास से मिला जिसे प्रभाकर सिंह ने अपने कब्जे में कर लिया जोर पूछा , " बस अब तो तेरा भेद अच्छी तरह खुल गया । फिर यह बता कि तेरा क्या नाम है और साथ तुने इस तरह की दगाबाजी क्यों की ? "

रामदास : क्या जो कुछ में बताऊँगा उस पर आप विश्वास कर लेंगे ?

प्रभाकर : नहीं ।

रामदास : फिर इसे पूछने से फायदा क्या ?

प्रभाकर सिंह ने क्रोध - भरी आंखों से सिर से पैर तक उसे देखा और कहा , " वेशक कोई फायदा नहीं मगर तूने मेरे साथ बड़ी दगाबाजी की और व्यर्थ ही बेचारी इंदुमति पर झूठा कलंक लगाकर उसे और साथ - ही - साथ इसके मुझे भी बर्बाद कर दिया । "

रामदास : वेशक मेंने किया तो बहुत बुरा मगर में तो ऐयार हूँ , मालिक की भलाई के लिए उद्योग करना मेरा धर्म है । जो कुछ मुझसे बन पड़ा किया , अब आपके कब्जे में हूँ जो उचित और धर्म समझिए कीजिए ।

प्रभाकरसिंह : (क्रोध को दबाते हुए) तू किसका ऐयार है ?

रामदास : मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि मेरी बातों पर आपको विश्वास न होगा , फिर इन सब बातों को पूछने से फायदा क्या है ?

प्रभाकर सिंह का दिल पहिले ही से जख्मी हो रहा था , अब जो मालूम हुआ कि हरदेई वास्तव में हरदेई नहीं है बल्कि कोई ऐयार है और इसने धोखा देकर अपना काम निकालने के लिए इंदुमति , जमना और सरस्वती को बदनाम किया था तो उनके दुःख और क्रोध की सीमा न रही , तिस पर रामदास की दिटाई ने उसकी क्रोधाग्नि को और भड़का दिया , अस्तु वे उचित - अनुचित का कुछ भी विचार न कर सके । उन्होंने रामदास की कमर में एक लात ऐसी मारी कि वह सम्हल न सका और जमीन पर गिर पड़ा , इसके बाद लात और जूते ने उसकी ऐसी खातिरदारी की कि वह बेहोश हो गया और उसके मुंह से खून भी बहने लगा । इतने पर भी प्रभाकर सिंह का क्रोध शान्त न

हुआ और उसे कुछ और सजा दिया चाहते थे कि सामने से आवाज आई , " हाँ , हाँ , बस जाने दो , हो चुका , बहुत हुआ । "

प्रभाकर सिंह ने आँख उठाकर सामने की तरफ देखा तो एक वृद्ध महात्मा पर उनकी निगाह पड़ी जो तेजी के साथ प्रभाकर सिंह की तरफ बढ़े आ रहे थे ।

छठवा व्यान।

वृद्ध महात्मा का टाठ कुछ अजव ही ढंग का था , सिर से पैर तक तमाम बदन में भस्म लगे रहने के कारण इनकं रंग का बयान करना चाहे कठिन हो परन्तु फिर भी इतना जरूर कहेंगे कि लगभग सत्तर वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी उनके खूबसूरत और सुडौल बदन में अभी तक कहीं झुरीं नहीं पड़ी थी और न उनके सीधेपन में कोई झुकाव आया था । बड़ी - बड़ी आँखों में अभी तक गुलावी डोरिया दिखाई दे रही थी और उनके कटाक्ष से जाना जाता था कि अभी तक उनकी रोशनी और ताकत में किसी तरह की कमी नहीं हुई है । रोआबदार चेहरा , चौड़ी छाती तथा मजबूत और गटीले हाथ - पैरों की तरफ ध्यान देने से यही कहने को जी चाहता है कि यह शरीर तो छत्र और मुकुट धारण करने योग्य है न कि जटा और कंबल की कफनी के योग्य ।

महात्मा के सिर पर लंबी जटा भी जो खुली हुई पीठ की तरफ लहरा रही थी । मोटे और मुलायम कंबल का झगा बदन में और लोहे का एक इंडा हाथ में था , बस इसके अतिरिक्त उनके पास और कुछ भी दिखाई नहीं देता था ।

महात्मा को देखते ही प्रभाकर सिंह ने झुक के प्रणाम किया , बाबाजी ने भी पास आकर आशीर्वाद दिया और कहा , " प्रभाकर सिंह , बस जाने दो , बहादुर लोग ऐयारों को जान से नहीं मारते और ऐयार भी जान से मारने योग्य नहीं होते बल्कि कैद करने के र्याय होते हैं । तुम इस समय वयपि इस योग्य नहीं हो कि इसे कैद करके कहीं रख सको तथापि यदि कहो तो हम इसका प्रबंध कर दें क्योंकि यह तिलिस्म के अन्दर हम इस बात को बखूबी कर सकते हैं । "

प्रभाकर सिंह : (बात काटकर) आपकी आज्ञा के विरुद्ध मैं कदापि न करूंगा । आप बड़े हैं , मेरा दिल गवाही देता है और कहता है कि यदि आप वास्तव में साधु न भी हों तो भी मेरे पूज्य और बड़े हैं । जो कुछ आज्ञा कीजिए में करने को तैयार हूँ , पर आपको कदाचित् यह न मालूम हुआ होगा कि इसने मुझे केसी - कैसी तकलीफें दी हैं

और किस तरह मेग सर्वनाश किया है , और इस समय भी वह कैसी ढिटाई के साथ बातें कर रहा है , अपना नाम तक नहीं बताता ।

वावा : में सब कुछ जानता हूँ , तुमने स्वयं भूलकर अपने को इसके हाथ फंसा दिया है , अगर वह किताब जिसमें इस तिलिस्म का कुछ थोड़ा - सा हाल लिखा हुआ था और जो इन्द्रदेव ने तुमको दी थी , इसने तुम्हारी जेब से न निकाल ली होती तो यह कदापि यहाँ तक पहुँच सकता , मगर अफसोस , तुमने पूरा धोखा खाया और यह किताव की भी बखूबी हिफाजत न कर सके ।

प्रभाकरसिंह : वेशक ऐसा ही है , मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई । अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि वास्तव में यह कौन है ।

बावा : हाँ तुम इसे नहीं जानते , हरदेई समझकर तुम इसके हाथ से वर्वाद हो गए , यह असल में गदाधरसिंह का शागिर्द रामदास है । इसी ने असली हरदेई को धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और स्वयं हरदेई की सूरत बन जमना और सरस्वती को धोखे में डाला , यह तिलिस्मी घाटी का रास्ता देख लिया और भूतनाथ को इस घाटी के अन्दर लाकर जमना , सरस्वती और इंदुमति को आफत में फंसा दिया । भूतनाथ ने अपने हिसाब से तो उन तीनों को मार डाला था परन्तु ईश्वर ने उन्हें बचा लिया , सुनो हम इसका खुलासा हाल तुमसे बयान करते हैं ।

इतना कहकर बावाजी ने भूतनाथ और रामदास का पूरा - पूरा हाल जो हम ऊपर के बयानों में लिख आए हैं कह सुनाया अर्थात् जिस तरह रामदास ने हरदेई को गिरफ्तार किया , स्वयं हरदेई की सूरत बनकर कई दिनों तक जमना , सरस्वती के साथ रहा , घाटी में आने - जाने का रास्ता देखकर भूतनाथ को बताया , प्रभाकर सिंह की सूरत बनकर जिस तरह भूतनाथ इस घाटी के अन्दर आया और जमना , सरस्वती , और इंदुमति तथा और लोड़ियों को भी कुएँ के अन्दर फेंककर बखेड़ा ते किया और अन्त में रामदास स्वयं जिस तरह कुएँ के अन्दर जाकर खुद भी उसमें फंस गया आदि - आदि रत्ती - रत्ती हाल बयान किया , जिसे सुन कर प्रभाकर सिंह हैरान हो गये और ताज्जुब करने लगे ।

प्रभाकरसिंह : (आश्चर्य से) यह सब हाल आपको कैसे मालूम हुआ ?

बाबा : इसके पूछने की कोई जरूरत नहीं , जब हमको तुम पहिचान जाओगे तब स्वयं तुम्हें इसका सबब मालूम हो जाएगा । (रामदास की तरफ देख के) क्यों रामदास , जो कुछ हमने कहा वह सब सब है या नहीं ?

रामदास : बेशक आपने जो कुछ कहा सब सच है ।

बाबा : (रामदास से) अब तो बताओ कि तुम्हारा गुरु भूतनाथ कहाँ है ?

रामदास : मुझे नहीं मालूम ।

वाया : (हँसकर) अगर तुम्हें मालूम नहीं है तो मुझे जरूर मालूम है ! (प्रमाकर सिंह से) अच्छा अब हम जाने हैं , जमान होगी तो फिर मुलाकात करेंगे । केवल इसीलिए तुम्हारे पास आए थे कि हम गमदास और भूतनाथ की चालबाजी से तुम्हें होशियार कर दें , जिसमें इन लोगों के बहकाने में पड़कर तुम जमना , सरस्वती और इंदुमति के साथ किसी तरह की बेमुरोवती न कर जाओ । मगर अफसोस हमारे पहुंचने के पहिले ही तुमने इन लोगों को धोखे में पड़ कर दंदुनि और साथ ही उसके जमना - सरस्वती का तिरस्कार कर दिया और उन लोगों के साथ ऐसा बर्ताव किया जो तुम्हारे प्रेस बुद्धिमान के योग्य न था ।

प्रभाकर सिंह : (डबडबाई हुई आँखों से और एक लंबी साँस लेकर) बेशक मैंने बहुत बुरा धोखा खाया , मेरी किम्मत ने मुझे डुवा दिया और कहीं का न रखा ! (आसमान की तरफ देखकर) वे सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ! क्या में दीलिए इस दुनिया में आया था कि तरह - तरह की तकलीफें उटाऊँ ? जबसे मैंने होश संभाला तब से आज तक साल - भर मुख में वैटना नसीब न हुआ । किस - किस दु:ख को रोऊँ और किस - किस को याद करूँ ! हाय , माता - पिता की अवस्था पर ध्यान देता हूँ तो कलेजा मुंह को आता है , अपनी दुर्दशा पर विचार करता हूँ तो दुनिया अंधकारमय दिखाई पड़ती है । तो फिर क्या मैं ऐसा ही बदकिस्मत बनाया गया हूँ ? क्या यह मेरे कर्मों का फल है ! कदाचिन मा भी हो तो फिर दुनिया में जितने आदमी हैं सभी तो अपने - अपने कर्म का फल भोग रहे हैं । फिर मुझमें और अन्य अभागों में भेद ही किम वात का टहरा और जब अपने ही कर्मों का फल भोगना ही ठहरा तो तुम्हारा भरोसा ही करकं क्या किया ? अगर यह कहीं कि इस भरोसे का फल किसी और समय मिलेगा तो यह भी कोई बात न टहरी , जब

मेरे समय पर तुम्हारा भरोमा काम न आया तो खेत सूखे पर वर्षा वाली कहावत सिद्ध हुई ।

बाबाजी : (बात काटकर) वेटा , घबराओ मत और परमेश्वर का भरोसा मत टोड़ो , वह तुम्हारे सभी दुखों को दूर करेगा । उसकी कृपा के आगे कोई बात कटिन नहीं है । यदि वह दयालु होगा तो तुम्हें तुम्हारे माता - पिता से भी मिला देगा और तुम्हारी स्त्री इंदुमति भी पुनः तुम्हारी सेवा में दिखाई दे जाएगी । बस अब में जाता हूँ , ईश्वर तुम्हारा भला करे ।

प्रभाकर सिंह : (बाबाजी को रोककर) कृपा कर और भी मेरी दो - एक बातों का जवाब देते जाइए ।

वाबाजी : पूछो क्या पूछना चाहते हो !

प्रभाकर सिंह : जिस मनुष्य के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह पंच तत्व में मिल गया भला उससे पुनः क्योंकर मुलाकात हो सकती है ।

बाबाजी : ईश्वर की माया बड़ी प्रबल है , मैं यह नहीं कह सकता कि ऐसा अवश्य ही होगा परन्तु यह जरूर कहूँगा कि ईश्वर पर भरोसा रखने वाले के लिए कोई भी बात असंभव नहीं । अच्छा पूछो और क्या पूछते हो ।

प्रभाकर सिंह : मैं यह जानना चाहता हूँ कि आज के बाद मैं आपसे मिलना चाहूँ तो क्योंकर मिल सकता हूँ ?

बाबाजी : तुम अपनी इच्छानुसार मुझसे नहीं मिल सकते ।

प्रभाकर सिंह : आपका परिचय जान सकता हूँ ?

बाबाजी : नहीं ।

इतना कहकर बाबाजी वहाँ से रवाना हो गये और देखते - देखते प्रभाकर सिंह की नजरों से गायब हो गये ।

बाबाजी के चले जाने के बाद कुछ देर तक प्रभाकर सिंह खड़े कुछ सोचते रहे , इसके बाद क्रोध भरी आँखों से गमदास की तरफ देखा और कहा , " रामदास , यद्यपि लोग कहते हैं कि ऐयारों को मारना न चाहिए बल्कि कैद कर रखना चाहिए परन्तु यह काम

ऐयारों का और राजा लोगों का है । में न तो ऐयार हूँ और न राजा ही हूँ , इसके अतिरिक्त मेरे पास कोई ऐसी जगह भी नहीं है जहाँ तुझे कैद कर रखें अतएव में तुझ पर किसी तरह का रहम नहीं कर सकता । (रामदास का खंजर उसके आगे फेंक कर) ले अपना खंजर उटा ले और मेरा मुकाबला कर क्योंकि में उस आदमी पर वार करना पसन्द नहीं करता जिसके हाथ में किसी तरह का हर्वा नहीं है , साथ ही तूने मुझ पर जो जुल्म किया है मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं ?

रामदास : (खंजर उठाकर) तो क्या मैं किसी तरह भी माफी पाने लायक नहीं ?

प्रभाकर सिंह : नहीं , अगर इंदुमति इस दुनिया से उठ न गई होती तो कदाचित् मैं तेरा अपराध क्षमा कर सकता , मगर इंदुमति का वियोग , जो केवल तेरी ही दुष्टता के कारण हुआ , मैं सह नहीं सकता ।

रामदास : अगर तुम्हारी इंदुमति को तुमसे मिला दूँ तो ?

प्रभाकर सिंह : अरे दुष्ट ! क्या अब भी तू मुझे धोखा दे सकेगा ? जिसकी चिता में अपनी आँखों से देख चुका हूँ उसके विषय में तू इस तरह की बातें करता है मानों ब्रह्मा तू ही है ।

रामदास : नहीं - नहीं , आपने मेरा मतलब नहीं समझा ।

प्रभाकर सिंह : तेरा मतलब में खूब समझ चुका , अव समझाने की जरूरत नहीं है , बस अब सम्हल जा और अपनी हिफाजत कर ।

इतना कहकर प्रभाकर सिंह ने म्यान से तलवार खींच ली और रामदास को ललकारा । रामदास ने जब देखा कि अब वह भाग कर भी अपने को प्रभाकर सिंह के हाथ से नहीं बचा सकता तय उसने खंजर सम्हाल कर प्रभाकर सिंह का मुकाबला किया । प्रभाकर सिंह ऐसे वहादुर आदमी से मुकाबला करना रामदास का काम न था , दो ही चार हाथ के लेने - देने के बाद प्रभाकर सिंह की तलवार से रामदास दो टुकड़े होकर जमीन पर गिर पड़ा और वहाँ की मिट्टी से अपनी तलवार साफ कर के प्रभाकर सिंह पुनः उसी दीवार की तरफ रवाना हुए जिसके अन्दर इंदुमति की सुलगती हुई चिता देख चुके थे ।

तरह - तरह की बातें सोचते हए प्रभाकर सिंह धीरे - धीरे चलकर उसी चिता के पास पहुँचे जो अभी तक निर्धूम हो जाने पर भी बड़े अँगारों के कारण धधक रही थी और

जिसके बीच - बीच में हड्डियों के छोटे - छोटे टुकड़े दिखाई दे रहे थे ।

सातवा व्यान।

यद्यपि सूर्य भगवान अभी उदय नहीं हुए थे तथापि उनके आने का समय निकट जान अंधकार ने पहिले ही से अपना दखल छोड़ना आरंभ कर दिया था और धीरे - धीरे भाग कर पहाड़ की कंदराओं और गुफाओं में अपने शरीर को सिकोड़ता या समेटता हुआ घुसा चला जा रहा था ।

एक छोट मैदान में जिसे चारों तरफ से ऊंचे - ऊँचे पहाड़ों ने घेर रखा है हम एक विचित्र तमाशा देख रहे हैं । वह मैदान चार या पाँच बिगहे से ज्यादा न होगा जिसकं बीचोंबीच में स्याह पत्थर का पुरले भर ऊँचा बहुत बड़ा और खूबसूरत चबूतरा बना हुआ था , जिसके ऊपर जाने के लिए चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी थीं । चबूतरे के ऊपर चढ़ जाने पर देखा कि एक बहुत ही सुन्दर हौज बना हुआ है जिसमें विल्लोर की तरह साफ - सुथरा जल भरा हआ था और उतरने के लिए संगमरमर की छोटी - छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं ।

हौज के चारों कोनों पर चार हंस इस कारीगरी से बनाए और वेठाए हुए थे कि जिन्हें देखकर कोई भी न कह सकेगा कि ये हंस अमली नहीं बल्कि नकली हैं । देखने वाला जब तक उन्हें अच्छी तरह टटोल न लेगा तब तक उसके दिल से असली हंस होने का शक न मिटेगा । इसी तरह होज के अन्दर उतरने वाली सीढ़ियों पर भी मोर और सारस इत्यादि कई जानबर दिखाई दे रहे थे और वे भी उन्हीं हंसों की तरह नकली , किसी धातु के बने हुए थे , मगर देखने में टीक असली जान पड़ते थे । इनके अतिरिक्त उसी हौज के अन्दर संगमरमर की सीढ़ी पर एक निहायत हमीन और खूबसूरत औरत भी बेहोश पड़ी हुई दिखाई दे रही थी जिनकं खुले हुए बाल सफेद पत्थर की चट्टान पर बिखरे हुए थे बल्कि वालों का कुछ भाग जल की हलकी लहरों के कारण हिलता हुआ बहुत ही भला मालूम होता था । पहिले तो मेरे दिल में आया कि में और जानवरों की तरह इस औरत को भी नकली और बनावटी समयूँ मगर उसकी खूबसूरती और नजाकत को देखकर सहम गया । आह , क्या ही खूबसूरत चेहरा , बड़ी - बड़ी मगर इस समय

पलकों से ढकी हुई आँखें , चौड़ी पेशानी में सिंदूर की केवल एक बिंदी कैसी अच्छी मालूम होती थी कि हजार रोकने पर भी मुंह से निकल ही पड़ा कि ' यह जरूर स्वर्ग की देवी है । चाहे उसके हाथों में सिवाय दस - बारह पतली स्याह चूड़ियों के और कुछ भी न हो । किसी अंग में किसी तरह का कोई भी गहना दिखाई देता न हो , परन्तु उसकी खूबसूरती किसी गहने की मुहताज न थी ।

में खड़ा यही सोच रहा था कि यह औरत असली है या बनावटी और यह इरादा भी हो चुका था कि जिस तरह ऊपर वाले हंस को टटोल कर देख चुका हूँ उसी तरह नीचे की सीढ़ियों पर बैठे हुए जानवरों के साथ - ही - साथ इस औरत को भी टटोल कर देखें और निश्चय करूँ कि असली है या नकली कि इतने ही में उस औरत के गर्दन हिलाई और अपना चेहरा जल की तरफ से घुमाकर सीढ़ी की तरफ कर दिया । बस फिर क्या था , मेरी खुशी का कोई ठिकाना न रहा , मुझे विश्वास हो गया कि और जानवरों की तरह यह औरत बनावटी नहीं है । फिर में सोचने लगा कि इसे किसी तरह जागना चाहिए अस्तु मैंने जोर से कई तालियां बजाई मगर इसका असर कुछ भी न हुआ । उस समय मुझे पुनः उसकी सच्चाई पर शक हुआ और में यह जाँचने के लिए कि देखू इस औरत की साँस चलती है या नहीं उसके पेट की तरफ गौर से देखने लग जिसके आधे भाग का कपड़ा खिसक जाने के कारण खुला हुआ था , मगर साँस चलने की आहट मालूम न हुई ! इतने ही में हवा का एक बहुत बड़ा झपेटा आया , मैंने तो समझा कि इस झपेटे के लगते ही वह जाग जाएगी और उसके बदन का कपड़ा भी जो लापरवाही के साथ हर तरह से ढीला पड़ा हुआ है जरूर खिसक जाएगा और उसका सुन्दर तथा सुडील बदन मुझे अच्छी तरह देखने का मौका मिलेगा मगर अफसोस , ऐसा न हुआ । न तो उसकी निद्रा ही भंग हुई और न उसके बदन पर से कपड़ा ही खिसका ।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और अंत में मैंने निश्चय कर लिया कि स्वयं हौज के अन्दर उतरकर उस औरत की निद्रा भंग करूँगा , क्योंकि उसकी खूबसूरती और उसके अंग की सुडोली मेरे दिल को बेतरह मसोस रही थी ।

में दिल कड़ा करके हौज के अन्दर उतरने लगी । एक सीढ़ी उतरा , दूसरी सीढ़ी उतरा , तीसरी सीढ़ी पर पैर रखा ही था कि मैं डर कर चौंक उठा और मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा । क्योंकि यकायक वे चारों हंस जो हौज के ऊपर खड़े थे और जिन्हें मैं

अच्छी तरह देखभाल चुका था कि वे असली नहीं , बनावटी हैं , अपनी जगह छोड़ और गरदन ऊँची

कर इधर - उधर और बड़ी बेचैनी के साथ मेरी तरफ देखने लगे मानो मेरा हौज के अन्दर उतरना उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ । यह बात सिर्फ दस - बारह सायत तक रही , इसके बाद वे अपने बड़े - बड़े परों को फैलाकर बेतरह मुझ पर टूट पड़े जिसे देख में डर गया और अपना दाहिना हाथ (जिसमें खंजर था) आगे की तरफ बढ़ाए हुए पीछे हटकर चौथी सीढ़ी पर उतर गया ।

हौज के अन्दर चौथी सीढ़ी पर उतर जाना तो मेरे लिए बड़ा ही भयानक हुआ । हौज के अन्दर सीढ़ियों पर जो बहत - से बनाबटी जानबर (परिन्दे) थे , वे भी ऊपर वाले हंस की तरह अपनी क्रोध वाली अवस्था दिखाते हुए फैलाकर इस तरह मुझ पर झपट पड़े मानो ये सब बात - की - बात में मुझे नोच कर खा जाएँगे । केवल इतना ही नहीं वह औरत भी उट कर बैठ गई और गरदन ऊँची करके क्रोध - भरी आँखों से मेरी तरफ देखने लगी ।

वह दृश्य बड़ा ही भयंकर था , जानवरों की तरह झपट पड़ने से में कदापि न डरता यदि वह वास्तव में सच्चे होते और में उन्हें अपने खंजर से काट सकता परन्तु में तो अच्छी तरह जाँच कर समझ चुका था कि वे सब असली नहीं है फिर भी जब उन्होंने हमला किया तब मैंने अपने संजर से उन्हें रोकना चाहा , परन्तु संजर ने भी उनके बदन पर कुछ असर न किया मानो उनका बदन फौलाद का बना हुआ हो । ऐसी अवस्था में उन सभों का एक साथ मिलकर हमला करना मुझे जरूर नुकसान पहुँचा सकता था अस्तु आश्चर्य के साथ - ही - साथ भय ने भी मुझ पर अपना असर जमा लिया । इसके अतिरिक्त उस औरत का एक अजीब ढंग से मेरी तरफ देखना और भी घबराहट पैदा करने लगा ।

पहिले तो मैंने चाहा कि जिस तरह हो सके इस बावली के बाहर निकल जाऊँ मगर ऐसा न हो सका , लाचार पीछे की तरफ हट में और भी दो सीढ़ी नीचे उतर गया मगर वहाँ भी ठहरने की हिम्मत न पड़ी क्योंकि उन जानवरों का हमला और भी तेज हो गया तथा वह औरत भी इतनी जोर से चिल्ला उठी कि मैं घबरा गया तथा और भी कई मीढ़ी नीचे उतरकर उस औरत के पास जा पहुंचा । बस उसी समय औरत ने मेरा पर पकड़ लिया

और एक ऐसा झटका दिया कि में जल के अन्दर जा पड़ा और बेहोश हो गया । इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं है । छोटी - छोटी चार पहाड़ियों के अन्दर एक खुशनुमा वाग है । इसमें सुन्दर - सुन्दर बहुत - सी क्यारियाँ बनी हुई हैं , हर तरफ छोटी - छोटी नहरें जारी हैं और पेड़ों के ऊपर बैठकर बोलने वाली तरह - तरह की चिड़ियों की सुरीली आवाजों से वह सुबह का सुहावना समय और भी मजेदार मालूम हो रहा है ।

इस बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ी इमारत है जिसमें सैकड़ों आदमियों का खुशी से गुजारा हो सकता है , यह इमारत तिमंजिली है , नीचे के हिस्से में एक बहुत बड़ा दीवानखाना है और दीवानखाने के दोनों तरफ बारहदरियाँ हैं । ऊपर की मंजिलों में छोटे - बड़े बहुत - से खूबसूरत दरवाजे दिखाई दे रहे हैं , उसके अन्दर क्या है सो तो इस समय नहीं कह सकते मगर अंदाज में मालूम होता है कि ऊपर भी कई कमरे , कोठरियाँ , दालान , शहनशीन और बारहदरियाँ जरूर होंगी

।

नीचे वाला दीवानाााना मामूली नहीं बल्कि शाही ढंग का बना हुआ है । छः पहले चालीस खंभों पर इसकी छत कायम है । खंबे स्याह पत्थर के हैं और उन पर सोने से पच्चीकारी का काम किया हुआ है । बाहर के रुख पर बड़े - बड़े पाँच महराव हैं और उन महरावों पर भी निहायत खूबसूरत पच्चीकारी का काम किया हुआ है । अन्दर की तरफ अर्थात् पिछली दीवार पर भी जहाँ एक जड़ाऊ , सिंहासन रखा है जड़ाऊ तथा मीनाकारी का काम बना हुआ है जिसमें कारीगर ने जंगली सीन और शिकारगाह की तस्वीरों पर कुछ ऐसा मसाला चढ़ाया हुआ है जिससे मालूम होता है कि ये दोनों दीवारें बिल्लौरी शीशे की बनी हुई हैं । सिंहासन पिछली दीवार के साथ मध्य में रखा हुआ है और उस सिंहासन से चार हाथ ऊपर एक खूबसूरत दरीची (खिड़की) है जिसमें एक नफीस चिक पड़ी हुई है और उस चिक के अन्दर कदाचित् कोई औरत बैठी हुई है , और आवाज से यही जान पड़ता है कि वेशक वह औरत ही है । सिंहासन के ऊपर एक खबसूरत और बहादुर नौजवान खड़ा चिक की तरफ गरदन ऊँची करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम इस बयान में ऊपर लिख आए हैं यह सब इसी नौजवान के ऊपर खिड़की की तरफ मुँह करके ऊपर लिखी बातें बयान कर रहा है अर्थात् जो कुछ हम

इस बयान में ऊपर लिख आए हैं यह सब इसी नौजवान ने ऊपर खिड़की की तरफ मुंह करके बयान किया है । जब उस जवान ने यह कहा कि इसके बाद क्या हुआ इसकी मुझे कुछ भी खबर नहीं , तब उस चिक के अन्दर से यह वारीक आवाज आई " आखिर तुम यहाँ तक क्योंकर पहुँचे ? "

नौजवान : जब मेरी आँखें खुली और में होश में आया तो अपने को इसी बाग में एक रविश के ऊपर पड़े हुए पाया । उस समय वहाँ कई औरतें मौजूद थीं जिन्होंने मुझसे तरह - तरह के सवाल किए और इसके बाद मुझे इस दीवानखाने में पहुँचाकर वह सब न - मालूम कहाँ चली गई ।

चिक के अन्दर से : अच्छा अब तुम क्या चाहते हो सो बताओ ?

नौजवान : पहिले तो मैं यहाँ के मालिक का परिचय लिया चाहता हूँ ।

चिक के अन्दर से : समझ लो कि यहाँ की मालिक में ही हूँ !

नौजवान : मगर यह मालूम होना चाहिए कि आप कौन हैं ?

चिक के अन्दर से : मैं एक स्वतंत्र औरत हूँ , यहाँ की रानी कह कर मुझे संबोधन करते हैं ।

नौजवान : आपका कोई मालिक या अफसर भी यहाँ नहीं है ?

चिक के अन्दर से : में एक राजा की लड़की हूँ , मेरा बाप मौजूद है और अपनी रियासत में है , मुझे उसमें इस तिलिम्म के अन्दर कैद कर रखा है मगर मैं अपने को यहाँ स्वतंत्र समझती हूँ और खुश हूँ , दुःख इतना ही है कि इस तिलिस्म के बाहर में नहीं जा सकती ।

नौजवान : आपके पिता ने आपको कैद कर रखा है ?

चिक के अंदर से : इसलिए कि मैं शादी करना मंजूर नहीं करती और इसमें वह अपनी बेइज्जती समझता है ।

नौजवान : क्या आपका और आपके पिता का नाम में सुन सकता हूँ ?

चिक के अन्दर से : नहीं , पहिले मैं आपका नाम सुनना चाहती हूँ ।

नौजवान : मेरा नाम प्रभाकर सिंह है ।

चिक के अन्दर से : है , क्या आप सच कहते हैं ? मुझे विश्वास नहीं होता !!

प्रभाकरसिंह : वेशक मैं सच कहता हूँ , झूठ बोलने की मुझे जरूरत ही क्या है ?

चिक के अन्दर से : और आपके पिता का नाम क्या है ?

प्रभाकरसिंह : दिवाकरसिंह जी ।

चिक के अन्दर से : आह , क्या यह संभव है ! फिर भी मैं कहती हूँ कि मुझे विश्वास नहीं होता !!

प्रभाकरसिंह : अगर आपको मेरी बातों पर विश्वास नहीं होता तो लाचारी है । मुझे कोई ऐसी तरकीब नहीं सूझती जिससे में आपको विश्वास दिला सकूँ ।

चिक के अन्दर से : हाँ मुझे एक तरकीब याद आई है ।

प्रभाकरसिंह वह क्या !

चिक के अन्दर से : लड़कपन में गेंद खेलते समय आपको जा चोट लगी थी उसे में देगी तो जरूर विश्वास कर लूंगी ! प्रभाकरसिंह : (आश्चर्य से) यह बात आपको कैसे मालूम हुई !

चिक के अन्दर से : सो में पीछे बताऊँगी ।

इतना सुनते ही प्रभाकर सिंह ने अपना कपड़ा उतार दिया और दाहिने मोढ़े के नीचे पीठ पर एक बड़े जख्म का निशान चिक की तरफ दिखाकर कहा , " यही वह निशान है । "

इसके जवाब में चिक का परदा उठ गया और एक बहुत ही हसीन औरत उस खिड़की में बेटी हुई प्रभाकर सिंह को दिखाई दी , उसे देखने के साथ ही प्रभाकर सिंह बदहवास से हो गये और उनके आश्चर्य का कोई टिकाना न रहा ।

आठवा व्यान।

अब हम थोड़ा हाल जमना , सरस्वती और इंदुमति का बयान करते हैं नकली हरदेई अर्थात् रामदास ने जमना , सरस्वती और इंदुमति की तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल जिस तरह खट्टा कर दिया था उसे हमारे प्रेमी पाठक अच्छी तरह पढ़ ही चुके हैं , इसके बाद बाबाजी ने जब रामदास का असली भेद खोल कर सच्चा हाल प्रभाकर सिंह को बता दिया तब प्रभाकर सिंह चैतन्य हो गये और समझ गए कि जमना , सरस्वती और इंदुमति वास्तव में निर्दोष हैं और उनके बारे में जो कुछ हमने सोचा - समझा और किया वह सब अनुचित था अस्तु प्रभाकर सिंह को अपनी कार्रवाई पर बड़ा खेद हुआ । यह सब कुछ था परन्तु जमना , सरस्वती और इंदुमति के दिल पर जो गहरी चोट बैट चुकी थी उसकी तकलीफ किसी तरह कम न हुई और न उन तीनों को इस बात का पता ही लगा कि किसी वावाजी ने पहुँचकर हमारी तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल साफ कर दिया ।

अपने शागिर्द की मदद से प्रभाकर सिंह वाली तिलिस्मी किताव पाकर भूतनाथ वहाँ की बहुत - सी बातों से जानकार हो चुका था जो सिर्फ काम चलाने और जरूरी कार्रवाई करने के लिए इन्द्रदेव ने तैयार करके प्रभाकर सिंह को दे दही थी , परन्तु भूतनाथ ऐसे धूर्त और शैतान के लिए वही बहुत थी , उसी की मदद से भूतनाथ ने अपने कई शागिर्दो के साथ उस तिलिस्म के अन्दर पहुँचकर जमना , सरस्वती और इंदुमति को बेतरह सताया और दुःख दिया जिसका हाल हम खुलासे - तौर पर नीचे लिखते हैं ।

ग्रहदशा की सताई हुई जमना , सरस्वती और इंदुमति को जब भूतनाथ ने तिलिस्मी कृप में ढकेल दिया तो वहां उन्हें एक मदद से वे तिलिस्म के अन्दर किसी कार्यवश स्वतंत्रता के साथ घूम रही थीं । वह मददगार कौन था और उस कुएं के अन्दर ढकेल देने के बाद उन लोगों की जान क्योंकर बची इसका हाल फिर किसी मौके पर बयान किया जाएगा , इस समय हम वहाँ से उन तीनों का हाल बयान करते हैं जहाँ से तिलिस्म के अन्दर प्रभाकर सिंह ने उन तीनों को देखा था ।

जमना , सरस्वती और इंदुमति का जो मददगार था वह बराबर अपने चेहरे पर नकाब डाले रहता था इससे उन तीनों ने उसकी सूरत नहीं देखी थी कि उसका मददगार किस सूरत का और कैसा आदमी है , वही सवव था कि जब भूतनाथ उस तिलिस्म के अन्दर गया तो उसने भी जमना और सरस्वती के मददगार को नहीं पहिचाना , हाँ पहिचानने के लिए उद्योग बराबर करता रहा ।

एक दफे जमना ने मददगार से प्रार्थना भी की थी कि अपनी सूरत दिखा दे और अपना परिचय दे , परन्तु नकाबपोश ने उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की थी , हाँ इतना जरूर कह दिया था कि तुम लोग मुझे अपने बाप के वरावर समझो और जब कभी संबोधन करने की जरूरत पड़े तो नारायण के नाम से संबोधन किया करो अस्तु अब हम भी आगे चलकर मौका पड़ने पर उसे नारायण ही के नाम से संबोधन किया करेंगे ।

जब मंदिर की जालीदार दीवार के अन्दर से प्रभाकर सिंह ने जमना , सरस्वती और इंदुमति को देखा था और कुछ रूखी - सूखी बातचीत भी की थी उस समय जो आदमी उन तीनों को मारने के लिए आया था और जिसे हम वैताल के नाम से संबोधन कर चुके हैं , वास्तव में भूतनाथ ही था । प्रभाकर सिंह को तो उसे हाथ से उन तीनों की रक्षा करने के लिए वहाँ तक पहुँचने में देर लगी परन्तु नारायण ने बहुत जल्द वहाँ पहुँचकर उस शैतान के हाथ से उन तीनों को वचा लिया । नारायण जानते थे कि वह वासत्व में भूतनाथ है और जमना , सरस्वती तथा इंदुमति को भी शक हो चुका था कि वह भूतनाथ है क्योंकि उससे घंटे ही भर पहिले वह तीनों से मिल चुका था और अपना विचित्र ढंग दिखलाकर अच्छी तरह धमका चुका था । मगर उस समय उसे काम करने का मौका नहीं मिला था । यही सबब था कि उसकी सूरत देखते ही ये तीनों चिल्ला उठी और विमला (जमना) ने आँसू गिराते हुए चिल्लाकर प्रभाकर सिंह से कहा था " बचाइए , आप जल्दी यहाँ आकर हम लोगों की रक्षा कीजिए , यही दुष्ट हम लोगों के खून का प्यासा है ! " इसके बाद जब प्रभाकर सिंह दूसरी पहाड़ी पर चढ़कर ऊपर - ही - ऊपर वहाँ पहुँचे तो देखा कि वैताल अर्थात् भूतनाथ से

एक नकाबपोश मुकाबला कर रहा है । यहीं नकाबपोश नागयण था । नारायण ने वहाँ पहुँचकर उन तीनों औरतों को भाग जाने का इशारा करके भूतनाथ का मुकाबला किया और बड़ी खूबी के साथ लड़ा । जब प्रभाकर सिंह वहाँ पहुँचे और नारायण के कहे

मुताबिक जमना , सरस्वती और इंदुमति के पीछे चले तब पुनः भूतनाथ और नारायण से लड़ाई होने लगी । भूतनाथ का कोई हर्वा नारायण के बदन पर कारगर नहीं होता था बल्कि नारायण के मोढ़े पर बैठकर भूतनाथ की तलवार टूट चुकी थी , अंत में नारायण के हाथ से जख्मी होकर भूतनाथ ने मुकाबले से मुँह फेर लिया । उसे विश्वास हो गया कि अगर थोड़ी दूर तक और मुकाबला करूँगा तो वेशक मारा जाऊँगा , अस्तु वह धोखा देकर वहाँ से भाग खड़ा हुआ और नारायण ने भी उसका पीछा किया ।

नारायण यद्यपि लड़ाई में भूतनाथ से ज्यादा ताकतवर और होशियार था मगर दौड़ने में उनका मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता था इसलिए भूतनाथ को पकड़ न सका और वह भाग कर नारायण की आँखों की ओट हो गया ।

प्रभाकर सिंह ने जमना , सरस्वती और इंदुमति का पीछा किया । ये तीनों दीवार के दूसरी तरफ चली गई मगर दरवाजा बंद हो जाने कारण प्रभाकर सिंह उसके अन्दर न जा सके । उसी समय वाहर ही खड़े - खड़े सुना कि सरस्वती से और किसी गैर आदमी से बातचीत हो रही है । गेर आदमी जमना , सरस्वती और इंदुमति को बदकार सावित किया चाहता था और उसकी बातों में प्रभाकर सिंह के दिल की खटाई और भी बढ़ गई थी । मगर वास्तव में मामला दूसरा ही था । वह आदमी जो प्रभाकर सिंह को सुना - सुना कर सरस्वती से बातें कर रहा था असल में भूतनाथ का एक शागिर्द था और उसका मतलब यही था कि अपनी बातों से प्रभाकर सिंह का दिल जमना , सरस्वती और इंदुमति की तरफ से फेर दे , साथ ही इसके उस ऐयार ने यह भी चालाकी की थी कि अपनी असली सूरत में उन औरतों के पास न जाकर उसने एक जमींदार की सूरत बनाई थी और वातचीत करने के बाद बिना किसी तरह के तकलीफ दिए जमना , सरस्वती और इंदुमति के सामने से चला गया । इसके बाद प्रभाकर सिंह स्वयं जमना , सरस्वती और इंदुमति से जाकर मिले और जिस तरह से बातचीत करकं इंदु का परित्याग किया आप लोग पढ़ ही चुके हैं , अब हमें इस जगह केवल उन औरतों ही का हाल लिखना है ।

जब प्रभाकर सिंह इंदुमति का त्याग कर उन तीनों के सामने से चले गए तब इंदुमति बहुत ही उदास हुई और देर तक विलख - बिलखकर रोती रही । अंत में उसने जमना से कहा , " बहिन , अब मेरे लिए जिंदगी अपार हो गई , जब पति ने ही मुझे त्याग दिया

तब इस पापमय शरीर को लेकर इस दुनिया में रहना और चारों तरफ मारे - मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं , अस्तु मैं इस शरीर को इसी जगह त्याग कर बखेड़ा ते करूंगी । "

जमना : नहीं वहिन , तुम इस काम में जल्दी मत करो और इस तरह यकायक हताश मत हो जाओ । मालूम होता है कि किसी दुश्मन ने उन्हें भड़का दिया है और इसी से उनका मिजाज वदल गया है । मगर यह बात बहुत दिनों तक कायम नहीं रह सकती , धर्म हमारी सहायता करेगा और एक - न - एक दिन असल भेद खुल जाने से वे अपने किए पर पश्चात्ताप करेंगे ।

इंदुमति : मगर बहिन , मैं कब तक उस दिन का इंतजार करूँगी ?

जमना : इन बातों का फैसला बहुत जल्द हो जाएगा , हम लोगों को ज्यादे इंतजार न करना पड़ेगा । . इंदुमति : खैर अगर तुम्हारी बात मान ली जाय तो भी उस दुश्मन के हाथ से बचे रहने की क्या तरकीब हो सकती है जो बार - बार हम लोगों का पीछा करके भी शान्त नहीं होता । अगर नारायण की मदद न होती तो वह ..

इंदुमति इसके आगे कुछ कहने ही को थी कि उसके सामने से अपने मददगार नारायण को आते देखा । इस समय नारायण की पीठ पर एक गठरी थी जिसमें कोई आदमी बँधा था ।

नारायण तेजी के साथ कदम बढ़ाता हुआ जमना , सरस्वती और इंदुमति के पास आया । गठरी जमीन पर रख कर तथा अपना परिचय देकर इंदुमति से बोला , " इंदु , मुझे मालूम हो गया कि तेरे दुश्मनों ने तुझे , बल्कि जमना - सरस्वती को भी

व्यर्थ बदनाम किया है और तुम लोगों की तरफ से प्रभाकर सिंह का दिल फेर दिया है । यह काम भृतनाथ के खास ऐयार का है जिसने हरदेई की सूरत बनकर तुमको और प्रभाकर सिंह को धोखा दिया । आजकल में जरूर उसकी खबर लूँगा इस समय में तुम्हारे जिस दुश्मन से लड़ रहा था वह वास्तव में ही भूतनाथ था । "

इंदुमति : (ताज्जुब से बात काटकर) क्या वह भूतनाथ है ? मगर इस तिलिस्म के अन्दर वह क्योंकर आ पहुँचा ? नारायण : हाँ , वह भूतनाथ ही है । इन्द्रदेव ने प्रभाकर सिंह को हाथ की लिखी हुई एक छोटी - सी किताब दी थी , उसी किताब को पढ़कर प्रभाकर सिंह इस तिलिस्म के अन्दर आये थे , भूतनाथ के उसी ऐयार ने जो हरदेई बना

हुआ था धोखा देकर वह किताव प्रभाकर सिंह की जेब से निकाली और अपने गुरु भूतनाथ को दे आया । उसी किताब की मदद से भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आ पहुँचा है और तुम तीनों को तथा प्रभाकर सिंह को मारने का उद्योग कर रहा है । खैर कोई चिंता नहीं जहाँ तक हो सकेगा में तुम लोगों की मदद करूंगा । अफसोस इसी बात का है कि इस समय में यहाँ अकेला हूँ मगर भूतनाथ अपने कई ऐयारों को साथ लेकर आया हुआ है और तुम लोगों की मदद करते हुए इस समय मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि घर जाकर अपने आदमियों को ले आऊँ या इन्द्रदेव को ही इस मामले की खबर करें , अगर चार पहर की भी मोहलत मिल जाय तो में इन्द्रदेव को खबर पहुँचा सकता हूँ , वह अगर यहाँ आ जाएगा तो फिर किसी दुश्मन के लिए कुछ न हो सकेगा । इंदुमति : तो हम लोगों को आप अपने साथ इन्द्रदेव के पास क्यों नहीं ले चलते ?

नारायण : हाँ , तुम लोगों को में अपने साथ वहाँ ले जा सकता हूँ मगर प्रभाकर सिंह को मदद भी तो करनी है । अगर उन्हें इसी अवस्था में छोड़कर तुम लोगों को साथ लेकर चला जाऊँ तो भूतनाथ का ऐयार उन्हें जरूर मार डालेगा क्योंकि वह अभी तक हरदेई की सूरत में है और प्रभाकर सिंह उस पर विश्वास करते हैं ।

जमनाः तो उन्हें इस मामले की खबर कर देनी चाहिए ।

नारायण : में इसी फिक्र में हूँ । तुम्हारे जिस दुश्मन से मैं लड़ रहा था वह अर्थात् भूतनाथ जख्मी होकर मेरे सामने से भाग गया , में उसी के पीछे दौड़ा हुआ चला गया था मगर उसे पकड़ न सका क्योंकि बीच में उसका एक शागिर्द पहुँच गया और उसने मेरा मुकाबला किया । अन्त में वह मेरे हाथ से मारा गया , में उसी को इस गठरी में बाँधकर उटा लाया हूँ । अब इसी जगह चिता बना कर इसे फेंक दूंगा , इसके बाद तुम लोगों को यहाँ से ले चलूँगा और किसी अछे टिकाने बैठाकर प्रभाकर सिंह के पास जाऊँगा । अब ज्यादे देर तक बातचीत करना में मुनासिब नहीं समझाता क्योंकि काम बहुत करना है और समय कम है , तुम लोग मेरी मदद करो और जल्दी से लकड़ी बटोर कर चिता बनाओ ।

बात - की - बात में चिता तैयार हो गई और नारायण ने उस प्यार की लाश को चिता पर रखकर आग लगा दी । थोड़ी देर तक इंदुमति खड़ी उस चिता की तरफ देखती और कुछ सोचती रही , इसके बाद नारायण से बोली , “ आपके बगल में बटुआ लटक रहा

है , इससे मालूम होता है कि आप भी कोई ऐयार हैं , अगर मेरा खयाल ठीक है तो आपके पास लिखने का सामान भी जरूर होगा ! "

नारायण : हाँ - हाँ , मेरे पास लिखने का सामान है , क्या तुमको चाहिए ?

इंदुमति : जी हाँ , कागज का एक टुकड़ा और कलम - दवात चाहिए ।

नारायण ने अपने बटुए में से कागज का टुकड़ा और सयाही से भरी हुई एक सोने की जड़ाऊ कलम निकाल कर इंदु को दी , इंदु ने उस कागज पर कुछ लिखा और अपने आँचल में से कपड़े का टुकड़ा फाड़कर उसमें उसी कागजको बाँध कर एक तरफ फेंक दिया । यही वह चिट्ठी थी जो प्रभाकर सिंह को उस चिता के पास मिली थी ।

इंदुमति ने उस पुर्ने में क्या लिखा है सो इस समय इसने किसी से न बताया और न किसी से उसने पूछा है , हाँ कुछ देर

बाद उसने यह भेद कला और विमला पर खोल दिया ।

जमना , सरस्वती और इंदु को साथ लिए हा नारायण वहाँ से रवाना हुए । वे उस तरफ नहीं गए जिस तरफ दीवार थी बल्कि उसके विपरीत दूसरी तरफ रवाना हुए । थोड़ी दूर जाने के बाद उन लोगों को जंगल मिला , वे लोग उस जंगल में चले गये । क्रमशः वह जंगल घना मिलता गया यहाँ तक कि लगभग दो कोस के जाते वे लोग एक ऐसी भयानक जगह में जा पहुंचे जहाँ बारीक - बारीक सैकड़ों पगड़ियाँ थीं और उनमें से अपने मतलब का रास्ता निकाल लेना बड़ा ही कठिन था मगर तीनों औरतों को लिए हुए नारायण अपने रास्ते पर इस तरह चले जाते थे मानो उन्हें सिवाय एक रास्ते या पगडंडी के कोई दूसरी पगडंडी दिखाई देती नहीं थी ।

उस भयानक जंगल में थोड़ी दूर चले जाने के बाद उन्हें ढालवीं जमीन मिली और वे लोग पहाड़ी के नीचे उतरने लगे । जंगल पता होता गया और वे लोग क्रमशः मैदान की हवा खाते हा नीचे की तरफ जाने लगे ।

लगभग आधा घंटे और चले जाने के बाद वे लोग एक खूबसूरत मकान के पास पहुंचे और बड़ी ऊँची चारदीवारी से घिरा हुआ था और अन्दर जाने के लिए सिर्फ पूरब तरफ एक बहुत बड़ा लोहे का फाटक था । वह मकान यद्यपि बाहर से देखने में खूबसूरत और शानदार मालूम होता था मगर उसके अन्दर एक सहन और दस - बारह कमरे तथा

कोटरियों के सिवाय और कुछ भी न था । मकान क्या मानो कोई महाराजी धर्मशाला था ।

मकान के चारों तरफ बाग था मगर इस समय उसकी अवस्था जंगल की - सी दिखाई दे रही थी । उसके चारों तरफ ऊंची चारदीवारी थी मगर वह भी कई जगह से मरम्मत के लायक हो रही थी ।

तीनों औरतों को साथ लिए नारायण उस चारदीवारी के अन्दर घुसे और इधर - उधर देखते हुए उस इमारत के अन्दर चले गये जहाँ एक कमरे के अन्दर जाकर वे जमना से बोले , " देखो जमना , यह बाग के अन्दर जाने का दरवाजा है । इस मकान में जितने कमरे हैं उन सभी को कहीं - न - कहीं जाने का रास्ता समझना चाहिए । में तुम लोगों को जिस स्थान में ले जाना चाहता हूँ वहाँ का रास्ता यही है । में इस दरवाजे का भेद तुमको दिखा और समझा देना चाहता हूँ जिसमें यहाँ से जाने - आने के लिए तुम किसी की मुहताज न रहो । भूतनाथ जिस किताब को पाकर फूल रहा है और जिसकी मदद से वह इस तिलिस्म के अन्दर चला आया है उस किताब में इस इमारत का हाल कुछ भी नहीं लिखा है इसलिए समझ रखना कि भूतनाथ इसके अन्दर आकर तुम लोगों को सता नहीं सकता । (सामने की दीवार की तरफ इशारा करके) देखो दीवार में जो वह अलमारी दिखाई देती है वहीं यहाँ से जाने का रास्ता है । इसमें एक ही पल्ला है और सेंचने के लिए एक मुट्टा लगा हुआ है , इसी मुट्टे को चाभी समझना चाहिए । और देखो उस अलमारी के ऊपर क्या लिखा हुआ है ? " इतना कह कर नारायण टहर गए और जमना का मुंह देखने लगे जो उन हरूफों को बड़े गौर से देख रही थी । इंदुमति आगे बढ़ गई और उसने उन अक्षरों को पढ़कर नारायण को सुनाया । यह लिखा हुआ था

" दक्षिण श्रृषि वसु वाम , पुनरपि चन्द्रादित्य इमि पुनि इमि गनहुँ सुजान , जौलों वेद न पूरहीं । "

नारायण : ठीक है , यही लिखा हुआ है , अच्छा बताओ इसका मतलब क्या है ?

इंदुमति : मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया , चाहे शब्दों का अर्थ कुछ निकाल सकूँ मगर यह लिखा क्या है सो आप जानिए 1

नारायण : यह इस दरवाजे को खोलने के विषय में लिखा है । इसका मतलब यह है कि इस मुढे को (जो दरवाजे में लगा हुआ है) सात दफे दाहिने , आठ दफे बायें , फिर एक दफे दाहिने और बारह दफे बाएँ घुमाओ , इस तरह चार दफे करो तो दरवाजा खुल जाएगा ।

जमनाः (कुछ दूर तक उस लेख पर गौर करके) ठीक है , इस लेख का यही मतलब सकेगा कि यह लेख इसी मुट्टे को घुमाने के विषय में लिखा है ?

, मगर पढ़ने वाला यह कैसे जान

नारायण : यह बात होशियार आदमी अपनी अकल से समझ सकता है , तिलिस्म बनाने वाले बिलकुल साफ - साफ तो लिखेंगे नहीं ।

जमना : टीक है ।

नारायण : अच्छा तो अब आगे बढ़ो और अपने हाथ से दरवाजा खोलो ।

नारायण की आज्ञानुसार जमना ने ऊपर लिखे ढंग से उस मुठे को घुमाया । दरवाजा खुल गया और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दीं । सामने एक आला था और उसमें एक छोटा - सा पीतल का सन्दुक रखा हुआ था जिसमें किसी तरह का ताला लगा हुआ न था । नारायण न वह सन्दुक खोल कर सभों को दिखाया कि इसमें रोशनी करने का काफी सामान मौजूद है अर्थात् कई मोमबत्तियाँ और चकमक पत्थर वगेरह उसमें मौजूद हैं ।

एक मोमबत्ती जलाई गई और उसी की रोशनी के सहारे दरवाजा बंद करने के बाद सब कोई नीचे उतरे । जिस तरह दरवाजा खुलता था उसी ढंग से बंद भी होता था और यह बात दरवाजे के पिछली तरफ लिखी हुई थी ।

कई सीढ़ियाँ नीचे उतर जाने के बाद एक सुरंग मिली । ये चारों आदमी सुरंग के अन्दर चले गये और जब सुरंग खत्म हुई तो सब कोई एक सरसन्ज मैदान में पहुँचे जहाँ दूर तक खुशनुमा पहाड़ी गुलबूटे लगे हुए थे और एक छोटा - सा सुन्दर मकान भी मौजूद था जिसके आगे छोटा - सा झरना वह रहा था और झरने के किनारे बहुत - से केले के दरख्त लगे हुए थे जिनमें कच्चे और पक्कं सभी तरह के फल मौजूद थे ।

नारायण ने जमना , सरस्वती और इंदुमति से कहा , “ अब दो - तीन दिन तक तुम लोग इसी मकान में रहो तब तक मैं जाकर देखता हूँ कि नकली हरदेई और प्रभाकर सिंह में क्योंकर निपटी । नकली हरदेई की तरफ से उन्हें होशियार कर देना बहुत जरूरी है । (एक छोटी - सी किताब जमना के हाथ में देकर) लो इस किताब को तुम तीनों अच्छी तरह पढ़ जाओ और जहाँ तक हो सके खूब याद कर लो । इसमें उससे ज्यादे हाल लिखा है इन्द्रदेव ने तुम्हें बताया है या उस किताव में खिला हुआ है जो प्रभाकर सिंह के हाथ से निकल कर भूतनाथ के कब्जे में चली गई है । " इतना कहकर नारायण वहाँ से चले गए ।

नौवा व्यान।

जमानिया में आधी रात के समय तिमिस्मी दारोगा अपने मकान में बैठा किसी विषय पर विचार कर रहा है । उसके सामने कई तरह के कागज और चीद्वियों के लिफाफे फैले हुए हैं , जिनमें से एक चिट्टी को यह बार - बार उठाकर गोर से देखता और फिर जमीन पर रख कर कुछ सोचने लगता है । दारोगा के बगल में सटकर एक कमसिन खूबसूरत और हसीन औरत बैटी हुई है । उसके कपड़े और गहने के ढंग तथा भाव से मालूम होता है कि वह बाबाजी (दारोगा) की स्त्री या गृहस्थ औरत नहीं है बल्कि कोई वेश्या है जो कि तिलिस्मी दारोगा अर्थात् बाबाजी से कोई घना संबंध रखती है । एक चिट्टी पर कुछ देर तक विचार करने के बाद दारोगा ने उस औरत की तरफ देखा और कहा “ बीवी मनोरमा , वास्तव में यह चिट्टूटी गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है । यह चिट्टी को देखकर तुमने मुझ पर बड़ा अहसान किया , अब वह जरूर मेरे कब्जे में आ जाएगा । मैं उसे अपना साथी बनाने के लिए बहुत दिनों से उद्योग कर रहा हूँ पर वह मेरे कब्जे में नहीं आता था , मगर अब उसे भागने की जगह न रहेगी ।

मनोरमा : (मुसकुराती हुई) टीक है , मगर में अफसोस के साथ कहती हूँ कि इस चिट्ठी को जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई है बल्कि उसकी लिखी हुई और चीट्टियों को भी जो आपके सामने पड़ी हुई हैं और जिन्हें में जबर्दस्ती नागर से ले आई हूँ आज ही वापस ले जाऊँगी क्योंकि नागर से तुरन्त ही वापस कर देने का वादा करकं ये चीट्टियाँ आपको दिखाने के लिए में ले आई थी ।

दारोगा : (कुछ उदास चेहरा बना के) ऐसा करने से मेरा काम नहीं चलेगा ।

मनोरमा : चाहेजोकुछ हो , आपनेभी तोतुरंत वापसकर देनेकावादाकिया था ।

दारोगा : ठीक है , मगर अब जो मैं देखता हूँ तो इन चिट्ठियों की बदौलत मेरा बहुत काम निकलता दिखाई देता है ।

मनोरमा : तो क्या आप चाहते हैं कि में नागर से झूठी बनूँ और वह मुझे दगावाज कह के दुश्मनी की निगाह से देखे जिसे में अपनी बहिन से भी ज्यादा बढ़ कर मानती हूँ ।

दारोगा : नहीं - नहीं , ऐसा क्यों होने लगा , जब तुम उसे बहिन से बढ़कर मानती हो और वह भी तुम्हें ऐसा ही मानती है तो क्या वह दो - तीन चीट्ठियाँ तुम्हारी खुशी के लिए नहीं दे सकती और तुम मेरी खुशी के लिए उन्हें मेरे पास नहीं छोड़ सकती ?

मनोरमा : नहीं , ऐसा नहीं हो सकता । गदाधरसिंह और नागर में बहुत गहरी मुहब्बत हाथ से खराव कराना चाहते हैं ?

बर्ताव है , क्या उसे आप मेरे ही

दारोगा : नहीं नही , में ऐसा नहीं चाहता । अगर तुम और नागर चाहोगी तो गदाधरसिंह को इन चिट्ठियों के बारे में कुछ भी खवर न होने पावेगी और उन दोनों को मुहब्बत का सिलसिला ज्यों - का - त्यों कायम रहेगा ।

मनोरमा : क्या खूब ! आप भी कैसी भोली - भाली बातें करते हैं ! इन्हीं चिट्टियों को दिखाकर तो आप गदाधरसिंह को अपने कब्जे में किया चाहते हैं और फिर कहते हैं कि इन चिट्ठियों के बारे में गदाधरसिंह को कुछ भी खबर न होगी कि वे आपके कब्जे में आ गई है ।

दारोगा : (शर्मिन्दा होकर) तुम जानती हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ और किस तरह तुम्हारे लिए जान तक देने को तेयार हूँ

मनोरमा : में खूब जानती हूँ और इसीलिए आपकी खातिर इन चिट्ठियों को थोड़ी देर के लिए नागर से माँग लाई हूँ नहीं

तो क्या गदाधरसिंह की शैतानी और उदंडता को नहीं जानती ! वह वात - की - बात में बिगड़ खड़ा होगा और मुझको तथा नागर को जहन्नुम में मिला देगा , बल्कि में जहाँ तक समझती हूँ इन चिट्ठियों का भेद खुलने से वह आपका दुश्मन हो जाएगा ।

दारोगा : नहीं , ऐसा नहीं है । इन चिट्टियों का भेद खुलने से यद्यपि वह हम लोगों का दुश्मन हो जाएगा मगर वह हम लोगों को तब तक तकलीफ न दे सकेगा जब तक ये चिट्टियाँ पुनः लौटकर उसके कब्जे में चली जाएँ । मगर ऐसा होना विलकुल ही असंभव

है । इन चिट्ठियों की नकल दिखाकर मैं उसे धमकाऊँगा सही मगर इन असल चिट्टियों को ऐसी जगह रखूगा कि उसके देवता को भी पता न लगने पावेगा ।

मनोरमा : यह सब आपका खयाल है । आपने सुना नहीं कि जब बिल्ली मजबूर होती है तब कुत्ते के ऊपर हमला करती है ! न - मालूम नागर के ऊपर गदाधरसिंह को कितना भरोसा है कि ये सब खबरें गदाधरसिंह ने नागर को लिखीं , नहीं तो भूतनाथ ऐसे होशियार आदमी को ऐसी भूल न करनी चाहिए थी । इन चिट्ठियों को पढ़ करके एक अदना आदमी भी समझ सकता है कि दयाराम का घातक गदाधरसिंह ही है और वही अव उनकी जमना , सरस्वती नाम की दोनों स्त्रियों को मारना चाहता है । क्या ऐसी चिट्टी का प्रकट हो जाना गदाधरसिंह के लिए कोई साधारण बात है ? और ऐसा होने पर क्या वह नागर को जीता छोड़ देगा ? कदापि नहीं । इसके अतिरिक्त अभी तो चिट्टियों का सिलसिला जारी ही है और वह जमना तथा सरस्वती को मारने के लिए तिलिस्म के अन्दर घुसा ही है , आगे चलकर देखिए कि कैसी - कैसी चिट्ठियाँ आती हैं और उनमें क्या - क्या खबरें वह लिखता है । सिर्फ इन्हीं दो - चार चिट्टियों पर अभी आप क्यों इतना फूल रहे हैं ?

दारोगा इसका जवाब कुछ दिया चाहता था कि दरवाजे की तरफ से घंटी बजने की आवाज आई । उसके जवाब में दारोगा ने भी एक घंटी बजाई जो उसके पास पहिले ही से रखी हुई थी । एक लड़का लपकता हुआ दारोगा के सामने आया और बोला , “ गदाधरसिंह आए हैं , दरवाजे पर खड़े हैं । "

लड़के की बात सुनकर दारोगा ने मनोरमा की तरफ देखा और कहा , “ आया तो है बड़े मौके पर ! "

" मौके पर नहीं बल्कि बेमाक ! इतना कहकर मनोरमा ने वे चिट्ठियाँ दारोगा के सामने से उठा ली जो गदाधरसिंह के हाथ की लिखी हुई थीं या जिनके बारे में बड़ी देर से वहस हो रही थी , और यह कहकर उठ खड़ी हुई कि ' मैं दूसरे कमरे में जाती हूँ , उसे बुलाइए मगर मेरे यहाँ रहने की उसे खबर न होने पावे । '

दसवा व्यान।

गदाधरसिंह को लेने के लिए दारोगा खुद दरवाजे तक गया और बड़े आवभगत के साथ अपनी बैठक में ले आया । मामूली बातचीत और कुशल - मंगल पूटने के बाद दोनों में इस तरह की बातचीत होने लगी

दारोगा : मैंने आपके घर आदमी भेजा था मगर वह मुलाकात न होने के कारण सूखा ही लौट आया और उसी की जुबानी मालूम हुआ कि आप कई दिनों से किसी कार्यवश बाहर गए हुए हैं ।

गदाधरसिंह : टीक है , में कई दिनों से अपने घर पर नहीं हैं , मगर आपको आदमी भेजने की जरूरत क्यों पड़ी ?

दारोगा : आप जानते हैं कि में जब किसी तरद में पड़ जाता हूँ तब सबसे पहिले आपको याद करता हूँ क्योंकि मेरे दोस्तों में सिवाय आपके कोई भी ऐसा लायक और हिम्मतवर नहीं हैं जो समय पड़ने पर मेरी मदद कर सके ।

गदाधरसिंह : कहिए क्या काम है ? आपके लिए हर वक्त तैयार रहता हूँ और आपसे भी बहुत उम्मीद रखता हूँ । में सच कहता हूँ कि आपकी दोस्ती का मुझे बहुत बड़ा घमंड है और यही सबब है कि में इस समय आपके पास आया हूँ क्योंकि इधर महीनों से में सस्त मुसीबत में गिरफ्तार हो रहा हूँ , अगर मेरी इस मुसीबत का शीघ्र अंत न होगा तो मुझे इस दुनिया से एकदम अंतान हो जाना पड़ेगा ।

दारोगा : आपने तो बड़े ही तरद की बात सुनाई ! कहिए तो सही क्या मामला है ?

गदाधरसिंह : नहीं पहिले आप ही कहिए कि मुझे क्यों याद किया था ?

दारोगा : अच्छा पहिले मेरी ही राम कहानी सुन लीजिए , आप जानते ही हैं कि शहर के आसपास ही में कोई कमेटी है जिसके स्थान का और सभासदों का कुछ भी पता नहीं लगता ।

गदाधर सिंह : हाँ में सुन चुका हूँ , (मुसकराकर) मगर मेरा तो खयाल है कि आप भी उस कमेटी के मेम्बर हैं ।

दारोगा : हरे - हरे , आप अच्छी दिल्लगी करते हैं , भला जिस राजा की बदौलत मैं इस दर्जे को पहुँच रहा हूँ और इतना सुख भोग रहा हूँ उसी के विपक्ष में हुई किसी कमेटी का मेंबर हो सकता हूँ ? आज भी अगर मुझे उस कमेटी का पता लग जाए और सभासदों का नाम मालूम हो जाए तो में एक - एक को चुन कर कुत्ते की मौत मारूं और कलेजा टंडा

गदाधरसिंह : (मुसकराता हुआ) कदाचित् ऐसा ही हो , मगर इस विषय पर आप मुझसे बहस न कीजिए , अपना हाल कहिए । में उस कमेटी का हाल अच्छी तरह जानता हूँ । दारोगा : (जिसका चेहरा गदाधरसिंह की बातों से कुछ फीका पड़ गया था) आप ही की तरह हमारे महाराज के छोटे भाई शंकरसिंह जी को भी उस कमेटी के विषय में मुझ पर शक पड़ गया है । उनका भी यही कथन है कि मैं उस कमेटी का मेम्बर हूँ ।

गदाधरसिंह : टीक है , शंकरसिंह जी बड़े ही होशियार और बुद्धिमान आदमी हैं , आपके महाराज की तरह बोदे और बेवकूफ नहीं हैं जिन्हें आप मदारी के अन्दर की तरह जिस तरह चाहते हैं नचाया करते हैं ।

दारोगा : वेशक वे बहुत होशियार और तेज आदमी हैं मगर मुझे विश्वास हो गया है कि वे मेरी जड़ खोदने के लिए तैयार हैं । यद्यपि में अपने को चालाक और धूर्त लगाता हूँ मगर सच कहता हूँ कि शंकरसिंह जी का मुकाबला किसी तरह नहीं कर सकता । तिलिस्म के विषय में भी जितनी जानकारी उनको है उतनी हमारे महाराज को नहीं है । कुंवर

गोपालसिंह जी को भी वह हद से ज्यादे प्यार करते हैं । अभी थोड़े दिन का जिक्र है कि स्वयं मुझे लाल - लाल आँखें करके धमका चुके हैं और कह चुके हैं कि देख दारोगा , होशियार हो जा , अपने राजा के भरोसे पर भूला न रहियो । मैं बहुत जल्द सावित कर दूंगा कि तू उस कमेटी का मेंबर है और इसके बाद तुझे सूअर के गलीज में रखकर फंकवा दूंगा । खवरदार , मेरे धमकाने का हाल भाई साहब से कदापि न कहियो नहीं तो दुर्दशा का दिन ... '

गदाधरसिंह : इससे मालूम होता है कि आपकी उस गुप्त कमेटी का हाल उन्हें मुझसे ज्यादा मालूम हो चुका है , ऐसी अवस्था में आपको चाहिए कि उन्हें इस दुनिया से उठाकर हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाइए नही तो उनका जीते रहना आपके लिए सुखदाई न रहेगा ।

दारोगा : (कुछ देर तक आश्चर्य से भूतनाथ का मुँह देखकर) क्या यह बात आप हमदर्दी के साथ कह रहे हैं ?

गदाधरसिंह : बेशक , आपसे दिल्लगी नहीं करता ।

दारोगा : अगर मैं ऐसा करने के लिए तैयार हो जाऊँ तो जरूरत पड़ने पर क्या आप मेरी मदद करेंगे ?

गदाधरसिंह : जरूर मदद करूँगा मगर शर्त यह है कि आप अपना कोई भेद मुझसे छिपाया न करें ।

दारोगा : मैं तो आपका कोई भेद आपसे नहीं छिपाता और भविष्य के लिए भी कहता हूँ कि न छिपाऊँगा ।

गदाधरसिंह : बेशक आप छिपाते हैं ।

दारोगा : नमूने के तौर पर कोई बात कहिए ?

गदाधरसिंह : पहिले तो इस कमेटी के विषय में ही देख लीजिए , आज तक आपने इस विषय में मुझसे कुछ कहा ?

दारोगा : (कुछ देर तक सिर नीचा करके और सोच के) अच्छा मैं अपनी भूल स्वीकार करता हूँ और कसम खाकर एकरार करता हूँ कि इस कमेटी का भेद और स्थान तुमको बता दूंगा ।

गदाधरसिंह : मैं भी कसम खाकर एकरार करता हूँ कि हर एक काम में आपकी मदद तब तक बराबर करता रहूँगा जब तक आप मेरे साथ या मेरे दोस्त इन्द्रदेव के साथ किसी तरह की दगाबाजी न करेंगे ।

दारोगा : मैं आपके इस एकरार से बहुत ही प्रसन्न हुआ , मगर आश्चर्य की बात है कि आपने अपने साथ - ही - साथ इन्द्रदेव को शरीक कर लिया ! मैं खूब जानता हूँ कि

आजकल इन्द्रदेव आपके साथ दोस्ती का वर्ताव नहीं करता । यद्यपि वह मेरा गुरुभाई है और मैं भी उसका भरोसा करता हूँ मगर वात तो वाजिब है वह कहने में आती है ।
गदाधरसिंह : इन्द्रदेव की बातों को आप नहीं समझ सकते खास करके मेरे संबंध में , यों तो आपने जो कुछ देखा या सुना हो मगर मैं इन्द्रदेव पर भरोसा रखता हूँ । मेरी और उनकी दोस्ती का अंत सिवाय मौत के और कोई नहीं कर

सकता ।

दारोगा : खैर , इस बहस से कोई मतलब नहीं , आप जानिए और वह जाने , मैं तो पहिले ही कह चुका हूँ कि वह मेरा गुरुभाई है मैं उसका भरोसा रखता हूँ । ऐसी अवस्था में भला मैं उसके साथ क्या दुश्मनी कर सकता हूँ । अच्छा अब आप अपने तरवुद का हाल बयान करिए कि आजकल आप किस मुसीबम में फँसे हैं ।

गदाधरसिंह : मेरी मुसीवत के बढ़ाने वाले भी आपके शंकरसिंह ही हैं और कुछ - कुछ इन्द्रदेव ने भी चांड़ लगा रखी है , मगर मैं इसके लिए इन्द्रदेव को बदनाम नहीं कर सकता क्योंकि जिनकी वे मदद कर रहे हैं वे उनके खास रिश्तेदार और आपस वाले लोग हैं ।

दारोगा : अगर यह वात है तो आपको भी जरूर शंकरसिंह से दुश्मनी हो गई होगी ?

गदाधरसिंह : निःसन्देह ।

दारोगा : अच्छा खुलासा तो कहिए ।

गदाधरसिंह : बात वही पुरानी है दयाराम वाली ।

दारोगा : (आश्चर्य से) क्या यह बात प्रसिद्ध हो गई कि आप दयाराम के घातक हैं ?

गदाधरसिंह : अगर प्रसिद्ध हो नहीं गई तो अब कुछ दिन बाद प्रसिद्ध हो जाने में कुछ सन्देह भी नहीं रहा , क्योंकि दयाराम की दोनों स्त्रियाँ जिन्हें तमाम जमाना मुर्दा समझे हुए था जीती - जागती पाई गई हैं और उन्हें इस बात का विश्वास है कि उनके पति को गदाधरसिंह ने मारा है यद्यपि यह वात विलकुल निर्मूल है ..

दारोगा : (बात काट कर आश्चर्य से) क्या वास्तव में दयाराम की दोनों स्त्रियाँ अभी तक जीती हैं ? फिर उनके मरने की गप्प किसने और क्यों उड़ाई ?

गदाधरसिंह : यह सब तिलिस्म इन्द्रदेव ही के बाँधे हुए हैं और अब उन दोनों की मदद भी इन्द्रदेव ही कुछ - कुछ कर रहे हैं , मगर बीच में शंकरसिंह का कूद पड़ना मेरे लिए बड़ा ही दुखदाई हो रहा है । इन्द्रदेव की मदद तो नाममात्र ही के लिए थी , मगर ये हजरत जी छोड़कर उन दोनों की मदद कर रहे हैं और मुझे जहन्नुम में मिलाने के लिए तैयार हैं । क्या करें , तिलिस्म के अन्दर की बात है नहीं तो मैं दिखा देता कि गदाधरसिंह के साथ दुश्मनी करने का नतीजा कैसा होता

दारोगा : वह तो बड़ा ही नाजुक मामला निकला ..

इसके बाद कुछ कहता - कहता दारोगा रुक गया क्योंकि उसे यह बात याद आ गई कि मनोरमा इसी जगह दूसरी कोटरी में छिपी हुई हम लोगों की बातें सुन रही है । संभव है कि दारोगा इसके आगे की बातचीत मनोरमा से छिपाना चाहता हो , अस्तु धीरे - से गदाधरसिंह से कुछ कह आँख का इशारा करने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और गदाधरसिंह का हाथ पकड़े हुए दूसरे कमरे में चला गया ।

ग्यारहवा व्यान।

जमना , सरस्वती और इंदुमति तिलिस्म के अन्दर (जहाँ नारायण उन्हें रख गये थे) वैठी हुई आपस में कुछ बातें कर रही हैं । यद्यपि रात आधी से कुछ ज्यादे ढल चुकी है परन्तु चन्द्रमा की किरणों द्वारा फैली चाँदनी के कारण दूर - दूर तक की चीजें बखूबी दिखाई दे रही हैं और पहाड़ी छटा का एक अपूर्व आनन्द मिल रहा है । बातें करती हुई जमना की निगाह उस तरफ जा पड़ी जिधर से झरने का पानी बड़ी सफाई के साथ बहता हुआ जा रहा था और ऐसा मालूम होता था कि तिलिस्मी कारीगरी ने इस पानी के ऊपर भी चाँदी की कलई चढ़ा दी है । किसी आदमी की आहट पाकर जमना चौकी और बोली , “ वहिन , देखो तो सही वह क्या है ? मैं तो समझती हूँ कि कोई आदमी है । "

इंदुमति मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है ।

सरस्वती : यद्यपि किसी आदमी का यहाँ तक आ पहुँचना असंभव है परन्तु मैं यह भी नहीं कह सकती कि यह आदमी नहीं कोई जानवर है ।

जमनाः (जोर देकर) बेशक आदमी है !!

इंदुमति : देखो इसी तरफ चला आ रहा है , कुछ उधर आ जाने से अब साफ मालूम होता है कि आदमी है , जरा रुक कर दवकता और आहट लेता हुआ आ रहा है , इससे मालूम होता है कि हमारा दोस्त नहीं बल्कि दुश्मन है । देखो यह मेरी दाहिनी आँख फड़की , ईश्वर ही कुशल करे । (रुककर) वहिन , वह देखो इसके पीछे और भी एक आदमी मालूम पड़ता है ।

सरस्वती : (अच्छी तरह देखकर) हाँ ठीक तो है , दूसरा आदमी भी साफ मालूम पड़ता है , आश्चर्य नहीं कि कोई और भी दिखाई दे ! बहिन , मुझे भी खुटका होता है और दिल गवाही देता ही है , अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना

चाहिए ।

जमना : बेशक ऐसा ही है , अब इनके मुकाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए ।

इंदुमति : इनसे मुकाबला करना मुनासिब होगा या भाग कर अपने को छिपा लेना ? लो अब तो वे लोग बहुत नजदीक आ गये और मालूम होता है कि उन्होंने हम लोगों को देख भी लिया ।

जमनाः बेशक उन लोगों ने हमें देख लिया , चलो हम लोग भाग कर मकान के अन्दर चलें और दरवाजा बंद कर लें , मुकाबला करना ठीक न होगा ।

इतना कहकर जमना मकान की तरफ तेजी के साथ चल पड़ी । सरस्वती तथा इंदुमति ने भी उसका साथ दिया ।

यह मकान देखने में यद्यपि बहुत छोटा था मगर इसके अन्दर गुंजाइश बहुत ज्यादे थी और बनिस्बत ऊपर से इसका बहुत बड़ा हिस्सा जमीन में अन्दर था । इसके रास्तों का पता लगाना अनजान आदमी के लिए कठिन ही नहीं बल्कि बिलकुल ही असंभव था । दो - चार आदमी तो क्या पचासों आदमी इसके अन्दर छिपकर रह सकते थे जिनका पता सिवाय जानकार के कोई दूसरा नहीं लगा सकता था । इस मकान के अन्दर कैसी - कैसी कोठरियाँ , कैसे - कैसे तहखाने और कैसी - कैसी सुरंगें या रास्ते थे इसे इस तिलिस्म से संबंध रखने वाला भी हर एक आदमी नहीं जान सकता था , परन्तु नारायण ने जो किताब जमना को दी थी उसमें वहाँ का कुल हाल अच्छी तरह लिखा हुआ था ।

अब हम यह लिख सकते हैं कि वे दोनों आने वाले कौन थे जिन्हें देखकर जमना , सरस्वती और इंदुमति भागकर घर में चली गई थीं ।

ये दोनों भूतनाथ और तिलिस्म दारोगा साहब थे । दारोगा भूतनाथ की मदद पर तैयार हो गया और उसने प्रतिज्ञा की थी कि तुम्हें तिलिम्म के अन्दर ले चल कर जमना , सरस्वती और इंदुमति को गिरफ्तार करा दूंगा । इसी तरह भूतनाथ ने भी दारोगा से वादा किया था कि महाराज जमानिया के भाई शंकरसिंह के मारने में मैं तुम्हारी मदद करूंगा और यह कार्रवाई इस टंग से की जाएगी कि किसी को इस बात का गुमान भी न होगा कि शंकरसिंह कब और कहाँ मारे गए या उन्हें किसने मारा इत्यादि । यही सबब था कि ये दोनों इस समय तिलिस्म के अन्दर दिखाई दिए । यहाँ का बहुत कुछ हान दारोगा को मालूम था मगर शंकरसिंह को यह आशा न थी कि दारोगा उनके साथ यहाँ तक बुरा बर्ताव कर गुजरेगा , अस्तु वे दारोगा की तरफ से बिलकुल ही वेखबर थे ।

दारोगा और भूतनाथ दोनों आदमी सूरत बदलने के अतिरिक्त चेहरे पर नकाब भी डाले हुए थे इसलिए उन्हें कोई पहिचान नहीं सकता था ।

जिस समय ये तीनों औरतें भाग कर मकान के अन्दर चली गई उसके थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ और दारोगा मकान के दरवाजे पर आ पहुँचे । उन्होंने तीनों को भाग कर मकान के अन्दर जाते हुए देख लिया था अस्तु तिलिम्मी ढंग से दरवाजा खोलने के लिए दारोगा साहब ने हाथ बढ़ाया ही था कि पीछे से किसी ने आवाज दी " कान है ? "

दारोगा और भूतनाथ को इस बात का निश्चय नहीं था कि जमना , सरस्वती और इंदुमति तिलिस्म के अन्दर किस ठिकाने पर हैं परन्तु भूतनाथ ने अपने कई शागिर्द इस तिलिस्म के अन्दर पहुँचा दिये थे जो कि नागवण की कार्रवाई पर वरावर ध्यान रखते थे । जब भूतनाथ और दारोगा तिलिस्म के अन्दर आए तब भूतनाथ का एक शागिर्द उन्हें मिला जिसके माथे पर अपना खास निशान देखकर भूतनाथ ने पहिचान लिया और उससे वहाँ का हाल पूछा । उस शागिर्द ने बता दिया कि जमना , सरस्वती और इंदुमति को नारायण ने फलाने मकान में रखा है , उसी के दिए निशान के अंदाजे पर भूतनाथ और दारोगा वहाँ आए थे और उन्होंने जमना , सरस्वती तथा इंदुमति को अपनी आँखों से मकान के अन्दर जाते देख लिया था । जब दारोगा ने मकान का दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया उसी समय पीछे से आवाज आई , " कौन है ? " दारोगा ने अपना हाथ खेंच लिया और पीछे फिर कर देखा । एक आदमी पर निगाह पड़ी जिसने सिर से पैर तक अपने को स्याह लवादे से दाँक रखा था । भूतनाथ हाथ में खंजर लिए हुए उस आदमी के पास चला गया और इपट कर बोला , " तू कौन है ! "

उस आदमी ने भूतनाथ की बात का कुछ भी जवाब न दिया और पीछे की तरफ हटने लगा । भूतनाथ भी उसी के साथ उसकी तरफ आगे बढ़ता गया और उसने कई दफ इपटकर उस आदमी से तरह - तरह के सवाल किए और कटु वचन भी कहे परन्तु भूतनाथ कि किसी वात का भी उसने जवाब न दिया और बराबर पीछे की तरफ हटता चला गया । भूतनाथ भी उसके साथ - ही - साथ आगे बढ़ता गया , यहाँ तक कि एक झाड़ी के पास पहुँचकर वह आदमी रुक गया और उसने अपने दोनों हाथ लवादे के बाहर निकाले जिनमें से एक में ढाल और दूसरे में तलवार थी । यहां पर घनी झाड़ी होने के कारण चन्द्रमा की चाँदनी नहीं पहुँचती थी अस्तु अपने लिए उत्तम स्थान समझकर

उस आदमी ने जबान खोली और भूतनाथ से कहा , " हाँ । अब तुझको बताना पड़ेगा कि तू कौन है और तिलिस्म के अन्दर क्योंकर आया ? " पाटक , थोड़ी देर के लिए हम इस आदमी का नाम " भीम " रख देते हैं । भीम की बात सुनकर पहिले तो भूतनाथ चुप हो गया मगर फिर कुछ सोचकर बोला , " मैं तुम्हारी बात का जवाब क्योंकर दे सकता हूँ जबकि तुमने खुद मेरी बात का कुछ भी जवाब नहीं दिया ? "

भीम : यद्यपि मैंने वहाँ पर तुम्हारी बातों का कुछ भी जवाब नहीं दिया परन्तु अब तुम्हारे हर एक बात का जवाब देने के लिए तैयार हूँ मगर शर्त यह है कि तुम ठीक - ठीक ईमानदारी के साथ अपना परिचय दो ।

भूतनाथ : बेशक में ईमानदारी के साथ अपना परिचय दूंगा , मेरा नाम रंगनाथ ऐयार है , मैं मिर्जापुर का रहने वाला हूँ ।

भीम : (खिलखिलाकर हँसने के बाद) वाह - वाह ! खूब ईमानदारी के साथ अपना परिचय दिया । रंगनाथ तो आजकल हमारे यहाँ मेहमान है , यह दूसरा रंगनाथ कहाँ से आया ?

भूतनाथ : (कुछ सकपकाना - सा होकर) नहीं - नहीं , ऐसा नहीं हो सकता अगर कोई आदमी रंगनाथ के नाम का तुम्हारे पास आया है तो बेशक उसने तुमको धोखा दिया , असल रंगनाथ में ही हूँ और में प्रभाकरसिंह को इस केंद से छुड़ाने के लिए यहाँ आया हूँ !

भीम : अगर तुम्हारा कहना सच है और रंगनाथ के नाम से किसी दूसरे आदमी ने मेरे यहाँ आकर मुझे धोखा दिया है तो तुम उसे जरूर पहिचान सकते हो , उसकी तस्वीर मेरे पास है । तुम देखो और पहिचानो । उसका कथन है कि भूतनाथ इस तिलिस्म के अन्दर आया है और कई आदमियों को धोखा दिया चाहता है ।

भूतनाथ : (बड़ी चाह के साथ) में जरूर उनकी तस्वीर देखूगा और पहिचानूँगा ।

भीम ने अपनी जेब से निकाल कर एक पीतल की डिबिया भूतनाथ के हाथ में दी और कहा ; " देखो हिफाजत से खोलो , इसी के अन्दर उसकी तस्वीर है । "

भूतनाथ ने भीम के हाथ से डिविया ले ली और दो कदम बढ़कर चन्द्रमा की चाँदनी में वह डिविया खोलने लगा । डिबिया बड़ी मजबूती के साथ बंद धो और हल्के हाथों से

उसका खुलना कठिन था अस्तु गर्दन झुकाकर और दोनों हाथों से जोर लगाकर भूतनाथ ने वह डिबिया खोली । उसके अन्दर बहुत हल्की और गर्द के समान बारीक बुकनी भरी हुई थी जो झटकं के साथ डिविया खुलने के कारण उसमें से उछली और उड़कर भूतनाथ की आँख और नाक में पड़ गई । यह बहुत ही तेज बेहोशी की बुकनी थी जिसने भूतनाथ को बात करने की भी मोहलत न दी , वह तुरन्त ही चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया । भीम ने झपटकर अपनी डिबिया सम्हाली और भृतनाथ के हाथ से लेकर अपनी जेब में रख ली , इसके बाद अपने लबादे में भूतनाथ की गठरी वाँधी और उसे पीट पर लाद कर एक तरफ का रास्ता लिया ।

अब उधर का हाल सुनिए । भीम के साथ जाकर भूतनाथ तो बहुत दूर निकल गया मगर दारोगा अपनी जगह से न हिला । उसने मकान का दरवाजा खोला और जमना , सरस्वती तथा इंदुमति को गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा दरवाजा खोलता हुआ वह एक दालान में पहुंचा , जिसके दोनों तरफ दो कोटरियाँ थीं और उन सभी कोटरियों के दरवाजे किस तरह खुलते थे , इसका पता कंबल देखने से नहीं लग सकता । किसी खास तरकीब से दारोगा ने वाई तरफ वाली कोटरी का दरवाजा खोला और हाथ में नंगी तलवार लिए हुए उसके अन्दर घुसा । यह टोटी - सी सुरंग थी जिसमें दस - बारह हाथ चल कर दारोगा एक बारहदरी में पहुंचा जहाँ विलकुल ही अंधकार था , सिर्फ दो - तीन जगह किसी सूराख की राह से चन्द्रमा की रोशनी पड़ रही थी मगर उससे वहाँ का अंधकार दूर न हो सकता था ।

दारोगा को विश्वास था कि जमना , सरस्वती और इंदुमति जरूर इसी दालान में होंगी और उनके हाथ में किसी तरह का कोई हर्वा भी जरूर होगा , इसी खयाल से उसकी हिम्मत न पड़ी कि वह इस अंधकार में आगे की तरफ बड़े अस्तु वह चुपचाप खड़ा रहकर वहाँ की आहट लेने लगा । कुछ ही देर बाद किसी के धीरे - धीरे बोलने की आवाज़ उनके कान में आई और उसके बाद मालूम हुआ कि कई आदमी आपस में धीरे - धीरे बात कर रहे हैं । आवाज हल्की और नाजुक थी इसलिए दागंगा समझ गया कि जरूर यह जमना , सरस्वती और इंदुमति है । दारोगा ऐयार का छोटा - सा बटुआ अपने कपड़ों के अन्दर छिपाए हुआ था जिसमें से उसने टटोल कर एक छोटी डिविया निकाली , उस डिविया में कई तरह के खटके और पुरजे लगे हुए थे , दारोगा ने खटका दवाया जिससे वह डिबिया चमकने लगी और उसकी रोशनी ने वहाँ के अंधकार को अच्छी तरह

दूर कर दिया । अब दारोगा ने देख लिया कि उसके सामने दालान में तीन औरतें हाथ में खंजर लिए खड़ी हैं ।

जमना , सरस्वती और इंदुमति को दारोगा अच्छी तरह पहिचानता न था मगर सुनी - सुनाई वातों से वह अनुमान जरूर कर सकता था । इस मौके पर तो उसे यह मालूम ही था कि यहाँ पर जमना , सरस्वती और इंदुमति विराज रही हैं और वे तीनों आरतें अपनी असल सूरत में भी थीं इसलिए दारोगा को विश्वास हो गया कि जमना , सरस्वती और इंदमति ये ही है । दारोगा ने उसी जगह खड़े रहकर जमना की तरफ देखा और कहा , “ तुम लोग मुझसे व्यर्थ ही डर कर भाग रही हो !

में तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ और न तुम्हारे किसी दुश्मन का भेजा हुआ हूँ । "

जमना : फिर तुम कौन हो और हम लोगों का पीछा क्यों कर रहे हो ?

दारोगा : मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूँ और प्रभाकर सिंह का भेजा हुआ तुम लोगों के पास आया हूँ । उनका हुक्म है कि तुम

लोगों को अपने साथ ले जाकर उनके पास पहुँचा दूँ !

जमना : तुम्हारी बातों को हमें क्योंकर विश्वास हो ? क्या उनके हाथ की कोई चिट्ठी भी लाए हो ?

दारोगा : हाँ , मैं चिट्ठी लाया हूँ । उन्होंने खुद ही खयाल करके एक चिट्ठी भी अपने हाथ से लिख कर दी है ।

जमना : अगर ऐसा है तो लाओ , वह चिट्टी मुझे दो , मैं पहिले उसे पढ़ लूँ तब तुम्हारी बातों पर विचार करूँ ।

दारोगा : हाँ लो में चिट्टी देता हूँ , यह रोशनी जो मेरे हाथ में है ज्यादे देर तक टहर नहीं सकती इसलिए पहिले में दूसरी रोशनी का इंतजार कर लूँ तब चिट्टी तलाश कर लूँ ।

इतना कहकर दारोगा ने वह डिबिया जमीन पर रख दी और उसी की रोशनी में उसने अपना बटुआ खोलकर एक खाकी रंग की मोमबत्ती निकाली और चकमक से आग पैदा करके उससे रोशनी करने के बाद वह डिविया बंद करके अपने बटुए में रख ली । अब दालान भर में उसी मोमबत्ती की रोशनी फैली हुई थी । वह मोमबत्ती कुछ खास तरकीब

और कई दवाईयों के योग से तैयार की गई थी । उसका रंग खाकी था और वलने पर उसमें से बेहोशी पैदा करने वाला बहुत ज्यादा धुआं निकलता था । दारोगा ने यह सोचकर कि शायद आज की कार्रवाई में इस मोमबत्ती की जरूरत पड़े । पहिले से ही अपने बचाव का बंदोबस्त कर लिया था अर्थात् किसी तरह की दवा खा या सूंघ ली थी मगर जमना , सरस्वती और इंदुमति अपने को इस धुएँ से बचा नहीं सकती थीं और न इस बात का उन्हें गुमान ही हुआ कि बेहिसाब धुआँ पैदा करने वाली इस मोमबत्ती में कोई खास बात है ।

दारोगा ने मोमबत्ती बाल कर जमीन पर जमा दी और उसकी रोशनी में प्रभाकर सिंह के हाथ की चिट्ठी खोजने के बहाने से अपना बटुआ टटोलने लगा ।

कभी बटुए की तलाशी लेता , कभी अपने जेबों को टटोलता और कभी कमर में देखकर बनावटी ताज्जुब से हाथ पटकता और कहता कि ' न मालूम चिट्ठी कहाँ रख दी है ! मेरे जैसा बेवकूफ भी कोई न होगा । भला ऐसी जरूरी चिट्ठी को इस तरह रखना चाहिए कि समय पर जल्दी मिल न सके ' !

चिट्टी की खोज और कपड़ों की तलाशी में दारोगा ने बहुत देर लगा दी और तब तक उस मोमबत्ती का धुआँ तमाम कमरे में फैल गया । बेचारी जमना , सरस्वती और इंदुमति चिट्ठी की चाह में बड़ी उत्कंठा से दारोगा की हरकतों को खड़ी - खड़ी देख रही थीं मगर उन लोगों को यह नहीं मालूम होता था कि इस धुएं की बदौलत हम लोगों की हालत बदलती चली जा रही है । थोड़ी देर ही में वे तीनों बेचारी औरतें बेहोश होकर जमीन पर लेट गई और अब दारोगा ने बड़ी फतहमंदी और खुशी की निगाह से उन तीनों की तरफ देखा ।

बारहवा व्यान।

यह नहीं मालूम होता कि कृष्णपक्ष है या शुक्लपक्ष अथवा रात है या दिन क्योंकि हम जिस समय इस स्थान पर पहुँचते हैं वहाँ चिराग या इसी तरह की किसी रोशनी के सिवाय और किसी सच्चे उजाले या चाँदने का गुजर नहीं हो सकता । हम यह भी नहीं कह सकते कि यह कोई तहखाना है या सुरंग , अंधकारमय कोई कोटरी है या बालाखाना , सिर्फ इतना ही देख रहे हैं कि एक मामूली कोठरी में जिसमें सिवाय एक मद्धिम चिराग के और किसी तरह की रोशनी नहीं है , जमना , सरस्वती और इंदुमति बेटी हुई गर्म - गर्म आँसू गिरा रही है जिसका विशेष पता उन्हीं हिचकियों से लग रहा है । उन तीनों के पैर बँधे हुए हैं और किसी मोटी रस्सी के सहारे वे एक लकड़ी के खंभे के साथ भी बंधी हुई हैं जिसमें पैर से चलना तो असंभव ही है खिसककर भी दो कदम इधर - उधर न जा सकें । उन तीनों के सामने बैठे हुए तिलिस्मी दारोगा पर निगाह पड़ने ही से विश्वास होता है कि इन तीनों पर इतनी सती होने का कारण यही बेईमान दारोगा है ।

पहिले क्या - क्या हो चुका है सो हम कुछ नहीं कह सकते परन्तु इस समय हम देखते हैं कि वे तीनों अपनी बेबसी और मजबूरी पर जमीन की तरफ देखती हुई गर्म - गर्म आँसू गिरा रही हैं और इस अवस्था में कभी कोई सर उठा कर दारोगा की तरफ देख भी लेती है ।

कुछ देर तक सन्नाटा रहने के बाद जमना ने एक लंबी साँस ली और सर उठा कर दारोगा की तरफ देख धीमी आवाज से कहा " बहुत देर तक सोचने के बाद अब में आपको पहिचान गई और जान गई कि आप जमानिया राजा के कर्ता - धर्ता दारोगा साहव हैं । "

दारोगा : वेशक मैं वही हूँ । इस समय अपने - आप को छिपाना नहीं चाहता इसलिए असली सूरत में तुम लोगों के सामने बैटा हुआ हूँ ।

जमनाः टीक है , तो मैं समझती हूँ कि उस तिलिस्म के अन्दर हम लोगों को बेहोश करके यहाँ ले आने वाले भी आप ही

दारोगा : बेशक् !

जमनाः आखिर इसका कारण क्या है ! हम लोगों ने आपका क्या बिगाड़ा है जो आप हमारे साथ इतनी सती का बर्ताव कर रहे हैं ?

दारोगा : मेरा तुम लोगों ने कुछ भी नहीं बिगाड़ा मगर मेरे दोस्त भूतनाथ को तुम लोग व्यर्थ सता रही हो इसलिए मुझे मजबूर होकर तुम लोगों के साथ ऐसा बर्ताव करना पड़ा ।

जमना : (क्रोध में आकर कुछ तेजी से) क्या भूतनाथ को हम लोग सता रही हैं ! क्या वह हम लोगों को मिट्टी में मिला कर अभी तक बाज नहीं आता और बराबर जख्म लगाए नहीं जा रहा है !!

दारोगा : कदाचित् ऐसा ही हो परन्तु उसका कहना तो सही है कि तुम लोग व्यर्थ ही उसे कलंकित करके दुनिया में रहने के अयोग्य बनाने की चेष्टा कर रही हो ।

जमना : आह ! बड़े अफसोस की बात है कि आप अपने मुँह से ऐसे शब्द निकाल रहे हैं और अपने को उन बातों से पूरा - पूरा अनजान सावित किया चाहते हैं ?

दारोगा : सो क्या ? मुझे इन बातों से मतलब ?

जमना : अगर कुछ संबंध नहीं है तो हम लोगों को वहाँ से क्यों कैद कर लाए ?

दारोगा : केबल अपने दोस्त की मदद कर रहा हूँ ।

जमना : और आप इस बात को नहीं जानते कि हमारा पति इसी दुष्ट के हाथ से मारा गया है ? और क्या आपकी मंडली में यह बात मशहूर नहीं है ?

दारोगा : हाँ दो - चार आदमी ऐसा करते हैं , परन्तु भूतनाथ का कथन है कि इसका कारण तुम ही हो , अर्थात् केवल तुम ही लोगों ने यह बात व्यर्थ मशहूर कर रखी है । मुझे स्वयं इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है ।

जमना : (ताने के ढंग पर) बहुत सच्चे ! अगर यह बात आपको मालूम नहीं है तो भूतनाथ आपका दोस्त भी नहीं है ।

दारोगा : भूतनाथ मेरा दोस्त जरूर है और वह मुझसे कोई बात छिपा नहीं रखता ! खैर थोड़ी देर के लिए अगर यह भी मान लिया जाय कि तुम्हारा ही कहना टीक है तो मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम भूतनाथ को बदनाम करके क्या फायदा उटा सकती हो ? भूतनाथ इस समय स्वतंत्र है किसी रियासत का तावेदार नहीं जो उस पर नालिश कर सकोगी , फिर ऐसी अवस्था में उससे दुश्मनी करके तुम अपना ही नुकसान कर रही हो । इसके अतिरिक्त में खूब जानता हूँ कि भूतनाथ तुम्हारे पति का सच्चा और दिली दोस्त था और तुम्हारे पिता भी उसको ऐसा ही मानते थे , ऐसी अवस्था में यह कब संभव है कि स्वयं भूतनाथ अपने ही हाथों से तुम्हारे पति को मारे । ऐसा करके वह एक फायदा उठा सकता था ? क्या तुमको विश्वास है कि भूतनाध ने तुम्हारे पति को मारा ? अच्छा तुम बताओ कि ऐसा करके उसने क्या फायदा उठाया ?

जमना : हम लोगों ने एक तौर पर इस दुनिया ही को छोड़ा हुआ है और बिलकुल मर्दो की हालत में पहाड़ी खोह और कंदराओं में रहकर जिंदगी के दिन बिता रही हैं । इसलिए आजकल की दुनिया का हाल मालूम नहीं है अस्तु में नहीं कह सकती कि उसने मेरे पति को मार कर क्या फायदा उटाया , परन्तु इतना में जरूर जानती हूँ कि मेरे पति की मौत भूतनाथ के ही हाथ से हुई है ।

दारोगा : यह बात तुमसे किसने कही ?

जमना : सो मैं तुमसे नहीं कह सकती ।

दारोगा : खैर न कहो तुम्हें अख्तियार है , मगर मैं फिर भी इतना जरूर कहूँगा कि तुम्हारा खयाल गलत है । भूतनाथ ने तुम्हारे पति को कदापि नहीं मारा और कदाचित् धोखे में ऐसा हो गया हो तो धोखे की बात पर सिवाय अफसोस करने के और कुछ भी उचित नहीं है । कई दफं ऐसा होता है कि धोखे में माँ का पैर बच्चे के ऊपर पड़ जाता है , तो क्या इसका बदला बच्चे को माँ से लेना चाहिए ? कभी नहीं । तुम खुद जानती हो कि भूतनाथ से , जो वास्तव में गदाधरसिंह है , तुम्हारे पति की कैसी दोस्ती थी ।
जमना : वेश में इस बात को जानती हूँ और यह भी मानती हूँ कि कदाचित् धोखे ही में

भूतनाथ से वह काम हो गया हो , परन्तु आप ही बताइए कि क्या इस अधर्म को छिपाने क लिए भूतनाथ को हम लोगों का पीछा करना चाहिए ?

दारोगा : हाँ , ये वेशक उसकी भूल है , इसके लिए मैं उसे ताड़ना दूंगा परन्तु में तुम्हें सच्चे दिल और हमदर्दी के साथ राय देता हूँ कि तुम भूतनाथ के साथ दुश्मनी का खयाल छोड़ दो नहीं तो पछताओगी और तुम्हारा सख्त नुकसान होगा क्योंकि तुम भूतनाथ का मुकाबला नहीं कर सकती । तुम अबला और निर्बल ठहरी और वह होशियार ऐयार । तिस पर उसके दोस्त भी बहुत गहरे लोग हैं ।

जमना : मैं जानती हूँ कि उसके और हमारे बीच हाथी और चिऊंटी का - सा फर्क है और आप जैसे समर्थ लोग उसके दोस्त भी हैं , और इस बात को भी मानती हूँ कि में उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकती , परन्तु आप ही बताइए कि ऐसी अवस्था में वह हम अवलाओं से डरता ही क्यों है ?

दारोगा : सिर्फ बदनामी के खयाल से डरता है , क्योंकि अगर यह झूठा कलंक उस पर लग जाएगा और वह दयाराम का घाती मशहूर हो जाएगा तो फिर वह दुनिया में किसी को मुँह न दिखा सकेगा ; और अगर तुम उसे माफ कर दोगी तो वह खुशी से किसी रियासत में रहकर अपनी जिंदगी बिता सकेगा और जन्म - भर तुम्हारा मददगार भी बना रहेगा ।

जमना : मुझे उसकी मदद की कोई जरूरत नहीं है और न मेरे दिल का बहुत बड़ा जख्म जो उसके हाथों से पहुँचा है आराम हो सकता है । समझ लीजिए कि अब चूहे और बिल्ली में दोस्ती कायम नहीं हो सकती ।

दारोगा : यह समझना तुम्हारी नादानी है । में कह चुका हूँ कि ऐसा करने से तुम्हें सख्त तकलीफ पहुँचेगी ।

जमना : बेशक ऐसा ही है , तभी तो में कैद करके यहाँ लाई गई हूँ । दारोगा : तुम खुद ही सोच लो कि यह कैसी बात है , अगर तुम मार ही डाली जाओगी तो फिर दुनिया में इसके लिए उससे बदला लेने वाला कौन रह जाएगा ?

जमना : मेरे पीछे उसका पाप उससे बदला लेगा या इस बात के मशहूर हो जाने हो से वह दीन - दुनिया के लायक न रहेगा और यही उस बात का बदला समझा जाएगा ।

आपने उसकी मदद की है और इसलिए हम लोगों को यहाँ केर कर लाए हैं तो बेशक हम लोगों को मार कर अपने कलेजा ठंडा कर लीजिए , हम लोग तो खुद अपने को मुदा समझे हुए हैं , मगर इस बात को समझ रखिएगा कि हम लोगों के मारे जाने से उसकी बदनामी का झंडा जो बड़ी मजबूती के साथ गाड़ा जा चुका है गिर न पड़ेगा और उस झंडे के उड़ने वाले तथा उससे बदला लेने वाले कई जबर्दस्त आदमी कायम रह जाएंगे !

दारोगा : यह तुम्हारा खयाल - ही - खयाल है , जिस तरह तुम उसकी केवल इच्छा मात्र से गिरफ्तार कर ली गई हो उसी तरह उसके और दुश्मन भी बात - की - बात में गिरफ्तार हो जाएँगे ।

जमना : इस बात को मैं नहीं मान सकती ।

दारोगा : नहीं मानोगी तो में मना दूंगा । इसका काफी सबूत मेरे पास है ।

जमना : हाँ , अगर मेरा दिल भर जाने के लायक कोई सबूत मिल जाएगा तो मैं जरूर मान जाऊँगी ।

दारोगा : अच्छा - अच्छा , पहिले मैं तुमको इस बात का सबूत दे लूँगा तब तुमसे बात करूँगा ।

इतना कहकर दारोगा अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और उस जगह गया जहाँ खंभे के साथ ये तीनों औरतें बँधी हुई थीं । उस खंभे में से जमना , सरस्वती और इंदुमति को खोला मगर उनकी हथकड़ी तथा बेड़ी नहीं उतारी , हाँ , बेड़ी की जंजीर जरा ढीली कर दी जिसमें वे धीरे - धीरे कुछ दूर तक चल सकें । इसके बाद उन तीनों को लिए सामने की दीवार के पास गया जहाँ एक छोटा - सा दरवाजा था और उसमें मजबूत ताला लगा हुआ था । दारोगा ने कमर में से ताली निकाल कर दरवाजा खोला और उन तीनों के लिए हुए उसके अन्दर घुसा । यह रास्ता सुंरग की तरह था जो कि दस - बारह कदम जाने के बाद खतम हो जाता था अस्तु उसी अंधकारमय रास्ते में उन तीनों को लिए हुए दारोगा चला गया । जब रास्ता खत्म हुआ तब उसने एक खिड़की खोली जो कि जमीन से छाती बरावर ऊँची थी । उस खिड़की के खुलने से उजाला हो गया और तब दारोगा ने उन औरतों को नीचे की तरफ झांक कर देखने के लिए कहा ।

उस समय जमना , सरस्वती और इंदुमति को मालूम हुआ कि वे तीनों जमीन के अन्दर किसी तहखाने में कैद नहीं हैं बल्कि उनका कैदखाना किसी मकान के ऊपरी हिस्से पर है ।

खिड़की की राह से नीचे की तरफ झाँककर उन्होंने देखा कि एक छोटा - सा मामूली नजरबाग है जिसके चारों तरफ की दीवारें बहुत ऊँची - ऊँची हैं । उस बाग में एक टूटे पेड़ के साथ हथकड़ी - बेड़ी से मजबूर प्रभाकर सिंह बाँधे हुए हैं । उन्हें

देखते ही इंदुमति का कलेजा काँप गया और जमना तथा सरस्वती के रोंगटे खड़े हो गये । उस समय दारोगा ने जमना की तरफ देखकर कहा , " तुम लोगों ने अच्छी तरह देख लिया कि तुम्हारे प्यारे प्रभाकर सिंह , जो तुम लोगों के बाद भूतनाथ पर कलंक लगा सकते थे तुम लोगों के साथ ही गिरफ्तार कर लिए गए , बताओ अब तुम्हें किस पर भरोसा है

जमना : भरोसा तो हमें केवल ईश्वर पर ही है मगर फिर भी इतना जरूर कहूँगी , मेरे मददगार कोई और ही लोग हैं । जिनका नाम तुम्हें किसी तरह भी मालूम नहीं हो सकता !

दारोगा : तुम्हारा यह कहना भी व्यर्थ है , मुझसे और भूतनाथ से कुछ भी छिपा नहीं है ।

इतना कहकर दारोगा ने खिड़की बंद कर दी और वहाँ पुनः अँधकार हो गया । इसके बाद उन तीनों को लिए हुए उसी पहिले स्थान पर चला आया और उसी खंभे के साध पुनः तीनों को बाँधकर पैर की जंजीर कस दी ।

प्रभाकर सिंह को कैद की हालत में देखकर वे तीनों बहुत ही परेशान हुई और उनके दिल में तरह - तरह की बातें पैदा होने लगीं । दारोगा ने पुनः जमना की तरफ देखकर कहा , “ मैं फिर कहता हूँ कि भूतनाथ से दुश्मनी रखकर तुम लोग इस दुनिया में सुखी नहीं रह सकतीं । "

जमना : (ऊँची साँस लेकर) अब मेरे लिए इस दुनिया में क्या रखा है ! किस सुख के लिए मैं जीवन की लालसा कर सकती हूँ , दुनिया में अगर लालसा है तो केवल इस बात की कि भूतनाथ से बदला लूँ । दारोगा : सो हो नहीं सकता और न भूतनाथ ने वास्तव में

तुम्हारा कुछ विगाड़ा ही है । तुम खुद सोच लो और समझ लो , मैं सच कहता हूँ कि भूतनाथ अब भी तुम्हारी खिदमत करने के लिए हाजिर है । अगर तुम उसे अपना तावेदार मान लोगी तो तीन दिनों में वह उद्योग करके तुम्हारे पति के घातक को भी खोज निकालेगा , नहीं तो अब तुम लोग उसके पंजे में आ ही चुकी हो । तुम लोग मुफ्त में अपनी जान दोगी , और अपने साथ वेकसूर इंदुमति और प्रभाकर सिंह को भी बर्बाद करोगी क्योंकि इन दोनों की जान का संबंध भी तुम्हारी जान के साथ है । मैं तुमको दो घंटे की मोहलत देता हूँ तब तक तुम अपने भले - बुरे को अच्छी तरह सोच लो । दो घंटे के बाद जब मैं आऊँगा तो भूतनाथ भी मेरे साथ होगा , उस समय या तो तुम लोग भूतनाथ को अपना सच्चा दोस्त समझकर उसके निर्दोष होने का एक पत्र उसे लिख दोगी और या फिर दूसरी अवस्था में तुम तीनों ठंडे - ठंडे दूसरी दुनिया की तरफ रवाना हो जाओगी और प्रभाकर सिंह भी तुम तीनों के साथ - ही - साथ खवरदारी के लिए वहाँ रवाना कर दिये जाएँगे ।

इतना कहकर दारोगा वहाँ से रवाना हो गया और जब वह बाहर हो गया तो पुनः उस जहन्नुमी कैदखाने का दरवाजा बंद हो गया और बाहर से भारी जंजीर की आवाज आई ।

तीसरा भाग समाप्त।

भूतनाथ

भूतनाथ - ४

देवकीनन्दन खत्री

उपन्यास

अनुक्रमणिका १.

खण्ड - चार

दसवाँ भाग

पहला व्यान।

जमानिया राज में आज बड़ा ही हड़कम मचा हुआ है क्योंकि सुबह ही राजमहल की चौमुहानी पर राजा के खास मुसाहिब और मित्र तथा जमानिया के प्रसिद्ध रईस दामोदरसिंह की लाश पाई गई है जिसके सर का पता न था.

सारे शहर में इस बात का कोलाहल सा मचा हुआ है और जगह - जगह लोग इकट्ठे होकर इसकी चर्चा करते हुए अफसोस के साथ कह रहे हैं, " हाय - हाय, इस बेचारे की जान न जाने किसहत्यारे ने ली! यह तो किसी के साथ दुश्मनी करना जानता ही न था, फिर किस कारण इसकी यह दुर्दशा हुई! " केवल एक यही नहीं बल्कि इसे लेकर और भी कई प्रकार की झूठी और सच्ची खबरें शहर में उड़ रही हैं जिनमें यदि बुद्धिमानों को नहीं तो अनपड़ और अनजानों को अवश्य विश्वास हो रहा है.

कोई इसे किसी प्रेत की कार्रवाई समझता है तो कोई डाकू - लुटेरों की.

कोई इस काम को किसी षड्यंत्र का फल बताता है तो कोई किसी दूसरे राजा की करतूत कहता है, तथा यह बात भी रह - रहकर किसी - किसी के मुंह पर सुनाई पड़ती है की— इसी प्रकार रोज शहर के एक रईस की जान ली जायगी और अन्त में हमारे राजासाहब भी इसी तरह पर मारे जायेंगे! मगर ऐसी बातों पर विश्वास करने वाले बहुत ही कम पाये जाते हैं.

खैर जाने दीजिए, इन बातों में तो कोई तत्त्व नहीं है और न इन अनपड़ लोगों में इतनी बुद्धि ही है कि किसी गूढ़ मामले को समझ सकें, हम तो आपको लेकर खास राजा साहब के महल में चलते हैं और देखते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है.

खास महल की एक लम्बी - चौड़ी बारहदरी में राजा गिरधरसिंह सुस्त और उदास बैठे हुए हैं.

उनकी आँखों से रह - रहकर आंसू टपक पड़ते हैं जिन्हें वे रूमाल से पौंछते जाते हैं.

बगल ही में संगमर्मर की एक बड़ी चौकी पर दामोदरसिंह की सिर कटी लाश पड़ी हुई है जिसकी तरफ बार - बार उनकी निगाह घूम जाती है और वे लम्बी साँस लेकर गर्दन फेर लेते हैं.

उनकी गद्दी से कुछ दूर हट कर बाईं तरफ हम दारोगा साहब को बैठे हुए देख रहे हैं जिसके बाद दो - तीन और मुसाहिब भी गरदन झुकाए बैठे हैं.

राजा साहब की तरह दारोगा की आँखों से भी आँसू गिर रहे हैं.

बार - बार वह आँसू पोंछ कर और दिल सम्हाल कर राजा साहब से कुछ कहना चाहता है जो उसकी तरफ कुछ गौर के साथ देखते हुए अपनी किसी बात का जबाब सुना चाहते हैं पर उसकी आँख के आँसू उसे बोलने नहीं देते और बार - बार मुँह खोल कर भी कोई बात बाहर निकाल नहीं सकता.

आखिर बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हालकर दारोगा ने कहा, “ महाराज, मैं क्योंकर बताऊँ कि यह काम किसका है.

किस दुष्ठ पापी ने हमारे खैरखाह दामोदरसिंह की जान ली यह मैं कैसे जान सकता हूँ, हाँ इतना अवश्य कह सकता हूँ कि चाहे मेरी जान इसके लिए चली जाय तो कोई परवाह नहीं पर मैं इनके खूनी का पता अवश्य लगाऊँगा.

महा राज:

सो तो ठीक है मगर मेरी बात का जवाब आपने नहीं दिया.

क्या उस गुप्त कमेटी का पता हम लोगों को कुछ नहीं लगेगा जिसके विषय में मैं बहुत कुछ सुन चुका और आपको सुना भी चुका हूँ?

मुझे विश्वास है कि यह काम भी उसी कमेटी का है और उसी ने (लाश की तरफ बताकर) इस बेचारे की जान ली है.

इतना कहकर महाराज कुछ रुक्के, मानो दारोगा से कुछ जवाब पाने की आशा करते हों, मगर जब उसने कुछ न कहकर सिर झुका लिया तो बोले, " और मुझे बार - बार यह सन्देह होता है कि आप उस कम्बक्त कमेटी का हाल कुछ न कुछ !! ज़रूर जानते हैं महाराज की बात सुन दारोगा भीतर ही भीतर काँप गया मगर अपने को संभाले रह कर बोला, " न मालूम महाराज के दिल में किस तरह ऐसा बेबुनियाद खयाल जड़ पकड़ गया! पर खैर, यदि महाराज का ऐसा ही खयाल है तो मैं भी प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि अगर ऐसी कोई कमेटी वास्तव में हमारी रियासत में मौजूद है तो मैं शीघ्र ही इसका पूरा - पूरा पता लगाकर महाराज को बताऊँगा.

"

महाराज :

(कुछ संतोष के साथ) बेशक आप ऐसा करें और बहुत जल्द पता लगाकर मुझे बतायें कि यह कमेटी क्या बला है और क्यों इस तरह मेरे पीछे पड़ गई है.

अगर आप इसका ठीक - ठीक हाल मुझे बतावेंगे तो मैं बहुत खुश हूँगा!

दारोगा:

(सलाम करके) बहुत खूब!

महाराज:

(बाकी मुसाहिबों और दरबारियों की तरफ देख कर) और आप लोग भी इस काम में कोशिश करें, जो कोई भी यह काम पूरा करेगा उससे मैं बहुत खुश हूँगा और उसे मुंहमांगा इनाम मिलेगा.

इतना कह राजा गिरधरसिंह उठ खड़े हुए और दामोदरसिंह की लाश को उनके रिश्तेदारों के सुपुर्द करने की आज्ञा देकर आँसू बहाते हुए महल की तरफ चले गये.

दरबारी लोग भी इस विचित्र कमेटी और महाराज की नई आज्ञा के विषय में बातें करते हुए विदा हुए और दारोगा लाश का बन्दोबस्त करने के बाद किसी गहरे सोच में सिर झुकाए हुए अपने घर की तरफ रवाना हुआ ।

महल में पहुँच राजा साहब सीधे उस तरफ बड़े जिधर कुँअर गोपालसिंह रहते थे.

गोपालसिंह उसी समय संध्या - पूजन समाप्त कर उठे ही थे जब महाराज के आने की खबर उन्हें लगी और वे घबराए हुए उनकी तरफ बड़े क्योंकि दामोदरसिंह की लाश के पाये जाने की खबर उन्हें भी लग चुकी थी.

महाराज ने गोपालसिंह का हाथ पकड़ लिया और उनके बैठने के कमरे की तरफ बढ़े, नौकरों को हट जाने का इशारा कर वे एक कुर्सी पर जा बैठे और गोपालसिंह को अपने पास बैठने का हुक्म दिया.

कुछ देर सन्नाटा रहा और दामोदरसिंह की याद में महाराज आँसू बहाते रहे, इसके बाद अपने को सम्हाल कर बोले, " तुमने दामोदरसिंह के मरने की खबर सुनी ही होगी?

" गोपाल:

जी हाँ, अभी कुछ ही देर हुई यह दुखदायी खबर मुझे मालूम हुई है.

न जाने किस हत्यारे ने उन बेचारे की जान ली! महाराज:

तुम यह किसका काम खयाल करते हो?

गोपाल:

(कुछ सोच कर) शायद दामोदरसिंह का कोई दुश्मन हो?

महाराज:

नहीं नहीं, यह काम दामोदरसिंह के किसी दुश्मन का नहीं है बल्कि मेरे और जमानिया राज्य के दुश्मनों का है.

बेटा, अब तो तुम खुद सोचने - विचारने लायक हो गये हो.

क्या इधर कुछ दिनों से जो - जो बातें देखने - सुनने में आ रही उन पर ध्यान देने पर यह नहीं कहा जा सकता कि हम लोगों का कोई दुश्मन पैदा हुआ जो हमारे खिलाफ काम कर रहा है?

गोपाल:

बेशक इधर की घटनाओं को देखकर तो यही कहने की इच्छा होती है.

महाराज :

हाय हाय, हमारे खैरखाह लोग इस तरह मारे जायें और हम कुछ न कर सकें, हमारे जिगर के टुकड़े इस तरह हमसे अलग कर दिये जायें और हम लोग हाथ न उठा सकें! ओफ, हद हो गई! दिल के कमजोर राजा गिरधरसिंह इतना कह फिर आँसू बहाने लगे जिसे देख गोपालसिंह हाथ जोड़कर बोले, " पिताजी, इस तरह सुस्त हो जाने से काम न चलेगा, हम लोगों को दामोदरसिंह के खूनी का पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए.

मैंने यह खबर सुनते ही अपने मित्र इन्द्रदेव के पास अपना आदमी भेजा है, और वे बड़े ही तेज ऐयार हैं, जरूर कुछ न कुछ पता लगावेंगे.

"महाराज :

बेशक इन्द्रदेव अगर इस काम को अपने जिम्मे ले ले तो अवश्य बहुत कुछ कर सकता है, और उसे करना भी चाहिए क्योंकि दामोदरसिंह उसके ससुर ही थे गोपाल:

वे जरूर अपने ससुर के खूनी का पता लगावेंगे और मैं खुद उनकी मदद करूंगा.

अब बेफिकीके साथ बैठे रहने का ज़माना बीत गया और मुझे तो यह मालूम होता है कि इतने ही पर खैर नहीं है, अभी हम लोगों पर कोई और भी मुसीबत आने वाली हैं.

महाराज :

बेशक ऐसी ही बात है, यह मामला यहाँ ही तक नहीं रहेगा.

मगर बेटा, तुम होशियार रहना और जान - बूझ कर अपने को मुसीबत में न फंसाना क्योंकि मैंने यह सुना है कि हम लोगों के बर्खिलाफ कोई कमेटी भी बनी है जिसका यह काम हो सकता है.

गोपाल:

जी हाँ मैंने भी इस विषय में कुछ सुना है मगर यह खबर कहाँ तक सच है सो कुछ नहीं कह सकता.

महाराज :

मैंने दारोगा साहब के सुपुर्द इस कमेटी का पता लगाने का काम सौंपा है, उम्मीद है कि वे जल्दी ही कुछ न कुछ पता लगावेंगे.

गोपाल:

अफसोस! इस वक्त चाचाजी (भैयाराजा) न हुए, नहीं तो वे बहुत कुछ कर सकते थे, इस कमेटी का जिक्र उन्होंने ही पहिले पहल मुझसे किया था.

महाराज :

न जाने शंकरसिंह कहाँ चले गए, मुझसे बिगड़कर जो गए तो फिर नजर ही न आए!
गोपाल:

मैं कह तो नहीं सकता पर आपके बर्ताव से उनके दिल को बड़ी चोट पहुँची.

महाराज :

मेरे बर्ताव से! मैंने भला क्या किया?

गोपाल:

(रुकते हुए) यही कि उनके मुकाबिले में दारोगा साहब की इज्जत की.

माना कि उन्हें दारोगा साहब से कुछ चित्र हो गई थी और वे उनका विश्वास न करते थे पर तो भी क्या हुआ, वे फिर भी अपने ही थे और दारोगा साहब फिर भी एक नौकर ही.

हम मान लेते हैं कि चाहे चाचाजी का दारोगा साहब पर झूठा शक ही क्यों न हो पर एक बार उनकी बात मानकर पीछे उनकी गलती दिखाना ज्यादा बाजिब होता.

जैसा बर्ताव हमारे यहाँ से उनके साथ किया गया उसे देख कर भी अगर वे चले न जाते तो ही ताज्जुब की बात थी! खैर अब जो हुआ सो हो गया! गोपालसिंह की बात सुन राजा साहब ने सिर झुका लिया और कुछ जबाब न दिया.

गोपालसिंह ने भी यह देख बात का सिलसिला बदलने के खयाल से कहा, " हमारे यहाँ भी तो कई ऐयार हैं, वे सब क्या किया करते हैं?

बिहारीसिंह और हरनामसिंह को आपने दामोदरसिंह के खूनी का पता लगाने का हुक्म दिया?

"महाराज :

(चौंक कर) नहीं, उनकी तरफ तो मेरा खयाल ही नहीं गया.

मैं अभी उन्हें बुलाता हूँ,

यह सुन गोपालसिंह उठे और एक खिदमतगार को जो आवाज की पहुँच के बाहर खड़ा हुआ था बुलाकर महाराज का हुक्म सुना जल्दी दोनों ऐयारों को ले आने का हुक्म दिया.

कुछ ही देर बाद हनामसिंह हाजिर हुआ और महाराज तथा कुंअर साहब को अदब से सलाम कर हाथ जोड़ बोला, " आज्ञा?

" गोपाल:

बिहारीसिंह कहाँ है?

हरनाम:

वे दामोदरसिंहजी वाली घटना का हाल सुन खोज लेने उधर ही गए हैं.

महाराज :

ठीक किया, तुम भी जाओ और बहुत जल्द पता लगा कर मुझे बताओ कि यह काम किसका है.

बस सीधे चले जाओ.

!! " बहुत खूब! " कह कर हनामसिंह ने झुककर सलाम किया और पीछे पाँव लौटा.

उसके चले जाने के बाद गोपालसिंह ने अपने पिता की तरफ देख कर कहा, " महाराज ने भी अभी तक कदाचित नित्य कृत्य से छुट्टी नहीं पाई .

.

.

महाराज :

कहाँ, सुबह से तो इसी तरदुद में पड़ा हुआ था, अब जाता हूँ.

(एक कर) क्या कहूँ, तुम्हारा व्याह हो जाता तो तुम्हें राज्य दे मैं तपस्या करने चला जाता, अब इस संसार से मुझे बिल्कुल विरक्ति हो गई है.

कुछ और बातचीत के बाद महाराज जरूरी कामों से छुट्टी पाने की फिक्र में पड़े और गोपालसिंह भी आवश्यक काम में लग गए.

दूसरा व्यान।

अपने पति को सामने पा एकबार तो रामदेई घबरा गई पर मौका बेढब जान उसने शीघ्र ही अपने को चैतन्य किया और भूतनाथ को हाथ जोड़कर प्रणाम करने के बाद प्रसन्नता के ढंग पर बोली, " इस समय आप बड़े अच्छे मौके पर आये! " भूत ०:

सो क्या, और इस जगह खड़ी क्या कर रही हो?

रामदेई:

आज आपके मकान में चोर घुसे थे.

भूत ०:

(चौंक कर) क्या! लामाघाटी में चोर?

राम:

जी हाँ, लगभग घण्टे भर के हुआ मैं जरूरी काम से उठी और घर के बाहर निकली.

चाँदनी खूब छिटकी हुई थी और घाटी में उसकी खूब शोभा फैल रही थी इससे जी में आया कि कुछ देर टहल कर चाँदनी रात की बहार लूं.

धीरे - धीरे टहलती हुई उस तरफ बड़ी जिधर आपके शागिर्दो का डेरा है तो एकाएक किसी के बोलने की आहट आई, पहिले तो खयाल हुआ कि शायद अपना ही कोई आदमी है पर जब इस बात की तरफ गौर किया कि कई आदमी बातें कर रहे हैं और वह भी बहुत धीरे - धीरे फुस - फुस करके तो मेरा शक बड़ा.

मैंने अपने को एक पेड़ की आड़ में छिपाया ही था कि पास ही की एक झाड़ी में से कई थियारबन्द आदमी निकले जो गिनती में छः से कम न होंगे.

मैं घबड़ा गई पर चुपचाप खड़ी देखती रही कि ये लोग कौन हैं और किस इरादे से आए हैं.

उनमें से दो आदमी तो वहीं खड़े रहे और बाकी के दो - चार किसी तरफ को चले गये.

मैं बड़े तरवुद में पड़ी क्योंकि यह तो मुझे निश्चय हो गया कि इन आदमियों की नीयत अच्छी नहीं है और इनके काम में अवश्य बाधा डालनी चाहिए पर करती तो क्या करती, मुझसे कुछ फासले पर वे दोनों आदमी खड़े बड़ी होशियारी के साथ चारों तरफ देख रहे थे!

अगर मैं जरा भी अपनी जगह से हिलती या किसी को आवाज देती तो जरूर पकड़ी जाती, इससे मौका न समझ ज्यों की त्यों छिपी खड़ी रही और उन लोगों की कार्रवाई देखती रही क्योंकि इस बात का विश्वास था कि मेरे आदमी ऐसे बेफिक नहीं होंगे कि घर में इतने आदमी घुस आवें और किसी को खबर न हो.

आखिर कुछ देर बाद ही वे चारों आदमी लौटते हुए दिखाई पड़े जिनमें से एक आदमी अपने सिर पर एक भारी गठरी उठाए हुए था.

अब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि ये लोग बेशक चोर हैं और कुछ माल उठाकर भाग रहे हैं क्योंकि उन चारों के आते ही वे दोनों आदमी भी जो वहाँ खड़े हुए थे उनमें शामिल हो गए और तब सब के सब तेजी के साथ बाहर की तरफ रवाना हुए.

पहिले तो मेरा इरादा हुआ कि लौटकर अपने आदमियों को होशियार करके इन सभी को गिरफ्तार कराने की कोशिश करूं पर फिर यह सोचा कि जब तक मैं अपने आदमियों के पास पहुँगी तब तक ये लोग बाहर निकल जायेंगे क्योंकि उस जगह से जहाँ मैं थी वह मुहाना दूर न था, अस्तु मैंने वह खयाल छोड़ दिया और दबे पाँव उन आदमियों के पीछे चलती हुई यहाँ तक पहुँची.

वे सब पहाड़ी के नीचे उतर गए और मैं लौटा ही चाहती थी कि आप आते हुए दिखाई पड़े इससे रुक गई कि शायद आपने उन आदमियों को देखा हो या उनके बारे में कुछ जानते हों?

भूतनाथ:

(ताज्जुब के साथ) नहीं, मैंने तो किसी आदमी को नहीं देखा.

उनको गए कितनी देर हुई?

रामदेई:

बस वे लोग इधर बाईं तरफ उस ढीले की ओट हुए हैं और सामने से आते आप दिखाई पड़े हैं.

भूतनाथ:

बड़े ताज्जुब की बात है.

लामाघाटी में और इस तरह चोरी हो जाय! वेशक यह किसी जातकार आदमी का काम है मामूली चोरों का नहीं, क्योंकि यहाँ का रास्ता हर एक को मालूम हो जाना जरा टेढ़ी खीर है.

रामदेई:

जरूर, और इसी बात से मैं और भी फिक्र में पड़ गई हूँ, भूत ०:

(घूम कर) मैं अभी उनका पीछा करता हूँ,

रामदेई:

(प्यार से हाथ पकड़ कर) नहीं - नहीं, तुम अभी थके हुए आ रहे हो इस समय मैं जाने न दूंगी, और तुम पहिले भीतर चल के देख भी तो लो कि कुछ चीज भी गायब हुई है या मेरा झूठा ही खयाल है.

भूत:

जब तुमने अपनी आँखों से गठरी लेकर भागते देखा तो बेशक कोई न कोई चीज चोरी गई ही होगी.

इसी समय उन लोगों का पीछा करना मुनासिब होगा.

राम:

नहीं, सो तो त होगा, तुम आप ही थके चले आ रहे हो, फिर अगर पीछा ही करना है तो तुम्हारे यहाँ क्या आदमियों की कमी है जो तुम खुद यह काम करोगे?

पहिले अपने शागिर्दो से पूछताछ कर लो शायद उन्हें कुछ खबर हो.

भूत ०:

(कुछ क्रोध के साथ) उन कम्बख्तों को कुछ खबर ही होती तो यह नौबत भला क्योंकर आती, खैर मैं एक बार चलकर उन्हीं से दरियाफ्त करता हूं.

इतना कह भूतनाथ अपनी स्त्री को लिए अपनी घाटी के अन्दर घुसा.

भीतर सब जगह सन्नाटा छाया हुआ था.

सब लोग गहरी नींद में मस्त पड़े हुए थे, और कोई यदि जागता भी हो तो इस समय की सर्दी चादर से बाहर मुँह निकालने की इजाजत नहीं देती थी.

भूतनाथ को लिए रामदेई उधर चली जिधर गौहर जैद की गई थी.

कुछ ही दूर बड़ी होगी कि सामने से एक आदमी आता दिखाई पड़ा जो वास्तव में वही था जिसके सुपुर्द गौहर की हिफाजत की गई थी.

नींद ढूढने पर गौहरको कहीं न पा वह घबराया हुआ इधर से उधर उसे ढूँढ रहा था.

भूतनाथ को देखते ही सहम गया और प्रणाम करके बोला, " गुरुजी, गौहर तो कहीं चली गई.

!! भूत ०:

(अपने क्रोध को दबा कर) क्यों कहाँ चली गई?

क्या भाग गई?

तुम क्या कर रहे थे?

शागिर्द:

(सकपका कर) जी .

.

.

.

.

.

.

.

.

.

कुछ झपकी सी आने लगी थी, जरा सी आँख बन्द की कि वह गायब हो गई, मालूम होता है कोई उसे छुड़ा ले गया.

भूत:

तो तुम लोगों को यहाँ झख मारने के लिए मैंने रख छोड़ा है?

एक अपने कैदी की हिफाजत तुमसे न हुई तो और क्या करोगे?

लो सुनो की रात को पाँच - छ:

आदमी इस घाटी में घुस आए और गौहर को बेहोश कर उठा ले गए! इस बीच में भूतनाथ के और भी कई शागिर्द वहाँ आ पहुंचे और गौहर का गायब होना सुन आश्चर्य करने लगे क्योंकि किसी को कुछ भी आहट नहीं लगी थी.

भूतनाथ ने उन लोगों को बहुत कुछ डेढ़ी - सीधी सुनाई और तब कहा, " तुम लोगों में से चार आदमी तो अभी उन लोगों का पीछा करो और बाकी के देखो कि सिर्फ गौहरही गायब हुई है या कुछ सामान भी चोरी गया है ।

!! चार आदमी तो उसी समय गौहर का पता लगाने चले गये और बाकी के लोग घाटी भर में फैलकर देखने लगे कि और कुछ गायब तो नहीं हुआ है, मगर शीघ्र ही विश्वास हो गया कि सिवाय गौहरके और कुछ नहीं गया.

भूतनाथ ने इतने ही को गनीमत समझा, क्योंकि वह अपना कुछ खजाना भी इसी घाटी में रखता था और एक बार धोखा खाकर अब बराबर इस मामले में चौकन्ना रहता था.

!! भूतनाथ अपनी स्त्री के साथ अपने खास रहने की जगह चला गया जहाँ मामूली बातचीत के बाद उसने कहा, " अब मुझे कुछ दिनों के लिए तुमसे अलग होना पड़ेगा.

" रामदेई:

(चौंक कर) क्यों, सो क्यों?

भूत:

जमानिया से एक बुरी खबर आई है.

रामदेई:

क्या?

भूत ०:

दुश्मनों ने दामोदरसिंह को मार डाला.

रामदेई:

हाय हाय, वह बेचारा तो बड़ा सीधा आदमी था, उसकी जान किसने ली?

भूत:

मालूम होता है कि यह काम भी उसी दारोगा बाली कमेटी का है.

राम:

दारोगा वाली कमेटी कौन?

क्या वही जिसका हाल तुम .

.

.

.

.

भूत:

हाँ वही.

रामदेई:

(अफसोस करती हुई) उस बेचारे से उन्हें भला क्या दुश्मनी हो गई?

वह तो किसी से लड़ाई - झगड़ा करने वाला आदमी तो नहीं था.

भूत ०:

कुछ तो होगा ही! रामदेई:

खैर तो इसमें तुम्हें मुझसे अलग होने की क्या जरूरत पड़ी?

भूत:

यद्यपि मुझे और भी दो - एक ऐसी बातें मालूम हुई हैं जिन्होंने मुझे बेचैन कर दिया है जिनका ठीक - ठीक हाल मालूम करना मेरे लिए जरूरी हो गया है, मगर उन्हें छोड़ भी दिया जाय तो मुख्य बात यह है कि मेरे मालिक रणधीरसिंह को मेरी ज़रूरत पड़ गई है.

यद्यपि मैंने एक शागिर्द वहाँ अपनी सूरत में छोड़ा हुआ है पर मैं चाहता हूँ कि खुद उनके पास जाऊ और उनका काम करूँ तथा उस शागिर्द को जो वहाँ मेरी सूरत बन कर रहता है कोई और काम सुपुर्द करूँ, इसी से जल्दी से जल्दी उधर ही जाना चाहता हूँ, शायद अब कुछ दिनों तक तुमसे मुलाकात न हो सकेगी.

रामदेई:

(रंज के साथ) खैर मालिक के काम की फिक्र तो ज़रूरी है, मगर तो क्या बीच में भी कभी मुलाकात न होगी?

भूत ०:

कुछ ठीक नहीं कह सकता, अपना हाल चाल तो बराबर तुमको पहुँचाया ही करूँगा.

(कुछ देर ठहर कर) हाँ एक बात और भी बहुत जरूरी है.

रामदेई:

कहो.

भूत ०:

मैं यहाँ से जाकर तुम्हारे पास कुछ बहुत ही ज़रूरी चीजें भेजूंगा.

उन्हें अपनी जान से ज्यादा हिफाजत से रखना.

राम:

(आश्चर्य से) ऐसी कौनसी चीज़ है जिसकी इतनी हिफाजत ज़रूरी है?

भूतः:

कई जरूरी कागजात वगैरह हैं जो इतने कीमती हैं कि उनका दुश्मन के हाथ में जाना मेरे लिए मौत से बदतर होगा.

इसी सबब से मैं उन्हें अपने घर पर भी नहीं रखना चाहता और तुम्हारे सुपुर्द कर देना चाहता हूँ, रामदेई:

उत कागजों में क्या है?

भूतनाथ ने इस सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया.

कुछ देर तक वह किसी गम्भीर चिन्ता में डूबा रहा और तब एक लम्बी साँस लेकर बोला, “ खैर तुम इस बात का खयाल रखना कि उन कागजों का भेद किसी को लगने न पाए! अपनी जुबात से तो कदापि किसी से जिक्र तक न करना, तुम्हारे ऊपर मेरा बहुत बड़ा विश्वास है और इसी से मैं उन्हें तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ.

" इतना कह भूतनाथ ने बातों का सिलसिला बदल दिया और फिर दूसरे ढंग की बातें होने लगीं.

तीसरा व्यान।

अनिरुद्ध सिंह की सूरत बने हुए दलीपसिंह ने सरदार को अपनी तरफ आते पाया और आने पर उसकी बातें सुनीं तो चौकन्ने हो गए और अपने बचाव की फिक्र सोचने लगे.

दलीप ०:

मैं उसी का हाल (अपने दूसरे साथी की तरफ बता कर) इनसे कह रहा था.

वह किसान जो मुझे बुला लाया था बड़ा ही मक्कार निकला बल्कि मैं समझता हूँ वह कोई ऐयार था.

मैं उसके साथ जब यहाँ तक पहुँचा तो उसका रुख बदल गया और वह मुझी से लड़ने लगा.

आखिर मैंने उसे गिराकर बेहोश कर दिया और गठरी बाँध आप ही के पास ले चला था.

सरदार:

कहाँ है वह?

दलीप ०:

(गठरी की तरफ इशारा करके) इसी में बँधा है.

सरदार:

गठरी खोलो तो सही, जरा सूरत तो देखें.

तरह - तरह की बातें सोचते हुए दलीपशाह ने गठरी खोली.

सरदार ने आगे बटवेकर गौर से उस आदमी को देखा और कहा, “ मुझे शक होता है कि कहीं यह दिलीपशाह ही तो नहीं है, इसका मुँह धोकर देखना चाहिए.

" दलीप ०:

यहाँ पाती कहाँ मिलेगा?

सरदार:

पास ही में है.

(एक आदमी की तरफ देखकर) जाओ कोई कपड़ा तक्र कर लाओ तो इस बेहोश का चेहरा धोकर देखा जाय कि यह कौन है और अनिरुद्ध पर हमला करने की इसे क्या जरूरत पड़ी.

सरदार की बात सुनकर एक आदमी अपना दुपट्टा हाथ में लिए पानी लेने चला गया और बाकी लोग उसी जगह बैठे आपस में बातचीत करने लगे.

दलीपशाह के मन में एक अजीब खिचड़ी सी पक रही थी.

सूरत धोते ही रंग उड़ जायगा और असली अनिरुद्ध की शक्ल निकल आवेगी इस बात को तो वो समझ ही रहे थे.

मगर अपने को बचाने के लिए कोई तरकीब नहीं देखते थे.

भगवानसिंह और उनके साथियों ने शक से हो या और किसी कारण से उन्हें कुछ इस प्रकार घेरा हुआ था कि यकायक उठकर भाग जाना भी जरा मुश्किल था, दूसरे भाग निकलने की इच्छा भी उनकी नहीं थी क्योंकि वह जानना चाहते थे कि ये लोग कौन हैं और यहाँ इनके आने का क्या काररण है.

आखिर उन्होंने सरदार से पूछा, " आपको यह कैसे मालूम हुआ कि दलीपशाह यहाँ आया हुआ है?

" यह सवाल सुन सरदार ने एक आदमी की तरफ देखा जिस पर पहिले दलीपशाह ने ध्यान नहीं दिया था और जो सूरत शक्ल से मुसलमान मालूम होता था- तब कहा, " ये यार अली अभी आये हैं, इन्होंने ही यह खबर मुझे दी है ।

" यारअली नाम सुनते ही दलीपशाह चौके क्योंकि वे बखूबी जानते थे कि महाराज शिवदत्त के एक ऐयार का नाम यारअली है.

है राजा शिवदत्त के सभी ऐयारों का हाल इन्हें बाखूबी मालूम था क्योंकि ऐयार होने के कारण इन्हें कई बार शिवदत्तगढ़ जाने की जरूरत पड़ी थी पर यारअली की सूरत इस समय उस आदमी से नहीं मिलती थी जिसकी तरफ सरदार ने इशारा किया था और इस बारे में यही सोच दलीपशाह ने सन्तोष किया कि जरूर इस समय इसकी सूरत बदली हुई १.

चन्द्रकांता सन्तति में यह नाम आ चुका है ।

मगर इसके साथ ही उनके विचारों ने एक नया ढंग पकड़ा और वे सोचने लगे हो न हो लोग राजा शिवदत्त ही के ऐयार हैं, जिनके इस तरफ आने की खबर उन्हें लग भी चुकी है.

कुछ देर बाद सरदार ने उतावली दिखाते हुए कहा, " वह पानी लेने कहाँ चला गया.

बड़ी देर हो गई! " दलीपशाह यह सुनते ही उठ खड़े हुए और " मैं पानी लेकर अभी आता हूँ " कहते और जबाब का इन्तजाम किए बिना ही उसी तरफ लपके जिधर वह आदमी गया था.

सरदार ते पहिले तो जाने से रास्ता रोकना चाहा पर फिर न जाने क्या सोच चुप ही रहा.

लपक्रते हुए दलीपशाह जब कुछ दूर निकल गए तो उसकी निगाह उसी आदमी पर पड़ी जो पहिले पानी के वास्ते भेजा गया था.

वह एक छोटे मगर गहरे नाले में झुका हुआ अपना दुपट्टा तर कर रहा था.

ये एकाएक उसके पीछे जा पहुंचे और धोखे में बगल से उसे ऐसा धक्का दिया कि वह ज़मीन पर गिर गया.

दलीप शाह ने उसे सम्हलने की फुरसत न दी और जबर्दस्ती बेहोशी की दवा सुँघा बेहोश कर दिया, इसके बाद जल्दी जल्दी अपनी सूरत इस आदमी के ऐसी बनाई और तब उसे उठाकर झाड़ी में डाल अपना दुपट्टा तर कर लौट चले.

पोशाक आदि बदलने की जरूरत न समझी क्योंकि उस आदमी की पोशाक भी ठीक वैसी ही थी जैसी इस समय वे पहिने हुए थे, इन्हीं की प्रक्याइस समय जितने आदमी उस गिरोह में उन्होंने देख सभी एक ही तरह की पोशाक पहिने हुए थे.

बहुत जल्दी करने पर भी सूरत बदलने में कुछ देर लग गई थी.

वह सरदार और उसके बाकी के साथी बैठे - बैठे घबरा गए थे, दलीपशाह के पहुंचते ही बोल उठे, " वाह बांकेसिंह, तुम तो अच्छा पानी लेने गए कि घण्टों लगा दिए?

और वह अनिरुद्ध कहां चला गया जो तुम्हारे पीछे पानी लेने गया था?

दलीप ०:

क्या अतिरुद्ध भी पानी लेने गए थे?

मुझे तो नहीं दिखाई न पड़े, सरदार:

खैर आता होगा, तुम उस आदमी का चेहरा तो धो डालो.

दलीपशाह जिन्हें अब बांकेसिंह कहना चाहिए, दुपट्टा से पानी डाल उस आदमी का चेहरा रगड़ - रगड़कर धोने लगे.

कुछ ही देर में असली अनिरुद्धसिंह की शक्ल निकल आई और वे बनावटी घबराहट के साथ बोले उठे, " हैं, यह तो अनिरुद्ध है, मगर इसे बेहोश किसने किया! साब लोग ताज्जुब में आकर तरह - तरह की बातें करने लगे, पर सरदार ने कहा, " इसे होश में लाओ तब मालूम हो कि क्या मामला है.

बांकेसिंह ने अपने बटुए में से लखलखा निकाल कर उसे सुंघाया.

दो - तीन छींकें आईं जिसके साथ ही वह उठकर बैठ गया और अपने चारों तरफ ताज्जुब के साथ देखने लगा.

सरदार और बांकेसिंह के साथी उससे तरह - तरह के प्रश्न करने लगे मगर वह किसी बात का भी जवाब न दे सका क्योंकि पाठकों को याद होगा कि दलीपशाह ने उसकी सूरत अपने जैसी बनाते वक्त उसकी जबान पर ऐंउन पैदा करने वाली दवा भी मल दी थी जिसमें वह कुछ बोल न सके.

बांकेसिंह ने कहा, " मालूम होता है इसकी जुबान पर कोई ऐसी दबा लगा दी गई है जिससे यह बोलने से लाचार हो गया है, उन्हो मैं इसका बन्दोबस्त करता हूँ.

" इतना कह बांकेसिंह ने अपने बटुए में से एक खूबसूरत डिबिया निकाली जिसमें किसी तरह का बहुत ही खुशबूदार मरहम था.

इस मरहम की यह तारीफ थी कि जुबान ऐंठने वाली दवा के असर को दूर कर जुबान दुरुस्त कर देता था मगर साथ ही इसमें यह भी खूबी थी कि इसकी खुशबू में मस्त और बेहोश कर देने का असर था और जो इसे सूंघता था वह कुछ देर बाद गहरी बेहोशी के नशे में पड़ बदहोश हो जाता था.

इस दवा को दलीपशाह ने स्वयम् इसी तरह के किसी टेढ़े मौके पर काम में लाने के लिए बनाया था.

इस मरहम में से थोड़ा उंगली से दलीपशाह ने उस आदमी (अनिरुद्ध) की जुबान पर लगाया और तब वह डिबिया

सरदार के हाथ में दे दी, सरदार ने उसे गौर और ताज्जुब से देखा और उसकी मस्तानी खुशबू पर लट्टू होकर कई बार सूंघी भी.

बारी - बारी से वह डिबिया सभी के हाथों में घूम आई और सभी उसकी मस्तानी खुशबू की तारीफ करने लगे.

इस बीच में अनिरुद्ध बोलने लायक हो गया था.

उसने उस नकली किसान द्वारा अपने गिरफ्तार किए जाने का हाल सभी को सुनाया और सब कोई ताज्जुब के साथ और गौर करने लगे कि वह कौनआदमी होगा जिसने इस तरह पर धोखा दिया.

आखिर निश्चय यही हुआ कि वह और कोई नहीं दलीपशाह ही होगा.

इस बातचीत में कुछ समय बीत गया और उस विचित्र मरहम की खुशबू ने अपना असर शुरू किया.

दलीपशाह के अलाबा बाकी और सभी के दिमाग में चार आने लगे और हाथ - पाव कमजोर होने लगे.

सरदार ने कहा, " यह त्या मामला है! मेरे सिर में चक्कर क्यों आ रहा है?

" दूसरा:

मेरा भी यही हाल है.

तीसरा:

मुझे तो ऐसा मालूम होता है मानों किसी ने बेहोशी की दवा सुंघा दी हो.

सरदार:

बेशक यही बात है (गौर करके) जब से वह डिबिया मैंने सूंघी थी तभी से यह हालत हो रही है.

मालूम होता है उसी में कुछ बेहोशी का असर था.

इतना कह सरदार ने शक की निगाह दलीपशाह पर डाली.

दलीपशाह बखूबी समझते थे कि ये लोग अब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते अस्तु वे उठ खड़े हुए और सरदार को एक फर्राशी सलाम करने के बाद बोले, " आपका खयाल बहुत ठीक है, मेरी ही दबा के असर से आपकी यह हालत है और बहुत जल्द ही आप लोग जहन्नुम रसीद किए जायेंगे, सुनिए और याद रखिए मेरा ही नाम दलीपशाह है.

" इतना सुनते ही वे सब के सब उठ खड़े हुए और उन्होंने दलीपशाह को चारों तरफ से घेर लिया मगर कुछ कर न सके क्योंकि बेहोशी का असर पूरी तरह पर हो चुका था.

बात की बात में सब के सब बेहोश होकर जमीन पर लेट गये और दलीपशाह ने खुश होकर कहा, " अब इन लोगों की सूरत धोकर देखना चाहिए कि ये आखिर कौन हैं?

अफसोस इस समय मेरा कोई साथी मेरे पास नहीं है नहीं तो बड़ा काम निकलता! "

चौथा व्यान।

दूसरे दिन बहुत सबेरे ही भूतनाथ लामाघाटी के बाहर निकला और तेजी के साथ पूरब की ओर रवाना हुआ.

इस समय भूतनाथ का मन तरह - तरह की चिन्ताओं से बड़ा ही व्याकुल हो रहा था.

गौहर के निकल जाने का जो कुछ रंज था वह तो था ही, उसके सिवाय इसके पहले जो कुछ घटनाएँ हो चुकी थीं वे भी उसे बेचैन कर रही थीं.

सबसे बटवेकर उसे जमना और सरस्वती के मामले ने बेचैन कर दिया था जिन्हें वह क्रोध के आवेश में आ कुछ ही समय हुए जान से मार चुका था.

उसे सबसे भारी तरबुद इस बात का लगा हुआ था कि अगर इन्द्रदेव को इस बात का पता लग जाएगा तो वह कहीं का भी नहीं रहेगा और दुनिया में मुँह दिखाना उसके लिए कठिन हो जाएगा क्योंकि यह तो अब उसे मालूम हो ही चुका था कि इन्द्रदेव उन दोनों की मदद कर रहे हैं और बराबर किया करते थे.

सिर झुकाए हुए भूतनाथ बहुत देर तक चलता ही चला गया.

उसे यह भी होश न रह गई कि वह किधरजा रहा है और अब दिन कितना ढल गया है.

आखिर एक बहुत ही घने और भयानक जंगल में पहुँच वह रुका और ताज्जुब के साथ चारों तरफ देखने लगा कि मैं कहाँ आ पहुँचा.

शीघ्र ही उसे मालूम हो गया कि यह जगह जमानिया से बहुत दूर नहीं है और स्थान ही वही है जहाँ एक बार वह कुँअर गोपालसिंह का पीछा करता हुआ उस समय आया था जब कई आदमियों ने उन पर हमला कर लिया था और दारोगा तथा जैपाल ने पहुँचकर उन्हें बनाया था क्योंकि उसके ठीक सामने ही वह नाला बह रहा था जिसमें गोपालसिंह कूद पड़े थे और पास ही में वह पत्थरों का ढेर भी मौजूद था.

१.

देखिए भूतनाथ आठवाँ भाग, दूसरा बयान.

भूतनाथ को थकावट आ गई थी अस्तु उसका इरादा हुआ कि कुछ देर यहाँ ठहर जाए और जरूरी कामों से छुट्टी पा ले.

इस इरादे से उसने अपने कपड़े इत्यादि उतारकर नाले के किनारे रख दिए और बैठकर सुस्ताने लगा.

जब बदन की गर्मी दूर हो गई तो जरूरी कामों से निपट उसने नाले के साफ जल से हाथ - मुँह धोया और तब स्नान किया.

गीले कपड़े एक पेड़ पर डाल दिए और सूखने का इन्तजार करने लगा.

इसी समय यकायक कुछ शब्द हुआ और उस नाले के जल में खलबलाहट पैदा होने लगी.

भूतनाथ कुछ आश्चर्य और गौर से देखने लगा कि अब क्या होता है.

थोड़ी देर के बाद पुन:

कुछ आबाज आई और जल की खलबलाहट बन्द हो गई मगर साथ ही ऐसा मालूम हुआ कि मानों कोई आदमी जल के भीतर से गोता लगाकर ऊपर आ रहा है.

थोड़ी ही देर में शक जाता रहा जब उसने एक हसीन और खूबसूरत औरत को पानी में से सिर निकालते हुए देखा, उस औरत का मुंह दूसरी तरफ होने के कारण वह भूतनाथ को देख न सकी मगर भूतनाथ ने उसे बाखूबी देख लिया और इस इरादे से किनारे के पास से हट आड़ में चला गया कि वह पानी से निकल किनारे पर आवे तो मालूम हो जाए कि क्या मामला है और वह औरत कौन है.

वह औरत कुछ देर बाद पानी के बाहर निकली और जब चारों तरफ सन्नाटा पाया तो नाले के किनारे जमीन पर बैठ गई, उस समय भूतनाथ आड़ से निकला और उसकी तरफ चला.

पैरों की आहट सुनते ही वह औरत चौकन्नी हो उठ खड़ी हुई और भूतनाथ को अपनी तरफ आते देख क्रोध भरी निगाहों से उनकी तरफ देखने लगी.

उसके ढंग से मालूम होता था कि वह भूतनाथ को देख बहुत ही नाराज है और वहाँ आना उसे पसन्द नहीं है.

भूतनाथ कुछ सम्हल कर खड़ा हो गया क्योंकि आज के पहिले उसने ऐसी नाजुक हसीन और खूबसूरत औरत नहीं देखी थी.

मगर इसी समय यकायक उस औरत ने जोर से एक चीख मारी और तब पीछे हट उसी नाले में कूद पड़ी.

भूतनाथ भी, जिस पर उस औरत की सुरत ने कुछ अजीब - सा असर किया था, लपका और उस औरत के पीछे - पीछे इसने भी अपने को जल में डाल दिया.

इसी समय नाले का पानी बीचोंबीच में से इस तेजी के साथ चार खाने लगा कि भूतनाथ के हाथ पाँव एकदम बेकार हो गए और वह घबड़ाकर बदहवास - सा हो गया, यहाँ तक कि कुछ सायत और बीतने के बाद उसे तनोबदन की सुध न रह गई.

भूतनाथ जब होश में आया तो उसने अपने को एक अद्भुत स्थान में पाया.

एक खुशनुमा मगर छोटे बाग को चारों तरफ से आलीशान इमारतों ने घेरा हुआ था जो यद्यपि पुराने जमाने की थीं मगर फिर भी कहीं से बेमरम्मत या टूटी - फूटी नहीं थीं.

पूरब की ओर अर्थात् भूतनाथ के सामने की तरफ एक चौमंजिली इमारत थी जिसका नीचे का हिस्सा तो पत्थर का था मगर ऊपरी हिस्सा बिल्कुल संगमर्मर का था और सूर्य की अन्तिम किरणों के पड़ने से विचित्र शोभा दे रहा था.

इसी इमारत की तरफ भूतनाथ आश्चर्य के साथ देखने लगा, क्योंकि इसमें बाकी तरफ की इमारतों से उसने कुछ विचित्रता पाई.

इस इमारत के ऊपरी हिस्से में जो उस जगह से जहाँ भूतनाथ बैठा था साफ - साफ नजर आ रहा था, एक बारहदरी थी जिसके दोनों तरफ जो कोठरियाँ थीं, इस खुली बारहदरी की छत को पतले - पतले संगमूसा के काले खम्भों ने अपने सिर पर सम्हाला हुआ था और इन हर एक खम्भों के बीच में सुफेद महाब था.

इस समय जिस चीज पर भूतनाथ की निगाह् गौर और ताज्जुब के साथ बल्कि कुछ डर लिए हुए पड़ रही हैं.

दूर से देखने में ऐसा मालूम होता है मानो ग्यारह आदमी ग्यारह कड़ियों के साथ फाँसी लटकाए गए हैं, बाई तरफ़ की सबसे अन्तिम एक महाराज खाली है यानी उसके साथ कोई लाश नहीं लटकती है.

तेज हवा के झोकों के कारण लाशें कभी हिल जाती हैं मगर इसके सिबाय और किसी तरह की हरकत उनमें नहीं है.

बदहवास भूतनाथ देर तक ताज्जुब के साथ इन लाशों को देखता और साथ - साथ इस बात पर भी गौर करता रहा कि वह किस तरह यहाँ आ पहुँचा, पर आखिर उससे रहा न गया और वह अपनी जगह से उठ आगे बढ़ा कि उस सामने वाले मकान के पास जाकर देखें कि यह क्या मामला इस छोटे से बाग में सिवाय फूलों के या और छोटे पौधों के बड़े पेड़ बिलकुल ही न थे परन्तु एक छोटी - सी नहर जरूर एक तरफ से आई और बाग में चारों तरफ फैली हुई थी जिसके सबब से यहाँ के पौधे हर मौसिम में सरसज्ज बने रह सकते थे.

भूतनाथ इस नहर को पार करता हुआ सामने के मकान के पास जा पहुँचा मगर यहाँ उसे रुक जाना पड़ा क्योंकि आगे बटवेने की जगह न थी और उत लाशों को देखना चाहा मगर वह भी न हो सका क्योंकि एक चौड़ी छजली की आड़ पड़ जाने के कारण वे लाशें जो दूर से साफ दिखाई पड़ती थीं, मकान के पास आ जाने पर आँखों की ओट हो जाती थीं, नीचे की मंजिल में कोई दरवाजा ऐसा नजर न आया जिसकी राह कोई आदमी उस मकान के अन्दर आ सके अस्तु लाचार भूतनाथ ने वहाँ से हटना चाहा मगर उसी समय एक खटके की आवाज आई और सामने की दीवार में छोटा - सा दरवाजा दिखाई पड़ने लगा जिसके अन्दर ऊपर चढ़ जाने की छोटी सीढ़ियाँ दिखाई पड़ रही थीं.

डरते और आश्चर्य करते हुए भूतनाथ ने दरवाजे के अन्दर सीड़ियों पर पैर रक्खा और ऊपर की तरफ चढ़ना शुरू किया, ये सीड़ियाँ कुछ दूर तक तो सीधी चली गई थीं पर इसके बाद घूमती हुई ऊपर की तरफ उठने लगीं मानों किसी बुर्ज या मीनार पर जाने के लिए बनी हों.

इन सीढ़ियों पर इस समय अन्धकार बिल्कुल न था क्योंकि मौके मौके पर बने हुए मोखों पर छेदों की राह क़ाफी रोशनी और हवा वहाँ आ रही थी.

भूतनाथ सीढ़ियाँ चढ़ने के साथ ही साथ उन्हें गिनता भी जाता था.

अस्सी सीढ़िया चढ़ जाने के बाद ऊपर की तरफ चाँदना मालूम होने लगा लगा जिससे पता लगा कि अब सीढ़ियों का अन्त आ पहुँचा.

भूतनाथ ने आश्चर्य और उत्कंठा के साथ कुछ सीढ़ियाँ और तय क्रीं और तब जिस जगह अपने को पाया वह एक बारहदरी थी जो बिल्कुल संगमरमर की बनी हुई थी.

यह जान लेने में भूतनाथ को कुछ भी विलम्ब न लगा कि वह उसी जगह आ पहुँचा है जिसे नीचे से देखा था क्योंकि सामने ही संगमूसा के खम्बों के बीच लटकती हुई वे ग्यारह लाशें दिखाई पड़ रही थीं जो नीचे से नजर आई थीं.

इस दालान और उसकी बनावट पर कुछ भी ध्यान न दे धड़कते हुए कलेजे के साथ भूतनाथ ने उन लाशों की तरफ कदम बड़ड़ाया जो वहाँ से लगभग बीस हाथ के फासले पर थी.

ओफ, उस समय भूतनाथ की क्या अवस्था हुई जब उसने पास जाकर लाशों को देखा और पहिचाना! पहिली लाश जिस पर उसकी निगाह पड़ी दयाराम की थी.

उनके गले में मोटे रेशमी रस्से का फन्दा पड़ा हुआ था जिसका दूसरा सिरा ऊपर की कड़ी में मजबूत बंधा हुआ था और इसी रस्से के सहारे वह लाश टॅगी हुई थी.

इस लाश के दोनों तरफ इसी तरह लटकती हुई दो लाशें जमना और सरस्वती की थीं.

इसके बाद तीन लाशें और थीं जो सभी भूतनाथ के शागिर्दो की थीं और जिन्हें भूतनाथ ने अच्छी तरह देखा और पहिचाना.

गुलाबसिंह के बाद दो लाशें और थीं पर उनका मुँह दूसरी तरफ घूमा हुआ होने के कारण भूतनाथ पहिचान न सका.

इसके भी बाद फिर बारहवीं दर खाली थी यानी इसके साथ कोई लाश न थी पर एक रेशमी फन्दा जरूर लटक रहा था.

केवल इतने पर बस न था.

भूतनाथ ने बचे - बचाए हवास भी उस समय आते जाते रहे जब दयाराम की लाश को बाकी लाशों से बातें करते सुना, उससे सिवाय इसके और कुछ न बन पड़ा कि उसी जगह फर्श पर बैठ जाए और लाचारी के साथ उन लोगों की बातचीत को सुने.

दयाराम की लाश बेचैनी के साथ जमुना की तरफ घूमी और बोली, " जमना, यह मैं किसे अपने सामने देख रहा हूं?

जमना की लाश:

नाथ, यह वही गदाधरसिंह ऐयार जो किसी जमाने में आपका साथी और दोस्त था.

दयाराम की लाश:

हैं, यह वही गदाधर है?

तो यह यहाँ किस तरह आया?

क्या हम लोगों की तरह इसकी भी अकाल मृत्यु हुई है जो यह यहाँ भेजा गया है?

जमना:

नहीं नाथ, यह अभी मरा नहीं है.

यह तो मैं नहीं कह सकती कि यहाँ किस तरह आया है पर इतना जानती हूँ कि मुझे यहाँ भेजकर अपने दुष्कर्मों का फल भोगने के लिए यह संसार में ही रह गया था.

इतने ही में गुलाबसिंह की लाश के मुंह से आवाज निकली:

" नहीं, यह संसार में दुष्कर्मों का फल भोगने को नहीं रहा बल्कि उन्हें करने के लिए रहा है और इस समय जब यह यहाँ आ ही गया है तो हम लोगों को चाहिए कि इससे अपना बदला लेने के पहले यह सवाल करें कि हमने इसका क्या बिगाड़ा था जो इसने ऐसा क्रूर व्यवहार हम लोगों के साथ किया! " यह बात सुनते ही सरस्वती की लाश घूमी और बोली, “ पहिला सवाल मैं इससे यह करूंगी कि इसने मुझे और मेरी बहन को क्यों विधवा किया !! " गुलाब की लाश:

मैं इससे पूछता हूँ कि इसने मुझे क्यों मारा?

बाकी लाशें:

हम लोग भी इसी बात का जवाब सुना चाहते हैं !! जमना की लाश:

संसार में आ इसने क्या - क्या उपद्रव, क्या - क्या अनर्थ नहीं किया?

कौन दुष्कर्म ऐसा था जो इसके हाथ से नहीं हुआ! अपने दोस्त और मालिक की हत्या तो की ही उनकी स्त्रियों की भी जान ली, अपने दोस्त गुलाबसिंह को मारा और अपने हाथ से अपने प्यारे शागिर्दों को मारते हुए भी न हिचकिचाया! पापियों के साथ मिल सब तरह के पाप किए और ऐयाशों के साथ ऐयाशी, पर कभी भी यह नहीं विचारा कि मैं क्या कर रहा हूँ और मेरे कामों को देखने वाला और न्याय करने वाला भी कोई है या नहीं! कभी उसने इस बात पर ध्यान न दिया कि जो मैं कर रहा हूँ वह भला है या बुरा और उसका नतीजा भी मुझे भोगना पड़ेगा या नहीं?

इसने दोस्ती को दोस्ती न समझा, दया और धर्म का नाम नहीं लिया, यहाँ तक कि अपने कामों पर पश्चात्ताप तक भी न किया.

सरस्वती की लाश:

क्या यह समझता है कि इसकी सदा यही दशा बनी रहेगी?

क्या यह समझता है कि संसार में अमर होकर आया है?

क्या यह समझता है कि ईश्वर की तरफ से इसे कोई सट्टा मिल गया है कि जिसके कारण यह अपने कर्मों का फल भोगने से बच जायगा! नहीं - नहीं, असल तो यह है कि यह बहुत शोख हो गया है और घमण्ड ने इसकी आँखों के आगे ऐसा पर्दा डाल दिया है कि अपने सामने किसी को कुछ मानता ही नहीं.

अपने स्वार्थ के आगे यह दूसरे को कुछ नहीं समझता, अपने काम के लिए दूसरों के काम का कोई ख्याल नहीं करता और अपनी जान के आगे दूसरों की जान की कोई परवाह नहीं करता! इतनी बात सुनते ही बाकी लाशों के मुँह से आवाज आने लगी- " बेशक ऐसा ही है, बेशक ऐसा ही है! " गुलाब की लाश:

इसने केवल दयाराम, उनकी दोनों स्त्रियों, मुझे और अपने शागिर्दो को ही नहीं मारा बल्कि कितने ही और भी आदमियों की जाने ली हैं जिन्हें अभी तक हम लोग भी न जान सके हैं, हम लोग केवल उन्हीं का हाल जानते हैं जिन्हें इस जगह मौजूद पाते हैं.

हम लोगों के अलावे और भी कितने ही ऐसे होंगे जो अदालत का हाल न जानने के कारण अभी तक यहाँ नहीं पहुंच सके हैं.

बहादुर की लाश:

(दयाराम की तरफ घूमकर और हाथ जोड़कर) कृपानिधान, मैं अपने खून का बदला इस गदाधरसिंह से लिया चाहता हूँ बाकी लाशें:

हम सभी अपने खून का बदला लिया चाहते हैं और प्रार्थना करते हैं कि इसे भी मारकर उस बारहवीं कड़ी से टांग दिया जाय जो खाली पड़ी है.

दया की लाश:

ठहरो, जल्दी न करो, पहले यह तो मालूम करो कि इसे अपने बचाव में कुछ कहना है या नहीं.

मुमकिन है कि यह अपनी सफाई में कुछ कहे! गुलाब की लाश:

(कुछ देर ठहरकर) यह कुछ भी नहीं कहता, जिससे जाहिर होता है कि इसे अपना कसूर स्वीकार है.

अब हमें इससे बदला लेने की इजाजत मिलनी चाहिए!

दया की लाश:

बेशक यह अपने बचाव में कुछ नहीं कहता, अस्तु मैं हुक्म देता हूँ कि इसे मारकर उस बारहवीं कड़ी में टाँग दो.

भूतनाथ यह बातचीत लाचारी के साथ सुनता हुआ दिल ही दिल में काँप रहा था.

अगर उसके पैरों में इतनी ताकत होती कि उसके शरीर का बोझ उठा सकते तो वह कभी का वहाँ से भाग गया होता उसके हाथ - पाँवों ने तो मानों जवाब - सा दे दिया था.

अपनी बिगत करनी के इन बोलते गवाहों ने उसके आगे एक ऐसा भयानक दृश्य खड़ा कर दिया था कि इन बातों का जवाब देने की बनिस्बत वह मौत पसंद करता था.

फिर भी बहुत बड़ी कोशिश करके वह अपनी जगह से उठा और हाथ जोड़ दयाराम की लाश की तरफ देखकर बोला, " कृपानिधान, आप लोग चाहे कोई भी हों पर इसमें सन्देह नहीं कि कोई अद्भुत शक्ति रखते हैं! मैं उन सब कसूरों को स्वीकार करता हूँ जो आपने मुझ पर लगाये हैं.

वेशक मैंने अनगिनत पाप क्रिये और अभी तक भी ऐसे काम कर रहा हूँ जिनका प्रायश्चित नहीं हो सकता, लोगों के सामने शपथ खाकर कहता हूँ कि आगे से अब ऐसा काम न करूंगा.

मैं अपनी चाल - चलन को सुधारूंगा और भविष्य में तेकनामी पैदा कर इस बदनामी के कलंक से गन्दी हो गई अपनी जिन्दगी की चादर को धोने की कोशिश करूँगा .

.

! " भूतनाथ ने यहाँ तक ही कहा था कि यकायक उन लाशों के मुँह से आवाज आने लगीं, " कभी नहीं, कभी नहीं, यह बेईमान हम लोगों को फिर धोखा दिया चाहता है, इसे अभी मार डालो! ” इत्यादि, और इसके साथ ही उन लाशों ने यकायक उसके ऊपर

ऐसा भयानक हमला किया कि भूतनाथ यह सदमा बर्दाश्त न कर सका और एक चीख मारकर बेहोश हो गया.

पांचवा व्यान।

] हम नहीं कह सकते कि डर और घबराहट के कारण हुई भूतनाथ की यह दूसरी बेहोशी कितनी देर तक रही.

केवल घड़ी भर तक या पूरे दिनभर वह बेहोश रहा इसे भी हम नहीं जानते और खुद भूतनाथ ही समझ सकता है.

एक अँधेरी कोठरी में भूतनाथ अपने को पा रहा है.

उसके चारों तरफ इतना अंधकार है कि आँख के पास लाने पर भी हाथ दिखाई नहीं पड़ता.

वह नहीं कह सकता कि यह समय दिन का है या रात का, और अब कहाँ है, उसी अद्भुत स्थान में या किसी और जगह जो कुछ बह देख और सुन चुका है उसने उसे बेहद परेशान कर रखा है.

उसके दिल पर गहरा सदमा पहुँचा है और वह न जाने किससोच में पड़ा हुआ आँखों से गर्म - गर्म आँसू निकालता हुआ अपने कपड़े तर कर रहा है.

यकायक उसका ध्यान एक आवाज की तरफ गया जो कहाँ से आ रही थी, उसके पास ही कहीं से या किसी दूसरी जगह से इसे तो वह नहीं समझ सका पर इतना जान गया कि किसी जगह दो आदमी आपस में धीरे - धीरे बातें कर रहे हैं.

उसने उस आवाज की तरफ कान लगाया और कुछ देर बाद इस तरह की बातचीत सुनी एक आवाज:

तो अब इस कम्बख्त को यहाँ कब तक रखे रहोगे?

मेरी तो राय है इसे जान से मार बखेड़ा तय करो! दूसरा:

सो क्यों?

पहिला:

यह जब तक जीता रहेगा अनर्थ ही करता रहेगा.

इसे साँप का बच्चा समझो, जीता छोड़ोगे तो न जाने कितनों की जाने लेगा.

दूसरा:

नहीं नहीं, अब ऐसा नहीं करेगा! पहिला:

अवश्य करेगा, जरूर करेगा, हजार बार वही काम करेगा जैसा अब तक करता आया है.

ऐसे दुष्ठ को जीता छोड़ना एक साधु को मार डालने से बड़ कर बुरा है.

भला तुम भी सोचो, कब से हम लोग इसे जीता छोड़ते आये हैं, कै बार जानबूझकर इसे छोड़ दिया, कितनी बार इसके कसूरों पर ध्यान न दे इसे माफ किया है, पर क्या इसने कभी भी अपना ढंग बदला?

मैंने कई बार स्वयं यह समझ इसे छोड़ दिया कि कदाचित् अब भी सम्हल जाय.

यह अपनी शैतानी से कभी बाज न आया और न आवेगा.

क्या तुम कह सकते हो कि ऐसा कोई भी पाप है जो इसके हाथ से न हुआ हो! दूसरा:

बेशक इसने पाप तो बहुत किये हैं.

पहिला:

और जब तक जीता रहेगा करता ही रहेगा! इससे मुनासिब यही है कि इसे एकदम से मार बखेड़ा तय कर दिया जाय.

इसने जो लोगों को तरह - तरह के कष्ठ दिये हैं, तरह - तरह के दुख दिये हैं, सो भला इसे भी तो कुछ मालूम हो कि ऐसे कामों का नतीजा क्या निकलता है.

दूसरा:

खैर तुम्हारी राय है तो ऐसा ही सही, मगर .

.

.

.

.

पहिला:

मगर क्या?

दूसरा:

मगर मैं तो समझता था कि एक बार इसे और माफ कर दिया जाय और देखा जाय कि अब भी सम्हलता है या नहीं, यदि इस बार भी अपने को नहीं सुधारेगा तो अवश्य इसे मार डालेंगे.

हम लोगों से यह बच तो सकता ही नहीं है, जब चाहेंगे पकड़ लेंगे! पहिला:

नहीं भाई, मैं तो इस बात को न मानूंगा, और फिर हमारे मालिक का भी तो हुक्म यही है कि यह जीता न छोड़ा जाय.

दूसरा:

खैर तो ऐसा करो, एक बार मालिक ही से चलकर कहें, शायद उन्हें दया आ जाय तथा कोई और हुक्म दे दें.

पहिला:

अच्छा चलो, यद्यपि मेरी समझ में इसका कोई नतीजा न निकलेगा- खैर इधर से आओ.

भूतनाथ बड़ी बेचैनी के साथ इन बातों को सुन रहा था.

उसे विश्वास हो गया था कि अब वह किसी तरह जीता न रहेगा.

अपने पिछले कर्मों को वह बराबर विचार रहा था और सोच रहा था कि बेशक इन लोगों का कहना ठीक है, मैंने अपनी जिंदगी व्यर्थ ही गंवाई, पापों का बोझ बड़ाया, और दुष्कर्मों की गठरी पीठ पर लादी.

उसके पिछले सभी दुष्कर्म इस समय उसकी आँखों के सामने आ - आ कर उसे सताने लगे और उसके बदन में थरथरी पैदा हो गई.

इसी समय पुन:

उन आदमियों के लौटने और बातें करने की आवाज आई.

एक ने कहा, " लो अब तो उनका गया.

" दूसरे ने कहा, " हाँ ठीक है, तो ले चलो इसे अन्धकूप में डाल दें.

" हुक्म भी हो कुछ सायत के लिए सन्नाटा हुआ और इसके बाद ही कई प्रकार के कल - पुर्जी के घूमने और चलने - फिरने की आवाज आने लगी.

यकायक भूतनाथ के मुँह से एक चीख की आवाज निकल गई क्योंकि उसके नीचे की जमीन बड़े जोर से हिली और तब उसे लिये तेजी के साथ नीचे की तरफ चली.

कुछ देर के बाद जमीन थमी और उसके साथ ही उसमें एक तरफ से न जाने किस तरह से ऐसी डाल पैदा हो गई क्रि भूतनाथ सम्हल न सका और फिसल कर लुड़कता हुआ नीचे की तरफ जाने लगा.

मगर कुछ ही देर बाद उसका शरीर कोई रुकावट पाकर रुक गया और वह सम्हलकर उठ बैठा.

यहाँ अन्धकार ऊपर से भी कुछ ज्यादा ही था और हवा ऐसी खराज थी कि साँस लेने में तकलीफ होती थी.

इस जगह जहाँ भूतनाथ अब था, चारों तरफ से इस प्रकार की विचित्र - विचित्र आवाजें आ रही थीं कि उसका दिमाग परेशान हो रहा था.

ऐसा मालूम होता था मानों उसके चारों तरफ और आस ही पास में बहुत तेजी के साथ कई तरह के कल - पुरजे घूम या चल रहे हैं जिनके कारण यह गूंजने वाली आबाज पैदा हो रही है.

अन्धकार के कारण भूतनाथ अपने हाथ - पाँव हिलाने से भी डरता था कि कहीं किसी पुरजे में लग उसके टुकड़े टुकड़े न हो जॉय.

कुछ देर तक यही हालत रही, तब उन पुरजों के घूमने की आवाज और भी तेज हुई और इसके बाद ही एक प्रकार की बहुत ही तेज रोशनी उस जगह पैदा हुई जिसने उस डरावनी जगह की हर एक चीज भूतनाथ की आँखों के सामने कर दी.

भूतनाथ ने देखा कि वह लगभग बीस हाथ की गोलाई में बने हुए एक गोल कमरे में है जिसकी छत इतनी ऊँची है कि दिखाई नहीं पड़ती और वह जगह एक कुएँ की तरह मालूम हो रही है.

इस गोल कमरे में चारों तरफ बहुत से चक्र, लुकीले और तेज धार वाले बरछे, दुधारी तलवारें और इसी प्रकार के अन्य बहुत से यन्त्र - शस्त्र हैं और वे सभी चीजें एक प्रकार से एक खास तौर पर हरकत कर रही हैं.

बीचोंबीच में लगभग दो - तीन हाथ के जमीन खाली है और बाकी सभी तरफ ये खौफ पैदा करने वाली चीजें फैली हुई हैं.

भूतनाथ समझ गया कि अगर वह अपनी जगह छोड़ जरा भी किसी तरफ हिलेगा तो ये चक्र, हथियार और बरछे उसके बदन के टुकड़े - टुकड़े काट कर उड़ा देंगे.

भूतनाथ एकदम कॉप गया और उसने अपनी जिन्दगी की बिल्कुल आशा छोड़ दी.

कुछ देर बाद आवाजें धीमी पड़ गई और वह रोशनी भी जो एक शीशे के गोले में से निकल रही थी जाती रही जिससे वहाँ पुन:

अन्धकार छा गया.

चारों तरफ से अपने बदन को सिकोड़े भूतनाथ उस अन्धप में बैठा अपनी मुसीबत की घड़ियां गिनने लगा.

उसे यह निश्चय हो गया कि अब वह सदा के लिये इसी स्थान में डाल दिया गया जहाँ वह अपना हाथ - पैर भी हिलाने की हिम्मत नहीं कर सकता और जहाँ बैठे - बैठे ही उसे अपनी आखिरी साँस लेनी पड़ेगी.

जिन्दगी से बिल्कुल ही ना उम्मीद हो वह दोनों हाथ जोड़ ईश्वर से प्रार्थना करने लगा.

बहुत देर तक भूतनाथ ईश्वर से प्रार्थना और विनती करता रहा.

जो कुछ पाप उसने किए थे उनके लिए सच्चे दिल से पश्चात्ताप करते हुए उसने आगे के लिए अपने को सुधारने की प्रतिज्ञा की, यहाँ तक कि इसी अवस्था में उसे एक प्रकार का गश सा आ गया और वह कुछ बेहोश सा हो वहीं जमीन पर लुढ़क गया.

यकायक वहाँ एक अद्भुत मूर्ति का प्रादुर्भाव हुआ.

वह तमाम कोठरी एक तेज रोशनी से भर गई और उसी रोशनी में चन्द्रमा माथे पर धारण क्रिये और त्रिशूल हाथ में लिये एक जटाधारी शिवमूर्ति का भूतनाथ को दर्शन हुआ.

अद्भुत शिवमूर्ति को देखते ही भूतनाथ गद्गद् हो हाथ जोड़ जमीन पर लोट गया.

उसके रुंधे हुए गले से अस्पष्ट रूप से यह आवाज निकली-- " महात्मा! आप कोई भी हों, साक्षात त्रिशूलधारी शिव ही हो या कोई योगिराज ही हों, गदाधरसिंह हाथ जोड़ बिनीत हो इन चरणों में दण्डवत करता है.

वह अपने पिछले कर्मों के लिए ऐसे कामों को सदा के लिए तिलांजलि देता है.

और प्रतिज्ञा करता है कि अपने को सुधारेगा और भविष्य में ऐसे कर्म करेगा जिनकी सहायता से पिछली बदनामी की कालिख धो सके, और साथ ही इस बात की भी प्रतिज्ञा करता है कि यदि ऐसा न कर सका, यदि पुन:

उसने न्यायपथ के विरुद्ध पैर रखा, यदि कभी दुष्कर्मों की तरफ उसका चित्त बड़ा तो सदा के लिए संसार छोड़ देगा और अपना काला मुंह फिर किसी को नहीं दिखाबेगा.

एक बार उसे मौका दिया जाय यही उसकी प्रार्थना है !! " भूतनाथ की सच्चे दिल के साथ निकली हुई इन बातों को सुन उस मूर्ति के गम्भीर चेहरे पर मुस्कराहट की एक आभा दिखाई पड़ी और साथ ही एक गंभीर आवाज में भूतनाथ को ये शब्द सुनाई पड़े .

.

" गदाधरसिंह, मैं इस बार तुझे क्षमा करता हूँ, परन्तु देख खबरदार, यदि अपने कहे से जरा भी विचला तो इस बार तेरा कल्याण नहीं है इस कह वह शिवमूर्ति आगे बड़ी और उसने अपना दाहिना हाथ जो खाली था, भूतनाथ के सिर पर फेरा.

उस हाथ का स्पर्श होते ही भूतनाथ का शरीर कांपा और वह बेहोश हो गया.

जब भूतनाथ होश में आया तो उसने अपने को उसी नाले के किनारे पड़े हुए पाया जहाँ से एक औरत के पीछे पानी में कूद उसने अपने को इस आफत में फंसाया था.

उस समय पौ फट चुकी थी बल्कि पूरब तरफ आकाश में सूर्य की लालिमा फैल रही थी.

छठवा व्यान।

भूतनाथ की लामाघाटी से निकल कर गौहर उस छोटी पहाड़ी के नीचे उतरी और जमानिया की तरफ रवाना हुई.

रात का समय होने पर भी चन्द्रमा की रोशनी गौहर को काफी मदद दे रही थी जिससे वह सब तरह से चौकन्नी हो तेजी के साथ चली जा रही थी और चाहती थी कि जितनी जल्दी हो सके लामाघाटी और अपने बीच में इतना फासला डाल दे कि फिर भूतनाथ का कोई डर न रह जाय तथा इस इरादे से वह सड़क या आम राह छोड़ पगडण्डियों और घने जंगल का आश्रय ले रही थी.

भयानक जंगल में इस समय सन्नाटा छाया हुआ था पर फिर भी कभी - कभी किसी दरिन्दे जानवर के बोलने की आवाज आ जाती थी.

यद्यपि गौहर की उम्र बहुत कम थी पर तो भी उसका दिल इतना मजबूत था कि रात के समय भयानक जानवरों से भरे हुए ऐसे जंगल में से होकर जाते हुए डर नहीं मालूम हो रहा था.

यकायक गौहर के कान में घोड़े के टापों की आवाज सुनाई पड़ी.

वह छमक गई और कान लगाकर आहट लेने से मालूम हुआ कि एक नहीं बल्कि दो घुड़सवार हैं और दोनों उसी की तरफ आ भी रहे हैं क्योंकि टॉपों की आवाज़ पल - पल में तेज होती जाती थी.

गौहर को भूतनाथ का डर हुआ और वह पगडंडी से हट एक घनी झाड़ी की आड़ में हो गई.

थोड़ी ही देर बाद वे दोनों सवार तजदीक आ पहुंचे और अब मालूम हुआ कि उनमें एक तो मर्द है और दूसरी औरत जो घोड़े पर सवार उस मर्द के साथ बातें करती हुई जा रही है.

रही थी.

इस जगह जहाँ गौहरछिपी हुई थी कोई घना पेड़ न था और इस कारण चन्द्रमा की रोशनी बे - रोक - टोक जमीन तक पहुंच इस रोशनी में यह देख गौहरको बेहद खुशी हुई कि वे दोनों उसी के साथी हैं.

वह बेखटके आड़ से बाहर निकाली और दोनों सवारों के सामने जाकर खड़ी हो गई.

गौहर को देखते ही वे दोनों सवार चौंक गए और उसे पहिचानते ही दोनों ने घोड़ों से उतरने में जल्दी की.

वह औरत झटपट आगे बड़ी और गौहर का हाथ पकड़कर बोली, " वहिन, तू छूट आई! हम लोग तुझे ही छुड़ाने की फिक्र में जा रहे गौहर:

(उस औरत को गले लगाकर) गिल्लन, तू कहाँ से आ पहुँची?

गिल्लन:

(अलग होकर) अब मिल गई हो तो सब कुछ सुनोगी ही.

गौहर उस आदमी की तरफ घूमी जो गिल्लन के साथ था और अब घोड़े से उतर अदब के साथ खड़ा था.

वह आदमी वही था।जिसे अब के पहिले भी दो - एक बार पाठक गौहर से बातें करते देख चुके हैं.

गौहर को अपनी तरफ मुखातिब देख उसने " मैं तो बड़े तरबुद में पड़ गया था क्रि गदाधरसिंह की कैद से आपको किस तरह छुड़ाऊँगा क्योंकि यह मुझे मालूम हो गया था कि आप उसी के कब्जे में चली गई हैं, बारे आप स्वयं ही छूट कर आ गईं! " गौहर:

मुझे गदाधरसिंह ने अपनी लामाघाटी में कैद कर दिया था पर भाग्य से उसकी रामदेई भी वहां मौजूद थी जिसने कुछ ही देर हुई मुझे रिहाई दी है.

आदमी:

" हा! रामदेई ने खुद आपकी मदद की! तब तो आपने सब बातें .

.

.

गौहर:

हाँ मेरा बहुत कुछ मतलब इस कैद में निकल गया, मगर सांवलसिंह, इस तरह रास्ते में खड़े होकर बातें करना खतरे से खाली नहीं है.

मैं चाहती हूँ तुम्हारे घोड़े पर सवार हो जाऊँ और चल पड़ें, बातें रास्ते में होती जाएंगी.

सांवलसिंह:

बहुत अच्छी बात है.

इतना कहकर सांबलसिंह अपना घोड़ा उस जगह ले आया.

गौहर इस पर सवार हो गई और गिलनअपने घोड़े पर चढ़ गई ।

घोड़ों का मुँह जमानियाँ की तरफ घुमा दिया गया और सांबलसिंह पैदल इन दोनों से बातें करता हुआ साथ - साथ जाने लगा.

सांबल ०:

मुझे अब तक न मालूम हुआ कि आप क्योंकर और कैसे इस गदाधरसिंह की कैद में पड़ गई.

गौहर:

बस जिस रोज तुम मुझसे उस जंगल में मिले उसी रोज तुम्हारे जाने के कुछ ही देर बाद मैं उसके फन्दे में पड़ गई, सुनो मैं सब हाल तुमसे कहती हूं.

इतना कह गौहर ने अपने गिरफ्तार होने का सब हाल जो हम ऊपर लिख आये हैं खुलासा तौर पर कह सुनाया और अन्त में कहा, " मुझे अभी तक यह शक बना ही

हुआ है कि जिस औरत को मैंने बेहोश देखा था और जिसने अपना नाम रम्भा बताया था वह वास्तव में भूतनाथ ही की कोई चालबाजी थी या कोई गैर औरत थी.

इसमें तो शक नहीं की वह औरत जान - बूझकर तखरा क्रिये पड़ी थी क्योंकि इस घटना के कुछ ही पहिले मैंने उसे एक मर्द के साथ अपनी तरफ आते देखा था, लेकिन अगर वह भूतनाथ का ही कोई साथी था तो उसने उसी समय मुझे क्यों न पकड़ लिया जब मैं उससे बातें कर रही थी यही बात समझ में नहीं आ रही है.

' गिल्लन:

मैं बता सकती हूँ कि वे लोग कौनथे !! गौहर:

अच्छा तुम्हीं बताओ.

गिल्लन:

बे लोग महाराज शिवदत्त के ऐयार थे जिन्होंने अपने दुश्मन को गिरफ्तार करने की नीयत से कई नौकर और ऐयार वहाँ भेजे हैं, और वे ही लोग तरह - तरह के जाल चारों तरफ फैलाये हुए हैं.

उस दिन उन लोगों ने खुद भूतनाथ को फंसाने का बन्दोबस्त किया था, पर वह तो निकल गया उलटे तुम उसके फन्दे में जा पड़ी.

गौह:

(कुछ सोचकर) तुम्हें कैसे मालूम कि वे लोग महाराज शिवदत्त के ऐयार थे?

गिल्लन:

मैं उन लोगों से मिल चुकी हूँ और उन्हीं की जबानी यह हाल मुझे मालूम हुआ है.

अच्छा यह तो बताओ कि अब तुम्हारा क्या इरादा है और कहाँ चलना चाहती हो?

गौहर:

जहाँ कहो.

गिल्लन:

मेरी समझ में तुम भी शिवदत्त के आदमियों के संग जाओ.

वे लोग तुम्हारी इज्जत करते और तुमसे डरते भी हैं.

गौहर:

ऐसा करने से मेरे काम में क्या हर्ज नहीं पड़ेगा?

तुम तो जानती ही हो कि मैं कैसे नाजुक काम के लिए .

.

.

.

.

गिल्लन:

हाँ हाँ, सो सब मैं अच्छी तरह जानती हूँ और अब समझ - बूझकर ही ऐसा कह रही हूँ, तुम्हारे काम में मदद ही मिलेगी, हर्ज किसी प्रकार का न पड़ेगा.

गौहर अच्छी बात है, तुम्हें उन लोगों का पता ठिकाना मालूम है?

गिल्लन:

हाँ बखूबी, और इस समय हम लोग उसी तरफ जा भी रहे हैं, अगर इसी चाल से चलते गये तो दोपहर होते होते उन लोगों के अड्डे तक पहुंच सकते हैं.

कुछ देर के लिए तीनों आदमी चुपचाप हो गये.

गौहर न जाने क्या सोच रही थी और उसके दोनों साथी भी मन ही मन जाने कैसे - कैसे बांधन् बाँध रहे थे.

आखिर कुछ याद आ जाने पर गिल्लन ने चौंक कर गौहरसे पूछा, “ अच्छा तुम बलभद्रसिंह से मिली थीं?

" गौहर:

कहाँ से, मैं जमानिया पहुँचने भी न पाई कि कम्बख्त भूतनाथ के कब्जे में पड़ गई.

गिल्लन:

तो तुम्हें पहिले वही काम करना चाहिये नहीं तो तुम्हारे पिता नाराज होंगे और तुम्हें आजादी के साथ इस तरह घूमते .

.

.

.

गौहर:

नहीं नहीं, मैं उस काम को भूली नहीं हूँ, उसे जरूर करूंगी और इस खूबसूरती के साथ करूंगी कि वे भी खुश हो जायेंगे.

अच्छा यह कहो कि तुम यहाँ कैसे आ पहुँची?

गिल्लन:

मुझे तुम्हारे पिता ने तुम्हारी मदद के लिये भेजा है और कहा है कि जिद्दी लड़की अकेली चली गई है, अस्तु तुम भी जाओ और उसकी मदद करो क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह अभी ऐयारी में पक्की नहीं हुई है और हिम्मती बहुत होते हुए भी धोखा खा सकती है, मगर असल तो यह है कि मैं उनके सबब से उतना नहीं आई हूँ जितना तुम्हारी माँ के सबब से.

उन्हीं के जोर से मुझे आना पड़ा क्योंकि वे तुम्हें बेहद चाहती हैं और एक पल के लिये भी आँखों की ओट होने देना पसन्द नहीं करतीं.

गौहर:

(हँसकर) सच तो यह है कि मेरा यह ऐयारी सीखना उन्हें जरा भी नहीं भाया है, इस बार तो मैं किसी तरह जिद करके चली आई पर आगे ऐसा मौका शायद ही पा सकें.

गिल्लन:

हाँ मालूम तो मुझे भी ऐसा ही होता है.

गौह: मगर घर के बाहर निकल कर तो मुझे ऐसी - ऐसी बातें मालूम हुई हैं कि जिनका ठिकाना नहीं और जिनके सबब से बहुत सम्भव है कि मैं झंझट में पड़ जाऊँ, खैर जो होगा देखा जायगा.

इसी क़िस्म की बातें करती हुई गौहरधीरे - धीरे चली जा रही थी.

रात नाम मात्र को बाकी रह गई थी, अपने मालिक सूर्यदेव की आबाई जान चन्द्रमा हुकूमत के सिंहासन पर से उतर जाने की तैयारी कर रहे थे और उनकी यह हालत देख मातहत तारों ने भी मुँह छिपाना शुरू कर दिया था.

ऐसे समय में गौहरएक टीले के पास पहुँचकर रुकी और बोली, " यहाँ कुछ देर के लिए रुक जाना चाहिए.

" गौहर घोड़े के पीठ पर से उतर पड़ी और गिल्लन ने भी जीन खाली कर दी.

सांबलसिंह ने दोनों घोड़े को लम्बी बागडोर के साथ बाँध दिया जिसमें वे अपनी थकावट मिटा लें और तब से तीनों सुबह की सुहानी छटा का आनन्द लेने की नीयत से उस टीले पर चढ़ने लगे.

टीले पर से दूर - दूर की छटा दिखाई दे रही थी.

गौहर बड़ी प्रसन्नता के साथ देर तक अपने चारों तरफ देखती रही.

इतने में ही यकायक उसकी निगाह दो सवारों पर पड़ी जो आते हुए दिखाई पड़ रहे थे.

उसने गिल्लन से कहा " सखी, देख तो ये दोनों सवार कौन हैं जो पूरब तरफ जा रहे हैं?

" तीनों कुछ देर तक और उस तरफ देखते रहे.

अभी पूरा चांदना न हुआ और दूसरे वे सबार भी दूर थे उससे सूरत - शक्ल के विषय में तो कुछ कहा नहीं जा सकता, हाँ इतना जरूर मालूम होता था कि उनमें से एक तो मर्द और दूसरी औरत.

गौहर:

(गिल्लन से) पता लगाना चाहिये कि ये दोनों कौनहैं.

सांवल:

इन व्यर्थ की बातों में क्या धरा हुआ है! तुम्हें अपने काम से मतलब है या दुनिया से?

ये दोनों कोई हों तुम्हें क्या?

गौहर:

नहीं, मेरा दिल गवाही देता है कि उन दोनों से अवश्य ही मेरा कुछ न कुछ काम निकलेगा.

मैं अवश्य पता लगाऊँगी.

गिल्लन:

जैसी तुम्हारी मर्जी.

सांबल:

यदि ऐसा ही है तो चलो हम तीतों आदमी साथ ही चल चलें, आखिर उधर ही तो हमें भी जाना है.

गौहर:

नहीं ऐसा करने से मुमकिन है कि दोनों होशियार होकर निकल जायँ, (गिल्लन से) सखी, तुम जाओ और पता लगाओ कि वे दोनों कौन हैं?

सांवल:

अगर ऐसा ही है तो मैं जाता हूँ और पता लगाने की कोशिश करता हूँ, मगर तुम दोनों इसी जगह रहना और कहीं मत जाना.

गौहर:

हाँ हाँ, तुम जाओ, हम दोनों इसी जगह हैं.

साँवलसिंह यह सुन टीले के नीचे उतरा और शीघ्र ही उन दोनों सवारों की तरफ जाता हुआ दिखाई पड़ा जो अब कुछ दूर निकल गये थे.

सांवलसिंह के दूर निकल जाने पर गौहर ने मुस्कुराकर गिल्लन की तरफ देखा और कहा, " तुम समझती होगी कि मैंने सांवल को व्यर्थ के काम पर भेज दिया, पर वास्तव में ऐसा नहीं है, मुझे कुछ ऐसी बातें कहती हैं जिनका जिक्र उसने सामने करना पसन्द न था.

आओ बैठ जाओ और मेरी बातें सुनो.

" इतना कह कर गौहरएक साफ जगह देख कर बैठ गई और धीरे - धीरे गिलनसे कुछ कहने लगीं.

सॉवलसिंह तेजी के साथ चलता हुआ शीघ्र ही उन दोनों सवारों के पास जा पहुँचा जो बड़ी बेफिकीके साथ धीरे - धीरे पूरब की तरफ जा रहे थे.

उन दोनों सबारों में से एक तो मर्द था और दूसरी औरत.

पोशाक और पहनावे आदि से वे दोनों अमीर खानदान के मालूम होते थे और उनकी सवारी के घोड़े भी बहुत तेज चंचल और ताकतवर थे मगर इस समय इन दोनों ही के चेहरे तक्राबों से ढंके हुए थे जिस सबब से इनका पहिचानना कठिन हो रहा था.

जिस तरह वह मर्द तीर - कमान और ढाल - तलवार लगाये हुए था उसी तरह वह औरत भी, बल्कि और छोटा सा बदुआ भी उनकी बगल से लटक रहा था जिससे गुमान होता था कि यह अवश्य कोई ऐयार है.

ये दोनों, जिन्हें इस बात का कुछ भी सन्देह न था कि कोई आदमी हमारा पीछा कर रहा है, बेफिक्की के साथ बातें करते हुए जा रहे थे.

कुछ देर बाद यह कह कर उस मर्द ने चेहरे पर से नकाब उलट दी, " और ऐसे समय में यह भारी नकाब तो बहुत ही बुरी मालूम हो रही है.

" जिसके जवाब में उस औरत ने कहा, “ इस वक्त हम लोगों को देखने ही वाला कौन है.

पाठक, नकाब हट जाने से अब आप इस आदमी को बखूबी पहिचान सकते हैं.

यह हमारे बहादुर प्रभाकरसिंह हैं और इनके साथ जो औरत है वह कदाचित वही है जिसे अब से पहिले दो बार और उनके साथ देख चुके हैं, एक बार तो जब प्रभाकरसिंह

दारोगा की कैद से छूटे थे तब और दूसरी बार जब तिलिस्म के अन्दर जाते हुए इन्द्रदेव और दलीपशाह ने उन्हें देखा था.

सम्भव है कि इस औरत को पाठक और भी कई बार इनके साथ देखें अस्तु जब तक असल हाल और नाम न मालूम हो जाय तब तक के लिये इसका कोई बनावटी नाम रख देना उचित होगा.

हमारी समझ में कालिन्दी नाम कुछ बुरा न होगा.

प्रभाकरसिंह को चेहरे पर से नकाब हटाते देख सांबलसिंह मौका समझ चक्कर काटता हुआ पेड़ों की आड़ में कुछ आगे हो गया और वहां से इनकी सूरत अच्छी तरह देखी.

सांवलसिंह स्वयं भी ऐयार था इस कारण और किसी दूसरे सबब से भी जो शायद आगे चलकर मालूम हो, वह प्रभाकरसिंह को बाखूबी पहिचानता था अस्तु इस जगह इस तरह पर उन्हें देख चौंका और यह जानने की कोशिश करने लगा कि इनके साथ की औरत क्रौत है और ये दोनों कहाँ जा रहे हैं.

वह जहाँ तक हो सका उनके घोड़ों के और नजदीक हो गया और बातें सुनने लगा.

प्रभाकर :

आज का परिश्रम भी व्यर्थ हुआ.

कालिन्दी:

हाँ अब तो यही कहना पड़ेगा.

प्रभाकर :

तुम्हारी इस किताब से तिलिस्म का पूरा हाल नहीं मालूम होता नहीं तो अवश्य उन लोगों का पता लग जाता.

कालिन्दी:

फिर इस बात में सन्देह करने की कोई जगह अब नहीं रह गई है कि उन दोनों लोगों को दारोगा ही ने तिलिस्म में फंसा दिया है.

प्रभा ० (कुछ सोच कर) मेरी राय तो अब यही होती है कि इन्द्रदेवजी के पास चला जाऊ और सब बातें उनसे कह दूं, वे बुद्धिमान आदमी हैं, अवश्य कोई न कोई तरकीब उन लोगों के छुड़ाने की निकालेंगे.

कालिन्दी:

आप स्वतन्त्र हैं, ऐसा कर सकते हैं मगर .

.

.

.

.

प्रभाकर :

मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हें ऐसा करने में क्यों आपत्ति है! क्या तुम्हारा इन्द्रदेवजी से कोई झगड़ा है?

कालिन्दी:

(हंसकर) भला मेरा उनका क्या झगड़ा?

प्रभाकर :

अगर ऐसी बात है तो अवश्य मेरे साथ तुम्हें भी उनके पास चले चलना चाहिए.

कालिन्दी:

(कुछ सोचकर) अच्छा दो दिन की मोहलत मैं और चाहती हूँ, दो रोज के बाद ऐसा ही करूंगी!प्रभाकर :

खैर दो दिन और सही.

सांवलसिंह ने जो दोनों की बातचीत सुनता हुआ बराबर चला आ रहा था अब इनका साथ छोड़ दिया और पीछे की तरफ लौटा क्योंकि एक तो इनकी बातचीत में कोई बात

ऐसी मालूम न हुई जो उसके मतलब की हो, दूसरे गौहर और गिल्लन को भी वह बहुत पीछे छोड़ आया था और शीघ्र ही उनके पास लौट जाना जरूरी समझता था.

प्रभाकरसिंह और कालिन्दी ने भी अपने घोड़ों को तेज किया और शीघ्र ही उस टीले के पास जा पहुंचे जिसके ऊपर बने हुए बंगले को इन्होंने आजकल अपना डेरा बनाया हुआ था.

टीले के नीचे ही उस औरत का एक साथी खड़ा मिला.

जिसके सुपुर्द दोनों घोड़े कर दिए गए तब ये दोनों टीले के ऊपर चढ़ने लगे.

देखिए भूतनाथ नौवाँ भाग, आठावाँ बयान.

सातवा व्यान।

भूतनाथ नौंवे भाग के ग्यारहवें बयान में हम लिख आये हैं कि जिस समय दारोगा और जैपाल मेघराज तथा जमना को कहीं रख कर लौटे उसी समय असली सरस्वती भी वहाँ जा पहुँची जिसने तिलिस्मी खंजर की मदद से उन दोनों को बेहोश कर दिया.

अब हम उसके आगे का हाल लिखते हैं.

सरस्वती ने दारोगा और जैपाल को बेहोश तो किया मगर इसके बाद वह और कुछ भी न कर सकी क्योंकि उसी समय वह चबूतरा (जिस पर ये तीनों थे) जमीन के अन्दर धंस गया और यह बात इतनी फुर्ती से हुई कि सरस्वती उस पर से कूद कर अपने को बना भी न सकी बल्कि उसके होशवास जाते रहे और वह भी उसी जगह पर बेहोश होकर गिर गई, जिस समय सरस्वती होश में आई उसने अपने को एक बारहदरी में पड़े हुए पाया.

उसके बगल में दारोगा और जैपाल भी बेहोश पड़े थे.

सरस्वती उठ कर बैठ गई और सोचने लगी कि वह यहाँ क्योंकर आ पहुँची शीघ्र ही उसे अब पिछली बातें याद आ गई और यह भी ख्याल हो आया कि तिलिस्मी चबूतरे पर पहुंचते ही वह बेहोश हो गई थी.

उसने ऊपर की तरफ देखा और तब मालूम हुआ कि उसके ठीक ऊपर बारहदरी की छत में एक बड़ा छेद बना हुआ था जिसकी लम्बाई - चौड़ाई की तरफ खयाल करने से मालूम होता था कि बेशक इसी राह से चबूतरे से नीचे उतर उन तीनों को यहाँ पहुँचाया होगा.

उस छेद के अंदर की तरफ घोर अन्धकार था और इस बात का बिलकुल पता न लगता था कि उसके दूसरी तरफ क्या है.

सरस्वती उठ खड़ी हुई और उस बारहदरी के बाहर निकली.

एक हरे - भरे सुहावने बाग में उसने अपने को पाया जिसके फूल - पत्ते सूर्य की ताजी किरणों के पड़ने से सुनहले हो रहे रहे थे.

यह बाग बहुत ही बड़ा था और इसका दूसरा सिरा दिखाई नहीं देता था, हाँ, बाईं और दाहिनी तरफ कुछ इमारतें बनी हुई जरूर नजर आ रही थीं.

कुछ सोचती - विचारती सरस्वती दाहिनी तरफ को रवाना हुई.

उस बारहदरी से जिसमें से सरस्वती अभी निकली थी लगा हुआ इन इमारतों का सिलसिला बराबर उस इमारत तक्र चला गया था जिसकी तरफ सरस्वती बड़ी जा रही थी.

हम नहीं कह सकते कि वह सिर झुकाये सीधी सामने ही की तरफ जा रही थी.

बीन का फासला तय कर सरस्वती एक लम्बे दालान में पहुंची और उसे भी पार कर उसने एक आलीशान कमरे के अन्दर पैर रखा.

यह क्रमरा कुछ बिचित्र ढंग का बना हुआ था.

काले पत्थर के बहुत ही मोटे चालीस खम्भों पर इसकी ऊंची छत रक्खी हुई थी और बीचोंबीच कमरे में काले ही पत्थरों का बना हुआ एक सिंहासन रत्नखा था जिसके चारों तरफ काले पत्थर के शेर बने हुए थे जो बड़े ही कद्दावर और इतने ऊँचे थे कि आदमी अगर उनके पास जाकर खड़ा हो गया तो उनकी गरदन तक पहुँचे, ये शेर नकली होने पर भी भयानक मालूम हो रहे थे और इनमें से हरएक के सिर पर किसी धातु के बने

चार उक्काब बैठाये हुए थे, जिन्होंने गरदन घुमाकर अपनी चोंच में शेरों का एक कान पकड़ा हुआ था.

सरस्वती ने एक ही निगाह में सब चीजों को देख लिया.

इस कमरे के तीन तरफ बड़ी - बड़ी कोठरियाँ थीं और चौथी तरफ वही दालान पड़ता था जिधर से होकर सरस्वती इस कमरे में आई थी.

सरस्वती ने उन कोठरियों को गिना.

हर तरफ दस कोठरियाँ थीं जिनमें से कुछ दरबाजे बन्द और कुछ खुले हुए हुए, धीरे - धीरे चलती हुई सरस्वती एक खुले दरवाजे के पास पहुंची और झाँक कर अन्दर का हाल देखने लगी.

अन्दर की तरफ दरवाजे के पास ही दो लाशें पड़ी हुई थीं जिन्हें देखते ही उसने पहिचान लिया और एक चीख मारकर उनकी तरफ झपटी.

मगर अभी मुश्किल से उसने कोठरी के अंदर पैर रक्खा होगा कि उन चारों शेर के मुंह से, जो सिंहासन के चारों तरफ बने हुए थे गुर्राने की आवाज निकली और साथ ही उस कोठरी का दरवाजा बंद हो गया जिसके अंदर सरस्वती गई थी.

सरस्वती के चले जाने के कुछ ही देर बाद दारोगा और जैपाल की भी बेहोशी दूर हुई और वे उठकर बैठ गये.

जैपाल ने ताज्जुब के साथ अपने चारों तरफ देखा और कहा, " यह हम लोग कहाँ आ पहुँचे?

"

दारोगा:

(उठकर और अपने चारों तरफ देखकर) मुझे तो यह वही बाग मालूम होता है जिसमें रात को हम लोग उन दोनों दयाराम और जमना को पहुंचा गये थे.

दयाराम और जमना को कब्जे में करने के बाद दारोगा ने मौका पाकर एक तेज़ मसाले से साफ कर उन दोनों ही की असली सूरतें देख लीं और उन्हें पहिचान लिया था, अस्तु

दारोगा की बात सुन जैपाल ने कहा, " तब मैं समझता हूँ कि वह औरत भी जरूर सरस्वती होगी जिसने हम लोगों पर खंजर का वार किया था.

" दारोगा:

मेरा भी यही खयाल है.

(चारों तरफ देखकर) मगर वह गई कहाँ आखिर?

नियामानुसार तो हम लोगों की तरह उसे भी बेहोश होकर इसी स्थान पर पहुंचना चाहिए था क्योंकि (छत की तरफ इशारा करके) वह चबूतरा जिसने हमें यहाँ पहुँचाया था ठीक इस स्थान के ऊपर है.

जैपाल:

बाहर निकलकर देखिए, शायद हम लोगों के पहिले ही होश में आकर कहीं चली गई हो.

दारोगा और जैपाल उस बारहदरी के बाहर निकले और चारों तरफ निगाह दौड़ाने लगे.

किसी आदमी पर उनकी निगाह न पड़ी मगर यह विश्वास हो गया कि यह वही स्थान है जहाँ रात को दयाराम और जमना को लेकर आये थे.

जैपाल ने दारोगा से कहा, " उस शेरवाले कमरे में चलकर देखना चाहिए शायद वह उधर ही गई हो.

दारोगा ने कहा, “ अच्छा चलो ", और तब वे दोनों उसी तरफ चले जिधर थोड़ी देर पहिले सरस्वती गई थी.

हम ऊपर लिख आये हैं कि सरस्वती एक बड़े दालान को पार करके उस शेर वाले कमरे में पहुंची थी.

जिस तरह उस कमरे के तीन तरफ की कोठरियों में जाने के लिए दरवाजे बने हुए थे उसी तरह इस दालान से उस कमरे में जाने के लिए भी दस दरवाजे बने हुए थे.

सरस्वती को ये दरवाजे खुले हुए मिले थे मगर इस समय ये दसों दरवाजे बंद थे और इस कारण उस कमरे में जाना असम्भव हो रहा था.

दारोगा और जैपाल इस दालान में पहुँचे और कमरे के दरवाजे बंद पा ताजुज्ब करने लगे.

जैपाल:

ये दरवाजे क्या चलती वक्त बन्द करते गये थे?

दारोगा:

नहीं, मैं तो इन्हें खुला ही छोड़ गया था.

जैपाल:

तब इनको किसने बंद किया?

दारोगा:

शायद सरस्वती यहाँ पहुँची हो और उसी ने यह कार्यवाही की हो?

जेपाल:

हो सकता है, मगर क्या आप उन दर्वाजों को खोलकर इस कमरे के अन्दर नहीं जा सकते?

दारोगा:

नहीं, ये दर्बाजे ही क्यों यह बाग और सब इमारतें तिलिस्म से संबंध रखती हैं और यहाँ के किसी दरवाजे या रास्ते को खोलना और बंद करना अथवा इस जगह आना ही हर एक आदमी का काम नहीं.

जैपाल:

तब आपको यहाँ आने का रास्ता किस तरह मालूम हुआ?

दारोगा:

मैं एकबार महाराज के साथ यहाँ आया था इसी से यहाँ का कुछ हाल जानता हूँ, लेकिन अब यहाँ ठहरने से कोई फायदा नहीं, न जाने कब किस तरह की आफत आ जाय,
जैपाल:

खैर चलिए, मगर दयाराम आदि की क्या दशा होगी जिन्हें आप उस कमरे में छोड़ आये हैं! दारोगा अब जो कुछ उनके भाग्य में होगा भोगेंगे, मैं इसे क्या कहूँ, उन्हें यहाँ से निकाल देना तो असम्भव है, अब वे लोग मेरे हाथ से बाहर हो गये, खैर इतना ही क्रि अब मुझे उनसे डरने की कोई जरूरत न रही क्योंकि जो लोग इस तिलिस्म में फँस जाते हैं वे अपनी मर्जी से बाहर निकल नहीं सकते जब तक कि कोई जानकार आदमी तिलिस्म तोड़कर उन्हें न छुड़ावे.

जैपाल:

तब तो आप इस तरफ से अपने को निष्कंटक समझिए, दयाराम की वजह से जो कुछ खौफ - खतरा आपको था सब जाता रहा और जमना - सरस्वती से भी नेजात मिली.

दारोगा:

बेशक यही बात है.

जमना - सरस्वती के कारण गदाधरसिंह पर भी मेरा अहसान जरूर होगा वह माने तो, खैर अब चलना चाहिए.

जैपाल:

खैर चलिए, आगे - आगे दारोगा और उसके पीछे जैपाल उस जगह से हटे और उस बाग के पश्चिम और उत्तर के कोने की तरफ रवाना हुए जिधर एक ऊँचा कुंआ दिखाई पड़ रहा था.

इस जगह बाग की दीवारें बहुत ऊँची थीं और यह नहीं जाना जा सकता था कि उसके दूसरी तरफ क्या है मगर बीच में कही - कहीं एकआध दरवाजा जरूर दिखाई पड़ता था जो मजबूती के साथ बन्द था.

इस बुर्ज के निचले हिस्से में भी एक दर्बाजा बना हुआ था.

दारोगा ने उसके पास जा कोई खटका दबाया जिसके साथ ही वह खुल गया.

दोनों आदमी भीतर चले गये और दारोगा ने हाथ से दबाकर बंद कर दिया.

जैपाल ने अपने को एक छोटी आठपली कोठरी में पाया जिसके बीचोंबीच में एक मोटे खम्भे के ऊपर एक पत्थर का शेर बैठाया हुआ था.

दारोगा इस शेर के पास पहुंचा और उसकी बाईं आँख में उँगली डालकर दबाया.

कुछ जोर लगाने के साथ ही एक हल्की आवाज आई और जिस तरह किसी चूहेदानी का पल्ला ऊपर चढ़ जाता है उसी तरह सामने की तरफ एक पत्थर की सिल्ली ऊपर को चड़ गई और आदमी के निकल जाने लायक रास्ता दिखाई देने लगा.

दारोगा और जैपाल इस दरवाजे के भीतर चले गये और तुरंत ही वह दरवाजा अपने आप आप ज्यों का त्यों बंद हो गया.

यह एक लम्बी और पतली सुरंग थी जिसमें हवा आने के लिए कितनी जगहें बनी हुई थीं और उसी रास्ते क़ाफी रोशनी भी आ रही थी.

दारोगा जैपाल को साथ लिए तेजी के साथ इसी सुरंग में रवाना हुआ.

लगभग हज़ार गज़ जाने के बाद वह सुरंग खतम हो गई और सामने की तरफ एक बंद दर्वाजा नजर आया.

इस दरवाजे को भी दारोगा ने कोई खटका दबाकर खोला, ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ नज़र आईं जिनको पार करने के बाद दोनों एक सुन्दर मगर छोटे बाग में पहुँचे.

यह बाग वही था जिसमें दयाराम और जमना को खोजती हुई सरस्वती आई थी अथवा जहाँ से चबूतरे पर चड़ सरस्वती, दारोगा और जैपाल इस दूसरे बाग में पहुँच थे और यहाँ सामने ही वह चबूतरा नजर आ रहा था जिसने इन तीनों को तीचे पहुंचाया था.

इस जगह पहुँच दारोगा रुका और जैपाल की तरफ घूमकर बोला, " अब किधरसे चलना चाहिए?

" जैपाल:

जिस राह से आप यहाँ आए थे वह राह तो मेरी समझ में ठीक नहीं है क्योंकि कौन ठिकाना दुश्मन होशियार हो गया हो! दारोगा:

यही मेरा भी खयाल है, अच्छा तब इधर से आओ.

इतना कह पैर बढ़ाता हुआ दक्खिन की तरफ रवाना हुआ और एक छोटे दालान में पहुंचा जिसके बीचोंबीच में एक शेर पत्थर का ठीक वैसा ही बना हुआ था जैसाकि इस बाग में आते समय बुर्जवाली कोठरी के अन्दर मिला था.

दारोगा ने इस शेर की बाई आँख में उँगली डाली जिसके साथ ही बाईं तरफ की दीवार में एक दरवाजा दिखाई पड़ने लगा.

दारोगा जैपाल के लिए इस दरवाजे के अंदर चला गया और दरवाजा बंद हो गया.

अब जैपाल ने अपने को एक कोठरी में पाया जिसमें तीन तरफ तो लोहे के दरवाजे बने हुए थे और चौथे तरफ वही रास्ता था जिस राह से दोनों इस जगह आये थे.

दारोगा ने दाहिने तरफ वाला दरावाजा खोला और जैपाल को अपने साथ अंदर कर बंद कर लिया.

एक बहुत ही लंबी सुरंग नजर आई जो इतनी तंग थी कि एक आदमी उसमें मुश्किल से जा सकता था.

आगे - आगे दारोगा और पीछे - पीचे जैपाल रवाना हुए.

यह सुरंग आने की तरफ ढालुई थी अर्थात् नीचे की तरफ को कुछ झुकती हुई जा रही थी.

घण्टे भर से ऊपर समय तक दोनों को इस तंग सुरंग में चलना पड़ा और गर्मी के कारण इनकी तबीयत परेशान हो गई क्योंकि इस सुरंग में बनिस्बत बाहर के गर्मी ज्यादा थी और हवा तथा रोशनी आने की जगहें भी बहुत दूर - दूर पर थीं जिससे अन्धकार भी था आखिर किसी तरह यह सुरंग भी समाप्त हुई और इसका दूसरा मुहाना पहुँचा.

सामने की तरफ कई सीढ़ियाँ थीं जिन पर इन दोनों को चढ़ना पड़ा और तब एक दरवाजा मिला.

यह दरवाजा भी लोहे का एक ही पल्ले का था और बहुत पुराना हो जाने के कारण उसका रंग पत्थर के रंग में ऐसा मिल गया था कि कुछ फर्क नहीं मालूम होता था.

जगह तंग थी और दारोगा के पीछे की तरफ होने के कारण जैपाल यह न देख सका कि दारोगा किस तरह वह दरवाजा खोलता है, हाँ इतना देखा कि एक हलकी आवाज के

साथ वह लोहे का पल्ला ऊपर की तरफ चड़ गया और सामने जाने का रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

दारोगा और जैपाल भीतर चले गये और अपने को एक गुफा में पाया जिसमें बाईं तरफ देखने से चांदनी नज़र आ रही थी.

यह सुरंग बही थी जिसकी राह गुप्त स्थान में प्राय:

जाना होता था जिसमें प्रभाकरसिंह और दयाराम रहते थे या जिसके अन्दर घुस दारोगा इतना उपद्रव मचा चुका था.

इस समय यह सुरंग खाली थी अर्थात् कोई आता - जाता यहां नजर नहीं आता था अस्तु दारोगा बेधड़क गुफा के बाहर निकल गया और तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुआ.

दारोगा और जैपाल के बाहर निकलने के कुछ ही समय पहले भूतनाथ भी सरस्वती द्वारा उस विचित्र घाटी के बाहर निकाला जा चुका था.

भाग्यवश घने जंगल में से जाते हुए दारोगा और जैपाल ठीक उस समय वहाँ पहुँचे जब भूतनाथ ने अपनी कारीगरी से (नकली) जमता और सरस्वती को बेहोश किया बल्कि मार डाला था.

अपने सामने किसी तरह की आहट पा दारोगा रुक गया और कुछ ही सायत बाद उसकी निगाह भूतनाथ पर पड़ी जो (नकली) जमना - सरस्वती को मारने के बाद उनकी लाश को छिपाने की चेष्ठा कर रहा था.

दारोगा और जैपाल एक आड़ की जगह में खड़े होकर उसकी कार्रवाई देखने लगे.

दोनों लाशों को छिपाने के बाद जिस समय गदाधरसिंह ने किसी की जुबानी “ भला गदाधरसिंह, कोई हर्ज नहीं, अगर मैं जीता रहा तो बिना इसका बदला लिये कभी न छोडूंगा! " ये शब्द सुने तो घबराकर उस आदमी को खोजने लगा, मगर जब वह न मिला तो लाचार हो जमानिया की तरफ लौटा.

उसके जाते ही दारोगा और जैपाल उस जगह पहुंचे जहाँ भूतनाथ ने दोनों लाशों को छिपाया था और दारोगा ने जैपाल से कहा, " वेशक भूतनाथ ने ही इनका खून किया है,

इन लाशों को निकालकर देखना चाहिए कि कितनी हैं.

" जो हुक्म " कह जैपाल ने वह मिट्टी और पतवार हटाना शुरू किया जिससे लाशों को ढक भूतनाथ चला गया था.

कुछ ही देर में वह दोनों लाशें और उनके सिर भी दिखाई देने लगे और जैपाल चौंककर बोल उठा, " हैं, यह तो जमना - सरस्वती की लाशें हैं ।

दारोगा ने भी जमीन पर बैठकर गौर से उन लाशों के देखा और तब सिर हिलाकर कहा, " नहीं, ऐसा नहीं हो सकता,, जमना - सरस्वती को तो हम लोग अभी तिलिस्म में छोड़ते हुए आ रहे हैं.

यह मुमकिन है कि भूतनाथ ने इन दोनों को जमना - सरस्वती ही समझकर इनकी जान ली हो, मगर इसमें भी शक नहीं कि उसे धोखा हुआ और उसने इनके पहिचानने में भूल की.

ये सूरतें असली नहीं मालूम पड़तीं! अच्छा देखों में अभी पता लगाता !! दारोगा ने एक बहुए में से जो उसके साथ था एक छोटी शीशी निकाली जिसमें लाल रंग का कोई अर्क भरा हुआ था.

उसमें से थोड़ा सा उँगलियों में लगा दारोगा ने जमना के चेहरे पर लगाया.

लगाने के साथ ही चेहरे का नकली रंग उड़ गया और असली सूरत मालूम पड़ने लगी, दारोगा ने उसी तरह सरस्वती की भी जांच की और उसकी सूरत भी नकली पाई.

जैपाल:

वेशक अब इस बात में कोई सन्देह नहीं रहा कि ये दोनों औरतें कोई दूसरी ही हैं, यद्यपि इनके जमना - सरस्वती बनने का अवश्य कोई विशेष कारण रहा होगा! खैर चलिये उठिये.

दारोगा ने शीशी बन्द कर अपने बटुए में रखी और उठ खड़ा हुआ.

वे दोनों लाशें पुन:

उसी तरह दबा दी गई और तब भूतनाथ तथा उन लाशों के विषय में तरह - तरह की बातें करते वे दोनों जमानिया की तरफ रवाना हुए मगर इस बात की खबर उन दोनों को ज़रा भी न थी कि कोई आदमी देर से उनका पीछा कर रहा है और बराबर उनके साथ चला आ रहा है.

जब दारोगा और जैपाल जंगल और मैदान तय करने के बाद उस सड़क पर पहुँचे जो जमानिया की तरफ चली गई थी और सीधे शहर की तरफ रवाना हुए तो वह आदमी जो उनके पीछे - पीछे जा रहा था रुका और बोला, " अब ये लोग घर जायेंगे, आगे पीछा करना व्यर्थ है.

उसी समय पीछे से दो सबारों के तेज़ी के साथ आने की आहट मिली जिसे सुन यह आदमी चौंका और तब हटकर घनी झाड़ी की आड़ में हो गया जो सड़क के किनारे ही पड़ती थी.

बात की बात में वे दोनों सबार भी नज़दीक आ पहुँचे जो वास्तव में वे ही थे जिनका हाल नौंवे भाग के दूसरे बयान में लिखा गया है अर्थात् इनमें से एक तो शेरसिंह थे और दूसरी गौहर, उस झाड़ी में छिपे आदमी के देखते ही भूतनाथ उस जगह पहुंचा, गौहरउसकी सूरत देख भाग गई, और तत्र शेरसिंह से कुछ बातें कर भूतनाथ भी जिसकी सूरत में घबराहट और परेशानी झलक रही थी गौहर के पीछे - पीछे चला गया, अकेले शेरसिंह जमानिया की तरफ रवाना हुए और तब सन्नाटा पा वह झाड़ी में छिपा हुआ आदमी भी बाहर निकला.

उस समय उसे मालूम हुआ कि वहाँ केवल वहीं छिपा हुआ न था बल्कि पास ही की झाड़ी में एक और भी था जो उसी समय बाहर निकला.

इस आदमी की सूरत भी नकाब से ढकी हुई थी.

इसे देखते ही पहिला आदमी उसके पास चला गया और बोला, " कौन ने गोबिन्द! " दूसरे आदती ने गौर से उसी तरफ देखा और कहा, " चहा " जिसके जबाब में पुनः वह पहला आदमी बोला, “ मेसचे आया और तब वे दोनों एक - दूसरे का हाथ पकड़े हुए दूसरी तरफ चल दिये.

१.

" कौन है, गोविन्द! " ३.

" " मैं हूँ माया.

"

आठवा व्यान।

जमानिया पहुँच दारोगा सीधा अपने घर पहुँचा.

उसके पहुंचने के कुछ समय बाद शेरसिंह वहाँ आये और उनके चले जाने के बाद भूतनाथ ने दारोगा से मिलकर बातें कीं.

इन दोनों में जो कुछ बातें हुईं अथवा इस बीच में जो कुछ घटना हुई हम ऊपर के बयानों में लिख चुके हैं, इस जगह दोहराकर लिखना व्यर्थ है, मगर इतना कह देना मामूली होता है कि यह सब हाल दामोदरसिंह का मरना मशहूर होने से पहिले का है और सिर्फ सिलसिला मिलाने के लिए ही हमें पीछे लौटना पड़ा.

भूतनाथ को विदा करने के बाद दारोगा पुनः अपने ठिकाने पर आ बैठा और जैपाल से बातें करने लगा ।

यकायक उसे ख्याल आया कि प्रभाकरसिंह को छुड़ाने का पता लगाने की धुन में वह कैदखाने के कई दरवाजे खुले ही छोड़ आया है.

अस्तु जैपाल ने कहा, " तुम यह तालियों का झब्बा लो और कैदखाने के सब ताले बंद कर आओ.

मालती को भी जिसके कमरे की जंजीर कटी हुई पाई गई है उसमें से हटाकर किसी दूसरी कोठरी में कर देना.

" जैपाल ' बहुत खूब ' कहकर चला गया मगर तुरन्त ही लौट आकर घबराये हुए ढंग से बोला, " कैदखाना तो खुला पड़ा है और मालती का कहीं पता नहीं है.

ये कई तालियां भी जो उस समय झब्बे में नहीं मिलती थीं वहीं जमीन पर पड़ी हुई थीं! " इस खबर ने दारोगा को हदसे ज्यादा बेचैन कर दिया और बेतहाशा उसके मुंह से निकला, " वेशक मेरा कोई आदमी दुश्मन से मिल गया है! " बड़ी देर तक दारोगा गर्दन झुकाये गद्दी पर बैठा सोचता रहा और जैपाल भी गमगीन सूरत बना उसके सामने बैठा रहा, आखिर दारोगा ने सिर उठाया और कहा, " ऐसे गुप्त कैदखाने में से दो - दो कैदियों का निकल भागता कोई मामूली बात नहीं है! बेशक मेरे ऊपर कोई भारी आफत आना चाहती है! " जैपाल:

इस समय यदि प्रभाकरसिंह आपके हाथ में रहते तो शिवदत्त पर आपका बड़ा अहसान पड़ सकता था.

दारोगा:

यही तो बात है और मालती से भी काम निकालने का मौका अब आया था, वर्षों से जिस लालच में उसे कैद रम्खा वह पूरी भी न होने पाई और वह हाथ से निकल गई, अफसोस! इतने ही में बाहर से किसी ने कहा, " अब अफसोस करने से कोई नतीजा नहीं, अपने दुष्कर्मों का फल भोगने के लिए तैयार हो जा.

" यह आवाज सुनते ही दारोगा ने सामने पड़ी तलवार उठा ली और कमरे के बाहर निकला कोई नजर न आया.

नीचे सदर दरवाजे तक आया पर वहाँ भी पहरे में किसी तरह का फर्क न पाया, लाचार पुन:

लौटा और अपने कमरे में जाना चाहा पर दरवाजे पर पड़े हुए एक कागज के पुर्जे को देख चौंका और उसे उठाकर अंदर ले जाकर शमादान की रोशनी में पड़ने लगा.

न जाने उस पुर्जे में क्या बात लिखी हुई थी कि जिसने दारोगा के रहे - सहे होश भी उड़ा दिये.

उसके मुँह से एक चीख की आवाज निकली और यकायक बदहवास होकर जमीन की तरफ झुक गया.

दारोगा का यह हाल देख जैपाल को बड़ा ही ताज्जुब हुआ.

उसने दारोगा को होश में लाने की कोशिश करना चाही, पर फिर कुछ सोचकर वह पुर्जा उठा लिया जो दारोगा के हाथ से छूटकर गिर पड़ा था और शमादान की रोशनी में पड़ा, यह लिखा हुआ पाया " यदुनाथ, अब मैं स्वतन्त्र हो गई, होशियार रहना, बदला लिये बिना कदापि न छोड़ेंगी.

इतने दिनों तक तेरी कैद में रहकर जो - जो तकलीफें उठायी हैं उनका जब तक पूरा बदला न ले लूँगी मुझे शान्ति न मिलेगी.

पुन:

कहती हूँ कि होशियार हो जा और यह न समझ कि लोहगड़ी के भूत का भेद मुझे मालूम नहीं है.

तेरी जानी दुश्मन- मालती.

"

जरूर इस चिट्ठी में कोई गुप्त भेद छिपा हुआ था जिसे याद कर जैपाल की हालत भी खराब हो गई, मगर बहुत कोशिश कर उसने अपने को सम्हाला और दारोगा साहब की तरफ झुका.

बड़ी - बड़ी - तरकीबों से किसी तरह दारोगा के होश - हवास दुरुस्त हुए और वह उठ बैठा.

मगर तभी उसकी निगाह पुनः चीट्ठी पर पड़ी और वह कांपउठा.

उसके मुंह से कुछ बेजोड़ शब्द इस तरह पर निकलने लगे मानो इन्हें वह अपने होश में नहीं कह रहा है.

' ओफ, लोहगढ़ी! नहीं - नहीं, वह कोई दूसरी ही .

.

.

ओफ, मालती का छूट जाना बहुत बुरा हुआ.

वह कम्बख्त अवश्य इस भेद को जानती है, नहीं तो इस तरह .

.

.

.

अ फसोस, अब तो दामोदरसिंह भी मेरा जानी दुश्मन बन जाएगा क्योंकि मालती उनकी प्यारी भतीजी और अहिल्या .

.

.

.

सकी बड़ी ही प्या .

.

.

ओफ, मैं कहीं का न रहा.

दयाराम और जमना सरस्वती को जहन्नुम में पहुँचा कर मैं समझ रहा था कि एक तरफ से छुट्टी मिली पर यह नहीं जानता था कि इतनी बड़ी आफत मेरे लिए .

.

ओह, महाराज भी मेरे दुश्मन हो जाएँगे क्योंकि दामोदरसिंह बिना उनके कान भरे न रहेगा और वे भी लोहगडी .

.

.

.

अहिलय .

.

.

" इतना कहते - कहते दारोगा पुनः बदहवास हो गया.

जैपाल ने गुलाबजल उसके मुंह पर छिड़का और हवा करना शुरू किया, कुछ देर में वह होश में आया पर बिना कुछ कहे पलंग पर जा लेटा और तरह - तरह की बातें सोचता हुआ गरम गरम आँसू बहाने लगा.

इस बात के दो या तीन ही दिन बाद जमानिया शहर की चौमुहानी पर दामोदारसिंह की लाश पाई गई उनका मरना मशहूर हुआ.

नौवा व्यान।

भूतनाथ जब होश में आया उसने अपने को उसी चश्मे के किनारे पड़ा पाया, इस समय वह बहुत ही सुस्त और उदास था इधर थोड़े समय के भीतर जो कुछ उसके देखने में आया था उसको याद कर वह कांपरहा था, पिछली बातों की याद कलेजा मुँह को आ रही थी और अपनी हालत की तरफ ध्यान देने में आँसू गिरने लगते थे, वह देर तक उसी तरह बैठा हुआ रोता रहा और बिलखता रहा पर अन्त में उठा और चश्में के पानी से हाथ - मुँह धो एक तरफ को रवाना हो गया.

अभी बहुत दूर नहीं गया था कि पीछे किसी की आहट मालूम पड़ी, घूमकर देखा तो शेरसिंह पर निगाह पड़ी, वह पलट पड़ड़ा और उसे गले से लिपटा बेतहाशा आँसू गिराने लगा, शेरसिंह उसकी यह हालत देख घबड़ा गया और बोला, " गदाधरसिंह, यह क्या मामला है! तुम रो क्यों रहे हो?

" भूत:

(अलग होकर) बस एक तुम्हीं से मिलने की आस थी सो पूरी हो गई, अब मैं इस दुनिया को छोड़ दूंगा और किसी को अपना काला मुँह नहीं दिखाऊँगा.

शेर:

(आश्चर्य से) आज तक ऐसी हालत तो तुम्हारी मैंने कभी नहीं देखी थी! तुम्हें हो क्या गया है?

भूत:

अब मैं क्या बताऊँ कि मुझे क्या हो गया है, अगर तुम्हें फुरसत हो तो बैठ जाओ और मेरा हाल सुन लो.

शेर ०:

मैं बिल्कुल खाली हूँ, जो कुछ तुम्हें कहना हो कहो.

शेरसिंह एक साफ जगह देख कर बैठ गया, भूतनाथ उसके सामने जा बैठा और हाल कहने लगा.

शुरू से अब तक का सब हाल भूतनाथ ने साफ - साफ और सच - सत्र शेरसिंह से कह सुनाया.

प्रभाकरसिंह के चुनार से भागने से लेकर जमना - सरस्वती और इन्दुमति का तिलिस्म में फँसना और भैयाराजा का उनकी मदद करना वगैरह सब हाल कहा.

अन्त में जमुना और सरस्वती का मरना, गौहर की गिरफ्तारी, दारोगा की बातें और गौहर का भागना तक सब हाल जो कुछ पाठक ऊपर पड़ चुके हैं खुलासा कहा और तब वह हाल पूरा - पूरा कह सुनाया जो रात को उसके ऊपर गुजरा था.

शेरसिंह बड़े गौर से सब हाल चुपचाप सुनता रहा.

बीच - बीच में भूतनाथ की बातें सुन उसका चेहरा तरह - तरह के भाव धारण करता और कभी लाल, कभी पीला और कभी सफेद होकर उसके दिल के भाव को जाहिर कर रहा था, पर मुँह से कुछ भी न कहा और न भूतनाथ को अपना हाल कहने में किसी तरह टोका या रोका ही.

जब सब हाल कह भूतनाथ चुप हो गया तो शेरसिंह ने एक लम्बी साँस ली और कहा, " गदाधरसिंह, मैं नहीं जानता था कि तुम ऐसे - ऐसे काम कर चुके या कर रहे हो.

यद्यपि बीच - बीच में मैं तुम्हारी हालत का पता बराबर लेता रहता था पर तुम यहाँ तक कर गुजरोगे इसका मुझे स्वप्न में भी गुमान न था.

अगर मुझे इन बातों का पता लगता तो बेशक मैं जिस तरह बन पड़ता तुम्हें उन कामों के करने से रोकता जिनके लिए आज तुम बिलख रहे हो, मगर अफसोस, मुझे कुछ भी खबर न थी कि तुम्हारे हाथ से ऐसे काम हो रहे हैं जिनके कारण तुम हद्द दरजे की मुसीबत में हो और बदनामी का पहाड़ गिराकर तुम्हें अपने नीचे कुचल दिया चाहता है.

गदाधरसिंह, सच तो यह है कि तुम्हारे इन कर्मों को सुन मुझे तुमसे घृणा हो गई है और तुम्हारा मुँह देखना पसन्द नहीं करता भूत ०:

(गर्दन झुक्रा कर) बस जब तुम्हीं मुझसे ऐसी बातें करने लगे तो हो चुका.

अब मैं कुछ न कहूँगा और न तो तुम्हें और न अपने किसी साथी को ही कभी अपना मुँह दिखाऊँगा.

मालूम हो गया है कि मेरी दुनिया बस इतनी ही थी अब मैं तुमसे विदा होता हूँ और किसी घने जंगल में छिपकर .

.

.

.

.

!

इतना कहता हुआ भूतनाथ उठ खड़ा हुआ मगर लपककर शेरसिंह ने उसे पकड़ लिया और यह कहते हुए अपने स्थान पर बैठाया, " नहीं - नहीं, गदाधरसिंह, मेरे कहने का वह मतलब नहीं है जो तुम समझ बैठे हो.

मेरा मतलब यह है कि जब तक तुम अपनी अवस्था में परिवर्तन नहीं करोगे, अपने को नहीं सुधारोगे, अपने दुष्ट और पतित साथियों को नहीं छोड़ोगे और भले कामों में मन

नहीं लगाओगे, तब तक न तो मैं तुम्हारा साथ दूंगा और न तुम्हें ही इस संसार में कभी शान्ति मिलेगी.

भूत:

तब आप क्या चाहते हैं?

मैं क्या करूँ मैंने तो सोच लिया था कि अब इस दुनिया को ही छोड़ दूंगा.

शेर ०:

भला ऐसा करने का क्या नतीजा निकलेगा?

ऐसा करोगे तो और भी बदनाम हो जाओगे.

आदमी के हाथ से अगर कोई खराब काम हो जाए तो दृढ़ता और साहस के साथ उस किए हुए को मिटाने का उद्योग करना चाहिए.

जो कुछ तुम कर चुके हो उसका जबाब यह नहीं है कि दुनिया से गायब हो जाओ.

नहीं, नहीं यह नामर्दो का काम है जो मुसीबत को काल समझते हैं और आफतों से ही घबड़ाते हैं जितना चोर सजा से.

नहीं दुष्कर्मों का जबाब इस दुनिया में यदि कुछ है तो सुक्रर्म है! अगर तुम्हारे हाथ से एक या दो चार खराब काम हो गए हैं तो दस - बीस या चालीस भले काम करके उनके कलंक को धो डालो और दुनिया को बता दो कि मैंने अगर दो काम बुरे किए हैं तो सौ काम अच्छे किए हैं ।

जिस रोज तुम ऐसा कर सकोगे उस दिन तुम दुनिया को दिखा सकोगे कि तुम्हारी जिन्दगी के तराजू में पाप का पलड़ा ऊपर को और पुण्य का पलड़ा नीचे को झुका हुआ है, उसी रोज कोई फिर तुम्हें उँगली दिखाने का साहस न करेगा, कोई यह कहने की हिम्मत न करेगा क्रि गदाधरसिंह पातकी है.

क्योंकि ऐसा इस दुनिया में कोई भी नहीं है जो दृढ़ता के साथ यह कह सके कि मेरे हाथ से कभी कोई दुष्कर्म हुआ ही नहीं! दुनिया में हर एक छोटे से लेकर बड़ा तक, किसी न किसी दुष्कर्म के बोझ से दबा हुआ है.

मुझे या इन्द्रदेव को ही लो, क्या हमें एकदम से पवित्र समझते हो?

नहीं, कभी नहीं, फिर तुम्हें घबड़ाने की क्या जरूरत है?

उठो, होश सम्भालो, और अपने पिछले कर्मों का बदला इस तरह पर अदा करो कि दुनिया कहे- गदाधरसिंह ने अगर एक काम बुरा किया तो सौ काम अच्छे किए हैं ।

वह उंगली दिखाने के लायक नहीं है.

' बताओ यह तरकीब अच्छी है या कहने का मौका देना कि ' गदाधरसिंह ने ऐसे पाप किए कि वह दुनिया में किसी को मुंह देखाने के काबिल नहीं रह गया ', तुम्ही विचार करो और बताओ कि दोनों में क्या अच्छा है?

भूत ०:

आपकी बातें मेरी हिम्मत बढ़ाती हैं, मुझे मालूम होता है कि अब भी मेरे कर्मों का प्रायश्चित है.

शेर ०:

बेशक है, हजार बार है, और वह यही है कि सुकर्म करके पिछली बदनामी को धो डालो, ऐसे - ऐसे काम करो कि दुश्मनों के भी दाँत खट्टे और उन्हें भी कहता पड़े.

" वेशक गदाधरसिंह सचमुच मर्द निकला! उसने सब पापों को धोकर बहा दिया.

" भूत:

तो आप मुझे क्या करने का उपदेश देते हैं?

शेर ०:

बस यही कि अब तक जो कुछ तुम कर चुके हो उसे बिल्कुल ही भूल जाओ, समझ लो कि वह एक दुखान्त नाटक का अन्तिम दृश्य था जिस पर सदा के लिए पर्दा पड़ गया.

दारोगा और जैपाल जैसे बेईमानों का साथ एकदम छोड़ दो और पिछली किसी बात का ख्याल न कर उनके साथ किसी तरह का रहम और मुरौबत का बर्ताव करना भी भूल जाओ.

आजकल दामोदर सिंह के मारे जाने से जमानिया भर में हलचल मच गई है, सब लोग घबड़ाए हुए हैं, राजा गिरधरसिंह बेचैन हो रहे हैं, कुँवर गोपालसिंह बदहवास हो रहे हैं, बलभद्रसिंह घबड़ा गये हैं.

इन लोगों की मदद करो, दामोदर सिंह के खूनी का पता लगाओ, महाराज गिरधरसिंह से मुनासिब समझो तो मिलो और ऐसे आड़े वक्त पर उनके काम आओ, इन्द्रदेव पर कई तरह की मुसीबतें आ पड़ी हैं, जिनके मुख्य कारण तुम्हीं हो) - उनकी मदद करो.

समझ रखो कि लाख हो पर वे तुम्हारे साथ बराबर दोस्ती का ही बर्ताव रखेंगे.

तुम पर भरोसा करेंगे.

तुम्हारी मदद करेंगे, तुम्हारे पिछले कलंकों को दूर करके तुम्हारी नेकनामी के बायस बनेंगे.

तुम उनसे मिलो और जो कुछ मैंने कहा है उनको सुना कर उनकी राय लो.

जहां तक मैं समझता हूँ वे भी मेरी तरह तुमसे कहेंगे, गदाधरसिंह, जो हो गया उसे जाने दो, उनका ख्याल एकदम भूल जाओ, उसे किसी दुखान्त उपन्यास का एक वैसा पृष्ठ समझो जो कि सदा के लिए उलट दिया गया है और अब पुन:

सामने नहीं आवेगा.

नये सिरे से कमर कस कर इस कर्ममय संसार में उतरो और कुछ नामवरी पैदा करो.

अगर मेरी विचारशक्ति मुझे धोखा नहीं दे रही है तो बेशक तुम इन्द्रदेव को भी वैसा ही मेहरबान और हमदर्द पाओगे जैसा मुझको.

भूत ०:

(आँखें डबडबाकर) शेरसिंह, मैं तुम्हें भाई समझता था और समझता हूँ, मगर भाई से भी बड़कर मैं अपना दोस्त और सलाहकार समझ सकता हूँ.

मैं नहीं कह सकता कि तुम्हारी बातों ने मुझे कैसी शान्ति पहुँचाई है.

तुम्हारी इस नेक सलाह ने मेरे दिल में घर कर लिया है.

मैं जरूर वही करूँगा जो तुमने कहा है और दिखा दूंगा कि मैं क्या - क्या कर सकता हूँ.

आज से पिछली बातों और घटनाओं को मैं दु:खदाई स्वप्न की तरह बिल्कुल ही भूल जाता हूँ और अपनी मैली हो गई नेकनामी की चादर को धोने का उद्योग करता हूँ, और शेरसिंह, खूब खयाल रखो कि या तो मैं कामयाबी ही हासिल करूंगा और नहीं तो यह दुनिया ही छोड़ दूंगा.

बस अब मुझे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ दो.

इतना कह भूतनाथ उठ खड़ा हुआ.

शेरसिंह भी उठ खड़ा हुआ.

भूतनाथ ने उसे पुन:

गले लगाया और देखते - देखते घने जंगलों में घुस आँखों की ओट हो गया.

दसवा व्यान।

] सांबलसिंह को जिंदा करने के बाद गौहरएक साफ जगह बैठ गई और गिल्लन के साथ धीरे - धीरे बातें करने लगी.

गौहर:

रामदेई से मिलने पर मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई जिसे तुम सुनोगी तो ताज्जुब करोगी.

गिल्लन:

वह क्या?

गौहर:

मगर इस बात को खूब छिपाये रखना.

गिल्लन:

मुझसे ज्यादा छिपाकर तुम भी रख न सकोगी, मगर कुछ कहो भी तो! गौहर:

रामदेई अपने शौहर को नहीं पहिचानती! गिल्लन:

क्या कहा! रामदेई गदाधरसिंह को नहीं जानती.

गौहर:

हाँ.

गिल्लन:

भला यह भी कोई बात है, जिसके संग बराबर रहना उसे जानेगी नहीं! गौह:

वेशक मैं जो कुछ कहती हूँ बहुत ठीक कह रही हूँ, बात यह है कि रामदेई समझती है कि उसका गदाधरसिंह वास्तव में रघुवरसिंह गिल्लन:

रघुबरसिंह कौन?

वही तो नहीं जिसे लोग जैपालसिंह कहकर पुकारते हैं और जो जमानिया के दारोगा साहब का बड़ा दोस्त है?

गौहर:

हाँ - हाँ वहीं, यह बड़ी दिल्लगी की बात हुई है.

वास्तव में हुआ यह कि इस रामदेई को वह रघुबरसिंह इसके घर से फुसला कर निकाल ले भागा.

इस बीच ही में गदाधरसिंह उसकी सूरत बनकर या न जाने किस तरह से उसे उड़ा ले गया और तब से उसी के पास है.

रघुबरसिंह समझता है कि उसकी रामदेई मर गई और रामदेई समझती है कि यह गदाधरसिंह ही उसका रघुबरसिंह है और किसी सबब से अपना नाम - भेष बदलकर गदाधरसिंह बना हुआ है! गौहर:

तुम्हें विश्वास करना पड़ेगा, जो कुछ मैं कह चुकी उसमें रत्ती भर भी गलती नहीं और इसके सबूत में मैं खास गदाधरसिंह के हाथ की चीठी तुम्हें दिखा सकती हूँ, इतना कह गौहरने अपनी चोली में छिपी हुई एक चीठी निकाली और गिल्लन के हाथ में देकर बोली, " लो इसे पड़ो.

" गिलनने वह चीठी पड़ी, यह लिखा हुआ था:

" मेरे प्यारे दोस्त, तुम्हारी कारीगरी काम कर गई.

रामदेई को मैं उड़ा लाया और कम्बख्त रघुबर को रत्तीभर शक न हुआ.

मगर अब इतनी मदद तुम्हें करनी चाहिए कि कोई ऐसी कार्रवाई हो जाय जिसमें वह अपनी रामदेई को मरा हुआ समझकर निश्चिन्त हो जाय, नहीं तो कभी न कभी शिकार के निकल जाने का डर बना ही रहेगा.

तुम्हारा वहीं - गदाधर गिल्लन ने बड़े गौर से दो - तीन दफे उस चीठी को पड़ा और तब कहा, " वेशक, यह लिखी हुई तो गदाधरसिंह ही के हाथ की है.

" गौहर:

क्यों, अब तो तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास हुआ?

गिल्लन:

बेशक, इससे बड़ कर सबूत क्या मिल सकता है, मगर यह चीठी तुम्हारे हाथ क्योंकर लगी?

गौहर:

सो मैं अभी तुम्हें न बताऊँगी.

गिल्लन:

क्यों सो क्यों, क्या मैं तुम्हें धोखा दूंगी गौहर:

नहीं सो बात नहीं है, अच्छा सुनो.

गौहर ने झुककर गिल्लन के कान में कहा, जिसके सुनते ही वह चमक उठी और बोली, " ओफ ओह, यहाँ तक मामला बटवे चुका है?

मगर उसने तुम्हें यह चीठी दे दी क्योंकर?

" गौहर:

क्योंकि यह मेरे मतलब की है और इससे मैं गदाधरसिंह को अपने कब्जे में कर सकती हूँ, गिल्लन:

सो तो जरूर कर सकती हो, मगर मेरे सवाल का मतलब यह है कि यह उसने दे दी क्योंकर! ऐसा सबूत जल्दी कोई अपने हाथ से निकालता नहीं.

गौहर:

बस दे ही तो दी, समझ जाओ कैसे! गिल्लन:

(पुन:

उस चीजी को पड़कर) मगर अब तुम इस चीठी को क्या करोगी?

गौह:

इससे एक बहुत बड़ा काम निकलेगा, मगर अभी तो इसे कुछ दिन तक अपने पास रम्बृंगी फिर जो कुछ होगा देखा जायगा.

गिल्लन:

यह चीठी अगर जैपालसिंह को दिखा दो तो गजब हो जाय.

गौहर:

(हँसकर) भला इसमें कोई शक है! और सिर्फ यही नहीं, अभी देखो तो मैं क्या - क्या करती हूँ! अभी तो थीगणेश ही है, मगर .

.

.

.

.

गिल्लन:

मगर क्या?

गौहर:

मुझे फिर भी डर बना रहेगा कि कहीं पुनः भूतनाथ के कब्जे में न पड़ जाऊँ.

वह कम्बख्त बड़ा ही शैतान है.

गिल्लन:

अगर ऐसा ही है तो तुम अपने घर ही क्यों नहीं लौट चलतीं?

गौहर:

घर जाकर क्या कहेंगी?

गिल्लन:

आखिर कब तक इस तरह जंगल - जंगल मारी फिरोगी.

गौहर:

जब तक मेरी मर्जी चाहेगी.

गिल्लन:

तुम्हारे माँ - बाप क्या कहेंगे?

गौह:

मेरे पिता कुछ न कहेंगे!

गिल्लन:

और तुम्हारी माँ?

गौहर:

उसकी मुझे फिन ही क्या है?

वह मेरा कर ही क्या सकती है! गिल्लन:

ऐसा न हो, वे तुम्हें बहुत प्यार करती हैं, मुझे उन्हीं के सबब से आना पड़ा है! गौहर:

बस रहने दीजिये, जैसा प्यार करती हैं वह मैं बखूबी जानती हूँ, गिल्लन:

नहीं सो बात तुम नहीं कर सकतीं.

मैं खूब जानती हूँ कि उनका प्यार तुम पर सच्चा और उनकी आज्ञा तुम्हारे ही फायदे के लिए है, फिर भी.

.

.

गौहर:

(बात काटकर) सांवलसिंह का पुछल्ला तो मेरे पीछे लगा ही दिया था, अब तुम्हें भी भेज दिया कि मैं और भी वेबस हो जाऊँ और कुछ करने - धरने लायक न रहूँ! मैं समझती हूँ कि तुम्हें उसने यह जरूर कहा होगा कि जिस तरह हो समझा - बुझाकर मुझे घर लौटा ले आना.

thor गिल्लन:

(गम्भीरता से) हाँ यह उन्होंने जरूर कहा है और मैं समझती हूँ कि तुम्हारे लिए यही करना मुनासिब है.

क्या इसमें कोई हर्ज है?

तुम यह तो देखो कि वह तुम्हें चाहती कितना गौहर:

कितना चाहती हैं वह मैं जानती हूँ, गिल्लन:

नहीं - नहीं, ऐसा न कहो! गौहर:

क्यों न कहूँ, अब भी मुझे क्या सांवलसिंह का डर बना हुआ है कि जाकर चुगली खा देगा?

मैं कम्बख्त को जरा भी नहीं चाहती गिल्लन:

वे तुम्हारी माँ हैं, कम से कम तुम्हें उनकी इज्जत तो करनी ही चाहिए.

गौहर:

मगर सौतेली ही माँ तो! गिल्लन फिर भी क्या हुआ, माँ ही तो कही जायेंगी?

गौहर:

मुझे पैदा करने और प्यार करने वाली माँ मर गई, अब कोई दुनिया में मुझे चाहने वाला नहीं है! खैर इन सब बातों को जाने दो, इस समय तो मैं स्वतंत्र हूँ, न मां के कब्जे में हूँ न बाप के, जो चाहूँगी करूंगी.

तुम अगर चाहो तो मेरे साथ रहो और नहीं तो लौट जाओ और अपनी मालकिन से कह दो कि तुम्हारी लड़की नहीं आती.

गिल्लन:

बाह्, अब तो तुम मुझसे भी बिगड़ खड़ी हुई?

मैं क्या भला तुम्हारा साथ छोड़ सकती हूँ?

गौहर:

फिर इस तरह की बातें मुझसे न करो.

गिल्लन:

अच्छा न करूंगी.

मगर कुछ बताओ भी तो सही कि तुमने क्या करने का इरादा किया है?

कम से कम तुम उस बात का तो खयाल रम्छो जो अपने पिता से कर आई हो, उन्होंने तुम्हारे सुपुर्द जो काम किया है उसे तो पहिले करो.

गौहर:

वही बलभद्रसिंह वाली चीठी तो?

मैं आज ही वह चीठी बलभद्रसिंह के पास पहुँचाने का उद्योग करूंगी क्योंकि मुझे पता लगा है कि वह आजकल जमानिया ही में है.

गिल्लन:

हाँ मुझे भी यही पता लगा है.

खैर वह चीठी तो तुम्हारे पास मौजूद है न?

गौहर:

हॉ - हाँ, यह देखो! यह कह गौहर ने अपने कपड़ों के अंदर हाथ डाला और साथ ही चौंक कर बोली, " हैं, वह चीठी क्या हुई?

इसी जगह तो छिपाई हुई थी! " गौहरघबड़ा गई और उस चीठी को तलाश करने लगी जो उसके बाप ने बलभद्रसिंह के हाथ में देने के लिए सुपुर्द की थी.

पर तमाम जगह खोज डालने पर भी उसे वह चीठी कहीं न मिली और उसने बेचैनी के साथ कहा, " बेशक मेरी बेहोशी की हालत में वह चीठी गदाधरसिंह ने निकाल ली.

अब क्या होगा?

गिल्लन:

यह तो बड़ा बुरा हुआ! गौहर:

बेशक बड़ा बुरा हुआ, उस चीठी में कुछ बहुत ही गुप्त बात लिखी हुई थी क्योंकि मेरे बाप ने मुझे देते समय उसे बहुत हिफाजत से रखने के लिए बार - बार कहा था.

अब तो मुझे मालूम होता है कि जरूर उसी चीठी के लिए भूतनाथ ते मुझे गिरफ्तार किया था.

गिल्लन:

हाँ, मैं भी ऐसा ही सोचती हूँ और जरूर उसी ने वह चीठी निकाली है, मगर रामदेई वाली चिट्ठी.

.

.

.

.

गौहर:

उसे मैंने बहुत छिपाकर रखा हुआ था शायद इसी से उसके हाथ न लगी.

मगर अफसोस, अगर मैं जानती तो इस चीठी को भी ज्यादा हिफाजत से रख सकती थी, पर मुझे यह गुमान कब था कि इस तरह पर गदाधरसिंह के कब्जे में पड़ जाऊँगी! गिल्लन:

खैर अब अफसोस करना तो बिलकुल फ़िजूल है, मेरी समझ में तो, चीठी नहीं है भी तो एक बार बलभद्रसिंह से मिलो और उससे सब हाल कहो.

गौहर:

हाँ जरूर ऐसा ही करना पड़ेगा, साँवलसिंह लौटे तो अब चलना चाहिए.

गिल्लत:

लो वह भी आ पहुँचा.

वास्तव में सॉवलसिंह इन्हीं लोगों की तरफ चला आ रहा था.

उसे देख ये दोनों उठ खडी हुई और जब वह वापस पहुँचा तो गौहर ने पूछा, " कहो क्या कर आये?

" सॉवल:

उन दोनों में से सिर्फ एक को मैं पहिचान सका.

गौहर:

वह मर्द कौन था?

साँवल ०:

वे प्रभाकरसिंह थे पर उनके साथ की औरत को मैं बिलकुल जानता न था.

वे दोनों बात करते हुए जा रहे थे, कुछ दूर जाने के बाद घोड़े तेज कर निकल गये, लाचार मैं भी लौट आया.

इन तीनों में कुछ देर बातें होती रहीं और तब पुन:

ये लोग उधर ही को रवाना हुए जिधर जा रहे थे,

11वा व्यान।

दामोदरसिंह के जमानिया वाले आलीशान महल के फाटक के ऊपर जो इमारत बनी हुई है उसमें आजकल इन्द्रदेव का डेरा पड़ा है जो अपने ससुर के मरने की खबर पाकर यहाँ आए हुए हैं और आज इसी जगह हम भूतनाथ को भी देख रहे हैं जो इन्द्रदेव से मिलने की नीयत से कुछ ही देर हुई आया है और बाहरी कमरे में बैठा हुआ उसके आने की राह देख रहा है त्र्योंकि नौकर की जुबानी इन्द्रदेव ने उसे कहला भेजा है कि मैं एक जरूरी काम से छुट्टी पाकर अभी आता हूँ, पाठकों को साथ ले हम भूतनाथ को यहीं छोड़ अन्दर की तरफ चलते और देखते हैं कि इन्द्रदेव क्या कर रहे हैं या किसजरूरी काम में फंसे हुए मगर इमारत के सबसे ऊपरी हिस्से में एक छोटा मगर खूबसूरती के साथ सजा हुआ बंगला है.

इन्द्रदेव इस समय इसी बंगले में एक आरामकुर्सी पर लेटे हुए उस आदमी की बातें बड़े गौर से सुन रहे हैं जो उनके सामने एक कुर्सी पर बैठा हुआ है.

इस आदमी का चेहरा नकाब से ढका हुआ है इस कारण हम इसकी सूरत शक्ल के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते हाँ इसकी पोशाक इत्यादि की तरफ ध्यान देने से जरूर मालूम होता है कि यह कोई ऐयार है क्योंकि खंजर के अलावा इसके पास ऐयारी का बटुआ और क्रमन्द भी दिखाई दे रहा है.

इस समय यह आदमी कोई गुप्त हाल इन्द्रदेव को सुना रहा है जिसे वे बड़े ध्यान से सुन रहे हैं और बीच - बीच में कोई सवाल भी करते जाते हैं.

इन्द्र ०:

इन बातों का पता भी आपको अपने उसी शागिर्द की जुबानी लगा होगा?

नकाबपोश:

जी हाँ, और यद्यपि कहा जा सकता है कि ऐसा करके मालिक के दोस्त के साथ बुराई की और इस पर अपने मालिक के साथ विश्वासघात किया, पर यह एक ऐसी खबर थी कि जिसे सुन और जानकर मैं चुप भी नहीं रह सकता था.

इन्द्रदेव:

बेशक ऐसा ही है.

इन सब बातों को जानकर आप बिना कुछ किए किसी तरह रह नहीं सकते थे.

और इसके लिए कोई यदि आपको दोष दे तो वह पूरा बेवकूफ है.

आपने उसको कैद से छुड़ाकर मेरे ऊपर एड्सान किया है और इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ, नकाब ०:

यह आपकी मेहरबानी है जो आप ऐसा कहते हैं.

मैं आप को अपना बड़ा मानता हूँ और इस जगह मुझे सिर्फ आप ही का भरोसा भी है, इसलिए मैंने यह सब हाल आपको सुना देना बहुत ही जरूरी समझा क्योंकि यह तो मुझे वृत्त निश्चय है कि आपके ससुर की मौत और इस घटना के बीच कोई न कोई संबंध जरूर है.

इन्द्रः:

बेशक ऐसा ही है और आपने बहुत अच्छा किया जो मुझे ये सब बातें बता दीं, नहीं तो मैं सख्त परेशानी में पड़ा हुआ था.

अच्छा अब आपका क्या इरादा है?

क्या आप जमानिया में और कुछ दिन रहेंगे?

नकाब:

जी नहीं, मैं शीघ्र ही लौट जाऊँगा, कदाचित आपसे पुन:

मिलने का मौका अब मुझे न मिले, यही समझकर वेमौका होने पर भी यहाँ आया था और अब यदि आज्ञा हो तो जाऊँ.

इन्द्रः:

कैसे कहूँ, यदि गदाधरसिंह के आने की इत्तिला मुझे न मिली होती तो कुछ देर तक और भी रोकता और बातें करता.

नकाब ०:

गदाधरसिंह के विषय में तो मुझे केवल आप ही का भरोसा है, आप ही के साथ से वह ठीक हो सकेगा तो होगा नहीं तो मुझे उसके विषय में अब कुछ भी उम्मीद नहीं रह गई, इस बारे में जो कुछ कहना था मैं कह चुका हूँ पर फिर भी इतनी प्रार्थना है कि उस पर दया बनाए रहियेगा.

उसके हाथ से बहुत दुष्कर्म हो चुके और हो रहे हैं.

इन्द्र ०:

मेरे हाथ से इसका कोई अनिष्ठ कदापि न होगा, इसका आप विश्वास रखें, मैं बराबर उसको सुधारने की ही जेष्ठा में लगा रहता हूँ, पर मेरी खुद अल हैरान हो रही है कि उसे किस तरह कब्जे में करूँ! नकाब ०:

मुझे तो उम्मीद है कि अब वह सम्हल जाएगा, इस बार की चोट उसके दिल पर बैठ गई है और अगर उसमें कुछ भी आदमीयत होगी तो वह कभी उस रास्ते पर पैर न रखेगा जिसने उसे इस दशा तक पहुंचाया है.

इन्द्र ० देखिए, ईश्वर की इच्छा! इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और वह नकाबपोश भी खड़ा हो गया.

दोनों आदमी साथ ही साथ नीचे आये जहाँ कुछ और बातचीत के बाद इन्द्रदेव ने उसे विदा किया और तब उस कमरे की तरफ बढ़े जिसमें भूतनाथ के होने की उन्हें खबर लग चुकी थी.

भूतनाथ इस समय बेचैनी के साथ कमरे में इधर से उधर टहल रहा था.

इन्द्रदेव के पहुंचते ही वह रुककर खड़ा हो गया.

यद्यपि पहिली ही निगाह में इन्द्रदेव ने उसके दिल का भाव भली प्रकार समझ लिया और जान लिया कि बेचैनी और घबराहट ने उसे अपना शिकार बनाया हुआ है तथापि उन्होंने बनावटी मुस्कुराहट के साथ कहा, " कहो भूतनाथ, अबकी तो बहुत दिनों पर आये! क्या हाल है?

बहुत सुस्त मालूम पड़ रहे हो! " भूत::

मेरी सुस्ती और उदासी का पूछना ही क्या है, बस जान बची हुई है इसे ही गनीमत समझिए! इन्द्र ०:

क्यों - क्यों, ऐसा क्यों?

भूत:

जैसी - जैसी आफतें मेरे ऊपर आई हैं उनको झेलकर भी जीता हूँ, यह मेरी बेहयाई है! इन्द्रः:

(अपनी गद्दी पर बैठकर) इस तरह पर नहीं, आओ मेरे सामने बैठो और साफ बताओ कि क्या बात है तथा तुम किस प्रकार मुसीबत में हो?

भूतनाथ इन्द्रदेव के सामने मगर उनसे कुछ हटकर बैठ गया और अपने चारों तरफ देखकर बोला, “ यहाँ कोई मेरी बातें सुनने वाला तो नहीं है?

" इन्द्रः:

नहीं कोई नहीं, ऐसा ही सन्देह है तो दरवाजा बन्द कर सकते हो.

" हाँ, यही ठीक होगा! " कह भूतनाथ ने उठकर कमरे का दरावाजा बन्द कर दिया और तब पुनः अपनी जगह पर आकर बैठ गया.

कुछ देर के लिए सन्नाटा हो गया.

इन्द्रदेव बड़े गौर से भूतनाथ की सूरत देख रहे थे जो जमीन की तरफ सिर झुकाये न जाने क्या सोच रहा था.

आखिर एक लम्बी साँस लेकर लेकर भूतनाथ ने सिर उठाया और इन्द्रदेव की तरफ देख हाथ जोड़कर बोला, “ मेरे हाथ से आपका एक बड़ा भारी कसूर हो गया है ।

इन्द्र ०:

सो क्या?

भूत ०:

यदि आप मुझे माफ करें तो मैं कहूँ! इन्द्र ०:

ऐसा कौन - सा काम तुम कर बैठे कि माफी की जरूरत है?

भूत ०:

जमना और सरस्वती का मैंने खून कर डाला है.

भूतनाथ की बात सुन इन्द्रदेव चौंक पड़े, यद्यपि वे जानते थे कि भूतनाथ नकली प्रभाकरसिंह बनकर घाटी में घुस गया था और इसके बाद उसने (नकली) जमना और सरस्वती को मार डाला, पर यह विश्वास उन्हें कदापि न था कि वह उनके सामने इस तरह पर अपना कसूर साफ - साफ बयान कर देगा.

वे कुछ आश्चर्य में होकर भूतनाथ का मुंह देखने लगे.

भूत:

एक ऐसी घटना हो गई है जिसने मुझे साफ - साफ बता दिया है कि मैं बहुत बुरे रास्ते पर जा रहा हूँ और अगर अब भी अपने को न सम्हालूंगा तो दुनिया में किसी को मुंह दिखाने लायक न रहूँगा.

आप पर मेरी श्रद्धा है और मुझे दृढ़ विश्वास है कि आप मेरे हितेच्छु हैं, अस्तु यह सोचकर मैं आपके पास आया हूं कि अपने सब कसूर साफ - साफ कह दूंगा, और तब यदि आप मुझे क्षमा करेंगे बल्कि मुझे अपने को सम्हालने में सहायता देंगे तो फिर से इस दुनिया में कुछ नेकनामी हासिल करने की कोशिश करूँगा.

मुझे दृढ़ निश्चय है कि आप ऊपर से नहीं तो भी दिल से मुझे प्यार करते हैं और यदि मेरे हाथ से आपका कोई अनिष्ठ भी हो जाय तो आप मुझे माफ कर देंगे.

यही सोचकर मैं आपके पास आया हूँ कि अपने सब कसूर, अपनी सब भूलें, अपने सब दुष्कर्म, आपके सामने कह सुनाऊँ और यदि आप मुझे माफी के अयोग्य ठहराएँ तो फिर इस दुनिया ही को छोड़ दूं, क्योंकि अब मुझे बदनामी के साथ इस संसार में रहना मंजूर नहीं है.

इन्द्र ०:

तुम्हारे स्वभाव में इतना परिवर्तन हो गया देख मुझे आश्चर्य होता है.

भूत ०:

जो बात देखने में आई है वह यदि आप देखते तो आपको और भी आश्चर्य होता.

अपनी आँखों से मैंने मुर्दो को बातें करते देखा है.

इन्द्र ०:

(आश्चर्य से) सो कैसे और कहाँ?

इसके जबाब में भूतनाथ वह बिलकुल हाल बयान कर गया जो हम ऊपर के चौथे बयान में लिख आये हैं.

इन्द्रदेव चुपचाप सब हाल सुनते रहे.

इस समय उनका चेहरा बड़ा गंभीर था.

और इस बात का पता लगाना बिलकुल असंभव था कि उनके दिल में क्या बातें उठ रही हैं या वे क्या सोच रहे हैं.

वह हाल कह सुनाने के बाद भूतनाथ अपना बाकी सब हाल यानी नागर के मकान से निकलती समय मेघराज के साथ हो प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार कर दारोगा के कब्जे में पहुँचाने से लेकर तिलिस्मी घाटी में जाने और विचित्र ढंग से बाहर निकलने के बाद नकली जमना और सरस्वती के मार डालने तक सब हाल कह सुनाया जिसे इन्द्रदेव चुपचाप सुनते रहे.

सब हाल कहकर भूतनाथ ने कहा- " मैंने सब हाल सच्चा - सच्चा और साफ - साफ आपको कह सुनाया, अब वह आपके हाथ में है कि मुझे मारें या जिलावें क्योंकि यदि आप मुझे सच्चे मन से क्षमा न कर देंगे तो मैं इस दुनिया में किसी लायक न रहूँगा! "
इन्द्र ०:

(लम्बी साँस लेकर) मेरा तुम्हारे ऊपर जोर ही क्या है और मेरे माफ करने या न करने से होता ही क्या है.

मैं हूँ कौनचीज! माफ करने और न करने वाला तो ईश्वर है जो सबका भला - बुरा देखता है और साथ ही सबको सजा देने की भी कुदरत रखता है.

१.

भूतनाथ अभी तक बिल्कुल नहीं जानता कि यह मेघराज कौन है पर हमारे पाठक बखूबी जानते हैं कि दयाराम ही का नाम इन्द्रदेव ने मेघराज रख दिया था और आजकल वे सर्वत्र इसी नाम से पुकारे जाते हैं.

भूत:

(लम्बी साँस लेकर) बस मालूम हो गया! मैं समझ गया कि आप मुझे माफ करना मुनासिब नहीं समझते! खैर तो मैं जाता हूँ !! इतना कह एकाएक भूतनाथ उठ खड़ा हुआ, मगर यह देखते ही इन्द्रदेव भी उठ खड़े हुए और भूतनाथ का हाथ पकड़कर बोले- " बैठो बैठो, भागे क्यों जाते हो?

कुछ सुतो भी तो सही! " भूत:

नहीं, अब मैं कुछ सुना नहीं चाहता, जब आप ही मुझसे खफा हैं तो फि क्या?

यद दुनिया किस मसरफ की है! इन्द्र ०:

नहीं नहीं भूतनाथ, मैं तुमसे खफा नहीं हूँ.

मेरा कहने का मतलब तो सिर्फ यही है कि तुम ईश्वर से प्रार्थना करो वहीं तुम्हारे कसूरों को माफ करेगा, मैं माफ करने वाला कौन?

भूत:

इस समय मेरे ईश्वर आप ही हैं.

मैं आप ही को अपना बड़ा बुजुर्ग, सलाहकार, दोस्त, मुरब्बी सब कुछ समझता हूँ और आप ही पर भरोसा करता हूँ.

इन्द्र ०:

यह तुम्हारी गलती है.

भूतः:

खैर जो कुछ हो, इस समय तो आप ही मेरे सब कुछ और आप ही से मैं माफी की उम्मीद रखता हूँ, इन्द्रदेव ने यह सुनकर लम्बी साँस ली और तब भूतनाथ का हाथ छोड़ कुछ सोचते हुए कमरे में इधर से उधर टहलने के बाद उन्होंने कहा, " भूतनाथ, तुम मुझसे माफी चाहते हो, और मैं अब भी तुम्हें माफ करने को तैयार हूँ, मगर तुमने यह भी कभी सोचा है कि तुमने मेरे साथ जैसा - कैसा बर्ताव किया है! कौन - सा ऐसा काम है जो तुम्हारे हाथ से नहीं हुआ, कौन - सा ऐसा पाप है जिससे तुम बचे हुए हो?

मैं नहीं चाहता कि अपने मुँह से इन बातों का जिक्र करूँ मगर फिर भी मुझे कहता ही पड़ता है कि तुमने हदसे ज्यादा अत्याचार किए हैं.

अपने कई निरपराध शागिर्दो की हत्या की अपने दोस्त गुलाबसिंह को तुमने मारा, भैया राजा तुम्हारी ही बदौलत खटाई में पड़ गये, दयाराम के मारने का इलजाम तुम्हारी गर्दन पर मौजूद था ही और अब तुम उनकी बेकसूर दोनों स्त्रियों को मार डालने का हाल मुझे सुना रहे हो- अब तुम ही सोचो कि ऐसी हालत में मैं क्योंकर तुम्हें माफ कर सकता हूँ या अगर मेरी जुबान तुम्हें माफ कर भी दे तो मेरा दिल क्योंकर उस बात को कबूल कर सकता है?

आखिर मैं भी तो आदमी हूँ, मेरा कलेजा तो पत्थर का नहीं है.

अपनी आँख से तुमको अपने निर्दोष रिश्तेदारों और दोस्तों का अनिष्ठ करते देखकर भी मैं कहाँ तक बर्दाश्त कर सकता हूं भला तुम ही तो इस बात पर विचार करो कि यदि इस समय मेरी जगह पर तुम होते और मैं तुम्हारा कसूरबार होता तो तुम्हारा दिल क्या कहता! " भूतनाथ की आँखों से बराबर आँसू जारी थे.

इन्द्रदेव की बातें सुन उसका दिल भर आया और वह हाथ जोड़ हिचकियाँ लेता हुआ बोला, “ इन्द्रदेवजी, बेशक आप मुझे माफ नहीं कर सकते! यह मेरी गलती है कि ऐसे कर्म करके भी मैं माफी की उम्मीद करता हूँ.

मगर फिर भी इन्द्रदेव, आपका हृदय कितना प्रशस्त है इसे मैं बाखूबी जानता हूँ और इसी भरोसे पर कहता हूँ कि आप इस बार और मेरे अपराधों को क्षमा करें.

इस संकट के मौके पर आप मुझ पर भरोसा करें और मुझसे काम लेकर अपने पिछले पापों का प्रायश्चित करने का मौका दें अगर आप ऐसा न करेंगे तो मैं कहीं का न रहूँगा!

" इन्द्र ०:

(कुछ सोचकर) खैर तुम इस तरह पर कह रहे हो तो मैं तुम्हें माफ करता हूँ- सच्चे दिल से माफ करता हूँ! " इन्द्रदेव की यह बात सुनते ही गद् गद् होकर भूतनाथ ने उनके पैरों पर गिरना चाहा मगर बीच ही में उन्होंने उसे गले लगा लिया.

दोनों दोस्त देर तक एक - दूसरे से लिपटे रहे, भूतनाथ की आँखों से अब भी आँसू जारी था.

इन्द्रदेव ने अपने रूमाल से उसकी आँखें पोछी और तब अपनी जगह पर ला बैठाया.

भूत मेरा दिल कहता था कि आप मुझे अवश्य माफ कर देंगे और सच तो यह है कि आपके ऐसे ऊँचे दिल का कोई आदमी आज तक मैंने देखा ही नहीं.

खैर अब इस विषय पर बात करना व्यर्थ है, अब जुबान से नहीं बल्कि अपने कामों से मैं आपको दिखला दूंगा कि मैं क्या कर सकता हूँ, या तो पिछली बदनामी की कालिख को दूर कर नेकनामी ही हासिल करूंगा और या फिर अपना काला मुँह कभी आपको न दिखाऊँगा.

इन्द्र ०:

ईश्वर तुम्हारी इच्छा को बनाये रखे.

खैर यह तो बताओ कि अब तुम क्या किया चाहते हो?

भूत:

इस समय और सब कामों का खयाल छोड़ मैं सिर्फ दो बातों की फिक्र में लगता हूँ, एक तो आपके ससुर की मौत के विषय में पता लगाना, दूसरे प्रभाकरसिंह को खोज निकालना.

इन्द्र ०:

प्रभाकरसिंह को तो तुम दारोगा के हवाले कर आये थे?

भूत:

जी हाँ, मगर पता लगाने से मालूम हुआ कि इधर हाल ही में उन्हें कोई छुड़ा ले गया और अब वे दारोगा के कब्जे में नहीं हैं.

इन्द्र ०:

ठीक है, मुझे भी ऐसी ही खबर लगी है.

भूत ०:

मेरे शागिर्दों ने दो - तीन बार उन्हें एक औरत के साथ इधर - उधर आते - जाते देखा है, इससे मैं उम्मीद करता हूँ कि बहुत जल्द उनका पता लगा लूँगा.

इन्द्र ०:

मैं क्या बताऊँ, मेरे ससुर की मौत ने मुझे एकदम परेशान कर दिया है.

मैं बिल्कुल घबड़ा गया हूँ और मुझको यह नहीं सूझता कि क्या करूँ.

तो भी मैं उनका पता लगाने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ, तुम भी कोशिश करो और पता लगाओ कि यह सब काम क्रिसका है.

भूतः:

मैं दिलोजान से क्रोशिश करूँगा मगर एक शक मुझे बारम्बार होता है.

इन्द्र ०:

क्या?

भूत:

यही कि दामोदारसिंहजी मारे नहीं गये, उनकी मौत के साथ कोई न कोई भेद छिपा हुआ है.

यह एक विचित्र बात है कि उनकी लाश पाई जाय और सिर का पता न हो! इन्द्र ०:

हाँ यही बात तो मुझे भी शक दिलाती है मगर कुछ ठीक पता नहीं लगता कि क्या मामला है, तुम ही कुछ कोशिश करके देखो.

भूत ०:

मैं पूरी कोशिश कर रहा हूँ और शीघ्र ही पुन:

आपसे मिलकर नई बातें बताऊंगा जिनको जानकर आप आश्चर्य करेंगे.

इन्द्रः:

मैं तुम्हारी चालाकी का कायल हूँ! भूत ०:

अब आज्ञा हो तो मैं जाऊँ?

इन्द्र ०:

अच्छा जाओ, मगर ख्याल रखना कि फिर कहीं दारोगा और नागर वगैरह के फन्दे में न पड़ जाता! भूत ०:

भला अब ऐसा हो सकता है! ईश्वर चाहेगा तो आप मुझको कभी उस रास्ते पर पैर रखते हुए न पावेंगे, इतनी तो मैं आपसे प्रतिज्ञा कर चुका हूं.

इन्द्र ०:

ईश्वर तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी करे.

भूतनाथ उठा और इन्द्रदेव को सलाम कर कमरे का दरवाजा खोल मकान के बाहर निकल आया.

भूतनाथ, अब क्या वास्तव में तू नेक राह पर आ गया है! क्या वास्तव में तूने उस पेचीले और कंटीले रास्ते को छोड़ दिया जो तुझे अंधेरे गार की तरफ ले जा रहा था! क्या वास्तव में तू बदनामी की सड़क को छोड़ नेकनामी की पगडण्डी पर पैर रखा चाहता है! यद्यपि तेरा कथन है, कथन ही नहीं निश्चय है, केवल निश्चय ही नहीं, तेरा प्रण है कि अब बुरे मार्ग पर न चलेगा, पर उन लोगों को जो तेरे दिल की मजबूती की थाह पा चुके हैं तेरे कहने पर विश्वास नहीं हो सकता, इसके पहिले भी अपने को सुधारते करते न जाने कितनी प्रतिज्ञा, कितने वादे तू कर और तोड़ चुका है जिनका हाल जानने वाला अब कभी भी तुझ पर और तेरी बातों पर भरोसा नहीं कर सकता और जिन्होंने सभी का विश्वास तुझ पर से उठा दिया है!

12वा व्यान।

अब हम अपने पाठकों को लेकर उस टीले वाले मकान के अन्दर चलना चाहते हैं जिसमें कई बार एक औरत के साथ प्रभाकरसिंह को आते - जाते देख चुके हैं और जिसका जिक्र भी कई जगह आ चुका है.

पहली बार जब पाठकों को उस मकान के पास जाने की जरूरत पड़ी थी तो समय रात का था पर आज ठीक दोपहर का मौका है और उनटनाती धूप में उनकी सुफेद झलक दूर से नजर आ सकती है क्योंकि टीले पर बने रहने के कारण पेड़ों की आड़ उसको पूरी तरह छिपा नहीं पाती.

घूमघूमौवा पगडंडी पर होते हुए जब आप उस टीले के ऊपर पहुँचेंगे तो आपको एक अजब समा नजर आयेगा.

आप देखेंगे कि घने और भयानक जंगल ने तीन तरफ से उस टीले को घेरा है और चौथी तरफ कुछ जमीन छोड़कर एक नाला बह रहा है जिसकी चौड़ाई बहुत कम नहीं है.

इस नाले के साथ - साथ जब आप निगाह को दूर ले जाएँगे तो अजायबघर का भी कोई अंश आपको अवश्य दिखाई पड़ जायेगा क्योंकि नाले के ऊपर बनी हुई एक वह विचित्र इमारत यहाँ से बहुत दूर नहीं है.

दक्खिन की तरफ यदि आप निगाह करेंगे और आपकी आँखें तेज़ होंगी तो आपको कुछ पहाड़ियों की कालिमा दिखाई पड़ेगी, मगर ये पहाड़ियाँ बहुत दूर हैं और सिबाय एक लम्बी नीली लकीर के और कुछ मालूम नहीं होता.

इस टीले के ऊपर कुछ जगह चारों तरफ छोड़कर वही मकान है जिसका ऊपर जिक्र हो चुका है.

सरसरी निगाह से देखने पर आपको वह मकान कुछ अजीब तरीके का नजर आवेगा क्योंकि इसके चारों तरफ सिवाय ऊँची दीवारों के कोई दरवाजा, खिड़की या झरोखा तक भी दिखाई नहीं पड़ता.

परन्तु बाहर से वह इमारत चाहे कैसी भी भोंडी, बेडौल या साधारण मालूम हो पर असल में वह एक विचित्र स्थान है और उसके अन्दर जाने वाले को आश्चर्यजनक चीजें नजर आ सकती हैं.

इस समय हमें इस मकान के अंदर चलना है इससे यदि आप भी हमारे साथ ही चलें तो भीतर की कुछ अद्भुत चीजें अवश्य देख पाएँगे.

यदि मकान का सदर दरवाजा बन्द है तो आप कोई फिक्र न कीजिए और हमारे साथ पश्चिम तरफ वाले हिस्से के सामने पहुँचिए जहाँ आपको एक पुरसे से कुछ कमकी ऊँचाई पर बनी हुई ' गणेश ' की लाल रंग की मूर्ति नजर आवेगी.

यह मूर्ति कुछ अजीब ढंग की बनी हुई है और इसका भाव यह है कि बालक गणेश दो साँपों को हाथ में लिये उनके साथ खेल रहे हैं.

यदि आप मकान के अन्दर जाना चाहते हैं तो आपको इन साँपों में से बाईं तरफ वाले का फन पक्रड़कर खींचना चाहिए.

यदि मकान के अन्दर रहने वालों ने यह राह बन्द करने के लिए खास तरकीब नहीं कर दी है तो फन खींचते ही हलकी आवाज होगी और सामने की दीवार का इतना बड़ा हिस्सा जमीन की तरफ धंस जायगा कि जिसके अन्दर दो आदमी बाखूबी घुस सकते हैं.

बस दरवाजा खुल गया और आप बेखटके अन्दर जा सकते हैं.

अन्दर जाकर आप अपने को ऐसी जगह पावेंगे जो लगभग दस गज के लम्बी और दो गज को चौड़ी होगी.

इसके दाहिने और बाएँ दोनों तरफ दो दालान हैं जो जमीन के लगभग हाथ भर ऊंचे पर बने हुए हैं और सामने की तरफ एक और दरवाजा है जिसके खोलने की जरूरत पड़ेगी.

पहिले दरवाजे की तरह इस दरवाजे के ऊपर भी वैसी ही मूर्ति बनी हुई नजर आवेगी और उसी तरकीब से यह दरवाजा भी खुल जायगा मगर इसके खुलने से पहले ही पहिला दरवाजा बन्द हो जायगा.

दूसरा दरवाजा ठप कर जब आप दूसरी तरफ पैर रखेंगे तो अपने को विचित्र जगह में पावेंगे.

आपके दाहिने और बायें तरफ तो पतली सी गली होगी जो ऊपर से खुली और सामने की तरफ लोहे की एक दीवार होगी जो बहुत ऊँची और पालिशदार है.

इस दीवार के दूसरी तरफ हो जाने पर असली इमारत में पहुँचेंगे मगर इसके अन्दर जाने का रास्ता इतना पेचीदा और खतरनाक है कि हम इस समय अपने पाठकों को उस रास्ते से ले जाया नहीं चाहते, वे हमारे साथ - साथ यह लोहे की दीवार ढपकर दूसरी तरफ पहुँच जाएँ और एक तरफ खड़े होकर कुछ अद्भुत चीज देखें.

एक छोटा - सा मैदान है जिसमें चारों तरफ किसी समय सुन्दर पौधे और गुलबूटे लगे हुए अपनी खुशबू से इस जगह आने वाले का दिमाग मुअत्तर कर देते होंगे पर इस समय सब सूखे पड़े हैं.

इस बगीचे या मैदान को चारों तरफ से उस लोहे की ऊँची चारदीवारी ने घेर रखा है जिसे टपकर आप इस तरफ आए हैं और इसके बीचोबीच में एक छोटी मगर सुन्दर इमारत है.

इस खूबसूरत इमारत की कुर्सी जमीन से छाती बराबर ऊंची है.

सामने की ओर दरावाजा पड़ता है और उस तक पहुंचने के लिए सुन्दर चार - चार अंगुल ऊँची सीढ़ियाँ बनी हुई हैं.

मगर यह सीड़ियाँ, दरवाजा, यहाँ तक कि यह पूरी इमारत बिल्कुल लोहे की बनी हुई जान पड़ती है और यह लोहा भी इतना साफ और चमकदार है कि सूरज की तेज रोशनी में उस पर आँख ठहरना मुश्किल है.

इस इमारत को देखने वाला पहिली ही निगाह में कह देगा कि यद्यपि यह इमारत बहुत खूबसूरत बनी हुई है मगर साथ ही मजबूत भी इतनी है कि हजारों वर्षों तक इसका कुछ नहीं बिगड़ सकता और इसमें रहने वाले आदमी का सैकड़ो दुश्मन भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते.

इस समय इस मकान का दरवाजा खुला हुआ है अस्तु आप बेधड़क इसके अन्दर जा सकते हैं.

दरवाजा पार कर सामने बटवेते ही मकान का चौक (सहन) पड़ता है और चारों तरफ खूबसूरत दालान तथा इन दालानों से चारों कोनों पर चार कोठरियाँ हैं, बस इस मंजिल

में इतना ही है, हाँ ऊपर जाने पर मुमकिन है कि कोई विचित्र चीजें नजर आ जायें, यह सहन, दालान और कोठरियाँ, यहाँ तक कि यहाँ की छत और दीवारें तथा जमीन भी बिल्कुल लोहे की बत्ती लगती हैं और ऊपर वाली मंजिल का भी जो कुछ अंश आँखों के सामने है वह भी लोहे ही का मालूम पड़ता है.

मगर हमें अभी ऊपर जाने की कोई जरूरत नहीं, चारों तरफ की इन कोठरियों ही से इस समय हमारा मतलब है.

मकान में घुसते ही बाईं तरफ जो कोठरी है उसमें ऊपर की मंजिल में जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई हैं.

कोठरी के दोनों तरफ दो दरवाजे हैं जो दोनों तरफ के दालानों में खुलते हैं और इसी प्रकार इन चारों कोठरियों में दो - दो दरवाजे हैं.

ये सभी दरवाजे इस समय खुले हुए हैं और इसलिए आप हर एक कोठरी के अन्दर घूम आ सकते और वहाँ का हाल - बाल देख सकते हैं.

दाहिने तरफ जो कोठरी है उसकी दीवारों में सिर्फ आलमारियाँ नजर आती हैं जिनमें तरह - तरह की विचित्र और अद्भुत चीजें रक्खी हुई हैं जो इस लायक हैं कि फुर्सत के समय देखी जाएं, इस कोठरी के अन्दर से होते हुए दालान पार कर आप दूसरी कोठरी में पहुँचेंगे तो उसे अन्दर से ईंट और चूने की बनी हुई पायेंगे.

कोठरी के बीचोंबीच में पत्थर का लाल रंग से रंगा हुआ एक चबूतरा है और उस पर लाल ही रंग के पत्थर का एक शेर बैठा हुआ है.

बस इसके सिवाय उस कोठरी में और कुछ नहीं है.

चौथी कोठरी में जब आप जायेंगे तो उसे बारूद के थैलों, गोलों, छोटी तोपों और लड़ाई के दूसरे सामानों से भरा हुआ पावेंगे, और एक तहखाने की सीढ़ियों की तरफ गौर करने से मालूम होगा कि इसके नीचे भी कोई कोठरी है जो शायद ऐसी ही भयानक चीजों से भरी हुई हो.

बस यही सब सामान है जो पहिली निगाह में यहाँ आने वाले को दिखाई देता है और जिसका बयान करने में इतना समय नष्ट करना पड़ा है क्योंकि अभी तक कोई

आश्चर्यजनक चीज यहाँ देखने में नहीं आई.

हॉ यहाँ इतना कह देना हम मुनासिब समझते हैं कि इस इमारत का नाम लोहगड़ी है और कहने के लिये तो यह जमानिया के राजा के कब्जे में है मगर इस समय तो यहाँ कोई और ही रहता है जिसका अभी तक कोई हाल हमने नहीं बताया.

सामने वाले दालान में इस समय उम्दा फर्श बिछा हुआ है और दो - चार तकिये भी पड़े हैं जिनके सहारे एक आदमी अधलेटा - सा पड़ा हुआ एक पंखे से अपनी गर्मी दूर कर रहा है क्योंकि इस मकान के अन्दर गर्मी मामूल से कुछ ज्यादा है.

इस आदमी की पोशाक सिपाहियाना है और इसके बगल में तलवार और दूसरी तरफ एक साफा रक्खा हुआ है जिससे मालूम होता है कि शायद कहीं जाना चाहता है और या फिर अभी कहीं से आ रहा है.

हमारे पाठक इस नौजवान को बखूबी पहिचानते हैं क्योंकि यह हमारा प्रसिद्ध पात्र प्रभाकरसिंह

प्रभाकरसिंह के चेहरे से प्रसन्नता नहीं प्रकट होती बल्कि वे कुछ चिन्तित और उदास से मालूम होते हैं और थोड़ी - थोड़ी देर पर उनका लम्बी साँसें लेना साफ कहे देता है कि इनका दिल किसी बोझ के नीचे दबा हुआ है.

इस समय इनकी आँखें बन्द हैं और ये किसी सोच में डूबे एक तकिए के सहारे अधलेटे पड़े हुए हैं.

कुछ देर बाद प्रभाकरसिंह आप ही आप इस प्रकार कहने लगे- " कुछ समझ में नहीं आता कि यह बात आखिर क्या है?

यह औरत कौनहै.

इसका मुझसे क्या संबंध है और यह मुझसे क्या चाहती है या किस बात की आशा रखती है?

यह भी साफ - साफ नहीं मालूम होता है कि यह मेरी दोस्त है या दुश्मन! अगर दोस्त ही होती तो असल भेद मुझसे क्यों छिपाती और इस जगह मुझे कैद क्यों रखती?

इसे कैद रखना ही कहते हैं कि अपनी मर्जी से मैं इस मकान के बाहर नहीं जा सकता हूँ, " मगर दुश्मन ही इसे क्योंकर कहूँ! अभी तक कोई बुरा बर्ताव तो इसने मेरे साथ नहीं किया, कोई तकलीफ़ नहीं दी, कोई कष्ट नहीं पहुँचाया बल्कि मेरे दोस्तों को खोजने और उनका पता लगाने में यह मेरी मदद कर रही है, अस्तु इसे दुश्मन भी नहीं मान सकता.

" इस मकान का भी कुछ पता नहीं चलता कि क्या बला है! न जाने कोई तिलिस्म या जादूगरी! इसके गुप्त दरवाजों, रास्तों और सुरंगों का कुछ अन्त ही नहीं मालूम होता.

मजबूत भी इतना है कि गोलों की मार से भी इसे नुकसान नहीं पहुँच सकता, बिल्कुल लोहे का बना मालूम होता है.

न जाने इतना मजबूत क्यों बनाया गया! इसमें तो कोई शक नहीं कि यह मकान विचित्र है और सम्भव है कि तिलिस्म से भी इसका कुछ संबंध हो, मगर जान पड़ता है इस औरत को भी इसका पूरा हाल मालूम नहीं है, यदि मालूम होता तो कुछ जरूर प्रकट होता.

" यह सब जाने भी दें तो कुछ भी तो नहीं मालूम होता कि आखिर मुझे कब तक इस तरह सड़ते रहना पड़ेगा, कब तक अपने दोस्तों और मेहरबानों से अलग रहना पड़ेगा!

इससे जब कहता हूँ तो बहाना कर जाती है, इस मकान के बाहर निकलने नहीं देती और यदि कभी निकलने दिया तो खुद बराबर साथ बनी रहती है, शायद यह सोचती हो कि कहीं मैं भाग न निकलूँ! यदि मुझे बाहर निकलने का रास्ता मालूम होता तो मैं कभी न रुकता, अवश्य बाहर निकल जाता पर वह रास्ता भी तो नहीं बताती और जै दफै यहाँ आती है एक नई राह से ही आती है ।

" जो कुछ हो पर इस जगह से बाहर निकलने के रास्ते का तो जरूर ही पता लगाना चाहिए.

उस शेर वाली कोठरी में से उसे निकलते मैंने कई बार देखा है और वहाँ से कोई न कोई रास्ता जरूर है.

अगर कोशिश करूं तो मुमकिन है कि कोई राह निकल आये.

आखिर बैठे - बैठे भी तो तबीयत घबराती है, कुछ मन ही बहलेगा !! " प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए.

उनसे बाईं तरफ वह कोठरी पड़ती थी जिसमें शेर की लाल मूरत पत्थर के चबूतरे पर बैठी हुई हम ऊपर लिख आये हैं.

प्रभाकरसिंह उसी कोठरी में पहुंचे और शेर को बड़े गौर से देखने लगे, कुछ देर बाद उन्होंने उसके भिन्न - भिन्न अगों पर हाथ फेरना और टटोलना शुरू किया.

नाक - कान आदि भिन्न - भिन्न अंगों को देखते - भालते हुए प्रभाकरसिंह ने उस शेर की एक आँख उगली से छुई तो पुतली कुछ हिलती हुई सी जान पड़ी.

अंगूठे से जोर किया और दबाया, दबाने के साथ ही उस शेर ने मुँह खोल दिया और प्रभाकरसिंह कुछ चिहुककर अलग हो गये.

कुछ देर तक अलग खड़े देखते रहे, जब कोई बात पैदा नहीं हुई तो कुछ सोचते और हिचकते हुए उस शेर के मुँह में हाथ डाला.

एक मुठ्ठा सा मालूम पड़ा, जिसे उन्होंने खींचना, दबाना और उमेठना चाहा.

वह सहज ही में घूम गया और प्रभाकरसिंह ने उसे उमेछना शुरू किया.

यकायक कुछ खटके की आवाज हुई, चबूतरे के सामने वाला पत्थर हट हट गया और आदमी के जाने लायक छोटा रास्ता दिखाई देता लगा.

प्रसन्नता से इस विचित्र रास्ते को देखने लगे.

' प्रभाकरसिंह कुछ १.

यह रास्ता या सुरंग और ढीला वही है जिसका हाल चन्द्रकान्ता सन्तति के नौवें भाग के आठवें बयान में लिखा गया है.

इसी सुरंग की राह ' देवमन्दिर ' में जाने का रास्ता था.

मगर उस जगह जो हालत इस स्थान की बयान की गई है वह बाद की दशा है और बैसी गति अभी यहाँ की नहीं हुई है ।

प्रभाकरसिंह अभी यह सोच ही रहे थे कि उस सुरंग में उतरें या न उतरें कि उन्हें अपने सामने किसी तरह की आहट सुनाई पड़ी जो उस सुरंग की राह आती मालूम होती थी.

कुछ आश्चर्य के साथ झुककर देखने लगे और उसी समय एक औरत को जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी सीडिया चढ़कर उसी राह से निकलते हुए पाया.

नकाब से चेहरा ढका रहने पर भी प्रभाकरसिंह उस औरत को बखूबी पहिचान गए क्योंकि उसी की बदौलत उन्हें कैदियों की तरह इस लोहगड़ी में बन्द रहना पड़ता था.

वह औरत सुरंग के बाहर आ गई और प्रभाकरसिंह को सामने देख आश्चर्य करने लगी.

औरत:

(प्रभाकरसिंह से) आप यहाँ खड़े क्या कर रहे हैं?

प्रभाकर :

(मुस्कुराकर) यह रास्ता खोलने की कोशिश कर रहा था.

औरत:

क्यों?

प्रभाकर :

ऐसे ही बैठे - बैठे जी उकता गया यहाँ आकर इसकी देखभाल करने लगा.

औरत:

खैर कोई हर्ज नहीं, चलिए बाहर.

प्रभाकर :

इस समय कहाँ से आ रही हो?

औरत:

जमानिया से.

प्रभाकर :

क्या खबर है?

औरत:

चलिए बाहर चलिए, कई नई बातें मालूम हुई हैं.

प्रभाकरसिंह को साथ ले वह औरत उस कोठरी के बाहर निकल आई.

उस दरवाजे को जिसकी राह आई थी उसी तरह खुला छोड़ दिया और न जाने क्या सोचकर प्रभाकरसिंह ने भी उसके विषय में कुछ कहना या पूछना मुनासिब न समझा.

वह औरत दालान में आकर फर्श पर बैठ गई मगर नकाब चेहरे से नहीं उतारी.

प्रभाकरसिंह भी उससे कुछ हटकर बैठ गए.

प्रभाकर :

कहो क्या नई बात तुम्हें मालूम हुई है?

आज कुंअर गोपालसिंह का कहीं पता नहीं है, न मालूम वे कहाँ चले गए या क्या हुए.

प्रभाकर :

(चौंककर) सो क्या! क्या वे महाराज से रंज होकर कहीं चले गए हैं?

औरत:

नहीं नहीं, सो बात नहीं, कुछ और ही बात है! उत्तका गायब होना बेसबब नहीं है.

प्रभाकर :

बेशक नहीं है और मुमकिन है कि यह काम भी दारोगा या उसकी कमेटी का ही हो.

औरत:

सम्भव है.

प्रभाकर :

सम्भव क्या निश्चय ऐसा ही है, अभी उस दिन दामोदरसिंह मारे गए, आज यह बात हुई, कल को महाराज के ऊपर कोई बार होगा! उस औरत ने कोई जवाब न दिया.

प्रभाकरसिंह बोले, " बड़े अफसोस की बात है कि महाराज हैं तो तिलिस्म के राजा मगर उन्हें अपने घर ही की खबर नहीं है कि क्या हो रहा है और उन्हीं के तौकर - चाकर उनके साथ कैसा बर्ताव कर रहे हैं, अब मैं कदापि चुप नहीं रह सकता, बेशक महाराज से मिल कर उन्हें होशियार करूंगा.

" औरत:

(चौंककर) तो क्या आप महाराज से मिलेंगे?

प्रभाकर :

बेशक, अब मैं कदापि रुक नहीं सकता?

तुम मुझे इस मकान के बाहर करो, मैं इसी समय जाकर उनसे मिलूंगा और उन्हें सावधान करूंगा.

औरत:

मगर आपको इस झगड़े में पड़ने से मतलब ही क्या!प्रभाकर :

क्यों नहीं मतलब है! क्या महाराज गिरधरसिंह मेरे रिश्तेदार नहीं हैं?

औरत:

जरूर हैं मगर आपने जब अब तक उनसे भेंट नहीं की तो अब थोड़े दिन और चुप रहिए.

प्रभाकर :

नहीं नहीं, सो किसी तरह न होगा, तुम उठो और मुझे इस मकान के बाहर करो, मैं इसी समय उनसे मिलने जाऊँगा.

औरत:

जरा ठहरिए, इतना घबराये क्यों जाते हैं, आखिर यह भी तो सोचिए कि आप .

.

.

.

.

प्रभाकर :

मैं सब कुछ सोच - समझ चुका हूँ, बस अब तुम मुझे यहाँ से बाहर करो, मैं एक सायत के लिए नहीं रुक सकता.

इतना कह प्रभाकरसिंह उठ खड़े हुए.

उस औरत ने यह देख कहा, " आप इतनी जल्दी न मचाइए, जरा सोचिए विचारिए और साथ ही इस बात पर भी गौर कीजिए कि आपके ऐसा करने से नतीजा क्या निकलेगा?

आपके ऐसा करने से मेरे काम में बहुत भारी हर्ज पड़ेगा.

"प्रभाकर :

जो कुछ हो, अब मैं इस कैदखाने में एक सायत नहीं रह सकता.

औरत:

(हँसकर) क्या यह मकान आपको कैदखाना मालूम होता है?

यहाँ आपको क्या तकलीफ है?

प्रभाकर :

मेरे लिए यह कैदखाना नहीं तो क्या है?

औरत:

मैंने आपको बाहर जाने से कब रोक्का है?

प्रभाकर :

खैर इस झगड़े से कोई मतलब नहीं, इस समय मैं बाहर ही जाया चाहता हूँ, औरत और अगर मैं न जाने दूँ तो?

प्रभाकर :

तो जो कुछ मुझसे बन सकेगा मैं करूँगा और जिस तरह हो सकेगा बाहर जाऊँगा, फिर मुझे दोष न देना! औरत:

क्या आप एक औरत पर हाथ उठावेंगे?

प्रभाकर :

वैसा भी न करूंगा, मगर मेरा बाहर निकलना बहुत जरूरी है, अब मैं कदापि नहीं रुक सकता! वह औरत प्रभाकरसिंह की बात सुन गौर में पड़ गई और कुछ सोचने लगी, तब वह उठ खड़ी हुई और प्रभाकरसिंह से बोली, “ अच्छा आप इसी जगह बैठे मैं अभी आती हूँ तो आपको साथ लिए बाहर चलूँगी.

" प्रभा ० नहीं सो नहीं हो सकता, जहाँ जाती हो मुझे भी लेती चलो.

औरत:

मैं कहीं नहीं जाती और एक काम करके अभी लौटती हूँ क्या आप समझते हैं कि मैं कहीं भाग जाऊँगी?

अब इतना अविश्वास मेरे ऊपर करने लगे!प्रभाकर :

बेशक करने लगा.

अब मैं मकान के बाहर गये बिना तुम्हारा साथ एक पल के लिए भी नहीं छोडूंगा.

औरत:

(हँसकर) आज आप मुझ पर बहुत खफा मालूम होते हैं, क्या मामला है?

मुझसे कोई कसूर तो नहीं हो गया?

आखिर बात क्या है?

प्रभाकर :

सच तो यह है कि मुझे तुम्हारा ढंग बिलकुल पसंद नहीं आता! मुझे कुछ मालूम ही नहीं होता कि क्यों तुमने मुझे यहाँ बन्द कर रखा है.

न तो मैं तुम्हारी सूरत - शक्ल से वाकिफ हो पाता हूँ और न तुम अपना नाम या कुछ हाल ही बताती हो.

मैं नहीं जानता कि तुम क्रौत हो और न यही जानता हूँ कि मुझसे तुम क्या काम निकाला चाहती हो?

न मैं अपनी मरजी से इस मकान के अन्दर आ ही सकता हूँ और न ही बाहर निकल पाता हूँ! यदि कभी बाहर निकलने को मिला भी तो तुम्हारे साथ रहने के कारण स्वतंत्रता से कुछ करने का मौका ही नहीं पाता, ऐसी हालत में इस तरह पराधीन बना हुआ मैं क्योंकर तुम्हारा विश्वास कर सकता हूँ! औरत:

आखिर मैं आपकी भलाई में ही तो लगी हूँ, आपके दोस्तों ही का पता तो लगा रही हूँ, आपके दुश्मनों ही से बदला लेने का बन्दोबस्त तो कर रही हूँ! क्या आप यह समझते हैं कि मैं आपके साथ दुश्मनी का बरताव कर रही हूँ!प्रभाकर :

मैं ऐसे किसी से न तो मदद ही लिया चाहता हूँ और न उसे साथी ही बनाया चाहता हूँ जिनका न तो मैं कोई हाल जानता हूँ न नाम - पते से वाकिफ हूँ यहाँ तक कि जिसकी सूरत भी कभी नहीं देख पाता.

फिर दूसरी बात यह है कि अगर तुम मेरी मदद ही पर हो तो मुझे यहाँ से जाने क्यों नहीं देती! औरत:

मैं आपको जाने से कब रोकती हूँ!प्रभाकर :

इसे रुकावट डालना नहीं तो क्या कहते हैं?

औरत:

खैर यदि आप ऐसा ही समझ लें तो कोई हर्ज नहीं.

मैं इसलिए आपको बाहर जाने से रोकती हूँ कि आपके दुश्मन चारों तरफ फैले हुए हैं, उनकी चालाक्रियों का जाल अच्छी तरह बिछा हुआ है, आप उनसे अपने को किसी तरह नहीं बचा सकेंगे.

प्रभाकर :

कुछ नहीं, यह सब तुम्हारी बनावटी बातें हैं, मेरा दुश्मन कोई नहीं है और अगर है भी तो वह मेरा उस समय तक कुछ नहीं बिगाड़ सकता जब तक कि मैं होश - हवास में हूँ या तलवार का कब्जा मेरे हाथ में है.

औरत:

मगर मुझे डर है कि आप उनसे कभी अपने को बचा न सकोगे, वे सब बहुत जबर्दस्त हैं.

प्रभाकर :

नहीं यह सब कोई बात नहीं है या अगर है तो सिर्फ तुम्हारा ढोंग है! मैं तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं करूँगा.

औरत:

अख्तियार आपको है, विश्वास करें या न करें, मैं कुछ नहीं बोल सकती, मगर ख्याल रखिए कि यदि आप इस समय मेरी बात न मालेंगे तो पछतायेंगे फिर मुझको दोष न दीजिएगा!प्रभाकर :

नहीं कभी न दूंगा! औरत खैर तो चलिए, मैं आपको यहाँ से बाहर किए देती हूँ, प्रभाकरसिंह को साथ लिए हुए वह औरत उस दालान के नीचे उतरी और उस छोटे बगीचे या मैदान को तय करके उस लोहे की चारदीवारी के पास पहुँची जिसने इस इमारत को चारों तरफ से घेरा हुआ था.

मामूली तौर पर बाहर निकलने का रास्ता पैदा किया और दीवार के दूसरी तरफ पहुँच गई.

वे दोनों दरवाजे भी पार किए जिनका हाल ऊपर लिख आए हैं और प्रभाकरसिंह ने अपने को उस मकान के बाहर पाया.

उस औरत ने इन्हें कुछ आगे तक पहुंचा दिया और तब प्रभाकरसिंह बोलेप्रभाकर :

अच्छा अब तुम जाओ, मैं भी जाता हूँ, औरत:

जो आज्ञा.

इतना कह वह औरत तुरंत घूम पड़ी, मगर उसी समय प्रभाकरसिंह ने ठोका और कहा, " अगर मुनासिब समझो तो कम से कम अपना नाम तो बताती जाओ जिससे मैं यह तो जान सकूँ कि फलानी औरत ने विचित्र ढंग से मुझे रखा और मदद की थी, नकाब हटाने के लिए तो कहना ही व्यर्थ है! " औरत:

नहीं नहीं, आप मेरी सूरत भी देख सकते हैं और नाम भी जान सकते हैं.

इतना कहकर उस औरत ने चेहरे पर से नकाबउलटकर पीछे की तरफ कर दी.

हम कह सकते हैं कि प्रभाकरसिंह ने अपनी जिन्दगी भर में कभी ऐसी सुन्दर औरत न देखी होगी.

यद्यपि ये अपनी इन्दुमति के ही ध्यान में मस्त हो रहे थे तथापि इस औरत के खूबसूरत चेहरे ने इनका ध्यान अपनी तरफ खींच ही लिया.

मगर अफसोस, दिल की दिल ही में रह गई! नजर भर उसकी सूरत देखने भी न पाये थे कि उसने पुन:

चेहरे पर नकाब डाल ली और उन्हें उसी तरह खड़े छोड़ पीछे चल पड़ी.

प्रभाकरसिंह कहते ही रहे कि " अपना नाम तो बताती जाओ "! पर उसने फिरकर भी नहीं देखा.

13वा व्यान।

आज जमानिया में कुंअर गोपालसिंह के गायब हो जाने के कारण बड़ी ही बेचैनी और हलचल मची हुई है.

कल रात ही से वे गायब हैं और यद्यपि इस समय तक सैकड़ों ही आदमी उनकी खोज में जा चुके हैं मगर उनका कहीं भी पता नहीं लगता.

बूड़ेऔर दिल के कमजोर गिरधरसिंह की परेशानी की हद नहीं है.

दामोदरसिंह की मौत से पहिले ही उन्हें दु:खी कर रखा था, अब अपने बेटे के गायब हो जाने से बिलकुल ही बदहवास हो गए और उन्हें अपनी जान की भी उम्मीद जाती रही, केवल अपने एकान्त कमरे में अकेले बैठे आँसू गिरा रहे और लम्बी साँसे ले रहे हैं.

कुछ देर बाद ऊँची साँस ले महाराज ने आप कहा- " इन्द्रदेव को जुलाना चाहिए.

" और तब सोने की छोटी घण्टी उठाकर बजाई जो सामने ही एक संगमर्मर की चौकी पर रक्खी हुई थी.

बजाते ही हाथ बाँधे हुए चोबदार हाजिर हुआ और महाराज ने इन्द्रदेव को बुला लाने का हुक्म दिया.

चोबदार “ जो हुक्म " कहकर चला गया और महाराज पुन:

उसी तरह बैठे रहे.

इन्द्रदेव का डेरा बहुत दूर न था अस्तु थोड़ी देर बाद वे आ पहुँचे और महाराज को प्रणाम करने के बाद इशारा पा अदब से सामने बैठ गए.

महाराज ने अपनी आँखें पोंछी और इन्द्रदेव की तरफ देखकर कहा, " इस नई मुसीबत का हाल तुमने सुना ही होगा! " इन्द्र ०:

(हाथ जोड़कर) जी हाँ महाराज बल्कि कहना होगा कि सबसे पहले मुझी को इस बात का विश्वास करना पड़ा कि कुँअर साहब का कहीं पता नहीं लगता.

महाराज :

हाँ मुझे मालूम है कि उसने तुम्हें बुलाया था मगर फिर तुम्हारे आने के पहिले ही कहीं चला गया और बस इसके बाद फिर उसका कहीं पता नहीं.

इन्द्र ०:

उस समय से मैं स्वयं उनकी खोज में परेशान हूँ मगर अभी तक कुछ पता नहीं चला.

महाराज :

(लम्बी साँस लेकर) देखो इस थोड़े ही जमाने में मेरे ऊपर कैसी - कैसी मुसीबतें आईं.

भैयाराजा चले गए, बहुरानी गायब हो गईं, मेरी स्त्री मरी, दामोदरसिंह मारे गए, और अब गोपालसिंह लापता है.

इन्द्र::

जी हाँ, यह तो ठीक है, पर बुद्धिमानों का कथन है कि मुसीबतों से कभी भी घबड़ाना या भागता नहीं चाहिए, अस्तु इस समय आपको अपना दिल कमजोर करना कदापि उचित नहीं, आपको राय देने की जुर्रत तो नहीं कर सकता मगर इतना निवेदन किए बिना भी न रहूँगा कि ऐसे मौके पर आप अगर किसी तरह अपना दिल छोटा करेंगे तो रिआया पर इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा.

महाराज :

हाँ यह मैं भी समझता हूँ मगर मैं अपने दिल को सम्भालूं तो क्यों कर! जैसी - जैसी आफतें इधर मुझे झेलनी पड़ी हैं उनसे मेरा दिल एकदम टूट गया है, मैंने तो यह निश्चय कर लिया था कि अब यह राज्य गोपालसिंह के हाथ में दे मैं इस झगड़े से अलग हो जाऊँगा मगर अब तो उसी का पता नहीं.

न जाने वह कहाँ गया या किस मुसीबत में पड़ गया, त जाने अब उसका कभी पता लगेगा भी या नहीं या उसके बारे में कैसी खबर सुनने में आवेगी! इतना कहते - कहते महाराज की आँखों से पुन:

आँसू गिरने लगे, इन्द्रदेव ने उन्हें बहुत कुछ दम दिलासा देकर शान्त किया, और अन्त में उनके कहने पर कि मैं इस बात का वादा करता हूँ कि अड़तालीस घंटे के भीतर उनकी खबर महाराज को दूंगा, वे कुछ चैतन्य होकर बोले, “ मुझे तो अब तुम्हारा ही भरोसा है.

गोपाल तुम्हारा दिली दोस्त था और तुमसे मुहब्बत करता था अस्तु उसके विषय में मेरा तुमसे कुछ कहना बिल्कुल व्यर्थ है.

अब तुम्हीं जिस तरह से हो सके उसका पता लगाओ और उसे खोजो.

मेरे सत्र मुलाजिम और नौकर तुम्हारे ही हैं, जिस काम पर चाहो भेज सकते हो.

मुझे अब तुम किसीमसरफ का न समझो.

बिहारी और हरनाम तो गोपाल की आज्ञानुसार किसी काम पर मुस्तैद हैं मगर मेरे बाकी ऐयारों से तुम काम लो और समझ रखो कि गोपाल के बिना मेरा खाना - पीना सब बन्द है!

इन्द्रदेव देर तक महाराज को समझाते - बुझाते रहे और कई तरह से कह - सुन और दम दिलासा देकर उन्हें कुछ शान्त किया, इसके बाद उनकी आज्ञा ले अपने घर लौटे.

महाराज उसी तरह गद्दी पर पड़े आँसू की धारें गिराते रहे.

बह दिन बीता, रात बीती, और दूसरा दिन भी बीत गया मगर गोपालसिंह का कुछ पता न लगा.

महाराज की घबराहट और परेशानी की कोई हदन रही और वे बिल्कुल ही बदहवास हो गए.

कुँअर साहब के गायब होने के चौथे दिन बहुत ही सुबह के समय महाराज अपने सोने के कमरे में पलंग पर अधलेटे - से पड़े हुए थे.

इस समय इस कमरे में और कोई न था क्योंकि महाराज का हुक्म ही ऐसा था, और पहरेदार भी इस कमरे के बाहर का एक और दूसरा कमरा भी छोड़कर उसके बाद बाले एक लम्बे - चौड़े दालान में थे जहाँ से यहाँ भीतर का हाल देखा नहीं जा सकता था.

महाराज की निद्रा भंग हुए बहुत समय हो गया था बल्कि कहता चाहिए कि अपने बेटे के गम में उन्हें रात को नींद आई ही न थी.

वे तकिये के सहारे लेटे हुए कुछ सोच रहे थे कि बाहर से घण्टी बजने की आवाज आई जिससे जाहिर हुआ कि कोई नौकर या पहरेदार कुछ कहना चाहता है.

महाराज के सिरहाने की तरफ ऊँची चन्दन की चौकी पर जल, कुछ और जरूरी सामान तथा एक घण्टी पड़ी हुई थी जिसे उठाकर उन्होंने बजाया.

घण्टी बजाते ही महाराज का एक खास खिदमतगार कमरे के दरवाजे पर आ खड़ा हुआ.

महाराज के इशारे पर यह पूछने से कि क्या है ।

उसने एक चीठी जो उसके हाथ में दी थी दिखाकर अर्ज किया, " कल रात को एक सवार चीठी महल के दरवाजे पर पहरेदारों को दे गया था कि हुजूर ही के हाथ में दी जाए.

पहरेदारों ने यह चीठी मुझे पेश करने को दी पर महाराज आराम कर रहे थे इस कारण उस समय हाजिर न कर सका.

चीठी देने वाले ने इसके बारे में सख्त ताकीद की थी इसलिए बेमौका होने पर भी इसी समय लाया हूँ महाराज ने हाथ बड़ाया और खिदमतगार ने आगे बटवेकर चीठी उन्हें दे दी तब पुन:

दरवाजे के पास इस इन्तजार में खड़ा हो गया कि कदाचित महाराज कोई हुक्म दें.

यह चीठी मोटे मोमजामे के अन्दर बहुत मजबूती के साथ बन्द की हुई थी और जोड़ पर लाल रंग की मुहर लगी हुई थी, महाराज ने मुहर तोड़ मोमजामा हटाया.

अन्दर से एक लिफाफा निकाला, उसे भी खोला.

इस लिफाफे के अन्दर से एक चिठी और एक पन्ने की एक अंगूठी निकली जिसकी बनावट कुछ विचित्र प्रकार की थी.

अंगूठी देखते ही महाराज चौंक पड़े, कुछ देर तक बड़े गौर के साथ उसे देखते रहे और एक लम्बी सॉस के साथ यह कहकर कि ' बेशक वही है उसे रख चीठी उठाकर देखने लगे.

टेढ़े - मेड़े अजीब कुटुंगे अक्षरों से मामूली बातों के बाद यह लिखा हुआ था:

" बड़े ही अफसोस की बात है कि तिलिस्म के राजा और असाधारण ताकत रखने पर भी अपने दोस्त और दुश्मन के पहिचानने में भूल करते हैं.

बड़े ही दुःख की बात है कि महाराज ही के नौकर - चाकर और गुलाम महाराज ही के साथ दगा करें और साफ बन जाएँ! " इस समय आप कुँअर साहब के गायब होने के कारण परेशान हैं मगर खूब खयाल रखिए कि वे इस समय भी आप ही के राज्य और आप ही की हुकूमत के अन्दर हैं मगर फिर भी आप ही उनका पता नहीं लगा सकते! अफसोस की बात है! " अगर अब भी आप अपने तिलिस्म के अन्दर, उस मकान में जो

लोहगड़ी के नाम से पुकारा जाता है अथवा अयाजबघर में जिसे दारोगा साहब पा गए हैं, तलाश करेंगे तो कई कैदियों को वहाँ देखेंगे और ऐसी बातें जानेंगे कि ताज्जुब होगा.

बस यही चीठी का मजमून था और इसके नीचे किसी का नाम या दस्तखत न था.

हम नहीं कह सकते कि महाराज पर इस चीठी का असर ज्यादे पड़ा या उस अंगूठी का जो इसके साथ में थी.

इतना अवश्य हुआ कि कुछ देर के लिए वे और ऐसी गहरी चिन्ता में पड़ गए कि तन - बदन की सुध न रही.

घड़ी भर से ऊपर बीत जाने पर महाराज ने सिर उठाया.

उन्होंने एक बार पुन:

उस अंगूठी को देखा, वह चीठी पड़ी, और तब आप ही आप कहा, " मैं अभी तिलिस्म के अन्दर जाऊँगा.

महाराज पलंग पर से उतर पड़े और खूटी से लटकती हुई तिलिस्मी तलवार उतार ली और चोबदार की तरफ देखकर बोले, " मैं तिलिस्म के अन्दर जाता हूँ, कोई बहुत जरूरी काम है.

ठीक नहीं कह सकता कि कब तक लौटूंगा.

” पास ही में एक छोटा दरवाजा था जिसके अन्दर वे चले गए और दरवाजा बन्द कर लिया.

मगर अफसोस! महाराज बड़ी भारी भूल कर गए.

वह अंगूठी और चीठी उन्होंने उसी जगह छोड़ दी जिसे उनके जाते ही चोबदार ने आगे बटवेकर उठा लिया और तब अपने कपड़ों में छिपा कमरे से बाहर निकल गया.

14वा व्यान।

] जब से मालती दारोगा की कैद से निकल गई है दारोगा की कुछ अजीब - सी हालत हो गई है.

डरता रहता है और किसी गहरे सोच में पड़ी हुई उसकी जान को दम मारना भारी पड़ गया है.

वह हरदम कॉपता और न मालूम उस पर कौन - सा तरबुद आ पड़ा है या मालती के कारण वह अपने को किस आफत में पड़ा हुआ समझने लगा है, मगर इतना जरूर है कि उसकी घबराहट बेसबब नहीं है.

इस समय वह अपने एकान्त के कमरे में बैठा हुआ है.

उसका सिर चिन्ता के बोझ से झुका है और वह एक छोटी चौकी के ऊपर क्रोहनी रखे हथेली पर सिर दबाए सोच रहा है.

उसके मन में जो कुछ दौड़ रहा है उसका कुछ आभास उन बातों से मिलता है जो बेमालूम तौर पर कभी - कभी उसके मुंह से निकल पड़ती हैं:

" इसमें तो जरा भी शक नहीं कि वह कम्बख्त जरूर लोहगढ़ी पहुंच गई है, मगर उसका भेद क्योंकर मालूम हुआ.

और अगर मालूम हुआ भी तो क्या वह सारी बातें जानती है या अगर सब कुछ वह जानती है तो बड़ी ही मुश्किल होगी, मैं किसी तरह अपने को बचा न सकूँगा .

.

.

.

लेकिन वह जब से मेरी कैद से भागी है तब से फिर कहीं दिखाई भी नहीं दी, नहीं तो बगैर कुछ न कुछ आफत लाए न रहती.

यद्यपि दामोदरसिंह को, जो मेरे रास्ते का काँटा था मैंने दूर कर दिया तो भी अभी डर बना ही हुआ है.

महाराज कदाचित उस भेद को जानते हैं और इन्द्रदेव .

.

" जब वह अभी तक किसी से मिली नहीं है तो दो में से एक ही बात हो सकती है, या तो वह स्वयं किसी मुसीबत में फंस गई है और या फिर मुझसे कोई बुरा बदला लेने का ढंग सोच रही है.

उसका इस तरह अपने को छिपाये रखना मेरे लिए कोई शुभ लक्षण नहीं है.

तब फिर क्या किया जाए! "

" तब किया क्या जाए " कहकर दारोगा ने बेचैनी के साथ सिर उठाया और उसी समय जैपाल को देखा जो कमरे के अन्दर आ रहा था.

जैपाल पर निगाह पड़ते ही दारोगा ने कहा, " कहो कुछ पता लगा?

" जिस के जवाब में उसने सिर हिलाकर कहा, " नहीं कुछ भी नहीं, मगर मैं यह कहने के लिए आया हूँ कि मनोरमाजी के भेजे हुए दो ऐयार यहाँ आए हैं जिनके बारे में शायद आपसे उन्होंने कुछ जिक्र किया था.

दारोगा:

हाँ ठीक है, तुम उनको यहीं ले आओ.

" बहुत खूब " कह जैपाल चला गया और थोड़ी ही देर में गोबिन्द और माया सिंह को साथ लिए आ पहुँचा.

हमारे पाठक इन दोनों ऐयारों को कई बार मनोरमा के साथ देख चुके हैं इसलिए यहाँ इतका परिचय देने की आवश्यकता नहीं.

!! दोनों ऐयार दारोगा को सलाम करके बैठ गए और जैपाल भी दारोगा का इशारा पाकर पास ही बैठ गया.

गोविन्द ने अपने पास से एक चीठी निकालकर दारोगा की तरफ बढ़ाई और कहा, " मनोरमाजी ने यह चीठी दी है और जुबानी कहला भेजा है कि आज किसी समय वे आपसे मिलेंगी.

" दारोगा ने वह चीठी लेकर गौर से पड़ी और उसके चेहरे पर कुछ प्रसन्नता झलकने लगी.

उसने उन दोनों ऐयारों की तरफ देखकर कहा, " इस चीठी से मालूम होता है कि तुम लोगों ने प्रभाकरसिंह का कुछ पता लगाया है.

' माया:

हाँ, कुछ क्या मनोरमाजी के हुक्म से हम लोग बहुत कुछ पता लगा चुके हैं बल्कि उन्हें गिरफ्तार भी कर लिए होते पर जिस मकान में वे रहते हैं वह कुछ ऐसा बना हुआ है कि हमारी कोई तरकीब नहीं लगने पाई.

दारोगा:

सो कहाँ?

माया ०:

अजायबघर के पूरब तरफ ऊँचे टीले पर जो इमारत है- शायद उसे लोहगड़ी कहते हैं- उसी के अन्दर वे रहते हैं और कई बार एक औरत को भी उसके अन्दर आते - जाते हमलोगों ने देखा है पर वह कौन है यह नहीं कह सकते क्योंकि वह हमेशा नकाब से अपनी सूरत ढांके रहती है ।

दारोगा:

(जैपाल से धीमे स्वर में) मालती तो नहीं है! जैपाल:

हो सकता है.

माया ०:

आपका हुक्म हो तो हम लोग उस औरत को गिरफ्तार करने की कोशिश करें, दारोगा:

जरूर करो, अगर तुम लोग उसे गिरफ्तार करके मेरे पास ला सकोगे तो तुम लोगों के मुँहमाँगा इनाम दूंगा.

माया ०:

तब तो हम लोग दिलोजान से कोशिश करेंगे.

गोविन्द ०:

मगर एक बात अर्ज कर देता मालूम होता है.

दारोगा:

वह क्या?

गोविन्दः:

हम लोगों के सिवाय और भी कई आदमी उन लोगों का पीछा कर रहे हैं और आपके दोस्त भूतनाथ भी कई बार उस टीले के आस पास दिखाई पड़ चुके हैं.

हम नहीं कह सकते कि वे दुश्मनी की नीयत से वहाँ जाते हैं या दोस्त की, पर जाते अवश्य हैं.

दारोगा:

(कुछ सोचकर) खैर कोई हर्ज नहीं, तुम लोग अपना काम करो मगर इस सभी से अपने को बचाते हुए, माया:

बहुत खूब.

दारोगा:

(जैपाल से) इधर कई दिनों से भूतनाथ नहीं मिला, न मालूम किस धुन में है?

जैपाल fo:

मुझे वह कल मिला था, कुछ परेशान और घबड़ाया - सा मालूम होता था.

माया ०:

जी हाँ, जब से शेरअलीखाँ की लड़की गौहरउनके कब्जे से निकल गई तब से न जाने कुछ परेशान से रहते हैं.

दारोगा:

क्या गौहर को उसने गिरफ्तार किया था?

यह कब की बात है?

माया ०:

कई दिन हो गए, क्या आपको यह हाल मालूम नहीं हुआ?

दारोगा:

नहीं.

माया ०:

जिस दिन आप से शेरसिंह ने मुलाकात की या जिस रोज प्रभाकरसिंह आपकी कैद से छूटा उसी दिन की यह बात है.

इतना कह मायासिंह वह सब हाल कह गया.

पाठकों को याद होगा कि सातवें बयान के अन्त में हम दो आदमियों का हाल लिख चुके हैं जो भूतनाथ का पीछा कर रहे थे.

वे दोनों यही गोविन्द और मायासिंह थे जो मनोरमा की आज्ञानुसार भूतनाथ के पीछे लगे हुए थे कुछ देर तक और बातचीत करने और कई जरूरी बातें समझाने के बाद दारोगा ने मायासिंह और गोबिन्द को वीदा किया और स्वयम् जैपाल को साथ ले कपड़े पहन किसी तरफ को चल निकला.

संध्या हो गई थी जब दारोगा एक भारी लबादा ओड़े और लोगों की निगाहों से अपने को छिपाता हुआ अकेला नागर के मकान पर पहुँचा.

फाटक खुला था मगर दारोगा के अन्दर पहुंचते ही नौकरों ने उसे बन्द कर दिया.

फौरन ही नागर भी वहाँ आ पहुँची और दारोगा का हाथ पकड़े मीठी बातें करती हुई घर के अन्दर ले गई.

कमरे में पहुँच नागर ने दारोगा को बड़े खातिर से बैठाया और कहा, " अभी कुछ ही देर हुई मनोरमाजी भी आई हैं और आपकी बेचैनी के साथ राह देख रही हैं ।

!! दारोगा:

उन्हीं से मिलने में आया हूं, तुम सीधे उन्हीं के पास मुझे ले चलो, वहीं बैठ कर तुमसे भी बातें होंगी.

" बहुत अच्छा " कह कर नागर उठ खड़ी हुई और दारोगा को साथ लिये हुए मकान की सबसे ऊपरी मंजिल में पहुंची जहाँ एक बंगले में इस समय मनोरमा थी और उसके सामने एक दूसरी औरत भी बैठी हुई थी जिसका चेहरा नकाब से डका हुआ था.

मनोरमा के साथ किसी औरत को देख दारोगा दरवाजे ही पर रुक्का मगर मनोरमा के यह कहने पर कि ' कोई हर्ज नहीं चले आइए ' वह भीतर चला गया.

नागर ने दरवाजा बन्द कर लिया जिसकी राह सीढ़ियां चढ़ इस मंजिल में आना होता था और तब वह खुद भी आकर इन लोगों के पास बैठ गई, दारोगा:

(नकाबपोश औरत की तरफ बता कर) ये कौन हैं?

मनो ०:

यह मेरी एक नई साथित हैं जो ऐयार भी हैं और जिन्हें मैं आप ही से मुलाकात कराने को ले आई हूँ

दारोगा:

मगर ये तो अपनी सूरत दिखाने से भी परहेज करती हैं.

मनो ०:

इसके लिए मैं लाचार हूँ कि जोर नहीं दे सकती क्योंकि ऐसा ही वादा करके लाई हूँ.

हाँ इतना कह सकती हूँ कि इतके जरिए बहुत कुछ मदद मिलने की उम्मीद है और विश्वास करने में किसी तरह का हर्ज नहीं.

इसके लिए मैं जिम्मेदार हूँ, दारोगा:

खैर जब तुम इन पर विश्वास करती हो तो मुझे भी कहता ही पड़ेगा.

(कुछ रुककर) तुम्हारे ऐयार गोविन्द और मायासिंह आज मुझसे मिले थे.

मनो ०:

उनकी जिक्र पीछे होगी पहिले आप इनकी बातें सुन लें.

(नकाब पोश औरत से) अच्छा होगा कि तुम एक बार पुनः खुलासा कह जाओ.

औरत:

सब हाल?

पूरा - पूरा?

मनो ०:

हाँ हाँ, कोई भी बात छिपाने की जरूरत नहीं.

दारोगा:

यदि ये सूरत न दिखावें तो न सही, कम से कम अपना नाम तो बता दें! औरत:

हाँ हाँ, वह आप जरूर जान सकते हैं, मेरा नाम सुन्दरी है और मैं ऐयार हूँ, शायद आपने गदाधरसिंह ऐयार का नाम सुना होगा, मैं उन्हीं के रिश्तेदार में से हूँ, इसी सबब से (मनोरमा और नागर की तरफ बताकर) आप दोनों को भी बखूबी जानती हूँ, यद्यपि आज से कुछ दिन पहिले इन्होंने मेरी सूरत देखी नहीं थी.

खैर अब मैं मतलब की तरफ झुक्रती हूँ.

Pha इतना कह उस औरत (सुन्दरी) ने एक चीठी निकाली और उसे दारोगा की तरफ बढ़ा कर कहा, " यह चीठी पटने के शेरअली खाँ ने अपनी लड़की गौहरके हाथ आपके दोस्त बलभद्रसिंह के पास भेजी थी और इसके पढ़ने से आपको मालूम हो जायगा कि आपकी इधर की कार्रवाइयों का बहुत कुछ हाल इन्हें मालूम हो चुका

दारोगा ने चौंक कर वह चीठी ले ली और मन ही मन पड़ गया.

यह लिखा हुआ था:

" मेरे दोस्त बलभद्रसिंह, मुझे पक्की तौर से पता लगा है कि जमानियाके दारोगा साहब जिन्हें शायद आप अपना दोस्त समझते हैं आपके पूरे दुश्मन हो रहे हैं.

उनका बार आप और आपकी लड़कियों पर होगा और मैंने सुना है कि आपकी बड़ी लड़की लक्ष्मीदेवी जिसे मैं बहुत प्यार करता हूँ बहुत जल्दी ही किसी मुसीबत में पड़ा चाहती है.

मेरी लड़की गौहर ने जिसे ऐयारी का बहुत शौक है अपनी चालाकी से इन बातों का पता लगाया है इसलिए यह चीठी में उसी के हाथ आपके पास भेजता हूँ.

खुलासा हाल आपको उसी की जुबानी मालूम होगा.

" चिटी में नीचे शेरअली का दस्तखत था.

इस चीठी ने दारोगा को बदहवास कर दिया और उसने बेचैनी के साथ पूछा, " तो क्या यह चीठी बलभद्रसिंह के हाथों तक पहुँच चुकी है?

सुन्दरी:

अगर मेरे हाथ न लग गई होती तो अवश्य पहुँच जाती.

दारोगा:

तुम्हें यह क्योंकर मिली?

सुन्दरी:

यह एक गुप्त बात है जिसे मैं बताना नहीं चाहती, हाँ अगर जोर दें तो लाचारी है.

दारोगा:

नहीं नहीं, मैं जोर नहीं दे सकता.

अच्छा यह बता सकती हो कि गौहर बलभद्रसिंह तक पहुँची या नहीं?

सुन्दरी:

नहीं, अभी तक नहीं, मगर आज ही कल में जाने वाली है और जब ऐसा होगा तब किसी तरह आप अपनी कुशल न समझे.

दारोगा:

क्यों?

सुन्दरी:

उसे इस बात का पता लग चुका है कि आप हेलासिंह की लड़की के साथ गोपालसिंह की शादी करना चाहते हैं अस्तु वह इस फेर में पड़ी हुई है कि किसी तरह सुन्दर को पकड़ ले और अपने साथ लिए हुए तब उनसे मिले.

यह एक ऐसी बात थी जिसने दारोगा को बेचैन कर दिया और वह घबड़ा कर इस औरत का मुंह देखने लगा.

कुछ देर बाद उसने कहा, " तुम्हें यह बात क्योंकर मालूम हुई?

सुन्दरी:

गौहर की बातचीत और उसकी कार्रवाइयों से.

मैं आज कई दिनों से उसका पीछा कर रही हूँ और जब से उस भूतनाथ की कैद से छूटकर निकली है तब से तो मैं बराबर उसके साथ हूँ, इसी से मैं यह बात इतने पक्के तौर पर आपसे कह सकती हूँ, मनोरमा:

(दारोगा की तरफ देखकर) तब तो गौहर को फौरन ही गिरफ्तार कर लेना चाहिए.

दारोगा:

(कुछ सोचता हुआ) हाँ यही तो मैं भी सोच रहा हूँ, मगर .

.

.

.

.

सुन्दरी:

शायद आप सोचते हैं कि ऐसा करने से शेरअली खाँ से आपकी खटपट हो जायगी जो आजकल दिग्विजयसिंह का बहुत बड़ा दोस्त बना हुआ है.

दारोगा:

(ताज्जुब से) बेशक मैं यही सोचता हूँ, मगर तुम यह बात कैसे जानती हो?

सुन्दरी:

(खिलखिला कर) मैं कह चुकी हूँ कि ऐयार हूँ और सब तरफ की खबर रखती हूँ,
दारोगा:

अगर शेरअली को मालूम हो गया कि मैंने उसकी लड़की के साथ कोई बुरा बर्ताव किया है तो वह अवश्य बिगड़ खड़ा होगा और खास कर ऐसी हालत में जब कि (चीठी की तरफ बताकर) इन सब बातों की उसे खबर है.

अस्तु उनके साथ खुल्लमखुल्ला बिगाड़ करना मैं कैसे पसन्द कर सकता हूँ! सुन्दरी:

वेशक ऐसा ही है और यही सोचकर मैंने भी अभी तक्र गौहर को गिरफ्तार करने की कोई चेष्ठा नहीं की है यद्यपि मैं जब चाहूँ ऐसा कर सकती हूँ, मनोरमा:

(कुछ देर चुप रह कर) मुझे एक बात सूझती है.

दारोगा:

क्या?

सुन्दरी:

गौहर मुन्दर और बन सके तो हेलासिंह को भी, गिरफ्तार करने की फिक्र में लगी हुई है, उसे ऐसा करने का मौका दिया जाय.

दारोगा:

वाह खूब कही, तब तो सब किया - कराया ही चौपट हो जायगा!

सुन्दरी:

नहीं, आप मेरी पूरी बात सुन लीजिए! मैं यह चाहती हूँ कि एक नकली सुन्दर और हेलासिंह बनाकर उसके हाथ में इस तरह पर दे दिये जायें कि वह समझे कि उसने असली को ही गिरफ्तार कर लिया.

यदि वह इन दोनों को काबू में कर सकी तो फिर जल्दी आगे कोई कार्रवाई न करेगी.

मनो ०:

क्योंकि वह यह समझेगी कि अब जब हेलासिंह और सुन्दर ही उसके कब्जे में .

.

.

.

.

सुन्दरी:

बस बस, यही मेरा खयाल है.

दारोगा:

हाँ तुम्हारी यह राय जरूर गौर करने के लायक है.

मगर इस मामले में बिना हेलासिंह की राय लिए कुछ करना ठीक न होगा.

सुन्दरी यदि आप मुझे अपने हाथ की लिखी एक चीठी दे दें तो मैं खुद जाकर हेलासिंह से मिलूँ और सब हाल कह समझा - बुझा उन्हें इस बात के लिए राजी करु.

दारोगा:

हाँ यह बहुत ठीक होगा, तुम्हें सब हाल मालूम ही है, मैं अभी ऐसी चीठी लिखे देता हूँ,
सुन्दरी:

मगर इस बात का ख्याल है कि मैं अपनी सूरत दिखाने पर मजबूर न की जाऊँ.

दारोगा:

खैर जैसी तुम्हारी मर्जी, मगर एक बात तो बताओ, जब तुम हम लोगों की साथिन बताती हो और दुःख दर्द में शरीक हो अपनी सूरत दिखाने से क्यों परहेज करती हो!
सुन्दरी:

मैंने इसका पूरा - पूरा सबब मनोरमाजी के बयान से कर दिया है जो मेरी असली सूरत से भी बखूबी वाकिफ हैं.

मेरे जाने के बाद आप इनसे दरियाफ्त कर सकते हैं, और फिर यह बात कुछ ज्यादा दिनों के लिए भी नहीं.

" बैर " कहकर दारोगा ने एक भेद की निगाह मनोरमा पर डाली जिसने लापरवाही के साथ गरदन हिला दी, इस इशारे बाजी को उस औरत ने भी देखा मगर कुछ जाहिर नहीं किया.

दारोगा ने अपनी जेब से जस्ते की एक कलम और कागज का टुकड़ा निकाला और हेलासिंह के नाम का पत्र लिखकर सुन्दरी के हवाले कर दिया.

सुन्दरी:

मैं इस समय उधर रवाना होती हूँ और लौटकर कल आपसे मिलूँगी, सगर किस जगह मिलूँ?

दारोगा:

कल इस समय इसी जगह मैं रहूँगा, यहीं आना.

सुन्दरी:

बहुत अच्छा, तो अब यदि आज्ञा हो तो मैं जाऊँ क्योंकि सफर लम्बा है और विलम्ब भी हो गया है.

दारोगा:

अच्छी बात है, पर कल यहाँ मिलने का खयाल रखना.

सुन्दरी:

अवश्य! सुन्दरी उठ खड़ी हुई.

दारोगा के इशारे से नागर उसके साथ गई और सदर दरवाजे तक पहुँचा आई.

15वा व्यान।

रात की पहली अंधेरी ने चारों तरफ अपना दखल जमा लिया था जब वह ऐयारा (सुन्दरी) नागर के मकान के बाहर निकली और तेजी के साथ शहर के बाहर की तरफ रवाना हुई.

उसका घूम - घूमकर पीछे देखना जाहिर कर रहा था कि उसे अपना पीछा किये जाने का डर है और उसकी चाल यह भी बताती थी कि वह अपने और जमानिया के बीच में शीघ्र ही बहुत फासला डाल देना चाहती है मगर वास्तव में ऐसा न था, शहर के बाहर होते ही उसने अपनी चाल कम कर दी और एक ऊँचे जगत वाले कूएँ के पास पहुँच कर तो बिल्कुल ही रुक गई जो एक खेत के बीचोंबीच में बना हुआ था और जिसके पास ही में नीम का एक बहुत पुराना पेड़ था.

वह कुछ देर तक तो नीचे खड़ी रही, तब कुएँ पर जाकर बैठ गई और सुस्ताने लगी.

पूरब तरफ आकाश में निकलते हुए चन्द्रमा की रोशनी पल भर में बटवेती जा रही थी और शीघ्र ही इतनी हो गई कि वह औरत उस आदमी को देख सके जो तेजी के साथ उसकी की तरफ आ रहा था.

यद्यपि इस औरत की तरह उस आने वाले आदमी के चेहरे पर भी नकाब पड़ी हुई थी तथापि एक ने दूसरे को बाखूबी पहिचान लिया और उस आदमी ने पास आकर इससे पूछा, " क्यों काम हो गया?

" जिसके जवाब में इसने कहा, " हाँ ".

इस पर उस आदमी ने पुन:

कहा, " तो बस अब यहाँ रुकने की जरूरत नहीं, चली चलो.

' यह औरत कएँ से नीचे उतरी और दोनों बात करते पूरब की तरफ जाने लगे.

मर्द:

दारोगा ने तुम्हारे मन के मुताबिक चीठी लिख दी?

औरत:

जी हाँ, आपकी तरकीब बहुत अच्छा काम कर गई, दारोगा ने हेलासिंह के नाम चीठी लिख दी और मुझे उससे मिलने को कहा है.

यदि आप कहें तो उसकी चीठी दिखाऊँ.

मर्द:

हाँ दो तो सही, देखें क्या लिखा है.

औरत ने वह चीठी निकाल कर जो थोड़ी ही देर पहिले दारोगा ने लिख कर दी थी.

चन्द्रमा की रोशनी इस लायक त थी कि वह चीठी पड़ी जा सके इसलिए उस आदमी ने रोशनी का सामान किया और एक जगह रुककर उस चीठी को गौर से पड़ा, इसके बाद रोशनी बुझा चीठी उस औरत को लौटाते हुए कहा, “ बस अब हम लोगों का काम बाखूबी निकल !! जायगा.

औरत:

जी हाँ, उम्मीद तो ऐसी ही होती है.

मर्द:

मनोरमा को तुम पर किसी तरह का शक तो नहीं हुआ?

औरत:

मेरी बात के आगे उसका शक ज्यादे देर तक टिक न सका.

मर्द:

तुमने उससे क्या कहा?

औरत:

मैंने उससे कहा कि मैं भूतनाथ के रिश्तेदारों में से हूँ, और किसी कारण विशेष से रंज होकर आपका साथ देना चाहती हूँ, मैंने उसे गौहर वाला हाल सुनाया जिसे न जाने किस प्रकार वह जान चुकी थी, और यह भी कहा कि मैं उस (गौहर) की सखी ' गिल्लन ' का रूप धर कर कुछ समय से उसके साथ हूँ और कई भेद की बातों का भी पता लगा

चुकी हूँ, मगर सच तो यह है कि अगर वह शेरअली वाली चीठी मेरे पास न होती और मैं उसको न दिखाती तो मनोरमा को मेरी बातों पर कभी विश्वास न होता.

उस चीठी का उस पर बेढब असर पड़ा और वह तुरन्त मुझे साथ ले दारोगा के पास चलने को तैयार हो गई.

मर्द:

अब इस चीठी को इसके मालिक के पास पहुँचा देना चाहिए.

औरत:

जरूर, और इस बारे में जैसा आप कहिए वैसा ही मैं करूँ, मर्द:

(कुछ सोचकर) बस इसे पुन:

गौहर के पास पहुँचा दो वह बलभद्रसिंह को दे देगी, किसी और जरिये से इसका उन तक पहुंचना मुनासिब नहीं.

औरत:

बहुत अच्छा, मगर यह तो कहिए कि अब मुझे क्या करना चाहिए.

क्या यह दारोगा बाली चीठी लेकर मैं हेलासिंह के पास जाऊँ?

किसी तरह का डर तो नहीं है?

मर्द:

कोई नहीं.

जब दारोगा और मनोरमा तुम्हें पहिचान न सके तो हेलासिंह कदापि नहीं पहिचान सकता.

औरत:

बहुत अच्छा.

मर्द:

उससे मिलकर जो कुछ कार्रवाई करना होगा वह मैं तुम्हें बता ही चुका हूँ, जिस तरह से हो सके उसके हाथ से गड़ी की ताली ले लेना होगा.

बिना उस ताली के हम लोग कुछ नहीं कर सकेंगे.

औरत:

आप इस इमारत का पूरा हाल नहीं जानते?

मर्द:

जितना तुम्हें बता चुका हूँ उससे ज्यादा कुछ नहीं जानता.

औरत:

इस हेलासिंह को उसका हाल क्योंकर मालूम हुआ?

मर्द:

वह और उसके पुरखे लोग बहुत समय तक जमानिया के दीवान रह चुके हैं.

यद्यपि आजकल राजा गिरधरसिंह की नाराजगी के कारण हेलासिंह जमानिया से निकाल दिया गया है और दीबानी का पूरा काम दूसरे के सुपुर्द है तथापि वह हर तरह का बहुत कुछ हाल जानता है और खास तौर पर वह लोहगड़ी तो बहुत दिनों तक उसके कब्जे में थी जिससे वह यहाँ का सब हाल बाखूबी जानता है ।

और लोहगढ़ी के कैदियों को छुड़ाने के लिए उसकी मदद अथवा उस ताली की जरूरत है जो उसके पास है.

औरत:

ठीक है, मैं समझ गई, तो मैं हेलासिंह से मिलूँगी और किसी न किसी प्रकार वह ताली कब्जे से लेने का उद्योग करूंगी, मगर यह जो कहिए कि अगर वह हाथ न लगी तब क्या होगा?

मर्द:

तब सिवाय इसके और कोई उपाय नहीं रहेगा कि जमानिया के राजा को इस बात की खबर पहुँचाकर उसकी मदद ली जाय.

औरत:

मेरी समझ में तो पहले यही करना चाहिए.

देर करने से न जाने क्या हो जाय, मर्द:

राजा गिरधरसिंह दारोगा के कब्जे में पूरी तरह पड़े हुए हैं.

उनको जल्दी इन बातों पर विश्वास होना कठिन है.

लाचारी की हाल में तो फिर यह करना ही होगा मगर एक बार तुम कोशिश तो करो, कदाचित् मेहनत सफल हो जाय! एक साथ ही बहुत से सबूत बटोरकर यदि राजा साहब के सामने पेश किए जायेंगे तब दारोगा अपने को किसी तरह बचा न सकेगा! औरत:

बेशक यह तो सही है.

मर्द:

अच्छा तुम जाओ, मैं एक दूसरे काम की फिक्र में लगता हूँ, यदि बन पड़ा तो कल तुमसे मिलूँगा.

औरत:

तो क्या इस समय आप लोहगड़ी न चलिएगा?

मर्द:

नहीं, तुम जाओ, मैं यहीं से विदा होता हूँ.

औरत कल किस समय मिलेंगे?

मर्द:

हो सका तो संध्या को.

इतना कह वह आदमी रुक गया और चारों तरफ देख इस बात पर विचार करने लगा कि वह किसजगह पर है और उसे किधरजाना चाहिए.

कुछ देर बाद उसने अपना मुंह उत्तर की तरफ किया और उस औरत से अलग हो तेजी के साथ उसी तरफ को रवाना हो गया.

वह औरत पुन:

अपने रास्ते पर चल पड़ी.

16वा व्यान।

बेचारी इन्दुमति के दिल की क्या हालत थी इसे बयान करना ही हमारी ताकत के बाहर है.

यद्यपि अब तक उसकी बदकिस्मती उसे तरह - तरह के दु:ख दे चुकी थी पर इन्द्रदेव की छाया के नीचे आकर वह बदकिस्मती के साए को अपने सर पर से हट गया - सा समझने लगी थी.

दयाराम के जिन्दा मिल जाने और अपने सास - ससुर को भी पुनः जिन्दा पाने पर वह समझ बैठी थी कि अब वह अपनी जिंदगी आराम के साथ बिता सकेगी, पर नहीं, यकायक अपने पति, दयाराम, जमना, सरस्वती, सभों के एक साथ गायब हो जाने ने उसे बता दिया कि उसका वह विचार गलत था अभी उसका अदृष्ट उसे और भी तमाशे दिखाया चाहता है.

इन्दुमति बुद्धिमान थी, चतुर थी, नीतिकुशल थी और जानती थी कि दु:ख और सुख कोई भी चिरस्थायी नहीं होता, वह समझती थी कि एक से दिन किसी के कभी नहीं बीतते, आज यदि रोकर तो कल हँसकर, आज यदि दु:ख के साथ तो कल प्रसन्नता के साथ, आज मुसीबत के साथ तो कल सुख के साथ जिन्दगी के दिन उसे काटने ही होंगे, पर तो भी, यह सब जानकर भी आज अपनी तबीयत को सम्हालना उसके लिए असम्भव हो रहा था.

उसके सास - ससुर की समझाने - बुझाने वाली बातों ने, जो जमाना देखे हुए और बहुत कुछ सुख - दुख झेले हुए थे, उसे और भी दु:खी कर दिया था.

दिवाकरसिंह और नन्दरानी भी यद्यपि लड़के के लिए उदास और चिन्तित हो रहे थे तो भी इन्दुमति के कारण उन्हें अपनी उदासी छिपानी और उसे दिलासा देना ही पड़ता था, मगर ये दमदिलासे की बातें इन्दुमति के क्षोभ को केवल बड़ा ही रही थीं.

इन्दुमति को इन्द्रदेव ने थोड़ी ऐयारी सिखाई थी और अपने को इस विषय में पण्डित न समझने पर भी वह बहुत कुछ कर गुजरने के लायक समझती थी, यही कारण था कि वह कई बार इन्द्रदेव और उनके नाहीं करने पर अपने सास और ससुर से इस बात की आज्ञा माँग चुकी थी कि सूरत बदलकर बाहर निकले और अपने पति या बहिनों को खोज निकालने की कोशिश करे.

उसके बार - बार कहते, रोने और बिलखने से लाचार होकर आखिर इन्द्रदेव ने इस बात की इजाजत दे दी की घाटी के बाहर निकले और अपने पति को खोजने का उद्योग करे, मगर साथ ही यह भी कह दिया कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक बिश्वासी ऐयार दूंगा, उसे हरदम साथ रखना और उसी की राय से सब काम करना.

यद्यपि इन्दुमति ने इसे भी एक प्रकार का बन्धन की समझा तो भी लाचारी ही हालत में इन्द्रदेव की यह बात उसे माननी ही पड़ी.

इन्द्रदेव ने उससे यह बी कह दिया कि जो आदमी उसकी मदद के लिए उसके साथ रहेगा वह अपनी सूरत और नाम छिपाये रहेगा, मगर इससे इन्दुमति को किसी प्रकार से घबराने या सन्देह करने की आवश्यकता नहीं.

आखिर एक दिन इन्दुमति अपने इसी साथी को लिए ऐयारी के सामान से दुरुस्त हो घाटी के बाहर निकली.

मुहाने ही पर उम्दे कसे - कसाये घोड़े लिए दो साईस खड़े थे जिन पर इन्दु और उसका साथी सवार होकर एक तरफ को रवाना हुए.

घाटी के बाहर आने के पहिले ही इन्दु ने अपने साथी से सलाह करके यह तय कर लिया था कि क्या करना और पहले किधर चलना चाहिए.

यहाँ यह कह देना जरूरी है कि इन्दु के इस साथी का नाम इन्द्रदेव ने अर्जुन बताया था और जिस तरह अर्जुन ने सूरत बदलने के सिवाय अपने तेहरे पर नकाब डाली हुई थी उसी तरह इन्दुमति ने भी सूरत बदलकर नकाब लगाई हुई थी.

इन्दु को विश्वास था कि जमानिया जाने से अवश्य प्रभाकरसिंह का पता लगेगा, अस्तु, अर्जुन (इन्दु का साथी) और इन्दु दोनों तेजी के साथ जमानिया ही की तरफ रवाना हुए.

इस समय इन्दु अपने किसी सोच में डूबी हुई थी और अर्जुन अपने ही किसी खयाल में डूबा हुआ था इसलिए दोनों में ज्यादा बातचीत न हुई.

इन्द्रदेव के मकान से जमानियातीस - पैंतीस कोस से ज्यादा त होगा अस्तु कुछ दिन रहते ही दोनों जमानिया के पास जा पहुँचे, इन्दु का इरादा तो उसी समय जमानिया चले चलने और ऐयारी करके कुछ पता लगाने का था मगर अर्जुन ने इस बात को स्वीकार न किया और कहा कि हम दोनों ही थक गये हैं और हमारे घोड़े भी आराम मांगते हैं, इस समय शहर में जाना व्यर्थ और अनुचित होगा उत्तम यही है कि आज की रात शहर के बाहर ही किसी खण्डह्र या पेड़ घर काट दी जाय और कल सुबह को सब तरह से लैस होकर जमानिया चलें, लाचार इन्दुमति को यह बात माननी पड़ी.

जमानिया के बाहर टूटे हुए मकानों और खण्डह्रों की कमी न थी अस्तु, अर्जुन इन्दुमति को एक ऐसे मकान के अन्दर ले गया जो यद्यपि टूटा - फूटा था, पर तो भी दो - चार आदमियों के छिपकर रहने के लिए काफी और आम मुसाफिरों की निगाहों से दूर पड़ता था.

अर्जुन ने दोनों घोड़ों को भी इस मकान के अन्दर ही छिपाने का बन्दोबस्त कर लिया और उनकी पीठ खाली करने के बाद कहीं से लाकर घास उनके सामने डाल दी.

इसके बाद वह अपने और इन्दुमति के लिए भोजन बनाने की फिक्र में लगा.

मगर इन्दु ने इस समय कुछ मेवे पर ही सन्तोष करना मुनासिब समझा जो उसके साथ था.

मकान के बाहर की तरफ एक कुँआ था और अर्जुन के पास लोटा डोरी भी मौजूद था अस्तु दोनों ने मेवा खाकर जल पीया और तब कुछ जमीन साफ कर लेट के आराम करने लगे.

इस समय रात हो गई थी.

मालूम होता है कि फिक्र और तरबुद से कमजोर इन्दुमति को थकावट के कारण शीघ्र ही नींद आ गई.

क्योंकि जब उसकी झपकी टूटी तो उसने चारों तरफ और अन्धकार और सन्नाटा पाया और गौर किया तो मालूम हुआ कि उसका साथी अर्जुन भी मीठी नींद में मदहोश हो रहा है.

इन्दु की नींद किसी प्रकार की आहट पाकर टूटी थी और जागने के साथ ही उसे पुन:

वही आहट लगी.

ऐसा मालूम हुआ कि मानो पास ही नहीं दो आदमी आपस में बातें कर रहे हैं.

यह जानते ही इन्दु चैतन्य होकर उठ बैठी और यह जानने की कोशिश करने लगी कि यह आवाज किसकी है और किधर या कहाँ से आ रही है.

कुछ देर बाद इन्दु उठ खड़ी हुई और दबे पाँव उस कोठरी के बाहर निकल आई जिसमें पड़ी हुई थी.

आवाज की सीध पर आहट लेती हुई वह उस खण्डह्र के बाहर निकल आई और तब मालूम हुआ कि यह बातचीत की आबाज दो आदमियों की है जो मकान के बाहर की तरफ से एक टूटे दालान में बैठे हुए हैं.

बड़ी होशियारी के साथ पैर दबाती हुई इन्दु उस दालान के पास पहुंची और एक मोटे खम्भे की आड़ देकर खड़ी हो उनकी बातें गौर से सुनने लगी.

एक:

मालूम होता है आज इस खण्डहर में कोई टिका हुआ है क्योंकि मैं अन्दर गया तो कुछ आहट मालूम पड़ी थी.

दूसरा:

अकसर रात के समय जमानियापहुंचने वाले मुसाफिर इन्हीं खण्डह्रो में रात बिता दिये करते हैं.

पहिला:

मगर क्या ऐसा करना इनके लिए मुनासिब है?

दूसरा:

क्यों?

इसमें मुनासिब होने - न - होने की कौन - सी बात है?

पहिला:

अब यह तो आप ही समझिए! दूसरा:

मैं क्या समझें, कुछ कहो भी तो! पहिला:

यहीं न उस गुप्त कमेटी की बैठक हुआ करती है जिसने जमानिया वालों के नाक में दम कर रखा है! दूसरे आदमी ने इस बात का कुछ जबाब न दिया जिस पर वह पहिला आदमी पुन:

बोला, " कहिए चुप क्यों हो गए! इक्यामैं गलत कहता हूँ?

" दूसरा:

भाई, ऐसे स्थान पर ऐसी बातों का जिक्र न करना ही अच्छा है.

न जाने किसके कान में हमारी क्रौत - सी बात पड़ जाय.

पहिला:

(लापरवाही के साथ) ओह, इस रात के समय यहाँ कौन हमारी बात सुनने आता है! दूसरा:

क्यों अभी तुम ही न कह चुके हो कि इस खण्डहर में कोई मुसाफिर उतरा हुआ पहिला:

वह कहीं पड़ा खुर्राटे लेता होगा कि हमारी बातें सुनने को बैठा है.

और फिर सुनकर ही हमारा क्या बिगाड़ लेगा?

दूसरा:

हाँ सो तो ठीक है.

(रुककर) क्या बतावें, अब तो इस शहर में रहने को जी नहीं चाहता, लाचारी जान मारती है नहीं तो कभी का शहर छोड़ दिए होते.

पहिला:

मगर आखिर क्यों?

दूसरा:

हमारे रहमदिल और बूड़ेमहाराज की जान अब मुफ्त में जाया चाहती है.

पहिला हैं, सो क्या?

दूसरा:

कमेटी का यही हुक्म है.

पहिला:

यह तो तुमने बड़ी बुरी खबर सुनाई! महाराज से तुम्हारी कमेटी इतना बड़ा रंज क्यों मान बैठी?

दूसरा:

क्योंकि उन्हें इस कमेटी की कार्रवाइयों का पता लग गया और वे अब दारोगा साहब की चिकनी - चुपड़ी बातों में नहीं फँसते.

पहिला:

मगर भाई, महाराज की जान तो अवश्य बचाती चाहिए! तुम उन्हें किसी तरह से होशियार नहीं कर सकते?

दूसरा:

मुझे क्या अपनी जान भारी है जो ऐसा करूँ?

एक बार कुछ कर बैठा तो जान बचानी कठिन हुई, अब पुन .

.

.

.

.

पहिला:

क्या कभी ऐसा मौका पड़ा था?

दूसरा:

हाँ.

पहिला:

कब?

कहाँ?

दूसरा:

अब यह सब पूछकर क्या करोगे?

पहिला:

फिर भी दूसरा:

एक दिन ठीक कमेटी के मौके पर एक विचित्र आदमी वहाँ पहुँचा दारोगा साहब ने उसे रोकने और गिरफ्तार करने का हुक्म दिया मगर उल्टे उसी ने कई आदमियों को बेकार कर दिया.

उसके बदन पर एक ऐसा तिलिस्मी कवच था कि कोई आदमी उसे हाथ नहीं लगा सकता था.

पहिला:

तब क्या हुआ?

दूसरा:

दारोगा साहब ने उसे धोखा देकर गिरफ्तार करने बल्कि मार डालने का अन्दोबस्त किया.

मैंने उसे सावधान कर दिया.

जिससे वह निकल गया.

इस बात का पता उनको न जाने किस तरह लग गया और वे मुझसे बेतरह नाराज हो बैठे, अखिर बड़ी - बड़ी कोशिशों से मन उनका शान्त हुआ.

तभी से उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई करते मुझे डर मालूम होता है.

पहिला:

वह कम्बख्त है भी बड़ा खोटा, अपने स्वार्थ के आगे किसी की जान तक को कुछ नहीं समझता.

उसका कोई वारिस भी है या नहीं?

दूसरा:

सुनते हैं एक भाई है मगर ठीक पता नहीं.

पहिला:

मैंने तो सुना है कि इसने बाप को जहर दे दिया और कई रिश्तेदारों को मार डाला.

दूसरा:

बेशक ऐसा ही है.

रुपये की लालच में पड़कर इन्होंने बहुतों की जाने लीं और ले रहे हैं, अब प्रभाकरसिंह इनके कब्जे में आ पड़े हैं, देखो उनकी क्या दशा करते हैं.

पहिला:

क्या प्रभाकरसिंह दारोगा की कैद में हैं?

दूसरा:

हाँ, भूतनाथ उन्हें गिरफ्तार करके इनके सुपुर्द कर गया है.

पहिला:

प्रभाकरसिंह तो महाराज के रिश्तेदारों में से हैं?

दूसरा:

हाँ.

पहिला:

मगर दारोगा उन पर भी हाथ साफ करने से बाज नहीं आता.

दूसरा:

जब खास महाराज की जान लेना वह कोई चीज नहीं समझता तब उनके रिश्तेदारों को क्या समझता है.

पहिला:

हाँ सो तो ठीक है, मगर भाई, यह तो तुमने बड़ी बुरी खबर सुनाई.

मुझे तो सुनकर हौल - सा होने लग गया कि बेचारे महाराज गिरधरसिंह की जान मुफ्त जाया चाहती है.

दूसरा:

क्या बताऊँ मैं खुद लाचार हूँ, कुछ कर नहीं सकता, दारोगा .

.

.

.

.

इसी समय किसी प्रकार की आहट सुन यह आदमी रुक गया और गौर से सुनने लगा पुनः किसी प्रकार की आवाज न आयी मगर इन दोनों की बातों का सिलसिला टूट गया

फिर देर तक किसी प्रकार की बातचीत न हुई.

कुछ देर बाद उस दूसरे आदमी ने खड़े होकर कहा, " अब तो मैं अच्छी तरह सुस्ता चुका, चलना चाहिए क्योंकि मालिक के काम का ख्याल रखना जरूरी है.

" पहिला:

चलो मैं तैयार हूँ.

इतना कह वो भी उठ खड़ा हुआ और दोनों आदमी दालान के बाहर निकल गए.

अन्धकार के कारण इन्दुमति को बिलकुल पता न लगा कि वे दोनों किधरगए या क्याहुए अस्तु वह अपने ठिकाने जाने के लिए लौटी और घूमी थी कि पास के एक दूसरे खम्भे की आड़ से एक और आदमी को निकलते देख चौंक पड़ी मगर शीघ्र ही मालूम हो गया कि यह उसका साथी अर्जुन ही है.

पर्जु ही है

इन्दु ०:

आप भी यहाँ आ पहुँचे! अर्जुन ०:

हाँ, उन दोनों के बातचीत की आवाज से मेरी नींद टूट गई.

उठा तो तुम्हें न पा बेचैनी के साथ ढूंढता हुआ यहाँ आ पहुँचा और इन दोनों की बातें सुनने लगा.

इनकी बातों से प्रभाकरसिंह का पता तो लग गया मगर महाराज के विषय में सुनकर तबीयत घबड़ा गई.

खैर अब अपने ठिकाने पर चलकर बातें होगी.

इन्दुमति को साथ ले अर्जुन पुन:

अपने ठिकाने चला गया और वहाँ बैठकर सलाह होने लगी कि अब क्या करना चाहिए.

आखिर बहुत कुछ बातचीत के बाद यह तय हुआ कि अर्जुन तो प्रभाकरसिंह की पूरी टोह लेने जमानिया जाय और इन्दुमति आज का दिन खण्डहर में छिपी रहकर बिता दे.

इन्दु का भी इरादा जमानिया जाने और प्रभाकरसिंह को छुड़ाने के काम में मदद देने का था मगर अर्जुन की जिद्द से लाचार उसकी बात माननी ही पड़ी.

सबेरा होने पर जरूरी कामों से छुट्टी पा अर्जुन ने अपनी सूरत बदली और इन्दुमति को बड़ी होशियारी के साथ रहने की ताकीद कर जमानिया की तरफ रवाना हुआ.

अकेले बैठे - बैठे इन्दु का जी घबड़ाने और बेचैन होने लगा इसलिए उसने सोचा कि जब तक अर्जुन लौटकर आवे तब तक अपने घोड़े पर सवार हो इधर - उधर जरा घूम - फिरकर आवे.

इन्दु की सूरत तो बदली हुई थी ही, नहाने धोने से जो कुछ फर्क पड़ गया था दुरुस्त करने के बाद उसने अपने चेहरे को नकाब से ढाँका और दोनों में से एक घोड़ा खोल (अर्जुन अपना घोड़ा वहीं छोड़ पैदल गया था) वह खण्डहर के बाहर निकली.

सूर्यदेव को उदय हुए बहुत समय नहीं हुआ था.

सुबह की ठण्डी - ठण्डी हवा इन्दु के बदन को मसोस डालती थी और खूबसूरत चिड़ियों के गाने की आवाज उसके दिल पर बेड़ब असर डाल रही थी जो किसी जुदाई से व्याकुल हो रहा था.

खण्डहर के बाहर हो इन्दु घोड़े पर सवार हो गई, लगाम ढील दी और घोड़े को सरपट दौड़ाया.

तेज घोड़ा सवार का इशारा पाते ही हवा से बातें करने लगा.

लगभग घण्टे भर इसी तेजी के साथ चले जाने के बाद इन्दु ने अपने घोड़े की चाल कम की.

" अब अपने स्थान को लौटना चाहिए " यह सोच उसने घोड़ा रोका और पीछे की तरफ उसका मुंह घुमाया मगर उसी समय चौंक पड़ी क्योंकि उसके कानों में शेर के गरजने की आवाज सुनाई पड़ी.

उसने घोड़े का बाग खींची और गौर से चारों तरफ देखा.

थोड़ी ही दूर पर एक झाड़ी की आड़ में बैठे हुए एक शेर का पिछला धड़ उसे दिखाई दिया.

क्या करूँ! रुकुं या आगे चलूँ?

सब बातें सोचने में कुछ ही देर इन्दु ने लगाई होगी कि आसपास पेड़ों की आड़ में छिपे हुए कई आदमी निकल आए और उन्होंने आगे बटवेकर इन्दु के घोड़े की लगाम थाम ली.

इन्दु समझ गई कि उसे धोखा दिया गया और वह इन लोगों के पंजे में बेतरह पड़ गई मगर तो भी उसने हिम्मत न हारी और कमर से तलवार निकाल कड़ककर बोली, " तुम लोग कौन हो क्यों मुझे रोक रहे हो?

इन्दु की बात सुन उत आदमियों में से जो उसे घेरे हुए थे एक आदमी सामने आया जिसकी बड़ी - बड़ी और घनी दाड़ी और मोछों को देख ऐयारों को शक हो सकता था कि बनावटी है.

इस आदमी ने इन्दु से कहा, " आप हम लोगों को नहीं जानती और हमीं लोग अपना परिचय दे सकते हैं पर अगर आप अपना ठीक ठीक नाम बता दें तो हम लोग आपको छोड़ देंगे.

" इन्दु ०:

(कुछ क्रोध के साथ) सिर्फ नाम जानने की नीयत से एक भली औरत को इस तरह धोखा देकर रोक लेना सभ्यता के बाहर है ।

आदमी:

जी हाँ, मगर क्या किया जाय, लाचारी है, हम लोग बिना आपका नाम जाने आपको छोड़ नहीं सकते.

इन्दुः:

(कुछ सोचकर) मेरा नाम चन्द्रकला है.

आदमी:

(गर्दन हिलाकर) नहीं, यह नाम तो आपका नहीं जान पड़ता.

इन्दु ०:

क्यों?

आदमी:

मेरे एक साथी ने मुझे विश्वास दिलाया है कि आपका नाम इन्दुमति है और आप प्रभाकरसिंह की स्त्री हैं!

इन्दुः:

मैंने तो इन्दुमति का कभी नाम भी नहीं सुना, अगर आपके किसी साथी ने आपको मेरा यह नाम बताया है तो मेरे साथ बेहदी दिल्लगी की है और या आपको किसी नीयत से पूरा धोखा दिया है क्योंकि मैं समझती हूँ कि आप लोग जरूर किसी इन्दुमति नामी औरत की तलाश में हैं.

खैर जो कुछ हो, मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि मेरा नाम अब आप लोग जान चुके हैं। दया करके मेरे घोड़े की लगाम छोड़ दें और मुझे जाने दें क्योंकि मैं बहुत ही जरूरी काम से जमानिया जा रही हूँ और अगर देर होगी तो मेरा बहुत बड़ा हर्ज और नुकसान होगा.

चन्द्रकला आदमी:

मगर मुझे आपकी बातों पर विश्वास नहीं होता.

इन्दु ०:

नहीं होता तो फिर मैं क्याकर सकती हूँ, लाचारी है.

आदमी:

खैर आप नकाब हटाकर अपनी सूरत ही दिखाइए.

इन्दुः:

(कुछ सोचकर) यद्यपि इस तरह हर एक को सूरत दिखलाना अपनी बेइज्जती कराना है तो भी खैर लीजिए, आप लोग मेरी सूरत देख लीजिए और मुझे जाने दीजिए.

इतना कहकर इन्दु ने अपने हाथ की तलवार म्यान में कर ली और चेहरे से नकाब हटा दी.

सब लोग गौर के साथ उसकी सूरत देखने लगे.

उस आदमी ने कुछ तरबुद के साथ कहा, " बेशक आपकी सूरत तो इन्दुमति से बिलकुल नहीं मिलती.

" इतने ही में उस आदमी ने जो इन्दु के घोड़े की लगाम पकड़े हुए था, कहा, “ मगर हमें कैसे विश्वास हो कि इसकी सूरत रंगी हुई नहीं है! " आदमी:

बेशक यह बात ठीक है.

(इन्दु से) आपको अपना चेहरा धोकर हम लोगों को विश्वास दिला देना चाहिए कि आपकी सूरत बनावटी नहीं है.

इन्दुः:

(बिगड़कर) आप लोग पूरी तरह मेरी बेइज्जती करने पर उतारू हो गये हैं.

क्या आप लोगों ने मुझे कोई बाजारू औरत समझा है कि मैं सभों के सामने अपना चेहरा धोती फिरूँ?

आदमी:

(दृढ़ता के साथ) मगर हम लोग बगैर चेहरा धोये आपको किसी तरह जाने भी नहीं दे सकते, बस अब जल्दी किजिये, अगर चेहरा धोना आप खुशी से मंजूर न करेंगी तो हम लोगों को लाचार होकर जबर्दस्ती करनी पड़ेगी.

इन्दु ०:

(कुछ सोचकर) खैर जब यही बात है तो लाचारी है, पानी मंगाइये, चेहरा भी धोकर दिखाये देती हूँ, मगर ख्याल रहे कि आप लोग व्यर्थ मुझे तंग कर रहे हैं और इसका नतीजा अच्छा न होगा.

उस आदमी ने दो आदमियों को पानी लाने का हुक्म दिया और दो को इधर - उधर से सूखे पत्ते और लकड़ियाँ बटोर कर पानी गर्म करने के वास्ते आग बालने को कहा.

इस बीच इन्दु भी बेफिक्र न थी.

गुप्त रीति से कपड़ों के अन्दर छिपा हुआ एक दुनाली तमंचा उसके पास इस समय भी मौजूद था.

इस वक्त उसको घेरे हुए आदमी कुछ तितर - बितर हो रहे थे अस्तु अच्छा मौका समझ उसने वह तमंचा निकाल लिया और फुर्ती के साथ उस आदमी पर गोली चलाई जो उसके घोड़े की लगाम पकड़े खड़ा था.

गोली ठीक निशाने पर लगी और वह एक चीख मारकर एक तरफ लुढ़क गया, साथ ही इन्दु की दूसरी गोली दूसरी तरफ के आदमी को लगी और उसने भी लगाम हाथ से छोड़ दी इन्दु ने घोड़े को एड़ लगाई और देखते देखते इन आदमियों को पीछे छोड़ दिया.

वे सब भौंचक्र की तरह इन्दु की तरफ देखते ही रह गये और जब वह दूर निकल गई तब जाकर कहीं उन लोगों को होश हुआ.

उनमें से तीन आदमियों ने घोड़ों पर सवार होकर (जो उसी जगह कहीं मौजूद थे) इन्दु का पीछा किया.

इन्दु भागी तो सही मगर इन बदमाशों की तरह अपनी बदकिस्मती को भी पीछे न छोड़ जा सकी.

भागने के धुन में उसने एक पेड़ की नीची डाल पर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया जो उसके सिर में इस ज़ोर से लगी कि चक्कर आ गया और वह घोड़े की पीठ पर से गिरने के साथ ही बेहोश हो गई.

बफादार घोड़ा उसी जगह रुक गया और इसके साथ ही पीछा करने वाले तीनों आदमियों ने भी वहाँ पहुँचकर उसे घेर अपने कब्जे में कर लिया.

।

।

दसवां भाग समाप्त ।

ग्यारहवाँ भाग

पहला व्यान।

इन्दुमति जब होश में आई उसने अपने को एक अंधेरी जगह में पत्थर की चट्टान के ऊपर पड़े हुए पाया.

उसके सिर में मोटे कपड़े की पट्टी बंधी हुई थी जो किसी दवा से तर थी.

धीरे - धीरे उसे पूरा होश आ गया और पिछली तमाम बातें याद कर बह उठ बैठी.

यह तो उसे पूरी तरह से विश्वास था कि जिन लोगों ने उसे रोका और जिनके पास से भागते समय उसे डाल की चोट लगी थी, इस समय भी वह उन्हीं के कब्जे में है, मगर इस वक्त वह है कहाँ, शहर में या जंगल में, मकान में या किसी पहाड़ की क्रन्दरा में, इसका पता नहीं लगता था और न बहुत कुछ विचार करने पर भी वह यही जान सकती थी कि जिन लोगों ने उसके साथ ऐसा सलूक क्या वे कौनया किसकेआदमी थे.

यद्यपि जहाँ इन्दु थी वहाँ घोर अंधकार था पर धीरे - धीरे इन्दु की आँखें इस लायक हुई कि उस अँधेरे में भी जान सके कि वह पहाड़ की गुफा में है क्योंकि नीचे - ऊपर चारों तरफ सिर्फ अनगढ़ पत्थर ही मालूम हो रहे थे.

बाई तरफ कुछ रोशनी सी मालूम पड़ने से इन्दु ने खयाल किया कि शायद खोह का मुहाना उसी तरफ है अस्तु वह उठी और धीरे - धीरे कदम दबाती हुई उस तरफ चली.

कुछ ही दूर जाने पर मुहाना आ पहुँचा और वहीं इन्दु को यह भी मालूम हुआ कि मोटे बाँसों की ठट्टी से वह मुहाना मजबूती के साथ बन्द है जिसे तोड़ कर बाहर निकल जाना मुश्किल है.

वह वहीं खड़ी हो गई और देखने लगी.

चन्द्रमा की निर्मल चाँदनी उस पहाड़ी की पूरी छटा दिखा रही थी जिसकी जड़ में यह तथा और भी कोई छोटी गुफाएँ थीं.

इन्दु के कैदखाने वाली गुफा के सामने कई मोटे - मोटे कुन्दे आग के सुलग रहे थे और पास ही एक आदमी पत्थर के ढोंके के साथ उठगा हुआ था.

गौर करने से मालूम हुआ कि वह बैठा रहने पर भी गहरी नींद की चपेट में है क्योंकि उसका सिर बार - बार उसकी छाती पर लुड़क जाता था.

कभी - कभी वह आँखें उठा कर अपने चारों तरफ देख भी लेता था मगर इस बात की तो उसे जरा भी खबर नहीं थी कि उसका वह कैदी जिसकी निगहबानी के लिए वह यहाँ बैठाया गया है उसने पास आ पहुँचा और निकल भागने की तर्कीब सोच रहा है.

इन्दु का ध्यान अपने ऐयारी के बटवेए की तरफ गया और साथ ही यह जान उसकी प्रसन्नता की हदन रही कि वह बटुआ अभी तक उसके पास ही मौजूद है जिसे वह बहुत होशियारी से छिपा कर अपने कपड़ों के अन्दर दबाए थी.

इन्दु ने धीरे धीरे बटुआ खोला और अपने सामने रख उसमें से कुछ चीजें बाहर निकालने लगी.

पहिले तो उसने एक दवा की शीशी निकाली और उसका काग खोल कर उसे अच्छी तरह संघा, इसके बाद काग बन्द कर उसे बटुए के हवाले किया और किसी चीज के छोटे - छोटे टुकड़े निकाले जो देखने में राल या गूगल की तरह मालूम होते थे.

इन टुकड़ों को उसने उस आग में फेंक दिया जो गुफा के मुहाने के पास पड़ने के साथ ही वे टुकड़े जलने लग गए और एक प्रकार की हलकी सुगन्ध चारों तरफ फैलने लगी.

मालूम होता है कि पहरेदार की नाक तक भी खुशब् पहुँची क्योंकि उसने एक बार आँख खोल चारों तरफ देखा, दो - चार लम्बी साँसें ली और तब पुन:

उसी तरह आँखें बंद कर ली.

थोड़ी देर बाद इन्दु ने पुन:

उसी तरह के कुछ टुकड़े निकाले और आग में फेंका.

उस पहरेदार पर इन टुकड़ो की खुशबू का विचित्र असर पड़ा.

उसकी गरदन झुक गई और इसके बाद ही धीरे - धीरे वह जमीन पर लेट गया, साथ ही साँस लेने के ढंग ने इन्दु पर यह भी जाहिर कर दिया कि उसकी कारीगरी काम कर गई और पहरेदार बेहोश हो गया.

इन्दु ने एक खुशी भरी निगाह चारों तरफ डाली और पूरा सन्नाटा पा अपने बटुए से औजार निकाल बाँस की इस जाली को धीरे - धीरे काटना शुरू किया.

बहुत होशियार और आहिस्तगी के साथ धीरे - धीरे इन्दु ने उस जाली को काट कर इतना बड़ा रास्ता पैदा कर लिया जिसकी राह वह उस खोह के बाहर निकल आ सके, अभी तक चारों तरफ पूरा सन्नाटा था और कहीं से किसी तरह की आहट नहीं लग रही थी अस्तु इन्दु ने खुशी - खुशी अपना बटुआ कमर से लगाया और खोहके बाहर आ दबे पाँव मैदान की तरफ बड़ चली जिधर बिल्कुल सन्नाटा था.

मगर पचास कदम से ज्यादा वह न गई होगी की पीछे से आवाज आई, " खड़ी रह, भागी कहाँ जाती है! " डर और चौंक कर इन्दु ने पीछे फिर देखा और उसी घनी दाढ़ी - मोछों वाले आदमी को अपनी तरफ आते पाया जिसे ऊपर के बयानों में हम कई बार सरदार के नाम से सम्बोधन कर चुके हैं.

सर ०:

(पास पहुँच कर) क्यों, क्या मज़े में भाग आई और इस बात की खबर ही नहीं मैं तेरी सब कार्रवाई देख रहा हूँ, इन्दुमति घबड़ा कर रुक गई और उस आदमी का मुँह ताकने लगी.

इसी समय उनके पास कोई हथियार भी नहीं था जिससे काम लेती क्योंकि उसके कैद करने वालों ने इस बात का ख्याल रखाथा और उसके सब हथियार छीन लिए थे.

वह बेचैनी और निराशा के साथ खड़ी सरदार का मुंह देखने लगी, इन्दुः:

आप लोग व्यर्थ ही मुझ बेकसूर को सता रहे हैं.

मैंने आप लोगों का क्या बिगाड़ा है?

सर ०:

क्या तूने हम लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ा?

इन्दु::

मैं तो आपको पहिचानती तक नहीं.

सर ०:

ठीक है, इसी से यह बात कहती है, अगर जानती तो ऐसा कदापि न कहती.

इन्दु ०:

आखिर कुछ मालूम भी हो कि आप लोग कौन हैं?

सर ०:

(रुककर) हम लोग महाराज शिवदत्त के नौकर हैं और उन्हीं के हुक्म से तुम्हें और प्रभाकरसिंह को गिफ्तार करने के लिए यहाँ आये हैं.

प्रभाकरसिंह हमारे फन्दे में पड़ ही चुके हैं, और तुम भी गिरफ्तार हो गई, अब हम तुम्हें मालिक के पास ले चलेंगे और मनमाना इनाम पावेंगे.

यह बात सुनते ही इन्दु के नाजुक कलेजे में चोट - सी लगी.

यह जानकर कि वह शिवदत्त के आदमियों के कब्जे में है उसे बेतरह रंज हुआ और उसने अपनी जिन्दगी की आशा बिल्कुल ही छोड़ दी मगर इससे भी ज्यादा रंज उसे उस आदमी के इन शब्दों पर हुआ कि प्रभाकरसिंह हमारे फन्दे में पड़ चुके हैं.

उसके दिल में तरह - तरह के ख्याल दौड़ने लगे और वह भयानक समा कुछ देर के लिए उसकी आँखों के सामने घूम गया जब शिवदत्त ने उसे अपने महल में कैद कर दिया था और प्रभाकरसिंह बड़ी बहादुरी के साथ बहुत - से आदमियों को मार उसे छुड़ा ले भागे थे.

सच तो यह है कि इन्दु बिल्कुल ही निराश हो गई और उसकी आँखों से आँसू की बूंदे गिरने लगी, पर उस सरदार ने यह देख बेदर्दी से कहा, " अफसोस करने से क्या फायदा, यह कहो कि सीधी तरह से हमारे साथ चले चलना मंजूर है या जबर्दस्ती की जाय?

" इन्दु ०:

चाहे जान चली जाय मगर तुम दुष्टों के कब्जे में पड़ना मंजूर नहीं! इतना कहने के साथ ही इन्दु पलट पड़ी और तब तेजी के साथ एक तरफ को भागी, सरदार ने भी उसका पीछा किया.

जहाँ तक हो सका इन्दु ने भागने में कसर न की मगर वह आदमी दौड़ने में उससे कहीं तेज़ और मज़बूत था.

इन्दु को विश्वास हो गया कि अपने को किसी तरह उसके हाथों से बचा नहीं सकती, लाचार होकर खड़ी हो गई और जमीन पर से पत्थर का टुकड़ा उठाकर उसने उस आदमी के ऊपर फेंका जो अब बहुत पास आ चुका था.

ढोंका उसकी छाती में लगा और वह एक दफे लड़खड़ा गया.

इन्दु को मोहलत मिली और उसने एक बगल हटकर दूसरा पत्थर उसके ऊपर मारा.

यह उसके सिर में लगा मगर इस बार उस आदमी को भी क्रोध आ गया.

उसके झपट कर इन्दु को पकड़ लिया और तब उठाकर जमीन पर पटक दिया.

इसी समय पीछे से एक बारीक जनानी आवाज आई, हैं, यह तुम क्या कर रहे हो! " उस आदमी ने चौंककर पीछे की तरफ देखा, एक औरत पर नजर पड़ी जिसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी.

उसने ताज्जुब के साथ पूछा, " तुम कौन हो?

"

औरत:

मैं कोई भी होऊँ पर इसमें शक नहीं कि तुम लोगों की दोस्त हूँ, सर ०:

तुम यहाँ किसलिए आई और क्या चाहती हो?

तुम्हारा नाम क्या है?

औरत:

इसका जवाब तुम्हें इससे मिलेगा.

इतना कह उस औरत ने चौखटेमें जड़ी हुई एक छोटी - सी तस्वीर निकाली और आगे बड़ कर सरदार के हाथ में दे दी जो कुछ ताज्जुब तथा गौर के साथ सिर झुका कर उसकी तस्वीर को देखने लगा.

उस औरत को मौका मिला.

उसने एक चादर जो उसके बदन पर थी खोली और उसे फुर्ती से सरदार के सिर पर डाल कर लपेट दिया.

जरूर उस कपड़े में बेहोशी की दबा लगी हुई थी जो इतनी तेज थी कि सरदार को बात करने या हाथ - पाँब हिलाने की भी मोहलत न मिली और वह बदहवास होकर जमीन पर गिर गया.

और उसने उस कपड़े को थोड़ी देर तक और उसके मुंह पर रहने दिया और तब तस्वीर पुनः ठिकाने कर इन्दु की तरफ बड़ी जो अब उठकर बैठ गई थी और ताज्जुब के साथ यह सब हाल देख रही थी.

उसने हाथ का सहारा देकर इन्दु को उठाया और कहा, “ यहाँ बात करने की फुरसत नहीं है, तुम मेरे पीछे - पीछे चली आओ.

" इन्दु का कमजोर दिमाग इस समय इस लायक नहीं था कि वह कुछ ज्यादा सोच - विचार कर सकती.

उसने इस औरत का कहा करना ही मुनासिब समझा जिसने उसे बचाया था क्योंकि शिवदत्त के आदमियों के हाथ में पड़ने की बनिस्बत उसने मौत के मुंह में जाना भी लाख दर्जे अच्छा समझा हुआ था.

वह बगैर कहे - सुने उठ खड़ी हुई और उस औरत के पीछे रवाना हुई.

कभी दौड़ती और तेजी से चलती हुई उस नकाबपोश औरत ने उस समय तक दम न लिया जब तक कि वह उस जगह से काफी दूर निकल न गई जहाँ शिवदत्त के आदमियों का डेरा था.

बहुत दूर निकल जाने पर जब उसने यह समझ लिया कि अब किसी तरह का डर नहीं है तो वह रुक गई और खड़ी होकर इन्दुमति की राह देखने लगी जो बिल्कुल थक जाने के कारण पीछे छूट गई थी.

पास पहुँचकर इन्दु ने कहा, " ओफ, अब मैं बिल्कुल थक गई और जरा भी नहीं चल सकती.

"

औरत:

अब कोई डर की बात भी नहीं है क्योंकि हम लोग उन कम्बख्तों को दूर छोड़ आए हैं.

आओ, (एक साफ जगह बताकर) इस जगह बैठ जाओ, सुस्ता लो, और तब बताओ कि तुम कौन हो और इन लोगों के हाथ में क्योंकर पड़ गई?

कुछ देर तक इन्दु इस लायक त थी कि बातचीत कर सकती या किसी सवाल का जवाब दे सकती मगर धीरे - धीरे उसके होश - हवास दुरुस्त हुए और वह बातचीत के इरादे से उस औरत की तरफ घूमी.

इन्दुः:

तुमने मुझे बड़ी भारी दुश्मन के हाथ से बचाया.

औरत:

वह आदमी कौनथा जो तुमसे हाथापाई कर रहा था?

इन्दु ०:

वह महाराज शिवदत्त का कोई ऐयार था, उसी के आदमियों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया था, मैं किसी तरह छूट कर भाग रही थी जब उस कम्बख्त की निगाह पड़ गई और उसने मुझे पुनः पकड़ना चाहा, तुम्हारी बदौलत मुझे उसके हाथों से छुट्टी मिली.

औरत:

(आश्चर्य से) तो क्या वे लोग शिवदत्त के आदमी थे! मैं आज कई दिनों से उन लोगों की कार्रवाई देख रही हूँ पर मुझे इसका गुमान न हुआ था कि शिवदत्त के आदमी होंगे.

(कुछ देर चुप रहकर) अच्छा तुमको शिवदत्त से क्या सम्बन्ध?

यह एक ऐसा सवाल था कि जिसका जवाब देने के लिए इन्दुमति तैयार न थी क्योंकि ऐसा करने से उसे अपना सब हाल इस अज्नबी औरत को बताना पड़ता जिसके विषय में वह कुछ भी नहीं जानती थी, अस्तु वह कुछ तरवुद में पड़ गई कि इस बात का क्या जवाब दे.

उधर वह औरत भी चन्द्रमा की रोशनी में बड़े गौर से इन्दुमति का चेहरा देख रही थी.

यकायक चौक पड़ी और बोली, " हैं, तू इन्दु तो नहीं है ।

" इन्दुः:

बेशक मेरा नाम इन्दुमति है, मगर क्या तुम मुझे जानती हो?

औरत:

बखूबी, मगर बहिन इन्दु, आजकल तो तू इन्द्रदेवजी के यहाँ न रहती थी, फिर इन कम्बख्तों के फेर में कैसे पड़ गई?

इन्दु ०:

मैं अपने पति को छुड़ाने निकली और इस मुसीबत में पड़ गई, औरत:

ओह, मैं नहीं कह सकती कि तुझे देखकर आज मुझे कितनी प्रसन्नता हुई, आज वर्षों बाद तेरी सूरत देखने आई, ओह, वह दिन अभी तक मेरी आँखों के सामने है जब तेरी .

.

.

.

.

इन्दु ०:

मगर ताज्जुब की बात है कि आपकी आवाज से मैं बिलकुल नहीं जान पाती कि आप कौन हैं?

औरत:

(अपनी नकाब पीछे की तरफ उलट कर) मैं समझती हूँ कि मेरी सूरत देखकर भी तू मुझे न पहिचान सकेगी जिसमें कैद की सख्तियों ने बहुत बड़ा फर्क डाल दिया है.

इन्दुमति ने बड़े गौर से औरत की सूरत देखी.

यद्यपि चेहरा देखते ही इस बात में शक्र तक नहीं रह जाता था कि इसने भारी तकलीफ और मुसीबत उठाई है तथापि कमजोरऔर दुबली - पतली होने पर भी उस औरत की खूबसूरती और सुडौली गजब की थी.

साफ गोरा रंग, बड़ी - बड़ी आँखें, पतली नाक और सुडौल मुँह देखने से यह विश्वास होता था कि यदि वह औरत स्वतंत्रता और सुख की जिन्दगी बिता सकती तो खूबसूरती और नजाकत में अपना सानी आप होती.

न जाने क्यों इन्दुमति का दिल इस औरत की तरफ खिंच गया, शायद इसका सबब यह हो कि दो मुसीबतजदों के मिल बैठने से आपस में एक तरह का मेल हो ही जाता इन्दु बड़ी देर तक गौर से इस औरत की सूरत देख रही थी.

उसके दिल में यह बात तो बार - बार उठती थी मैंने निःसन्देह इसे पहिले कभी देखा है, पर कब और कहाँ यह बिल्कुल याद नहीं आता था.

आखिर इन्दु ने कहा इन्दु ०:

मैंने तुम्हें देखा तो जरूर है मगर कब और कहाँ यह बिल्कुल नहीं याद आता, हाँ अगर तुम परिचय दो बेशक पहिचान जाऊँ।

औरत:

इस समय मैं इससे ज्यादा अपना और कोई परिचय नहीं दे सकती कि हम तुम दोनों ही पर मुसीबतों का पहाड़ गिरा है और हमारे भाग्यों का फैसला भी कदाचित एक ही जगह होने वाला है तथा इस तरह पर हम दोनों बहिनें हैं.

इस समय मैं लाचार हूँ कि न तो अपना परिचय दे सकती हूँ और न असली नाम ही बता सकती हूँ पर बहिन इन्दुमति, तु विश्वास रख कि मेरे साथ से सिवाय तेरी भलाई के बुराई

कभी न होगी, और मुझे यह भी निश्चय है कि जिस समय तू मेरी परिचय पावेगी बहुत ही खुश होगी, मगर .

.

इन्दु ०:

मगर क्या?

औरत:

मगर मुझे रंग - डंग बहुत बुरे नजर आ रहे हैं.

तेरी बहिनें जमना और सरस्वती तिलिस्म में फंस गईं, तेरे पति दूसरी ही मुसीबत में जा पड़े, इन्द्रदेव बेचारे अलग ही तरबुद में पड़े हुए हैं.

हम लोगों के दुश्मनों की गिनती बटवेती जा रही है, और उनके जाल इस मजबूती से चारों तरफ फैले हुए हैं कि बचकर निकल जाना असम्भव मालूम होता है! इन्दुः:

क्या तुम्हें उनका हाल मालूम है?

औरत:

किसका, तेरे पति का?

इन्दु ०:

हॉ.

औरत:

हाँ बहुत कुछ, बल्कि कहना होगा कि अभी कल ही परसों तक वे मेरे मेहमान थे, मगर अब कहाँ या किस हालत में हैं ठीक - ठीक नहीं कह सकती.

इन्दुः:

कल तक वे तुम्हारे मेहमान थे?

तब तो तुम उनका बहुत कुछ हाल जानती होगी.

मगर तुम कहती हो अब वे कहाँ या किसहालत में हैं यह नहीं कह सकती, तो क्या वे कहीं चले गए हैं?

औरत:

हाँ, उन्होंने मुझसे रँज होकर मेरा मकान छोड़ दिया और मुझे गुमान होता है कि शायद वे पुनः दुश्मनों के कब्जे में पड़ गए.

इसी समय इन्दु को उस सरदार की वह बात याद आ गई जो उसने कही थी, अर्थात् " प्रभाकरसिंह तो हमारे फन्दे में पड़ चुके हैं, अब तुम्हें गिरफ्तार करके मालिक के पास ले चलेंगे! " उसने कहा-

जिस आदमी के हाथ से तुमने अभी - अभी मुझे छुड़ाया है उसकी एक बात से मुझे मालूम होता है कि उन्हीं लोगों ने उनको भी गिरफ्तार कर लिया है.

औरत:

क्या ऐसी बात है?

(सोचकर) यद्यपि विश्वास तो नहीं होता फिर भी मैं बहुत जल्द इस बात का पता लगा लूंगी.

क्या तुम कुछ ऐयारी भी जानती हो?

इन्दु ०:

बहुत थोड़ी, इन्द्रदेव से ही मैंने कुछ ऐयारी सीखी थी.

औरत:

तो ठीक है, तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए.

इन्दु ०:

मैं दिलोजान से मदद करने को तैयार हूँ बल्कि मेरा एक साथी भी है जो तुम्हारी मदद करेगा.

औरत:

वह कौनहै?

इन्दुः:

ठीक परिचय तो मैं नहीं जानती, मगर आदमी होशियार और विश्वासी है और इन्द्रदेवजी ने ही उसे मेरी मदद के लिए भेजा हुआ है, उसका नाम अर्जुन है.

औरत:

वह इस समय कहाँ है?

इन्दुः:

उनका पता लगाने जमानिया गया हुआ था.

जब मैं शिवदत्त के कब्जे में पड़ गई तब के बाद का हाल नहीं मालूम कि अब कहाँ है या क्या कर रहा है, मगर ताज्जुब नहीं कि खुद ही मेरा पता लगाकर शीघ्र ही मुझसे मिल जाए क्योंकि वह बहुत होशियार है.

औरत:

खैर देखा जाएगा, अच्छा अब यह कहो कि इस समय तुम्हारा क्या इरादा है! कहाँ जाओगी और क्या करोगी?

इन्दु ः: अब जो कहो सो करूं.

औरत:

मेरा स्थान इस जगह के पास ही है.

मेरी राय है कि इस समय तुम वहाँ ही चलो और रात आराम करो, फिर सुबह को सलाह करके जो मुनासिब समझो करेंगे.

इन्दु ०:

मैं चलने को तैयार हूँ मगर तुम तो अपना कोई परिचय, यहाँ तक कि नाम बताना नहीं चाहतीं, ऐसी हालत में, जब कि तुम्हें मुझ पर विश्वास ही नहीं है .

.

औरत:

नहीं - नहीं बहिन इन्दु, इस बात को तो तू स्वप्न में भी खयाल न कर कि मैं तुझे अविश्वास की नजर से देखती हूँ या देखूंगी, केवल कई कारण ऐसे पड़ गए हैं जिनसे लाचार होकर इस समय मुझे अपने को तुझसे छिपाना पड़ता है.

तु निश्चय रख कि जब तू मेरा परिचय पावेगी तो तुझे प्रसन्नता होगी और इस समय मुझ पर विश्वास करने के कारण तुझे कभी अफसोस करना न पड़ेगा.

इन्दु आपने जिन दुष्टों के हाथों से मुझे बचाया है उनके कब्जे में रहने की बनिस्बत मैं मौत को हजार गुना अच्छा समझती हूँ अस्तु मैं अविश्वास तो आप पर कभी कर ही नहीं सकती, इसके सिवाय न जाने क्यों मेरा दिल आपकी तरफ खिंचता है, इसलिए जो कुछ आप कहें मैं करने को तैयार हूँ, मगर आप कम - से - कम ऐसा कोई नाम तो बता दें जिससे मैं आपको पुकारा करूँ.

यदि असली नाम न बता सकें तो कोई बनावटी ही सही.

औरत:

(मुस्कुराकर) तू जो चाहे मेरा नाम रख ले.

इन्दुः:

तुमने मुझे बड़े भारी दुश्मन के हाथ से बचाकर मेरा कल्याण किया है इससे मैं तुम्हें ' कल्याणी ' कहा करूंगी.

औरत:

(हंसकर) अच्छी बात है, तू कल्याणी ही कह के मुझे पुकारा कर, इन्दु ०:

बहुत ठीक.

औरत:

तो बस उठो, देर करने की जरूरत नहीं, अब एकदम ठिकाने पर चलकर ही आराम किया जाएगा.

इतना कह वह औरत (कल्याणी) उठ खड़ी हुई, इन्दु भी खड़ी हो गई और तब कल्याणी इन्दु को लिए दक्षिण की तरफ चली.

थोड़ी देर के बाद दोनों उस ढीले के पास जा पहुँची जिस पर लोहगड़ी कीविचित्र इमारत थी जिसका हाल ऊपर कई जगह लिख चुके हैं.

इन्दु ने पूछा, “ क्या यही तुम्हारा मकान है?

कल्याणी:

हाँ आजकल मैं अपना डेरा यहीं जमाए हुए हूँ, इन्दु ०:

क्या यह तुम्हारे बुजुर्गों का बनवाया हुआ है?

कल्याणी:

नहीं - नहीं, यह जमानिया के राजा का है और उन्हीं के बुजुर्गों का बनवाया हुआ है, पर आजकल बहुत दिनों से यों ही खाली पड़ा रहता था, इसीलिए मैंने इसमें अपना डेरा रक्खा है.

इन्दु ०:

तो इससे पहले तुम कहाँ रहा करती थीं?

कल्याणी:

(कुछ रुकती हुई) कम से कम कुछ वर्षों तक तो जमानिया के दारोगा की कैद में?

इन्दु ०:

दारोगा की कैद में?

कल्याणी:

हाँ, वर्षों तक मैं उसकी कैद में ही रही और इस बीच में जैसी तकलीफ मुझे उठानी पड़ी उसे मैं ही जानती हूँ, इन्दुः:

वह कम्बख्त है भी बड़ा ही कमीना, हम सभी को उसी के कारण तकलीफें उठानी पड़ी हैं.

मगर तुम्हारी उसकी दुश्मनी का सबब क्या हुआ?

कल्याणी:

वह बड़ी लम्बी कहानी है.

इस समय कहने लायक नहीं, इन्दु ०:

खैर जब मुनासिब समझना तभी कहना.

अच्छा क्या यह बात बता सकती हो कि तुम दारोगा की कैद से छूटी कब और किस तरह?

कल्याणी:

मेरे एक बुजुर्ग ने मुझे छुड़ाया और फिर इस जगह के कुछ भेदों को बताकर यहीं रहने की सलाह दी.

तब से मैं इसी जगह रहती हूँ और दारोगा से बदला लेने का मौका ढूंढ़ा करती हूँ, इन्दु ०:

क्या यहाँ तुम्हारे दुश्मन नहीं पहुँच सकते?

कल्याणी:

पहुँच तो जरूर सकते हैं मगर बहुत कठिनाई से, और फिर यहाँ छिप जाने की भी बहुत - सी जगहें हैं.

इसी खयाल से मैं प्रभाकरसिंह जी को भी यहाँ ले आई थी पर उन्हें मुझ पर विश्वास न हुआ वे यहाँ से चले गए.

तब से फिर उनका कोई पता नहीं कि कहाँ गये या क्या हुए.

इन्दु ०:

वे तुम्हें कहाँ और क्योंकर मिले?

उस कमरे के बगल ही में एक कोठरी थी और उस कोठरी में ऊपर छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं ।

वह बूड्ढा दोनों कुमारों को साथ - साथ लिये हुए उस कोठरी में और वहाँ से सीढ़ियों की राह चढ़कर उसके ऊपरवाली छत पर ले गया ।

उस मंजिल में भी छोटी - छोटी कई कोठरियाँ और कमरे थे ।

बुड्ढे के कहे मुताबिक दोनों कुमारों ने एक कमरे की जालीदार खिड़की में से झाँककर देखा तो इस इमारत के पिछले हिस्से में एक और छोटा - सा बाग दिखायी दिया, जो बनिस्बत इस बाग के जिसमें कुमार एक दिन रात रह चुके थे, ज्यादे खूब सूरत और सरसज्ज नजर आता था ।

उसमें फूलों के पेड़ बहुतायत से थे और पानी का एक छोटा - सा झरना भी वह रहा था, जो इस मकान की दीवार से दूर और उस बाग के पिछले हिस्से की दीवार के पास था और उसी चश्में के किनारे पर कई औरतों को भी बैठे हुए दोनों कुमारों ने देखा ।

पहिले तो हुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को यही गुमान हुआ कि ये औरतें किशोरी, कामिनी और कमलिनी इत्यादि होंगी ।

मगर जब उनकी सूरत पर गौर किया तो दूसरी औरतें मालूम हुई, जिन्हें आज के पहिले दोनों कुमारों ने कभी नहीं देखा था ।

इन्द्रजीत:

(बुड्ढे से) क्या वे ये ही औरतें हैं, जिनका जिक्र तुमने किया था और जिनमें से एक औरत का नाम तुमने कमलिनी बताया था?

बुड्ढा:

जी नहीं, उनकी तो मुझे कुछ भी खबर नहीं कि वे कहाँ गयी और क्या हुई ।

आनन्द:

फिर ये सब कौन हैं?

बुड्ढा:

इन सभों के बारे में इससे ज्यादे और मैं कुछ नहीं जानता कि ये सब राजा गोपालसिंह की रिश्तेदार हैं और किसी खास सबब से राजा गोपालसिंह ने इन लोगों को यहाँ रख

छोड़ा है ।

इन्द्रजीत:

ये सब यहाँ कब से रहती हैं?

बूडा:

सात वर्ष से

!! ये दोनों बातें करती हुई टीले पर चढ़ती जाती थीं यहाँ तक कि अब उस जगह आ पहुंची जहाँ से गड़ी के भीतर का रास्ता था, अस्तु कल्याणी ने इन्दु से कहा, " अब हम लोग पहिले इस मकान के अन्दर हो जाएँ तो तुम्हारी बातों का जबाब दूं . इन्दु यह सुन चुप हो रही और कल्याणी के पीछे - पीछे जाने लगी जो इस मकान के अद्भुत दरवाजों को खोलती और बन्द करती हुई अँधेरे में ही बड़ी जा रही थी.

इन्दु को इसके पहिले भी तिलिस्मी मकानों और घाटियों में जाने का मौका मिल चुका था अस्तु उसे निश्चय हो गया कि मकान भी जरूर तिलिस्म से संबंध रखता है ।

मगर इस समय इस विषय में कल्याणी से कुछ पूछना उसने उचित न समझा.

शीघ्र ही ये दोनों उस विचित्र मकान के अन्दर बल्कि कोठरी में जा पहुंची जहाँ कल्याणी का डेरा था, कल्याणी ने रोशनी की और दोनों औरतें जमीन पर बिछे हुए फर्श पर बैठ गई.

दूसरा व्यान।

हमारे पाठक इस बात को समझ ही गए होंगे कि यह औरत कल्याणी वही है जिसके फेर में प्रभाकरसिंह कई दिनों तक पड़े हुए थे और अन्त में अपनी बेबसी ही हालत से दुखी हो साथ छोड़कर निकल गए थे.

इस समय आगे का हाल लिखने के पहिले हम प्रभाकरसिंह का कुछ हाल लिखना मुनासिब समझते हैं.

उस विचित्र औरत (कल्याणी) की सूरत ने प्रभाकरसिंह पर कुछ ऐसा असर किया कि वे थोड़ी देर के लिए भौंचके - से हो गए और उन्हें तब होश हुआ कि कल्याणी उन्हें उसी हालत में छोड़ वहाँ से चली गई, जब उनके पूछने पर भी कल्याणी ने अपना कुछ नाम न बताया तो लाचार एक लम्बी साँस ले ने घूमे और कुछ सोचते हुए उत्तर की तरफ रवाना हुए,

हम कुछ कह नहीं कह सकते कि इस समय प्रभाकरसिंह क्या सोच रहे थे या क्या करने के इरादे से उन्होंने कल्याणी का हाथ छोड़ लोहगड़ी के बाहर पैर निकालना पसन्द किया था, हाँ उनके चेहरे के भाव से इतना अवश्य प्रकट होता था कि इस समय वे किसी गहरी चिन्ता में निमग्न हैं.

कभी - कभी सिर उठाकर अपना रास्ता देख लेने के सिवाय उनका ध्यान और किसी तरफ नहीं जाता था और किसी फिक्र में डूबे हुए सीधे जमानिया की तरफ बड़े जा रहे थे.

उनको इस हालत में जाते हुए भूतनाथ ने देखा जो आजकल बराबर लोहगड़ी के आसपास टोह लगाता हुआ घूमा करता था क्योंकि उसे विश्वास था कि प्रभाकरसिंह अवश्य इसके अन्दर ही रहते हैं.

उन्हें कई बार एक औरत (कल्याणी) के साथ उस मकान के बाहर निकलते अथवा टीले पर जाते हुए उसके शागिर्दो ने देखा और भूतनाथ को खबर की थी.

इस समय प्रभाकरसिंह को देख (जो अपनी असली सूरत में थे) वह बहुत प्रसन्न हुआ और लपक्राकर उत्तके पास पहुँचा.

भूतनाथ का चेहरा एक मामूली नकाब से ढंका हुआ था मगर उसने नकाब पीछे उलट दी और अदब से प्रभाकरसिंह को सलाम किया.

प्रभाकरसिंह ताज्जुब के साथ रुक गए और बोले, " हे भूतनाथ, अरे तुम यहाँ कहाँ! " भूत:

(मुस्कुराता हुआ) यही सबाल तो मैं आपसे किया चाहता था.

आपकी खोज में कितने ही आदमी न जाने कब से परेशान हैं और मैं भी आप ही कीटोह लगाता फिर रहा हूँ.

मगर हम लोगों को विश्वास था कि आप किसी कैद में हैं, अस्तु इस जगह ऐसी स्वतंत्रता के साथ आपको घूमते देख आश्चर्य होता है.

आप इतने दिनों तक कहाँ थे या क्या करते रहे?

प्रभाकर :

मैं एक बड़े विचित्र फेर में पड़ गया था.

मगर खैर इन सब बातों का तो जवाब तुम्हें पीछे दूंगा, पहिले मुझे यह मालूम हो जाना चाहिए कि तुम वास्तव में भूतनाथ ही हो और मेरे साथ दुश्मनी करने का तुम्हारा इरादा नहीं है.

भूत:

पहिली बात के सबूत में तो मैं उस दिन की घटना आपको स्मरण करा सकता हूँ जब मैं एक तिलिस्मी झिल्ली लगाकर इन्द्रदेवजी के मकान पर गया था और आप लोगों ने मुझे भैयाराजा मानकर .

.

.

.

.

प्रभाकर :

ठीक है, मुझे तुम्हारे भूतनाथ होने का विश्वास हो गया, अच्छा अब दूसरी बात का क्या सबूत देते हो?

भूतः:

दूसरी बात का इस समय कोई सबूत मेरे पास नहीं है क्योंकि आपके पीछे कई घटनाएँ ऐसी हो गई हैं जिनका हाल जब आप सुनेंगे तो मुझसे बहुत रँज होंगे .

.

.

.

प्रभाकर :

जैसे तुम्हारे हाथों जमना - सरस्वती की मौत.

भूत ०:

(ताज्जुब से) आपको यह बात कैसे मालूम हुई?

प्रभाकर :

यह मेरा हाल सुनने पर तुम्हें मालूम हो जाएगा तुम पहिले अपनी बात पूरी करो.

भूतः:

जब यह बात आपको मालूम ही हो चुकी है तो बाकी बातें भी कदाचित् आपसे छिपी हुई न होंगी अस्तु तय है कि आप उस समय तक कदापि मुझ पर विश्वास न करेंगे जब तक कि इन्द्रदेवजी से आपकी मुलाकात न हो जाए, अस्तु अपने बचाव में मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूँ कि इन्द्रदेवजी ने अब तक मेरे सब कसूर और पाप क्षमा कर एक बार पुन:

मुझे अपना विश्वासपात्र बनाया है ।

प्रभाकर :

(कुछ सोचकर) वे इस समय कहाँ हैं?

भूत ०:

जमानिया में आपने दामोदरसिंहजी की मौत का हाल कदाचित् सुना होगा?

प्रभाकर :

हाँ मुझे मालूम है और इस खबर से मुझे बड़ा ही ताज्जुब और दु:ख हुआ! तो क्या इन्द्रदेवजी आजकल वहीं हैं?

भूत ०:

जी हाँ.

प्रभाकर :

मैं उनसे मिला चाहता हूँ, भूत ०:

मैं भी यही मुनासिब समझता हूँ, भूतनाथ प्रभाकरसिंह के साथ हो लिया और दोनों आदमी जमानिया की तरफ रवाना हुए, रास्ते में पुन:

बातचीत होने लगी.

भूत::

यदि आप मुनासिब समझें तो अपना हाल बयान करें कि इतने दिन कहाँ रहे या क्या करते रहे.

प्रभाकर :

मैं एक विचित्र घटना के फेर में पड़ा हुआ था जिसे अगर तुम सुनोगे तो ताज्जुब करोगे?

भूत:

सो क्या?

प्रभाकर :

सुनो मैं कहता हूँ, यह तो तुम्हें मालूम ही होगा कि मैं दारोगा के कब्जे में पड़ा था.

भूत:

मैं यह मंजूर करके शर्माता हूँ कि यह कार्रवाई मेरी ही थी और मेरे ही सबब से आपको दारोगा के कैद की तकलीफ उठानी पड़ी.

मुझे इस बात का बड़ा अफ .

.

.

.

.

.

प्रभाकर :

(बात काट कर) खैर इन बातों को थोड़ी देर के लिए जाने दो और जो मैं कहता हूँ उसे सुनो.

दारोगा ने मुझे एक बड़े ही मजबूत कैदखाने में बन्द किया जिसमें से छुटने की कोई उम्मीद नहीं मगर एक दिन एक विचित्र आदमी ने आकर मुझे उसके बाहर किया और जब मैंने अपने छुटकारा देने वाले का परिचय पूछा तो यह जानकर प्रसन्न हुआ कि वे इन्द्रदेवजी भूत:

(ताज्जुब से) इन्द्रदेव ने आपको दारोगा की कैद से छुड़ाया?

नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता.

अभी कल ही मेरी उनकी भेंट हुई थी मगर उन्होंने आपके विषय में बहुत चिन्ता प्रकट करने पर भी मुझसे यह नहीं कहा कि उन्होंने आपको छुड़ाया या नहीं देखा था.

जरूर वह कोई दूसरा आदमी होगा.

प्रभाकर :

हाँ बाद में मुझे इस बात का पता लगा, मगर उस समय तो मुझे यही विश्वास हुआ कि वे वास्तव में इन्द्रदेवजी ही थे क्योंकि सूरत - शक्ल, रंग - डंग सभी इन्द्रदेव का - सा था.

खैर जो कुछ हो और वह इन्द्रदेव रूपधारी कोई ऐयार ही क्यों न हो मगर उसी ने तुम्हारा, मेघनाथ तथा जमना - सरस्वती का हाल मुझे सुनाया था और भी कई तरह की बातें बताकर मुझे विदा किया.

मैं अपने स्थान की तरफ रवाना हुआ मगर रास्ते में एक दूसरे फेर में पड़ गया.

दो सवारों को देख और यह गुमान कर कि वे मेरे दुश्मन हैं मैं एक पेड़ पर चढ़ गया.

वहाँ पेड़ के ऊपर ही न जाने कब से एक दूसरी औरत भी चढ़ी हुई थी जिसने मुझसे तरह - तरह की बातें कीं और अपने को मेरा दोस्त बताया.

(रुक कर) हाँ, बात ही बात में उसने मुझसे यह भी कहा कि मुझे छुड़ाने वाला व्यक्ति इन्द्रदेव नहीं, बल्कि भूतनाथ है.

भूतनाथ:

(ताज्जुब से) ऐसा! वह कौन औरत थी?

मैं उसके बारे में कुछ नहीं जानता और न मैंने आपको छुड़ाया ही.

प्रभाकर:

तुम सुनते तो जाओ, मुझे उस औरत की बात पर विश्वास न हुआ और मैं उससे अलग हो पुन:

अपने घर की तरफ रवाना हुआ.

रात भर मैं बेखटके चला गया मगर सुबह जब एक अच्छी जगह देख रुक गया और जरूरी कामों तथा संध्या - पूजा आदि से निवृत्त होने का विचार करने लगा तो वह औरत पुन:

आ मौजूद हुई जिससे रात के समय मुलाकात हुई थी.

इस समय भी उसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी मगर मैं आवाज से उसे पहिचान गया.

वह कुछ घबड़ाई हुई - सी थी और आते ही उसने मुझे कहा कि कई सवार जो शायद मेरे दुश्मन हैं इधर ही आ रहे ate उसने मुझे भाग जाने को कहा मगर यह बात मुझे स्वीकार न थी कि एक तो मुझे उस पर विश्वास न था दूसरे थोड़े आदमियों से भागना भी अच्छा न मालूम हुआ.

मगर उस औरत की बात सच निकली और चार सवारों ने वहाँ पहुँच कर मुझे घेर लिया.

मैं उनसे लड़ने लगा.

गरज कि उनमें से दो मारे गए और दो भाग निकले.

उस समय वह औरत जो सिपाहियों के आने पर कहीं हट गई थी पुनः आ मौजूद हुई और बोली, " अभी इतने पर ही बस नहीं है, और भी कई आदमी पीछे आ रहे हैं.

आप अब भी मुझ पर विश्वास करें और यहाँ से पास ही जहाँ मेरा घर है वहाँ चले चलें.

” मुझे कुछ साधारण जख्म भी लग गए थे.

लाचार मैं उसके साथ हो लिया और वह मुझे लिए हुए एक पहाड़ी गुफा में पहुंची जहाँ उसके कई आदमी भी थे.

मेरे जख्मों की मरहम - पट्टी की गई मगर इसके थोड़ी देर बाद मेरा सिर घूमने लगा और मालूम हुआ कि मेरे साथ दगा हुई.

भूत ०:

तो वे लोग आपके दुश्मन थे?

१.

देखिए भूतनाथ तौवाँ भाग, सातवाँ बयान.

प्रभाकर :

हाँ, वह औरत बल्कि वे सभी आदमी राजा शिवदत्त के नौकर थे और मुझे गिरफ्तार करने के लिए आए थे! भूत ०:

और इस तरह पर आपको उन्होंने अपने कब्जे में कर लिया!प्रभाकर :

हाँ, मैं तीन दिन तक उनकी कैद में रहा.

भूत ०:

फिर आप छुटे किस तरह?

प्रभाकर :

एक दूसरी औरत ने बड़ी कारीगरी से मुझे उन लोगों के फन्दे से छुड़ाया! भूत:

वह कौन औरत थी?

प्रभाकर :

यह मैं बिल्कुल नहीं जानता! भूत ०:

क्या आपको उसका कुछ भी परिचय नहीं मालूम?

प्रभाकर :

नहीं, कुछ नहीं, मैंने उससे कितनी ही दफे पूछा पर उसने कुछ भी न बताया.

भूत ०:

हम लोगों ने कई बार आपको एक नकाबपोश औरत के साथ घूमते - फिरते देखा था, बल्कि यह भी पता लगा था कि आप उस टीले के ऊपर वाली इमारत में रहते हैं जिसे लोग लोहगढ़ी कहते हैं.

मगर आप तो हर तरह से स्वतन्त्र मालूम होते थे!प्रभाकर :

हाँ, कहने के लिए मैं जरूर स्वतन्त्र था पर ऐसे फेर में पड़ गया था कि जिससे किसी तरह अपना पिण्ड छुड़ा न सकता था.

भूत ०:

सो क्या?

प्रभाकर :

वह विचित्र औरत तिलिस्म का भी कुछ हाल जातती थी और उसने मुझसे वादा किया था कि तिलिस्म के अन्दर चल कर (जरा रुकते हुए) उन आदमियों का पता लगा देगी जो दारोगा की शैतानी से उसमें जा फँसे हैं, बल्कि वह मुझे लेकर तिलिस्म के अन्दर गई भी मगर नतीजा कुछ न निकला, लाचार यह सोच कर कि कहीं यह भी मुझे कोई धोखा न दे रही हो मैंने उसका साथ छोड़ दिया.

भूतनाथ और कुछ पूछना ही चाहता था कि एक आदमी को देख रुक गया जो सामने की तरफ से आ रहा था.

वह आदमी देखने में कम उम्र मगर फुर्तीला और चालाक मालूम होता था, साथ ही उसके बगल से लटकते हुए ऐयारी के बदुए की तरफ ध्यान देने से उसके ऐयार होने का भी विश्वास होता था.

बात की बात में वह पास आ पहुँचा और प्रभाकरसिंह को सलाम कर खड़ा हो गया.

भूतनाथ और प्रभाकरसिंह दोनों में से कोई भी इसको नहीं पहिचानता था.

अस्तु भूतनाथ ने उससे पूछा, " तुम कौन हो और क्या चाहते हो?

" जिससे जवाब में उसने अपनी जेब में हाथ डालकर एक चीठी निकाली और प्रभाकरसिंह की तरफ बड़ाते हुए कहा, " यह आपके लिए है ।

प्रभाकर :

(चीठी लेकर) इसे किसने भेजा है?

!! आदमी:

नाम बताने की इज़ाजत तो नहीं है मगर इतना कह सकता हूँ, उसी ने जो लोहगड़ी में रहती है.

मगर उन्होंने साथ ही यह भी कहा है कि आप इस चीठी को एकान्त में पड़े जहाँ आपके पास और कोई भी न हों.

प्रभाकर :

(ताज्जुब से) मेरे पास कोई न हो! आदमी:

और साथ ही इसका जबाब भी इसी समय मुझे मिलना चाहिए.

मैं आपके सामने से हट जाता हूँ, आप जल्दी ही इसे पड़ लें और जो मुनासिब समझें जवाब भी लिख मुझे दें, आवाज देते ही मैं यहाँ आ पहुँचूँगा.

इतना कह एक बार भूतनाथ की तरफ देखने के बाद वह आदमी घूमा मगर प्रभाकरसिंह ने रोककर कहा, " सुनो तो, (भूतनाथ की तरफ बता कर) क्या इतके सामने भी मैं इस चीठी को नहीं पड़ सकता?

" आदमी:

मुझे जो कहा गया था वह मैंने अर्ज कर दिया, अब अख्तियार आपको है जो चाहे करें, इतना कह वह आदमी वहाँ से कहीं हट गया.

प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ से कहा, " मैं नहीं कह सकता कि इस चीठी में ऐसी क्या बात लिखी है कि इसे मैं किसी के सामने नहीं पड़ सकता.

"

भूतनाथ ने उनका मतलब समझ कर कहा, “ मगर हर्ज ही क्या है, मैं हट जाता हूँ आप इसे पड़ लें, जैसे ही आवाज दीजिएगा मैं पुन:

आ पहुँचूँगा.

" इतना कह भूतनाथ वहाँ से दूर चला गया और प्रभाकरसिंह उस चीठी को पढ़ने लगे.

थोड़ी देर क्या, बहुत देर बीत गई मगर प्रभाकरसिंह ने भूतनाथ को आवाज न दी.

भूतनाथ को बड़ा ताज्जुब और साथ ही साथ कुछ सन्देह भी हुआ.

वह उस जगह लौटा, देखा कि वहाँ कोई आदमी नहीं है और न प्रभाकरसिंह का ही कोई पता है.

न मालूम वे अपनी मर्जी से कहीं चले गए या उनके दुश्मन कोई चालाकी खेल गए.

तीसरा व्यान।

दो पहर दिन चढ़ चुका है और सूर्यदेव अपनी पूरी तेजी से चमक रहे हैं पर हवा के तेज झपेटों के कारण मुसाफिरों को उनकी गर्मी बहुत दुखद नहीं मालूम होती, फिर भी जब कभी आसमान पर दौड़ते हुए बादलों के टुकड़े सूर्य के सामने आ जाते हैं तो एक तरह

का आराम मालूम होता है जमानियासे पश्चिम लगभग दस कोस पर एक छोटी सी बस्ती है.

जिसका नाम रामपूर है.

यह गंगा के किनारे ही पर है और उसी तरफ पड़ती है जिधर जमानियाहै.

रामपुर में जिसे वास्तव में एक गाँव ही कहना चाहिए, और रामपूर की तरफ चलने पर कुछ मामूली लोगों की आबादी ही सड़क से आने वालों को नजर आती है, पर यदि आप गंगा के किनारे किनारे आइए तो एक स्थान पर जो बस्ती और सड़क दोनों ही से दूर और एकदम अलग पड़ता है गंगा के किनारे एक पक्का सुन्दर घाट, ऊपर एक छोटे शिवालय को घेरे हुए सुन्दर बागीचा और बगीचे के बाद एक बड़ी इमारत पर निगाह पड़ती है.

इस साधारण से गाँव में ऐसी इमारत को देख आश्चर्य होता है और उसमें रहने वालों की प्रकृति पर भी कुछ ताज्जुब करना पड़ता है जिन्होंने अपने रहने के लिए ऐसी जगह चुनी है मगर वास्तव में इस मकान में रहने वाला कोई साधारण आदमी नहीं है और अपने रहने के लिए उसका ऐसी जगह चुनना भी मतलब से खाली नहीं है.

यह स्थान, मकान, बगीचा, शिवालय और घाट सब कुछ जमानिया के पुराने दीवान हेलासिंह के हैं और वही यहाँ रहता है.

इस जगह इसके रहन - सहन आदि के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, पाठकों को स्वयं ही मालूम हो जायगा क्योंकि इस समय हम इसी विषय में कुछ लिखना चाहते हैं.

मकान और शिवालय को घेरे हुए जो बड़ा बगीचा है उसमें इस समय सन्नाटा है क्योंकि दोपहर का समय होने के कारण सभी कोई भोजन अथवा आराम की फिक्र में हैं और इस जगह आदमियों की कोई चहल - पहल नहीं है.

पर यदि सन्नाटे से पाठक समझें कि यहाँ कोई है नहीं तो यह भूल होगी.

बाग के पश्चिम तरफ वाले कोने में चहारदीवारी के संग सटा हुआ एक बुर्ज है, यद्यपि वह बुर्ज बड़ा नहीं है तथापि दोमंजिला है और इसके ऊपर की तरफ एक गुम्बददार बारहदरी

ऐसी है जहाँ सात - आठ आदमी आराम के साथ बैठ सकते हैं.

ऊपर जाने के लिए घुमौवा सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और वह समूचा बुर्ज मालती की घनी लता के अन्दर ऐसे छिपा हुआ है कि देखने में सुहावना ही नहीं मालूम होता बल्कि लता के ढके रहने के कारण इसके अन्दर बैठने वाले आदमियों पर भी यकायक किसी की निगाह नहीं पड़ सकती.

यद्यपि इसके अन्दर वाला अपने चारों तरफ बखूबी देख और दूर - दूर तक निगाहें डाल सकता है ।

इस बुर्ज में ऊपर की तरफ एक चौकी पर इस समय दो आदमी बैठे हुए हैं जिनमें एक मर्द और दूसरी औरत है.

मर्द की उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी.

रंग साँवला, चेहरा गोल, सिर के बाल छोटे - छोटे, मूंछ और दाढ़ी भी खसखसी, आँखें गोल और कुछ भूरापन लिए तथा चमकती हुई, दाँत मजबूत मगर पीले और होठ मोटे हैं, क़द नाटा, हाथ - पाँव मजबूत और बदन क्रसरती मालूम होता है, मगर चेहरे पर निगाह पड़ते ही आभास होता है कि यह आदमी बड़ा ही धूर्त चालाक है, इसी का नाम हेलासिंह है.

इसके सामने जो औरत है वह उसकी लड़की मुन्दर है जिससे हमारे पाठक चन्द्रकान्ता सन्तति में अच्छी तरह परिचित हो चुके हैं.

यद्यपि यह कम - उम्र सुन्दर लड़की विधवा है परन्तु इस बात का कोई सबूत उसकी चाल - डाल और पहनावे से नहीं मिलता.

इस समय यह अपने पिता की तरफ झुकी हुई है और उसकी बातों को बड़े गौर से सुन रही है.

हेला ०:

देखो ईश्वर क्या करता है.

अपने भरसक तो मैंने कोई कसर उठा नहीं रक्खी है.

दारोगा साहब को मैंने अपने मेल में मिला लिया है और रघुबरसिंह तो शुरू ही से मेरी मदद कर रहा है.

मेरी चले तो मैं तुम्हें राजरानी बनाकर छोडूं मगर मुश्किल एक नजर आ रही है.

मुन्दर:

वह क्या?

हेला; जमानिया का दारोगा महाराज के रहते हुए कुछ करते डरता है.

वह कहता है कि जब तक ये जीते रहेंगे तब तक कोई कार्रवाई नहीं हो सकती.

मगर खैर अब तो इस काँटे को भी रास्ते से दूर हुआ ही समझना चाहिए.

मुन्दर:

सो कैसे?

हेला ०:

मैंने, दारोगा ने, और रघुबरसिंह ने मिल - जुल कर यह निश्चय किया है कि महाराज इस दुनिया से उठा दिए जाए बल्कि यह बात कमेटी में भी तय की जा चुकी मुन्दर:

यह तो मुझे मालूम है.

हेला ०:

अस्तु अब इसी बात की तैयारी हो रही है.

महाराज का मारना निश्चय हो चुका है मगर किस तरह वह काम किया जाय यही सोचा जा रहा है.

दारोगा साहब ने यह काम अपने जिम्मे लिया है और जल्दी ही वे इसका कोई - न - कोई डंग निकाल लेंगे, गोपालसिंह इसी नीयत से गिरफ्तार भी किए गए हैं.

मुन्दर:

अच्छा! हेला ०:

हाँ, कमेटी ने उन्हें बुलाया था और अभी तक वह हमारे ही आदमियों के कब्जे में हैं, दो - एक रोज में छोड़े जायेंगे.

उन्हें कमेटी का निर्णय बता दिया गया है और यह भी कह दिया गया है कि उनके बाप जल्दी ही इस दुनिया से उठा दिए जआएंगे.

मुन्दर:

मगर ऐसा करने से वे लोग होशियार हो जायेंगे.

हेला ०:

होशियार होकर ही क्या कर लेंगे?

कमेटी की ताकत का वे किसी तरह मुकाबला नहीं कर सकते.

दामोदरसिंह की दशा तुम भूल गई?

लेकिन गोपालसिंह के साथ ऐसा बर्ताव करने में और भी कई बातें हैं जिनमें एक तो यह कि उनके ऊपर कमेटी का रोभ छा जायगा और भविष्य में हम लोगों से बराबर डरते रहेंगे.

मुन्दर:

हाँ यह तो है, अच्छा तो अब मुझे आप क्या हुक्म देते हैं.

क्या मैं पुनः जमानिया लौट जाऊँ?

हेला ०:

बेशक लौट जाओ, तुमने यहाँ आकर ठीक नहीं किया, इस समय तुम्हें जमानिया के बाहर नहीं रहना चाहिए क्योंकि न जाने कब क्या हो जाय, दूसरी दारोगा साहब की आज्ञा मानना भी बहुत जरूरी है, अगर वे रंज हो जायेंगे तो फिर कुछ भी न हो सकेगा.

मुन्दर देखा चाहिए आप लोगों की मेहनत का क्या नतीजा निकलता है.

हेला ०:

घबड़ाओ मत, हम लोगों की मेहनत ठिकाने ही लगेगी.

बड़े महाराज के मरने की क्रसर है और इसमें ज्यादा देर न समझो.

(बाहर की तरफ देखकर) हैं, यह सवार कौन है?

पत्तियों की आड़ में से मुन्दर ने देखा कि एक सवार तेजी के साथ घोड़ा दौड़ाता इधर ही को आ रहा है.

हेलासिंह कुछ देर तक्र गौर से उसकी तरफ देखता रहा और तब बोला, " तुम मकान में जाओ, मैं इसी जगह रुककर देखता हूँ कि यह कौनहै, शायद दारोगा साहब का कोई आदमी न हो! "

मुन्दर उठकर चली गई और हेलासिंह उस सवार के पहुंचने की राह देखने लगा.

थोड़ी ही देर में सवार पास आ पहुंचा और तब हेलासिंह को यह देख बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि वह मर्द नहीं बल्कि कोई औरत है जो उम्दे और तेज घोड़े पर सवार नकाब से चेहरे को छिपाए चली आ रही है.

इस बाग का फाटक उस जुर्ज से थोड़ी ही दूर पर था जिसमें हेलासिंह बैठा था.

सबार (औरत) इस फाटक के पास पहुँचा और घोड़े से उतर कुण्डा खटखटा रहा है, यह देख हेलासिंह बुर्ज से उतरा और फाटक के पास जा भीतर से बोला, " कौन है?

" सवार:

दरवाजा खोलो.

हेला ०:

क्या काम है, तुम कौन हो?

सवार:

मैं जमानिया के दारोगा साहब का आदमी हूँ और उनकी जरूरी चीठी लेकर आया हूँ, अब और देर न करके हेलासिंह ने दरवाजा खोल दिया और एक कमसिन नाजुक्र और हसीन औरत को अपने सामने पाया क्योंकि औरत ने यहाँ पहुँच अपनी नकाब उलट दी थी.

हेलासिंह एकटक उसके चेहरे की तरफ देखने लगा मगर उसको देख उस औरत ने नकाब उलट कर चेहरा पुन:

ढंक लिया और एक कदम पीछे हटकर कहा, " मैं हेलासिंह जी से मिला चाहती हूँ! हेला ०:

मेरा ही नाम हेलासिंह है, कहिए आपको क्या काम है?

" तब यह चीठी आप ही के लिए है " कहकर उस औरत ने एक चीठी अपने ऐयारी के बटुए से निकाली जो उसकी कमर से लटक रहा था और हेलासिंह के हाथ में दे दी.

ताज्जुब करते हुए हेलासिंह ने गौर के साथ चीठी खोलकर पड़ी और तब कहा, " क्या आप ही का नाम सुन्दरी है और इस पत्र में आप ही का जिक्र किया गया है! " औरत:

जी हाँ.

हेला ०:

आप ऐयार हैं?

औरत:

जी हाँ.

हेला ०:

आपको मुझसे मुन्दर के विषय में कुछ गुप्त बातें कहनी हैं?

औरत:

जी हाँ, मगर मैं ज्यादा देर तक यहाँ रुक नहीं सकती शीघ्र ही आपको साथ लेकर लौटा चाहती हूँ, हेला ०:

मुझे साथ लेकर! औरत:

जी हाँ, उस हालत में जब कि आपको इस पत्र पर और मुझ पर भरोसा हो.

हेला ०:

इस पत्र के कारण मैं आप पर पूरा भरोसा करने पर मजबूर हूं, आप भीतर आइए तो मैं बातें कहूं.

औरत ने अपने घोड़े की लगाम उसी जगह एक कुण्डे में अटका दी और हेलासिंह उसे अपने साथ लिए हुए उसी बुर्ज पर पहुँचा जहाँ थोड़ी देर पहिले मुन्दर से बात कर रहा था.

वह औरत यद्यपि ऊपर से लापरवाह मालूम होती थी मगर भीतर ही भीतर बड़ी होशियार और चौकन्नी थी और तेज निगाहों से चारों तरफ देखती जाती थी.

दोनों आदमी बैठ गए और इस तरह बातें होने लगी:

औरत:

मैं समझती हूँ कि इस जगह कोई गैर आदमी हम लोगों की बातें नहीं सुन सकता?

हेला ०:

नहीं कोई नहीं, आप इस बात से बिल्कुल बेफिक्र रहें.

उस औरत ने यह सुन अपने बटुए में से एक दूसरी चीठी निकाली और यह कहकर हेलासिंह के हाथ में दी, " इस चीठी को पढ़कर आप मेरे आने का कारण समझ जायेंगे.

" हेलासिंह ने वह चीठी ले ली और पढ़ना शुरू किया, मगर ज्यों - ज्यों वह चीठी पड़ता जाता था उसके चेहरे से घबराहट टपकती जाती थी जो अन्त में यहाँ तक बड़ी कि चीठी उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ी.

पाठक समझ ही गए होंगे कि यह चीठी कौन- सी थी.

यह वही थी जो शेरअलीखाँ ने गौहर के हाथ बलभद्रसिंह को भेजी थी अथवा जिसे पड़कर दारोगा बदहवास हो गया था.

पाठक यह भी समझ गए होंगे कि यह ऐयार वही है सुन्दरी है जिसका जिक्र ऊपर आ चुका है और जिसे दारोगा साहब ने अपना विश्वासपात्र बनाकर हेलासिंह के पास भेजा है.

बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाल कर हेलासिंह ने उस चीठी को पुन:

उठाया और दुबारा पड़ा.

सुन्दरी उसके चेहरे की हालत बड़े गौर से देख रही थी, जब वह पड़ चुका तो उसने चीठी उससे ले ली और अपने बटुए में रखती हुई बोली, " यह बीठी शेरअलीखाँ ने बलभद्रसिंह के पास भेजी थी.

!! हेला ०:

ठीक है, मगर तुम्हारे हाथ क्योंकर लग गई?

सुन्दरी:

इसे बलभद्रसिंह को देने के लिए शेरअलीखाँ ने अपनी लड़की गौहर के सुपुर्द किया था जिसके कब्जे से मैंने उड़ा लिया! हेला ०:

तो क्या अभी तक यह बलभद्रसिंह के पास नहीं पहुंची है?

सुन्दरी:

नहीं.

हेला ०:

(लम्बी साँस लेकर) खैर इतनी ही कुशल है, अगर पहुँच गई होती तो अब तक मैं बर्बाद हो गया होता.

वह बिना महाराज से कहे न रहता और महाराज मेरे घर भर को सूली दे देते तो आश्चर्य नहीं! सुन्दरी:

मगर फिर भी आप अपनी कुशल न समझिए, हेला ०:

सो क्यों?

सुन्दरी:

गौहर ने स्वयम् ही कोई ऐयारी कर आपके इस गुप्त भेद और मनसूत्रों का पता लगाया था.

हेला ०:

हाँ चीठी से तो यही जाहिर होता है, मगर जिस बात को मैं अपनी जान से बटवेकर हिफाजत के साथ छिपाए रहता था उसका भेद उस पर क्योंकर जाहिर हो गया! सुन्दरी:

यह क्या कोई ताज्जुब की बात है?

ऐयारों के आगे किसी भेद का छिपा रहना बड़ा ही कठिन है.

आप यही देखिए कि जब मुझे जिसे आज के पहले शायद आपने कभी देखा न होगा, इन बातों की खबर लग गई, तब गौहर का पूछना ही क्या है जिसकी मदद पर कई ऐयार हैं.

खैर, जिस किसी तरह भी हो गौहर ने आपके इस भेद का पता लगाया और अब वह इस फिराक में है कि जल्दी से जल्दी बलभद्रसिंह से मिले और उन्हें आपकी कार्रवाइयों से आगाह करे.

हेला ०:

लेकिन अगर ऐसा हुआ तो मैं कहीं का न रहूँगा! सुन्दरी:

बेशक कहीं के न रहेंगे.

केवल आप ही नहीं, ऐसा होने पर आपके दोस्त दारोगा साहब और रघुबरसिंह वगैरह की भी कुशल नहीं रह जाएगी क्योंकि बलभद्रसिंह को जैसे ही इन इरादों और कार्रवाइयों का पता लगेगा, वे फौरन महाराज से कहेंगे और इसका नतीजा बहुत बुरा होगा.

हेला ०:

बेशक हम लोग बेमौत मारे जाएंगे, मगर अफसोस, बना - बनाया काम बिगड़ा चाहता है! सुन्दरी:

हाँ, अगर मैं आपकी मदद करने को तैयार न होती जाती तो बेशक ऐसा ही होता.

हेला ०:

तुम भला क्या मदद मुझे पहुँचा सकती हो?

सुन्दरी:

यह मैं उस समय बताऊँगी जब मुझे विश्वास हो जायगा कि आप मुझ पर पूरी तरह से भरोसा करते हैं.

हेला ०:

तुम्हारा यह कहना तो बिल्कुल व्यर्थ की बात है.

जब दारोगा साहब ने तुम्हें अपना विश्वासपात्र बनाया है तो मेरी क्या मजाल है कि तुम्हारा विश्वास न करूं.

सुन्दरी:

खूब अच्छी तरह सोच लीजिए, क्योंकि ऐसा नाजुक मामला है कि बिना एक - दूसरे पर विश्वास किए कोई अच्छा नतीजा नहीं निकल सकता.

यदि आपको मुझ पर कुछ भी सन्देह हो तो अब भी साफ - साफ कह देना मुनासिब होगा.

हेला ०:

नहीं - नहीं, मुझे तुम पर किसी तरह का सन्देह नहीं है, यद्यपि मैंने तुम्हें आज के पहिले कभी नहीं देखा है और मैं कुछ नहीं जानता कि तुम कौन हो अथवा तुम्हें इन मामलों में दखल देने की क्या वजह है तथापि दारोगा साहब की चिट्ठीकी बदौलत मैं तुम पर पूरा - पूरा विश्वास और भरोसा करता हूँ क्योंकि तुम्हारे ढंग से यह मालूम होता है कि तुम हमारे भेदों से बखूबी बाक़िफ हो.

सुन्दरी:

बेशक, इस समय तक की सब बातें और आप लोगों की सब कार्रवाइयों में बाखूबी जानती हूँ जिनमें से कुछ का पता तो मुझे खास मनोरमा जी से लगा है.

हेला ०:

क्या तुम मनोरमा को भी जानती हो?

सुन्दरी:

हाँ अच्छी तरह, बल्कि यह कहना चाहिए कि मेरी और उनकी कुछ रिश्तेदारी भी है और उन्हीं की बदौलत मेरी मुलाकात दारोगा साहब से हुई.

हेला ०:

ठीक है, अच्छा तो फिर जल्दी बताओ कि इस समय बचाव की क्या तरक़ीब हो सकती है?

सुन्दरी:

सुनिए, गौहर का इरादा है कि आपकी लड़की मुन्दर को जो आजकल जमानिया में सुजानसिंह के यहाँ छिपकर रहती है गिरफ्तार कर ले.

हेला ०:

(कॉपकर) यह पता उसे क्योंकर लगा कि मुन्दर जमानिया में रहती है?

सुन्दरी:

यह मैं नहीं कह सकती.

हेला ०:

अच्छा खैर, तब?

सुन्दरी:

अगर वह अपने इस काम में एक दिन के अन्दर - अन्दर कामयाब हो गई तब ठीक है नहीं तो उसका इरादा है कि खुद बलभद्रसिंह या कुंअर गोपालसिंह के पास चली जाय और उन लोगों की चालबाजियाँ उन्हें बता दें, वह तो अभी तक ऐसा कभी का कर गुजरी होती पर सच तो यह है कि मेरे ही सबब से ऐसा कर नहीं पाई है.

मैं उसकी ही एक ऐयारा का रूप बनाकर उसके साथ थी और उसे भुलावे में डाले हुई थी, मगर आज .

.

.

.

.

हेला ०:

मगर आज क्या !! सुन्दरी:

मगर आज न जाने कैसे मुझपर शक पैदा हो गया और वह समझ गई कि मैं उसे धोखा दे रही हूँ अस्तु वह घबड़ा गई है और चाहती है कि जितनी जल्दी हो सके बलभद्रसिंह के पास पहुँच जाय.

ऐसी हालत में सबसे अच्छी कार्रवाई यही हो सकती है कि पहिले गौहर को गिरफ्तार करने कैद कर लिया जाय और तब जो कुछ मुनासिब हो या समझा जाय वैसा किया जाय.

हेला ०:

बेशक इस समय अगर उसे गिरफ्तार कर लिया जाय तो बहुत अच्छा होगा, और तुम्हें पूरा - पूरा हाल मालूम ही है, अस्तु तुम उसे सहज ही में गिरफ्तार भी कर सकती हो.

सुन्दरी:

यह तो तरवुद की बात है, इस समय वह ऐसी जगह है जहाँ मैं क्या दारोगा साहब भी उसका कुछ नहीं कर सकते.

हेला ०:

सो क्यों, वह कहाँ है?

सुन्दरी:

उसने इस समय अपने को लोहगड़ी के अन्दर बन्द कर रखा है.

हेला ०:

लोहगड़ी के अन्दर! वहाँ वह क्योंकर जा पहुँची! सुन्दरी:

न जाने किस तरह उसे उस जगह का कुछ भेद मालूम हो गया.

उसने अपना डेरा उसी इमारत के अन्दर डाल रखाहै बल्कि उसके साथ मैं भी कई दिन तक वहाँ रह चुकी हूँ, लोहगड़ी के तहखानों का ठीक - ठीक भेद दारोगा साहब को भी नहीं मालूम है.

अस्तु इस समय आपको ही वहाँ चलकर उसे गिरफ्तार करना पड़ेगा क्योंकि आप उस जगह के सब भेदों से बाखूबी वाकिफ हैं और उसकी ताली भी आपके पास है.

हेला ०:

(चौंककर) यह तुम्हें कैसे मालूम?

सुन्दरी:

(मुस्कुराकर) मुझे खूब मालूम है कि वह इमारत बहुत दिनों तक आपके कब्जे में रह चुकी हैं.

हेला ०:

मगर मुझे उस पर से अपना कब्जा छोड़े भी कितने ही वर्ष हो गए, सुन्दरी:

ठीक है, मैं यह भी जानती हूँ, मगर यद्यपि महाराज की खफगी के कारण आपको वह स्थान छोड़ देना पड़ा फिर भी आपको वहाँ के भेद अच्छी तरह मालूम हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि वहाँ की ताली अभी भी आप ही के कब्जे में है.

हेला ०:

(कुछ सोचते हुए) न जाने तुम्हें ये बातें कैसे मालूम हुई, खैर तुम अपना मतलब पूरी तरह बयान करो कि तुम चाहती क्या हो?

सुन्दरी:

मैं चाहती हूँ कि आप इसी समय मेरे साथ चले और लोहगड़ी में घुसकर गौहर को गिरफ्तार कर लें, क्योंकि अगर वह वहाँ से निकल गई तो फिर किसी तरह कब्जे में नहीं आबेगी और तब आप लोग भारी मुसीबत में पड़ जायेंगे.

उसके गिरफ्तार करने में देर करना किसी तरह मुनासिब नहीं है.

हेला::

' अगर वह इसी बीच में वहाँ से निकलकर बलभद्रसिंह के पास चली गई हो तो! सुन्दरी:

मैं अपने एक साथी को वहाँ छोड़ आई हूँ जो इस बात का खयाल रखेगा कि वह कहाँ जाती या क्या करती है! हेला ०:

तो तुम्हारी राय है कि मैं इसी समय तुम्हारे साथ चलूं और उसे गिरफ्तार करूँ! सुन्दरी:

वेशक.

सुन्दरी की बात सुनकर हेलासिंह कुछ देर के लिए गहरी चिंता में डूब गया, इस बीच वह ऐयारा छिपी निगाहें उस पर डालती हुई बराबर देख रही थी कि उसकी बातों का क्या असर हुआ है.

आखिर कुछ देर के बाद एक लम्बी साँस लेकर हेलासिंह ने कहा, " इस समय मुनासिब तो तुम्हारी ही बात मालूम होती है मगर क्या तुम कह सकती हो कि दारोगा इस मामले में क्या सोचते हैं?

" सुन्दरी:

उन्हीं की आज्ञा से तो मैं आपके पास आई ही हूँ, हेला. :

तो क्या उनकी भी राय है कि गौहर गिरफ्तार कर ली जाय?

सुन्दरी:

जी हाँ.

हेला ०:

मगर क्या वे यह नहीं सोचते कि ऐसा करने से शेरअलीखाँ से खटपट हो जायगी और वह अगर जान गया कि .

.

.

.

.

सुन्दरी:

दारोगा साहब इस बात को सोच चुके हैं.

पहिले तो शेरअलीखाँ को इस बात का पता ही नहीं लगेगा, फिर अगर लगा भी तो देखा जायगा, पहिले अपने बचाव की फिक्र करनी चाहिए.

हेला ०:

कहीं कोई बुरा नतीजा न निकले!

सुन्दरी:

अगर आप इस तरह से डर - डर कर काम कीजिएगा तो बस फिर हो चुका! खैर आप जानिए आपका काम जाने, मुझे इन झगड़ों से कोई मतलब नहीं.

मैं तो दारोगा साहब और मनोरमाजी का हुक्म बजा ला रही हूँ, आपको अगर साथ चलना नामंजूर है तो वैसा कह दीजिए मैं लौट जाऊँ मगर इतना आप समझ लीजिए कि अगर गौहर के कारण दारोगा साहब किसी आफत में पड़ गए तो फिर आप भी न बचने पाइएगा, और अपनी तरफ से मैं इतना कहे देती हूँ कि महाराजा साहब को आप पर और दरोगा साहब पर पूरा शक हो चुका है और वे अच्छी तरह समझ गए हैं कि आप लोग लक्ष्मीदेवी की शादी उनके लड़के के साथ होने नहीं दिया चाहते.

ऐसी हालत में आप लोगों के बर्खिलाफ ऐसा पक्का सबूत पाकर वे जो न कर जाएं थोड़ा है.

हेला ०:

(देर तक कुछ सोचते रहकर) तुम ठीक कहती हो, खैर मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ, अपने साथ किसी और को भी लेता चलूँ?

सुन्दरी:

कोई जरूरत नहीं.

हम दो ही काफी हैं, बस आप वहाँ की ' ताली ' ले लीजिए और कुछ हथियार लगा लीजिए, हाँ, घोड़ा तेज होना चाहिए क्योंकि सफर लम्बा है.

हेला ०:

अच्छा तो तुम जरा देर ठहरो, मैं थोड़े ही समय में तैयार होकर आता हूँ, सुन्दरी:

बहुत अच्छा, मैं फाटक पर चलती हूँ आप वहीं आइए.

दोनों आदमी नीचे उतरे, सुन्दरी फाटक की तरफ चली गई और हेलासिंह अपने मकान की तरफ बड़ गया.

चौथा व्यान।

] काशीजी से जमानिया की तरफ आने वाली सड़क पर हम दो सवारों को देख रहे हैं.

ये दोनों सवार मर्द नहीं बल्कि औरतें हैं.

यद्यपि इनके चेहरे नकाबों से ढंके हुए हैं तथापि हम इन्हें बखूबी जानते हैं क्योंकि दोनों गौहरऔर गिल्लन हैं जो इस समय काशी से जमानिया की तरफ बढ़ रही हैं, पर इन दोनों की चाल तेज नहीं है क्योंकि दोनों ही के घोड़े थके हुए और दूर से मंजिल मारते हुए आ रहे हैं अस्तु हम इनके साथ - साथ चलकर इनकी बातें सुन सकते हैं.

गौहर:

जहाँ तक मैं समझती हूँ अब जमानिया दो क्रोस से ज्यादा नहीं रह गया होगा.

गिल्लन:

हाँ, हम लोगों का सफर बहुत ही जल्दी खतम हुआ, अब देखें नतीजा क्या निकलता है.

गौहर:

मुझे तो पूरा भरोसा है कि नतीजा अच्छा ही होगा.

नन्हों की बदौलत मुझे अपने काम में कुछ सुभीता हो गया है.

मगर मेहनत बहुत पड़ी कभी बेगम के यहाँ, कभी नन्हों के यहाँ, कभी मनोरमा के पास, कभी काशी, कभी जमानिया, इधर के दिन दौड़ते ही बीते हैं.

गिल्लन:

मगर मेरी समझ में तो तुम व्यर्थ को ही यह सब तरबुद उठा रही हो.

गौहर:

क्यों?

गिल्लन:

तुम्हें इन झगड़ों से मतलब ही क्या है?

तुम जिस काम के लिए आई हो उसे खतम करो और घर लौटो, इन सब फजूल के पचड़ों से तुम्हें वास्ता ही क्या?

गौह:

(हँसकर) हाँ तुम अपना काम करने में क्यों चूको! तुम मुझे लौटा ले जाने के लिए भेजी गई हो और साथ ले जाकर ही छोड़ोगी सो मैं बखूबी जानती हूँ, खैर अब तुम मेरा काम समाप्त ही समझो सिर्फ एक दफे दारोगा साहब से और एक दफे हेलासिंह से मिल लेने से ही मेरा काम पूरा हो जाएगा.

गिल्लन:

जान पड़ता है तुमने अपना इरादा बिलकुल पक्का कर लिया है.

गौहर:

बेशक, मगर मैं यह नहीं समझ पाती कि तुम्हारे घबराने की वजह क्या है! तुम इधर बात - बात में डर रही हो, बात - बात पर हिचकती हो, ऐसा पहिले तो न था! गिल्लन:

इधर जो - जो और जैसा काम कर रही हो उसी से मेरी यह हालत हो रही है.

दारोगा साहब, जैपालसिंह या हेलासिंह ऐसे भयानक आदमी हैं कि इनके साथ चालाकी बरतना और साँप से खेलना मैं एक - सा समझती हूँ अगर इनमें से किसी को भी तुम्हारे असली इरादे का पता लग गया तो फिर तुम निश्चय रक्खो कि जीती न लौटने पाओगी.

गौहर:

(जोर से हँसकर) बाह क्या कहना है! गिल्लन:

खैर तुम्हारी मर्जी जो चाहो, मैं बोल नहीं सकती, मगर यह राय देने से बाज नहीं आ सकती कि तुम इस प्रपंच को छोड़ो और घर लौट चलो.

गौहर:

खुदा तुम्हारे ऐसे डरपोक को कभी साथी न बनाये! अजी तुम देखो तो सही कि मैं क्या - क्या करती हूँ और क्याआफत ढाती हूँ, तुमने मुझे क्या समझा है, अभी आज ही जो मैंने किया है क्या वह तुम्हारे किए हो सकता था?

मनोरमा के सामने बात करना तुम्हारा काम था?

ओफ, वह जैसी धूर्त है वैसी ही चालाक भी, जैसी - जैसी बातें उसने मुझसे की वह तुम अगर सुनती तो ताज्जुब करतीं.

(हँसकर) मगर मेरे आगे उसकी कुछ पेश न आई, उस जाली चीठी ने जो मैंने तुम्हारी मदद से लिखी थी वह काम किया, उसे पढ़ते ही वह घबड़ा उठी और मुझे साथ लेकर दारोगा और हेलासिंह के पास चलने को तैयार हुई.

(रुककर) अच्छा वह जगह कहाँ है जहाँ सॉबलसिंह से मिलने की बात है?

गिल्लन:

(हाथ से बताकर) बस थोड़ी ही दूर पर है, सड़क का वह मोड़ घूमते ही कुँआ नजर आने लगेगा.

हम लोगों को देर हो गई है इससे मैं समझती हूँ कि साँवलसिंह वहाँ बैठा हमारी राह देख रहा होगा.

थोड़ी दूर जाने के बाद सड़क के किनारे ही एक ऊंचा कुँआ नजर पड़ा यह कुंआ बहुत बड़ा और मजबूत बना था और इसकी ऊँची जगत के नीचे चारों तरफ मुसाफिरों के टिकने और मौसिम के बचाव के लिए कई कोठरियाँ भी बनी हुई थीं जिनमें यद्यपि पल्ले (क्रिबाड़) दिखाई नहीं देते थे पर तो भी और सब तरफ से मजबूत और दुरुस्त थीं.

इस समय इस क्रूएं के ऊपर एक आदमी लेटा हुआ था जो गौहर और गिल्लन को आते देख उठ खड़ा हुआ.

यह आदमी वहीं सावलसिंह था जिसे गौहर के साथ कई बार हमारे पाठक देख चुके गौहर और गिल्लन घोड़ों से उतर पड़ी.

सॉवलसिंह ने दोनों घोड़े पेड़ से बाँध दिये और तब गौहर के बैठने के लिए एक कपड़ा बिछा दिया.

सब कोई उस पर बैठ गए तथा इस तरह बातें होने लगी:

साँबल:

आपने जो समय दिया था उससे बहुत बिलम्ब कर दिया.

मैं आज सुबह से ही यहाँ पर बैठा आपके आने की राह देख रहा हूँ, गौहर:

हाँ, मुझे जरूर देर हो गई, मगर काम भी बहुत अच्छी तरह हो गया! सॉवल:

हाँ! अच्छा क्या कर आई?

गौहर:

सुनो मैं सब हाल खुलासा सुनाती हूँ, तुमसे बिदा होकर मैं सीधी नन्हों के पास पहुँची.

मैं समझती थी कि उससे मिलने या अपना परिचय आदि देने में कुछ तरवुद करना पड़ेगा ऐसा न हुआ.

रामदेई ने अपना वादा पूरा किया था और नन्हीं मुझसे बहुत अच्छी तरह पेश आई, मेरी उससे खूब बातें हुईं और अन्त में मैंने उसे अपने ढब पर उतार ही लिया.

वह तो मुझे साथ ले उसी समय बेगम या मनोरमा के पास जाने को तैयार हो पड़ी पर मैंने मुनासिब यही समझा कि उसको साथ न लूं बल्कि सिर्फ उसकी चीठी लेकर ही उन लोगों के पास जाऊँ, अस्तु उससे मैंने ऐसे मजमून की चीठी लिखवा ली जिसे देख मनोरमा और बेगम को मुझ पर विश्वास करना पड़े.

यह देखो वह चीठी इतना कह गौहर ने एक चीठी निकाल साँवलसिंह को दिखाई जो गौर से उसे पड़ गया:

यह लिखा था " प्यारी बेगम, जिसके हाथ मैं यह चीठी तुम्हारे पास भेजती हूँ वह बहुत ही तेज़ और चालाक ऐयार है.

तुम्हारे और दारोगा साहब के बहुत से भेद इसे मालूम हो गए हैं.

परन्तु यह पूरी तरह से मेरे बस में है.

इसके मतलब को समझ तुम्हारे पास भेजती हूँ, इस पर विश्वास करना और जरूरत समझना तो इससे काम लेना! तुम्हारी प्यारी नन्हों.

" साँवलसिंह ने यह चीठी पड़कर गौहरको लौटा दी और कहा, “ नन्हों को आपने क्या पट्टी पढ़ाई जो उसने इस तरह की चिठी आपको लिख दी?

" गौहर:

(खिलखिलाकर) अरे कुछ पूछो मत! मेरी उसकी बड़ी - बड़ी बातें हुईं.

वह कम्बख्त भी बड़ी शैतान है, उसे कुछ कम न समझो.

वह तो इस चीठी में पूरा परिचय ही दे देना चाहती थी मगर मैंने यह कहकर उसे रोका कि ऐसा करने से मेरे काम में हर्ज पड़ेगा.

सॉवल:

मगर उसे इस बात को जानने की इच्छा नहीं हुई कि आप क्यों यह सब कर रही हैं?

गौहर:

हुई क्यों नहीं, मगर मैं क्या बताने वाली थी?

मैंने कोई अनूठी बात गड़कर उसे सुना दी और साथ ही इस बात की भी कसम ले ली कि बगैर मेरी इजाजत मेरा भेद किसी से न कहे.

साँबल:

खैर तो आप इस चीठी को लेकर बेगम के पास गई?

गौहर:

नहीं तुम सुनो तो सही, बेगम के पास जाना तो जरूरी था ही मगर इस तरह से ठीक न होता अस्तु मैंने एक जाली चीठी तैयार की.

मेरे पिता ने जो चीठी मुझे दी थी बह तो मैं गवा चुकी थी, तो भी मैंने अन्दाज से उसका जो मजमून होना चाहिए सो बनाकर लिखा और उसके नीचे उनका दस्तखत भी तैयार किया.

देखो मैं वह चीठी भी दिखाती हूँ.

इतना कह गौहर ने एक दूसरी चीठी निकाली और साँवलसिंह के हाथ में दी, इसमें यह लिखा था:

" मेरे प्यारे दोस्त बलभद्रसिंह, " मुझे पक्की तौर से पता लगा है कि जमानिया के दारोगा साहब जिन्हें आप अपना मेहरबान समझते हैं आपके दुश्मन हो रहे हैं.

बहुत जल्द उनका बार आप पर और आपकी लड़कियों पर होगा और खास कर आपकी बड़ी लड़की लक्ष्मीदेवी जिसे मैं प्यार करता हूँ बहुत जल्द किसी मुसीबत में पड़ा चाहती है! मेरी बेटी गौहर ने जिसे ऐयारी करने का बहुत शौक है अपनी चालाकी से इन बातों का पता लगाया है इसलिए यह चीठी मैं उसी के हाथ आपके पास भेजता हूँ, खुलासा हाल आपको उसी की जुबानी मालूम होगा.

आपका - शेरअलीखा.

" साँबल:

(मुस्कराकर) यह तो आपने बड़ी विचित्र कार्रवाई की! खाँ साहब का दस्तखत तो बहुत ही साफ बना है, मगर क्यावास्तव में यह चीठी आप ही के हाथ की लिखी है?

गौहर:

(हँसकर) हाँ, मगर देखो तुम्हें सब हाल साफ - साफ कह रही हूँ सो तुम कहीं भण्डाफोड़ न कर देना, नहीं तो अगर मेरे बाप यह हाल सुनेंगे तो सख्त नाराज होंगे.

साँबल:

नहीं - नहीं, क्या आप मुझे ऐसा समझती हैं?

क्या मुझ पर आपको भरोसा नहीं?

गौहर:

नहीं - नहीं, मुझे पूरा भरोसा है.

अच्छा तो मैंने यह चीठी बनाई और अब अपनी सूरत बदल बेगम और मनोरमा से मिलने के लिए तैयार हुई, मगर उसी समय मुझे यह ख्याल हुआ कि मनोरमा, बेगम और दारोगा ने तो मुझे इधर बहुत दिनों से नहीं देखा है इससे पहिचान नहीं सकेंगे पर जैपाल शायद सूरत बदली रहने पर भी पहिचान जाय क्योंकि वह मेरे बाप के पास कई दफे आ - जा चुका है, अस्तु कोई तर्कीब करनी चाहिए जिसमें इस बात का डर भी न रहे, (हँसकर और गिल्लन की तरफ देखकर) और इनकी मदद से वह बात भी बड़े मजे में हो गई.

साँवल:

सो कैसे?

गौहर:

दवाइयों और रंग की मदद से इन्होंने मेरे चेहरे पर दो - चार दाग इस तरह के बना दिए जो ऐसे मालूम होते थे मानों किसी मर्ज के हों.

बस इस तौर पर मेरा काम बखूबी निकल गया क्योंकि मनोरमा से मिलने पर मैंने अपनी सूरत नकाब से ढंक रखी और उसके पूछने पर अपना चेहरा दिखा कह दिया कि इन्हीं जख्मों की वजह से मैंने अपना चेहरा डाँक रखाहै और जब तक ये अच्छे नहीं होंगे किसी को अपनी सूरत नहीं दिखाऊँगी.

सॉवल:

तो क्या सबसे पहिले आप मनोरमा से ही मिलीं?

गौहर:

नहीं, नन्होकी चिट्ठीलेकर जब मैं बेगम के घर पहुंची तो भाग्य से मनोरमा भी वहाँ मौजूद मिली, फिर तो दोनों से मुझसे खूब ही बातें हुईं.

मैंने जो जाली चीठी बनाई थी वह जब मनोरमा को दिखाई तो उस पर बड़ा ही असर पड़ा और उसने मुझे लेकर दारोगा के पास जाना मंजूर कर लिया.

अब मैं बेखटके उसके साथ जमानिया पहुँच दारोगा वगैरह से मिलूंगी और सब भेदों का पता लगाऊँगी.

गिल्लन:

(हँसकर) और उन जख्मों की बदौलत आपको अपनी सूरत भी किसी को दिखानी न पड़ेगी.

सॉबल ०:

तब और क्या! मगर क्या आप दारोगा साहब से भी मिलेंगी?

गौहर:

हाँ, कल सन्ध्या को मनोरमा ने नागर के घर पर मुझे बुलाया है और यह भी कहा है कि मैं वहाँ मौजूद रहूँगी और हो सका तो वहीं दारोगा साहब से तुम्हारी मुलाकात कराऊँगी, अब मैं कल शाम को नागर के मकान पर पहुँचूँगी.

गिल्लन:

(सांबल से) मैंने इनको बहुत समझाया कि इन झगड़ों में न पड़ें और घर लौटें मगर ये किसी तरह मानती ही नहीं.

गौहर:

अब इतना करके मुझे पीछे हटने को मत कहो, क्या करी - कराई सत्र मेहनत चौपट किया चाहती हो?

गिल्लन:

खुशी तुम्हारी, अब मैं तुमसे इस बारे में कुछ बोलने की नहीं.

गौहर:

तुम्हारा न बोलना ही अच्छा.

(साँवलसिंह से) अच्छा साँवलसिंह! साँवल:

कहिए.

गौहर:

दारोगा साहब से तो अब कल मुलाकात होगी ही, पर इस बीच में मैं चाहती हूँ कि वह काम पूरा कर डालूँ जिसके लिए मेरे बाप ने मुझे यहाँ भेजा है यानी बलभद्रसिंह से मिल कर इन सब बातों की खबर उन्हें सांबल ०:

बेशक अब आपको यह काम तो कर ही डालना चाहिए.

गौहर:

मेरे हाथ से वह चीठी निकल गई जो मेरे बाप ने दी थी तो भी अगर मैं खुद उनसे मिलूं और सब हाल सुना दूं तो बेशक होशियार हो जाएँगे हेलासिंह के वार का बचाव भी कर सकेंगे.

सांबल ०:

हाँ सम्भव है ।

गौहर:

क्यों, क्या तुम्हें इसमें कुछ सन्देह है?

सांवल ०:

जिन दारोगा और हेलासिंह ने जमानिया के महाराज को अपनी कार्रवाइयों से परेशान कर रखाहै उनकी चालों से बलभद्रसिंह अपने को बचा लेंगे ऐसा तो मुझे विश्वास नहीं होता.

गौहर:

हाँ यह तो तुम ठीक कहते हो, मगर तुम यह भी तो देख ही रहे हो कि मैं इन सभी का कैसा खूबसूरती से बन्दोबस्त कर रही हूँ, जरा हेलासिंह तक तो मेरी पहुँच हो जाने दो, फिर देखो मैं इन लोगों को कैसा नाच नचाती हूँ! सांबलसिंह ने इस बात का कुछ जबाब न देकर कहा, " आप जो कुछ हुक्म दीजिए मैं बजाने को तैयार हूँ, मगर इस बात का

ख्याल रखिए कि अगर आप किसी तरह की मुसीबत में फंस गईं तो सब सोचा - विचारा रह जाएगा और मुझ पर जो मुसीबत आवेगी सो तो अलग! " गौहर:

नहीं नहीं, मैं अपने बचाव का पूरा खयाल करूँगी और इसीलिए बहिन गिल्लन को बराबर अपने साथ रखूंगी, तुम मेरी तरफ से बेफिक्र रहो.

सांवल ०:

तो अब मुझे आप क्या कहने को कहती हैं?

गौहर:

मैं चाहती हूँ कि तुम बलभद्रसिंह से जाकर मिलो, मुझको भी जब मौका मिलेगा मैं जरूर ही मिलूँगी मगर तुम आज ही चले जाओ.

जो कुछ बातें इधर हुई हैं उनकी तुम्हें पूरी - पूरी खबर है, अस्तु तुम अपना परिचय देकर हेलासिंह की तरफ से उन्हें होशियार करो और जो - जो कार्रवाई बह कर चुका है उससे भी आगाह करो, बाद में मैं मिलकर उनसे अच्छी तरह बातें कर लूंगी.

तुमसे यह कहने को मैं इसलिए कहती हूँ कि कहीं मैं दारोगा वगैरह के फन्दे में पड़ ही गई, यद्यपि अपने भरसक तो मैं अपने को सब तरह से बचाऊँगी तो भी कुछ न कुछ डर तो बना ही है, तो फिर बेचारे बलभद्रसिंह अंधेरे में ही पड़े रह जाएँगे, उन्हें इन सब बातों की कुछ भी खबर न लग सकेगी और दारोगा की कार्रवाई चल जाएगी.

अस्तु तुम्हारा जाना ही उचित है.

सांवल ०:

(सिर झुकाकर) बहुत अच्छा.

गौहर:

अस्तु तुम अभी चले जाओ.

मैं अभी दो रोज तक दौड़ - धूप में पड़ी रहूँगी मगर आज के तीसरे दिन दोपहर को तुमसे अजायबघर के पास मिलूंगी, तुम्हारे सफर का क्या नतीजा निकला यह मैं उसी

जगह तुमसे सुनूँगी और यदि संभव हुआ तो उस समय बलभद्रसिंह से मिलने के लिए भी तुम्हारे साथ चल पड़ूंगी.

सांवल:

बहुत अच्छा.

गौहर:

तो बस अब तुम उठो और जाओ, मगर परसों मुझसे मिलने का जरूर खयाल रखना.

सांवलसिंह के भाव से मालूम होता था कि उसे गौहरका साथ छोड़ना मंजूर नहीं है मगर तो भी लाचारी के साथ उसे उसी समय उठना और इस काम के लिए जाना ही पड़ा.

उसने अपने कपड़े पहिले जो उतार कर एक तरफ रक्खे हुए थे, ऐयारी का बटुआ लगाया और सफर के सामान से दुरुस्त होकर कुएँ से नीचे उतर गया.

गौहर और गिल्लन भी उठ खड़ी हुईं.

सांबलसिंह ने पश्चिम का रास्ता लिया और गौहरतथा गिलल्न अपने - अपने घोड़ों पर सवार हो आपस में बातें करती हुई जमानिया की तरफ चल पड़ी.

न जाने कब से एक आदमी इस कुएँ के पिछवाड़े की तरफ छिपा हुआ खड़ा था.

इन तीनों में किसी को भी इस बात का सन्देह नहीं हुआ था कि कोई गैर आदमी भी हमारी बातें सुन रहा है, मगर वास्तव में वह बहुत देर से छिपा हुआ था और इसने इन सभों की बातें बहुत ध्यान के साथ सुनी थीं.

गौहरऔर सांवलसिंह के दो तरफ निकल जाने के बाद यह आदमी आड़ के बाहर आया और उन दोनों की तरफ देखता हुआ बोला, " इस मौके को हाथ से जाने देना उचित नहीं.

इनमें से किसी - न - किसी को जरूर गिरफ्तार करना चाहिए, बेशक मेरा बहुत काम निकलेगा.

"

पांचवा व्यान।

] कल्याणी ने इन्दुमति को प्रेम और आराम से रखा.

सच तो यह है कि इन्दुमति के दिल को उसकी मीठी बातों और सच्चे बर्ताव ने अपनी तरफ खींच लिया और इस थोड़े ही देर की मुलाकात में कल्याणी को इस तरह प्यार करने लगी जैसे उसकी सगी बहिन हो.

उसने अपना थोड़ा बहुत हाल यानी जो कुछ घटनाएँ उस पर बीत चुकी थीं, संक्षेप में कल्याणी को कह सुनाया, मगर फिर भी दयाराम का हाल बिल्कुल न बताया और न यही कहा कि इन्द्रदेव की मदद से वे दारोगा की कैद से छूट गए थे पर फिर किसी मुसीबत में पड़ गए.

दोनों औरतों को बातचीत करते बहुत रात गुजर गई मगर कल्याणी ने अपना कोई हाल इन्दुमति से नहीं कहा, उसके बहुत जोर देने पर इतना कह दिया कि ' अपना असल नाम और हाल तो मैं तुमसे नहीं कह सकती मगर इधर मेरे ऊपर जो कुछ आफतें आई हैं उनका हाल कल तुमसे जरूर कहूंगी ', उसने इन्दुमति से यह भी कहा कि ' तू यहां मेरे साथ रहने में किसी तरह से परहेज न कर और न किसी तरह का डर ही मन में ला क्योंकि जब इन्द्रदेव और प्रभाकरसिंह को मेरे असल हाल का पता लगेगा तो वे बहुत प्रसन्न होंगे और मेरे साथ रहने के कारण तुम पर किसी तरह का दोष न आयेगा ', उसकी बातों ने इन्दुमति को बहुत कुछ बेफिक्र कर दिया और वह निर्भयता के साथ निद्रादेवी की गोद में पड़ गई.

दूसरे दिन सुबह को जब इन्दुमति की आँख खुली तो दिन बहुत चड़ आया था और कल्याणी सब जरूरी कामों से छुट्टी पाकर भोजन की फिक्र में लगी हुई थी क्योंकि इस स्थान में किसी तरह के भी आवश्यक सामान की कमी नहीं थी.

कल्याणी ने इन्दु को उठने तथा स्नान आदि से निवृत्त होने को कहा और जरूरी चीजें जुटा दीं.

इन्दुमति ने बहुत जल्द सब कामों से छुट्टी पा ली और तब कल्याणी के दिए कपड़ों को पहिन और अपने गीले कपड़े सूखने को डाल वह कल्याणी के पास ही आ बैठी.

इस स्थान में एक क्रूआँ भी था अस्तु पानी इत्यादि की कोई तकलीफ नहीं हो सकती थी.

इन्दु के आते ही कल्याणी ने कहा, " मै चाहती हूं कि खा - पीकर हम दोनों मकान के बाहर निकलें और प्रभाकरसिंह की खोज करें, तुमने कहा है कि उन्हें शिवदत्त के आदमियों ने ही कैद किया है अस्तु अगर ऐसा है तो उनका छुड़ाना बहुत कठिन त होगा, मगर पहिले तुम यह बताओ कि तुम्हें दुश्मनों से डर तो नहीं लगता और तुम मेरे साथ काम करने को तैयार हो या नहीं?

इन्दुः:

मैं सच्चे दिल से तुम्हारे साथ काम करने को तैयार हूं, मुझे किसी दुश्मन का रत्ती भर भी डर नहीं है और न मुझे किसी मुसीबत की ही परवाह है क्योंकि इन सबके लिए तो तैयार होकर ही मैं घर से निकली हूं, कल्याणी:

(प्रेम से उसका हाथ दबा कर) तुमसे इसी जवाब की उम्मीद थी और मुझे यह भी विश्वास है कि मेरे काम में तुम मेरी मदद करोगी.

यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि मेरा हाल न जानने के कारण तुम्हारे दिल में सन्देह होता होगा और तुम मुझ पर पूरा - पूरा विश्वास करने से हिचकी होगी मगर क्या किया जाय, कई बातें ऐसी हैं जिनके सबब से मैं लाचार हूँ कि तुम्हें अपना खुलासा हाल नहीं कह सकती.

फिर भी मुझे तुम पर पूरा विश्वास है और मैं तुम्हें बहिन की तरह प्यार करती हूं कल्याणी:

मैं भी तुम्हें बहिन ही समझती हूं और हम लोग एक - दूसरे की मदद से बहुत कुछ कर गुजरने लायक हैं, क्योंकि मुझे इस स्थान का कुछ भेद मालूम है और यह जगह ऐसी है कि जबतक हम लोग इस मकान के अन्दर हैं कोई हमें कष्ठ नहीं पहुंचा सकता.

इन्दु ०:

यह मकान भी क्याकोई तिलिस्म है?

कल्याणी:

नहीं, तिलिस्म तो नहीं है मगर तिलिस्म का यह मुहाना जरूर है और यहाँ से तिलिस्म के अन्दर कई तरफ जाने के रास्ते हैं जिस कारण से इसे तिलिस्म भी कह सकते हैं तुमने जमानिया के भारी तिलिस्म का नाम सुना ही होगा.

इन्दु ०:

हाँ जरूर

कल्याणी:

तो उसी जमानिया के तिलिस्म का यह एक बाहरी हिस्सा है.

इन्दु ०:

तुम्हें इसका हाल कैसे मालूम हुआ?

कल्याणी:

इस बात का ठीक जबाब मैं इस समय न दूंगी क्योंकि ऐसा करने से मुझे अपना परिचय देना पड़ेगा जिसके लिए मैं तैयार नहीं हूँ, हाँ मैं अपना कुछ ऐसा हाल तुमसे कहती हूँ जिससे तुम्हें कुछ - कुछ अन्दाज अवश्य लग जायगा.

जमानिया के रईस दामोदरसिंह का नाम तो तुमने जरूर सुना होगा?

इन्दु ०:

बेशक, और बड़े अफसोस के साथ मैंने उनकी मौत की खबर भी सुनी है.

कल्याणी:

हाँ ठीक है, यद्यपि मुझे उस खबर के ठीक होने पर विश्वास नहीं खैर तो वे मेरे रिश्तेदार हैं.

(लम्बी साँस लेकर) एक जमाना था जब वे मुझे अपनी प्यारी बेटी की तरह समझते थे और मैं उन्हें अपने पिता से बड़कर मानती और प्यार करती थी तथा उन्हीं के सबब से महाराज गिरधरसिंह भी मुझसे पिता की तरह प्रेम रखते थे.

(अपनी उँगली में पड़ी हुई पन्ने की अंगूठी दिखाकर) यह अंगूठी महाराज ने ही विवाह के दहेज के लिए भेजी थी.

(कुछ देर तक चुप रह कर) अब वह सब एक स्वप्न की - सी बात मालूम होती है, बहिन इन्दु, इस समय भी जब मैं उस जमाने की बातें खयाल करती हूँ तो कलेजा मुंह को आता है और जब दारोगा की हरामजादगी का ध्यान आता है तो दिल काबू में नहीं रहता, इन्दु, क्या तू खयाल भी कर सकती है कि इसी स्थान में जहां तु इस समय बैठी है तेरे से भी कम उम्र नाजुक और सुन्दर एक लड़की ने तड़प - तड़प कर जान दी है?

क्या तू खयाल भी कर सकती है कि इसी इमारत में एक मासूम और भोली लड़की की बोटी - बोटी काटकर चील और कौबों को खिला दी गई है.

नहीं, तू इस खयाल से ही कांपरही है, तेरा चेहरा इसके सुनने से ही पीला पड़ गया है, तेरी साँस रुक रही है, मगर मैंने अपनी इन आँखों से यह भयानक कार्रवाई इसी जगह होते हुए देखी है नहीं - नहीं, इन्दु मैं तेरे नाजुक्र कलेजे को दहलाना नहीं चाहती, खुद मुझमें इतनी ताकत नहीं है कि उस बात को दुबारा अपनी जुबान से बयान कर सकें.

मैं वह पूरा हाल आज भी तुझे सुना नहीं सकती क्योंकि इतने जमाने के बाद भी, वरसों बीत जाने पर भी, जरा - सा जिक्र आते ही वह भयानक घटना मेरी आँखों के सामने घूम जाती और मेरी प्यारी सखी की सूरत आँखों के सामने फिरने लगती है पर साथ ही रुलाई मुँह रोक देती है और आँसू आँखे बन्द कर देते हैं.

कल्याणी ने दोनों हाथों से अपना मुँह डाँप लिया मगर उन आँसुओं को रोक न सकी जो जबर्दस्ती उसकी आँखों के बाहर निकलकर उसके दामन को तर करने लगे थे.

इन्दुमति का भी कलेजा हिल गया था और उसकी आँखें भी सूखी नहीं थीं, पर उसने अपने को सम्हाला और कल्याणी को दमदिलासा देकर शान्त किया, कल्याणी ने फिर कहा- कल्याणी:

मेरे दुश्मनों को पता लग गया कि मुझे उनके इस दुष्कर्म का हाल मालूम हो गया अस्तु वे मुझको मार डालने की फिक्र में लगे.

नतीजा यह निकला कि ठीक व्याह के मौके पर दारोगा ने मुझे गिरफ्तार करवा लिया.

इन्दु ०:

तो क्या इस खूनी काम को करने वाला दारोगा ही था?

कल्याणी:

हाँ, दारोगा और हेलासिंह.

अफसोस की बात तो यह है कि जिस लड़की का मैंने हाल कहा वह महाराज गिरधरसिंह के कुटुम्ब की और दामोदरसिंह की तो खास रिश्तेदार थी, फिर भी दारोगा और हेलासिंह वह काम कर गुजरे जो मैंने कहा, दामोदरसिंह तक को इस बात का पता न लगा और महाराज के कान तक भी इसकी खबर न पहुँची.

मेरे गिरफ्तार होने और दु:ख उठाने का भी यही कारण हुआ क्योंकि दारोगा और हेलासिंह को गुमान हुआ कि अगर मैं बची रहूँगी तो जरूर महाराज या दामोदरसिंह के कान भरूंगी.

मुझसे भी भारी गलती हो गई जो मैंने उस बात को उसी समय या किसी से भी कह न दिया और डर, घबराहट या किसी और सबब से कुछ समय के लिए छिपा रखने की बेवकूफी की.

खैर मैं दारोगा की कैद में बरसों तक पड़ी रही और इस बीच में मुझे जो - जो तकलीफें उठानी पड़ीं मेरा ही दिल जानता है बल्कि मुझे ताज्जुब तो इस बात का है कि दारोगा ने इतने दिनों तक मुझे जीता ही क्यों छोड़ रखा.

बेशक अब जो मैं खयाल करती हूँ तो इसमें भी कोई गुप्त भेद मालूम होता है .

.

.

(एकाकर) खैर,

तो मैंने इस बीच में बड़ी - बड़ी तकलीफें उठाई और बड़े - बड़े कष्ट भोगे.

मेरे रिश्तेदार भी मुझे मुर्दा समझ चुप हो बैठे और दामोदरसिंह भी मुझे भूल गए.

आखिर न जाने ईश्वर की किस दयादृष्टि ने मेरी जान बचाई और मेरे एक बुजुर्ग को उस कैदखाने में पहुँचाया जिसमें कम्बक्तदारोगा ने मुझे बन्द कर रखा था.

उसने मुझे रिहाई दी और इस जगह का पता बताया.

मगर अफसोस में पहले तो यहाँ का नाम सुनकर मैं कांपगई फिर उनके समझाने - बुझाने और यहाँ का कुछ अधिक हाल बताने पर तथा इस जगह की मजबूती और हिफाजत का खयाल कर मैंने रहना कबूल किया.

आज कई दिन से मैं इस जगह हूँ इस बीच में मैंने प्रभाकरसिंह जी को उनके दुश्मनों के हाथ से बचाया तथा और भी कई बातों का पता लगाया, दामोदरसिंह जी से मिलने का मौका न पा सकी और कम्बख्त दारोगा ने उन्हें मिट्टी में मिला दिया.

खैर कोई हर्ज नहीं, अब तो मैने अपनी जान पर खेला ही है, या तो मैं ही रहूँगी और दारोगा वगैरह को जहन्नुम पहुँचाकर छोडूंगी और या फिर दारोगा ही रहेगा.

अगर तुम मेरी मदद करो तो मैं अब भी बहुत कुछ कर गुजरने की हिम्मत रखती हूँ, इन्दुः:

(प्रेम से कल्याणी का पंजा पकड़ के) मुझसे जो कुछ बन पड़ेगा मैं करने को तैयार हूँ, तुम इसका पूरा विश्वास रखो.

कल्याणी:

(इन्दु को गले लगाकर) मुझे विश्वास है.

इन्दु ०:

अब तुम क्या किया चाहती हो?

कल्याणी:

महाराज गिरधरसिंह दारोगा पर कभी सन्देह न करेंगे, वह उनकी नाक का बाल हो रहा है और महाराज उसे केवल अपना शुभचिन्तक ही नहीं बल्कि रक्षक, त्राता, विधाता सभी कुछ समझे बैठे हैं और हम लोग बिना पूरा - पूरा सबूत हाथ में किये अगर कोई कार्रवाई करेंगे तो अवश्य धोखा खाएँगे.

अस्तु मैं दारोगा के आजीपन का काफी सबूत हाथ में करके तभी आगे बढ़ा चाहती हूँ, मुझे पक्का पता लगा है कि दारोगा ने कई बेकसूर आदमियों को यहाँ इस लोहगड़ी में अथवा पास वाले उस अजायबघर में बन्द कर रखा है.

तुम्हारी जमना और सरस्वती आदि के भी तिलिस्म में फंस जाने का मुझे पूरा विश्वास हो गया है और उनके छुड़ाने का जरिया भी इसी गढ़ी में है.

मैं चाहती हूँ कि इन सभों को कैद से छुड़ाऊँ और तब उनके दुख - दर्द की पूरी कहानी लेकर दारोगा के ऊपर महाराज के दरबार में दावा करूं क्योंकि बिना पूरा सबूत जुटाए कुछ भी नहीं हो सकेगा कहो तुम्हारी क्या राय है?

इन्दु ०:

वेशक मैं इस बात को पसन्द करती हूँ, कल्याणी:

मैंने कैदियों का पता लगाने की कोशिश की थी और डरते - डरते तिलिस्म के उन हिस्सों तक गई भी जहाँ तक मैं जा सकती थी.

पर नतीजा कुछ न निकला क्योंकि मुझे यहां का पूरा हाल मालूम नहीं और जब तक पूरा हाल न मालूम हो तिलिस्मी मामलों में हाथ डालना नादानी है.

कल्याणी:

मैंने सुना है कि यहाँ की कोई ताली है.

यह तो नहीं कह सकती कि वह कैसी या किस तरह की है मगर इतना जानती हूँ कि वह हेलासिंह के कब्जे में है और अब उसी ताली को पाने की मैं कोशिश किया चाहती हूँ, इन्दु ०:

जैसी तुम्हारी मर्जी.

कल्याणी:

उस ताली को कब्जे में कर मैं तिलिस्म में घुसूंगी और जहाँ तक जा सकूङ्गी जाकर कैदियों का पता लगाऊँगी और सम्भव हुआ तो उन्हें छुड़ाऊँगी, फिर भगवान जो करे सो होगा इन्दुः:

अच्छी बात है.

कल्याणी:

तो इस समय हम लोग दो काम करते हैं.

एक तो प्रभाकरसिंह जी को छुड़ाना और दूसरे हेलासिंह से वह ताली कब्जे में करना.

इन्दु ०:

ठीक है.

कल्याणी:

मैं चाहती हूँ कि खाने - पीने से निश्चिन्त होकर हम लोग सूरत बदलकर बाहर निकलें और कुछ करें.

इन्दु ०:

मैं इसके लिए दिलोजान से तैयार हूँ.

कल्याणी और इन्दुमति ने भोजन किया, इसके बाद कल्याणी इन्दुमति को एक ऐसी आलमारी के पास ले गई जिसमें ऐयारी करने और सूरत बदलने के कुछ मुख्तसर से सामान तथा कपड़े मौजूद थे दोनों ही ने अपनी सूरतें बदलीं, मर्दानी पोशाकें पढ़तीं और ऐयारी का बटुआ कमर में छिपा लोहगढ़ी के बाहर निकलने पर तैयार हो गई.

यों तो इस लोहगड़ी में आने के और इसके बाहर जाने के कई गुप्त रास्ते हैं मगर जो सदर दरवाजा है वह पूरब की तरफ पड़ता है.

यद्यपि वह दरवाजा देखने में मामूली मालूम होता है पर वास्तव में वैसा नहीं है क्योंकि यहाँ तक पहुँचने के लिए भी राह में कई और दरवाजे पड़ जाते हैं जो कारीगरी से खुलते हैं पर फिर भी यह राह सरल है और बाकी की राहें पेंचीदी, खतरनाक और तिलिस्मी होने के कारण केवल जानवरों के ही आने - जाने लायक हैं.

इन्दुमति को साथ लिए कल्याणी उस बंगले के नीचे उतरी और पतली - पतली सीढ़ियों के जरिए बाग में पहुँच पूरब और उत्तर के कोने की तरफ रवाना हुई जिधर दो तरफ की ऊंची दीवारें जो चहारदीवारी की तरह इस जमीन को घेरे हुए थीं और जिनका हाल हम

पहले लिख आए हैं, आपस में मिली थीं और उस जगह एक छोटी गुमटी - सी बनी हुई थी.

एक छोटे दरवाजे की राह जिसमें पल्ला न था ये दोनों इस गुमटी के अन्दर चली गईं जो सिर्फ छः हाथ के घेरे में बनी हुई थी मगर इसकी छत बहुत ऊँची थी, यहाँ तक कि एक आदमी के कन्धे पर दूसरा खड़ा होकर भी उस छत को छू नहीं सकता था.

गुमटी का फर्श काले और सुफेद संगमर्मर के तिकोने टुकड़ों का बना हुआ था.

बीचोंबीच में लगभग एक हाथ की गोलाई में लोहे का एक गोल टुकड़ा जड़ा हुआ था जिस पर एक आदमी खड़ा हो सकता था.

१.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, बारहवाँ बयान.

कल्याणी ने उस टुकड़े की तरफ बताकर इन्दुमति से कहा, " इस पर खड़े होकर एक तर्कीब करने से यह टुकड़ा जमीन में धंस जाता है और आदमी को नीचे की एक कोठरी में पहुँचा देता है मगर तरवुद यही है कि इस राह से एक दफे में केवल एक ही आदमी आ - जा सकता है अस्तु पहले तुम इस राह से चली जाओ फिर मैं आती हूं. इन्दुमति ने उस दुकड़े पर पैर रखा.

टुकड़े के बीचोंबीच में तीन लोहे की खूंटियाँ करीब एक अंगुल के ऊपर की तरफ उभरी हुई थीं.

कल्याणी ने इनकी तरफ इन्दु का खयाल दिला कहा, " बाईं तरफ वाली खूंठी को तीन दफे दबाओ, फिर दाहिनी तरफ वाली को सात दफे और तब बीच वाली को दो दफे दबाओ.

ऐसा करने से यह टुकड़ा नीचे की तरफ उतरेगा.

जब इसका उतरना रुक जाय तो तुम इस पर से उतर जाना, उतरने के साथ ही यह ऊपर लौट आयेगा.

" इन्दु ने ऐसा ही किया और उन खूंटियों के दबाने के साथ ही वह लोहे का टुकड़ा धीरे - धीरे नीचे उतरने लगा.

थोड़ी ही देर में वह बहुत नीचे चला गया और वहाँ कुएँ की तरह का एक गोल गड़हा दिखाई देने लगा.

लगभग पाँच मिनट के बाद वह टुकड़ा फिर अपनी जगह वापस आया.

तब कल्याणी उस पर सवार हुई और उसी तर्कीब से नीचे उतर गई.

टुकड़ा बहुत दूर तक नीचे उतर जाने के बाद एक तंग कोठरी की सतह तक पहुँचकर रुका और कल्याणी ने नीचे उतर इन्दुमति को उसी जगह खड़े पाया.

यह कोठरी बहुत छोटी थी मगर जमीन के इतना नीचे होने पर भी यहाँ रोशनी का अभाव न था क्योंकि कई छोटे सूराखों की बदौलत रोशनी और हवा दोनों ही आ रही थीं.

सामने की तरफ एक तंग दरबाजा था.

कल्याणी ने इसके भी खोलने की तर्कीज इन्दु को बताई बल्कि उसी के हाथ से वह दरवाजा खुलवाया और दूसरी तरफ होकर बन्द भी कराया.

अब ये दोनों एक छोटी सुंरग में थीं जो लगभग बीस हाथ के लम्बी होगी, इसे पार करने पर पुनः एक दरवाजा मिला और इसे भी कल्याणी की बताई तर्कीब से इन्दु ने खोला.

यह एक दूसरी कोठरी थी और इसके बीचोंबीच में भी लोहे का एक गोल टुकड़ा था.

फर्क इतना ही था कि तर्कीब करने पर यह टुकड़ा ऊपर उठता और आदमी को ऊपर ही सतह पर पहुंचा देता था.

इसी राह से पहले इन्दु और तब कल्याणी ऊपर पहुंची.

कल्याणी को ऊपर पहुँचा वह टुकड़ा फिर नीचे चला गया और उस जगह एक गोल गड़हा दिखाई देने लगा.

इन्दुमति ने पूछा, " अच्छा इस राह से अगर भीतर कोई आदमी जाना चाहे है, तो किस तरह जाएगा?

क्या कोई तर्कीब करने से यह नीचे वाला टुकड़ा ऊपर आ जाता है?

" कल्याणी ने कहा, " नहीं, यह राह सिर्फ भीतर से बाहर आने वाले के लिए है, बाहर से अन्दर जाने के लिए दूसरी राह है जो इसकी उल्टी है, इस लोहगड़ी की सबसे भारी मजबूती वह चारदीवारी है जो इतनी मजबूत है कि उसे किसी तरह से छेद करके राह पैदा नहीं की जा सकती.

सिर्फ उसके नीचे या ऊपर से होकर ही दूसरी तरफ आदमी जा सकता है क्योंकि जहाँ तक मुझे पता है दीवार के भीतर से होकर दूसरी तरफ जाने का कोई रास्ता नहीं है.

तुम समझ ही गई होगी कि जिस राह से हम दोनों आई हैं वह दीवार के नीचे से होकर निकली है, इसी तरह दीवार के ऊपर से होकर आते - जाने का भी रास्ता है मगर मुझे उसकी खबर नहीं.

!! इन्दु को इस इमारत के बारे में और भी कई तरह की बातें बताती कल्याणी सदर दरवाजे के पास जा पहुँची.

दरवाजा देखने में तो काठ का मालूम होता था पर वास्तव में लोहे का बना हुआ था.

कल्याणी ने उसे खोला और दोनों आदमी बाहर आए.

कल्याणी ने खींचकर दोनों पल्ले बन्द कर दिए, इन्दु ने पूछा, " इस दरबाजे को बाहर से बन्द करने या खोलने की क्या तरकीब है?

" कल्याणी ने बाहर दरवाजे में लगे हुए दो मोटे कड़ों की तरफ बताकर कहा, " इनको एक तर्कीब के साथ घुमाने, दबाने और खींचने से बन्द किया या खोला जाता है.

" कल्याणी ने इन्दु को बताकर उसी के हाथ से वह दरवाजा बन्द करा दिया.

कल्याणी इन्दु को लिए घूमती हुई मकान के पश्चिम तरफ गई जिधर ऊपर की तरफ गणेशजी की एक लाल रंग की मूर्ति बनी हुई थी.

इन्दु को बताकर उसने कहा, " यहाँ से भी एक रास्ता मकान के अन्दर जाने का है.

यदि हो सका तो लौढती बार मैं तुझे इधर ही से ले चलूँगी मगर इस समय अपने काम पर रवाना होना चाहिए क्योंकि देर हो रही है.

छठवा व्यान।

गौहर और गिल्लन आपस में धीरे - धीरे बातें करती हुई चली जा रही थीं.

इस समय गौहरबहुत ही प्रसन्न थी क्योंकि उसे अपना काम सिद्ध होने की पूरी उम्मीद थी.

वह हँस - हँसकर गिल्लन से बातें करती थी और अपनी चंचल निगाहों से चारों तरफ देखती भी जाती थी.

जब ये दोनों अजायबघर के पास पहुंची तो यकायक इन्हें रुक जाना पड़ा क्योंकि गौहर की निगाह साँवलसिंह पर पड़ी जो बड़ी तेजी से इनके पीछे - पीछे आ रहा था, गौहर को अपनी तरफ देखता पा उसने रुकने का इशारा किया जिस पर गौहर ने घोड़ा रोक दिया और साँवलसिंह के पास आने पर पूछा, " क्यों क्या है जो तुम इस तरह घबराए हुए चले आ रहे हो?

" साँवलसिंह ने कहा, " माफ कीजियेगा क्योंकि मैं आपके बताये हुए ठिकाने पर आज मिल न सका.

मैं एक जरूरी भेद का पता लगाने के लिए जमानिया गया हुआ था जहाँ से अभी चला आ रहा हूँ! " गौहर:

(घबड़ाकर) यह तुम क्या कह रहे हो साँवलसिंह?

क्या अभी - अभी उस कूएँ पर तुम्हारी मेरी मुलाकात नहीं हो चुकी है?

है साँवल:

(चौंककर) कहाँ?

कब?

मैं तो आपसे पहली दफे मिल रहा हूँ, गौहर:

हाय हाय, यह तो बड़ा गजब हो गया.

जरूर किसी कम्बख्त ने तुम्हारी सूरत बन मुझे पूरा धोखा दिया, अब क्या होगा?

साँवल ०:

मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि आप यह क्या कह रही हैं?

क्या मेरी सूरत बन किसी ने आपसे मुलाकात की?

साफ - साफ कहिये कि क्या मामला है !!

गौहर:

हाँ, जरूर यही बात हुई, किसी धूर्त ऐयार ने तुम्हारी सूरत बन मुझ से उसी कुएँ पर मुलाकात की और मैंने उसे कई भेद की बातें भी बता दी - ओफ बड़ा बुरा धोखा हुआ! इतना कहकर गौहर घोड़े से उतर पड़ी और एक जगह बैठकर उसने सब हाल सांवलसिंह से कह सुनाया, उसने चुपचाप सब कुछ सुना और अन्त में कहा, " यह बड़ी बुरी बात हुई, अब आपके लिए अपने भेद छिपा रखना कठिन हो गया, हो न हो, यह काम भूतनाथ का है.

" गौहर:

बेशक यही बात है, मगर अब किया क्या जाए?

सांवल ०:

आपने अब उसे कहाँ जाने को कहा है?

गौहर:

मैंने उसे वह चीठी दे बलभद्रसिंह के पास जाने को कहा था.

सांबल ०:

मगर वह कभी वहाँ न जायगा, जहाँ तक मैं समझता हूँ वह बराबर आपका पीछा ही कर रहा होगा बल्कि यहाँ ही कहीं मौजूद हो तो ताज्जुब नहीं.

इसी समय सांवलसिंह की निगाह बाईं तरफ गई जिधर घनी और कई गुंजान झाड़ियाँ थीं.

उसने एकाएक चौंककर कहा, " बेशक वहाँ कोई आदमी छिपा हुआ है, आप ठहरिए मैं अभी आता हूँ.

” इतना कह वह दबे पाँव झाड़ी की तरफ बड़ा और कुछ ही दूर जा आँखों की ओट हो गया.

गौहरऔर गिल्लन ताज्जुब के साथ उसी तरफ देखती रहीं.

थोड़ी देर बाद गौहर को ऐसा जान पड़ा मानों कोई दूर से गिल्लन को आवाज दे रहा है.

उसने चौंककर गिलनसे कहा, " मालूम होता है, सांवलसिंह ने उस ऐयार को पकड़ लिया और अब तुम्हें मदद के लिए बुला रहा है, जरा जाकर देखो तो सही क्या बात है?

" गिल्लन इसके जवाब में ' मैं यही चाहती हूँ कह कर उसी तरफ चली गई और झाड़ियों की ओट में पहुँची मगर वहाँ कोई न था अस्तु वह इधर - उधर देखने और खोजने लगी.

गिल्लन देर तक चारों तरफ घूमती रही.

इस बीच में उसने सांवलसिंह को कई बार आवाज भी दी मगर उसका कुछ पता न लगा.

आखिर झल्लाकर मन ही मन कुछ भुनभुनाती हुई वहाँ से लौटी और उस तरफ चली जिधर गौहर को छोड़ गई थी.

मगर वहाँ उसे भी न पाया, आश्चर्य में आ चारों तरफ देखने लगी मगर वहाँ गौहर होती तब तो मिलती! गौहरतो क्या वहाँ से दोनों घोड़े भी गायब थे.

लाचार सिर पीटकर जमीन पर बैठ गई और बोली, " वेशक बहुत बड़ी गलती हो गई, वह सांवलसिंह नहीं बल्कि कोई ऐयार था जिसने यह धोखा दिया और गौहरको तो ले ही गया.

गिल्लन का ख्याल बहुत ठीक था.

यह ऐयार जो सांबलसिंह की सूरत बन इन दोनों से मिला, वास्तव में इन्दुमति का साथी वही अर्जुन था जिसने उस नएँ के नीचे छिपकर गौहर, गिल्लन और सांवलसिंह की बातें

बखूबी सुन ली थीं और मौका पा सांबलसिंह की सूरत बन गौहर को गिरफ्तार कर ले भागा.

गिल्लन के जाते ही वह घूमकर चक्कर काटता हुआ गौहर के पीछे जा पहुँचा और एक कपड़े को, जो बेहोशी की दवा से तर था।यकायक गौहर के मुँह पर डाल बेहोश कर उसको काबू में कर लिया, गौहरऔर गिल्लन के घोड़े मौजूद ही थे, उसने एक पर बेहोश गौहर को लादा दूसरे पर खुद सवार हुआ और जब तक गिल्लन लौटे उसके पहिले ही वहाँ से दूर निकल गया.

अर्जुन ने गौहर को गिरफ्तार तो कर लिया मगर अब वह इस फिक्र में था कि इसे रक्खे कहाँ ले जाकर, सच तो यह है कि जब से इन्दु उसके साथ से गायब हुई तब से वह बहुत ही उदास हो रहा था क्योंकि इन्दु को इन्द्रदेव ने खास तौर पर उसकी हिफाजत में छोड़ा था.

यद्यपि इस बीच में अर्जुन ने अपनी चालाकी से कई बातों का पता लगाया था और इन्दु को खोजने की कोशिश में भी बराबर लगा हुआ था पर इन्दु को पाए बिना वह कुछ करने की हिम्मत नहीं कर सकता था.

आज यह बिलकुल इत्तिफाक ही की बात थी कि लोहगढ़ी से निकलती हुई कल्याणी के साथ - साथ चलती हुई इन्दु ने इस समय उसे देख लिया और साथ ही उसने भी उन दोनों को देखा अर्जुन को गुमान हुआ कि कदाचित ये दोनों मेरे और इन्दु के दुश्मनों में से हैं, इन्दु और कल्याणी को भी संदेह हुआ कि मुमकिन है कि वह सवार जो एक बेहोश औरत को लिए चला जा रहा है दारोगा का कोई दोस्त हो और वह बेहोश औरत हम लोगों के मेल की अथवा कोई साथी हो.

कल्याणी ने व्यर्थ के सोच - विचार में समय नष्ठ करना उचित न समझा.

उसने झटपट इन्दु से कुछ बातें कीं और तब तीर और क्रमान हाथ में ले जो उसके पास मौजूद था उसने अर्जुन के घोड़े को जख्मी करना चाहा यद्यपि अर्जुन की इच्छा हुई कि घोड़ा तेजकर निकल जाय मगर बेहोश गौहर के सबब से वह ऐसा कर न सकता था, दूसरे झाड़ - झंखाड और घने पेड़ों के सबब से रास्ता भी इस लायक न था कि घोड़े

तेजी से चलाए जा सकें अस्तु नतीजा यह निकला कि कल्याणी का चलाया हुआ तीर निशाने पर लगा और अर्जुन का घोड़ा तकलीफ के सबब से उछलने - कूदने लगा.

लाचार अर्जुन को उस घोड़े की लगाम छोड़ देनी पड़ी जिसे हाथ में लिए गौहर को सहारा दिए वह ले जा रहा था, उसी समय कल्याणी का दूसरा तीर पहुँचा जिसने घोड़े को बेकार ही कर दिया और अर्जुन को लाचार हो घोड़े से कूद तलबार हाथ में ले इन दोनों के आने की राह देखनी पड़ी जिन्होंने इस तरह बेमौके काम में खलल डाला था.

बात की बात में इन्दु और कल्याणी अर्जुन के पास आ पहुंची और कल्याणी ने डपटकर पूछा- " तुम कौन हो और इस बेहोश औरत को कहाँ लिए जा रहे हो?

" जवाब में अर्जुन ने भी लापरवाही के साथ कहा, " इस बात का जबाब हम तुम्हें क्यों दें?

तुम बताओ कि कौन हो जो हमारे काम में इस तरह दखल दे रहे हो?

" कल्याणी:

(तलवार निकालकर) तुम्हें बताना ही होगा कि तुम कौन हो और यह बेहोश औरत कौनऔर कहाँ की रहने वाली है! अर्जुन:

(तलवार का जवाब तलबार ही से देने को तैयार होकर) कदापि नहीं, मैं तुम दोनों ही आदमियों से लड़ने को तैयार हूँ,

अर्जुन की आवाज सुनने के साथ ही इन्दु को शक पैदा हुआ कि कहीं यह उसका साथी अर्जुन ही तो नहीं है! यद्यपि सूरत और पोशाक में जमीन - आसमान का फर्क था मगर आवाज में फर्क न था अस्तु इन्दुमति ने अपना संदेह दूर करने के लिए मानों लापरवाही के साथ कहा, " चम्पकलता! " इतना सुनने के साथ ही अर्जुन ने चौंककर इन्दु की तरफ देखा और तब धीरे से कहा, “ नीलपदम! " इन्दु और अर्जुन ने घर से चलती समय यही इशारा एक - दूसरे को पहचानने के लिए मुकर्रर कर लिया था अस्तु इस समय इन्दु को पा अर्जुन को जितनी प्रसन्नता हुई उतनी ही अर्जुन को देख इन्दु को भी हुई.

वह खुश होकर आगे बड़ आई और अर्जुन से बोली, " वाह जी अर्जुन, तुम तो खूब मौके पर मिले! " अर्जुन:

मगर आपको यहाँ देख मुझे बहुत ताज्जुब हो रहा है, मुझे यही विश्वास था कि आप दुश्मनों के फेर में पड़ गईं! इन्दुः:

बेशक मैं दुश्मनों के ही फंदे पड़ गई थी मगर (कल्याणी को बता कर) इनकी दया से कल ही छूटी हूँ, तुम अपना हाल बताओ और यह कहो कि यह बेहोश औरत तुम्हारे साथ कौन है जिसे इस तरह घोड़े पर लादे लिए जा रहे हो?

अर्जुन:

इसे आप शायद नहीं जानती.

यह पटने के शेरअली खाँ की लड़की गौहर है और मैंने अभी इसे गिरफ्तार किया है.

इसके बारे में बहुत - सी विचित्र बातें बताऊँगा मगर पहिले आपका हाल सुन लेने और साथ ही (कल्याणी की तरफ बता के) आपका भी कुछ परिचय पा लेने बाद, कल्याणी:

(इन्दु से) मैं भी जानना चाहती हूँ कि ये कौन हैं?

इन्दु ०:

मैंने अपना हाल कहते हुए आपसे अपने साथी अर्जुनसिंह का हाल कहा था! कल्याणी:

हाँ, हाँ तो क्या ये .

.

?

इन्दुः:

हाँ, ये ही वे अर्जुन हैं, इनके मिल जाने से अब हमें बहुत मदद मिलेगी (अर्जुन से) यद्यपि इनका ठीक हाल मैं नहीं जानती और इसी से कुछ कह भी नहीं सकती तथापि इन्होंने मेरी बड़ी भारी सहायता की है और मुझे मेरे सबसे बड़े दुश्मन -शिवदत्त के हाथ

से छुड़ाया है और इस समय हम दोनों एक बहुत बड़े ही जरूरी काम के लिए घर से बाहर हुई थीं.

कल्याणी:

मगर यह जगह इस लायक नहीं है कि बेफिकीके साथ गुप्त बातें की जाएं.

मेरी समझ में तो हम लोग यदि ऊपर टीले पर चलें तो ज्यादा अच्छा हो.

इन्दु और साथ ही साथ अर्जुन ने भी इस बात को पसन्द किया.

बेहोश गौहर घोड़े पर से उतारी गई.

अर्जुन ने दोनों घोड़ों को पेड़ से बाँध दिया और जख्मी घोड़े के पैर में कुछ मलहम बगैरह लगाया, इसके बाद गौहर को पीठ पर लादा और तीनों आदमी ऊपर टीले पर चढ़ गए.

दरवाजे के पास ही साफ पत्थर की कई चौकियाँ बनी हुई थीं जिन पर तीनों बैठ गए और बातें करने लगे, अर्जुन के पूछने पर इन्दु ने उसका साथ छूटने के बाद से अब तक का हाल संक्षेप में कह सुनाया और तब अर्जुन ने अपना हाल कहा.

अर्जुन की जुबानी सब हाल सुन तथा यह जानकर कि उसने धोखा दे असली सांबलसिंह को गिरफ्तार किया और उसकी सूरत बन गौहर को कब्जे में किया है, कल्याणी चौंकी और बोली, " तब तो आपकों वे दोनों चीठियाँ भी मिल गई होंगी जो गौहर ने बलभद्रसिंह के पास भेजी तथा मनोरमा से अपने बारे में लिखवाई थीं?

" अर्जुन ने कहा, " गौहर की तलाशी लेने का मौका तो मुझे नहीं मिला, हाँ, सावलसिंह वाली चीठी जरूर मेरे पास है.

!! इतना कह अर्जुन ने वह चीठी निकाली और कल्याणी को दी, कल्याणी जल्दी - जल्दी उसे पड़ गई और तब प्रसन्न होकर बोली.

" बस इस चीठी से हम लोगों का काम बखूबी निकल जायगा.

" कल्याणी ने दुबारा इस चीठी को पड़ा और कुछ देर तक गौर करती रही इसके बाद अर्जुन से बोली.

" अच्छा आप इस विषय में जो कुछ जानते सो मुझसे कहिए.

!! यह सुन अर्जुन ने गौहर, गिल्लन और सांबलसिंह का वह सब हाल कह सुनाया जितना वह जानता था या जिसका पता कुएँ के नीचे छिपे हुए उनकी बातें सुनने से उसे लगा था.

और अंत में उसने कहा, " इनकी ये बातें सुन मैंने तय किया कि इन तीनों में से किसी को अवश्य गिरफ्तार करूंगा अस्तु साँवलसिंह का पीछा किया और उसे गिरफ्तार कर उसी की सूरत बन गौहर को अपने काबू में किया, कल्याणी:

(इन्दु से) अब मेरा काम बड़े मजे में और खूबसूरती के साथ निकलेगा.

और गौहर के बदले अब मैं दारोगा से मिलूंगी जिसको झक मारकर मुझ पर भरोसा करना पड़ेगा और मैं उसके जरिए सहज ही मैं हेलासिंह को यहां लाने और उसके कब्जे से ताली निकालने की कोई तरकीब कर लूँगी.

इन्दु ०:

बेशक हम लोग बहुत मजे में अपना काम कर सकेंगे.

मगर इस काम में जो खतरे हैं उसके बारे में तुम सोच लो.

कल्याणी:

वह सब कुछ मैंने सोच लिया, तुम वह खयाल छोड़ दो और अर्जुन को लेकर गड़ी के भीतर जाओ, गौहर को वहीं कैद रखो, मैं इसकी सूरत बन दारोगा के पास जाती हूँ, इन्दु ०:

तो क्या तुम अकेली जाओगी?

कल्याणी:

हां, मगर तुम घबराओ मत, कोई डर की बात नहीं है.

इन्दु ०:

दारोगा बड़ा ही शैतान और कांयां है, अगर .

.

.

.

कल्याणी:

नहीं नहीं, तुम बिल्कुल न घबराओ.

फिर मैं बिलकुल अकेली भी न रहूँगी क्योंकि मेरा वह मेहरबान अभी तक जमानिया में मौजूद है जिसका मैं तुमसे जिक्र कर चुकी हूँ, इन्दु ०:

बहुत ठीक, जो तुम कहो मैं वही करूंगी.

कल्याणी ने इन्दु को कई तरह की बातें और भी समझाई और तब अर्जुनसिंह की सहायता से अपनी चेहरे को गौहरकी नकाब से ढक और उसी के कपड़े पहन तैयार हो गई.

गौहर की चीठियां तथा कुछ और सामान भी जो जरूरी समझा हिफाजत से रख दिया और तब इन्दु तथा अर्जुन से विदा हो टीले के नीचे उतरी.

पाठक अब समझ जाएंगे कि सुन्दरी नामक जो औरत दारोगा से मिलकर हेलासिंह के नाम की चीठी लिखा ले गई थी वह वास्तव में कल्याणी ही थी और वह आदमी उसका वह गुप्त साथी था जो मकान से निकलने पर उसे मिला था.

इसके बाद ही पाठक यह भी जान गए होंगे कि हेलासिंह से मिलकर और अपनी बातों के जाल में उसे फंसाकर लोहगड़ी की ओर ले जाने वाली भी कल्याणी ही है.

इस समय कल्याणी बहुत खुश थी कि अब उसका काम बखूबी निकल जायगा.

मगर वास्तव में ऐसा न था.

उसके दुश्मन चैतन्य हो गए थे और शैतान दारोगा को उसकी कार्रवाइयों का पता लग गया था.

सातवा व्यान।

हेलासिंह को साथ लिए कल्याणी (सुन्दरी) तेजी से लोहगड़ी की तरफ रवाना हुई.

इस समय ये दोनों ही चुपचाप घोड़े फेंकते हुए जा रहे थे क्योंकि हेलासिंह अपने किसी विचार में डूबा हुआ था और कल्याणी अपने ही बाँधनू बाँध रही थी.

जब ये दोनों अजायबघर के पास पहुंचे जहाँ से लोहगढ़ी की इमारत बहुत ज्यादा दूर न थी तो हेलासिंह ने यकायक घोड़ा रोक दिया कल्याणी ने कहा, " क्यों, रुकते क्यों हैं, चले चलिए.

11 जिसके जवाब में हेलासिंह ने कहा, " अजायबघर का दरवाजा खुला हुआ है, मालूम होता है, दारोगा साहब यहाँ आए हुए हैं.

यदि वे यहाँ हों तो मैं उनसे दो बातें करके तब यहाँ से चलना पसन्द करूंगा.

” यद्यपि कल्याणी को यह बात पसन्द नहीं आई लेकिन फिर भी उसे लाचारी के साथ कहना पड़ा, " अच्छी बात है, आप हो आइए.

मैं यहीं रुकी हूँ, हेलासिंह घोड़े से उतर पड़ा और उसकी लगाम एक डाल से अटकाने के बाद अजायबघर की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा जिसका दरवाजा वास्तव में खुला हुआ था.

१.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, चौदहवाँ बयान.

उसके जाते ही कुछ सोचकर कल्याणी भी घोड़े से उतर पड़ी और अजायबघर की तरफ बड़ी.

इधर - उधर देख और कहीं किसी को न पा उसने भी सीढ़ियों पर पैर रखा और मकान के अन्दर घुसी एक दालान और कोठरी पार कर वह उस दालान में पहुंची जो नाले के ठीक ऊपर पड़ता था और यहाँ पहुँचते ही उसे एक ऐसी चीज दिखाई पड़ी जिसने उसे ताज्जुब, डर, घबराहट और अफसोस में डुबा दिया, वह लाश थी जो कम्बल में लपेटी हुई दालान के बीचोबीच में पड़ी हुई थी.

लाश का मुँह खुला हुआ था और पहली निगाह में कल्याणी ने पहचान लिया कि वह प्रभाकरसिंह की है.

कल्याणी ने बड़ी मुश्किल से उस दु:ख भरी चीख को रोका जो बेतहाशा उसके गले से निकला चाहती थी.

उसने आगे बड़कर चाहा कि देखें प्रभाकरसिंह अभी जीते हैं या वास्तव में यह उनकी लाश ही है कि इसी समय बगल के कमरे में से आती कुछ बातचीत की आबाज की तरफ उसका ध्यान चला गया और वह बड़े गौर से सुनने लगी.

एक आवाज:

हाँ वह चीठी तो ठीक थी और जिस औरत को दारोगा साहब ने चीठी देकर आपके पास भेजा था वह भी बिश्वासपात्र थी, पर यह औरत वह नहीं है जिसके साथ इस समय आप जा रहे हैं, यह एक धूर्त ऐयारा है जिसने असली सुन्दरी को गिरफ्तार कर लिया और खुद उसकी सूरत बन आपको धोखा दिया चाहती है.

दूसरी आवाज:

(जो हेलासिंह की थी) तो क्या मैं उसका साथ छोड़ दूं?

पहला नहीं, बल्कि उसके साथ - साथ जाएँ मगर हर तरह से चौकन्ने रहें और जिस तरह हो उसे गिरफ्तार करने की कोशिश करें.

मैं भी प्रभाकरसिंह को ठिकाने लगा लोहगड़ही की तरफ आता हूँ.

आप आगे बढ़िए.

इस बातचीत ने कल्याणी के कान खड़े कर दिए, वह समझ गई कि उसका भेद खुल गया और अब उसे अपनी जान बचाने की फिक्र करनी चाहिए, इस जगह अब एक पल के लिए भी ठहरना अनुचित था अस्तु लाचारी के साथ बिना प्रभाकरसिंह की किसी तरह जाँच - पड़ताल किए उसे तेजी के साथ वहाँ से लौट जाना पड़ा, मुश्किल से वह घोड़ों के पास तक पहुँची थी कि हेलासिंह भी आ पहुँचा.

कल्याणी:

कहिए दारोगा साहब से मुलाकात हुई?

हेला ०:

नहीं, मुझे धोखा हुआ, दरवाजा खुला देख मैंने समझा था कि शायद दारोगा साहब आए हों मगर वहाँ कोई नहीं था.

अच्छा चलो, देर करने की जरूरत नहीं.

कल्याणी ने इसका कोई जवाब न दिया और न किसी तरह से यही जाहिर होने दिया कि वह इन दोनों की बातें सुन चुकी है.

वह चुपचाप अपने घोड़े पर सवार हुई और हेलासिंह के साथ लोहगढ़ी की तरफ बड़ी मगर इस बात से हर तरह चौकन्नी रही कि हेलासिंह कहीं धोखे से उस पर वार न कर बैठे.

उधर हेलासिंह भी हर तरह से होशियार था और छिपी निगाहें बराबर कल्याणी पर डाल रहा था.

दोनों लोहगड़ी के पास पहुंचे.

टीले से कुछ दूरी पर कल्याणी ने अपना घोड़ा रोका और हेलासिंह ने पूछा, " रुकी क्यों?

" कल्याणी ने कहा, " मैं अपने साथी को यहाँ छोड़ गई थी, पहिले उससे मिलकर हाल - चाल दरियाफ्त कर लूँ तो आगे बड़ूं, आप यहीं रहिए मैं अभी आई, 11 इतना कह बिना जबाब की राह देखे कल्याणी घोड़े से उतर पड़ी और टीले पर चढ़ने लगी, हेलासिंह ने उसे कुछ कहना या रोकना चाहा पर न जाने क्या सोचकर चुप रह गया, पर सब तरफ से चौकन्ना और होशियार जरूर बना रहा.

आधा रास्ता चढ़कर कल्याणी रुकी और एक पेड़ की आड़ में पहुँच उसने धीरे से सीटी बजाई, मगर उसे किसी तरह का जबाब न मिला जिससे वह कुछ बेचैन हुई क्योंकि यहां से जाते समय बह इन्दु से कहती गई थी कि इसी जगह पर मौजूद रहना, कुछ सोचती हुई वह टीले के ऊपर चड़ गई और यहाँ पहुँचते ही जमीन पर उसे कुछ ऐसे निशान

दिखाई पड़े जिसने उसकी घबराहट को और भी बढ़ा दिया क्योंकि यहाँ कई आदमियों के लड़ने - भिड़ने के निशान साफ मालूम हो रहे थे.

जगह - जगह खून के छीटे पड़े हुए थे और एक तरफ टूटा हुआ एक खंजर भी पड़ा था जो खून से तर था.

कल्याणी का माथा उनका और विश्वास हो गया कि बेशक मामला कुछ गड़बड़ है.

वह लपकी हुई मकान के पास पहुँची, फाटक इस समय खुला हुआ था और वहाँ भी खून के छीट और मारकाट के निशान मौजूद थे.

ड्योढ़ी के अन्दर पड़े हुए एक कपड़े पर कल्याणी की निगाह पड़ी और उसने उसे उठाकर देखा.

यह इन्दु की चादर थी जिसे वह अच्छी तरह पहिचानती थी, और यह भी खून से तर थी.

उसने अपने सिर पर हाथ मारा और बदहवास होकर उसी जगह बैठ गई.

मगर यह मौका ऐसा न था कि बेचैनी या बदहवासी को जगह दी जाए और कल्याणी भी इस बात को बखूबी समझती थी.

वह तुरंत ही उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई लोहगड़ी के अन्दर घुसी- " प्रभाकरसिंह की लाश तो देखती ही आ रही हूँ अब क्या इन्दु की मौत का भी विश्वास करना पड़ेगा! " लोहगड़ी के अन्दर पहुँच कल्याणी ने रत्ती - रत्ती जगह देख डाली, सब कोठरी और दालान खोज डाले, मगर न तो इन्दु ही दिखाई पड़ी और न अर्जुन पर ही निगाह पड़ी.

आखिर वह बदहवास होकर जमीन पर बैठ गई और गाल पर हाथ रख आँखों से गर्म आँसू गिराने लगी.

बड़ी देर तक कल्याणी इसी तरह बैठी रही और न जाने कब तक बैठी रहती अगर पास ही एक कोठरी के अन्दर से उसे यह आवाज न सुनाई पड़ती, “ बस अब कम्बख्त कहाँ जा सकती है! " सुनते ही वह चौंककर उठ खड़ी हुई और इसके साथ ही बगल की कोठरी के अन्दर से जैपाल और हेलासिंह को निकलते पाया.

कल्याणी को देखते ही हेलासिंह बोला, “ वाह, तुम यहाँ बैठी आँसू गिरा रही हो और मैं बाहर खड़ा तुम्हारी राह देखता - देखता घबड़ा गया, अब बताओ वह गौहर कहाँ जिसे गिरफ्तार कराने तुम मुझे यहाँ लाई हो?

" इतना कह हेलासिंह उसकी तरफ बड़ा मगर कल्याणी डर कर कई कदम पीछे हो गई क्योंकि वह अच्छी तरह समझ गई थी कि ये दोनों उसे गिरफ्तार कर लिया चाहते हैं, कल्याणी को हटते देख हेलासिंह उसके पीछे लपका, कल्याणी भागी और इन दोनों ने उसका पीछा किया.

कुछ देर तो कल्याणी ने इधर - उधर दौड़ - धूप कर अपने को बचाया मगर आखिर दो दुष्टों के आगे एक नाजुक और कमजोर औरत क्योंकर और कहाँ तक अपने को बचा सकती थी! अन्त में उन दोनों ने इसे पकड़ लिया.

हेलासिंह ने कल्याणी को जमीन पर पटक दिया और जैपाल ने उसकी नाक में जबर्दस्ती बेहोशी की दवा स उसे बेहोश कर दिया.

अपनी कामयाबी पर दोनों बड़े ही प्रसन्न हुए जैपाल ने कहा अब इसकी सूरत धोकर देखना चाहिए कि यह वास्तव में कौनहै?

" पास ही के एक हौज में से पानी लेकर दोनों ने कल्याणी का चेहरा अच्छी तरह साफ किया और संध्या समय की मद्धिम रोशनी में उसकी असली सूरत देखते ही हेलासिंह बदहवास होकर बोल उठा, हैं, यह तो मालती है! यह यहाँ कहाँ से आ गई?

" जैपाल यह सुन बोला, " आपको शायद नहीं मालूम कि कुछ समय हुआ यह दारोगा साहब की कैद से छूट गई थी, वे इसके लिए सख्त परेशान हो रहे थे और गहरे तरबुद में थे, अब इसके गिरफ्तार हो जाने से बड़े प्रसन्न होंगे.

" हेलासिंह ने कुछ जवाब न दिया मगर इसमें शक नहीं कि वह धूर्त इस समय किसी गहरे सोच में पड़ गया था और कितने ही तरह की बातें सोच रहा था.

उसकी गर्दन झुक्र गई थी और माथे पर सिकुड़ने पड़ गई थीं.

उसकी छिपी निगाहें कभी मालती और कभी जैपाल पर पड़ रही थीं और इसके साथ जैपाल भी गहरी निगाह से हेलासिंह की तरफ देखता हुआ उसके चेहरे से उसके मन की

बातें जान लेने का उद्योग कर रहा था.

आखिर कुछ देर बाद उसने हेलासिंह से कहा, " आप सोच क्या रहे हैं, चलिए मालती को बाहर निकाल ले चलिए, यहाँ अगर, इसका साथी आ गया तो मुश्किल हो जाएगी.

" हेलासिंह ने जवाब दिया - ' हाँ, वही तो मैं भी सोच रहा हूँ कि इसके साथ क्या बर्ताव करना चाहिए " जैपाल :

करना क्या है, इसे गठरी में बाँधिए और बाहर निकालकर दारोगा साहब के सुपुर्द कीजिए जिनकी कैद में अब तक यह थी.

हेला:

मगर मैं सोच रहा हूँ कि यदि इसे लेकर निकले और इसके किसी साथी से मुठभेड़ हो गई तो मुश्किल हो जाएगी.

जैपाल:

मगर यहाँ रहने में भी यही खतरा है ।

हेला ०:

नहीं, यहाँ मेरे रहते किसी गैर की कार्रवाई नहीं चल सकती जब तक कि मैं जागता हूँ या होशहबास में हूँ, जैपाल:

बेशक आप इस मकान के भेदों से बखूबी वाकिफ हैं फिर भी इस समय यह दुश्मन का घर हो रहा है इससे मेरी समझ में तो इसे यहाँ से बाहर निकाल ले जाना ही मुनासिब होगा.

हेला ०:

अगर ऐसा ही है तो फिर सुबह ले चलेंगे, आज की रात यहाँ क्रादिए क्योंकि अँधेरा बड़ रहा है और इस समय लेकर बाहर निकलना भी मुनासिब नहीं है.

जैपाल और हेलासिंह दोनों ही अपनी - अपनी चालाकी में लगे हुए थे.

जैपाल चाहता था कि जिस तरह भी हो मालती को दारोगा साहब के पास पहुँचाबे और उधर हेलासिंह सोचता था कि अब यह कब्जे में आ गई है तो इसे हाथ से बाहर न जाने

देना चाहिए.

आखिर मौका देख इस समय जैपाल को ही तरह देना पड़ा और उसने बहुत कुछ सोच - विचार कर कहा, " अच्छा आपकी ऐसी मर्जी है तो यही सही, मगर इस बात का इन्तजाम पूरा - पूरा होना चाहिए कि रात को इसका कोई मददगार आकर छुड़ा न ले जाए.

" हेलासिंह यह सुन हँसकर बोला, " भला यह भी मुमकिन है कि मेरे रहते कोई इसे छुड़ा ले जाए और सो भी इस लोहगढ़ी के अन्दर से?

यहाँ कैद करने लायक जगहों की कुछ कमी नहीं है.

आइए मेरे साथ चलिए, मैं आपको एक तहखाना दिखाता हूँ, अगर मुनासिब समझिए तो रात - भर के लिए इसे उसी में बन्द कर दीजिए! " जैपाल बोला, “ हाँ, अगर कोई ऐसी जगह मिल जाए तो बहुत अच्छा है.

" जिसे सुन हेलासिंह उठा और जैपाल का हाथ पकड़े यह कहता बाईं तरफ वाली कोठरी में घुस गया- " आइए मैं आपको वह जगह दिखाऊँ.

" हेलासिंह और जैपाल के कोठरी के अन्दर जाते ही एक नकाबपोश जो दाहिनी तरफ की कोठरी में जाने कब से छिपा खड़ा था बाहर आया और उस जगह पहुँचा जहाँ बेहोश कल्याणी (मालती) जमीन पर पड़ी हुई थी.

मालती का एक हाथ बाहर निकला हुआ था और उसकी उंगली में एक पन्ने की अंगूठी चमक रही थी.

इस आदमी ने कोशिश करके वह अंगूठी जो मुद्दत से पड़ी रहने के कारण कुछ सख्त बैठ गई थी निकाल ली और तब पुनः उसी कोठरी में घुस गया जहाँ से निकला था.

उसके छिपते ही छिपते जैपाल और हेलासिंह वहाँ आ पहुँचा, दोनों में कुछ बातें हुई और तब मालती को उठा दोनों फिर उसी कोठरी के अन्दर घुस गए जिसमें से निकले थे.

निराला पाते ही वह नकाबपोश पुनः बाहर आया.

उसने क्रोध भरी एक निगाह उस तरफ डाली जिधर ये दोनों दुष्ट मालती को उठाकर ले गए थे और तब यह कहता हुआ लोहगड़ी के बाहर की तरफ चला, “ भला कम्बख्तों,

कोई हर्ज नहीं मैं भी बिना पूरा बदला लिए छोड़ने वाला नहीं! मालूम होता कि इस नकाबपोश को भी लोहगड़ी के भेदों से पूरी बाकीफियत थी, क्योंकि वह बेखटके यहाँ के गुप्त दरवाजों को खोलता और बन्द करता हुआ बाहर आ गया.

सदर दरवाजे के पास ही कहीं छिपा हुआ एक आदमी खड़ा था जो इसे देखते ही आड़ के बाहर आ गया और बोला, " कहिए क्या हुआ?

" नकाबपोश ने जवाब दिया, " जो सोचा था वही हुआ, " उन दुष्टों ने बेचारी मालती को गिरफ्तार कर लिया और अन्दर ही कहीं बन्द कर रखा है! " उसने मुख्तरसर में सब हाल अपने साथी को सुनाया जिसे सुन उसने कहा, " तब क्या होगा?

" नकाबपोश बोला, " अब सिवाय इसके ओर कोई उपाय नहीं है कि महाराज को इन बातों की खबर कर दी जाए, क्योंकि इस बार मालती दारोगा के कब्जे में पड़ी तो वह उसे कदापि जीता न छोड़ेगा.

" साथी:

समझ लीजिए, महाराज को खबर देने का कोई उलटा नतीजा न निकल पड़े, नकाब ०:

अब जो होना हो सो हो, जो कुछ उलटा आजकल हो रहा है उससे बड़ कर और क्या हो सकता है?

साथी:

' खैर मर्जी आपकी, इस मामले में आप मुझसे बहुत ज्यादे समझ रखते नकाब:

तुम्हारे बटुए में कलम - दबात और कागज है?

साथी:

हाँ - हाँ, लीजिए.

कहते हुए उसने कलम - दवात और कागज निकालकर नकाबपोश के आगे रख दिया जिसने कागज पर यह लिखा:

" बड़े ही अफसोस की बात है कि महाराज तिलिस्म के राजा होकर भी और असाधारण ताकत रखने पर भी अपने दोस्त और दुश्मन के पहिचानने में भूल रखते हैं! बड़े ही दुख

की बात है कि महाराज के ही नौकर और गुलाम महाराज ही के साथ दगा करें और साफ बच जाएं.

" इस समय आप कुँवर गोपालसिंह के गायब हो जाने के कारण परेशान हैं, मगर खूब खयाल रखिए कि वे इस समय भी आप ही के राज्य और आप ही की हुकूमत के अन्दर हैं और फिर भी आप उनका पता नहीं लगा सकते! अफसोस की बात है! " अगर - अब भी आप तिलिस्म के अन्दर, या अपने उस मकान में जो लोहगड़ी के नाम से पुकारा जाता है, अथवा उस अजायबघर में जिसे दारोगा साहब पा गए हैं, तलाश करें तो कई ऐसी बातें जानेंगे और ऐसे कैदियों को देखेंगे कि ताज्जुब होगा! " नकाबपोश ने यह चीठी लिख कर उसी पन्ने की अंगूठी के साथ जो मालती की उंगली से निकाली थी एक लिफाफे में बन्द की और उसे एक मजबूत मोमजामें में लपेटकर मुहर कर दी.

इसके बाद लिफाफे को अपने साथी के हाथ में देकर कहा, " यह आज ही रात को महाराज के पास पहुँच जाना चाहिए.

उसने " बहुत अच्छा " कह लिफाफा ले लिया और तब दोनों आदमी कुछ बातें करते हुए टीले के नीचे उतर गए.

आठवा व्यान।

इस चीठी को पाकर महाराज गिरधरसिंह की जो दशा हुई हम ऊपर के किसी बयान में लिख आये हैं.

चीठी से ज्यादे उस अंगूठी ने उन्हें बेचैन कर दिया था जिसे नकाबपोश ने चीठी के साथ रख दिया था और जिसे महाराज अच्छी तरह पहिचानते थे, क्योंकि उन्होंने खुद अपने हाथ से यह अंगूठी मालती को दी थी जिसे वे अपनी लड़की से बड़ कर प्यार करते थे और जिसकी मौत ने उन्हें किसी समय में बड़ा ही दु:खी कर दिया था.

इस अँगूठी ने उन्हें गुजरे हुए जमाने की याद दिला दी और चीठी के मजमून ने इस बात पर मजबूर किया कि वे तिलिस्म में जाएं और जाँच करें, चीठी लिखने वाले का कहना कहाँ तक सही है.

अस्तु वे उठे और कुछ सोचते - विचारते तिलिस्म के चौथे दर्जे की तरफ बढ़े.

जमानिया तिलिस्म के चौथे दर्जे और वहाँ के रास्तों का कुछ हाल हम चन्द्रकान्ता सन्तति में लिख आए हैं जिसे यहाँ पुनः लिखना व्यर्थ होगा अस्तु हम अपने पाठकों के लिए महाराज के साथ - साथ सीधे देवमन्दिर में पहुंचते हैं जहाँ से तिलिस्म के दूर से दूर हिस्सों में जाने के रास्ते हैं.

पाठकों को याद होगा कि इस देवमन्दिर के चारों तरफ चार इमारतें थीं.

पूरब तरफ के मकान को पीतल की दीवार ने घेरा हुआ था, उत्तर की तरफ वाला मकान स्याह पत्थर का बना हुआ था जिसके चारों तरफ तरह - तरह के कल पुरजे लगे हुए थे, दखिन तरफ के मकान के चारों कोनों पर चार बुर्जियाँ थीं, और पश्चिम तरफ वाले मकान के दरवाजे पर हड्डियों का ढेर था जिसके बीच में से निकल कर लोहे की एक जंजीर पास के कुएँ के अन्दर गई हुई थी.

महाराज सीधे इसी मकान के दरवाजे पहुँचे.

इस मकान के दरवाजे पर इतनी अधिक हड्डियाँ पड़ी थीं कि उनका ऊँचा ढेर लग गया था.

महाराज बेधड़क इस हड्डियों के ढेर पर चढ़ गए और गौर से दरवाजे की ऊपरी चौखट पर निगाह डालने लगे जिस पर कुछ अक्षर खुदे हुए थे.

महाराज ने उन अक्षरों को किसी कमसे दबाया और तब अलग हट कर खड़े हो गये.

अक्षरों के दबते ही मकान के अन्दर से बाजे की आवाज आने लगी और ऐसा मालूम हुआ मानों भीतर कोई फौज खड़ी है १.

देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति नौवाँ भाग, पहिले बयान.

जिसका बाजा बड़े सुर और लय के साथ बजने लग गया है.

लगभग पाँच मिनट तक बाजे की आवाज आती रही और तब बन्द हो गई, इसके बाद तुरत ही मकान का दरवाजा खुल गया और महाराज ने अन्दर कदम रखा.

एक लम्बा - चौड़ा आलीशान कमरा नजर आया जिसके चारों तरफ की दीवार में तीन - तीन दरवाजे अर्थात कुल बारह दरवाजे थे.

जिस दरवाजे की राह महाराज अन्दर गये थे उसके बगल में बने हुए दो दरवाजे तो नकली थे मगर बाकी के सब असली थे, जिनमें से हर एक के बगल में पीतल के बने दो सिपाही नंगी तलवारें हाथ में लिए खड़े थे.

उस तरफ वाले हिस्से से जिधर दो नकली दरवाजे बने थे अथवा जिधर से महाराज आए थे, बीस फौजी बाजे वाले कतार से दीवार के साथ सट कर खड़े थे जिनमें से दो को छोड़कर बाकी हर एक के हाथ में कोई - न - कोई बाजा था और बेशक इन्हीं बाजे वालों की आवाज बाहर से सुनाई पड़ी होगी.

ये आदमी भी पीतल ही के बने हुए थे.

महाराज के कमरे के अन्दर घुसते ही इन पीतल के सिपाहियों में से उन दो के बदन में हरकत पैदा हुई जो दरवाजे के दोनों बगल पड़ते थे.

दोनों का तलवार वाला हाथ उठा और माथे तक पहुँचा मानों उन्होंने महाराज की सलामी उतारी और इसके बाद दोनों ज्यों - के - त्यों हो गये.

कुछ देर तक महाराज वहीं खड़े कुछ सोचते रहे इसके बाद धीरे - धीरे चल कर बाईं तरफ के एक दरवाजे के पास पहुंचे जिसके ऊपर लगी हुई पीतल की एक पटड़ी पर मोटे - मोटे हर्फों में लिखा हुआ था- " चौथा दर्जा.

" महाराज के इस दरवाजे के सामने जाते ही दोनों बगल वाले पीतल के सिपाही अपनी जगह से हटकर दरवाजे के सामने आ खड़े हुए, इसके साथ ही उनका तलबार वाला हाथ इस तरह ऊँचा हुआ मानों वे वार किया चाहते हैं, मगर महाराज ने इसका कोई खयाल न किया.

उन्होंने अपने म्यान से तिलिस्मी तलवार निकाल ली और उसे बारी - बारी से हर सिपाही के साथ छुला दिया.

तलवार के छूते ही सिपाहियों ने सलामी दी और हटकर पुनः अपने ठिकाने जा खड़े हुए, साथ ही उस कमरे का दरवाजा भी एक हल्की आवाज देता हुआ खुल गया और

महाराज ने अन्दर कदम रखा.

इस कमरे में जिसमें अब महाराज पहुँचे किसी तरह का कोई सामान, यहाँ तक कि कोई आलमारी, खिड़की या दरवाजा तक भी न था.

चारों तरफ साफ दीवारें थीं जिन पर किसी तरह का चमकदार रोगन चढ़ा हुआ था और छत भी बहुत ऊँची न थी वैसी पालिशदार और बिल्कुल साफ बनी हुई थी.

हाँ इस जगह जमीन में कुछ कारीगरी अवश्य थी अर्थात् इस कमरे के फर्श पर जो सुफेद संगमर्मर का था रंगीन पत्थरों के छोटे - छोटे टुकड़े इस क्रमसे जुड़े हुए थे कि एक पूरी और बड़ी इमारत की तसबीर पच्चीकारी के काम में बन गई थी और गौर से देखने वाला तुरंत कह देगा कि बेशक यह तिलिस्मी बाग के चौथे हिस्से का नकशा है, क्योंकि बीच का देवमन्दिर उसके चारों तरफ का नकली बाग तथा उसके बाद वाले चारों कोनों की इमारतें इस जगह बहुत सफाई और कारीगरी के साथ बनी हुई थीं.

महाराज ने इस नक्शे का वह हिस्सा देखना शुरू किया जिसमें पश्चिमी तरफ वाली अर्थात् उस इमारत की तस्वीर थी जिसमें इस समय वे स्वयं मौजूद थे.

उस नक्शे में जिस जगह इस इमारत का दरवाजा दिखाया गया था उसी जगह किसी धातु के कुछ उभरे हुए छोटे - छोटे बहुत - से फूल भी बने हुए थे.

ये फूल जो देखने में मोतियों के मालूम होते थे बन्द थे, सिर्फ एक फूल खिला हुआ था.

महाराज ने उसी फूल पर उंगली रक्खी और इशारे से कहा, " ठीक है, इस इमारत में मैं मौजूद हूँ इसी से यह एक फूल खिला हुआ है ।

महाराज ने चारों तरफ के बाकी फूलों पर निगाह डाली मगर सिवाय उस एक के और किसी को खिला हुआ न पाया जिससे वे कुछ प्रसन्न से होकर बोले, " इस समय चौथे दर्जे में सिवाय मेरे और कोई नहीं है.

" कुछ देर तक महाराज खड़े रहे.

तब कमरे के बाहर निकल आए.

उनके आते ही दोनों तरफ के सिपाहियों ने फिर सलामी दी और कमरे का दरवाजा आप से आप बन्द हो गया.

अब महाराज एक दूसरे दरवाजे के पास पहुंचे.

इसके ऊपर जो पीतल की पटरी थी उस पर लिखा था, " अजायबघर ".

महाराज के पास आते ही इस दरबाजे के नकली सिपाहियों ने भी पहिले वाले सिपाहियों की तरह रास्ता रोका मगर तिलिस्मी तलवार छुलाते ही सलामी दे अलग हो गए.

दरवाजा खुल गया और महाराज कमरे के अन्दर घुसे.

यह कमरा भी भीतर से ठीक पहिले वाले कमरे की ही तरह था, कुछ फर्क था तो केवल यही कि इस कमरे की जमीन में पच्चीकारी के काम की अजायबघर की बहुत बड़ी और खुलासी तस्वीर बनी हुई थी.

महाराज ने पहिले की तरह इस नक्शे को भी बड़े गौर से देखना शुरू किया.

नक्शे में जहाँ पर अजायब घर का भारी फाटक और सीढ़ियाँ दिखाई गई थीं वहीं पर किसी धातु से बेले के बहुत से फूल बने हुए थे.

इस समय इन फूलों में से चार फूल खिले हुए देखते ही महाराज चौंक पड़े और आप ही आप इस तरह कहने लगे हैं, अजायबघर में ये चार आदमी इस समय कौन हैं?

क्या दारोगा तो नहीं, मगर उसे तिलिस्म के अन्दर जाने की जरूरत क्या पड़ी क्योंकि ये फूल तो तिलिस्म के अन्दर होने वालों की संख्या के द्योतक हैं.

दारोगा तो सिर्फ उस बंगले की इमारत का ही मालिक है, वहाँ के तिलिस्म से तो उसे कोई सरोकार नहीं, और न उसे वहाँ का कुछ भेद ही मालूम है कि अन्दर जा सके.

मगर तब फिर ये आदमी कौनहैं और वहाँ पहुंचे भी किस तरह?

ये मेरे दोस्त हैं या दुश्मन?

जरूर दुश्मन ही होंगे, नहीं तो मेरे तिलिस्म के अन्दर इनके घुसने की ज़रूरत?

(रुक कर) नहीं, यह भी मुमकिन है कि मेरे दोस्त हों और किसी तिलिस्मी मुसीबत में गिरफ्तार हो गए हों.

" सोचते - सोचते महाराज किसीगम्भीर चिन्ता में डूब गए मगर फिर तुरंत ही बोले, " तो क्यों न वहाँ चलकर देख ही लें, अच्छा ये चारों हैं किस जगह?

" इस नकशे के एक किनारे पर लगभग बालिश्त के चौड़ा और उतना ही लम्बा तथा चार अंगुल ऊँचाई का एक लोहे का डिब्बा - सा जमीन में जड़ा था, महाराज ने अपनी तिलिस्मी तलवार निकाली और उसकी लोक से उस डिब्बे के साथ छुला दी ।

छुलाने के साथ ही डिब्बे के अन्दर से ऐसी आवाज आने लगी मानो कुछ कल - पुरजे उसके अन्दर चलने लगे हैं.

इसके साथ ही वे बेले के फूल भी अपनी - अपनी जगह हिलने और कांपने लगे.

धीरे - धीरे उनमें हरकत पैदा हुई और वे अपनी जगह से हटकर एक ऐसी जगह जमा होने लगे जहाँ बहुत - सी बारीक नालियाँ बनी हुई नजर आ रही थीं, ये फूल एक खास क्रम के साथ इकट्ठे हो रहे थे और थोड़ी ही देर बाद महाराज ने देखा कि उन फूलों के कुछ अक्षर उस जगह बन गए.

महाराज ने उसे पड़ा, यह लिखा था- " चक्रव्यूह.

" " चक्रव्यूह " पड़ते ही महाराज कांपउठे और उनके मुँह से आश्चर्य की एक आवाज निकल गई.

उन्होंने घबड़ाई आवाज में कहा, " चक्रव्यूह में आदमी! वहाँ तो स्वयं मेरा जाना कठिन है जो तिलिस्म का राजा हूँ, औरों की तो बात ही क्या?

तब ये आदमी कौनहैं! " महाराज ने फिर गम्भीर चिन्ता में पड़ गर्दन झुका ली.

कुछ देर बाद एक लम्बी साँस ले महाराज वहाँ से चल खड़े हुए.

अपनी तिलिस्मी तलवार उन्होंने उठा ली जिसके साथ ही ये फूल पुनः अपनी - अपनी जगह लौटने लगे और महाराज यह कहते हुए दरवाजे की तरफ बड़े, " अब तो मुझे उस चीठी की बातें सच मालूम होती हैं, सचमुच मुझे अपने घर ही का हाल अभी तक नहीं मालूम था.

चक्रव्यूह के अन्दर जाना किसी मामूली ताकत वाले का काम नहीं है, या तो तिलिस्म को तोड़ने वाला ही वहाँ पहुँच सकता है और या फिर .

.

.

खैर अब इसी समय वहाँ जाना पड़ेगा, मगर इसके पहिले लोहगड़ी की भी हालत देख लेनी चाहिए.

" महाराज उस कमरे के बाहर निकले और कई दरवाजों के सामने से होते हुए एक कमरे के अन्दर घुसे जिसके दरवाजे पर " लोहगढ़ी " लिखा हुआ और अन्दर वहीं का नक्शा बना हुआ था.

इस नक्शे के एक किनारे पारिजात के फूल बने हुए थे जिनमें से पाँच इस समय खिले हुए थे.

महाराज ने इन खिले हुए फूलों को भी देखा और ताज्जुब तथा घबराहट के साथ कहने लगे, " यह लो, यहाँ पाँच आदमी मौजूद हैं!

अब मालूम नहीं, ये कौन हैं और किस तरह यहाँ जा पहुँचे?

इनका भी पता लगाना जरूरी है.

तब फिर मैं पहिले कहाँ चलू, अजायबघर में या लोहगड़ी में?

पहिले लोहगड़ी में ही चलना ठीक मालूम होता है क्योंकि ' चक्रव्यूह में जाना कठिन और जोखिम का काम है.

महाराज इस कमरे के बाहर निकले और दरवाजे के बाईं तरफ बाले दोनों सिपाहियों के सामने आकर खड़े हो गए, तिलिस्मी तलवार महाराज के हाथ में थी जिसे उन्होंने इस तरह पकड़ा कि कब्जा बाईं तरफ और नोक दाईं तरफ हो गई और तब इस तलवार उन्होंने ने उन दोनों सिपाहियों के सिर को एक साथ छुआ.

साथ ही दोनों का तलवार वाला भाग ऊंचा हो गया, महाराज ने उनकी दोनों तलवारों को पकड़ और खैंच कर एक साथ मिला दिया और तब हटकर अलग खड़े हो गए.

तलबारों के मिलने के साथ ही एक हलकी आवाज आई और वे दोनों सिपाही अपनी जगह से कुछ दूर हटकर खड़े हो गए.

उनके पैरों के नीचे एक खाली गढ़ा - सा नजर आया जिसमें उतरने के लिए पतली - पतली सीढ़ियाँ दिखाई पड़ रही थीं.

हाथ में तिलिस्मी तलवार लिए महाराज इन सीढ़ियों की राह नीचे उतर गए.

नीचे और अंधकार था मगर महाराज उस अँधेरे में ही टटोलते हुए एक तरफ को जाने लगे.

थोड़ी देर बाद एक तरह की आवाज आई और वे दोनों सिपाही पुनः अपनी जगह आकर खड़े हो गए.

उस सुरंग का मुँह भी पहिले की तरह बन्द हो गया.

नौवा व्यान।

अब हम पीछे की तरफ लौटते और जमानिया के दारोगा साहब के मकान पर पहुँचकर देखते हैं कि वे इस समय किसअवस्था में हैं या क्या कर रहे हैं.

एक दालान में जिसके एक तरफ लोहे का जंगला बना हुआ है वे एक कुरसी पर अकेले बैठे हुए हैं.

उनकी एकटक निगाह उस जंगले के अन्दर जा रही है जिसमें कोई आदमी अधलेटा - सा किसी तरह की तकलीफ से करवटें बदल रहा है.

कुछ देर बाद दारोगा उठा और इस जंगले के पास पहुँचा.

उसने गौर से उस आदमी की तरफ देखा और तब कहा, " कहो क्या हाल है?

" कुछ देर के लिए उस आदमी का तड़पना बन्द हुआ तथा उसने अपनी आँखें जो कि एकदम सुर्ख हो रही थीं दारोगा के चेहरे की तरफ घुमाईं.

न जाने उन आँखों में क्या ताकत थी कि दारोगा की निगाह नीची हो गईं पर तो भी उसने कहा, क्या इसी तरह तकलीफ उठाना मंजूर है या मेरी बात मानकर स्वतंत्र होना और बाकी जिन्दगी सुख के साथ बिताना पसन्द करते हो.

उस आदमी ने कुछ भी जवाब न दिया मगर घृणा के साथ दारोगा की तरफ देखा जिसने यह देख अपना पैर आगे बढ़ाया, साथ ही उस आदमी के मुंह से एक कराहने की आवाज निकली.

न मालूम उसे किस तरह की तकलीफ थी कि उसने फिर तड़पना शुरू किया मगर मुँह से कुछ न कहा.

दारोगा कुछ देर तक उसकी तरफ देखता रहा और तब बोला, " अच्छा ठहरो.

" और तब जिस जगह उसने पैर रखा हुआ था उसके नीचे के पेंच को पैर से और दवा दिया.

आह्, अब मालूम हुआ! जंगले के भीतर की जमीन जहाँ वह आदमी पड़ा हुआ था लोहे की नुकीली कड़यों से भरी थी.

दारोगा के पेंच दबाने से वे कडियें अपनी सतह से कुछ और ऊंची हो गई.

वह आदमी जिसका तमाम बदन नंगा था और जो इन्हीं कढियों पर पड़ा हुआ था मगर कमर में एक जंजीर द्वारा बँधा रहने के कारण कहीं टल न सकता था यकायक चीखकर फिर तड़पने लगा और इसके साथ ही उसकी पीठ में से जगह जगह से खून की बूंदें टपकती हुई दिखाई देने लगी.

दारोगा यह हाल देख खिलखिला कर हँसा, तब उसने पुनः पूछा, ' क्यों, अब भी मेरी बात मंजूर है या नहीं?

ऐसी तकलीफ ही हालत में होने पर भी उस आदमी ने भयानक आँखें दिखा कर कहा, “ हरामजादा, पाजी, बेईमान! दूर हो मेरे सामने से! " दारोगा ने यह सुन कर कहा, " हूँ " और तब फिर पैर से उस पेंच को थोड़ा और दबा दिया.

वे कढियाँ कुछ और ऊंची होकर उस बेचारे के नंगे बदन में घुस गई और खून के तरारे बहने लगे मगर इस बार उसने जुम्बिश नहीं खाई, एकटक दारोगा की तरफ देखा और तब कहा, " तू भले ही बोटी - बोटी काट डाल, मैंने तेरे मन वाली कभी करनी नहीं.

अगर दुनिया में कोई ईश्वर है तो वह तेरी करनी का फल तुझे देगा.

हाय! " कहकर उस आदमी ने एक लम्बी सॉस ली और बेहोश हो गया.

दारोगा ने उसकी तरफ गौर से देखा.

जब उसे विश्वास हो गया कि वह बेहोश हो गया है तो उसने कहा, " भारी जिद्दी है! " और झुककर कोई ऐसी चीज की जिससे वे कटियाँ जो जमीन से उभरकर उस बेचारे के जिस्म को छेद रही थीं फिर जमीन के अन्दर घुस गईं.

इसके बाद वह अपनी जगह से उठा और उस जख्मी को उसी तरह छोड़ गुप्त राहों से होता हुआ अपने बैठने के कमरे में आ पहुँचा जहाँ इस समय केवल जैपाल बैठा हुआ कुछ लिख रहा था.

दारोगा को देखते ही जैपाल ने पूछा, " कहिए कुछ मालूम हुआ?

" जिसके जवाब में दारोगा ने अपनी जगह पर बैठते हुए कहा, " कुछ भी नहीं, बड़ा भारी जिद्दी है, जहाँ तक मैं समझता हूँ वह मर जायगा मगर अपनी जुबान से एक बात भी नहीं बताबेगा.

जैपाल:

तो क्यों नहीं उसे मारकर बखेड़ा तय करते?

आखिर कब तक उसकी उम्मीद में पड़े रहिएगा.

दारोगा:

नहीं नहीं, अभी उसको मारने का मौका नहीं आया.

जैपाल ०:

अगर वह किसी तरह छूट गया तो आपकी जान की खैर नहीं रहेगी.

दारोगा:

हाँ सो तो है मगर मैं उसे ऐसी जगह बन्द करूंगा जहाँ से ब्रह्मा भी उसे निकाल नहीं सकेंगे.

जैपाल ०:

सो कहाँ?

दारोगा:

अजायबघर में! जैपाल :

ताज्जुब की बात है कि आप उस जगह को ऐसा महफूज समझते हैं?

क्या आपको याद नहीं कि उसी अजाबघर के अन्दर से आपके कई कैदियों को भूतनाथ और प्रभाकरसिंह वगैरह निकाल ले गए थे?

दारोगा:

हाँ मगर उन सभों को मैंने तिलिस्म के अन्दर बन्द नहीं किया था केवल ड्योढ़ी में ही कैद रखा था.

जैपाल ०:

क्या इसे आप तिलिस्म में डाल देंगे दारोगा:

हाँ, अजायाबघर में एक ऐसा तिलिस्म है जिसके अन्दर यदि कोई चला जाय तो फिर औरों की तो बात ही क्या खास जमानिया का राजा भी उसे नहीं निकाल सकता.

जैपाल ०:

मगर क्या आप उस जगह जा सकते हैं?

दारोगा:

(कॉपकर) उस जगह जाना क्या हँसी - खेल है?

मैं उस जगह के नाम से डरता हूँ, वहाँ जाना तो और बात है! हाँ यह जरूर कर सकता हूँ कि जिसे चाहूँ उसे वहाँ भेज दूं, जैपाल:

ऐसा है तो फिर क्या है, आप वहाँ अपने कैदियों को मजे में कैद कर सकते हैं बल्कि आपको चाहिए था कि उन दिवाकरसिंह और नन्दरानी वगैरह को भी वहीं बन्द करते.

न मालूम वे लोग कहाँ हैं या इस समय आपके विरुद्ध क्या कार्रवाई कर रहे हैं ।

दारोगा:

उस समय मुझे उस स्थान का भेद मालूम न था, इसका अभी हाल में पता लगा है.

मगर इस बात का खयाल तो मुझे भी होता है कि आखिर दिबाकरसिंह और नन्दरानी गए कहाँ?

इतने दिन उन लोगों को कैद से छुटे हो गए मगर अभी तक उनकी किसी भी कार्रवाई का पता न लगा जैपाल:

भूतनाथ से भी इन दिनों मुलाकात नहीं होती, न मालूम वह कहाँ रहा करता है.

उसे इस बात का पता जरूर होगा, यद्यपि वह बहुत कुछ बातें.

इतने ही में दारोगा के एक नौकर ने कमरे के अन्दर आकर इत्तिला क्री- " गदाधरसिंह आए हैं और मुलाकात किया चाहते हैं.

दारोगा:

इस शैतान का भी जब नाम लो तभी मुस्तैद होता है ।

इस समय भी बड़े बेमौके आया क्योंकि मुझे अभी इसी समय .

.

.

अच्छा सुनो, तुम उसके सामने बहुत देर तक मत रुक्को कुछ मामूली बातचीत करके उठ जाओ और इसी समय प्रभाकरसिंह को जिसे उन दोनों ऐयारों गोबिन्द और मायासिंह ने गिरफ्तार करके यहाँ पहुँचा दिया है बेहोश करके ले जाकर अजायबघर की ड्योढ़ी में बन्द करो, तब लौटकर आओ तो उस कैदी को भी ले चलो जिसमें दोनों को एक साथ ही चक्रव्यूह में पहुँचाकर हमेशा की खटपट दूर कर दी जाय, क्योंकि .

.

.

इतने ही में भूतनाथ कमरेके दरवाजे पर आ मौजूद हुआ जिसे देखते ही दारोगा जैपाल से बातें करना छोड़ यह कहता हुआ उठ खड़ा हुआ, " आओ जी मेरे दोस्त, आज तो बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई, कहो किधर रास्ता भूल पड़े?

" भूतनाथ:

बस आ ही तो गए.

दारोगा ने भूतनाथ को गले से लगाया और बड़ी खातिर और खुशामद के साथ लाकर अपनी गद्दी पर बैठाया, इसके बाद आप उसके बगल में बैठता हुआ बोला, " आप तो मुझ गरीब को बिल्कुल ही भूल गए, धन्य भाग्य किसी तरह दर्शन तो !! भूतः:

मैं तो आपको नहीं भूला बल्कि आप ही मुझे भूल गए.

दारोगा:

वाह बाह, खूब कही, भला सो कैसे हो सकता है?

भूत:

इस तरह कि मेरे स्वभाव को जाने हुए भी आपने पुनः मेरे बर्खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी.

दारोगा:

(ताज्जुब के साथ) आपके बर्खिलाफ कार्रवाई! भला आपसे यह किसने कह दिया, क्या यह मेरी ताकत है कि मैं आपके साथ झगड़ा करूं?

भूत ०:

मेरे साथ नहीं तो मेरे किसी दोस्त के या बुजुर्ग के साथ सही.

दारोगा:

(चिन्ता के साथ) आपके किसी दोस्त के साथ?

किसके, इन्द्रदेव के?

भूत ०:

(हँसकर) भला इन्द्रदेव के साथ आप क्या बुराई करिएगा! उनकी तो एक फूंक से आप उड़ जा सकते हैं, और मैं उनके बारे में आपसे कुछ कहता भी नहीं, मेरा मतलब किसी दूसरे से ही है.

दारोगा:

अब आप साफ - साफ कहिए, इस तरह पहेली बुझौवल कराने से काम नहीं चलेगा.

भूत ०:

बहुत अच्छा तो साफ ही साफ सुनिए.

आपने दामोदरसिंह के साथ क्या किया?

दामोदरसिंह का नाम सुनते ही दारोगा का चेहरा एक क्षण के लिए उतर - सा गया मगर उसने फौरन ही अपने को सँभाला और जिसमें उसके दिल का हाल भूतनाथ पर प्रकट न हो पाए इस नीयत से हँसकर कहा, " वाह जी गदाधरसिंह, तुम भी इतने बड़े ऐयार होकर धोखा खा जाते हो! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि उनकी लाश जमानिया की एक चौमुहानी पर पाई गई! वे मेरे दिली दोस्त थे और महाराज भी उन्हें बहुत मानते थे.

उनके मरने पर हम लोगों के दिल पर बहुत भारी सदमा बैठा है और बाद में खुद उनके खूनी की खोज कर अपने हाथ से उसको कत्ल करने की कसम खा चुका भूत ०:

(हँसकर) तब दारोगा साहब आपको अपने ही गले पर छुरी डालनी पड़ेगी.

! दारोगा:

सो क्या, सो क्या?

भूत ०:

बस यही तो.

दारोगा:

आखिर कुछ मालूम भी तो हो कि आपको मुझ पर कैसा शक है?

क्या आप समझते हैं कि मैंने दामोदरसिंह को मार डाला है?

भूत:

नहीं नहीं, मार डालना तो मैं कहता नहीं, आपने मार नहीं डाला, सिर्फ कहीं छिपा रखा है, अगर मार डालते तो आप भी जीते क्योंकर बच जाते!

दारोगा:

अच्छा अब मैं समझा, आप केवल यही नहीं कह रहे हैं कि दामोदरसिंह मरे नहीं जीते हैं, बल्कि साथ ही आपका खयाल भी है कि मैंने उन्हें कहीं कैद कर रखा है! भूत:

जी हाँ, अबकी आप बिल्कुल ठीक समझ गए.

दारोगा:

(हंसकर, मगर बेचैनी के साथ) मेरे दोस्त, तुम्हारी भी अक्ल कभी - कभी हवा खाने चली जाती है.

मैं नहीं समझ सकता कि ऐसा बेहूदा खयाल तुम्हारे दिल में क्योंकर बैठ गया है?

अपने दोस्तों, और खास कर मेरे बारे में ऐसा सोचना तुम्हें कभी मुनासिब नहीं है.

भूत ०:

यह आपकी गलती है जो आप मुझे अपना दोस्त समझते हैं.

आपका दोस्त तो सिर्फ वही हो सकता है जो आप ही की तरह परले सिरे का पाजी, बेईमान और कमीना हो.

कोई भला आदमी तो न आपका दोस्त ही बनेगा और .

.

.

.

.

.

दारोगा:

बस अब आप बहुत बड़ने लगे! भूत::

नहीं, बल्कि मैं अपने आपको बहुत सँभाल कर बातें करता हूँ, खैर बातें बड़ाने की जरूरत ही क्या है, आप कृपा कर साफ - साफ बता दीजिए कि दामोदरसिंह को मेरे हवाले कीजिएगा या नहीं?

दारोगा:

भाई मेरे, मैं तो एक दफे नहीं सौ दफे कह चुका हूँ कि दामोदरसिंह किसी के हाथों मारा गया और मैं खुद उसके खूनी की खोज में हूँ, भूत ०:

बस इससे ज्यादा आप कुछ नहीं बता सकते?

दारोगा:

कुछ नहीं, या अगर कुछ कहता भी है तो यही कि तुम ऐसा बेहूदा खयाल दिल से दूर करो और मेरे ऊपर जो वृथा का शक कर रहे हो उसे हटा लो.

भूतनाथ यह सुन थोड़ी देर के लिए चुप हो गया और कुछ सोचने लगा जिस बीच दारोगा और जैपाल डर और घबराहट मिली निगाहें एक - दूसरे पर डालते रहे.

कुछ देर बाद भूतनाथ ने सिर उठाया और दारोगा की तरफ देखकर कहा, " दारोगा साहब, आपका स्वभाव मैं अच्छी तरह जानता हूँ और साथ ही यह भी खूब समझता हूँ कि सीधी ऊँगली से घी नहीं निकलता.

मेरी भूल थी कि मैं यह सोचकर आपके पास चला आया कि अपने कामों से नहीं तो कम से कममेरी सूरत से डर कर दामोदरसिंह का असली भेद मुझे बता देंगे.

खैर मैं आपको होशियार कर देता हूँ कि अगर उन्हें छुड़ाने के लिए मुझे कोई कड़ी कार्रवाई आपके साथ करनी पड़े तो फिर मुझे दोष न दीजिएगा.

आप कितनी कोठरियों के अन्दर चाहे उन्हें छिपाकर रखें, अगर मेरा नाम भूतनाथ है तो मैं उन्हें छुड़ा ही लूँगा और साथ ही आपकी भी वह दुर्गति करूंगा कि जन्म भर न भूलिएगा.

और मैं यह भी चिताए देता हूँ कि आप दामोदरसिंह को कष्ट चाहे जितना भी दे लीजिए पर उन्हें जान से मारने का इरादा भूल के भी न कीजिएगा.

शायद एक बात सुनकर आप समझ जायेंगे कि ऐसा करना कितनी बड़ी गलती होगी - वह कि दामोदरसिंह ने आपकी उस कम्बख्त सभा का जिसका वह मन्त्री था, सब हाल, मेम्बरों का नाम और कार्रवाई वगैरह लिखकर एक ऐसे आदमी के सुपुर्द कर दिया है जो दामोदरसिंह के मरने का निश्चय होते ही उसे महाराज गिरधरसिंह के हाथ में दे देगा,

अस्तु मैं फिर कहे देता हूं होशियार! " इतना सुनते ही दारोगा ने एक बेचैनी की निगाह जैपाल पर डाली और जैपाल ने भी लाचारी की नजर से दारोगा को देखा, तथा भूतनाथ ने इस बात को बखूबी लक्ष्य किया मगर ऐसे ढंग से कि उन दोनों को कुछ मालूम न हुआ.

दारोगा ने भूतनाथ की बात का कोई जवाब न दिया.

भूतनाथ कुछ देर तक जवाब की राह देखता रहा पर उसे चुप पाकर बोला, " कहिए कुछ कहना है?

" दारोगा:

भाई, मैं कह जो चुका कि मैं दामोदरसिंह के विषय में कुछ नहीं जानता.

अगर वह जीता ही हो या कहीं कैद ही हो तो उस काम को करने वाला कोई दूसरा होगा मैं नहीं, मुझ पर ऐसा शक करना तुम्हारी बड़ी भारी ज्यादती और जबर्दस्ती है.

भूत ०:

लात के देवता बात से नहीं मानते, तुम्हारी जब तक पूरी तरह से दुर्दशा नहीं की जायगी तब तक उगलने वाले नहीं! अच्छा होशियार रहना, इस समय तो मैं जाता हूँ पर बहुत जल्दी ही फिर मुलाकात करूँगा.

इतना कह भूतनाथ उठा और तेजी के साथ कमरे के बाहर निकल गया.

10वा व्यान।

भूतनाथ के जाने के बाद कुछ देर तक तो कमरे में पूरा सन्नाटा रहा इसके बाद जैपाल ने लाचारी की निगाह से दारोगा साहब की तरफ देखा और कहा, " यह कम्बख्त तो सब मामला बिगाड़ना चाहता !! दारोगा:

न मालूम उसे इस बात की खबर क्योंकर लगी! जैपाल:

चाहे जैसे भी लगी हो पर इसमें कोई शक नहीं कि यह अब बिना कुछ उत्पात मचाए न रहेगा.

उसने जो यह कहा कि दामोदरसिंह ने सभा का सब हाल.

दारोगा:

हाँ, उसका यह कहना बिल्कुल ठीक है, मुझे इस बात का पक्का पता लग चुका है और मैं इसी कोशिश में था कि उसके मार - पीट या तकलीफ देकर पता लगाऊंगा कि किसको उसने वे कागजात दिए हैं, क्योंकि वे यदि हाथ न आए तो सब भण्डा फूट जायगा और मैं कहीं का भी न रहूँगा, पर उस कम्बख्त ने बहुत तकलीफ उठाने पर भी कुछ नहीं बताया, मगर अब सवाल यह है कि भूतनाथ को यह बात क्योंकर मालूम हुई,
जैपाल:

बेशक, मगर अब सब से पहिले आपको दामोदरसिंह की हिफाजत का बन्दोबस्त करना चाहिए, क्योंकि अब अगर किसी तरह भूतनाथ ने उसका पता लगा लिया तो बड़ी ही मुश्किल होगी.

दारोगा:

तुम्हारा कहना बिल्कुल ठीक है, इसी बात का बन्दोबस्त करूंगा.

अब संध्या तो हुआ ही चाहती है, कुछ और अंधेरा होने दो तो इन्तजाम किया जाय.

इतने ही में दरबान ने आकर कहा, “ ऐयार मायासिंह आए हैं और कोई जरूरी बात कहना चाहते हैं.

" दारोगा ने “ भेज दो " कहा और थोड़ी ही देर बाद मायासिंह कमरे के अंदर आता हुआ दिखाई पड़ा.

दारोगा को सलाम कर इशारा पा वह सामने बैठ गया और जैपाल ने उससे पूछा, “ क्या है?

कोई नई बात है.

11 माया ०:

जी हाँ हम लोगों को पता लगा है कि जिस औरत को उस दिन मनोरमा अपने साथ लाई थी और जिसने अपना नाम सुन्दरी बताया था तथा जिसे आपने कोई बहुत ही गुप्त काम सौंपा था .

.

.

जैपाल:

हाँ हाँ, उसका क्या हुआ?

माया:

उसे किसी दूसरी धूर्त ऐयारा ने गिरफ्तार कर लिया है जो अब स्वयं उनकी सूरत बन आप लोगों से मिलना और अपना कोई काम निकालना चाहती है.

दारोगा:

(चौंक कर) क्या सचमुच सुन्दरी गिरफ्तार हो गई?

जिसने उसे गिरफ्तार किया वह औरत कौन है?

माया ०:

यह तो मैं नहीं जानता कि कि वास्तव में कौन है वह लौहगड़ी में रहती है.

इतना सुनते ही दारोगा ने एक भेद भरी निगाह जैपाल पर डाली और उसने भी विचित्र मुद्रा से गर्दन हिलाई, इसके बाद दारोगा ने मायासिंह से कहा, “ अच्छा तुम्हें क्योंकर इस बात का पता लगा, सब खुलासा कह जाओ.

" " बहुत खूब कह कर मायासिंह ने इस प्रकार कहना शुरू किया- " आपकी आज्ञानुसार मैं आज लोहगड़ी वाले जंगल में चक्कर लगा रहा था कि दो आदमियों के बातचीत करने की आवाज मेरे कान में पड़ी.

मैं एक पेड़ की आड़ में हो गया और यह जानने की कोशिश करने लगा कि यह आबाज किधरसे आती है या किसकीहै.

थोड़ी ही देर बाद मेरी आँखों ने दो आदमियों को ढूंढ निकाला जो काले कपड़े पहिने और नकाबों से अपने चेहरों को छिपाये हुए पेड़ों की आड़ देते लोहगड़ी की तरफ से आ रहे थे ।

उनकी चाल डाल देखकर मुझे शक मालूम हुआ और मैं भी छिपता हुआ उनके पीछे - पीछे जाने लगा.

उन दोनों की पोशाकें तो एक ही रंग - ढंग की थीं पर बातचीत से मालूम हुआ कि एक तो वहीं औरत यानी आपकी ऐयारा सुन्दरी है और दूसरा उसका कोई साथी.

" जब वे दोनों अजायबघर के पास पहुंचे तो वह आदमी सुन्दरी से विदा हो किसी दूसरी तरफ चला गया और मैं यह सोचने लगा कि आगे बड़ कर उससे मिलूँ और कुछ बातचीत करूँ मगर इसी समय सामने से घोड़े पर सवार दो आदमी आते दिखाई पड़े जिन्हें देख मैं रुक गया और सुन्दरी भी एक पेड़ की आड़ में होने की कोशिश करने लगी पर उन दोनों की निगाहें उस पर पड़ चुकी थीं क्योंकि उनमें से एक सवार जिसका चेहरा नकाब से ढक्का था लपक कर उसके पास पहुँचा और कमर से तलवार खींच डपट कर बोला, " सच बता तू कौन है! " सुन्दरी यह हाल देख कर कुछ सहम - सी गई और उसने कुछ बहाना कर अपनी जान बचानी चाही पर सवार ने मौका नहीं दिया और अपने घोड़े का ऐसा झपेटा उसे दिया कि वह सम्हल न सकी और जमीन पर गिर पड़ी.

वह सवार घोड़े से कूद उसकी छाती पर चढ़ बैठा पर तुरन्त ही यह कर अलग हो गया कि ' ओह, यह तो कोई औरत है.

उसका साथी सवार भी पास आ गया और तब दोनों ने मिल जबरदस्ती सुन्दरी की तलाशी ली.

दोनों आपसमें कुछ बातें भी करते जाते थे पर दूर होने के कारण मैं उन्हें सुन न सका.

सुन्दरी के बटुए की तलाशी ले उन लोगों ने उसमें से कोई जरूरी चीज निकाल ली और तब उस दूसरे सवार ने, जो बातचीत से औरत मालूम होती थी सुन्दरी को अपने साथी के हवाले करके कहा कि " हम लोगों का काम अब बड़ी खूबसूरती से निकलेगा.

!! तुम इस कम्बख्त को ले जाकर कैद करो और मैं इसकी सूरत बन कर दारोगा को धोखा दे अपना काम निकालती हूँ, उसकी इस बात से मैंने समझा कि वह औरत है.

दारोगा:

(ताज्जुब से) अच्छा तब?

माया ०:

उसका साथी सुन्दरी को बेहोश कर घोड़े पर लाद लोहगड़ी की तरफ चला गया और इधर वह औरत अपने घोड़े पर सवार हुई, मैंने चाहा कि उसका पीछा करूँ और यदि हो सके तो उसे गिरफ्तार कर लें पर ऐसा न हो सका, क्योंकि वह घोड़ा तेज कर निकल गई अस्तु मैंने उस दूसरे आदमी का पीछा किया जो सुन्दरी को ले गया था और अभी बहुत दूर नहीं जा पाया था.

सुन्दरी को लिए हुए वह सीधा लोहगड़ी तक चला गया और मेरे सामने ही फाटक खोल अन्दर घुस गया.

मैंने कुछ देर तक इधर - उधर घूम - फिर कर उसकी राह देखता रहा कि शायद वह पुनः बाहर निकले पर वह जब नहीं आया तो आपको खबर देना जरूरी समझ मैं इधर आ रहा हूं.

दारोगा:

यह तुमने बहुत अच्छा किया, मगर खबर बुरी सुनाई.

सुन्दरी का गिरफ्तार हो जाना अच्छा नहीं हुआ.

यद्यपि यह तो मैं नहीं जानता कि वास्तव में वह कौन थी पर इसमें शक नहीं कि बहुत चालाक औरत थी.

हम लोगों के कई भेद उसे मालूम थे और साथ ही उससे बहुत से काम निकलने की भी आशा थी.

जैपाल:

इसमें कोई शक नहीं कि उसके पकड़े जाने से हम लोगों का बहुत नुकसान होगा.

दारोगा:

जरूर क्योंकि (धीरे से) बलभद्रसिंह वाली चीठी तो उसके पास थी ही, मेरी वह चीठी भी उसके पास होगी जो मैने हेलासिंह के नाम लिख दी थी.

जैपाल:

तब तो जहाँ तक मैं समझता हूं इस समय सबसे जरूरी यह है कि आप फौरन हेलासिंह को इस बात की खबर दे दें, क्योंकि सुन्दरी को गिरफ्तार करने वाली चाहे कोई भी क्यों न हो— वह जरूर हेलासिंह से मिलेगी और चीठी द्वारा उन्हें धोखे में डालेगी.

इतना कह कर जैपाल ने झुक कर बहुत धीरे से दारोगा के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही दारोगा एकदम चौंक कर बोल उठा, " बेशक तुम्हारा ख्याल बहुत ठीक है, हेलासिंह के पास लोहगड़ी की ताली है और उस ताली के बिना लोहगढ़ी में पूरा दखल कोई भी जमा नहीं सकता, अस्तु कोई ताज्जुब नहीं कि मालती उस ताली को लेने के वास्ते ही .

.

.

.

इतना कहते - कहते दारोगा एकाएक रुक्क गया, मानो उसके मुँह से कोई ऐसी बात निकल गई जिसे मायासिंह के सामने निकालना मुनासिब नहीं था.

!!

इसके बाद उसने सिर उठा कर कुछ देर तक दारोगा गम्भीर चिन्ता में डूबा तरह - तरह के सोच - विचार करता रहा, मायासिंह की तरफ देखा और कहा, “ अच्छा मायासिंह, तुम एक काम करो.

" माया ०:

जो हुक्म.

दारोगा:

तुम इसी समय हेलासिंह के पास जाओ.

माया ०:

बहुत खूब.

दारोगा:

उस ऐयारा सुन्दरी को मैंने एक जरूरी काम के लिए हेलासिंह के पास भेजा था, बल्कि अपनी चीठी भी उसे दी थी.

मैं समझता हूँ कि जब सुन्दरी गिरफ्तार हो गई तो उसके पकड़ने वाली औरत उसकी सूरत बन हेलासिंह के पास जायगी और उन्हें धोखा देगी.

माया ०:

तो क्या मैं जाकर हेलासिंह को होशियार कर दूँ?

दारोगा:

सिर्फ होशियार ही न करो बल्कि जिस तरह से हो सके उस औरत को भी गिरफ्तार कर लाओ जिसकी यह कार्रवाई है माया:

बहुत अच्छा.

दारोगा:

तो बस तुम इसी समय चले जाओ क्योंकि मुझे तुम्हारी बात सुनकर बहुत सख्त तरद्दुद हो गया है अगर तुम उस औरत को गिरफ्तार करके ला सके तो मैं बहुत खुश हूँगा और तुमको मुंहमांगा इनाम दूंगा .

.

माया ०:

(सलाम करके) बहुत खूब, मैं अभी रवाना होता हूँ, दारोगा:

हाँ जाओ.

मायासिंह ने खड़े होकर पुनः सलाम किया और कमरे के बाहर निकल गया.

दारोगा और जैपाल को इसी तरह छोड़ हम अब कुछ देर के लिए मायासिंह के साथ चलते हैं और देखते हैं कि वह किधरजाता या क्या करता है.

दारोगा साहब के मकान से निकल जिस समय मायासिंह जमानिया के बाहर हुआ उस समय संध्या होने में दो घण्टे से ऊपर न बाकी होगा.

अब तक तो मायासिंह तेजी के साथ चलता आया पर अब उसने अपनी चाल कम कर दी और कुछ सोचता हुआ सिर नीचा किए इस तरह जाने लगा मानो उसे दारोगा साहब के काम की कोई फिक्र न रह गई और वह अपनी ही किसी चिन्ता में पड़ गया है, यहाँ तक कि एक कुएं के पास पहुँचकर तो वह बिल्कुल ही रुक गया और उसकी जगत पर बैठ कुछ सोचने लगा.

लगभग आधी घड़ी तक वह इसी तरह बैठा रहा.

इसके बाद एक लम्बी सॉस के साथ यह कहता हुआ उठ खड़ा हुआ, “ खैर तो उधर ही चलूँ, शायद कुछ काम बन जाय.

" पर उसी समय उसकी निगाह एक नकाबपोश पर पड़ी जो कुएँ की सीढ़ियाँ चक्कर ऊपर जगत पर आ रहा था और अपनी चिन्ता में मग्न रहने के कारण जिसके आने की कोई भी आहट मायासिंह ने नहीं पाई थी.

इस नकाबपोश की पीठ पर एक बड़ी गठरी थी जिसमें किसी आदमी के होने का शक हर एक ऐयार को हो सकता था.

इस नकाबपोश को आता देख न जाने क्यों मायासिंह कुछ सहम - सा गया उसने एक गहरी निगाह उस पर तथा उसकी पीठ बाली गठरी पर डाली तब बगल देता हुआ उस नकाबपोश के दूसरी तरफ निकल जाने के लिए घूमा मगर नकाबपोश के डपट कर यह कहने पर कि ' खबरदार, मेरी बातों का जवाब दिए बिना कहीं जाने का इरादा न करना ' वहीं रुक्का रह गया.

नकाबपोश ने पीठ की गठरी उतार धीरे से जमीन पर रख दी और तब मायासिंह के सामने आ बहुत गौर से उसकी सूरत देखने बाद कहा, " तुम कौन हो?

" माया ०:

मैं कोई भी होऊँ तुम्हें इसके पूछने से मतलब?

नकाब ०:

कुछ मतलब होगा तभी तो पूछते हैं.

माया:

जब तक मैं यह न जान लूँ कि तुम मेरे दोस्त हो या दुश्मन मैं तुम्हें अपना परिचय नहीं दे सकता.

नकाब ०:

(जोर से हँसकर) तो क्या तू समझता है कि मैं तुझे पहिचानता नहीं हूँ!

माया ०:

' अगर पहिचानते हो तो फिर पूछते क्यों हो?

नकाव ०:

इसीलिए कि जब एक मायासिंह (गठरी की तरफ बताकर) इस गठरी में मौजूद है तो मेरे सामने यह दूसरा मायासिंह कौन दिखाई पड़ रहा है! माया:

(जिसकी आवाज से मालूम होता था कि वह घबड़ा गया है) नहीं नहीं, सो भला कैसे हो सकता है?

नकाब:

(पुनः हँसकर) अगर विश्वास न हो तो गठरी खोलकर देख ले.

माया ०:

(लड़खड़ाती हुई आवाज में) भला मेरे रहते दूसरा मायासिंह कहाँ से आ सकता है! अगर तुमने किसी मायासिंह को पकड़ा है तो वह जरूर कोई दगाबाज है.

नकाब ०:

अगर ऐसा ही है तो क्यों नहीं तुम उसे देखकर अपना और साथ ही में मेरा भी शक दूर कर देते! इसमें कोई तरदुद नहीं क्योंकि वह ऐयार सामने मौजूद है और अगर तुम्हारे पास नहीं तो कम - से - कम मेरे पास लोटा - डोरी भी तैयार है.

माया:

:

हॉ - हाँ, मैं जरूर ऐसा करूँगा और देखूंगा कि तुम किसआदमी को मायासिंह बनाकर ले आए हो.

मगर मैं डरता हूँ कि कहीं तुम्हारी बातों में किसी तरह का धोखा न हो और तुम पीछे से मुझ पर वार न कर बैठो.

इतने सुनते ही उस नकाबपोश ने यह कहकर अपनी नकाब पीछे उलट दी “ छी:

छी :

, क्या तैने गदाधरसिंह को ऐसा समझ रखा है कि तेरे ऐसे नौसिखे लौंडे के साथ वह इस तरह की गन्दी धोखेबाजी करेगा! " यह बात सुनते ही और भूतनाथ की शकल देखते ही मायासिंह के रहे - सहे हवास भी गायब हो गए और वह एकदम कुएं पर से कूदकर मैदान की तरफ भागा, मगर भूतनाथ इसके लिए भी तैयार था.

मायासिंह के साथ वह कुएँ पर से कूदा और थोड़ी दूर जाते - जाते उसको पकड़ लिया.

इस छीना - झपटी में मायासिंह का मुंडासा जमीन पर गिर पड़ा और लम्बे जनाने बाल पीठ पर लहराने लगे जिसे देख भूतनाथ ने ताज्जुब से कहा, " हैं, क्या तू औरत है?
"

नकली मायासिंह ने कुछ जबाब न दिया मगर भूतनाथ उसका हाथ पकड़े घसीटता हुआ उसे पुनः कुएँ पर ले आया और डपट कर बोला, “ सच बता तू कौनहै?

" अपने बचाव की कोई सूरत न देख लाचार हो उस ऐयारा ने कहा, " मेरा नाम गिल्लन है.

" भूतनाथ यह सुन बोला, " कौन गिल्लन?

वही जो शेरअलीखाँ की लड़की के साथ रहा करती है?

" गिल्लन:

जी हाँ.

भूत ०:

इसके पहिले कि मैं तुझसे पूछूं कि तुझे मायासिंह की सूरत बनने की क्या जरूरत पड़ी मैं तेरा चेहरा धोकर अपना शक दूर किया चाहता हूँ.

खबरदार भागने का इरादा मत करियो! भूतनाथ ने अपने बटुए में से कपड़े का छोटा डोल और पतली रस्सी निकाली और कुएँ से पानी खैंच गिल्लन के सामने रक्खा.

उसने पानी से अपना मुँह अच्छी तरह धोकर साफ किया और भूतनाथ ने गौर के साथ उसका चेहरा देख कर कहा, " हाँ अब मुझे विश्वास हो गया, तू इधर आकर बैठ और मेरी बातों का जवाब दे.

घबड़ा मत, अगर तू सच - सच मेरी बातों का जवाब देगी तो तुझे कुछ भी तकलीफ न दूंगा बल्कि एकदम छोड़ दूंगा, लेकिन अगर तूने कोई झूठी बात कहकर धोखा देना चाहा तो फिर समझ रख कि तेरी जान की खैर नहीं.

!! गिल्लन:

मैं कसम खाकर कहती हूं कि जो कुछ आप पूछेगे उसका ठीक - ठीक जबाब दूंगी.

भूत:

(जगत के एक कोने पर बैठकर और गिल्लन को सामने बैठने का इशारा करके) अच्छा तो यहाँ बैठ जा और बता कि तुझे मैं इस सूरत में क्यों देख रहा हूँ और तेरी सखी गौहर कहाँ है?

गिल्लन:

गौहर गिरफ्तार हो गई और मैं उसी को छुड़ाने के लिए इस समय भेष में घूम रही हूँ,
भूत ०:

उसे किसने गिरफ्तार किया?

गिल्लन:

यह तो मैं नहीं कह सकती कि उसे गिरफ्तार करने वाला कौन है या उसका नाम क्या है पर इतना जानती हूँ कि वह एक औरत है जो लोहगढ़ी में रहती है.

लोहगढ़ी का नाम सुन भूतनाथ कुछ चिहुँका और उसके माथे पर दो - तीन बल इस तरह के पड़ गए मानों वह कुछ सोच रहा है.

कुछ देर बाद उसने कुछ कड़ी आवाज में कहा, " देख गिल्लन, मैं तुझे और तेरी गौहर दोनों ही को बखूबी जानता हूँ और यह भी अच्छी तरह समझता हूँ कि तुम दोनों परले सिरे की मक्कार और बदकार हो, साथ ही यह भी मुझे मालूम हो चुका है कि तुम दोनों का बार मुझ पर भी हो चुका और फिर होने वाला है.

मैं तुम दोनों ही को गिरफ्तार करने की फिक्र में पड़ा था, बल्कि गौहर को गिरफ्तार कर भी चुका था पर न जाने किस तरह वह मेरी घाटी में से गायब हो गई.

अब तुझे मैं कब्जे में कर पाया हूँ तो यह अच्छी तरह समझ रख कि तुझे खूब सताऊँगा और इस दरजे की तकलीफ पहुँचाऊँगा कि तू भी जन्म भर याद रखेगी.

हाँ अगर तू अपना और गौहर का सब हाल साफ - साफ कह दोगी और कोई बात मुझसे छिपा के न रक्खेगी तो मैं वादा करता हूँ कि तुझे छोड़ दूंगा, नहीं तो .

.

.

.

गिल्लन:

मैं सच - सच कहती हूँ कि आपसे कुछ भी न छिपाऊँगी, भूत ०:

अच्छा तो तू ठीक - ठीक बता तेरे और गौहर के यहाँ आने जाने का कारण क्या है और अब तक तुम लोग क्या कर चुकी हो.

मगर इस बात को खूब समझे रख कि तुम दोनों की बहुत कुछ बातें मुझे मालूम हो चुकी हैं और अगर तू कहीं भी झूठ बोलेगी तो मैं तुरन्त पकड़ लूँगा, फिर तेरे लिए कुशल नहीं रहेगी.

गिल्लन:

मैं बिल्कुल ठीक - ठीक सब हाल बताऊंगी.

भूत ०:

अच्छा तो फिर शुरू कर क्योंकि समय कमहै और मुझे बहुत कुछ काम करना है.

गिल्लन कुछ देर तक चुप रही और तब उसने इस तरह कहना शुरू किया:

" आपको मालूम ही होगा कि गौहर की असली माँ लगभग साल भर के हुआ गुजर गई और उसकी सौतेली माँ रह गई है.

" भूत ०:

हाँ यह मुझे मालूम है! गिल्लन:

कुछ तो अपनी माँ के मरने और कुछ और भी सबबों के गौहर का मिजाज बिगड़ गया और वह बीमार पड़ गई.

बहुत कुछ दबा - इलाज के बाद वह कुछ राहत पा पआई और हकीमों ने उसको बाहर घूमने - फिरने को कहा.

खुद गौहर की भी वही मर्जी थी इसलिए बहुत कुछ कह - सुनकर उसने खाँ साहब से इसकी इजाजत ले ली खाँ साहब ने बहुत से आदमी भी उसके साथ कर दिए पर कुछ दिनों के बाद उसने सभों को धता बताया और सिर्फ मुझे अपने साथ रखा.

उसे ऐयारी का बहुत शौक था और मेरी मदद से उसने कुछ ऐयारी करना सीखा भी.

घूमती - फिरती हम दोनों शिवदत्तगढ़ पहुंची जहाँ गौहर ने शिवदत्तसिंह से मुलाकात की.

(कुछ रुककर) मुख्तसर यह कि शिवदत्त ने अपनी मीठी बातों में गौहरको अच्छी तरह फंसा लिया और गौहर ने उसके कहे मुताबिक काम करना मंजूर कर लिया.

शिवदत्तसिंह के बहुत से दुश्मन भागकर जमानिया आ गए थे जिनको गिरफ्तार करने का बीड़ा गौहर ने उठाया शिवदत्तसिंह ने कई तरह से उसकी मदद की और उन दुश्मनों के नाम - धाम पते - ठिकाने से आगाह किया.

भूत ०:

वे दुश्मन कौन हैं?

गिल्लन:

सभों के नाम तो मुझे इस समय याद नहीं हैं तो भी प्रभाकरसिंह, इन्दुमति, दलीपशाह और शेरसिंह और आप उनमें जरूर हैं.

भूत ०:

दलीपशाह और शेरसिंह भी?

गिल्लन:

जी हाँ, अगर मेरी याददाश्त मुझे धोखा नहीं देती तो बेशक ये दोनों भी.

भूत ०:

(कुछ सोचकर) क्या तू कह सकती है कि शिवदत्त को इन दोनों से दुश्मनी की क्या वजह हो गई?

गिल्लन:

जी नहीं, मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती, गौहरशायद कुछ जानती हो.

भूत:

खैर अच्छा तब?

गिल्लन:

हम दोनों जमानिया पहुँचे और गौहर को दारोगा साहब और हेलासिंह वगैरह की एक ऐसी कार्रवाई का पता लगा कि जिसका ख्याल कभी स्वप्न में भी नहीं हो सकता था, मगर आपको खाँ साहब की चीठी की बदौलत वह सब हाल मालूम हो ही चुका होगा.

भूत ०:

कैसा हाल?

कैसी चीठी?

मुझे कुछ नहीं मालूम! गिल्लन:

आपने जब गौहरको गिरफ्तार किया तो उसकी तलाशी में एक चीठी पाई होगी.

भूत ०:

नहीं, न तो मैंने उसी तलाशी ही ली थी और न मुझे चीठी ही मिली.

वह कैसी चीठी थी, उसमें क्या लिखा था?

गिल्लन:

सुनिए मैं सब हाल कहती हूँ.

हम दोनों के जमानिया जाने पर पता लगा कि दारोगा साहब और हेलासिंह बलभद्रसिंह के दुश्मन हो रहे हैं और उनकी तथा उनकी लड़कियों की जान लिया चाहते हैं.

भूत ०:

(चौंक कर) क्या कहा?

गिल्लन:

जी यही कि हेलासिंह वगैरह बलभद्रसिंह और उनकी लड़कियों की जान लिया चाहते हैं.

भूत ०:

यह तुम लोगों ने कैसे समझा?

गिल्लन:

केवल समझा ही नहीं हम लोगों को इस बात का पक्का सबूत भी मिला मगर जरूर आपको भी यह बात मालूम होगी?

भूतनाथ:

(कुछ सोचता हुआ) हाँ .

.

.

.

.

.

.

मामला .

.

.

खैर आगे कह फिर क्या हुआ?

गिल्लन:

गौहर को पता लगा कि इस मामले में दारोगा साहब बहुत गहरी कार्रवाही कर रहे हैं अस्तु हम लोगों ने यह निश्चय किया कि इसकी खबर खाँ साहब को दे देनी चाहिए, क्योंकि बलभद्रसिंह से खाँ साहब की दिली दोस्ती है, अस्तु हम दोनों खाँ साहब के पास लौटे और वहाँ इस मामले में जो कुछ गौहर ने पता पाया था वह उनसे कहा.

सुन कर वे दारोगा साहब से बड़े ही नाराज हुए और उसी समय अपने हाथ से एक चीठी बलभद्रसिंह को इस बारे में लिखकर गौहर के सुपुर्द कर सख्त ताकीद की कि बलभद्रसिंह से मिलकर इन सब बातों की खबर दे दे मगर साथ ही यह भी हुक्म दिया कि सिवाय खबर देने के इस मामले में और कोई काम न करे क्योंकि वैसा करने से दारोगा से दुश्मनी होने का डर था.

वह चीठी लेकर गौहरयहाँ पहुँची मगर अपने को बचा न सकी और दुश्मनों के फन्दे में पड़ गई.

भूत ०:

अच्छा अच्छा, अब तू यह बता कि जब मैंने गौहर को गिरफ्तार कर लिया तो वह कैसे छूटी और छूटकर उसने क्या - क्या किया तथा वह चीठी अब कहाँ है?

गिल्लन यह सवाल सुन कुछ रुकती हुई बोली, " शिवदत्त के कई ऐयार यहाँ आये हुए हैं, उन्होंने आपकी घाटी में से गौहर को छुड़ाया था.

" भूतनाथ:

(गौर से गिल्लन की सूरत देखकर) क्या तू ठीक कहती है?

गिल्लन:

जी हाँ, मैं बिल्कुल ठीक कहती हूँ भूत ०:

खैर तब?

छूट कर उसने क्या किया?

गिल्लन:

जब आपकी कैद से गौहरछूटी तो उसे सबसे पहिले बलभद्रसिंह से मिलकर चीठी उन्हें देने की फिक्क हुई, पर वह चीठी उसके पास से गायब हो चुकी थी और हम लोगों का ख्याल हुआ कि आप ही ने उसे निकाल लिया है.

भूत ०:

नहीं - नहीं, मैंने कहा न कि न तो मैंने गौहर की तलाशी ली और न कोई चीठी ही पाई.

गिल्लन:

तो जरूर उसने कहीं और गंवा दी होगी.

भूत ०:

खैर तो फिर तुम लोग बलभद्रसिंह के पास गई?

गिल्लन:

जी नहीं, चीठी खो जाने का गौहर को बहुत अफसोस हुआ और यद्यपि मैंने बहुत कहा चीठी गई तो जाने दे तू खुद चलकर जुबानी ही सब हाल बता दे, मगर वह राजी न हुई और बोली कि इस बारे में मैं और कुछ पता लगा कर तभी चलूंगी.

इसी फिक्र में वह मनोरमा से मिली.

भूत:

मनोरमा से?

गौहर उसको कैसे जानती है?

गिल्लन:

गौहरउससे असली भेष में नहीं मिली बल्कि ऐयारी के ढंग से सूरत बदल कर मिली.

भूत:

मगर क्यों?

गिल्लन:

जिसमें उसकी मदद से वह दारोगा और हेलासिंह से मिल सके, पर इस काम में भी उसे धोखा खाना पड़ा.

भूत ०:

वह कैसे?

गिल्लन:

गौहरमनोरमा को कुछ मामूली भेद की बातें बता कर अपने ऊपर मेहरबान बना लिया और उसने इसे दारोगा से मिलाने का वादा किया.

उसी के कथानानुसार गौहरदारोगा साहब से मिलने के लिए जमानिया पहुँची पर मुलाकात होने के पहिले ही किसी ने उसे गिरफ्तार कर लिया.

पहिले तो मुझे यह नहीं मालूम हुआ कि गिरफ्तार करने वाला कौन है पर कल मुझे इस बात का पता लगा कि वह एक औरत है जो लोहगड़ी में रहती है.

भूत ०:

यह कैसे मालूम हुआ?

गिल्लन:

अपनी सखी की खोज में मैं इधर - उधर घूम रही थी कि रात के समय एक कुएँ के पास पहुंची जहाँ एक औरत और मर्द खड़े हुए बातें कर रहे थे मैंने उन दोनों को देख अपने

को छिपा लिया जिससे वे मुझे देख न सके और कुछ बातें करने के बाद अजायबघर की तरफ रवाना हुए और मैं भी उनकी बातें सुनती हुई उनके पीछे - पीछे जाने लगी.

थोड़ी ही देर में मालूम हो गया कि उसी औरत ने गौहरको गिरफ्तार किया था और स्वयं उसकी सूरत बन दारोगा साहब से मिली थी.

वह मर्द थोड़ी ही देर बाद कहीं चला गया पर मैंने उस औरत का पीछा करने पता लगा लिया कि वह लोहगड़ी में रहती है.

भूत ०:

अच्छा तू इस समय मायासिंह का रूप किस नीयत से धारण किये हुए?

गिल्लन:

सो भी बताती हूं.

सखी गौहरको छुड़ाना तो जरूरी था पर उस लोहगड़ी के अन्दर जाना मेरी सामर्थ्य के बाहर है अस्तु सिवाय दारोगा साहब या हेलासिंह की मदद के गौहरको उस जगह से छुड़ा नहीं सकती थी.

यदि मैं असली रूप में दारोगा साहब से मिलती और सब हाल ठीक - ठीक कहती तो भला दारोगा गौहर को क्यों छुड़ाने लगा था जिसको वह अपना दुश्मन समझता होगा, बल्कि ताज्जुब नहीं कि वह मुझे भी गिरफ्तार कर लेता, अस्तु मैंने यही मुनासिब समझा कि ठीक हाल न कह उसे यह कहूँ कि सुन्दरी (गौहर) को लोहगड़ी में रहने वाली किसी ऐयारा ने गिरफ्तार कर लिया है और स्वयं उसकी सूरत बन आपको धोखा दिया चाहती है.

ऐसी हालत में जरूर दारोगा साहब लोहगड़ी में जा उस ऐयारा को गिरफ्तार करते और इस तरह पर गौहरको भी रिहाई मिलती, अस्तु यही सोच कर मैंने दारोगा साहब के ऐयार मायासिंह को गिरफ्तार किया जो आजकल अजायबघर के चारों तरफ चक्कर लगाया करता है और उसकी सूरत बन दारोगा साहब से मिली.

सच - झूठ बोल कर मैंने उन्हें विश्वास दिला दिया कि सुन्दरी (गौहर गिरफ्तार हो गई, वे सुनकर बहुत घबड़ाये और अपने दोस्त जैपालसिंह से सलाह कर मुझे हेलासिंह के पास

जाने का हुक्म दिया.

उन्हीं की आज्ञानुसार मैं यहाँ आकर बैठी थी और सोच रही थी कि अब क्या करना चाहिये कि आप नजर आये.

भूत ०:

मगर दारोगा ने तुझे हेलासिंह के पास जाने के वास्ते किसलिए कहा?

गिल्लन:

ऐसा मालूम होता कि कोई गौहरकी सूरत बन वह ऐयारा दारोगा साहब से मिली थी और उन्होंने उसे किसी गुप्त विषय की चीठी दे हेलासिंह के पास भेजा था.

उसी के बारे में होशियार करने के लिए मुझे हेलासिंह के पास जाने का हुक्म हुआ है.

(रुक कर) जो कुछ हाल था सो सब मैंने सच - सच कह सुनाया, अब उम्मीद है कि आप अपने वादे का ख्याल कर मुझ बेकसूर को छोड़ देंगे.

कम्बख्त गिल्लन कई मौकों पर झूठ बोल गई और कई बातों को छिपा भी गई, जैसा कि हमारे पाठक अवश्य समझ गये होंगे, परन्तु भूतनाथ भी एक ही कांइयाँ था.

वह समझ गया कि इस ऐयारा ने सब बातें ठीक - ठीक कभी न कही होंगी अस्तु इसे अभी छोड़ना मुनासिब न होगा.

यह सोच उसने कहा, " मैं तुझे छोड़ तो अवश्य दूंगा पर इस बात का इतमीनान कर लेने के बाद कि जो कुछ तैने कहा वह सच है

इतना कह भूतनाथ ने जोर से जफील बजाई, जबाब में दूर से सीटी बजने की आवाज आई और थोड़ी देर बाद दो आदमी दौड़ते हुए उसी तरफ आते दिखाई पड़े जो एक बेहोश को उठाये ला रहे थे.

यो दोनों भूतनाथ के शागिर्द थे जिन्होंने उसका इशारा पा उस बेहोश को जमीन पर लिटा दिया और सामने आ खड़े हुए.

भूत ०:

(दोनों शागिर्दो से) किसको लाए, गोबिन्द को?

एक शागिर्द:

जी हाँ, आपने मायासिंह को कब्जे में कर लिया?

(गिल्लन की तरफ देखते हुए क्या .

.

.

.

.

भूत ०:

(हँसते हुए) इस कम्बख्त की तरफ मत देखो, यह गौहर की सखी गिल्लन है जो मायासिंह बनी हुई थी.

असली मायासिंह उस गठरी में बंधा हुआ है इस कम्बक्तने बेहोश करके एक झाड़ी में डाल दिया था.

गिरफ्तार करने में कोई तरदुद तो नहीं उठाना पड़ा?

शागिर्द:

जी कुछ भी नहीं, ये लोग भी क्या ऐयार कहलाने लायक हैं! व्यर्थ ही ऐसे लोगों ने ऐयारी के नाम को बदनाम कर रखा है.

मेरी एक मामूली चालाकी में यह फँस गया.

तुम्हें गोविन्द को भूत ०:

ठीक है, अच्छा तुम अपनी सूरत गोविन्द की बनाओ मगर जल्दी करो, (दूसरे शागिर्द से) और तुम फुर्ती से मेरी सूरत मायासिंह की सी बना दो.

मैं खुद ही बना लेता पर इसमें देरी लगेगी और इस समय वक्त बिल्कुल नहीं है.

थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ का एक शागिर्द गोबिन्द की सूरत में और खुद भूतनाथ मायासिंह की शक्ल में दिखाई पड़ने लगा.

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और अपने दूसरे शागिर्द से बोला, " देखो गोपीनाथ, यह कम्बख्त गिल्लन और ये दोनों बेहोश गोबिन्द और मायासिंह तुम्हारी हिफाजत में छोड़े जाते हैं.

इनको चाहे जहाँ ले जा कर रखोमगर होशियार रहो क्योंकि अगर इनमें से कोई भी छूट जाएगा तो मुझे सख्त मुश्किल में पड़ना पड़ेगा, क्योंकि मैं एक नाजुक काम पर जा रहा हूँ.

" इसके जबाब में गोपीनाथ ने कहा, " आप बेफिक रहें, मैं इन तीनों पर पूरी खबरदारी रखूंगा.

भूतनाथ ने गोबिन्द बने अपने शागिर्द को साथ आने का इशारा किया और जंगल में घुस कर देखते - देखते कहीं गायब हो गया.

11वा ब्यान।

रात का समय है, चन्द्रदेव की शीतल किरणें उस जंगल में घुस कर अपनी चाँदनी फैला रही हैं जो अजायबघर के चारों तरफ फैला हुआ है और जिसमें अब से थोड़ी ही देर पहिले अंधकार अपने काले शरीर को छिपाये बैठा हुआ था.

वहीं जंगल जो अभी तक भयानक और डरावना लगता था अब कुछ सुहावना - सा मालूम होने लगा है और अजायबघर की कोठरियों और दालानों के भीतर भी चन्द्रमा की किरणों ने पहुंच कर वहाँ के अंधकार को कुछ कमकर दिया है.

ऐसे समय में एक रथ, जिसमें दो मजबूत बैल जुते हुए थे आकर अजायबघर के दरवाजे के सामने खड़ा हुआ.

रथ पर पर्दा पड़ा हुआ था जिससे इस बात का पता लगाना असम्भव था कि भीतर कौन है पर थोड़ी ही देर में शक जाता रहा जब रथ के रुकने पर दारोगा ने पर्दे के बाहर सिर निकाला और कहा, " जैपाल, कया बंगले पर पहुंच गए?

" इसके जवाब में जैपाल ने, जो बैलों को हॉक रहा था कहा, " जी हाँ " और तब रथ से उतर कर पर्दा हटाता हुआ बोला, " लाइये एक गठरी मुझे पकड़ाइये.

" दारोगा साहब ने एक बड़ा गदुर रथ से किनारे पर किया जिसमें जरूर कोई आदमी था.

जैपाल ने गठर पीठ पर लादा और सीढ़ियों पर चड़ बंगले के अन्दर घुस गया थोड़ी देर बाद वह उस गट्ठर को कहीं रख लौट आया और बोला, “ लाइए, दूसरे को भी दीजिए ".

एक और गठर उसे दिया गया और उसे भी जैपाल ने उठा लिया.

अब दारोगा साहब भी उतर पड़े और दोनों बंगले के अन्दर घुस गए.

दाहिनी तरफ के एक दालान में जिसमें चन्द्रमा की किरणें आड़ी होकर पहुंच रही थीं ये दोनों पहुँचे.

उसी जगह वह पहिले गठ्ठर भी रखाहुआ था जिसके बगल में जैपाल ने वह दूसरा गठर रख दिया और तब कहा, “ आप इन लोगों का कुछ बन्दोबस्त किजिये तब तक मैं जाकर रथ को कहीं आड़ में खड़ा कर आता हूँ,

दारोगा ने कहा, " जाओ मगर जल्दी ही लौट आना क्योंकि मैं एक कैदी को लेकर भीतर जाता हूँ?

जैपाल " बहुत खूब " कहकर चला गया, उधर दारोगा घूमा और सामने वाली कोठरी के पास पहुंचा जिधर दरवाजा बन्द था.

दारोगा ने इस दरवाजे के दाहिनी तरफ पैर से ठोकर देना शुरू किया.

कुछ ही ठोकरों के बाद उस जगह से लकड़ी का एक तख्ता बगल हो गया और एक साख दिखाई पड़ने लगा.

दारोगा ने जेब से एक ताली निकाली और उसे छेद में डाल कर घुमाया जिसके साथ ही कोरी का दरवाजा खुल गया और वहां किसी जगह से सामान पैदा कर उसने रोशनी की, क्योंकि यद्यपि बाहर के दालान में चन्द्रमा की पूरी रोशनी थी पर इस कोठरी में अंधेरा ही

था, इसके बाद दारोगा बाहर आया और उन दोनों गट्ठरों में से एक को उठा उसी कोठरी में घुस गया, दरवाजे को उसने मामूली ढंग पर भिड़का कर छोड़ दिया.

हमारे पाठक कई बार अजायबघर में आ चुके हैं और यहाँ की ज्योड़ी में जाने के रास्ते से भी बखूबी परिचित हैं अस्तु उसी मामूली राह से चर्बी घुमाता हुआ दारोगा उस गट्ठर को लिए हुए नीचे के हिस्से में जा पहुँचा.

इसके बाद गट्ठर को पीठ पर लादे हुए पूरब तरफ बाली सुरंग में घुसा.

इस सुरंग के दोनों तरफ जंगलेदार कोठरियाँ और सामने की तरफ एक महाबदार फाटक था जिसके बीचोंबीच में जंजीर के सहारे एक पुतली लटक रही थी.

दारोगा इस पुतली के पास पहुँचा और पीठ के बोझ को जमीन पर रख स्वयं वहीं बैठ गया.

अपने कपड़ों के अन्दर से दारोगा ने सोने का एक जड़ाऊ डिब्बा निकाला और लालटेन के सामने रख उसे खोला.

इसके अन्दर एक छोटी पुस्तक थी जिसे निकाल लिया और पड़ना शुरू किया.

लगभग एक घड़ी तक दारोगा उस पुस्तक के पन्ने इधर - उधर उलढता - पलटता रहा और इसी बीच में उसने एक सादे कागज पर जस्ते की कलम से इस पुस्तक में से देख - देखकर कुछ लिख भी लिया.

शायद जब उसने जानने वाली सब बातों को पड़ या जान लिया तो एक लम्बी सॉस के साथ यह कहा, “ बड़ी नायाब किताब है, मगर लाचार लौटाना ही पड़ेगा.

" उस किताब को उसी डिब्बे के हवाले किया और डिब्बे को पुनः अपने कपड़ों में छिपा लिया.

डिब्बा छिपाने के बाद दारोगा उठ खड़ा हुआ और धीरे - धीरे बल्कि कुछ हिचकिचाहट के साथ चलता हुआ उस पुतली के पास पहुँचा जो महराब के बीचोंबीच में लटक रही थी.

दारोगा ने पुतली का बायाँ पैर पकड़ा और उसके अंगूठे को नीचे की तरफ झुका दिया.

इसके बाद दाहिने पैर के अंगूठे के साथ भी ऐसा ही किया और तब अलग हटकर खड़ा हो गया.

कुछ देर बाद अंगूठों को झुकाने के साथ ही एक किस्म की आबाज आई और वह पुतली अपनी जगह पर घूमने लगी.

दारोगा को मालूम हुआ कि घूमते - घूमते वह पुतली धीरे - धीरे ऊपर की तरफ चढ़ी जा रही है.

यहाँ तक कि लगभग आधी घड़ी में वह पुतली बहुत ऊपर खिंच गई और किसी गुप्त स्थान में जा नजरों की ओट हो गई.

उसी समय एक आवाज हुई, वह फाटक घड़घड़ करता हुआ नीचे जमीन के अन्दर धंस गया, और सामने जाने के लिए रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

दारोगा के मुंह से खुशी की आवाज निकली, उसने वह गठरी पीठ पर उठा ली.

लालटेन हाथ में ले ली और तब उसी फाटक के अन्दर घुस गया.

थोड़ी देर बाद पुनः एक आवाज हुई, वह फाटक अपनी जगह पर आ गया, और वह पुतली भी नीचे उतरकर पुन:

ज्यों - क्रि - त्यों अपनी जगह पर लटकने लगी पर इस समय उसका घूमना बंद था.

दारोगा को भीतर गए बहुत देर हो गई, यहाँ तक कि दो घण्टे के ऊपर हो गया मगर वह लौटता दिखाई न पड़ा.

अजायबघर के ऊपर की दालान में बैठ बेहोश प्रभाकरसिंह की गठरी की निगहबानी करते - करते जैपाल घबरा गया और बार - बार कहने लगा, " न मालूम दारोगा साहब कहाँ चले गये! " कई बार उसने ड्योढ़ी तक भी जाकर देखा मगर वहाँ दारोगा साहब ये कहाँ जो दिखाई पड़ते.

आखिर जैपाल एकदम परेशान हो गया और उसे विश्वास हो गया कि दारोगा साहब किसी तिलिस्मी चक्कर में फंस गए, क्योंकि अन्दर जाने के पहिले दारोगा साहब किसी कैदी को चक्रव्यूह तक पहुँचा देने में दो घड़ी से ज्यादा समय की जरूरत न पड़ेगी और जब दो घण्टे के ऊपर समय बीत गया तो जरूर कुछ मामला गड़बड़ हुआ

अस्तु इस समय क्या करना चाहिए?

बहुत कुछ सोच - विचारकर जैपाल ने यही मुनासिब समझा कि बेहोश प्रभाकरसिंह को नीचे के कैदखाने में बन्द कर दे और तब दारोगा के बारे में कुछ जाँच करे, जैपाल ने प्रभाकरसिंह को नीचे के कैदखाने (लोहे वाले जंगले) में ले जाकर बन्द कर दिया, उनकी मुश्के खोल हथकड़ी बएड़ी पहना दी और दरवाजे में ताला बन्द कर दिया.

इसके बाद घूमता - फिरता उधर गया जिधर अजायबघर का वह महाबदार फाटक था जिसके अन्दर दारोगा साहब जाकर गायब हो गए थे, जैपाल को इस तिलिस्मी फाटक को खोलने की तर्कीव मालूम न थी अस्तु कुछ देर तक यों ही देखभाल कर लाचारी की मुद्रा से गर्दन हिलाता हुआ वह वहाँ से लौटा और बाहर आकर पुनः दालान के एक कोने में यह कहता हुआ बैठ गया " कुछ देर और राह देख लूँ तब लौट ,.

कुछ देर तक जैपाल उसी जगह बैठा रहा.

इस बीच में कई बार उसे भारी धम्माकों की आवाज सुनाई पड़ी जो कि कहीं नीचे की तरफ से आ रही थी पर उसकी हिम्मत यह न पड़ी कि उठकर देखभाल करे और इस तरह पर अपनी जान आफत में डाले.

वह अपनी जगह पर ही बैठा रहा मगर थोड़ी देर बाद पीछे की कोठरी में से कुछ आहट सुन चौंका और जब घूमकर देखा तो दारोगा साहब पर निगाह पड़ी.

इस समय दारोगा साहब की बुरी हालत हो रही थी.

चेहरा पीला हो गया था, आँखें चौंधियाई हुई और बदन काँप रहा था.

उसके कपड़े कई जगह से फट गए थे और बदन पर कई जख्म भी लगे हुए दिखाई दे रहे थे.

आते ही जैपाल के बगल में बैठ, बल्कि धम्म से गिर गया.

दारोगा साहब की यह विचित्र हालत देख जैपाल घबरा गया.

उसने अपनी जेब से उम्दा लखलखा निकालकर कई बार दारोगा को सुंघाया और देर तक दुपट्टे से हवा करता रहा तब जाकर दारोगा साहब के होश - हवाश कहीं ठिकाने हुए और उन्होंने आँखें खोलकर अपने चारों तरफ देखा.

जैपाल ने उनकी बदहवासी का कारण पूछा जिसके जबाब में उसने कहा, " उस कैदी को चक्रव्यूह में फंसाने जाकर मैं स्वयं भारी मुसीबत में फंस गया और ऐसी - ऐसी डरावनी बातें देखीं कि कुछ पूछो मत, बस जान सलामत लेकर लौट आया यही गनीमत समझो.

अभी तक कलेजा काँप रहा है.

अब कान पकड़ता हूँ जो कभी उस तरफ जाने का नाम भी लूँ, तुम अब मुझे जल्दी से घर पहुँचाओ तो जी ठिकाने हो (इधर - उधर देखकर) प्रभाकरसिंह नहीं दिखाई पड़ते! " जैपाल:

आपको आने में बहुत देर हुई तो लाचार उन्हें मैं ज्योड़ी में बंद कर आया, शायद यहाँ कोई देख लेता.

अब अगर आप चाहें तो उन्हें भी .

.

.

.

दारोगा:

(कांपकर) अरे राम राम, अब क्या पुनः उस भयानक जगह में जाने की हिम्मत पड़ सकती है! उन्हें मजबूती से बन्द किया है तो?

जैपाल:

हाँ, बहुत अच्छी तरह, हथकड़ी - बेड़ी डाल लोहे बाले जंगले में बन्द कर दिया है, ताली यह देखिए मौजूद है.

दारोगा:

तो बस इस समय उन्हें वहीं बन्द रहने दो फिर किसी दिन देखा जायगा, इस वक्त तुम मुझे घर पहुँचाओ.

जैपाल:

आपको रथ तक पहुँचाये देता हूँ जहाँ से अगर आप स्वयं ही हॉकते हुए चले जा सकें तो बहुत ही अच्छा हो.

दारोगा:

क्यों सो क्यों?

जैपाल:

आपके जाने के कुछ ही देर बाद हेलासिंह यहाँ आए थे.

दारोगा:

हेलासिंह! सो किसलिए?

जैपाल:

वह ऐयारा जिसने सुन्दरी को पकड़ लिया था उन्हें धोखा देकर लोहगड़ी ले जा रही थी.

दारोगा:

तो तुमने उसको होशियार कर दिया?

जैपाल:

जी हाँ, बल्कि यह भी बता दिया कि जिस तरह से भी हो उस औरत को गिरफ्तार करना चाहिए.

वे सब बात समझ तो गए हैं पर फिर भी मैं सोचता हूँ कि उनके साथ खुद भी मौजदू रहूँ क्योंकि .

.

.

.

जैपाल ने झुककर दारोगा के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही वह चौंक पड़ा और बोला, " बेशक तुम्हारा कहता बहुत ठीक है, तुम्हें जरूर वहाँ जाना और अभी जाना चाहिए.

जैपाल:

मगर आप अकेले लौट सकेंगे?

दारोगा:

हाँ, पहुँच जाऊँगा, तुम मेरी फिन छोड़ दो और जाओ, दारोगा ने वह कोठरी बन्द की जिसमें से नीचे जाने का रास्ता था और तब जैपाल का हाथ पकड़े हुए बंगले के बाहर आया.

जैपाल ने उसे रथ के पास पहुँचा दिया जो पेड़ों की झुरमुट में खड़ा था.

दारोगा साहब रथ पर चढ़ गए और तब उन्हें जमानिया की तरफ रवाना कर जैपाल तेजी से लोहगड़ी की तरफ रवाना हुआ.

वहाँ पहुंच कर हेलासिंह के साथ मिल इन दोनों ने जो कुछ किया सो पाठक ऊपर के बयान में पड़ चुके हैं, अस्तु इनका हाल न लिखकर हम इस समय दारोगा साहब के साथ चलते हैं जितना परेशान दिमाग कोई नया बाँधनें बाँध रहा है और जो इस समय अपने खास कमरे में ऊँची गद्दी पर बैठे हुए हथेली पर गाल रखें कुछ सोच रहे हैं.

आखिर बहुत देर बाद एक लम्बी साँस लेकर दारोगा ने सिर उठाया और आप ही आप कहा, " जो कुछ भी हो, अब तो महाराज का उठ जाना ही मेरे लिए आवाश्यक है और यह काम जल्द होना चाहिए क्योंकि गोपालसिंह.

हाँ ठीक याद आया, पहले उस अजायबघर की ' ताली ' को तो ठिकाने पहुंचा दूं.

" दारोगा अपनी जगह से उठा और एक दूसरी कोठरी के अन्दर चला गया जिसके दरवाजे पर रेशमी पर्दा पड़ा हुआ था.

कुछ देर बाद जब वह उस कोठरी के बाहर निकला तो उसके चेहरे पर नकाब पड़ी हुई थी और तमाम बदन भारी काले लबादे से अच्छी तरह ढंका हुआ था जिसके कारण इस बात का पता नहीं लग सकता था कि भीतर से दारोगा साहब का क्या ठाट है या क्या सामान इस समय उनके बदन पर मौजूद है.

सुबह होने में अभी बहुत देर थी जब दारोगा साहब पिछले दरवाजे की राह अपने मकान के बाहर निकले.

कई पेचीली तंग और अँधेरी गलियों में से होते हुए वे बहुत ही तेजी के साथ चलकर थोड़ी देर में खास राजमहल के पिछवाड़ेवाले बाग के पास जा पहुँचे जिधर इस समय सन्नाटा था.

कुछ देर आहट लेने बाद जब दारोगा को विश्वास हो गया कि इस समय उनके आस पास में कोई नौकर - चाकर या सिपाही - पहरेदार उनकी कार्रवाई देखने वाला नहीं है तो उन्होंने अपने लबादे के अन्दर से एक कमन्द निकाली और उसकी मदद से बाग की ऊँची चहारदीवारी पार कर उसके अन्दर जा पहुँचे.

वहाँ पहुँच उन्होंने फिर कुछ देर तक आहट ली और जब सन्नाटा पाया तो आगे बड़े, लम्बे - चौड़े बाग में इधर - उधर दबते और पेड़ों की आड़ में छिपते दारोगा साहब धीरे - धीरे उस तरफ बटवेने लगे जिधर खास महल का वह हिस्सा था जिसमें कुँअर गोपालसिंह रहा करते थे.

दारोगा साहब ने जब निश्चय कर लिया कि किसी कमरे या खिड़की से कोई उनकी कार्रवाई देख नहीं रहा है तो उन्होंने पुनः कमन्द निकाली और एक खिड़की की तरफ फेंकी.

कमन्द खिड़की में अटक गई और दारोगा साहब ऊपर चढ़ गये.

यद्यपि इस खिड़की का पल्ला भीतर की तरफ से बन्द था पर उन औजारों की मदद से जिन्हें दारोगा साहब अपने साथ लाये थे थोड़ी ही तरवुद से खुल गया और दरोगा ने खिड़की की राह कमरे के अन्दर हो क्रमन्द खींच खिड़की भीतर से बन्द कर ली.

कमरे के अन्दर पहुँच दारोगा साहब ने लबादा उतारकर एक तरफ रखा दिया और एक छोटी गठरी खोली जिसे वे अपनी कमर के साथ बाँधे हुए थे.

इस गठरी में वही जड़ाऊ डिब्बा था जिसके अन्दर अजायबघर की वह ताली थी जिसे भैया राजा ने दिया था.

गोपालसिंह ने यह चीज बड़ी हिफाजत के साथ एक लोहे के सन्दूक में बन्द कर दी थी पर दारोगा को किसी तरह पता लग गया और वह कुँअर गोपालसिंह के गायब होते ही इसे वहाँ से चुरा ले गया था.

इस तीन दिन के भीतर दारोगा इस किताब को अच्छी तरह पढ़ गया था बल्कि कई बातें उसने कागज पर उतार भी ली जिसमें वक्त पर काम आए क्योंकि इस किताब को हमेशा के लिए अपने कब्जे में रख लेने की शायद उसकी हिम्मत या चेष्ठा उस समय न हुई थी.

दारोगा को अगर कोई अफसोस था तो यही कि इस किताब से वह पूरी तरह से काम नहीं ले सकता था क्योंकि इसमें कई शब्द ऐसे थे जिनका मतलब वह कुछ भी समझ नहीं पाता था.

इस जगह पहुँच दारोगा ने पुनः उन अद्भुत औजारों से काम लिया जिन्हें वह अपने साथ लाया था.

उसने लोहे वाले उस सन्दूक का ताला खोल डाला जिसके अन्दर कुँअर गोपालसिंह ने यह कीमती किताब रखी थी और डिब्बे को ठिकाने रख पुनः वह सन्दूक बन्द भी कर दिया.

इसके बाद वह अपना सब सामान बटोर कर उठा और लबादा ओढ़ पुनः उसी खिड़की की राह नीचे उतर आया.

इस समय पूरब तरफ का आसमान सुफेदी पकड़ रहा था और दक्षिणी हवा के हलके झोंके शुरू हो गये थे.

दारोगा ने नीचे पहुँचने और कमन्द उतारकर छिपा लेने के बाद पूरब के आसमान की तरफ देखा और तब कुछ सोचकर बाग के बाहर की तरफ न जा पश्चिम को कदम बढ़ाया, जिधर जनाने महल का पिछला हिस्सा पड़ता था.

अपने को छिपाता हुआ वह एक छोटे से दरवाजे के पास जाकर रुका जो भीतर से बन्द था.

इसके नीचे की तरफ गौर करने पर दारोगा को एक बहुत पतली लोहे की तार नजर पड़ी जिसे उसने किसी इशारे के साथ खींचा और तब अलग हट कर खड़ा हो गया.

थोड़ी ही देर बाद वह दरवाजा बहुत ही आहिस्तगी के साथ खुल गया और एक कमसिन औरत ने सिर निकाल बाहर की तरफ झाँका, दारोगा जिसका ध्यान इसी तरफ था इस औरत को देखते ही उसके सामने आ गया.

दोनों में कुछ इशारा हुआ और तब उस औरत ने दारोगा को अन्दर करके दरवाजा बन्द कर लिया.

दरवाजा बन्द हो जाने के कारण यद्यपि उस जगह अंधकार हो गया मगर दोनों में से किसी ने इस बात का ख्याल न किया और वह औरत अंधेरे ही में चलती हुई आगे की तरफ बड़ी तथा दारोगा उसके पीछे रवाना हुआ.

कई अंधेरे रास्तों और तंग जगहों से घुमाती वह दारोगा को लिए हुए एक तहखाने के मुहाने पर पहुंची और वहाँ भी न रुककर दोनों आदमी काठ की सीढ़ियों पर से होते हुए तहखाने के अन्दर उतर गए, औरत ने तहखाने का दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया और तब कहीं से सामान निकाल रोशनी की.

दारोगा ने एक निगाह अपने चारों तरफ देखा और तब उस औरत से पूछा- " यहाँ कोई हम लोगों की बातें सुननेवाला तो नहीं है?

" 11 औरत ने मुस्कराकर कहा, " अगर कोई सुन ही ले तो फिर आपको यहाँ लाने से फायदा ही क्या हुआ?

आप इस तरफ से बिल्कुल निश्चिन्त रहे.

दारोगा:

अच्छा तो अब बताओ कि जो कुछ मैंने कहा उसके मुताबिक कार्रवाई करने को तुम तैयार हो?

औरत:

(सिर नीचा कर कुछ देर चुप रहने के बाद) देखिए दारोगा साहब, बात यह है कि आपके हुक्म के मुताबिक करने को तो मैं हमेशा तैयार हूँ परन्तु आपको भी अपने वादों को पूरा करने का खयाल रखना चाहिए, दारोगा:

(अपनी छाती पर हाथ रख कर) मैं अपनी ही कसम खाकर कहता हूँ कि जो कुछ बादा मैंने तुमसे किया है उसे पूरा - पूरा अदा करूंगा, बशर्ते कि तुम भी इस काम को खूबसूरती, होशियारी और चालाकी के साथ पूरा उतार दो, मैं कसम खाकर कहता हूँ कि केवल अपना वादा ही पूरा नहीं करूँगा और हमेशा के लिए तुम्हारी जरूरतें ही दूर

नहीं हो जाएँगी बल्कि अगर तुम चाहोगी तो कुँअर गोपालसिंह के साथ तुम्हारी शादी भी करा दूंगा.

यह बात सुनने के साथ ही उस औरत के गालों पर गुलाबी रंग दौड़ गया और उसकी आँखें कुछ देर के लिए नीचे की तरफ झुक गईं, मगर उसने बहुत जल्दी ही अपने को सम्हाल लिया और मुस्कुराकर कहा, " यह बात तो दारोगा साहब अब आप बहुत ही बड़ाकर कहने लगे.

" दारोगा:

(उसका हाथ पकड़कर) नहीं - नहीं, तुम ऐसा कभी खयाल न करो कि दारोगा तुमसे मीठे - मीठे वादे करके और झूठे सब्जबाग दिखा के अपना काम निकाला चाहता है और पीछे मुकर जाएगा.

औरत:

(उत्कण्ठा के साथ) तो जो कुछ आप कहते हैं उसे पूरा करेंगे?

दारोगा:

जरूर - जरूर.

औरत:

मगर मुझे विश्वास नहीं होता, भला कुँवर साहब मुझे .

.

.

.

दारोगा:

तुम यह न सोचो कि गोपालसिंह तुम्हें चाहेगा नहीं अथवा तुमसे शादी करना पसन्द नहीं करेगा.

यह लड़का इस समय पूरी तरह से मेरे काबू में है और जो कुछ मैं कहूँगा वह उसे पूरा करना ही पड़ेगा औरत:

तो दारोगा साहब, अगर आप ऐसा करा दें और वादा पूरा करने की कसम खा जाएं तो मैं भी कसम खाकर कहती हूँ कि आपका काम ऐसी खूबी के साथ करूँ और ऐसी सफाई के साथ बड़े महाराज को दुनिया से उठा हूँ.

दारोगा:

(औरत के ओठों पर उंगली रखकर) चुप - चुप, दीवार के भी कान होते हैं! औरत:

ओह, आप निश्चिन्त रहिए, यहाँ कोई भी हम लोगों की बातें सुनने वाला नहीं है दारोगा:

तो भी अपने को भरसक होशियार ही रहना चाहिए.

खैर तो मैं क्रमस खाता हूँ कि अगर तुम यह काम ठीक ठीक कर दो जिस तरह से भी होगा तुम्हारी शादी और गोपालसिंह से करा कर ही छोड़ूंगा.

मगर देख, काम बड़ी खबरदारी से होना चाहिए, क्योंकि अगर किसी को जरा भी शक हो जाएगा तो फिर मेरी - तुम्हारी दोनों की ही जान बड़ी बुरी तरह से मारी जाएगी.

औरत:

नहीं - नहीं दारोगा साहब, अगर ऐसा हो तो फिर बात ही क्या हुई, किसी को कानोकान पता तो लगने ही नहीं पावेगा, इस बात से तो आप बिल्कुल ही बेफिक्र रहें.

मैं ऐसी बेवकूफ नहीं हूँ जो इतना न सोच सकें कि इस भेद के खुल जाने पर हम लोगों की क्या दुर्दशा होगी.

दारोगा:

हॉ - हाँ, सो तो मुझे बखूबी विश्वास है कि तुम परले सिरे की होशियार हो, अगर यह न हो तो मैं ऐसा नाजुक काम तुम्हें सौंपता ही क्यों, मगर तो भी चेतावनी के तौर पर मैंने कहा, क्योंकि काम बड़ी जोखिम का है.

औरत:

सो सब मैंने सोच लिया, काम जोखिम का जरूर है पर साथ ही हो जाने पर मुझे और आपको दोनों ही को फायदा भी बहुत है.

दारोगा:

खैर फायदे की मुझे कोई इच्छा नहीं है क्योंकि मैं किसी अपने स्वार्थ के लिए यह काम कर नहीं रहा हूँ, मुझे तो राज्य का भला देखना और रिआया का दुःख दूर करना है.

मेरा अपना तो इसमें कोई फायदा है नहीं, मैं संसार - त्यागी विरक्त आदमी, लेकिन राज्य का, रिआया का और खास कर तुम्हारा फायदा देखना ही पड़ता है.

औरत:

बेशक - बेशक.

दारोगा:

खैर तो अब बात खत्म होनी चाहिए क्योंकि सवेरा हुआ ही चाहता और इस समय कोई अगर मुझे और तुम्हें यहाँ देखेगा तो शक कर सकता है, अच्छे लो मैं तुम्हें वह दबा देता हूँ, इतना कह दारोगा ने अपने पास से सोने की एक छोटी डिबिया निकाली और उसे खोला, उसमें तरह - तरह की दवाएँ पुड़ियों और छोटी - छोटी शीशियों में भरी हुई रखी हुई थीं.

जिनमें से चुनकर उसने एक छोटी शीशी जिसमें सफेद रंग की कोई बुकनी थी निकाली.

उसके बाद उस डिविया को ठिकाने रख उस औरत से कहा, " देखो यह बड़ी तेज और कातिल जहर है और इसको खा लेने वाला किसी तरह से बच नहीं सकता.

ऊपर से तारीफ यह है कि वैन और हकीम लोग लाख सिर पटककर रह जाएँ पर यह कभी नहीं कह सकते कि जानेवाला जहर के असर से मरा है, क्योंकि काम पूरा कर लेने के बाद यह दवा अपना कोई भी निशान बदन में नहीं छोड़ जाती.

न तो बदन के भीतरी हिस्सों में कोई फर्क आता है और न बाहरी जिस्म में ही कोई खराबी पैदा होती है.

इसे बहुत होशियारी से रखो और आज ही जिस तरह से भी हो इसे महाराज के पेट में पहुँचा दो.

आज सुबह से लेकर शाम छः बजे तक के भीतर - भीतर इस शीशी की पूरी दवा ठिकाने पहुँच जानी चाहिए, औरत:

क्या आज ही?

दारोगा:

हाँ, आज ही, और शाम के पहिले ही.

अब देर करने का बिल्कुल मौका नहीं है.

औरत:

बहुत खून, यह किस तरह दी जा सकती है?

दारोगा:

जिस तरह से चाहो और चिस दफे करके चाहो दे सकती हो, क्योंकि इस दवा में न तो किसी तरह का रंग है न बू और न जायका है.

इसकी बहुत थोड़ी मिकदार भी बहुत काफी है पर तो भी एहतियातन यह पूरी शीशी दे दी जानी चाहिए.

औरत:

बहुत अच्छा.

दारो ०:

मगर काम आज ही होना चाहिए और बड़े होशियारी से होना चाहिए.

औरत:

आप इन दोनों बातों से बेफिक रहिए.

दारोगा:

खाली हो जाने के बाद इस शीशी को किसी ऐसी जगह फेंकना कि .

.

.

.

औरत:

ओह इन बातों की फिक्न आप न कीजिए, इस शीशी को मैं ऐसा गायब कर दूंगी कि मौत को भी पता नहीं लगेगा.

दारोगा:

अच्छा तो इसे लो और मुझे पुनः उसी दरवाजे पर पहुँचा दो, क्योंकि जहाँ तक मैं समझता हूँ अब सूरज निकल आया होगा.

अगर कोई मुझे यहाँ देखेगा .

.

.

.

! औरत:

नहीं, कोई नहीं देखेगा, आजकल महल का यह हिस्सा बिल्कुल सन्नाटे में रहता है और सिवाय मेरे इस तरफ कोई कभी नहीं आता.

औरत ने वह शीशी दारोगा से लेकर अपनी कमर में छिपा ली और तब तहखाने का दरवाजा खोल ऊपर आई.

दारोगा कुछ देर तक तहखाने के अन्दर ही रहा और जब उस औरत ने चारों तरफ घूम - फिर कर इस बात का विश्वास कर लिया कि वहाँ कोई उन लोगों को देखने वाला नहीं है तो उसने दारोगा साहब को भी ऊपर बुला लिया.

दोनों आदमी पुनः उसी दरवाजे के पास पहुंचे जिसकी राह उस औरत ने दारोगा को महल के भीतर किया था.

उस औरत ने दरवाजा खोला और बाहर की तरफ झाँका.

यद्यपि सुबह हो गई थी तथापि उस जगह या आस - पास में कहीं कोई आदमी चलता - फिरता दिखाई नहीं देता था.

औरत ने दारोगा को यह बात बताई और दारोगा लवादे से अपने को अच्छी तरह लपेटे हुए महल के बाहर निकला.

बाहर निकलते - निकलते उसने धीमे स्वर में औरत से कहा, " देखें, काम अगर होशियारी से और आज ही समय के अन्दर हो गया तो फिर तुम्हारे ऐसा भाग्यवान कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ेगा.

?

आज से दो बरस के भीतर ही सबसे पहिले मैं तुम्हें जमानिया की महारानी कहकर पुकारूंगा.

” उस औरत ने मुस्कराते हुए कहा, " आप ऐसे मेहरवान को पाकर मैं आज भी अपने बराबर भाग्यवान किसी को नहीं समझती.

तो इस मामले में आप बिल्कुल बेफिक्र रहें और समझ लें कि आज शाम होने के पहिले आपकी दवा महाराज के पेट के अन्दर पहुँच जाएगी - आगे असर होना आपकी दवा के आधीन है.

दारोगा:

ओह उस तरफ से मुझे पूरा इतमीनान है.

औरत:

मगर देखिए आप केवल कुँअर साहब वाले वादे को ही नहीं बल्कि उस पहिले वादे को भी पूरा करने का खयाल रखिएगा.

दारोगा:

हाँ हाँ जी, उस बारे में तो मैं कसम खा ही चुका हूँ और यह भी कह चुका हूँ कि फिर तुम्हारी कोई जरूरत बाकी न रह जाएगी - बशर्ते कि तुम अपना काम ठीक तरह से पूरा करो.

औरत:

(मुस्कुराते हुए) मुझे भी आप अपने काम और बाद में उतना ही सच्चा पाइएगा जितना कि अपने को.

दारोगा:

अच्छा तो मैं जाता हूँ, उस औरत ने दरवाजा भीतर से बंद कर लिया और दारोगा साहब अपने को छिपाए हुए बाग की चहारदीवारी की तरफ बड़े.

भाग्यवश उन पर किसी की निगाह न पड़ी और वे सहज ही में बाग के बाहर हो गए.

इस समय वे बड़े ही प्रसन्न थे और काम पूरा होने की उम्मीद पाकर उनका चेहरा चमक रहा था.

लम्बे - लम्बे डग बड़ाते हुए दारोगा साहब बहाँ से रवाना हुए और बहुत शीघ्र ही अपने मकान में आ पहुंचे.

।

।

ग्यारहवाँ भाग समाप्त ॥

बारहवाँ भाग

पहला व्यान।

सूर्योदय हुए दो घण्टे के लगभग हो चुके हैं.

इन्द्रदेव संध्या - पूजा से छुट्टी पाकर अभी - अभी उठे हैं और जमानिया के अपनी ससुराल वाले मकान के एक एकान्त कमरे में बैठे दलीपशाह से कुछ बातें कर रहे हैं.

इन्द्रदेव के सामने एक छोटी चौकी है जिस पर बहुत - से कागज - पत्र पड़े हुए हैं, इनमें से एक कागज इन्द्रदेव के हाथ में है और उसी के विषय में दलीपशाह से कुछ कह रहे हैं.

इन्द्रदेव:

यह कागज बड़े काम का मिला.

इसमें दारोगा की शैतानी साफ प्रकट होती है क्योंकि इसमें वह शिवदत्त को लिख रहा है कि ' यद्यपि प्रभाकरसिंह महाराज के रिश्तेदार हैं तथापि आपकी दोस्ती निवाहने के लिए मैं उनसे भी दुश्मनी करने को तैयार हूँ और जैसे हो सकेगा वैसे आठ रोज़ के अन्दर उन्हें गिरफ्तार करके आपके हवाले करूँगा '.

दलीप ०:

केवल एक यह ही नहीं बल्कि ये सभी कागजात जरूरी हैं.

दारोगा के बर्खिलाफ ये सब बहुत अच्छे सबूत हैं और आपको इन्हें बहुत सम्हाल कर रखना चाहिए.

इन्द्र ०:

वेशक सम्हाल कर तो मैं इन्हें जरूर ही रचूंगा मगर .

.

.

.

दलीप ०:

मगर क्या?

इन्द्रः:

मगर यही कि मैं इनसे अभी कोई काम ले न सकूँगा.

दारोगा मेरा गुरुभाई है और मुझे इस बात का अवश्य खयाल रखना होगा कि जहाँ तक हो सके मेरे हाथ से उसे कोई तकलीफ न पहुँचे.

दलीप ०:

चाहे उसकी बदौलत आपको कितनी ही तकलीफ क्यों न पहुँचे, आपके रिश्तेदारों पर क्यों न आफतें आवें, महाराज की जान पर क्यों न बार हो, और खुद आप ही पर क्यों न दुःख पड़े, पर आप अपने गुरुभाई के साथ सख्ती से न पेश आवेंगे!

आपके सामने आपके रिश्तेदार एक - एक करके क्यों न मारे जावें, आपके दोस्तों के गले पर क्यों न छुरी चलाई जावे, पर आप चुपचाप बैठे देखते ही रहेंगे, आपसे उनको बचाने के लिए ऊंगली न उठाई जायेगी.

क्यों न हो भाई साहब, गुरुभाई के आगे दोस्त और रिश्तेदारी चीज ही क्या है! इन्द्र ०:

नहीं भाई दलीप, सो तो नहीं है.

दारोगा की कार्रवाइयाँ देख - देख कर मेरा दिल टुकड़े - टुकड़े हो जाता है पर क्या करूँ लाचार हूँ, कुछ कर नहीं सकता.

एक दफे नहीं बल्कि सैकड़ों दफे उसे भाई और दोस्त के नाम से सम्बोधन कर चुका हूँ, कुछ उसका भी लेहाज करना ही पड़ता है.

दलीप ०:

यह मैं मानता हूँ पर उस लेहाज का कहीं अन्त भी तो होना चाहिए! यह कोई बात नहीं कि आप लेहाज के मारे उससे कुछ न बोलें और वह आपके ही गले पर छुरी रगड़ता जाय! हर चीज का एक खातमा होता है, आपके लेहाज का भी नहीं खातमा होना चाहिए.

इन्द्र ०:

हाँ, सो तो मैं मानता हूँ और जहाँ तक मैं देखता हूँ एक न एक दिन मुझे भी ऐसा करना पड़ेगा, पर फिर यह भी तो एक बात है कि कसूरवार को सजा देने के पहिले उसे चेतावनी देना और सुधारने की कोशिश करना अच्छा है जिसमें भविष्य में उससे कोई खतरा न रह जाय, लाचारी की हालत में ही सजा देनी चाहिए.

दलीप ०:

आपका मतलब शायद यह है कि अभी तक आप दारोगा के साथ अप्रत्यक्ष रूप से जो कुछ करते आये हैं वह एक चेतावनी की तरह है.

मगर भाई साहब में सैकड़ों दफे कह चुका और फिर भी कहता हूँ कि आप इस धोखे में न रहिए.

ये साब दुष्ठ आपकी चेतावनी की पहुँच के बाहर हो चुके हैं.

आप उनके साथ रिआयत करते तथा तरह ही देते रह जाइयेगा और उनका कोई बार ऐसा पड़ जायगा कि आप खुद बेकार हो जाएँगे.

भला दारोगा, गदाधरसिंह, जैपाल और हेलासिंह आदि शैतानों को आपने काले साँप से कमसमझा है?

आप का इनके साथ रिआयत से पेश आना इन्हें दूध पिलाने का काम कर रहा है, इनका जहर बटवे रहा है, और मौका पाने पर ये लोग ऐसा डसेंगे कि फिर हाथ मलने लायक भी न रहियेगा.

इन्द्रः:

तुम ठीक कहते हो, मगर साथ ही इस बात को भी खूब खयाल रखो कि आदमी का पाप आदमी को खाता है.

इन सभों के काम इन्हें खायेंगे.

अगर मैं बेकसूर हूँ, अगर मेरे दोस्त और रिश्तेदार बेकसूर हैं, तो हम लोगों का बाल भी बाँका न होगा और ये अपनी करनी की बदौलत आपसे आप मर मिटेंगे.

दलीप ०:

खैर आपकी जो मर्जी में आवे सो किजिये, मैं इस विषय में आपसे एक दो नहीं बल्कि सैकड़ों दफे बहस कर चुका अब कभी करूंगा नहीं, हाँ जहाँ तक हो सकेगा इन कम्बख्तों के हाथों से आपको और अपने को बचाने की कोशिश करूँगा, आखिर तो जो आपकी गति है सो मेरी भी होगी ही! इन्द्र ०:

(जरा हँसकर) मेरे दोस्त, त्या मामला है जो तुम्हारी हिम्मत ने इस तरह पर आज तुम्हारा साथ छोड़ दिया है?

क्या तुम दुनिया में दारोगा और उसके साथियों को ही सबसे ज्यादा ताकतवर और सबसे ज्यादा कुदरत रखने वाला मानते हो?

क्या तुम समझते हो कि इन्हीं लोगों की कार्रवाई कारगर होगी और हम लोगों की धूल में मिल जायगी, इन्हीं लोगों की चालाकी पूरी उतरेगी और हम लोगों की फिजूल होगी?

ये ही लोग अन्याय के पथ पर चलते हुए भी जीत जाएँगे और हमलोग न्याय के पथ पर चलते हुए भी हार जायेंगे?

जरा हिम्मत के साथ बातें करो, जोश के साथ कार्रवाई करो! सफर के शुरू में ही पस्त न हो जाओ! जरा भले - बुरे में दो - दो चोटें तो हो जाने दो.

आखिर इन और हम सभी के ऊपर एक ईश्वर भी तो है! दलीप ०:

मैं तो कह चुका कि अब आपसे बहस न करूंगा और न समझाने की ही कोशिश करूँगा.

आपके जो जी में आवे किजिये, मैं चुपचाप बैठा तमाशा देखा करूंगा.

अच्छा अब आप इन कागजों को उठाकर कहीं ठिकाने से रखिये जिन्हें मैं बड़ी मुश्किल से शिवदत्त के ऐयारों को धोखा दे उनके कब्जे से निकाल लाया हूँ और मुझे बताइए कि

आज कल यह जमानिया में क्याउपद्रव हो रहा है और हुँअर गोपालसिंह कई दिनों से कहाँ गायब हो रहे हैं?

मुझे तो इस मामले में भी दारोगा ही की कोई कार्रवाई मालूम होती है.

इन्द्र ०:

(कागजों को उठाकर हिफाजत से रखते हुए) हाँ, विश्वास तो मुझे भी ऐसा ही हो रहा है.

मैं खुद गोपालसिंह के गायब हो जाने से बड़े तरदुद में हूँ और दिलोजान से उन्हें खोज निकालने की कोशिश कर रहा है.

परन्तु अब दो - एक रोज के अन्दर ही उसके पता लगने की पूरी उम्मीद है क्योंकि गदाधरसिंह मुझे बड़ा भरोसा दिला कर गया दलीप ०:

गदाधरसिंह! क्या वह अब पुनः आपका साथी बना है?

इन्द्र ०:

(हँसते हुए) हाँ, क्या तुम्हें ताज्जुब है?

दलीप ०:

ख्याल रखिए, आप साँपों के साथ खेल रहे हैं! इन्द्र ०:

नहीं, इस बार तो गदाधरसिंह सचमुच खूबसूरती के साथ हम लोगों का काम कर रहा है.

दलीप ०:

इसके पहले भी वह कई बार ऐसा कर चुका है.

सो तो ठीक है पर इस बार उसे कुछ ऐसी चटपटी सजा दे दी गयी है कि मुझे तो आशा है वह अवश्य सुधर जायगा.

दलीप सो क्या?

इन्द्र ०:

इस दफे उसे कुछ तिलिस्मी चक्कर में डालकर उसका मजा चखाया गया है जिससे वह बिल्कुल डर गया है और कसम खा बैठा कि अब वह कभी हम लोगों को छोड़ दारोगा वगैरह का साथी नहीं बनेगा.

इतना कह इन्द्रदेव ने वह सब हाल मुख्तसर में कह सुनाया जो हमारे पाठक दसवें भाग के चौथे बयान में उस जगह पड़ आये हैं जहाँ भूतनाथ ने तिलिस्मी चक्कर में पड़कर दयाराम आदि की अद्भुत बातचीत सुनी और कई डरावनी चीजें देखी थी.

हमारे बुद्धिमान पाठक तो समझ ही गए होंगे कि वह सब इन्द्रदेव की कार्रवाई थी जो शुरू ही से यह कोशिश कर रहे हैं कि किसी तरह यदि यह बिगड़ा हुआ ऐयार (भूतनाथ) सुधर जाय तो संसार का बड़ा ही उपकार हो और इसलिए बहुत कुछ तकलीफें उठाने पर भी बाज नहीं आते.

!! इन्द्रदेव ने दलीपशाह से वह सब बातें भी कह सुनाई जो उनसे और घबराये हुए भूतनाथ से हुई थीं?

और तब कहा, " इस बात को यद्यपि कुछ ही दिन हुए हैं परन्तु इसी बीच में भूतनाथ ने कई अद्भुत काम किए हैं और कितनी ही गुप्त बातों का पता लगाया है .

.

कहते हुए इन्द्रदेव चुप हो गए क्योंकि बाहर से किसी के ताली बजाने की आवाज सुनाई पड़ी.

उन्होंने पुकारा, " कौन है, भीतर आओ.

" जिसके साथ ही उनका नौकर कमरे के अन्दर आया और बोला, " गदाधरसिंह ऐयार आए हैं और किसी जरूरी काम से अभी आपसे मिलना चाहते हैं.

इन्द्रदेव ने दलीपशाह की तरफ देखते हुए कहा, " बुला लाओ.

" जिससे कुछ ही देर बाद भूतनाथ ने कमरे के अन्दर पैर रखा, दलीपशाह को वहाँ बैठे हुए देख वह झिझका पर फिर दोनों आदमियों को सलाम कर इन्द्रदेव का इशारा पा एक तरफ बैठ गया.

इस समय भूतनाथ का चेहरा कुछ उदास - सा हो रहा था जिस पर इन्द्रदेव का ध्यान तुरन्त गया और उन्होंने पूछा, " क्यों त्या मामला है?

" भूतनाथ ने कहा, “ एक विचित्र घटना हुई है जिसके लिए आपकी सलाह लेने आया हूँ, मग .

.

.

इतना कह भूतनाथ ने दलीपशाह की तरफ देखा और तब चुप हो रहा.

इन्द्रदेव ने कहा, " तुम इनके सामने कोई बात कहते हुए हिचकिचाओ मत.

ये तुम्हारे और हमारे सच्चे दोस्त हैं अभी हम इनसे तुम्हारी ही बात कर रहे थे.

इन्होंने आज ही कल में दो - एक ऐसी बातों का पता लगाया है जिन्हें जब मैं तुम्हें सुनाऊँगा तो तुम बहुत खुश होगे, तुम बेखटके कहो.

" भूत ०:

जो आज्ञा, पर इनकी कार्रवाइयों का हाल जानकर मैं इन्हें अपना दोस्त समझते डरता हूँ, आपने ये भले ही दोस्त हों मगर मेरे साथ .

.

.

.

१.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, ग्यारहवाँ बयान.

दलीप ०:

भूतनाथ, मैं नहीं कह सकता कि मेरे बारे में तुम्हारे दिल में क्या शक बैठा हुआ है, पर इतना मैं जरूर कह सकता हूँ कि तुम कभी और कदापि मेरी किसी ऐसी कार्रवाई का हाल नहीं कह सकते जिससे साबित हो कि मैंने तुम्हारे साथ दुश्मनी की है.

भूत:

कदाचित् ऐसा ही हो, (इन्द्रदेव की तरफ देखकर) खैर तो मैं कहता हूं, इन्द्र::

हाँ हाँ कहो.

भूत ०:

आपसे उस दिन मैं बिदा हुआ तो तीन बातों की फिक्र में लगा, एक तो दामोदरसिंह के भेद का पता लगाना, दूसरे प्रभाकरसिंह को ढूंढ़ना और तीसरे कुँअर गोपालसिंह को खोज निकालना.

इस तीसरे काम में मुझे सबसे ज्यादा सफलता मिली.

आपको शायद यह जानकर ताज्जुब होगा कि कुँअर साहब जमानिया की सरहद के बाहर नहीं इन्द्र ०:

क्या?

जमानिया के बाहर नहीं हैं! तुमने उन्हें खोज निकाला.

भूत ०:

जी हाँ, एक गुप्त कमेटी इन्द्र::

हाँ हाँ, मैंने उसका नाम अच्छी तरह सुना है.

भूत::

उस गुप्त कमेटी ने ही कुँअर को गिरफ्तार किया, उसी के कब्जे में कुँअर साहब अभी तक हैं, उसी ने दामोदरसिंह का खून किया और वहीं इस समय महाराज साहब को इस दुनिया से उठाने की फिक्र में हैं.

भूतनाथ की बातें सुन दलीपशाह और इन्द्रदेव ताज्जुब में भर उसका मुंह देखने लगे.

भूतनाथ बोला- " दो नये ऐयारों को जिनका नाम मायासिंह और गोबिन्द है और जो अकसर दारोगा साहब का काम किया करते हैं मैंने गिरफ्तार किया क्योंकि उनकी बातचीत से मुझे मालूम हुआ था कि वे दोनों उस कमेटी के सदस्य हैं.

इसके पहिले ही मैं कमेटी के स्थान वगैरह का पता लगा चुका था अस्तु मैंने अपने दो शागिर्दो को उनका रूप बना उस उन शागिर्दो के जाने से बहुत बड़ा काम निकला क्योंकि भाग्यवश वे ऐसे समय में वहाँ पहुँचे जब कि कमेटी बैठी हुई थी.

सभा में भेजा.

उनके सामने ही गोपालसिंह वहाँ लाये गये और कमेटी के सभापति ने उनसे कुछ बातें की जिनके सुनने से वे समझ गए कि यह कमेटी बड़ी कातिल है.

दामोदरसिंह भी उसी सभा के सदस्य थे पर उनके दुष्ठ कामों से लाचार होकर उसके दुश्मन बन बैठे जिसका नतीजा यह निकला कि उनको शायद जान से ही हाथ धोना पड़ा.

उस कमेटी के सभापति की बातों से मालूम हुआ कि सभा बड़े महाराज की भी जान लेने की फिक्र में है.

इन्द्र):

अच्छा गोपालसिंह अब कहाँ हैं?

भूत ०:

इसका ठीक पता मेरे शागिर्दो को नहीं लगा पर जहाँ तक मैं समझता हूँ आज या कल तक वे वापस आ जाएँगे.

इन्द्र ०:

वे आवें तो कुछ पता लगे और उस कमेटी का भी कुछ खुलासा हाल मालूम हो.

भूत ०:

शायद – मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि उन्हें कमेटी के किसी हाल का पता लगेगा.

अब इस समय तो सबसे जरूरी बात बड़े महाराज की जान बचाना है.

इन्द्र ०:

तो क्या उनकी जान ऐसे खतरे में है?

भूत:

खतरा! अगर मेरा ख्याल ठीक है तो वे कल का सूर्य नहीं देखने पावेंगे.

इन्द्र क्यों.

क्यों?

भूत:

मेरे वे दोनों शागिर्द बड़े ही धूर्त और अपने काम में होशियार हैं.

वे कमेटी में जाकर केवल चुपचाप बैठे ही नहीं रहे बल्कि और भी कई बातें को उन्होंने पत्ता लगाया, उन्हीं की जुबानी मुझे मालूम हुआ कि कमेटी के किसी सदस्य ने महल की एक लौंडी को अपने मेल में मिला लिया है और उसी की मारफत महाराज साहब को आज ही जहर दिया जायगा.

इन्द्र ०:

पर वह कौन लौंडी है?

उसका नाम मालूम हुआ?

भूत:

केवल नाम ही मालूम नहीं हुआ बल्कि मैंने उसका पता लगाया है और उसे गिरफ्तार किया और तब उसकी सूरत बना अपने एक शागिर्द को महल अन्दर भेजा और भाग्यवश मेरी कार्रवाई ठीक उतर भी गई क्योंकि पहुँचने के कुछ ही देर बाद उस लौंडी की (अर्थात् मेरे शागिर्द की) जरूरत पड़ी.

कमेटी के वे मेम्बर साहब उससे मिले और क्या आप गुमान कर सकते हैं कि वे मेम्बर कौनहजरत थे?

इन्द्र कौन था?

भूत:

' खास आपके गुरुभाई साहब इन्द्र ०:

दारोगा साहब?

भूत ०:

जी हाँ, दारोगा साहब! इन्द्रदेव ने ताज्जुब और अफसोस की निगाह दलीपशाह पर डाली.

दलीपशाह ने कहा, “ शायद अब आप इस कमीने की तरफ से होशियार हों! " इन्द्र ०:

(भूतनाथ से) अच्छा तब?

भूत:

दारोगा साहब से और मेरे शागिर्द से खूब लम्बी - चौड़ी बातें हुईं! उन्होंने उसे बड़े - बड़े सब्जबाग दिखाए और बड़े - बड़े वादे किए, मुख्तसर यह कि (क़मर से एक शीशी निकाल और इन्द्रदेव के सामने रख कर) यह शीशी उसके सुपुर्द करके उसे हुक्म दिया गया कि जिस तरह से भी हो सके यह दवा आज शाम के पहिले महाराज के पेट के अन्दर पहुँचा दी जाय, भूतनाथ की बात सुनने और उसी शीशी की दवा देखने के साथ ही इन्द्रदेव कांप उठे और घबराकर बोले, " ओफ, यहाँ तक नौबत आ गई! मैं इस जहर को बखूबी जानता हूँ, हाय हाय, बेचारे वृद्ध महाराज की मौत क्या इस तरह बदी है! " इन्द्रदेव ने अपना सिर झुका लिया और कुछ देर के लिए गहरी चिन्ता में डूब गये.

दलीपशाह और भूतनाथ बेचैनी के साथ उनकी तरफ देखने लगे.

कुछ देर बाद अपने परेशान दिमाग को दुरुस्त कर इन्द्रदेव ने लम्बी साँस खींची और तब दलीपशाह की तरफ देख कर कहा, " दोस्तों की सलाह न मानने का कभी - कभी कैसा भयानक नतीजा निकलता है यह अब मुझे मालूम हो रहा है.

आप लोग बराबर दारोगा की तरफ से होशियार रहने के लिए मुझे कहते थे पर मैं समझ - बूझ कर भी उस पर कुछ विशेष ध्यान नहीं देता था और अब उस भूल का फल दिखता है.

आज अगर हमारे भाई गदाधरसिंह हमारी मदद न करते तो कैसा अनर्थ हो जाता.

यह जहर जरूर महाराज के पेट में उतर जाता और तब ब्रह्मा भी आकर उन्हें बचा नहीं सकते थे.

" दलीप ०:

वेशक ऐसा ही है, और उस हालात में हम लोगों को कितना सन्ताप होता इसका ठिकाना नहीं! इन्द्र ०:

बेशक क्योंकि हम लोग अब तक जानबूझकर आग के साथ खेल रहे थे! दलीप ०:

खैर इसे भी ईश्वर की दया समझिये कि अब भी पता लग गया और विशेष अनर्थ नहीं होने पाया.

मगर अब तो आप दारोगा की तरफ से .

.

.

इन्द्र ०:

(जोश के साथ) हाँ, अब तुम उस कम्बख्त के प्याले को लबरेज समझो! अब मैं उसे किसी तरह माफ नहीं कर सकता, मैं आज ही और अभी अभी उसका प्रबन्ध करता हूँ क्योंकि अब वह खुला रहने के काबिल नहीं है! (भूतनाथ से) भाई साहब, हम लोग सब कोई तुम्हारे एड्सातमन्द हैं कि तुमने महाराज की जान बचाई! अगर तुम न होते तो इस समय अनर्थ हो चुका था !! भूत:

(सिर नीचा करके) जी हाँ, इसे ईश्वर की कृपा की चाहिये कि मैं मौके पर पहुँच गया और कुछ कर सका नहीं तो अनर्थ हो जाने में सन्देह ही क्या था, पर फिर भी आप यह न समझिये कि केवल इसी तक बस है, न जाने दारोगा और भी क्या - क्या कर रहा है या महाराज की जान लेने का और कैसा प्रबन्ध कर चुका है.

मुमकिन है उसने किसी और के सुपुर्द भी यह काम किया हो जिसमें अगर वह लौंडी इसे पूरा न कर सके तो भी उसका वार खाली न जाने पावे.

इन्द्र ०:

सम्भव है, मगर कोई हर्ज नहीं, अगर इस वक्त तक महाराज जीते हैं तो कोई परवाह नहीं, अब मैं सब सम्हाल लूंगा.

मेरे दोस्त, तुम निश्चय रत्नम्खो कि अब दारोगा के सबब से महाराज का एक बाल बाँका होने न पावेगा.

ओफ अब हद्द हो गई! क्या इससे बटवे कर भी ह्रामजदगी और निमकहरामी की कोई बात हो सकती है?

अच्छा भूतनाथ, क्या तुम कह सकते हो कि इस समय महाराज कहाँ हैं!

भूत:

हाँ अच्छी तरह, क्योंकि दारोगा के लौट जाने के बाद ही फौरन मैंने इस बात का पता लगाया.

महाराज को आज सुबह किसी सवार ने एक चीठी दी जिसे पड़ने के साथ ही वे बेचैन हो गए और उसी समय उठ कर तिलिस्म के अन्दर चले गये जहाँ से इस समय से घण्टे भर पहिले तक वे नहीं लौटे थे! इन्द्र ०:

(कुछ सोच कर) अच्छा तो भूतनाथ, इस समय मैं तुमसे विदा माँगता हूँ, तुमने जो कुछ किया उसका बदला तो परमेश्वर तुम्हें देगा ही पर मैं भी सच्चे दिल से यह प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हारी बुद्धि नेक राह पर बनाये रखे जिसमें तुम नामवरी के साथ सुक्रर्म करते हुए नेक ऐयार कलाओ और तुम्हारे हाथ से लोगों का उपकार हो! मगर तुम अब एक सायत के लिए भी बेफिक्र न रहना, बराबर दारोगा की तरफ से होशियार रहना और पता लगाते रहना कि वह क्या करता है.

(दलीपशाह से) मित्र, अब कुछ देर के लिए मैं तुमसे भी छुट्टी माँगूंगा.

तुम खुशी से यहां आराम करो और सफर की थकावट मिटाओ.

मैं इस समय जाता हूँ, कब तक लौट सकूँगा सो तो नहीं कह सकता पर आज अगर मेरा नाम इन्द्रदेव है तो इस जहरीले साँप से भी भयानक दारोगा के दाँत हमेशा के लिए तोड़ दूंगा.

इतना कह इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और तेजी के साथ कमरे के बाहर चले गये.

मगर इन्द्रदेव, क्या तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकोगे?

क्या दारोगा की कार्रवाइयों के जाल में अच्छी तरह फंस गए हुए महाराज को बचा सकोगे?

दूसरा व्यान।

महल से लौटने के बाद दारोगा साहब जब अपने घर पहुंचे तो दरवाजे ही पर उन्हें महाराज का एक खास खिदमतगार मिला जिसे देख उन्होंने इशारे से पूछा, “ क्या है?

" खिदमतगार ने उन्हें देखते ही अदब से सलाम किया और तब कोई गुप्त इशारा किया जिसे देख दारोगा साहब ने उसे अपने पीछे - पीछे आने का हुक्म दिया और अपने बैठने के कमरे में पहुंचे जहाँ इस समय बिल्कुल निराला था.

दारोगा गद्दी पर बैठ गया और वह खिदमतगार भी उनके सामने जा बैठा.

दारोगा ने पूछा क्या मामला है?

" उस खिदमतगार ने इधर - उधर देख धीरे से कहा, " कल रात को एक सवार महाराज के लिए एक खत लाया था जिसे मैंने आज सुबह महाराज को दिखाया.

न जाने महाराज ने उसमें क्या पड़ा कि बहुत बेचैन हो गये, देर तक किसी फिन में डुबे रहे और तब मुझसे यह कह कि मैं तिलिस्म में जाता हूँ कहीं चले गये.

उनके जाने के बाद मैंने वह चीठी तथा एक अंगूठी जो उसके साथ थी उठा ली और अब उसे आपको दिखाने के लिए ही यहाँ आया हूँ, जिसने महाराज पर वह इतना कह खिदमतगार ने अंगूठी और चीठी निकाल कर दारोगा साहब के सामने रख दी, विचित्र असर पैदा करके उन्हें तिलिस्म के अन्दर जाने पर मजबूर किया था.

दारोगा साहब उस अंगूठी को देखते ही चौंक पड़े क्योंकि एक ही निगाह में उन्हें मालूम हो गया कि यह वही है जो बराबर मालती की उंगली में पड़ी रहा करती थी मगर जब उन्होंने वह चीली पड़ी तो उनके होशवाश गायब हो गए.

हमारे पाठक इस चीठी को पड़ चुके हैं, अस्तु उन्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि उसका क्या मजमून था पर हमारे दारोगा साहब को बेचैन करने के लिए वह खत

काफी था.

उन्होंने उसे पड़ने के साथ ही सिर पर हाथ मारा और तब बड़ी मुश्किल से अपने के सम्हाल कर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए.

कुछ देर बाद उन्होंने नौकर से पूछा दारोगा:

इस चीठी को पड़ महाराज क्यातिलिस्म में चले गये?

खिद ०:

जी हाँ, तुरन्त ही.

दारोगा:

किस रास्ते से गये?

खिद ०:

वही महल के अन्दर वाली राह से, खास महाराज के कमरे में से जो राह है उसी से — क्योंकि महाराज सोकर उठे ही थे जब यह चीठी मैंने उन्हें दी.

दारोगा:

हाँ हाँ, मैं उस राह को खूब जानता हूँ.

अच्छा महाराज के पास कोई हथियार भी है?

खिद ०:

जी हाँ, अपनी तिलिस्मी तलवार वे साथ लेते गये हैं.

न जाने दारोगा ने क्या सोचा हुआ था कि खिदमतगार के इस जबाब से वह एकदम घबड़ा उठा, पर इस समय उस आदमी के सामने अपनी घबड़ाहट जाहिर करना शायद उसने उचित न समझा और कहा, “ तुमने इनाम पाने का काम किया जो यह चीठी और अंगूठी मुझे ला दी, अब तुम जाओ मगर जैसे ही महाराज तिलिस्म से लौटें खबर कर देना.

" खिद ६०:

बहुत खूब, तो वह चीठी और अंगूठी मुझे मिल जाय, शायद लौटने पर महाराज उसे तलब करें, दारोगा:

नहीं, यह तुम्हें न मिलेगी, अगर माँगे तो कुछ बहाना कर देना.

खिद ०:

सो कैसे हो सकता है, महाराज तुरन्त शक्र करेंगे और मुझे ही चोर छहावेंगे.

दारोगा:

नहीं ऐसा न होने पावेगा, तुम मुझ पर विश्वास रत्म्बो.

बस उनके आते ही मुझे खबर देना, मैं सब सँभाल लूँगा.

" बहुत खूब " कह खिदमतगार ने उसे सलाम किया और बाहर चला गया.

उसके जाने के बाद दारोगा बैठे - बैठे तरह - तरह की बातें सोचने लगा.

" यह कौन आदमी है जिसने यह चीठी भेजी?

इसके अक्षर कुछ - कुछ पहिचाने हुए तो मालूम होते हैं पर जान - बूझ कर बहुत बिगाड़ कर लिखे गये हैं इसलिए यह जरूर मेरे जान - पहिचान बालों में ही कोई है.

क्या यह मालती की लिखावट हो सकती है?

मुमकिन है कि उसने ही मुझे सत्यानाश करने के लिए इसे भेजा हो क्योंकि यह अंगूठी बराबर उसकी उंगली में देखा करता था.

मगर नहीं, उसके पीछे हेलासिंह और जैपाल लगे हुए हैं और अब तक उसे जरूर गिरफ्तार कर चुके होंगे.

पर सम्भव है कि वह उनके हाथ से निकल गई हो.

बेशक यही बात है और जरूर यह उसी की शैतानी है.

अफसोस, नाहक झूठी लालच में पड़ मैंने इसे जीता रख छोड़ा, अगर हाथ में आते ही खतम कर दिया होता तो आगे की यहाँ तक नौबत न आती?

अत्र देखें यह कम्बख्त कहाँ तक आफत बरपा करती और मुझे क्या - क्या दुःख पहुँचाती है! महाराज को बड़े बेमौके इसने चैतन्य किया, अगर आज भर और कुछ न करती तो बस फिर कल तो .

.

.

त्र देखें महाराज क्या करते हैं?

इस चीठी को पाते ही एक दफे तो उनके कान खड़े हो गये होंगे, और जब वे तिलिस्म में गए हैं तो जरूर उन्होंने इस चीठी की सचाई जाँचने का निश्चय कर लिया है! तो क्या वे इतने बड़े तिलिस्म के अन्दर से मेरे कैदियों को खोज निकालेंगे, क्योंकि सिवाय कैदियों के और तो मेरे बर्खिलाफ कोई सबूत उन्हें मिल ही नहीं सकता.

अगर कैदी उन्हें न मिले तब तो फिर कोई बात नहीं पर यदि एक भी कैदी उनके हाथ लगा तो मेरी कुशल नहीं.

पर उनके हाथ कोई लगेगा क्यों?

क्या वे एक - एक कोठरी में घुसकर खोजते फिरेंगे?

क्या इस कअईं सों कोस तक फैले हुए तिलिस्म में किसी को ढूँढ़ना एक या दो दिन का काम है?

पर मुमकिन है कि तिलिस्म बनाने वालों ने इसकी भी कोई तरकीब कर रखी हो कि यहाँ का मालिक जब चाहे देख सके कि कहाँ क्या हो रहा है, ऐसा होना कोई असम्भव नहीं है और ऐसा हुआ तो महाराज बड़े सहज में पता लगा लेंगे कि कहाँ कौनआदमी बन्द है.

तब फिर क्या करना चाहिए?

क्या महाराज का पीछा करके देखू कि वे कहाँ हैं और क्या कर रहे हैं?

नहीं, यह तो नहीं हो सकता, इस समय वे किस जगह हैं इसका पता क्योंकर लग सकता है! व्यर्थ का समय नष्प होगा और कुछ नहीं.

तब फिर क्या अजायबधर, लोहगड़ी आदि में बन्द कैदियों को निकाल लूँ?

हाँ, यह हो सकता है, कोई मुश्किल बात नहीं है, जहाँ - जहाँ मेरे कैदी बन्द हैं वहाँ - वहाँ से उन्हें हटा लूँफिर जो होगा देखा जाएगा.

अभी तो महाराज अपने ही तिलिस्म में होंगे वहाँ तक पहुँने भी नहीं होंगे और जब उन्हें कहीं कोई मिलेगा नहीं तो फिर डर कैसा?

यों भी अब डर क्या! जब ओखली में सिर डाला है तो मूसल से क्या डरना.

आज के बाद तो महाराज का डर हमेशा के लिए दूर कर दूंगा, पर आज भर तो बेशक खौफ खाना पड़ेगा.

न जाने आते ही क्या हुक्म दे बैठे! बल्कि अच्छा तो यह हो कि आज तिलिस्म के अन्दर ही.

.

हाँ यह तो ठीक बस बस यही ठीक है! " यकायक दारोगा को न जाने क्या सूझ गया कि वह उसी से खिल उठा! कुछ देर तक तो आँखें बन्द कर कुछ सोचता रहा और इसके बाद उठ खड़ा हुआ.

बगल ही में एक कोठरी थी जिसमें दारोगा तरह - तरह की पोशाकें, कपड़े, हथियार और ऐयारी के सामान रखाकरता था.

दारोगा इसी कोठरी में पहुंचा, एक आलमारी में से कुछ रंग - रोगन निकाला और एक आईना सामने रख अपने चेहरे पर मामूली सा फर्क डाला, इसके बाद जो कपड़े वह पहिने था सो उतार डाले.

एक मुसलमानी ढंग की पोशाक जो बहुत ही फटी - चिथी और मैली थी निकाल कर पहनी.

ऊपर से एक बहुत ही मैली चादर ओड़ी पर फिर कुछ सोच उसे कमर से बाँधा और तब एक लबादा निकाल बदन पर डाल लिया.

इसके बाद खूंटियों से ढंगे हुए हथियारों में से एक खुखड़ी निकाल कपड़े के अन्दर छिपाई और वह बेहोशी का तमंचा भी ले लिया जिससे कई बार काम ले चुका था.

इसके बाद आईने की तरफ गौर से देखा और जब विश्वास हो गया कि यकायक कोई उसे देखकर पहिचान नहीं सकता तो यह कहता हुआ बाहर निकला- " अफसोस, अगर मैं कुछ ऐयारी जानता होता तो क्या बात थी! " बाहर आ दारोगा ने एक दूसरी आलमारी खोली.

उसमें कई तरह के सामान से भरे छोटे - बड़े बटुए पड़े हुए थे जिनमें से एक निकाल लिया और तब कई कोठरी - दालानों में से होता हुआ एक चोर दरवाजे की राह मकान के बाहर निकल गया.

तीसरा व्यान।

अब हम कुछ देर के लिए महाराज गिरधरसिंह के साथ चलना चाहते हैं जो बहुत ही घबराहट के साथ अपने तिलिस्म के दूर - दूर तक फैले हुए हिस्सों में खोज कर उन आदमियों का पता लगाने की फिक्र में हैं जिनके वहाँ मौजूद होने की उन्हें खबर लगी है.

हम ऊपर लिख आये हैं कि महाराज ने सबसे पहिले लोहगड़ी में जाने और जाँच करने का निश्चय किया है अस्तु हम महाराज के पहिले ही वहाँ पहुँच कर देखते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है क्योंकि बेचारी मालती को गिरफ्तार कर लेने के बाद दुष्ठ जैपाल और हेलासिंह अभी तक यहीं मौजूद हैं जिन्हें इस बात का कुछ भी पता नहीं है कि महाराज को खबर लग चुकी है और भण्डा फूटा ही चाहता है.

सुबह होने में कुछ देर बाकी है.

जैपाल लोहगड़ी के लोहे वाले दालान में एक गमछा बिछाये गहरी नींद में पड़ा हुआ है और हेलासिंह कुछ सोचता हुआ बाग में टहल रहा है.

उसकी गरदन नीची है और मालूम होता कि वह किसी गहरी चिन्ता में पड़ा हुआ टहलते - टहलते हेलासिंह रुका और तब एक बार सोए हुए जैपाल की तरफ देखकर बोला, " चाहे जो हो, मालती को तो मैं अपने कब्जे के बाहर जाने न दूंगा.

अगर यह मेरे पास रही तो दारोगा साहब हमेशा मुझसे दबते रहेंगे.

मगर दिए बिना बनता भी तो नहीं.

ये जैपालसिंह जो सिर पर बैठे हैं, उसे लेकर ही पिण्ड छोड़ेंगे तो फिर किया क्या जाय?

(सोचकर) अच्छा अगर उसे इस तहखाने से हटा कहीं दूसरी जगह रख आऊँ तो कैसा हो, जैपाल से कह दूंगा कि होश में आकर कहीं चली गई होगी.

मगर नहीं, उसे जरूर शक हो जाएगा कि यह मेरी ही कार्रवाई है.

जैपाल के सामने ही कुछ ऐसी तर्कीब होनी चाहिये कि मालती इसके हाथ न लगे पर रहे इसी गड़ी के अन्दर ही, बाद में कभी जब चाहूंगा ले जाऊँगा.

" इतना कह हेलासिंह ने कुछ देर तक गौर से कुछ सोचा और तब जैपाल के पास जा हाथ से हिलाकर उसे जगाया, जब वह आँख मलता हुआ उठा तो हँसते हुए कहा- " वाह भाई, खूब सोते हो, मैं नहा - धोकर भी निश्चिन्त हो गया और अभी तुम्हें दीन - दुनिया की कुछ खबर ही नहीं! जैपाल चौंककर उठ बैठा और बोला, " क्या बतावें न जाने कैसी गहरी नींद आ गई तो इतनी देर हो गई.

अच्छा अब घर की फिक्र कीजिए.

मालती को ले आना चाहिये.

हेला ०:

क्या तुम स्नान इत्यादि नहीं करोगे?

जैपाल:

(आसमान की तरफ देखकर) नहीं, बहुत देर हो गई, अब घर जाकर ही यह सब होगा.

हेला ०:

अच्छी बात है, तो चलो फिर उसी तहखाने में, जैपाल:

(खड़ा होकर) चलिए.

दोनों आदमी मकान के अन्दर घुसे.

कई गुप्त और पेचीली राहों से होता हुआ जिनका हाल यहाँ लिखना व्यर्थ है हेलासिंह जैपाल को लिये एक बड़े कमरे में पहुंचा जिसके तीन तरफ तो बड़े - बड़े दरबाजे थे जो इस समय बन्द थे और चौथी तरफ एक लोहे का बड़ा जंगला कमरे की पूरी चौड़ाई में बना हुआ था जो कि शायद कैदखाने के काम आता होगा क्योंकि इस समय हम उसी के अन्दर बेचारी मालती को सुस्त बैठे आँसू बहाते पा रहे हैं.

!! जैपाल और हेलासिंह की आहट पा एक बार मालती ने सिर उठाकर देखा मगर फिर नीचा कर लिया.

जैपाल ने हेलासिंह के कान में कहा, " इसे बेहोश कर ले जाने में सुभीता होगा, पर हेलासिंह ने इसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और गौर के साथ बाईं दीबार में बनी हुई एक छोटी आलमारी की तरफ देखने लगा जिसका पल्ला खुला हुआ था और कोई चमकती हुई चीज अन्दर दिखाई पड़ रही थी.

जैपाल का हाथ पकड़े हुए लपककर हेलासिंह उस आलमारी के पास गया और तब जैपाल ने देखा कि उसके अन्दर चाँदी की बनी हुई एक पुतली है जो अपनी जगह पर नाच रही थी और एक हलकी आबाज उसके मुंह से निकल रही थी जो गाने की तरह मालूम होती थी.

नाचती हुई इस पुतली को देखते ही हेलासिंह का चेहरा पीला पड़ गया और उसके मुँह से डर की आवाज निकल गई, जैपाल को यह देख ताज्जुब हुआ और उसने पूछा, “ क्या मामला है?

" परन्तु हेलासिंह ने कोई उत्तर न दिया और दीवार से उउंग कर चारों तरफ पागलों की तरह देखने लगा.

जैपाल का ताज्जुब और भी बड़ा और उसने हेलासिंह का हाथ पकड़ कर कहा, " आखिर क्या बात है?

आपकी ऐसी हालत क्यों हो रही है?

" बड़ी मुश्किल से हेलासिंह के मुंह से निकला – ' भागो भागो, महाराज आ रहे हैं.

" और तब उसने उधर पैर बड़ाया जिधर से वे दोनों आये थे, पर उसी समय कमरे के बन्द दरवाजों में से एक बड़े जोर से खुल गया और तिलिस्मी तलवार हाथ में लिये महाराज गिरधरसिंह ने कमरे के अन्दर कदम रखा.

महाराज की निगाह इन दोनों पर पड़ी और उन्होंने देखते ही कहा, " मैं किसे अपने सामने देख रहा हूँ! "

महाराज को देखते ही इन हरामजादोको तो मानों काट मार गया.

पैर इस तरह जमीन के साथ लग गये मानो कभी छोड़ेंगे ही नहीं और जबान तालू के साथ चिपक गई.

दोनों सकते की - सी हालत में हो महाराज का मुंह ताकने लगे.

महाराज शायद उनसे कुछ पूछते या कहते पर उसी समय उनकी निगाह जंगले के अन्दर बन्द मालती पर पड़ी और झपटकर उसके पास पहुँचे.

एक गहरी निगाह उसके ऊपर डाली और ताज्जुब के साथ बोले- " हैं, मैं किसे देख रहा हूँ?

क्या तू मालती है?

" मालती ने हाथ जोड़ महाराज को प्रणाम किया और रूंधे हुए गले से बोली, " जी हाँ महाराज, मैं मालती ही हूँ ".

महाराज ने जंगला खोला और अन्दर आ हाथ पकड़ उठाना चाहा पर वह उनके पैर पर गिर पड़ी और आँसू बहाने लगी.

महाराज की भी आँखें भर आईं और वे दम - दिलासा देकर मालती को उठाते हुए प्यार के साथ उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे.

जब वह कुछ शान्त हुई तो महाराज ने पूछा - ' सबसे पहिले यह बता कि तू इस जगह कैसे पहुंची और (जैपाल तथा हेलासिंह कीतरफ बताकर) इन दोनों को मैं यहाँ क्यों देख रहा हूँ?

" मालती:

मेरा हाल बहुत बड़ा और दर्दनाक है जिसका मुख्तसर यही है कि आपके दारोगा साहब और इन कम्बख्तों की बदौलत ही मैं इस दशा को पहुंची और इन्हीं दोनों ने मुझे इस जगह बन्द कर रखा है.

इतना सुनते ही महाराज की भृकुटि चड़ गई और वे आँखें लाल कर तिलिस्मी तलवार उठाए हुए जैपाल और हेलासिंह की तरफ लपके.

करीब ही था कि इन दोनों के सर जमीन पर लुढ़कते हुए दिखाई देते पर मालती ने दौड़कर महाराज को रोका और हाथ जोड़कर कहा, " मेरी एक अर्ज सुनकर तब महाराज कुछ करें! " महाराज रुककर बोले, “ इन हरामजादों का दुनिया से उठ जाना ही बेहतर है! " मालती ने जवाब दिया, “ सो तो ठीक है पर अभी इनके मारने का मौका नहीं है.

महाराज:

सो क्यों?

मालती:

यह मैं इनके सामने नहीं कह सकती, यदि महाराज इनको कुछ दूर हटा दें तो मैं कहूँ,

सुनते ही महाराज ने कड़ी निगाह जैपाल और हेलासिंह पर डाली और उस जंगले की तरफ इशारा करके जिसमें मालती बन्द थी कहा – ' भीतर जाओ! " डरते और कांपतेहुए दोनों दुछ उस जंगले के अन्दर घुस गये और मालती ने जंगले की जंजीर लगा दी.

इसके बाद माहाराज के पास आकर बोली, " महाराज, इन दोनों को मारने का अभी मौका नहीं था.

ऐसा करने से एक बड़ा भारी हर्ज पड़ता है ।

!!महाराज :

वह क्या?

मालती:

इस गढ़ी की ताली हेलासिंह के पास है जिसकी मुझे जरूरत है.

महाराज :

(चौंककर) गाड़ी की ताली! ओह ठीक है, मगर तुझे उसका पता क्योंकर लगा! और तुझे उसकी जरूरत ही क्या है?

मालती:

(हाथ जोड़कर) मेरे कई रिश्तेदार इस जगह कैदमहाराज :

तेरे रिश्तेदार यहाँ कैद हैं?

कौन - कौन?

और उन्हें किसने कैद किया?

मालती:

रणधीरसिंह जी के लड़के दयारामजी और उनकी दोनों स्त्रियाँ यहाँ बन्द हैं.

महाराज :

(ताज्जुब से) रणधीर सिंह का लड़का! उसकी तो मौत हो चुकी है?

मैंने तो सुना था कि उसके किसीनौकर ने ही उसकी जान ली, और उसकी स्त्रियों को भी मैं मरा ही समझता था! मालती:

जी हाँ, मशहूर तो यही है पर वास्तव में वे जीते - जागते हैं और दारोगा साहब के द्वारा अच्छी तरह सताये जाकर अब इस तिलिस्म में कैद हैं ।

महाराज ने इस बात को सुन क्रोध के साथ अपना होंठ चवाया और तब गुस्से भरी आवाज में बोले- " वेशक इन कमीनों ने मुझे पूरा अन्धा बना रखाथा! आज मुझे इनकी शैतानी का पता लगा.

अच्छा कोई हर्ज नहीं, मैं भी एक - एक को चुन चुन कर मारूंगा!

ओफ, अब भैयाराजा की बात याद आती है जो बराबर कहता था- " भाईजी, आप इन कम्बख्तों के फेर में पड़े हुए हैं ।

" अफसोस! वह बेचारा मर गया, नहीं इसी समय मैं उससे माफी मांगता और कहता- "
लो, इन कमीनों का इत्साफ तुम्हारे ही हाथ देता हूँ, जैसा चाहो इनके साथ करो! "
मालती:

यह आपको कैसे मालूम हुआ कि वे मर गये?

महाराज :

यह मैंने उस कम्बख्त दारोगा से ही सुना था.

मालती:

अफसोस! महाराज को अभी बहुत - सी बातों की खबर नहीं है.

अगर आप मेरा पूरा किस्सा सुनेंगे तो आपको मालूम होगा कि इन दुष्टों ने आपको कितने भारी जाल में फंसाया हुआ है.

पर इतना तो मैं जरूर कह सकती हूँ कि भैयाराजा मरे नहीं हैं बल्कि इसी दारोगा की जद में हैं और उनके साथ ही उनकी स्त्री और मेरे चाचा भी वहाँ बन्द हैं.

महाराज :

तेरे चाचा कौन?

दामोदरसिंह! मालती:

जी हाँ महाराज!महाराज :

जिनकी लाश अभी थोड़ा समय हुआ मेरे सामने लाई गई थी?

मालती:

जी हाँ महाराज! मालती की बात सुन महाराज के हवाश उड़ गये और वे माथे पर हाथ रख कुछ सोचने लगे.

कुछ देर तक तो ऐसा मालूम होता रहा मानो वे अपने आप में नहीं हैं.

जब मालती ने उनका हाथ छुआ तो वे चौके और एक लम्बी साँस लेकर बोले, " ओफ, यह दुनिया भी कैसी बेईमान है! ये सब बातें सुनकर भी क्याकिसी पर विश्वास करना

चाहिए?

" मालती:

क्षमा किजियेगा महाराज, पर मेरा कथन यह है कि दुनिया बेईमान नहीं है, हम लोगों के दुर्भाग्यवश महाराज को कुछ सलाहकार ऐसे मिले हैं जिन्हें बेईमान के नाम से पुकारना भी उनके साथ रिआयत करना है.

महाराज :

' खैर यह जो कलंक मेरे ऊपर बहुत दिनों से लगा हुआ था आज मैं हमेशा के लिए दूर कर दूंगा.

तू मुझे अपना पूरा हाल सुना और बता कि तेरे मरने की खबर क्योंकर उड़ी, इतने दिन तक तू कहाँ गायब रही, हेलासिंह के पने में क्योंकर पड़ी और इन सब बातों की खबर तुझे क्योंकर लगी जो तू मुझसे कह रही है?

मालती:

(हाथ जोड़कर) मैं अपने दुःख की पूरी कथा महाराजा को सुनाऊँगी जिसे सुनकर महाराज को अपनी आँखें सूखी रखना कठिन हो जाएगा.

पर वह एक लम्बा किस्सा है, अगर महाराज को इतना समय हो तो मैं कहूँ?

महाराज :

हाँ मुझे समय है, तू कह मगर यहाँ नहीं, तू इधर आ.

इतना कह महाराज घूमे और उसी दरवाजे की तरफ बढ़े जिधर से इस कमरे में आये थे मगर उसी समय मालती ने हाथ जोड़कर कहा, “ महाराज की यदि आज्ञा हो तो मैं इन दोनों दुष्टों को भी अपने साथ लेती चलूं, इनका भी मेरे किस्से से सम्बन्ध है और जब मैं अपना हाल कहने लगूंगी तो ये हामी भरेंगे.

" महाराज ने यह सुन कहा, " जैसी तेरी मर्जी.

" जिसे सुन मालती ने जंगला खोला और जैपाल तथा हेलासिंह को बाहर निकलने को कहा.

डरते - कांपतेऔर अपनी जान से नाउम्मीद दोनों हरामजादे बड़ी मुश्किल से कोठरी के बाहर निकले.

मालती ने दोनों के हाथ उन्हीं के कबमन्द से खूब कसकर पीठ पीछे बाँध दिया और क्रमन्द का सिरा पकड़े हुए महाराज की तरफ बढ़ी.

महाराज ने मुस्कुराकर कहा, " क्या तू समझती है कि इन कुत्तों की इतनी हिम्मत है कि मेरी आँखों के सामने से भाग सकें! खैर तू आ इन्हें भी लेती आ! " आगे - आगे महाराज और उनके पीछे - पीछे मालती, जैपाल और हेलासिंह उस दरवाजे को पार कर एक बहुत ही भारी और आलीशान कमरे में जा पहुँचे जो काले पत्थरों का बना हुआ था जिसकी काली ही छत काले पत्थर के चालीस खम्भों पर टीगी हुई थी.

इस कमरे में पहुंचते ही जैपाल ने इसे पहचान लिया कि यह वही कमरा है जिसमें दारोगा के साथ वह आया था जहाँ दारोगा जमना, दयाराम तथा सरस्वती को बन्द कर गया था क्योंकि इसके बीच वाले काले पत्थर के सिंहासन को घेरे हुए वे चार शेर मौजूद थे जिनके सिर पर उकाज बने हुए थे.

महाराज जाकर उस सिंहासन पर बैठ गये और मालती को अपने सामने बैठने तथा अपना किस्सा आरम्भ करने को कहा.

मालती जैपाल और हेलासिंह को कुछ दूर छोड़कर महाराज के पास आ गई और सिंहासन के नीचे बैठकर उसने इस तरह कहना शुरू किया.

मालती:

महाराज, मैं अपना दुःखदाई हाल आज से कई बरस पहिले से शुरू करती हूँ जबकि मैं बहुत ही कम उम्र की एक लड़की थी और दुनिया के छालछलन और फरेब कुछ भी नहीं समझती थी.

मेरे माँ - बाप जिन्दा थे और उनकी प्यारी बेटी होने के कारण मैं बड़े ही आनन्दपूर्वक रहती थी मेरा रहना अपने घर की बनिस्बत अपने चाचा दामोदरसिंह के यहाँ ज्यादा होता था जिसका कारण यह था कि उनके यहाँ रहने वाली उनके रिश्ते की लड़की अहिल्या के साथ मेरी बड़ी ही मुहब्बत थी और हम दोनों एक जान और दो शरीर होते थे.

दामोदरसिंह अहिल्या को हद से ज्यादा प्यार करते थे और मुझे तो अपनी बेटी ही समझते थे जहाँ तक मैं गुमान करती हूँ महाराज को भी उस बेचारी की याद होगी.

महाराज :

बहुत अच्छी तरह याद है मगर उस कम्बख्त का नाम सुनता भी मैं पसन्द नहीं करता जिसने दूसरे के साथ निकलकर अपना धर्म गँवाया और माँ बाप के कुल में दाग लगाया.

मालती:

नहीं महाराज, आपका सोचना गलत है, अहिल्या बड़ी शुद्ध और पवित्र लड़की थी और उसके विषय में किसी तरह के कलंक की बात सोचना अनर्थ करना है.

सच तो यह है कि उसके बारे में ऐसी खबर फैलाने वाले भी (हेलासिंह और जैपाल की तरफ दिखाकर) ये ही लोग हैं जिन्होंने उसके साथ महाभयानक अत्याचार किया और अन्त में उसकी जान लेकर ही छोड़ा.

१.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, सातवाँ बयान.

इतना कर मालती ने कड़ी निगाह से जैपाल और हेलासिंह की तरफ़ देखा जिन्होंने सिर नीचा कर लिया.

मालती फिर कहने लगी मालती:

मेरे दु:ख की असल कहानी उस समय से शुरू होती है जब मेरी शादी की बातचीत चुनारगढ़ के सेनापति के लड़के से लगी थी जिन्हें महाराज भी बखूबी जानते हैं क्योंकि वे आपके रिश्तेदार में से हैं.

महाराज :

हाँ हाँ, दिवाकरसिंह का नाम मैं अभी तक नहीं भूला हूँ, वह बेचारा बड़ी ही सीधा और महात्मा आदमी था और साथ ही सच्चा बहादुर भी था, मुझे अच्छी तरह याद है कि जब उसके मरने की खबर मुझे लगी .

.

.

.

मालती:

यदि मैं यह अर्ज करूं तो शायद महाराज को आश्चर्य होगा कि दिवाकरसिंहजी कई बर्ष दारोगा साहब के कैदखाने में बिता अब भी ईश्वर की दया से जीते - जागते मौजूद हैं.

महा ० हैं, क्या दिवाकरसिंह जीते हैं?

और क्या वे दारोगा की कैद में थे?

मालती:

जी महाराज, और उनके मरने की झूठी खबर भी शिवदत्त और दारोगा इत्यादि ने ही मिलकर उड़ाई थी.

महाराज :

(क्रोध से दाँत पीसकर) खैर कोई हर्ज नहीं, तू कह.

मालती ने सिर नीचा कर कहना शुरू किया, “ महाराज, उस समय लड़कपन की उम्र थी और दुनिया की कोई खबर हम लोगों को थी नहीं अस्तु दिलों में बहुत - सी बातें उठा करती थीं.

मेरी सखी अहिल्या व्याह की बात छेड़कर मुझे प्राय: दिक किया करती और मजाक में कहा करती थी कि तेरा पति बहुत बदसूरत है.

मैं इससे इन्कार करती पर वह कुछ न सुनती और यही कहती कि अच्छा अगर तू अपने भाबी पति की तस्वीर मुझे दिखा दे तो मैं जानूँ कि जो तू कहती है वही सच है और मेरा कहना गलत है.

उसने मुझे यहाँ तक तंग किया कि अन्त में लाचार होकर मैंने निश्चय कर लिया जिस तरह हो सके उनकी एक तस्वीर हासिल करूँ और अहिल्या को झूठी सिद्ध करूँ.

मैं अभी इसी फिराक में थी कि एक रोज अहिल्या बड़ी खुशी - खुशी मेरे पास पहुंची और बैठकर बोली- “ ले तू तो कहती रह गई पर मैंने तेरे मालिक की तस्वीर पा ली!

कुछ इनाम दे तो तुझे दिखाऊँ! "

मैं बड़े ताज्जुब में हुई और उस तस्वीर के लिए उसकी बड़ी - बड़ी खुशामद और मिन्नत करने लगी.

अन्त में उसने आँचल में से निकालकर एक तस्वीर मेरे आगे रक्खी और कहा, " ले बहिन, अब तू अपने मालिक को देख और बता कि जो कुछ मैं उसके बारे में कहती थी वह ठीक था या नहीं! " उस तस्वीर को देख मैं शरमा गई क्योंकि वह जिसकी थी वह कोई बहुत खूबसूरत आदमी न था दूसरे उम्र भी ज्यादा मालूम पड़ती थी, हाँ कपड़ा पोशाक और ऊपर सजधज इत्यादि जरूर बहुत ही अच्छा था.

सच तो यह है कि उसे देख मुझे एक तरह की नफरत सी हो गई और मैंने तस्वीर को फेंककर मुँह फेर लिया.

यद्यपि मैंने कुछ कहा नहीं पर अहिल्या मेरे दिल की हालत समझ गई और मुझे समझाने - बुझाने लगी.

इस पर उसने जो जवाब दिया उससे मैं ताज्जुब में पड़ गई आखिर मैंने उससे पूछा कि तूने यह तस्वीर कहाँ से पाई, क्योंकि उसने कहा- " यह तस्वीर पण्डितजी से मैंने पाई है.

" पण्डितजी से मतलब उसका आपके दारोगा साहब से था जिसे उस समय लोग बाबाजी भी कहते थे क्योंकि वह उस जमाने में साधुओं की तरह रहा करता था.

उन दिनों उसने एक मकान दामोदरसिंहजी के मकान के बगल में ही ले रक्खा था और प्रायः छत पर से हम लोग उसे देखा करते थे, पर उससे हम लोगों की कोई बातचीत न थी क्योंकि इसके लिए दामोदरसिंहजी की सख्त मनाही थी, अस्तु जब अहिल्या ने कहा कि उसने यह तस्वीर पंडितजी से पाई है तो मुझे बड़ा ही ताज्जुब और कुछ रंज भी हुआ कि वह क्यों उससे बातचीत करने गई.

मैंने उससे कहा, " क्या तूने उससे तस्वीर माँगी थी?

" उसने कहा, " नहीं आज मैं छत पर से झाँक रही थी.

उस समय उसकी एक मजदूरनी छत पर खड़ी यह तस्वीर देख रही थी, मैंने उससे पूछा कि क्या है?

तो उसने बताया कि बाबाजी के यहाँ चुनारगढ़ से मुसौवर आया है जिससे बहुत सी तसवीरें बाबाजी ने ली हैं, उन्हीं में से एक यह भी है.

मैंने वह तस्वीर लेकर देखी और जब उससे पूछा कि किसकी है तो उसने प्रभाकरसिंह का नाम बताया जिससे मैं थोड़ी देर के लिए इसे माँग लाई हूँ, मैंने अहिल्या से कहा, " जा उससे पूछ वह यह तस्वीर मेरे पास रहने दी जा सकती है! " अहिल्या तस्वीर लेकर यह कहती हुई चली गई, " सो तो मैं पहिले ही जानती थी " और थोड़ी देर बाद लौट आकर बोली, " लौंडी ने कहा है कि आज तो नहीं पर कल अगर मौका लगा तो तस्वीर दे जाऊँगी.

" गरज कि दूसरे दिन बाबाजी की वह लौंडी हम दोनों के पास आई और वह तस्वीर दे गई.

इसके बाद कई दिनों तक वह किसी न किसी बहाने से मेरे पास बराबर आती उस तस्वीर के बारे में बहुत देर तक बातें करती और जिसकी तस्वीर थी उसकी खूबसूरती, धन दौलत और ताकत का बखान करती.

मेरी शादी की बातचीत तो हो रही थी पर उमंग जो पहिले मेरे दिल में थी अब नहीं रही बल्कि दो - एक बार मैंने उससे अनिच्छा भी जाहिर की.

और तो कोई नहीं पर मेरी माँ मेरे मन की बात समझ गई और इस फिक्र में पड़ी कि मेरे इस बर्ताव का सबब क्या है सो जाने.

अहिल्या से दरियाफ्त किया और उसकी जुबानी सब हाल सुन बड़े ताज्जुब से कहा, " वाह, मालती, का शौह तो बड़ा ही सुन्दर नौजवान है, उसे बदसूरत कौन कहता है! " उस समय तो वह इतना ही कहकर रह गई मगर इसके कुछ ही समय बाद मैंने अपने पिता के कमरे में एक नई तस्वीर लटकती हुई देखी जिसके नीचे ' प्रभाकरसिंह '! ऐसा लिखा हुआ था.

मैं आश्चर्य से उस तस्वीर को देखने लगी क्योंकि इस शक्ल और उस दूसरी तस्वीर में बड़ा फर्क था जो बाबाजी की लौंडी द्वारा मैंने पाई थी.

मैंने अहिल्या को इस बात की खबर दी.

उसे भी बहुत ताज्जुब हुआ और जब उसे मेरे घर आने का मौका मिला तो उसने भी वह तस्वीर देखी और आश्चर्य के साथ निश्चय किया कि बेशक यह किसी दूसरे की तस्वीर है और वह किसी दूसरे की जो दारोगा साहब की मार्फत मिली थी.

आखिर अहिल्या से न रहा गया और उसने हम लोगों को मिली हुई तस्वीर मेरी माँ को दिखा ही तो दी.

उसने बड़े गौर से देखा और तब कहा, " हाँ ठीक है, इस आदमी को मैं पहिचानती हूँ, यह चुनार का राजा शिवदत्त है.

तुम लोगों को इसकी तस्वीर कहाँ से मिली?

" हम लोगों के ताज्जुब का ठिकाना न रहा.

मेरी माँ को तो अहिल्या ने उस समय कुछ कह सुनकर समझा दिया और बात टाल दी मगर इसके बाद हम दोनों मिलकर बैठीं और इस बात पर गौर करने लगीं कि आखिर मामला क्या है?

महाराज, मुख्तसर यह कि हम लोगों ने आखिर पता लगा ही लिया कि चुनार का राजा शिवदत्त मुझसे ब्याह करने को उताबला हो रहा है और उसने बाबाजी पर इसका भार सौंपा है जिसका प्रबंध वे हजरत कर रहे हैं, अहिल्या एक ही शैतान थी, उसने यह भेद जानते ही दारोगा की उस लौंडी से यह कहना शूरू किया कि मालती शिवदत्त पर आशिक हो रही है और उसके सिवाय और किसी से ब्याह नहीं करेगी.

जरूर वह लौंडी भी इस षड्यन्त्र में शामिल थी क्योंकि थोड़े ही दिन बाद उसने एक चीठी शिवदत्त की लाकर दी जिसमें वाहियात बातें और तरह - तरह के वादे किए हुए थे.

मैं वह चीठी पड़ते ही गुस्से से भर गई मगर अहिल्या मुझसे बोली, " तू ठहर और देख मैं उससे क्या दिल्लगी करती हूँ.

" अहिल्या ने अपना हाथ बिगाड़कर उस चीठी का न - जाने क्या जबाब लिखा और उस लौंडी को दे दिया.

दो - तीन दिन के बाद अहिल्या पुनः मेरे पास पहुँची.

इस समय उसके हाथ में एक चीठी थी जो उसने मुझे पढ़ने के लिए दी और यह कहती हुई मेरे पास बैठ गई, " ले अपने आशिक की चीठी पढ़.

" मैंने उसे पड़ा, उसमें भी पहले की तरह सिर्फ फोश बातें ही भरी हुई थीं हाँ, इतना और लिखा था कि जिस लौंडी के हाथ मैं यह चीठी भेजता हूँ वह मेरी बहुत ही विश्वासपात्र है.

उसके हाथ चीठी - पत्री या सन्देश भेजने में किसी तरह का खतरा नहीं है.

यह चीठी पढ़ मुझे और भी क्रोध आया और उस कमीने को तरह - तरह की बातें कहने लगी.

उस चीठी को मैंने फाड़ डालना चाहा पर अहिल्या ने वह मुझसे ले ली और कहा- " तू व्यर्थ का गुस्सा न कर और देख मैं क्या दिल्लगी करती हूँ, अगर शिवदत्त और बाबाजी को नाकों चने न चबवा दूं तो मेरा नाम नहीं! " मैं बोली, " मुझे यह सब खिलबाड़ अच्छा नहीं लगता! ऐसा करने में और चाहे कुछ हो या न हो पर मैं झूठ - मूठ बदनाम और बेइज्जत हो जाऊँगी, कहीं बाबूजी को पता लगा तो मेरा सिर काट डालेंगे! " पर अहिल्या काहे को सुनती थी, और फिर बाततो यह थी कि हम दोनों ही पर शामत जो आने को थी, सो जो होनी होती है वही होता है.

मैं भी अहिल्या की बातों में पड़ गई.

उसने कहा कि शिवदत्त ने अपने कई आदमी बाबाजी के पास भेजे हैं कि उनसे मदद लें और मालती को अर्थात् मुझे पकड़ ले जाने में शिवदत्त की मदद करें, इसी सबब से हमारे पड़ोस वाला यह मकान लिया गया है और यह सब कार्रवाई हो रही है अस्तु कोई ऐसी चीज होनी चाहिये जिसमें ये दोनों पाजी आपस ही में लड़ पड़ें, तब बड़ी दिल्लगी देखने में आवेगी और शिवदत्त को भी अपनी करनी का फल मिलेगा और मैंने इसकी बड़ी ही सहज तर्कीब भी सोची है.

अहिल्या ने कागज - कलम ले एक चीठी शिवदत्त को लिखी.

इसमें उसने बहुत - सी फिजूल बातों के अन्त में लिखा कि ' मैं तुम्हें चाहती हूँ और तुम्हारी ही हूँ मगर बाबाजी बीच में अडंगा लगा रहे हैं, तुम उन पर भरोसा न करना, इत्यादि, और तब वह चीठीबन्द कर उस लौंडी को दे दी.

मुझे उस समय नहीं मालूम हुआ पर अहिल्या इतने ही पर नहीं रही बल्कि उसने मेरी तरफ से एक दूसरी चीठी बाबाजी के नाम लिखी जिसमें अन्डबन्ड बहुत कुछ लिखकर अन्त में यह जाहिर किया कि मैं तो वास्तव में आप ही को चाहती हूँ पर यह शिवदत्त जो मेरे पीछे पड़ा है और तंग कर रहा है उससे मेरा पिण्ड छुड़ाओ.

इस चीठी ने दारोगा के मन में खलबली पैदा कर दी और इसके बाद मैंने उसे कई दफे छत पर टहलते और मेरी खिड़की की तरफ देख तरह - तरह के हाव भाव और इशारे करते पाया जिससे मैं यहां तक परेशान हुई कि जब तक दामोदरसिंह जी के यहां रहती कभी छत पर जाने की हिम्मत नहीं करती थी.

मुख्तसर यह कि अहिल्या ने बेढब रंग मचाया और ऐसी कार्रवाई करी कि दारोगा और शिवदत्त एक - दूसरे के जानी दुश्मन हो गए, यहाँ तक कि शिवदत्त ने अपनी एक चीठी में लिखा कि दारोगा को जरूर जान से मार डालेगा और दारोगा ने अपनी एक चीठी में वादा किया कि जिस तरह हो सकेगा शिवदत्त को गद्दी से उतार बल्कि मार डालेगा.

उस समय अहिल्या ने शिवदत्त की चीठी दारोगा के पास भेज दी और दारोगा की शिवदत्त के पास और एक कार्रवाई ऐसी की कि जिसने एक प्रहसन को दुःखान्त नाकट के रूप में बदल डाला, अहिल्या को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और मेरी जिन्दगी हमेशा के लिए बर्बाद हो गई.

उसने दारोगा को लिखा कि ' शिवदत्त अब मेरे साथ तुम्हारी भी जान लेने को तैयार हो गया जिसके सबूत में उसकी चीठी भेजती हूँ, और साथ ही मेरी शादी का भी मौका आ गया है जिससे निश्चय है कि मैं अब स्वतंत्र न रह सकूँगी अस्तु तुमसे पहिली और आखिरी मुलाकात करने की इच्छा है, तुम अगर मुझे चाहते हो तो एक बार मुझे दर्शन दो.

शहर के बाहर जो तन्दीवान शिव की मूर्ति है उसी मंदिर में अमावस की आधी रात को मैं आऊँगी, तुम उस जगह मौजूद रहना '.

ऐसे ही मजमून की चीठी उसने शिवदत्त को लिखी और दोनों ही जगह से जवाब भी पा लिया कि ' मैं उस रात को उस जगह जरूर आऊँगा, तुम आने से मत चूकना '.

मुझे तो यह पढ़ कुछ आशंका मालूम हुई मगर अहिल्या की खुशी का कोई ठिकाना न था और वह बार - बार यही कहती थी कि उस दिन बड़ी दिल्लगी देखने में आवेगी और दोनों दुष्ट आपस ही में लड़कर मर मिटेंगे '.

पर वहाँ तो मामला ही कुछ और हो गया.

अहिल्या की दिली ख्वाहिश थी कि अमावस बाले दिन उस मन्दिर में मौजूद रहे और जो कुछ बीते उसे देखे पर मैं डरती और उसे ऐसा करने से रोकती थी.

केवल उन दोनों के देखने ही का डर मुझे न था बल्कि यह भी था कि मेरे बाप या चाचाजी (दामोदरसिंहजी) सुन पावेंगे तो दुर्गति कर डालेंगे और इस बात की कोई तर्कीब नहीं सूझती थी कि उनकी जानकारी में आज्ञा लेकर इस बेवक्त कहीं जा सकूँ.

मगर अहिल्या इस बात पर तुली हुई थी कि चाहे जैसे भी हो वहाँ उस समय जाना और नकम्बख्तों में कैसी निपटती है सो देखना ही चाहिए.

उसने मुझसे यहाँ तक जिद्द की और इतना तंग किया कि लाचार होकर मैं भी सोचने लगी कि आखिर ऐसा करने की क्या तदबीर हो सकती है.

मेरे पिता के एक बहुत ही गहरे दोस्त थे जो रोहतासगढ़ के महाराज के यहाँ नौकर थे तथा जिन्हें शायद महाराज भी जानते हों.

वे मेरे यहां बहुत आया - जाया करते थे और मैं उन्हें हद से ज्यादा प्यार करती और उन्हें चाचा कहकर पुकारा करती थी तथा वे भी वैसी ही मुहब्बत मेरे साथ रखते थे.

उनका नाम शेरसिंह था और .

.

.

महाराज:

क्या नाम बताया, शेरसिंह! मालती:

जी हाँ.

महाराज :

ओह मैं उस लड़के को बखूबी जानता हूँ पर इधर वर्षों से उसे नहीं देखा.

क्या वह अब भी रोहतासगढ़ में है?

मैं उसे बुलवाऊँगा क्योंकि मैंने उसके बारे में दो - एक बातें ऐसी सुनी हैं जिनसे मेरा दिल उसकी तरफ से खट्टा हो गया है.

मालती:

मैं नहीं कह सकती कि महाराज ने क्या सुना जिससे ऐसा हुआ पर जहाँ तक मैं कह सकती हूँ वे ऐसे आदमी नहीं है जिनके ऊपर किसी तरह का कलंक लग सके.

महाराज :

खैर इसका पता लग जायगा, तू अपना हाल कह, फिर क्या हुआ?

मालती:

ये शेरसिंह उन दिनों मेरे यहाँ आए हुए थे और इनसे मैंने यह सब हाल (अपने पिता और चाचाजी से छिपा रखने की कसम खिलाकर) कह डाला.

जो कुछ भी मेरी या अहिल्या की कार्रवाई हुई थी मैंने बिना कुछ छिपाये साफ साफ कह दी और अन्त में अपना तरदुद भी कह सुनाया.

किन्तु सुनकर वे खुश नहीं हुए बल्कि मुझे झिड़की देने लगे कि यह बड़ी ही खराब और बेवकूफी की कार्रवाई की गई और इसका नतीजा किसी तरह अच्छा नहीं निकलेगा.

उस समय अहिल्या भी मेरे घर पर मौजूद थी.

उन्होंने उसे भी बुलाकर बहुत कुछ कहा - सुना और इस काम से बिलकुल हाथ खींच लेने को कहा पर हम लोग कब मानने को थे क्योंकि हम पर शामत सवार थी.

मैं और अहिल्या यहाँ तक गिड़गिड़ाई कि अन्त में वे लाचार हो गए और उन्होंने वादा किया कि खैर मैं उस दिन रात के उस मन्दिर में क्या होगा यह किसी तरह तुम दोनों को

दिखला दूंगा पर खबरदार, अब ऐसी कोई कार्रवाई ह्रगिज मत करना, न तो किसी से कोई लिखा - पड़ी करना और न दारोगा या शिवदत्त के किसी नौकर, मजदूरनी को ही घर में आने देना.

उन्होंने जो कुछ कहा हम दोनों ने सब मंजूर कर लिया.

अमावस के एक दिन पहले मैं और अहिल्या बैठी कुछ बातें कर रही थीं कि मेरे पिता के साथ शेरसिंह जी उस जगह आ पहुँचे और मुझसे बोले, “ क्या तू तिलिस्म देखने चलेगी?

अगर देखना हो तो चल मैं तुझे दिखलाऊँ.

” मैंने पूछा " तिलिस्म क्या होता है?

" उन्होंने कहा, " वहाँ बड़ी - बड़ी ताज्जुब और तमाशे की चीजें होती हैं जिनको देखकर आदमी की अक्ल चक्कर में आ जाती है ।

हम दोनों ने खुशी - खुशी मंजूर किया बल्कि तुरंत चलने के लिए जिद करने लगी जिस पर उन्होंने मेरे पिता से कहा कि ' अजायबघर के पास वाले टीले पर लोहगड़ी नामक इमारत है जिसमें हेलासिंह रहते थे, पर वह भी एक छोटा सा तिलिस्म है और मुझे उसका कुछ भेद मालूम है अगर आप इजाजत दें तो मैं इन लड़कियों को ले जाऊँ और उस जगह का कुछ तमाशा इन्हें दिखा दूं.

मेरे पिताजी ने इजाजत दे दी और शेरसिंहजी ने हमसे घंटे भर में तैयार हो जाने को कहा क्योंकि हमारे घर से व जगह काफी फासले पर थी.

हम दोनों को बड़ी खुशी हुई क्योंकि तिलिस्म देखने के साथ ही इस बात का भी विश्वास हुआ कि इसी के साथ - साथ हमें दारोगा और शिवदत्त वाला मामला देखने का मौका भी मिलेगा.

हम दोनों ने जल्दी - जल्दी तैयारी की और कुछ रात बीतते - बीतते हमारा रथ जिसे स्वयं शेरसिंह हाँक रहे थे, रवाना हो गया.

हम दोनों ने दूसरे दिन कई घण्टे घूम - घूमकर लोहगड़ी की अच्छी तरह से सैर की.

.

.

शेरसिंह ने वहाँ के कई तमाशे हम लोगों को दिखाए और कई भेद भी बतलाये, वहाँ के कई दरवाजों का खोलना - बन्द करना भी सिखा दिया और इस बात का भी वादा किया कि अबकी बार जब आवेंगे तो अपने साथ एक किताब भी लेते आवेंगे जिसमें यहाँ का बहुत कुछ हाल लिखा होगा और जिसकी मदद से हम लोग यहाँ के और भी तमाशे देख सकेंगे.

इसके पहले हम लोगों ने तिलिस्म देखना तो क्या उसका नाम भी नहीं सुना था अस्तु वहाँ की अद्भुत बातों को देखने में यहाँ तक दिलचस्पी मालूम हुई कि घंटों वहाँ बिता दिए और बाहर निकलने की इच्छा न हुई जब उन्होंने किताब का वादा किया उस समय तो मारे खुशी के हम दोनों की अजीब हालत हो गई.

खैर मुख्तसर यह कि हम लोगों का समूचा दिन वहाँ का हाल - चाल देखने में बीत गया और सूर्यदेव अस्त हो चुके थे जब मुझे और अहिल्या को लिए हुए शेरसिंह वहाँ से बाहर हुए.

मालती बात कहते - कहते कुछ देर के लिए रुक गई और महाराज ने मौका पाकर पूछा, “ क्यातू कह सकती है कि शेरसिंह को इस जगह का भेद क्योंकर मालूम हुआ?

जैसा कि तू खुद कह चुकी है यह एक तिलिस्म है और वास्तव में मेरे कब्जे में और जहाँ तक मैं जानता हूँ सिवाय हेलासिंह के और किसी को यहाँ का हाल मालूम नहीं और उसे भी इसलिए मालूम हो गया कि मैंने कुछ समय तक उसे यहाँ रहने की इजाजत दे दी थी.

" मालती:

इस बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकती कि उन्हें क्योंकर यहां का हाल मालूम हुआ, बल्कि जहाँ तक मुझे याद पड़ता है मैंने उनसे पूछा भी था कि उन्हें इस जगह का भेद क्योंकर मालूम हुआ पर वे सिर्फ मुस्कराकर रह गये.

नहीं.

महाराज :

खैर, तब?

मालती:

हम लोग लोहगढ़ी से निकलकर थोड़ी ही दूर गए होंगे कि हमारी निगाह जैपालसिंह और हेलासिंह पर पड़ी जो इधर ही को आ रहे थे.

हम लोगों ने आड़ में होकर अपने को उनकी नजरों से बचाना चाहा पर हो न सका क्योंकीहमारे रथ पर उनकी निगाह पड़ चुकी थी जिसे शेरसिंह हॉक रहे थे.

मैं नहीं कह सकती कि रथ या उसके अन्दर की सबारी के बारे में उन लोगों ने क्या खयाल किया क्योंकि पर्दा पड़ा होने के कारण वे दोनों मुझे और अहिल्या को देख नहीं सकते थे पर कुछ शक्र जरूर हो गया और उन्होंने अपनी कार्रवाई भी शुरु कर दी क्योंकि (जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ) अहिल्या की दुर्दशा और मौत के कारण ये ही दोनों दुष्ठ हुए.

शेरसिंह ने उनसे कुछ न कहा और न उन दोनों ने ही कुछ रोक - टोक की पर एक - दूसरे से चौकन्ने जरूर हो गए.

कुछ दूर आगे बड़ आने के बाद शेरसिंह ने रथ को सड़क पर से हटा बगल के जंगली रास्ते से चलाना शुरू किया यहाँ तक कि घने जंगल में एक नाले के किनारे पहुँच कर रुक्के और हम दोनों से बोले, " अब इस जगह कुछ देर सुस्ता कर संध्या होने पर चलेंगे ".

जानवर अलग कर चरने के लिए छोड़ दिए गए और हम तीनों उस सुहावने चश्मे के किनारे बैठकर सोचने लगे कि उस मन्दिर में रात को शिवदत्त और दारोगा की कार्रवाई देखने की क्या तरकीब हो सकती है.

आखिर बहुत सोच विचार कर एक बात निश्चय की गई और उसी मुताबिक कार्रवाई शुरू करने ही को थे कि सब चौपट हो गया.

संध्या होने में कुछ ही विलम्ब था और हम लोग इस फिक्र में थे कि कुछ और अँधेरा हो जाय तो यहाँ से रवाना हों कि उसी समय यकायक कई घोड़ों के टापों की आवाज सुनाई पड़ी जो उसी तरफ आते हुए मालूम होते थे.

हम लोग चौंके क्योंकि दुश्मन की हुकूमत में कदम - कदम पर डर मालूम होता था.

शेरसिंह ने हम दोनों को झाड़ियों में छिप जाने के लिए कहा और खुद यह देखने के लिए आगे बड़े कि देखें वे लोग कौन हैं जिनके आने की आहट लग रही है.

शेरसिंह को गए कुछ देर हो गई और धीरे - धीरे उन लोगों की आहट कम होते - होते बिल्कुल मिट गई जिन्होंने हम लोगों को तरदुद में डाल दिया था.

झाड़ी के अन्दर छिपकर बैठे - बैठे मैं और अहिल्या घबड़ा गईं और बाहर निकलने का इरादा करने लगीं.

उसी समय यकायक हम लोगों की निगाह दो आदमियों पर पड़ी जो पेड़ों की आड़ में से निकलकर उस जगह आ पहुंचे जहां थोड़ी देर पहिले हम लोग बैठे हुए थे.

इन दोनों ही के चेहरों पर नकाब पड़ी थी और ऐयारी के बटुए कमर में मौजूद थे जिससे सहज ही में उनके ऐयार होने का गुमान किया जा सकता था अस्तु उन्हें देख हम दोनों डर गईं और झाड़ी के अन्दर और भी दबकर धड़कते हुए कलेजे के साथ देखने लगीं कि ये लोग कौन हैं या क्या करते हैं.

थोड़ी देर तक इधर - उधर घूम - फिरकर देखने और धीरे - धीरे कुछ बातें करने के बाद उनमें से एक ने सीटी बजाई.

आवाज के साथ ही किसी तरह से जवाब में सीटी बजी और कुछ सायत के बाद एक डोली जिस पर लाल मखमल का पर्दा पड़ा था कंधे उठाए कीमती पोशाक पहिने चार कहार वहाँ मौजूद हुए.

पहिले आये हुए उन आदमियों का इशारा पाकर उन्होंने डोली जमीन पर रख दी और औजार निकालकर जमीन खोदना शुरू किया.

तेजी से काम करते हुए घड़ी भर के अन्दर ही इन आदमियों ने गहरा खड्डा खोद कर तैयार कर डाला और अलग हो गए, तब दोनों ऐयार उस डोली के पास गए और परदा हटाकर अन्दर से एक औरत की लाश निकाली.

मैं उसकी सूरत अच्छी तरह देख न सकी पर यह कह सकती हूँ कि वह औरत जरूर बेहोश या मुर्दा थी क्योंकि उसका तमाम चेहरा और हाथ - पाँब एकदम सुफेद थे और

बदन में किसी तरह की हरकत न थी.

उसके बदन पर बहुत कीमती कपड़े और जेवर पड़े हुए थे और उसका माथे पर हीरे का बना हुआ एक अर्धचन्द्राकार छोटा - सा कोई जेवर था और तेजी से चमक रहा था.

उन दोनों ऐयारों ने (या जो कई हों) उस लाश को डोली के बाहर निकाला, मखमल का जो पर्दा डोली के ऊपर पड़ा था उसे उतार उसी में उस लाश को अच्छी तरह लपेटा और तब उठाए हुए उस गड्ढे की तरफ ले चले जिसे अभी उन चारों कहारों ने खोदकर तैयार किया था.

हम दोनों के चेहरे आँसू से तर हो गए क्योंकि हमें विश्वास हो गया कि ये पापी उस बेचारी को इसी गड्ढे में बन्द कर दिया चाहते हैं, आखिर ऐसा हुआ भी.

वह लाश उसी गड्ढे में डालकर ऊपर से मिट्टी पाट दी गई और गड़हा बराबर कर दिया गया.

दोनों ऐयार आगे - आगे हुए और जिधर से आये थे उधर ही सब चले गए, कहारों ने डोली उठाई, जब उन्हें गये कुछ देर हो गई तो हम दोनों झाड़ी के बाहर निकलीं .

.

मेरा इरादा हुआ कि उस गड़हे की मिट्टी हटा वह लाश जो दबाई गई है निकाली या देखी जाय, पर अहिल्या बोली कि नहीं पहिले शेरसिंह जी को आने दो.

मैंने उसकी राय मुनासिब समझी और हम दोनों वहीं बैठ कर उनके आने की राह देखने लगे.

धीरे - धीरे बहुत देर हो गई पर शेरसिंह न लौटे, सूरज भी डूब गया और उस घने जंगल में अंधेरा बड़ने लगा जिससे हमें डर लगा क्योंकि इस तरह अनजान जगह और घोर जंगल में अकेले रात के समय रहने का कभी मौका नहीं पड़ा था.

अहिल्या तो बहुत ही डर गई और बार - बार कहने लगी कि बहिन अब क्या होगा?

शेरसिंह जी तो आये नहीं! हम दोनों को अपनी बेबकूफी पर अफसोस होने लगा कि काहे को यहाँ आये.

कुछ देर तक और राह देखने बाद मैंने अहिल्या से कहा, " बहिन, अब क्या होगा?

इस भयानक जंगल में रात किसी तरह नहीं काटी जा सकती.

मैं घोड़े पर बैठ सकती हूँ, अगर तू भी बैठ सकती हो तो रथ के दोनों घोड़ों पर सवार हो हम दोनों जंगल के बाहर निकलने की कोशिश करें.

इसी समय पीछे की तरफ से आवाज आई, " घबड़ाओ मत मैं आ पहुंचा! " और हम दोनों ने शेरसिंह को खड़े पाया.

हमारी जान में जान आई और अहिल्या जो बहुत ही डर गई थी लपक कर उनका हाथ पकड़ कर बोली, " चाचाजी, आप कहाँ चले गये थे?

हम लोग तो घबड़ा गये थे कि आपने इतनी देर क्यों लगाई! " शेरसिंह बोले, " हां, मुझे देर लग गई, मैं बड़ी आफत में पड़ गया था, लेकिन तुम लोग यहां से चलो रास्ते में सब हाल सुनाऊँगा, इस समय हम लोग चारों तरफ से दुश्मनों से घिर गये हैं अतएव तुम दोनों बहुत होशियारी के साथ मेरे पीछे - पीछे चली आओ.

" इतना कह वे कुछ इस ढंग से घूम कर चल पड़े कि सिबाय पीछे - पीछे चलने के उनसे कुछ पूछने या उस औरत बाला मामला कहने की हमारी हिम्मत ही न पड़ी.

जिधर हमारे घोड़े या रथ थे उधर न जा शेरसिंह ने दूसरी तरफ का रास्ता लिया.

मेरा इरादा हुआ कि उनसे पूर्छ कि क्या घोड़े इसी जगह रहेंगे पर यह सोचे चुप रही कि शायद घोड़ों को साथ ले जाने का सुभीता न होगा.

थोड़ी दूर जाने के बाद शेरसिंह ने रुख बदल दिया और चश्में के किनारे - किनारे जाने लगे.

इस समय एकदम अँधेरा हो गया था.

बहुत दूर तक हम लोग इसी तरह तेजी के साथ चलते रहे यहाँ तक कि जंगल खतम हो गया, हम लोग मैदान में आ पहुँचे और अजायबघर की इमारत से थोड़ी ही दूर पर रह गए होंगे.

मैं बिल्कुल थक गई थी अस्तु मैंने शेरसिंह को सम्बोधन करके जो अभी तक बिना कुछ कहे बटवेते चले आये थे — कहा, " मैं बहुत थक गई हूँ, अगर कुछ देर सुस्ता लीजिये तो क्या हर्ज हैं.

" उन्होंने कहा, " उस थोड़ी दूर आगे चल कर हम लोग खतरे से बाहर हो जायेंगे, तुम थोड़ी हिम्मत और करो.

" लाचार हो मुझे पुनः चलना पड़ा मगर मैंने इतना जरूर कह दिया कि ' अब ज्यादे दूर नहीं जा सकूँगी ' और जहाँ तक मैं समझती हूँ यही हालत अहिल्या की भी थी.

लगभग आध कोस के और चलना पड़ा और हम लोग अजायबघर के बिल्कुल पास पहुंच गये.

शेरसिंह ने अपनी चाल कमकी और अहिल्या ने मुझसे धीरे - से पूछा, “ बहिन, यह कौन जगह है?

उस मन्दिर से हम लोग अब कितनी दूर हैं जहां शिवदत्त बुलाया गया है?

" मैंने जवाब दिया- " यह अजायबघर है, पर वह मन्दिर किधरहै सो मैं ठीक नहीं कह सकती, चाचाजी खड़े हों या कहीं रुकें तो मैं उनसे पू.

" आखिर वह मौका भी मिला और शेरसिंह एक जगह रुक कर कुछ सोचने लगे.

मैं पास पहुंची और बोली, “ कहिये उस बारे में आपने क्या सोचा जिसके लिए असल में हम लोग यहाँ आये हैं! वह जगह अब यहाँ से कितनी दूर है?

" इसके जवाब में उन्होंने कुछ रुक कर कहा, " उस बारे में मैं सब कुछ सोच चुका हूँ, वह जगह अब यहाँ से थोड़ी ही दूर !! यह सुनने के साथ ही मुझे ताज्जुब हुआ क्योंकि कई बार बाबूजी के साथ आने - जाने के कारण मैं अच्छी तरह जानती थी कि वह मन्दिर जमानिया शहर से कुछ ही बाहर निकल कर है जबकि यह अजायबघर वहाँ से बहुत दूर है अस्तु ये कैसे कहते हैं कि वह जगह आ पहुँची.

इसके साथ ही मेरे दिल में एक सन्देह ने जगह पकड़ ली कि कहीं ऐसा तो नहीं कि यह शेरसिंह न बल्कि कोई दुश्मन हो और हम लोगों को काबू में करना चाहता हो! मैं यह

सोच ही रही थी कि शेरसिंह ने अपनी जेब से एक सीटी निकाल किसी तरह के खास इशारे के साथ बजाया.

कुछ देर बाद उसी तरह की आवाज कहीं दूसरी तरफ से आई और पुनः शेरसिंह ने सीटी बजाई, दूसरी सीटी के साथ ही कई आदमियों के आने की आहट मालूम हुई और मुझे निश्चय हो गया कि हम लोग फंस गये और जरूर यह असली शेरसिंह नहीं बल्कि कोई ऐयार है, उसी समय अहिल्या ने पूछा, " आपने सीटी क्यों बजाई और ये लोग कौन हैं जिनके आने की आहट आ रही है?

" जिसके जवाब में शेरसिंह बोले, " ये मेरे शागिर्द हैं, अपना काम पूरा करने के लिए इनसे मदद लेनी पड़ेगी.

मेरा शक इस जवाब से यकीन को पहुंच गया क्योंकि मैं अच्छी तरह जानती थी कि शेरसिंह किसी शागिर्द को अपने साथ नहीं लाये हैं, मगर इस समय कुछ ठोकने या पूछने का मौका न था, अहिल्या मुझसे दूर शेरसिंह के पास में थी और मैं पीछे की तरफ एक पेड़ के पास थी, वहीं से घूमकर पेड़ की आड़ में हो रही और तब धीरे - से नाले में उतर गई जिसके किनारे - किनारे उस वक्त हम लोग चले जा रहे थे.

मैंने इतने ही पर बस नहीं किया बल्कि जल में उतर गई और गरदन तक पानी में अपने को डाल दिया.

यह बात मैंने इतनी आहिस्तगी से की कि नकली शेरसिंह या अहिल्या दोनों में से किसी को भी खबर न हुई, इसके बाद ही चारों तरफ कई मशालों की रोशनी हो गई और हाथ में नंगी तलवारें लिये कितने ही आदमियों ने उस जगह को घेर लिया जहाँ शेरसिंह और अहिल्या खड़े थे.

अब उस ऐयार ने भी पूरी तरह से रंगत पलटा और कड़ककर कहा “ इस औरत (अहिल्या) की मुश्कें बाँध लो और तलाश करो कि वह दूसरी औरत कहाँ है.

" बेचारी अहिल्या तो यह सुनते ही बदहवास होकर जमीन पर गिर गई और उन आदमियों ने मशाल की रोशनी में मुझको ढूंढ़ना शुरू किया.

यद्यपि डर के मारे मेरी भी बुरी हालत हो रही थी पर अपने को काबू में किया और पानी के अन्दर गोते लगाती और जहाँ तक हो सका अपने को छिपाती हुई बहाब की तरफ

जाने लगी.

भाग्यवश किसी की निगाह मुझे पर न पड़ी और यद्यपि मशाले लिए कई आदमी नाले में भी उतरे पर मैं दूर निकल गई यहाँ तक कि खास अजायबघर के नीचे पहुँच गई, उसके पुल की तरह बनी और ऊपर की इमारत से ढंकी हुई अँधेरी दर तक पहुँचे मैं जल के बाहर निकली और वहाँ के अंधकार में एक पत्थर के अनगड़ ढोके के पीछे छिप काँपते हुए कलेजे के साथ इस बात की राह देखने लगी कि अब और कौन सी मुसीबत आती है.

वे आदमी जो मुझे ढूंढ़ने के लिए नाले में उतरे थे इधर - उधर देख - भाल कर फिर ऊपर चले गए और किसी ने उतनी दूर तक आने का खयाल न किया जहाँ मैं छिपी हुई थी या मुमकिन है कि उन्होंने सोचा हो कि मैं किसी और तरफ निकल गई.

गरज कि थोड़ी देर बाद वहाँ पूरा सन्नाटा छा गया और अहिल्या को लिए वह ऐयार जो शेरसिंह बना हुआ था अपने साथियों समेत जाने किधर चला गया.

कुछ समय तक मैंने वहीं छिपे रहना मुनासिब समझा और जब पूरी तरह विश्वास हो गया कि वहाँ कोई मौजूद नहीं है तो मैं मकान के नीचे से बाहर आई, अपने कपड़े निचोड़ कर फिर से पहिने, और तब सोचने लगी कि अब क्या करूं और किधर जाऊं.

मुझे इस तरह खड़े कुछ ही समय हुआ होगा कि अजायबघर के अन्दर से एक नाजुक और कोमल गले की जनाना आवाज सुनाई पड़ी, " अरे कम्बख्तों, क्यों मरे को मारता है! " इसके बाद एक चीख की आवाज आई और तब किसी के जमीन पर गिरने की आहट मालूम पड़ी.

डर, ताज्जुब और घबराहट ने मेरे रहे - सहे हवास भी गायब कर दिये.

इस आधी रात के निराले में कौन किसऔरत को तकलीफ पहुँचा रहा है?

यह कौन है जिसका पत्थर - सा कलेजा औरत की चीख से भी नहीं फट जाता?

केवल यही नहीं बल्कि मुझे यह भी सन्देह हुआ कि वह कहीं अहिल्या ही न हो अस्तु यद्यपि मैं मुसीबत की मारी और खुद परेशान थी पर मैंने निश्चय कर लिया कि चाहे जो कुछ भी हो ऊपर चल कर देखना चाहिये कि क्या बात है.

छिपती और चारों तरफ की आहट लेती हुई मैं अजायबघर के फाटक की तरफ आई.

फाटक खुला हुआ था और वहाँ किसी की आहट नहीं लगती थी अस्तु में तेजी से सीढ़ियाँ चड़ अन्दर चली गई और बाईं तरफ वाली कोठरी में जा पहुँची.

भीतर वाला बड़ा कमरा उस समय खुला हुआ था और अन्दर मद्धिम रोशनी हो रही थी जिसकी कुछ - कुछ आभा बाहर वाले दालान में भी आ रही थी.

मैंने हिम्मत कर अपना सिर कोठरी के बाहर की तरफ निकाला और भीतर की तरफ झाँक कर देखा, देखा क्या कि वही हसीन और कमसिन जिसे आज संध्या को जमीन के अन्दर गाड़ते देखा था हॉथ - पॉब बाँध कर जमीन पर गिराई हुई है और एक आदमी खंजर हाथ में लिये उस पर झुका हुआ उसे मारा ही चाहता है.

डर और घबराहट ने मुझ पर यहाँ तक असर किया कि मैं अपने को रोक न सकी और मेरे मुँह से एक चीख की आवाज निकल ही गई, उस आदमी का हाथ जो उस बेचारी औरत की जान लिया चाहता था मेरी चीख सुनते ही रुक गया और उसने चिहुँक कर मेरी तरफ देखा.

मुझे उसी सूरत कुछ पहिचानी हुई - सी मालूम हुई और फिर यकायक मुझे याद आया कि यही महाराज शिवदत्त हैं जिसकी तस्वीर मेरे देखने में आई थी.

उसे पहिचानते ही मेरे रहे - सहे ह्वास भी गुम हो गये और मुझमें एक कदम हिलाने की ताकत न रही कि वहाँ से भाग सकूं, और इसका मौका भी न मिला क्योंकि किसी ने पीछे से आकर मुझे पकड़ लिया, शिवदत् भी बाहर निकल आया और मेरी तरफ बड़ता हुआ बोला, " क्यों रघुबरसिंह, यह कौन औरत है?

" वास्तव में वह आदमी जिसने मुझे पकड़ा हुआ था यही रघुबरसिंह या जैपालसिंह दारोगा का दिली दोस्त था और अब भी है.

उसने मुझे रोशनी की तरफ करते हुए कहा, " यह वही कम्बख्त मालती है जिसने आपमें और हमारे बाबाजी में झगड़ा करा दिया है.

" शिवदत्त यह सुनते ही खुश हो गया और गौर से मेरी सूरत देखकर बोला, " वेशक वही तो है! " जैपाल ने अपने दुपट्टे से मुझे भी बाँध डाला और उसी औरत के पास बैठा

दिया जो जमीन पर गिरी हुई थी, इसके बाद वह शिवदत्त की तरफ घूमा और बोला, " कहिये इस भुवनमोहिनी का क्या हाल है?

"

" भुवनमोहिनी" यह नाम मालती के मुँह से सुनते ही महाराज चौंक पड़े और बोले, “ क्या नाम लिया, भुवनमोहिनी! " मालती ने हाथ जोड़कर कहा- “ जी हाँ महाराज, भुवनमोहिनी.

मुझे मालूम है कि महाराज भी उससे अच्छी तरह परिचित हैं! " महाराज ने चिन्ता के साथ माथे पर हाथ फेरते हुए कहा, " मगर वह तो साँप के काटने से मर गई थी! " मालती बोली, " जी नहीं महाराज, वह भी इन्हीं दुष्ठों की कार्रवाई थी, असल हाल यह है कि शिवदत्त से मेल करने के लिए आपके दारोगा साहब ने उसे जरिया बनाया था.

किसी तरह की तेज दवा भुवनमोहिनी को ऐसी खिलाई गई कि वह पाँच - छह घण्टे के लिए मुर्दा सी हो गई, तब यह शोर मचा दिया गया कि साँप ने काट लिया.

वैद्यों ने जाँच भी की पर कुछ कर न सके और दुष्टों की कार्रवाई पूरी तरह काम कर गई.

मुर्दा समझ कर भुबनमोहिनी जमीन में गाड़ दी गई जहाँ से दारोगा के आदमी उसे निकाल लाये.

" महाराज ने गुस्से से दाँत पीसते हुए कहा, " क्यों वे कमीने दारोगा! " तेरी मेरे ही साथ यह चाल! " मालती ने कहा " महाराज, अभी तो आपको उस पापी का हाल रुपये में एक पैसा भी मालूम नहीं हुआ है.

वह तो इतना भारी ऐयाश, लालची, खुदगर्ज और बेरहम आदमी है कि जिसका नाम नहीं.

अभी मेरे ही किस्से में आपको उसका और हाल मालूम होगा.

" महाराज बोले, " अच्छा तू कह कि फिर भुवनमोहिनी की और तेरी क्यादशा हुई.

" मालती कहने लगी मालती:

शिवदत्त और जैपाल में कुछ बातें हुई और तब जैपाल मेरे पास आकर बोला, " लुच्ची, तैने हमारे महाराज और बाबाजी के बीच में झगड़ा खड़ा करना चाहा था.

अब देख मैं तेरी क्या दुर्गति करता हूँ! " इतना कर कर उसने जोर से एक तमाचा मेरे गाल पर मारा.

मैं कर ही क्या सकती थी, चुपचाप बैठी आँसू बहाने लगी.

जैपाल ने किसी तरह की दवा अपने पास से निकाली और जबर्दस्ती मेरे नाक मैं सुंघा दी.

मुझे दो - एक छींक आईं फिर तनोबदन की होश न रह गई.

जब मैं होश में आई मैंने अपने को एक दूसरी ही जगह पाया.

दिन का वक्त था और सूरज बहुत ऊँचे उठ चुके थे.

मेरे हाथ पैर खुले हुए थे और एक दालान में पड़ी हुई थी जिसके सामने एक छोटा - सा बाग था.

कुछ गौर करते ही मुझे मालूम हो गया कि यह वही लोहगढ़ी है जहाँ एक दिन पहिले अहिल्या के साथ शेरसिंह मुझे लाये थे.

मैं उठ बैठी और ताज्जुब के साथ सोचने लगी कि मैं यहाँ क्योंकर पहुंची और मेरे हाथ - पैर खुले क्यों हैं! आखिर कुछ सोच - विचार कर मैं उठ खड़ी हुई और चारों तरफ घूम - घूम कर देखने लगी कि यहाँ और भी कोई आदमी है या नहीं और क्या मेरे निकल भागने की भी कोई राह हो सकती है?

मुझे शेरसिंह ने यहाँ का कुछ भेद और कई दरवाजों के खोलने की तरकीब समझाई थी, इससे मुझे भरोसा था कि अगर कोई मुझे रोकेगा नहीं तो मैं इस जगह से बाहर जा सकूँगी.

मैं उठ खड़ी हुई और चारों तरफ सन्नाटा पा दालान के नीचे उतरने वाली सीढ़ियों की तरफ बढ़ी पर उसी समय पास ही कहीं से मुझे दो आदमियों के बोलने की आवाज सुनाई पड़ी, मैं ध्यान देकर सुनने लगी.

एक आवाज:

मालती को तुम ऐसे ही छोड़ आये! वह बहुत बुरा किया, अगर वह होश में आकर भाग जाएगी तो बड़ी भारी मुसीबत आएगी.

दूसरा:

अजी वह होश में आवेगी तब तो! मैंने उसे बहुत कड़ी बेहोशी दी है जिससे अभी घण्टों उसे होश न होगी, और मान लिया जाय कि होश में आ भी गई तो होगा भी क्या, बिना हमारी मर्जी के वह इस लोहगड़ी के बाहर नहीं जा सकती.

पहिला:

हाँ यह तो है.

अच्छा यह बताओ कि अब अहिल्या की लाश को क्या किया जाय?

" अहिल्या की लाश " यह शब्द सुनते ही मेरा कलेजा धड़क उठा.

बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाल मैं सुनने लगी.

दूसरा आदमी बोला दूसरा:

अब सिवाय इसके और क्या किया जा सकता है कि उसके टुकड़े - टुकड़े कर छत पर डाल दिया जाय, थोड़ी ही देर में चील - कौवे साफ कर जायेंगे.

पहिला:

अच्छी बात है ऐसा ही करो, मगर जल्दी करो अब देरी का काम नहीं है.

महाराज, मैं नहीं कह सकती कि इस बातचीत का क्या असर मुझ पर हुआ क्या अहिल्या, मेरी प्यारी अहिल्या, मारी गई और अब चील - कौबों की खुराक बनेगी! क्या इस थोड़ी - सी चपलता का यही नतीजा निकला! क्या इन आदमियों ने उस बेकसूर को मार डाला! हाय अब मैं क्या मुँह लेकर दामोदरसिंह जी के पास जाऊँगी! मुनासिब तो यही है कि इसी जगह मैं अपनी जान दे दूं हाय! मेरा कैसा पत्थर का कलेजा था जो प्यारी अहिल्या के मारे जाने का हाल सुनकर भी फट न गया.

मुझे तो अब ताज्जुब होता है कि जो कुछ घटना मैंने उस समय देखी और सुनी उससे मेरी जान वहाँ ही क्यों न निकल गई! खैर जो कुछ भी हो, यह बात सुन फिर मुझे भागते या अपनी जान बचाने की फिक्र न रही और यही चिन्ता पड़ गई कि जिस तरह हो सके पता लगाना चाहिये कि अहिल्या कहाँ और किस हालत में है.

खैर आवाज पर मैंने गौर किया तो मालूम हुआ कि कहीं पास ही से आ रही है पर कहाँ?

इसका पता नहीं लगता था.

मैंने इधर - उधर चारों तरफ निगाह की और जब कुछ पता न लगा तो दालान के नीचे की तरफ झाँका और तब मेरी निगाह एक छोटे मोखे पर पड़ी जो रोशनदान की तरह दालान की बाहरी दीवार में नीचे की तरफ बना हुआ था.

मैंने सोचा हो न हो यह किसी कोठरी में हवा और रोशनी जाने के लिए बनाया गया है और शायद इसी में से आवाज भी आ रही है.

मैं बहुत धीरे - धीरे दालान के नीचे उतर आई और उस मोखे के पास पहुँची जो जमीन से लगभग हाथ भर की ऊंचाई पर इस ढंग से बना हुआ था कि सीढ़ियों की आड़ होने के कारण यकायक उस पर निगाह नहीं पड़ सकती थी.

मैं उसके पास जमीन पर बैठ गई और उसमें से झाँककर देखा, मुझे एक छोटी कोठरी नजर आई जिसमें दिन के समय भी अंधकार था और यदि किसी तरह की तेज रोशनी जो एक कोने में बल रही थी वहाँ न होती तो उस कोठरी में कुछ दिखना असम्भव था.

उस रोशनी में मैंने अपनी प्यारी अहिल्या की लाश को देखा.

जमीन पर मुर्दा पड़ी हुई थी, सिर अलग और धड़ अलग था, उसकी छाती में एक खञ्जर घुसा हुआ था और बहुत - सा खून निकल कर चारों तरफ फैला हुआ था.

वह मामूली कपड़ा भी जो उसके ऊपर था खून से बिल्कुल तर था और दीवारों पर भी चारों तरफ खून के छींटे नजर आ रहे थे.

महाराज, यह एक ऐसा भयानक दृश्य था कि कुछ देर के लिए मुझे गश आ गया और मैं बदहवास होकर सीढ़ी के पास उउंग गई.

कुछ देर बाद जब मेरे होश ठिकाने हुए तो मैंने पुनः झांककर देखा, किसी कसाईखाने का भी वैसा भयानक दृश्य न होगा जैसा मैंने वहाँ पाया.

जैपाल और हेलासिंह उस जगह बैठे हुए थे और खञ्जर से काट - काटकर उस लाश के टुकड़े कर रहे थे.

महाराज, ऐसा वीभत्स दृश्य देखकर एक औरत की क्या हालत हुई होगी यह आप खुद ही सोच सकते हैं! अहिल्या, मेरी और महाराज की प्यारी अहिल्या, और इस तरह दुर्गति को प्राप्त हो! अब तो मेरा भी इसी जगह मर जाना अच्छा है यह सोच मैंने अपना सिर पत्थर पर पटककर जान दे देना चाहा पर फिर उसी समय खयाल आया कि नहीं अपनी जान देने के पहिले उन पापियों से बदला लेना होगा जिन्होंने यह काम किया.

बस बदले का ध्यान आते ही मैंने अपनी जान देने का इरादा छोड़ दिया और वहां से भागने का निश्चय किया.

मैंने दिल ही दिल में सोच लिया कि सीधे महाराज के पास जाऊ और सब हाल कहूँ, फिर झाँककर तीचे देखने की हिम्मत न हुई, मैं वहाँ से उठी और बाहर को रवाना हुई.

ईश्वर की दया से सदर दरवाजा सहज में ही खुल गया और उस भयानक स्थान के बाहर आ गई, पर फिर भी महाराज तक पहुँच न सकी और आपके दारोगा साहब के कारण एक नई मुसीबत में फंस गअईं। महाराज गिरधरसिंह चुपचाप मालती का किस्सा सुन रहे थे.

इस समय उनकी आँखें भी आँसू से भरी हुई थीं क्योंकि अहिल्या के इस दुःखद वृत्तान्त ने उनके मुलायम दिल पर भी गहरा असर किया था.

मालती ने जब कहना बन्द कर अपने आँसू पोछे तो उन्हें भी लाचार हो अपना रूमाल आँखों तक ले जाना ही पड़ा और थोड़ी देर के लिए वे उसी से अपना मुँह डाँके रहे.

.

मगर इसके बाद एकाएक ही उनकी अवस्था बदली, आँखें गुस्से से लाल हो गईं, चेहरा तमतमा उठा और हाथ तलवार के कब्जे पर जा पड़ा.

उन्होंने कांपतीहुई आवाज में कहा, " मैं इतने दिनों तक बड़े भारी भ्रम में पड़ा हुआ था.

हीरा समझ मैंने संखिये को कलेजे से लगाया हुआ था! आज तक मैं अपने दोस्तों, सलाहकारों और रिश्तेदारों के बर्खिलाफ इन कमीनों के ऊपर भरोसा किए हुए था, आज तेरे किस्से ने मेरी आँखें खोल दीं.

मुझे अपनी भूल मालूम हो गई और मालती, मैं अपने क्षत्रित्व की प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि इन दुष्टों और हत्यारों को ऐसी सजा दूंगा कि जंगली जानवरों को भी इनके हाल पर रहम आबेगा! अब तू बस कर .

.

.

इसके आगे का हाल सुनने की ताकत अब मुझमें नहीं.

" गुस्से में कांपतेहुए महाराज ने अपनी तिलिस्मी तलवार म्यान से निकाली और हेलासिंह तथा जैपाल की तरफ बड़े जो कमरे में बँधे खड़े कांपरहे थे.

नजदीक ही था कि महाराज की तलबार ऊँचे उठती और दुनिया दो पापियों के बोझ से हलकी हो जाती कि एकाएक उस कमरे का दरवाजा खुला और किसी ने अन्दर आकर भारी आवाज में कहा- " महाराज ठहरिये! " महाराज चौंककर रुक गये और उस तरफ देखने लगे.

एक बहुत ही बूड़ा आदमी जिसके बाल और लंबी दाड़ी सन्त की तरह सफेद हो रही थी नजर आया जो लाठी का सहारा लेकर खड़ा था.

महाराज को देख उसने बड़े अदब से सलाम किया और कहा, “ महाराज, इन दोनों हरामजादोके ऊपर मेरी भी नालिश है.

इन्हें मारने के पहिले मेरा भी हाल सुन लें और मेरा भी फैसला कर दें.

" महाराज ने ताज्जुब से पूछा, " तू कौनहै, यहाँ क्योंकर आया, और क्या चाहता है?

" उसने जवाब दिया, " मैं बड़ा भारी दुखिया हूँ, अब से कई बरस पहले से इस तिलिस्म में कैद हूँ और इन्हीं दोनों की बदौलत (जैपाल और हेलासिंह की तरफ बताकर) तरह - तरह की तकलीफें भोग रहा हूँ, !!

आश्चर्य में डूबे महाराज और मालती उस बूड़े को देखने लगे.

बूड़े का बदन उसकी उम्र का बोझ न सहकर टेढ़ा हो गया था और सिर, दाड़ी तथा मोछों के बाल एकदम सुफेद हो रहे थे.

उसके कपड़े बड़े ही मैले, फटे पुराने थे, और उनमें से एक तरह की बड़ी ही बुरी बदबू आ रही थी.

मालूम होता था कि बरसों से ये बदले या साफ किये नहीं गये थे.

उनके बदन का वह हिस्सा भी जो खुला हुआ था बहुत ही मैला और गन्दा हो रहा था.

कुछ देर तक ताज्जुब और गौर के साथ इस अजीब बूढ़े को देखने के बाद महाराज ने उसकी तरफ बड़ कर पूछा, " तेरा क्या नाम है और तू कहाँ कैद था?

" बूढ़े ने फिर सलाम किया और कॉपते हुए हाथों को जोड़कर कहा, “ कृपानिधान, मेरा नाम गोबिन्द है, बरसों से मैं इस तिलिस्म में बन्द हूँ और इसी कमरे की बगल वाली कोठरी में पड़ा रहता था.

आज पहिले - पहिले यहाँ आदमियों की आवाज मैंने सुनी और बाहर निकलने पर महाराज के दर्शन पा कृतार्थ हुआ, अब मुझे पूरी आशा है कि महाराज के हाथों मेरा इंत्साफ होगा और हम लोगों की यह दुर्दशा करने वाले पाजी सजा पाएँगे.

" महाराज:

क्या तेरे साथ कोई और भी है?

बूड़ा:

(हाथ जोड़कर) जी हाँ महाराज, मेरे साथ एक गरीब दुखिया औरत है जिसे मैंने यहां ही पाया था और मेरे भी पहिले से यहाँ कैद और दुर्दशा के दिन बिता रही है.

मेरी हालत से भी बदतर उसकी हालत हो रही है और मुझसे भी ज्यादा उसने दुष्टों के हाथों से कष्ट उठाया है.

महाराज :

उसकी यह दशा क्योंकर हुई और वह कहाँ है?

बूड़ा:

उसकी दुर्दशा के कारण भी जैपाल, हेलासिंह और आपके दारोगा साहब हैं उसका हाल सुनेंगे तो आपको बड़ी ही दया आयेगी.

वह यहीं बगल में है और इस समय उसकी हालत इतनी खराब हो रही है कि वह उठकर यहाँ तक नहीं आ सकती.

अगर महाराज उसे देख लें तो बड़ा ही अच्छा हो क्योंकि मुझे तो यह भी विश्वास नहीं होता कि वह घण्टे - दो घण्टे से ज्यादा जीती रह सकेगी.

" अच्छा चल मैं तेरे साथ चलता हूँ, महाराज ने गुस्से के साथ जैपाल और हेलासिंह की तरफ देखा और तब कहा, (मालती, तू यहीं खड़ी रह, मैं अभी आया).

" आगे - आगे वह बूड़ा और उसके पीछे - पीछे तिलिस्मी तलबार हाथ में लिये गुस्से से होठ चबाते महाराज गिरधरसिंह उस कमरे के बाहर आये.

बाह्र का दालान पार कर बूड़ा दक्षिण की तरफ घूमा जिधर एक छोटा दालान और उसके बीचोंबीच में वैसा ही काले पत्थर का एक शेर बना हुआ दिखाई पड़ रहा था जैसे कि चार उस कमरे के अन्दर थे जिसमें से महाराज अभी आये थे.

बूड़े ने पीछे घूमकर कहा, " कृपानिधान, उसी दालान में वह औरत है.

' दोनों उस दालान में पहुंचे मगर वहाँ कोई कोठरी तो क्या दरवाजा तक नजर न आया, तीन तरफ संगीन दीवारें और एक तरफ पत्थर के खम्भे थे और बीचोबीच में वह शेर बना हुआ था.

बूड़े ने ताज्जुब के साथ इधर - उधर देखा और काँपते हुए कहा, " महाराज, यह तो कोई जादू - सा हो गया है! अभी तक इस सामने वाली दीवार में दरवाजा और एक कमरा था और अब यहाँ पक्की दीवार है! मैं नहीं कह सकता कि यह मेरी आँखों का भ्रम है या कोई तिलिस्मी कारीगरी! " बूड़ा ताज्जुब के साथ उस दीवार को दबाने, टटोलने और धक्का देने लगा.

महाराज यह देख बोले, " ठहरो, मैं वह कमरा खोलता हूँ.

" इतना कह वे उस शेर के पास गए और उसकी एक आँख में ऊँगली डाली.

दबाने के साथ ही कुछ आवाज आई और उस जगह जहाँ बूढ़े ने बताया था एक खुला हुआ दरवाजा नजर आया.

महाराज ने घूमकर बूड़े से कुछ कहना चाहा पर उसी समय बूड़े ने एक कपड़ा जो कमर में लपेटे था खोलकर उनके ऊपर फेंक दिया और गरदन पर डालकर दबाया.

उस कपड़े में एक ऐसी बदबू थी कि महाराज बर्दाश्त न कर सके और कपड़ा हटाने की कोशिश करते - करते ही बेहोश होकर गिरने लगे.

जुड़े ने उन्हें सम्हाला और उसी कपड़े में उनकी गठरी बाँधी.

इसके बाद उस गठरी को पीठ पर लाद वह उस कमरे में घुस गया और कमरे का दरवाजा बन्द हो गया!

चौथा व्यान।

खड़े - खड़े मालती को महाराज की राह देखते हुए बहुत देर बीत गई पर न तो महाराज ही लौटे और न वह बूड़ा ही नजर आया.

मालती को घबराहट और उसके साथ चिन्ता भी पैदा हुई और वह धीरे - धीरे उस कमरे के बाहर निकल कर उधर ही को चली जिधर महाराज को बूड़े के पीछे - पीछे जाते हुए उसने देखा था.

अभी वह कुछ ही दूर गई होगी कि सामने से तेजी के साथ आते एक नकाबपोश को उसने देखा और डर कर रुक गई क्योंकि उसे गुमान हुआ कि वह कहीं उसके दुश्मनों में से न हो.

मालती को देख उस नकाबपोश ने अपनी चाल तेज की और लपकता हुआ उसके पास आ पहुँचा, यकायक ही वह रुक गया और ऐसे भाव से मालती का चेहरा देखने लगा मानों यह वह नहीं है जिसके होने की आशा में वह लपका था.

मालती भी डरती हुई उसकी तरफ देखने लगी.

आखिर नकाबपोश ने पूछा, " तू कौनहै और तेरा नाम क्या है?

" मालती ने जवाब दिया, “ जब तक मैं तुम्हारा परिचय न जान लूं अपना नाम नहीं बता सकती, पहिले तुम बताओ की कौन हो?

" यकायक नकाबपोश हँसा और उसने अपने चेहरे से नकाब उलटते हुए कहा, " मैं पहिचान गया कि तू मालती है! " मालती ने इन्द्रदेव को अपने सामने खड़ा पाया.

उसकी आँखों से आँस् गिरने लगे और वह इन्द्रदेव के पैरों पर गिर पड़ी, इन्द्रदेव ने उसे प्यार से उठाकर उसका सिर सूंघा और पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा, “ बेटी मालती, मुझे शेरसिंह की जुबानी कई रोज हुए तेरे छूटने की खबर लग चुकी थी और मुझे ताज्जुब हो रहा था कि छूट जाने के बाद तू कहाँ है या क्या कर रही है और मेरे पास क्यों नहीं आती! अब मुझे मालूम हुआ कि तू यहाँ फंसी रहने के कारण लाचार थी! "

मालती:

(हाथ जोड़कर) जी इस तिलिस्म में तो मैं कल ही से बन्द हूँ, इसके पहिले बिल्कुल स्वतन्त्र थी पर .

.

.

.

इन्द्र ०:

पर क्या?

मालती:

(रुकते हुए) पर मुझे आपके पास आते हुए डर मालूम होता था.

इन्द्र ०:

(ताज्जुब से) मेरे पास आते हुए और डर?

सो क्यों?

मालती:

क्योंकि मैंने कैद की हालत में आपके बारे में ऐसी बातें सुनीं जिससे मझे ऐसा विश्वास करना पड़ा, इन्द्र ०:

तू तो दारोगा की कैद में थी?

तो उसी ने तुझसे वे सब बातें कही होंगी?

मालती:

(सिर नीचा करके) जी हाँ.

इन्द्र ०:

तू खुद ही सोच सकती है कि वे सब बातें कहाँ तक सही होंगी.

खैर तेरा जो कुछ सन्देह होगा वह मैं दूर कर दूंगा, तू मुझे पर उतना ही विश्वास रख जितना अपने पिता पर रखती थी.

पर कभी फुरसत के समय मैं तुझसे बातें करूँगा, इस समय तू यह बता कि यहाँ कैसे आई और क्या कर रही है?

मालती:

मुझे हेलासिंह और रघुवरसिंह गिरफ्तार करके यहाँ ले आये जिसकी कथा बहुत लम्बी है और इस समय सुनाने का समय भी नहीं है, पर मुख्तसर यह है कि इस जगह महाराज गिरधरसिंह ने मुझे देखा और मेरा किस्सा सुना.

इन्द्र ०:

क्यामहाराज यहाँ आये थे?

मालती:

जी हाँ, अभी कोई घड़ी भर हुई तब तक वे मेरे साथ ही थे.

उस समय एक बूड़ा आदमी आया और उनसे कुछ बातें करके अपने साथ ले गया.

बस उसके बाद से वे नजर नहीं आते कि कहाँ चले गये.

इन्द्र ०:

(चौंक कर) बूढ़ा आदमी! उसकी क्या सूरत थी?

उसने महाराज से क्याकहा?

मालती:

बड़ा ही बूड़ा था, उसके सब बाल सफेद हो रहे थे और कपड़े एकदम गन्दे थे.

उसने महाराज से कहा कि उसे भी दारोगा ही ने इस तिलिस्म में कैद किया था और उसके साथ एक औरत भी है जो अब मरने की हालत को पहुँच गई है.

महाराज उस औरत को देखने के लिए उस बूढ़े के साथ इधर ही कहीं आये और न जाने कहाँ गायब हो गये.

मैं हेलासिंह और रघुवर सिंह के साथ उस शेरों वाले कमरे में थी, जब महाराज को देर लगाते देखा, घबड़ा कर इधर आई और आप नजर पड़े, इन्द्रदेव ने अफसोस के साथ अपने माथे पर हाथ पटका और कहा, " जरूर वह कोई दुश्मन था और दगा कर गया! आह्, अब इतने बड़े तिलिस्म में मैं महाराज को कहाँ ढूंडू, और उनकी जान बचाने की क्या तरक्कीव करूँ! " इन्द्रदेव उसी जगह बैठ गये और माथे पर हाथ रख चिन्ता करने लगे.

मालती बेचैनी के साथ खड़ी तरह - तरह की बातें सोचने लगी.

बहुत देर बाद इन्द्रदेव ने सिर उठाया और मालती की तरफ देख के पूछा, " उस बूढ़े आदमी के साथ महाराज किस तरफ गये क्या तुझे मालूम है! " मालती बोली, " वे इसी तरफ आये थे और इस दालान तक आते हुए मैंने देखा था पर यहाँ से वह कहाँ चले गये मैं न देख सकी.

” इन्द्रदेव यह सुन बोले, " क्या इस दालान के अन्दर आते हुए देखा था?

" मालती ने जबाब दिया, " इसके पास तक आते तो देखा पर आगे आड़ हो जाने के कारण देख त सक्री, मैं नहीं कह सकती कि वे इस दालान के अन्दर आये या किसी और तरफ घूम गये.

" इन्द्रदेव ने दालान के बाहर चारों ओर निगाह की और कुछ सोच कर गरदन हिलाई, इसके बाद शेर के पास जा उन्होंने उसकी आँख में उँगली डाली.

पहिले की तरह दीवार में एक दरवाजा नजर आया.

मालती को पीछे आने को कह इन्द्रदेव उस दरवाजे के अन्दर घुसे.

वह एक लम्बा - चौड़ा कमरा था जिसमें मालती ने अपने को पाया.

जमीन पर सुफेद संगमरमर का फर्श था और उस पर जगह - ब - जगह काले पत्थर की छोटी - छोटी बहुत - सी चौकियाँ रकी हुई थीं.

हर एक चौकी पर कुछ अंक खुदे हुए थे जिन्हें इन्द्रदेव गौर के साथ पड़ने और उसे घूम - घूम कर देखने लगे.

आखिर एक चौकी के पास पहुँच कर वे रुके और उसे हाथ से छूने पर कुछ गर्म पाकर खुशी के साथ बोले, " बेशक इस पर कोई बैठा था!

मेरा सोचना ठीक है और जरूर यह उसी कमीने की कार्रवाई है! " इसके बाद वे मालती की तरफ घूमे और बोले, " बेटी मालती, मुझे अब बड़े भारी तरदुद में पड़ना और बहुत कुछ चक्कर लगाना पड़ेगा.

सब जगह तुझे साथ रखना असम्भव है और साथ ही इसके यहाँ छोड़ जाना भी उचित नहीं क्योंकि यहाँ तक दुश्मन आ पहुँचे हैं अस्तु मैं तुझे हिफाजत की जगह भेजना चाहता हूं.

तुझे किसी तरह की आपत्ति तो नहीं है.

" मालती ने हाथ जोड़ कर कहा, “ कुछ नहीं जिसे सुन इन्द्रदेव उसे लिए एक दूसरी चौकी के पास गये और बैठ जाने को कहा.

मालती बैठ गई और तब " सम्हली रहियो " कह कर इन्द्रदेव ने कोई खटका दबाया.

एक हल्की आबाज आई और तेजी के साथ वह पत्थर की चौकी जमीन के अन्दर घुस गई तथा वहाँ गढ़हा - सा नजर आने लगा जिसके अन्दर कुछ कल - पुर्जी के चलने की धीमी - धीमी आवाज आ रही थी.

इन्द्रदेव कुछ देर तक वहाँ खड़े रहे इसके बाद कुछ सोचते हुए पुनः उस चौकी के पास पहुँचे जिसे पहिले देखा था, उस पर बैठ गये और एक खटका दबाने के साथ ही वह चौकी भी जमीन में धंस गई.

बहुत नीचे उतर जाने के बाद एक झटके के साथ वह चौकी रुक गई, वह जगह जहाँ इन्द्रदेव इस समय थे कैसी या किस तरह की थी इसका कुछ पता नहीं लगता था क्योंकि इस जगह इतना अंधकार था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था और इन्द्रदेव ने इसके जानने की कोशिश भी नहीं की क्योंकि तुरन्त ही उस चौकी में फिर हरकत पैदा हुई और वह धीरे - धीरे एक तरफ को धसकने या इस तरह दौड़ने लगी मानो उसके नीचे पहिये लगे हों.

चलती समय एक तरह की हलकी आवाज चौकी के नीचे से आने लगी और उसकी सतह कुछ गर्म हो उठी पर इतनी नहीं कि बुरी या तकलीफदेह मालूम हो.

धीरे - धीरे चाल तेज होने लगी और हवा के कड़े और बहुत ही ठंडे झोंके आने लगे जिससे इन्द्रदेव को अपना कपड़ा अच्छी तरह लपेट कर बदन को ढॉक लेने पर मजबूर होना पड़ा.

पन्द्रह मिनट के बाद चाल कम पड़ने लगी और धीरे - धीरे बिल्कुल ही कम होकर वह चौकी एकदम रुक गई, कुछ सायत के बाद पुनः झटका लगा और चौकी ऊपर की तरफ उठने लगी.

थोड़ी देर बाद ऊपर उठना भी बन्द हो गया और चौकी के रुकते ही इन्द्रदेव फुर्ती के साथ उस पर से उतर पड़े.

इस जगह भी घोर अंधकार था.

इन्द्रदेव ने अपनी कमर से तिलिस्मी खंजर निकाला और उसका कब्जा दवाया.

तेज रोशनी चारों तरफ फैल गई और इन्द्रदेव ने देखा कि वे एक छोटी कोठरी में हैं जिसकी तीन तरफ की दीवार पत्थर की संगीन बनी हुई है और सामने की तरफ लोहे का जंगलेदार दरवाजा है.

घूम कर देखने से वह चौकी नजर न आई जिसने इन्हें यहाँ कर पहुँचाया था, जमीन साफ चिकनी बनी हुई थी.

वहाँ एक काले पत्थर का चौखूटा पत्थर कोठरी के बीचोंबीच में जड़ा हुआ जरूर दिखाई दिया जो जमीन के बराबर ही में था.

इन्द्रदेव गौर से चारों तरफ देखने लगे.

लोहे वाले दरवाजे के पास ही पड़ा हुआ एक कपड़ा उन्हें दिखाई दिया, उन्होंने झपट कर उसे उठा लिया.

वह एक लबादा था जिसे देखते ही उन्हें विश्वास हो गया कि यह उसी आदमी का है जो महाराज और मालती को दिखाई दिया था.

उसके मुँह से खुशी भरी आवाज में निकला, " वेशक्र महाराज का दुश्मन उन्हें लिए हुए यहाँ तक आया है! अभी वह बहुत दूर नहीं गया होगा! " इन्द्रदेव लोहे वाले दरवाजे के पास गए और उसे खोलने की तरक़ीब करने लगे मगर यकायक उनके सिर में ऐसा चक्कर आया कि उन्हें जमीन पर बैठ जाना पड़ा.

बार - बार चक्कर आने लगा, दो - एक छींके भी आईं और वे अपना सिर पकड़े हुए जमीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गए.

अफसोस, इन्द्रदेव ने जैसा धोखा खाया! महाराज और उनके दुश्मन के पास पहुँचकर भी वे कुछ न कर सके.

वह लबादा जिसे उन्होंने हाथ में उठाया और जिसे दुश्मन जान - बूझकर वहाँ छोड़ गया था बेहोशी के अर्ग में डूबा हुआ था जिसने घण्टों के लिए इन्द्रदेव की सुधबुध भुला दी और उन्हें किसी काम का न रखा, दुश्मन को निकल भागने का काफी मौका मिला और इस जरा - सी गफलत ने महाराज गिरधरसिंह को दुनिया से मिटा दिया.

पांचवा व्यान।

सबेरा होने के साथ ही राजा गिरधरसिंह के मरने की खबर जमानिया में फैल गई और चारों तरफ हाहाकार मच गया.

गोपालसिंह के दु:ख का तो कहना ही क्या, उन्हें तो दुनिया ही उजाड़ और बीरान मालूम होने लगी.

सीधे और सरल चित्त हुँअर गोपालसिंह के दिल में अपनी माँ के मरने का सदमा अभी हटने भी न पाया था कि यह कड़ी चोट भी उन्हें बर्दाश्त करनी पड़ी.

बे एकदम पागलों की तरह हो गए, हफ्तों तक उनकी यह हालत थी कि न खाने की धुन, न सोने की परवाह, न रुकने वाले आँसुओं को रूमाल से पोंछते हुए " हाय पिताजी! हाय पिताजी! " कहते रहते.

इस अवस्था में उनके शरीर की हालत भी खराब हो गई, चेहरा पीला हो गया, आँखें धंस गईं, बदन कमजोर हो गया और आवाज बैठ गई.

उनके हितैषियों और प्रेमियों को तो यह डर हो गया कि अगर शीघ्र ही उनकी हालत न बदली तो उनकी जान पर आ बनेगी.

उनके मुसाहिब और मित्र विशेष कर इन्द्रदेव उन्हें बहुत समझाते - बुझाते दिलासा देते और कहते कि दुनिया की यही गति है पर वे सिर्फ उनकी तरफ देखते, महाराज की खाली गद्दी की तरफ निगाह फेरते, और तब रूमाल से मुँह ढंक कर रो देते.

उनके सलाहकारों की आँखों में भी आँसू आ जाता था और वे चुप हो जाते थे.

उधर हमारे दारोगा साहब ने भी अजीब ढंग अख्तियार किया था.

कुँअर गोपालसिंह से ज्यादा उनपर महाराज की मौत ने असर किया था.

अनशन व्रत धारण करके एक ही स्थान पर बैठे रहते थे, सामने महाराज की बड़ी तस्वीर रहती थी, उसी की तरफ देखते और रोते, कभी उसे कलेजे से लगाते, कभी आँसुओं से भिगोते, कभी उस तसवीर को कपड़े पहनाते, माला - फूल मॅंगा उसका श्रृंगार करके और धूप - दीप से आरती करते, कभी नौकरों को एक चिता तैयार करने का हुक्म देते और महाराज की तस्वीर के साथ जल मरने का इरादा जाहिर करते थे.

खाना - पीना बन्द हो जाने पर धीरे - धीरे इनकी हालत बहुत खराब होने लगी और बिस्तर पर पड़ने की नौबत आ गई, लेकिन अगर कोई समझाता - बुझाता या भोजन करने को कहता तो रोकर तस्वीर की तरफ हाथ उठाते और कहते, “ पहिले मेरे मालिक को तो खिलाओ, फिर उनकी प्रसादी मैं भी ग्रहण करूंगा! " धीरे - धीरे यहाँ तक नौबत आई कि उनके दोस्तों को उनकी जिन्दगी से ना उम्मीदी हो गई.

सरल प्रकृति गोपालसिंह को अपने पिता के स्वभाविक नौकर की इस हालत का पता लगा.

यद्यपि बहुतों की तरह से उन्हें भी यह विश्वास था कि महाराज की जान जाने का कारण वहीं गुप्त कमेटी है तथापि इस बात का उन्हें गुमान न था कि दारोगा ही इस काम का कर्ता - धर्ता है.

यह शक तो अभी तक इन्द्रदेव, भूतनाथ और दलीपशाह तक ही था और वे तीनों ही दिलोजान से इसका असल पता लगाने की कोशिश कर रहे थे मगर साथ ही यदि और कोई नहीं तो कम - से - कम इन्द्रदेव इस बात से भी डरते थे कि अगर बिना सबूत पाए ही वे उस बात को जो अभी तक सिर्फ सन्देह के रूप में है कि दूसरे पर प्रकट करेंगे और पीछे से मालूम होगा कि उनका यह सन्देह वृथा था और दारोगा का महाराज की मौत से कोई सम्बन्ध न था तो उन्हें बड़ा ही पश्चाताप होगा और वे अपने को कभी माफ न कर सकेंगे, अस्तु वे उस समय तक इस बात को उठाया नहीं चाहते थे जब तक कि इसका पूरा निश्चय न हो जाए कि दारोगा का महाराज की मौत से कोई सम्बन्ध है अथवा नहीं.

शायद यही सबब था कि इन्द्रदेव ने गोपालसिंह से इस बारे में अभी कुछ कहना उचित न समझा और गोपालसिंह दारोगा के असली हाल से नाबाकीफ बने रहे.

अस्तु जब गोपालसिंह को पता लगा कि दारोगा साहब ने महाराज के बियोग में अनशन व्रत धारण किया है और अपनी जान देने का संकल्प कर लिया है तो उनके नाजुक दिल पर एक धक्का - सा लगा और उन्होंने दारोगा से मिलने की इच्छा प्रकट की.

कई आदमी दौड़े हुए दारोगा को यह खबर देने गए कि कुँअरसाहब उनसे मिलने के लिए आना चाहते हैं.

इतना सुनते ही दारोगा साहब चिहुँक पड़े.

कहाँ तो कमजोरी के सबब एकदम पड़े हुए थे, कहाँ यह बात सुनते ही उठकर खड़े हो गए और बोले, " हाय - हाय, मैं कैसा पापी हूँ जो अपने गम में डूबा रहकर मालिक के दुःख में साथ न दे सका और उन्हें समझाने बुझाने की भी फिक्र न की मैं अभी उनके पैरों पर गिरकर माफी मागूंगा! " नतीजा यह निकला कि अभी कुअरसाहब दारोगा से मिलने का इरादा ही कर रहे थे कि सामने दस - पाँच नोकरों का सहारा लिए लड़खड़ाते आते हुए दारोगा साहब नजर पड़े, दारोगा साहब की इस समय अजीब हालत थी, सूखकर कॉटा हो गए थे, तन - बदन और कपड़ों की सुधबुध न थी, दाड़ी मूंछ और सिर के बाल बढ़ाए हुए अजीब बैशियों की - सी हालत में थे.

उनके गले में ताबीज की तरह लटकती हुए महाराज गिरधरसिंह की एक छोटी - सी तसवीर थी जिसकी तरफ देख - देख के पल - पल भर में आँसू बहाते थे.

दारोगा साहब को इस हालत में आते देखते ही गोपालसिंह उठ कर उनकी तरफ बड़े, उधर वह उन्हें देखते ही दौड़े और पास आकर एकदम पैरों पर गिर ज़ार - ज़ार रोने लगे.

अपने हाथ से उनके आँसू पोंछते हुए गोपालसिंह ने उन्हें बड़ी मुश्किल से उठाया और दम - दिलासा देकर एक कुर्सी पर बैठाया.

कुछ देर तक दारोगा अपने हाथों से मुँह डाँके हुए आँसू की झड़ी गिराता रहा, आखिर बहुत कुछ समझाने - बुझाने से किसी तरह शान्त पड़ा और कुछ बातें करने लायक हुआ.

गोपालसिंह ने कहा गोपाल:

दारोगा साहब, यह आप क्या कर रहे हैं?

कहाँ तो आपको मुझे इस दुःख में शान्ति दिलाना था कहाँ मुझसे ही वही काम ले रहे हैं! दारोगा:

हाय, मैं अपने दिल का हाल क्या कहूँ, वृद्ध महाराज को मैं अपना मालिक ही नहीं बल्कि बूड़ा - बुजुर्ग यहाँ तक कि पिता समझता था और वे मुझ पर अपने बेटे ही की तरह सन्एह भी करते थे.

मुझसे कोई कसूर हो जाने पर भी वे मुझसे रंज नहीं होते थे बल्कि अकेले में समझा देते थे.

हाय अब उनके बिना मेरी क्या गति होगी.

हाय महाराज, आप मुझे इस नरक में छोड़ कहाँ चले गए.

मुझे किसके भरोसे पर छोड़ गए.

नहीं - नहीं, आप जानते हैं कि मैं आपके बिना जीता रहने वाला नहीं, मैं अभी आता हूँ

.

.

गोपाल:

दारोगा साहब, आप कैसी बातें कर रहे हैं! दारोगा:

नहीं - नहीं, मैं महाराज का मतलब समझ गया, आप दुनिया को छोड़ गए और अब मुझे अपने पास बुला रहे हैं, मैं आज ही उनके पास जाऊँगा.

आप मुझे न रोकें! मैं उनके बिना नहीं रह सकता! गोपाल ०:

और मुझे फिर किसके भरोसे छोड़ जाइएगा, ऐसा ही है तो फिर मुझे भी लेते चलिए, दारोगा:

राम राम राम, यह आप क्या मुंह से निकालते हैं! ईश्वर आपको चिरंजीवी करें, आप ही तो अब जमानिया की प्रजा के आशा - भरोसा हैं गोपाल:

जब आप मुझे इस हालत में देख के भी नहीं मानते .

.

.

दारोगा:

हाँ ठीक है, बेशक आपकी तारीफ तो मैं बिल्कुल ही भूल गया था:

ओह, मैं कैसा स्वार्थी हूँ कि अपने दु:ख के आगे मालिक के दु:ख का कुछ ख्याल नहीं रखाऔर .

.

.

.

गोपाल:

मेरी बुद्धि इस समय बिलकुल खराब हो गई है, इस समय आप ही से जो कुछ आशा है सो है, मगर आप भी इस मौके पर मेरा साथ छोड़ देंगे तो मुझे भी लाचार होकर .

.

दारोगा:

(सिर हिलाकर) वेशक - बेशक, आपके ऊपर बड़ा भारी आफत का पहाड़ आकर गिरा है.

गोपाल ०:

अस्तु इस समय अपने इन फिजूल इरादों को आप जाने दीजिए, मेरी हालत पर निगाह कीजिए, अपनी हालत देखिए, और होश में आइए.

इस समय आपकी मदद की मुझे बहुत भारी जरूरत है.

आप स्नान इत्यादि कर कुछ भोजन करें और तब मेरे साथ बैठें, मुझे आपसे बहुत कुछ कहना - सुनना है, यह मैं मानता हूँ कि पिताजी के मरने से आपको बड़ा भारी धक्का लगा है पर क्या किया जाए, इसका कोई इलाज भी तो नहीं है.

आप पर पिताजी जैसा स्नेह रखते थे मैं जानता हूं मैं भी आपकी बड़े भाई के समान इज्जत करता हूँ और बराबर करता रहूँगा.

आप मुझे अपना छोटा भाई समझकर मेरी सहायता करें.

यह सब राजकाज मैं कुछ जानता - समझता नहीं, आप इसे देखें, सम्भालें, और मुझे भी शिक्षा दें और साथ ही उन .

.

नहीं, पहिले आप नहा - धो लें तब बात होगी, मेरे दिल में इस समय बहुत - सी बातें घूम रही हैं जिनका आपसे कहना और आपकी राय लेना बहुत जरूरी मालूम होता है। कुँअर साहब ने अपने सामने दारोगा को स्नान कराया और कपड़े बदलवाए इसके बाद उनके भोजन का प्रबन्ध किया और स्वयम् भी साथ - भोजन से निश्चिन्त हुए.

तब उन्हें लिए हुए अपने खास कमरे में चले गए और हुक्म दे गए कि जब तक ये खुद न बुलाएँ कोई इनके पास न आवे.

दारोगा साहब की निगाह महाराज की तस्वीर पर पड़ी, उसे देखते ही हिचकियाँ ले - लेकर पुनः रोना शुरू किया.

बड़ी देर के बाद गोपालसिंह के समझाने - बुझाने पर किसी तरह से शान्त हुए और इस लायक हुए कि बातचीत कर सकें.

गोपालसिंह ने उनसे कहा, " भाई साहब मैं आपको एक बड़ी गुप्त बात सुनाना चाहता हूँ! " दारोगा:

(हाथ जोड़कर) आज्ञा! गोपाल:

आपको मालूम है कि महाराज की मौत क्योंकर हुई?

दारोगा:

जी हाँ, मुझे बैग्रजी की जुबानी मालूम हुआ कि सोते समय यकायक दिल की ह्रकत बन्द हो जाने से महाराज का शरीर छूट गया.

गोपाल:

हाँ, सर्वसाधारण में यही बात कहने की आज्ञा मैंने उन्हें दी थी पर वास्तव में महाराज जहर देकर मारे गए थे.

दारोगा:

(चौंककर) हैं, यह आप क्या कह रहे हैं! गोपाल:

बहुत ठीक कह रहा हूँ, क्या उनका चेहरा और तमाम बदन काला नहीं हो गया था, सूरत ऐसी बिगड़ नहीं गई थी कि पहचानना मुश्किल हो, और मरने के कुछ ही समय बाद लाश सड़ने नहीं लगी थी जिससे मृतक संस्कार इतनी जल्दी करने की जरूरत पड़ गई!

दारोगा:

तो क्या आपको सन्देह है कि .

.

.

गोपाल:

सन्देह नहीं, पूरा विश्वास है और आपको भी हो जाएगा जब आप सुनेंगे कि चार दिनों तक मैं कहाँ गायब रहा और किस फेर में पड़ा रहा.

दारोगा:

जी हाँ, यह बात तो मैं भी पूछनेवाला था, आपकी खोज में मैंने जमानिया का एक - एक मकान खोज डाला और क्रोना - कोना तलाश कर डाला पर .

.

.

गोपाल:

मुझे उसी गुप्त कमेटी ने गिरफ्तार कर लिया था जिसने दामोदरसिंह की जान ली थी.

दारोगा:

(ताज्जुब से) कमेटी ने! क्या आप ठीक कहते हैं?

गोपाल:

हाँ मैं बहुत ठीक कहता हूँ, इतना कह गोपालसिंह ने अपने गायब किए जाने और महाराज की मौत का पूरा - पूरा हाल दारोगा साहब को कह सुनाया.

सुनते ही दारोगा ने अपने सिर पर हाथ मारा और कहा, " वेशक उस कम्बख्त कमेटी ने ही मेरे मालिक को मारा! " गोपाल:

बेशक, और हमें सबसे पहले इसी बात का पता लगाना चाहिए कि कमेटी किस शहर में है और उसके कर्ता - धर्ता कौन - कौन हैं.

दारोगा:

मैं सब काम छोड़कर अब इसी फिक्र में लगूंगा.

हाय - हाय, मेरे प्यारे मालिक की जान और इस तरह दस - पाँच क्रमीने मिलकर लें लें! मैं उसी दिन अपने को उन्ऋण मानूंगा जिस दिन इस कमेटी को तहस - नहस करके इसके सदस्यों का सिर अपने हाथ से काटकर पैरों से ठुकराऊंगा.

गोपाल:

बेशक और इस समय मुझे सिवाय आपके और किसी पर भरोसा करने की हिम्मत नहीं होती क्योंकि न - जाने कौन उस कमेटी से मिला हुआ है.

अस्तु अब आपके सुपुर्द खास तौर पर मैं यह काम करता हूँ कि जिस तरह हो इसका पता लगावें.

हमारी रियासत में जितने ऐयार हैं सभी को इस काम में लगावें तथा और भी कोई ऐयार अगर मिले तो नौकर रख लें.

दारोगा:

जो आज्ञा! गोपाल:

मैंने रणधीरसिंह के ऐयार गदाधरसिंह की बहुत तारीफ सुनी है कि वह बहुत ही तेज और चालाक है.

अगर हो सके तो आप उससे भी इस काम में मदद लें.

दारोगा:

बहुत खूब, पर दूसरी रियासत का ऐयार हमारा काम करने को जल्दी राजी नहीं होगा.

गोपाल:

मैं उसका बन्दोबस्त करूंगा.

दारोगा:

मैं भी इसकी कोशिश करूँगा.

कुछ देर के लिए सन्नाटा हो गया, इसके बाद दारोगा साहब बोले, “ अब एक अर्ज मेरी है! " गोपाल:

वह क्या?

दारोगा:

महाराज तो हम लोगों को छोड़ कर चले गए, अब जमानिया रिआया के जो कुछ हैं आप ही हैं, ऐसी हालत में आपको अपने पिता के सिंहासन पर बैठकर प्रजा की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि इसमें कोई शक नहीं कि इधर जो - जो घटनाएँ हुई हैं उनसे रिआया में बहुत खलबली मच गई है और अगर जल्दी ही आप बन्दोबस्त नहीं करेंगे तो बेचैनी बड़ जाने का डर है.

गोपाल:

हाँ यह जरूर है.

अच्छा मैं अपने अफसरों और सरदारों की कमेटी करता हूँ, उसी में यह बात तय होगी.

आप सभों को खबर कर दें कि कल सुबह को बड़े दीवानखाने में इकट्ठे हों.

दारोगा:

बहुत खूब! कुछ देर बाद दारोगा साहब गोपालसिंह से विदा होकर अपने घर की तरफ लौटे, इस समय उनके रोने और बिलबिलाने में बहुत कुछ कमी आ गई थी.

छठवा व्यान।

आधी रात का समय है.

निकलते हुए चन्द्रदेव ने अपनी मद्धिम रोशनी जंगलों और मैदानों पर फैलाना शुरू कर दिया है जिसमें का अन्धकार जो अभी तक हाथ को नहीं देखने देता था अब दूर होकर सिकुड़ता हुआ क्रोने - अंतरे घुसकर अपने को छिपाने की कोशिश कर रहा है.

चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है.

ऐसे समय में हम दो आदमियों को जंगल ही जंगल आते हुए देखते हैं, रात का समय और सन्नाटा होने पर भी ये दोनों न जाने क्यों चन्द्रमा की रोशनी का भी सहारा लेना उचित नहीं समझते और घने पेड़ों के बीच में से होते हुए जा रहे हैं.

अंधेरे के कारण हम इनकी सूरत - शक्ल और पोशाक के बारे में कुछ भी नहीं कह सकते, हाँ इतना अवश्य देख रहे हैं कि आगे जाने वाले आदमी की पीठ पर एक बड़ा - सा गट्ठर लदा हुआ है और संभव है कि उसमें कोई आदमी बँधा हुआ हो, यद्यपि ये दोनों बड़ी सावधानी से जा रहे हैं पर फिर भी पैरों के नीचे आ पड़ने वाले सूखे पत्तों की चरमराहट कुछ न कुछ आवाज पैदा कर ही देती है ।

धीरे - धीरे जंगल खतम हो गया और अब खुला मैदान आ गया जहाँ कोई पेड़ इस लायक नहीं था कि अपनी आड़ में इन दोनों को जाने की इजाजत दे.

यह देख आगे जाने वाला आदमी रुक गया और पीठ पर का गठर जमीन पर उतार कुछ सुस्ताने लगा.

वह पीछे वाला आदमी भी पास आ पहुँचा और खड़ा हो इधर - उधर देखने लगा.

यकायक कहीं पास ही से आती हुई गाने की मीठी आवाज ने दोनों का ध्यान अपनी तरफ खिंचा और दोनों कान लगाकर सुनने लगे.

थोड़ी ही देर बाद सितार की आवाज भी आने लगी और मालूम हो गया कि सितार के स्वर से अपनी मीठी आवाज मिलाकर कोई नाजुक औरत कहीं पास ही गा रही है.

चाँदनी रात, सन्नाटे का आलम, कहीं किसी तरह की आबाज नहीं, ऐसे समय में उस मीठे गाने ने इन दोनों को बेचैन कर दिया और ये इस गौर में पड़ गये कि आवाज किधरसे आ रही है और यह गाने वाली कौन है.

थोड़ी ही देर में मालूम हो गया कि आवाज बाईं तरफ से आ रही है जिधर कुछ ही दूर पर एक सुन्दर सुहावना नाला भी बह रहा था.

गट्ठर वाले आदमी ने अपने साथी से कहा, " इसी जगह ठहो तो मैं भी देखू कि कौनगा रहा है.

" बाईं तरफ कुछ ही बड़ने पर आवाज तेज होने लगी और विश्वास हो गया कि वह इधर ही कहीं से आ रही है.

इस आदमी ने तेजी से कदम बढ़ाया और थोड़ी देर में उस नाले के किनारे जा पहुँचा जो इस जंगल के बीच में से होकर बहता था.

इस नाले के किनारे ही एक पत्थर की चट्टान पर, जो जल से सटी हुई थी, एक क्रमसिन और नाजुक औरत बैठी हाथ में सितार लिए कुछ गुनगुना रही थी.

वह आदमी उसी जगह खड़ा हो उस औरत की तरफ देखने लगा जिस पर चन्द्रमा अपनी पूरी रोशनी डाल रहा था.

चाँदनी रात, जल का किनारा, सन्नाटे का आलम, ऐसे समय में उस सुन्दरी के गले से निकलते हुए गीत ने उस आदमी को एकदम मोहित कर लिया और सब तरफ की सुध भुला वह एकटक उसी की तरफ देखने लगा ।

बिहाग की एक राग सितार पर बजा उस क्रमसिन ने अपना मुँह खोला ही था कि यकायक नाले के दूसरे किनारे पर कुछ देख वह काँप उठी.

उसके हाथ से सितार छुटकर नाले में जा गिरा और उसने एक हल्की चीख मार अपनी आँखें आँचल में छिपा लीं.

ऐसा मालूम होने लगा मानो वह डर से बेहोश हो जायगी.

इस आदमी ने यह हालत देख चौंककर इसका सबब जानने के लिए सामने की तरफ देखा और तब तुरन्त ही इसकी निगाह एक कद्दावर शेर के ऊपर पड़ी जो नाले के दूसरी तरफ वाली झाड़ी के अन्दर खड़ा उसी औरत की तरफ देख रहा था.

शेर का आधा बदन झाड़ी के अन्दर था सिर्फ आगे का धड़ बाहर की तरफ निकला हुआ था और उसकी चमकदार डरावनी आँखें एकटक उस नाजुक बदन पर पड़ रही थीं.

थोड़ी देर बाद उसने आँचल हटाकर पुनः उसकी तरफ देखा और उसी समय शेर ने अपना मुँह फाड़ा तथा जम्हाई ली.

यकायक भयानक सूरत और बड़े - बड़े दाँत देखते ही उस औरत ने पुनः चीख मारी और चट्टान पर गिर गई, इस आदमी को विश्वास हो गया कि वह बेहोश हो गई ।

भला इस तरह एक औरत को भयानक शेर के मुँह में पड़ा कौन मर्द देख सकता था! इस आदमी ने तुरन्त अपना खंजर निकाल हाथ में लिया और आड़ से सामने आ गया, पहिले वह उस औरत के पास गया पर उसे पूरी तरह पर बेहोश पाया, सामने की तरफ निगाह करने से शेर उसी जगह नजर आया.

उस आदमी ने घबराहट के साथ चारों तरफ देखा.

इस जगह से थोड़ी दूर आगे नाले के इस पार से उस पार न आ जाय और उस बेहोश औरत को कुछ चोट न पहुँचावे, अस्तु अब क्या करना मुनासिब होगा यह सोचता हुआ वह पशोपेश में पड़ा कुछ देर तक उसी जगह खड़ा रह गया.

आखिर उसने यही मुनासिब समझा कि उस औरत को उठा ले और कहीं हिफाजत की जगह पहुँचा दे.

उसने अपने दोनों हाथों पर उसे उठा लिया और पेड़ों के एक झुरमुट में घुस गया.

इसी समय उसे एक हल्की सीटी की आवाज सुनाई पड़ी और वह समझ गया कि उसके देर करने से घबड़ा कर उसका साथी उसे ढूंढ़ रहा है.

औरत को जमीन पर लिटा वह बाहर निकल आया और अपने साथी को वहाँ खड़ा देख बोला, " कहो क्या है?

" साथी ने कहा, " आपने बहुत देर लगा दी.

उसने जवाब दिया, “ एक औरत यहाँ बैठी मीठे स्वर में गा रही थी.

एक शेर को देख वह बेहोश हो गई और मैंने उसे आड़ में रखना मुनासिब समझा.

" साथी ने डरकर पूछा- " शेर, कहाँ है?

" उस आदमी ने नाले के पार की तरफ बताया पर वह शेर कहीं नजर न आया, मालूम होता है कई आदमियों की आहट पा वह किसी दूसरी तरफ निकल गया था.

यही सोच उसने कहा, " नहीं है, कहीं चला गया.

खैर कोई हर्ज नहीं, तुम इन्दुमति के पास ही रहो, मैं भी उस औरत को लिए वहीं आता हूँ, ” उसका साथी यह सुन " बहुत अच्छा " कह पीछे लौट गया और वह आदमी उस झाड़ी की तरफ बड़ा जिसके अन्दर उस बेहोश औरत को छोड़ गया था.

ताज्जुब की बात थी कि बहुत खोजने पर भी वह बेहोश औरत कहीं दिखाई न पड़ी.

चारों तरफ घूम - घूमकर अच्छी तरह देखने पर भी नहीं उसका पता न लगा और यह भी बिल्कुल न मालूम हुआ कि वह किधर गई या क्या हो गई.

वह आदमी लाचार हो उस तरफ बड़ा जिधर उसका साथी गया था पर उसी समय उसके साथी ने वहीं पहुंचकर घबड़ाहट भरे स्वर में कहा, " इन्दुमति का तो कहीं पता नहीं लगता, मालूम होता है कि किसी दुश्मन को खबर लग गई और वह उसकी गठरी को उठा ले गया! " बेचैनी और घबराहट में डूबा वह आदमी यह बातसुन और भी परेशान हो गया और उसी समय उनके तरदुद का कोई ठिकाना ही न रहा जब पास ही से किसी को उसने यह कहते सुना, “ खबरदार! होशियार हो जाओ और समझ लो कि भूतनाथ को तुम्हारा पता लग गया और वह तुम लोगों को कदापि जीता न छोड़ेगा !!

सातवा व्यान।

मायासिंह की सूरत बनी गिलनको भूतनाथ ने गिरफ्तार कर लिया और स्वयं मायासिंह बन अपने शागिर्द को गोविन्द बना गिल्लन तथा असली गोबिन्द और माया को अपने एक दूसरे शागिर्द गोपीनाथ के हवाले कर वह किसी तरफ को रवाना हुआ.

भूतनाथ को इस बात का पता लग चुका था कि राजा शिवदत्त के कई ऐयार यहाँ आए हुए हैं जिन्होंने तरह - तरह के जाल फैला रखे हैं और प्रभाकरसिंह तथा इन्दुमति को गिरफ्तार करके ले जाना चाहते हैं.

उसे इसका भी पता चला था कि दारोगा साहब भी उन ऐयारों की मदद कर रहे हैं और उनसे कुछ काम खुद भी लिया चाहते हैं.

गिल्लन की बातों से उसको इसका और भी पक्का पता लग गया था और इस समय वह कई तरह के मंसूत्रे बाँधता हुआ उन्हीं लोगों की तरफ जा रहा था जिनके अड्डे के बारे में वह इतना जान चुका था कि अजायबघर के पास वाले घने जंगल में हीं है.

संध्या होने में अभी देर थी जब भूतनाथ और उसका शागिर्द अजायबघर के पास पहुँचे.

यद्यपि भूतनाथ किसी सोच में डूबा हुआ था पर उसकी चंचल निगाहें चारों तरफ दूर - दूर तक घूम रही थीं अस्तु अजायबघर की इमारत पर निगाह पड़ते ही उसने देख लिया कि कोई लम्बे कद का आदमी बाईं तरफ वाले बरामदे में इधर से उधर टहल रहा है.

वह तुरन्त रुक्क गया और अपने शागिर्द का हाथ पकड़ आड़ में कर देने के बाद उस आदमी की तरफ देखने का इशारा किया.

दूर होने के कारण यद्यपि साफ सूरत नजर न आई पर रंग - ढंग पोशाक इत्यादि से भूतनाथ समझ गया कि हो न हो यह भी उन्हीं आदमियों में से कोई है जिनकी फिक्र में वह इस समय इधर आया है अर्थात् शिवदत्त के नौकरों या ऐयारों में से कोई.

भूतनाथ ने अपने साथी से यह शक कहा और वह बोला, “ जी हाँ, मुझे भी यही मालूम होता है, आज्ञा हो तो मैं आगे बड़कर टोह लगाऊँ.

!! भूतनाथ ने, “ जाओ मगर होशियारी से काम लेना.

” उसका शागिर्द चला गया.

और वह उसी जगह खड़ा होकर अजायबघर की तरफ देखने लगा.

कुछ देर बाद वह लंबे कद का आदमी भूतनाथ के आँखों की ओट हो गया और इसके बाद ही भूतनाथ ने अपने शागिर्द को उसी बरामदे में देखा.

उसे अपना हाथ उठाते देख भूतनाथ ने भी हाथ उठाया और मैदान में आ गया.

उसके शागिर्द ने उसे जल्दी अपने पास आने का इशारा किया और वह लपकता हुआ अजायबघर की सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ उस जगह जा पहुंचा जहाँ उसका शागिर्द खड़ा

इन्तजार कर रहा था उसे देखते ही वह बोला, " गुरुजी, हम लोगों का यहाँ आना बहुत ही शुभ हुआ! " भूतनाथ ने पूछा, " क्यों?

" जबाब में वह बोला, " प्रभाकरसिंह इस समय यहाँ मौजूद हैं.

" सुनने के साथ ही भूतनाथ खुश होकर बोला, “ वाह, यह तो बहुत ही अच्छी खबर सुनाई! वे कहाँ है?

" शागिर्द उसे बगल की कोठरी में ले गया जहाँ जमीन पर पड़े बेहोश प्रभाकरसिंह और उन्हीं के बगल में वह आदमी भी हाथ - पैर बँधा नजर आया जिसे भूतनाथ ने टहलते हुए देखा था.

शागिर्द ने कहा, " यह उन्हीं लोगों में से है, प्रभाकरसिंह को दारोगा साहब ने इन लोगों के हवाले कर दिया और यह आदमी उनका पहरा देता हुआ अपने बाकी साथियों के आने का इन्तजार कर रहा था.

मालूम होता है इसके साथी लोग शीघ्र ही यहाँ आने वाले हैं ।

भूतनाथ ने यह सुनते ही शागिर्द के कान में कुछ कहा और तब बेहोश प्रभाकरसिंह के पास जा बैठा जिनके हाथ - पैर बँधे हुए थे.

वह उन्हें होश में लाने की तर्कीब करने लगा.

थोड़ी ही देर में प्रभाकरसिंह होश में आ गये और ताज्जुब के साथ इधर उधर देखने लगे.

भूतनाथ को देख उन्होंने पूछा, " तुम कौन हो और मेरी यह हालत तुमने क्यों कर रखी है?

" भूतनाथ बोला, " मैं आपका ताबेदार भूतनाथ हूँ पर और कुछ हाल करने के पहिले इस बात का विश्वास कर लिया चाहता हूँ कि आप वास्तव में प्रभाकरसिंह ही हैं न?

" प्रभाकरसिंह ने कहा, " यह विश्वास दिलाने के लिए मैं तुम्हें उस समय का हाल बता सकता हूँ जब आखिरी दफे मेरी तुम्हारी मुलाकात लोहगड़ी के पास वाले जंगल में हुई थी और किसी ऐयार ने एक जाली चीठी दिखा मुझे तुमसे जुदा करके गिरफ्तार कर लिया था.

" भूतनाथ ने इतना सुनते ही उनके हाथ - पैर खोल दिए और उठाते हुए कहा, " आप बड़े भारी दुश्मन के हाथ पड़ गए थे.

ईश्वर ने अचानक ही मुझे यहाँ पहुँचाकर आपकी रक्षा की.

यह मेरा साथी और वह बेहोश आदमी आपकी निगरानी कर रहा था.

अब आप कृपा कर बताइए कि इस बीच में कहाँ रहे या किसके फन्दे में पड़ गए थे?

"प्रभाकर :

मुझे उसी कम्बख्त दारोगा ने गिरफ्तार कर लिया था, दो - एक दिन अपने घर में रखा, फिर यहाँ भेजवा दिया.

आज दोपहर को मैं अपने कैदखाने में बैठा हुआ था कि एक बूढ़ा आदमी नजर आया जिसने मेरे जंगले का दरवाजा खोल दिया और कहा कि मैं आपको रिहाई देता हूँ, आप जल्द इस जगह के बाहर निकल जायँ, मैं खुशी - खुशी बाहर आया मगर उसी समय उस शैतान ने एक कपड़ा मेरे सिर पर डाला जिसमें इतनी कड़ी बेहोशी की दबा लगी हुई थी कि मैं कुछ भी न कर सका और बेहोश हो गया.

बस इसके बाद मैं कुछ नहीं जानता कि क्या हुआ.

यह कौन - सी जगह है, और यहाँ मैं क्योंकर आया?

भूत ०:

यह वही आजायबघर है.

दारोगा साहब से आपके पुराने मालिक शिवदत्त ने आपको माँगा था अस्तु मैं समझता हूँ कि वह बूढ़ा या तो स्वयं दारोगा होगा और या शिवदत्त का ही कोई ऐयार क्योंकि यह आदमी भी जो आप पर पहरा दे रहा था शिवदत्त ही का नौकर है और अपने बाकी साथियों के यहाँ पहुँचने की राह देख रहा था, अस्तु आप शीघ्र ही यहाँ से उठिए क्योंकि अगर और दुश्मन आ गये तो मुश्किल होगी.

!! प्रभाकरसिंह यह सुनते ही तुरत उठ खड़े हो गए और बोले, " मैं सब तरह से तैयार हूँ मुझे तो अभी यहाँ से टलने का मौका नहीं मिलेगा क्योंकि मैं उन दुष्टों का पीछा किया

चाहता हूँ जो आपको गिरफ्तार करने यहाँ आए हुए हैं और जिनमें से कोई - न - कोई अभी यहाँ आता ही होगा, परन्तु आपको भी अकेले छोड़ते डरता हूँ कि फिर कहीं दुश्मन के हाथ न पड़ जायें.

भूतप्रभाकर :

नहीं ऐसा भला क्या होगा, फिर भी मुझे जहाँ कहो जाने को तैयार हूँ और इतना भी कह सकता हूँ कि यकायक कोई मुझे पकड़ नहीं सकता.

भूत:

(मुस्कुराकर) सो आप भला कैसे कह सकते हैं.

जब एक बार मेरे सामने से दुश्मन आपको पकड़ ले गया और हम आप कुछ न कर सके तो इस बार भी वैसा ही हो जाना कौन ताज्जुब है, इसलिए जब तक आपको इन्द्रदेवजी के हवाले न कर लूं मुझे आपका साथ छोड़ना मंजूर नहीं है, अच्छा ठहरिए, इतना कह भूतनाथ अपने साथी की तरफ घूमा और बोला, " कहो तुम्हारा काम खतम हो गया?

" उसने जवाब दिया, " जी हाँ, मैंने इसकी सूरत बिल्कुल प्रभाकरसिंहजी - सी बना दी है, सिर्फ पोशाक बदलना रह गया है.

" भूतनाथ ने प्रभाकरसिंह से कहा, " अब आप अपने कपड़े उतार कर इसके कपड़े पहिन लें.

"

" अच्छा " कहकर प्रभाकरसिंह ने अपने कपड़े उतार दिए.

भूतनाथ के शागिर्द ने उस बेहोश के कपड़े अलग कर प्रभाकरसिंह की पोशाक उसे पहना कर उसी कपड़े से जिससे प्रभाकरसिंह बँधे थे उसके हाथ - पाँव कसकर बाँध दिए तथा प्रभाकरसिंह ने उसके कपड़े पहन लिए, भूतनाथ ने अपने साथी से कहा, " अब इनकी सूरत उस आदमी के जैसी बनाओ.

” पर इसका मौका नहीं मिला क्योंकि यकायक कई आदमियों के आने की आहट मिली और बाहर की तरफ निगाह करने से मालूम हुआ कि कुछ लोग उसी तरफ आ रहे हैं.

जल्दी भूतनाथ ने एक नकाब निकाल प्रभाकरसिंह को दी और कहा, आप इसे लगा कर उस सामने वाली कोठरी में चले जाइए फिर जो होगा देखा जाएगा.

प्रभाकरसिंह ने ऐसा ही किया और उनके कोठरी के अन्दर जाकर छिपते - छिपते वे लोग भी उसी जगह आ पहुँचे तथा दारोगा साहब के ऐयार मायासिंह और गोबिन्द को बहाँ देख ताज्जुब करने लगे.

आखिर एक आदमी ने, जो उन सभों का सरदार मालूम होता था आगे बटवेकर मायासिंह की सूरत बने हुए भूतनाथ से कहा, " आप लोग शायद दारोगा साहब की आज्ञानुसार यहाँ आए हैं?

" भूतः:

हाँ, हम लोगों को प्रभाकरसिंह की हिफाजत के लिए दारोगा साहब ने ही भेजा है, अब आप अपनी चीज सम्हालिए.

वह आदमी:

(खुश होकर) क्या प्रभाकरसिंह को आप लोग ले आये! कहाँ है?

मालूम होता है इसी गठरी में! भूतक:

जी हाँ इतना कह भूतनाथ ने वह गठरी खोल प्रभाकरसिंह की सूरत उन आदमियों को दिखाई और तब पुनः गठरी बाँध दी, सरदार ने खुश होकर अपने बगल में खड़े एक आदमी की तरफ देखकर कहा, " हम लोगों का जमानिया आना सफल हो गया, इन्दुमति भी हाथ लग गई और प्रभाकरसिंह भी कब्जे में आ गए, अब यहाँ से चल देना चाहिए.

" इसके जबाब में आदमी ने कहा, " जी हाँ, अब यहाँ रहना मुनासिब नहीं क्योंकि दलीपशाह और गदाधरसिंह दोनों ही को हम लोगों का पता लग गया है.

अगर उन लोगों को मालूम हो जायगा कि इन्दु और प्रभाकरसिंह को हम अपने कब्जे में कर चुके हैं तो बड़ी आफत में आवेगे.

" इन दोनों की बात सुन और यह जानकर कि इन्दुमति को भी ये अपने कब्ज में कर चुके हैं भूतनाथ हैरान हो गया.

आखिर उससे रहा न गया और वह बोल उठा, " क्याइन्दुमति भी आपके कब्जे में आ गई है?

उसके लिए तो हमारे दारोगा साहब बहुत परेशान थे.

" सरदार:

(हँसकर) जी हाँ, हमारे मालिक की खुशकिस्मती ने उसे भी हमारे हाथ में ला फँसाया.

भूत ०:

वह कहाँ थी और आप लोगों के कब्जे में क्योंकर आई?

सर ०:

उसे एक औरत लोहगड़ी ले गई थी जहाँ उन दोनों ने हमारे एक दोस्त को भी पकड़कर बंद कर दिया था जो आज किसी तरह छूटकर हमारे पास आ पहुँचा और उसी की मदद से हम लोगों ने वहाँ पहुँचकर उसे और उसके साथी को गिरफ्तार कर लिया.

इस समय हम लोग वहीं से चले आ रहे हैं इसी से देर हो गई नहीं तो कभी के यहाँ पहुँच गए होते.

इतना कह सरदार ने दो आदमियों की तरफ इशारा किया जो भारी गठरियाँ उठाए हुए थे.

उन आदमियों के साथ भूतनाथ की निगाह एक नौजवान लड़के पर भी पड़ी जिसकी सूरत देखते ही वह चौंक गया क्योंकि उसे तुरत खयाल आ गया कि इसे जरूर कहीं देखा है.

थोड़े ही गौर में उसे मालूम हो गया कि यह शेरअली की लड़की गौहरहै जो मर्दाना भेष किए हुए है.

पाठक अब समझ गए होंगे कि इन्दुमति लोहगड़ी में से क्योंकर गायब हो गई, गौहरको अर्जुन और इन्दुमति लोहगड़ी में ले गए और उसे कैद कर लिया पर चालाक गौहर की बातें में सीधी - सादी इन्दुमति पड़ गई और अर्जुन की गैरहाजिरी में इन्दु को धोखा दे गौहर लोहगड़ी के बाहर निकलने का मौका पा गई, केवल इतना ही नहीं बल्कि गौहर

राजा शिवदत्त के आदमियों को लेकर वहाँ वापस गई और ठीक उस समय पहुँची जब इन्दुमति और अर्जुन उसे ढूंढ़ने के लिए लोहगढ़ी के बाहर निकल रहे थे.

शिवदत्त के आदमियों ने इन्दुमति और अर्जुन को घेर लिया और यद्यपि बहादुर इन्दु और शेरदिल अर्जुन ने दिल खोलकर लड़ाई की, पर इतने आदमियों के सामने कुछ बस न चला और गिरफ्तार हो गए.

इस समय भूतनाथ को इस आदमी की बातें सुनकर यह फिक्र पैदा हुई कि किसी तरह इन्दुमति को इन पापियों के कब्जे से छुड़ाना चाहिए, फिर भी ऊपर से उसने सरदार की बात पर बहुत खुशी जाहिर की और कहा, " मेरी जुबानी दारोगा साहब जब यह हाल सुनेंगे तो बहुत खुश होंगे! अच्छा अब हम लोगों को इजाजत मिले.

!! सरदार:

हाँ - हाँ, आप लोग घर जाएँ मगर (इधर - उधर देखकर) हमारा एक साथी भी इस जगह था .

.

.

.

भूत:

हाँ वह किसी जरूरी काम से चला गया है आता ही होगा.

सरदार:

अब हम लोग उसकी राह देखने के लिए ठहर नहीं सकते, वह आप ही हमारे पास पहुँच जाएगा.

सरदार ने एक आदमी की तरफ देखकर इशारा किया जिसने प्रभाकरसिंह की गठरी उठा ली और तब उस इमारत कीतरफ निकल गए.

शिबदन के आदमी प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को लिए एक तरफ चले गए और भूतनाथ उन्हें दिखाने के लिए दूसरी तरफ चला गया मगर थोड़ी दूर जाने के बाद रुका और

प्रभाकरसिंह को लेने के लिए लौटा.

पीछे घूमते ही उसने देखा कि वे उसके बगल ही में मौजूद हैं जो बेचैनी के साथ उससे बोले, " भूतनाथ, बेचारी इन्दु को उन कम्बख्तों के कब्जे से छुड़ाना चाहिए.

" भूतनाथ ने कहा, “ जी हाँ, अब मुझे भी इसी बात की फिक्र करनी है.

" भूतनाथ, उसका शागिर्द और प्रभाकरसिंह जंगल में घुस गए और कहीं गायब हो गए.

इसके बाद किस तरह की चालाकी से उसने इन्दु को उन लोगों के कब्जे से छुड़ाया यह पाठक ऊपर के बयान में पड़ चुके हैं.

आठवा ब्यान।

शिवदत्त के ऐयारों को धोखे में डाल भूतनाथ ने इन्दुमति की गठरी उठा ली और खुशी - खुशी प्रभाकरसिंह के साथ जमानिया की तरफ चल पड़ा.

रास्ते में दोनों आदमियों में इस तरह बातें होने लगीं:

प्रभाकर :

भूतनाथ, आज तुमने मुझ पर कितना बड़ा अहसान किया यह मैं बयान नहीं कर सकता! भूत ०:

यह तो ईश्वर की दया थी कि उसने मुझे आपकी तथा आपकी स्त्री को दुश्मनों के फंदे से छुड़ाने का मौका दिया.

प्रभाकर :

बेशक ईश्वर की दया तो हुई पर तुम्हारी भी कारीगरी कमनहीं हुई – ओफ, हम दोनों बड़े बेमौके जा फँसे थे! क्यां शिवदत्त के सामने पहुंच जाने पर मेरी और मेरी स्त्री की कमदुर्गति होती! भूत:

इसमें क्या शकप्रभाकर :

मगर भूतनाथ, मुझे तुम्हारी प्रकृति पर आश्चर्य होता है, कभी तुम दोस्त हो जाते हो, कभी दुश्मन, कभी बुराई करते हो, कभी भलाई.

मैं तो यही नहीं निश्चय कर पाता कि कब तुम्हें सच्चा समझू और कब झूठा?

तुम्हारे ऐसे होशियार और जमाना देखे हुए ऐयार का ऐसा करना अपने दिल और दिमाग की कमजोरी जाहिर करना ही कहलाता है.

भूत:

(सिर नीचा करके) बेशक आपका कहना ठीक है.

मैं खुद ऐसा बहुत दफे सोच चुका हूँ और अपने किए पर पछताता हूँ.

पर असल बात यह है कि जिस तरह की दलदल में फंस गया हुआ आदमी धंसता ही जाता है उसी तरह निकलने की लाख कोशिश करने पर भी मैं पाप - पंक में डूबता ही चला जा रहा हूँ जिसमें से कोई मुझे उबार नहीं सकता; पर मुझे फक्र है तो अपने दोस्त इन्द्रदेव पर जो सच्ची दोस्ती का हक अदा कर रहे हैं और कई बार मुझसे धोखा खाकर भी निराश न हो मुझे होश में लाने की कोशिश किए ही जाते हैं.

अगर किसी दूसरे के साथ मैंने वह सब अनाचार किए होते जो इन्द्रदेव के साथ क्रिये हैं तो वह मेरी दोस्ती का दम भरना तो दूर रहा शायद मेरा जानी दुश्मन हो जाता, मगर इन्द्रदेव धन्य हैं, इस समय उन्हीं का प्रभाव है जो मुझसे कुछ भले काम करवा रहा है नहीं तो मैं डूबता ही जा रहा था.

प्रभा वेशक इन्द्रदेवजी - सा धनी आदमी मेरे देखने में नहीं आया.

खुद मैंने उनसे तुम्हारे विषय में कितनी ही दफे बातें कीं मगर उनका जब जवाब पाया यही पाया- " भूतनाथ मेरा लंगोटिया दोस्त है, सुधर जाय तो इससे बड़कर और कोई खुशी नहीं हो सकती.

!! भूत:

जी हाँ, और मुझे यही बात और भी अफसोस में डुबाती है कि मेरा जो प्रेमी मेरे बारे में ऐसा ख्याल रखता है उसे भी मेरी गलतियों ने नुकसान पहुँचाया.

सच तो यह है कि मैं उन्हें अपना मुँह दिखलाने लायक भी नहीं रह गया था पर उन्होंने फिर भी दया की और मुझे अपना विश्वासपात्र बनाया!प्रभाकर :

तो इस समय क्या उन्हीं के कहने से तुमने हम दोनों को कैद से छुड़ाया है?

भूत ०:

जी हाँ और इस समय उन्हीं के पास मैं आप लोगों को पहुंचाना भी चाहता हूं। प्रभाकर :

बहुत अच्छी बात है, मगर इन्दु यदि होश में लाई जाती तो अच्छा था, क्योंकि एक तो अनाड़ी ऐयारों के हाथ की दवा बहुत जल्द कमजोरी पैदा कर देती है, दूसरे व्यर्थ एक बेहोश का गट्ठर उठाये इतनी दूर तक चलने की भी कोई जरूरत नहीं.

भूत ०:

(इधर - उधर देखकर) हाँ अब तो कोई डर की बात भी मालूम नहीं होती.

भूतनाथ ने यह कह इन्दुमति की गठरी जमीन पर रख दी और कपड़ा खोल उसको होश में लाने की कोशिश करने लगा.

थोड़ी ही देर में इन्दुमति होश में आकर उठ बैठी और ताज्जुब से इधर - उधर देखने लगी.

प्रभाकरसिंह को देखते ही उसका चेहरा खिल गया और वह उनकी तरफ झुकी पर यकायक रुक कर धीरे - से कुछ बोली जिसे सिर्फ प्रभाकरसिंह ही सुन सके.

जबाब में प्रभाकरसिंह ने भी धीरे - से कुछ इशारे की बात कही जिसे सुनते ही वह उनके पैरों पर गिर गई, गर्म - गर्म आँसुओं से प्रभाकरसिंह के पैर तर हो गए जिससे उनकी आँखें भी डबडबा आई पर उन्होंने अपने को बहुत सम्हाला और इन्दुमति की निगाह भूतनाथ पर पड़ी और वह कुछ चौंककर प्रभाकरसिंह से धीरे - से बोली, " क्या इन्हों.

!!प्रभाकर :

हाँ, इन्हीं भूतनाथ ने ही अपनी चालाकी से हम दोनों की जान बचाई.

इन्दुमति शायद और भी कुछ कहती पर इसी समय भूतनाथ बोल उठा, “ जंगल का मौका और दुश्मनों का डर सब तरफ है, इसलिए यहाँ रुकना या देर लगाना मैं मुनासिब नहीं समझता.

" प्रभाकरसिंह यह सुनते ही उठ खड़े हुए और उनके इशारे पर इन्दुमति भी चलने को तैयार हो गई.

भूतनाथ ने कदम बढ़ाये और तीनों आदमी तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुए.

सूर्योदय होने से घण्टे भर पहिले ही भूतनाथ, प्रभाकरसिंह और इन्दुमति जमानिया में दामोदरसिंह के मकान के उस हिस्से में जा पहुंचे जहाँ इन्द्रदेव का डेरा था.

भूतनाथ को गुमान था कि इस समय इन्द्रदेव सोये होंगे और मकान का दरवाजा बन्द होगा पर इसके विपरीत उसने फाटक खुला हुआ और इन्द्रदेव के खास खिदमतगार को वहाँ टहलते हुए पाया.

इन्दुमति और प्रभाकरसिंह को आड़ में खड़ा कर भूतनाथ उसके पास गया और बोला, “ इन्द्रदेवजी को जगाकर खबर करो कि भूतनाथ आया है और बड़ी जरूरी खबर लाया है !! खिद ०:

जी वे यहाँ नहीं हैं, कुछ देर हुई कुँअर गोपालसिंहजी के साथ महल गए हैं।भूत ०:

कुँअर गोपालसिंह के साथ! क्या कुँअर साहब का पता लग गया?

खिद ०:

जी हाँ, वे खुद यहाँ आये थे और थोड़ी देर तक आराम करने के बाद इन्द्रदेवजी को लेकर महल में गये हैं जैसा कि मैंने कहा.

यह सुनकर कि गोपालसिंह छूटकर आ गए भूतनाथ को ताज्जुब के साथ प्रसन्नता भी हुई.

अब वह मन - ही - मन सोचने लगा कि इन्द्रदेव की गैरहाजिरी में प्रभाकरसिंह और इन्दुमति को यहाँ छोड़ जाना अच्छा होगा या नहीं पर यह सोचकर कि दुश्मनों का जाल चारों तरफ फैला हुआ है तथा प्रभाकरसिंह और इन्दुमति के लिए और कोई रक्षा का स्थान भी ऐसा पास में नहीं है जहाँ दो - चार घण्टे के लिए उन्हें रख सकें उसने उस

नौकर से कहा, " मेरे साथ एक औरत और एक मर्द हैं, उन्हें ऊपर ले जाकर आराम की जगह बैठाओ.

इन्द्रदेवजी के आते ही उन्हें इनकी खबर कर देना.

" नौकर के " बहुत खूब " कहने पर प्रभाकरसिंह और इन्दुमति के पास जाकर कहा, " इन्द्रदेवजी तो इस समय हैं नहीं, राजमहल में गए हुए हैं मगर शीघ्र ही लौट आवेंगे.

आप लोग उनके कमरे में चलकर बैठे और आराम करें क्योंकि मैं एक दूसरे काम से जाया चाहता हूँ, यदि हो सका तो आज रात को आकर आप लोगों से पुनः मिलूंगा.

' प्रभाकरसिंह ने जवाब दिया, " कोई हर्ज नहीं, तुम हमारी फिक्र छोड़ो और जहाँ जाना चाहो जाओ.

" अस्तु भूतनाथ ने इन्दु और प्रभाकरसिंह को इन्द्रदेव के खिदमतगार के सुपुर्द किया और जब वह उन्हें लेकर भीतर चला गया तो आप महल की तरफ रवाना हुआ.

भूतनाथ थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसे सामने महल की तरफ से आते हुए कई आदमी दिखाई पड़े जो जोर से रो और चिल्ला रहे थे, उसका कलेजा धड़कने लगा और उसने एक आदमी से पूछा, “ क्या मामला है?

" जिसके जवाब में उसने बिलखकर कहा, “ हमारे महाराज गिरधरसिंह हम लोगों को छोड़कर परलोक चले गये.

" भूतनाथ यह सुनते ही रंज और अफसोस से बदहवास हो गया और उसमें इतनी भी ताकत न रह गई कि उन लोगों से महाराज की मौत के बारे में और कुछ दरियाफ्त करे, वह अपना सिर थाम कर पास के चबूतरे पर जा बैठा.

थोड़ी देर तक उसकी यही हालत रही पर बड़ी कोशिश कर उसने अपने होश ह्वास ठिकाने किए और उठकर महल की तरफ रवाना हुआ.

रास्ते में उसे और भी सैकड़ों आदमी रोते और अपने महाराज को याद कर के बिलखते हुए मिले और उनकी जुबानी उसे शीघ्र ही मालूम हो गया कि वृद्ध महाराज की रात को किसी समय अचानक मृत्यु हो गई, सुबह को कुअर गोपालसिंह जब उनसे मिलने गए तो उन्हें पलंग पर मुर्दा पाया.

कुँअर गोपालसिंह के चार दिन तक गायब रहने और यकायक लौटकर महाराज को मुर्दा पाने पर और भी तरह - तरह की बातें उड़नी शुरू हो गई थीं पर भूतनाथ ने उस सब बातों पर अपना समय नष्ट न कर सीधे खास बाग का रास्ता पकड़ा और चक्कर काटता हुआ बाग के पिछवाड़े की तरफ एक ऐसी जगह पहुंचा जहाँ चहारदीवारी के साथ लगा हुआ एक ऊंचा नीम का पेड़ था.

भूतनाथ ने इधर - उधर देखा.

तब सन्नाटा पा वह इस पेड़ पर चढ़ गया और एक ऊँची डाल पर जा बैठा जहाँ से महल का पिछला हिस्सा और बाग का भी एक काफी टुकड़ा बखूबी दिखाई पड़ रहा था.

इस समय सवेरा अच्छी तरह हो चुका था पर फिर भी कहीं कोई आदमी, नौकर या लौंडी दिखाई नहीं पड़ते थे, क्योंकि सभी अपने महाराज की मौत का हाल सुन महल की तरफ जा उमड़े थे.

भूतनाथ थोड़ी देर तक पेड़ पर बैठ चारों तरफ देखता रहा और जब उसे विश्वास हो गया कि कोई उसकी कार्रवाई देखने सुनने वाला नहीं है तो उसने जेब से एक सीटी निकाली और किसी खास इशारे के साथ हल्की आवाज में बजाना शुरू किया.

थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ ने बाग के अन्दर एक कमसिन औरत को अपनी तरफ आते देखा.

पेड़ की डाल हिलाकर उसने अपने को प्रकट कर दिया और उस औरत ने भी उसे देख लिया.

उसने हाथ और अंगुलियों की मदद से कुछ इशारा किया और भूतनाथ ने भी उसी तरह इशारों में उससे कुछ बातें कहीं इसके बाद वह पेड़ से नीचे उतर आया और वह औरत भी बाग के अन्दर - ही - अन्दर उस हिस्से की तरफ बड़ी जहाँ बाहर निकलने के लिए दीवार में एक चोर - दरवाजा बना हुआ था.

थोड़ी देर बाद दरवाजे पर थपकी सुनाई पड़ी.

औरत ने दरवाजा खोल दिया और भूतनाथ को खड़ा पाकर उसे भीतर आने का इशारा किया.

भूतनाथ भीतर आ गया और उस औरत ने दरवाजा पुनः बन्द कर लिया.

पाठक इस कमसिन औरत को पहिचानते हैं क्योंकि यह वही लौंडी है जिसे दारोगा साहब ने महाराज को मारने के लिए जहर की शीशी दी थी.

पाठकों को यह भी याद होगा कि वास्तव में यह लौंडी बना हुआ भूतनाथ का कोई शागिर्द है जो इस भेष में भूतनाथ की आज्ञानुसार काम कर रहा है.

भूतनाथ को अपने पीछे आने का इशारा कर वह लौंडी रुपी ऐयार एक घनी झाड़ी के पास पहुँचा जिसके अन्दर कई आदमी छिप कर बैठ सकते थे.

भूतनाथ और उसका शागिर्द उस झाड़ी के अन्दर हो गए और दोनों में धीरे - धीरे इस तरह बातें होने लगी:

भूत:

महाराज के मौत की खबर सुनने में आ रही है, यह क्या मामला है?

नकली लौंडी:

मैं खुद बड़े ताज्जुब मैं हूँ और आपसे मिलने के वास्ते सख्त तरदुद में था क्योंकि यह घटना भी भेद से खाली नहीं है.

भूत:

सो क्या?

नकली लौंडी:

जब आप दारोगा साहब और मेरी मुलाकात का हाल सुन इन्द्रदेवजी से मिलने चले गए तो मैं महल में इधर - उधर टोह लगाने लगा.

पहरेदार से बातचीत होने से मालूम हुआ कि किसी सवार ने रात को एक चीठी दी थी जो सुबह महाराज के सामने पेश की गई और उसके पड़ते ही महाराज कहीं चले गए.

भूत:

हाँ यह बात तो तुम कल मुझसे कह चुके थे मगर यह नहीं मालूम हुआ कि उस चीठी में क्या लिखा हुआ था.

नकली लौंडी:

(कमर से एक कागज निकाल और भूतनाथ के हाथ में देकर) उस चीट्ठि का मजमून यह था और उसके साथ एक पन्ने की अंगूठी भी थी.

ताज्जुब करते हुए भूतनाथ ने उस कागज को लेकर पड़ा.

यह उसी चीठी की नकल थी जिसने महाराज को तिलिस्म के अन्दर जाने पर मजबूर किया था.

भूतनाथ इसे गौर और ताज्जुब के साथ पड़ गया और तब बोला, " यह तुम्हें कैसे मिली?

" नकली लौंडी:

महाराज के खास खिदमतगार को बेहोश करके.

महाराज के जाते ही उसने वह चीठी और अंगूठी उठा ली.

मुझे इस पर सन्देह हुआ और थोड़ी देर बाद जब वह महल के बाहर निकला तो मैंने गुप्त रीति से उसका पीछा किया.

एक निराली जगह पहुंचने पर मैंने कारीगरी करके उसे बेहोश किया और उसके कपड़ों में छिपी यह चीठी और अंगूठी पाई.

ले लेना मुनासिब न समझ मैंने सिर्फ चीठी की नकल कर उसे छोड़ दिया.

मैंने ऐसी खूबसूरती के साथ बेहोश किया और चीठी पाने के बाद होश में कर दिया था कि बहुत सोचने पर भी उसे कुछ शक न हुआ और वह उठकर दारोगा साहब के मकान पर पहुँचा.

मुख्तसर यह कि उस खिदमतगार ने वह चीठी और अंगूठी दारोगा साहब को दी जिससे वे बड़ी बेचैनी और घबराहट में डूब गये.

मैं पहरेदार से यह बहाना करके कि महल का कोई जरूरी सन्देश खास दारोगा साहब से कहना है भीतर चला गया जहाँ मैंने दारोगा और चोबदार की बातें सुन ली और साथ ही यह भी देखा कि खिदमतगार को वीदा कर दारोगा साहब अपनी सूरत बदल कहीं जाने को तैयार हुए, पीछे बाले चोर दरवाजे से वे बाहर हुए और मैंने भी उनका पीछा किया.

वे सीधे अजायबघर की तरफ चले और जब तक उस इमारत के अन्दर न चले गये तब तक मैंने भी पीछा न छोड़ा, उनके अजायबघर के अन्दर चले जाने के बाद मैं महल मैं लौट आया.

भूत ०:

अच्छा तब?

नकली लौंडी:

दिन भर मैं मर्दाने महल में रहा और महाराज दिन भर नहीं लौटे.

जब रात होने लगी तो मैंने उसी चोबदार को, जिसने वह चीठी और अंगूठी दारोगा को दी थी, छिपकर महाराज के कमरे के अन्दर जाते देखा जिससे मुझे शक हुआ.

मैं अपने को बचाता हुआ कमरे की छत पर चढ़ गया और वहाँ के एक रोशनदान के पास लेटकर भीतर का हाल देखने लगा, पर वह चोबदार अन्दर कहीं नजर न आया.

कमरे के और सब दरवाजे बन्द थे. पर वह दरवाजा इस समय खुला हुआ था जिसके अन्दर सुबह को महाराज गये थे और जिसके बारे में मैं सुन चुका था कि तिलिस्म के अन्दर जाने का रास्ता है, मुझे गुमान हुआ कि शायद वह चोबदार इसी के अन्दर चला गया हो, अस्तु मैंने अपनी निगाह उसी तरफ रक्खी.

लगभग आधी घड़ी के बाद महाराज गिरधरसिंह उसी दरवाजे की राह उस कमरे में पहुँचे जिनके पीछे - पीछे वह चोबदार भी था.

महाराज अपने पलंग पर बैठ गये और धीरे - धीरे चोबदार से कुछ बातें करने लगे.

थोड़ी देर बाद कमरे के सब दरवाजे जो पहिले बन्द थे खोल कर वह चोबदार बाहर निकल गया और महाराज अकेले रह गये.

दो घण्टे तक वे उसी तरह अकेले पलंग पर लेटे न जाने क्या - क्या सोचते रहे, इस बीच कई सरदार और ओहदेदार मुलाकात करने को आये पर महाराज ने किसी से मिलने की इच्छा प्रकट न की और वे सब बेरंग लौट गये.

मामूली समय पर एक लौंडी महाराज को भोजन तैयार होने की खबर देने आई, महाराज ने खाना वहाँ ही ले आने का इशारा किया और जब रसोइये ले आये तो चौकी पर रख देने को कह उन सभों को बाहर चले जाने का हुक्म दिया.

वे चले गये और महाराज ने उठकर कमरे के उन कुल दरवाजों को जिनकी राह बाहर का आदमी कमरे के भीतर का हाल देख सकता था बन्द कर दिया.

मैं ताज्जुब के साथ देख रहा था कि यह उन्हें आज हो क्या गया पर इसके बाद जो कुछ मैंने देखा उससे मुझे और भी ताज्जुब हुआ.

उन्होंने अपनी कमर से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह की बुकनी थी, इस बुकनी का आधा तो उन्होंने पीने के पानी में छोड़ दिया और आधा खाने की चीजों में मिला दिया.

इसके बाद आकर ने पलंग पर लेट गये.

थोड़ी देर बाद महाराज ने घण्टी बजाई और वही चोबदार अन्दर आया.

महाराज ने उससे कुछ बातें कीं, क्या बातें हुई सो तो मैं सुन नहीं सका पर मैंने ताज्जुब के साथ देखा कि चोबदार ने महाराज के लिए आई हुई चीजों में से कई चीजें खाई और पानी पीया और तब फिर उनसे कुछ बातें करने लगा.

थोड़ी देर तक बातें होती रहीं इसके बात दोनों उठकर फिर उसी दरवाजे के अन्दर चले गये जहाँ से दो घण्टे पहिले निकले थे.

ताज्जुब करता हुआ मैं आधे घण्टे तक फिर बैठा रहा और तब मैंने देखा कि अकेले महाराज उस दरबाजे के बाहर आये और सीधे पलंग पर जाकर लेट गये.

वह तिलिस्मी दरवाजा भीतर से किसी ने बन्द कर लिया और कमरे में सन्नाटा हो गया.

थोड़ी देर बाद महाराज के खराटे लेने की आवाज आने लगी और मुझे मालूम हो या कि वे सो गये.

मुझे ताज्जुब हुआ कि वह चोबदार कहाँ रह गया क्योंकि महाराज के साथ वह उस दरवाजे के बाहर नहीं निकला था.

बड़ी देर तक मैं उसके आने की राह देखता रहा पर वह नहीं ही आया और आखिर मैं भी नींद से लाचार उसी जगह सो गया.

बड़ी देर बाद, जब कि रात आधी से कहीं ज्यादे बीत चुकी थी बल्कि सवेरा होने वाला था, नीचे कमरे में शोरगुल की आवाज सुन मेरी नींद टूट गई और मैंने देखा कि कुँवर गोपालसिंह, इन्द्रदेव तथा और भी बहुत से आदमी यहाँ मौजूद हैं.

हुँअर साहब महाराज को जगाने की चेष्ठा कर रहे थे पर महाराज कहाँ?

वे तो महानिद्रा के आधीन हो चुके थे! बस यही तो सारा किस्सा है.

महाराज की मौत की खबर बिजली की तरह चारों तरफ फैल गई और मैं भी तभी से आपकी राह देख रहा हूँ कि आपसे सब हाल कहूँ और पूछूं कि जो कुछ मैंने देखा उससे आप महाराज की मौत के बारे में क्या अटकल लगाते हैं.

भूतनाथ ने अपने शागिर्द की बातों का कोई जबाब न देकर सिर नीचा कर लिया और गम्भीर चिन्ता में डूब गया न मालूम उसके दिमाग में क्या - क्या खयाल उठ रहे थे कि एक घड़ी बीत जाने पर भी उसने सिर न उठाया.

शागिर्द ने उसका हाथ छुआ तो वह यकायक चौंक पड़ा और एक लम्बी साँस लेकर बोला- " तुम्हारी बातें सुन तरह - तरह के अजीब खयालों ने मुझे घेर लिया है.

इसमें तो कोई शक नहीं कि महाराज की मौत के साथ किसी अद्भुत घटना का सम्बन्ध जरूर है और इसका पता लगाये बिना मेरे चित्त को शान्ति न होगी, पर इसके साथ - साथ और भी कई बातें हैं जो मेरे दिल को परेशान कर रही हैं और इस बात की इजाजत नहीं देतीं कि मैं यहाँ देर तक ठहर सकूं और तुमसे बातें करूं.

शागिर्द:

आखिर आपने क्या सोचा और जो कुछ मैंने देखा उससे क्या मतलब निकाला?

भूत :

(सिर हिला कर) सो अभी बताने का मौका नहीं है पर तुम्हारी हिम्मत बढ़ाने के लिए इतना मैं जरूर कहूँगा कि तुमने एक बहुत ही बारीक बात का पता लगाया और बहुत ही तारीफ का काम किया है.

मगर अब ठहरने का मौका नहीं है, मुझे जल्दी बाग के बाहर करो.

शागिर्द:

बहुत खूब, मगर मेरे लिए क्या हुक्म होता है?

भूत ०:

जहाँ तक मैं समझता हूँ अगर तुम और कुछ दिनों तक इसी रूप में बने रह सको तो और भी बहुत - सी गुप्त बातों का पता लगा लोगे क्योंकि यह महल दारोगा के साथियों और मददगारों का अड्डा हो रहा है.

यहाँ बालों में से बहुतेरे उसी के आदमी हैं, फिर तुम यहाँ रह कर उन लोगों से भी वाकिफ हो सकते हो जो रियासत का नमक खाते हुए भी इसे नेस्तनाबूद कर देने की कोशिश कर रहे हैं.

पर इस सम्बन्ध में मैं एक बात जरूर कहूँगा.

शागिर्द:

वह क्या?

भूत:

दारोगा का काम एक तरह से पूरा हो गया है, इसलिए वह उस लौंडी सावित्री को दुनिया से उठा देने की कोशिश जरूर करेगा जिसके हाथ में उसने महाराज को मारने के लिए जहर की शीशी दी थी .

.

.

.

शागिर्द:

(हँसते हुए) और गोपालसिंह से शादी करा देने का भी वादा किया था! आप बेफिक रहिए मैं उस दुष्ट से खूब होशियार रहूँगा और कभी इस महल के किसी आदमी के हाथ का दिया हुआ कुछ न खाऊँगा.

भूत:

हाँ खूब होशियार रहना, जरा भी खतरा देखना तो फौरन इस जगह के बाहर हो जाना.

अगर हो सका तो तुम्हारी मदद के लिए मैं एक - दो आदमी और भेजूंगा, उसी बँधे हुए इशारे से तुम उन्हें पहिचान लेना.

सावित्री लौंडी की सूरत बना हुआ भूतनाथ का शागिर्द उस झाड़ी के बाहर निकल आया.

मौका देख उसने चोर दरवाजा खोल भूतनाथ को बाहर कर दिया और दरवाजा बन्द कर महल की तरफ चला गया जहाँ महाराज की मौत के सबब से भयानक हाहाकार मच रहा था.

नौवा व्यान।

संध्या होने में अभी आधे घंटे की देर है और इसलिए उस घने जंगल में भी अभी तक पूरा अन्धकार नहीं हुआ है जिसने अजायबघर की सुन्दर इमारत को घेर रखा है.

वह नाला जो अजायबघर के नीचे से बहता हुआ जा रहा है इस समय जल पर पड़ने वाली आसमान की लाली और नीले रंग की छाया के कारण बड़ा ही सुहावना लग रहा है और उसके साफ पानी में किलोल करने वाली मछलियाँ भी बड़ी सुन्दर मालूम होती न - जाने कब से एक आदमी पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाये इसी तालाब के आसपास टहल रहा है.

कभी - कभी वह आड़ के बाहर आ नाले के किनारे खड़ा हो अजायबघर की तरफ देखता है पर फिर तुरन्त ही पीछे हट कर अपने को आड़ में कर लेता है.

इस आदमी के चेहरे पर नकाब पड़ी होने तथा तमाम बदन कम्बल से ढके रहने के कारण कुछ भी पता नहीं लग सकता कि वह कौन है अथवा किस कारण से इस स्थान पर आया हुआ है, पर इसकी चाल - ढाल और रंग - ढंग से यह पता जरूर लग रहा है कि यह किसी गुप्त इरादे से ही यहाँ आया हुआ है.

बहुत देर तक इसी तरह घूमते रहने के बाद इस आदमी ने थककर ही - हरी घास पर अपने को डाल दिया और आराम करने लगा, मगर अपना मुँह अब भी अजायबघर की तरफ ही रखा.

इसे लेटे बहुत देर नहीं हुई थी कि यकायक अजायबघर की कोठरी का दरवाजा खुल गया और उसके अन्दर से दो आदमी निकलकर बाहर आये.

मालूम होता था कि इस नकाबपोश को उन्हीं दोनों से कुछ मतलब था क्योंकि उन्हें देखते ही यह चौकन्ना हो गया और अपने को बहुत छिपाये हुए वहाँ से उठ अजायबघर की तरफ बड़ा.

इस समय हम इसका साथ छोड़कर अजायबघर की तरफ चलते हैं और देखते हैं कि वे दोनों कौनहैं जो कोठरी के बाहर निकल अभी बरामदे में आये हैं.

यद्यपि इन दोनों ही के चेहरे पर नकाब पड़ी हुई है परन्तु इनकी बातचीत सुनने पर इनका परिचय छिपा न रहेगा इसलिए हम इसी जगह यह कह देना मुनासिब समझते हैं कि इनमें से एक तो इन्द्रदेव हैं दूसरे प्रभाकरसिंह,प्रभाकर :

(इन्द्रदेव से) लौटिएगा या अभी यहाँ रुकियेगा?

इन्द्र:

भूतनाथ ने यहीं मिलने को कहा है अस्तु कुछ देर तक उसका इन्तजार करना मुनासिब है.

प्रभाकर :

बहुत अच्छी बात है, भूतनाथ अगर मिल जाय तो यह खबर उसको सुना दी जाय कि उसका गुमान ठीक निकला.

इन्द्र ०:

वेशक उसने भी बड़ी तारीफ का काम किया जो इस बात का पता लगाया, अगर वह मुझे न बताता तो मुझे कभी गुमान भी न होता कि दामोदरसिंह जी जीते हैं और तिलिस्म में कैद हैं.

प्रभाकर :

बेशक, हम लोग तो उन्हें मुर्दा ही समझ चुके थे.

इन्द्र ०:

मुझे कुछ - कुछ सन्देह होता था कि वे जीते हैं क्योंकि उनकी लाश के साथ सिर का न पाया जाना शक़ पैदा करता था पर अपनी तरफ से पूरी कोशिश करने पर नाकामयाब हो मैं निश्चय कर चुका था कि वे अब इस संसार में नहीं हैं, ईश्वर भूतनाथ का भला करे जिसने इस भेद का पता लगाया.

प्रभाकर :

मगर अब उनके छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिए और जहाँ तक मैं समझता हूँ यह काम सहज में न होगा.

इन्द्र ०:

वेशक यह बड़ा ही मुश्किल काम है.

दामोदरसिंह जी उस समय तक स्वतन्त्र नहीं हो सकते जब तक कि तिलिस्म तोड़ा नहीं जाता और तिलिस्म का टूटना कोई आसान काम नहीं है.

प्रभाकर :

तो क्या तिलिस्म टूटे बिना वे छूट नहीं सकते?

इन्द्रः:

नहीं, किसी तरह नहीं.

प्रभाकर :

मगर हम लोग तो उन्हें देख आए और उनसे बातें भी कर चुके, फिर क्या जिस राह हम लोग वहाँ तक पहुँचे उसी राह से वे बाहर नहीं आ सकते?

इन्द ०:

(मुस्करा कर) नहीं, जिस राह मैं तुमको ले गया वह मामूली राह नहीं है बल्कि तिलिस्म के दारोगा के लिए खास तौर पर बनी हुई एक गुप्त राह है जिससे वह तिलिस्म में घूम सकता है मगर किसी तिलिस्मी कार्रवाई में हाथ नहीं डाल सकता.

दामोदरसिंह जी को तिलिस्म से छुड़ाने का सिर्फ एक ही उपाय है वह है तिलिस्म को तोड़ना!प्रभाकर :

तो यह तिलिस्म किस तरह और किसके हाथ से टूटेगा?

क्योंकि मैंने सुना है कि जिसके नाम पर तिलिस्म बाँधा जाता है सिर्फ वही उसे तोड़ भी सकता है.

इन्द्र:

हाँ यह बात ठीक है.

प्रभाकर :

तिलिस्म - सम्बन्धी विचित्र और अदम्य बातें देखने का मुझे बड़ा ही शौक है, क्या ही अच्छा होता अगर यह तिलिस्म मेरे हाथ से टूटता! इन्द्रदेव मुस्कुराकर चुप हो रहे.

प्रभाकरसिंह कुछ देर तक उनकी तरफ देखते रहे फिर बोले, " शायद आपको इसके बारे में मालूम हो! " इन्द्र ०:

यह तो मैं अभी नहीं कह सकता कि यह तिलिस्म किसकेहाथ से टूटेगा पर मेरी किताब से यह पता जरूर लगता है कि तिलिस्म के उस हिस्से की उम्र समाप्त हो गई जो लोहगड़ी कहलाता है.

(रुककर) किसी की आहट मालूम होती है.

इसी समय बगल की कोठरी का दरवाजा खुला और भूतनाथ उनकी तरफ आता दिखाई पड़ा.

साहब - सलामत के बाद वह इन दोनों के पास ही बैठ गया और प्रभाकरसिंह ने खुशी - खुशी उससे कहा, " भूतनाथ, तुम्हारा शक तो बहुत ठीक निकला.

" भूत ०:

(खुश होकर) हाँ! तो क्या आप लोगों को कुछ पता लगा?

इन्द्र ०:

हाँ, मैंने आज अजायबघर की अच्छी तरह खाक छानी और आखिर उन्हें ढूंढ निकाला.

वे बड़े ही भयानक स्थान में फंसे हुए हैं जिसका नाम चक्रव्यूह है और जो ऐसी जगह है जहाँ तिलिस्म का राजा भी अगर फँस जाय तो किसी तरह छूट नहीं सकता.

भूत:

(परेशानी के साथ) तो क्या इतनी मेहनत से उनका पता लगाना सब फिजूल हुआ?

क्या अब वे स्वतन्त्रता के साथ लोगों के बीच घूम - फिर नहीं सकते?

इन्द्र::

नहीं, वे वहाँ सिर्फ अपना जीवन निर्वाह कर सकते हैं पर तिलिस्म के बाहर उस समय तक नहीं आ सकते जब तक कि वह तिलिस्म तोड़ा न जाय.

भूत ०:

क्या जब तक तिलिस्म न टूटेगा तब तक वे बाहर निकल ही नहीं सकते?

इन्द्र:

किसी तरह नहीं.

तिलिस्म जब टूटेगा तभी वे बाहर हो सकेंगे.

भूत ०:

और वह कब तथा कैसे टूटेगा?

इन्द्र::

सो तो भगवान ही जानें, मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता.

खैर अब यहाँ से उठना चाहिए.

हम लोग सिर्फ इसलिए यहाँ बैठ गये थे कि तुम आ जाओ और तुम्हें यह खुशखबरी सुना दें तो चलें क्योंकि इस बात का पूरा यश तुम्हीं को है! भूत ०:

बेशक आपकी बात सुन मेरी हिम्मत दूगुनी हो गई.

जिस समय उनकी स्त्री और बेटी को दामोदरसिंह के जीते रहने की खबर लगेगी वे कैसी खुश होंगी! इन्द्रदेव की आँखें यह बात सुनते ही डबडबा आईं.

भूतनाथ समझ गया कि यह स! और इन्दिरा की जुदाई के आँसू हैं जिनके दुश्मन के हाथ फँस जाने का हाल वह जान चुका था.

मगर इन्द्रदेव ने शीघ्र ही अपने को सम्हाल लिया औ भूतनाथ से कहा, " अब यहाँ से चलना चाहिए क्योंकि अगर दारोगा या उसका कोई साथी आ पहुँचेगा तो मुश्किल होगी.

" तीनों आदमी उठ खड़े हुए और बंगले के बाहर आए, थोड़ी दूर पर पेड़ों के झुरमुट में दो घोड़े खड़े थे जिन पर इन्द्रदेव और प्रभाकरसिंह चढ़ गये और भूतनाथ के साथ जंगल के बाहर की तरफ चले.

10वा व्यान।

अपने मकान के सबसे ऊपर वाले बंगले में मखमली गद्दी पर जमानिया के दारोगा साहब एक ऊंचे तकिए के सहारे बैठे हुए हैं.

वे अकेले नहीं हैं.

उनके एक तरफ मनोरमा और दूसरी तरफ नागर बैठी हुई है, तथा सामने ही एक चौकी पर प्याले और बोतल भी नजर आ रही है और रंग - ढंग से यह भी मालूम होता है कि इस समय ये तीनों ही नशे में चूर हो रहे हैं.

दारोगा साहब का एक हाथ मनोरमा के हाथ में है और दूसरा नागर के गले में और वे घुल - मिलकर इन दोनों से बातें कर रहे हैं.

दारोगा:

अजी गोपालसिंह है क्या चीज?

उस लौंडे को मैंने वह पट्टी पढ़ा दी है कि चूं तक नहीं कर सकता! अब वह पूरी तरह मेरे कब्जे में आ गया है.

मनो ०:

बेशक इसमें तो कोई शक नहीं कि वह आपके हाथ के पुतले बन गए हैं और आप जिस तरह चाहें उन्हें नचा सकते हैं.

नागर ०:

मैं तो जमानिया का राजा आप ही को समझती हूँ, अब आपको चाहिए कि मेरे बहुत दिन के तकाजे को पूरा करें.

दारोगा:

कौन - सा?

नागर:

(दारोगा के कान में कुछ कहकर) बस यही एक जरा - सी बात.

दारोगा:

बाह, इसे तुम जरा सी बात समझती हो! नागर:

और नहीं तो क्या?

आपके आगे यह है ही क्या चीज?

दारोगा:

(सिर हिलाकर) नहीं नहीं, यह बड़ी कठिन बात है.

नागर:

(दूर हटकर और मुँह उदास बनाकर) सो तो मैं समझती ही थी! अदने - अदने के दिल की बातें चाहे आप पूरी कर दें पर जो मैं कहूँ वह भला काहे को होगा?

मनो ०:

आखिर यह कौन- सी ऐसी बात कह रही हैं जिसके पूरा करने में आपको इतना परहेज है?

दारोगा:

(नागर का हाथ पकड़ और अपने पास खींचकर) यह मेरे और इसके बीच की एक भेद की बात है (नागर से) अच्छा मैं कोशिश करूँगा, तुम मुंह मत लटकाओ, तुम्हारा उदास मुँह मुझसे देखा नहीं जाता, तुम जो कहती हो उसे पूरा करने की मैं कोशिश करूँगा.

नागर:

जरूर! वादा करते हैं?

दारोगा:

हाँ वादा करता हूँ, मगर गोपालसिंह को सिंहासन पर बैठ जाने दो तभी मुझे कुछ करने का मौका मिलेगा.

नागर:

देखिए भूल मत जाइएगा! दारोगा:

नहीं, कभी नहीं.

मनो ०:

अच्छा यह तो बताइए कि हेलासिंह वाले मामले में अब क्या हो रहा है?

दारोगा:

अभी कुछ तै नहीं हुआ, जैपाल उससे पत्र - व्यवहार तो कर रहा है.

मगर वह काफी रकम देने को तैयार नहीं होता.

मनो ०:

मगर मेरी समझ में यह नहीं आता कि उसकी लड़की की शादी गोपालसिंह के साथ आप करा कैसे सकेंगे?

दारोगा:

(मुस्कुराता हुआ) तुम देखती रहना क्योंकर होती है.

क्या महाराज गिरधरसिंह वाले मामले से भी यह बात बड़कर है, जब उसे पूरा किया तो इसे क्यों न ठीक उतार सकूँगा! नागर:

तो क्या आप केवल थोड़े से रुपयों की लालच में वह खरतनाक काम कर रहे हैं, क्योंकि इसमें तो कोई शक नहीं कि अगर गोपालसिंह को इस बात का पता लग गया कि आप हेलासिंह की विधवा लड़की से उनकी शादी कराया चाहते हैं तो वह आपको कहीं का न छोड़ेंगे.

दारोगा:

केवल रुपए की ही लालच में नहीं है बल्कि कुछ और भी बात है.

नागर:

सो क्या?

दारोगा:

यह अभी न पूछो.

नागर:

नहीं आप बताइए क्या बात है दारोगा:

(कुछ सोचकर) अच्छा मैं बताता हूँ पर इस बात को बहुत गुप्त रखना.

नागर:

आप विश्वास रखिए मैं किसी के आगे इसका जिक्र न करूंगी.

दारोगा:

हेलासिंह को खुश कर उसकी मदद से मैं लोहगड़ी का मालिक बना चाहता हूँ, नागर:

क्या?

वह जगह क्या अजायबघर से भी बड़कर है?

और अगर आप चाहें तो क्या गोपालसिंह को खुश करके यह काम करा नहीं सकते?

दारोगा:

गोपालसिंह लौंडा है, उसे लोहगड़ी का भेद क्या मालूम?

वह सिर्फ नाममात्र के लिए लोहगड़ी का मालिक है, असली मालिक तो उसका हेलासिंह है क्योंकि उसके पास उस जगह की ताली है.

मनो ०:

लोहगड़ी में क्या कोई विचित्रता है?

दारोगा:

वह एक ऐसा स्थान है जिसके आगे अजायबघर भी तुच्छ है.

असल में वह ऐसा बड़ा भारी तिलिस्म है जिसके अन्दर इतना बेइन्तहा माल, दौलत और खजाना भरा हुआ है कि जिसका शुमार नहीं हो सकता.

मनो ०:

मगर ऐसी बात है और हेलासिंह ही उस जगह का मालिक है तो उसने जरूर वह दौलत निकाल ली होगी?

दारोगा:

नहीं, बिना उस जगह का तिलिस्म टूटे वह दौलत हाथ नहीं आ सकती और उस तिलिस्म को वही तोड़ सकता है जिसके पास उसकी ताली हो! मनो ०:

तो हेलासिंह ने उस तिलिस्म को क्यों नहीं तोड़ डाला?

दारोगा:

तिलिस्म क्या यों टूटा करते हैं कि जिसके हाथ में ताली हुई या जिसे उसका भेद मालूम हुआ वही उसके खजाने का मालिक बन बैठे! उसके लिए बड़ी मेहनत और किस्मत दरकार है.

(कुछ रुककर) मैं एक बार बड़े महाराज के साथ लोहगड़ी के तिलिस्म के अन्दर जा चुका हूँ.

ओफ, हीरे, मोती और जवाहात के तो वहाँ ढेर पड़े हुए हैं!

दोनों:

ऐसा !! दारोगा:

अब मैं क्या बताऊँ, अभी तक भी जब उसका खयाल करता हूँ, आँखें चौंधिया जाती हैं.

दोनों तब ऐसी जगह तो जरूर कब्जे में करनी चाहिए.

दारोगा:

इसी से तो हेलासिंह की खुशामद में लगा हुआ हूँ, पहिले ताली हाथ में आ जाए तो आगे की कार्रवाई सोची जाय, इतने ही में बाहर से आवाज आई, “ हेलासिंह को आप की किसी बात से इनकार नहीं है और वह आपको वहाँ की ताली देने को खुशी से तैयार है.

" तीनों ने बाहर की तरफ देखा और जैपाल को अन्दर आते पाया.

दारोगा:

(खुश होकर) तुमने यह क्या कहा?

जैपाल:

यही कि हेलासिंह लोहगढ़ी की ताली आपको देने को तैयार है.

दारोगा:

सचमुच जैपाल:

हाँ, मैंने उसे बातों के चक्कर में ऐसा फंसाया कि वह किसी तरह इनकार न कर सका और अन्त में वादा कर ही दिया कि काम पूरा होते ही वह लोहगड़ी की ताली दे देगा.

मनोरमा और नागर:

मुबारक हो, अच्छी खबर मिली! दारोगा:

बेशक इस बात ने मुझे खुश कर दिया.

अच्छा क्या - क्या बातें हुईं, सब कुछ सुनाओ.

दारोगा और जैपाल में धीरे - धीरे कुछ बातें होने लगीं जिन्हें मनोरमा और नागर भी ध्यान से सुनती रहीं.

लगभग एक घण्टे तक यह जिन चलता रहा और तब ये चारों ही उठ खड़े हुए, न - जाने कब से एक आदमी जिसका चेहरा नकाब से ढका हुआ था बंगले के पिछवाड़े की एक खिड़की के पास चिपका इन लोगों की बातें सुन रहा था.

बातों का सिलसिला खतम होते और इन लोगों को उठते समझ वह हटा और फुर्ती से नीचे की तरफ गली में उतर गया.

क़मन्द खींच ली और तेजी के साथ एक तरफ को रवाना हो गया.

11वा व्यान।

इन्द्रदेव और प्रभाकरसिंह के साथ - साथ जंगल के बाहर आने के बाद भूतनाथ ने उनका साथ छोड़ दिया और पश्चिम तरफ का रास्ता लिया.

लगभग आधे घण्टे तक तेजी के साथ चले जाने के बाद वह एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ मैदान के बीचोबीच में ऊंची जगत का बहुत बड़ा कुआँ बना हुआ था जिसके चारों कोनों पर नीम के चार भारी दरख्त लगे होने के कारण हमेशा छाया बनी रहती थी.

भूतनाथ इस कुएँ पर आकर बैठ गया और कपड़े उतार सुस्ताने लगा.

ठण्डी - ठण्डी हवा लगने से उसके थके हुए शरीर में आलस्य आने लगा और नींद आ गई.

कितनी देर भूतनाथ नींद में गाफिल रहा यह वह नहीं कह सकता पर यकायक गाने की सुरीली आवाज ने उसके कानों में पड़ कर उसकी नींद भगा दी और उसने ताज्जुब के साथ आँखें खोल दी.

रात के इस समय चन्द्रदेव आकाश में ऊँचे उठ चुके थे और उनकी स्निग्ध चाँदनी चारों तरफ फैली हुई थी.

इसी रोशनी में भूतनाथ ने देखा उसके पैताने की तरफ कुएँ की जगत के दूसरे सिरे पर कोई औरत इसकी ओर पीठ किए बैठी गा रही है.

शायद मेरे उठने की आहट पा यह औरत डर जाय और गाना बन्द कर दे यह सोच भूतनाथ ने जागकर भी आँखें बन्द कर लीं और चुपचाप पड़ा हुआ मुलायम गले से निकलते हुए उस मधुर गाने को सुनने लगा.

भूतनाथ गायन - विद्या का केवल प्रेमी ही नहीं था बल्कि इस हुनर को अच्छी तरह जानता भी था अस्तु उसे यह समझने में कुछ भी देर न लगी कि औरत गाने के फन में पूरी ओस्ताद है तथा इस समय एकदम तन्मय होकर गा रही है.

समय चाँदनी और सन्नाटे के आलम में उस गाने ने भूतनाथ पर कुछ ऐसा असर किया कि वह एकदम मस्त हो गया और दुनिया को भूल गया.

यकायक गाना बन्द हो गया और चौंक कर भूतनाथ ने आँखें खोल दीं.

वह औरत उठ कर खड़ी हो गई थी और अब उसका मुंह भूतनाथ की तरफ था.

भूतनाथ की निगाहें उसकी सुन्दरता देखकर एकदम चौंधिया उठीं.

अब तक उसने कभी और कहीं ऐसी सुन्दर नाजुक - बदन को देखा न था और वह उसी तरह पड़ा अधखुली आँखों से उसके रूप की अलौकिक छटा का आनन्द लेने लगा क्योंकि अब भी उसे यह डर बना ही हुआ था कि मुझे जगा हुआ जान यह औरत कहीं भाग न जाय.

शायद यह सोच कर कि यह आदमी अभी तक भी नींद में है, वह औरत कुछ निश्चिन्त हुई और अठखेलियों के साथ चलती हुई कुएँ के पास पहुँच उसके अन्दर झाँक कर बोली, " क्रूपदेव, तनिक बाजा तो बजाओ.

" अभी भूतनाथ यह सोच ही रहा था कि यह औरत पागल तो नहीं हो गई है जो कुएँ से कहती है कि बाजा बजाओ, कि इतने ही में कूएँ के अन्दर से तरह - तरह के सुरीले बाजों के बजने की आवाज आने लगी और उन्हीं के ताल पर वह औरत नाचने लगी.

जैसा गाना वैसा ही आकर्षक तात्र भी था, भूतनाथ ने अभी जो अद्भुत बात देखी थी उस पर ताज्जुब करने को भी उसे मोहलत न मिली और एकाग्रता के साथ उस औरत का नाच देखने में वह इतना बेसुध हो गया कि तनोबदन की होश भूल वह यकायक उठ कर बैठ गया.

भूतनाथ के उठते ही उस औरत के मुँह से हलकी चीख निकली और वह रुक गई, साथ ही कुएँ के अन्दर से बाजों की आवाज का आना भी बन्द हो गया और चारों तरफ सन्नाटा छा गया, भूतनाथ को उठ बैठने की अपनी बेवकूफ़ी पर अफसोस हो गया मगर लाचारी समझ उसने अपने को सन्तोष दिया और उस सुन्दरी की तरफ लालच - भरी निगाहों से देखता हुआ बोला, “ सुन्दरी, सच बताओ तुम मनुष्य हो या कोई अप्सरा?

वह औरत खिलखिला कर हँस पड़ी और उसके मोती - से दाँत कुछ देर के लिए खुल कर फिर छिप गए, साथ ही उसके सुन्दर मुंह पर दुःख की एक आभा आ पड़ी जिसने भूतनाथ को बेचैन कर दिया.

वह खड़ा हो गया और उस तरफ बड़ता हुआ बोला, " सही - सही बताओ कि तुम कौन हो और इस आधी रात के समय बस्ती से कोसों दूर इस खौफनाक मैदान में क्या कर रही हो! "

उसे उठ कर अपनी तरफ आते देख वह औरत डर कर च्यूंहुँकी और घूम कर कुएँ की तरफ हो गई.

भूतनाथ यह देख हँस कर बोला, " डरो मत, मैं तुम्हारे साथ कुछ भी बुराई नहीं किया चाहता.

अगर मुझसे इतना ही डर मालूम होता है तो लो मैं बैठ जाता हूँ, पर तुम मेरे पास आओ और अपना परिचय दो.

" इतना कह भूतनाथ जमीन पर बैठ गया.

वह औरत उसके पास तो न आई परन्तु उसके चेहरे पर भय का जो चिह्न आ गया था वह बहुत कुछ दूर हो गया.

भूतनाथ ने मुलायम आवाज में फिर उससे पूछा, “ डरो मत और साफ बताओ कि तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?

" जवाब में उस औरत की बड़ी - बड़ी आँखों से मोती की तरह आँसू की बूंदें गिरने लगीं.

भूतनाथ को यह देख और भी ताज्जुब हुआ और वह कुछ पूछा ही चाहता था कि वह औरत स्वयम् बोली, " आप मेरी हालत क्यों पूछते हैं?

मैं बड़ी भारी दुखिया हूं.

इसी कुएँ में रह कर किसी तरह अपनी मुसीबत की जिन्दगी काटती हूँ, !! भूत ०:

(ताज्जुब से) क्या तुम्हारा मकान इस कुएँ में है?

औरत:

मकान नहीं, यह कुआं मेरा कैदखाना है, मैं स्वतन्त्र नहीं हूँ, कैदी हूं, महीने में सिर्फ एक बार कूएँ के बाहर आने की मुझे इजाजत मिलती है और मैं उसे ही गनीमत समझ यहाँ आकर और कुछ गा - बजा कर अपने दु:ख के बोझ को कमकरने की कोशिश करती हूँ.

भूत:

तुम्हारी बातें तो बड़े ताज्जुब की हैं.

अगर यह कुआँ तुम्हारा कैदखाना है तो तुम्हें ऐसी जगह पर कैद किसने किया, तुम्हें खाने - पीने को कौन देता है, और जब तुम गाती हो तो सुरीले बाजे कौनबजाता है?

औरत:

इस कुएँ ने ही मुझे कैद किया है, यही मुझे खाने को देता है, और यही कभी - कभी गा - बजाकर दिल बहलाता है.

भूत ०:

(बड़ते हुए ताज्जुब से) वाह, यह तो और भी अजीब बात है.

अच्छा तुम्हें यहाँ रहते कितने दिन हुए?

औरत:

दो बरस.

भूत:

दो बरस !! औरत:

जी हाँ.

भूत ०:

आज के पहिले भी मैं कई बार यहाँ आ चुका हूँ और रात को रह भी चुका हूं पर अब तक तो मैंने तुम्हें कभी नहीं देखा! इस नएँ को भी मैं अब तक मामूली कुआँ ही समझे हुए था और नहीं जानता था कि यह अनोखा कैदखाना है जिसमें ऐसा कैदी बन्द है जिसकी खूबसूरती अपना सानी नहीं रखती.

औरत:

(आँखे निची करके) मैं केवल शुक्ल पक्ष की एकादशी वाली रात को ही बाहर आ सकती हूँ इसी से शायद आपने मुझे कभी नहीं देखा.

भूत:

तुम किसी तरह इस फन्दे से छूट भी सकती हो या नहीं?

औरत:

हाँ, अगर कोई बहादुर और हिम्मतवर आदमी मेरी मदद करे तो बेशक छूट सकती हूँ,
भूत ०:

अगर तुम्हें विश्वास होता हो तो यहाँ पास आकर बैठो, अपना नाम बताओ और पूरा किस्सा बयान करो, मैं दिलोजान से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ, औरत ने तिरछी निगाह भूतनाथ की तरफ डाली और एक कदम आगे बढ़ाया पर फिर रुक गई और बोली, " अच्छा अगली एकादशी को तुम यहाँ आना, उस समय मैं अपना सब हाल तुम्हें बतलाऊँगी क्योंकि तुम बहादुर और सच्चे आदमी मालूम होते हो और मेरा दिल कहता है कि तुम पर विश्वास करने से अच्छा नतीजा निकलेगा.

" भूत ०:

क्यों इसी समय बताने में क्या हर्ज है?

औरत:

नहीं, अब समय हो गया और मुझे अपने कैदखाने में चले जाना पड़ेगा.

भूत:

नहीं - नहीं, पहिले मुझे अपना हाल सुना लो तब जाना.

औरत:

नहीं, मैं ऐसा करने की हिम्मत नहीं कर सकती.

इतने ही में कूएँ के अन्दर शंख बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही वह औरत कांपउठी और भूतनाथ की तरफ एक निगाह डाल कर उसने अपना कदम कुएँ की तरफ बढ़ाया.

भूतनाथ ने देखा कि उसकी डबडबाई आँखों से आँसू की बूंदे गिर कर गालों पर पड़ रही थीं.

उससे अब रहा न गया और वह उसकी तरफ बड़ता हुआ बोला, " नहीं, अब मैं किसी तरह तुम्हें जाने नहीं दे सकता.

" हिचकिचाती और क्या करूँ क्या न करूँ, सोचती हुई वह औरत एक सायत के लिए रुक्की ही थी कि भूतनाथ ने झपट कर उसकी कलाई पकड़ ली और मुलायमियत मगर

मजबूती के साथ अपनी तरफ खींचते हुए बोला- " जब तक मैं तुम्हारा पूरा - पूरा हाल नहीं सुन लूंगा तुम्हें कदापि आँखों की ओट न होने दूंगा.

!! इसी समय कुएँ में से पुनः शंख की आबाज आई जिसे सुन यह औरत फिर कॉप गई, उसने डरते हुए एक निगाह कूएँ की तरफ डाली और तब कातर दृष्टि से भूतनाथ को देखा.

भूतनाथ ने उसे अपने पास खींच लिया और दिलासा देने वाले डंग से कहा- " डरो मत, डरो मत, अपना हाल मुझे सुनाओ और विश्वास रखो कि भूतनाथ के जीते - जागते कोई हाथ ऐसा नहीं है जो तुम्हें कष्ट पहुँचा सके.

तुम अपना डर एकदम दूर कर दो और इस शैतान कूएँ में जाने का इरादा छोड़ मुझसे बातें करो! " दम - दिलासा देता हुआ भूतनाथ उस औरत को उस जगह ले आया जहाँ पहिले बैठा हुआ था.

अपना दुपट्टा जमीन पर फैला उसने उस पर उसे बैठाया और स्वयं भी पास में बैठ गया.

उस औरत ने अपनी बड़ी - बड़ी आँखें भूतनाथ के चेहरे पर उठाई और पूछा, “ क्या मैं अपने सामने प्रसिद्ध और बहादुर ऐयार भूतनाथ को देख रही हूँ! " भूत ०:

हाँ.

औरत हे परमेश्वर, मैं तुझे हजार धन्यवाद देती हूँ, अगर इस समय दुनिया में कोई ऐसा है जो मुझे इस दुःख से छुड़ा सके तो वह केवल भूतनाथ ही है.

भूत:

तुम विश्वास रखो कि भूतनाथ दिलोजान से तुम्हारी मदद करने को तैयार है, तुम अब अपना सच्चा - सच्चा हाल मुझे सुनाओ.

तुम्हारा नाम क्या है और तुम कहाँ की रहने वाली हो?

औरत:

मेरा नाम श्यामा है और कभी मैं काशीराज में रहती थी, पर इस बात को एक जमाना हो गया और मैं नहीं जानती कि वहाँ अब मेरा कोई है भी या नहीं! भूत ०:

तुम्हारे पिता का क्या नाम है?

उस औरत ने जबाब देने को मुँह खोला ही था कि इसी समय पुनः उस कूएँ के अन्दर से शंख बजने की आवाज आई.

कांपतीहुई उस औरत की निगाह कूएँ की तरफ जा पड़ी और वह कोई खौफनाक चीज देख जोर से चीख मार कर उठ खड़ी हुई.

भूतनाथ ने भी उस चीज को देखा और चौंक कर खड़ा हो गया.

वह चीज एक लोहे का पंजा था जो कूएँ के अन्दर से निकल कर सीधा उस बेचारी औरत की तरफ बड़ रहा था.

देखते देखते उस फौलादी पंजे ने औरत की कलाई पकड़ ली और वेदर्दी से कुएँ की तरफ खींचा.

डरी हुई वह औरत भूतनाथ के साथ लिपट गयी और भूतनाथ ने दूसरे हाथ से खंजर निकाल उस पंजे पर एक भरपूर हाथ जमाया, परन्तु चोट पड़ते ही झन्नाटे की आवाज देता हुआ खंजर टूट कर दूर जा गिरा और भूतनाथ के देखते - देखते ही उस बेरहम पंजे ने उस चिल्लाती औरत को अन्दर खींच लिया.

भूतनाथ भौंचक्का - सा होकर यह हाल देखता रहा.

थोड़ी देर तक तो वह चुप खड़ा कुछ सोचता रहा, इसके बाद कूएँ के पास आया और उसमें झाँक कर देखने लगा.

चन्द्रमा ठीक सर पर था और उस बड़े कूएँ की तह तक उसकी रोशनी पहुँच कर वहाँ की हर एक चीज साफ दिखा रही थी.

इस रोशनी में न - जाने भूतनाथ को कूएँ के अन्दर क्या दिखाई पड़ा कि वह अपने को रोक न सका और एकदम कुएँ के अन्दर कूद पड़ा.

।

।

बारहवाँ भाग समाप्त ॥

भूतनाथ - ४

भूतनाथ -५

देवकीनन्दन खत्री

उपन्यास

खण्ड -५

तेरहवाँ भाग

पहला व्यान।

सूर्योदय होने में यद्यपि अभी बिलम्ब है फिर भी ठण्डी - ठण्डी दक्षिणी हवा का चलना प्रारम्भ हो गया है और वह पलंग पर पड़े रहने वालों को नींद में मस्त कर रही है.

खास बाग महल के अपने सोने वाले कमरे में गोपालसिंह मुन्दर पलंग पर लेटे हुए हैं.

एक पतली चादर उनके बदन पर पड़ी है पर सिर्फ गर्दन तक, मुँह का हिस्सा खुला हुआ है.

वे सोये हुए नहीं हैं बल्कि अभी - अभी उनकी आँख खुली है और वे पलंग पर लेटे ही लेटे खिड़की की राह नीचे के नजरबाग पर निगाहें डाल रहे हैं.

यह छोटा - सा नजरबाग महल से सटा हुआ और खास बाग के दूसरे दर्जे में है.

हमारे पाठक चन्द्रकान्ता सन्तति में इस खास बाग और इसके चारों दर्जों का हाल अच्छी तरह पड़ चुके हैं अस्तु यहाँ पर उसका हाल लिखने की कोई जरूरत नहीं है, हाँ इतना कह देना आवश्यक है कि तीसरे दर्जे में बने हुए ऊंचे बुर्ज का एक भाग उस खिड़की में से दिखाई पड़ रहा है जिसके सामने गोपालसिंह का पलंग बिछा हुआ है.

इधर - उधर निगाहें दौड़ाते हुए यकायक गोपालसिंह कुछ चौंक से गये और तब तकीया के सहारे उठ कर गौर से नीचे की तरफ देखने लगे.

थोड़ी देर बाद वे पलंग पर उठकर बैठ गए और जब इससे भी मन न माना तो पलंग छोड़ खिड़की के पास आकर खड़े हो नीचे की तरफ देखने लगे.

अब हमें भी मालूम हुआ कि जिसने उन्हें ऐसा करने पर मजबूर किया है वह एक क़मसिन औरत है जो नीचे बाग की रविशों पर इधर - उधर घूम रही है.

गोपालसिंह कुछ देर तक खिड़की के पास खड़े सोचते रहे कि वह कौन औरत होगी या उसे यहाँ आने की क्या जरूरत पड़ सकती है.

पहिले तो उनका ख्याल महल की लौंडियों की तरफ गया पर थोड़ी देर में विश्वास हो गया कि यह उनके महल से सम्बन्ध रखने वाली कोई औरत नहीं है क्योंकि घूमते ही फिरते वह चमेली की एक झाड़ी के पास पहुंची और उसकी आड़ में कहीं लोप हो गई.

कुछ देर तक गोपालसिंह इस आशा में रहे कि वह झाड़ी के बाहर निकलेगी पर जब देर तक राह देखने पर भी उसकी सूरत दिखाई न पड़ी तो उन्होंने आप ही आप धीरे से कहा, " उस झाड़ी में से तो तीसरे दर्जे में जाने का रास्ता है, कहीं बह वहीं तो नहीं गई है! " मगर इस ख्याल पर भी उनका मन न जमा क्योंकि वे विश्वास नहीं कर सकते थे कि कोई अनजान आदमी उस रास्ते का हाल जानता होगा.

आखिर उनका जी न माना, वे जाँच करने के लिए कमरे के बाहर निकले.

कमरे के बाहर वाले दालान से नीचे की मंजिल में उतर जाने के लिए संगमर्मर की सीढ़ियाँ बनी हुई थीं जिनकी राह उतर कर गोपालसिंह बात की बात में उस नजर बाग में जा पहुँचे.

रविशों पर घूमते और गौर से देखते हुए वे उस चमेली की झाड़ी के पास जा पहुँचे पर यहाँ भी उन्हें किसी की सूरत दिखाई न पड़ी जिससे ताज्जुब के साथ वे तरह - तरह की बातें सोचने लगे.

इस समय बहुत थोड़े लोग जागे थे और इस बाग में तो किसी की भी सूरत दिखाई न पड़ी थी.

गोपालसिंह ने उस झाड़ी के कई चक्कर लगाए और इधर - उधर भी तलाश कियापर उस औरत का कहीं पता न लगा और अन्त में उन्हें विश्वास करना पड़ा कि वह चाहे जो भी रही हो मगर जरूर तिलिस्मी राह से बाग के तीसरे दर्जे में चली गई है.

इस विचार ने गोपालसिंह के दिल में तरदुद और साथ ही कुछ डर भी पैदा कर दिया क्योंकि आजकल उनके चारों तरफ जिस तरह की साजिशें और चालबाजियाँ चल रही थीं उनसे वे बहुत ही परेशान और घबराए हुए से हो रहे थे.

कुछ देर तक तो वे वहीं खड़े कुछ सोचते रहे और तब उसी झाड़ी के अन्दर घुस गये जिसके अन्दर जाकर वह औरत गायब हो गई थी.

दूर तक फैली हुई झाड़ी गुञ्जान और इस लायक थी कि कई आदमी इसके अन्दर बखूबी छिप सकते थे.

इसके बीचोबीच में जमीन के साथ लगे एक पीतल के बड़े कुंद्दे को उन्होंने किसी क़म के साथ घुमाना शुरु किया.

देखते - देखते वहाँ एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

छोटी - छोटी घूमघुमौव सीढ़ियाँ नीचे को गई हुई थीं जिन पर गोपालसिंह धीरे - धीरे उतरने लगे.

सीढ़ियां तय होने पर एक अंधेरी सुरंग मिली जिसके अन्दर उन्होंने पैर रक्खा ही था कि ऊपर वाला रास्ता बन्द हो गया.

लगभग एक घड़ी तक इस सुरंग में चलने के बाद गोपालसिंह एक दालान में पहुँचे जिसको पार करने पर ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ दिखाई दीं.

सीढ़ियों पर चढ़ कर ऊपर पहुँचे और अपने को तिलिस्मी बाग के तीसरे दर्जे में पाया.

यह एक बड़ा बाग था जिसके बीच में एक नहर जारी थी और बहुत से मेवे तथा फलों के पेड़ मौजूद थे.

गोपालसिंह चारों तरफ नजर दौड़ा ही रहे थे कि सामने थोड़ी दूर पर बने हुए संगमर्मर के एक चबूतरे पर उनकी नजर पड़ी और वे चौंक गए क्योंकि इस चबूतरे के ऊपर उन्होंने उसी औरत को बेहोश पड़े हुए देखा जिसकी खोज में यहाँ तक पहुँचे थे.

तेजी के साथ चल कर वे उस जगह पहुँचे और एकटक उसकी तरफ देखने लगे.

हम कह सकते हैं कि अब तक गोपालसिंह ने शायद कभी भी किसी ऐसी औरत को देखा न होगा जिसकी खूबसूरती इससे बढ़ - चढ़ कर हो.

इसका चेहरा, नखशिख, कद और ढांचा ऐसा था कि बड़े - बड़े योगियों और तपस्वियों को वश में कर ले और कुछ देर तक तो गोपालसिंह सकते की - सी हालत में एकटक खड़े उसकी तरफ देखते रह गए.

कभी उसके सुडौल मुखड़े को देखते, कभी पतली गर्दन को, कभी मुलायम - मुलायम हाथों पर निगाह डालते और कभी नाजुक़ पैरों पर, लेकिन अन्त में किसी तरह उन्होंने अपने को सम्हाला और उसके पास बैठकर गौर से देखने लगे क्योंकि उसकी साँस बिल्कुल बन्द जान पड़ती थी, पर फिर बहुत ध्यान के साथ देखने पर धीरे - धीरे सांस चलने की आहट मिली और उनका डर दूर हुआ.

यह सोच कर कि जरूर यह किसी कारण से बेहोश हो गई है और शायद पानी से चेहरा तर करके हवा करने से होश में आ जाय वे वहाँ से उठ कर उस नहर की तरफ चले जो थोड़ी ही दूर पर बह रही थी और जिसका साफ निर्मल जल मोती की तरह चमक रहा था.

उसके ठण्डे पानी में अपना दुपट्टा तर कियाऔर उसे लिए हुए पुनः उस चबूतरे की तरफ लौटे, पर यह क्या?

वह चबूतरा खाली था और उस पर बेहोश औरत का कहीं पता न था.

भौंचक्के - से होकर वे चारों तरफ देखने लगे.

अभी - अभी तो वे उसे यहाँ छोड़ गये थे, तब इतनी ही देर में वह कहाँ गायब हो गई, क्या कोई आदमी आकर उसे उठा ले गया अथवा वह आप ही होश में आकर कहीं चली गई?

मगर उसकी बेहोशी तो ऐसी न थी कि वह इतनी जल्दी होश में आती या कहीं चली जाती! खैर देखना तो चाहिए ही कि वह कहाँ गई?

इत्यादि बातें सोचते हुए गोपालसिंह ने हाथ का गीला दुपट्टा उसी जगह छोड़ दिया और चारों तरफ घूम - घूम कर खोज करने लगे.

उस बड़े बाग में देर तक राजा गोपालसिंह उस औरत को ढूंढते रहे परन्तु कहीं भी उसका पता न लगा और आखिर सब तरफ से निराश हो वे पुनः उसी नहर के किनारे आकर खड़े हो कुछ सोचने लगे.

यकायक नहर के साफ पानी में उन्हें कोई चीज बहती हुई दिखाई पड़ी.

वह कपड़े का टुकड़ा था जिसके साथ एक कागज बंधा हुआ था.

गोपालसिंह को ऐसा ख्याल हुआ कि यह टुकड़ा उस औरत की साड़ी का ही है.

उन्होंने उत्कंठा के साथ उसे बाहर निकाला और कोने में बंधी हुई चीठी खोली.

एक छोटी और बहुत ही हलकी लिखावट इस पर नजर आई जिसका पड़ना अत्यन्त कठिन हो रहा था परन्तु बड़ी देर तक गौर करने के बाद राजा गोपालसिंह को उसका मतलब समझ में आ ही गया.

वह मजमून यह था " मैं चक्रव्यूह में कैद हूँ, परन्तु ' चक्रव्यूह ' का नाम पड़ते ही गोपालसिंह चौंक गए.

अपने पिता और चाचा से वे सुन चुके थे कि ' चक्रव्यूह ' यद्यपि उनके जमानिया तिलिस्म का ही एक हिस्सा है, मगर वह जगह इतनी भयानक है कि उसके आगे जमानिया बाग का चौथा दर्जा भी कुछ नहीं है तथा वे यह भी सुन चुके थे कि चक्रव्यूह में फंसा हुआ आदमी उस समय तक नहीं छूट सकता जब तक कि वहाँ का तिलिस्म तोड़ा न जाय, अस्तु इस चिट्ठी में ' चक्रव्यूह ' का नाम पड़कर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा.

वे उसी चबूतरे के पास आ पहुंचे और उस पर बैठ कर तरह - तरह की बातें सोचने लगे.

' चक्रव्यूह तो बड़ा भयानक तिलिस्म है, वहाँ यह औरत क्योंकर पहुंच गई?

आपसे आप गई या किसी ने उसे ले जाकर बन्द कर दिया?

अगर कैद किया तो किसने?

फिर अभी - अभी तो वह मेरे सामने बेहोश पड़ी थी, मेरे दुपट्टा गीला करके लाने तक में चक्रव्यूह में क्योंकर जा पहुँची?

क्या इतनी ही देर में वह होश में भी आ गई और पत्र लिखकर भेजने योग्य हो गई! नहीं - नहीं, यह जरूर कुछ धोखा है.

मालूम होता है कि वह औरत अथवा उसकी आड़ में कुछ और लोग मुझे किसी और धोखे में डालना चाहते हैं.

इस भेद का अवश्य कुछ पता लगाना चाहिए, इत्यादि बातें बहुत देर तक राजा गोपालसिंह सोचते रहे और अन्त में यह कहते हुए उठ खड़े हुए, “ बिना इन्द्रदेव से सलाह लिए यह मामला तय न होगा.

" जिस तरह से गये थे उसी रास्ते से वे अपने महल में लौटे और पहुँचते ही इन्द्रदेव को बुलाने के लिए अपने खास खिदमतगार को भेजा.

इन्द्रदेव उन दिनों जमानिया ही में थे और उनका डेरा भी महल से बहुत दूर न था, अस्तु खिदमतगार बहुत जल्दी ही उन्हें साथ लेकर लौटा.

गोपालसिंह का चेहरा देखते ही बुद्धिमान इन्द्रदेव समझ गये कि वे किसी गहरी चिन्ता में पड़ गए हैं अस्तु तखलिया होते ही उन्होंने पूछा, “ क्या मामला है?

" जबाब में गोपालसिंह ने शुरू से आखिर तक सब हाल कह सुनाया और अन्त में वह कपड़े का टुकड़ा और चीठी सामने रख दी.

कपड़े के इस टुकड़े को देखते ही इन्द्रदेव चौंके पर तुरन्त ही अपने आश्चर्य को गम्भीरता के पर्दे में छिपा कर इस तरह चीठी देखने लगे कि गोपालसिंह पर कुछ भी प्रकट न हो पाया.

देर तक इन्द्रदेव न जाने किस सोच में पड़े रहे और इस बीच गोपालसिंह बेचैनी के साथ उनका मुंह देखते रहे.

आखिर उनसे न रहा गया और उन्होंने इन्द्रदेव से पूछा, “ आप क़िस गौर में पड़ गये?

" इन्द्र ०:

इस ' चक्रव्यूह ' शब्द ने मुझे फिक्र में डाल दिया है.

गोपाल ०:

यह शब्द जिस भयानक स्थान की ओर इशारा करता है उससे तो आप वाकिफ ही होंगे.

इन्द्र ०:

हाँ बहुत कुछ, मगर आप उसके विषय में क्या जानते हैं?

गोपाल:

सिर्फ इतना ही कि वह एक बहुत ही भयानक तिलिस्म है और उसमें फँसा हुआ मनुष्य किसी तरह छूट नहीं सकता चाचाजी (भैयाराजा) की जुबानी मैंने कुछ हाल उसका सुना था पर वे पूरा हाल कह न सके और अन्तर्ध्यान हो गये.

गोपालसिंह की आँखें डबडबा आईं और उन्होंने कोशिश करके अपने को सम्हाला.

इन्द्रदेव बोले, " मैं भी चक्रव्यूह के विषय में कुछ विशेष नहीं जानता मगर जो कुछ जानता हूँ आपसे कह देना पसन्द करूंगा.

गोपाल ०:

हाँ हाँ जरूर कहिए, मेरा मन बेचैन हो रहा है.

इन्द्रदेव ने यह सुन कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था उन्हें अपने सामने कुछ ऊंचाई पर कमरे की दीवार के साथ लटके शीशे में यह दिखाई पड़ा कि जहाँ पर वे और राजा गोपालसिंह बैठे हुए थे उसके पीछे का दरवाजा जरा सा खुला और फिर बन्द सा हो गया.

इन्द्रदेव की तेज निगाहों ने उस दरवाजे के दूसरी तरफ किसी औरत का होना भी बता दिया और वे बात कहते - कहते रुक गये मगर फिर उन्होंने तुरन्त ही कहा, " हाँ हाँ सुनिये, मैं कहता हूँ, (धीरे से) पीकोछि वासु.

" सुनते ही गोपालसिंह समझ गये कि इन्द्रदेव का मतलब यह है कि उनके पीछे खड़ा हुआ कोई आदमी छिप कर उनकी बातें सुन रहा है.

गोपालसिंह के महल तथा जमानिया राज्य में इस समय जैसा षड्यंत्र चारों तरफ मच रहा था उसके कारण तथा उन्हें बचाने की नीयत से इन्द्रदेव ने उनके लिए बहुत थोड़े से

गुप्त इशारे ऐसे मुकर्रर कर रखे थे कि जिनके द्वारा बहुत थोड़े में वे अपना मतलब गुप्त रूप से उन्हें समझा सकते थे.

उनका वह इशारा सुनते ही गोपालसिंह चौकन्ने हो गए और धीरे से उन्होंने पूछा, " काची?

" (तब क्या करना चाहिए) इन्द्रदेव ने जवाब दिया, “ आने मेदू! " (आप चुपचाप बैठिये मैं देखता हूँ.

) इसके साथ ही वे कुछ ऊँचे स्वर में बोले, " मैं अपना लवादा बाहर छोड़ आया हूँ जिसकी जेब में कुछ ऐसे कागज हैं जिनसे उस स्थान का पूरा भेद प्रकट होता है.

ठहरिए मैं पहले उन कागजों को ले आऊँ.

इतना कहकर इन्द्रदेव उठ खड़े हुए और कमरे के बाहर चले मगर गोपालसिंह उसी जगह बैठे रहे.

इन्द्रदेव का शक बहुत ही ठीक था.

जिस जगह वे दोनों बैठे हुए थे उनके पीछे वाले दरवाजे के साथ कान लगा कर खड़ी एक लौंडी इन दोनों की बातें बड़े गौर के साथ सुन रही थी.

जब इन्द्रदेव कागजात लाने का बहाना कर के उठ खड़े हुए तो उस धूर्त लौंडी को भी कुछ सन्देह हुआ और वह उस जगह से हट बगल वाले कमरे से होती भीतर महल की तरफ चल पड़ी मगर दो ही दरवाजे लाँधे थे कि लपकते हुए इन्द्रदेव उसके पीछे जा पहुँचे और डपट कर बोले, “ खड़ी रह, कहाँ जाती है?

" इन्द्रदेव की सूरत देखते ही उस लौंडी की एक दफे तो यह हालत हो गई कि काटो तो लहू न निकले पर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाला और अदब से इन्द्रदेव को सलाम कर खड़ी हो गई.

इन्द्रदेव ने पूछा, " तू क्या कर रही थी?

" लौंडी:

जी, सरकार आज सुबह से अभी तक स्नान आदि से निवृत्त नहीं हुए हैं उसी विषय में आज्ञा लेने आई थी मगर बात में लगे हुए देख लौट चली हूँ, इन्द्रदेव ने यह सुन गौर से एक बार सिर से पैर तक उस लौंडी को अच्छी तरह देखा और तब कहा, " बिल्कुल झूठ, तू जरूर दगाबाज है.

सच बता कि तू हम दोनों की बातें क्यों सुन रही थी?

जल्दी बता नहीं मैं अभी तुझे जहन्नुम में भेज दूंगा.

" उस लौंडी पर इन्द्रदेव का डर और रौब इतना छा गया कि वह बिल्कुल घबड़ा गई और डर के मारे क़ांपने लगी.

इन्द्रदेव को यह विश्वास तो था ही कि जरूर कुछ दाल में काला है अस्तु वे बोले, " अगर तू सच - सच हाल बता देगी तो तेरी जान छोड़ दी जायगी! " इनकी बातचीत की आहट पा राजा गोपालसिंह भी उस जगह आ पहुँचे.

अब तो उस लौंडी को अपनी जिन्दगी से पूरी नाउम्मीदी हो गई फिर भी उसने हिम्मत न हारी और गोपालसिंह को सामने देख अदब से उसने पूछा, " मैं यह जानने आई थी कि सरकार के गुसल में क्या देर है?

आँखों के ही इशारे से इन्द्रदेव ने अपना विचार गोपालसिंह पर प्रकट कर दिया जिसे समझ गोपालसिंह ने तालियों का एक गुच्छा उनकी तरफ बढ़ाया और कहा, " इस समय तो इस कम्बख्त को ठिकाने पहुँचाओ, फिर जाँच की जाएगी.

दूसरा व्यान।

फौलादी पंजा जब उस क़मसिन औरत को लेकर उस कूएँ के अन्दर चला गया तो भूतनाथ भी अपने को रोक न सका और उसी कुएं में कूद पड़ा.

ताज्जुब की बात थी कि इस समय वह कुआँ बहुत गहरा नहीं मालूम हुआ और उसमें ज्यादा पानी भी न मिला.

सैकड़ों ही दफे भूतनाथ को इस कुएँ से काम लेने का मौका मिल चुका था और वह अच्छी तरह जानता था कि यह बहुत गहरा है और इसमें पानी भी अथाह है परन्तु इस समय उसे पानी की गहराई दो हाथ से ज्यादा न मालूम हुई फिर भी भूतनाथ को चोट कुछ भी न आई.

किसी तरह की बहुत ही मुलायम चीज पर उसके पैर पड़े जो एक तरफ को डालुओं भी थी और इसी कारण इसके पहिले कि वह सम्हले या आपने को रोक्न सक्के, फिसल कर एक तरफ को दुलक गया.

क्योंकी एक तरफ की दीवार में एक छोटा रास्ता बना हुआ था जिसके अन्दर ढाल के कारण वह खुद व खुद चला गया और उसके जाते ही वह दरवाजा आप से आप ही बन्द भी हो गया.

इस जगह पर घोर अन्धकार था.

भूतनाथ कुछ देर तक तो चुपचाप रहा पर शीघ्र ही उसने होश सम्हाले और बटुए में से सामान निकालकर रोशनी की.

उस समय उसे मालूम हुआ कि वह एक लम्बी - चौड़ी जगह के अन्दर है जिसके चारों तरफ कई दरवाजे जो सभी बन्द थे दिखाई पड़ रहे हैं.

भूतनाथ सोचने लगा कि वह औरत जिसने उसके मन पर इस कदर काबू कर लिया था कहाँ होगी?

मगर इसी समय उसका सन्देह आप से आप दूर हो गया जब यकायक एक दरवाजे के अन्दर से किसी औरत के चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी.

भूतनाथ फौरन उठ खड़ा हुआ और पूरब तरफ बाले दरवाजे के पास पहुँचा.

हाथ से धक्का देते ही वह दरवाजा खुल गया और भूतनाथ ने उस औरत को अन्दर ही पाया मगर बड़ी ही विचित्र अवस्था में, भूतनाथ ने देखा कि उस कोठरी की दीवार के साथ बहुत ही बड़ी लोहे की मूरत बनी हुई है जो इतनी बड़ी है कि बैठी होने पर भी उसका सर कोठरी की छत के पास तक पहुंच रहा है और इस मूरत ने एक हाथ से बेचारी उस औरत की कमर पकड़ी हुई है.

भूतनाथ को देख उस औरत ने चिल्लाना और छटपटाना बन्द कर दिया और हाथ जोड़ कर कहा, " किसी तरह मेरी जान इस बेरहम से बचाओ.

!! भूतनाथ ने यह सुन कोठरी के अन्दर घुसना चाहा पर तुरन्त ही औरत ने चिल्ला कर कहा, “ खबरदार, भीतर पैर न रखना नहीं तो मेरी तरह तुम भी कैद हो जाओगे.

" भूतनाथ झिझक कर रुक गया.

जो कुछ हालत यहाँ उसने देखी उससे इतना तो उसे विश्वास हो गया कि यह जरूर किसी न किसी तरह का तिलिस्म है जिसमें वह औरत फँसी हुई है, अस्तु इसमें खुद भी फंस कर लाचार हो जाना बुद्धिमानी नहीं थी.

आखिर उसने पूछा, " तुम यहाँ क्योंकर फंस गई और कैसे छूट सकती हो?

" औरत ने आँसुओं से तर आँखों को अपने आँचल से पोंछा और कहा, " क्योंकर फंसी यह तो एक लम्बी कहानी है जिसे इस समय सुनने से कोई फायदा न होगा हाँ अगर आपको मेरी हालत पर कुछ तरस आता हो तो और आप मेरे छुड़ाने के लिए कुछ तकलीफ उठा सकें तो मैं अपने छूटने का उपाय बता सकती हूँ ।

भूत ०:

हाँ हाँ, जल्दी बताओ, मैं दिलोजान से तुम्हें छुड़ाने की कोशिश करूँगा.

औरत:

अच्छा तो सुनिये फिर.

नौगढ़ के राजा बीरेन्द्रसिंह के पास एक तिलिस्मी किताब है जिसे लोग रिक्तगंथ ' कहते हैं.

वह किताब उन्हें चुनार के तिलिस्म से मिली थी.

अगर आप वह किताब ले आ सकें तो उसकी मदद से मुझे सहज ही में छुड़ा सकते हैं.

औरत की बात सुन भूतनाथ गौर में पड़ गया.

रिक्तगन्थ का नाम वह बखूबी सुन चुका था और उसके बारे में बहुत कुछ जानता भी था, परन्तु इस समय औरत के मुँह से रिक्तगन्थ का नाम सुन उसे बहुत अचम्भा हुआ

क्योंकि उसे मालूम था कि जिसे तिलिस्म और तिलिस्मी बातों से कुछ सरोकार है वही उस किताब का नाम जान सकता है.

भूतनाथ गौर में पड़ गया कि क्या इस औरत का तिलिस्म से भी कोई सम्बन्ध हो सकता है.

आखिर उसने पूछा, " तुम्हें उस खूनी किताब का हाल कैसे मालूम हुआ?

" औरत:

यह भी मैं आपको तभी बताऊँगी जब आप वह किताब मेरे सामने ले आवेंगे, अभी कुछ कहना - सुनता व्यर्थ है.

भूतः:

जब तुम उस किताब का नाम जानती हो तो जरूर यह भी जानती होगी कि वह कैसी भयानक है और साथ ही यह भी मालूम होगा कि कैसे प्रतापी के कब्जे में वह है, इसलिए उसका लाना कितना कठिन है यह भी तुम समझ ही सकती होगी, क्या कोई और उपाय तुम्हारे छुड़ाने का नहीं हो सकता?

औरत:

(टेढ़ी निगाह से भूतनाथ की तरफ देख कर) मुझे सन्देह होता है कि आप मुझे धोखा दे रहे हैं?

भूत ०:

(ताज्जुब से) धोखा कैसा! औरत:

यही कि आप वास्तव में भूतनाथ नहीं हैं, केवल मुझे भुलावा देने के लिए आप अपने को इस नाम से पुकार रहे हैं.

भूत:

(हँस कर) यह सन्देह तुम्हें क्योंकर हुआ?

औरत:

यह कभी सम्भव ही नहीं कि भूतनाथ ऐयार और किसी काम को असम्भव कहे! जिस बहादुर ने अपने अद्भुत क्रामों से जमाने भर में हलचल मचा रखी है वह एक ऐसे साधारण काम से जी चुराने यह हो नहीं सकता.

इनता कह उस औरत ने टेढ़ी निगाह से भूतनाथ को इस तरह देखा कि उसका मन एकदम हाथ से जाता रहा.

वह कुछ देर तक न जाने क्या सोचता रहा तब उसने मतलब से भरी निगाह उस औरत पर डाली जिसे देख उसने अपना सिर झुका लिया पर साथ ही उसके होठों पर हँसी की मुस्कुराहट भी दिखाई देने लगी.

भूतनाथ ने कुछ सोच कर कहा, “ खैर मैं उस किताब को लाने की कोशिश करूँगा पर कम से कम इतना तो बता ही दो कि अगर हम उसको लाने में सफल न हुए तो उस हालत में तुम्हें छुड़ाने का कोई और भी उपाय हो सकता है या नहीं?

" वह औरत यह बात सुन गौर में पड़ गई और कुछ देर बाद बोली, “ एक तरकीब और हो सकती है पर शायद आप उसे मंजूर न करें.

भूत:

वह क्या?

औरत:

जमानिया के दारोगा साहब के पास एक छोटी किताब है जिसमें इस जगह का हाल लिखा हुआ है.

अगर आप उस किताब को उनसे माँग लें तब भी शायद मैं छूट सकूँ.

भूत ०:

यह तो पहली बात से भी कठिन है.

औरत:

(उदास होकर) हाँ कठिन तो जरूर ही है, और फिर एक बेबस गरीब औरत को छुड़ाने के लिए कोई इतनी तकलीफ उठावेगा भी क्यों?

भूत ०:

नहीं - नहीं, सो बात नहीं है बल्कि बात यह है कि मुझसे और दारोगा साहब से गहरी दुश्मनी है, सो वे भला मेरे लिए कोई काम क्यों करने लगे?

औरत:

यह तो आप उसे समझाइए जो ऐयारों की खसलत से वाकिफ न हो, मैं खूब जानती हूँ कि वक्त पड़ने पर ऐयार लोग गधे को बाप बनाते हैं और काम निकल जाने पर दूध की मक्खी की तरह फेंक देते हैं.

!! औरत की बात सुन भूतनाथ हँस पड़ा और बोला, " तुम्हारा विचार है कि तुम्हारे लिए उन्हीं दारोगा साहब की खुशामद करूं जिन्हें आजकल जूतों से ठुकरा रहा हूँ औरत:

नहीं - नहीं, मैं ऐसा क्यों कहूँगी, मैं तो आपसे यह भी नहीं कहती कि मुझे यहाँ से छुड़ाइए, आप जाइये अपना काम देखिए, क्यों एक बदकिस्मत के फेर में पड़ अपना समय बरबाद करते हैं और झूठी आशाएँ दिलाकर कटे पर नमक छिड़कते हैं.

जाइए जाइए, जिस तरह इतने दिन मैंने काटे हैं जिन्दगी के बाकी दिन भी उसी तरह काट लूंगी और अन्त में सिसक कर किसी बेदर्द की याद करती हुई इस दुनिया को छोड़ दूंगी.

इतना कह औरत ने सिर लटका लिया और फूट - फूट कर रोने लगी.

उसके आँसुओं ने भूतनाथ के दिल पर बेतरह घाव किया और वह उसे दिलासा देता हुआ बोला, " तुम घबड़ाओ नहीं, मैं जैसे होगा वैसे तुम्हें इस भयानक जगह से छुड़ाऊँगा.

उस औरत ने धीरे - धीरे अपने को सम्हाला और रोना बन्द किया.

देर तक भूतनाथ उससे बातें करता रहा और बहुत - सी बातें तथा तरह - तरह के वादे कर और कराके तभी वह उस जगह से हटा.

जिस दरवाजे की राह उस जगह पहुँचा था उसको पार कर वह पुनः कुएँ की उस ढालुई सतह पर पहुँचा और वहाँ से कमन्द द्वारा बाहर हो गया.

आश्चर्य की बात थी कि जैसे ही कूएँ के बाहर हुआ, वैसे ही कुएँ के अन्दर एक शंख बजने की आवाज हुई और उसके साथ ही जो चीज कुएँ के बीचोंबीच में आ गई थीं या जिस पर गिर कर छिछले पानी में लुड़कता हुआ वह औरत के पास जा पहुँचा था उसका अब कहीं नाम - निशान भी नहीं है और कूएँ की तह में पुन:

अथाह पानी नजर आ रहा है.

भूतनाथ ने यह देख धीरे से कहा, " बड़ा विचित्र कुआ है " और तब अपना सब सामान जिसे जगत ही पर छोड़ वह कुएं में कूदा था बटोर कर वहाँ से रवाना होने की फिक्र करने लगा.

परन्तु भूतनाथ ऐसा कर न सका.

उसके कान में एक सीटी की आवाज आई जो कहीं बहुत दूर पर बजती हुई मालूम होती थी. जिससे उसका दिल खटका और वह वहीं रुक कर सुनने लगा.

आवाज पुन:

आई और इस बार पहिले से कुछ इशारा किया जा रहा है.

भूतनाथ चौंका, तब उसने अपने बटुए में से एक जफील निकाली और खास ढंग से बजाई.

तेज आवाज जंगल के कोने - कोने में फैल गई और साथ ही कई तरफ से सीटी बजने की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं.

आधी ही घड़ी बाद पेरों की आहट ने बता दिया कि कई आदमी उसी तरफ चले आ रहे हैं.

बेचैनी के साथ भूतनाथ उन लोगों के आने की राह देख रहा था क्योंकि इशारे ने उसे बता दिया था कि ये उसके ही शागिर्द हैं और किसी जरूरी काम के लिए उसे खोज रहे हैं.

देखते ही देखते पाँच आदमी जंगल में से निकलकर कुएं के पास जा पहुंचे जहाँ भूतनाथ खड़ा था और उनमें से एक ने आगे बढ़ कर बेचैनी के साथ कहा, " गुरुजी, बड़ी बुरी खबर है !! " भूत ०:

सो क्या?

शागिर्द:

इन्द्रदेवजी दुश्मनों के फन्दे में पड़ गये.

भूत ०:

इन्द्रदेव और दुश्मनों के फन्दे में! सो कैसे?

शागिर्द:

(अपने एक साथी की तरफ देखकर) गोपीनाथ, तुम्हारे ही सामने वह घटना हुई अस्तु तुम्हीं बयान कर जाओ की क्या हुआ.

गोपी ०:

(आगे बड़कर) गुरुजी, लगभग तीन घंटे के हुआ होगा कि आपकी आज्ञानुसार मैं इन खण्डहरों का चक्कर लगाता घूमता - फिरता गंगा के किनारे वहाँ पर जा पहुंचा जहाँ से गोपालसिंह गिरफ्तार हुए थे, यकायक मैंने इन्द्रदेव जी को उधर आते हुए देखा.

मेरा कलेजा दहल गया क्योंकि मैं जानता था कि वह कैसी भयानक जगह है और मैं सोच ही रहा था कि उन्हें किसी तरह से होशियार कर दूं कि अचानक उस कमेटी के कई आदमी वहाँ आ पहुँचे.

मेरे देखते ही देखते उन लोगों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और डोंगी पर बैठा कर ले गये.

अब जरूर ही वे उस कमेटी में पहुँचाये जायंगे और वह उन्हें बिना जान से मारे कदापि न छोड़ेगी क्योंकि वे बहुत बुरी तरह उस कमेटी के पीछे पड़ गये थे.

मैं यह हाल देखते ही आपकी खोज में चला कि सब हाल कह सुनाऊँ, तब रास्ते में से ये लोग भी मिल गये.

दूसरा शागिर्द:

और एक बात है, मालूम हुआ है कि आजकल सरयू और इन्दिरा (इन्द्रदेव की स्त्री और लड़की) दारोगा साहब के जमानिया वाले मकान में कैद हैं.

भूत ०:

ऐसा! तब तो इन्द्रदेव के साथ ही उन दोनों को भी छुड़ाना चाहिए.

शागिर्द:

बेशक.

भूत ०:

(गोपीनाथ से) तुम्हें उन लोगों का साथ छोड़े कितनी देर हुई?

गोपी ०:

यह कोई तीन घण्टे के लगभग हुए होंगे.

भूतः:

तब तो जो कुछ करना हो फुर्ती से करना चाहिये.

मैंने सोचा था कि इस कम्बख्त कमेटी को इस खूबसूरती के साथ तहस - नहस करूँ कि एक भी सभासद बचने न पाबे पर अब मौका न रहा.

अच्छा सुनो.

१.

देखिये चन्द्रकांता सन्तति पन्द्रहवाँ भाग, पहिला बयान,

भूतनाथ ने अपने शागिर्दो से धीरे - धीरे कुछ बातें कीं और तब उन्हें लिये हुए घने जंगल में घुस गया.

आधी घड़ी के बाद उस जंगल में से पाँच भयानक सूरतों वाले आदमी बाहर निकले.

इन सभी की सूरतें सिंदूर से रंगी हुई थीं तथा बदन पर फौलादी कवच चढ़ा हुआ था.

हाथों में लम्बी तलवारें और पीठ पर तीर - कमान के साथ - साथ ये लोग और भी तरह - तरह के हथियार से सजे हुए थे और पाँचों बहादुर बड़े भयानक मालूम होते थे.

पाठक तो समझ ही गए कि ये भूतनाथ और उसके शेरदिल शागिर्द हैं.

जंगल ही जंगल ये लोग जमानिया की तरफ रवाना हुए, थोड़ी दूर गये होंगे कि इनका एक साथी पाँच घोड़ों की लगामें थामे खड़ा दिखाई पड़ा हम नहीं कह सकते कि इतनी फुर्ती से घोड़े कहां से आ गये पर भूतनाथ के लिए कोई बात कठिन न थी.

वह फौरन कूद कर एक घोड़े की पीठ पर सवार हो गया और उसके चारों साथी भी घोड़ों पर दिखाई पड़ने लगे.

भूतनाथ ने उस आदमी से जो घोड़े के साथ था कहा, " तुम दारोगा के मकान का पहरा दो, इन्द्रदेव को छुड़ा कर इन्दिरा और सरयू के वास्ते मैं सीधा यहीं आऊंगा.

खबरदार, वे दोनों कहीं गायब न होने पावें " और तब घोड़े को एड़ लगा तेजी के साथ जमानिया की तरफ चल पड़ा.

उसके बहादुर शागिर्दो ने भी उसके पीछे अपने घोड़े छोड़ दिये.

इसके बाद किस तरह भूतनाथ ने उस गुप्त क़मेटी की मिट्टी पलीद की और इन्द्रदेव तथा स ' को छुड़ा तथा चार आदमियों की जान और इन्दिरा बाला कलमदान ले सही - सलामत निकल गया यह सब हाल पाठक चन्द्रकांता सन्तित में पड़ चुके हैं अस्तु यहाँ दोबारा लिखने की कोई आवश्यकता मालूम नहीं होती.

अब हम उसके आगे का हाल लिखते हैं.

१.

इन्दिरा और सरयू के दारोगा की कैद में जाने का पूरा हाल हमारे पाठक चन्द्रकान्ता सन्तति में इन्दिरा के किस्से में पड़ चुके हैं.

तीसरा व्यान।

पौ फटने के पहिले ही भूतनाथ उस कमेटी वाले उस स्थान से दूर निकल गया.

यद्यपि उसके साथियों के भी बदन पर हलके - हलके कई जख्म लग चुके थे पर उसे इनकी परवाह न थी और वह इन्दिरा को छुड़ाने की फिक्रमें था जिसने दारोगा साहब के

घर में होने की खबर उसके शागिर्द ने उसे दी थी.

एक हिफाजत की जगह में पहुँच भूतनाथ रुका और अपना जिरह और फौलादी कवच - आदि उतार अपने हाथ - मुंह धोए तथा कपड़े बदले.

इसके बाद वह कलमदान और अन्य कागजात जो उस सभा से लूट लाया था अपने शागिर्दो के सुपुर्द कर बहुत हिफाजत के साथ सम्हाल कर रखने की ताकीद कर पुन:

घोड़े पर सवार हुआ और जमानिया की तरफ रवाना हुआ, जिस समय वह दारोगा के शैतान की आंत की तरह पेचीले और आलीशान मकान के पास पहुँचा उस समय सुबह हो चुकी थी और आदमियों की आवाज भी शुरू हो गई थी जिस पर खयाल कर भूतनाथ ने बेचैनी के साथ कहा, " सूर्यदेव मेरे काम में बाधा डालना चाहते हैं ।

!! भूतनाथ को देखते ही उसका वह साथी जिसे उसने इस मकान पर निगाह रखने के लिए सफर के शुरू में भेज दिया था और जो अब तक न जाने कहाँ छिपा था उस जगह पहुँचा.

गुप्त इशारे से उसने अपने को भूतनाथ पर प्रकट कियाऔर तब पूछा, " गुरुजी, वह काम हो गया?

जबाब में भूतनाथ ने थोड़े में सब हाल और सभा को लूटने का किस्सा बयान कियाऔर तब कहा, सरयू को लेकर इन्द्रदेव तो निकल गये, अब इन्दिरा को छुड़ाना बाकी रह गया.

यह सुन उसके शागिर्द ने कहा, " उसका उपाय भी मैं ठीक कर चुका हूँ, इन्दिरा जिस जगह कैद की गई है सो मुझे मालूम है और किस तरह वहाँ पहुँचेंगे सो भी प्रबन्ध हो चुका है, आप मेरे साथ आइये.

इसके घड़ी भर के बाद हम एक पालकी को दारोगा साहब के मकान की तरफ आते देखते हैं.

यह पालकी दरवाजे पर पहुँचकर रुकी और उसके अन्दर से सफेद मुड़ासे और अचकन आदि पहने एक आदमी उतरा जिसकी आकृति बता रही थी कि वह बैठा है.

उसके आते ही दरवाजे पर के नौकरों में से एक ने आगे बढ़ कर उसकी अगवानी की और कहा, “ आइये - आइये ह्रीजी, दारोगा साहब बड़ी बेचैनी के साथ आपकी राह देख रहे हैं.

!! हरीजी (वैद्य) ने पूछा, “ क्यों क्या बात है जो इतनी सुबह - सुबह की बुलाहट हुई?

" जिसके जवाब में उस आदमी ने कहा, " वे छत से नीचे गिर कर बहुत चुटीले हो गये हैं.

" और फिर इस तरह घूम कर मकान के भीतर की तरफ चल पड़ा कि वैद्यराज को और कुछ पूछने का मौका ही न मिला.

वे उसके पीछे - पीछे चल पड़े और उनकी दवाओं की पेटी उठाये एक कहार उनके साथ हो लिया.

एक छोटी कोठरी में मसहरी के ऊपर पड़े हुए दारोगा साहब कराह रहे थे.

उनके सिर और बदन में जगह - जगह पट्टियाँ बंधी हुई थीं जो खून से तर हो रही थीं और वे बहुत ही कमजोर और बदहवास हो रहे थे.

जिस समय वैद्यजी को लिए उनका नौकर पहुँचा उस समय केवल एक लौंडी धीरे - धीरे पंखा झल रही थी जो इन लोगों को आते देख कोठरी के बाहर निकल गई, वैद्यजी के लिए एक चौकी रख दी गई और दारोगा ने रोनी आवाज में अपना हाल सुनाना शुरू किया.

कहार जो वैवाजी की दवा की पेटी उठा लाया था बक्स वहाँ रख बाहर निकल गया और नौकर ने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया.

मरीज और वैच का साथ छोड़ हम इस कहार के साथ चलते और देखते हैं कि वह अब कहाँ जाता या क्या करता है.

दारोगा साहब की कोठरी के बाहर आ उस कहार ने एक दालान पार किया और तब रुक कर खड़ा हो गया.

यहाँ पर सन्नाटा था और कहीं कोई आदमी दिखाई नहीं पड़ता था अस्तु अपने चारों तरफ किसी को न देख वह फुर्ती के साथ बगल की एक कोठरी में जा घुसा और वहाँ से

बढ़ एक लम्बा दालान पार कर ऐसई कोठरी में पहुंचा जहाँ बिल्कुल सन्नाटा था और ऐसा मालूम होता था मानों इधर कोई रहता ही नहीं पर वास्तव में यह बात नहीं थी और यह दारोगा के विचित्र मकान का वही हिस्सा था जो गुप्त रूप से कैदियों को रखने के काम में आता था यहाँ हमारे पाठक पहिले भी कई बार आ चुके हैं.

यहाँ पहुँच उस आदमी ने अपने बटुए से कुछ सामान निकाला और एक रुमाल किसी अर्क से तर कर अपने चेहरे पर फेरा जिसके साथ ही बनावटी रंग छूट गया और भूतनाथ की सूरत दिखाई पड़ने लगी.

भूतनाथ ने एक नकाब अपने चेहरे पर लगाई और कुछ औजार निकाल पास ही के एक दरबाजे में लगे ताले को खोला.

दरवाजा खुलने पर नीचे उतरने के लिए सीढ़िया नज़र आई.

भूतनाथ बेधड़क नीचे उतर गया.

पुन:

एक कोठरी मिली जहाँ से फिर सीढ़ियों का सिलसिला नीचे को गया हुआ था.

भूतनाथ ने इसे भी तय कियाऔर तब एक दालान में पहुँचा जिसमें चिराग की रोशनी हो रही थी.

बगल में एक कोठरी थी जिसमें लोहे का छड़दार जंगला और दरवाजा लगा हुआ था.

अपने औजारों की मदद से भूतनाथ ने इसके ताले को भी खोला और तब सामने ही जमीन पर बेचारी कमसिन इन्दिरा को पड़े सिसक - सिसक कर रोते हुए पाया.

एकाएक नकाबपोश को सामने आते देख इन्दिरा डर गई पर भूतनाथ ने उसे दिलासा दिया और अपना परिचय देकर ढांढस बंधाया, ज्यादा बातचीत का समय न था अस्तु भूतनाथ ने इन्दिरा को गोद में उठा लिया और उस जगह से बाहर ले आया.

सीढ़ियों का सिलसिला तय कियाऔर ऊपरी मंजिल में पहुंचा जहाँ से उसने से उस मकान के बाहर का रास्ता लिया, सदर दरवाजे का नहीं बल्कि एक दूसरे ही चोर दरवाजे का जिसका हाल उसे मालूम था.

दारोगा ने अपने सुभीते के लिए इस मकान में आने - जाने के लिए कई गुप्त रास्ते बनवा रखे थे जिनमें से एक की राह भूतनाथ इन्दिरा को लिए सहज ही में बाहर हो गया और तब मैदान की तरफ बड़ा.

एकान्त स्थान में भूतनाथ का वह शागिर्द तथा एक दूसरा आदमी घोड़ा लिए मौजूद था.

भूतनाथ ने संक्षेप में इन्दिरा को पाने का हाल सुनाया और तब यह कह कर कि उस काहार को होश में लाकर छोड़ देना जिसकी सूरत बन मैंने काम निकाला है घोड़े पर जा बैठा.

इन्दिरा को गोद में बिठा लिया और उन आदमियों से और भी कुछ बातें कर एक तरफ घोड़ा छोड़ दिया.

कई कोंस चले जाने के बाद भूतनाथ एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ एक छोटी - सी नदी थी जिसके किनारे पर ही भूतनाथ का अड्डा भी था और उसके कई शागिर्द बराबर मौजूद रहा करते थे.

जहाँ इन्दिरा को उतार कर उसे कुछ जलपान कराया और खुद भी आराम किया.

इसी जगह उसके वे पहिले आदमी भी मौजूद थे जिनसे लेकर भूतनाथ ने वे चीजें जो सभी से लूटी थीं पुनः अपने कब्जे में कर ली और उनकी गठरी अपने साथ रख ली.

दो घण्टे बाद पुनः सफर शुरू हुआ और अबकी कई घण्टे चल पुन:

एक दूसरे अड्डे पर पहुँच कर भूतनाथ ने दम लिया.

यहाँ पर भी उसके कई शागिर्द मौजूद थे जिन्होंने बात की बात में सब तरह का प्रबन्ध कर दिया.

स्नान ध्यान और भोजन इत्यादि से छुट्टी पा भूतनाथ ने इन्दिरा को तो आराम करने के लिए एक तरफ लेटा लिया और स्वयं उन चीजों की जाँच में लगा जिन्हें वह सभा से लूट लाया था.

जो कलमदान सब आफतों की जड़ था और जिसे दामोदरसिंह ने इन्दिरा की माँ सरयू को दिया था उसे तो सभापति के सामने से ही भूतनाथ ने उठा लिया था पर उसके

अलावे और भी बहुत सी बहुत से कागज - पत्र उठा लाया था जिन्हें उसने इस समय जांचना - पड़ना और नकल करना शुरू किया.

हम नहीं कह सकते कि उन कागजों से भूतनाथ को क्या - क्या बातें मालूम हुई या किन गुप्त भेदों का उसे पता लगा पर समय - समय पर उसकी भावभंगीमा देखने से यह अवश्य मालूम होता था कि कुछ बहुत ही विचित्र और आश्चर्यजनक बातें उन कागजों से प्रकट हो रही थीं जो भूतनाथ को और ताज्जुब में डाल रही थीं.

कई घंटे तक भूतनाथ उन कागजों को देखता - पड़ता और नकल करता रहा.

कलमदान के अन्दर से जितने कागजात निकले उनमें से हर एक की भूतनाथ ने नकल कर डाली और इसके अलावा भी जो कुछ कागजात थे उनमें से जिसे जरूरी समझा उसकी नकल कर ली, कुछ जला कर खाक कर दिए और कुछ को केवल पढ़ कर ही छोड़ दिया.

इस काम में कई घण्टे लग गये और सूर्य डूब गया था जब यह काम खतम हुआ.

उस समय भूतनाथ ने उस कलमदान के कागजों को पुन:

उसी में बन्द कियाऔर बाकी कागजों के साथ एक गठरी में बाँध शागिर्द के हवाले कर कहा, " इसे लामाघाटी में ले जाकर खूब हिफाजत से रक्खो.

तीन - चार दिन में मैं स्वयं आऊँगा और जो कुछ आगे करना है उसका निश्चय करूंगा.

" इसके बाद उन कागजों की जो नकल तैयार की थी उसे अपनी कमर में बांधा और सफर की तैयारी की घण्टे भर रात जाते - जाते पुन:

उसी तरह इन्दिरा को लेकर सफर शुरू हुआ.

इस बार भूतनाथ रात भर चला गया यहाँ तक कि सुबह होते - होते बलभद्रसिंह के मिर्जापुर वाले उस मकान पर जा पहुंचा जहाँ वे आजकल रहा करते थे, बलभद्रसिंह के पास भूतनाथ ने अपने आने की इत्तिला कराई.

इस तरह बेमौके भूतनाथ का आना सुन उन्हें हद्द से ज्यादा ताज्जुब हुआ और वे तुरंत भूतनाथ के पास पहुँचे.

तखलिया करा के भूतनाथ ने बहुत ही संक्षेप में इन्दिरा को दारोगा के कब्जे से छुड़ाने का कुछ हाल कहा मगर सभा को लूटने या कलमदान छीनने वगैरह का हाल कुछ भी न बताया.

इसके बाद बातचीत होने लगी.

भूत ०:

कदाचित आप ताज्जुब करेंगे कि इस लड़की (इन्दिरा) को सीधा इन्द्रदेव के पास न ले जाकर मैं आपके पास ले आया हूँ, इसके दो सबब हैं.

एक तो कई नाजुक बातों की खबर देने के लिए मुझे आपके पास आना जरूरी था और दूसरे यह भी मुझे मालूम हुआ कि इन्द्रदेव का मकान अब दुश्मनों की पहुँच से बाहर नहीं रह गया है.

इन्दिरा से जब आप उसका हाल सुनेंगे तो यह जान आपको ताज्जुब होगा कि खास इसके मकान ही से इसे और इसकी माँ को दुश्मनों ने फँसा लिया अस्तु यदि यह वहाँ जायगी तो पुन:

फंसेगी परन्तु यदि आपके पास रहेगी तो दुश्मनों को कभी गुमान भी न होगा कि वह यहाँ है और वे इधर आने का ध्यान भी मन में न लायेंगे.

बल:

बेशक वे इसे मेरे मकान में न ढूँढेंगे, परन्तु फिर भी इन्द्रदेवजी को यह खबर हो जानी चाहिए कि इन्दिरा मेरे मकान पर है.

भूत ०:

यहाँ से लौट कर मैं सीधा उन्हीं के पास जाऊँगा और सब हाल सुनाऊंगा, आप इसकी चिन्ता न करें.

बल ०:

बहुत ठीक, हाँ अब यह बताइये कि वे बातें कौन सी हैं जिनके लिये आपको मेरे पास आने की जरूरत पड़ी?

भूत:

जी हाँ, सुनिये और बहुत गौर से सुनिये.

आपकी बड़ी लड़की लक्ष्मी देवी का शादी राजा गोपालसिंह से ठीक हुई है.

बल:

हाँ.

भूत ०:

और इस काम में कुछ आदमी आपके बर्खिलाफ कोशिश कर रहे हैं.

बल:

हॉ.

भूत ०:

अब यह भी सुन लीजिए कि उन्होंने निश्चय कर लिया है कि चाहे कुछ भी हो जाय यह शादी न होने पावे.

इसके लिए उन्हें जो कुछ करना पड़े और आपको, आपकी लड़की को, राजा गोपालसिंह तक को भी चाहे कितना कष्ट पहुँचाना पड़े, पर वे लोग अपनी बात से न टलेंगे, मैंने तो यहाँ तक सुना है कि वे लोग अगर जरूरत पड़े तो आपकी जान तक लेने पर तुल गये हैं.

बल:

(घबड़ाकर) क्या सचमुच! भूत ०:

जी हाँ, अस्तु मेरी प्रार्थना है कि आप बहुत ही होशियारी के साथ रहें.

बल ०:

मगर ऐसा करने वाले आखिर हैं कौन लोग?

अभी तक तो मैं यह समझ रहा था की केबल दारोगा साहब ही मेरे बर्खिलाफ कार्रवाई कर रहे हैं मगर आपकी बातों से जान पड़ता है कि वे लोग कई आदमी हैं.

भूत:

मैं इस बात को जानने की कोशिश कर रहा हूँ कि कौन - कौन से लोग इस काम में लगे हुए हैं.

पर अभी तक ठीक ठीक कुछ पता नहीं लगा है, फिर भी मैं आपको होशियार कीये देता हूँ कि खूब ही चौकन्ने रहें और किसी अनजान आदमी का कभी जरा भी विश्वास न करें.

मैं खुद इस मौके पर आपकी मदद करता पर क्या बताऊँ ऐसी झंझट में फंसा हुआ हूँ कि दम मारने की फुर्सत नहीं मिलती.

अच्छा तो यह बताइए कि राजा गोपालसिंह ने अपना कोई ऐयार आपकी निगहबानी के लिए भेजा है?

बल ०:

हाँ आजकल उनके ह्ननामसिंह नामक ऐयार मेरे घर की चौकसी करते हैं.

भूत ०:

बिहारी और हरनाम! आप उन पर जरा भी भरोसा न करियेगा.

ऐयारी का नाम बदनाम करने और मालिक के साथ दगा करने वाले वे दोनों दगाबाज आपके दुश्मनों से मिले हुए हैं इसकी मुझे पक्की खबर लग चुकी है.

बलभद्रसिंह यह बात सुनकर भूतनाथ का मुंह देखने लगा.

भूतनाथ उनके आश्चर्य को देख बोला, " आप चाहें तो मैं इस बात का सबूत भी दे सकता हूँ, इतना कह भूतनाथ ने बलभद्रसिंह के कान के पास मुँह ले जाकर न जाने क्या कहा कि वे एकदम चौंक कर उछल पड़े और उनके चेहरे पर हवाई उड़ने लगी.

भूतनाथ और भी कुछ देर तक बलभद्रसिंह से बातें करता रहा, इसके बाद इन्दिरा को बिहारी और हरनाम की निगाहों से भी बचा रखने की बहुत ताकीद कर सुबह होने के पहिले ही वहाँ से रवाना हो गया.

चौथा व्यान।

रात लगभग पहर भर के जा चुकी होगी.

जमानिया में दामोदर सिंह के आलीशान मकान के एक कमरे में प्रभाकरसिंह और इन्दुमति फर्श पर बैठे हुए धीरे - धीरे कुछ बातें कर रहे हैं.

इन्दु ०:

देखिए किस्मत ने कैसा पलटा खाया है! चारों तरफ मुसीबत ही मुसीबत नजर आती है.

दयाराम, जमना और सरस्वती लोहगड़ी में जा फँसे हैं दामोदरसिंहजी दारोगा की बदौलत चक्रव्यूह का कष्ट भोग रहे हैं जहाँ से उनका निकलना असम्भव है, बेचारी मालती न जाने किस जगह जा फँसी है कि कई रोज से उसका कुछ भी पता नहीं लग रहा उधर सयुं चाची और इन्दिरा एक बार मिल कर भी पुन:

गायब हो गई हैं, इन्द्रदेव पर अलग मुसीबत आ पड़ी है और राजा गोपालसिंह को अपनी ही जान के लाले पड़ गये हैं.

कुछ समझ में नहीं आता कि क्या होने वाला है! प्रभा ०:

कुछ पूछो मत, न जाने परमात्मा क्या करना चाहते हैं! इन्दुः:

सो ठीक पर आखिर दुःखों का कुछ अन्त भी तो हो, ऐसी परीक्षा किस काम की जो परीक्षार्थी की जान ही लेकर छोड़े

प्रभा ०:

नहीं यह बात भी नहीं है, हद हर एक चीज की होती है.

परमात्मा भी मनुष्य को उसकी हद के बाहर कष्ठ में पड़ने नहीं देता, अगर वह ऐसा करे तो उसका दीनबन्धु नाम ही व्यर्थ हो जाय, इन्दुः:

मेरी समझ में तो उसका यह नाम व्यर्थ ही लोगों ने रख दिया है! परमात्मा न तो किसी का शत्रु है न मित्र, वह तो एक कठोर शासक और निष्पक्ष न्यायी है जो हर एक को उसके कर्मों का फल देने के सिवाय और कुछ करता नहीं या कर सकता नहीं! जब हम साफ देखते हैं कि संसार में भले आदमी तो लगातार दुःख पर दुःख उठा रहे हैं और दुष्ठ

तथा पापी आनन्द भोग रहे हैं तो सिवाय इसके और क्या कह सकते हैं कि दोनों अपनी - अपनी करनी अथवा भाग्य का फल भोग रहे हैं.

भले की भलाई उसका कुछ उपकार नहीं करती और बुरे की बुराई उसका कुछ बिगाड़ती नहीं, तब ऐसी अवस्था में सिवाय इसके और क्या कहा जाय कि परमात्मा केवल करनी का फल देना जानता है और कुछ नहीं.

प्रभा ०:

आज तुम्हारी बातें कुछ अजब बेसिर - पैर की हो रही हैं.

अगर मान लिया जाय कि मनुष्य केवल अपनी करनी का फल भोगता है तो अवश्य ही इस जन्म के दुःख और सुख उसके पिछले किसी जन्म के पुण्य - पाप के कारण ही आते होंगे?

इन्दु:

अवश्य प्रभा ०:

ऐसी हालत में इस जन्म की बुराई और भलाई अगले किसी जन्म के सुख और दुःख का कारण बनेगी.

इन्दु ०:

हाँ जरूर बनेगी.

प्रभा ०:

तो वैसी अवस्था में तो यह जीवन - मरण का सिलसिला कभी मिटेगा ही नहीं और न सुख - दुःख का रगड़ा ही दूर होगा.

फिर वैसा मान लेने से परमात्मा की आवश्यकता भी कुछ रह नहीं जाती.

जब सुख - दुःख हमारी ही करनी का फल है तो उसके कर्ताधर्ता भी हम ही हैं, परमात्मा को फिर क्यों दोष दिया जाय?

इन्दु ०:

परमात्मा को न कहें तो फिर आखिर किसे कहा जाय?

प्रभा ०:

यह भी ठीक रही! किसी के सिर दोष मढ़ने से मतलब, भेड़ ने पानी नहीं गन्दा कियातो उसके बाप ने कियाहोगा! पर वास्तव में बात ऐसी नहीं है.

अगर तुम कर्म को सर्वस्व मानती हो तो परमात्मा को निराकार और निर्लेप मानना पड़ेगा और अगर परमात्मा को ही सब कुछ करने वाला मानती हो तो अपने कर्म भी उसे ही सौंपने पड़ेंगे, अपना सुख - दुःख, हानि - लाभ, जीवन मरण सब उस एक ईश्वर के हाथ में सौंप देने पर कह सकती हो कि जो कुछ करता है परमेश्वर करता है, मैं नहीं.

इन्दुः:

अगर आपकी बात मैं मान लूं तो क्या बुरा आदमी जो कुछ पाप करता है उसे परमात्मा ही उससे कराता है?

प्रभा ०:

यह उस मनुष्य की अवस्था पर निर्भर है.

अगर वह अपने को कर्ता समझ कर मैं को महत्त्व देता हुआ पाप कृत्य कर रहा है तो उन कर्मों का वही कर्ता है, और यदि वह अपने को केवल परब्रह्म के हाथ की कठपुतली समझता हुआ जैसा कुछ भला या बुरा उससे बन पड़ता है निर्लिप्त भाव से करता चला जाता है और उसके लिए न अफसोस ही करता है ।

और न सुखी या दुःखी ही होता है तो अवश्य ही उसके फल का भागी भी वह नहीं होगा.

इन्दुः:

वाह, यह तो आप खूब कहते हैं! पाप का भागी वह नहीं तो क्या दूसरा कोई होगा?

और वह दूसरा भी क्या परमात्मा?

परमात्मा जानबूझ कर किसी से पाप करावेगा ही क्यों?

प्रभा ०:

क्यों नहीं, क्या तुम समझती हो कि उसका खजाना ऐसा अपूर्ण है कि उस में केवल मीठा ही मीठा है नमक नहीं, मधु ही मधु है जहर नहीं, सोना ही सोना है लोहा नहीं, सुख ही सुख है दुःख नहीं, पुण्य ही पुण्य है पाप नहीं! क्या वैद्या को अपने पास हड्डी जोड़ने की दबा रखनी पड़ती है, काटने का औजार नहीं?

इन्दुः:

भला परमात्मा पाप, अत्याचार और दुःख से अपना खजाना भर के उससे क्या काम लेता है?

प्रभा ०:

लोहे की तलवार का बार बचाते समय लोहे की ही ढाल सामने करनी पड़ती है.

इसी तरह जगत के पाप दूर करने के लिए पाप ही सहायक होता है, दुःख दूर करने के लिए दुःख ही का आश्रय लेना पड़ता है.

यद्यपि उसमें यह शक्ति है फिर भी परमात्मा इस धरती पर स्वयम् तो आता नहीं, उसे यहाँ ही के जीवों से यहाँ का सब काम कराना पड़ता है.

इन्दुः:

तो आपका मतलब यह है कि इस जगह दारोगा, जैपाल, शिवदत्त आदि जो दुष्ठ हम लोगों को कष्ट दे रहे परमात्मा का ही कार्य सिद्ध कर रहे हैं?

प्रभा ०:

बेशक! इन्दु ०:

सौ कैसे?

प्रभा ०:

दो तरह से.

इन्दु ०:

सो क्या - क्या?

प्रभा ०:

एक तो इन दुष्ठों की बदौलत जमानिया, चुनार और आसपास की सभी जगहों के सब शैतान इकट्ठे हो गये कोई छिपा न रह गया, दूसरे आपस ही में एक - दूसरे से लड़ - झगड़ कर ये अपनी शक्ति नष्ट कर रहे हैं और करेंगे.

तुम देखती रहना, जल्द ही वह समय आने वाला है कि ये सब शैतान कुत्तों की मौत मारे जायेंगे और इनकी हालत पर मक्खियों को भी तरस आएगा.

इतने ही में कमरे के बाहर से आबाज आई, " वेशक! " और इन्द्रदेव ने अन्दर पैर रखा.

इन्दु इन्द्रदेव को देख बगल हो गई और प्रभाकर सिंह ने कुछ सकुचा कर गर्दन नीचे कर ली.

इन्द्रदेव ने यह सब देख कर कहा, " प्रभाकर, मैं कुछ देर से बाहर खड़ा तुम्हारी बातें सुन रहा था.

तुम्हारे विचार बहुत गम्भीर हैं और तुम्हारी विचारशक्ति उत्तम, पर तुम एक बात की भूल कर रहे हो.

प्रभाकरसिंह ने सवाल की निगाह इन्द्रदेव पर डाली, इन्द्रदेव बोले, " तुमने जो यह कहा कि परमात्मा की आवश्यकता पड़ने पर किसी से पाप कराता है और किसी से पुण्य, सो यह बात सही नहीं.

कर्म स्वयमेव न तो अच्छे होते हैं न बुरे, पापमय होते हैं न पुण्यमय, उनका प्रयोग, उनकी स्थिति, समय या मौका, उन्हें भला - बुरा, पापमय या पुण्यमय बना देता है.

किसी का हाथ काट देना एक कर्म है.

वैद्य किसी रोगी का हाथ काट दे तो वही अच्छा है, राजा किसी चोर का काट दे तो वहीं न्याय है, और वीर सम्मुख युद्ध में किसी शत्रु का हाथ काट दे तो वही कर्तव्य है, पर वही कर्म अगर कोई दुष्ट किसी भले आदमी के साथ अकारण ही करे तो अन्याय, अत्याचार, पाप, दुष्कृत्य या जो कुछ भी कहो, सो हो जाएगा.

तब क्या यह कहना उचित है कि हाथ काट देना बड़ा खराब काम है?

" फिर एक दूसरी बात और भी है.

मनुष्य को हाथ कमाने और मुंह खाने के लिए दिया गया है, पर कोई आदमी यह सोचकर जंगल में जा बैठे कि सब कुछ करने वाला तो परमेश्वर है, उसे अगर इच्छा होगी तो आप से आप मेरे मुँह में खाना पहुँचा देगा, तो क्या यह कहना ठीक होगा?

क्या उस व्यक्ति ने अपने हाथ और शरीर से मेहनत न कर सब बोझ परमात्मा ही के ऊपर डाल उसी परमात्मा की दी हुई शक्ति का अपमान नहीं किया?

परमात्मा को सब शक्ति है और संभव है कि उसे जंगल में बैठे - बैठे भोजन मिल जाय, पर फिर भी उसे स्वयं कमाना और खाना चाहिए था.

" प्रभा ०:

वेशक.

इन्द्र ०:

इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर ने हमें जो शक्ति दी है उसका पूरा उपयोग करना और उससे काम लेना भी हमारा एक आवश्यक कर्तव्य है.

प्रभा ० जरूर इन्द्र ०:

परमात्मा की दी हुई एक शक्ति है बुद्धि, उससे पूरा काम लेना भी हमारा एक मुख्य कर्तव्य है.

यदि हम सब कुछ ईश्वर ही पर छोड़ बैठे और बुद्धि का सहारा न लें तो यह केवल परमात्मा पर भार डालना ही नहीं वरन् उसका अपमान करना भी होगा.

प्रभा ०:

इसके क्या माने?

इन्द्रः:

यही कि परमात्मा ने हमें बुद्धि इसीलिए दी है कि हम उससे पूरी तरह काम लें और अपना तथा दूसरों का हित करें.

अगर आवश्यकता पड़े तो अपने शत्रुओं का सामना करने और उन्हें दूर करने में भी उसी बुद्धि से हमें काम लेना चाहिए न कि यह सोच चुप बैठे रहना कि परमात्मा आप ही दुष्टों को दण्ड देगा.

परमात्मा तो करेगा ही, पर हमारा भी तो कुछ कर्तव्य है, हमारा भी तो कुछ अधिकार है, हमारा भी तो कुछ अंश है, अस्तु सब कुछ परमात्मा के भरोसे छोड़ रखना एक प्रकार की कायरता है जिसे मैं पसन्द नहीं करता और सच तो यह है कि ऐसा करने से दुनिया का काम भी नहीं चल सकता.

प्रभा ०:

जी हाँ, यह तो आपका कहना ठीक है.

इन्द्रः:

तुम्हीं सोचो की अगर परमात्मा यह न चाहता कि हम बुद्धि से काम लें तो हमें बुद्धि देता ही क्यों?

हमें आँखें देखने को मिली हैं, कान सुनने को मिले हैं, हाथ काम करने के लिए मिले हैं, तब क्या एक बुद्धि ही व्यर्थ मिली है?

हमें तो यह जन्म ही कुछ करने को मिला है, चुपचाप परमात्मा पर भरोसा किए बैठे रहने को नहीं.

मेरा मतलब यह नहीं कि उस पर भरोसा करना उचित नहीं, बल्कि यह है कि स्वयं भी कुछ करने का साहस रखना उचित है.

मुझे तो बड़ा ही आनन्द आता है यदि किसी शत्रु को अपनी चाल से मात कर सकता हूँ.

यद्यपि मैं जानता हूँ कि वास्तव में सब का कर्ताधर्ता ईश्वर है पर उसने मुझे अपना जरिया बनाया केवल इतनी सी बात ही मुझे बहुत बड़ा सन्तोष देती है.

(इन्दु की तरफ देख कर) तुमने कुछ कहना चाहा था पर चुप हो रहीं.

इदू ०:

धृष्ठता क्षमा हो तो कुछ कहूँ?

इन्द्र ०:

हाँ हाँ, खुशी से कहो, मैं खूब जानता हूँ कि तुम्हारी बात व्यर्थ कभी न होगी.

इन्दुः:

अपने विचारों के कारण ही आपने अपने दुश्मन बहुत ज्यादा बना रखे हैं। इन्द्र ०:

(हँस कर) सो कैसे?

इन्दु ०:

क्या ये दारोगा, जैपाल, हेलासिंह वगैरह आपके सामने एक पल भी ठहर सकते हैं! आपके बराबर तरह देते चले जाने से ही उनकी तरक्की हो रही है.

इन्द्र ०:

मैं यही देखना चाहता हूँ कि ये सब कहाँ तक करने की कुदरत रखते हैं, मैं अपनी और इनकी हिम्मतों का मुकाबला कियाचाहता हूँ, प्रभा ०:

मगर ऐसा करके क्या आप साँपों से खेल नहीं रहे हैं! आप उन्हें पकड़ लेंगे तो उनका कुछ न बिगड़ेगा और अगर वे काट लेंगे तो काम तमाम कर देंगे.

इन्द्रः:

(हंस कर) मुमकिन है, पर तुम देखोगे कि इस बार मैं इन साँपों के दाँत तोड़कर ही दम लूंगा, हाँ अगर तुम लोग .

.

.

प्रभा ०:

हम लोग पूरी तरह से आपके साथ तैयार हैं, आप जो भी हुक्म दीजिए उससे पीछे हटने वाले पर मैं लानत भेजता हूँ, सच पूछिए तो मेरा दिल भी कुछ आप ही के ऐसा है.

अगर कोई दूसरा मेरे दुश्मन को जान से भी मार डाले तो मुझे प्रसन्नता न होगी पर अपने हाथ से यदि मैं जरा - सा घायल भी कर सकूँगा तो मुझे अत्यन्त सन्तोष होगा.

इन्द्र ०:

(खुश होकर) बस ऐसी ही हिम्मत रखनी चाहिए, ऐसा ही दिल रखना चाहिए! खैर यह सब अब जाने दो, यह बेकारी के समय करने की बातें हैं.

प्रभा ०:

आज दिन भर आप बाहर ही रहे, क्या कुछ काम हुआ?

इन्द्र ०:

सिर्फ तीन बातों का पता लगा.

प्रभा ० क्या - क्या.

इन्द्र ०:

पहिली यह कि मेरी वीबी दारोगा के कब्जे में है, दूसरी यह कि इन्दिरा भी वहीं कैद थी परन्तु भूतनाथ ने उसे छुड़ा कर बलभद्रसिंह के पास पहुंचा दिया गया, और तीसरी यह कि इस शहर के ये इतने आदमी उस कमेटी में शामिल हैं ।

जिसने जमानिया में तहलका मचा रखा है.

इतना कह इन्द्रदेव ने एक लम्बा कागज प्रभाकरसिंह के सामने फेंक दिया जिसमें बहुत - से नाम लिखे हुए थे.

प्रभाकरसिंह एक बार गौर के साथ शुरू से आखिरी तक उस कागज को पड़ गये और तब ताज्जुब के साथ इन्द्रदेव का मुंह देखने लगे.

प्रभा ०:

मुझे स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता था कि वे इतने नजदीकी और आपस के आदमी इस कमेटी में शामिल होंगे! इन्द्र ०:

इसी से तो यह कमेटी इतनी मजबूत पड़ती थी और बराबर हमारा भण्डा फूटता था.

जो हमारे विश्वासी थे और जिनसे हम लोग सलाह लेते थे वे ही उस कमेटी में जाकर हमारा भेद खोलते थे.

अब सबसे पहिले इन आदमियों को रास्ते से दूर करूँगा तब कोई और काम देखा जायगा, प्रभा ०:

जरूर ही इनके अलावे और भी लोग कमेटी में होंगे!

इन्द्र ०:

और नहीं तो क्या?

फिर ये सब तो मामूली लोग हैं, मुख्य - मुख्य कार्यकर्ताओं का तो अभी पता ही नहीं लगा है, उनके लिए बहुत कोशिश दरकार होगी.

प्रभा ०:

बेशक, मगर इन आदमियों के ही जरिए उनका भी नाम मालूम हो जाता कुछ कठिन नहीं है.

अच्छा चाचीजी (सयू) और इन्दिरा का पता कैसे लगा?

इन्द्र:

उनका हाल मेरे एक शागिर्द ने अभी मुझे बताया है.

उसने भूतनाथ को इन्दिरा को लिए दारोगा के मकान के बाहर निकलते देखा इसी से उसे शक हुआ और ऐयारी करके उसने पता लगाया कि इन्दिरा की माँ दारोगा ही के कब्जे में है मगर कहाँ या किस हालत में है यह मालूम नहीं हो सका.

प्रभा:

खैर इसका पता लगाना कोई कठिन बात नहीं है, यदि आप आज्ञा दे तो मैं इस खोज में जाऊँ और चाचीजी को छुड़ाऊँ! अगर मुझे यह डर न होता कि तुम्हारे दुश्मन तुम्हें अपने जाल में फंसा लेंगे तो मैं तुम्हें जाने की इजाजत देता प्रभा ०:

अभी आप ही ने उपदेश दिया है कि दुश्मनों के मुकाबिले से कभी डरना न चाहिए और इसके लिए बुद्धि से काम लेना चाहिए, फिर यह सब सोचना क्या! फँस जाने के डर से क्या घर में चूड़ी पहिन कर बैठे रहना उचित होगा?

इन्द्र ०:

तुम्हारी हिम्मत देख मुझे बड़ा आनन्द होता है, अच्छा कोई हर्ज नहीं, तुम अगर यही चाहते हो तो जाओ, अपनी हिम्मत से काम लो और हौसला निकालो.

तुम्हारे काम में मदद देने के लिए मैं एक - दो अनमोल चीजें दूंगा जिनसे तुम्हें बहुत सहायता मिलेगी.

तुम कब जाना चाहते हो?

प्रभा ०:

अभी इसी समय, यह रात का वक्त मेरी बहुत सहायता करेगा.

इन्द्र ०:

अच्छी बात है, तो उठो, मैं वे चीजें तुम्हारे हवाले कर दूं और कई जरूरी बातें भी समझा दूं।

लगभग आध घण्टे बाद हम प्रभाकरसिंह को सूरत बदले हुए एक चोर दरवाजे की राह मकान के बाहर निकलते देखते हैं.

इस समय उनका वेश कुछ अजीब - सा हो रहा है.

उनकी छाती तक लहराती हुई सफेद दाढ़ी, सुफेद ही सिर - मुछ के बाल, और चेहरे पर पड़ी हुई सैकड़ों सिकुड़ने जो देखेगा वह अस्सी बरस से कम का मानने को तैयार न होगा, क्योंकि कमर भी उनकी इस समय बुढ़ापे के बोझ से झुकी - सी मालूम हो रही है और वह हाथ जिसमें काले रंग का एक विचित्र और टेढ़ा मगर मजबूत डण्डा है.

कमजोरी के कारण काँप रहा है.

बदन में गेरुआ रंग का एड़ी तक पहुँचता हुआ ढीला - ढाला कुरता जिसमें समूचा बदन इस तरह ढंका हुआ कि बिल्कुल पता नहीं लगता कि भीतर किस तरह की पोशाक या सामान से उन्होंने अपने को लैस कियाहुआ है, बाएं हाथ में एक कमंडल है जिस पर मोटे - मोटे रुद्राक्ष के दानों की माला लपेटी हुई है और गले में भी वैसी ही लम्बी माला पड़ी हुई है तथा माले पर सुफेद त्रिमुण्ड लगा हुआ है, गरज की सब तरह से पूरे सिद्ध वृद्ध तपस्वी बाबा बने हुए हैं.

मकान से निकल कर प्रभाकरसिंह ने सीधे दारोगा साहब के घर का रास्ता लिया और धीरे - धीरे मस्तानी चाल से चलते हुए कुछ समय में वहाँ जा पहुँचे.

मामूल के मुताबिक फाटक पर कई सिपाही पहरा दे रहे थे जिनमें से एक की तरफ देख नकली बाबाजी (प्रभाकरसिंह) ने कुछ हुकूमत भरे स्वर में कहा, " जाओ अपने मालिक से कहो, मस्तनाथ बाबा आये हैं और फाटक पर खड़े हैं.

!! सिपाही ने एक निगाह सिर से पैर तक हमारे बाबा पर डाली और कोई मामूली साधु समझ कर कहा, " हमारे मालिक की तबियत ठीक नहीं है, इतनी रात गये अब उनसे मुलाकात नहीं हो सकती.

" बाबाजी:

तुम जाकर खबर तो करो, वह मेरा नाम सुनते ही मेरे दर्शन करने को व्याकुल हो जाएगा.

सिपाही:

दारोगाजी का हुक्म है कि संध्या के बाद कोई बाहरी आदमी उनके पास न आने पाए!
बाबाजी:

(बिगड़ कर) अबे तू जाकर कहता है कि नहीं !!

सिपाही:

अजे - तत्रे क्या करते हो जी! एक दफे कह तो दिया कि इस वक्त मुलाकात नहीं हो सकती, कल दिन में आना !! यह बात सुनते ही बाबाजी ने एक कड़ी निगाह उस सिपाही पर डाली और डपट कर कहा, " तू नहीं जायगा! " घमण्ड में भरे सिपाही ने भी तन कर जवाब दिया- “ नहीं !! " इतना सुनना था कि बाबाजी ने हाथ वाला डण्डा उस सिपाही के बदन से छुला दिया और मुँह से मानो कोई मंत्र पड़ा.

डंडे का छूना था कि सिपाही को ऐसा मालूम हुआ कि मानो उसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो.

वह जमीन पर गिर पड़ा और बेतहाशा चिल्लाने लगा.

बाबाजी ने उसकी तरफ देखकर कहा, “ क्यों, नहीं जायगा! अब बोल! " और दूसरे सिपाही की तरफ मुखातिब होकर बोले, " तुम जाकर खबर करते हो या तुम्हारी भी यही गत करूँ?

" एक डरती हुई निगाह उस सिपाही ने उसके साथी पर नजर डाली और तब हाथ जोड़कर कहा, “ महाराज मैं अभी जाकर इत्तिला करता हूँ, तब तक इस चौकी पर विराजें ", इतना कह वह तुरन्त भीतर चला गया.

बाबाजी ने बैठना मंजूर न किया बल्कि वहीं पर इधर से उधर टहलने लगे.

अचानक उन्होंने देखा कि एक रथ जिसमें दो मजबूत बैल जुते हुए थे और जिसके पहियों पर पड़ी धूल बता रही थी कि कहीं बहुत दूर से चला आ रहा है सामने की सड़क से आया और दारोगा साहब के मकान के बगल वाली गली में घूम गया.

ढलते हुए ये भी उस गली के मोड़ तक जा पहुँचे और वहाँ से उन्होंने देखा कि मकान का एक दरवाजा खुला और दो व्यक्ति रथ से उतर अन्दर चले गये.

अंधेरे के कारण यद्यपि यह पता न लगा कि ये दोनों मर्द थे या औरत पर रथ दरबाजे ही पर खड़े रहने से यह प्रकट होता था कि ये दोनों (चाहे जो भी हों) शीघ्र ही वापस भी लौटेंगे अस्तु प्रभाकरसिंह ने सोचा कि उस समय पता लगाना चाहिये कि ये दोनों सवार कौन हैं और कहाँ से आ रहे हैं.

एक ही निगाह में यह सब देख नक्कली बाबाजी लौट पड़े ताकि किसी को किसी तरह का शक न होने न पावे.

वह सिपाही भी जो इत्तिला करने को भीतर चला गया था लौट आया और बाबाजी से बोला, " चलिए आपकी बुलाहट है.

" नकली बाबाजी भीतर चलने को तैयार हुए मगर उसी समय दरबाजे के और सिपाहियों ने गिड़गिड़ा कर कहा, " बाबाजी, दया करके इस हमारे साथी पर से अपना मन्त्र हटा लीजिए, देखिये यह मछली की तरह तड़प रहा है! " बाबाजी ने उस तरफ देखा जिधर वह सिपाही अभी तक जमीन पर पड़ा - पड़ा हाय - हाय कर चिल्ला और छटपटा रहा था, और तब बोले, " यह दुष्ट इसी लायक है! " मगर सिपाहियों ने घेतरह गिड़गिड़ाना

शुरू किया जिससे उन्होंने कहा, " अच्छा उसे मेरे पास लाओ !! दो सिपाही पकड़ - धकड़ कर उसे बाबाजी के पास लाये.

बाबाजी ने मुँह से कुछ मंत्र पड़ा और कई बार पुन:

उसी डण्डे से छुआ.

ताज्जुब की बात थी कि उस आदमी की तकलीफ जिस तरह शुरू हुई थी वैसे दूर भी हो गई, दर्द बिल्कुल जाता रहा और भला - चंगा हो बाबाजी के पैरों पर गिर पड़ा.

बाबाजी ने उससे कहा, “ खबरदार, आगे फिर कभी किसी सिद्धबाबा की अवज्ञा न करना! " और भीतर चलने को तैयार हुए, एक सिपाही अदब के साथ आगे हो लिया और मस्तानी चाल से चलते और धीरे - धीरे न जाने क्या बुदबुदाते हुए बाबाजी उसके पीछे चल पड़े, अदब और इज्जत के साथ अनोखे सिद्ध बाबाजी दारोगा साहब के सामने पहुँचाए गये जो उस समय बीमार और सुस्त एक मसही पर पड़े हुए थे और नौकर सिरहाने बैठा किसी दवा से तर एक कपड़े से उनके सिर को ठण्डक पहुँचा रहा था.

उस बड़े कमरे में सिवाय दारोगा साहब या नौकर के और कोई न था, परन्तु बगल के दरवाजे पर पड़ी चिक्र के हिलने से बाबाजी को मालूम हो गया कि इसके अन्दर कोई औरत अवश्य है जिसने पर्दे की आड़ में बखूबी उन्हें देखा है.

एक ही निगाह चिक पर डाल बाबाजी ने दारोगा साहब की ओर नजर फेरी और सहानुभूति के साथ कहा, " हैं बेटा जदु! यह तेरा क्या हाल है?

बाबाजी की सूरत - शक्ल और स्वर से दारोगा साहब चौंके और कुछ देर तक बड़े गौर से उनकी तरफ देखने के बाद यकायक प्रसन्न होकर बोल उठे, " अहा हा! आइये सिद्धजी !! "

दारोगा साहब कोशिश कर उठ बैठे और बाबा मस्तनाथ के दोनों पैर छूकर उन्होंने आँखों से लगाया.

मस्तनाथ बाबाजी ने पीठ पर हाथ फेर बहुत कुछ आशीर्वाद दिया और पुन:

पूछा, " बेटा, यह तेरा क्या हाल है?

इस तरह बदन में जगह जगह पट्टियाँ क्यों बंधी हुई हैं, तेरा चेहरा क्यों उतरा हुआ है, आवाज क्यों कमजोर हो रही है?

" दारोगा:

गुरुजी, अब आप आ गये हैं तो सब हाल सुनियेगा ही पर इस समय तो मैं सिर के दर्द से मरा जा रहा हूँ, मालूम होता है सर फट जायेगा, बोलना कठिन हो रहा है.

मस्तनाथ हैं, यह बात है! ले अभी यह कष्ट दूर करता हूँ !! इतना कह मस्तनाथ ने अपना डण्डा दारोगा साहब के माथे से छुला दिया और मुँह से कुछ मन्त्र पड़ा.

डण्डे का छूना था कि दारोगा साहब के सर का दर्द काफूर हो गया और बेचैनी तथा घबराहट बिल्कुल दूर हो गई.

दारोगा साहब ने ताज्जुब में भर कर मस्तनाथ के पैरों पर सिर रख दिया और कहा, " गुरुजी, आप धन्य हैं.

अब मुझे आशा होती है कि बाकी के कष्टों को भी आप इसी तरह दूर कर देंगे.

" मस्त ०:

हाँ हाँ, जो कुछ तकलीफ हो मुझसे कह, गुरु की कृपा से बात की बात में दूर हो जायेगी.

दारोगा:

जी हाँ, सब बयान करता हूँ, परन्तु पहिले यह सुन लेना चाहता हूँ कि आज मेरे कौन से पुण्य उदय हो गये जो अचानक आपके चरणों का दर्शन हुआ?

मस्त ०:

कुछ नहीं, आज सुबह गिरनार के जंगलों में ध्यान लगा रहा था कि अचानक आचार्य जी के चरणों का दर्शन हुआ, उन्होंने कुछ उपदेश कियाऔर आज्ञा दी कि तुरन्त जमानिया जाओ, वहाँ मेरा शिष्य कष्ठ में है उसे देखो और सहायता दो.

कुछ और भी सेवा की आज्ञा हुई.

तुरन्त तैयार हो गया और थी जी की कृपा से इस समय अपने को यहाँ पा रहा हूँ, दारोगा:

(हाथ जोड़कर) आचार्य थी जी की मुझ पर बड़ी दया रहती है.

आज सुबह ही कष्ट से अत्यन्त व्याकुल होकर मैंने उनका ध्यान किया था और तुरन्त उन्होंने दास की विनती सुनी, वाह! धन्य हैं !!

मस्त ०:

सभी पर उनकी ऐसी दया रहती है.

अभी उस दिन .

.

.

पर जाने दो, उन सबसे कोई मतलब नहीं, तुम अपने कष्ट कहो ताकि जो कुछ मुझसे हो सके करू और जाऊं, क्योंकि अभी आचार्य चरण की और भी कई आज्ञाएँ पूरी करनी हैं.

दारोगा:

यह तो होगा नहीं, अभी तो मैं आपको जाने नहीं दूंगा.

इतने वर्षों के बाद दर्शन हुआ है अब इतना शीघ्र क्या छोड़ने वाला हूँ! मस्त ०:

(हँस कर) तेरी भक्ति का हाल तो मुझे मालूम है पर गुरु का काम देखना भी तो आवश्यक है.

दारोगा:

अब गुरुजी से आप इजाजत ले लें, मेरी तरफ से हाथ जोड़ कर कह दें कि जल्दी न करें, कुछ मेरी सेवा भी तो स्वीकार करें.

मस्त ०:

अच्छा - अच्छा कोई हर्ज नहीं, वे मुझ पर जितना प्रेम रखते हैं उससे अवश्य तेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे इसमें संदेह नहीं.

मैं आज ध्यान में उनसे निवेदन कर दूंगा, मगर अब तू अपने कष्टों को मुझसे बयान कर जा क्योंकि आचार्य चरण की आज्ञा है कि जाते ही पहले जदु के दुःख दूर करने तब कोई दूसरा काम करना.

अस्तु तू बिना एक क्षण का बिलम्ब किए मुझसे सब हाल कह जा.

ये चोटें तेरे शरीर पर कैसी लगी हैं?

दारोगा:

(सिद्धजी के पास घसक कर और धीरे से) गुरुजी, क्या बताऊँ, एक गदाधरसिंह नाम का ऐयार मेरी जान का ग्राहक बना हुआ है, उसी ने तीन - चार दिन हुए मुझे सख्त जख्मी कियाऔर मेरी बहुत सी जरूरी चीजें भी चुरा ले गया, उस पर अब .

.

.

मस्त:

गदाधरसिंह! कौन गदाधरसिंह?

यह नाम तो मेरा सुना हुआ है, वही लड़का तो नहीं जिसे मेरे गुरुभाई देवदत्त ब्रह्मचारी ने पाल कर ऐयारी सिखाई थी?

दारोगा:

जी हाँ, जी हाँ वही! मस्त ०:

अच्छा, उसने तुझसे दुश्मनी पर कमर बाँधी है! मगर वह तो बड़ा सीधा लड़का था!
दारोगा:

जी सीधा है! अरे वह तो ऐसा आफत का परकाला है कि मेरे नाक में दम कर रखा है! उसे आप बिल्कुल काला नाग समझिए, उसने तो मुझे इतनी तकलीफें दी हैं कि मेरा ही जी जानता है.

मस्त, हैं ऐसी बात! (क्रोध का भाव कर और डण्डा उठा कर) मैं उसे अभी भस्म कर देता हूँ! उसकी मजाल कि वह मेरे भक्त को कष्ट दे !! (आँख मूंद और ध्यान लगा कर कुछ मन्त्र पड़ते हैं.

) यह देख दारोगा का कलेजा उछल पड़ा की सिद्ध जी की देह में आग की चिनगारियाँ निकल रही है मानों उसका क्रोध अग्निस्वरूप होकर निकल रहा है और अभी संसार को भस्म कर देगा.

दारोगा का दिल यह सोच नाच उठा कि अब मेरा सबसे भारी दुश्मन और बगली कांटा दूर हुआ चाहता है! सिद्धः:

(आँखें खोल कर और मस्ती के साथ झूम कर) क्या हर्ज है, जा इस बार छोड़ देता हूँ, मगर फिर कभी ऐसा करने की हिम्मत न करना.

(दारोगा की तरफ देख और मानों चौक कर) क्या बताऊँ मैं तो उसे अभी भस्म कर रहा था पर ब्रह्मचारीजी के प्रेम से रोक दिया.

खैर कोई हर्ज नहीं, तीन दिन के भीतर तू देखेगा वह तेरे पैरों पर लोटेगा.

दारोगा:

(प्रसन्न होकर) गुरुजी, कुछ ऐसा उपाय कर दीजिए कि वह सदा के लिए मेरे अधीन हो जाय.

सिद्ध:

ऐसा ही होगा.

मेरा वचन कभी मिथ्या न होगा, तू देखियो, मेरी मन्त्र - शक्ति के प्रभाव से वह तेरा दास हो जायगा, और बता क्या है?

बता जल्दी बता?

दारोगा:

आपकी इस एक ही दया ने मेरे समूचे कष्ट दूर कर दिए.

फिर भी आज्ञा हो तो एक प्रार्थना करूं.

सिद्धः:

कह जल्दी कह दारोगा:

बहुत दिनों से मेरी इच्छा है कि लौहगढ़ी का अद्भुत खजाना मेरे कब्जे में आ जाय.

आप दया कर कोई ऐसा उपाय कर दें कि मेरी यह इच्छा पूरी हो जाय.

सिद्ध:

लोहगडी! लोहगड़ी !! (आँख मूंद और ध्यान लगा कर) हाँ अब समझा तिलिस्म का वह हिस्सा जिसकी उम्र समाप्त हो चुकी, जिसकी अद्भुत चीजें देख सिद्धों का मन भी लालच में आ जाय, वह तिलिस्म जिसका भेद इस समय दुनिया में सिर्फ तीन ही आदमी जानते हैं, यह मेरा शिष्य भी कैसी - कैसी जगह हाथ बढ़ाता है।

(आँखें खोल और मुस्कुरा कर) अच्छा तो तू लोहगड़ी का खजाना चाहता है?

दारोगा:

अगर आपकी दया हो जाय.

सिद्ध ०:

कार्य तो बड़ा कठिन है पर क्या कियाजाय, तेरा प्रेम मुझे बाध्य करता है! अच्छा कोई हर्ज नहीं, गुरु की कृपा से तेरी इच्छा पूरी हो जायेगी, दारोगा:

(प्रसन्न होकर) हाँ?

सिद्ध:

अवश्य, पर मुझे इसमें तीन कण्टक दिखाई पड़ते हैं.

दारोगा:

सो क्या?

सिद्ध:

खैर कोई बात नहीं, तुझे कहने से लाभ क्या?

मैं सभी कंटक दूर कर लूँगा और परमात्मा की इच्छा हुई तो एक सप्ताह के अन्दर वह तिलिस्म तेरे हाथों से तुड़वा भी दूंगा.

तू कल आधी रात को तैयार रहियो, उस समय उसके तोड़ने में हाथ लगाना होगा.

दारोगा:

(खुशी से फूल कर) बहुत अच्छा मैं तैयार रहूँगा.

सिद्ध:

अच्छा और कोई बात हो तो कह?

दारोगा:

बातें तो बहुत सी थीं पर आपके दर्शन होते ही मेरे कष्ट ऐसे भाग गए मानो कभी थे ही नहीं.

सिद्धः:

(हँस कर) सब गुरु चरणों की कृपा है, मैं क्या चीज हूँ, अच्छा अब मैं चलता हूँ.

कल आधी रात को तैयार रहियो.

दारोगा:

मगर आप चले कहाँ, कुछ आराम तो कर लें! सिद्धः:

मुझे अपने भक्त इन्द्रदेव को भी देखना है, उस पर भी सुना है, बड़े कष्ट आ पड़े हैं, उन्हें दूर करना आवश्यक है.

दारोगा:

(कुछ चिन्तित होकर) अच्छा कल सुबह चले जाइएगा.

इस समय रात के वक्त कहाँ कष्ट कीजिएगा.

सिद्धः:

मेरे लिए रात - दिन सब बराबर हैं.

अच्छा वह इस समय है कहाँ?

(आँख मूंद कर) अरे, वह तो इसी शहर में है ।

मगर हैं, यह क्या?

(आँख खोलकर) अरे जदु, यह तैंने क्या किया!!

दारोगा:

(कांप कर) मैंने क्या कियागुरुजी! सिद्ध:

(क्रोध के मारे लाल आँखें करके क्या किया! फिर पूछता है क्या किया!! शैतान कहीं का! क्या मुझसे कोई बात छिपी रह सकती है! बता उसकी स्त्री और लड़की को क्यों पकड़ा?

(उछ कर) बोल जल्दी !! दारोगा:

(सिद्धजी का क्रोध देख कांपकर) जी गुरुजी, ई, ई, ई, मैं .

.

.

दारोगा की घबराहट देख सिद्धजी का क्रोध और भी भभका.

उन्होंने लाल आँखें कर ली और बार - बार अपने डण्डे को जमीन पर पटकने लगे.

पटकते ही उस डण्डे में से आग की लपटें निकलने लगीं.

उन्होंने डण्डे को ऊपर उठाया और गरज कर कहा, " दुष्ट, अभी बता कि मेरे शिष्य इन्द्रदेव की स्त्री और बेटी कहाँ हैं, नहीं तो मैं तुझे भस्म करता हूँ! " सिद्धजी का क्रोध देख दारोगा के तो होश हवास गुम हो गए.

वह मन ही मन कहने लगा, “ ऐसे आने से तो इनका नहीं आना ही अच्छा था! कहाँ की मुसीबत में जान पड़ गई, इनका खूनी डंडा तो मुझे भस्म ही कियाचाहता है! " सिद्ध फिर बोले, " नालायक, तुझे शर्म नहीं आती! अपने गुरुभाई के साथ यह व्यवहार! क्या तू बह दिन भूल गया जब तू और वह एक साथ पड़ा करते थे! क्यां तू भूल गया कि

किस तरह अपनी जान पर खेल कर इन्द्रदेव ने तुझे पागल हाथी के पैरों के नीचे से खींचा था! क्यां तू भूल गया कि मैंने चलती समय कह दिया था कि सब कुछ कीजियो पर इन्द्रदेव की तरफ टेडी निगाह से कभी न देखियो! कम्बख्त तू एकदम नालायाक है! तू मेरी कृपा का पात्र नहीं.

अब मुझसे किसी बात की आशा न रख, और न ही यह समझ की लोहगड़ी का अनमोल खजाना मैं तुझे दिलवाऊँगा.

पापी, तू इसके योग्य नहीं है! " अब दारोगा की घबराहट का ठिकाना न रहा.

उसने सोचा कि यह हाथ आई रकम निकल जाती है.

अगर लोहगड़ी की अद्भुत चीजें उसे मिल गई तो न जाने कितने इन्द्रदेव उसके तलवए चाटा करेंगे.

इस समय एक मामूली सी बात के लिए सिद्धजी को नाराज करना बुद्धिमानी नहीं, इन्हें ठंडा करना चाहिए.

दारोगा:

(हाथ जोड़कर और सिद्धजी के पैरों पर सिर रख कर) गुरुजी, आप तो व्यर्थ ही दास पर रुष्ट होते हैं.

भला मेरी मजाल है जो आपकी आज्ञा का उल्लंघन करूँ?

मैंने इन्द्रदेव के साथ कोई बुराई नहीं की बल्कि भलाई की है जो उसकी स्त्री को अपने यहाँ रख छोड़ा है नहीं तो दुश्मन उसे जान से मार डालते.

सिद्धः:

(कुछ शान्त होकर) स्त्री को! केवल स्त्री को! और उसकी बेटी कहाँ है?

दारोगा:

गुरुजी, उस लड़की को तो वहीं दुष्ट गदाधरसिंह चुरा ले गया.

न जाने जीता भी रखा है या मार डाला है.

सिद्ध:

(दाँत पीस कर) अच्छा कोई हर्ज नहीं.

अगर उस पापी ने उस बेचारी लड़की को जरा भी कष्ट पहुँचाया होगा तो मैं उसके कुटुम्ब भर का सत्यानाश कर दूंगा, वह जा कहाँ सकता है?

अच्छा तू उसकी स्त्री को ही ला, अभी ला! इसी समय ला !! तुरन्त ला !! दारोगा:

जी अभी उसे बुलवा देता हूँ, उसके दुश्मनों ने मार डालना चाहा था पर मैंने अपनी जान पर खेल कर उसे बचाया और अभी तक जीता रख छोड़ा है.

भला मैं भी इन्द्रदेव की कोई बुराई कर सकता हूँ?

मैं तो सोच ही रहा था कि कोई मौका मिले और उसे इन्द्रदेव के पास पहुँचाऊँ.

सिद्ध:

(शान्त होकर) अच्छा तो उसे बुला! मैं अभी उसे लेकर इन्द्रदेव के पास जाऊँगा.

दारोगा ने अपने पास से तालियों का गुच्छा निकाला और उस नौकर के हाथ में देकर, जो वहाँ बैठा ताज्जुब से यह हाल देख रहा था, कान में कुछ समझाया.

नौकर गुच्छा लेकर चला गया और दारोगा सिद्धजी की तरफ घूमा.

सिद्ध::

तैने अच्छा कियाजो मेरा क्रोध बढ़ने न दिया, नहीं तो आज तुझमें और मृत्यु में बाल भर ही का अन्तर रह गया था.

पर अब मेरे इस योगदण्ड को जो क्रोध आ गया है वह मैं किस पर निकालूं?

इसका क्रोध तो व्यर्थ नहीं जा सकता!

इतना कह सिद्धजी ने अपना विचित्र डंडा जिसमें से अभी आग की लपटें निकल रही थीं, उस पर्दे से लगा दिया जो पास वाले दरवाजे पर पड़ा था.

डंडा छूते ही वह भन से जल गया और सिद्धजी ने उसकी आड़ में से भागती हुई मनोरमा और नागर की एक झलक देखकर पहिचान लिया, मगर अपने भाव से कुछ भी

प्रकट न होने दिया.

दारोगा डर से कॉपता हुआ चुपचाप इनके इस भयानक डंडे की अद्भुत करामात देखने लगा.

थोड़ी ही देर बाद वह नौकर अपने साथ एक औरत को लिए वापस लौटा.

सिद्धजी ने पहिली ही निगाह में पहिचान लिया कि वह इन्द्रदेव की स्त्री सरयू है.

इस समय सरयू की यह हालत हो रही थी मानों वर्षों की बीमार हो.

बदन में खून का तो नाम - निशान नहीं था, चेहरा पीला हो गया था, बँदन सूख कर काँटा हो गया था और कमजोरी इतनी अधिक थी कि एक - एक कदम उठाना मुश्किल हो रहा था.

प्रभाकरसिंह की आँखों में उसकी हालत देख आँसू आ गये पर बड़ी कोशिश से उन्होंने अपने भावों को छिपाया और दारोगा से कहा, " क्या यही इन्द्रदेव की स्त्री है?

" दारोगा:

जी हाँ.

सिद्धः:

(सरयू से) बेटी सरयू, आ मेरे पास आ! तू तो शायद मुझे न जानती होगी पर यह यदुनाथ और तेरा पति इन्द्रदेव मुझे अच्छी तरह जानते हैं क्योंकि दोनों ने लड़कपन में कुछ समय तक मुझसे विद्याध्ययन किया है.

मैं तुझे अभी तेरे पति के पास ले चलता हूँ.

(दारोगा से) मैं लड़की को ले चलता हूँ, इस समय सीधा इन्द्रदेव के पास जाऊँगा और उसकी बातें सुनूँगा.

दारोगा:

बहुत अच्छा, मैं सवारी मँगा देता हूँ, सिद्धः:

नहीं इसकी कोई आवश्यकता नहीं.

दारोगा:

आपकी शक्ति को तो मैं जानता हूँ, आप पल भर में जहाँ चाहें वहाँ जाने की सामर्थ्य रखते हैं.

पर बेचारी यह सयूँ बीमारी के कारण बहुत ही दुखी हो रही है, इसे वहाँ तक जाने में अवश्य कष्ट होगा (नौकर की तरफ देख कर) जाओ जल्दी सवारी का बन्दोबस्त करो.

नौकर चला गया और दारोगा ने पुन:

कहा, तो गुरुजी, कल रात को पुन:

दर्शन होंगे! "

सिद्ध:

हाँ - यद्यपि तेरी करतूत देख इच्छा तो नहीं होती पर फिर भी वचन दे चुका हूँ इससे आऊँगा और तुझे साथ ले चल कर लोहगड़ी का भेद समझा दूंगा, तू आप ही उसका तिलिस्म तोड़ लीजियो.

दारोगा:

पर गुरुजी, मैंने तो सुना है कि उसका हाल किसी किताब में लिखा है और जिसके पास वह किताब नहीं होगी वह उसे तोड़ नहीं सकता.

सिद्धः:

ऐसी - ऐसी किताबें मेरे नाखूनों में रहती हैं! क्या किताबों के भरोसे मैं सिद्ध हुआ हूँ?

कह तो यहाँ बैठे - बैठे केवल इस डंडे के जोर से वहाँ का सारा माल तेरे सामने ला रक्खू, तैने मुझे समझा क्या है! सिद्धजी की बातें सुन दारोगा की तबीयत खिल गई, उसने समझ लिया कि अब लोहगड़ी का अद्भुत खजाना उसका हो गया.

वह अपने भाग्य की सराहना करता हुआ कल की रात आने राह देखने लगा.

नौकर ने आकर सबारी तैयार होने की खबर दी और सिद्धजी महाराज सरयू को लिए उठ खड़े हुए.

क़मजोर होने पर भी दारोगा इज्जत के साथ उन्हें पहुँचाने दरवाजे तक आया और जब वे रथ पर चढ़ गये और रथ रवाना हो गया तो मन ही मन प्रसन्न होता हुआ भीतर लौटा.

पाँचवा व्यान।

बाबाजी (दारोगा साहब) की कृपा से नागर अब ऊँचे दर्जे की रंडियों में गिनी जाने लगी है.

बाजार का बैठना एक तरह पर उसने बिल्कुल ही छोड़ दिया है.

उस पुराने मकान को भी उसने छोड़ दिया है और एक दूसरे आलीशान मकान में डेरा जमाये हुए है, जिसमें आने - जाने के कई दरवाजे हैं जो तरह - तरह के काम में आते हैं क्योंकि चाहे दारोगा साहब को यही विश्वास हो कि नागर उनके सिबाय और किसी की शक्ल नहीं देखती पर नागर के पुराने प्रेमी लोग इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हैं और इसी से मौके - बेमौके कोई - न - कोई उसके मुन्दर सजे हुए कमरे में नजर आता ही रहता है.

धूर्ता नागर भी अपनी आमदनी बन्द करना पसन्द न करके खास प्रेमियों और उभरते हुए नौजवानों पर अपनी कृपा बनाये ही रखती है और दिल्लगी तो यह है कि उसमें से हर एक यही समझता है कि नागर उसी की है, उसी की रहेगी, और जो कुछ उससे पाती है उसी से अपना खर्चा चलाती हुई किसी दूसरे की तरफ झाँकती भी नहीं.

यह सोच कर वे लोग और भी उल्लू बनते हैं और उसकी तरह - तरह की बेढब फरमाइशों को खुशी से पूरा करते हैं.

रात पहर भर के लगभग जा चुकी होगी.

अपने मकान की छत पर नागर एक ऊँची गद्दी पर मसनद के सहारे अधलेटी - सी पड़ी हुई है.

उसके सामने एक छोटा सितार है जिसकी तारों को वह कभी - कभी छेड़ देती है.

मुन्दर चाँदनी चारों ओर छिटकी हुई है, ठण्डी हवा के झोंके नीचे बाग में से नाजुक फूलों की खुशबू लिए ऊपर पहुंचते हैं और नागर के दिमाग को मुअत्तर करते हैं पर उसकी आकृति से मालूम होता है कि वह इस समय किसी चिन्ता में डूबी हुई है और उसका मन किसी दूसरी ही दुनिया में चक्कर लगा रहा है.

कुछ देर बाद एक लम्बी साँस लेकर उसने मानों चिन्ता के बोझ को कुछ देर के लिए दूर कियाऔर सितार उठा कर कुछ गुनगुनाना शुरू किया.

नागर गाती बहुत ही अच्छा थी और उसका गला भी बड़ा ही सुरीला था.

अस्तु इस चाँदनी रात के सन्नाटे में सितार के मधुर स्वर के साथ उसके मनोहर गाने ने अजीब ही असर पैदा करना शुरू किया.

सड़क पर जाते हुए एक नौजवान सवार के कानों में दर्द भरे गले की एक तान पड़ी जिसने उसे बेचैन कर दिया.

उसने घोड़े की लगाम खींची और कुछ देर के लिए रुककर सुनने लगा, पर नागर का गाना सुनने के लिए कुछ देर के लिए भी ठिठकना गजब था.

उस नौजवान के दिल ने उसे इजाजत न दी कि घोड़े को तेज करे और अपने रास्ते पर बड़ जाय.

वह घोड़े से उतर पड़ा और नागर के मकान के फाटक पर पहुँच उसके नौकरों से कुछ कहा.

एक लौंडी दौड़ी हुई गई और नागर के पास पहुँच कान में कुछ बोली.

लौंडी की बात सुनते ही नागर चौंक पड़ी, सितार उसके हाथ से छूट गया और उसके चेहरे से उत्कंठा के साथ - साथ एक तरह की प्रसन्नता प्रकट होने लगी, जिसने थोड़ी देर के लिए उसके गालों को गुलाबी कर दिया.

उसने लौंडी से कुछ पूछा और अनुकूल उत्तर पा मुस्कुरा उठी.

लौंडी चली गई और नागर एक अलमारी के पास पहुंची जिसमें बहुत से चित्र रखे हुए थे.

उनमें से खोज कर एक तस्वीर उसने उठा ली और उसे लिए अपनी जगह पर आ बैठी. तस्वीर सामने रख ली और सितार उठा पुन:

गाना शुरू कर दिया.

थोड़ी देर बाद लौंडी उस नौजवान को लिये हुए वहीं आ पहुँची जहाँ नागर बैठी हुई थी.

नौजवान की सूरत देखते ही नागर मानों चिंहुक - सी उठी, सितार हाथ से छोड़ दिया और और बदहवास की सी तरह बन आँखें मलती हुई नौजबान की सूरत देखने लगी.

मगर यह हालत भी उसकी देर तक न रही, शीघ्र ही मानो उसने अपने इस दोस्त को पहिचान लिया और एक चीख मार कर अपनी जगह से उठ उसके गले से जा चिपटी.

नागर की लौंडी यह अवस्था देख विचित्र तरह से मुस्कराती हुई छत के नीचे उतर गई और वह नौजवान नागर को दम दिलासा देता हुआ उसकी गद्दी पर ले आया जहाँ दोनों बैठ गये.

नागर की आँखों से आंसू गिर कर उसके आँचल को तर कर रहे थे.

नौजवान ने अपने दुपट्टे से उन्हें पोंछा और उसे अपने कलेजे से लगा मीठी - मीठी और मन लुभाने वाली बातें करने लगा जो ऐसे मौके पर अक्सर बफादार आशिक अपनी बेबफा रंडियों से कियाकरते हैं.

कुछ देर बाद नागर ने अपने को चैतन्य कियाऔर दोनों हाथों से नौजवान का चेहरा चन्द्रमा की तरफ घुमा बड़े प्यार की निगाहों से उसे देखती हुई बोली, " आज मेरी किस आह ने तुम्हारे दिल पर असर किया जो यह भोली सूरत देखने को मिली! " नौज ०:

(हंस कर) शुक्र है कि तुम्हें अपने आशिकों से इतनी फुरसत तो मिली कि तुम्हारे दिल ने इस दिलजले को याद किया! नागर :

(बिगड़ कर और नौजबान से दूर हट कर) जाओ जाओ! महीनों बाद तो सूरत दिखलाई है और आते ही जली कटी बातें सुनाने लगे! सच कहा है कि मर्दो को दर्द नहीं होता! नौज ०:

(नागर को पास खींच कर और उसके गले में हाथ डाल कर) यह तुम साफ झूठ बोल रही हो.

भला कहो तो सही इस बीच में कितनी बार इस गरीब की याद तुम्हें आई थी?

नागर :

जी एक दफे नहीं.

बस अब तो खुश हो!

इतने ही में नागर की निगाह उस तस्वीर पर पड़ी जो कुछ ही देर पहिले उस अलमारी से निकाल सामने रखी थी.

उसने उसे हटा कर गद्दी के नीचे छिपाने के लिए हाथ बड़ाया पर उसी समय नौजवान ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, " यह किस भाग्यवान की तस्वीर रख छोड़ी है, जरा मैं भी तो देखूं.

नागर :

(हाथ झटक कर और तस्वीर गद्दी के नीचे दबा कर) होगी किसी की, तुम्हें मतलब! !! तौज:

तो भी, अगर बतला दोगी तो क्या कोई हर्ज होगा! नागर:

जी हाँ बहुत बड़ा.

नौज:

क्या?

नागर:

तस्वीर देख कर तुम उस बेवफा का नाम पूछोगे और नाम लेने से मेरे कलेजे की आग बाहर निकल पड़ेगी जिससे तुम जल जाओगे.

नौज:

वाह! तब तो अद्भुत तस्वीर किसी अजायबघर में रखने लायक है, मैं इसे जरूर देखूंगा.

इतना कह कर नागर के रोकने पर भी नौजवान ने हाथ बढ़ा कर वह तस्वीर निकाल ली और चन्द्रमा की रोशनी में उसे देखा.

एक खूबसूरत नौजवान की तस्वीर थी जिसके नीचे लिखा था श्यामलाल, तस्वीर देखते ही और यह जानते ही यह उसी की तस्वीर है नौजवान मुस्कुरा उठा और तस्वीर दूर फेंक नागर को अपनी तरफ खेंच कलेजे से लगाता हुआ बोला, “ भला यह तो बताओ इस समय मेरी तस्वीर सामने रख तुम क्या कर रही थीं! " नागर :

(श्यामलाल के गले में हाथ डाल कर) तुम्हारी कसम सच कहती हूँ आज तुम्हारी याद ने मुझे बेतरह सता रखा था.

लाख दिल को समझाती थी पर वह कम्बख्त मानता ही न था.

लाचार जब कुछ बस न चला तो तुम्हारी तस्वीर सामने रख अपने मचलते हुए दिल को फुसलाने की कोशिश कर रही थी, जब तुम नजर आये.

इतना कह कर नागर ने शर्मा कर श्यामलाल की गोद में मुँह छिपा लिया और श्यामलाल ने उसके इस प्रेम का बदला भरपूर चुका दिया.

कुछ देर इसी तरह की चहल में गुजर गई और तब फिर यो बातें होने लगीं-

श्याम ०:

क्यों नागर! अब तुमने काशी एकदम ही छोड़ दी?

नागर :

इधर बहुत दिनों से तो वहाँ जाना नहीं हुआ पर अब .

.

.

श्याम::

अब क्या?

नागर:

अब पुन:

जाने का विचार कर रही हूँ, श्याम:

जरूर जाना चाहिए क्योंकि ' मोतीजान ' की अब भी वहाँ कदर और खोज है.

मोतीजान ' नाम सुन नागर ने शर्मा कर सिर झुका लिया और कहा, " बस इसी से तो मैं और भी वहाँ जाते हिचकती हूँ क्योंकि जब मेरे पुराने दोस्त ही इस तरह मेरी खिल्ली उड़ाते हैं तो .

.

" कहते - कहते नागर रुक गई क्योंकि उसी समय सीढ़ी पर से धमधमाहट की आवाज मालूम हुई जिससे पता लगा कि कोई ऊपर को आ रहा है.

नागर श्यामलाल के पास से कुछ हट गई और उसी समय उसकी लौंडी ने वहाँ पहुँच कर एक लिफाफा उसके हाथ में दिया तथा कान में धीरे से कुछ कहा.

बात सुन नागर एक बार कुछ च्यूंक - सी गई पर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाला और कुछ टेढ़ी निगाह से लौंडी की तरफ देख कर बोली, " मैंने उसी समय कह दिया था कि चाहे कोई रईस हो इस समय इत्तिला न की जाय! " लौंडी:

जी बहुत बड़ा रईस बल्कि राजा है .

.

.

नागर:

बस चुप रह, कह दे आज मुलाकात नहीं हो सकती, तबीयत ठीक नहीं है.

लौंडी:

जो हुक्म, खैर यह चीठी तो पढ़ ली जाय जो उन्होंने दी है.

नागर:

कम्बख्तों के चीठी - पुर्जी से तो मैं और भी परेशान हूँ, खैर ला रोशनी.

लौंडी कुछ दूर पर रखा हुआ शमदान उठा लाई और नागर ने वह लिफाफा खोला.

१.

काशी के बाजार में बहुत दिनों तक मोतीजान के नाम से मशहूर थी और वहाँ इसने बहुत से अमीरों को अपने जाल में पंसा कर चौपट किया था.

श्यामालाल ने देखा कि चीठी पढ़ते समय नागर के चेहरे से डर और तरदुद जाहिर होने लगा और वह कुछ कॉप सी गई, पर बड़ी कोशिश से उसने अपना भाव बदला और चीठी बन्द कर बनावटी क्रोध के साथ बोली, “ मूओं को अपने इश्क मुहब्बत से ही छुट्टी नहीं मिलती, जा, उसे विदा कर दे.

" नागर ने चीठी दूर फेंक दी और लौंडी शमादान पुन:

दूर रख कर नीचे उतर गई, नागर ने आलस्य के साथ अंगड़ाई लेते हुए श्यामलाल के गले में हाथ डाल दिया और कहा, “ इन कम्बख्तों के मारे तो मैं बेतरह परेशान, श्याम ०:

क्यों कौन था?

यह चीठी किसकी है?

नागर:

था एक कम्बख्त, पर इस समय क्या तुम्हें छोड़ सकती हूँ! इतने दिनों के बाद तो न जाने कौन - सा पुण्य उदय हुआ कि तुम्हारी शक्ल दिखाई दी और सो भी कुछ यह उम्मीद नहीं कि फिर कब .

.

.

श्याम ०:

नहीं अब मैं बराबर आया करूँगा.

नागर :

धन्य भाग्य! क्या कहूँ अगर मुझे खर्च की तकलीफ न होती तो मैं तुम्हारे सिवाय और किसी का मुंह भी न देखती पर लाचारी के सबब सब कुछ करना पड़ता है ।

श्याम:

तुम्हें और खर्च की तकलीफ !! नागर:

हाँ, यह कम्बख्त शहर बड़ा ही कंजूस है.

जब से यहाँ आई अपना ही खा रही हूँ, इसी से तो पुन:

काशी जाने का विचार कर रही हूँ.

श्याम ०:

(अपने गले से सिकरी निकाल कर देता हुआ) लो इसे रखो.

नागर:

क्यों सोक्यों?

श्याम ०:

मैं देता हूँ, नागर :

वाह जी, तुमने मुझे ऐसा कंगाल समझ रखा है कि इतने दिनों के बाद मुलाकात होने पर भी .

.

.

श्याम ०:

नहीं नहीं, सो बात नहीं है, यह तो मैं तुम्हें खर्च के लिए देता हूँ, नागर के बहुत कुछ इनकार करने पर भी श्यामलाल ने सिकरी जबर्दस्ती उसके गले में डाल दी और बहुत बड़ी कसम देकर मुँह बन्द कर दिया.

कुछ देर तक पुन:

चुहल होती रही और तब श्यामलाल ने जाने की इच्छा प्रकट की.

नागर:

अजी बैठो, अभी कहाँ जाओगे! श्याम ०:

जाने का दिल तो नहीं करता पर क्या करूँ आज सुबह का ही निकला हूँ, अभी तक भोजन क्या एक चूंट जल तक नहीं पिया है, अब घर जाऊँगा तब .

.

नागर:

क्यों क्या यहाँ सब इन्तजाम नहीं हो सकता.

मैं अभी भोजन मँगवाती हूँ, स्नान इत्यादि हुआ है या नहीं?

श्याम ०:

नहीं, अभी कुछ नहीं हुआ, रुकने से तकलीफ होगी, तुम बस केवल एक गिलास जल मँगवा दो और मुझे इजाजत दो.

लाचारी की मुद्रा दिखाती हुई नागर " खैर जैसी तुम्हारी इच्छा " कहती हुई जल मँगवाने के लिए उठ खड़ी हुई, बल्कि स्वयं ही लेने के लिए नीचे उतर गई.

उसके जाते ही श्यामलाल झपट कर उठा और वह लिफाफा जिसे नागर ने दूर फेंक दिया था उठा कर शमादान के पास पहुँचा, चीठी निकाल ली और जल्दी - जल्दी पड़ा.

यह लिखा हुआ था:

-- " वह काम हो गया.

तुम इसी समय रवाना हो जाओ और ' रामदेई बन कर भूतनाथ के पास पहुँचो.

सिबाय उसके और कोई वह काम नहीं कर सकता.

सबारी जाती है, साधोराम तुम्हारी मदद पर रहेगा.

" बस इतना ही उस कागज का मजमून था जिसे श्यामलाल फुर्ती से पड़ गया और तब लिफाफा जहाँ पड़ा था वहाँ वैसे ही रख कर पुन:

अपनी जगह पर आ बैठा, साथ ही साथ सोचने लगा- " नागर ने तो कहा था कि यह उसके किसी आशिक की चीठी है पर यह तो कोई दूसरा ही मामला है! रंडियाँ भी कैसी होती हैं! यह चीठी लिखी किसकी है?

नीचे किसी का नाम नहीं है पर अक्षर पहिचाने हुए - से मालूम होते हैं.

मुझे तो यह दारोगा साहब कि लिखावट मालूम होती है.

हां ठीक है, वेशक उन्हीं की लिखावट है.

मगर नागर रामदेई की सूरत क्यों बनेगी और भूतनाथ से क्या काम निकलने की आशा है?

इसका पता लगाना चाहिए, इसमें अवश्य कोई गूढ़ भेद है.

!! इसी समय नागर अपने नाजुक हाथों में जल से भरा गिलास और कुछ मीठा लिए वहाँ पहुँची.

श्यामलाल ने आते ही देखा कि आते ही उसकी पहिली निगाह उसी चीठी की तरफ गई मगर उसे अपनी जगह पर ज्यों - का - त्यों पड़ा पा उसे संतोष हुआ और वह श्यामलाल के पास पहुँची.

श्यामलाल ने केवल जल पी लिया और बाकी चीजों को छोड़ उठ खड़ा हुआ.

बनावटी मुहब्बत की बातें करती हुई नागर उसके साथ - साथ नीचे तक आई और सब तरह - तरह के वादे करा और कर उसने श्यामलाल को विदा किया.

फाटक पर पहुँच कर श्यामलाल ने देखा कि एक रथ और आठ सबार वहाँ मौजूद हैं जो पहिले दिखाई नहीं पड़े थे.

वह समझ गया कि यही वह सवारी है जिसका जिक्र चीठी में किया गया है.

एक निगाह उस तरफ डाल श्यामलाल अपने घोड़े पर सवार हुआ और पूरब की सड़क पर रवाना हो गया.

थोड़ी दूर जाने के बाद एक चौराहे पर पहुँच श्यामलाल ने घोड़ा रोका उसको देखते ही उसके दो साथी जो कहीं छिपे हुए थे निकल आए जिन्हें देख श्यामलाल घोड़े से उतर

पड़ा और किनारे जा कुछ बातें करने लगा.

बातचीत खत्म हुई, श्यामलाल पुन:

घोड़े पर सवार हो पूरब की ओर रवाना हो गया, तथा उसके दोनों साथी नागर के मकान की तरफ लौट आए.

कुछ समय के बाद इसके लगभग घड़ी ही भर के बाद नागर अपनी एक लौंडी को साथ लिए मकान के बाहर निकली और उसी रथ पर सवार हो गई.

हुक्म पाते ही रथ तेजी से काशी की ओर रवाना हुआ और वे सबार पीछे - पीछे जाने लगे.

श्यामलाल के दोनों साथियों ने भी रथ का पीछा किया और छिप - छिपे साथ जाने लगे,

छठवा व्यान।

अब हम थोड़ा सा हाल मालती का लिखना चाहते हैं.

पाठकों को याद होगा कि महाराज गिरधरसिंह को खोजते हुए जाकर उसे इन्द्रदेव ने लोहगड़ी में पाया था और वहाँ से किसी हिफाजत की जगह में भेज स्वयं दूसरे फेर में पड़ गये थे.

इन्द्रदेव ने मालती को एक काले पत्थर की एक चौकी पर बैठा दिया और कोई खटका दबाया जिसके साथ ही वह चौकी तेजी के साथ जमीन में धंस गई.

झटके के कारण मालती की आँखें बन्द हो गई और उसने मजबूती से उसी चौकी को थाम लिया.

कुछ देर तक वह चौकी उसी तरफ नीचे धंसती रही पर इसके बाद एक झटके के साथ रुकी और तब आगे की तरफ बढ़ने लगी.

अब मालती ने आँखें खोलीं मगर उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ा क्योंकि चारों तरफ इतना घना अन्धकार था कि हाथ को हाथ दिखाई न पड़ता था.

धीरे - धीरे चौकी की तेजी बढ़ने लगी और साथ ही ठंडी हवा के कड़े झोंके बदन में लग कर उसे कंपाने लगे पर उसी समय उसे मालूम हुआ, चौकी की सतह गर्म हो रही है.

वास्तव में यही बात थी और कुछ ही देर बाद चौकी इतनी गर्म हो गई कि हवा के ठण्डे झोंकों से लगने वाली सर्दी का असर बहुत कुछ दूर हो गया.

एक घड़ी से ऊपर समय तक वह चौकी उसी तेजी से चलती रही.

इसके बाद धीरे - धीरे उसकी चाल कम होने लगी और ऐसा मालूम हुआ मानों वह ऊपर की तरफ ढालुई जमीन पर चड़ रही है.

साथ ही मालती को सामने की तरफ कुछ ऊंचाई पर मगर कुछ दूर चाँदनी भी मालूम पड़ी जिससे उसे गुमान हुआ कि अब उसका सफर पूरा हुआ चाहता १.

देखिए बारहवाँ भाग, चौथा बयान.

हुआ भी ऐसा ही और थोड़ी देर और चलने के बाद वह इमारत थी और सामने की तरफ एक खुशनुमा बाग नजर आ रहा था.

मालती चौकी पर से उतर पड़ी और उसके उतरते ही वह चौकी जिधर से आई थी उधर ही तेजी के साथ लौट गई, कुछ देर तक मालती वहीं खड़ी रही.

इसके बाद वह इस दालान से बाहर निकली और चारों तरफ घूम - फिर कर देखने लगी कि वह किस स्थान में है.

ऊंची - ऊँची पहाड़ियों से घिरा हुआ एक खुशनुमा मैदान नजर आया जो लगभग चार सौ गज के लम्बा और इससे कुछ कम चौड़ा होगा.

चारों तरफ की पहाड़ियों पर स्थान - स्थान में मुन्दर बंगले और मकान बने हुए थे जिनमें एक वक्त पर सैकड़ों आदमियों का गुजारा हो सकता था.

एक तरफ से एक नाला भी गिर रहा था जिसका साफ निर्मल जल छोटी - छोटी बहुत - सी नालियों के जरिये उस समूचे मैदान में फैल कर जमीन को तर बनाये हुए था और बचा हुआ पानी एक गड्ढे में गिर कर न मालूम कहाँ गायब हो जाता था.

इस मनोहर स्थान को हमारे पाठक बखूबी जानते हैं क्योंकि यह वही तिलिस्मी घाटी है जिसमें प्रभाकरसिंह, दयाराम, इन्दुमति, जमना, सरस्वती, दिवाकर सिंह आदि रहते थे तथा यहीं आकर भूतनाथ ने (नकली) जमना और सरस्वती का खून कियाथा.

बहुत देर तक मालती इस अनूठे स्थान को गौर और ताज्जुब से देखती रही और तब अपने स्थान से हटकर इधर - उधर घूमने - फिरने और यह जानने की चेष्ठा में पड़ी कि इस अद्भुत स्थान में कोई रहता भी हैं या नहीं.

चारों तरफ की इमारतों, कमरों और बंगलों में घूमते हुए मालती ने घंटों बिता दिये पर उसे किसी भी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी.

बहुत - सी जगहें तो बन्द थीं मगर कुछ जो खुली थीं वहाँ अच्छी तरह घूम - फिर कर मालती ने निश्चय कर लिया कि अपने रहने और रात काटने के लिए कोई जगह निश्चय कर ले.

१.

देखिये भूतनाथ आठवाँ भाग, अन्तिम बयान.

चारों तरफ देख - भाल कर उसने एक छोटा बंगला, जो सबसे अलग एक कोने में कुछ ऊंचाई पर बना हुआ था.

अपने रहने के लिए पसन्द कियाऔर उसी में अपना डेरा जमाया क्योंकि वहाँ मालती को अपने जरूरत की सभी चीजें-- पलंग, बिछावन, कपड़े बरतन आदि मिल गये तथा एक कोठरी में कुछ अन्न आदि भी पाया जिसकी सहायता से वह कुछ दिन बिना दरद और तकलीफ के काट सकती थी.

मालती को विश्वास था कि इन्द्रदेव शीघ्र ही उससे मिलने के लिए यहाँ आबेंगे पर जब कई दिन बीत गये और कोई उसकी खबर लेने न आया तो उसे ताज्जुब और कुछ डर भी मालूम हुआ.

वह समझ गई कि इन्द्रदेव किसी - न - किसी तरदुद में पड़ गये नहीं तो अवश्य मेरी सुध लेने आते.

इस खयाल ने उसे चिन्ता में डाल दिया मगर फिर भी उसने उस स्थान के बाहर जाने का विचार न किया और वहीं कुछ समय और काटने का निश्चय किया.

मालती बड़े ही कड़े कलेजे की और हिम्मतवर औरत थी क्योंकि तरह - तरह की और मुसीबतों ने उसे मजबूत कर दिया था, इसी से वह इतने बड़े स्थान पर अकेली रह सकी नहीं तो इसमें कोई शक नहीं कि यदि किसी दूसरी औरत को इस प्रकार वहाँ रहना पड़ता तो जरूर घबरा जाती और वहाँ से निकल भागने की चेष्ठा करती.

कई दिन तक वहाँ रह कर मालती ने उस जगह की अच्छी तरह से सैर कर ली और सब जगह घूम - फिर कर हर एक मकान को अच्छी तरह देख डाला.

मगर दो बातों का पता वह कुछ भी न लगा सकी.

एक तो वहाँ से बाहर निकलने का रास्ता उसे मालूम न हो सका दूसरे पूरब और उत्तर के कोने में बने हुए उस चौकोर और मुन्दर बंगले में वह न जा सकी जो सबसे ऊँचे स्थान पर बना हुआ था और जिस पर दो ओर मालती की घनी लता चढ़ी हुई थी.

इस बंगले के ऊपर सामने की तरफ शायद किसी धातु के आठ बन्दर बने हुए थे जो प्राय:

कभी - कभी इधर - उधर हिलते और तरह - तरह की भाव - भंगीमा कियाकरते थे जिसे देख उसका ताज्जुब बढ़ गया था और वह इस बात के जानने की फिक्र में पड़ी हुई थी कि इन नकली जानवरों में हरकत क्यों और कैसे आती है.

हाँ पर बहुत कोशिश करने पर भी वह न तो उस बंगले के अंदर जा सकी थी और न इस भेद का पता लगा सकी थी। .

इतना जरूर जान गई थी कि इस बात का कोई कारण जरूर है और वह बंगला कुछ गूढ़ भेदों को खजाना अवश्य है.

रात पहर भर से कुछ अधिक जा चुकी है, अभी - अभी निकलने वाले चन्द्रदेव की किरणें पेड़ों की चोटियों पर ही विराज रही हैं.

अपने मकान की छत पर बैठी हुई मालती तरह - तरह की बातें सोच रही है.

आज उसे इस स्थान में आये हफ्ते के ऊपर हो चुके हैं.

इस बीच में उससे न तो इन्द्रदेव से ही मुलाकात हुई और न किसी और ही आदमी की सूरत दिखलाई पड़ती है और वह इस समय यही सोच रही है कि अब क्या करना और किस तरह इस जगह के बाहर निकलना चाहिए.

वह यह सोच कर डरती भी है कि शायद इस जगह के बाहर होना उसके हक में अच्छा न हो, वह दुश्मनों के फंदे में न पड़ जाय, या इन्द्रदेव ही उसके इस काम पर खफा न हों, और इन्हीं बातों को सोचकर वह बाहर निकलने का खयाल छोड़ देती है, पर उसे जब यह ख्याल आता है कि शायद इन्द्रदेव ही किसी मुसीबत में न पड़ गये हों, तो वह बाहर निकलने और बन पड़े तो इस बात का पता लगाने अथवा इन्द्रदेव की मदद करने को भी बेचैन हो जाती है.

इस तरह की उधेड़बुन में पड़ी तरह - तरह की बातें सोचती हुई वह एकदम बेचैन हो गई और तबीयत बलाने की नीयत से उठ कर छत पर इधर से उधर टहलने लगी.

चन्द्रदेव कुछ ऊँचे उठ चुके थे और उस स्थान के चारों तरफ की पहाड़ियों पर बने हुए बंगलों को उनकी सफेद किरणों ने रौशन करना शुरू कर दिया था.

मालती की निगाह उस पूरब तरफ वाले बंगले के ऊपर पड़ी जिसके विषय में बहुत दफे आश्चर्य कर चुकी थी और जिसके ऊपर वाले बन्दरों की बदौलत उसका नाम बन्दरों वाला बंगला रख दिया था.

इस समय वह बंगला उससे बहुत दूर पड़ता था, दूसरे चन्द्रमा की रोशनी भी इतनी तेज न थी कि वहाँ की सब चीजें दिखाई पड़ सकें, फिर भी उसे कुछ ऐसी बात नजर आई जिसने उसे चौंका दिया.

उसने देखा कि उन बन्दरों की चाल डाल में जो रात को प्राय:

हिलते - डोलते न थे कुछ विशेषता आ गई है.

सब के सब बन्दर एक ही स्थान पर आकर इकट्ठे हो गये हैं और उनकी आँखों से बहुत ही तेज चमक निकल रही हैं.

मालती ने उन बन्दरों को उछलते - कूदते और हरकत करते हुए तो बहुत दफे देखा था और वह इसे एक मामूली बात समझने लगी थी पर इस तरह उनकी आँखों से रोशनी

निकलते उसने आज तक कभी नहीं देखा था, अस्तु यह एक नई बात देख उसे ताज्जुब मालूम हुआ और वह कौतूहल के साथ उस तरफ देखने लगी.

धीरे - धीरे उन बन्दरों के आँखों की रोशनी बढ़ने लगी आखिर इतनी बड़ी कि इतनी दूर से भी उन पर आँखें ठहराना कठिन हो गया.

इसके साथ ही मालती ने देखा कि उस छत पर न जाने कहाँ से एक औरत आ पहुँची है और इधर - उधर घूम रही है.

अब मालती का कलेजा धड़का.

इस निर्जन स्थान में किसी बाहरी आदमी, विशेष कर औरत के आने का उसे स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता था.

अस्तु उसे कुछ रंग - कुरंग मालूम हुआ और यह जानने की नीयत से कि यह कौन औरत है वह बंगले से सटी हुई एक दूसरी छत पर चली गई जो कुछ ज्यादा ऊँची थी तब जिसके चारों तरफ वाली ऊंची कनाती दीबार में इस ढंग के मोखे बने हुए थे कि भीतर का आदमी सब तरफ देख सकता था, परन्तु उस पर किसी की निगाह नहीं पड़ सकती थी.

यहीं से छिपकर मालती उस औरत की तरफ देखने लगी.

वह औरत कुछ देर तक तो इधर - उधर घूम - फिर कर देखती रही और तब बन्दरों के पास पहुँचे उनके सिरों पर हाथ रख कर कुछ करने लगी.

उसने क्या कियायह तो मालती इतनी दूर से देख - समझ न सकी पर यह उसने अवश्य देखा कि उन बन्दरों की आँखों से निकलने वाली रोशनी सब इकट्ठी होकर सामने के एक दूसरे बंगले पर पड़ने लगी है जो पहाड़ी पर से गिरते हुए नाले के ऊपर पुल की तरह पर बना हुआ था.

यह रोशनी इतनी तेज और साफ थी कि उस बंगले की हर एक चीज; जो चन्द्रमा के पहाड़ों की आड़ में अब तक अन्धकार में था, अब साफ दिखाई पड़ने लगी और एक - एक कोना निगाहों के सामने आ गया.

इतना काम कर वह औरत वहाँ से हट दूसरी तरफ चली गई और घूमती हुई निगाहों की ओट हो गई.

इसी समय नहर के ऊपर वाले बंगले की तरफ से दो - तीन बार बहुत जोर से धम्माके की आवाज आई, मालती का ध्यान उधर ही को चला गया और उसे तेज रोशनी की सहायता से जो उन बन्दरों की आँखों से निकलती हुई सीधी उधर ही को पड़ रही थी उसने देखा कि बंगले के बीचोंबीच बाले कमरे का दरवाजा खुला और दो आदमी जो एक भारी गठरी उठाये हुए थे निकल कर बाहर के दालान में आये.

इसी समय बगल की एक कोठरी में से निकल कर वह औरत भी उनके पास जा पहुँची जिसे कुछ देर पहिले सामने वाले बंगले की छत पर मालती ने देखा था.

तीनों बाहर के बरामदे में आ गए और वहीं जमीन पर बैठ कुछ करने लगे.

मालती बड़े गौर के साथ देखने लगी कि वे क्या करते हैं परन्तु दूरी के कारण कुछ समझ में न आया.

आखिर उसका जी न माना और वह अपनी जगह से उठ उस कमरे के नीचे उतरी, एक काली चादर से अपना बदन अच्छी तरह ढक कर पेड़ों की आड़ देती हुई वह बड़ी होशियारी के साथ उस बंगले की तरफ बढ़ी.

आधे से ज्यादा रास्ता मालती ने तय न किया होगा कि उसने उन दो आदमियों को उस बंगले के बाहर निकल कर पहाड़ी के नीचे उतरते और अपनी ही तरफ आते देखा.

वह बड़ी गठरी उन दोनों के हाथों में थी और पीछे - पीछे वह औरत फावड़ा आदि जमीन खोदने के कुछ औजार लिए चली आ रही थी.

यह देख मालती डर कर घने पेड़ों की आड़ में हो गई और वहीं से देखने लगी कि ये सब क्या करते हैं.

गठरी लिये वे दोनों आदमी सीधे उसी बन्दरों वाले बंगले की तरफ बड़े और मालती को गुमान हुआ कि ये उसी में जायेंगे, पर ऐसा न हुआ.

मकान की सीढ़ियों के पास पहुँच उन्होंने गठरी जमीन पर रख दी और बात करने लगे.

पेड़ों की आड़ लेती हुई मालती पाँव दबाये धीरे - धीरे उधर ही को बड़ी और उन लोगों से इतनी दूर जा पहुंची कि जहाँ बातचीत तो स्पष्ट नहीं सुन सकती थी पर जो कुछ वे करते उसे बाखूबी देख सकती थी। .

बंगले की सीढ़ी के दोनों तरफ संगमर्मर के कमर बराबर ऊँचे चबूतरों पर काले पत्थर की पुतलियां बनी हुई थीं जिनके हाथों में रोशनी रखने की जगहें बनी हुई थी.

वे दोनों आदमी इन्हीं में से बाईं तरफ चबूतरे के पास पहुंचे और उस औरत के हाथ से फड़वा आदि ले उन्होंने वहाँ की जमीन खोदना शुरू किया.

लगभग आधे घण्टे की मेहनत में वहाँ कमर से गहरा गड्ढा हो गया.

अब खोदना बन्द कियाऔर एक आदमी उस गड्ढे में उतर गया.

उसने क्या कियायह तो मालती देख न सकी पर थोड़ी देर बाद एक हल्की आवाज के साथ उस चबूतरे का एक तरफ का पत्थर हट गया और वहाँ एक अलमारी की जगह दिखाई पड़ने लगी.

उन लोगों ने वह गठरी उठाकर उसी चबूतरे के अन्दर डाल दी, वह पत्थर पुन:

ज्यों - का - त्यों अपने ठिकाने आ गया, और वह आदमी भी गड्ढे के बाहर निकल आये.

सभी ने मिलकर गड्डे को पाट कर बराबर कर दिया और तब वह औरत एक तरफ तथा वे दोनों आदमी दूसरी तरफ चले गये.

थोड़ी देर बाद मालती ने इन दोनों आदमियों को पुन:

उस नाले के ऊपर वाले बंगले में पाया और उस औरत को बन्दरों वाले बंगले की छत पर देखा.

इसी समय उन बन्दरों की आँखों से निकलने वाली चमक बन्द हो गई और वह औरत तथा दोनों आदमी भी गायब हो गये.

बहुत देर तक मालती उन लोगों के लौटने की राह देखती रही पर जब उसे विश्वास हो गया कि वे चले गये तो वह अपनी छिपने वाली जगह के बाहर निकली और चारों तरफ अच्छी तरह घूम - फिर कर देखने के बाद उसने निश्चय कर लिया की वे लोग जो इस

विचित्र प्रकार से वहाँ मौजूद हुए थे अब नहीं हैं, उसे वह जानने का बड़ा कौतूहल लगा हुआ था कि उन लोगों की उस गठरी में क्या था जिसे वे उस चबूतरे के अन्दर छिपा गये हैं और वह कोशिश करके उस गठरी का हाल जानना चाहती थी-- पर साथ ही यह सोच कर डरती भी थी कि अगर उनमें से कोई आ गया तो वह बड़ी मुसीबत में पड़ेगी.

अस्तु बहुत कुछ सोच - विचार कर उसने रात बिता देना ही मुनासिब समझा और अपने रहने वाले बंगले में चली गअई.

वह रात उसने जागने और टोह लेने में बिता दी और सवेरा होते ही जरूरी काम से निपट जमीन खोदने का सामान लिए उस स्थान पर पहुँची.

जिस जगह रात को उन दोनों आदमियों ने खोदा था वहीं मालती ने भी खोदना शुरु किया.

वहाँ की मिट्टी एक दफे खोदी जा चुकने के कारण बहुत कड़ी न थी अस्तु मालती को ज्यादा तकलीफ न हुई और वह सहज ही में कमर तक खोद गई.

उस समय उसे मालूम हुआ कि आगे खोदना असम्भव है क्योंकि नीचे पत्थर का फर्श निकल आया.

मालती ने खोदना बन्द कर दिया और जमीन की मिट्टी हाथ से साफ कर देखने लगी कि चबूतरे को खोलने की क्या तरक़ीब हो सकती है.

यकायक उसका हाथ एक छोटे से मुडे पर पड़ा जो किसी धातु का बना हुआ नीचे के फर्श में जड़ा हुआ था.

उसने उस मुद्दे को ऐंठना और घुमाना शुरू किया.

घूमा तो वह नहीं मगर ऊपर की तरफ कुछ उठता हुआ - सा नजर आया.

अस्तु मालती ने जोर लगाकर उसे अपनी तरफ खेंचा.

लगभग एक बालिश्त के वह खिंच आया और इसके साथ ही चबूतरे की दीबार बाला पत्थर किबाड़ के पल्ले की तरह खुल कर जमीन के साथ लग गया.

खुशी - खुशी मालती गड्ढे के बाहर निकल आई और उस चबूतरे के पास पहुँच कर देखने लगी कि उसमें क्या है.

अन्दर एक गठरी नजर आई जिसे मालती ने बाहर निकाला और खोला:

कुछ कपड़े और बहुत से कागज पत्रों को हटाने पर चांदी का हाथ भर लम्बा और एक बालिश्त चौड़ा तथा उतना ही ऊंचा एक डिब्बा निकाला जिस पर जगह - जगह मुहर की हुई थी.

और तलाश करने पर एक कागज का मुद्दा जो जन्मपत्री की तरह लपेटा हुआ था, निकला और तीन - चार छोटी - छोटी किताबें दिखाई पड़ीं जो रोजनामचे की तरह पर थी। .

सबसे नीचे से एक भुजाली और दो खंजर निकले जिन पर जंग चढ़ा हुआ था और जो बहुत पुराने मालूम होते थे.

बस इसके अलावे उस गठरी में और कुछ न था.

मालती ने यह सब सामान पुनः गठरी में बाँधा और उस चबूतरे को ज्यों का त्यों बन्द कर तथा गड्ढा पाट कर वह गठरी उठाए अपने रहने वाले बँगले पर आ गई.

यहाँ भी उसने ठहरना पसन्द न किया और दरवाजा बन्द करती हुई वह सीधी छत पर चली गई जहाँ बैठ कर वह पुन:

उन चीजों की जाँच - पड़ताल करने लगी.

उन कपड़ों तथा कागजों को तो उसने अलग रख दिया और वह मुट्ठा खोल कर देखने लगी जो सिलसिलेवार कई चीठियों को जोड़ कर बना हुआ मालूम होता था.

इन्हें मालती सरसरी निगाह से पड़ गई.

न मालूम उसमें क्या लिखा हुआ था जिस पर वह कुछ देर के लिए गौर में पड़ गई.

इसके बाद उसने उस रोजनामचे में से एक को उठा लिया और देखने लगी.

पहिला पृष्ठ देखते ही चौंक पड़ी और बड़े गौर के साथ उसने पढ़ना शुरू किया.

एक - एक करके मालती सभी रोजनामचे को पड़ गई, पड़ते समय उसके चेहरे से तरह - तरह के भाव प्रकट होते थे, कभी आश्चर्य, कभी क्रोध, कभी घृणा, कभी दु:ख, कभी प्रसन्नता, उसके चेहरे पर दिखाई पड़ती थी.

कभी - कभी उसके मुंह से बेतहाशा कई शब्द निकल कर उसके दिल के भाव को भी प्रकट कर देते थे, आखिर एक - एक करके वह सभी किताबें पड़ गई और तब सिर पर हाथ रख किसी गम्भीर चिन्ता में डूब गई, कई घड़ी के बाद जब उसके होश ठिकाने हुए, उसने आप ही आप कहा, “ यह तो बड़े काम की चीज मिल गई पर मालूम नहीं वह इन्हें यहाँ क्यों रख गया! क्या सम्भव है कि .

.

.

.

.

कुछ देर के लिए वह पुन:

चिन्ता में डूब गई और बोली, " यदि इन चीजों को चाचाजी एक बार देख पाते तो बड़ा ही काम निकलता.

" मालती के मुंह से यह बात निकली ही थी, कि सीढ़ियों पर से कुछ धमधमाहट की आवाज आई और यकायक इन्द्रदेव ने वहाँ पहुँच कर पूछा, " क्यों बेटी, मुझे क्यों याद कर रही है?

" इन्द्रदेव की सूरत देखते ही मालती चीख मारकर दौड़ी और उनके पैरों पर गिर पड़ी.

उसकी आँखों से बेतहाशा निकलते हुए आँसुओं ने इन्द्रदेव का पैर धोना शुरू किया.

उन्होंने बड़े प्यार से उठा कर उसका सिर सूंघा और आशीर्वाद देकर कहा, " बेटी, तुझे देख मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई खास कर इसीलिए कि मैं तुझे मरा हुआ समझता था .

तिस पर भी मैं जब यह सोचता था कि तेरे हाथ से एक बहुत बड़ा काम होने वाला है तो ताज्जुब करता था कि वह कैसे होगा, पर उस दिन तुझे जीता - जागता अपने सामने पा

मेरा संदेह दूर हो गया.

!! फिर भी यह देखकर कि दुश्मनों के जाल चारों तरफ फैले हुए हैं मैं यह निश्चय करने के लिए कि तू वास्तव में मालती ही है तेरे मुँह से कोई गुप्त बात सुनना चाहता हूँ जिसे तेरे सिवाय और कोई न जानता हो और जिसे सुन कर मुझे विश्वास हो जाय कि तू वास्तव में मालती ही हैं ।

मालती:

चाचाजी, (क्योंकि वह इन्द्रदेव को चाचा ही कह कर पुकारती थी) यह विश्वास दिलाने के लिए कि मैं मालती ही हूँ मैं आपको यह बात कह सकती हूँ.

जो कई बरस हुए खास बाग वाले गुम्बज पर आपने भुवनमोहिनी से कही थी और जिसे सुन चाचा .

.

.

इन्द्रदेव:

बस - बस, मुझे मालूम हो गया कि तू मालती ही है.

और यह विश्वास दिलाने के लिए की में भी वास्तव में इन्द्रदेव ही हूँ तुझे लाल बाबा की समाधि बाला हाल बता सकता हूँ, अच्छा तू अब यह बता कि ये कई दिन तूने किस तरह काटे और यह कागजात और कपड़े वगैरह कैसे हैं जिन्हें न इस समय इतने गौर से देख रही थी कि मेरे कई बार आवाज देने पर तूने बंगले के दरवाजा न खोला और लाचार मुझे दूसरी ही राह से यहाँ आना पड़ा! मालती:

(कुछ शर्मा कर) ये बड़ी ही काम की चीजें मुझे यकायक मिल गईं जो इतनी कीमती हैं कि मैं कुछ कह नहीं सकती.

इन्हीं को मैं देख रही थी और चाहती थी कि इस समय आपके दर्शन हो जाते तो आपको दिखाती और मतलब पूछती.

मैं अभी आपको इनके पाने का किस्सा बताती हूँ, यद्यपि यहाँ की छत मालती की बदौलत बहुत ही साफ थी फिर भी इज्जत के ख्याल से मालती नीचे से एक कम्बल ले आई जिस पर इन्द्रदेव बैठ गये.

मालती सामने बैठ गई और बहुत ही संक्षेप में रात का हाल कह उसने उन सब चीजों को इन्द्रदेव के आगे बढ़ा दिया.

सबसे पहिले इन्द्रदेव ने वह चाँदी का डिब्बा उठा लिया और उसे गौर से देखते हुए कहा, " अगर मेरी याददाश्त मुझे धोखा नहीं दे रही है तो इस डिब्बे में एक ऐसी नायाब चीज है जिसके लिए मैं बहुत परेशान था और हर तरह की चीज करके भी जिसके पाने में मैं असफल हुआ था.

" कुछ देर तक इन्द्रदेव गौर से उस डिब्बे को देखते रहे तब धीरे से " बेशक वही है " कहकर उन्होंने उसे उठाया और जोर से जमीन पर पटक दिया, पटकने के साथ ही उसका ऊपरी हिस्सा दो टुकड़े होकर दोनों तरफ को खुल गया और भीतर भोजपत्र पर लिखी हुई एक छोटी सी पुस्तक जिसकी जिल्द चाँदी की थी। - तथा सोने की एक चाभी दिखाई देने लगी.

खुशी की एक चीख मार इन्द्रदेव ने दोनों चीजों को उठा लिया और अपनी छाती से लगा खुशी भरी आवाज में बोले, " बेटी मालती, इस चीज को पाने पर मैं अपने को और तुझे भी मुबारकबाद देता हूँ.

इसी पुस्तक और चाभी के बिना मैं परेशान था और सोचता था कि सिद्धों और विद्वानों की लिखी बातें क्योंकर पूरी होंगी जिनके होने का वक्त आ ही नहीं गया बल्कि बीता जा रहा! है।

मालती:

(ताज्जुब से) आखिर यह अनमोल चीज क्या है?

इन्द्र ०:

यह चाभी तो लोहगड़ी के खजाने की है और यह उसके तिलिस्म का हाल बताने वाली पुस्तक है.

मालती:

(खुश होकर) क्या इन्हीं चीजों की मदद से लोहगड़ी का तिलिस्म टूटेगा?

इन्द्र ०:

हाँ.

मालती:

और इन्हीं की मदद से मैं अपनी जमुना, सरस्वती तथा और कई रिश्तेदारों को देख सकूँगी.

इन्द्र ०:

हाँ.

मालती:

वाह वाह-- तब तो यह वह अनमोल चीज है जिसके लिए मैंने महीनों कोशिश की और अपनी जान जोखिम में डाली.

इसका आप से आप हाथ में आ जाना सूचित करता है कि अब हम लोगों की मुसीबत की घड़ी बीत चुकी है.

इन्द्र:

यद्यपि मैं यह बिल्कुल नहीं जानता कि तुझे जमुना, सरस्वती आदि के हाल का पता क्योंकर लगा अथवा तूने इन चीजों के पाने की क्या - क्या कोशिश की फिर भी मैं इतना कह सकता हूँ कि ये चीजें उस लोहगड़ी के तिलिस्म को खोलने और तोड़ने का जरिया है और इन्हीं के बिना मैं अपने कई प्रेमियों से बिछड़ा हुआ था.

मालती:

मैं अपना सब हाल आपसे अभी बयान करूँगी मगर इसके पहिले मैं ये कुछ कागजात और किताब आपको और भी दिखाऊँगी जो इसी गठरी में से निकले हैं और जिनसे बहुत से भेद प्रकट होते हैं.

इतना कह मालती ने वे सब कागज और रोजनामचे भी इन्द्रदेव के आगे बढ़ा दिये और उन्होंने गौर के साथ उन्हें देखना शुरू किया.

उन्हें पढ़ते हुए इन्द्रदेव की भी वही हालत हो गई जो मालती की हुई थी अर्थात् कभी क्रोध, कभी दुःख, कभी घृणा और कभी प्रसन्नता ने उनके चेहरे पर प्रकट होकर उनके दिल का प्रभाव जाहिर कर दिया.

वे बहुत देर तक उन कागजों को देखते रहे और जब हर एक कागज को पड़ डाला तो एक लम्बी साँस लेकर बोले, " ये सब कागज मेरे लिये जबाहिरात से भी बढ़कर कीमती हैं और इनसे दुष्टों को दण्ड देने में बड़ी सहायता मिलेगी.

मैं इनका पूरा मतलब तुझे बताऊंगा जिसे शायद तूने समझा न होगा.

मगर इसके पहिले मैं यह चाहता हूँ कि तू अपना हाल मुझे पूरा सुना जा! "

" जो आज्ञा, " कह कर मालती ने अपना हाल कहने के लिये मुँह खोला ही था कि यकायक एक बड़े भारी धम्माके की आवाज ने उसे चौंका दिया और वह घबड़ा कर इधर - उधर देखने लगी.

इन्द्रदेव भी चौंककर उठ खड़े हुए और तुरंत ही उनकी निगाह उस बँगले पर गई जिसे हम बन्दरों वाले बंगले के नाम से पुकार आये हैं.

इन्होंने देखा कि वे बनावटी बन्दर इस समय बड़ी बेचैनी के साथ इधर - उधर उछल - कूद रहे हैं और उनके पीछे की तरफ छत पर कई आदमी दिखाई पड़ रहे हैं जो बार - बार इसी तरफ देखते हुए आपस में बातें कर रहे हैं.

इन्द्रदेव ने मालती से कहा, " बेटी, रंग - कुरंग नजर आते हैं.

मालूम नहीं वे आदमी कौन हैं और यहाँ .

.

.

!! इन्द्रदेव की बात अभी पूरी नहीं हुई थी कि न जाने किधर से एक गोला आकर उसी छत पर गिरा जिस पर ये दोनों खड़े थे.

गोला गिरते ही फूट गया और उसमें से बहुत ज्यादा धुआं निकला जिसने इन्द्रदेव और मालती को चारों तरफ से घेर लिया.

आँख और नाक में धुआं लगते ही इन्द्रदेव समझ गये कि यह जहरीला है और इस बात की बात में बेहोश कर देने का असर रखता है.

सातवा व्यान।

रात आधी से ज्यादा जा चुकी है.

काले - काले बादलों ने आकाश को एकदम ढक लिया है इस बात का पता भी नहीं लगता कि चन्द्रदेव आकाश में हैं या नहीं, रह - रह कर बिजली चमकती है और उसकी तड़प कानों को बहरा कर देती है.

ठंडी हवा के झोंके बतला रहे हैं कि पास ही में कहीं पानी बरस चुका था या बरस रहा है और यहाँ भी शीघ्र ही बरसना चाहता है.

उस पहाड़ी के लगभग कोस भर उत्तर में जिस पर इन्द्रदेव की कैलाश - भवन नाम की मुन्दर इमारत है, एकदम ऊँची पहाड़ियों का लम्बा सिलसिला है जो दूर तक चला गया है.

ऐसी रात और बदली के समय इस पहाड़ी पर चढ़ना बड़े साहस और जीवट का काम है क्योंकि जंगली जानवरों का डर चाहे न भी हो तो भी सॉप - बिच्छु आदि का डर किसी तरह पर कम नहीं है और चिकने तथा काई लगे हुए पत्थर के डोकों पर से पैर फिसल कर नीचे गड्ढे में जा गिरना कुछ असम्भव नहीं, फिर भी हम इस समय पाँच आदमियों की एक छोटी मंडली को इस बीहड़ पहाड़ी रास्ते से दक्खिन की तरफ जाते हुए देख रहे हैं.

अन्धकार के कारण हाथ को हाथ नहीं दिखाई पड़ता, फिर भी जब - जब बिजली चमकती है तो हम देखते हैं कि इनमें से हर एक के मुंह पर नकाब पड़ी हुई है तथा बदन काले कपड़ों से अच्छी तरह ढंका हुआ है.

बदन पर किस तरह के हर्वे सजे हुए हैं यह तो मालूम नहीं हो सकता पर हर एक के हाथ में एक - एक लम्बा बरछा है जिससे इस बीहड़ रास्ते पर चलने में कुछ मदद मिल सकती है.

इनमें से एक आदमी तो आगे है और बाकी के चार उसके पीछे - पीछे जा रहे हैं.

जब - जब बिजली चमकती है वे सब रुक जाते हैं और अपने चारों तरफ आहट लेकर पुन:

आगे बढ़ते हैं.

लगभग आधे घण्टे तक वे सब इसी तरह बढ़ते गये और तब बिजली की तेज चमक में उन्होंने अपने सामने की पहाड़ी पर दूर से कैलाश - भवन की मुन्दर इमारत की एक झलक देखी, उस समय आगे जाने वाला आदमी रुक गया और हलकी आवाज में पीछे की तरफ देख कर उसने कहा- " रामू, कैलाश - भवन तो आ गया.

सामने वाला मैदान पार करते ही हम लोग वहाँ पहुँच जायेंगे.

" पीछे से एक आदमी जिसे राम के नाम से सम्बोधित किया गया था आगे बढ़ आया और बोला, " जी हाँ, अब आगे बढ़ना उचित नहीं है.

वह स्थान जिसका पता दिया गया है इसी तरफ हीं होना चाहिए, मगर अंधेरे में उस जगह को खोजना ही बड़ा कठिन होगा! " वे पाँचों आदमी इकट्ठे हो गये और कुछ देर तक आपस में सलाह करते रहे.

इसके बाद वे सब अलग - अलग हो गये और अंधेरे में ही न जाने किस चीज या जगह की खोज करते हुए पाँचों पाँच तरफ फैल गये.

इस समय हवा बन्द हो गई थी और हलकी - हलकी बूंदे गिरने लग गई थीं.

अपने साथियों की तरह इस मंडली का सरदार भी अलग हो गया और चारों तरफ घूम - घूम कर किसी बात की आहट या टोह लेने लगा.

परन्तु जब पानी बरसना आरम्भ हो गया और बिजली का चमकना बन्द हो जाने के कारण कुछ पता लगना लगभग असम्भव हो गया तो उसने अपना काम होने की आशा

छोड़ दी और कोई आड़ की जगह तलाश करने लगा जहाँ रुक कर वह और उसके साथी पानी के थमने की राह देख सकें.

इधर - उधर घूमता और अपने बरछे का सहारा लेता हुआ वह कुछ निचाई तक उतर आया और तब पत्थर के एक बड़े ढोंके की आड़ में कुछ विराम लेने की नीयत से खड़ा हो गया.

उसे खड़े हुए कुछ ही देर बीती होगी कि उसको अपने बाई तरफ कुछ दूरी पर कोई आहट लगी.

उसे किसी जंगली जानवर के होने का गुमान हुआ और इस लिहाज से उसने अपने बरछे को सम्भाल कर पकड़ा और कुछ दाहिनी तरफ हट गया पर उसी समय आवाज के ढंग से वह समझ गया कि यह दो आदमियों के बहुत ही धीरे - धीरे बात करने की आवाज है.

वह यह समझते ही चौकन्ना हो गया और बड़ी होशियारी से कान लगा कर सुनने लगा.

बात करने वाले यद्यपि दूर न थे पर बहुत ही धीमे स्वर में बात कर रहे थे, दूसरे पानी की टपटप भी बाधा पहुंचा रही थी जिससे साफ - साफ तो सुनाई न पड़ा पर दो - चार लूटे - फूटे शब्द कान में जरूर गए .

.

.

.

के लिए .

.

.

इन्द्र दे .

.

.

.

ी मौत .

.

.

.

काजू .

.

.

मेरी जान.

" शब्द टूटे - फूटे और बेजोड़ थे पर जान पड़ता है कि सुनने वाले ने उनका मतलब समझ लिया क्योंकि वह आहट बचाता हुआ उन लोगों की तरफ कुछ और धसक गया पर फिर कुछ आवाज न आई और अन्दाज से मालूम हुआ कि वे बात करने वाले कहीं दूसरी जगह चले गए, या पास ही की किसी गुफा में घुस गये हैं.

यह आदमी जिसका नाम जब तक कि उसका असल नाम और हाल न मालूम हुआ हो घनश्याम रख देते हैं, कुछ देर तक तो रुका रहा पर फिर न जाने क्या सोच कर आगे बड़ा और बहुत धीरे - धीरे कदम रखता हुआ उसी तरफ चला जिधर से आहट आई थी।

.

उस बड़े पहाड़ी ढोंके के बगल घूमते ही गुफा के मुहाने तरह एक काला स्थान दिखाई पड़ा और अन्दाज से उसने समझा कि हो न हो यह किसी खोह का मुंह है और इसी के अन्दर वे लोग गये हैं.

वह मुहाने के पास ही चुपचाप खड़ा हो गया और आहट लेने लगा कुछ देर बाद उसे मालूम हुआ कि वह वहाँ अकेला नहीं है बल्कि और भी एक आदमी उस जगह मौजूद है.

घनश्याम ने धीरे से चुटकी बजाई और जवाब में तीन बार चुटकी की आवाज सुनकर समझ गया कि उसका साथी रामू भी पास ही में मौजूद है.

यह जान उसे कुछ इत्मीनान हो गया और वह कुछ बेखटके होकर गौर के साथ देखने लगा कि गुफा के अन्दर से कौन निकलता है या क्यां आवाज आती है.

यकायक अन्दर की तरफ कुछ रोशनी मालूम हुई और वह धीरे - धीरे बढ़ने लगी, जिससे मालूम हुआ कि कोई आदमी रोशनी को लिए बाहर को आ रहा है.

घनश्याम और रामू चौकन्ने हो गए पर फिर भी कौतूहल ने उन्हें हटने न दिया और वे देखने लगे कि किसकी सूरत दिखाई पड़ती है, अन्दर का उजाला बढ़ने लगा, कुछ ही देर बाद मालूम हुआ कि वह गुफा जिसका मुहाना तो बहुत तंग और नीचा है पर जो अन्दर से बहुत खुलासा चौड़ी और लम्बी है कुछ ही दूर जाकर दाहिनी तरफ को घूम गई है और उधर ही से रोशनी भी आ रही है, साथ ही यह भी दिखाई पड़ा कि उस मोड़ के पास ही दो आदमी दीवार के साथ चिपके खड़े हैं जिनके बदन काले कपड़े और नकाब से बिल्कुल ढंके हैं और जिनमें से एक के हाथ में एक तेज छुरा चमक रहा है.

रोशनी आते देख ये दोनों होशियार हो गये और रंग - ढंग से घनश्याम ने समझ लिया कि अब शीघ्र ही इस गुफा में कोई भयानक घटना होने वाली है.

पल - पल में रोशनी बढ़ने लगी और साथ ही आने वाले के पैरों की आहट भी सुनाई पड़ने लगी.

जिस आदमी के हाथ में छुरा था उसने अपना हाथ ऊंचा किया और साथ ही वह आदमी भी मोड़ घूम कर सामने हुआ जिसके हाथ में रोशनी थी.

छुरी वाले ने छुरी मारने को जोर से हाथ बढ़ाया पर उसी समय उसका हाथ रुक गया और उसके मुँह से एक चीख की आवाज निकल पड़ी.

हमारे घनश्याम और उसके साथी की भी डर के मारे अजीब हालत हो गई, उन दोनों ने देखा कि रोशनी लिये जो सामने खड़ा हुआ है वह कोई आदमी नहीं बल्कि हड्डियों का एक खौफनाक ढाँचा है, जिसके बिना माँस और चमड़े वाले मुँह के दाँत भयानक हँसी हँस रहे थे और आँखों के काले गड़हे मानो देखने वाले की हँसी उड़ा रहे थे.

यह एक ऐसा डरावना दृश्य था जिसने इन लोगों के रोंगटे खड़े कर दिये और खास कर वह आदमी तो जो कि छुरी से उस पर वार करने वाला था एकदम ही क़ाँप गया और छुरी फेंक दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँप पीछे को भागा.

उसके साथी ने भी एक चीख मारी और उसी के पीछे बाहर की तरफ भागा.

उसी समय ऐसा मालूम हुआ मानो वह हड्डियों का ढाँचा बिकट रूप से हँसा क्योंकि भयानक और डरावनी हँसी से गुफा गूंज उठी और वह आवाज दूर - दूर तक फैल गई.

भागने वाले दम छोड़ कर भागे और उसी समय आसेब के हाथ का चिराग जमीन पर गिर कर फूट गया जिससे चारों तरफ पुनः अन्धकार छा गया.

यद्यपि घनश्याम और रामू पर भी उस भयानक नर - कंकाल ने क़म असर न कियापर ये दोनों दिलावर और बहादुर थे अतएव इन्होंने अपने होशवास ठिकाने रखे, जैसे ही वे दोनों भागने वाले इनके पास पहुँचे, दोनों ने एक - एक आदमी को पकड़ लिया, उन दोनों की घबराहट और भी बढ़ गई और डर के मारे वे बदहवास हो गये पर घनश्याम और रामू ने इस बात का कुछ भी खयाल न किया.

दोनों के पास बेहोशी की दवा मौजूद थी जिसकी सहायता से दोनों ने अपने - अपने कैदी को बेहोश कर दिया और तब उनको उठा कर वे भागे.

पानी जो अब तक धीरे - धीरे गिर रहा था अब यकायक तेज हुआ और मूसलाधार होकर बरसने लगा पर इन्होंने इसका कुछ भी खयाल न किया.

लुड़कते, गिरते, उठते और भीगते हुए दोनों आदमी उन दोनों को पीठ पर लादे पहाड़ी के नीचे उतर आये.

यहाँ एक पेड़ के नीचे खड़े होकर घनश्याम ने जफील बजाई, तुरन्त ही कुछ दूर से उसका जवाब मिला और थोड़ी ही देर बाद घनश्याम के तीनों साथी भी वहाँ आ पहुँचे.

सभों में जल्दी - जल्दी कुछ बात हुई और तब आगे घनश्याम और उसके पीछे दो - दो आदमी एक - एक बेहोश को उठाये हुए तेजी के साथ मूसलाधार पानी में भीगते हुए शिवदत्त गड़ की तरफ रवाना हो गए.

इनके जाने के कुछ ही देर बाद एक दूसरा आदमी उस जगह जा पहुँचा.

इसके हाथ में एक चोर लालटेन थी जिसकी रोशनी में इसने गौर से चारों तरफ देखा और तब जमीन पर पड़े हुए निशानों पर गौर करके निश्चय कर लिया कि ये लोग शिवगढ़ की तरफ गये हैं.

यह जान उसने एक लम्बी साँस खींची और कहा.

मुझे थोड़ी देर हो गई जिससे काम बिगड़ गया, पर खैर कोई हर्ज नहीं- क्या कोई भूतनाथ से भी भाग कर बच सकता है:

यह नया आने वाला आदमी वास्तव में भूतनाथ था जो बहुत देर तक उसी जगह घूमता हुआ न जाने क्या - क्या सोचता रहा और तब मन ही मन यह कह कर कि इस समय पीछा करना फजूल है बरसते पानी और बीहड़ रास्ते का कुछ भी खयाल न कर कैलाश - भवन की तरफ रवाना हुआ.

आठवा व्यान।

सिद्ध बाबाजी बने हुए प्रभाकरसिंह ने इन्द्रदेव की स्त्री सरयू को दुष्ठ दारोगा के पंजे से छुड़ा लिया और उसी के रथ पर बैठ चले गये.

उस समय दारोगा बहुत ही प्रसन्न था और यह सोच - सोच किस्मत को सराह रहा था कि जब ईश्वर ने दया करके बाबा मस्तनाथ को भेज दिया है और पुनः कल आकर वे उस तिलिस्म का भेद बताने को भी कह गए हैं तो उसकी किस्मत फिरा ही चाहती है और ताज्जुब नहीं कि एक सप्ताह के अन्दर ही वह लोहगड़ी और उसके बड़े भारी खजाने का मालिक बन जाय.

इस विचार ने उसे यहाँ तक प्रसन्न किया था कि उसकी तकलीफ बहुत कम हो गई और वह बाबाजी को दरवाजे तक पहुँचा कर अपने पलंग पर नहीं गया बल्कि उस कोठरी में चला जिसमें मनोरमा और नागर बैठी हुई ताज्जुब से उन विचित्र सिद्धजी और उनके अद्भुत डण्डे का जिक्र कर रही थीं.

दारोगा को देखते ही दोनों उठ खड़ी हुई.

मनोरमा ने उसे सहारा दे अपने बगल में गद्दी पर बैठाया और नागर ने कई तकिये ढासने और सहारे के लिए उसके चारों तरफ लगा दिये.

दारोगा के बैठते ही मनोरमा ने पूछा, " ये बाबाजी कौन थे जिनकी आपने इतनी इज्जत की?

" दारोगा:

ये बड़े भारी तपस्वी और प्रतापी सिद्ध पुरुष थे।

मैंने और इन्द्रदेव ने जिन ब्रह्मचारीजी से शिक्षा पाई है ये उनके गुरुभाई हैं और हम लोग इन्हें भी गुरु ही मानते और पूजते हैँ आज कितने ही बरसों बाद इन्होंने दर्शन दिये हैं.

ये बड़े भारी योगी हैं, इनकी सामर्थ्य का हाल सुनोगी तो ताजुब करोगी.

नागर:

क्या हम लोगों ने देखा नहीं! उनके डण्डे की ताकत देख मुझे तो गश आ गया !! मनो ०:

हाँ, आप पर जब उन्होंने क्रोध किया तो उनके डण्डे से किस प्रकार आग निकलने लगी! इतना मोटा पर्दा छूते ही भस्म हो गया.

आपने अच्छा कियाजो उनका क्रोध अपने ऊपर नहीं लिया नहीं तो न जाने क्या आफत आ जाती.

दारोगा:

ओफ! ये अपना डण्डा जरा सा छुला भर देते तो मेरा खातमा हो जाता.

यही देख कर मैंने सयुं को धीरे से उनके हवाले कर दिया.

नागर :

मगर अब इन्द्रदेव को आप क्या कह कर समझाइयेगा?

वे जब सुनेंगे कि आपने उनकी स्त्री को कैद कर रखा था तो बड़े ही क्रोधित होंगे! मनो ०:

तो इसके लिए ये क्या करते! इन्द्रदेव के क्रोध को देखते या गुरुजी के क्रोध से भस्म होते! दारोगा:

अरे इन्द्रदेव को मैं समझा लूंगा, वह बेवकूफ है क्या चीज?

नागर :

आप ही तो कई बार कह चुके हैं कि दुनिया में मैं किसी से डरता हूँ तो एक इन्द्रदेव से और अब कहते हैं कि वे वह क्या चीज हैं?

दारोगा:

बेशक इन्द्रदेव है बड़ा रथवान् पर यदि बाबा मस्तनाथ हमारी मदद पर मुस्तैद हो जायँ तो कुछ नहीं कर सकता.

अगर गुरुजी ने अपने दोनों वादे पूरे कर दिए तो इन्द्रदेव ऐसे हजारों मेरे तलवे चाटा करेंगे?

मनोरमा:

दोनों बादे कौन?

एक तो लोहगढ़ी वाला! दारोगा:

और दूसरा गदाधरसिंह के विषय में! वह कम्बख्त भी आजकल बुरी तरह से मेरे पीछे पड़ गया है।

इन्द्रदेव ने उस पर न जाने कैसा जादू कर दिया है कि वह बिल्कुल उन्हीं के कहने में आ गया है, और बर्बाद कर देने की खुली धमकी देता है, अगर वह कम्बख्त किसी तरह मेरे काबू में आ जाय तो मैं दुनिया में अपने बराबर किसी को न समझूं.

नागर:

मैं भी उस शैतान से बड़ा डरती हूँ.

उसके सामने अपनी जुबान हिलाने की भी हिम्मत नहीं पड़ती.

दारोगा:

क्या बताऊँ, मुझे तो बार - बार यह भी शक होता है कि उस गुप्त सभा में लूट - पाट मचाने वाला और कलमदान लूट ले जाने वाला भी वही शख्स है.

मनो ०:

(चौंक कर) हैं, क्या ऐसा हो सकता है?

मगर यह शक आपको क्योंकर हुआ?

दारोगा:

अब दिल ही तो है, क्या बताऊँ कि कैसे शक हुआ.

मगर मुझे दृढ़ निश्चय है कि वही उन सब आफतों की जड़ है.

मनो ०:

लेकिन अगर ऐसा ही है और वही कलमदान लूट कर ले गया है तो बड़ी आफत मचावेगा.

उसने उस कलमदान को खोले बिना कदापि न छोड़ा होगा, और इस हालत में उस सभा का सारा भेद उसे जरूर मालूम हो गया होगा.

आज हो या कल वह आपका भण्डाफोड़ किये बिना कभी न छोड़ेगा.

दारोगा:

बेशक यही बात है और यही सोचकर तो मैं अधमूआ होता जा रहा हूँ.

अगर गुरुजी की कृपा से वह वश में न हुआ तो फिर मेरा मरण ही समझना चाहिए.

नागर:

गुरुजी वादा तो कर गये हैं कि तीन दिन के भीतर वह आपके पैरों पर लोटता दिखाई देगा.

दारोगा:

हाँ, बेशक कह गये हैं और आज तक उन्होंने कभी झूठ कहा ही नहीं, जो कुछ जिससे वादा कियाहै जरूर पूरा किया! मुझे तो पूरा विश्वास है कि शीघ्र ही गदाधरसिंह मेरे

कब्जे में आ जायेगा.

नागर:

(मनोरमा की तरफ देख कर) इन्होंने कोशिश तो बहुत की पर वह अभी तक कब्जे में नहीं आया, मनो ०:

क्या बतावें, कम्बख्त ऐसा धूर्त है कि जल्दी उसे किसी की बात पर विश्वास ही नहीं होता.

फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी है.

अबकी बार अगर पुनः आया तो दूसरा चकमा दूंगी.

दारोगा:

अजी मैं तो समझता हूँ अब तुम्हें मेहनत करने और कैदी बनने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी, बाबाजी के कहे पर मुझे विश्वास है, वे जरूर अपना कहा पूरा करेंगे.

मनो ०:

फिर भी आपको कोशिश से न चूकना चाहिए.

कल मुझे पुन:

उसे कुएँ में जाना है अस्तु मैंने जो कुछ कहा है उसका इन्तजाम करा रक्खें.

देखणूंगी वह कम्बख्त कैसे नहीं मेरे जाल में फंसता! दारोगा:

हाँ, एक बार फिर तो कह जाओ कि तुम्हें किस - किस सामान और बन्दोबस्त की जरूरत थी। .

बाबा मस्तनाथ के आ जाने से वह जिक्र अधूरा ही रह गया.

मनोरमा ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि बाहर दरबाजे पर से चुटकी बजाने की आबाज आई.

इशारा पाकर नागर बाहर गई और कुछ ही देर में वापस आकर बोली, “ लौंडी कहती है कि गदाधरसिंह आये हैं और किसी बहुत ही जरूरी काम से इसी समय मिलना चाहते हैं.

नौकरों ने कहा भी कि इस समय आप मिल नहीं सकते पर वह किसी तरह नहीं टलते.

(हँसकर) आपके सिद्धजी का मंत्र मालूम होता है काम कर गया! दारोगा:

बेशक! अच्छा मैं बाहर कमरे में जाता हूँ.

लौंडी से कहो उसे लावे, और तुम दोनों अन्दर चली जाओ.

इतना कह दारोगा उठ खड़ा हुआ.

नागर और मनोरमा ने उसे सहारा दे उसके कमरे में पलंग पर पहुंचा दिया और तब उसकी आज्ञानुसार वे दोनों वहाँ से हट गईं, धोड़ी ही देर बाद एक लौंडी के पीछे भूतनाथ उस जगह पहुँचा.

दारोगा ने लौंडी से चले जाने को कहा और हाथ से अपने पलंग के बगल में रखी हुई एक चौकी पर बैठने का इशारा करते भूतनाथ से कहा, " आओ जी मेरे दोस्त भूतनाथ-- तुम तो ईद का चाँद हो रहे हो.

भला किसी तरह तुम्हें अपने इस मुसीबतजदे दोस्त की याद तो आई! " भूतनाथ दारोगा की बताई हुई चौकी पर बैठ गया और इसकी अवस्था देख नकली सहानुभूति दिखाता हुआ पूछने लगा, " यह क्या दारोगा साहब-- आप तो बिल्कुल जख्मी हो रहे हैं! कहीं किसी से लड़ाई हो गई क्या?

"

दारोगा:

क्या बताऊँ दोस्त, मेरी तो किस्मत ही खराब हो गई है.

उस दिन तीन मंजिल ऊपर की छत से नीचे चौक में आ गिरा.

घंटों बेहोश रहा, सेरों खून निकल गया, बदन भर में पचासों टाँके लगाये गए और अब यह हालत है कि हिलना - डुलना मुश्किल है, मगर तुम मेरे दोस्त ऐसे बेमुरौबत निकले कि एक बार पूछने भी नहीं आये कि तुम्हारा लंगोटिया दोस्त मरा कि जीता है! भूत ०:

क्या बताऊँ मुझे यह खबर लगी तो जरूर थी कि आपकी तबीयत खराब है पर यह मुझे बिल्कुल मालूम नहीं था कि आप छत से गिर गये हैं.

मुझसे किसी ने कहा कि जमानिया के बाहर किसी से लड़ाई हो गई जिसमें आप जख्मी हुए मैंने यह भी सुना कि आपके दुश्मन आपको चुटीला कर भाग गये और आप उन्हें पकड़ने की कोशिश कर रहे आज कई दिन से मैं सोच रहा था कि आपसे मिलूँ पर समय न मिलने के कारण आ न सका.

मैंने यह भी सुना था कि आपको गहरी चोट नहीं आई हैं इससे कुछ निश्चिन्त - सा भी रहा पर आज तो मैं देखता हूँ कि आपकी बुरी हालत है! बेशक आपके दुश्मनों ने आपसे बुरी तरह बदला लिया! दारोगा:

(कुछ सहम कर) नहीं - नहीं, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसी कोई बात नहीं हुई, मुझे गिर जाने के कारण ही चोट आई.

भूत ०:

खैर जो कुछ हो, अच्छा यह बताइये अब तबियत कैसी है?

दारोगा:

बहुत कुछ सुधर गई है, घाव भर गए हैं और तब दो - चार रोज में चलने - फिरने लायक भी हो जाऊँगा, वैद्यजी की दवा से ताकत आ रही है फिर भी अभी महीनों घर से बाहर निकलने का मौका न आवेगा.

भूत ०:

ईश्वर को धन्यवाद है कि इतनी गहरी चोट से भी आपको उसने बचा लिया.

दारोगा:

मगर तुम अपना हाल तो बताओ कि इतने दिन किधर रहे और क्या करते रहे?

आज मुद्दतों के बाद तुम्हारी सूरत दिखाई पड़ी है.

भूत ०:

क्या बताऊँ, मैं बड़ी बुरी झंझट में पड़ गया था.

दारोगा:

झंझट! कैसी झंझट, क्या मैं उसका हाल सुन सकता हूँ?

भूत ०:

हाँ हाँ, क्यों नहीं आप ही तो उसके कर्ता - धर्ता हैं.

आप ही को सुनाने तो मैं इस समय आया ही हूँ! दारोगा:

मेरे कारण झंझट! यह विचित्र बात कैसी?

भूत ०:

मैं अभी आपको बताता हूँ मगर पहिले यह कहिए कि किसी जगह से कोई छिप कर हम लोगों की बातें तो सुन नहीं सकता?

दारोगा:

क्यों क्या कोई गुप्त बात है?

भूतः:

बेशक ऐसा ही है और वह बात भी ऐसी है कि दूसरों के कानों तक चली जाएगी तो मेरी तो नहीं पर आपकी बड़ी खराबी हो जायगी.

दारोगा:

(डर कर) आखिर बात क्या है?

कुछ मालूम भी तो हो, आप तो बेतरह डरा रहे भूत ०:

डर की बात कुछ भी नहीं है, और जो कुछ है सो भी मैं कह देता हूँ, मुझे पता लगा है कि आपने अपने दोस्त इन्द्रदेव की लड़की और स्त्री इन्दिरा और सरयू को अपने मनहूस मकान में बन्द कर रखा है और दोस्ती तथा गुरुभाई के रिश्ते का खूब बर्ताव कर रहे हैं.

दारोगा:

(क़ाँप कर) इन्दिरा और सरयू को मैंने बन्द कर रखा है! भला यह किसने तुमसे कह दिया !! और उन दोनों से मुझसे मतलब ही क्या?

भूत सिर्फ इतना ही कि आप उनकी जान लेने पर तुल गए हैं और चाहते हैं कि किसी तरह गोपालसिंह भी आपके चंगुल में फंस जाय तो आप निष्कंटक हो जायँ और बेखटके जमानिया पर हुकूमत करें, दारोगा:

आज तुमने भांग तो नहीं पी ली है! किस तरह बहकी - बहकी बातें कर रहे हो! भला अपने मालिक गोपालसिंह और उनके दोस्त इन्द्रदेव के साथ मैं किसी क़िस्म की बुराई करने का खयाल भी मन में ला सकता हूँ?

भूत ०:

(हँस कर) ख्याल लाना तो दूर आप वैसा कर चुके हैं, कर रहे हैं और जल्दी ही आपकी कमर तोड़ न दी गई तो तब तक करते - करते रहेंगे जब तक इनमें से कोई भी जीता - जागता रहेगा.

दारोगा:

(बिगड़कर) बस बस, अपनी जुबान सम्हालो?

तुम बेतरह बहक रहे हो! अगर मुझे तुम्हारी दोस्ती का खयाल न होता तो मैं अभी तुम्हें अपने मकान से बाहर निकल जाने को कहता! भूत:

क्या खूब, आपको और दोस्ती का ख्याल! यह तो उसे सुनाइए जो आपकी नस - नस से वाकिफ न हो.

कुछ दोस्ती आपने दामोदरसिंह के साथ अदा की, कुछ राजा गिरधरसिंह का नमक अदा किया, अब कुछ इन्द्रदेव, गोपालसिंह और मेरे साथ दोस्ती का दम भर रहे हैं.

आप ऐसे दोस्त और नमकवार जिसे मिल जायें उनके लिए इस दुनिया में शेर - चीतों की मांद भी उतनी डरावनी नहीं जितनी आपकी दोस्ती और नमकवारी! काले साँप के साथ खेलना और बिच्छुओं को छाती पर रखना भी उतना ही भयानक नहीं जितना आपका साथ करना! भूतनाथ की बेतुकी बातें सुन दारोगा घबड़ा गया और डर कर उसका मुंह देखने लगा.

इस समय उसके चेहरे पर तरह तरह का रंग आता और जाता था.

इतना तो वह जरूर समझ गया कि भूतनाथ को उसके किसी गुप्त भेद का पता लग गया है पर वह कौन - सा भेद है और कितना हाल उस पर प्रकट हुआ है यह उसे बिल्कुल ही नहीं मालूम था अतएव बड़ी ' घबराहट के साथ भूतनाथ का मुंह देखने लगा.

भूत ०:

आप मेरा मुँह क्या देख रहे हैं दारोगा साहब! जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह बहुत ठीक है और मैं इसे बहुत जल्द सावित कर दूंगा कि दामोदरसिंह की जान लेने वाले आप ही हैं, महारानी को मारने वाले आप ही हैं, महाराज गिरधर सिंह की हत्या करने वाले आप ही हैं.

अपने दोस्त इन्द्रदेव की लड़की और स्त्री की जान पर वार करने वाले आप ही हैं, गोपालसिंह को कैद करने वाले आप ही हैं और इन्द्रदेव को गिरफ्तार कराने वाले आप ही हैं! केवल यह नहीं बल्कि उस गुप्त कमेटी के कर्ताधर्ता भी आप ही हैं जिसकी मदद से आप बहुत कुछ कर चुके और अभी बहुत कुछ कर गुजरने की आशा रखते हैं.

लीजिए देखिए और कागजों को पढ़िए.

1 इतना कह कर भूतनाथ ने अपने बटुए में से बहुत - से कागज निकाल कर दारोगा के सामने फेंक दिये और गरज कर कहा, दारोगा साहब! आपकी गुप्त सभा से सरयू वाला कलमदान लूट ले जाने वाला मैं ही हूँ, मैंने ही इन्दिरा को आपके इस मकान से निकाला है, मैंने ही सरयू और इन्द्रदेव की जान बचाई और मैं ही आपको कैदखाने की अंधेरी कोठरी में भेजने के लिए यमदूत की तरह आपकी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ हूँ, लीजिए देखिए इन कागजों को पढ़िए और मौत से लड़ने के लिए तैयार हो जाइए, क्योंकि आपके यहाँ से निकल कर मैं सीधा गोपालसिंह के पास जाऊँगा और वह कलमदान उनके आगे रख आपकी काली करतूतों का भंडा फोड़ूंगा !! " भूतनाथ की ये बातें सुनते ही और उन कागजों पर एक निगाह डालते ही दारोगा की तो यह हालत हो गई की काटो तो बदन में खून नहीं! उसे मालूम हो गया कि भूतनाथ ने उसका वह गुप्त भेद जिसे वह जान से ज्यादा छिपा कर रखे हुआ था जान लिया और अब कुछ ही समय बाद उसे कैदखाने की कोठरी नसीब हुआ चाहती है.

मौत की भयानक सूरत तरह - तरह डरावनी शक्लों में से उसकी आँखों के सामने फिरने लगी और वह यहाँ तक बदहवास हो गया कि उसके मुंह से आवाज तक निकलनी असम्भव हो गई.

वह पागलों की तरह सिर्फ भूतनाथ की सूरत देखने लगा। भूत ०:

आप मेरी तरफ क्यों देख रहे हैं! इन कागजों को देखिए और अपनी आखिरी घड़ी का इन्तजार कीजिए, समझ लीजिए कि आपके पापों का घड़ा फूट गया और अब आप किसी तरह बच नहीं सकते.

आप विश्वास रखें कि गोपालसिंह अपने पिता और इन्द्रदेव अपने ससुर के खूनी की जान इस तकलीफ के साथ लेंगे कि खुंखार जानवरों को भी आपकी हालत देख कर रहम न आवेगा और आप की लाश पर कौवे और चील भी नफरत की निगाह डालेंगे.

भूतनाथ की बातों ने मौत की डरावनी सूरत दारोगा की आँखों के सामने खड़ी कर दी और वह इस तरह उसकी सूरत देखने लगा जैसे घोर जंगल की लताओं में सींग फँस जाने के कारण बारहसिंघा अपने पीछे झपटने वाले शेर को देखता है.

कुछ देर बाद वह आपसे आप ही पागलों की तरह टूटे - फूटे शब्दों में कहने लगा-

" सब फजूल.

.

इन्द्रदेव की प्यारी इन्दिरा .

.

.

महाराज गिरधरसिंह की मौत .

.

.

मेरे बहुत ही .

.

.

दामोदरसिंह का खून .

.

.

मेरी जान का ग्राहक .

.

.

अब तो .

.

.

बुरी तरह फंस.

मगर .

.

.

तब क्यों नहीं .

.

.

" इतना कहते - कहते दारोगा रुक गया और कुछ सोचते हुए उसने एक छिपी निगाह भूतनाथ पर डाली जो इस प्रकार से देख रहा था जिस तरह कि कोई व्याध अपने जाल में फंसी हिरनी को देखता है.

दारोगा कुछ देर तक उसी तरह देखता रहा, तब बोला, " खैर तो अब मैं जान गया कि तुम मुझे सब तरह से चौपट करने के लिए तैयार हो गए हो.

भूत ०:

दारोगा साहब -- आपको मैं नहीं बल्कि कर्म चौपट कर रहे हैं और उन्हें ही आप इसके लिए सराहिये, मैं तो सिर्फ अपने दोस्त का हित करने के विचार से इस झगड़े में पड़ गया हूँ, दारोगा:

और वह दोस्त इन्द्रदेव है! भूत ०:

जो कोई भी हो.

दारोगा:

जो कोई क्या, बेशक इन्द्रदेव ही होगा जो मेरा गुरुभाई होने का दम भरता है और हर बात में दोस्ती जाहिर करने को मरा जाता है.

भूत ०:

जी वह इन्द्रदेव नहीं, बल्कि वह इन्द्रदेव कहिए, जिसकी वीबी और लड़की आपकी बदौलत कैदखाने से बड़ कर मुसीबतों में पड़ी हुई थी और जिसके ससुर और न जाने कितने रिश्तेदार आपकी बदौलत मौत की तकलीफ उठा चुके और उठा रहे हैं.

दारोगा:

खैर तुम ऐसा ही कहो, झूठ और फरेब का तो जबाब ही क्या हो सकता है.

भूत ०:

(गुस्से से) मैं झूठ कह रहा हूँ?

क्या सामने पड़े हुए कागज आपको दिखाई नहीं पड़ रहे हैं या आप इन्हें अपनी सच्चरित्रता का विज्ञापन समझ कर .

.

दारोगा भूतनाथ से बातें भी करता जा रहा था और साथ ही छिपे - छिपे अपने पलंग के सिरहाने की तरफ हाथ बड़ाकर कुछ करता भी जा रहा था.

भूतनाथ की बात खतम नहीं हुई थी कि यकायक कमरे के बगल की किसी कोठरी में से एक घंटे के बजने की आवाज आने लगी.

भूतनाथ आवाज सुनते ही चौकन्ना हो गया और फुर्ती से अपनी जगह से उठने लगा मगर उसी समय पीछे का एक दरवाजा खुला और उसमें से काली पोशाक पहने दो आदमी झपटते हुए वहाँ आ पहुँचे.

इन दोनों का डील और कद देखने ही से मालूम होता था कि ये बड़े ही मजबूत, दिलेर और बहादुर हैं और साथ ही इनकी काली पोशाक और नकाब के अन्दर से चमकती हुई खुंखार आँखों तथा हाथ की तलवारों ने इन्हें बड़ा ही डरावना बना रखा था.

ये दोनों आते ही भेड़ियों की तरह भूतनाथ पर टूट पड़े और उसी समय दारोगा ने वह शमादान जो पलंग के सिरहाने की तरफ जल रहा था हाथ के धक्के से जमीन पर गिरा बुझा दिया जिससे उस कमरे में घोर अन्धकार छा गया.

दारोगा की इस अचानक की कार्रवाई और नकाबपोशों के इस तरह यकायक आ टूटने से एक बार तो भूतनाथ घबड़ा गया पर तुरन्त ही उसने अपने होश - हवास ठिकाने किये और उछल कर अपनी जगह से हट दूसरी तरफ चला गया.

उसी समय बड़े जोर से धम्माके की आवाज हुई जिसकी आहट से भूतनाथ को मालूम हो गया कि कमरे की जमीन का उतना हिस्सा जहाँ वह बैठा था मय चौकी के जमीन के अन्दर धस गया है और उसी चौकी के गिरने का वह भयानक धम्माका है.

आवाज बहुत ही गहराई से आती हुई मालूम होती थी जिससे उसको यह भी गुमान हुआ कि वह चौकी शायद किसी कुएँ या ऐसी ही किसी जगह में जा गिरी है.

उसने अपने बच जाने पर ईश्वर को धन्यवाद दिया और तब तुरन्त ही जेब से सीटी निकाल कर बजाई.

जवाब में पास ही कहीं से तीन बार सीटी बजाने की आवाज आई जिसे भूतनाथ ने प्रसन्नता से सुना और समझ लिया कि उसके तीन शागिर्द भी उस जगह पहुंच चुके हैं.

एक सायत का भी बिलम्ब न करके उसने अपने बटुए में से एक छोटा - सा गेंद निकाला और उसे जोर से जमीन पर पटका.

भारी आवाज के साथ वह गेंद फट गया और उसमें से इतनी चमक और तेजी से आँखों में चकाचौंध पैदा करने तथा देर तक टिकने वाली रोशनी ने पैदा होकर कमरे भर में उजाला कर दिया.

रोशनी होते ही कमरे में एक अजीब दृश्य दिखाई दिया।

दारोगा साहब कमरे के एक कोने में जमीन पर गिरे हुए थे और भूतनाथ का एक शागिर्द खंजर लिए उनकी छाती पर सवार था.

उन दोनों नकाबपोशों से जिन्होंने भूतनाथ पर हमला किया था एक तो बेहोश पड़ा हुआ था और दूसरे को उनके दो शागिर्द जमीन पर दबाये कमन्द से हाथ - पाँव बांध रहे थे.

अपने शागिर्द की यह तेजी और फुर्ती देख भूतनाथ बड़ा ही खुश हुआ और जोर से बोल उठा, " शाबाश! " उसी समय उसके दो साथी और उस कमरे में आ पहुँचे जिनकी मदद से वह दूसरा नकाबपोश भी तुरन्त बेकार कर दिया गया.

उस समय भूतनाथ दारोगा के पास गया और उससे बोला, " बाबाजी, आपने कारीगरी तो बहुत की थी पर काम कुछ न बना! अब आपको मालूम हो गया कि भूतनाथ दुश्मन के घर में अकेला या बेपरवाह होकर नहीं आता.

कहिए अब आपके साथ क्या सलूक किया जाय?

" दारोगा के मुंह से डर के मारे कोई आवाज नहीं निकल रही थी। .

वह अपने मौत की घड़ी नजदीक जान आँखें बन्द क़िये हुए मानो उसकी आखिरी साँसे गिन रहा था.

डर के मारे उसका बदन इस तरह काँप रहा था कि वह अपनी जिन्दगी से बिल्कुल नाउम्मीद हो चुका है.

भूतनाथ ने पुनः पूछा, " क्यों दारोगा साहब, बोलते क्यों नहीं! कहिए अब मैं आपके साथ क्या सलूक करूँ और आपके इन मददगारों की क्या गति बनाई जाय! (हँस कर) क्यों न आपको इसी हालत में राजा गोपालसिंह के पास उठा ले चलूँ! यह बात सुनते ही

दारोगा काँप उठा और आँखें खोलकर बड़ी करुणा की दृष्टि से भूतनाथ की तरफ देखने लगा.

भूतनाथ ने अपने शागिर्द को उसके ऊपर से हट जाने का इशारा किया और आप दारोगा के सामने जा खड़ा हुआ क्योंकि उसके ढंग से मालूम होता था कि वह कुछ कहना चाहता था पर डर के मारे उसके मुंह से आबाज नहीं निकल रही है.

इतने ही में बाहर दरवाजे तरफ रोशनी दिखाई दी और शोरगुल की आवाज आई, इस कमरे में जो कुछ काण्ड मच गया था उसकी खबर मनोरमा और नागर को लग गई थी और घर के नौकरों को भी इस लड़ाई - झगड़े का पता लग गया था, अस्तु कई आदमी दरवाजे पर पहुँच कर कमरे के अन्दर की विचित्र अवस्था और अपने मालिक का अद्भुत हाल देख रहे थे.

उन्हें वहां मौजूद पा दारोगा ने जबरन अपने होश - हवास ठिकाने क़िये और धीमी आवाज में भूतनाथ से कहा, " भूतनाथ, जो कुछ मैंने किया उसके लिए मैं माफी मांगता हूँ और तुम्हारे गुलाम की तरह तुमसे कहता हूँ कि मेरे नौकरों के सामने अब मुझको और जलील न करो, तुम जो कुछ कहो मैं करने को तैयार हूँ मगर इस समय मेरी इज्जत रख लो! " भूतनाथ दारोगा का मतलब समझ गया.

वह खुद भी नहीं चाहता था कि इतने आदमियों के सामने कुछ कहे या करे, सब कुछ होने पर भी वह अच्छी तरह समझता था कि दारोगा के सैकड़ों नौकर और सिपाहियों से भरे हुए इस भयानक और बिचित्र मकान में वह खतरे से खाली नहीं है अस्तु कुछ सोच - विचार कर उसने धीरे - से दारोगा से कहा, " मैं खुद नहीं चाहता था कि आपकी किसी तरह पर बेइज्जती करता या तकलीफ पहुँचाता मगर खुद आप ही ने अपनी करनी से यह सामान पैदा कर लिया.

खैर अब उठिये, अपने इन आदमियों को बिदा कीजिये और ठंडे दिल से बातें समझिये.

" हाथ का सहारा देकर भूतनाथ ने दारोगा को उठाया और मदद लेकर पलंग पर ला बैठाया.

दारोगा ने आँख से इशारा कियाऔर तब भूतनाथ से कहा, " मेरे दोस्त! तुम्हारी में किस तरह तारीफ करूँ, तुमने इस समय मेरी जान बचा ली है! (अपने नौकरों और आदमियों

की तरफ देख कर) मेरे दोस्त भूतनाथ और इनके शागिर्दो ने अभी मेरी जान (दोनों नकाबपोशों की तरफ दिखाकर) इन हरामजादों से बचाई है.

यहाँ का शोरगुल इन्हीं कम्बख्तों के कारण था.

(भूतनाथ से) दोस्त! अब तुम अपने आदमियों को हुक्म दो कि कमीनों को इसी गड़े में फेंक दे, तब हम लोग दूसरी जगह चल कर बातें करेंगे.

" जिस जगह चौकी पर भूतनाथ बैठा हुआ था वहाँ एक भयानक अँधेरा गढ़ा अभी तक दिखाई पड़ रहा था.

भूतनाथ का इशारा पा उसके शागिर्दो ने दोनों स्याहपोशों को बारी - बारी से उसी गड़े में फेंक दिया जिसमें से उनके चिल्लाने की आवाज आने लगी.

दारोगा के पलंग के पीछे दीवार के साथ एक अलमारी थी जिसमें चाँदी के दो मुडे लगे हुए थे.

दारोगा ने पीछे झुककर मुट्ठों को जोर से घुमा दिया, साथ ही कमरे की सतह का वह हिस्सा जहाँ पर भूतनाथ बैठा था पुन:

ज्यों - का - त्यों अपनी जगह पर आकर इस तरह बैठ गया कि बहुत गौर करने पर भी यह मालूम न हो सकता था कि यहाँ कोई ऐसा भेद है.

दारोगा ने भूतनाथ से कहा, " आओ हम लोग एकान्त में चलकर बातें करें.

" और उसके सिर हिला कर मंजूर करने पर वह दूसरे कमरे की तरफ बड़ा और नौकरों को हुक्म देता गया, “ इस कमरे को साफ कर दो.

" भूतनाथ के शागिर्द भी भूतनाथ का इशारा पा इधर - उधर हो गये अर्थात् जिस तरह पहिले वे कहीं छिपे हुए थे वैसे ही पुन:

उस शैतान के आँत की तरह वाले मकान में कहीं गायब हो गये.

दारोगा भूतनाथ को एक बिल्कुल ही एकान्त जगह में ले गया और वहाँ कमरे का दरवाजा बन्द कर उससे बातें करने लगा.

नौवा व्यान।

जिस समय किसी का फेंका हुआ एक गोला आकर उस छत पर गिर कर फूटा और उसमें से बहुत - सा धुआं निकल कर चारों तरफ फैल गया उसी समय इन्द्रदेव समझ गये कि यह धुआँ जहरीला और बहुत बुरा असर पैदा करने वाला है.

इसके पहिले कि धुएँ का असर होने पाए उन्होंने वहाँ से हट जाने का इरादा कियाऔर उन कागजों तथा सामानों को बढोर और मालती को अपने पीछे आने को कहते हुए वे फुर्ती के साथ नीचे उतर गये.

नीचे की मंजिल में पहुंच कर बल्कि कई कोठरियाँ में घूम - घूम कर वे उस तरफ से निश्चिन्त हुए, फिर भी उस कड़वे धुएँ का जो कुछ अंश आँखों में लगा था या सॉस की राह भीतर गया था उसने उन्हें चक्कर दिला दिया और कुछ देर के लिए उनकी यह हालत हो गई कि सिवाय सिर पकड़ कर बैठ जाने के और कुछ नहीं कर सकते थे.

थोड़ी देर बाद जब उनके होश - हवास कुछ ठिकाने हुए तो उन्होंने अपने जेब से निकालकर कोई चीज सूंघी जिसने धुएँ के जहरीले असर को एकदम दूर कर दिया और तब वे इस लायक हुए कि कुछ कर सकें, सबसे पहिला तरदुद उन्हें मालती के विषय में हुए जिसे उन्होंने अपने पास कहीं न पाया.

जिस धुएँ ने उनके मजबूत दिल व दिमाग पर इतना असर कियाउसने क़मजोर औरत पर कहीं ज्यादा असर कियाहोगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि उसे छत से उतरने का भी मौका न दिया हो.

यह सोच इन्द्रदेव तुरन्त लौट पड़े और उन्हीं कोठरियों में घूमते - फिरते पुन:

छत पर जाने वाली सीड़ी के पास पहुँचे.

जमीन पर उन्हें बेहोश मालती दिखाई पड़ी और तब उनके जी में जी आया.

उन्होंने उसे उठा लिया और बगल की एक कोठरी में ले जाकर उसे होश में लाने का उद्योग करने लगे.

जिस चीज को सूंघने से उन्हें फायदा पहुंचा था उसी को कुछ देर तक मालती को सुंघाने तथा उसकी आँखों पर मलने के कुछ देर बाद मालती की हालत सुधरती नजर आई.

उसके बदन में एक हलकी कंपकंपी आ गई और सॉस कुछ जोर से आने - जाने लगी.

उसकी आँखें भी एक बार खुल कर पुन:

बन्द हो गई मगर इससे इन्द्रदेव को विश्वास हो गया कि अब कोई खतरा नहीं है और यह शीघ्र ही होश में आ जायगी.

इसी समय सीढ़ी पर से धमधमाहट की आवाज आई जिससे मालूम हुआ कि कई आदमी छत से उतर रहे हैं, आहट मिलते ही इन्द्रदेव चौंके और उन्हें उन दुश्मनों का खयाल आ गया.

फुर्ती से कुछ सोच और तब मालती को पुन:

गोद में उठा कर वे एक दूसरे स्थान में जा पहुँचे.

यह एक छोटी कोठरी थी जिसमें चारों तरफ की दीवारों में हर तरफ एक दरवाजा और उसके बगल में दोनों तरफ दो - दो अलमारियाँ बनी हुई थीं.

इन्द्रदेव ने पूरब तरफ वाले दरवाजे के बाई तरफ बाली अलमारी का पल्ला किसी ढब से खोला.

अन्दर से यह अलमारी बहुत ही चौड़ी थी और इसमें दर या हिस्से बने हुए न थे जिससे यह इस लायक थी कि उसमें तीन - चार आदमी बखूबी खड़े हो सकते थे.

इन्द्रदेव ने बेहोश मालती को इसी अलमारी में रखने के बाद अपने हाथ का सब सामान भी उसी जगह रख दिया और तब पल्ले बन्दकर देने के बाद कोई तर्कीब ऐसी कर दी की जिससे सिवाय उनके और कोई उसे खोल ही न सके.

यद्यपि यह सब काम उन्होंने बड़ी फुर्ती से किया, फिर भी वे आने वाले वहाँ तक आ ही पहुँचे.

बगल की कोठरी में उनके आने की आहट मिल चुकी थी जब इन्द्रदेव मालती की तरफ से निश्चिन्त हुए और जैसे ही वे बगल के दरवाजे से दूसरी कोठरी में घुसे वैसे ही कई

आदमियों ने इस कोठरी में पैर रक्खा, ये आने वाले पाँच या छः आदमी थे और सभों ही के चेहरे नकाब से ढके हुए थे.

आगे - आगे एक लम्बा आदमी था जो सभों का सरदार मालूम होता था.

!! इसने आते ही कोठरी में चारों तरफ देखा और कहा, " यहाँ तो कोई नहीं है-- मालूम होता है वे दोनों कहीं दूसरी तरफ निकल गए.

तुममें से एक - एक आदमी इन चारों दरवाजों के अन्दर जाकर तलाश करो और जिन - जिन कोठरियों को देख चुको उनकी जंजीर बाहर से बन्द करते जाओ.

हुक्म के मुताबिक चार आदमी उसको चारों तरफ के दरवाजों में चले गये, वह सरदार तथा केवल एक आदमी और उस कोठरी में रह गये जिसमें धीरे - धीरे बातें होने लगीं- सरदार:

न मालूम वे दोनों किस तरह से निकल गये! साथी:

यह तिलिस्मी इमारत है, इसमें पचासों ही गुप्त रास्ते और स्थान हैं जिनसे किसी का निकल जाना या छिपा रहना कोई भी ताज्जुब नहीं.

सरदार:

मगर मुझे ताज्जुब तो यह है कि उस गोले के तेज असर से वे दोनों बचे किस तरह! उसके धुएँ का एक बार साँस के साथ जाना ही काफी था और मजबूत से मजबूत आदमी भी उसके असर से बच नहीं सकता था.

साथी:

बेशक यह ताज्जुब तो मुझे भी है.

सरदार:

अगर वे दोनों नहीं पकड़े गये तो उन चीजों का पता बिल्कुल लग न सकेगा जिनके पाने की आशा में हम लोग यहाँ आये और इतनी तकलीफें उठा .

.

.

इसी समय बगल की कोठरी से किसी आदमी के जोर से चिल्लाने की आवाज उनके कानों में पड़ी जिसे सुनते ही वे दोनों चौंके और यह कहते हुए कि महावीर की आवाज है, मालूम होता है उस पर कुछ आफत आई है उसी तरफ लपके मगर जब वे उस कोठरी में पहुँचे तो किसी की सूरत दिखाई न पड़ी.

ताज्जुब करते हुए वे अपने चारों तरफ देखने लगे क्योंकि उस कोठरी में सिवाय उस रास्ते के जिससे कि वे अभी - अभी यहाँ आये और कोई रास्ता नहीं दिखाई पड़ता था और ऐसी अवस्था में उस आदमी का गायब हो जाना जो यहाँ आया था अथवा जिसके चीखने की आवाज अभी - अभी उनको कानों में गई थी वह ताज्जुब की बात थी। .

फिकर और तरदुद के साथ वे अपने चारों तरफ देख ही रहे थे यकायक बड़े जोर से उस कोठरी का दरवाजा बन्द हो गया और वे दोनों घने अन्धकार में पड़ गए, क्योंकि सिवाय उस दरबाजे के उस कोठरी में कहीं से चाँदना या हवा आने का कोई भी रास्ता न था.

अपने को यकायक इस मुसीबत में पाकर दोनों घबरा गये और दरवाजा खोलने का उद्योग करने लगे पर उन्हें शीघ्र ही पता लग गया कि वह मजबूत दरवाजा उनके किसी भी उद्योग से शीघ्र खुलने वाला नहीं.

पाठक तो समझ ही गये होंगे कि यह कार्रवाई इन्द्रदेव की थी जिनके लिए इस तिलिस्मी मकान में दस - पाँच आदमियों को पकड़ लेना या बन्द कर देना कोई भी मुश्किल की बात न थी। .

जो हालत इन दोनों आदमियों की हुई थी वही बाकी के चारों आदमियों की भी हुई और कुछ ही देर घूमने - फिरने के बाद उन चारों ने अपने को एक ऐसी कोठरी में पाया जिसमें केवल एक ही दरवाजा था और जो अन्दर पहुँचते ही इस तरह से बन्द हो गया कि उसका निशान तक बाकी न रह गया अर्थात् यह भी मालूम न होता था कि वह दरवाजा कहाँ है जिसकी राह - अभी - अभी उन्होंने इस कोठरी में पैर रखा है.

इन सब शैतानों को इस प्रकार बन्द करके भी इन्द्रदेव निश्चिन्त न हुए, क्योंकि उन्हें सन्देह था कि शायद अभी कुछ आदमी और बचे हों जो मौका पाकर उन्हें या मालती को तंग करें- अस्तु वे होशियारी के साथ चारों तरफ देखते हुए पुनः उस बंगले की छत पर चले गये और वहाँ पहुँचते ही एक अद्भुत और विचित्र तमाशा देखा.

छत पर चारों तरफ सन्नाटा था मगर पूरब की तरफ से किसी तरह की आहट मिल रही थी.

अस्तु इन्द्रदेव की निगाह उधर ही को घूम गई और उस बंगले पर जा पहुँची जिसे हम लोग अब तक बन्दरों वाले बंगले के नाम से पुकारते चले आये हैं.

पाठकों को मालूम होगा कि उसकी छत पर किसी धातु के बने हुए कई बन्दर थे जो कभी - कभी विचित्र प्रकार की हरकतें कियाकरते थे.

इस समय इन्द्रदेव ने देखा कि वे बन्दर उस बंगले के बीचोंबीच की एक ऊंची छत पर इकट्ठे हुए भए हैं और उस पर खड़ी एक औरत के चारों तरफ विचित्र प्रकार से उछल - कूद मचा रहे हैं.

थोड़ा ही गौर करने से इन्हें मालूम हो गया कि वे बन्दर कवायद कर रहे हैं और उन्हीं में से एक सरदारी के तौर पर उस औरत के सामने खड़े होकर उन बाकी बन्दरों से कवायद करा रहा है।

यद्यपि आज से पहिले भी सैकड़ों बार इन्द्रदेव उन बन्दरों का विचित्र तमाशा देख चुके थे पर आज की इस कवायद में कुछ ऐसी विचित्रता थी और उन बन्दरों की उछल - कूद कुछ ऐसी हँसी पैदा करने वाली थी कि इन्द्रदेव अपने को रोक न सके और मजबूरन हँस पड़े.

परन्तु तुरन्त ही इन्द्रदेव ने अपने को सम्हाला और तब उन्हें यह जानने की फिक्र हुई कि वह औरत कौन है जो उन बन्दरों के बीच में बेखटके खड़ी हुई बल्कि ताली बजा कर हँसती हुई उनकी इस विचित्र उछल - कूद को देख रही है.

वह बंगला यहाँ से बहुत ज्यादा दूर तो न था पर इतना नजदीक भी न था कि उसकी छत पर खड़े किसी नये आदमी की सूरत - शक्ल बखूबी देखी जा सके, अस्तु कुछ देर तक गौर के साथ देखने पर भी इन्द्रदेव यह न पहिचान सके कि वह कौन औरत है, अस्तु वे कुछ सोचते हुए छत के नीचे उतरे और किसी कोठरी में घुस गये.

थोड़ी देर बाद जब वे लौटे उनके हाथ में एक मोटा शीशा था जिसे आँखों के सामने रखने से दूर तक की चीजें साफ दिखाई पड़ती थीं.

इस शीशे की मदद से उस औरत को बखूबी देख और पहिचान सकेंगे ऐसा इन्द्रदेव का विश्वास था पर अफसोस, अब उन्होंने उस बन्दरों वाले बंगले की तरफ निगाह की तो न उस औरत को वहाँ पाया और न उन बन्दरों ही की करामात देखी, सब - के - सब अपनी जगह पर पुन:

पत्थर की मूरती की तरह बैठे हुए थे और उस औरत का कहीं पता न था.

न जाने कुछ ही सायतों के बीच में वह कहाँ या किधर चली गई थी! बड़ी देर तक इन्द्रदेव उस शीशे की मदद से दूर - दूर तक चारों तरफ उस घाटी और उसमें की इमारतों पर निगाह डालते रहे पर न तो वह औरत ही कहीं दिखाई दी और न किसी दूसरे आदमी पर निगाह पड़ी.

लाचार वे वहाँ से हटे और बहुत सी बातें सोचते हुए छत के नीचे उतर कर उस कमरे में पहुंचे जहाँ मालती को अलमारी के अन्दर बन्द कर गये थे.

उस कमरे में घुसते ही यह देख कर उनका कलेजा धड़क उठा कि उस अलमारी के दोनों पल्ले खुले हुए हैं और मालती का कहीं पता नहीं है.

वे झपट कर उस जगह पहुँचे.

देखा कि अलमारी बिल्कुल खाली थी। , हाँ, उसके नीचे जमीन पर एक कागज का टुकड़ा पड़ा हुआ अवश्य दिखाई दिया जिसे इन्द्रदेव ने उठा लिया और पड़ा.

मोटे - मोटे हर्फों में लाल स्याही से यह लिखा हुआ था:

" आखिर क़म्बख्त मालती मेरे हाथ लगी.

मुझसे बच कर वह जा ही कहाँ सकती थी.

इन्द्रदेव, तुम अपनी तिलिस्मी ताकत पर भूले हुए पर हो पर समझ रखो कि तुम्हारा ' गुरु - घल्टाल ' आ पहुँचा! बस पहिचान जाओ और अपने को बचाओ, इस समय तो मैं केवल मालती और लोहगड़ी की ताली लिए जाता हूँ पर मेरा दूसरा वार तुम्हीं पर होगा.

वही- तिलिस्मी शैतान.

" यह विचित्र पत्र पा और खास कर यह देख कि वह गठरी जिसमें लोहगड़ी की ताली तथा और सब सामान था इसमें नहीं है, इन्द्रदेव ताज्जुब में पड़ गये और बहुत देर के लिए न जाने किस गौर में डूब गए.

न जाने यह तिलिस्मी शैतान क्या बला था जिसने उन्हें इतनी फिक्र में डाल दिया कि तनोबदन की सुध भुला दी.

देर तक वे इसी तरह सोच में डूबे रहे मगर एक खटके की आवाज ने उन्हें चौका दिया और घूम कर देखने से उन्हें मालूम हुआ कि उस कोठरी का दरवाजा जिसमें कुछ ही देर पहिले वे उन बदमाशों के सरदार और उसके साथी को बन्द कर चुके थे, आप से आप खुल गया.

इन्द्रदेव को गुमान हुआ कि शायद उसमें से कोई दुश्मन आकर हमला करेगा और उन्हें नुकसान पहुंचावेगा पर ऐसा न हुआ.

वह कोठरी बिल्कुल खाली थी, यहाँ तक कि उसमें वे दोनों आदमी भी नहीं दिखाई पड़ रहे थे जिन्हें कुछ देर पहिले उन्होंने बन्द कियाथा.

बहुत कोशिश करके इन्द्रदेव ने उन खयालों को अपने से दूर कियाऔर यह कहते हुए वहाँ से हटे, “ भला बे शैतान! चाहे तू कोई भी क्यों न हो पर मैं तुझसे टकर जरूर लूँगा! " दो - चार कोठरियों में घूमने के बाद उन्हें मालूम हो गया कि वह तिलिस्मी शैतान उन सब आदमियों को छुड़ा ले गया जिन्हें कुछ ही देर पहिले उन्होंने बन्द कियाथा अस्तु फिर विशेष जाँच करने की जरूरत न समझ इन्द्रदेव उस बंगले के बाहर निकल आये और चारों तरफ गौर से देखते हुए उसी बन्दरों वाले बंगले की तरफ बड़े, रास्ते में कहीं किसी आदमी की सूरत उन्हें दिखाई न पड़ी और वे बेखटके उस जगह पहुँच गये.

पतली खूबसूरत सीड़ियों के जरिये चढ़ कर बंगले के सदर दरवाजे के पास पहुंचे और किसी तर्कीब से उसे खोल ऊपर चले गये.

अन्दर जाकर दरवाजा उन्होंने पुनः बन्द कर लिया.

यह एक बड़ा क़मरा था जिसमें बैठने के लिए बहुत से कौंच और कुर्सियाँ आदि रक्खी हुई थीं.

किसी तरह की खास सजावट इसमें न थी और यह बिल्कुल सादे ढंग का था.

इसमें तीनों तरफ कई दरवाजे थे जिनमें से बाई तरफ का दरवाजा खुला था.

इन्द्रदेव उसी दरवाजे से अन्दर घुस गये और तरह - तरह के विचित्र सामानों से सजे हुए दूसरे कमरे में पहुँचे.

पाठक, इस कमरे का हाल विशेष रूप से लिखने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप एक बार पहिले भी भूतनाथ के साथ इसमें उस समय आ चुके हैं जब वह मेघराज का पीछा करता हुआ प्रभाकरसिंह की सूरत बना इस घाटी में घुसा था.

इसी क़मरे में नकली जमना से उसकी मुलाकात हुई थी और यहीं पहुँच कर बेतरह झमेले में वह पड़ गया था ', अस्तु इस जगह के सामानों का हाल आपको बाखूबी मालूम है जिससे उसके दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं है.

इन्द्रदेव के कमरे में घुसने के साथ ही सामने कोने में खड़ी एक शीशे की पुतली बड़ी तेजी के साथ चक्कर खाने लगी.

इन्द्रदेव ने यह देख दरबाजे के बगल में बने एक आले में हाथ डाल कोई खटका दबा दिया जिससे उस पुतली का घूमना बन्द हो गया और साथ ही सामने की दीवार में एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

इन्द्रदेव उस दरवाजे की राह आगे आने वाली कोठरी में चले गये और अपने पीछे के दरवाजे को किसी तर्कीब से बन्द करते गये.

इस कोठरी में बन्द इन्द्रदेव ठहरे नहीं बल्कि एक गुप्त दरवाजे की राह बगल की एक दूसरी कोठरी में होते हुए सीढ़ियाँ पार कर नीचे के एक ऐसे कमरे में पहुँचे जो बहुत बड़ा था और जिसके बीच का हिस्सा तरह - तरह के कल - पुरजों तथा विचित्र - सामानों से भरा हुआ था.

चारों तरफ बने कई रोशनदान से काफी हवा और रोशनी आ रही थी जिससे वहाँ की हर चीज साफ दिखाई पड़ रही थी। .

इन्द्रदेव ने कमरे में पहुंचते ही यहाँ के कल - पुर्जी में से एक को छेड़ दिया जिसके साथ ही कुछ पुरजे तथा पहिए तेजी के साथ घूमने लग गये और एक तरह की आवाज, जो

वास्तव में पुरजों के घूमने ही से पैदा हुई थी, उस कमरे में गूंज उठी.

१.

देखिये भूतनाथ आठवाँ भाग, अन्तिम बयान.

इन्द्रदेव ने पुन:

किसी दूसरे पुरजे को हिलाया, और भी कई कलपुर्जे घूमने लगे और आबाज की तेजी बढ़ गई.

इसी तरह धीरे - धीरे इन्द्रदेव की करतूत से उसे बड़े कमरे में जितने कल - पुरजे थे सभी चलने लगे और आवाज इतनी जोर से होने लगी कि कान के परदे फटने लगे.

इतना कर इन्द्रदेव अलग हो गये और कुछ खुशी भरी आवाज के साथ बोले- “ अब कोई माई का लाल ऐसा नहीं है जो घाटी के किसी भी दरवाजे को खोल सके.

भीतर से बाहर जा सके या बाहर से भीतर आ सके.

मगर इस काम का नतीजा तभी निकलेगा जब कि वह कम्बख्त शैतान और उसकी मण्डली अभी तक इस घाटी में हो, अगर वे सब निकल गये होंगे तो मेरी कोशिश बिल्कुल फजूल होगी.

खैर अब यह जानना चाहिए कि इस घाटी में कहाँ पर कौन - कौन है और यह बात इन्द्र मण्डल ' में गए बिना मालूम न होगी! " इन्द्रदेव उस जगह से हटे और पूरब की तरफ दीवार के पास पहुंचे जिसमें तीन बड़े दरवाजे बने हुए थे.

इनमें से बीच वाले दरवाजे को उन्होंने किसी तर्कीब से खोलना चाहा पर कई बार कोशिश करने पर भी वह न खुला जिससे वे बड़े तरदुद में पड़ गए पर फिर तुरन्त ही इसका कारण उनकी समझ में आ गया और वे हँस कर बोले, " ओहो, मैंने स्वयं ही तो सब दरवाजों का खुलना रोक दिया, वे खुल ही क्योंकर सकते हैं! अत:

इसे खोलने के लिए दूसरी ही चीज करनी होर्ग !! इन्द्रदेव ने अपने गले के साथ ताबीज की तरह लटकती हुई एक छोटी - सी ताली निकाल ली जो एक ही हीरे को काट कर बनाई गई थी.

यह कीमती ताली खास जमानिया तिलिस्म के दारोगा के लिए बनाई गई थी और इसमें यह कुदरत थी कि तिलिस्म के किसी भाग के किसी भी ताले को जब हम चाहें खोल सकती थी.

इन्द्रदेव को दारोगा होने के कारण बतौर धरोहर के यह ताली मिली थी, इसे उन्हें हमेशा अपने गले में पहिने रहना पड़ता था.

मगर साथ ही यह बात भी थी कि इसका इस्तेमाल केवल बहुत ही खास मौकों पर छोड़ कर हर समय करने की सख्त मुमानियत थी और इसकी मदद से किसी कैदी को निकाल देने की बिल्कुल इजाजत त थी.

इस समय इन्द्रदेव ने इसी ताली से काम लिया और इसकी मदद से दरवाजा खोल डाला.

पर कमरे के अन्दर घुसते ही उनको एक ऐसी भयानक चीज दिखाई पड़ी कि उन्हें रोमांच हो गया और आप से आप उनके मुँह से एक चीख निकल गई, वह भयानक चीज क्या थी?

वह एक कटा हुआ सिर था जो इस कमरे के बीचोंबीच में एक संगमरमर की चौकी पर रखा हुआ था.

लहू से तमाम चौकी और उसके नीचे की जमीन तर हो रही थी और सिर के लम्बे तथा लहू से सने हुए बालों ने चेहरे पर पड़ कर और भी भयानक बना रखा था.

दसवा ब्यान।

आज शुक्ल पक्ष की एकादशी है.

रात आधी के करीब बीत चुकी है और चन्द्रदेव ने अपनी शीतल किरणों से जंगल, मैदान और पहाड़ों में एक अजीब सुहावना दृश्य पैदा कर रखा है जिसे घण्टों तक देखने पर भी मन नहीं भर सकता.

अजायबघर के पास वाले जंगल के उस विचित्र कुएँ पर जिसमें पिछली एकादशी को भूतनाथ ने श्यामा के पीछे कूदकर एक विचित्र तमाशा देखा था आज एक पेड़ की आड़

में कई आदमी खड़े हैं जो बार - बार उस कुएँ की तरफ देखते और कुछ बातें करते जाते हैं.

रंग - ढंग और आकृति से उनका लक्ष्य वह औरत मालूम होती है जो अभी उस कुएँ के बाहर आई और जगत पर पैर लटका कर उदास भाव से बैठी गाल पर हाथ रखे सोच रही है.

पाठक इस औरत को पहिचानते हैं क्योंकि यह वही श्यामा है जिससे उस दिन भूतनाथ से भेंट हुई थी और जिसके पीछे पीछे भूतनाथ ने अपने को कुएँ में डाल दिया था.

१.

देखिए भूतनाथ बारहवाँ भाग, अन्तिम बयान.

यह तो हम नहीं कह सकते कि वह औरत क्या सोच रही है पर यकायक एक घोड़े के टापों की आवाज ने उसे चैतन्य जरूर कर दिया और उसने गर्दन उठाकर सामने की तरफ देखा जिधर से किसी सवार के आने की आहट मिल रही थी। .

थोड़ी देर में वह सवार भी उसी जगह आ पहुँचा और घोड़े से कूद लगाम एक डाल से लटकाने के बाद कुएँ के ऊपर पहुँचा.

श्यामा उस समय न जाने किस तकलीफ के कारण आँखें बन्द किए हुए धीरे - धीरे उच्सांसें और आहें ले रही थी.

किसी के कुएं पर आने की आहट पाकर उसने आँखें खोली और भूतनाथ को अपने सामने खड़ा देख एक हलकी चीख मारकर उसकी तरफ हाथ बड़ाया.

भूतनाथ भी उसे देख उसकी तरफ झपटा और दोनों एक - दूसरे के हाथों में गुथ गये.

श्यामा ने भूतनाथ से बहुत ही प्रेम दिखाया और भूतनाथ ने भी कोई कसर बाकी न रखी.

थोड़ी देर बाद दोनों प्रेमी अलग हुए और तब श्यामा ने भूतनाथ के हाथ को प्रेम के साथ दबाते हुए पूछा, " तुमने आने में कुछ देर कर दी.

" भूत:

हाँ, मैं बहुत दूर से आ रहा हूँ, देखो मेरे घोड़े की हालत क्या हो रही है, और अभी मुझे बहुत लम्बा सफर करना बाकी है.

श्यामा:

(गौर से देख कर) ओह! तुम तो एकदम पसीने से लथपथ हो रहे हो! जरूर बहुत दूर से आ रहे हो.

कहों मैं कपड़े उतार कर तकिया कर देती हूँ, पहिले ठंडे होओ और सुस्ताओ, तब कहीं जाने का नाम लेना.

इतना कह उस औरत ने कुएँ की तरफ मुँह करके कहा, " कूपदेव, एक पंखा तो देना! " आवाज के साथ ही कुएँ के अन्दर से एक हाथ निकला जिसकी उँगलियों में एक नाजुक सुनहरी डण्डी की पंखी थी.

श्यामा ने पंखी उस हाथ से ले ली और तब कहा, " ठंडा पानी भी लाना.

" हाथ नीचे चला गया और थोड़ी ही देर बाद जब पुन:

ऊपर आया तो उस पर चाँदी का कटोरा साफ ठण्डे पानी से भरा रक्खा नजर आया.

भूतनाथ ताज्जुब के साथ वह विचित्र हाल देख रहा था.

जिस समय श्यामा ने उस हाथ से कटोरा लेकर भूतनाथ की तरफ बड़ाया तो उसने कटोरा ले लिया और ताजुब के साथ कहा, " बड़ा विचित्र क्रूआ !! है ।

भूतनाथ की बात सुन श्यामा ने अफसोस के साथ एक लम्बी साँस खींची और कहा, “ हाँ, दूसरों की निगाह में यह विचित्र, अद्भुत, मनोरंजक सभी कुछ है, मगर मेरे लिए तो एक खौफनाक कैदखाना है.

महीने भर में केवल एक आज की रात को कुछ देर के लिए यह मेरे हुक्म में है, नहीं तो बराबर मैं ही इसके पंजे में रहती हूँ, खैर मेरे दोस्त, तुम मेरी फिक्र छोड़ो, कपड़े उतारो और ठण्डे होओ.

!! भूतनाथ के इनकार करने पर भी श्यामा ने उसके कपड़े उतार कर अलग कर दिये, ' ठण्डा पानी पीने को दिया और पंखा झलने लगी.

दोनों में बातचीत भी होने लगी.

भूत :

क्या आज भी तुम हर रोज की तरह कैदी ही हो?

श्यामा:

(अफसोस के साथ) क्यों इसमें भी कोई सन्देह है?

भूत ०:

मगर मेरी समझ में नहीं आता कि कुआं क्योंकर तुम पर कब्जा रख सकता है जबकि मैं तुम्हें हर तरह से स्वतंत्र देख रहा हूँ?

श्यामा:

मालूम होता है कि आप उस दिन की बात भूल गये जब उस बेरहम पंजे ने जबर्दस्ती मुझे खींचा था और आपका खंजर उस पर लग कर टूट गया था! भूत:

हाँ ठीक है, बेशक यह एक विचित्र कुआं है, मगर तुम इसके फंदे में पड़ क्योंकर गईं?

श्यामा:

जाने दो मेरे दोस्त! एक औरत का हाल जानने के लिए इतनी उत्कंठा तुम्हें क्यों है?

जब तुम उसे मुसीबत में बल्कि मौत के पंजे से छुड़ाने के लिए अपनी उँगली भी हिलाना पसन्द नहीं करते तब बेकार इस तरह के सवाल करने से सिवाय तकलीफ बढ़ने के और क्या हो सकता है?

भूत ०:

नहीं नहीं श्यामा, यहाँ तुम्हारा बहुत गलत ख्याल है.

मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हूँ, यहाँ तक कि तुम्हारे ही छुड़ाने का प्रबन्ध करने के लिए मैं अपने सबसे बड़े दुश्मन दारोगा के पास जाने को तैयार .

.

.

श्यामा:

(खुश होकर) हाँ, तुम दारोगा साहब के पास जाने को तैयार हो?

वे अगर चाहे तो मुझे सहज ही में इस मुसीबत से छुड़ा सकते हैं और अगर वे तुम्हारी मदद करें तो तुम बहुत ही सहज में यहाँ का तिलिस्म तोड़कर मुझे रिहाई दे सकते हो.

भूत ०:

यह तो उन्होंने नहीं कहा पर यह जरूर कहा कि मेरे पास एक छोटी किताब है जिसमें इस जगह का कुछ हाल लिखा हुआ है.

यह किताब पड़कर अगर कुछ काम चल जाय तो ठीक ही हैं नहीं तो बिना राजा गोपालसिंह की मदद के कुछ नहीं हो सकता.

श्यामा:

(क़ाँप कर) गोपालसिंह! अरे वह तो बड़े ही दुष्ट हैं, उसी ने .

.

.

खैर वह किताब तुम्हें देने का वादा दारोगा साहब ने कियाहै?

भूत:

केवल वादा ही नहीं किया बल्कि किताब मुझे दे भी दी है, इतना कह भूतनाथ ने अपना बटुआ उठा लिया जो सामने रखा हुआ था और उसमें से रेशमी कपड़े में लपेटी हुई एक छोटी किताब निकालकर श्यामा के हाथ पर रख दी.

उस किताब को देखते ही श्यामा ने खुश होकर भूतनाथ के गले में हाथ डाल दिया और कहा, " बस मेरे दोस्त! इसी किताब की मुझे जरूरत थी.

इसकी मदद से तुम अगर चाहो तो बहुत जल्द मुझे छुड़ा सकोगे.

(कुएँ की तरफ देख कर) यह जालिम कैदखाना अब मुझे ज्यादा दिनों तक तकलीफ न दे सकेगा.

" मानों इस बात के जबाब ही में कुएँ के अन्दर से शंख बजने की आवाज आई जिसे सुनते ही श्यामा कॉप उठी.

उसने फुरती से वह किताब भूतनाथ के हवाले कर दी और कहा, “ मुझे अपने कैदखाने में जाने का हुक्म हो गया - अब मैं बाहर नहीं रह सकती.

तुम यह किताब लो, इसमें इस जगह का सब हाल लिखा है.

जब तुम्हें फुरसत हो या जब तुम्हें इस बेबस की याद आवे तो इसी जगह आना, यह किताब तुम्हें रास्ता बतायेगी.

इतना कह श्यामा उठने लगी मगर भूतनाथ ने हाथ पकड़ कर उसे रोका और कहा, " ठहरों और मेरी दो बातें सुनकर जाओ.

" !!

श्यामा:

(बैठ कर) कहो, मगर जल्दी कहो.

भूत:

अगर मैं तुम्हें छुड़ाना चाहूँ तो मुझे क्या करना होगा?

श्यामा:

इस किताब को दो - तीन बार पड़ जाने से तुम्हें स्वयं सब हाल मालूम हो जाएगा.

भूत:

खैर, मगर मैं चाहता हूँ कि पहिले तुम्हारा हाल सुन लूं.

श्यामा:

क्यों?

(कुछ चुप रह कर) अच्छा ठीक है, मैं समझ गई! तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं, तुम शायद समझ रहे हो कि मैं कोई चालाक औरत या ऐयार हूँ और तुम्हें धोखे में डाल कर अपना कोई काम निकालना चाहती हूँ! अच्छी बात है मेरे दोस्त, तुम चाहे मुझे जो कुछ

समझो पर सिर्फ कभी - कभी याद करते रहो यही मेरी प्रार्थना है, बस और मैं कुछ भी नहीं चाहती.

भूत :

नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है, मैं तो .

.

श्यामा:

बस - बस अब झूठी बातें न करो! जो तुम्हारे दिल में था मैं समझ गई.

अब तुम्हें कुछ भी तकलीफ करने की जरूरत नहीं-- तुम्हें मुनासिब है कि यह किताब जिससे लाए हो उसी को वापस कर दो और बेफिकी के साथ नागर और मनोरमा की सोहबत का मजा उठाते हुए आराम की जिन्दगी बसर करो.

फजूल एक वे - जान - पहिचान की अजनबी औरत के लिए क़ष्ठ क्यों उठाओगे! मैं जाती हूँ मगर तुम्हारी बेबफाई की याद अपने दिल में लिए जाती हूँ, इतना कह श्यामा उठ खड़ी हुई और कुएँ की तरफ लपकी पर भूतनाथ ने पुन:

उसे रोका और कहा, " तुम फजूल मुझे ऐव लगा रही हो.

मैं जरूर तुम्हारी मदद करूंगा और तुम्हें इस तिलिस्म से छुड़ाऊँगा! तुम ही जरा सोचो कि अगर मुझे तुम्हें छुड़ाना मंजूर न होता तो क्यों तुम्हारे लिए ऐसे आदमी की मदद चाहता जिसका मुंह देखना भी मंजूर न था! अफसोस की बात है कि तुम बिना मेरा मतलब समझे ही गुस्से में आ रही हो और मुझ पर झूठा इलजाम लगा रही हो! "
श्यामा:

(ठंडी होकर) माफ करो, मुझसे भूल हुई, तुम बेशक मेरे खैरखाह हो इसमें शक नहीं है.

मैं अपना सब हाल तुम्हें सुनाऊँगी मगर इस वक्त नहीं-- जब तुम मुझे स्वतंत्र कर दोगे तब, इस समय मौका नहीं है.

भूत ०:

तो मैं किस दिन आऊँ?

श्यामा:

जब तुम्हारी इच्छा हो आ सकते हो, पर आना अकेले आना और अपने हाथ कोई हरवा जरूर लाना.

भूत ०:

मैं तो आज ही चलता पर इस समय बहुत ही जरूरी काम से कहीं जा रहा हूँ.

रुकने से बहुत हर्ज होगा, इसलिए आज से एक सप्ताह .

.

इसी समय कुएं के अन्दर से पुनः शंख बजने की आवाज आई जिसे सुनते श्यामा उठ खड़ी हुई और यह कहती हुई कि ' मैं जाती हूँ कुएँ के पास जाकर उसमें कूद पड़ी.

भूतनाथ कुछ देर तक वहाँ बैठा न जाने क्या - क्या सोचता रहा.

इसके बाद वह उठा और कुएं के पास जाकर अन्दर की तरफ झाँकने लगा परन्तु उसी समय उसे अपने पीछे की कुछ आहट मालूम पड़ी और जब उसने घूम कर देखा तो पाँच आदमियों को एक - एक करके सीड़ी की राह उस कुएँ की जगत पर चढ़ते हुए पाया.

ये पाँचों ही हाथ - पाँव से बहुत मजबूत कद्दावर और हरवों से अच्छी तरह लैस थे.

भूतनाथ उन्हें देख कर यद्यपि डरा तो नहीं पर कुछ चौकन्ना अवश्य हुआ और कुएं के पास से एक ओर हट कर बड़े गौर से उन आदमियों की तरफ देखने लगा.

हम नहीं कह सकते कि ये नये आने वाले पाँचों आदमी वे ही थे या कोई दूसरे जो पहिले जंगल में दिखाई पड़े थे और न यही कह सकते हैं कि उनकी सूरत - शक्ल कैसी थी क्योंकि इन सबों ही ने अपनी - अपनी सूरत को नकाब के अन्दर डॉक रखा था.

भूतनाथ को सन्देह था कि ये लोग उसे छेड़ेंगे या उससे कुछ बातचीत करेंगे पर उन्होंने भूतनाथ की तरफ निगाह उठाकर भी न देखा और सब के सब उसी कूएँ के पास हो कर नीचे की तरफ झाँकने और आपस में कुछ बातें करने लगे.

इस नीयत से कि शायद बातचीत से उन्हें पहिचान सक्ने या इन लोगों के यहाँ आने का कारण जान सके, भूतनाथ बड़े गौर से इन सभों की बातें सुनने लगा, पर उसकी समझ में कुछ भी न आया क्योंकि वे लोग जिस बिचित्र भाषा में बोल रहे थे उसका एक शब्द भी भूतनाथ समझ न सकता था.

थोड़ी देर बाद यकायक कुएँ के अन्दर से शंख की आवाज आई जिसे सुनते ही वे सब चौकन्ने हो गये.

उनमें से एक ने जो सरदार मालूम होता था अपने एक साथी की तरफ इशारा करके कुछ कहा जिसे सुनते ही उसने सलाम किया और कुएँ से नीचे उतर किसी तरफ को रवाना हो गया.

थोड़ी ही देर बाद भूतनाथ ने उसे एक बड़ी गठरी पीठ पर लादे वापस आते देखा जिसके विषय में उसकी चालाक निगाहों ने तुरन्त बता दिया कि इसमें कोई आदमी या औरत बँधी है.

दो आदमियों ने वह गठरी उसकी पीठ पर से उतारी और कूएँ के पास ले आये.

सरदार ने कुएँ से झाँका और अपनी विचित्र भाषा में कुछ कहा जिसके जवाब में भीतर से पुनः शंख की आवाज आई, आवाज सुनते ही उन दोनों ने यह गठरी उसी तरह बँधी - बधाई कुएं में फेंक दी और उसके बाद सबके सब कूएँ से उतर कर जिधर से आये थे उधर ही को चल पड़े, जाती समय भी भूतनाथ की तरफ किसी ने आँख उठाकर न देखा.

ताज्जुब के साथ भूतनाथ यह सब हाल देख रहा था.

वे आदमी कौन थे, गठरी में कौन बँधा था, यह कुआं कैसा है?

आदि बातें वह बहुत देर तक सोचता रहा.

अन्त को उसका मन न माना, उसने अपने बटुए में से सामान निकाल कर रोशनी की और उसकी मदद से वह किताब जिसे दारोगा से पाया था खोल कर पढ़ने लगा.

उलट - पुलट कर जल्दी - जल्दी कई जगह से पड़ा और तब रोशनी बुझा बटुए में रख तथा उस किताब को कमर में बाँध क़मन्द हाथ में ली तब एक निगाह चारों तरफ देख

और सन्नाटा पा कूएँ के पास पहुँचा.

कमन्द का एक सिरा पत्थर के खम्भे के साथ बाँध दिया और दूसरा कुएँ में लटका दिया, कुछ देर तक खड़ा सोचता रहा और तब क़मन्द के सहारे कुएँ में उतर गया.

भूतनाथ के जाने के कुछ ही देर बाद न जाने कहाँ से वे पाँचों आदमी पुन:

उसी जगह आ मौजूद हुए.

सरदार ने झाँककर कुएँ के अन्दर देखा, कुछ हलकी - हलकी आवाज आ रही थी जिस पर गौर कियाऔर तब अपने आदमियों से कुछ बातें कीं, इसके बाद एक - एक करके वे चारों उसी कमन्द के सहारे कुएँ के अन्दर उतर गये, केवल वह सरदार बाहर रह गया जिसने क़मन्द को खम्भे से खोल लिया और कमर में लपेट लेने के बाद हँसकर कहा, " वह मारा!

अब ये बचाजी कहाँ जा सकते हैं.

इनकी सब ऐयारी ताक पर रह जायगी और हम लोग अपना काम कर गुजरेंगे.

" इतना कह वह फिर जोर से हँसा और तब स्वयं भी उसी कुएँ में कूद पड़ा.

।

।

तेरहवाँ भाग समाप्त ।

चौदहवाँ भाग

पहला व्यान।

भूतनाथ ने सोचा था कि पहिले की तरह इस बार भी वह कूएँ में बहुत थोड़ा ही पानी पायेगा मगर उसका यह खयाल गलत निकला.

कुएँ के अन्दर उतरते ही उसे मालूम हो गया कि इस समय इसमें अथाह पानी है.

यह जान कर एक बार तो घबड़ा गया मगर तुरन्त ही उसने होश - हवास दुरुस्त किए और पानी की हालत पर गौर कर सोचने लगा कि अब क्यां करना चाहिए.

चन्द्रमा की किरणें आड़ी होकर जल के पास तक पहुँच रही थीं जिससे वहाँ का अंधकार कुछ कम हो रहा था.

इसी मधिम रोशनी में भूतनाथ चारों तरफ निगाह दौड़ा कर देखने लगा कि किसी जगह कोई कड़ा या कुण्डा या आला दिखाई पड़ जाय तो वह उसके सहारे रुके और तब सोचे कि क्या करना उचित होगा.

सब तरफ घूमती हुई उसकी निगाह लोहे के एक मोटे कुण्डे की तरफ गई जो जल से लगभग हाथ भर की ऊँचाई पर दीवार में गड़ा हुआ था.

भूतनाथ इसके पास पहुंचा और कुण्डा पकड़ कर सुस्ताने लगा.

उसी समय ऊपर की तरफ देखने से उसे यह भी मालूम हुआ था कि हाथ - हाथ डेढ़ - डेढ़ हाथ के फासले पर ऐसे ही कुण्डे बराबर लगे हुए हैं और अगर वह चाहे तो उनकी मदद से कुए के बाहर निकल जा सकता है.

यह जान उसे कुछ धीरज हुआ और वह इस लायक हुआ कि अब क्या करना चाहिए, इसे सोच सके.

भूतनाथ का खयाल था कि वह इस जगह या तो कैदी श्यामा को देखेगा अथवा उस गठरी को पावेगा जो उन आदमियों ने कुछ देर पहिले इस कूएँ में फेंकी थी पर वह सब कुछ भी न देख बल्कि कूएँ की हालत को बिल्कुल ही बदली हुई पा उसे ताज्जुब था.

उसे विश्वास हो गया कि जरूर यह कुआं तिलिस्मी है और इसकी यह हालत किसी भेद से सम्बन्ध रखती है.

वह सोचने लगा कि यह भेद क्या हो सकता है?

कुएँ के अंदर कूदने के पहिले फुर्ती - फुर्ती उसने उस तिलिस्मी किताब के दो चार पृष्ठ पड़े थे जो वह दारोगा से मांग लाया था और जो कुछ पड़ा था वह उसे याद भी था.

अस्तु वह उसी के मुताबिक कार्रवाई करने लगा.

चन्द्रमा तेजी के साथ हट रहे थे और कुएँ में पड़ती हुई उसकी रोशनी कुछ ही पलों की मेहमान थी अस्तु भूतनाथ ने सोच - विचार में समय नष्ठ करना मुनासिब न समझा.

जिस कुन्डे को यह था मे हुए था उसके ठीक सामने उसने निगाह की और गौर करने से जल से कोई दो हाथ की ऊंचाई पर दीवार में बनी यह एक मूरत देखी.

कुंडा छोड़ भूतनाथ तैरता हुआ उस मूरत के नीचे पहुंचा और यह कोशिश करने लगा कि उछल कर उस मूरत को छुए, पर यह कुछ आसान बात न थी.

चारों तरफ की दीवारें एकदम चिकनी थीं जिनसे किसी तरह का सहारा मिलना असम्भव था और मूरत की ऊंचाई इतनी क़म न थी कि जल में तैरता हुआ कोई आदमी साधारण रीति से छू सके.

भूतनाथ पुन:

उछल - उछल कर उसे पकड़ने की चेष्ठा करने लगा.

यकायक पास ही कहीं शंख के बजने की आवाज ने भूतनाथ का ध्यान बँटा दिया और वह रुक कर गौर करने लगा कि यह आवाज कहाँ से आई परन्तु कुछ समझ में न आया.

मगर इसके साथ ही यह देख भूतनाथ को ताज्जुब और घबराहट हुई कि कुएँ का जल तेजी के साथ घट रहा है.

उसने मुरत को पकड़ने का ख्याल छोड़ दिया और पुन:

तैर कर उस कुन्डे के पास आया जिसे पहिले पकड़े हुए था अफसोस वह उस कुन्डे को भी छु न सका क्योंकि इस बीच में जल हाथ - डेढ़ हाथ के करीब क़म हो गया था और वह कुंडा भी अब भूतनाथ की पहुँच के बाहर हो रहा था.

अब भूतनाथ की घबड़ाहट बढ़ गई और उसके मुंह से निकला- " व्यर्थ इस जंजाल में आ फंसे! " उसी समय मानों भूतनाथ की बचीखुची आशा को भी भंग करने की नीयत से चन्द्रमा एक काले बादल के टुकड़े के पीछे हो गया और कुएँ में घोर अंधकार छा गया.

यकायक जल में खलखलाहट होने लगी और ऐसा जान पड़ा मानों उसका पानी किसी तरफ को निकला जा रहा हो क्योंकि जल में एक तरह का खिंचाव - सा पैदा हो गया था.

भूतनाथ ने बहुत जोर मारा मगर वह बच न सका और अन्त में खुद भी खिंचाव में पड़ कर एक तरफ को बह चला.

अंधेरे में अंदाज ही से मालूम हुआ कि वह किसी सुरंग के अन्दर घुस रहा है जो कूएँ के बगली दीवार में यकायक खुल गई है और यह जान उसकी बेचैनी और घबराहट इस कदर बढ़ी कि वह एक तरह बदहवास - सा हो गया.

जब भूतनाथ के होश दुरुस्त हुए उसने अपने को कुछ - कुछ नएँ जैसे एक ऐसे स्थान में पाया जिसके चारों तरफ ऊंची दीवारें और बीच में आसमान नजर आ रहा था.

बगल में छोटे नाले के रूप की पक्की और बड़ी नाली दिखाई पड़ रही थी और सामने की तरफ दीवार में शायद पानी के निकल जाने के ही लिए रास्ता बना हुआ था मगर लोहे के मोटे छड़ों की जाली लगी रहने के ही लिए रास्ते से किसी आदमी का आना या निकल जाना असम्भव था.

चारों तरफ की दीवारें भी इतनी ऊंची थीं कि उनको लांघ कर पार हो जाना भी कठिन था.

भूतनाथ को गुमान हुआ कि अगर उसके पास क़मन्द होगा तो उसके जरिये वह उन दीवारों को लांघ सकता था मगर अफसोस अपनी क़मन्द तो वह कुएँ के खंभे से ही बँधी छोड़ आया था.

होश में आते ही पहिले तो भूतनाथ ने अपने बटुए और हथियारों को टटोला और सब कुछ दुरुस्त पाकर अपने गीले कपड़े उतार दिये.

उसके बटुए में एक रोगनी कपड़े का टुकड़ा मौजूद था जिस पर पानी का असर नहीं होता था, उसे निकाल कर पहिन लिया और कपड़ा निचोड़ कर सूखने को फैला देने के बाद वह इस फिक्र में पड़ा कि देखें इस विचित्र स्थान के बाहर जाने की क्या तरकीब निकल सकती है। आसमान की तरफ निगाह करने से उसे मालूम हो गया कि कुएँ में कूदने और बेहोश होकर इस जगह तक जाने के बीच में ज्यादे देर नहीं हुई है क्योंकि चन्द्रदेव अभी तक आकाश में विराजते हुए उस स्थान को उजाला क़िये हुए थे.

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और चारों तरफ घूम - घूम कर देखने लगा.

सब तरफ ऊंची संगीन दीवारें थीं जिनके बीचोंबीच बढ़ पत्थर का फर्श था जिस पर उसने अपने को पाया था.

बस सिवाय इसके और उन नालियों को छोड़ के जिनका हाल हम ऊपर लिख आये हैं, उस स्थान में और कुछ भी न था, न तो कहीं कोई दरवाजा था, न खिड़की, न आला.

न मोखा.

अच्छी तरह गौर से सब तरफ देखने बल्कि दीवारों को भी खंजर के कब्जे से ठोंक कर जाँच लेने के बाद भूतनाथ को निश्चय हो गया कि इस जगह से निकल जाने के लिए सिबाय क़मन्द के और कोई रास्ता नहीं हो सकता.

वह अपने छूटने से निराश हो गया और एक जगह बैठ गया.

परन्तु इस तरह बेकार बैठना भी उसे भला न मालूम हुआ.

थोड़ी देर बाद उठा और बटुए में से सामान निकाल उसने रोशनी की, इसके बाद वह किताब निकाली जो श्यामा को छुड़ाने की नीयत से वह दारोगा से मांग लाया था और उसे पड़ कर देखने लगा कि उसमें इस स्थान का कोई जिक्र या इसके बाहर होने की तरकीब लिखी है या नहीं, मगर समूची पुस्तक पड़ जाने पर भी उसे इस बात का कोई पता न लगा कि यह कौन - सी जगह है और रोशनी बुझा सिर पर हाथ रख बैठ गया.

धीरे - धीरे रात बीत गई और सुबह की सुफेदी चारों तरफ फैलने लगी.

पल पल पर भूतनाथ की घबराहट बढ़ती जाती थी.

बार - बार वह उठ कर चारों तरफ घूमता था.

कभी दीवारों को ठोंकता, कभी जमीन पर पैर पटकता, कभी उस जंगले को देखता जिसकी राह नाली का पानी आता था और कभी ऊपर की ओर निगाह फेरता, मगर किसी से कुछ फायदा न होता था.

आखिर थक कर और बिल्कुल ही लाचार होकर वह एक जगह बैठ गया और उसके मुंह से निकला, " बस हुआ.

अब मेरी जिन्दगी इसी तरह बीतेगी.

मालूम नहीं कुछ दाना - पानी भी मुझे मिलेगा या भूखे - प्यासे ही जान देना पड़ेगा.

" यकायक भूतनाथ के कानों में किसी तरह की आवाज आई, बह चैतन्य हो गया और साथ ही उसके मन में कुछ आशा का संचार हुआ.

वह उठ कर चारों तरफ देखने लगा और ऊपर की तरफ नजर घुमाते ही उसकी निगाह एक वृद्ध साधू पर पड़ी जो दीवार के बाहर सर निकाले नीचे की तरफ देख रहा था.

हम नहीं कह सकते कि भूतनाथ उस साधू को पहिचानता था या क्या बात थी पर उसे देखते ही उसने हाथ जोड़े और बड़ी नम्रता से बोला, " मुझसे क्या अपराध हुआ जो इस जगह कैद किया गया हूँ?

" साधू ने जवाब दिया, " तुम्हें कैद करने वाला मैं नहीं हूँ बल्कि कोई और ही है.

" भूत ०:

यदि ऐसी बात है तो कृपा कर मुझे यहाँ से छुटकारा दिलाइये.

साधू:

सो भी मैं नहीं कर सकता.

जिस जगह तुम हो वह एक तिलिस्मी कैदखाना है और वहाँ से निकलना सहज नहीं है.

भूत ०:

मेरी क़मन्द ऊपर ही छूट गई है नहीं तो मैं सहज ही में इस जगह से निकल जाता.

अगर आप कृपा कर एक क़मन्द मुझे दे सकें तो मैं अभी बाहर निकल जा सकता हूँ,
साधू:

(हंस कर) नहीं, तुम्हारा खयाल गलत है.

कमन्द तुम्हें इस जगह के बाहर नहीं कर सकती और न मेरे पास मौजूद ही है जो मैं तुम्हें दूं। भूत ०:

तब क्या मैं किसी तरह कैद से छुटकारा नहीं पा सकता?

साधू:

सिर्फ एक तर्कीब हो सकती है, अगर .

.

.

बात करते समय साधू महाराज इस तरह पर रुक गए मानों उन्हें अपने पीछे कोई आहट लगी हो.

उन्होंने सिर घुमा कर देखा और तुरन्त ही उनके चेहरे पर घबराहट के चिह्न दिखाई देने लगे.

उन्होंने हाथ के इशारे से भूतनाथ को ठहरने और चुप रहने को कहा और तुरंत ही वहाँ से हट कर कहीं चले गए भूतनाथ उनके लौट आने की राह देखता चुप हो रहा.

यकायक पुनः शंख बजने की आवाज हुई.

वह चौकन्ना हो गया और इसके साथ ही उसने पूरब तरफ की दीवार पर जमीन से पाँच - छः हाथ की ऊँचाई पर एक पत्थर की पटिया को पीछे हटते और उस जगह एक दरवाजा पैदा होते देखा.

वह ताज्जुब के साथ उधर देखने और साथ ही यह भी सोचने लगा कि इस खिड़की तक पहुंचने की अगर कोई सूरत निकल आवे तो शायद इस जगह से बाहर निकल जा सके.

यकायक उस खिड़की या दरवाजे के अन्दर से किसी औरत के चीखने की आवाज आई जिसने भूतनाथ को बेचैन कर दिया.

क्योंकि उसे संदेह हुआ कि यह आवाज श्यामा की है.

वह घबरा कर उधर देख रहा था कि उसने किसी औरत को भाग कर एक तरफ से दूसरी तरफ से जाते और तब उसके पीछे कई आदमियों को दौड़ाते देखा.

साथ ही उस खिड़की के अन्दर से तरह - तरह की आवाजें भी आने लगीं जिन्होंने भूतनाथ को बेचैन कर दिया और वह समझ गया कि कई शैतान किसी बेचारी औरत पर जुल्म कर रहे हैं भूतनाथ बेचैनी के साथ उस दरवाजे की तरफ देख ही रहा था कि ऊपर से पुनः कुछ आहट आई और उसने फिर साधु महाशय को झाँकते हुए पाया, साधू ने उस दरवाजे की तरफ ऊँगली से दिखाया और भूतनाथ को उसके अन्दर जाने और उस औरत की मदद करने का इशारा किया, साधू के हाथ में कोई चीज थी जो उन्होंने नीचे फेंक दी और तब तुरन्त वहाँ से हट गये.

भूतनाथ ने देखा कि वह एक मजबूत क़मन्द है, खुशी - खुशी भूतनाथ ने अपना सामान उठाया और अपने कपड़े (जो अब सूख गये थे) पहनने तथा बटुआ और हथियार इत्यादि बांधने के बाद हर तरह से लैस हो वह क़मन्द उस खिड़की में लगाई, उसे गुमान था कि शायद कोई उसे ऐसा करने से रोके मगर किसी ने भी उसके काम में बाधा न डाली और बात की बात में वह उस खिड़की तक पहुँच गया.

अब जिस जगह भूतनाथ ने अपने को पाया वह एक बड़ा कमरा था जिसमें चारों तरफ कई दरबाजे दिखाई पड़ रहे थे.

भूतनाथ को आशा थी कि वह औरत तथा वे आदमी वहीं होंगे पर ऐसा न था और यह स्थान एकदम खाली था.

वह खड़ा होकर ताज्जुब के साथ सोचने लगा कि वे लोग किधर गये.

उसे ज्यादा समय नष्ट करना न पड़ा और बगल के किसी स्थान से आती हुई कई आदमियों की बातचीत की आवाज उसके कान में पड़ी.

सुनते ही उसने खंजर हाथ में ले लिया और बेधड़क उस दरवाजे के अन्दर घुस गया जिसमें से आवाज आ रही थी, यहाँ पहुँचते ही उसे मालूम हो गया कि यह वही जगह है जहाँ पहिली बार आने पर उसने श्यामा को बेबसी की हालत में देखा था क्योंकि दीवार के साथ वह भयावती मूरत ज्यों - की - त्यों बैठी हुई थी, फर्क सिर्फ इतना ही था कि इस समय उसके दोनों हाथ खाली थे और कोई कैदी उनमें छटपटा न रहा था,

यह दृश्य देखते ही भूतनाथ ने कड़ककर आवाज दी, " बस खबरदार! इस औरत पर से अपना हाथ अभी हटा लो.

" उन आदमियों ने भी यह बात सुनी, साथ ही उनमें से एक जो सरदार मालूम होता था और अलग खड़ा था खंजर हाथ में लिए बड़ आया.

उसके साथियों ने भी उसका इशारा पा श्यामा को उसी तरह छोड़ दिया और भूतनाथ को चारों तरफ से घेर लिया.

दूसरा व्यान।

पाठक दारोगा को गहरे धोखे में डाल प्रभाकरसिंह सरयू को छुड़ा लाये और उसी के रथ पर सवार हो कहीं चल दिये.

समझते होंगे कि प्रभाकरसिंह सरयू को लिए सीधे इन्द्रदेव के डेरे पर जाँयगे.

मगर नहीं, इन्द्रदेव ने उन्हें विंदा करते समय इस बारे में खास हिदायत कर दी थी और कब क्या करना होगा यह अच्छी तरह समझा दिया था अस्तु रथ पर बैठते ही साधू बने हुए प्रभाकरसिंह ने रथबान को रथ शहर से बाहर ले चलने को कहा और आप चारों तरफ से पर्दा गिरा उसके अन्दर हो गए.

वहाँ बहुत गुप्त रीति से सरयू को अपना परिचय देने के बाद उन्होंने संक्षेप में सब हाल सुना दिया और यह भी कह दिया

कि इन्द्रदेव का कहना है कि जमानिया में दुश्मनों के जाल बेतरह फैले हुए हैं अस्तु सर्पू को छुड़ा कर तुम सीधे तिलिस्मी घाटी में चले जाना और उसे वहाँ छोड़ कर जब वापस आना तब मुझसे मिलना.

इसके लिए कई खास इन्तजाम भी वे कर चुके हैं, " सर्यु को ये बातें जान सन्तोष हो गया और रथवान को किसी प्रकार का संदेह न हो जाय इसका खयाल कर प्रभाकरसिंह ने भी इस समय उससे विशेष बातें करना उचित न जाना.

शहर के बाहर होते ही प्रभाकरसिंह ने रथ रोक्रबाया और सरयू को लेकर रथ से नीचे उतर पड़े, रथवान से रथ वापस ले जाने को कहा और जब तक वह आँखों के ओट न हो गया तब तक वहीं खड़े रहे.

इसके बाद उन्होंने जेब से सीटी निकाल कर बजाई जिसकी आवाज सुनते ही पेड़ों की आड़ में छिपा हुआ एक आदमी बाहर निकल आया और उन्हें सलाम कर खड़ा हो गया.

प्रभाकरसिंह ने पूछा, " रथ तैयार है?

" जिसके जबाब में वह बोला, “ जी हाँ, यहाँ से कुछ ही दूर पर है.

हुक्म हो तो ले आऊँ.

" प्रभाकरसिंह ने रथ लाने की आज्ञा दी और वह आदमी वहाँ से चला गया.

थोड़ी ही देर में दो मजबूत घोड़ों का एक हल्का रथ जिसे चार सबार घेरे हुए थे वहाँ आ पहुँचा, साथ - साथ वह आदमी था.

प्रभाकरसिंह ने सयुं को रथ पर सवार कराया और आप भी बैठ गये.

उस आदमी ने पूछा.

" मुझे क्या आज्ञा होती है ?

" जिसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने कहा, " तुम घर चले जाओ और इन्द्रदेवजी को खबर कर दो कि सब काम ठीक हो गया और हम लोग तिलिस्मी घाटी की ओर जा रहे

हैं.

" वह बहुत खूब ' कह सलाम कर वहाँ से हट गया और आज्ञा पाते ही रथ तेजी के साथ रवाना हुआ.

चारों सवार साथ - साथ जाने लगे.

इस समय रात आधी से ज्यादा जा चुकी थी.

कैद की मुसीबतों ने सरयू को बहुत ही क़मजोर कर दिया था.

कपड़े तथा बिछावन का पूरा इन्तजाम रथ में होने के कारण प्रभाकरसिंह ने उसे लेटा दिया और तब आप भी एक तरफ उठेग गये.

रात की ठंडी हवा आलस्य पैदा कर रही थी अस्तु थोड़ी देर बाद क़मजोर सयूं तो नींद में गाफिल हो गई और प्रभाकरसिंह को भी झपकी आने लगी.

रथ के यकायक रुक जाने से प्रभाकरसिंह को जिस समय चैतन्यता हुई उस समय यह देख उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि रथ एक सुनसान मैदान में खड़ा है और सिवाय हॉकने वाले के और किसी का भी वहाँ पता नहीं है.

उन्होंने चौंक कर पूछा.

“ यह क्या मामला है - रथ रुक्का क्यों है और हमारे सबार कहाँ है?

" रथवान बोला, " कई सवारों द्वारा पीछा किये जाने की आहट पा सवार जाँच करने के लिए गए मगर देर हो जाने पर भी अभी तक वापस नहीं लौटे.

" यह सुनते ही प्रभाकरसिंह को ताज्जुब हुआ.

वे कूद कर रथ के नीचे आ गए.

और चारों तरफ गौर से देखने के बाद बोले, ' वे लोग किधर गए हैं?

" रथबान ने पीछे की तरफ इशारा किया और कहा, " उधर ही से आहट आई थी और उधर ही हमारे सवार गए हैं.

" बहुत देर तक प्रभाकरसिंह गौर से चारों तरफ देखते और सुनते रहे पर न तो उन्हें अपने सवार ही कहीं दिखाई दिए और न किसी प्रकार की आहट ही मिली.

आखिर वे पुनः रथ पर सवार हो गए और हॉकने वाले से बोले, " तुम रथ बड़ाओ, वे लोग आते रहेंगे.

" हुक्म पा उसने घोड़ो पर चाबुक लगाई और रथ पुनः तेजी से जाने लगा.

घड़ी भर तक के जाने बाद हाँकने वाले ने पुनः बाग कड़ी की और घूम कर प्रभाकरसिंह से कहा, " सामने की तरफ कई सवार दिखाई पड़ रहे हैं, मुमकिन है कि हमारे दुश्मन हों.

यह सुन प्रभाकरसिंह तरदुद में पड़ गए.

वे स्वयं तो बहुत ही वीर और हिम्मतवर थे मगर इस समय क़मजोर सरयू को साथ लेकर किसी तरह के खतरे में पड़ना उन्हें मंजूर न था अस्तु कुछ सोच विचार कर बोले, " रथ बाईं तरफ मोड़ो और वह जो टीला दिखाई पड़ता है उसके पास चलो.

" जिस ढीले की तरफ उनका इशारा था वह वही था जिस पर लोहगढ़ी की इमारत थी और वह यहाँ से बहुत ज्यादा दूर भी न था.

जो हुक्म रथवान ने घोड़ों को उधर ही मोड़ा और सड़क छोड़ जंगल का रास्ता लिया, उस समय प्रभाकरसिंह ने देखा कि वे सबार जिनके दिखलाई पड़ने की वजह से उन्हें रास्त छोड़ना पड़ा था अपनी जगह ही रुक गए हैं बल्कि मालूम होता है आपस में कुछ सलाह कर रहे हैं.

तेजी से चल कर रथ शीघ्र ही टीले के नीचे आ पहुँचा.

जिधर से ऊपर चढ़ने का रास्ता था वहाँ पहुँच कर प्रभाकरसिंह ने रथ को रुकवाया और सरयू से जो आहट पाकर और किसी मुसीबत का ख्याल करके उठ बैठी थी। .

बोले, " मासी, मुझे दुश्मनों का कुछ संदेह हो रहा है ।

हमारे सवार जो साथ थे न जाने कहाँ चले गए है और अकेले इतना लम्बा रास्ता तय करना मुझे इस रात के समय उचित नहीं मालूम होता इसलिए मैं चाहता हूँ कि कुछ देर तक आपको (ऊपर की तरफ उँगली उठा कर) उस मकान में बैठा आऊं. और अपने

सवारों के आ जाने पर या सब तरह का सन्देह दूर होने पर यह सफर शुरू करूँ! " बेचारी सरयू! यह सुनते ही तुरन्त तैयार हो गई और प्रभाकरसिंह ने अपने हाथ का सहारा दे उसे नीचे उतारा तथा कुछ जरूरी सामान साथ में ले टीले पर चढ़े, रथवान से कहते गए, " रथ कहीं आड़ में खड़ा कर दो और जरा टोह लो कि वे लोग कौन हैं या हमारे सवार कहाँ चले गये.

" लोहगड़ी की इस विचित्र इमारत में पाठक कई बार हमारे साथ आ चुके हैं अस्तु इस जगह इसके बारे में कुछ लिखने की जरूरत नहीं है, सरयू को लिए हुए प्रभाकरसिंह उस टीले पर चड़ सीधे लोहगड़ी के अन्दर चले गए और उनका रथवान उनकी आज्ञानुसार रथ को पेड़ों की एक झुरमुट में छिपाने के बाद इस बात की टोह लेने निकला कि उसके साथ वाले सबार कहाँ चले गए.

रथवान के जाने के कुछ ही देर बाद एक आदमी जो न जाने कहाँ छिपा हुआ था उस जगह आ मौजूद हुआ.

पहिले तो उसने घूम - घूम कर चारों तरफ देखा और जब किसी को न पाया तो वह रथ के पास पहुंचा और उसे ले वहीं आ गया जहाँ रथ से उतर कर प्रभाकरसिंह सरयू के साथ टीले पर चढ़ गए थे.

थोड़ी देर बाद चार सवार भी उस जगह आ पहुँचे जिन्होंने इस नये आदमी से ऐयारी भाषा में कुछ बातें कीं और तब कायदे के साथ रथ के पीछे इस प्रकार खड़े हो गए मानों मालिक के आने का इन्तजार कर रहे हों.

लगभग एक घंटा बीत गया पर न तो प्रभाकरसिंह ही लोहगढ़ी के बाहर निकले और न उनका असली रथवान ही जो अपने साथियों को खोजने निकला था वापस लौटा.

रथ के पीछे खड़े सिपाहियों में यह देख धीरे - धीरे कानाफूसी होने लगी, अन्त में उनमें से एक जो सभों का सरदार मालूम होता था आगे बढ़कर रथवान के पास पहुंचा और ऐयारी भाषा में उससे बोला, “ मालूम होता है हम लोगों की मेहनत बेकार हो गई, न तो साधू महाराज ही लौटते दिखाई पड़ते हैं और न सयू का ही वापस आना सम्भव मालूम होता है.

फजूल ही इतना लड़े - झगड़े, उन सिपाहियों को कैद कियाऔर इतनी दूर तक रथ का पीछा कर चले आये.

" रथवान बने हुए आदमी ने यह सुन जवाब दिया, “ ताज्जुब तो यह है कि वह रथवान भी अभी तक नहीं लौटा जो अपने साथियों की टोह लेने निकला था.

न मालूम क्या मामला है! " दोनों में पुनः कुछ देर तक इसी तरह की बातें होती रही.

आखिर रथवान यह कर रथ से उतरा -- " तुम जरा घोड़ों को देखते रहो मैं टीले पर जाकर देखू शायद कुछ पता लगे, " और लपकता हुआ टीले पर चढ़ गया.

अभी वह इमारत से कुछ दूर ही था कि सामने से आते हुए वे ही बाबाजी (प्रभाकरसिंह) दिखाई पड़े जो उसे देखते ही बोले, " क्यों महाबीर, तुमने कुछ पता लगाया! और हमारे सवार वापस लौटे या नहीं?

" नकली महावीर ने जवाब दिया, “ जी हाँ, वे लौट आये मगर जिनका पीछा उन्होंने किया था वे भाग निकले और कोई हाथ न आया, इन लोगों ने भी कोई विशेष चेष्ठा न की, रथ तैयार है - हुक्म हो तो ले आऊँ.

" प्रभाकरसिंह बोले, " हाँ ले आओ, मगर यह तो बताओ अब समय क्या होगा?

" यह एक बँधा हुआ इशारा था जिसे प्रभाकरसिंह ने संदेह के मौके के लिए मुकर्रर कर रखा था, उनका असली रथवान इसके जवाब में एक खास शब्द कहता मगर नकली महावीर को क्या खबर थी, इसने मामूली तौर पर जवाब दे दिया, " अब पौ फटने ही वाली है.

" इस जवाब ने प्रभाकरसिंह को होशियार कर दिया, उन्होंने संदेह की एक बारीक निगाह महावीर पर डाली और तब कहा, “ अच्छा तुम रथ टीले के पास लाओ मैं अभी आता हूँ.

" नकली महावीर " जो हुक्म्म " कह लौट गया और प्रभाकरसिंह कुछ सोचते हुए लोहगड़ी की तरफ घूमें.

अभी वे दस ही पंद्रह क़दम गए होगे कि उन्हें किसी की आहट लगी और घूम कर देखते ही उन्होंने पुनः महावीर को अपनी तरफ आते देखा जिससे वे रुक गए.

महाबीर दौड़ता हुआ पास आया और हाथ जोड़कर बोला, " मैं आपका खिदमतगार महाबीर हूँ, परिचय के लिए मैं ' मत्तचला ' कहता हूँ जो आप ही ने बताया था.

अभी - अभी जो आदमी आपसे बातें कर गया है वह मेरी ही सूरत - शक्ल का होने पर भी कोई दुश्मन है और रथ के साथ वाले चारों सवार भी हमारे नहीं हैं ।

प्रभा ०:

हाँ, यह तो मुझे भी मालूम हो गया मगर यह बताओ कि तुम इतनी देर तक थे कहाँ और हमारे सबार कहाँ रह गयए?

महा ०:

सबारों की तो मुझे खबर नहीं पर मैं आपकी आज्ञानुसार रथ को छिपा कर जब उनका पता लगाने चला तो कुछ दूर पेड़ों की झुरमुट में मुझे वे ही चारों सिपाही दिखाई पड़े जो इस समय रथ के पास हैं.

पहिले तो मुझे ख्याल हुआ कि वे हमारे ही आदमी हैं क्योंकि उनकी पोशाक वगैरह ठीक वैसी ही और सूरतें भी बहुत कुछ मिलती थीं मगर मुझे कुछ सन्देह हो गया और मैं बातें सुनने की नीयत से छिप कर उनके पास पहुँचा, उनकी बातचीत से पता लगा कि वे आपको और बहूजी (सयू) को गिरफ्तार करने की धुन में हैं अस्तु मैं होशियार हो गया और .

.

.

प्रभा ०:

कुछ यह भी पता लगा कि वे किसके आदमी हैं! महा ०:

नहीं, मगर बातचीत में एक बार महाराज शिवदत्त का नाम जरूर आया था.

प्रभा ०:

(कुछ सोचने के बाद) अच्छा तब! महा:

कुछ देर तक बातचीत करने के बाद वे चारों वहाँ से हटे और उस जगह आये जहाँ आप रथ से उतरे थे, वही आदमी जो अभी - अभी आपसे मेरी सूरत बन कर बातें कर गया है रथ लिए यहाँ मौजूद था.

उन सवारों ने उससे कुछ बातें की और तब रथ के पीछे खड़े हो गये.

मैं इस फिक्रमें हुआ कि कहीं आप धोखे में उस रथ पर सवार हो दुष्टों के फन्दे में न फंस जाएँ अस्तु यहाँ आकर आपको होशियार करना चाहा पर आप शायद गड़ी के अन्दर थे इसलिए आपका कुछ पता न लगा, तब यह सोच उस झाड़ी में जा बैठा कि आखिर आप कभी तो बाहर आवेगें, तभी होशियार करूँगा.

जब उस नकली महाबीर से आपको बातें करते देखा तो बहुत घबराहट हुई और इधर आ गया, अब जो आप आज्ञा दें सो करूं.

प्रभाकरसिंह कुछ देर खड़े सोचते रहे कि अब क्या करना चाहिये.

बहुत जल्दी ही उन्होंने इसका निश्चय कर लिया और तब महावीर को लिये हुए लोहगढ़ी के पिछली तरफ चले गये.

आधी घड़ी के बाद साधू बने हुए प्रभाकरसिंह ढीले के नीचे उतर कर उस जगह पहुँचे जहाँ उनका रथ खड़ा था.

रथवान उन्हें देख रथ के नीचे उतर आया और सबारों ने भी सलाम किया.

प्रभाकरसिंह रथ के अन्दर जा कर बैठ गए और बोले, " चलो, " उन्हें अकेले देख नकली रथवान ने डरते - डरते पूछा.

" क्या और कोई आपके साथ न चलेगा?

" जबाब में प्रभाकरसिंह ने सिर हिला दिया और कुछ अधिक पूछने की हिम्मत न कर महाबीर ने रथ हाँक दिया.

चारों सवार पीछे पीछे जाने लगे.

तीसरा व्यान।

भूतनाथ के फेंके हुए कागजों को देख दारोगा के होश उड़ गये और जब उसे मारने की कोशिश भी नाकामयाब हुई तो दारोगा को सिवाय इसके और कुछ न सूझा कि जिस तरह हो भूतनाथ को राजी करे और अपनी जान बचावे.

अस्तु वह उसे लेकर एक एकान्त कमरे में चला गया और तरह - तरह की नर्मी और खुशामद की बातें करता हुआ उसे अपने ऊपर मेहरवान बनाने की कोशिश करने लगा.

जिस जगह दारोगा भूतनाथ को अब ले गया वह उसके मकान का एक बहुत ही एकान्त और निराला हिस्सा था और वहाँ किसी का आना - जाना बिना दारोगा की मर्जी के नहीं हो सकता था.

भूतनाथ दारोगा के पीछे - पीछे वहाँ तक चला तो गया मगर उसके मन में यह सन्देह जरूर हो गया कि दारोगा जो एक बार मुझे धोखा देकर फंसाने की कोशिश कर चुका है कहीं फिर धोखा न दे अस्तु उसने यहाँ पहुँचते ही दारोगा से कहा, " सुनियेगा दारोगा साहब, मैं आपके साथ यहाँ तक चला तो आया हूँ लेकिन अगर आपके दिल में यह खयाल हो कि मुझे फिर किसी तरह का धोखा दें या जान से मारने की इच्छा करें तो मैं आपसे साफ कह देना चाहता हूं

कि आपको तो कामयाबी मिलेगी ही नहीं मगर मैं भी फिर आपकी जरा भी मुरौबत न करूंगा और बुरा से बुरा सलूक आपके साथ करने को तैयार हो जाऊँगा.

मगर आपने मेरा एक बाल भी बांका करने की कोशिश की तो आपकी बोटी बोटी .

.

.

" दारोगा:

(जनेऊ हाथ में लाकर) मैं धर्म की शपथ खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे साथ जरा भी बेईमानी करने का खयाल दिल मे न लाऊँगा.

मै तुम्हारी और तुम्हारी शागिर्दो की चालाकी और बहादुरी देख चुका हूँ और तुम विश्वास रखो कि अब मुझे तुम्हारा मुकाबला करने की हिम्मत बिल्कुल नहीं रह गई है.

अगर तुम्हें मेरी कसम पर एतबार न हो तो यह लो मैं हाथ बड़ाता हूँ अपने क़मबन्द से इन्हें बाँध डालो बल्कि दोनों पैर भी बाँध कर अपना डर दूर कर लो और तब मुझसे बातें करो, मुझे कोई उज्र न होगा.

भूत ०:

(हँसकर) नहीं - नहीं, इतना करने की मुझे कोई जरूरत नहीं क्योंकि मुझे अब भी अपनी फुर्ती, चालाकी और ताकत पर भरोसा है और मेरे शागिर्द अभी भी यहाँ मौजूद है.

मैंने तो सिर्फ आपको होशियार करने की नीयत से एक बात कही थी.

दारोगा:

तो मैं पूरी तरह से होशियार हो गया हूँ और मुझे अपनी जान प्यारी है अस्तु तुम किसी तरह से न डरो और मेरे पास आकर बैठो.

भूतनाथ दारोगा के पास जाकर बैठ गया और दोनों में बातचीत होने लगी दारोगा:

मैं समझता हूँ कि उस दिन सभा में पहुँच कर खून - खराबी मचाने और उस क़मलदान को ले जाने वाले नकाबपोश तुम्हारे ही आदमी थे.

भूत:

हाँ दारोगा:

तो जरूर ही सभा का सब भेद भी उस कलमदान की बदौलत तुम्हें मालूम हो गया होगा.

भूत ०:

जी हाँ बिल्कुल.

दारोगा:

अस्तु अब तुमसे कोई बात छिपाना या झूठ बोलना बेवकूफी होगी अपना सब क़सूर स्वीकार करके तुमसे पूछता हूँ कि अब तुम क्या कियाचाहते हो?

भूत ०:

आपके पास से उठ कर मैं सीधा राजा गोपालसिंह के पास जाया और उनके आगे ये कागज रख दिया चाहता हूँ जिसमें उन्हें भी आपका सब कच्चा चिट्ठा मालूम हो जाय और वे जो सजा चाहें आपको दें.

दारोगा:

(कांप कर) मतलब यह है कि मुझे एकदम खाक ही में मिला दिया चाहते हो.

भूत ०:

अब आप जो कुछ समझे.

दारोगा:

मगर इससे तुम्हारा क्या फायदा होगा?

गोपालसिंह कुछ तुम्हारा रिश्तेदार नहीं और न जमानिया राज्य ही से तुम्हें किसी तरह का मतलब या सरोकार है.

ऐसा करने से तुम्हें अगर यह उम्मीद हो की कोई बड़ी भारी रकम, जागीर या इनाम तुम्हें मिल जायगा सो भी कोई बात नहीं हैं क्योंकि मैं गोपालसिंह को बखूबी जानता हूँ, उसके ऐसा मतलबी.

स्वार्थी और लालची आदमी दुनिया में शायद ही कोई हो, उसे यह सब कागजात दिखा कर तुम मुझे जरूर बर्बाद कर दोगे मगर अपना कोई काम न कर सकोगे.

अगर तुम समझते हो कि गोपालसिंह तुम्हारा कोई फायदा करेगा तो यह तुम्हारा सिर्फ खयाल है, वह तुम्हें एक कौड़ी भी न देगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि तुम्हें भी अपना दुश्मन समझ बैठे और .

.

.

.

भूत ०:

(हँस कर) दारोगा साहब, आप व्यर्थ की बातों के जाल में मुझे फंसाने की कोशिश न करें, मैं अपना फायदा नुकसान अच्छी तरह समझता हूँ और गोपालसिंह के मिजाज और तबीयत से भी खूब वाकिफ हूँ, अस्तु यह सब तो आप मुझे बताइये नहीं.

गोपालसिंह मेरा कोई फायदा करें या न करें मगर अपने पिता के मारने वाले को कदापि जिन्दा न छोड़ेंगे इसका मुझे पूरी तरह विश्वास है.

दारोगा:

(चौंक कर) तो क्या तुम बड़े महाराज साहब के मारने का इलजाम भी मुझ पर लगाते हो?

भूत ०:

जी हाँ, क्या आपको इनकार है?

दारोगा:

अगर तुम्हारा मतलब उस कमेटी से है जिसने महाराज को मारने का हुक्म दिया था तो उस बारे में सिर्फ मैं भी कसूरबार नहीं हूँ.

सभा के सैकड़ों दूसरे सदस्यों का कसूर भी उतना ही है जितना कि मेरा.

भूत मेरा मतलब उस कमेटी से नहीं है बल्कि मैं उस लौंडी की बात आपसे कह रहा हूँ जिसे आपने गोपालसिंह की वीबी बनाने का सब्जबाग दिखा कर भरमाया था.

और जिसके हाथ में इसलिए जहर की शीशी दी थी कि महाराज के भोजन में मिला दे.

जी नहीं, यह बात सुन दारोगा और भी घबड़ा गया.

अब तक न जाने किस हिम्मत पर वह बातें कर रहा था भूतनाथ की यह आखिरी बात सुन उसकी बची - खुची हिम्मत भी जाती रही और वह बिल्कुल नाउम्मीद हो बैठा.

कुछ देर तक तो वह सिर झुकाये न जाने क्या - क्या सोचता रहा और तब हाथ जोड़कर भूतनाथ से बोला, " बस मैं जान गया कि तुमसे कोई बात छिप नहीं सकती.

अब मेरी जान तुम्हारे हाथ में है, अगर तुम समझते हो कि मेरे मारे जाने से तुम्हारा कोई फायदा होगा तो खुशी से मारो, मगर अपने ही हाथ से मारो, मुझे कोई उज्र न होगा, और अगर समझते हो कि मेरे जीते रहने से तुम्हारा कुछ भला हो सक्नेगा तो मुझे जीता छोड़ दो और फिर देखो कि मैं क्योंकर अपने को सुधारता हूं, सचमुच अब जो देखता हूँ तो शुरू से आज तक एक के बाद एक बुरा ही काम करता आया हूँ.

मेरे पापों का घड़ा भरता जा रहा है और मर जाने पर मेरे लिए न जाने कौन - सा नरक तैयार मिलेगा.

ओफ, अब तो मैं याद करता हूँ तो दुनिया में कोई ऐसा पाप नहीं दिखाई पड़ता जो मैंने न कियाहो, एक से एक बड़ कर .

.

.

.

इत्यादि बातें देर तक दारोगा बक़ता रहा और उसकी आँखों से चौधारे आँसू निकल कर उसके कपड़ों को तर करते रहे.

वह यहाँ तक रोया - कलपा और बिलबिलाया कि अन्त में भूतनाथ के पैरों पर गिर पड़ा और जोर - जोर से रोने लगा.

भूतनाथ का पत्थर - सा कलेजा भी उसकी यह हालत देख कर कुछ नर्म पड़ गया और उसे अपना विचार बदल लेना पड़ा.

दारोगा की हालत देख अन्त में उससे रहा न गया और उसने उसे अपने पैरों पर से उठाते हुए कहा, " दारोगा साहब, आपकी हालत देख कर मुझे रहम आ जाता है.

यद्यपि आप दया के लायक आदमी नहीं हैं फिर भी मैं एक बार आपको छोड़ता हूं.

उठिये और मेरी बातें सुनिये.

तीन शर्तों पर मैं अब भी आपको बख्श देने को तैयार हूँ, " दारोगा ने अपना आँसुओं से भरा चेहरा उठाया और उसकी सूरत देखता हुआ बोला, " वे शर्तें क्या हैं?

" भूत ०:

सुनिये - एक तो आपको एक इकरारनामा मुझे लिख देना पड़ेगा कि आज तक आपने जो कुछ कियासो किया, अब आगे आप गोपालसिंह, इन्द्रदेव, बलभद्रसिंह, लक्ष्मीदेवी आदि के साथ अथवा इनके किसी भी रिश्तेदार या दोस्त के साथ किसी तरह की बुराई न करेंगे.

दारोगा:

मंजूर है, अच्छा और?

भूत:

दूसरे बीस हजार असर्फी इसी वक्त मुझे देना होगा, दारोगा:

(लम्बी सांस लेकर) अच्छा मंजूर है, आगे बोलो?

भूत ०:

तीसरी शर्त यह है कि मेरे, इन्द्रदेव के, बलभद्रसिंह के, गोपालसिंह के, या मेरे मालिक रणधीरसिंह के जितने भी दोस्त, रिश्तेदार या मुलाकाती इस समय दुनिया में मरे मशहूर होकर भी आप या आपकी उस मनहूस कमेटी की वजह से कैद में पड़े हुए हैं उन्हें तुरन्त छोड़ देना होगा! दारोगा:

यह भी मंजूर है, जमानिया के कुछ लुच्चे शोहदे और डाकू - लुटेरे कैद हैं, अगर तुम चाहोगे तो उन्हें भी छुड़वा दूंगा.

भूत ०:

(कड़वे स्वर में) जनाब, मेरा मतलब उन लुच्चे - शोहदों से नहीं है बल्कि उन भले आदमियों से है जिन्हें आपने मौत से बढ़कर तकलीफ दे रक्खी है.

दारोगा:

(क़ाँप कर) वे कौन हैं?

कम से कम जरा नाम तो सुनूँ?

भूत ०:

दामोदरसिंह, भैयाराजा, बहुरानी, दयाराम, -क्या और नाम सुनाऊँ!

दारोगा:

क्या ये लोग जीते हैं और मैंने इन्हें कैद कर रखा है?

भूत ०:

वेशक! दारोगा:

कदापि नहीं.

दयाराम खुद तुम्हारे हाथ से मारे गये, तुम्हें उनकी मौत का हाल बखुबी मालूम है, भैयाराजा और बहूरानी आप ही आप कहीं गायब हो गये और मुझे उनकी बाबत कुछ भी नहीं मालूम, और दामोदरसिंह की कमेटी के आदमियों ने कई महीने हुए मार कर फेंक दिया था, इसी शहर की चौमुहानी पर उनकी लाश मिली थी.

फिर मुझ पर इन लोगों के कैद करने का इलजाम क्योंकर लगाया जा सकता है?

भूत ०:

देखिये दारोगा साहब, अब आप चालबाजी की बात करने लगे.

मैं जो कुछ कह रहा हूँ - समझबूझ कर कह रहा हूं. ।

मुझे ठीक ठीक पता है कि वे सब लोग तथा और भी कितने ही आदमी आपके कैदखाने को रोशन कर रहे हैं.

जिस तरह आपने पहिली दोनों शर्तें मानी उसी तरह धीरे से इसे भी मान लीजिए तभी आपकी भलाई है नहीं तो फिर आपके जान की खैर नहीं.

दारोगा:

भला तुम्हीं बताओ कि मरे आदमियों को मैं क्योंकर जिन्दा कर सकता हूँ, अगर यही शक्ति मुझमें होती तो .

.

.

.

भूत ०:

(डपटकर) फिर भी आप बक्रजक्र किए ही जाते हैं! मालूम होता है, मौत अभी तक आपके सिर पर नाच रही है, अच्छा लीजिए मैं सबूत देता हूँ.

पहिले दामोदरसिंह वाला मामला ही लीजिए.

क्यां उनका मरना मशहूर होने के दस दिन बात भी वे आपके इसी मकान की उस कोठरी में मौजूद नहीं थे जिसकी सतह में लोहे की क्रांटियाँ जड़ी हुई हैं और क्या बाद में उन्हें आप अजायबघर में बन्द नहीं कर आए हैं?

भूतनाथ की यह बात सुन एक बार तो दारोगा के चेहरे का रंग उड़ गया मगर उसने तुरन्त अपने को सम्हाला और कहा, ' हरगिज नहीं यह बिल्कुल गलत बात है! अगर तुमसे किसी ने कहा तो फरेब कियाऔर मुझ पर झूठा ऐव लगाया है.

यह बिल्कुल गलत बात है मैं दामोदरसिंह के बारे में कुछ भी नहीं जानता.

"

भूत:

(गुस्से से) आपने पुनः झूठ बोलने पर कमर बांध ली, मैं कहता हूँ और जोर देकर कहता हूँ कि दामोदरसिंह जीते हैं और आपकी ही कैद में हैं.

मुझे झूठी खबर नहीं लगी है बल्कि जिसने मुझसे कहा है उसने अपनी आँखों से उन्हें देखा है और उससे खुद उन्होंने बयान किया कि वे आपके मकान में कैद थे और अब आपने उन्हें अजायबघर में बन्द कर रखा है.

दारोगा:

(गुस्से का चेहरा बना कर) बिल्कुल झूठी बात है! किसने तुमसे यह बात कही है!

भूत:

(जोश से) मुझे खास इन्द्रदेव ने यह बात कही और वे खुद उनसे मिल चुके हैं?

दारोगा:

(तेजी से) इन्द्रदेव झूठे हैं और झख मारते हैं जो ऐसी गलत बात कहते हैं और इतना झूठा ऐब मुझ पर लगाते हैं.

वे कभी इस बात को साबित नहीं कर सकते.

मैं अपने साथ उनको और तुम्हें दोनों ही को अजायबघर में ले चलने को तैयार हूँ, वे भला मुझे दामोदरसिंह की सूरत दिखला तो दें! भूत ०:

(ताज्जुब से) इन्द्रदेव और झूठ कहते हैं! आपको अपनी जुबान पर यह लाने की हिम्मत है?

दारोगा:

हाँ है और हज़ार बार है! अब मैं समझ गया कि यह सब पापड़ इन्द्रदेव ही बेले हुए हैं और समझा - बुझा कर तुम्हें मेरे पास भेजा है और वे मुझे बरबाद करने पर लगे हैं.

लो अब जब तुमने यह परदाफाश कर ही दिया है तो मैं भी तुम्हें सुनाता हूँ.

ध्यान से सुनो और अपने नायब दोस्त की सच्चाई देखो.

इन्द्रदेव ने मशहूर कर रखा है न कि दयाराम को तुमने मारा है! नहीं, मुझ पर टेढ़ी आँखें न फेरो! ऐसे समय जोश में आकर मैं भी वे बातें कह रहा हूँ जो मुझे कहनी नहीं चाहिए और जिनके लिए शायद आगे कभी पछताना पड़ेगा, मगर कोई परवाह नहीं, जब इन्द्रदेव मुझे बदनाम करने पर उतारू हो गए हैं तो मैं भी उनका कच्चा चिट्ठा तुम्हारे आगे खोल देता हूँ, लो अच्छी तरह कान खोल कर सुन लो – मगर दयाराम को न तुम ने मारा है न मैंने उन्हें खास इन्द्रदेव ने ही बन्द कर रखा है और अपना काम निकल जाने पर वे ही मार डालेंगे.

अगर तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न हो तो चलो मैं आज और अभी तुम्हें ले चल कर दयाराम को जीता - जागता और खास इन्द्रदेव के मकान में बन्द दिखा सकता हूं.

दारोगा की यह बात जो उसने बड़े ही जोश के साथ कही, सुन कर भूतनाथ ताज्जुब में पड़ गया.

दारोगा के ढंग से सच्चाई की बू आती थी और उसकी आकृति से दृढ़ता प्रकट होती थी मगर उसकी यह बात विश्वास करने लायक भी नहीं थीं.

.

आखिर भूतनाथ ने कहा भूत ०:

क्या आप दयाराम को जीता - जागता मुझे दिखा सकते हैं?

दारोगा:

हाँ जी हाँ, जीता - जागता और खास इन्द्रदेव के मकान के अन्दर बन्द! जिस तरह चूहा जब लाचार होता है तो बिल्ली पर हमला करता है उसी तरह आज मैं लाचार हो इन्द्रदेव का मुकाबला करने पर मजबूर हुआ हूँ.

मैं खूब जानता हूं कि मेरी यह बात सुन कर वे मुझे जीता न छोड़ेंगे पर खैर जो कुछ होगा झेलूंगा और साथ ही यह भी विश्वास रखूंगा कि अगर तुममें कुछ भी मर्दानगी है तो तुम इन्द्रदेव के वार से मुझे बचाओगे ।

भूत ०:

हाँ हाँ, अगर आपने अपनी बात पूरी की और जीते - जागते दयाराम को मुझे दिखा दिया तो मैं इन्द्रदेव तो क्या सारी दुनिया भी अगर आपके बर्खिलाफ हो जाय तो भी आप का साथ दूंगा.

मगर आप फिर सोच लीजिए.

बात आप बड़े ताज्जुब की कर रहे हैं और अगर यह झूठी निकली तो सबसे पहिले तो मैं ही आपसे इसका बदला लूँगा.

दारोगा:

हाँ हाँ खुशी से, तुम अपने हाथ से मेरा सर काट लेना, मुझे जरा अफसोस न होगा.

मगर तुम इतने ही में घबड़ा गए! मैं इन्द्रदेव की बदनीयती के और कितने ही सबूत दे सकता हूँ.

अच्छा तुम्हीं बताओ अभी तक तुम यही न समझ रहे हो कि पिछली दफे जमना और सरस्वती तुम्हारे हाथों मारी गई हैं?

भूत ०:

(सिर नीचा करके) हाँ.

दारोगा:

मगर मैं साबित कर सकता हूँ कि यह भी इन्द्रदेव की महज एक चालबाजी है जो तुम पर झूठे ऐब लगा सारे जमाने के आगे तुम्हारा मुँह काला क़िये दे रहे हैं! अगर तुम्हारी इच्छा हो तो मेरे साथ चलो, मैं इन्द्रदेव ही के मकान में जमना और सरस्वती को भी जीती - जागती दिखा दूंगा.

भूत ०:

(ताज्जुब और खुशी से) क्या आप सच कह रहे हैं! दारोगा:

हाँ जी हाँ, सच कह रहा हूँ और जो कुछ कह रहा हूँ इसी दम उसका सबूत देने को तैयार हूँ, भूत ०:

आप जीते - जागते दयाराम और जमना तथा सरस्वती को मुझे दिखायेंगे! दारोगा:

हाँ, मगर एक शर्त पर, भूत ०:

क्या?

दारोगा:

यही कि दिखा देने के बाद मेरी जान बचाये रखना तुम्हारा काम होगा! इन्द्रदेव जरूर मेरा जाती दुश्मन हो जायेगा और मुझे कदापि जीता न छोड़ेगा.

भूत:

(जोश के साथ) मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अगर आप अपनी बात पूरी करके दिखा देंगे तो मैं आपका बाल भी बांका न होने दूंगा और जिन्दगी भर आपको अपना बड़ा भाई मानूँगा.

दारोगा:

तो मैं भी कसम खाकर कहता हूँ कि बीमारी से अच्छा होने और चलने - फिरने के लायक होने के साथ ही अपना वादा पूरा करूंगा और दयाराम, जमना तथा सरस्वती को जीता - जागता तुम्हें दिखा देने के बाद तुमसे कहूँगा कि अब इन्द्रदेव को लेकर मेरे साथ अयाजवघर में ले चलो और दामोदरसिंह को मुझे दिखाओ! भूत ०:

अच्छी बात है, मैं एक पखवाड़े बाद आप से मिलूँगा.

(कुछ रुक कर) खैर यह बात तय हो गई, अब और जो कुछ मैंने कहा है सो पूरा कर दें दारोगा:

वह क्या?

भूत:

वही एकरारनामा और बीस हजार अशर्फी! दारोगा:

तुम्हारे लिए मैं इतना भयानक काम करने पर उतारू हो गया कि इन्द्रदेव को जानी दुश्मन बना रहा हूँ, फिर भी तुम मुझे माफ न करोगे.

भूत ० देखिए दारोगा साहब, सच बात तो यह कि मुझे आप पर विश्वास नहीं होता.

मुझे जब तक कि मैं अपनी आँखों से देख न लूँगा – उन लोगों के जीते रहने का विश्वास न होगा.

फिर, जमुना और सरस्वती के जीते रहने या न रहने में मेरा निजी स्वार्थ है, गोपालसिंह, रणधीरसिंह, बलभद्रसिंह या इन्द्रदेव को उससे कोई मतलब नहीं जिन्हें मैं तब तक अपना सच्चा दोस्त ही मानता रहूँगा जब तक कि आप अपना कहना पूरा नहीं कर दिखाते.

दारोगा:

खैर जो तुम्हारी मर्जी – मगर यह तो कहो कि अगर मैं एकरारनामा लिख दूंगा और बीस हजार अशर्फी भी तुम्हें दे दूंगा तो तुम मेरा भेद तो छिपाये रहोगे और वह कमलदान मुझे वापस तो कर दोगे?

भूत०:

हाँ हाँ जरूर दारोगा:

अच्छी बात है तो मुझे तुम तीन दिन की मोहलत दो, इस बीच मैं दोनों का इन्तजाम कर लूँगा.

भूत०:

कोई हर्ज नहीं, मैं तीन दिन की मोहलत आपको देता हूँ परन्तु इसके अलावे एक छोटी तकलीफ मैं और आपको दूंगा.

दारोगा:

कहिए, मैं आपका सब हुक्म बजा लाने को तैयार हूँ, भूत०:

अजायबघर से लगभग दो कोस के फासले पर एक तिलिस्मी कुआं है.

दारोगा:

(चौंक कर) हाँ है तो सही! भूत:

मेरा एक दोस्त उसमें बन्द है, और मुझे पता लगा है कि उस कूएँ का भेद आपको मालूम है बल्कि आपके पास कोई किताब है जिसमें वहाँ का बिल्कुल हाल दर्ज है.

दारोगा:

बेशक़ है मगर आपको यह बात क्योंकर मालूम हुई?

भूत०:

किसी तरह भी हुई हो, मगर मैं वह किताब चाहता हूँ, दारोगा:

मैं खुशी से देने को तैयार हूँ बल्कि उसके विषय में और भी कई बातें ऐसी आपसे कह सकता हूँ कि सुन कर आपको ताज्जुब होगा.

दारोगा और भूतनाथ में धीरे - धीरे कुछ बातें होने लगीं.

सुबह की सफेदी आसमान पर अच्छी तरह फैल चुकी थी जब भूतनाथ दारोगा के मकान के बाहर निकला.

इस समय वह बहुत खुश था और उसके चेहरे से मालूम होता था कि उसे कोई ऐसी अलभ्य वस्तु मिल गई है जिसके पाने की उसे कोई आशा न थी, वह लम्बे डग भरता हुआ पूरब की तरफ रवाना हुआ.

चौथा व्यान।

एक बड़े कमरे में जो ऐशोआराम के सामानों से बखूबी सजा हुआ है एक कमसिन और खूबसूरत औरत पलंग पर लेटी हुई उसकी निगाहें सामने की खिड़की में से होती हुई कुछ फासले पर धीरे - धीरे बढ़ने वाली गंगा के ऊपर पड़ रही हैं जिस पर अस्त होते हुए सूर्य की अन्तिम किरणें गिर कर विचित्र ही दृश्य पैदा कर रही हैं.

जिस समय सूर्य बिल्कुल डूब गये और केवल उनकी लाली मात्र ही आसमान पर रह गई ठीक उसी समय एक छोटी - सी किश्ती गंगा के बीचोबीच बहती हुई आती दिखाई पड़ी.

किश्ती पर निगाह पड़ने के साथ ही उस औरत की तबीयत खिल गई और वह खुश हो उठ बैठी, उसकी तेज निगाहें बीन का फासला तय करती हुई उस नौजवान पर पड़ने लगीं जो तेजी के साथ किश्ती को खेता हुआ उधर को ला रहा था मगर दूरी के सबब जिसकी सूरत साफ दिखाई नहीं पड़ती थी.

वह पलंग पर से उतर कर खिड़की के पास आ गयी और एकटक उस ओर देखने लगी.

बात की बात में किश्ती पास आ पहुँची.

एक निराली जगह देखकर खेने वाले ने डांड़ रोक किश्ती किनारे लगाई और उतर पड़ा, किश्ती बांध दी और तब इस खिड़की की तरफ घूम कर अपना रूमाल हिलाया.

इस औरत ने भी जवाब में कपड़ा हिलाया जिसका इशारा समझते ही वह नौजवान खुश हो कर उस बाग की तरफ बढ़ा जिसके अन्दर यह मकान बना हुआ था.

दो - तीन सूराखों पर जो शायद इसी लिए बना लिए गए थे पैर रखते हुए नौजवान ने सहज ही में बाग की ऊँची चारदीवारी पार की और अन्दर आ पहुँचा.

वह यहाँ रुका और झाड़ियों की आड़ में खड़ा होकर इधर - उधर की आहट लेने लगा.

बाग में एकदम सन्नाटा था और मकान में से भी किसी तरह की आहट नहीं मिल रही थी जिससे नौजवान का सन्देह दूर हो गया और वह अपने को पेड़ों की आड़ में छिपाता हुआ उस खिड़की की तरफ बड़ा जहाँ वह औरत अभी तक खड़ी एकटक उसकी तरफ देख रही थी.

इसको पास आता देख अपनी जगह से हटी और पलंग के पीछे से घूमती हुई एक छोटे से दरवाजे के पास पहुंची जो दक्खिन तरफ की दीवार में बना हुआ था.

आँचल में बंधी ताली से उसने इसका ताला खोला.

दरवाजा खोलने पर नीचे को उतरती हुई पतली सीढ़ियाँ दिखाई पड़ी.

औरत ने एक निगाह अपने चारों तरफ डाली और जब कमरे के बाकी सभी दरवाजों को बन्द पाया तो इत्मीनान के साथ उन सीड़ियों की राह नीचे उतर गई.

एक दरवाजा मिला जिसे उसने आहिस्ते से खोला.

वह नौजवान सामने ही खड़ा था जो दरवाजा खुलते ही भीतर आ गया और औरत ने दरवाजा पुनः भीतर से बन्द कर लिया.

एक - दूसरे की बाँहों में जकड़े हुए दोनों ऊपर आए और पलंग पर बैठे.

कुछ देर तक तो वे ही सब चोचले होते रहे जो बहुत दिनों के बाद मिले हुए आशिक - माशूकों में होते हैं और इसके बाद दोनों में बातचीत होने लगी.

मर्द:

मुन्दर, तुमने आज बड़े बेमौके मुझे बुलाया.

इस तरह दिन के वक्त यहाँ आने के ख्याल ही से मेरा कलेजा धड़कता था, क़ुशल हुई कि किसी ने देखा नहीं.

मुन्दर:

नहीं, आने में कोई भी डर न था.

आज घर के सब लोग, यहाँ तक कि नौकर - चाकर भी बाहर गए हुए हैं, केवल मैं मेरे पिता किसी आदमी के साथ कहीं गए हैं और आधी रात के पहिले न लौटेंगे और शायद

उनके आते ही मुझे आज ही किसी दूसरी जगह चले जाना पड़ेगा.

मर्द:

क्यों, सो क्यों?

मुन्दर:

सो मैं ठीक नहीं कह सकती.

मर्द:

तो क्या अब मुलाकात न होगी?

मुन्दर:

कैसे बताऊँ! अभी तो मुझे यह भी नहीं मालूम कि जाना कहाँ या कितने दिनों के लिए है, हाँ पता लगाने की कोशिश जरूर कर रही हूँ जिसमें मेरी - तुम्हारी मुलाकात में रुकावट न पड़ने पावे.

मर्द:

इस तरह यकायक ऐसा क्या सबब आ पड़ा कि एकदम मकान खाली करके सब लोग जा रहे हैं?

मुन्दर:

सो मुझे कुछ भी नहीं मालूम, खैर जो होगा देखा जायेगा.

इस वक्त तो हम लोगों को इस मौके का पूरा फायदा उठा ही लेना चाहिए फिर न - जाने कब मुलाकात हो या क्या हो.

मर्द:

तुम्हारे पिता कब लौटेंगे?

मुन्दर:

कह तो गए हैं कि आधी रात गए तक नहीं लौटेंगे.

तब तक के लिए पूरी निश्चिन्ती है और किसी तरह का खतरा नहीं.

इतना कह मुन्दर बेसब्री के साथ उस मर्द की तरफ बड़ी मगर अचानक चौंक कर रुक गई.

मकान के दूसरी तरफ कहीं किसी दरवाजे के जोर से खुलने की आवाज आई और इसके बाद ही किसी आदमी के जल्दी - जल्दी सीड़ियाँ चढ़ने की आहट सुनाई पड़ी.

आवाज कान में पड़ते ही नौजवान अलग हो गया और मुन्दर भी चिहुँक कर उठ खड़ी हुई.

अन्दाज से मालूम हुआ कि वह आदमी सीढ़ियाँ तय करने के बाद अब इधर ही को आ रहा है अस्तु मुन्दर नौजवान से बोली, " तुम इधर सीड़ियों पर जाकर खड़े हो जाओ, मैं देख लूँ कि क्या मामला है.

नौजवान सीढ़ियों की तरफ चला गया और इधर वाला दरवाजा बन्द कर ताली कहीं छिपाने के बाद मुन्दर ने कमरे के सदर दरवाजे की साँकल जो भीतर से बन्द थी खोल दी, इसके बाद वह रूमाल हाथ में ले पुनः पलंग पर आ लेटी और अपना सिर पकड़ कर " आह्, आह " करने लगी.

इस बात को मुश्किल से दो - चार मिनट बीते होंगे कि कमरे का दरवाजा जोर से खुल गया और मुन्दर के बाप हेलासिंह ने भीतर पैर रक्खा.

इस समय हेलासिंह की कुछ अजीब हालत हो रही थी, चेहरा सूखा हुआ था, बदन पर गर्द पड़ी हुई थी, मुँह पीला पड़ गया था, और आकृति से ऐसा जान पड़ता था मानों वह किसी बड़ी दुःखदायी घटना का शिकार हुआ हो.

अपने बाप की यह हालत देख मुन्दर घबड़ा गई और बोली, " बाबूजी, यह क्या मामला है?

आपकी ऐसी हालत क्यों हो रही है?

" हेलासिंह इस तरह गद्दी पर आ गिरा मानों अपनी जान से एकदम नाउम्मीद हो गया हो.

कुछ देर तक वह एकदम चुपचाप पड़ा लम्बी साँसें लेता रहा, तब बोला, " कुछ पूछो नहीं, मेरा किया- कराया सब चौपट हो गया, और ताज्जुब नहीं कि अब मैं कुछ घन्टों का मेहमान होऊ " मुन्दर:

(चौंक कर) सो क्या, सो क्या?

हेला ०:

सो सब पीछे बताऊंगा, पहले यह बताओ इस समय घर में कोई है?

मुन्दर:

कोई भी नहीं, सब नौकर - चाकर असबाब के साथ चले गए हैं और जरूरी सामान मजदूरनियों के हाथ रवाना कर मैं अभी - अभी यहाँ आ बैठी हूँ, सिरदर्द से परेशान थी और सोच रही थी कि कुछ देर तक लेटूं ताकि तबीयत को आराम मिले क्योंकि आपने आधी रात तक लौटने को कहा था.

मगर मालूम होता है कि वह काम नहीं हुआ जिसने .

.

.

.

हेला :

काम?

अरे, वह काम तो क्या हुआ पहिले का सब किया- कराया भी चौपट हो गया.

मालूम होता है कि अब मेरी जान नहीं बचेगी! ओफ! कहता हुआ हेलासिंह बेचैनी के साथ उसी गद्दी पर लेट गया, मुन्दर की जान इस समय अजीव पशोपेश में पड़ी हुई थी.

वह अपने बाप से उसकी बेचैनी का पूरा सबब भी सुनना चाहती थी मगर साथ ही यह भी चाहती थी कि कोई भी भेद की या गुप्त बात उसके आशिक के कान में न पड़ जाय जो कुछ ही दूर सीढ़ियों पर खड़ा है और जरूर ही जिसके कान में यहाँ की बातचीत का एक - एक अक्षर जा रहा होगा.

आखिर वह उठ कर अपने पिता के पास पहुंची और बगल में बैठ उसके सर और बदन पर हाथ फेरती हुई धीरे - धीरे बोली, " कुछ मुझे भी तो बताइये कि क्या मामला है जो आप इस तरह बदहवास हो रहे हैं.

" हेला ०:

(बड़ी लाचारी की मुद्रा दिखाता हुआ) क्या बताऊँ, होंठों तक आकर वह प्याला गिरा चाहता है! (एक लम्बी सांस लेकर) खैर तुम भी सुन लो.

मुन्दर और पास झुक आई और हेलासिंह ने कहा, " कम्बख्त गदाधरसिंह को हम लोगों की सब कार्रवाइयों का पता लग गया.

मुन्दर:

(चौंक कर) हैं! गदाधरसिंह को हमारा सब हाल मालूम हो गया?

हेला ०:

हाँ.

उस दिन हम लोगों की कमेटी में जो लोग घुस आये थे और बहुत - से कागजात तथा वह कलमदान भी उठा ले गये थे जिसमें सभा का सब हाल बन्द था.

वे भूतनाथ के ही आदमी थे और वहाँ से लूटा हुआ सब सामान उन्होंने भूतनाथ ही को ले जाकर दिया.

भूतनाथ ने कलमदान खोल डाला और इस तरह उस सभा का तथा मेरा सब हाल उसे मालूम हो गया.

यह बात सुन मुन्दर के होश उड़ गये और कुछ देर के लिए उसकी भी वही हालत हो गई जो हेलासिंह की थी.

उसे ऐसा मालूम हुआ मानो उसकी बढ़ी हुई उम्मीदों पर ताला पड़ गया हो और उसका राजरानी या मायारानी बनने का सुख स्वप्न अधुरे में ही टूट गया हो.

कुछ देर तक तो उसको अपने बदन की सुध बुध न रही, लेकिन आखिर उसने अपने को सम्हाला और हेलासिंह से पूछा, " यह बात आपको क्योंकर मालूम हुई, क्या दारोगा

साहब का कोई आदमी आया था.

" हेला ०:

नहीं वह आदमी जो आज सन्ध्या को मुझसे मिला और मुझे अपने साथ ले गया था भूतनाथ ही था.

उसने निराले में ले जाकर मुझे यह सब हाल सुनाया और कहा कि अगर तीन दिन के भीतर पचास हजार रुपया और लोहगड़ी की ताली मैं उसे न दूंगा तो वह सब भेद राजा गोपालसिंह से कह देगा.

यह बात सुनते ही मुन्दर की घबराहट और भी बढ़ गई और वह जल्दी से कुछ पूछा ही चाहती थी कि यकायक उसे दरवाजे के पीछे छिपे हुए नौजवान का खयाल आ गया और वह रुक कर बोली, " इस जगह अंधेरा हो गया है और रोशनी का भी कोई सामान नहीं है, बेहतर हो कि हम लोग बगल वाले कमरे में चलें तो वहीं सब हाल खुलासा आपसे सुनें.

हेलासिंह ने मुन्दर की बात मान ली और उसके कन्धे का सहारा लेता हुआ धीरे - धीरे चल कर बगल वाले कमरे में पहुँचा.

उसे वहीं छोड़ किसी बहाने से मुन्दर पुनः अपने कमरे में पहुँची.

यहाँ पहुँचते ही उसने सीढ़ी वाला दरवाजा खोला मगर वहाँ किसी की भी सूरत दिखाई न पड़ी.

न जाने उसका प्रेमी वह नौजवान कब वहाँ से चला गया था.

मुन्दर ने उस समय इसके लिए विशेष तरदुद भी न कियाऔर नीचे का दरवाजा बन्द करने के बाद इस दरवाजे में पुनः ताला लगा, लौट कर अपने पिता के पास पहुंची जो एक पलंग पर लेटा लम्बी साँसें ले रहा था.

वह उसके बगल में बैठ गई और पुनः दोनों में बातचीत होने लगी.

मुन्दर:

तो भूतनाथ को सब हाल मालूम हो गया?

हेला ०:

हाँ, न सिर्फ सभा और उसके साथ मेरे सम्बन्ध का ही हाल बल्कि न - जाने कैसे उसे यह भी मालूम हो गया कि मैं लक्ष्मीदेवी के बदले तुम्हारी शादी गोपालसिंह से कराने की कोशिश कर रहा हूँ, मुन्दर:

अरे! यह बात भी उसे मालूम हो गई! हेला ०:

हाँ, और अब उससे जान बचाने का सिर्फ यही रास्ता है कि जो कुछ वह माँगता है सो उसे दिया जाय और उसका मुंह बन्द कियाजाय.

मुन्दर:

यानी पचास हजार रुपया और लोहगड़ी की ताली उसके हवाले की जाय?

हेला ०:

हाँ, सिवाय इसके और किया ही क्या जा सकता है?

मुन्दर:

मगर इस समय यकायक इतना रुपया कहाँ से आ सकता है और लोहगड़ी की ताली भी आप उसे क्योंकर दे सकते जिसके लिए दारोगा साहब मुंह बाये बैठे हैं.

?

हेला ०:

बेशक, मगर इसके सिवाय और मैं कर भी क्या सकता हूँ! भूतनाथ से भाग कर मैं किसी तरह बच नहीं सकता क्योंकि अगर उसने सब हाल गोपालसिंह से कह दिया तो वे मुझे कदापि जिन्दा न छोड़ेंगे, ऐसी अवस्था में भूतनाथ की बात मान लेने के सिवाय और चारा ही क्या है?

मुन्दर:

(कुछ सोचकर) क्या ऐसा नहीं हो सकता कि कुछ बहाना करके भूतनाथ से हफ्ते की मोहलत ले लें.

हेला ०:

(ताज्जुब से) शायद ऐसा हो सके, मगर इससे फायदा क्या होगा?

मुन्दर:

मुझे एक तरकीब सूझी है जिसका पूरा हाल मैं फिर कभी आपको बताऊँगी.

फिलहाल अगर आप आठ दिन की भी मोहलत मुझे दें और इस बीच में न तो भूतनाथ को एकदम से नाराज ही कर दें और न उसकी माँग पूरा कर अपने ही को हमेशा के लिए बरबाद कर दें तो सम्भव है कि मेरी कार्रवाई चल जाय और हम लोग भूतनाथ पर जबर्दस्त पड़ सकें.

हेला :

(ताज्जुब से) आखिर वह कौन - सी कार्रवाई है, कुछ मुझे भी तो बताओ ताकि कुछ पता लगे.

मुन्दर:

जरूर बताऊँगी मगर अभी नहीं, अभी बता देने से सब मामला बिगड़ जायगा.

मगर इस सम्बन्ध में इतना जरूर चाहती हूँ कि कुछ दिन के लिए आप मुझे लेकर किसी ऐसे निरापद स्थान में चलें जहाँ कोई भी हमारा न तो पता लगा सके और न भेद ही जान सके, बस एक हफ्ते के अन्दर मैं या तो कामयाब होकर भूतनाथ ही को अपने कब्जे में कर लूंगी या फिर नाउम्मीद होकर आपसे यही कह दूंगी कि आप जैसे बने वैसे उस शैतान को राजी क़िजिये , मेरे किए कुछ न हो सका, हेलासिंह ने बहुत कोशिश की मगर मुन्दर ने कुछ भी न बताया कि वह कौन - सी तर्कीब है जिसकी बदौलत वह भूतनाथ जैसे भयानक ऐयार को अपने बस में करने की आशा करती है.

लाचार उसने वह जानने की कोशिश छोड़ दी और जैसा मुन्दर चाहती थी वैसा ही करने का वादा कियाक्योंकि इतना तो वह बखूबी समझता था कि उसकी लड़की एक ही चांगली है और शैतानी तथा धूर्तता में बड़े - बड़ों के कान काट सकती है, उसने जरूर कुछ सोचा होगा जो ऐसी बात कह रही है.

आखिर बहुत कुछ सोच - विचार करने के बाद उसने मुन्दर की बात मान ली और कहा, " खैर जैसा तुम चाहो.

मैं तैयार हूँ, मगर इतना समझ लो कि कोई ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिसमें भूतनाथ हमेशा के लिए हम लोगों से फिरंट हो जाय और हमारा सब कियाधरा चौपट हो जाय.

मुन्दर:

नहीं नहीं, सो कदापि न होगा.

मैं क्या इस बात को नहीं समझती हूँ?

मैं जो कुछ करूंगी इस सफाई और खूबसूरती से करूंगी कि भूतनाथ को हम लोगों पर किसी तरह का रत्ती भर भी शक नहीं होने पावेगा.

हेला :

अच्छी बात है.

तुम कब अपनी कार्रवाई शुरू करना चाहती हो और मुझे क्या करना होगा?

मुन्दर ०:

अगर मौका हो तो अभी इसी वक्त आप मुझे लेकर किसी ऐसे स्थान में चलिए जहाँ कोई हम लोगों को क़ोशिश करके भी पा न सके.

क्या आपके ध्यान में ऐसी जगह है?

हेला ०:

हाँ कई, और सबसे अच्छी तो लोहगड़ी ही है जहाँ हम लोग जब तक चाहें रह सकते हैं और ऐसे छिप सकते हैं कि राजा गोपालसिंह तक को जल्दी पता न लगे.

मुन्दर:

लोहगड़ी का हाल तो मालूम हो चुका है.

हेला ०:

सिवाय महाराज गिरधरसिंह के और कोई भी ऐसा नहीं जिसे उस जगह का पूरा हाल मालूम हो, और वे यमलोक को जा चुके.

अब मेरे बराबर उस जगह का हाल जानने वाला कोई भी नहीं है.

फिर अगर तुम चाहोगी तो लोहगड़ी से संलग्न बहुत - से और भी गुप्त स्थान हैं जिनमें से किसी में हम लोग छिप सकते हैं और जहाँ एक बार मौत का भी गुजर मुश्किल से होगा.

मुन्दरः अच्छी बात है तो आप वहीं चलने का प्रबन्ध क़िजिये , जो कुछ जरूरी सामान हो उसे साथ लीजिए और मुझे बताइये कि मैं कितने देर में रवाना होने के लिए तैयार हो जाऊँ क्योंकि मुझे भी कुछ इन्तजाम करना होगा.

हेला ०:

बस एक घण्टे में हम लोग रवाना हो जायेंगे, तुम इतने समय के भीतर तैयार हो जाओ.

इतना कह हेलासिंह उठ बैठा.

उसे मुन्दर की बातें सुन बहुत कुछ ढाडस हो गयी थी.

क्योंकि उसे अपनी अकल से कहीं ज्यादा इस अपनी लड़की की धूर्तता पर भरोसा था और वह अच्छी तरह समझता था कि मुन्दर को जरूर ऐसी ही कोई भारी बात मालूम हुई होगी जिस पर वह इतना जोर दे रही है.

उसने मुन्दर से फिर कुछ न कहा और सफर का इन्तजाम करने के लिए कमरे के बाहर निकल गया, मुन्दर भी किसी फिक्र में लग गयी, ठीक एक घण्टे बाद, जब कि रात का पहिला सन्नाटा चारों तरफ फैल रहा था, एक रथ जिसमें मजबूत बैलों की जोड़ी जुती थी हेलासिंह के दरवाजे पर आकर रुका.

रथबान ने रास अटका दी और घर के भीतर घुस गया.

थोड़ी देर बाद वह एक भारी गठरी सिर पर लादे लौटा जिसे उसने रथ के अन्दर रख दिया, पीछे हेलासिंह और मुन्दर भी आ रहे थे जिन्होंने आपस में कुछ बातें की और तब रथ पर सवार हो गए.

रथ तेजी के साथ लोहगड़ी की तरफ रवाना हुआ.

आधी रात जाते - जाते रथ लोहगढ़ी के पास पहुंच गया.

हेलासिंह रथ से उतर पड़ा और मुन्दर भी नीचे आ गई.

रथवान ने रथ को आड़ की जगह में खड़ा कर दिया और इसके बाद हेलासिंह के हुक्म से वह गट्ठर उठाए इन दोनों के साथ हुआ.

सब कोई टीले पर चढ़ने लगे और बात की बात में लोहगड़ी की इमारत के दरवाजे पर जा पहुँचे.

मामूली तौर पर हेलासिंह ने दरवाजा खोला और सबके भीतर चले आने पर पुनः बन्द कर लिया.

बीच की उस इमारत में पहुंच कर जिसमें हमारे पाठक कई बार आ चुके हैं तीनों आदमी रुक गये.

हेलासिंह ने मुन्दर से पूछा, " कहो यहीं रुकना है या और भीतर चलने का विचार है?

" जबाब में मुन्दर ने कहा, " अगर कोई और स्थान इससे भी गुप्त और सुरक्षित है तो वहीं चले चलिये.

" हेलासिंह ने कहा, " जरूर है, मगर वहाँ चलने में काफी देर लग जायेगी.

" मुन्दर बोली, कोई हर्ज नहीं, " जिसे सुन हेलासिंह बोला, “ अच्छा तो तुम यहीं खड़ी रहो, मैं जाकर पहिले दरवाजा खोल आऊँ.

" वह इमारत के अन्दर जा एक कोठरी में घुस गया और मुन्दर उस रथवान के साथ वहीं रुकी रह गई.

कुछ ही मिनटों के बाद हेलासिंह लौट आया और बोला, " दरवाजा खुल गया अब चलना चाहिए.

मगर रास्ता बहुत ही पेचीदा है, होशियारी से आना.

" आगे - आगे हेलासिंह उसके पीछे मुन्दर और उसके पीछे गठरी उठाये वह रथवान् रवाना हुआ और सभों को लिए हुए हेलासिंह एक तिलिस्मी सुरंग में घुस गया.

इस जगह हम इस विचित्र रास्ते का हाल बताने की कोई जरूरत नहीं समझते और सिर्फ इतना ही कह देते हैं कि कितनी ही सुरंगों, दरवाजों, इमारतों और गुप्त तथा डरावने स्थानों में से होते हुए ये लोग बहुत देर तक बराबर चले गए और तब एक दूसरी सुरंग की राह बाहर निकले.

अब जिस जगह ये लोग थे वह पहाड़ की कुछ ऊंचाई पर बना हुआ एक छोटा दालान था.

नीचे एक मुन्दर घाटी थी और इसके चारों तरफ की पहाड़ियों पर कई मुन्दर इमारतें और बंगले नजर आ रहे थे.

चन्द्रमा की चाँदनी चारों तरफ फैली हुई थी और उसकी रोशनी में यह स्थान बड़ा ही रमणीक मालूम हो रहा था.

हम पाठकों को इस जगह का विशेष हाल बताने की जरूरत नहीं समझते क्योंकि यह वही तिलिस्मी घाटी है जिसमें दयाराम और प्रभाकरसिंह वगैरह रहा करते थे अथवा जिसमें मालती इस समय मौजूद है.

हेलासिंह ने उँगली से बता कर कहा, " वह देखो सामने की पहाड़ी पर जो बंगला है और जिस पर कई बन्दर बैठे हुए दिखाई पड़ते हैं वहीं हमको जाना है, मगर इस तरह यह पहाड़ी उतर कर वह दूसरी पुनः चढ़ने में यह भारी गठरी लेकर जाना बड़ा कठिन होगा.

यहाँ से एक सुरंग की राह भीतर वहाँ तक जाने का रास्ता है जो इस समय अन्दर से बन्द है.

अगर तुम वहाँ जाकर जो तर्कीब मैं बताता हूँ उससे वह रास्ता खोल दो तो हम लोग सहज ही में वहाँ तक पहुँच जायेंगे.

" मुन्दर ०:

तो आप भी वहाँ क्यों नहीं चलते! नई और अनजान जगह है, दूसरे मुझसे शायद वह रास्ता न खुले.

हेला ०:

नहीं, जरूर खुल जायगा, मैं तुम्हें पूरा भेद बताए देता हूं.

मैं जब तक इधर का मुहाना खोलूंगा तब तक तुम वहाँ पहुँच जाओगी और काम जल्द हो जायगा.

मुन्दर ने जवाब में कहा, " बहुत अच्छा, बताइये.

" हेलासिंह ने उस गुप्त रास्ते को खोलने का सब हाल बखूबी समझा दिया और जब वह उस तरफ रवाना हो गई तो आप उस आदमी के साथ एक दूसरी सुरंग में घुस गया जिसका रास्ता उसने किसी गुप्त तर्कीब से खोला था.

पाठक अब जान गये होंगे कि मालती ने घाटी में बन्दरों वाले बंगले पर जिस औरत को देखा था वह यही मुन्दर थी और चबूतरे के नीचे उस गठरी को छिपाने वाले ये ही हेलासिंह और उसका नौकर थे.

पांचवा व्यान।

मालती जब होश में आई उसने अपने को एक विचित्र स्थान में पाया.

चारों तरफ से ऊँची - ऊंची चहारदीवारी से घिरा हुआ एक छोटा - सा बाग था जिसके बीचोबीच में काले पत्थर से बनी एक गोल बारहदरी थी जो मामूली न थी बल्कि लोहे के खम्भे के ऊपर बनी हुई और जमीन से करीब बीस हाथ ऊँची थी.

बाहरदरी की सतह लाल रंग के पत्थरों की बनी हुई थी जिसमें जगह - जगह सफेद पत्थर के कई क़मल बने हुए थे जो सतह के बराबर न थे बल्कि उभड़े हुए थे और जिनके सबब से बारहदरी की जमीन इस लायक न रह गई थी कि कोई इस पर आराम से लेट सके क्योंकि ये कमल जमीन को ऊबड़ - खाबड़ बनाये हुए थे.

बहुत देर तक मालती सोचती रही कि वहाँ पर क्यों और कैसे आ गई! उसके सिर में हलका - हलका दर्द हो रहा था जिसका सबब वह गहरी बेहोशी थी जिसमें कई घण्टे तक उसे रहना पड़ा और इसी कारण उसकी विचार - शक्ति कमजोर हो रही थी, फिर भी धीरे - धीरे उसे पिछली बातें ख्याल आने लगी और उसे याद आ गया कि वह इन्द्रदेव

से बातें कर रही थी जब कहीं से आकर एक गोला उसके सामने फटा था और उसमें से बड़ा ही कडुआ धुआँ निकला था जिसकी बदौलत वह भाग कर सीड़ी उतरते - उतरते ही बेहोश हो गई थी.

उसके बाद क्या हुआ उसे कोई खबर न थी और अब होश में आकर वह अपने को यहाँ पा रही थी.

बहुत गौर करने पर भी वह समझ न सकी कि इस समय कहाँ पर है मगर इतना उसे जरूर मालूम हो गया कि वह कई घण्टों तक बेहोश रही क्योंकि वह समय रात का था और इस समय सूर्य पूरी तरह से चमक रहे थे,

आखिर वह उठ खड़ी हुई और यह देखने के लिए कि इस बारहदरी के बाद क्या है, उसके किनारे तक पहुंची जहाँ किसी तरह की आड़ या रुकावट बनी हुई थी.

मालती समझे हुई थी कि यह बारहदरी किसी ऊंची इमारत के सिरे पर होगी पर किनारे से झांक कर देखने से उसे मालूम हुआ कि उसका विचार गलत है और बारहदरी एक मोटे लोहे के खम्भे पर खड़ी हुई है जो जमीन से इतना ऊँचा है कि नीचे देखने से उबाई आती है.

वह झिझक कर पीछे लौट आई और सोचने लगी कि इस स्थान से निकलने की क्या तर्कीब हो सकती है.

चारों तरफ निगाह दौड़ाने से मालूम हुआ कि यह एक छोटे बाग में है जिसके चारों तरफ ऊंची चहारदीवारी है.

उसके बाद क्या है सो वह नहीं देख सकती थी क्योंकि इस दीबार की ऊँचाई भी बीस - पचीस हाथ से किसी तरह क़म न थी जिसे टप कर निगाहें दूसरी तरफ का हाल नहीं देख पाती थीं.

मालती ने कई चक्कर उस गोल बारहदरी के लगाये पर कुछ नतीजा न निकला.

न तो कहीं से उसे नीचे उतरने लायक रास्ता ही दिखा और न किसी जगह से वह यही देख सकी की बाग के बाहर क्या है.

आखिर वह लाचार हो पुनः अपनी जगह आ बैठी और सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए.

यकायक उसकी निगाह एक छोटे - से कागज के टुकड़े पर पड़ी जो एक पथरीले क़मल की जड़ के पास पड़ा हुआ था.

उसने उसे उठा लिया और पड़ा, यह लिखा हुआ था- " इस क़मल को जोर से दबाओ.

" कुछ देर तक मालती इस लिखावट पर गौर करती रही पर यह किसका लिखा हुआ है सो कुछ समझ न आया.

लाचार वह विचार छोड़ उस कमल के पास गई जिसके नीचे वह कागज मिला था और अपने ऊँगूठे से उसके सिरे को जोर से दबाया.

कमल दब गया, साथ ही एक हलकी आवाज हुई और बारहदरी के बीचोबीच की एक सिल्ली आप से आप किवाड़ के पल्ले की तरह खुल गई, मालती उसके पास पहुँची.

नीचे उतरने के लिए छोटी - छोटी सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं जिन पर मालती ने पैर रखा और सब तरफ से होशियार नीचे उतर गई.

ये घुमावदार सीड़ियाँ उसी मोटे खम्भे के पेट में बनी हुई थी जिस पर वह बारहदरी टिकी थी.

दस - बारह डंडा उतरने के बाद ऊपर वाली सिल्ली एक आवाज के साथ पुनः अपनी जगह आकर बैठ गई और उस जगह घोर अंधकार छा गया पर मालती अन्दाज से टटोलती हुई नीचे बराबर नीचे उतरती ही चली गई.

कुछ ही देर में वह नीचे की आखिरी सीड़ी पर पहुंच गई जहाँ हाथ फैलाने से उसे सामने की तरफ एक छोटा - सा दरवाजा मालूम पड़ा मगर यह पता नहीं था कि वह किस तरह खुलेगा क्योंकि उसमें कोई जंजीर या सिकड़ी वगैरह लगी हुई नहीं मालूम पड़ती थी.

अब मालती घबराई मगर उसी समय उसका हाथ एक छोटे से आले पर जा पड़ा जिस पर ढढोलने से मोमबत्ती का एक टुकड़ा और आग बालने का सामान उँगलियों में लगा.

उसने तुरन्त चकमक से आग झाड़ मोमबत्ती बाली और उसकी रोशनी में चारों तरफ देखा.

जहाँ वह मोमबत्ती मिली थी उसी जगह कागज का दूसरा टुकड़ा दिखाई पड़ा जिसे उसने उठा लिया और मोमबत्ती की रोशनी में पड़ा, यह लिखा था- " बगल में बने साँप के फन को जोर से दबाओ.

" मालती ने पुर्जा पड़ चारों तरफ देखा.

दरवाजे के बगल में किसी धातु का बना एक छोटा साँप नजर पड़ा जिसके फन को दबाते ही निकल जाने के लिए रास्ता खुल गया.

खुशी - खुशी मालती बाहर निकल आई और उसके निकलते ही वह दरवाजा आप से आप इस तरह बन्द हो गया कि उसका कोई निशान तक बाकी न रह गया.

कुछ आगे बड़ मालती घूमी और उस बारहदरी की तरफ देखने लगी.

उसने देखा कि लगभग बीस हाथ ऊँचे और कोई पाँच हाथ मोटे लोहे के खम्भे के ऊपर वह गोल बारहदरी बनी हुई थी जिसमें से वह उतरी थी.

खम्भा चारों तरफ से एकदम चिकना है और उसमें कहीं कोई दरवाजा आदि दिखाई नहीं पड़ता और बारहदरी का जो भी कुछ हिस्सा नीचे से दिखाई पड़ता है वह एकदम साफ और चिकना है.

हाँ बरहदरी के ऊपर किसी धातु का बना एक उकाब बैठा हुआ जरूर नजर आता था.

इसके अलावे उस बारहदरी में और कोई विशेषता दिखाई नहीं पड़ती थी.

मालती उस जगह से हट्टी और छोटे से बाग में घूमने लगी.

वह छोटा बाग एक विगहे से कुछ ज्यादा ही जगह में होगा और जो कुछ मेवों के पेड़ इसमें दिखाई पड़ते थे उन्हें सींचने के लिए वह छोटी नहर बहुत क़ाफी थी जो एक तरफ से आकर घूमती हुई दूसरी तरफ निकल गई थी.

घूमती - फिरती मालती जब पूरब की दीवार के पास पहुंची तो उसे उसमें एक खिड़की बनी हुई दिखाई दी जो इस समय खुली हुई थी। .

मालती उस जगह खड़ी हो गई क्योंकि बाग के चारों तरफ की दीवार में सिर्फ वही एक खिड़की दिखाई पड़ी थी और इसकी राह बाग के बाहर निकल जाना सम्भव न होने पर

भी दूसरी तरफ का हाल देखना सम्भव था क्योंकि खिड़की में पत्थर की मोटी जाली लगी हुई थी.

मालती एक छेद में आँख लगा कर देखने लगी.

चारों तरफ बहुत सी एक बहुत लम्बा - चौड़ा बाग दिखाई पड़ा जिसके ओर - छोर का कुछ भी पता नहीं लगता था.

आलीशान इमारतें दिखाई पड़ रही थीं पर दूर और पेड़ों की आड़ में होने की वजह से उनके बारे में ठीक - ठीक पता लगाना कठिन था जिसमें इस समय एक औरत और एक मर्द बैठे नजर आ रहे थे पर दोनों का मुंह दूसरी तरफ होने के कारण उनकी सूरत - शक्ल के बारे में कुछ भी कहा नहीं जा सकता था.

मालती ने चाहा कि आवाज देकर उनको पुकारे और उनसे कुछ बातचीत करे मगर उसी समय उसकी निगाह एक तीसरे आदमी पर पड़ी जो एक खम्भे की आड़ में छिपा हुआ बड़े गौर से उन दोनों की तरफ देख रहा था.

मालती उसे देख आश्चर्य में पड़ गई क्योंकि चेहरा सामने होने के कारण उसने साफ पहिचान लिया कि वह उसका जानी दुश्मन हेलासिंह है. वह ठिठक गयी और कुछ बोलना या आवाज देना उचित न समझा और गौर से देखने लगी कि अब क्यां होता है.

उस औरत और मर्द की बातचीत खतम हुई और वे दोनों शायद कहीं जाने की नीयत से उठ खड़े हुए.

उन्हें उठता देख हेलासिंह खम्भे की आड़ में हो गया मगर जब वे उनके पास से होते हुए आगे बड़े तो वह आड़ से बाहर निकल आया और अपनी बगल से तलवार निकाल उसने मर्द पर वार करना चाहा.

यह देखते ही मालती के मुंह से एक चीख निकल गयी जिसने हेलासिंह के साथ ही साथ उन दोनों को भी चौंका दिया, वे दोनों घूम पड़े तथा अपने पीछे नंगी तलवार लिए हेलासिंह को देखते ही उस मर्द ने भी अपनी तलवार निकाल ली और हेलासिंह के बार को बचा कर खुद भी मुकाबला करने को तैयार हो गया.

अब मालती का ताज्जुब और भी बड़ा क्योंकि उसने देखा कि वह आदमी प्रभाकरसिंह हैं तथा उनके साथ वाली औरत इन्द्रदेव की स्त्री सयुं है.

वह ताज्जुब के साथ सोचने लगी कि ये लोग इस स्थान में क्योंकर आ पहुँचे मगर साथ ही उसे इस बात की खुशी भी हुई, अब जरूर उसकी जान इस आफत से छूट जायेगी और इन लोगों की मदद से वह इस कैदखाने से बाहर निकल सकेगी.

हेलासिंह ने समझा था कि वह धोखे में पीछे से बार करके प्रभाकरसिंह को मार डालेगा मगर जब मालती की चीख सुन वे होशियार हो गये और साथ ही मुकाबला करने पर भी तुल गये तो उसे लेने के देने पड़ गये.

उसने दो - चार हाथ तो चलाये पर प्रभाकरसिंह के मुकाबले में वह एक बच्चे के बराबर भी न था.

उसे तुरन्त ही मालूम हो गया कि प्रभाकरसिंह से लड़कर वह अपनी जान बचा न सकेगा, अस्तु उसने लड़ने का विचार तो छोड़ दिया और भाग कर अपनी जान बचाने की फिक्र में पड़ा.

आखिर मौका पा उसने अपनी तलवार जमीन पर फेंक दी और भागा.

प्रभाकरसिंह ने उसका पीछा कियामगर उसे पकड़ न सके क्योंकि दस ही बीस कदम गये होंगे कि उनके कान में आवाज आई, " बस, भागते हुओं का पीछा करना बहादुरों का काम नहीं.

अगर तुम्हें लड़ने का ही शौक है तो आओ, मेरे सामने आओ.

!! यह आवाज सुनते ही प्रभाकरसिंह रुक गये और अपने चारों तरफ देखने लगे पर कहीं किसी की सूरत दिखाई न पड़ी.

आखिर उन्होंने कहा, " अभी कौन बोला था?

" जवाब मिला " मैं! " प्रभाकरसिंह ने फिर इधर - उधर देखा मगर कहीं कोई नजर न पड़ा.

उन्होंने चिढ़ कर कहा, " आखिर तुम कौन हो सामने आकर बात करो.

" जबाब मिला, “ अच्छा तो मैं सामने होता हूँ.

होशियार हो जाओ! " मालती भी ताज्जुब के साथ यह बातचीत सुन रही थी और साथ ही वह यह देखने को चारों तरफ निगाहें भी दौड़ा रही थी कि आखिर वह बोलने वाला है कौन और कहाँ, क्योंकि उस दालान के सिवाय और कोई भी ऐसी जगह आसपास में दिखाई नहीं पड़ती थी जहाँ छिप कर या जिसकी आड़ में खड़े होकर बातें की जा सकें, फिर यह आवाज कहाँ से आ रही थी?

मगर मालती को इस बारे में बहुत देर तक तरदुद में न रहना पड़ा और तुरन्त ही जो कुछ उसने अपने सामने देखा वह उसका रोंगटा खड़ा करने और दिल दहला देने को काफी था.

" होशियार हो जाओ " की आवाज के साथ ही प्रभाकरसिंह के सामने की जमीन से पटाखे की तरह एक आवाज आई और साथ ही कुछ धुआ - सा दिखाई पड़ा.

इस धुएँ ने गाड़ा होकर तुरन्त ही एक आदमी का कद पकड़ लिया और तब हलका होकर ऊपर की तरफ उड़ गया मगर अपनी जगह पर एक खौफनाक चीज छोड़ गया.

मालती का कलेजा यह देख कर उछल गया कि धुएँ की जगह वहाँ मनुष्य की हड्डियों का एक भयानक डाँचा खड़ा है जिसके बदन पर मांस या चमड़े का नाम - निशान भी नहीं, हड्डियाँ ही हड्डियाँ दीख रही हैं.

जबड़े के बाहर निकले हुए उसके खुले दाँत भयानक हँसी हँस रहे हैं और बिना पुतली या पलकों वाले आँखों के गड़हे देखने वाले के दिल में डर पैदा कर रहे थे.

ढाँचे के बाँये हाथ में एक छोटी ढाल और दाहिने हाथ में एक तलवार की मूंठ थी मगर उस मूठ के साथ फल न था केवल कब्जा मात्र ही बे - माँस तथा बे - चमड़े की उँगलियों ने पकड़ा हुआ था.

यह भयानक दृश्य देखते ही मालती के तो डर के मारे होश उड़ गये.

उसने दोनों हाथों से अपनी आँखें बन्द कर ली और एक चीख मार कर खिड़की के पास से हट गयी.

प्रभाकरसिंह यद्यपि बड़े बहादुर और दिलाबर थे पर कुछ सायत के लिए वे भी घबड़ा गए और कुछ कदम पीछे हट गये.

उनकी यह हालत देख वह हड्डियों का ढाँचा भयानक रूप से हँसा और तब गूंजने वाली भारी तथा डरावनी आवाज में बोला, " बस मेरी सूरत ही देख कर तुम डर गये.

तो भला मेरे साथ लड़ोगे क्या?

इसी जीवट पर तुम अपने को बहादुर लगाते हो! " अपने होश - हवास दुरुस्त कर बड़ी हिम्मत के साथ प्रभाकरसिंह ने कहा, " नहीं नहीं, यद्यपि तुम्हारी शक्ल - सूरत बड़ी डरावनी है परन्तु मैं इस हालत में भी तुमसे लड़ने के लिए तैयार हूँ हड्डियों का ढाँचा:

तो फिर आगे बढ़ो और मुझ पर वार करो.

प्रभा ०:

मगर पहिले मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम कौन हो या मुझसे तुम्हारी क्या दुश्मनी है.

हड्डियों का ढांचा:

मैं कौन हूँ यह बताने में तो घण्टों लग जायेंगे और शायद फिर भी तुम्हारी समझ में कुछ न आवेगा, हाँ मेरा नाम सुन कर शायद तुम समझ सको.

प्रभा ०:

अच्छा तुम अपना नाम ही मुझे बताओ.

हड्डियों का डाँचा:

मेरा नाम तिलिस्मी शैतान है. प्रभा ०:

तिलिस्मी शैतान! पर यह नाम तो मैं आज पहिले ही पहिल सुन रहा हूँ! तिलिस्मी शैतान:

(जोर से हँस कर) और मेरी शक्ल भी तुम पहिले ही पहिल देख रहे हो! प्रभा ०:

बेशक, और मैं कुछ भी न समझ सका कि तुम भूत हो, प्रेत हो, या कोई जिन्न हो! खैर, तुम अब यह बताओ कि मुझसे तुम्हारी दुश्मनी क्या है?

तिलिस्मी शैतान:

तुमसे मेरी पुरानी दुश्मनी है और मैं बहुत दिनों से तुमको खोज रहा था, आज तुम भले मौके पर हाथ आये हो.

अगर तुम बहादुर हो तो मुझसे लड़ो और डरपोक हो तो हार मानो और मेरे साथ चलो.

प्रभा ०:

(ताज्जुब से) कहां?

तिलस्मी शैतान :

जहाँ मैं चलू.

प्रभा ०:

आखिर कहाँ?

तिलिस्मी शैतान:

यमलोक में! इतना कह कर वह हड्डियों का ढाँचा भयानक रूप से हँस पड़ा और उसकी डरावनी आबाज से वह जगह गूंज उठी.

मालती अभी तक तो डर के मारे खिड़की के बगल में दुबकी हुई थी और उस शक्ल को सचमुच कोई भूत - प्रेत या आसेब समझ कर अपनी जान की खैर मना रही थी मगर जब उसने उसको अपने बिना जुबान मुँह से आदमियों की तरह बात करते सुना तो उसका डर कुछ कम हुआ और उसके मन में उस तिलिस्मी शैतान को देखने की इच्छा उत्पन्न हुई, आखिर बड़ी हिम्मत बाँध कर वह पुनः खिड़की के सामने आई और उधर का हाल देखने लगी.

उसने देखा कि बेचारी क़मजोर सरयू! तो एक तरफ जमीन पर बदहवास पड़ी है और प्रभाकरसिंह घबराहट तथा बेचैनी के साथ शैतान की तरफ देख रहे हैं, साथ ही उसे यह देख और भी ताज्जुब हुआ कि हेलासिंह भागा नहीं बल्कि लौट आया और उसी जगह पेड़ की आड़ में छिपा हुआ खुद भी यह सब हाल देख रहा है.

आखिर प्रभाकरसिंह ने कहा, " सुनो जी, तुम भूत हो, प्रेत हो, या शैतान हो मुझे इससे कोई मतलब नहीं, न तो मैं तुमसे डरता हूँ और न मुझे तुम्हारी परवाह ही है.

मेरी - तुम्हारी कभी की दुश्मनी नहीं और न अपनी तरफ से मेरी तुमसे लड़ने की ही कोई इच्छा है, हाँ यदि तुम्हारे दिल में मेरी तरफ से कोई दुश्मनी हो या मुझसे लड़ना ही चाहते हो तो बात दूसरी है.

शैतान:

अजी मैं तो कह चुक़ा कि मेरी तुम्हारे साथ बहुत पुरानी दुश्मनी है और मैं तुमसे लड़ना चाहता हूँ, अगर तुम अपने को बहादुर लगाते हो तो मुकाबला करो.

प्रभा ०:

खैर, अगर यही बात है तो मुझे तुमसे लड़ना ही पड़ेगा.

खैर करो वार, मगर किस चीज से लड़ोगे?

तुम्हारे हाथ में तो कोई थियार भी दिखाई नहीं पड़ता! क्या सिर्फ उस मूठ से ही लड़ोगे जो मैं तुम्हारे हाथ में देख रहा हूँ?

शैतान:

बेशक, इस मूठ को क्या तुम खिलवाड़ समझते हो?

देखो मैं इसका करतब तुम्हें दिखाता हूं.

इतना कह उस शैतान ने अपना बायाँ हाथ ऊपर की तरफ उठाया.

देखते ही देखते वह तलवार की मूंठ जो उसके हाथ में थी लाल होने लगी और कुछ ही देर बाद उसमें से आग की लपटें निकलने लगीं जिनकी तेजी पल भर में बढ़ती जाती थी.

कुछ ही देर बाद उसमें से ठीक उसी प्रकार आग निकलने लगी जैसे किसी बड़े अनार में से उस समय निकलती है जब उसमें आग लगाई जाती है.

यह लपट कई हाथ ऊँची और इतनी भयानक थी कि देखने से डर मालूम होता था.

प्रभाकरसिंह इसे देख घबरा कर पीछे हट गए.

शैतान:

क्यों, इस मूठ की करामात देखी! कहो तो मैं बात की बात में तुमको भस्म कर दूं?

मगर नहीं, तुम्हारी बहादुरी की बहुत तारीफ सुनी है और इससे तुम्हें मार डालने के पहिले तुमसे दो - दो चोंटे करना चाहता हूं.

लो मैं इस आग को बुझा देता हूँ आगे बढ़ो और मुझसे लड़ो.

शैतान ने अपने बायें हाथ की ढाल उस मूठ से सटा दी जिसके साथ ही उस भयानक आग का निकलना बन्द हो गया जो मूठ से निकल रही थी.

इसके बाद ही उस शैतान ने भयानक रूप से प्रभाकरसिंह पर हमला किया और उसके हाथ की सुफेद हड्डियों ने प्रभाकरसिंह को दबोच लेना चाहा, मगर प्रभाकरसिंह उछल कर अलग हो गए और एक बगल होकर उन्होंने तलवार का एक भरपूर हाथ उसकी गरदन पर उस जगह जमाया जहाँ केवल तली की गोल हड्डी दिखाई पड़ रही थी.

प्रभाकर सिंह का बार इस जोर का था कि पतली हड्डी तो क्या उस जगह लोहे का छड़ भी होता तो दो टुकड़े हो जाता पर उस तिलिस्मी शैतान पर इसका कुछ भी असर न हुआ.

वह ज्यों - का - त्यों खड़ा रहा, उल्टे प्रभाकरसिंह की तलवार कब्जे के पास से टूट कर झनझनाहट की आवाज के साथ दूर जा पड़ी.

लाचार प्रभाकरसिंह ने टूटी तलवार फेंक दी और कुश्ती की नीयत से उस हड्डियों के डाँचे से लिपट गये पर ताज्जुब की बात थी कि उनके भरपूर जोर लगाने पर भी वह ढाँचा जरा भी न हिला.

न - जाने उसमें कितना वजन था कि प्रभाकरसिंह जैसा मजबूत आदमी अपना पूरा जोर लगा कर भी उसका कुछ बिगाड़ न सका.

प्रभाकरसिंह की कोशिश बेकार जाते देख शैतान के मुँह से पुनः हँसी का भयानक शब्द निकला और उसने अपने दोनों हाथों को प्रभाकरसिंह की कमर में डाला और उन्हें ऐसे उठा कर जमीन पर पटक दिया जैसे कोई किसी लड़के को खेल में पटक देता है.

शैतान प्रभाकरसिंह की छाती पर चढ़ गया और उसके बोझ को न बर्दाश्त कर सकने के कारण प्रभाकरसिंह एक चीख मार कर बेहोश हो गये, और इधर प्रभाकरसिंह का यह हाल देख और यह जान कर कि वह शैतान शायद उसकी जान ही ले लेना चाहता है, मालती के मुँह से भी एक चीख की आवाज निकल गई, मालती की चीख सुनते ही उस शैतान ने चौंक कर पीछे की तरफ देखा.

खिड़की के जंगले के अन्दर मालती को खड़ा देख उसके मुँह से गुस्से भरी एक आवाज निकली.

उसने प्रभाकरसिंह को छोड़ दिया और उस तरफ बड़ा जिधर मालती थी.

उस डरावनी शक्ल को अपनी तरफ आता देख मालती के मुँह से भी पुनः चीख की आवाज निकली और वह बेहोश होकर उसी जगह गिर पड़ी.

छठवा वयान।

बहुत दिनों से हमने दयाराम, जमना, सरस्वती आदि की कोई खबर न ली.

न मालूम वे कहाँ हैं या क्या कर रहे हैं.

पर अब उनका हाल लिखे बिना किस्से का सिलसिला ठीक न होगा.

पाठकों को याद होगा कि दारोगा और जैपाल ने दयाराम और जमना को गिरफ्तार कर लिया और तिलिस्म के किसी हिस्से में बन्द कर आए तथा उन्हें यह भी याद होगा कि कला अर्थात् सरस्वती ने उनका पीछा किया था और खुद भी तिलिस्म में फंस गई थी.

हम उस जगह लिख आये हैं कि शेरों वाले कमरे के चारों तरफ की कोठरियों में से एक में सरस्वती ने दो लाशें देखीं और उन्हें पहिचानते ही वह उस कोठरी के अन्दर घुस गयी जिसके साथ ही उसका दरवाजा बन्द हो गया.

अब हम यहीं से आगे का हाल लिखते हैं.

दरवाजा बन्द होने के साथ ही उस कोठरी में एकदम अंधकार हो गया जिससे एक सायत के लिए सरस्वती घबरा गई पर तुरन्त ही अपने को संभाल उसने कमर से तिलिस्मी खंजर निकाला और उसका कब्जा दबा रोशनी पैदा की जिससे उस कोठरी का एक - एक कोना साफ - साफ दिखाई देने लगा.

सरस्वती ने देखा कि वह एक दस - बारह हाथ लम्बी और इतनी ही चौड़ी कोठरी में है जिसकी छत मामूल से बहुत ज्यादा ऊँची है.

१.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, सातवाँ बयान.

इस कोठरी के चारों तरफ की दीवारों में चार बहुत ही बड़े - बड़े आले बने हुए थे जिनमें से हर एक में एक - एक सिंहासन रखा था जो किस चीज का था यह कहना कठिन है.

इन चारों सिंहासनों में से तीन तो खाली थे मगर एक पर एक शेर बहुत ही बड़ा किसी धातु का बना हुआ था जिसका खुला मुँह इतना बड़ा था कि मामूली आदमी की जाँघ सहज ही में उसके मुंह में समा सकती थी.

इसकी आँखें किसी तरह की पहलदार शीशे की बनी हुई थीं जो खंजर की रोशनी पाकर ठीक उसी तरह चमक उठीं जैसे जिन्दा जानवरों की चमकती हैं और इससे वह बनावटी शेर और भी भयानक मालूम होने लगा.

बस इसके अलावे इस कोठरी में और कुछ अगर था तो सिर्फ वे दोनों लाशें जिन्हें देख सरस्वती यहाँ आई थी.

ये लाशें दयाराम और जमना की थीं जो वास्तव में बेहोश थे पर बेहोशी इतनी कड़ी थी कि बिल्कुल मुर्दे की - सी हालत हो रही थी, हाथ - पाँव अकड़ गये थे और चेहरा पीला हो गया था, उन्हें देख पहिले तो सरस्वती को यही आभास हुआ कि ये दोनों जीते नहीं हैं पर जब जाँच की तो नब्ज को बहुत ही धीरे - धीरे चलता पाया और बहुत गौर करने से साँस भी आती - जाती मालूम हुई.

यह देख उसके चित्त को कुछ सन्तोष हुआ और वह इस फिक्र में पड़ी कि किसी प्रकार इन्हें होश में लाना चाहिए, पर वह लाचार थी क्योंकि उसके पास कोई ऐसा सामान न

था जिसकी मदद से इनकी बेहोशी दूर करती, लाचार उसे यह फिक्रपैदा हुई कि किसी तरह इस जगह के बाहर होना चाहिए.

सरस्वती उठी और खंजर की रोशनी में घूम - घूम कर चारों तरफ देखने लगी.

सिबाय उस दरवाजे के जिसकी राह बह यहाँ आई थी और कोई रास्ता यहाँ दिखाई नहीं पड़ता था और वह दरवाजा भी इस मजबूती से बन्द हो गया था कि किसी तरह खुलने की उम्मीद नहीं दिखाई पड़ती थी.

सरस्वती ने तिलिस्मी खंजर से काम लेना चाहा पर उसने भी कोई मदद न दी क्योंकि वह दरवाजा बहुत मोटे फौलाद का बना हुआ था जिस पर तिलिस्मी खंजर भी मुश्किल से कोई असर कर सकता था.

लाचार सरस्वती ने उसे तोड़ कर राह पैदा करने की उम्मीद छोड़ दी और पुनः चारों तरफ घूमने लगी.

कई चक्कर लगाने और खंजर के कब्जे से ठोंक - ठोंक कर देखने पर भी उसने न तो कहीं कोई दरार या ऐसा निशान देखा जिससे दरवाजा होने का गुमान किया जा सकता था और न कहीं से कोई ऐसी आहट ही पाई जिससे यह समझा जाता कि इस कोठरी के दूसरी तरफ कोई गुप्त स्थान है.

आखिर सब तरह से लाचार होकर सरस्वती उस सिंहासन के बनावटी शेर के पास आकर रुकी और बहुत गौर से देखने लगी.

यह धातु का बना हुआ शेर कमर - भर ऊँचे सिंहासन पर इतना ऊँचा और बड़ा बना हुआ था कि जमीन पर खड़ा आदमी मुश्किल से उसका सिर छू सकता था.

यह अपने पिछले दोनों पैरों के बल पर अगले पंजो पर बोझ दिए बैठा हुआ बनाया गया था और इसके खुले हुए मुंह में से भयानक दाँत चमक रहे थे जिनके बीच में से होती हुई मोटी जुबान लगभग हाथ भर बाहर निकली हुई थी.

सरस्वती को यह गुमान हुआ कि इस स्थान का इस शेर की मूरत से अवश्य कोई सम्बन्ध है अस्तु वह बड़े गौर से इसे देखने लगी.

इस शेर के अंग - प्रत्यंग को देखते हुए जब वह सिंहासन की तरफ झुकी तो उस पर मोटे - मोटे अक्षरों में कुछ लिखा हुआ दिखाई पड़ा.

यद्यपि बहुत जमाना बीत जाने के कारण हरफ साफ पड़े नहीं जा सकते थे फिर भी सरस्वती ने खूब गौर करके किसी तरह उनका मतलब निकाल ही लिया.

सिंहासन पर यह लिखा हुआ था " इस कोठरी में एक घड़ी से अधिक देर तक रहने वाला इस शेर की खुराक बनेगा.

" यह मजमून पड़ सरस्वती और भी घबराई क्योंकि वह खूब जानती थी कि यह तिलिस्मी इमारत है और तिलिस्म में किसी का जोर नहीं चल सकता, दूसरे उसे यहाँ आये भी लगभग आधी घड़ी हो गया था.

वह और भी बेचैनी के साथ सोचने लगी कि किसी तरह इस कोठरी के बाहर निकलने का मौका मिला तो दोनों बेहोशों को होश में लाने की फिक्र की जाय क्योंकि जैसी कड़ी बेहोशी इन्हें दी गई है वैसी हालत में देर तक रहने पर जान जाने का खौफ हो सकता है.

कोठरी से बाहर जाने की कोई राह दिखे तब वह कुछ कर सकती थी.

बेचैनी, घबराहट और तरदुद के साथ सरस्वती चारों तरफ देख रही थी कि यकायक उसके कानों में किसी तरह की आवाज आई जो भारी और डरावनी थी.

गौर करने से मालूम हुआ कि यह आवाज उसी शेर के मुंह से आ रही थी.

धीरे - धीरे आवाज की तेजी बढ़ने लगी और अब ऐसा मालूम हुआ कि मानों रह - रह कर वह शेर गुर्रा रहा है.

सरस्वती डर कर उसके पास से हट गई और कोठरी के एक कोने में जाकर खड़ी हो गयी.

गुर्राहट की आवाज तेज होने लगी और तब यकायक एक दहाड़ मार कर शेर उठ बैठा.

सरस्वती ने खौफ के साथ देखा कि उसकी दोनों आँखें तेजी के साथ चमकने लगी हैं और वह उन्हें घुमा इस तरह चारों तरफ देख रहा है मानो अपने शिकार को खोज रहा हो.

यह हालत भी दो ही पल तक रही और तब दहाड़ मारकर वह शेर सिंहासन से नीचे उतर पड़ा.

इस समय यह बनाबटी नहीं मालूम पड़ता था बल्कि सचमुच का एक भयानक और खूखार शेर दिखाई पड़ रहा था.

सरस्वती की यह हालत हो गई कि काटो तो बदन से लहू न निकले.

वह सकते की - सी हालत में खड़ी एकटक उस तरफ देख रही थी, पर जब उसने देखा कि एक क्रूर निगाह जमीन पर पड़े बेहोश दयाराम और जमना पर डाल वह शेर उनकी तरफ बढ़ने लगा है तो उससे बेकार न रहा गया.

वह आगे बड़ी और हिम्मत के साथ पहुँच उसने उन दोनों को खींच कर एक बगल में कर दिया.

सरस्वती का उन दोनों को हाथ लगाना था कि वह शेर दिल दहला देने वाली आवाज में गुर्रा उठा और सरस्वती के ऊपर टूटा.

सरस्वती ने अपनी हिम्मत को हथेली पर लिया और फुर्ती के साथ एक बगल हट गई.

केवल इतना ही नहीं बल्कि उसने तिलिस्मी खंजर का एक भरपूर हाथ शेर की पीठ पर जमाया.

खंजर लगने से शेर का कुछ भी न बिगड़ा.

न - मालूम कौन - सी धातु का यह बना हुआ था कि खंजर ने उस पर एक खरोंच तक न कियाउलटा खंजर ही सरस्वती के हाथ से छूट कर दूर जा गिरा.

खंजर की चोट खाते ही शेर की हालत बदल गई, वह अपने पिछले पैरों के बल पर खड़ा हो गया और सरस्वती पर उसने पंजों से भयानक आक्रमण किया.

डर के मारे सरस्वती जमीन पर गिर पड़ी और बेहोश होते हुए उसे ऐसा मालूम हुआ मानों उस जगह की जमीन बहुत जोर से हिल रही है.

वास्तव में बात भी ऐसी ही थी और उस कोठरी की सतह बहुत जोर - जोर से इस तरह पेंच खा रही थी मानों भूचाल आया हो.

कुछ देर तक यही हालत रही और तब यकायक कोठरी के बीचोबीच की जमीन फट कर वहाँ एक दरार दिखाई पड़ने लगी जिसके अन्दर से किसी तरह की आवाज आ रही थी.

बेहोश दयाराम, जमना और सरस्वती लुढ़कते हुए उसी दरार के अन्दर जा पड़े जिसके साथ ही जमीन का हिलना बन्द हो गया.

कुछ देर बाद किसी तरह खटके की आवाज आई और वह दरार जो जमीन में बन गई थी मिट गई, तब वह शेर भी पुनः अपनी जगह पर ज्यों - का - त्यों जा बैठा.

सब तरफ सन्नाटा हो गया और इसी समय उस कोठरी का दरवाजा पुनः पहिले की तरह खुल गया.

सरस्वती को जब होश आया तो उसने अपने को एक दालान में जमीन पर पड़े हुए पाया.

इधर - उधर निगाह करने से कुछ ही दूर पर जमना और दयाराम भी दिखाई पड़े जो अभी तक बेहोश पड़े हुए थे.

वह उठ बैठी और साथ ही उसे शेर का ध्यान आ गया जिसके हमले ने उसे बेहोश कर दिया था.

वह भयानक दृश्य ख्याल आते ही एक दफे पुनः सरस्वती को रोमांच हो आया पर उसने अपने को होशियार किया और देखने लगी कि उसे कहीं चोट - चपेट तो नहीं आई.

यह देख उसे सन्तोष हुआ कि उस तिलिस्मी कवच ने शेर के नाखून और दातों से उसका बचाव किया था अर्थात् उसके बदन पर कहीं जख्म न आने पाया था, पर वह कवच स्वयं कई जगह से टूट और फट कर बेकार हो गया था जिसका कारण कुछ समझ में न आया, तथापि सरस्वती ने समझ लिया कि यह शेर के पंजों और दाँतों की वजह से हुआ होगा.

वह उठ कर खड़ी हो गई और देखने लगी कि अब वह किस स्थान में आ पहुँची है.

सरस्वती ने देखा कि वह एक बारहदरी में है जिसके चारों तरफ तरह - तरह की इमारतें दिखाई पड़ रही हैं.

यह बारहदरी एक बाग के बीचोबीच में थी और इतनी लम्बी - चौड़ी थी कि इसमें पचासों आदमी बहुत आराम से बैठ सकते थे पर यह इस लायक न थी कि जाड़े की अंग ठिकुरा देने वाली हवा या बरसात के आंधी - तूफान और पानी में इसमें बैठने या रहने बालों का बचाव होता क्योंकि यह चारों तरफ से खुली हुई थी और कहीं किसी तरफ भी किसी तरह की आड़ या रुकावट हवा - पानी से बचाव करने के लिए इसमें बनी न थी.

बारहदरी से उतर कर सरस्वती बाग में आई.

यह पाँच - छ:

बिगहे का बाग केवल फल और मेवों के पेड़ों से भरा था जिसमें इस समय भी इतने फल मौजूद थे कि आदमी महीनों तक उन्हीं पर गुजारा कर सकता था.

पूरब तरफ से एक नहर इस बाग में आई थी जिसका पानी कई नदियों की राह से घूमता हुआ बागभर में फैल गया था जिससे इस बाग के सब पेड़ बराबर हरे - भरे रहते थे.

सरस्वती बाग में घूमने लगी.

इस बाग में कहीं - कहीं छोटे - बड़े कितने ही चबूतरे बने हुए थे जिनमें से कइयों के बिचोबीच में कमर बराबर ऊंचा खम्भा बना हुआ था जिस पर जानवरों की मूरतें बैठाई हुई थीं.

कहीं शेर, कहीं भालू, कहीं हिरन, कहीं सूअर, कहीं भेड़िया, इस तरह उन पर कोई - न - कोई जानवर बैठाया हुआ था और हर एक मूरत बड़ी ही सफाई और कारीगरी से बनी हुई थी.

मूर किसी धातु की थीं और रंग - ढंग से जान पड़ता था कि किसी जमाने में उन पर रंग भी चढ़ा हुआ होगा पर अब वे बिल्कुल काली हो रही थीं.

इनको देखती और चक्कर लगाती हुई सरस्वती बाग की चारदीवारी के पास पहुंच गई और उसके साथ साथ यह देखने के लिए घूमने लगी कि किसी तरह का कोई दरवाजा इत्यादि बाहर जाने के लिए है या नहीं.

उत्तर तरफ की दीवार के पास पहुंचने पर सरस्वती ने देखा कि इधर जमीन से दस - बारह हाथ की ऊँचाई तक की दीवार तो एकदम चिकनी है अर्थात् उसमें किसी जगह कोई खिड़की, दरवाजा या रास्ता नहीं दिखाई पड़ता था मगर उसके ऊपरी हिस्से में मुन्दर और आलीशान इमारत बनी हुई है.

बीचोंबीच में एक बड़ी बारहदरी थी जिसकी दरें बाग की तरफ खुली थीं और इस कारण उसकी ऊँची तथा मुन्दर रंगी हुई छत का एक हिस्सा सरस्वती को दिखाई पड़ रहा था तथा दोनों बगल बनी हुई कोठरियाँ भी कुछ - कुछ नजर आ रही थीं.

बारहदरी के दाहिनी तरफ की इमारत में क्या था यह दिखाई नहीं पड़ सकता था पर वहाँ बराबर फासले पर बनी हुई खिड़कियाँ जरूर दिख रही थीं जो सब बन्द थी। .

बाईं तरफ एक गोल क़मरा बना हुआ था जो बहुत ही ऊँचा था और उसके ऊपर हिस्से में एक बहुत बड़ा महराब था जिसका एक हिस्सा इस बाग की तरफ था और दूसरा उत्तर तरफ जाकर आँखों की ओट हो गया था.

इस खम्भे के सिरे के साथ बहुत - सी तारें बंधी हुई चारों तरफ न जाने कहाँ तक चली गई थीं पर उनमें से एक उस गोल कमरे के ऊपर वाले महाब तथा दूसरी उस बारहदरी की छत पर लगी हुई थीं जिसमें से निकल कर सरस्वती अभी यहाँ आई थी। .

इस बुर्ज के चारों तरफ बहुत से ताक बने हुए थे और उनमें से भी बहुतों में से कोई - न - कोई मूरत उसी तरह की मगर बहुत छोटी बनी हुई रखी थी जैसी सरस्वती ने इस बाग के चबूतरे के ऊपर बनी हुई देखी थी.

इन मूरतों में से कइयों के गले में लोहे वाले खम्भे के साथ की तारें आकर लगी हुई थीं तथा कुछ तारें दीवार के साथ - साथ आकर नीचे जमीन में घुसी हुई थीं.

कुछ देर तक सरस्वती इस बुर्ज को देखती रही और तब वहाँ से हट कर पूरब की दीवार के पास पहुंची.

इस तरफ उसे एक बहुत ही लम्बी - चौड़ी इमारत दिखाई पड़ी जो उत्तर - दक्षिण तरफ एक सीध में बनी हुई थी और जिसमें कई दरवाजे दिखाई पड़ रहे थे जिसमें से कुछ खुले और कुछ बन्द थे.

सरस्वती इनमें से एक दरवाजे के पास पहुंची और भीतर की तरफ देखने लगी.

एक बहुत बड़े मकान का सहन दिखाई पड़ा जिसके बीचोबीच उसे एक अद्भुत चीज नजर आई.

बड़े संगमर्मर के आंगन के बीचोबीच में काले पत्थर की बनी मुन्दर बावली थी जिसके चारों तरफ नकली बाग और जंगल बनाया गया था.

प्रायः सभी तरह के पेड़ और पौधे जगह - जगह दिखाई पड़ रहे थे मगर किसी की ऊँचाई तीन - चार हाथ से ज्यादा न थी और किसी धातु के बने होने पर भी वे इतने साफ और मुन्दर थे कि देखने से यकायक यह गुमान होता कठिन था कि ये असली नहीं बल्कि बनाबटी हैं.

नीचे के फर्श में जगह - जगह पर घास के रमने दिखाये गए थे.

और उनके बीच में बनी पतली पगडंडियाँ ठीक जंगल के बीच में बनी पगडंडियों की याद दिलाती थीं.

पेड़ों पर तरह - तरह के पक्षी बनाये गये थे और नीचे झाड़ियों की आड़ में कितने ही तरह के जानवर दिखाये गए थे अर्थात् यह एक छोटे - से जंगल का बड़ा ही मुन्दर दृश्य वहाँ मौजूद था जिसे सरस्वती देर तक कौतूहल के साथ देखती रही परन्तु इसके बाद जब उसकी निगाह बीच की बावली पर पड़ी तो उसे वहाँ भी एक अद्भुत चीज दिखाई पड़ी.

तालाब की सीढ़ियों पर झुका हुआ एक बारहसिंघा पानी पी रहा था और उससे भी कुछ ही पीछे एक झाड़ी में से निकलता हुआ शेर इस तरह का बना हुआ था मानो अभी बारहसिंघे पर हमला करना चाहता है.

इतना ही नहीं, उस शेर के दाहिनी तरफ तीर - कमान हाथ में लिए एक औरत भी खड़ी थी जो क्रमान को कान तक खींच कर उस शेर पर तीर छोड़ा ही चाहती थी.

यह औरत इतनी मुन्दर बनी हुई थी और इसकी आकृति ऐसा सुडौल थी कि सरस्वती देर तक इसकी तरफ देखती रह गई और फिर भी उसके मन में सन्देह रह गया कि वहाँ की अन्य चीजों की तरह वह भी बनावटी है या असली! जाने कब तक सरस्वती इन चीजों

को देखती रहती या दालानों की अद्भुत चीजों पर निगाह दौड़ाती रहती जो इस सहन के चारों तरफ बने हुए थे मगर उसे ख्याल आ गया कि जमना और दयाराम अभी तक बेहोश पड़े हैं जिन्हें होश में लाना बहुत जरूरी है, अस्तु वह वहाँ से हटी और नहर के पानी से अपनी चादर को तर किये हुए उस जगह पहुँची जहाँ जमना और दयाराम को बेहोश छोड़ गई थी.

दोनों उसी तरह पड़े हुए थे, सरस्वती पास बैठ गई और बारी - बारी से उनके सर और माथे को पानी से तर करने और आँचल से हवा करने लगी.

न - जाने कैसी कड़ी बेहोशी इन दोनों की दो गई थी कि देर तक कोशिश करने पर भी चैतन्यता के कोई लक्षण दिखाई न पड़े, पर सरस्वती ने भी हिम्मत न हारी और बार - बार नहर के जल से कपड़ा तर करके उनके सर को ठण्डक पहुँचाती रही, आखिर बड़ी देर के बाद उन दोनों को होश आया.

पहिले दयाराम और उसके बाद जमना ने लगातार कई छींके मारी और तब अंगड़ाइयाँ ले - ले अपनी आँखें खोल दीं.

उस समय सरस्वती बहुत ही प्रसन्न हुई और हाथ का सहारा दे उसने दोनों को उठा कर बैठाया.

यद्यपि अब उन लोगों को होश बखूबी आ गया था फिर भी वे इस तरह झूम रहे थे मानो नशे की हालत में हों.

बड़ी कोशिश से उन्होंने अपने को चैतन्य कियाऔर तब दयाराम ने कहा, " कला, यह कौन - सी जगह है और हम लोग यहाँ कैसे आ पहुँचे?

" कला:

यह तिलिस्म मालूम होता और हम लोग यहाँ उसी शेर वाले कमरे से आये हैं.

आपका हाल सुन लेने के बाद मैं पूरा किस्सा सुनाऊँगी कि हम लोग वहाँ से यहाँ क्योंकर आ पहुँचे.

दयाराम:

मैं और जमना उन्हीं दुष्ठों के हाथ पड़ गये थे जिनकी सभा से मैं उस दिन होकर लौटा था बल्कि मुझे तो गुमान होता है कि मुझे बेहोश करने वालों में से एक तो जरूर कम्बख्त दारोगा ही था क्योंकि तक्राब से चेहरा ढका होने पर भी उसकी आवाज मुझे पहिचानी हुई - सी मालूम पड़ती थी। .

कला:

मेरा भी यही ख्याल है क्योंकि उसके सिवाय और किसी की यह मजाल न थी कि हमारी तिलिस्मी घाटी में इस तरह बेधड़क आकर इतना उपद्रव कर जाता.

खैर आप खुलासा कह तो जाइये कि क्या - क्या हुआ?

दयाराम:

जब गर्म कोठरी की तकलीफ से घबरा कर भूतनाथ ने अपना सब हाल साफ - साफ कह दिया और जो कुछ आगे मैं जो पूछूं, वह भी बताना मंजूर किया तो मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि इस समय अच्छा मौका हाथ आया है और भूतनाथ की जुबानी बहुत - सी बातों का पता लग जायेगा.

मैंने जिन तिलिस्मी कलपुर्जो को छेड़ कर गर्मी पैदा की थी उनको बन्द कर दिया और तब उन्हें ठीक हाल पर लाने के लिए उस कमरे में जाने लगा जिसमें कल - पुर्जे थे और जो उस कमरे के जीने की तरफ बना हुआ है पर सीड़ियों पर पहुंचते ही यकायक किसी ने मेरे मुँह पर आकर चादर लपेट दी जिसमें बेहोशी की इतनी कड़ी गंध थी कि मैं तुरन्त बेहोश हो गया.

जब मैं होश में आया तो अपने को शेरों वाले कमरे के बाहरी दालान में पड़ा पाया.

मेरे हाथ - पैर पीठ के पीछे इतना कस कर बँधे हुए थे कि हिलना - डुलना तक असम्भव हो रहा था.

बेहोश जमना पास में पड़ी थी और मेरे ऊपर दो नकाबपोश झुके हुए बड़े गौर से मेरी सूरत देख रहे थे.

मैं समझ गया कि मुझे बेहोश करके इस तरह दुर्गति करने वाले ये ही दोनों हैं अस्तु मैंने कुछ गुस्से से पूछा.

“ तुम दोनों कौन हो और मेरे साथ ऐसा बर्ताव तुमने क्यों किया है?

जिसके जवाब में एक ने कहा, “ हम लोग उस गुप्त कमेटी के नौकर हैं जिसमें पहुँचकर तुमने इतना उपद्रव मचाया था और उसी की आज्ञानुसार तुमको गिरफ्तार करके ले जा रहे हैं, वहाँ पहुँचकर तुम दोनों की पूरी दुर्दशा की जायेगी और तब तुम्हें मालूम होगा कि हमारी क़मेटी कितनी जबर्दस्त है और उसके मामले में हाथ डालने का क्या नतीजा निकलता है.

' १.

देखिए भूतनाथ नौवाँ भाग - नौबाँ बयान.

मैंने सुन कर कहा, " ख़ैर तो मुझे वहीं ले चलो यहाँ रुकने की क्या जरूरत है?

" जवाब में वह बोला, " मैंने तुम्हें यहाँ इसलिए होश में किया है जिसमें यह जान सकूँ कि तुम वास्तव में कौन हो?

" मैंने जवाब दिया, " तुम मुझे अपनी कमेटी के पास ले चलो, वहीं चलकर मैं बता दूंगा कि कौन हूँ! " इस पर यह बोला, " नहीं, तुम्हें इसी जगह अपना नाम बताना होगा और अगर नहीं बताओगे तो तुम्हारी पूरी तरह से दुर्दशा की जायेगी- परन्तु मैंने कुछ जबाब न दिया.

वह बहुत कुछ बोला - बहका और डरा - धमका कर मुझसे नाम पूछना चाहा पर मैंने एकदम चुप्पी साध ली और निश्चय कर लिया कि चाहे जो कुछ भी हो अपना असल भेद और नाम कदापि न बताऊंगा.

आखिर उसका साथी बोला, " आप किस फेर में पड़े हुए हैं.

क्या इसके गाल के पीछे का यह दाग देखकर भी आपको सन्देह रह सकता है कि यह दयाराम नहीं है! " इस पर वह पहिला आदमी बोला, " बेशक यह दयाराम ही है, मगर मैं इसके मुँह से यह सुन कर निश्चय कर लेना चाहता था.

इसके बाद वह मेरी तरफ घूमा और बोला, “ जब तुम दयाराम हो तो यह औरत भी जरूर जमना या सरस्वती होगी?

" मेरे कुछ भी जवाब न देने पर वह बोला, " खैर अब इसका चेहरा भी साफ करके देख लेना चाहिए, !! यह कह उसने एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्ग़ था, उस अर्क में से थोड़ा लेकर लगाने के साथ ही जमना के चेहरे का बनाबटी रंग साफ हो गया और एक कपड़े से पोंछते ही उसकी सूरत निकल आई, उन दोनों ने गौर से उसकी सूरत देखी और कहा, " यह बेशक जमना है " इसके बाद वे पुनः मेरी तरफ झुके और बोले, " सच बताओ कि तुम्हें किसने क़ैद से छुड़ाया, नहीं तो अभी बोटी - बोटी काट कर फेंक दूंगा " पर मैंने इस बात का भी कुछ जबाब न दिया.

सब तरह से कोशिश करने जब वह हार गया तो दोनों ने मिलकर मुझे उठा लिया तथा शेरों वाले कमरे में लाकर उसके बगल में बनी बहुत - सी कोठरियों में से एक दरवाजे पर पहुँच और एक जगह दिखा कर बोले, " देखो यहाँ पर लिखा हुआ है कि ' इस कोठरी में एक घड़ी से ज्यादा देर तक रहने बाला शेर की खुराक बनेगा '.

अगर मेरी बातों का जवाब न दोगे तो मैं तुम्हें बेहोश करके इस कोठरी में डाल दूंगा और तब तुम किसी तरह जीते न बच सकोगे.

"

मगर मैंने सोच रख़ा था कि चाहे कुछ भी हो जाय पर उन दुष्ठों की बातों का उत्तर तो कदापि न दूंगा अस्तु मैंने कुछ भी जबाब न दिया.

उसने कई दफे पूछा और मुझे चुप पा अन्त में झल्ला उठा.

आखिर उसने जेब में से एक शीशी निकाल कर जबर्दस्ती मुझको सुंघाई जिसके साथ ही मुझे तनोबदन की सुध न रह गई और अब होश में आकर मैं अपने को इस जगह पा रहा हूँ, सरस्वती:

बस तो ठीक है, मैं भी उसी कोठरी में से होकर यहाँ पहुँची हूँ, आप दोनों को उन लोगों ने उसी कोठरी में डाल दिया था और जब खोजती हुई मैं वहाँ गई तो उस शेर की बदौलत यहाँ तक पहुँची जिसकी हालत का ख्याल कर अब भी मैं क़ाँप जाती हूँ, इतना कह सरस्वती ने अपने यहाँ तक आने का वह सब हाल पूरा - पूरा कह सुनाया जो हम ऊपर लिख आये हैं और तब बोली, " इस बाग में खाने के लिये मेवे और पीने के लिए पानी की कमी नहीं है.

इस समय हमें जरूरी कामों से निपट कर उन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए तब निश्चिन्त हो बैठ कर यह सोचेंगे कि यहाँ से निकलने की क्या तर्कीब हो सकती है.

" तीनों आदमी बारहदरी के बाहर निकले .

.

.

सरस्वती फल तोड़ लाई और तीनों नहर के किनारे बैठ कर उन्हें खाने तथा तरह - तरह की बातें करने लगे.

सातवा व्यान।

श्यामा को वहीं ही पर छोड़ जब उन आदमियों ने भूतनाथ को घेर लिया तो एक बार थोड़ी देर के लिए वह घबड़ा गया क्योंकि वे सभी आदमी मजबूत और कद्दावर तथा लड़ाके मालूम पड़ते थे और इधर भूतनाथ एकदम अकेला और असहाय तथा ऐसे स्थान में था जिसके बारे में वह कुछ भी नहीं जानता था बल्कि जिसका तिलिस्मी होना उसे मालूम हो चुका था, मगर जिस समय भूतनाथ की निगाह बेहोश और बेबस श्यामा पर पड़ी तो उसकी हिम्मत ने फिर जोश मारा और उसने कड़क कर कहा, " अगर तुम लोग अपने को बहादुर और लड़ाके लगाते हो तो एक - एक करके मेरे सामने आओ, यो एक पर इतनों का टूट पड़ना मर्दानगी नहीं है!

इतना कह और चक्कर खाकर उन आदमियों के घिराव से निकल गया गौर के साथ देखने लगा कि उसकी इस बात का क्या असर होता है.

भूतनाथ की बात सुन वे आदमी कुछ देर के लिए रुक गये और आपस में कुछ कानाफूसी करने लगे.

इसके बाद उनमें से एक ने जो उनका सरदार मालूम होता था भूतनाथ से कहा, " यद्यपि आपने हम लोगों को न पहिचाना होगा मगर हम लोगों ने आपको बखूबी पहिचान लिया है.

आप ऐसे मशहूर ऐयार से हम लोग व्यर्थ का बैर नहीं बाँधना चाहते मगर साथ ही यह भी बर्दाश्त नहीं कर सकते कि हमारे काम में कोई बाहरी आदमी दखल दे और हमें नुकसान पहुँचाये.

हम लोग अपने मालिक के भेजे हुए किसी खास काम से यहाँ आये हैं और वह काम कर तुरन्त यहाँ से चले जायेंगे.

हमारे जाने के बाद आप यहाँ जो चाहें करें या जब तक चाहे रहें हमें कोई मतलब नहीं, हम बस इतना ही चाहते हैं कि हमें बे रोक - टोक अपना काम करके यहाँ से चले जाने दें, भूतनाथ ने उनकी बातें बहुत गौर से सुनीं क्योंकि आवाज के ढंग से उसे वह आदमी कुछ पहिचाना हुआ - सा जान पड़ता था मगर अपनी बोली को इस तरह बदले हुए था कि यकायक पहिचानना मुश्किल था.

अस्तु उसे और भी बातों में फंसाने और उसका परिचय लेने की नीयत से भूतनाथ ने कहा, " जिस तरह आप हमारे काम में दखल नहीं दिया चाहते हैं उसी तरह मैं भी आप लोगों के काम में किसी तरह की रुकावट डालना नहीं चाहता.

मैं सिर्फ एक मामूली काम के लिये यहाँ आया हूँ और उसे करके तुरन्त इस जगह के बाहर हो जाऊंगा.

मैं उम्मीद करता हूँ कि आप मुझे भी उसी तरह अपना काम कर लेने देंगे जिस तरह मैं आपको अपना काम करने दूंगा !! भूत ०:

(श्यामा की तरफ बताकर) मैं इनसे कुछ बात करने आया था — बात पूरी होते ही चला जाऊँगा.

उस आदमी ने यह सुन अपने साथियों की तरफ देखा और धीरे से कुछ बातें कीं.

इसके बाद वह बोला, " क्या आप इसका बादा करते हैं कि सिर्फ दो - चार बातें करके यहाँ से चले जायेंगे?

" भूत ०:

वादा तो नहीं कर सकता मगर उम्मीद करता हूँ कि इससे ज्यादा मुझे कुछ करने की जरूरत न पड़ेगी.

आदमी:

(सिर हिलाकर) नहीं, सो नहीं हो सकता.

अगर आप इस बात की प्रतिज्ञा करें कि दो - चार बातें इस औरत से करके यहाँ से चले जायेंगे तब हम लोग इसे स्वीकार कर सकते हैं.

भूत ०:

इसका सबब?

आदमी:

इसका सबब यह है कि इस औरत ने बहुत बड़ा कसूर कियाहै और हम लोग अपने मालिक के भेजे हुए इसीलिए आए हैं कि इसे उनके पास ले जायें.

भूत ०:

आपका मालिक कौन है?

आदमी:

सो बताने की आज्ञा हमको नहीं है ।

भूतनाथ उस आदमी से बातें भी करता जाता था और साथ ही साथ नजर बचाता हुआ अपने बटुए में से कुछ निकालता भी जाता था.

इतनी देर की बातचीत ने भूतनाथ को विश्वास करा दिया कि यह आदमी जरूर जान - पहिचान ही का कोई है और आवाज बदल कर बातें कर रहा है.

यही नहीं बल्कि शायद उसे अन्दाज से यह भी कुछ - कुछ मालूम हो गया कि यह कौन है - अस्तु अब उसने बातचीत में यों ही समय बरबाद करना व्यर्थ समझा.

बटुए में से उसने एक छोटा - सा गेंद और किसी तरह की दवा की एक गोली निकाल ली थी.

वह गोली तो उसने अपने में मुंह में डाल ली और गेंद को बाएँ हाथ में ले दाहिने हाथ से खंजर कमर से निकालता हुआ बोला, " जब तक आप अपने मालिक का नाम बताने

को तैयार नहीं हैं तो मुझे मालूम होता है कि आप के मन में दगा है.

ऐसी हालत में आपसे किसी तरह का वादा करना मैं व्यर्थ समझता हूँ.

" उस आदमी ने भी यह सुन अपने हाथ का खंजर मजबूती से पकड़ा और अपने आदमियों को कुछ इशारा करके बोला, " तब तो हम लोगों को भी लाचार आप पर हमला करना ही पड़ेगा.

" इतना कह वह भूतनाथ की तरफ झपटा और उसके आदमी भी हथियार निकाल - निकाल कर आगे बढ़े मगर भूतनाथ ने उन्हें कुछ भी करने की मोहलत न दी.

उसने अपने हाथ वाला गेंद जोर से जमीन पर पटका जो गिरने के साथ ही फूटा और उसमें से बेहोश कर देने वाले बहुत से धुएँ निकल कर उसे तथा उस पर हमला करने वाले आदमियों को घेर लिया.

यह धुआँ बहुत ही काला था और दम के दम में इस तरह फैल गया कि यहाँ रात की तरह अंधेरा मालूम पड़ने लगा.

भूतनाथ इसी अँधेरे में इधर - उधर घूम - फिर कर अपने को बचाता रहा और इसी बीच में धुएँ के असर से उसके दुश्मन बेहोश और बदहवास गिरने लगे.

लगभग आधी घड़ी के बाद जब खिड़कियों और दरवाजों की राह कमरे का धुआँ साफ हो गया तो भूतनाथ ने देखा कि उसके सभी दुश्मन बेहोश होकर इधर - उधर पड़े हुए हैं.

धुएँ का असर इतना कारी था कि उसने किसी को कुछ भी करने की मोहलत नहीं दी थी.

भूतनाथ यह देख बहुत खुश हुआ.

यद्यपि उसने अपने को बेहोशी से बचाने के लिए दवा खा ली थी फिर भी धुएँ ने नाक, आँख की राह अन्दर पहुँच कर उसका सिर घुमा दिया था.

उसने बटुआ खोल कर लखलखा निकाला और उसे अच्छी तरह सूंघ कर अपनी तबीयत साफ करने के बाद बेहोश श्यामा की तरफ हाथ बढ़ाया जो ज्यों की - त्यों अपनी जगह मुर्दे की तरह पड़ी हुई थी.

लखलखा की डिबिया भूतनाथ उसके नाक के साथ लगाया ही चाहता था कि न - जाने क्या सोच कर रुक गया और डिविया जमीन पर रख उसने बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क था.

इसमें से थोड़ा लेकर उसने श्यामा के मुँह पर अच्छी तरह मला और तब अपने कपड़े से उसे खूब कस कर पोंछ देने के बाद फिर गौर से उसकी सूरत देखी.

सूरत में किसी तरह का फर्क न पड़ा था जिसे देख भूतनाथ बोला, " नहीं, यह इसकी असली सूरत है, किसी तरह का धोखा नहीं.

" शीशी बन्द कर उसने बटुए में डाल ली और तब लखलख सुंघाने लगा.

कुछ ही देर की कोशिश में श्यामा की बेहोशी दूर हो गई.

उसे लगातार कई छींकें आई और तब उसने एक अंगड़ाई लेकर आँखें खोल दीं.

ताज्जुब की निगाह उसने अपने चारों तरफ डाली और तब क़मजोर आवाज में पूछा, " मैं कहाँ हूँ?

" भूतनाथ ने जवाब दिया, " अपने कैदखाने ही में हो मगर तुम्हें छुड़ाने वाला तुम्हारे सामने मौजूद है.

उठो होश में आओ और मेरे साथ इस जगह से बाहर निकल चलो.

"

" ओह मेरे भूतनाथ की आवाज सुन उस औरत ने चमक कर उसके गले में हाथ डाल दिया और डरे हुए ढंग से बोली, प्यारे! मुझे बचाओ, नहीं वे दुष्ठ मुझे जीता न छोड़ेंगे! " भूतनाथ ने दिलासा देते हुए कहा, " डरो नहीं, अब घबराहट की कोई बात नहीं है.

तुम्हें तंग करने वाले सब पाजी वह देखो बेहोश पड़े हैं और अभी घंटो तक होश में न आवेंगे.

तुम अपने को सम्हालो और उठ खड़े होबो.

" उस औरत ने अपने चारों तरफ देखा और उन दुष्टों को बेहोश पड़ा देख खुश होकर उठ बैठी.

भूतनाथ ने सहारा देकर उसे खड़ा कियाऔर कहा, “ तुम कौन हो, ये लोग कौन हैं, तुमसे इनसे क्या अदाबत है, और तुम यहाँ क्योंकर फंसी इत्यादि सैकड़ों बातें मुझे पूछनी हैं मगर यहाँ इसका मौका नहीं है, यहाँ से बाहर होकर वह सब हाल मैं पूछूंगा! " इतना कह भूतनाथ क़मरे के बाहर की तरफ चला, उसके मोड़े का सहारा लिए हुए श्यामा उसके साथ हुई.

दोनों प्रेमी उस कमरे के बाहर निकले.

अब भूतनाथ ने अपने को एक कमरे में पाया जो पहिले कमरे से बड़ा और आलीशान था और उसमें चारों तरफ बहुत - से दरवाजे दिखाई पड़ रहे थे जो सब के सब इस समय बन्द थे और इसी कारण यहाँ पर कुछ अंधकार था.

भूतनाथ यहाँ पहुँच कर रुक गया और कुछ सोचने लगा मगर उसी समय श्यामा बोल उठी, " क्यों खड़े हो गये! मुझे अभी तक उन कम्बख्तों का डर लगा हुआ है, जल्दी इस जगह के बाहर निकलो तो जान में जान आवे.

" भूतनाथ बोला, “ मैं यह सोच रहा था कि एक बार उन बेहोशों की सूरत साफ कर लेता कि वे कौन हैं तब इस जगह से बाह होता.

" श्यामा यह सुन बोली, " मुझे उन लोगों का सज हाल मालूम है.

बाहर चलकर सब कुछ तुम्हें बता दूंगी मगर इस समय न रुको.

" भूतनाथ यह सुन कर हँसा और आगे की तरफ बढ़ना ही चाहता था कि यकायक एक तरफ से आवाज आई, " ठहरो ठहरो! " जिसे सुन वह चौंक कर ठमक गया और श्यामा तो किसी दुश्मन को होने का ख्याल कर इतना डरी की भूतनाथ के बदन से चिपक गई.

भूतनाथ ने उसे दिलासा दिया और तब कमर से खंजर निकाल ही रहा था कि एक तरफ का दरवाजा खुला और वे ही साधु महाशय तेजी से आते दिखाई पड़े जिन्हें कुएँ में से भूतनाथ ने देखा था और जिन्होंने उसे कमन्द दी थी.

देखते - देखते वे उसके सामने आकर खड़े हो गये और बोले, “ पहिले मेरी दो - चार बातें सुन लो तब इस जगह के बाहर जाने का विचार करो.

" साधू महाशय की सूरत देखते ही श्यामा के मुँह से एक चीख निकली और वह बेतहाशा दौड़ कर उनके पैरों पर गिर पड़ी.

उसकी आँखों से चौधारे आँसू बह्ले लगे और वह रोती हुई कहने लगी, " गुरुजी, आप भी अपनी दासी को भूल गये जो इतने दिनों तक कोई खबर न ली.

" श्यामा की बात सुन साधू महाराज के आँखों में भी प्रेमाश्रु आ गये.

उन्होंने उसे जमीन से उठाया और प्यार के साथ सिर और पीठ पर हाथ फेर कर कहने लगे, " नहीं - नहीं, मैं तुझे भूला बिल्कुल नहीं था मगर लाचार था कि तू ऐसी जगह फंसी हुई थी जहाँ मेरी कोशिश कुछ काम नहीं करती थी.

आज जब इस बहादुर ने (भूतनाथ की तरफ इशारा करके) तुम्हें छुड़ाने की कोशिश की बल्कि तिलिस्म का वह हिस्सा खोला तभी मैं यहाँ तक आ सका नहीं तो बिल्कुल बेबस था यह कौन आदमी है?

" श्यामा ने भूतनाथ की तरफ देखा मगर तुरन्त गरदन नीची कर ली और तब कहा, " इनका नाम भूतनाथ ऐयार है, इन्होंने बड़ी बहादुरी से जान पर खेल कर मुझे बचाया है.

साधु ने यह सुन खुश होकर भूतनाथ से कहा, “ क्या तुम वही मशहूर भूतनाथ हो जिसके कामों की तारीफ मैं बहुत दिनों से सुन रहा हूँ?

" भूतनाथ ने:

" जी हाँ महाराज! " कह कर प्रणाम कियाऔर साधु ने आशीर्वाद दिया.

इसके बाद पुनः श्यामा से बोले, " अब तुम्हारा क्या विचार है?

तुम कहाँ जाना चाहती हो?

" श्यामा ने कहा, " जहाँ आप आज्ञा करें वहीं जाऊँ.

क्या मेरे माता - पिता का कुछ हाल आपको मालूम है?

" साधू:

तेरी माँ तो तेरी गिरफ्तारी के तीन ही महीने बाद तेरे लिए रोती हुई चल बसी, तेरे पिता भी अरसा हुआ परलोक वासी हो गए, अब कोई भी नहीं बचा जो तुम पर अपना हाथ

रखे.

एक मैं बचा हूँ परन्तु मुझे भी अब इस लोक में ज्यादा दिन के लिए न समझ, मेरा भी अंतकाल आ गया है और मैं शीघ्र ही केदारजी को जा रहा हूँ, श्यामा यह सुन और अपने माँ - बाप के मरने का हाल जान ज़ार - ज़ार रोने लगी.

साधू ने दम - दिलासा देकर उसे शान्त किया और बोले, " तेरा काशी बाला मकान जिसमें अगाध दौलत भरी है खाली पड़ा है और उसकी ताली भी इस समय मेरे पास मौजूद है.

मेरी राय में तू फिलहाल उसी में जाकर रह.

यदि कुछ दिन बाद तेरा मन चाहा और किसी योग्य व्यक्ति से दिल मिला तो उससे शादी कर लीजियो और गृहस्थी करियो.

अफसोस कि तू कुऑरी ही रह गई और तेरे माता - पिता चल बसे नहीं तो वे स्वयं ही कुछ प्रबन्ध कर जाते.

खैर जो कुछ होता है ईश्वर की मर्जी से होता है.

अब तेरा विचार जो हो सो कह, मैं वैसा ही प्रबंध कर दूँ?

" श्यामा यह सुन सिर नीचा क़िये हुए बहुत देर तक कुछ सोचती रही इसके बाद उसने एक निगाह भूतनाथ पर डाली और तब धीमे स्वर में बोली, " जब मेरा इस संसार में कोई भी नहीं है तो मैं अपने को उसी बहादुर की शरण में डाल देती हूँ जिसने प्राणों पर खेल कर मेरी जान बचाई है! आज इस घड़ी से मैं अपने को उसी के चरणों की दासी बनाती हूँ, वह मेरी जो गति चाहे करे और जिस तरह चाहे मुझे रखे, मुझे सब तरह से प्रसन्नता होगी और किसी बात में कुछ उज्र न होगा.

" इतना कह श्यामा ने जमीन पर बैठ भूतनाथ के चरणों में सिर नवाया और उसके पैरों की धूल माथे से लगाने के बाद उठकर हाथ जोड़े.

बाईं तरफ कुछ पीछे हट कर खड़ी हो गयी.

भूतनाथ बड़े ताज्जुब के साथ उसका यह ढंग देख रहा था क्योंकि इसमें यद्यपि शक नहीं कि श्यामा गजब की खूबसूरत थी और उसे देखकर बड़े - बड़े ऋषियों और मुनियों

का मन डोल सकता था और इसी कारण भूतनाथ की भी ललचाई निगाहें उसकी तरफ आज और आज के पहिले भी कई बार किसी दूसरे ढंग पर पड़ चुकी थीं, पर इस समय यकायक इसका यह भाव देख वह भौंचक्र में पड़ गया और अब क्या करे यही सोचने लगा.

उसकी दो स्त्रियाँ पहिले ही मौजूद थीं तथा एक तीसरी और बड़ा लेने का तरदुद पर वह पूरी तरह समझता था अस्तु वह इस समय इसी उधेड़बुन में पड़ गया कि क्या करे या क्या जवाब दे.

इधर साधू महाशय के माथे की सिकुड़ने भी इस बात का पता दे रही थीं कि वे भी श्यामा की बात सुन बड़े गौर में पड़ गए हैं और कुछ निश्चय नहीं कर पाते कि उसे क्या जबाब दें, आखिर कुछ देर बाद उन्होंने कहा, " शास्त्रों में कहा है कि पृथ्वी और रमणी वीरों के ही भोग की वस्तु है, अस्तु श्यामा ने भी अगर एक वीर को अपना तन - मन अर्पण करना चाहा तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं.

भूतनाथ को मैं इसके लिए भाग्यशाली समझूगा कि ऐसा रमणीरत्न उसके पास बिना माँगे आया है जो जितना मुन्दर है उतना ही धनवान भी है, परन्तु फिर भी लौकिक रीति के अनुसार मैं कुछ निर्णय करने के पहिले ही इसकी मर्जी भी जान लेना आवश्यक समझता हूँ! कहो जी भूतनाथ, श्यामा ने जो कुछ कहा है उस सम्बन्ध में तुम्हारी क्या राय है?

" भूतनाथ यह सुन बोला, " आप बड़े हैं, आपकी जो आज्ञा होगी वह मुझे शिरोधार्य होगी ही फिर भी इतना कह देना चाहता हूँ कि मेरा पेशा ऐयारी का है और ऐयारों की जान हरदम सूली पर टंगी रहती है, किस समय क्या हो जायगा इसे यों तो कोई भी नहीं कह सकता पर एक ऐयार के लिए तो इसका हाल कह सकना एकदम ही असम्भव है.

दूसरे, मैं कोई बहुत लक्ष्मीपात्र भी नहीं हूँ.

मैं स्वयं दूसरे की दी हुई रोटी खाता हूँ और मालिक की आज्ञा बजाने के लिए मुझे हरदम तैयार रहना पड़ता है.

फिर मेरे दो विवाह हो चुके हैं और उनसे सन्तति भी है - इस बात को भी आप विचार लें.

" साधू:

(श्यामा की तरफ देख कर) तूने भूतनाथ की बातें सुनीं?

श्यामा:

(हाथ जोड़ कर नीची निगाह किए हुए) जी हाँ, पर मुझे जवाब में कुछ भी नहीं कहना है.

मैं हिन्दू स्त्री हूँ.

हिन्दू स्त्री एक बार मन से जिसे अपना स्वामी मान लेती है वह उसी घड़ी उसके तन - मन और धन का स्वामी हो जाता है अस्तु ये तो अब मेरे स्वामी हो चुके.

मैं पहिले ही कह चुकी और अब फिर कहती हूं कि ये जिस तरह जहाँ और जैसे मुझे रक्खें मैं वैसे ही रहूँगी, मुझे किसी बात में कोई उज्र न होगा.

मेरी सौतें बड़ी बहिनों की तरह मेरी पूज्य होंगी और उनके लड़कों को मैं अपनी जान से ज्यादा मानूँगी.

रहा गरीबी - अमीरी का खयाल सो आप कहते ही हैं, कि मेरा काशीजी वाला मकान मौजूद है, उसमें दौलत कुछ न कुछ होगी ही, उससे हम लोगों का गुजर अच्छी तरह हो सकता है.

दूसरी बात अपने ऐयारी पेशे की इन्होंने कही है, तो उसके सम्बन्ध में मुझे सिर्फ इतना ही कहना है कि अगर आज ये ऐयारी न जानते होते तो मैं इसी तिलिस्म में बन्द सड़ा करती और मेरी लाश को भी कोई न पूछता.

यह इन्हीं का काम था कि मुसीबत और आफत की परवाह न कर इन्होंने मुझे इस कैदखाने से छुड़ाया.

साधू:

(भूतनाथ से) अब तुम्हें क्या कहना है?

भूत:

मुझे तब भी कुछ नहीं कहना था और अब भी कुछ नहीं कहना है.

आप जो कहें वही मुझे मंजूर है, हाँ जिसमें पीछे कोई बदमजगी न हो इसलिए मैंने अपना हाल साफ - साफ पहिले ही कह देना मुनासिब समझा.

तुम्हारे जैसे बहादुर से मुझे ऐसी ही उम्मीद थी और इतना भी तुम समझ रक्खो कि श्यामा जैसी स्त्री बड़े भाग्यशाली को ही मिलती है.

यह जैसी मुन्दर है वैसी ही सुशील भी है.

इसके गुणों का परिचय तुम्हें आप ही आप लग जायगा, और फिर यह धन से भी भरपूर है.

माता - पिता के मर जाने और दुष्टों के फेर में बरसों से पड़े रहने पर भी इसके पास अभी अगाध दौलत है जिसे तुम बेइन्तहा खर्च करके भी एक जन्म में खतम नहीं कर सकते.

तुम्हें इन सब बातों का पता धीरे - धीरे स्वयं ही लग जायगा.

अच्छा, जब तुम दोनों को विवाह - सूत्र में बाँध एक कर दूं और अपने सिर के एक बहुत बड़े बोझ को सदा के लिए दूर कर द.

लाओ अपना - अपना हाथ बढ़ाओ.

श्यामा का हाथ लेकर साधु महाशय ने भूतनाथ के हाथ में दे दिया और तब स्वयं दोनों को पकड़े हुए कुछ मंत्र पढ़ने लगे.

जब मंत्र समाप्त हुए तो दोनों के सिर पर हाथ रख उन्होंने आशीर्वाद दिया और कहा, " बस अब तुम दोनों पति - पत्नी हुए! संसार में उसी तरह रहना और सुख से जीवन बिताना.

भूतनाथ अब तुम अपनी स्त्री को लेकर जहाँ चाहे जाओ और मैं भी बद्रिकाश्रम की यात्रा करता हूँ,

पर हाँ, एक बात तो मैं भूल ही गया.

" इतना कह साधू महाराज ने अपनी कमर उढोली और बड़ी - सी चाभी निकाल कर श्यामा की तरफ बढ़ाते हुए कहा, " यह तेरे काशीजी वाले मकान की चाभी है, " श्यामा

ने भूतनाथ की तरफ इशारा करके कहा, " जिसकी चीज है उन्हें ही दे दीजिए.

" जिसे सुन हँसकर साधू महाराज ने वह ताली भूतनाथ की तरफ बढ़ाई जिसने उसे लेकर अपने बटुए में डाल लिया.

इसके बाद साधू महात्मा बोले, “ मेरे पीछे - पीछे चले आओ तो मैं तुम लोगों को इस जगह से बाहर कर दूँ साधू महाशय दूसरी तरफ घूमे और भूतनाथ तथा श्यामा उनके पीछे - पीछे रवाना हुए.

कई दरबाजों से होकर इन्हें एक लम्बी सुरंग में घुसना पड़ा और जब उसके बाहर हुए तो अपने को घने जंगल में पाया.

गौर करने से भूतनाथ को मालूम हुआ कि वह इस जगह पहिले भी कई दफे आ चुका है, पर इस गुफा का मुंह लता आदि से पूरी तरह ढंका होने के कारण असली हाल का कोई गुमान आज तक उनको न हुआ था.

जंगल में पहुँच कर साधू महाशय रुके और बोले, " अब मैं तुम लोगों से विदा होता हूँ, ” जिसे सुन श्यामा उनके पैरों पर गिर पड़ी.

देखा - देखी भूतनाथ ने भी उनके चरण छुए और तब दोनों को आशीर्वाद दे साधु महाशय एक तरफ को चले गए.

जाती समय श्यामा के एक सवाल के जवाब में कहते गए कि यदि हो सका तो एक बार फिर तुझसे मिलूँगा ', अब भूतनाथ और श्यामा अकेले रह गये.

भूतनाथ कुछ देर तक श्यामा की रुप - छटा को देखता रहा और तब उसका हाथ पक्रड़ कर बोला, " कहो अब क्या विचार है?

श्यामा ने एक बार निगाह उठा कर उसकी तरफ देखा पर आँखें चार होते ही वह शर्मा गई और सिर तीचा करके बोली, " आपकी जो कुछ आज्ञा हो वह मैं करने को तैयार हूँ, पर मेरा विचार तो यही था हम लोग एक बार काशी चलते.

वहाँ अपने मकान की कैफियत भी देख ली जाती और मैं कुछ समय तक वहाँ रह कर आराम भी कर लेती, क्योंकि कैद की सख्तियों ने मुझे बहुत कमजोर कर दिया है.

भूतनाथ ने कहा, “ मुझे जरूरी काम से मिर्जापुर जाना है इससे काशी में रह तो न सकूँगा पर हाँ तुम्हें वहाँ तक पहुँचाता हुआ आगे बढ़ जाऊँगा.

"

श्यामा ने जवाब दिया, " खैर यही सही, मगर कम - से - कम एक दिन तो आपको वहाँ जरूर रहना होगा ताकि मैं आपकी सेवा कर अपना जीवन सफल कर लूँ! " भूतनाथ ने इसे मंजूर कियाऔर तब दोनों प्रेमी हाथ में हाथ डाले खुशी - खुशी वहाँ से रवाना हुए.

भूतनाथ श्यामा को साथ लिए चक्कर काटता हुआ पुनः उसी कुएँ के पास पहुँचा जिसके अन्दर कूद कर वह श्यामा को लाया था.

उसका घोड़ा अभी तक उसी जगह खड़ा था.

भूतनाथ ने श्यामा को उस पर सवार कराया और तब खुद भी सवार हो काशी का रास्ता लिया.

इस समय पौ फट चुकी थी बल्कि सवेरा हो चला था.

भूतनाथ के जाने के थोड़ी देर बात न - जाने कहां से वे पाँचों आदमी भी घूमते - फिरते उसी कुएँ पर आ पहुँचे जिन्होंने भूतनाथ पर हमला किया था तथा जिन्हें वह अपनी कारीगरी से बेहोश करके कुएँ के अन्दर ही छोड़ आया था और इनके वहाँ पहुँचने के थोड़ी देर बाद वे बाबाजी भी वहाँ आ पहुंचे.

उन आदमियों ने उन्हें देखकर हाथ जोड़ा और एक आदमी ने आगे बढ़ कर पूछा, " क्या वह काम हो गया?

" बाबाजी ने कहा, " हाँ बखूबी, भूतनाथ श्यामा को लेकर काशी गया अबकी बार वह पूरी तरह से हम लोगों के जाल में फंसा है और मुझे उम्मीद है कि श्यामा उसे अच्छी तरह से उल्लू बनावेगी.

" बाबाजी की बातें सुन उस आदमी ने कहा, " बेशक आपकी कारीगरी ने बड़ा असर किया.

अब हम लोगों को क्या आज्ञा होती है?

" बाबाजी ने यह सुन कर जवाब दिया, " तुम लोग भी काशी चले जाओ और छिपे रूप से श्यामा की मदद करो, मगर आज के पाँचवें दिन आधी रात के समय इन्द्रदेव के मकान के दक्खिन की रिछिया पहाड़ी वाली गुफा में मुझसे जरूर मिलना और अपने साथियों को भी वहीं लेते आना.

" उस आदमी ने “ जो हुक्म " कहा और तब अपने साथियों समेत बाबाजी को प्रणाम कर कुएँ के नीचे उतर गया.

उनके जाने के बाद बाबाजी कुएँ के पास गए और कुएँ के अन्दर झुक कर कुछ देर तक न जाने क्यां करते रहे, इसके बाद जगत के नीचे उतरे और दबि वन की तरफ रवाना हो गये.

आठवा व्यान।

लहू से सने उस भयानक सर को यकायक अपने सामने पा इन्द्रदेव एकदम चौंक पड़े और घबड़ा कर उसी तरफ देखने लगे परन्तु जल्दी ही उन्होंने अपने होश हवास दुरुस्त क़िये और कोठरी के बीचोबीच में पहुंचे.

उन्होंने उस सर को बड़े ही गौर से देखा क्योंकि उन्हें गुमान हुआ कि यह कदाचित् उन्हीं के किसी साथी या ऐयार का होगा, पर ऐसा नहीं था और आज से पहिले उस शक्ल को उन्होंने कभी देखा न था.

अच्छी तरह गौर करके जब इसका विश्वास कर लिया तो वे कुछ निश्चिंत हुए और तब इस बात को सोचने लगे कि यह सर वहाँ आया किस तरह! इधर - उधर देखते ही उनकी निगाह एक कागज के टुकड़े पर पड़ी जो चौकी के नीचे पड़ा हुआ था.

उन्होंने उसे उठा लिया और पड़ा, यह लिखा हुआ था, " तिलिस्मी शैतान अपने दुश्मनों से किस तरह बदला लेता है यही दिखाने के लिए यह सर रख दिया गया है.

पीछा करने वाले होशियार! " इन्द्रदेव ने कई बार इस पुर्जे को पड़ा और देर तक इस लिखावट पर गौर करते रहे पर कुछ समझ न सके, इसका लिखने वाला कौन है.

आखिर उनके मुंह से निकला, " ख़ैर, यह तिलिस्मी शैतान चाहे जो कोई भी हो मगर इसमें शक नहीं कि तिलिस्मी मामलों में इसकी जानकारी कम नहीं है.

यहाँ तक आ पहुँचने वाला कोई मामूली कदापि नहीं हो सकता, मगर मुझे भी देखना है कि यह कितने पानी में है! " इन्द्रदेव उस कटे सिर के पास से हटे और कमरे के दक्खिन तरफ की दीवार के पास पहुंचे, इस जगह एक आले में बनी हुई एक छोटी मूर्ति थी जिसका मुंह खुला हुआ था.

वही हीरे वाली ताली इन्द्रदेव ने उसके मुंह में डाली और कई बार घुमाया जिसके साथ ही दीवार का एक पत्थर हट गया और सामने रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

इन्द्रदेव ने मूर्ति के मुंह से ताली निकाली और उस रास्ते के अन्दर घुस गए.

भीतर जाते ही यह दरवाजा आप ही आप बन्द हो गया.

अब जिस जगह इन्द्रदेव ने अपने को पाया वह बहुत बड़े बाग के अन्दर बना हुआ एक दालान था जिसके चारों तरफ तरह तरह की और भी बहुत सी इमारतें बनी हुई थीं पर इन्द्रदेव किसी तरफ न जाकर उसी दालान में एक तरफ बनी हुई सीढ़ियों की राह ऊपर की मंजिल में चढ़ गए और एक बड़े कमरे में पहुंचे जिसमें चारों तरफ कितने ही खिड़की और दरवाजे थे जो सभी इस समय बन्द थे मगर ऊपर की तरफ बने हुए कई रोशनदानों की वजह से इतना चांदना आ रहा था कि वहाँ की चीजें साफ दिखाई पड़ सकें.

उस कमरे में बहुत - सी बिचित्र और ताज्जुब में डालने वाली चीजें दिखाई पड़ रही थीं मगर इन्द्रदेव ने किसी तरफ ध्यान न दिया और सीधे उस बीच वाले संगमर्मर के बहुत बड़े गोल टेबुल के पास चले गये जिस पर काले पत्थर की पच्चीकारी के काम का एक किसी बहुत ही बड़ी इमारत का नक्शा दिखाई पड़ रहा था.

यह उस घाटी और उसके साथ की इमारतों का नक्शा था और जिसे देख उस पूरे तिलिस्म का अनुमान सहज ही में किया जा सकता था.

जगह - जगह बारीक अक्षरों में बहुत - सी लिखावटें भी थीं तथा और भी तरह - तरह के निशान स्थान - स्थान पर बने थे जिनका मतलब जानकारों को ही समझ में आ सकता था.

इन्द्रदेव ने और किसी तरफ ध्यान न देकर बीच में एक स्थान पर अंगूठा रखा और जोर से दबाया.

दबाने के साथ ही खटके की आवाज आई और उसी समय उस नक्शे में दो जगह लगे हुए शीशे के दो छोटे बटन तेजी से साथ चमकने लगे.

इन्द्रदेव ने और भी कई जगह अंगूठे से दबाया पर कोई असर न होता देख कर बोले, " वेशक वह तिलिस्मी शैतान अपने साथियों को लेकर निकल गया.

इस समय सिर्फ मैं और वह लाश जिसका कटा सिर मैं अभी देखता आ रहा हूँ इस जगह है और इसी में से सिर्फ दो ही रोशनियाँ दिख रही हैं.

अफसोस, तिलिस्मी रास्तों का बन्द करना व्यर्थ हो गया ।

खैर अब लौटना चाहिए.

" इन्द्रदेव ने कोई कारीगरी की जिससे उन दोनों बटनों का चमकना बन्द हो गया.

इसके बाद वे बीच वाले दालान में पहुंचे जो कल - पुर्जो से भरा था.

उन्होंने किसी पुर्जे को छेड़ा जिससे वह आबाज जो इस इमारत में गूंज रही थी बन्द हो गई.

इसके बाद एक सुरंग का मुहाना खोल वे उस स्थान से बाहर हो गये.

सुरंग के मुहाने पर उनका एक आदमी घोड़ा लिए मौजूद था.

उस आदमी के सुपुर्द कुछ काम कर वे घोड़े पर सवार हुए और तेजी के साथ कैलाश - भवन की तरफ रवाना हो - कर संध्या के पहिले ही वहाँ पहुँच गये.

दूसरे दिन सुबह के समय इन्द्रदेव अपने एकान्त के कमरे में बैठे हुए कोई पुस्तक देख रहे थे जब एक नौकर ने आकर कहा, " अर्जुनसिंहजी आये हैं और मिलना चाहते हैं.

" इन्द्रदेव ने कहा, " उन्हें मुलाकाती कमरे में बैठाओ, मैं अभी आया " और जब नौकर चला गया तो वे भी किताब बन्द कर वहाँ से उठ खड़े हुए और यह कहते हुए बाहर की तरफ चले, “ यह अर्जुनसिंह कैसे आ पहुँचे?

मालूम होता कि किसी तरह शिवदत्त के क़ैद से इन्हें छुट्टी मिल गई !! शायद हमारे पाठक अर्जुनसिंह को भूल गये हों क्योंकि इधर बहुत दिनों से उनका जिक्र नहीं आया है.

ये वही अर्जुनसिंह हैं जिनको साथ लेकर इन्दुमति कैलाशभवन के बाहर निकली थी.

इन्होंने ही गौह को गिरफ्तार किया था, इन्हीं की सुपुर्दगी में मालती ने इन्दुमति को लोहगढ़ी में छोड़ा था, और यही इन्दु के साथ शिवदत्त के सिपाहियों द्वारा पकड़े गये थे.

उसके बाद से इनका जिक्र फिर नहीं आया और हम नहीं कह सकते कि अब तक ये कहाँ रहे, हाँ आज हम इन्हें कैलाश भवन में देख रहे हैं.

सम्भव है कि इनकी बातचीत से कुछ इनका पिछला हाल हमें मालूम हो जाय.

जिस समय इन्द्रदेव ने उस कमरे में प्रवेश कियाउस समय अर्जुनसिंह बेचैनी के साथ इधर - उधर घूम - फिर रहे थे और उनके चेहरे से परेशानी तथा घबराहट झलक रही थी.

इन्द्रदेव ने उन्हें देखते ही खुश होकर कहा, " बाह - वाह अर्जुन, तुम तो ऐसा गायब हुए कि कुछ पता ही नहीं! कहो इतने दिन कहाँ रहे और क्या - क्या किया?

अर्जुन ०:

मैं अपना पूरा हाल अभी आपको सुनाऊँगा मगर सब के पहिले मैं यह सन्देह दूर कर लेना चाहता हूँ कि हम दोनों में कोई सूरत बदले हुए ऐयार तो नहीं है.

१.

देखिए भूतनाथ का बारहवाँ भाग, सातवें बयान का अन्त.

आपके इन्द्रदेव होने में तो कोई शक नहीं हो सकता पर अपने परिचय के लिये मैं कहता हूँ – ' कनकलता '.

इन्द्रदेव:

तब मैं कहूँगा – ' धूमावती.

अर्जुन ०:

बस तब ठीक है, अच्छा अब सुनिए कि मैं इतने दिनों तक कहाँ रहा और क्या करता रहा.

इन्द्रदेव:

यह तो मुझे मालूम हो चुका था कि तुम शिवदत्त के ऐयारों के फेर में पड़ गये हो, पर यह जानना चाहता हूँ कि तुम छूटे कैसे?

मैं बहुत दिनों से इस फिक्रमें था कि किसी तरह तुम्हें छुड़ाऊँ क्योंकि तुमसे कई बहुत जरूरी काम लेने थे, मगर फुरसत नहीं मिलती थी कि कुछ कर सकूँ.

अर्जुन:

आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं शिवदत्त की कैद में था?

इन्द्रदेव:

मुझे इन्दुमति की जुबानी मालूम हुआ था जो तुम्हारे साथ ही लोहगड़ी में गौहर की करतूत से शिवदत्त के ऐयारों द्वारा पकड़ी गई थी.

भूतनाथ चालाकी से उसे तो छुड़ा लाया मगर तुम रह ही गए.

मैंने जब इन्दुमति की जुबानी तुम्हारा हाल सुना तो तुमको छुड़ाने की फिक्र हुई मगर जैसाकि मैंने कहा एक तो फुरसत नहीं मिलती थी दूसरे इस बात का भी पता न था कि शिवदत्त के उन ऐयारों ने अपना अड्डा कहाँ बनाया हुआ है जो यहाँ आकर इस कदर उपद्रव मचाए हुए हैं.

इधर जो कुछ मुसीबतें मुझ पर और राजा गोपालसिंह पर आई वह तो शायद तुम्हें मालूम ही हो चुका होगा.

अर्जुन:

हाँ, मैंने वह सब हाल सुना.

अफसोस, कुछ कहा नहीं जा सकता कि परमात्मा की क्या मरजी है! खैर मैं अपना हाल बताता हूँ, मैं तब से उसी शिवदत्त की कैद में था.

उसके आदमियों ने मुझे एक गुफा में इस तरह बन्द कर रखा था कि निकलने का कोई मौका ही नहीं मिलता था.

कल आपके आदमी महावीर ने मुझे छुड़ाया तब मैं यहाँ तक आ सका हूँ, इन्द्रदेव:

(ताज्जुब से) महाबीर ने तुम्हें छुड़ाया?

सो कैसे वह खुद कहाँ है?

मैंने उसे एक बहुत जरूरी काम से भेजा था पर वह लौट कर वापस नहीं आया.

अर्जुन:

मुझे वह हाल मालूम है.

आपने उसे रथ देकर प्रभाकरसिंह की आज्ञानुसार काम करने को भेजा था और उसकी मदद के लिए कई आदमी भी दिए थे.

इन्द्रदेव हाँ, तब फिर क्या हुआ?

मुझे इसके बाद का हाल कुछ भी मालूम नहीं है.

अर्जुन:

जो कुछ मुझे मालूम है सो मैं बताता हूँ.

प्रभाकरसिंह ने बड़ी चालाकी से आपकी स्त्री को दुष्ट दारोगा के कब्जे से छुड़ा लिया और जमानिया से बाहर निकल गए.

वहाँ महाबीर रथ लिए मौजूद था जिस पर प्रभाकरसिंह आपकी स्त्री को लिए सबार हुए और तिलिस्मी घाटी की तरफ रवाना हुए तथा एक आदमी उन्होंने आपकी तरफ यह समाचार देने के लिए भेजा कि वे सयुं को छुड़ा कर तिलिस्मी घाटी की तरफ जा रहे हैं.

भाग्यवश उस समय उसी जंगल में छिपे हुए शिवदत्त के कई ऐयार मौजूद थे.

उन्होंने प्रभाकरसिंह और सरयू को देख लिया और उस आदमी को जो आपके पास भेजा गया था धोखा दे कुछ हाल भी जान लिया.

इसके बाद वे प्रभाकरसिंह और सरयू को पकड़ने की फिक्र में लगे.

जो चार सवार आपके रथ के साथ थे उन्हें उन लोगों ने पकड़ा और तब उनकी सूरत बन खुद रथ के साथ हो गये.

मगर न जाने किस तरह प्रभाकरसिंह को कुछ शक हो गया, वे खुद तो सरयू को लेकर लोहगड़ी में रह गये और महावीर को अपनी सूरत बना अर्थात् वहीं साधु का रूप धरा कर रथ पर भेज दिया.

शिवदत्त के आदमियों ने उसी को प्रभाकरसिंह समझा और रथ पर ले भागे.

जब डेरे पर पहुँचे और जांच की तो भण्डा फूटा और प्रभाकरसिंह की जगह महाबीर को पाकर बहुत झल्लाये मगर कर ही क्या सकते थे.

आठ पहर तक महावीर उनकी कैद में रहा.

बीच ही में उस आदमी से भी मुलाकात हुई जो आपके पास समाचार देकर भेजा गया था.

आज रात किसी चालाकी से उन दोनों ने अपने को छुड़ा लिया और तब मुझे भी कैद से छुट्टी दी.

हम लोगों को यह खबर न थी कि आप कहाँ पर हैं अस्तु महाबीर तो लोहगड़ी की तरफ गया, वह दूसरा आदमी जमानिया गया, और मैं इधर को रवाना हुआ.

नियत यह थी कि जल्दी - से - जल्दी आपको यह खबर लग जाय और आप जो मुनासिब समझें सो करें.

बारे यहाँ आने पर आपसे मुलाकात हो गई, बस इतना ही तो मेरा हाल है! इन्द्रदेव बड़े गौर से मगर चुपचाप सब हाल सुन रहे थे,

जब अर्जुनसिंह की बात खतम हुई तो वे देर तक कुछ सोचते रहे और इसके बाद बोले, " क्या प्रभाकरसिंह और सरयू को लोहगड़ी में ही छोड़ कर महावीर उनकी शक्ल बना कर शिवदत् के आदमियों के पास आया था?

अर्जुन:

हां मगर आपके ढंग से मालूम होता है कि वे अभी तक आपके पास नहीं पहुँचे!
इन्द्रदेव:

नहीं, उनकी कुछ भी खबर मुझे नहीं है और मालूम होता है कि या तो दुश्मनों के डर से वे अभी तक लोहगड़ी के बाहर ही नहीं निकले और या फिर किसी नई मुसीबत में फंस गए, अर्जुन:

यह घटना परसों की है और जब आज तक वे आपके पास नहीं पहुँचे तो जरूर ऐसी ही कोई बात मालूम होती है.

ऐसी हालत में आपको सबसे पहिले इसी की जाँच करनी चाहिए कि वे लोहगड़ी में हैं या नहीं.

इन्द्र):

बेशक, और इसके लिए मैं इसी समय वहाँ जाना चाहता हूँ, अर्जुन ०:

अगर आज्ञा दीजिए तो मैं आपके साथ चलू.

इन्द्रः:

नहीं, अभी तुम दूर से चले आ रहे हो और थके - मांदे भी हो, इस समय कुछ देर तक सुस्ताना ही तुम्हारे लिए बहुत अच्छा होगा, तुम अभी यहीं रहो, यहाँ सब तरह का आराम मिलेगा, और मैं लोहगढ़ी जाता हूँ, अगर वहाँ दोनों मिल गये तो उत्तम ही है नहीं तो यहीं लौट कर आऊँगा और तब सलाह करूंगा कि अब क्या करना चाहिए.

अर्जुन:

अच्छी बात है, आप जो कहें मैं वैसा ही करने को तैयार हूँ, इन्द्रदेव ने अर्जुनसिंह के नहाने - धोने और खाने का प्रबन्ध कर दिया और तब एक तेज़ घोड़े पर सवार हो अकेले ही लोहगड़ी की तरफ रवाना हो गए.

नौवा व्यान।

दयाराम और जमना - सरस्वती ने उस बाग और बारहवरी को ही अपना मकान या कैदखाना माना और उसी में अपना समय काटने लगे, क्योंकि कई दिन तक चारों तरफ अच्छी तरह घूमने और चक्कर लगा लेने के बाद उन्हें विश्वास हो गया कि वह बाग और इसके चारों तरफ की इमारतें तिलिस्मी हैं और इनके बाहर निकलना उन लोगों के लिये असम्भव है.

हम ऊपर लिख आए हैं कि इस बाग में मेवों के पेड़ बहुतायत से थे और पानी का एक चश्मा भी बह रहा था अस्तु इन लोगों को भूखे रहने की नौबत नहीं आ सकती थी, पर हाँ मौसम की ज्यादतियों की तकलीफ जरूर सहनी पड़ती थी क्योंकि इसमें रहने लायक स्थान सिर्फ बीच में बनी वह बारहदरी ही मात्र थी जो यद्यपि काफी बड़ी तो थी पर चारों तरफ से खुली रहने के कारण न तो गरमी की लू न बरसात की बौछार और न जाड़े की बदन ठिठुराने वाली हवा से ही उन्हें बचा सकती थी.

फिर भी अपने उद्योग से इन तीनों ने बारहदरी के एक कोने को मिट्टी के ढोंके, पेड़ों के डालियों तथा पत्तों से घेर - बार कर कुछ आड़ बना ली और इसी में अपने कैद के दिन काटने लगे, अस्तु, इस बाग में रहते - रहते इन्हें महीनों हो गये और धीरे - धीरे महीनों के वर्षों में परिणत होने की नौबत आ गई, बाहर क्या हो रहा है इसकी इन्हें मुतलक खबर न थी क्योंकि यहाँ किसी भी गैर की सूरत इन्हें दिखाई नहीं पड़ सकती थी और संध्या के बाद ही इस कदर सन्नाटा छा जाता था कि अगर ये लोग तीन आदमी न होकर कोई एक ही होता तो ऐसी अकेली और भयावनी जगह में घबड़ा कर जरूर पागल हो जाता पर ये कई होने की वजह से ही किसी प्रकार अपने दिन काट लेते थे.

फिर भी यहाँ की बेकारी और अपनी लाचारी इन्हें बहुत खलती थी और बराबर अपने छूटने की तरक़ीब सोचा करते थे, मगर लाचार थे कि यहाँ से बाहर होने की तरक़ीब नहीं दिखाई पड़ती थी.

दोपहर का वक्त है.

बारहदरी के सामने की जमीन पर पेड़ों की छोटी - छोटी डालियाँ रख कर और उन्हें बची हुई घास की रस्सी से बाँध कर एक सीड़ी बनाने की कोशिश करते हुए दयाराम दिखाई पड़ रहे हैं और उनके बाईं तरफ कुछ हट कर जमना और सरस्वती बैठी हुई हैं जो घास - पात बटोर कर उसकी रस्सियाँ बट रही हैं.

काम करने के साथ ही इन तीनों में बातचीत भी हो रही है ।

जमना:

क्या आपको विश्वास है कि इस रस्सी और सीढ़ी की मदद से आप इस जगह के बाहर हो सकेंगे?

सरस्वती:

अगर बाहर न भी हो सके तो क़म - से - कम (हाथ से बता कर) उस मकान तक तो पहुँच ही सकेंगे जो यहाँ से दिखाई दे रहा है.

और वहाँ तक अगर हम जा सके तथा उन कमरों में से किसी को खोल सके जो दिखाई पड़ रहे हैं तो यहाँ की बनिस्बत आराम ही से रहेंगे.

जमना:

यह क्योंकर कह सकते हैं मुमकिन है कि वहाँ खाने - पीने की कोई चीज हमें न मिले.

यहाँ के मेवे के पेड़ों और इस झरने की बदौलत सब तरह की तकलीफ होने पर भी क़म - से - कम भूख - प्यास की तकलीफ हमें नहीं है.

वहाँ क्या जाने यह जात होगी कि नहीं सरस्वती:

अगर मान लिया जाय कि वहाँ खाने - पीने का प्रबन्ध न हो तो भी यह जगह तो बनी ही रहेगी.

जिस तरह यहाँ से वहाँ जायेंगे उसी तरह से वहाँ लौट भी आ सकेंगे.

जमना:

इसका कौन ठिकाना! यह तिलिस्मी जमीन है, यहाँ कदम - कदम पर जोखिम है, क्या जाने वहाँ जाकर लौटना मुमकिन हो या न हो.

सरस्वती:

खैर तो फिर जो कुछ होगा झेलेंगे, मुसीबत, आफत और जोखिम तो सभी जगह हैं, क्या पलंग पर पड़े - पड़े आदमी मर नहीं जाते.

अगर इस तरह बात - बात पर डरा करें तो कुछ काम ही नहीं हो सकता.

दयाराम अपना काम करके जाते थे और उनकी बातें भी सुनते जाते थे.

सरस्वती की आखिरी बात सुन कर वह बोले, " बेशक ऐसा ही है, और इसीलिये उद्योग को इतना महत्त्व दिया गया है.

उच्चाभिलाषी कभी जोखिम या मुसीबत से नहीं डरते और जो डरते हैं वे कुछ नहीं कर सकते.

अस्तु हर एक को हर वक्त आफत सहने के लिये तैयार रहना चाहिये.

अपनी ही तरफ देखो, हम लोगों ने किसके साथ बुराई की थी?

किसी से कुछ नहीं, फिर भी कैसी मुसीबतें हम लोगों को झेलनी पड़ीं अब तक भी बराबर उठानी पड़ रही हैं.

ये क्या हमने जान - बूझ कर बुलाई हैं?

यह तो आपसे आप हमारे सर पर आ पड़ी हैं और हमें झेलनी ही पड़ेंगी, हम चाहें या न चाहें.

इसी तरह हर एक नये काम में होता है, अगर उसके द्वारा हम पर कोई आफत आने वाली है तो आकर ही रहेगी पर बहुत हालतों में यही देखा जाता है कि उद्योगशीलों की परमात्मा भी सहायता करता है, अस्तु क़ोशिश से बाज न आना चाहिये, फल चाहे जो हो.

" जमना:

जी हाँ, यह तो कहना ठीक है मगर आदमी को अपनी बुद्धि का भी साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिये.

अगर हम जान - बूझ कर आग छुएँगे तो हमारा हाथ जरूर ही जलेगा.

दयाराम इसका कुछ जवाब देना ही चाहते थे कि यकायक रुक गये और अपने सामने की इमारत की तरफ गौर से देख कर बोले, " यह क्या! वहाँ कोई औरत देख रहा हूँ या

मेरी आँखें मुझे धोखा दे रही हैं! " जमना और सरस्वती ने भी यह सुन ताज्जुब से उसी तरफ देखा और साथ ही उनके मुँह से भी एक आश्चर्य की आवाज निकल गई.

हम ऊपर लिख आये हैं कि जिस बाग में ये लोग थे उसके उत्तर और पूरब के कोने में काले पत्थर का एक ऊँचा बुर्ज था जिसके सिरे पर से लोहे का एक खंभा ऊपर की तरफ निकला हुआ था जिसके साथ बहुत - सी तारें बंधी हुई थीं.

इस समय उसी बुर्ज या बारहदरी पर खड़ी हुई एक औरत इन लोगों को दिखाई पड़ी जो एकटक इन्हीं की तरफ देख रही थी ।

कुछ देर के बाद वह उधर से घूमी और पूरब की तरफ मुड़ी.

मालूम होता है कि उधर कोई आश्चर्य की चीज उसे दिखाई पड़ी क्योंकि उधर देखते ही वह चौंक पड़ी और एक तेज निगाह उस तरफ डालते ही हट कर आँखों की ओट हो गई.

उसके हटते ही दयाराम अपनी जगह से उठ खड़े हुए और यह कह कि मैं उस तरफ जाकर देखता हूँ कि यह क्या मामला है और यह औरत कौन है - बाग के उसी कोने की तरफ चले जिधर वह बुर्ज था.

बात - की - बात में वे उस जगह पहुंच गए और तब उस बुर्ज की तरफ बड़े गौर से देखने लगे मगर किसी की सूरत दिखाई न पड़ी.

आखिर उन्होंने जोर से पुकारकर कहा, “ हम लोग बरसों से यहाँ बन्द कैदी हैं, क्या वह जो अभी दिखाई पड़ी थीं हमारी कुछ मदद कर सकती हैं.

कई बार जोर - जोर से उन्हें पुकारा और आवाजें दी मगर सब व्यर्थ हुआ.

बाग की चहारदीवारी के साथ - साथ वे चारों तरफ घूम भी आये मगर कहीं किसी की भी शक्ल दिखाई न पड़ी, लाचार वे पुनः उसी जगह लौट आये जहाँ जमना - सरस्वती को छोड़ गए थे और उनसे बोले, " मैंने कई आवाजें दी मगर कोई जवाब न मिला, न - मालूम वह कौन औरत थी! " बहुत देर तक वे लोग उसी औरत के बारे में बातें करते रहे और अन्त में संध्या हो जाने पर अपने मामूली कामों में लगे परंतु इतना इन लोगों ने निश्चय कर लिया कि यदि कभी वह सीड़ी और रस्सा बन गया जो वे लोग तैयार कर रहे

हैं तो एक बार जरूर उस जगह तक पहुँचने की कोशिश करेंगे जहाँ वह औरत दिखाई पड़ी थी.

सम्भव है कि वहाँ से बाहर निकलने की कोई सूरत निकल आये.

आधी रात का समय है.

जमना, सरस्वती और दयाराम उस दालान में बेखबर सोये हुए हैं.

चन्द्रमा अभी पेड़ की ओट से निकला है.

यकायक कहीं से भारी धमाका और एक चीख की आवाज उस जगह के सन्नाटे को तोड़ती हुई गूंज उठी जिसने औरों को नहीं मगर सरस्वती की कमजोर नींद तुरंत तोड़ दी.

करवट बदल कर वह उठ बैठी और ताज्जुब के साथ चारों तरफ देखने लगी.

यकायक उसकी निगाह उसी बारहदरी की तरफ चली गई जहाँ दिन को वह औरत दिखाई पड़ी थी, और यह देख सरस्वती को बड़ा ही ताज्जुब हुआ कि उसके ऊपर जो खम्भा था उसके सिरे से बेतरह तेज रोशनी निकल रही है.

गौर करने से सरस्वती को मालूम हुआ कि उसके सिरे पर जो चिड़िया की शक्ल बनी हुई है उसी की आँखों में से वह रोशनी निकल रही थी.

सरस्वती ने सोचा कि जरूर अब कोई विचित्र वात देखने में आवेगी और इसी नीयत से उसने पास ही नींद में बेखबर पड़े हुए जमना और दयाराम को उठाना चाहा मगर उसी समय यकायक वह रोशनी जिस तरह दिखाई पड़ी थी उसी तरह बुझ गई.

अस्तु सरस्वती रुक गई और इस बात की राह देखने लगी कि यदि कोई और नई बात हो तो उन लोगों को जगावे नहीं तो सुबह इसका जिक्र कर देगी.

मगर उसने अपनी निगाह उसी तरफ रक्खी, थोड़ी देर के बाद सरस्वती को बाग के पूरब तरफ कुछ रोशनी दिखाई पड़ी और गौर करने से मालूम हुआ कि यह उस इमारत में से आ रही है जिसके अंदर खुशनुमा बाग बना हुआ है चूँकि उस जगह बाग की चहारदीवारी में बहुत - सी खिड़कियाँ थीं जिनकी राह उस इमारत के भीतर का काफी

हिस्सा दिखाई पड़ सकता था अस्तु सरस्वती को यह उम्मीद हुई कि वहाँ जाने पर कोई - न - कोई नई बात दिखेगी.

वह उठ खड़ी हुई और कदम दबाए तथा पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाये हुए उसी तरफ चली.

थोड़ी ही देर में सरस्वती उस जगह पहुंच गई और उन कई दरवाजों में से एक की राह भीतर की तरफ देखने लगी.

हम पहिले लिख आये हैं कि इस तरफ एक लम्बी - चौड़ी इमारत थी जिसके कई दरवाजे बाग की तरफ पड़ते थे जिसमें लोहे के मोटे छड़ लगे रहने के कारण यद्यपि बाग में से किसी आदमी का अन्दर जाना असम्भव था मगर दरवाजे खुले रहने की हालत में खड़ा आदमी भीतर का हाल बहुत कुछ देख सकता था.

इस समय सरस्वती ने उन्हीं में से एक दरवाजे की राह अन्दर जो कुछ देखा वह एक कौतूहलप्रद घटना थी.

सरस्वती ने देखा कि भीतर के संगमर्मर के आंगन के बीच बाबली और उसके चारों तरफ का बनावटी बाग इस समय रोशनी से जगमग हो रहा है जो किस चीज की है यह वह देख नहीं सकती थी क्योंकि वह रोशनी आड़ में पड़ती थी मगर फिर भी अन्दाज से सरस्वती यह समझ सकती थी कि रोशनी कुछ ऊँचे पर और उसी दीवार के साथ लगी किसी चीज की थी जिसके बाहर वह खड़ी थी और साथ ही इतनी तेज थी कि वहाँ का एक - एक पत्ता साफ नजर आ रहा था.

इस रोशनी में सरस्वती वहाँ की हर एक चीज खूब गौर से देखने लगी.

यह जान उसे ताज्जुब हुआ कि उस बनावटी बाग की चीज ह्रकत कर रही है.

पेड़ों की पत्तियाँ और टहनियाँ हिल रही थीं मानों मन्द हवा उसमें से बह रही हो, उन पर बैठने बाली बनाबटी चिड़ियाँ इधर से उधर फुदक रही थीं और कभी - कभी कोई नाजुक चिड़िया किसी टहनी पर बैठ कर मस्तानी आवाज में चहकने भी लग जाती थी.

नीचे जो तरह - तरह के बनावटी जानवर बने हुए थे उनमें से भी कई ठीक असली जानवरों की तरह घूम - फिर रहे थे, कहीं ऊंची घास में दबता हुआ आगे बढ़ने वाला

चीता दिखता था तो कहीं पेड़ों की डालियाँ तोड़ता हुआ हाथी, कहीं ' घास चरते हुए हिरन घूमते थे तो कहीं फन काड़े हुए सांप.

गरज कि इस समय वह छोटा बनावटी बाग या जंगल किसी असली जंगल का नमूना बन रहा था.

सरस्वती बड़े गौर से ताज्जुब से यह देख रही थी और साथ ही साथ इस बात को भी जानने की कोशिश कर रही थी कि इन सब का सबब क्या है क्योंकि अभी तक यद्यपि सैकड़ों दफे उन लोगों ने यह जगह तथा यह बनावटी बाग देखा था पर आज तक कभी यह अजीब बात नहीं देखी थी.

सब तरफ घूमती - फिरती सरस्वती की निगाह उस औरत की तरफ गई जो एक कोने में तीर - कमान लिए खड़ी बनाई गई थी.

यद्यपि आज तक कई बार देखने पर भी उसका एक ही भाव और स्थिर आकृति देख कर सरस्वती को निश्चय हो चुका था कि और चीजों की तरह वह औरत भी बनाबटी है पर इस समय वह भी चलती - फिरती नजर आ रही थी.

उसने अपनी कमान पर का तीर तरकस में डाल लिया था और कमान बांह में पहिन कर सिर नीचा क़िये इस तरह इधर से उधर टहल रही थी मानों किसी बड़ी ही भारी फिक्रमें पड़ी हुई हो.

सरस्वती के देखते ही देखते उसने कई चक्कर उस बनावटी बाग में लगाये और अन्त में एक ऐसी जगह जाकर खड़ी हो गई जहाँ पत्थर और कंकड़ों के ढोकों से एक छोटा बनाबटी पहाड़ बना कर पहाड़ी दृश्य दिखलाया गया था.

इस नकली पहाड़ी के एक बगल में तंग गुफा का मुँह दिखाई पड़ रहा था जिसके मुहाने पर पहुँचकर वह रुक गई और कुछ देर तक बेचैनी के साथ इधर - उधर देखने के बाद उसी गुफा के अन्दर घुस गयी.

लगभग आधी घड़ी के बाद सरस्वती ने पुनः उस औरत को उस गुफा के बाहर निकलते देखा मगर इस समय वह अकेली न थी बल्कि उसके साथ एक औरत और थी। .

इस नई औरत का कद, पहिनावा और चालढाल भी उस पहिली ही औरत की तरह था और यकायक देखकर इसके बारे में भी शक हो सकता था कि यह असली है या बनावटी, मगर सरस्वती ने यह विश्वास कर लिया कि पहली औरत की तरह यह दूसरी भी बनावटी है और इस नकली बाग की किसी तिलिस्मी कार्रवाई के सबब से हरकत कर रही है वे दोनों औरते घूमती - फिरती सरस्वती के सामने कुछ दूर पर आकर रुक गई और आपस में कुछ बातचीत करने लगीं.

आवाज यद्यपि बहुत पतली और धीमी थी मगर कुछ देर बाद सरस्वती को उसका मतलब समझ में आने लगा और वह गौर से उनकी बातें सुनने लगी.

एक औरत:

तो क्या सचमुच इस तिलिस्म की उम्र समाप्त हो गई?

दूसरी:

हाँ, क्योंकि इसका तोड़ने वाला आ पहुँचा.

पहिली:

मगर अब हम लोगों की क्या गति होगी?

दूसरी:

या तो हमें अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा और या किसी की कैद में सड़ते हुए जिन्दगी बितानी होगी.

इससे बचने का कोई उपाय नहीं है?

हमलोग अगर मारे गए या कैद हो गए तो फिर उन लोगों की हिफाजत कौन करेगा जो हमारे सुपुर्द किये गये हैं! दूसरी:

इसका तो अब एक ही उपाय है.

पहिली:

वह क्या?

दूसरी:

तिलिस्म तोड़ने वाले को जरूरी होगा कि वह यहाँ आबे और उस शेर की आँख में तीर मारे जो उस झाड़ी में खड़ा है. अगर वह तीर निशाने पर लगा तो वह शेर उस बावली वाले बारहसिंघे पर हमला करेगा जिसके मारे जाते ही बावली सूख जायेगी और बाहर जाने का रास्ता निकल आवेगा.

अगर ऐसा हुआ तो हम लोग कहीं के भी न रहेंगे, मगर ऐसा होने के पहिले - पहिले ही अगर हम लोग तीर मार कर उस तिलिस्म को तोड़ने वाले को जख्मी कर सकें जो यहाँ आकर यह सब उपद्रव करेगा तो मुमकिन है कि उसका तीर भटक जाय और निशाने पर न लगे, तब वह खुद इस तिलिस्म में फंस जायगा और हमारा कैदी बनेगा.

पहिली:

हाँ यह चीज तो अच्छी है, फिर ऐसा ही करो, तुम्हारे पास तो तीर - कमान मौजूद ही है, मैं भी ले आती हूँ.

हम दोनों मिल कर तीर चलावें तो जरूर कामयाबी होगी.

दूसरी:

हाँ जरूर.

उस गुफा में से तुम भी एक कमान और कुछ तीर ले आओ, मैं यही हूँ, पहिली औरत ने जवाब में सिर हिलाया और पीछे लौट कर उसी गुफा में घुस गई जिसके अन्दर से वह निकली थी.

सरस्वती इन लोगों की बात सुन कर फेर में पड़ गई.

और अगर ईश्वर न करे इनका कहना ठीक निकला और इन्होंने उसे जख्मी कर दिया तो हम लोगों का छूटना असम्भव हो जाएगा.

अस्तु इन्हें उस काम से रोकने के लिए कोई तर्कीव करनी चाहिए.

वह बेचैनी के साथ चारों तरफ देखने और सोचने लगी कि क्या किया जा सकता है.

यकायक ऊपर की तरफ से किसी के ताली बजाने की आवाज सुनाई पड़ी सरस्वती ने चौंककर ऊपर देखा तो एक काली शक्ल दिखाई पड़ी जो ऊपर की मंजिल से किसी खिड़की या दरवाजे की राह नीचे झाँक रही थी.

इसका हाथ - पैर और तमाम बदन बल्कि मुँह तक काले कपड़ों से इस तरह ढंका हुआ था कि सरस्वती यह भी नहीं जान सकी कि यह औरत है या मर्द मगर वह काली शक्ल भी सिर्फ कुछ देर के लिए इसे दिखाई पड़ी.

सरस्वती को अपनी तरफ देखते पा उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया जिसमें कोई कागज था और उसे नीचे की तरफ फेंक वहाँ से हट गई, सरस्वती कुछ देर तक इस आशा से ऊपर देखती रही कि शायद वह शक्ल फिर दिखाई पड़े मगर जब कोई नहीं दिखा तो उसने वह पुर्जा उठा लिया और खोल कर देखा.

जल्दी में लिखा हुआ टेढ़ा - मेड़ा एक छोटा - सा मजमून उसे दिखाई पड़ा जिसे कमरे के अन्दर की रोशनी की मदद से उसने कुछ ही कोशिश में पड़ लिया, यह लिखा हुआ था, " तुम लोग सब कोई उस पूरब तरफ वाले चबूतरे पर चले जाओ जिस पर शेर की मूरत बनी हुई है, खबरदार! यहाँ एक पल भी न रुको! " सरस्वती कई बार उस मजमून को पढ़ गई मगर लिखावट पर खूब गौर करने पर भी वह न जान सकी कि यह पुर्जा किसका लिखा हुआ है.

वह इस सोच में पड़ गई कि इसके लिखे अनुसार उसका यहाँ से चला जाना उचित होगा या इसी जगह रुक्क उन दोनों औरतों की धोखेबाजी से तिलिस्म तोड़ने वाले को होशियार करना मुनासिब होगा.

उधेड़बुन में पड़ी हुई थी कि यकायक इमारत के अन्दर कहीं से शोरगुल की आवाज आने लगी जो इस तरह की थी मानों बहुत - से कल - पुरजे कहीं चल रहे हों.

यह आबाज सुनते ही वह समझ गई कि कोई नई तिलिस्मी कार्रवाई अब शुरू हुआ चाहती है.

क्या करे, रुके या जाकर दयाराम और जमुना को होशियार करे, आदि बातें सरस्वती खड़ी सोच ही रही थी कि ऊपरी तरफ से चुटकी की आवाज आई और उधर देखने से

वही काली शक्ल पुनः दिखाई पड़ी जो इस समय हाथ के इशारे से उसे वहाँ से चले जाने को कह रही थी.

मगर सरस्वती ने उसे देख धीमी आवाज में कहा, " अगर आप इस तिलिस्म को तोड़ने आये हैं तो उन दोनों औरतों से होशियार रहियेगा जिनको मैं यहाँ से देख रही हूँ और जो धोखे में आपके ऊपर वार करेंगी! " सरस्वती की यह बात सुन वह काली शक्ल खिलखिला कर हँसी और एक बार फिर उसे हट जाने का इशारा कर पीछे हटकर गायब हो गई, सरस्वती ने ऊपर से दरवाजा बन्द होने की आवाज सुनी और वह घूमी ही थी कि किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा.

उसने चौंककर देखा तो दयाराम और जमुना को पास खड़े पाया.

दयाराम ने उससे पूछा, " तुम यहाँ कब से खड़ी हो और यह आवाज कैसी हो रही है?

" बहुत ही संक्षेप में सरस्वती ने सब हाल सुनाया और काली शक्ल से पुर्जा पाने का हाल कह वह कागज भी दयाराम के हाथ में दे दिया.

दयाराम यह पड़ने के लिए कमरे की तरफ बड़ ही रहे थे कि यकायक वह भारी आबाज जो चारों तरफ फैल रही थी बहुत तेज होकर बन्द हो गई और दरवाजा भी एक झोंके के साथ बन्द हो गया जिसकी राह सरस्वती भीतर का हाल देख रही थी.

जरा देर के लिए सन्नाटा हो गया और तब किसी औरत के चिल्लाने की आवाज आई जिसके साथ एक शेर की भयानक गरज भी मिली हुई थी.

इस आवाज का गूंजना अभी बन्द नहीं हुआ था कि एकाएक उस मकान की दीवारों और वहाँ की जमीन इस तरह झोंके खाने लगी मानों भूचाल आया हो.

दयाराम ने यह देखते ही कहा, " अब यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं है, हमें वहीं चले जाना चाहिए जहाँ जाने को वह काली शक्ल कह गई है! " पाठकों को याद होगा कि इस बाग में जगह - जगह बहुत - से चबूतरे बने हुए थे जिनके बीचोबीच में एक - एक खंभा था और उस पर किसी जानवर की सूरत बैठाई हुई थी.

बीच वाले दालान के दाहिने तरफ काले पत्थर का एक चबूतरा था जिस पर कोई दो हाथ ऊँचे खंभे पर एक कद्दावर शेर की मूरत बनी हुई थी.

जमना, सरस्वती और दयाराम उस इमारत के पास से हट कर तेजी के साथ इसी चबूतरे पर आ पहुँचे और उस मूरत के पास खड़े होकर उस इमारत की तरफ देखने लगे.

इमारत का हिलना अभी तक बन्द नहीं हुआ था और वह ऐसे जोर - जोर से झोंके खा रही थी कि मालूम होता था कि दम - के - दम में जमीन पर गिर कर बरबाद हो जायेगी,

तरह - तरह की विचित्र और डरावनी आवाजें उसके अन्दर से आ रही थीं और उसके हिलने की धमक से इतनी दूर का यह चबूत्रा भी डगमगा रहा था.

थोड़ी देर बाद इमारत का हिलना तो कुछ कम हो गया मगर उसके अन्दर से आग के बड़े बड़े शोले निकल कर ऊपर की तरफ उठने लगे, दयाराम, जमुना और सरस्वती इमारत का यह विचित्र तमाशा देख ही रहे थे कि उनके पैरों में एक तरह की झुनझुनी - सी आने लगी जो शीघ्र ही यहाँ तक बड़ी कि उनका खड़ा रहना मुश्किल हो गया.

कुछ देर तक तो उन लोगों ने अपने को सम्भाला, पर आखिर लाचार हो गये और जमीन पर बैठ जाना पड़ा.

उसी समय उन्हें मालूम हुआ कि वह चबूतरा धीरे धीरे घूम रहा है.

यह देख उन्हें डर मालूम हुआ और उन्होंने उस पर से उतर जाना चाहा पर उनके हाथ - पाँव बेकार हो गये थे और वे अपनी जगह से एक कदम भी हटने से लाचार थे, चबूतरे के घूमने की तेजी धीरे - धीरे बढ़ने लगी और अन्त में यहाँ तक बड़ी कि सर में चक्कर आने के सबब में तीनों आदमी बेहोश हो गए, यकायक उस इमारत की तरफ से एक बड़ी भयानक आवाज आई, मालूम हुआ जैसे वह समूची इमारत फूट गयी हो .

.

.

आग की लपट आसमान की तरफ उठी और उसी समय चबूतरा जिस पर ये तीनों आदमी थे एक भारी आवाज के साथ जमीन के अन्दर धंस गया.

दसवा ब्यान।

जिस समय महावीर की जुबानी प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ था कि उनके साथ वाले चारों सवार पकड़ लिए गए और रथ के साथ अब जो सबार हैं वे कोई दूसरे ही हैं और शायद उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आए हैं तो एक बार तो थोड़ी देर के लिए वे घबड़ा गए मगर शीघ्र ही उन्होंने अपने को चैतन्य कियाऔर यह भी सोच निकाला कि अब क्या करना मुनासिब होगा.

अगर वे अकेले होते तो प्रभाकरसिंह इन चार क्या सौ सिपाहियों को भी कुछ न समझते और जरूरत पड़ती तो लड़ - भिड़ कर निकल जाने की हिम्मत रखते मगर क़मजोर स के सबब से वे ऐसा करने से लाचार थे अस्तु इस समय किसी तरह इन लोगों को धोखा देकर वहाँ से हटा देना ही उन्हें बहुत जरूरी मालूम हो रहा था और इसकी उन्होंने बहुत अच्छी तरक़ीव भी सोच निकाली.

लोहगढ़ी के पीछे की तरफ महावीर को ले जाकर वे एक आड़ की जगह में पहुंचे और तब उन्होंने महावीर को अपनी सूरत बना लेने को कहा.

महावीर जो वास्तव में इन्दद्रेव का ऐयार था उनका मतलब समझ गया और बात - की - बात में उसने अपनी सूरत प्रभाकरसिंह की - सी बना ली.

पाठकों को याद होगा कि प्रभाकरसिंह एक साधु का वेष धारण कर दारोगा के पास गये और सरयू को छुड़ा लाये थे अस्तु महाबीर भी देखते - देखते साधू बन गया और प्रभाकरसिंह की पोशाक पहिन ठीक उन्हीं की तरह हो गया.

उस समय प्रभाकरसिंह ने अपना चेहरा धोकर साफ कर लिया और महावीर के कपडे खुद पहिन कर बोले, " बस अब तुम इसी ठाठ में जाकर उस रथ पर बैठ जाओ और जहाँ वे लोग ले जायँ बेखटके चले जाओ.

उन लोगों के हट जाने पर मैं सरयू! मासी को सहज में निकाल ले जाऊंगा और तुम भी यह जान सकोगे कि वे लोग कौन हैं.

किसी बात की फिक्र न करना और न किसी तरह का डर मानना.

मैं बहुत जल्द जहाँ कहीं भी तुम रहोगे खोज निकालूंगा और अगर तुम कैद हो गये तो छुड़ा भी लूँगा.

महावीर ने सुन कर कहा, “ आप मेरे वास्ते किसी तरह की फिक्र मत करिए, इस समय तो सबसे जरूरी बात बहुजी की रक्षा करना है सो उन्हीं की आप फिक्र करिए, मैं अपना बचाव आप ही कर लूंगा.

" प्रभाकरसिंह ने दो - चार बातें महावीर को और समझाई और तब उसे रथ तथा सवारों की तरफ भेज कर आप लोहगड़ी के अन्दर चले गए जहाँ सरयू को छोड़ गए थे.

बेचारी सरयू उसी जगह बैठी हुई थी जहाँ प्रभाकरसिंह उसे छोड़ गए थे.

प्रभाकरसिंह ने उसे सब हाल सुना कर दम - दिलासा दिया और कहा, " अब बाकी रात इसी जगह बिता देना मुनासिब है, कल किसी समय यहाँ से निकल चलेंगे.

"

जो कुछ रात बच गई थी दोनों ने बातचीत में बिता दी और सुबह होने पर जरूरी कामों से निपटने तथा स्नान - ध्यान आदि की फिक्रमें लगे.

हम पहिले लिख चुके हैं कि लोहगड़ी की यह इमारत बाहर से जैसी छोटी, सादारण और मामूली मालूम होती थी भीतर से वैसी नहीं थी क्योंकि इसका बहुत बड़ा हिस्सा जमीन के अन्दर था और सुरंगों और तहखानों की राह वहाँ जाना पड़ता था.

हम यह भी लिख आए हैं कि लोहगढ़ी की मुख्य इमारत एक छोटे बाग के अन्दर थी जिसे चारों तरफ से लोहे की ऊँची दीवारों ने घेरा हुआ था.

इस बाग में पानी के लिए एक बावली भी बनी हुई थी। .

सरयू और प्रभाकरसिंह ने जरूरी कामों से निपट इसी बावली में स्नान कियाऔर बाग में जो एकाध फल के पेड़ थे उन्हीं के फल खाकर कुछ आहार भी किया.

इसके बाद अपने कपड़े सूखने को डाल दिये और एक जगह बैठ कर आपस में सलाह करने लगे कि किस तरह यहाँ से बाहर होना चाहिए.

प्रभाकरसिंह को यह मालूम था कि यह लोहगड़ी जमानिया के तिलिस्म का हिस्सा है जिसकी शाखें दूर - दूर तक फैली हुई हैं तथा यह भी मालूम था कि वहाँ से भीतर ही भीतर एक सुरंग इन्द्रदेव की तिलिस्मी घाटी और दूसरी उस घाटी में गई हुई है जिसमें उन्हें तथा दयाराम आदि को इन्द्रदेव ने रखा था परन्तु वे उसका हाल सिर्फ उतना ही

जानते थे और इससे उन सुरंगों से काम भी नहीं ले सकते थे अस्तु इस समय उन्होंने यही निश्चय किया कि लोहगड़ी के बाहर निकलें और अगर किसी दुश्मन का खौफ न हो तो सरयू को लेकर बाहर ही बाहर इन्द्रदेव के पास पहुँच जावे.

यद्यपि वे जानते थे कि ऐसा करने से कमजोर सरयू को तकलीफ होगी पर इसके सिवाय और चारा ही क्या था.

लोहगड़ी में खाने - पीने का कोई ऐसा सामान नहीं मिल सकता था कि जिसके भरोसे दस - पाँच दिन यहाँ काटते और इन्द्रदेव या किसी और की मदद की राह देखते.

अस्तु उन्होंने सरयू ... को वहीं बैठने को कहा और यह कह कर कि मैं बाहर की टोह लेने जाता हूँ खुद लोहगड़ी के बाहर निकलने की फिक्र में लगे.

अभी प्रभाकरसिंह ने पहिला दर्वाजा खोला था और उसे ठप कर दूसरे दर्बाजे को खोलने की फिक्र कर ही रहे थे कि उनके कानों में किसी के चीखने की आवाज आई.

वे चौंक पड़े और गौर करने लगे कि यह आवाज किसकी है और कहाँ से आई.

उसी समय पुनः चीखने की आवाज आई और इस बार उन्हें निश्चय हो गया कि आवाज सरयू की ही है.

वे घबड़ा कर लौटे, और फुर्ती से दरवाजा खोल पुनः लोहगड़ी के बाग में वापस आए.

बावली के पास एक पेड़ के नीचे सरयू! को बैठे छोड़ गए थे, वह जगह अब खाली थी और सरयू का कहीं पता न था.

यह देख उनका कलेजा धड़क उठा और वे बेचैनी के साथ चारों तरफ देखने और सरयू को खोजने लगे.

बाग में कहीं सरयू दिखाई न पड़ी अस्तु वे बीच वाली इमारत में पहुँचे और इसके दालानों, कमरों और कोठरियों में सरयू की तलाश करने लगे.

सरयू! तो कहीं दिखाई न पड़ी मगर एक कोठरी में उसके हाथ की चूड़ियों के कुछ टूटे हुए टुकड़े जरूर दिखाई पड़े जिन्हें प्रभाकरसिंह ने उठा लिया और गौर से देखकर कहा, " वेशक ये मासीजी की ही हैं! तब जरूर वह इधर से ही कहीं गई हैं! " प्रभाकरसिंह ने तेज तिगाह से उस कोठरी के चारों तरफ देखना शुरू किया.

जब उनकी निगाह बाईं तरफ के कोने में पहुँची तो यकायक पत्थर की दो सल्लियों के बीच में दबे और कुछ बाहर निकले हुए किसी कपड़े का एक कोना उन्हें दिखाई पड़ा.

उसी जगह एक दर्वाजे की क़ीस्म का चौकोर निशान भी दिखाई पड़ने से प्रभाकरसिंह समझ गए कि यहाँ कोई गुप्त सुरंग है जिसकी राह दुश्मन सरयू को ले भागा है भागते समय कपड़े का कोना इस जगह दब कर रह गया है.

इसके साथ ही उन्हें यह भी खयाल हुआ कि मुमकिन है कि कपड़ा फट जाने के कारण जिस तरह यह सिल्ली ठीक नहीं बैठी और दरवाजे का निशान दिखाई पड़ रहा है उसी तरह खटका भी न बैठा हो और दरवाजा भी खुला रह गया हो.

यह सोच ये उस जगह के पास पहुंचे और गौर से अच्छी तरह देखभाल कर इस सिल्ली को पैर से ठोकर मारना शुरू किया.

पाँच ही सात छोकरें खाने के बाद एक सिल्ली दीवार से अलग होकर नीचे को झुक गई और वहाँ पर नीचे उतरने की सीढ़ियाँ दिखाई देने लगी.

प्रभाकरसिंह जिस समय साधु बन कर दारोगा के पास गये थे उस समय कपड़ों में छिपा कर एक तलवार भी लेते गये थे, वह तलबार अभी तक उनके पास मौजूद थी और इसके अलावे वह विचित्र डण्डा भी उनके पास था जिसकी अद्भुत करामात ने दारोगा को अचम्भे में डाल दिया था और जिसे महावीर को न दे उन्होंने अपने पास ही रखा था.

इस समय प्रभाकरसिंह ने दाहिने हाथ में तो वह तलवार पकड़ी और कमर में उस डंडे को खोंस कर बेधड़क नीचे उतर गये.

उनका खयाल था कि वे अपने को किसी तहखाने में पावेंगे और सरयू तथा उसके दुश्मनों को भी वहीं देखेंगे मगर ऐसा न था, सिर्फ एक लम्बी और तंग सुरंग थी जो बहुत दूर तक गई मालूम होती थी मगर जगह - जगह रोशनदान बने रहने की वजह से उसमें अँधेरा नहीं था.

इसी वजह से जमीन पर पड़ा हुआ वह कपड़ा भी उन्हें दिखाई पड़ गया जिसका कोना उन्हें बाहर नजर आया था.

यह एक दुपट्टा था और पहिले कभी उन्होंने इसे देखा न था इससे कह नहीं सकते थे कि किसका था पर इतना इन्होंने निश्चय कर लिया कि जरूर यह उसी का होगा जो सरयू को ले भागा है.

उन्होंने उसे वहीं छोड़ा और तेजी के साथ सुरंग में आगे बड़े.

उस लम्बी पतली और पेचीली सुरंग में प्रभाकरसिंह बहुत दूर तक चले गये मगर कहीं किसी की सूरत दिखाई न पड़ी, न तो सरयू का ही पत्ता लगा और न उसको पकड़ ले जाने वाला ही दिखाई पड़ा.

उन्हें खयाल हुआ कि मुमकिन है कि सरयू इधर न लाई गई हो और उन्हें धोखा हुआ हो, साथ ही यह खयाल भी आया कि इस सुरंग में अगर दोनों तरफ से दुश्मन ने उन्हें घेर लिया तो वे बड़ी मुश्किल में पड़ जायेंगे.

अस्तु वे बड़े पशोपेश में पड़ गए और एक जगह रुककर सोचने लगे.

कि अब क्या करना चाहिए.

आखिर बहुत कुछ सोच - विचार कर उन्होंने आगे ही बढ़ने का निश्चय कियाऔर होशियारी के साथ टोह लेते हुए जाने लगे.

लगभग दो सौ कदम के और गए होंगे कि यकायक रुक जाना पड़ा क्योंकि इस जगह आकर सुरंग कुछ चौड़ी हो गई थी और सामने दो रास्ते नजर आ रहे थे जिनमें से एक बाईं तरफ चला गया था और दूसरा दाहिनी तरफ.

प्रभाकरसिंह उसी जगह रुक गये और सोचने लगे कि अब किधर जाना मुनासिब होगा.

सयुं को इस तरह ले भागने वाला वास्तव में हेलासिंह था.

अपना सामान घाटी में रख मुन्दर और अपने साथी सहित बह लौट रहा था जब लोहगढ़ी में पहुंचने पर एक पेड़ के नीचे बैठी हुई सरयू उसे यकायक दिखाई पड़ गई, उसे देखते ही हेलासिंह ने ताज्जुब से कहा, " यह तो शायद इन्द्रदेव की स्त्री सरयू है! "

मुन्दर ने भी उसे देख कर पहिचाना और कहा, " हां है तो बेशक ऐसा ही, मगर यह यहाँ आई क्योंकर?

इसे तो दारोगा साहब बड़ी हिफाजत से छिपाए हुए थे?

" हेलासिंह ने कहा, “ मालूम होता है किसी ने इसे छुड़ा दिया है.

इसका छूट जाना हम लोगों के हक में बहुत ही खराब होगा क्योंकि दामोदरसिंह ने हमारी कमेटी के सब कागजात इसी के सुपुर्द किये थे और यह उन्हें पड़ भी चुकी है ।

मुन्दर ने यह सुन कर कहा, “ तब क्या करना चाहिए?

" हेलासिंह बोला, ' इस समय यह अकेली मालूम होती है और इसका कोई साथी नहीं दिखाई नहीं पड़ता.

बेहतर होगा कि इसे यहीं गिरफ्तार कर लिया जाय और कहीं कैद करके तब हम लोग बाहर निकलें.

” मुन्दर ने यह बात मंजूर की और तब उसे उसी जगह रुकने को कह हेलासिंह अपने साथी को लिए सरयू के पास जा पहुँचा.

इस समय उसने अपने चेहरे पर नकाब डाली हुई थी। .

यकायक अपने सामने दो आदमियों को देख सयुं चीख उठी पर इन दुष्टों ने इसका कुछ भी खयाल न कियाऔर जबर्दस्ती उसे पकड़ कर मकान के अन्दर ले गए जहाँ बेहोशी की दबा देकर वह बेहोश कर दी गई क्योंकि हेलासिंह को डर था कि उसकी चीखें सुन कर उसका कोई साथी अगर होगा तो जरूर आ पहुँचेगा और हुआ भी वैसा ही.

प्रभाकरसिंह सरयू की चीख सुन कर लौट आये मगर उनकी आहट पाते ही ये दोनों सयुं को लिए उसी सुरंग में उतर गये जिसकी राह अभी - अभी यहाँ आये थे.

जल्दी - जल्दी रास्ता बन्द करने और किसी निरापद स्थान में पहुंचने की धुन में हेलासिंह का दुपट्टा वहाँ ही फंसा रह गया और वे लोग आये बढ़ गये.

बेहोश सरयू को लिए ये तीनों बड़ी तेजी से रवाना हुए और लगभग एक घंटे तक लगातार चले जाने के बाद हेलासिंह एक नई ही राह से किसी ऐसी जगह जा पहुंचा जहाँ अभी तक मुन्दर न आई थी.

यह एक बहुत बड़ा बाग था जिसके चारों तरफ बहुत - सी इमारतें दिखाई पड़ रही थीं और बीचोबीच में एक बहुत बड़ा दालान था.

सब लोग वहीं जाकर खड़े हो गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए.

ये लोग खड़े बातचीत कर ही रहे थे कि यकायक मुन्दर की निगाह सामने जा पड़ी जिधर बाग के दूसरे सिरे पर इमारतों का एक लम्बा सिलसिला दूर तक चला गया था.

उसने देखा कि एक खुले हुए दरवाजे की राह एक आदमी बाहर निकला और पास ही पेड़ों की झुरमुट में जाकर गायब हो गया.

वह चौंक पड़ी और घबड़ा कर हेलासिंह से बोली, " वह देखिए एक आदमी अभी - अभी उस दरवाजे से निकल कर उधर भागा है.

" हेलासिंह ने घूम कर उधर देखा मगर किसी को न पाकर बोला, " तुम्हारा शक होगा, मेरे सिवाय भला कौन यहाँ आ सकता है! " मुन्दर बोली, " नहीं, मेरी आँखें मुझे धोखा कभी नहीं दे सकतीं, वह ज़रूर कोई आदमी ही था, देखिए वह दूसरा आदमी निकला! " सचमुच एक दूसरा आदमी उसी दरवाजे के बाहर निकला और उन्हीं पेड़ों की झुरमुट में जाकर गायब हो गया.

हेलासिंह को बड़ा ताज्जुब और कुछ डर भी मालूम हुआ.

वह घबराहट के साथ बोला, " बड़ी बिचित्र बात है, ये लोग न जाने कौन हैं जो इस तिलिस्मी घाटी में आ पहुँचे मुन्दर बोली, “ कहीं वे यहाँ आकर हम लोगों को तकलीफ न पहुँचावें! " हेलासिंह ने कहा, " कौन ठिकाना, हमें तो रंग कुरंग दिखाई पड़ता है.

" हेलासिंह और उनकी देखा - देखी उसके साथी ने भी तलवार निकाल ली और ताज्जुब तथा ' घबराहट से उसी तरफ देखने लगे.

उनके देखते ही देखते और भी कई आदमी उसी रास्ते से बाहर निकले और पेड़ों की ओट में जाकर गायब हो गये.

आखिर हेलासिंह ने कहा, " मुझे यहाँ रहना मुनासिब नहीं मालूम होता.

कौन ठिकाना वे सब यहाँ आ जायें और हम लोगों को परेशान करें.

” यह सुन मुन्दर बोली, “ क्या यहाँ कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ छिप कर हम लोग उनसे बच सकें?

" हेलासिंह कुछ सोचता हुआ बोला, " हाँ है तो सही मगर – अच्छा अगर – हाँ ठीक है, तुम मेरे साथ आओ.

" उसने बेहोश सरयू को उसी जगह छोड़ा और अपने आदमी को उसकी हिफाजत करने के लिए कह मुन्दर को लिए किसी तरफ को चला गया.

हेलासिंह और मुन्दर को गये देर हो गई मगर दोनों में सो कोई भी लौट कर न आया.

इस बीच बेहोश सरयू! होश में आने के लक्षण प्रकट करने लगी जिसकी कुलबुलाहट देख उसकी निगहबानी करने वाला वह आदमी घबराया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए.

आखिर वह इस फिक्र में उठा कि इधर - उधर घूम कर हेलासिंह का पता लगावे जिसकी बहुत ही कम उम्मीद थी क्योंकि इस तिलिस्मी इमारत के गुप्त स्थानों में से किसी को खोज निकालना उसके जैसे अनजान का काम न था.

फिर भी न - जाने क्या सोच कर वह उठ खड़ा हुआ और उधर की तरफ उसने एक कदम बढ़ाया ही था जिधर हेलासिंह और मुन्दर गये थे कि उसके सामने से आते हुए प्रभाकरसिंह दिखाई पड़े जो हाथ में नंगी तलवार लिए हुए थे.

बहादुर प्रभाकरसिंह को देखते ही वह इतना डरा कि एक पल भी न रुक सका और पीछे भाग कर पेड़ों की झुरमुट में पहुँच उसने अपने को छिपा लिया.

हम नहीं कह सकते कि प्रभाकरसिंह की निगाह इस आदमी पर पड़ी या नहीं पर सरयू ' को वहाँ पड़ा देख कर वे बहुत ही प्रसन्न हुए. उन्होंने उसकी बेहोशी दूर करने की कोशिश की जिससे कुछ ही देर में वे वह होश में आकर उठ बैठी.

प्रभाकरसिंह ने उससे सब हाल पूछा और उसने जो कुछ हुआ था सब कह सुनाया.

यही समय था जब किसी दूसरे स्थान से मालती ने प्रभाकरसिंह को देखा था.

किस तरह हेलासिंह ने प्रभाकरसिंह पर हमला किया, कैसे वह हार कर भागा, किस प्रकार एक भयानक सूरत के तिलिस्मी शैतान ने प्रभाकरसिंह को लड़ने के लिए

ललाकारा और अन्त में उन्हें परास्त करके जमीन पर पछाड़ दिया यह हाल हम ऊपर लिख आए हैं.

अस्तु अब यहाँ हम उसके आगे का हाल लिखते हैं.

शैतान को प्रभाकरसिंह की जान लेने पर उतारू देख कर मालती के मुंह से एक चीख निकल गई जिसे उसने भी सुन लिया और खिड़की में से झाँकती हुई मालती को देख गुस्से के साथ उस तरफ बड़ा.

उसे अपनी तरफ आते देख मालती बदहवास हो गई मगर उस क़्मबख्त शैतान ने इसका कोई भी खयाल न किया.

जब वह उस खिड़की के पास पहुँचा जहाँ मालती थी तो किसी तर्कीब से उसने उस दीवार में एक रास्ता पैदा कियाऔर दूसरी तरफ जा पहुंचा.

बेहोश मालती को उठा कर उसने अपने कंधे पर डाल लिया और तब वापस लौट कर वहाँ पहुँचा जहाँ प्रभाकरसिंह को छोड़ गया था.

उन्हें भी उसने उठा कर दूसरे कंधे पर रख लिया और तब एक तरफ का रास्ता लिया.

न - जाने उस शैतान के बदन में कितनी ताकत थी कि दो - दो आदमियों के बोझ को बह एक मामूली तरह से उठाये हुए था.

उन दोनों आदमियों को लिए यह बाग को पार कर उस इमारत में पहुँचा जो पूरब तरफ बनी हुई थी और जिसका सिलसिला दूर तक चला गया था.

यहाँ आकर वह कुछ देर के लिए रुका और तब कुछ सोच एक तरफ को घूमा.

बाई तरफ एक बड़ा दालान और उसके बाद एक कमरा बना हुआ था.

तिलिस्मी शैतान उसी दालान में पहुंचा और खड़ा होकर कुछ सोचने लगा.

इस समय अगर सरस्वती यहाँ होती तो इस बाग को जरूर पहिचान लेती क्योंकि वह वही शेरों वाला कमरा था जहाँ जमना और दयाराम को खोजती हुई वह आई थी और जिसके अन्दर की एक कोठरी में से बेहोश होकर वह उस बाग में पहुंची थी जिसका हाल ऊपर के बयान में लिखा जा चुका है.

सरस्वती को वह भीतर वाला बड़ा क़मरा खुला हुआ मिला था मगर इस समय वह बन्द था और शैतान उसी के बाहर वाले दालान में प्रभाकरसिंह और मालती को कंधे पर लिए खड़ा कुछ सोच रहा था.

आखिर कुछ देर के सोच - विचार के बाद शैतान ने उन दोनों को उतार कर जमीन पर रख दिया और आप बीच वाले दरवाजे के पास आया.

दरवाजे के ऊपरी तरफ एक आला था जिसमें किसी धातु की शेर की छोटी - सी मूरत बनी हुई थी.

शैतान ने हाथ बढ़ा कर उस मूरत का सिर पकड़ लिया और जोर से अपनी तरफ खींचा, हल्की आवाज हुई और साथ ही दरवाजा खुल गया.

१.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, सातवाँ बयान.

एक लम्बा - चौड़ा आलीशान कमरा दिखाई पड़ा जिसकी भारी गोल छत मोटे - मोटे चालीस खंभों पर रखी हुई थी.

बीचोंबीच एक सिंहसान काले पत्थर का बना हुआ रखा था जिसके चारों तरफ चार कद्दावर और भयानक शेर काले ही पत्थर के बने हुए बैठाए गये थे जो इतने ऊँचे थे कि आदमी का हाथ मुश्किल से उनके सिर तक पहुँच सकता था.

इन शेरों के सिर पर किसी धातु के बने चार रकाब थे जिन्होंने अपनी चोंच में उन शेरों का एक - एक कान पकड़ा हुआ था.

कमरे के भीतर मुख्य सामान बस यही था , हाँ उसके तीनों तरफ बहुत सी कोठरियाँ जरूर थीं जिनमें कुछ के दरवाजे खुले हुए थे और कुछ के बन्द, उसके अन्दर चला गया.

शैतान ने इस कमरे का दरवाजा खोल कर बेहोश मालती और प्रभाकरसिंह को पुनः उठा लिया और लिए हुए कमरे के उन दोनों को उसने बीच वाले सिंहासन पर रख दिया और खुद भी उसी पर खड़े हो कर बाईं तरफ वाले शेर की तरफ झुक्रा, उसके सिर पर बैठे हुए रक्क़ाब की गरदन पकड़ ली और नीचे की तरफ झुकाई.

वह कुछ झुक कर रुक गई और साथ ही शेर के मुँह से गुर्राने की आवाज आने लगी.

शैतान वहाँ से हट कर उस सिंहासन के बीचो बीच जा बैठा.

यकायक वह शेर दहाड़ मार कर उठ बैठा और इसके साथ ही बाकी के तीनों शेरों के मुँह से भी गरजने की आवाज आने लगी मगर शैतान ने इसका कुछ भी खयाल न किया.

उसने झुक कर सिंहसान के नीचे का कोई खटका दबाया जिसके साथ ही एक आवाज हुई और सिंहासन तेजी से जमीन के अन्दर धंस गया.

थोड़ी देर बाद एक झटके के साथ वह सिंहासन रुका.

उस जगह घोर अंधकार था और हाथ को हाथ नहीं दिखाई पड़ता था मगर उस शैतान ने अन्दाज से टटोल कर बेहोश मालती और प्रभाकरसिंह को उठा लिया और सिंहासन पर से उतर पड़ा.

उसके उतरते ही सिंहासन पुनः ऊपर को चला गया और शैतान ने टटोलते हुए एक तरफ का रास्ता लिया.

लगभग पचास कदम जाने के बाद शैतान रुका.

इस जगह एक दरवाजा था जिसे किसी तर्कीब से उसने खोला, उसे दूसरी तरफ जाने के बाद एक कमरा दिखाई पड़ा.

इसे भी पार करने के बाद पुनः एक दरवाजा मिला और उसके खोलते ही इस जगह चाँदना आने लगा क्योंकि सामने दालान और उसके बाद बाग था जहाँ से दिन की रोशनी उस कमरे में बखूबी आ रही थी.

दराबाजा खुलते ही उस कमरे की भयानक हालत दिखाई पड़ी.

चारों तरफ की जगह हड्डियों से भरी हुई थी जिसके बीच जगह - जगह पड़ी हुई आदमियों और जानवरों की खोपड़ियाँ बड़ी ही भयानक मालूम हो रही थीं.

ऐसा मालूम होता था मानों यह उस भयानक तिलिस्मी शैतान के रहने का घर हो और वह इन्हीं हड्डियों को चबा कर जीता हो.

कोठरी की दीवारों के साथ भी तरह - तरह के जानवरों के हड्डियों के ढांचे खड़े थे और चारों कोनों में चार मनुष्यों के कंकाल ठीक उसी सूरत में खड़े थे जैसी कि खुद उस शैतान की थी.

कोठरी के बीचोबीच में कुएँ की तरह का एक गहरा गड्डा दिखाई पड़ रहा था जिसमें से बदबू निकल रही थी और कभी कभी आग की लपटें भी दिखाई पड़ जाती थीं, और इस गड्डे के ठीक ऊपर एक मजबूत जंजीर लटक रही थी जिसके एक सिरे के साथ एक बड़ा - सा देग बंधा हुआ था और दूसरा सिरा छत की एक कड़ी में से होता हुआ दीवार के साथ खड़ी कुछ हड्डियों के साथ बँधा हुआ था.

शैतान ने वहाँ पहुँच कर अपना बोझ अर्थात् मालती और प्रभाकरसिंह को जमीन पर रख दिया और दम लेने लगा.

शैतान को इस भयानक कोठरी में आये कुछ ही देर हुई होगी कि यकायक चारों कोनों में खड़े वे चारों आदमियों के हड्डी के ढाँचे कुछ अजीब तरह से हिलने लगे और उनके जबड़े इस तरह ह्रकत करने लगे मानों वे कुछ कहना चाहते हों मगर आबाज न निकलती हो.

आखिर एक ढाँचा हिलता - डुलता अपनी जगह से लड़खड़ाता हुआ शैतान की तरफ बढ़ा और उसकी देखादेखी बाकी के तीनों डाँचे भी खड़खड़ करते हुए उसी तरह बढ़ने लगे.

बिना हड्डी - मास के उन चार तर - कंकालों का इस तरह चलना और उनकी हड्डियों का खड़खड़ाना ऐसा भयानक था कि और कोई देखता तो मारे डर के उसी दम उसकी जान निकल जाती मगर उस शैतान पर इसका कोई भी असर न हुआ, वह उन्हें देख कर जोर से हँस पड़ा और बोला, " लो, आज बहुत दिन बाद तुम लोगों के लिए खुराक आई है! "

एक ढाँचे के मुंह से भयानक स्वर में निकला, " क्या इन लोगों को हमारे भोजन के लिए ही लाए हैं?

" तिलिस्मी शैतान ने जबाब दिया, " हाँ.

" जिस पर एक दूसरा ढाँचा बोल उठा, “ ये सब कौन हैं?

शैतान ने जवाब दिया, " ये दोनों प्रभाकरसिंह और मालती हैं जिनकी खोज में हम लोग बहुत दिनों से परेशान थे.

" इसे सुनते ही वे चारों बोल उठे- " ओह, तब तो इन्हें जल्दी ही ठिकाने लगाना चाहिए.

!! शैतान ने हँस कर कहा, “ घबराओ नहीं, मैं अभी इन्हें ठिकाने पहुंचाता हूँ.

" और तब वहाँ से हटकर बीच वाले गड्ढे के पास आया, एक बार झाँक कर उसमें देखा और तब पास ही से थोड़ी - सी हड्डियाँ बटोर कर उसके अन्दर फेंकी.

हड्डियों के फेंकते ही भीतर से आग की एक लपट निकली जो कोठरी की छत तक पहुँची और फिर शान्त हो गई.

अब शैतान ने वह सिनड़ खोला जिसके साथ वह देग बँधा हुआ था और देग को कुछ नीचा करने के बाद वह सिक्कड़ अपने साथी एक ढाँचे के हाथ में पकड़ा दिया.

इसके बाद वह मालती और प्रभाकरसिंह के पास आया और बारी - बारी से एक - एक को उठा कर उसने उसी देग में डाल दिया.

तिलिस्मी शैतान ने अब सिक्नड़ पकड़ लिया और देग को धीरे - धीरे उसी अग्निकुण्ड में उतारने लगा तथा बाकी के ढाँचों ने हड्डियाँ उठा - उठा कर उस कूएँ में फेंकनी शुरू की जिसके साथ ही भीतर से आग की लपट के बाद लपट निकलने लगी जिन्होंने उस देग को चारों तरफ से घेर लिया.

चिरायंध मिली हुई बदबू से वह कोठरी भर गई और वहाँ इतनी गर्मी हो गयी कि खड़ा रहना मुश्किल हो गया.

।

।

चौदहवाँ भाग समाप्त ॥

पन्द्रहवाँ भाग

पहला व्यान।

श्यामा को लिए हुए जब भूतनाथ उसके बताए हुए ठिकाने पर काशी पहुंचा तो उसने अपने को एक अंधेरी और सुनसान गली के अन्दर बने हुए एक बन्द मकान के दरवाजे पर पाया.

श्यामा की इच्छानुसार बाबाजी की दी हुई ताली से भूतनाथ ने मकान का ताला खोला और दोनों व्यक्ति अन्दर घुसे.

अन्दर पहुँच कर भूतनाथ ने उस मकान को बहुत ही बड़ा कुशादा और आलीशान पाया और उसकी सजावट भी बहुत ऊंचे दर्जे की देखी.

इस अँधेरी और तंग गली में इतने बड़े और इस तरह के आलीशान मकान के पाने की कोई भी उम्मीद न हो सकती थी अस्तु वह कुछ ताज्जुब और उत्कण्ठा से श्यामा के साथ - साथ उस मकान में घूम - घूम कर उसके हर हिस्से को देखने लगा.

श्यामा उस बड़े मकान के हर एक कोने से बखूबी वाकिफ जान पड़ती थी और उसकी बातचीत से भूतनाथ को यह भी मालूम हुआ कि यह उसका पैतृक मकान है और उस भयानक तिलिस्म में फंसने से पहिले वह इसी में रहती थी.

मकान गर्द, धूल और गन्दगी से एकदम साफ था और ऐसा मालूम होता था मानों अभी - अभी कोई इसकी सफाई करके गया है.

भूतनाथ इस मकान को देख कर बहुत खुश हुआ और खास कर तब तो उसकी प्रसन्नता का कोई पारावार ही न रहा जब कई कोठरियाँ और तहखाने खोल - खोल कर श्यामा ने वह अगाध दौलत भी उसे दिखलाई जो उनमें भरी हुई थी और जिसका श्यामा के कथनानुसार अब भूतनाथ ही मालिक था.

सामानों में से यहाँ किसी की कमी न थी अस्तु उन दोनों ने बहुत जल्द जरूरी कामों से छुट्टी पा ली और भूतनाथ संध्या - पूजा के काम में तथा श्यामा रसोई बनाने की धुन में लगी.

इसमें कोई शक नहीं कि श्यामा ने ठीक उसी तरह अपना कर्तव्यपालन कियाजैसा कि एक सती स्त्री को करना चाहिए, भूतनाथ उसकी बातचीत और चाल - चलन बात - व्यावहार से बहुत ही प्रसन्न हुआ और अपनी किस्मत को सराहने लगा जिसने उसे ऐसी मुन्दर स्त्री के साथ - साथ इतना अगाध धन भी दिया था.

श्यामा की सेवा सुश्रुषा से मोहित हो वह एक दिन के बजाय तीन दिन तक उसके साथ उसी जगह रह गया और चौथे दिन भी बड़ी मुश्किल से तब श्यामा ने उसे छुट्टी दी जब भूतनाथ ने वादा किया कि वह कुछ बहुत ही जरूरी काम निपटा कर दूसरे ही दिन अवश्य वापस आ जायगा.

उसने श्यामा से यह भी कहा कि वह बहुत जल्द कई नौकर और मजदूरनियाँ उसकी खिदमत के लिए भेज देगा और इसे श्यामा ने खुशी - खुशी मंजूर किया.

दोपहर के कुछ पहिले ही भूतनाथ श्यामा के मकान के बाहर हो गया और श्यामा वहाँ अकेली रह गई, कुछ देर तक श्यामा इधर - उधर घूमती रही और तब अपने सोने के कमरे में पहुँच कर फर्श पर बैठ गई.

एक पेटी में से उसने लिखने का सामान निकाला और पत्र लिखने लगी.

यह पत्र बहुत लम्बा - चौड़ा था और श्यामा ने इसे बड़े ध्यान से व्हर - ठहर और रुक - रुक कर बड़े सोच - विचार के बाद लिखा और पूरा कियाचीठी समाप्त होने पर वह उसे पुनः शुरू से आखीर तक पड़ गई और तब उसे एक बड़े लिफाफे में बन्द कर उसके जोड़ पर मुहर कर दी.

चीठी का मजमून क्या था यह तो हम जान न सके पर लिफाफे का पता देखने से मालूम हुआ कि वह जमानिया के दारोगा साहब के नाम थी.

मुश्किल से श्यामा ने यह काम खतम कियाथा कि बाहर से किसी के कुण्डा खटखटाने की आवाज आई जिसे सुनते ही श्यामा चौंक उठी.

वह पत्र उसने उसी पेटी में बन्द कर दिया और तब एक खिड़की के पास पहुंची जहाँ से देखने पर मकान का बाहरी सदर दरवाजा बखूबी दिखाई पड़ता था.

श्यामा ने देखा कि दो आदमी दरवाजे पर खड़े हैं जो चाल - ढाल से ऐयार मालूम होते हैं और जिन्हें शायद वह पहिचानती भी थी क्योंकि उन्हें देखते ही उसने एक विचित्र तरह से सीटी बजाई, सीटी की आवाज सुनते ही उन लोगों ने ऊपर की तरफ देखा और श्यामा को झाँकते पाकर सीटी ही के इशारे में कुछ जबाब दिया.

श्यामा ने उसे सुन खड़े रहते का इशारा किया और तब नीचे उतर दरवाजा खोल उन्हें भीतर कर लिया.

उन दोनों में से एक आदमी तो वहीं रह गया मगर दूसरे को लिए श्यामा ऊपर की मंजिल की एक दुछती में जा बैठी और बातें करने लगी.

श्यामा:

कहो साधोराम, क़ुशल से तो हो?

साधो:

(हाथ जोड़ कर) आपकी दया से सब कुशल है.

श्यामा:

वह काम तो हो गया जिसके लिए तुम लोग आये थे?

साधो ०:

जी हाँ हो गया कभी का हो गया.

रामदेई गिरफ्तार करके जमानिया भेज दी गई और आजकल उसकी गद्दी पर नागरजी विराज रही है.

श्यामा:

(मुस्कुरा कर) अच्छा ही हुआ, वह रामदेई की गद्दी अच्छी तरह सम्हालने लायक भी है.

अब उम्मीद है तुम लोगों का बाकी काम भी बखूबी हो जायगा.

साधो ०:

देखिये, आशा तो बहुत कुछ है.

आप अपनी तरफ का कुछ हालचाल सुनाइये, भूतनाथ को तो थोड़ी देर हुई मैंने अपने घर की तरफ जाते देखा था.

श्यामा:

हाँ वह एक दिन की छुट्टी लेकर गया है और कल आने को कह गया है.

साधो ०:

मालूम होता है वह अच्छी तरह आपके चंगुल में फंस गया है.

श्यामा:

हाँ ऐसी ही बात है मगर वह है बड़ा धूर्त, मुझे उससे डर ही लगा रहता है.

साधो ०:

इसमें तो शक नहीं, मगर मुझे विश्वास है कि आपके सामने उसकी चालाकी काम न आवेगी.

श्यामा:

देखो क्या होता है, मैं तो तब खुश होऊँ जब मेरा काम पूरा हो और बाबाजी से जो प्रतिज्ञा मैं करके आई हूँ उसे पूरा कर पाऊँ.

इतना जरूर है कि शुरु अच्छे शगुन से हुआ है और भूतनाथ को मुझ पर पूरा विश्वास हो गया है.

मैं उम्मीद करती हूँ कि अगर नागर ने अपना काम ठीक तरह से पूरा किया तो मुझे भी जरूर सफलता मिलेगी.

साधो ०:

नागरजी भी पूरी कोशिश में लगी हुई हैं, मगर मुश्किल इतनी ही हो गई है कि भूतनाथ के लड़के को कुछ शक हो गया है और वह इस फिराक में लग गया है कि हम लोगों के भेद का पता लगाये.

श्यामा:

(चौंक कर) तुम लोगों के भेद का पता लगाये! तब क्या उसे मालूम हो गया कि उसकी माँ कैद हो गई और उसकी जगह नागर उसके घर पर हुकूमत कर रही है?

साधो ०:

मैं ठीक - ठीक तो नहीं कह सकता मगर इतना जरूर है कि उसे पता लग गया है कि उसके यहाँ कुछ चालाकी हो रही है.

बात यह हुई कि जब हम लोग रामदेई को लेकर भागे उसी समय नागरजी रामदेई बनकर उसकी जगह पर जा बैठीं मगर नानक ने किसी तरह हमारे आदमियों को भागते देख लिया और पीछा किया.

इस सम्बन्ध में कितना कुछ उसे मालूम हुआ है सो तो मैं नहीं कह सकता परन्तु नागरजी की जुबानी इतना सुनने में आया कि वह लौटकर उनसे बहुत कुछ पूछताछ करता था.

कुशल यही हुई कि नागरजी को भी मालूम हो गया कि नानक ने हम लोगों का पीछा किया है और उन्होंने कुछ ऐसा जाल रचा कि घर लौटकर नानक कुछ भी शक का मौका पा न सका, फिर भी हम लोगों को डर बना हुआ है.

श्यामा:

यद्यपि नानक अभी लौंडा और पूरा बेवकूफ है फिर भी उसको काबू में रखना होगा.

अगर उसने भूतनाथ के कान में कुछ भी सुनगुती डाल दी तो मुश्किल हो जायगी.

तुम लोगों ने नातक के लिए क्या प्रबन्ध किया?

साधो ०:

जी अभी तक तो कुछ भी नहीं मगर शीघ्र ही कुछ जरूर हो जायगा.

आपको शायद रामखिलावनसिंह का नाम याद होगा जिससे पहिले! श्यामा:

हाँ हाँ, वही रामखिलाबनसिंह जिसकी जमींदारी चुनार की तरफ है और जो पहिले मेरे .

.

.

साधो ०:

जी हाँ वही श्यामा:

उसको मैं खूब जानती हूँ और उम्मीद है कि वह भी मुझे भूला न होगा.

उससे क्या?

साधो ०:

उसके रिश्ते की एक गूंगी और वहरी लड़की है जो उसी के पास रहती है.

उसका नाम रामभोली है.

हम लोगों को पता लगा है कि इस रामभोली पर नानक बुरी तरह आशिक है और उसके लिए जान देता है.

उसी रामभोली के जरिये शायद हम लोग नानक को राह पर ला सकेंगे.

श्यामा:

हाँ यह तर्कीब हो सकती है.

तुम जो कुछ कर रहे हो वह तो करते ही रहो मैं भी इसके सम्बन्ध में कोशिश करूँगी और जहाँ तक हो सकेगा तुम लोगों की मदद करूंगी.

लेकिन मैं यह चाहती हूँ कि एक बार नागर से मिल लूँ चूँकि हम लोगों का काम करीब - करीब एक - सा ही है इससे हम लोगों के आपस में सलाह करके चलने में काम जल्दी पूरा होगा.

साधो ०:

बहुत ठीक है, मैं नागरजी से मिलकर सब प्रबन्ध कर लूँगा और आपको खबर दूंगा, प्रायः दूसरे - तीसरे मैं उनसे अवश्य मिल लेता हूँ क्योंकि उस मकान के कई नौकर - मजदूरनियों को भी हम लोगों ने पकड़ लिया है और उनकी जगह अपने आदमी भरती कर दिए हैं.

इधर दो - चार रोज भूतनाथ यहाँ रहेगा मगर उसके चले जाने के बाद फिर कोई असुविधा न रहेगी.

आपसे तो मैं रोज ही मिल लिया करूँगा और जो कुछ कामकाज हो बजा लाया करूंगा.

श्यामा:

हाँ, जरूर मिल लिया करो.

इधर तुम्हारा कोई आदमी जमानिया तो नहीं जाने वाला है?

साधो ०:

जी हाँ क्यों, बराबर ही आदमी आते - जाते रहते हैं.

क्या कोई काम है?

श्यामा:

एक बहुत ही गुप्त जरूरी चीठी दारोगा साहब के पास भेजनी है, किसी विश्वासी आदमी से उनके पास भेजबाओ और जबाब मांगकर मुझे दो.

साधो ०:

बहुत खूब, दे दीजिए! उम्मीद है परसों तक जबाब आपको मिल जायगा! श्यामा ने वह चीठी जो कुछ ही देर पहिले लिखी थी साधोराम को दे दी.

तब कुछ और समझाने - बुझाने के बाद उसे विदा किया.

दुसरा व्यान।

संध्या होने में कुछ ही देर बाकी थी जब प्रभाकरसिंह को होश आई और उन्होंने आँख खोलकर अपने चारों तरफ देखा.

उन्होंने देखा कि वे एक बड़े ही विचित्र और डरावने स्थान में जमीन पर पड़े हुए हैं.

एक काले पत्थर का बना हुआ बहुत बड़ा कमरा है जिसका पूरा फर्श जानवरों तथा आदमियों की हड्डियों से भरा हुआ है और दीवारों के साथ - साथ बहुत - से हड्डियों के ढाँचों की कतार कमरे को चारों तरफ से घेरे हुए हैं जिनमें आदमी के तथा और भी सभी प्रकार की जानवरों के डाँचे हैं और जो देखने में बड़े डरावने मालूम होते हैं.

कमरे के बीचोंबीच में एक कुण्ड है जिसमें तेज आँच सुलग रही है मगर वह लकड़ी या कोयले की नहीं है बल्कि किसी और ही चीज की है क्योंकि उसकी लपट नीलापन लिए हुए पीले रंग की है और उसमें से धूआँ इतना बेहिसाब निकल रहा है कि समूचा कमरा भर रहा है.

उस आँच के अन्दर भी बहुत - सी हड्डियाँ पड़ी हुई सुलग रही हैं जिनसे एक तरह की बदबू निकल कर चारों तरफ फैल रही अगर कमरे की छत में एक बहुत बड़ा छेद न होता और उसकी राह बहुत - सा धूआँ बराबर निकला न जा रहा होता तो इसमें सन्देह नहीं कि कमरे में पलभर के लिए भी रहना मुश्किल हो जाता.

घूमती हुई प्रभाकरसिंह की निगाह यकायक मालती पर पड़ी जो उनसे कुछ ही दूरी पर बेहोश पड़ी हुई थी.

वे उसे देखते ही चौंक पड़े और उसके पास पहुँच कर उसे होश में लाने कि फिक्रकरने लगे.

थोड़ी देर की कोशिश में ही मालती को होश आ गया.

वह उठ कर बैठ गई मगर अपने चारों तरफ का डरावना सामान देखते ही उसके मुंह से चीख निकल गई और उसने डर से आँखें बन्द कर ली.

प्रभाकरसिंह ने दिलासा देकर उसे शान्त किया और पूछा, “ मालती, तुम यहाँ कैसे आ पहुँची?

"

प्रभा, मालती:

मेरा हाल बहुत लम्बा - चौड़ा है जिसे सुनाने के लिए समय चाहिए, आप मुझे बताइये कि यह कौन - सी जगह है और हमलोग यहाँ कैसे आ पहुँचे?

मैं इस बारे में सिवाय इसके और कुछ नहीं कह सकता कि यह शायद उसी तिलिस्मी शैतान के रहने की जगह है जिससे लड़कर मैं बेहोश हुआ था.

ऐसी डरावनी और गन्दी जगह आज तक मैंने कहीं देखी नहीं.

मालती:

हाँ देखिये न हड्डियों से समूचा कमरा भरा हुआ है, कहीं पैर रखने की जगह नहीं है, हमलोग हड्डियों ही पर बैठे हुए हैं, (चारों तरफ की दीबार दिखाकर) और यह देखिए जानवरों की हड्डियों का अजायबघर ही यहाँ मौजूद है, शायद ही कोई जानवर ऐसा हो जिसका ढाँचा यहाँ मौजूद न हो.

न जाने इतनी हड्डियाँ यहाँ कैसे इकट्ठी हो गई हैं! प्रभा ०:

(हँसकर) शायद उस तिलिस्मी शैतान ने जिन जानवरों को खाया है उनकी हड्डियाँ यहाँ जमा कर रखी हैं ताकि कभी खूराक न मिले तो इन हड्डियों को ही चबा कर वह पेट भर ले! मालती:

(क़ाँप कर) आप हँस रहे हैं और मेरी डर के मारे जान सूख रही है.

किसी तरह यहाँ से निकलने की फिक्र करिये, यहाँ अगर थोड़ी देर और मैं रहूँगी तो जरूर पागल हो जाऊँगी.

प्रभा ०:

बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं दिखाई पड़ता, चारों तरफ की दीवार साफ चिकनी है जिसमें एक भी दरबाजा नहीं है, सिर्फ ऊपर की तरफ चार रोशनदान हैं और या फिर वह बीचबाला छेद है जिसमें से धूआँ बाहर जा रहा है, मगर वहाँ तक पहुँचना असम्भव है.

मालती:

इस अग्निकुण्ड की आँच अगर बुझ सके तो देखा जाय शायद इसके अन्दर से कोई रास्ता हो.

प्रभा ०:

हो सकता है, मगर इसकी आग बुझाई किस तरह जाय! मालती:

यह आँच है किस तरह की?

इसका रंग देखिए कैसा है! मालूम पड़ता है मानो किसी मसाले की आग हो, तमाशा यह देखिए कि ये हड्डियाँ भी उस आंच में सूखी लकड़ी की तरह जल रही हैं (एक हड्डी उठा कर कुण्ड में फेंक कर) यह देखिए काट की तरह जलने लगी.

मगर यह क्या!

मालती ने जो हड्डी आग में फेंकी वह एक बार तो भभक कर जल उठी मगर उसके बाद ही लपट कम हो गई और एक तरह का पानी - सा उसमें से निकल कर बहने लगा मानों वह हड्डी न होकर कोई और ही चीज हो.

मालती और प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब के साथ यह हाल देखा, तब और भी बहुत - सी हड्डियाँ उठा कर कुण्ड में फेंकी.

फेंकते ही आँच एक चार तो तेज हुई मगर तुरन्त ही क़म हो गई और उन हड्डियों से निकलने वाले पानी ने आग को ढंक कर उसकी तेजी एकदम कम कर दी.

प्रभाकरसिंह ने खुश होकर कहा, " यह तो बड़ी बिचित्र बात है.

मालूम होता है ये हड्डियाँ नहीं हैं बल्कि कोई दूसरा ही मसाला है, अगर ज्यादा डाला जाय तो सम्भव है कि आँच एकदम बुझ जाय.

" वास्तव में यही बात थी.

ढेर की ढेर हड्डियाँ एक साथ ही कुण्ड में डाल दी गई जिसके थोड़ी देर बाद आँच बिल्कुल बुझ गई.

ये दोनों आदमी थोड़ी देर तक तो राह देखते रहे इसके बाद हिम्मत करके प्रभाकरसिंह उस कुण्ड में उतर गए और उसमें भरी अधजली हड्डियाँ निकाल - निकाल कर बाहर

फेंकने लगे.

मालती ने भी हाथ बटाया और थोड़ी ही देर में वह कुण्ड एक दम साफ हो गया.

उस समय उसके तह में दरवाजे का निशान दिखाई पड़ा जिसके ऊपर एक पत्थर की सिल्ली रखी हुई थी। .

बीच में लगी कड़ी की मदद से प्रभाकरसिंह ने उस सिल्ली को उठाकर अलग कर दिया और तब नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई दी.

प्रभाकरसिंह ने झाँक कर नीचे की तरफ देखा, एक पतली सुरंग दिखाई दी जिसके दूसरे सिरे पर रोशनी मालूम पड़ती थी, उन्होंने मालती से यह हाल कहा और तब दोनों आदमी उसकी राह उतरने को तैयार हो गये.

आगे - आगे प्रभाकरसिंह और उनके पीछे - पीछे मालती सीढ़ियाँ उतर कर उस सुरंग में चल पड़े.

लगभग बीस या पचीस कदम जाकर सुरंग समाप्त हो गई और इन दोनों ने अपने को एक छोटे बाग में पाया जिसके चारों तरफ कई तरह की इमारतें और बीच में एक बारहदरी थी.

ये लोग उस बारहदरी में जा पहुँचे और उस काले और सफेद पत्थर के बने फर्श पर बैठ कर बातें करने लगे.

प्रभा ०:

उस भयानक जगह के बाहर तो हो गए मगर अब यहाँ से निकलने की सूरत मिलनी चाहिए.

यह न - जाने कौन सी जगह है?

मालती:

मुझे तो यह उसी लोहगड़ी का ही भाग मालूम होता है.

(सामने की तरफ उंगली उठाकर) वह देखिए, दीवार के पीछे ऊंचा धरहा दिखाई पड़ रहा है जिसके ऊपर एक उकाब - सा बना हुआ है, अगर मेरी आँखें मुझे धोखा नहीं दे

रही हैं तो वह उसी बारहदरी के सिरे पर बना हुआ है जिसमें होश में आने पर मैंने अपने को पाया था.

ऐसी हालत में वह बाग भी इस जगह के आस - पास ही में कहीं होगा जहाँ आपने सरयू! चाची को छोड़ा था या जहाँ उस तिलिस्मी शैतान से आपकी लड़ाई हुई थी.

प्रभा ०:

(ताज्जुब से) तुमने वह हाल कहाँ से देखा?

मालती:

उसी बाग में से जिसमें वह खंभेवाली बारहदरी बनी हुई है.

प्रभा ०:

मैं तुम्हारा पूरा हाल सुनने को व्याकुल हूँ, इस समय संध्या हो गई है और रात में किसी तरह की कोई कार्रवाई करना संभव भी नहीं है अस्तु हम लोगों को जरूरी कामों से निपट कर इस बारहदरी को ही अपना ठिकाना बनाना चाहिये, उस समय मैं तुम्हें अपना किस्सा सुनाऊँगा और तुम भी अपना हाल मुझे सुनाना जब से कि मुझसे अलग हुई हो.

मालती:

अच्छी बात है.

(देखकर) मालूम होता है वहाँ कोई नहर है.

अगर ऐसा है तो हमलोगों को क़म - से - क़म पानी की तकलीफ न होगी.

दोनों उठ खड़े हुए और उस छोटी नहर के किनारे पहुँचे जो इस बाग के बीचोबीच में से बह रही थी.

दोनों ने जरूरी कामों से छुट्टी पाई और नहर के किनारे के मेवों के दरख्तों से अपनी भूख भी शान्त की, इसके बाद उसी बारहदरी में आकर बैठ और बातें करने लगे.

रात घण्टे भर से ऊपर जा चुकी है, मालती ने अपना हाल सुना कर अभी समाप्त कियाहै और प्रभाकरसिंह अपना क़िस्सा शुरू करने ही वाले हैं.

यकायक इसी समय सामने के पेड़ों में एक रोशनी दिखाई पड़ी जिसने इन दोनों का ध्यान अपनी तरफ खींचा और ये बातें बन्द कर उसी तरफ को देखने लगे.

ऐसा जान पड़ता था, मानों कोई आदमी हाथ में बत्ती लिए इधर - उधर घूम रहा हो.

थोड़ी देर बाद वह रोशनी गायब हो गई मगर तुरन्त ही बाग के दूसरी तरफ दिखाई पड़ी जिधर कुछ इमारतें बनी हुई थीं.

मालती:

यह कौन आदमी हो सकता है?

प्रभा ०:

मालूम नहीं, मगर रंग - ढंग से जान पड़ता है कि इस स्थान से बखूबी बाकिफ है.

मालती:

देखिए वह फिर बाहर निकला! एक - दूसरे दरवाजे की राह वह सफेदपोश पुनः बाग में निकल आया और तब तेजी के साथ चलता हुआ उस नहर के किनारे जा पहुँचा.

यहाँ पहुँच कर वह रुका और तब जमीन पर बैठ कुछ करने लगा.

प्रभाकरसिंह ने यह देखकर कहा, " वहाँ चलकर पता लगाना चाहिए कि वह कौन है और क्या कर रहा है.

" मालती:

कहीं वह कम्बख्त वही तिलिस्मी शैतान न हो! प्रभा ०:

अगर वह तिलिस्मी शैतान होगा तो उसे हमारे इस जगह होने की पूरी खबर होगी और हम उससे किसी तरह अपने को बचा नहीं सकते, मगर मेरा दिल कहता है कि वह तिलिस्मी शैतान नहीं बल्कि कोई दूसरा ही है जिसे हम लोगों के यहाँ होने की कुछ भी खबर नहीं है ।

मालती:

अच्छी बात है, पेड़ों की आड़ में छिपते हुए हम लोग उसके पास पहुँच कर कम - से - कम इतना पता तो लगा ही सकते हैं कि वह क्या कर रहा है ।

दोनों आदमी उठ खड़े हुए और पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाते हुए दबे कदम उसी तरफ बढ़े जिधर वह सुफेदपोश था.

उससे लगभग बीस कदम के फासले पर एक बड़े जामुन के पेड़ की आड़ में ये दोनों आ खड़े हुए और देखने लगे.

पीठ घूमी रहने के कारण उसकी शकल तो ये लोग देख न सके मगर यह मालूम हो गया कि वह जमीन में एक गड्ढा खोद रहा है.

इन लोगों के देखते - देखते उसने कोई हाथ भर गहरा गड्हा जमीन में खोदा और तब उसके अन्दर कोई चीज रख उसे पाटने लगा, जब गड्डा पट गया तो पैर से पीट - पीट कर जमीन बराबर कर दी और तब रोशनी लिए उसी तरफ को लौट गया जिधर से आया था.

बाईं तरफ की इमारत में बने एक दरवाजे के अन्दर घुस कर उसने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और इन लोगों की आँखों से ओट हो गया.

मालती:

वहाँ पर जाकर देखना चाहिए कि उसने जमीन में कौन - सी चीज गाड़ी है.

प्रभा ०:

यही मेरी भी इच्छा है.

दोनों आदमी उसी जगह पहुँचे.

प्रभाकरसिंह जल्दी - जल्दी जमीन खोदने और मालती चारों तरफ इस निगाह से चौकन्नी होकर देखने लगी कि यह आदमी पुनः लौट कर काम में विघ्न न डाले.

तुरन्त ही का खोदा गड्डा होने के कारण प्रभाकरसिंह ने उस जगह की मिट्टी शीघ्र ही निकाल ली और तब उन्हें एक छोटी - सी गठरी दिखाई पड़ी.

वह गठरी बाहर निकाल उन्होंने गड्ढे को पुनः पाट दिया और दोनों आदमी उस बारहद्दरी में लौट आए.

प्रभाकरसिंह की कमर में एक छोटा - सा बटुआ था जिसमें उन्होंने कुछ बहुत ही जरूरी वह सामान रखा हुआ था जो इन्द्रदेव ने उन्हें दारोगा के मकान में जाती समय दिया था.

इस समय उसमें से उन्होंने चाँदी की एक छोटी - सी डिबिया निकाली और उसका कोई खटका दबाया.

साथ ही उस डिबिया का एक हिस्सा चमकने लगा और इतनी रोशनी पैदा हो गई कि यह देखा जा सके कि उस गठरी में क्या है.

डिबिया मालती के हाथ में देकर प्रभाकरसिंह ने वह गठरी खोली जो किसी तरह के रोगनी कपड़े में बँधी हुई थी और साथ ही चौंक पड़े, उसके अन्दर एक दूसरी छोटी गठरी थी जिसका कपड़ा खून से एकदम तर मालूम होता था और उसी को देखकर प्रभाकरसिंह चौंके थे.

मालती भी इसे देखकर झिझक गई मगर प्रभाकरसिंह ने हिम्मत कर उस खून से सने कपड़े को खोल डाला, उसके अन्दर से जो चीज निकली वह और भी डरावनी थी यानी किसी की खोपड़ी थी जिस पर चमड़े या मांस का नाम - निशान भी न था मगर और सब तरह से बिल्कुल दुरुस्त थी और उसके नीचे चाँदी का एक डिब्बा था.

प्रभाकरसिंह ने खोपड़ी एक तरफ रख दी और उस डिब्बे को देखने लगे जो मजबूती के साथ एकदम बन्द था.

यकायक्र मालती चौंकी और बोल उठी, " ओह इस डिब्बे को तो मैं पहिचानती हूँ, लाइए मुझे दीजिए, मैं इसे खोल दूँ! " प्रभाकरसिंह ने यह सुन ताज्जुब करते हुए वह डिब्बा मालती के हाथ में दे दिया जिसने एक दफे गौर से उसे देखा और तब " वेशक बही है " कहकर जोर से उठाकर जमीन पर पटक दिया.

पटकने के साथ ही उस डिब्बे का ऊपरी हिस्सा दो टुकड़े होकर खुल गया और भीतर भोजपत्र पर लिखी एक पुस्तक तथा सोने की एक चाभी दिखाई देने लगी.

यह चाबी करीब छः अंगुल के लम्बी और वह पुस्तक जिस पर चाँदी की मुन्दर जिल्द बनी हुई थी लगभग एक बालिस्त के लम्बी और दस - बारह अंगुल चौड़ी होगी.

इस पुस्तक और चाभी को देखते ही मालती खुशी के मारे चीख उठी और बोली, " वाह इन चीजों को इस तरह यहाँ पाने की तो कभी स्वप्न में भी आशा नहीं हो सकती थी! " प्रभा ०:

(ताज्जुब से) यह किताब कैसी है और चाभी कहाँ की है?

मालती:

इन्द्रदेवजी की जुबानी मालूम हुआ था कि यह किताब लोहगड़ी के भेदों का खजाना है और चाभी वहाँ के तिलिस्म की है.

अपना हाल कहते समय मैंने कहा था कि कुछ आदमियों को एक गठरी गाड़ते देख मैं उसे उठा लाई थी और उसमें से एक चाँदी का डिब्बा निकला था जिसे खोलकर इन्द्रदेवजी ने कई चीजें निकाली थीं.

प्रभा ०:

हाँ, तो क्या डिब्बा वही है मालती:

जी हाँ.

प्रभा ०:

तब तो यह बड़ी अनमोल चीज है.

हम लोगों को यह पुस्तक आदि से अन्त तक पड़ जानी चाहिए.

सम्भव है इसकी सहायता से हम लोग तिलिस्म को तोड़ सकें या और कुछ नहीं तो कम - से - कम इसके बाहर निकल सकें.

मालती:

बेशक यही बात है.

कुछ देर तक इन दोनों में बातचीत होती रही और इसके बाद यह निश्चय करके कि रात इसी दालान में काटी जाय सुबह होने पर देखा जाएगा, दोनों ने वही लम्बी तानी.

सोने से पहिले संक्षेप में प्रभाकरसिंह ने मालती को अपना कुल क़िस्सा सुना दिया.

मौसमी फूलों की खुशबू से भरी हुई सुबह की ठंडी - ठंडी हवा मस्ती पैदा कर रही है.

प्रभाकरसिंह दो - चार करवटें बदलकर उठना चाहते हैं पर आलस्य उठने की इजाजत नहीं देता.

यकायक इसी समय कहीं से दौड़ती हुई मालती वहाँ आई और उन्हें जगाते हुई बोली, " उठिये उठिये, एक बड़े ताज्जुब की बात अभी मैंने देखी है:

प्रभाकरसिंह चौंक कर उठ बैठे और कुछ घबड़ाए हुए से बोले, " क्या है?

क्या है?

"

मालती:

जिस तरह से तिलिस्मी शैतान ने हम लोगों को कैद कियाथा वैसे ही तीन - चार शैतानों को अभी उस दरवाजे से निकलकर उस तरफ जाते मैंने देखा है.

बहुत मुमकिन है कि वे लोग कुछ उपद्रव करें, हम लोगों को होशियार हो जाना चाहिए.

यह सुनते ही प्रभाकरसिंह ने कहा, “ जरूर! वे लोग किधर गए हैं?

" मालती के हाथ से बताने पर वे खड़े हुए और अपना सामान बटोर उधर चलने को तैयार हो गए जिधर मालती ने बताया था.

उनकी तलवार तिलिस्मी शैतान से लड़ कर टूट चुकी थी मगर वह करामाती डण्डा जो इन्द्रदेव ने दिया था अभी तक उनके पास मौजूद था जिसे उन्होंने हाथ में लिया और तिलिस्मी किताब जेब में रखी.

वह सिर जो किताब के संग पाया था वहीं छोड़ा और मालती को लिए पेड़ों की आड़ देते हुए उस तरफ बड़े जिधर मालती ने बताया था.

कुछ दूर जाने के बाद पेड़ों की आड़ में से प्रभाकरसिंह को कमर भर ऊंचा एक चबूतरा दिखाई पड़ा, इस समय इसी चबूतरे पर प्रभाकरसिंह को ठीक उसी सूरत - शक्कल के चार शैतान दिखाई पड़े जिस तरह के एक से लड़ कर वे जक उठा चुके थे.

इस समय वे चारों इस तरह खड़े थे मानों आपस में कुछ बातें कर रहे हों मगर उनका मुंह दूसरी ओर और पीठ इन दोनों की तरफ थी जिससे उनकी बातें सुनना कठिन था.

प्रभाकरसिंह ने यह देख मालती से कहा, " तुम यहीं ठरो, मैं जरा पास जाकर सुनना चाहता हूँ कि वे क्या बातें कर रहे हैं ।

यह सुनते ही मालती घबड़ा कर बोली, “ नहीं - नहीं, हम लोगों को यहाँ से भाग कर अपनी जान बचानी चाहिए न कि उनके पास जाकर जोखिम में पड़ना चाहिए हम लोग कहीं छिप रहें या कोई रास्ता मिले तो किसी तरफ निकल जायें.

" प्रभाकरसिंह ने यह सुन कहा, " एक तो हम लोग यहां से भाग कर नहीं जा सकते, दूसरे मैं उनकी निगाह बचाता हुआ वहाँ तक जाऊँगा.

अगर वे लोग अभी तक हम लोगों को देख नहीं पाए हैं तो अब देख न सकेंगे इसका मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, मुझे उनकी बात सुनने का बहुत कौतूहल हो रहा है क्योंकि मेरा दिल गवाही देता है कि वहाँ जाने से जरूर कोई - न - कोई मतलब की बात सुन पड़ेगी.

तुम बिलकुल न डरो और मुझे जाने दो.

मालती:

अगर ऐसी बात है तो मैं भी आपके साथ ही चलती हूँ, लाचार प्रभाकरसिंह मालती को लिए हुए ही आगे की तरफ बढ़ने पर मजबूर हुए.

पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाते और बहुत दबाकर कदम रखते हुए वे थोड़ी देर में उस चबूतरे के इतने पास पहुँच गये कि इन शैतानों की बातें कुछ - कुछ सुनाई पड़ने लगीं.

ये दोनों भी सुनने लगे.

एक शैतान:

तो क्या हम लोग अब प्रभाकरसिंह को पकड़ नहीं सकते?

दूसरा:

नहीं, क्या तुम नहीं जानते कि जिसके पास तिलिस्म की चाभी हो उसे हम लोग हाथ नहीं लगा सकते! उसे हाथ लगाना तो दूर हम लोगों को अपने बचाव का इन्तजाम करना चाहिए क्योंकि अगर उसने तिलिस्म तोड़ने के काम में हाथ लगा दिया तो सबसे पहिले हमीं मारे जायेंगे! तीसरा:

सो क्यों?

हम लोग क्यों मारे जायेंगे?

चौथा:

क्योंकि हमीं लोग इस तिलिस्म के पहरेदार हैं और बिना हमको मारे वह तिलिस्म तोड़ नहीं सकता.

पहिला:

तो क्या ऐसी कोई तरकीब नहीं है जिससे हम लोग अपनी - अपनी जान बचा सकें.

दूसरा:

(कुछ सोच कर) बस सिर्फ एक तरकीब हो सकती है.

सब:

वह क्या?

पहिले शैतान ने धीरे - से कुछ कहा जिसे सभों ने बड़े गौर से सुना और तब एक साथ ही खुश होकर बोल उठे, " ठीक है, ठीक है, बस यही तरकीब करनी चाहिए '.

उन लोगों में धीरे - धीरे कुछ बातें हुईं जिन्हें प्रभाकरसिंह सुन न सके और तब वे सब के सब वहाँ से चलने को तैयार हुए.

यह सोचकर कि ये सब कहीं हमारी ही तरफ न आवें प्रभाकरसिंह और मालती फुरती से दूसरी तरफ हटकर एक झाड़ी के अन्दर जा छिपे मगर उन लोगों की शकल फिर न

दिखाई पड़ी.

जब बहुत देर गुजर गई तो ताज्जुब करते हुए प्रभाकरसिंह झाड़ी के बाहर निकले.

चारों तरफ सन्नाटा था और कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ रहा था.

अच्छी तरह देखभाल कर अन्त में विश्वास कर लेना पड़ा कि वे चारों शैतान किसी दूसरी तरफ निकल गये.

प्रभाकरसिंह और मालती में कुछ देर तक बातें होकर अन्त में यह स्थिर हुआ कि जरूरी कामों से छुट्टी पाकर सबसे पहिले उस तिलिस्मी किताब को पढ़ डालना चाहिए इसके बाद ही किसी एक काम में हाथ लगाना ठीक होगा.

यह निश्चय कर वे दोनों वहाँ से हटे और जरूरी कामों से निपटने की फिक्र में पड़े,

तीसरा वयान।

सुबह का समय है.

इन्द्रदेव के कैलाश - भवन से चारों तरफ की पहाड़ियों की विचित्र छटा बड़ी सुहावनी नजर आ रही है.

इन्द्रदेव अभी स्नान - पूजा आदि से निवृत्त होकर उठे हैं और अपने बैठने के कमरे की एक खिड़की के सामने खड़े होकर उस प्राकृतिक दृश्य को देख रहे थे जब एक चोबदार ने आकर कहा, “ भूतनाथ ऐयार आये हैं.

भूतनाथ का नाम सुनकर इन्द्रदेव चौके और बोले, " उन्हें नीचे वाले बैठक में लाओ मैं वहीं चलता हूँ! " " जो हुक्म " कहता हुआ वह चोबदार चला गया और इन्द्रदेव वहाँ से हटकर महल के अन्दर चले गए.

थोड़ी देर बाद जब वे नीचे पहुँचे तो भूतनाथ को बैठा पाया जो उन्हें देखते ही उठ खड़ा हुआ.

इन्द्रदेव ने बड़े प्रेम से उससे मुलाकात की और तब दोनों आदमी गद्दी पर जा बैठे.

इन्द्र ०:

कहो जी गदाधरसिंह, इस बार तो बहुत दिनों में आये.

भूत ०:

जी हाँ, तरदुदों और फिक्रों में मैं इस तरह डूबा हुआ था और अब तक डूबा हुआ हूँ कि किसी तरह फुरसत ही नहीं मिलती, मगर कई जरूरी खबरें आपको देनी थीं इससे आना ही पड़ा.

इन्द्र ०:

वे खबरें क्या हैं?

भूत ०:

पहिली बात तो उस गुप्त कमेटी के सम्बन्ध में है.

यह तो आपको भी पता लग ही गया होगा कि उसके कर्ता - धर्ता जमानिया के दारोगा साहब हैं.

इन्द्र ०:

हाँ सन्देह तो जरूर ही मुझे है पर इसका कोई पक्का सबूत अभी तक मेरी आँखों के सामने से नहीं गुजरा.

क्यों तुम्हें इस बात का पूरी तरह से विश्वास हो गया है?

भूत ०:

जी हाँ, और इन कागजों को पड़ने से आपको भी किसी तरह का शक न रह जायगा.

भूतनाथ ने अपनी जेब में हाथ डाला और कुछ कागजात निकाल कर सामने रख दिया.

इन्द्रदेव ने उन कागजों को सरसरी निगाह से देखा और तब यकायक चौंककर बोल उठे, " हैं, ये कागजात तुम्हारे हाथ कैसे लग गये! " भूत:

(मुस्कुरा कर) इन्हें मैं खास उस कमेटी से लूट लाया हूँ, उस समय शायद आप भी वहां मौजूद थे जब कुछ लोग कमेटी पर डाका डाल और बहुत - सा सामान लूट ले गये

थे.

इन्द्र ०:

(मुस्कुराकर) अच्छा तो वह तुम्हारा ही काम था! मुझे उसी समय सन्देह हुआ था परन्तु तब कुछ बोलना या छेड़ना मुनासिब न समझा (फिर से कागजों को देखकर) ये कागज तो बड़े ही कीमती हैं, ये अगर गोपालसिंह को दिखला दिये जाएं तो वे एकदम ही इस कमेटी को जड़ से नाश करके अपने दुश्मनों से हमेशा के लिए बेफिक्रहो सकते हैं.

तुम ये कागज मुझे सिर्फ दिखाने को ही लाये हो या मैं इनसे कुछ काम ले सकता हूँ?

भूत ०:

आप मालिक हैं जो चाहें कर सकते हैं, पर कुछ सबब ऐसे आ पड़े हैं जिनसे मैं अभी यह मुनासिब नहीं समझता कि राजा गोपालसिंह इन कागजों को देखें.

इन्द्र ०:

(ताज्जुब से) वे सबब क्या हैं?

भूतः:

यह भी मैं बयान करूँगा मगर पहले कई जरूरी बातें आपको सुना दूँ, आप शायद इन्दिरा से तो मिल ही चुके होंगे?

इन्द्र ०:

हाँ बलभद्रसिंह स्वयं मेरे पास आये थे और सब हाल मुझसे कहकर तुम्हारी बहुत तारीफ करते थे.

इसके बाद में उनके साथ उनके घर जाकर इन्दिरा से मिल भी आया मगर उसे अपने यहाँ लाया नहीं, क्योंकि मैंने देखा कि अपने घर लाने की बनिस्बत उसे कुछ समय तक बलभद्रसिंह के पास छोड़ देना ही मुनासिब होगा, ऐसा करने से दुश्मनों को सन्देह न होगा और मैं भी घर की चिन्ता छोड़ बाहर रह कर पूरी बेफिकी के साथ काम कर सकूँगा.

इसके सम्बन्ध में धन्यवाद का पत्र लेकर मेरा शागिर्द आज ही तुम्हारे पास जाने वाला था.

भूत ०:

यह तो आप मुझे शर्मिन्दा करने की बातें करने लगे, या शायद आपने अभी तक पूरे दिल से मुझे माफ नहीं किया और अभी भी मुझ पर शक की निगाहें ही डाल रहे हैं.

क्या अपनी ही लड़की को दुश्मनों के हाथ से छुड़ाना किसी पर अहसान करना है?

इन्द्र ०:

नहीं, सो तो नहीं है, खैर जैसा तुम समझो, अच्छा और क्या बात है?

भूत ०:

आपकी सयुं तो आपके पास पहुँच ही गई होंगी?

मैंने उन्हें भी छुड़ाने का उद्योग किया था पर यह सुना कि आपका ऐयार उन्हें दारोगा के घर से ले गया अस्तु चुप रह गया, इन्द्र ०:

नहीं, सयूँ तो मेरे यहाँ नहीं पहुँची.

भूत ०:

वह आपके यहां नहीं पहुँची?

क्या सिद्ध बाबाजी बनकर आपका कोई आदमी उन्हें दारोगा साहब के मकान से नहीं निकाल लाया?

इन्द्र::

एक आदमी गया जरूर था मगर वह दुश्मनों के फेर में पड़ गया और सरयू भी कहीं गायब हो गई.

तब से अब तक मैं उसको ढूँढ रहा हूँ लेकिन कुछ पता नहीं लगता है.

भूत ०:

(ताज्जुब से) अच्छा! यह बात मुझे कुछ भी मालूम नहीं, अच्छा मैं पुनः उद्योग करूँगा और अगर दारोगा के कब्जे में वह होंगी तो जरूर निकाल लाऊँगा.

इन्द्र ०:

जरूर ऐसा करना क्योंकि तुम इस सम्बन्ध में मुझसे कहीं ज्यादा काम कर सकते हो.

हाँ, खूब खयाल आया, अक्यां बलभद्रसिंह को तुमने कहा था कि उनकी जान के पीछे दुश्मन लगे हुए हैं जो यह भी चाहते हैं कि गोपालसिंह के साथ लक्ष्मीदेवी की शादी न होने पावे.

भूत ०:

जी हाँ, मैंने उनसे कहा था और मुझे उम्मीद है कि आप भी उन्हें बहुत होशियार कर देंगे.

और मैंने उनसे कहा था उनकी और उनके रिश्तेदारों की जान बहुत खतरे में है और अफसोस यह कि मेरे होशियार कर देने पर भी वे सम्हले नहीं हैं.

इन्द्र ०:

आखिर बात क्या है सो तो बताओ! भूत ०:

असल बात तो वही है जो शायद आपको भी मालूम ही होगी यानी दारोगा साहब चाहते हैं कि उनके परममित्र हेलासिंह की लड़की मुन्दर से गोपालसिंह की शादी हो जाय ताकि वह राजरानी बन जाय.

इन्द्र ०:

हैं! यह क्या तुम ठीक कह रहे हो?

भूत ०:

बिलकुल ठीक, मगर क्या आपको इसकी खबर नहीं?

इन्द्र ०:

मैंने उड़ती हुई कुछ ऐसी खबर बेशक सुनी थी मगर यह सोच कर ध्यान नहीं दिया था कि ऐसा कभी सम्भव नहीं हो सकता.

यह सोचने का केवल यही कारण न था कि दारोगा साहब अपने मालिक राजा गोपालसिंह के साथ ऐसा दगा नहीं करेंगे, बल्कि यह भी था कि बलभद्रसिंह दारोगा साहब के बड़े पुराने दोस्त हैं और उनकी बेटी को दारोगा अपनी बेटी की तरह समझता है.

भूत ०:

यह सब उस की धूर्तता है.

मुझे ठीक - ठीक मालूम हो चुका है कि दारोगा लक्ष्मीदेवी की जान लेना चाहता है बल्कि यहाँ तक चाहता है कि बलभद्रसिंह, उनकी स्त्री, लड़कियाँ और लड़के सभी यमलोक को सिधार जायं, और इस बात का बहुत सच्चा सबूत मेरे पास मौजूद है! इतना कह भूतनाथ ने अपना बटुआ खोला और उस में से कोई चीज खोजने लगा मगर शायद न पाकर थोड़ी देर बाद बोला, " अफसोस, उन कागजों को मैं घर ही छोड़ आया! खैर इस चीठी से भी आपको विश्वास हो जायगा कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ बहुत ठीक कह रहा हूँ, कह कर भूतनाथ ने एक कागज जो चीठी की तरह मोड़ा हुआ था बटुए में से निकाल कर इन्द्रदेव के हाथ में दे दिया, उन्होंने उसे गौर से पड़ा, यह लिखा हुआ था:

" मेरे भाग्यशाली मित्र हेलासिंह, मुबारक हो, आज हमारी जहरीली मिठाई बलभद्रसिंह के घर में जा पहुँची.

इसका जो कुछ नतीजा देखूंगा अगली चीठी में लिखूंगा.

वास्तव में तुम किस्मतवर हो.

-वही भूतनाथ " चीठी का मजमून पड़ कर इन्द्रदेव के चेहरे पर चिन्ता की एक छाया दौड़ गई वे ताज्जुब से भूतनाथ का मुंह देखने लगे.

भूत ०:

इस चीठी की लिखावट से ही आप समझ गये होंगे कि इसका लिखने वाला कौन है! इन्द्र:

बखूबी !! भूत ०:

और जिस मिठाई की तरफ इशारा है उसने बलभद्रसिंह के घर में पहुँच कर क्या कियाहोगा इसे भी आप समझ ही सकते हैं.

इन्द्र ०:

बहुत ही अच्छी तरह! भूत:

अस्तु अब आपको इस बात में भी सन्देह न रह गया होगा कि बलभद्रसिंह कैसे आफत में फंस गये हैं.

इन्द्रः:

नहीं, अब मुझे कोई संदेह नहीं रहा.

तुमने बहुत अच्छा कियाजो मुझे इस बात की खबर दी.

मैं बलभद्रसिंह को अच्छी तरह होशियार कर दूंगा और खुद भी जहाँ तक हो सकेगा उनके बचाव का बन्दोबस्त करूँगा, मगर तुम इतना कर निश्चिन्त न हो जाओ.

बलभद्रसिंह हमारा - तुम्हारा लंगोटिया दोस्त है और उस पर किसी तरह की मुसीबत आने से हम सभी को कष्ठ होगा.

तुम्हें इस विषय में जब कभी जो कुछ भी मालूम हो बराबर मुझे बताते रहना.

भूत ०:

बहुत खूब, मगर इस संबंध में इतनी प्रार्थना मेरी है कि जिन लोगों को धोखे में डाल कर मैंने इस भेद का पता पाया है उन्हें यह न मालूम हो कि मैं उनका भण्डा फोड़ रहा हूँ, नहीं तो वे केवल मेरे दुश्मन ही न हो जाएँगे बल्कि भविष्य में उन लोगों की नई कार्रवाई जानने का रास्ता भी बंद हो जायेगा.

इन्द्र ०:

नहीं नहीं, इस बात से तुम पूरी तरह से निश्चिंत रहो, मैं ऐसी कोई भी कार्रवाई न करूँगा जिससे तुम्हें जरा भी तरदुद उठाना पड़े, भूत:

यह तो मुझे विश्वास है.

अच्छा अब अगर आप नाराज न हों तो आपसे एक बात पूछूं.

इन्द्र ०:

(ताज्जुब से) ऐसी कौन - सी बात हो सकती है जिसके पूछने से मैं नाराज हो जाऊँगा! तुम जो कुछ पूछना चाहते हो खुशी से पूछो.

भूत ०:

क्या आपके कब्जे में या आपके इस मकान के आसपास लोहगड़ी नामक कोई तिलिस्म है?

इन्द्र ०:

(चौंक कर) लोहगड़ी! भूत ०:

जी हाँ, लोहगड़ी! इन्द्र ०:

यह नाम तुमने कहाँ और किससे सुना?

भूत:

जमानिया के दारोगा साहब से.

इन्द्र ०:

(कुछ सोच कर) हाँ, इस नाम का एक तिलिस्म है जरूर परंतु मुझे उससे कोई संबंध नहीं और न वह मेरे कब्जे में ही है.

वह जमानिया तिलिस्म की एक शाखा है और जहाँ तक मुझे खबर है उसका भेद इस समय हेलासिंह के कब्जे में है.

मगर तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो?

लोहगड़ी से तुमसे क्या मतलब?

भूत:

(कुछ हिचकता हुआ) मैंने उसके बारे में कुछ बिचित्र बातें सुनी हैं.

इन्द्र ०:

क्या?

भूत ०:

पर उन्हें मैं आपसे बयान करते डरता हूँ, इन्द्रः:

(हँस कर) मुझे कुछ रंग बेडब दिखाई पड़ता है.

आखिर मामला क्या है जो तुम इस तरह की बातें कह कर मेरा कौतूहल बड़ा रहे हो! कुछ साफ - साफ कहो भी तो! भूत ०:

अच्छा तो मैं साफ - साफ ही कहता हूँ.

मुझे खबर लगी है कि उसी तिलिस्म में दयाराम कैद हैं! इन्द्र ०:

(हँस कर) वाह, यह भी खूब कही! दयाराम का इन्तकाल हुए तो बरसों हो गये और तुम बखूबी जानते हो.

फिर इस खबर पर तुम्हें विश्वास क्योंकर हो गया! भला इसे भी कोई मान सकता है कि दयाराम जीते हैं और किसी तिलिस्म में कैद हैं?

इन्द्रः:

खैर जमना, सरस्वती का नहीं होना तो मैं मान सकता हूँ क्योंकर वे बहुत दिनों से गायब हैं और मैं अभी तक उनकी खोज में परेशान हूं, मगर दयाराम के जिन्दा और किसी तिलिस्म में होने की बात पर मैं किसी तरह विश्वास नहीं कर सकता तुमने एक बार पहिले भी इसी तरह की खबर सुनाई थी जिस पर मैंने बहुत कुछ खोज की और परेशानी भी उठाई मगर नतीजा कुछ न निकला और अन्त में वह खबर झूठी निकली.

आज फिर वही बात तुम्हारे मुँह से सुन रहा हूँ! मैं समझता हूँ कि इस तरह की खबरें परेशान करने के लिए ही कोई तुम्हें देता है बल्कि संभव है कि तुम्हारे दारोगा साहब के ही ये मंत्र फूंके हुए हों.

भूत:

इस दफे तो बेशक दारोगा ने ही यह बात मुझसे कही और यहाँ तक जोर देकर कही है कि मुझे उसका कहना मान लेना पड़ा है.

उसने तो यहाँ तक कहा कि वह अपने साथ ले जाकर उन लोगों को वहाँ दिखा सकता है.

इन्द्र ०:

तब तो मैं अवश्य कहूँगा कि जरूर उसके साथ जाओ और देखो कि उसके कहने में कहाँ तक सच्चाई है.

यद्यपि दयाराम को जीता देखकर मुझसे ज्यादा प्रसन्नता शायद किसी को भी नहीं होगी पर यों ही झूठमूठ मृगतृष्णा पर दौड़ना मैं बिल्कुल व्यर्थ समझता हूँ, हाँ इतना जरूर कहूंगा कि अगर कोई दयाराम दारोगा साहब तुम्हारे सामने पेश करें तो इस बात का अच्छी तरह निश्चय कर लेना कि वे सचमुच ही दयाराम हैं और दारोगा का कोई ऐयार नहीं क्योंकि ताज्जुब नहीं कि दारोगा किसी झूठे दयाराम को तुम्हें दिखलाकर अपना कोई काम साधने की फिक्र में हों.

भूत ०:

नहीं नहीं, मैं ऐसी गलती कदापि नहीं कर सकता.

क्या आप समझते हैं कि दयाराम को सामने पाकर भी मैं उनके पहिचानने में भूल कर जाऊँगा! इन्द्र ०:

नहीं नहीं, सो तो मैं नहीं समझता पर अपना खयाल तुम पर जाहिर कर दिया, क्योंकि दारोगा साहब के लिये कोई बात मुश्किल नहीं है.

मगर भूतनाथ, मुझे शक होता है कि इस विषय में तुम मुझे सब बातें साफ - साफ नहीं कहते हो, जरूर कुछ छिपा रहे हो.

भूत ०:

(जिसका चेहरा इन्द्रदेव की यह बात सुन कर कुछ उतर - सा गया) नहीं नहीं, ऐसा तो नहीं है, मैं तो सब कुछ साफ - साफ आपसे कह रहा हूँ और मुझे विश्वास है कि मेरी बातों में कहीं भी झूठ की गंध आपने न पाई होगी.

इन्द्रः:

नहीं नहीं, मैं झूठ कहने का दोष तुम पर नहीं लगा रहा हूँ, मैं सिर्फ इतना ही कह रहा हूँ कि इस बारे में तुम कुछ मुझसे छिपा रहे हो.

भूत ०:

ऐसा शक आपको क्यों होता है?

इन्द्र ०:

बस यों ही! दारोगा तुम्हें दयाराम के जीते होने की खबर दे, लोहगड़ी में उनका होना बतावे जो खास उसके मित्र के कब्जे में है, और उसका संबंध मुझसे जोड़े, ये सब ऐसी बातें हैं जो यकायक मन में नहीं धंसती.

अगर दयाराम वास्तव में मरे नहीं और जीते होकर कहीं कैद में हैं तो दारोगा सबसे पहिला आदमी है जिसके हक में उनका छूटना जहर का काम करेगा, तुम्हारे लिए उनका प्रकट हो जाना जितना अच्छा है दारोगा के हक में उनका मरे रहना वैसा ही उत्तम है और इस बात को वह अच्छी तरह समझता भी है फिर भी वह तुम्हें ऐसी खबर देता है इससे मुझे ताज्जुब होता है.

या तो उसके मन में कुछ कपट है और या फिर किसी कारण से बहुत लाचार हो गया है ऐसा मुझे जान पड़ता है.

भूत ०:

जी हाँ, वह बड़ी लाचारी में पड़ गया और तभी उसने यह भेद बताया.

मैंने आपसे कहा न कि उसकी सभा से इन्दिरा बाला कमलदान में ही लूट लाया था.

उस क़मलदान में जो कुछ है वह तो आप बखूबी जानते ही हैं अस्तु उसके लिये दारोगा जहाँ तक व्याकुल हो थोड़ा है, उसी को वापस पाने के लिये वह सब कुछ करने को

तैयार है और तभी उसने यह खबर दी है.

इन्द्र ०:

वह अगर दयाराम को जीते - जागते तुम्हें दिखा दे तो क्या तुम वह कमलदान उसे वापस कर दोगे?

भूत:

सिर्फ दयाराम को दिखा देने का ही सवाल नहीं है.

उससे बीस हजार अशर्फी मैंने इसके लिये वसूल की है और यह इकरारनामा भी लिखा लिया है कि भविष्य में राजागोपालसिंह या आपसे अथवा आपकी स्त्री और लड़की आदि से किसी प्रकार का भी बुरा बर्ताव न करेगा.

देखिये यह इकरारनामा मौजूद है.

कहकर भूतनाथ ने एक कागज बटुए से निकालकर इन्द्रदेव के हाथ में दिया जिसे वे सरसरी निगाह से पड़ गये और तब उसे वापस करते हुए बोले, “ मालूम होता है कि इस इकरारनामे और दयाराम को दिखा देने के बादे पर विश्वास करके तुम वह कलमदान दारोगा को वापस कर देना चाहते हो! भूत ०:

जी हाँ, बल्कि मैंने वापस कर दिया.

मगर क्या आप समझते हैं कि वह अपना वादा पूरा न करेगा?

इन्द्र ०:

(चौंककर) हैं! वापस कर दिया !! भूत ०:

(सुस्त होकर) जी हाँ, मगर क्या आपकी निगाह में यह अच्छा नहीं हुआ?

इन्द्रदेव ने एक लम्बी साँस ली और किसी चिन्ता में पड़ कर सिर झुका लिया.

भूतनाथ आश्चर्य और दुख से उनकी सूरत देखने लगा.

क्योंकि इन्द्रदेव का चेहरा देख उसे ऐसा मालूम हुआ मानों उन्हें कोई बड़ा गहरा दुःख हुआ है.

भूतनाथ कुछ देर तक उनका मुँह देखता रहा और जब वे कुछ न बोले तो धीरे से बोला, " मालूम होता है, वह कलमदान लौटाकर मैंने मालती की! " इन्द्रदेव ने एक दु:ख - भरी निगाह भूतनाथ पर डाली और फिर एक ठंडी साँस लेकर कहा, " गदाधरसिंह, तुम्हारे ऐसा जमाना देखे हुआ ऐयार भी ऐसी भूल करेगा यह मुझे स्वप्न में भी गुमान नहीं हो सकता था.

क्या तुम समझते हो कि वह दारोगा जिसने अपने माता - पिता के साथ घात किया, भाइयों के साथ दगा की, मालिक को जहन्नुम में मिलाया और जमाने भर की बुराइयों का पुतला बना रहा वहीं मौका पड़ने पर इस इकरारनामे का खयाल करेगा! क्यांतुम समझते हो कि अगर कभी मुझे, मेरी खोयी, लड़की या गोपालसिंह को इस दुनिया से उठा देना उसकी निगाह में जरूरी हो जायेगा तो वह इस कागज के टुकड़े का खयाल करेगा और अपने इरादे से बाज रहेगा?

अगर तुमने ऐसा समझा है तो बड़ी भारी भूल की है और कभी - न - कभी इसका फल तुम्हें बहुत ही भयानक रूप से उठाना पड़ेगा.

जब तुमने बीस हजार अशर्फी और यह इकरारनामा लेकर कलमदान लौटा दिया तो जरूर यह भी वादा कर दिया होगा कि अब तुम इस संबंध में उसके साथ किसी तरह की दुश्मनी का बर्ताव न करोगे और उसके इन ऐबों पर पर्दा डाल दोगे.

ठीक है, तुम्हारी सूरत कह रही है कि तुमने यह वादा कियाहै! तब जरूर है कि तुम अपनी तरफ से कोई ऐसी बात न करोगे जिससे उसके ऊपर किसी तरह की आँच आवे.

मगर दारोगा को – अगर कभी उसने हम लोगों के साथ दुश्मनी की जरूरत देखी तो इस तरह का तरदुद कोई भी न होगा और वह बेखटके जो कुछ भी चाहेगा कर गुजरेगा.

अफसोस भूतनाथ, तुम्हारे लालच ने बहुत बुरा किया.

तुमने यह काम बहुत नासमझी का कियाऔर किसी - न - किसी दिन इसका नतीजा तुम्हें भोगना पड़ेगा.

उस समय तुम्हें मेरी बात याद आयेगी और तुम समझोगे कि तुमने कैसी भयानक गलती की है! " इतना कह कर इन्द्रदेव चुप हो गये और गर्दन झुका के कुछ सोचने लगे.

भूतनाथ भी उनकी बातें सुन कर सन्न हो गया और उसने भी अपना सिर झुका लिया.

सच तो यह है कि उसे भी अपनी भूल मालूम हो गई थी और वह जान गया था कि लालच में पड़ कर कलमदान लौटा देने का बहुत बुरा असर होगा.

उसे अपनी इस भूल पर अफसोस होने लगा और वह यहाँ तक दुःखी हुआ कि उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे.

थोड़ी देर तक इन्द्रदेव चुपचाप कुछ सोचते रहे इसके बाद उन्होंने सिर उठाया और भूतनाथ की हालत देखकर कहा, " खैर अब अफसोस करने से क्या फायदा?

जो कुछ होना था वह तो हो गया.

तुम मेरे दोस्त हो, सैंकड़ों दफे अपनी जुबान से मैंने तुम्हें दोस्त कहा है और तुम्हारे पचासों कसूर माफ किये हैं.

इस बार भी वही होगा! जो कुछ तुम कर आये उसे मैं मंजूर करता हूँ.

अब मैं दारोगा को एकदम से ही भूल जाता हूँ और अपनी स्त्री और लड़की का भी ध्यान भुला देता हूँ, अब चाहे उन पर कैसी आफत क्यों न आवे और दारोगा के सबब से मुझे स्वयं भी चाहे कितना कष्ठ क्यों न उठाना पड़े मगर मैं दारोगा के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करूंगा क्योंकि तुम, जो मेरे दोस्त हो, उसका कसूर माफ कर चुके हो आज से इस सम्बन्ध में मैं कभी दारोगा का नाम भी अपनी जुबान से न निकालूंगा और न अपनी स्त्री के विषय में ही किसी से कुछ कहूँगा.

तुम्हे जो कुछ करना हो बेधड़क करो और मेरा कुछ भी खयाल न करो, दारोगा को अब मेरी तरफ से कुछ भी डरने की जरूरत नहीं वह जो चाहे करे और तुम्हारे जो मन में आवे सो तुम करो, मैं किसी भी बात में दखल न दूंगा.

जो कुछ दारोगा ने मेरे मित्रों और प्रेमियों के साथ कियाथा उसके लिये मैंने सोचा था कि उसे ऐसी सजा दूंगा कि गली के कुत्तों को भी उसकी हालत पर रहम आबेगा, पर मालूम होता है ईश्वर को यह मंजूर नहीं कि उसके कर्मों का फल उसे मेरे हाथों से मिलता, जब तुम उसे छोड़ चुके तो मैंने भी उसे माफ किया.

तुम अगर चाहो तो भले ही उससे कह दो कि इन्द्रदेव को इन बातों की कुछ भी खबर नहीं है.

मैं भी अपने को ऐसा ही बनाये रहूँगा कि उसे किसी तरह का शक न होने पावेगा और वह मुझे निरा उल्लू ही समझता रहेगा.

मैं अब अपना न्याय ईश्वर के हाथों में सौंपता हूँ, वह सर्वशक्तिमान जो चाहे करे मुझे सब मंजूर होगा.

मगर भूतनाथ, मैं यह कहने से बाज न आऊँगा कि तुम्हारी लालच और तृष्णा ने मुझे चौपट कर दिया.

" कहते हुए इन्द्रदेव की आँखें डबडबा आईं और उन्होंने बहुत मुश्किल से अपने को रोका.

भूतनाथ की हालत भी बहुत ही खराब थी.

उसकी आँखों से चौधारे आँसू बह रहे थे और उसकी सूरत बतला रही थी कि उसे अपनी करनी पर बड़ा अफसोस हो रहा. यकायक अपना बटुआ उठा कर भूतनाथ खड़ा हो गया.

इन्द्रदेव ताज्जुब से उसकी सूरत देखने लगे मगर वह बोला, " मेरे दोस्त, मुझे माफ करो! सचमुच मैंने बड़ी भारी भूल की! मैं जाता हूँ और जिस तरह से भी हो अभी वह कलमदान वापस लेकर तुम्हें देता हूँ.

अब भी मैं दारोगा को कभी न छोडूंगा और जो कुछ उससे पाया है वह सब वापस करके उसे ऐसी सजा दूंगा कि वह भी याद करेगा! " इतना कहकर भूतनाथ दरवाजे की तरफ बड़ा मगर उसी समय लपककर इन्द्रदेव ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, " यह क्या! तुम चले कहाँ?

क्या तुम समझते हो कि मैंने कुछ तुम्हें कहा है वह ताने के तौर पर कहा है?

नहीं - नहीं मैंने अपने दिल की बातें तुम्हें कहीं जिन्हें अब कोई वापस नहीं ले सकता.

अब तो जो होना है हो चुका.

अब तो जो कुछ तुमने और मैंने कियाऔर कहा उसमें से कुछ भी वापस नहीं होगा.

जो कुछ हो चुका उसके बर्खिलाफ हमसे कोई भी अब कह और कर न सकेगा.

आओ और अपनी जगह पर बैठो.

!!

इन्द्रदेव ने जबर्दस्ती खींच कर भूतनाथ को अपनी जगह पर ला बिठाया दोनों दोस्त कुछ देर तक चुपचाप सिर नीचा क़िये बैठे रहे.

इसके बाद भूतनाथ बोला, " मेरे दोस्त - मुझे माफ करना! मुझसे वास्तव में ऐसी भूल हो गई जिसका मुझे जन्म भर पछतावा रहेगा.

मैं खूब जानता हूँ कि तुमने अब तक किस प्रकार मेरी गलतियों को क्षमा कियाहै और बराबर मुझे सुधारने का ही उद्योग करते रहे हो! तुम्हारी सहनशीलता की हद नहीं है.

सचमुच तुम्हारे दिल की गहराई की थाह मैंने आज तक पाई न थी। .

असल तो यों है कि कम्बख्त दारोगा ने मुझे उल्लू बनाया! उसने ऐसी - ऐसी बातें कहीं कि थोड़ी देर के लिये मैं सचमुच यह समझ बैठा तुम मेरे साथ दगा कर रहे हो.

अब मुझे साफ - साफ कह देने में भी संकोच नहीं है कि दारोगा ने मुझसे यह कहा कि दयाराम को तुम्हीं ने कैद किया, तुम्हीं ने उसके मारे जाने का इलजाम मेरे सिर पर थोपा और अब तुम्हीं ने उन्हें तिलिस्म में कैद कर रखा है.

अब जो वह बातें खयाल करता हूँ तो मुझे ताज्जुब होता कि उस समय मेरी अक्ल कहाँ चरने चली गई थी! मगर मेरे दोस्त, मुझे एक बार फिर मौका दो कि मैं अपने मुँह की कालिख धो सकूँ, मुझे इजाजत दो कि जाऊँ और वह कलमदान वापस लाऊँ.

" इन्द्र ०:

यह विचार अब बिल्कुल छोड़ दो.

जो कुछ होना था वह हो चुका.

तुम भी मर्द हो मैं भी मर्द हूँ.

मर्दो की जुबान से जो निकल गया वह फिर वापस नहीं लौट सकता.

भूत ० ठीक है, मगर मेरे लिये यह बात लागू नहीं, जिसकी जिन्दगी ही दगा, फरेब, झूठ और लालच में जीती है.

न - जाने कितने वादे मैंने क़िये और तोड़े, तुम इसे भी उसी लम्बी फिहरिस्त में जाने दो और मुझे एक बार अपने मन वाली कर लेने दो.

इन्द्रः:

नहीं - नही गदाधरसिंह, इसका अब तुम खयाल भी न करना, मैं तुम्हारी इष्टदेवी भगवती दुर्गा की शपथ देता हूँ कि इस संबंध में अब कोई बात तुम कदापि न करना.

जो हुआ हो गया, अब उसका अफसोस ही क्या है! दुनिया में यह सब हुआ ही करता है और इसके लिये अफसोस करना भूल है.

भूत ०:

मगर भूल को सुधारना भी तो मनुष्य का ही कर्तव्य है।

इन्द्र ०:

बेशक, और भूल को अगर तुम सुधारना ही चाहते हो तो सिर्फ यही कर सकते हो कि ऐसी भूल पुनः न करो.

बस यही तुम्हारे लिये सबसे बड़ा प्रायश्चित होगा.

भूतनाथ ने बहुत कुछ कहा मगर इन्द्रदेव ने एक न मानी.

आखिर लाचार भूतनाथ ने उसका जिक्र छोड़ दिया.

दोनों में थोड़ी देर तक कुछ बातें होती रहीं जिसके बाद भूतनाथ उठ खड़ा हुआ.

इन्द्रदेव भी उठ खड़े हुए और उसे दरवाजे तक पहुँचा गये.

उसे विदा करते हुए भी उनके शब्द ये ही थे, " खबरदार भूतनाथ, मेरी कसम का खयाल रखना! " भूतनाथ ने कुछ जबाब न दिया क्योंकि उसका गला भरा हुआ और आँखें डबडबाई हुई थीं.

जिस समय वह लम्बे - लम्बे डग मारता हुआ पहाड़ी के नीचे उतर रहा था उसके कपड़े आँखों से गिरे आँसुओं की बदौलत तर हो रहे थे.

चौथा व्यान।

तिलिस्मी शैतान जिस समय प्रभाकरसिंह और मालती को लेकर चला गया तो वहाँ सन्नाटा हो गया.

सिर्फ सरयू बेहोश और बदहवास अकेली उसी जगह पड़ी रह गई.

शैतान को गये देर हो गई और उसके लौट आने का डर कम हो गया तो धीरे - धीरे हेलासिंह उन पेड़ों की झुरमुट के बाहर निकला जिसके अन्दर वह प्रभाकरसिंह की तलवार के डर से भागकर जान बचाने के लिये छिप गया था.

डरता और उस भयानक शैतान के डर से अभी तक क़ांपता हुआ धीरे - धीरे चारों तरफ देखता - भालता उस दालान की तरफ बढ़ा जिधर सयुं पड़ी हुई थी.

वहाँ पहुँच कर उसने निश्चय कर लिया कि सरयू अभी तक बेहोश है और किसी गैर की निगाहें उस पर पड़ नहीं रही हैं तो उसका डर कुछ दूर हुआ और उसने जेब से एक सीटी निकाल किसी खास इशारे के साथ मगर बहुत धीरे - धीरे बजानी शुरू की.

इस सीटी की आवाज सुनते ही मुन्दर भी, जो कहीं छिपी हुई थी, आड़ से निकलकर वहाँ आ पहुंची और थोड़ी ही देर बाद हेलासिंह का वह आदमी भी आ गया जो प्रभाकरसिंह को जाते देख डरकर भाग गया था.

ये तीनों बेईमान सरयू के चारों तरफ खड़े हो गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये.

ज्यादा देर करने का मौका न था और उस तिलिस्मी शैतान का भी डर मौजूद था अस्तु यही निश्चय कियागया कि सरयू की गठरी बांध कर यहाँ से ले चला जाय और लोहगड़ी में पहुँचकर तब आगे की कार्रवाई स्थिर की जाय.

चूंकि प्रभाकरसिंह को इन लोगों के सामने ही तिलिस्मी शैतान उठा ले गया था अस्तु उनका डर दूर हो चुका था और किसी अन्य दुश्मन का खयाल न था अस्तु इन लोगों ने सयुं को उठा लिया और बेफिक्री के साथ उसी सुरंग की राह लोहगढ़ी की तरफ लौटे.

लगभग आधी सुरंग ये तय कर चुके होंगे कि सामने से किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी.

डर के मारे इन लोगों का कलेजा बाँसों उछलने लगा और सब के सब वहीं ठिठक गये क्योंकि तिलिस्मी शैतान का डर इनकी नस - नस में समा गया था, मगर थोड़ी ही देर बाद जब सिर्फ एक नकाबपोश को सामने की तरफ से आते देखा तो डर कुछ क़म हुआ.

मुन्दर और उस आदमी को सरयू के साथ वहीं छोड़ हिम्मत के साथ तलवार हाथ में लिये हेलासिंह आगे बढ़ गया और उसने नकाबपोश के पास पहुँचकर, जो खुद भी इन लोगों को अपने सामने पा ठिठक गया था, डपटकर कहा, " तुम कौन हो और यहाँ किसलिये आये हो?

हेलासिंह की बात सुनते ही वह नकाबपोश बोला, " क्या मैं अपने दोस्त हेलासिंह की आवाज सुन रहा हूँ?

" और तब उसने अपने चेहरे पर से नकाब उलट दी.

नकाब हटते ही जमानिया के दारोगा साहब सामने खड़े दिखाई पड़े.

हेलासिंह ने उन्हें देख कर कुछ सकुचाकर कहा, “ वाह वाह, दारोगा साहब हैं! आप यहाँ कैसे आ गये! " दारोगा:

मैं एक बहुत बड़े तरदुद में पड़कर यहाँ आया हूँ पर उसका हाल कहने के पहिले यह जानना चाहता हूँ कि आपको यहाँ क्यों देख रहा हूँ और वे दोनों कौन हैं जिन्हें उस जगह छोड़ आप आगे बड़ आये हैं!

हेला ०:

वे दोनों मेरे नौकर हैं, मैं यहाँ एक बहुत जरूरी काम से आया था और उसे पूरा कर अब वापस आ रहा हूँ, दारोगा:

एक गठरी भी मैं आपके आदमी के सर पर देख रहा हूँ और अगर मेरी आँखें धोखा नहीं दे रही हैं तो उसमें जरूर कोई आदमी बँधा हुआ है.

क्या मैं जान सकता हूँ कि वह कौन है?

यह सवाल सुन हेलासिंह कुछ तरदुद में पड़ गया.

वह इस बात को जाहिर नहीं करना चाहता था कि उसमें सरयू है मगर इसे छिपाते भी डरता था क्योंकि अगर दारोगा साहब देखना चाहते हों तो वह किसी तरह उन्हें रोक न सकता था.

दारोगा साहब से अपना बहुत बड़ा काम निकलने की उसे उम्मीद थी इसलिए वह उन्हें किसी तरह भी नाराज नहीं करना चाहता था, आखिर उसने कहा, " गठरी में सरयू बन्द है.

" सयूं का नाम सुनते ही दारोगा चौंक पड़ा और बोला, "हैः सर्यु! वह यहाँ कैसे आ गई?

" हेला ० कैसे आई यह तो मैं नहीं कह सकता मगर उसके साथ प्रभाकरसिंह भी थे, वे जब एक शैतान से लड़कर गिरफ्तार हो गये तो मैं यह सोचकर सरयू को उठा लाया कि या तो इन्द्रदेव के हवाले कर दूंगा या आपके, यो वह इस तिलिस्म में भूख - प्यास से मर जाती.

दारोगा:

प्रभाकरसिंह इसके साथ थे और वे किसी शैतान से लड़कर गिरफ्तार हो गये! मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो! मगर खैर जो कुछ भी हो मेरे दोस्त, तुमने यह बहुत अच्छा कियाकि इसे यहाँ ले आये.

इसके अपने कब्जे से निकल जाने से मैं बड़ी सख्त परेशानी की हालत में घर के बाहर निकला था.

इसे मेरे हवाले करो ताकि मैं इसे ऐसे ठिकाने भेज दूं कि इसकी महक का भी किसी को पता न लगे और इसकी बदौलत मुझ पर और तुम पर जो आफत आने वाली है वह दूर हो.

हेला ०:

(ताज्जुब से) क्या इसके छूट जाने से हम लोगों पर कुछ आफत आ सकती है?

दारोगा:

ओफ, कुछ आफत! अजी इतनी बड़ी कि हम दोनों का दुनिया में किसी को मुँह दिखाना मुश्किल हो जायेगा!

क्या तुमको नहीं मालूम कि यह कम्बख्त न सिर्फ उस कलमदान को खोलकर उसके अन्दर वाले सब कागजात पड़ चुकी है जिसमें हमारी सभा का गुप्त भेद लिखा है बल्कि इसे वह समूचा हाल भी मालूम है जो तुम्हारी लड़की मुन्दर की शादी के बारे में .

.

.

हेला :

(घबड़ाकर) क्या वे सब बातें भी इसे मालूम हैं?

दारोगा:

पूरी तरह से, इसीलिये तो मुझे इसको गिरफ्तार करना पड़ा था, खैर अब आइये देरी न कीजिए, भूतनाथ भी इस कम्बख्त की फिराक में घूम रहा है और किसी तरह उसे इसकी सुनगुन लग गई तो फिर और भी आफत आ जायेगी.

हेलासिंह कुछ देर के लिये चुप हो गया और इसी बीच में तेजी के साथ न जाने क्या - क्या सोच गया.

इसके बाद उसने कहा, " आप खुशी से सरयू को ले जा सकते हैं, यह आपकी चीज है, मगर इस बार इसे ऐसी तरह से रखियेगा कि फिर आपके फंदे से छूटने न पावे नहीं तो मुश्किल हो जायेगी और आपके साथ ही साथ मैं भी आफत में पड़ जाऊँगा! " दारोगा:

आप निश्चिंत रहिये, इस दफा मैं इसे ऐसा बन्द करूंगा कि यमराज भी इसे न पा सकेंगे.

हेलासिंह यह सुन पीछे लौट गया और मुन्दर से संक्षेप में सब हाल और वहीं रुकी रहने की आज्ञा दे अपने उस आदमी को लिये दारोगा के पास वापस गया जिसके सर पर सरयू की गठरी थी.

दारोगा ने कपड़ा हटा सरयू ' की शक्ल खूब गौर से देखी और तब कहा, " कृपा कर इतनी तकलीफ और करें कि अपने आदमी को हुक्म दें कि इसे बाहर तक पहुँचा दे, वहाँ मेरा रथ खड़ा है जिस पर रख मैं इसे आसानी से निकाल ले जाऊँगा, जख्मी होने के कारण इसे खुद उठाने में मैं असमर्थ हूँ.

" हाँ हाँ, यह तो जरूरी बात है.

" कहकर हेलासिंह ने अपने आदमी को हुक्म दिया कि दारोगा साहब के साथ जाकर सरयू को उनके रथ तक पहुँचा आवे.

दोनों में कुछ बातें और हुई और तब हेलासिंह को वहीं छोड़ दारोगा सरयू की गठरी हेलासिंह के आदमी के सर पर उठाये लोहगड़ी के बाहर निकल गया.

टीले के नीचे दो घोड़ों का एक हलका रथ खड़ा था जिसकी निगहबानी करने वाला कोई दिखाई नहीं पड़ता था.

सरयू की गठरी उसी रथ पर रख दी गई, खुद दारोगा साहब ने रास सम्हाली और उस आदमी को इनाम के तौर पर कुछ दे रथ का पर्दा गिरा कर उसे तेजी के साथ हाँक दिया, जब रथ लोहगढ़ी से दूर निकल कर एक निराले ठिकाने पर पहुंचा तो चारों तरफ गौर से देखभाल कर यह निश्चय कर लेने के बाद कि कोई छिपी निगाहें उनका काम देख नहीं रहीं है, दारोगा साहब ने रथ को रोक लिया और पर्दे के अन्दर जा कमर से लखलखा निकाल बेहोश सरयू ' को सुंघाने लगे.

थोड़ी ही कोशिश में सरयू की बेहोशी दूर हो गई और वह दो - तीन छींके मार कर उठ बैठी.

अपने को एक रथ पर बैठे और सामने एक नकाबपोश को देख उसने ताज्जुब से कहा, " तुम कौन हो और मुझे कहाँ ले जा रहे हो?

" नक़ाबपोश ने नकाब उलट दी और यकायक दारोगा को सामने पा सरयू के मुँह से डर की एक चीख निकल गई, मगर दारोगा ने उसे दिलासा देकर कहा, " डरो नहीं, मैं जमानिया का वह दारोगा नहीं हूँ जिसने तुम्हें कैद कियाथा बल्कि दूसरा ही हूँ और मेरी यह सूरत बनावटी है.

मैं इस समय तुम्हें दुश्मनों के फंदे से छुड़ा कर ले जा रहा हूँ ।

सर्यु का डर कुछ कम हुआ मगर फिर भी उसे पूरा भरोसा न हुआ और उसने संदेह के साथ कहा, “ मगर मैं कैसे जानूं कि जो कुछ तुम कह रहे हो वह ठीक है?

" यह सुन नकाबपोश ने कहा, “ अफसोस है कि मुझे अभी कुछ देर तक इसी सूरत में रहना जरूरी है नहीं तो अपना चेहरा साफ कर दिखा देता, फिर अपना परिचय देने के लिए मैं एक शब्द कहता हूँ जिससे तुम जरूर मुझे पहिचान जाओगी.

" इतना कह झुककर उसने सरयू के कान में कुछ कहा जिसे सुनते ही वह चौंक पड़ी और ताज्जुब के साथ नकाबपोश की सूरत देखने लगी.

नकली दारोगा ने कहा, " अगर अब भी तुम्हें विश्वास न हुआ हो तो कोई दूसरा परिचय दूँ! " सयूँ:

नहीं - नहीं, और किसी परिचय की आवश्यकता नहीं, मगर मैं बड़े ताज्जुब में हूँ कि इतने दिनों तक आप कहाँ थे और क्या करते रहे तथा इस समय यकायक कैसे यहाँ आ पहुँचे?

नकली दारोगा:

समय मुझे खींच लाया इसके सिवाय और क्या कह सकता हूँ, जब निश्चिंती के साथ अपना पूरा हाल तुम्हें सुनाऊँगा तो तुम्हें मालूम हो जायेगा कि मुझको यहाँ आने की क्या जरूरत पड़ी.

इस समय जहाँ तक जल्दी हो सके मैं तुम्हें किसी निरापद स्थान में पहुंचा दिया चाहता हूँ क्योंकि समय बहुत थोड़ा है और दुश्मन का डर सब तरफ है.

इतना कह नकली दारोगा ने रथ के पर्दे पुनः गिरा दिये और तेजी के साथ रथ को हाँक दिया.

थोड़ी ही देर बाद रथ अजायबघर की इमारत के पास जा पहुँचा.

सीढ़ियों के पास लाकर दारोगा साहब ने रथ खड़ा कियाऔर सरयूसे उतरने को कहा.

इसके बाद वे खुद उतर पड़े और दोनों आदमी तेजी के साथ सीढ़ियाँ चड़ अन्दर इमारत में चले गये, इन दोनों के जाने के थोड़ी ही देर बाद एक नकाबपोश घोड़े पर चढ़ा हुआ उस जगह आ पहुँचा.

अजायबघर के सामने एक रथ खड़ा देख उसे कुछ ताज्जुब हुआ.

वह रथ के पास आया और झाँककर देखने लगा मगर रथ पर न तो कोई बैठा ही था और न कोई सामान ही उस पर था.

नकाबपोश कुछ देर तक उसी जगह खड़ा रहा, इसके बाद घूमकर दूसरी तरफ गया जहाँ उसका एक और साथी उसी तरह की पोशाक पहिने और नकाब से सूरत छिपाये घोड़े पर चढ़ा मौजूद था.

इसने उससे कुछ बातें कीं और तब अपने घोड़े की लगाम उसके हाथ में दे घोड़े से उतर पैदल पुनः उधर को लौट गया जिधर वह रथ खड़ा था.

एक गौर की निगाह उसने चारों तरफ डाली और तब फुर्ती से सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ अजायबघर के अन्दर चला गया.

इन तीनों को अन्दर गये घंटे भर से ऊपर हो गया मगर कोई बाहर न लौटा.

अजायबघर के अंदर जाने वाले नकाबपोश का साथी वह दूसरा सवार खड़ा - खड़ा राह देखता हुआ घबरा गया.

उसको गुमान था कि उसका साथी कुछ ही देर में अपना काम समाप्त करके लौट आवेगा, मगर ऐसा न होते देख उसे संदेह होने लगा कि वह किसी मुसीबत में तो नहीं फंस गया.

वह थोड़ी देर तक और राह देखता रहा इसके बाद दोनों घोड़ों को पेड़ की झुरमुट में ले जाकर उनकी लगामें एक पेड़ की डाल के साथ अटका दीं और तब चारों तरफ की आहट लेता हुआ धीरे - धीरे अजायबघर की तरफ बड़ा, अभी वह फाटक से कुछ दूर ही होगा कि यकायक उसके कानों में किसी के चीखने की आवाज आई.

यह आवाज इमारत के अंदर से आती मालूम होती थी और कमजोर और पतली होने के कारण गुमान होता था कि किसी औरत की है.

आवाज सुन यह नकाबपोश उसी जगह ठिठक गया पर फिर कोई आह्ट न हुई, तब वह पुनः आगे बड़ा मगर पेड़ों की आड़ लेता हुआ और बहुत ही होशियारी के साथ.

अभी वह इमारत के फाटक के पास नहीं पहुंचा था कि पुनः वैसी ही चीख की आवाज आई मगर इस बार की आबाज कहीं नजदीक ही से आई हुई मालूम होती थी तथा उसके साथ साथ किसी मर्द के भी बोलने की आवाज मिली हुई थी.

इस आदमी का ताज्जुब और बड़ गया और आखिर वह अपने को रोक न सका.

अजायबघर के पास पहुँच सीढ़ियाँ चढ़ यह ऊपर पहुंचा और तब बगल की कोठरी से होता हुआ उस दालान में गया जो नहर के ऊपर बना हुआ था, मगर इसके आगे न जा सका क्योंकि दालान की दूसरी तरफ वाली कोठरी का दरवाजा बन्द था.

वह रुक गया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये.

यकायक पुनः वैसी ही चीख की आवाज आई.

गौर करने से मालूम हुआ कि यह किसी कोठरी में से नहीं आ रही है बल्कि इमारत के भीतरी हिस्से में से कहीं से आ रही है.

चीख के साथ किसी मर्द की आवाज भी थी जो कह रहा था, “ अब भी अगर अपनी जान की खैर चाहती हो तो सब हाल ठीक - ठीक कह दे नहीं तो याद रख मैं तेरी बोटी - बोटी काट कर फेंक दूंगा! " इसके जवाब में औरत की हलकी आवाज आई, " हाय क्या बेमौत मारी जा रही हूँ! मैं जानती ही क्या हूँ जो तुम मेरी जान ले रहा है! " इस पर मर्द बोला, " मैं तुझ शैतान की बच्ची को बखूबी जानता हूँ, तू इस तरह नहीं मानेगी और न सीधे पूरा हाल ही बतावेगी! अच्छा ले.

" उस आदमी ने न - जाने क्या किया कि उस औरत ने दिल को दहला देने वाली एक चीख मारी, मगर यकायक उसी समय एक दूसरे आदमी की आवाज सुनाई पड़ी जो कह रहा था, " ठहर तो जा ऐ कम्बक्त, क्या गरीब औरत की जान लेकर ही बहादुर बनना चाहता है! आ पहिले मुझसे तो नीपट ले.

"

इसके जवाब में उस पहिले मर्द ने कहा, " हॉ - हाँ, मैं तुझ कम्बख्त से भी समझने को तैयार हूँ! तू ही तो सब आफतो की जड़ है! " इसके साथ ही तलवारों की झनझनाहटसुनाई पड़ी और आहट से मालूम हुआ कि भीतर गहरी लड़ाई हो रही है.

यह दूसरा नकाबपोश बाहर के दालान में खड़ा बेचैनी के साथ सब कुछ सुन रहा था मगर न तो वह कुछ कर ही सकता था और न बहुत गौर करने पर भी यही जान सकता था कि इन दोनों आदमियों में से कोई इसका वह साथी भी है या नहीं.

वह लाचारी के साथ उसी दालान में टहलने और आनेवाली आवाजों और आहटों पर गौर करने लगा तथा साथ ही साथ यह जानने के लिये एक निगाह बाहर की तरफ भी रखे रहा कि कोई गैर आदमी तो इधर नहीं आ रहा है.

लगभग पंद्रह मिनट तक तलवारों की झनझनाहट की आवाज आती रही और तब एक धम्माका सुनाई पड़ा जिसके बाद सन्नाटा हो गया.

कुछ देर तक कोई आवाज न आई, इसके बाद ऐसा मालूम हुआ मानों कोई दरवाजा बड़े आहिस्ते से खोला गया है और कोई आदमी कहीं चल - फिर रहा है जिसके कुछ बोलने की आवाज भी कभी - कभी आ जाती थी.

थोड़ी देर बाद पुनः उस दरवाजे के बन्द होने की आहट आई और तब सन्नाटा हो गया.

वह नकाबपोश देर तक खड़ा रहा मगर फिर किसी तरह की आवाज न आई.

लाचार बह वहाँ से हटा और बाहर की तरफ लौटने के खयाल से पलटा, मगर उसी समय बगलवाली कोठरी के अन्दर से जिसका दरवाजा उसने पहिले बन्द पाया था, कुछ आवाज आई.

इसका विचार हुआ कि रुककर सुने मगर आहट से मालूम हुआ कि कोई दरवाजा खोलने की कोशिश कर रहा है.

यह दरवाजा खोलने वाला न - जाने कौन है, उसका दोस्त है या दुश्मन, और अकेला है या कई आदमी हैं, यह सब सोच उसने वहाँ रुकना मुनासिब न समझा और तेजी के साथ उस कोठरी की तरफ बढ़ा जिसमें से होकर सदर फाटक में आने का रास्ता था

मगर इसी बीच में वह दरवाजा खुल गया और उसमें से खून से लथपथ तथा एक टूटी हुई तलवार हाथ में लिये कोई आदमी बाहर निकला.

दरवाजे की आड़ में से इस दूसरे नकाबपोश ने जरा - सा घूमकर देखा तो अपने पहिले साथी को ही इस हालत में निकलते पा उसके ताज्जुब का ठिकाना न रहा.

वह पलट पड़ा और उसके पास जाकर बोला, " हैं, यह आपकी क्या हालत हो गई?

क्या वह लडाई आपही से हो रही थी जिसकी आहट मैं यहाँ खड़ा - खड़ा सुन रहा था?

" जवाब में उस नकाबपोश ने कहा, " इस जगह रुकने या बात करने का बिल्कुल मौका नहीं है.

मैं बहुत जख्मी हो गया हूँ और साथ ही बहुत खतरे में हूँ, मुझे सहारा दो और फुर्ती से इस जगह के बाहर निकल चलो नहीं तो दोनों की जान जायेगी.

" यह सुन इसने फिर और कुछ न पूछा और सहारा देता हुआ उसे अजायबघर के बाहर निकाल ले गया.

इन दोनों को उम्मीद थी कि फाटक पर वह रथ खड़ा पाएँगे पर ऐसा न था, वह रथ गायब हो गया था.

न - जाने कब कौन उसे लेकर चल दिया था.

ताज्जुब करते हुए दोनों सीढ़ियाँ उतरे और उस तरफ चले जिधर इनके घोड़े बंधे थे.

दूसरे नकाबपोश ने कहा, " आप घोड़े पर सवार हो सकेंगे?

" जबाब में इसने कहा, “ हाँ, अगर सहारा देकर चड़ा दोगे तो गिरूँगा नहीं.

दोनों अपने - अपने घोड़ों पर सवार हो गये और तेजी के साथ जमानिया की तरफ बढ़े,

पांचवा व्यान।

दोपहर का समय है, चारों ओर टनटनाती हुई धूप पड़ रही है, पर उस छोटे - से बागीचे में उसकी तकलीफ कुछ भी मालूम नहीं होती जिसमें हम अपने पाठकों को ले चलते हैं, एक आम के पेड़ के नीचे प्रभाकरसिंह बैठे हुए हैं उनकी सूरत से परेशानी और बदहवासी टपक रही है और आकृति से मालूम होता है मानों वे बहुत थके हुए हैं या कहीं बहुत दूर का सफर करते हुए आ रहे हैं, रह - रह कर वे ठंडी साँसे लेते हुए अपने चारों तरफ देखते हैं और तब दुपट्टे से हवा करके उस पसीने को दूर करना चाहते हैं जो उनके चेहरे पर आया हुआ हैं क्योंकि इस समय हवा एक - दम बन्द है.

आखिर कुछ देर बाद उनकी थकावट कम हुई और वे मन ही मन बोले.

" ओफ, कैसी मुसीबत में फंस गया था.

जरा - सी भूल भी तिलिस्म में कैसा गजब ढा देती है घंटों बदहवास रहा, कोंसो की धूल छाननी पड़ी, और मालती से भी हाथ धोया.

न - मालूम वह बेचारी इस समय कहाँ है या क्या कर रही है?

इसमें शक़ नहीं कि इस तरह यकायक मेरे गायब हो जाने से वह बेतरह घबड़ाई होगी और परेशानी में पड़ के न - जाने क्या कर बैठे.

कहीं मेरी तरह वह भी कोई गलती कर गई तो बुरी मुसीबत में पड़ेगी.

जैसे हो तुरन्त उसके पास पहुँचना चाहिए, बारे तिलिस्मी किताब मेरे पास मौजूद है नहीं तो और भी आफत आती.

अब देखना चाहिये यह कौन - सी जगह है और यहाँ से निकलने की क्या तदबीर हो सकती है ।

!! प्रभाकरसिंह ने अपने कपड़े टटोल कर तिलिस्मी किताब निकाली और उसे खोल कर एक जगह पढ़ने लगे.

बारीक अक्षरों में यह लिखा हुआ था " जब इस बात को तीन पहर बीत जायें तो तुम पुनः उस कोठरी में जाओ, मगर खबरदार, तीन पहर के पहिले कदापि उधर जाने का नाम भी न लेना नहीं तो बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ोगे .

.

.

.

" यह पड़ मन ही मन प्रभाकरसिंह बोले, “ सो तो देख लिया, अब यह देखना चाहिए कि उस मुसीबत से छूटने का भी कोई उपाय है या नहीं?

" वे आगे पढ़ने लगे यह लिखा था " तीन पहर के बाद जब उस कोठरी मे जाओगे तो देखोगे कि कोठरी में धूआँ बिल्कुल नहीं है और वह शेर की मूरत जमीन पर गिरी हुई है, शेर के चारों तरफ एक तरह की बारीक - बारीक काली धूल पड़ी होगी, उसे उठा लेना और रख छोड़ना, आगे उसकी जरूरत पड़ेगी.

धूल हटने पर जमीन पर चारों तरफ बारीक - बारीक लकीरें बनी हुई दिखाई देंगी.

उन लकीरों से जहाँ एक अष्ठकोंण यंत्र बना हुआ देखो, उस जगह को अपने अंगूठे से जोर से दबाना.

एक छोटा - सा गड्ढा बन जायेगा.

उसमें तिलिस्मी हथियार की नोक डालते ही आगे जाने के लिये रास्ता निकल आवेगा.

यह रास्ता तुम्हें एक बगीचे में पहुँचावेगा जहाँ से उस रत्न - मण्डप में जाने का रास्ता मिलेगा जिसका हाल पहिले लिख चुके हैं, वहाँ ही कहीं तुम्हें वह मूर्ति मिलेगी.

जिस तरह से हो उसे खोजना और मिल जाने पर वही काली धूल जो पहिली कोठरी में मिली है पानी में सात कर उस पर लेप कर देना.

दो घण्टे बाद एक आवाज होगी मूर्ति गायब हो जायगी और उसकी जगह एक रास्ता दिखाई पड़ेगा जो तुम्हें घूमने वाली बारहदरी में पहुँचायेगा.

प्रभाकरसिंह ने किताब पड़ना बन्द कर के व्यग्रता के साथ कहा, " यह सब तो ठीक है मगर इस समय जहाँ मैं हूँ वहाँ का तो कुछ हाल इस में नहीं है, जाने किस जगह आ गया हूँ कि यहाँ से बाहर निकलने की कोई तर्कीब ही नहीं दिखाई देती.

जब तक यहाँ से न निकलूंगा आगे की कार्रवाई कैसे करूँगा?

खैर एक दफे घूम - फिर कर देखू शायद कोई रास्ता बाहर जाने का दिख जाय.

" प्रभाकरसिंह ने किताब बन्द कर जेब में रख़ा और उठकर बागीचे में चारों तरफ चक्कर लगाने लगे.

इमारत के किस्म की उस बाग में कोई चीज न थी। .

केवल घने और ऊँचे - ऊँचे पेड़ों से वह छोटा बाग भरा हुआ था चारों तरफ ऊंची - ऊँची चारदीवारी थी, प्रभाकरसिंह उसी चारदीवारी के साथ - साथ घूमने लगे छोटे से बाग का चक्कर लगाने में देर ही कितनी लगती थी?

देखते - देखते चारों तरफ घूम - फिर कर जहाँ के तहाँ पहुँच गये और काम कुछ भी न निकला.

न तो कहीं कोई खिड़की, दरवाजा या रास्ता बाग के बाहर होने का दिखाई पड़ा और न कहीं कोई ऐसी जगह ही दिखाई दी जहाँ किसी तरह पर यह शक कियाजा सकता कि यहाँ पर कोई गुप्त दरवाजा या राह होगी.

बेचैनी के साथ फिर एक जगह खड़े हो गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए.

आखिर अपने सामने एक ऊँचे इमली के पेड़ को देख कर उन्हें खयाल हुआ कि इसके ऊपर चढ़ कर देखना चाहिए, शायद कहीं कुछ दिखाई पड़ जाय, बिना कुछ विलम्ब क़िये वे उस दरख्त के पास पहुंचे और उस पर चढ़ने का उद्योग करने लगे.

जमीन से लगभग चार हाथ की ऊँचाई पर एक मोटी सूखी हुई डाली दिखाई पड़ी जो दूर तक एक तरफ को चली गई थी.

उसे दोनों हाथों से मजबूत पकड़ा और झटका देकर ऊपर चढ़ गये.

ताज्जुब की बात थी कि प्रभाकरसिंह का बोझ उस पर पड़ते ही वह डाल इस तरह नीचे को झुकने लगी मानो वह कोई लचीली टहनी हो.

देखते - देखते उसका अगला सिरा जमीन के साथ आकर सट गया.

उसी समय एक तरह की आवाज हुई और साथ ही पेड़ की जड़ के पास एक ऐसा रास्ता दिखाई पड़ने लगा जिसके अन्दर आदमी बखूबी जा सकता था.

प्रभाकरसिंह यह देखते ही प्रसन्न होकर बोल उठे, " बारे कोई रास्ता दिखाई तो पड़ा! मुमकिन है कि इस बाग के बाहर होने की यह राह हो! " वे खुशी - खुशी उस डाल पर से कूद पड़े और उस दरवाजे की तरफ बड़े मगर उनकी खुशी थोड़ी देर की ही थी। .

प्रभाकरसिंह का बोझ हटते ही वह डाल फिर धीरे - धीरे ऊपर की ओर उठने लगी.

यहाँ तक कि जैसे ही प्रभाकरसिंह उस दरवाजे के पास तक पहुँचे वैसे ही वह अपने ठिकाने पहुंच गई और उसी समय एक आवाज के साथ वह रास्ता भी गायब हो गया.

पुनः पहिले की तरह उस पेड़ के चारों तरफ की जमीन बराबर नजर आने लगी.

प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब में आकर कहा, “ मालूम होता है यह डाल जब तक झुकी रहेगी तभी तक यह दरवाजा भी खुला रहेगा, अच्छा फिर से तो देखें, " पहिले की तरह उन्होंने फिर उस डाल को पकड़ा, मगर इस बार चढ़े नहीं सिर्फ अपना पूरा बोझ उस पर डाल कर लटक गये.

डाल फिर नीचे को झुक गई और साथ ही पेड़ की जड़ में फिर पहिले की तरह वही दरवाजा दिखाई देने लगा.

मगर पहिले ही की तरह इस बार भी जैसे ही डाल छोड़ प्रभाकरसिंह जमीन पर आए वैसे ही डाल ऊँची होने लगी और जब तक उस दरवाजे के पास पहुंचे तब तक दरवाजा भी पुनः गायब हो गया.

" जब तक डाल झुकी न रहेगी कोई काम न होगा " कह कर प्रभाकरसिंह वहाँ से हटे और इधर - उधर घूम कर थोड़ी ही देर में कई छोटे बड़े पत्थरों के ठोंके उठा लाये जिनकी वहाँ कमी न थी.

एक तरह की जंगली लता से जो वहीं पेड़ों पर चढ़ी उन्हें मिल गई उन्होंने इन पत्थरों को एक में बांधा और तब डाल पर अपना बोझा डाल उसे नीचे किया, इस डाल के साथ उन्होंने उन पत्थरों को बाँधा और तब उसे छोड़ अलग हो गए डाल ऊपर तो उठी मगर थोड़ी ही उठ कर रह गई क्योंकि उन पत्थरों ने उसे उठने न दिया.

वह दरवाजा भी खुला रह गया, अब प्रसन्नचित्त प्रभाकरसिंह उस दरवाजे के पास पहुंचे और उसमे झाँक कर देखने लगे.

पाँच - छ:

डण्डा सीढ़ियाँ नीचे को गई दिखाई दीं जिनके अंत में पत्थर का पक्का फर्श दिखाई पड़ रहा था.

भीतर बहुत अंधकार भी न था और थोड़ी - थोडी हवा भी आ रही थी जिससे विश्वास होता था कि जरूर यहाँ से किसी तरह निकल जाने का रास्ता है आखिर कुछ सोच - विचार के बाद प्रभाकरसिंह ने इसमें उतरने का निश्चय किया, अपना सामान टटोला, तिलिस्मी किताब सम्हाली, तिलिस्मी डण्डा हाथ में लिया, और तब सीढ़ी पर पैर रखा.

एक - एक करके वे सब सीढ़ियाँ उतर गए.

उन्हें डर था शायद किसी खतरे से उनकी मुलाकात हो पर ऐसा कुछ न हुआ.

नीचे पहुँच उन्होंने एक लम्बी - चौड़ी जगह में अपने को पाया जहाँ से कई सुरंगें कई ओर को गई हुई थीं.

इन सुरंगों में किसी तरह के दरवाजे लगे हुए न थे और प्रायः सभी के दूसरों सिरों पर चाँदना दिखाई पड़ता था.

प्रभाकरसिंह एक - एक करके सब सुरंगों के सामने से घूम आये और सोच - विचार कर एक के अन्दर उन्होंने पैर रखा, बहुत जल्दी उन्होंने उसे पार कियाऔर तब एक लम्बे - चौड़े बाग में अपने को पाया जिसमें चारों तरफ तरह - तरह की इमारतें बनी हुई थीं.

मगर यहाँ पहुँचते ही उनके मुँह से ताज्जुब के साथ निकल गया.

" हैं, यह तो वही जगह है जहाँ तक तिलिस्म तोड़ते हुए हम दोनों पहुंच चुके थे और जहाँ एक बहुत मामूली - सी गलती कर जाने से मुझे इतने तरदुद में पड़ना पड़ा.

" हमारे पाठक भी इस बाग को भूले न होंगे, यह वही बाग है जहाँ दारोगा और जैपाल का पीछा करती हुई कला पहुंची थी और शेरों वाले कमरे में पहुँच कर तिलिस्म में फंस गई थी अथवा जिसका हाल हम चौदहवें भाग के छठवें बयान में लिख आये है.

इस समय वह शेरों वाली बारहदरी प्रभाकरसिंह के ठीक सामने की तरफ थी तथा वह ऊँचा बुर्ज बाईं तरफ दिखाई पड़ रहा था जिसकी राह दारोगा और जैपाल इस जगह के बाहर हुए थे.

१.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, सातवाँ बयान.

इस जगह पहुँच प्रभाकरसिंह ने सन्तोष के साथ कहा, " बारे किसी तरह ठिकाने तो पहुँचे! अब देखना चाहिए मालती से मुलाकात होती है या नहीं! " वे सीधे बीच वाले बड़े कमरे की तरफ बड़े जिसे हम शेरों वाले कमरे के नाम से पुकारते आये हैं मगर अभी कमरे के पास नहीं पहुंचे थे कि बगल से आबाज आई -'ठहरिये! " प्रभाकरसिंह चौंक कर रुक गये और उधर देखते ही मालती पर निगाह पड़ी जो बदहबास और घबराई हुई आकर यह कहती हुई इनके पैरो पर गिर पड़ी, “ नाथ, आप कहाँ चले गये थे! " प्रभाकरसिंह ने मालती को उठाया और दम - दिलासा देते हुए कहा, " कहीं भी नहीं, बस एक तिलिस्मी चक्कर में पड़ गया था! कहीं तुम्हें तो कोई तकलीफ नहीं हुई?

" मालती:

शारीरिक कष्ठ तो कोई भी नहीं हुआ मगर मानसिक चिन्ता के मारे सुबह से व्याकुल घूम रही हूँ, तरह - तरह के खयाल मन में दौड़ते थे कि न - जाने आप कहाँ चले गए या किस मुसीबत में पड़ गये.

इस बाग का कोना - कोना छान डाला.

एक - एक कोठरी और एक - एक पेड़ के नीचे देख डाला.

मगर आपका पता नहीं.

आप आखिर चले कहाँ गए थे और यह आपकी हालत क्या है?

मालूम होता है मानों कोसों का चक्कर मारते हुए आ रहे है, मुँह एकदम सूख गया है.

पैरों पर गर्द पड़ी हुई है, क्या कहीं दूर से आ रहे हैं?

प्रभा ०:

बस कुछ पूछो मत कि कहाँ से आ रहा हूँ, ऐसी मुसीबत में पड़ा कि जी ही जानता है.

कुछ सुस्ता लूँ तो तुम्हें सुनाऊँ.

मालती:

बहुत अच्छी बात है, उस तरफ नहर के किनारे चलिये, हाथ - मुँह धोइये, और कुछ फल जो मैंने तोड़े हैं खाकर सुस्ताइये.

मालती प्रभाकरसिंह को लेकर नाले के किनारे आई जहाँ उन्होंने अपना हाथ मुँह धोया और कुछ जल पीकर फल खाया, इसके बाद वे अपना हाल इस तरह सुनाने लगे:

तुम्हें याद होगा कि तिलिस्मी किताब में यह लिखा हुआ था कि उत्तर की सात नम्बर वाली कोठरी में घुसो.

उसमें सिंहासन पर बैठे हुए शेर की सूरत बनी है.

कोठरी के बीचोबीच में कत्थअई रंग का जो पत्थर जड़ा है उसे उखाड़ कर जल्दी से कोठरी के बाहर ले आओ क्योंकि इस कोठरी में एक घड़ी से ज्यादा रहने वाले की जान बचना कठिन है.

" मालती ०:

ठीक है, मुझे बखूबी याद है, हम लोगों को वह पत्थर उखाड़ने में शायद देर हो गई थी क्योंकि उस बनावटी शेर ने गुर्राना शुरू किया था परन्तु उसी समय हम लोग वह पत्थर उखाड़ कर बाहर निकल आये.

इसके बाद तिलिस्मी किताब में बताई तरकीब से उस पत्थर को घिस कर आधी रात के समय उसका लेप शेर के बदन पर करके हम लोग शेरों वाले कमरे के बाहर निकल आये थे और रात एक दालान में काटी, पर वहीं नींद खुलने पर मैंने आपको गायब पाया.

प्रभाकर):

ठीक है, अब मैं तुम्हें सुनाता हूँ कि मै कहाँ गायब हो गया था.

किसी तरह की आवाज सुन मेरी नींद बहुत सुबह ही खुल गई, तुम उस समय गहरी नींद में पड़ी हुई थीं इसीलिए मैंने तुम्हें नहीं जगाया मगर उठकर गौर करने लगा कि यह आवाज किधर से आ रही है.

शेरों वाले कमरे में से उस आवाज के आने का सन्देह मुझे हुआ और मैं उसी तरफ चला.

जब मैं उसके पास पहुंचा तो देखा क्या कि बीच वाले सिंहासन के चारों तरफ वाले शेर अपनी जगह से उठ खड़े हुए हैं और गुर्राहट की आवाज करते हुए उस सिंहासन के चारों तरफ घूम रहे हैं.

यद्यपि मैं बखूबी जानता था कि ये असली नहीं हैं फिर भी उस समय की उनकी भावभंगी और चाल - डाल बिलकुल ऐसी थी कि उन्हें असली मान लेने का मन करता था.

मैं उनकी इस कार्रवाई को कौतूहल और कुछ डर के साथ देख रहा था कि यकायक उसी कोठरी के अन्दर से जिसके भीतर वाले शेरों की गुर्राहट को सुन इन बाहर वाले शेरों ने भी अजीब ढंग से गुर्राना और सिर हिलाना शुरू किया, साथ ही धीरे - धीरे वे उस कोठरी के दरवाजे की तरफ भी बढ़ने लगे, मैं इस कार्रवाई को देख इतना विस्मित हुआ कि कुछ ख्याल न रहा और कमरे के अन्दर घुस कर देखना चाहा कि अब क्या होता है.

मेरा कमरे में घुसना था कि उन शेरों ने अपना रुख पलटा और बड़े गुस्से से मेरी तरफ झपटे मैंने कमरे के बाहर निकलना चाहा मगर ऐसा मालूम होने लगा मानों मेरे पाँव जमीन ने पकड़ लिये हों, मैं नहीं कह सकता कि इसका क्या सबब था, शायद वहाँ की जमीन की यह तासीर हो कि मैं कोशिश करके भी अपने पाँव उठा न सकता था.

इसके बाद ही उन चारों शेरों ने मुझ पर हमला किया और उनके सिरों पर बैठे हुए उकाब भी पंख फड़फड़ा कर बड़े भयानक रूप से मुझ पर झपटे, इसके साथ ही मेरे पैरों में एक तरह की झुनझुनी - सी चढ़ने लगी, मैं बेहोश हो गया, और कुछ ही क्षण बाद मुझे तनोबदन की सुध न रही.

मैं नहीं कह सकता कि इसके बाद क्या हुआ अथवा किस रास्ते से वहाँ पहुँचा पर होश आने पर मैंने अपने को एक वीरान मैदान में पाया जिसके छोर का कुछ पता न लगता था.

घण्टों तक इधर से उधर खाक छानता रहा, धूप के मारे तबीयत परेशान हो गई, प्यास के सबब से गला चटकने लगा .

.

आखिर घण्टों टक्कर मारने के बाद एक छोटे बगीचे की दीवार नजर आई.

किसी तरह उसके अन्दर पहुंचा और वहीं से अब यहाँ आ रहा हूँ इतनी परेशानी और तकलीफ उठाई कि महीनों याद रहेगी.

मालती:

(अफसोस के साथ) यह तिलिस्म का मुकाम है जहाँ जरा - सी चूक बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा सकती है.

तिलिस्मी किताब में साफ लिखा था कि शेर के बदन पर लेप लगाने के बाद तीन पहर तक उस तरफ जाने का नाम भी न लेना खैर किसी तरह आप सही - सलामत पहुँच तो गए मुझे तो आपके विषय में इतनी गहरी चिन्ता हो गई थी कि जिसका नाम नहीं! अब उठिये और जहाँ तक जल्दी हो जरूरी कामों से निश्चिन्त होइए क्योंकि तिलिस्म तोड़ने के काम में शीघ्र ही लग जाना उचित है.

दो घण्टे के अन्दर ही सब कामों से फारिग होकर प्रभाकरसिंह मालती को लिए उसी शेरों वाले कमरे में जा पहुंचे, पहिले बाहर वाले दालान में खड़े होकर भीतर झांका.

देखा कि सब शेर अपनी - अपनी जगह पर ज्यों - के - त्यों बैठे हैं.

प्रभाकरसिंह ने मालती से कहा, " इस वक्त इनको देख कर यह गुमान करना भी कठिन है कि रात को ये ही ऐसे सजीव हो गये थे कि देखने में डर मालूम होता था.

" और तब कमरे के अन्दर पैर रखा.

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस बड़े कमरे के एक तरफ तो खुला दालान जिसकी राह बगीचे से इस कमरे में आने का रास्ता था और बाकी तीनों तरफ दस - दस कोठरियाँ बनी हुई थीं.

और बड़े कमरे से बाहर के दालान में जाने के लिए भी दस दरबाजे एक ही रंग - डंग के बने हुए थे.

इन दोनों के कमरे के अन्दर घुसते ही इस कमरे के दालान की तरफ पड़ने वाले दसों दरवाजे धड़ाधड़ बन्द हो गए मगर दोनों ने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया और सीधे

उत्तर तरफ की एक कोठरी के पास पहुँचे जिसके दरवाजे के ऊपर सात का अंक बना हुआ था.

यह दरवाजा इस समय बन्द था मगर हाथ से धक्का देते ही खुल गया और दोनों बेधड़क कोठरी के भीतर घुस गये, यहाँ पर हम यह भी बता देना चाहते हैं कि यह वही कोठरी थी जिसके अन्दर पहुँच कर दयाराम, जमना और सरस्वती तिलिस्म में फंस गये थे परन्तु इस समय इस कोठरी की हालत कुछ विचित्र ही हो रही थी.

जमीन पर चारों तरफ एक तरह की काली धूल फैली हुई थी और दीबारें भी इस तरह काली हो रही थीं मानों बहुत दिनों से धुआँ खा रही हो.

उस शेर की मूरत टूटी - फूटी जमीन पर पड़ी हुई थी और साथ ही छोटी हो गई सी भी जान पड़ती थी मानों उसका काफी अंश जल या झड़ गया हो, एक अजीब गन्ध उस कोठरी में फैली एक अजीब गन्ध उस कोठरी में फैली हुई थी जो कुछ - कुछ धूप या लोहबान की तरह थी.

प्रभाकरसिंह और मालती ने उस शेर की मूरत के टुकड़ों को उठा एक किनारे कर दिया और तब वहाँ जमीन पर फैली हुई वह काली धूल इकट्ठा करके एक कपड़े में बाँध ली.

इसके बाद बड़े गौर से दोनों उस अष्टकोण यन्त्र को खोजने लगे जिसके बारे में तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ था.

कोठरी की जमीन चारों तरफ पतली बारीक लकीरों से भरी हुई थी जिसके बीच में से उस अष्टकोण यन्त्र को खोज निकालना बहुत सहज काम न था विशेष कर इसलिए कि बाहर वाले कमरे के दालान की तरफ पड़ने वाले सब दरवाजे बन्द हो गए थे और वहाँ सिर्फ उन कई रोशनदानों की रोशनी रह गई थी.

जो छत के पास दीबार में बने हुए थे, फिर भी आखिर खोजते - खोजते एक कोने के पास मालती को वह अष्टकोण यन्त्र मिल ही गया और उसने प्रभाकरसिंह को दिखाया, प्रभाकरसिंह ने उसे अंगूठे से दबाया, एक छोटा - सा गड्डा वहाँ हो गया जिसमें किताब में बताई तरकीब के अनुसार प्रभाकरसिंह ने अपने तिलिस्मी डण्डे की नोक डाल दी, साथ ही एक खटके की आवाज आई और बगल की दीवार में एक रास्ता बन गया आगे

- आगे प्रभाकरसिंह और पीछे - पीछे मालती इस रास्ते पर चल पड़े जो एक लम्बी सुरंग तरह का था.

लगभग पाँच सौ कदम जाने के बाद वह सुरंग बाईं तरफ को घूमी और तब अचानक बन्द हो गई आगे जाने का रास्ता त था, सामने की तरफ भी वैसी ही चिकनी दीवार मालूम पड़ती थी जैसी दोनों तरफ अब तक मिलती आई थी, ताज्जुब करते हुए दोनों रुक गये क्योंकि तिलिस्मी किताब के कथनानुसार इस सुरंग की राह उन्हें एक बगीचे में पहुंचना चाहिए था जहाँ से वे रत्न - मण्डप तक पहुँचते.

थोड़ी देर तक दोनों गौर करते रहे इसके बाद मालती ने कहा, " मालूम होता है आगे जाने के लिए हम लोगों को अपने उद्योग से कोई रास्ता पैदा करना पड़ेगा.

" प्रभाकर):

बेशक ऐसा ही है और मैं समझता हूँ कि शायद इसीलिए यह मूरत यहाँ बनी हुई है.

दीवार के बीचोबीच एक आला था जिस पर किसी धातु की बनी हुई लगभग हाथ भर लम्बी एक स्त्री की मूरत रखी हुई थी.

मूरत का भाव यह था कि उसके कन्धे पर एक गगरी थी जिसे वह एक हाथ से पकड़े हुए थी और दूसरे हाथ से अपने पैर मैं लिपटी हुई एक लता को अलग कर रही थी.

प्रभाकरसिंह के कहने से मालती का ध्यान भी इस मूरत पर गया और दोनों ही गौर से उसे इस नीयत से देखने जाँचने और ठोकने - पीटने लगे कि शायद उसके जरिए आगे कोई रास्ता पैदा हो सके, प्रभाकरसिंह उस मूरत की जाँच देर तक करते रहे मगर दबाने - उठाने - ऐंठने - झुकाने आदि का कुछ भी असर उस पर होता हुआ न देख कुछ निराश से हो चले उस समय मालती ने कहा, " ठहरिये मुझे एक बात का ख्याल आता है, जरा मैं देखू.

!!

प्रभाकरसिंह एक बगल हो गए और मालती उस मूरत के पास गई.

उसने एक बार गौर से मुरत के पैर में लिपटी हुई लता को देखा और तब कहा, " यह औरत अपने पैरों में लिपटी यह लता दूर कर रही है और अन्दाज से मालूम होता है कि

यह लता मूरत के अंग का हिस्सा अर्थात, इसके साथ ही खोद कर नहीं बनी है बल्कि अलग से पैर में लिपटी हुई है.

देखना चाहिए कि कोशिश करने से यह पैर से अलग होती है या नहीं और अलग होती है तो इसका क्या असर पड़ता है.

मालती ने इतना कह लता का एक सिरा पकड़ कर जोर से खींचा वह पैर से अलग होने लगी, दो - तीन बार घुमाने और खींचने से वह बल खाकर पैर से अलग हो गई, इसके साथ ही खटके की आवाज हुई और एक तरफ एक दरवाजा दिखाई पड़ने लगा जिसके दूसरी तरफ चाँदना नजर आ रहा था.

खुशी - खुशी प्रभाकरसिंह और मालती ने इस दरवाजे के अन्दर पैर रखा और अपने को एक खुशनुमा बाग में पाया.

इनके सुरंग के बाहर होते ही वह दरवाजा आप से आप पुनः बन्द हो गया.

यह मुन्दर बाग एक छोटी नहर की बदौलत जो एक तरफ से आकर घूमती - फिरती दूसरी तरफ से बाहर हो गई थी खूब हरा - भरा बना हुआ था.

बाग के बीचोबीच पतली - पतली चक्रावू की तरह पेंच खाई हुई रबिशें बनी हुई थीं जिन पर काला और सुफेद पत्थर खूबसूरती के साथ जड़ा हुआ था और बीचोंबीच के फौवारे की शोभा तो खूब ही बड़ी - बड़ी थी जो इन रविशों के बीच संगमर्मर का बना हुआ था और जिसकी बारीक टोटियों से निकला हुआ पानी बहुत ऊपर जाकर इस तरह फैल जाता था कि उस पर पड़ने वाली सूर्य की किरणें उसे इन्द्रधनुष के रंग से रंग कर विचित्र शोभा पैदा कर रही थीं, इन रविशों के बाद चारों तरफ क्या था यह साफ जान नहीं पड़ता था, मगर इसके काफी पीछे हटकर तरह - तरह की इमारतों का ऊपरी हिस्सा जरूर दिखाई पड़ रहा था जिससे गुमान होता था कि इस बाग में इमारतें बहुतायत से हैं, प्रभाकरसिंह को यह जगह कुछ ऐसी भाई कि वे तिलिस्म का काम थोड़ी देर के लिए भूल गए और रविंशों पर टहलते हुए उस फौबारे के पास जा पहुँचे, मालती भी उनके पीछे वहीं पहुँची, प्रभाकर ०:

यह छोटा सा नजरबाग बहुत ही खूबसूरत मालूम पड़ता है.

मालती ०:

सफाई देखिये कैसी है, मालूम होता है कोई अभी झाड़ू देकर गया है! प्रभाकर ०:

ऐसा जान पड़ता है मानो इसमें कई माली हों जो बराबर काम किया करते हों.

यह देखो मेंहदी की टट्टी किस सफाई से काटी गई है कि हरी दीवार का धोखा होता है.

यह बिना माली के नहीं हो सकता, मेंहदी अगर अपनी हालत पर छोड़ दी जाय तो जल्द ही बेकाबू होकर खराब मालूम होने लगती है.

मालती:

मगर तिलिस्म के अन्दर आदमी कहाँ से आ सकते हैं?

प्रभाकर):

यह ताज्जुब मुझे भी है.

मगर देखो तो वह क्या चीज है! मालती ०:

कहाँ?

प्रभाकर):

वह मेंहदी की टट्टी के पास.

लतामण्डप के बगल में! अब गायब हो गई, वह देखो फिर दिखाई पड़ी! मालती :

(देख कर और डर कर) हाँ ठीक है, मैं पहिचान गई, यह उस तिलिस्मी शैतान की पीठ है.

जिस समय उस बाग में आप उससे लड़ रहे थे तो मैंने उसकी पीठ को गौर से देखा था.

तिलिस्मी शैतान के सामने का भाग तो हड्डियों के ढाँचे की तरह है पर पीठ वाला भाग दूर से देखने से ऐसा ही जान पड़ता है.

मगर मालूम होता है अभी तक उसे हम लोगों के आने की खबर नहीं लगी है! हम लोगों को कहीं छिपकर अपनी जान बचानी चाहिए, अगर वह कम्बख्त हमें देख लेगा तो फिर हमारी सब उम्मीदों का खात्मा ही समझिए.

मौका समझ प्रभाकरसिंह ने भी यही मुनासिब समझा कि अपने को तिलिस्मी शैतान की निगाहों से बचावें.

फौबारे से कुछ दूर हट कर चारों कोनों पर चार लतामण्डल बने हुए थे जिनमें से एक के पास वह तिलिस्मी शैतान भी खड़ा था.

प्रभाकरसिंह मालती के साथ दबे पाँव हट कर अपने पीछे वाले लतामण्डप की आड़ में हो गये और पत्तियों की ओट से देखने लगे कि वह शैतान क्या कर रहा है थोड़ी ही देर में मालूम हो गया कि वह इस समय माली का काम कर रहा है अर्थात, उस मेंहदी की ठट्टी को काट - छाँट कर दुरुस्त कर रहा है.

मालती ने धीरे से कहा, " मालूम होता है कि यह बाग ही इन शैतानों के रहने की जगह है और इन्हीं की बदौलत यह इतना साफ बना रहता है.

"

प्रभा ० शायद ऐसा ही हो लेकिन तब इस हालत में जहाँ तक जल्दी हो हम लोगों को उस मूर्ति का पता लगा लेना चाहिए जिसका हाल तिलिस्मी किताब में लिखा है और उस काली धूल का उस पर लेप चढ़ा रास्ता पैदा कर तुरंत इस बाग के बाहर भी हो जाना चाहिए.

मालती ०:

बेशक, मगर मुझे डर है कि यह शैतान इस काम में बाधा देगा, दूसरे इसके मौजूदगी में हम लोग किस तरह बेखबर घूम - फिर कर उस मूर्ति का पता ही लगा सकते हैं! प्रभा ०:

यही तरदुद मुझे भी है, मगर जो भी हो वह काम तो करना ही होगा, मालती ०:

मगर देखिए तो, वह उस दरवाजे से निकलकर एक दूसरा शैतान आ रहा है, और उसके पीछे - पीछे और भी दो दिखाई देते हैं! मालूम होता है जिन चार शैतानों को हम लोगों ने उस पहिले दिन एक बाग में देखा था वे यही रहते हैं.

प्रभा ०:

शायद ऐसा ही हो लेकिन अगर ऐसा है तो हम लोगों का काम बहुत ही कठिन हो जाएगा! मालती ०:

(चौंक और डरकर) लीजिए वे लोग तो इधर ही आ रहे हैं.

अब क्या होगा! प्रभाकरसिंह ने देखा कि एक - एक करके और तीन शैतान मेंहदी की दट्टी में बनी एक राह से इसी ओर आ गए और तब उस तरफ बड़े जिधर लतामण्डप के पीछे ये दोनों छिपे खड़े थे.

बात की बात में चारों उस जगह के पास पहुँच गये बल्कि उस लतामण्डप के दरवाजे पर खड़े होकर कुछ बातें करने लगे जिसकी आड़ में दोनों खड़े थे.

मालती का बदन तो इस तरह कांप रहा था मानों उसे जुड़ी आ गई और प्रभाकरसिंह भी मन ही मन सोच रहे थे कि एक शैतान से लड़ कर मैं जक उठा चुका हूँ, अब इन चार से किसी तरह जान बचाना सम्भव नहीं, परन्तु फिर भी हिम्मत के साथ उन्होंने अपने होश - हवास पर काबू कियाऔर गौर से उन चारों की बातें सुनने लगे.

एक शैतान:

क्या तुम्हें ठीक खबर लगी है कि तिलिस्म तोड़ने वाला यहाँ आ पहुँचा है?

दूसरा ०:

हाँ, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है.

तीसरा ०:

तब हम लोगों को क्या करना चाहिए?

चौथा ०:

करना क्या चाहिए, जैसे हो उसका पता लगाना और गिरफ्तार कर लेना चाहिए.

अगर ऐसा न कियाजायगा तो वह जरूर इस तिलिस्म को तोड़ डालेगा और हम लोग बेमौत मारे जायेंगे, तीसरा ०:

उसको पकड़ने की क्या तर्कीब हो सकती है?

इतने बड़े तिलिस्म में उसका पता लगेगा ही क्योंकर?

दूसरा ०:

उसे यहाँ आये ज्यादे देर नहीं हुई है, अभी तक इस बाग के बाहर न हुआ होगा.

हम लोगों को सबसे पहिले यहाँ से बाहर होने के कुल दरवाजे बन्द कर देने चाहिये और तब उसकी खोज शुरू करनी चाहिये.

पहिला ०:

मगर इसके पहिले क्या यह मुनासिब न होगा कि उस मूरत को कहीं छिपा दें जिसके जरिये वह आगे जा सकता है?

सब ०:

हाँ हाँ, यह तो बहुत ठीक है, ऐसा ही करना चाहिये !! तुरन्त ही वे चारों शैतान पूरब की ओर बड़े उनके हटते ही प्रभाकरसिंह भी जो बड़े गौर से उनकी बातें सुन रहे थे अपनी जगह से हटे और लतामण्डप के बाहर की तरफ चले, मालती ने यह देखते ही रोका और पूछा.

“ आप चले कहाँ?

" प्रभाकर ०:

इन शैतानों का पीछा करके इस बात का पता लगाने कि वह मूरत कहाँ है और ये कम्बख्त उसे किस तरह या कहाँ छिपाते हैं.

मालती :

(डर कर) नहीं नहीं, आप उन कम्बख्तों के पीछे न जायें, कौन ठिकाना वे सब देख लें तो फिर लेने के देने पड़ जायेंगे! प्रभा ०:

नहीं नहीं, अगर इस तरह डरा करेगें तो हम लोग कोई काम नहीं कर सकेंगे.

आखिर उस मूरत का पता लगाना भी तो जरूरी है.

तुम घबराओ नहीं, मैं बड़ी होशियारी से उनका पीछा करूँगा, तुम चुपचाप इसी जगह रहो, मैं बहुत जल्द वापस आता हूँ, कहते हुए प्रभाकरसिंह आगे बड़े और दबे कद्म उन चारों शैतानों के पीछे हो लिये जो आपस में कुछ बातें करते हुए दूर निकल गये थे.

मेंहदी की टट्टी को पार कर वे चारों शैतान बाई तरफ घूमे जिधर बहुत - से फलों के पेड़ों ने एक छोटा जंगल - सा बनाया हुआ था जो कितनी दूर तक फैला है इसका पता नहीं लगता था.

इस जंगल में चारों तरफ बीसों ही पगडंडियाँ निकल गई थीं जिन्होंने आपस में एक - दूसरे को काटते हुए एक तरह का चक्रावू - सा बना रखा था, चारों शैतान इन्हीं में से एक पर जाने लगे.

यद्यपि प्रभाकरसिंह को इस बात का डर था कि अगर उन पर किसी की निगाह पड़ जायगी तो मुश्किल होगी और इसी डर से जहाँ तक होता था वे अपने को पेड़ों और झाड़ियों की आड़ में बचाते और छिपाते हुए जा रहे थे पर उन शैतानों को इनके होने का कुछ भी गुमान न था और वे बड़ी बेफिक्री के साथ आपस में बातें करते हुए चले जा रहे थे, लगभग एक घड़ी तक प्रभाकरसिंह उन शैतानों का पीछा करते चले गये, इस बीच में उन्होंने इतनी पगडंडियाँ पार की और इतने मोड़ घूमे कि अगर ठीक - ठीक पूछा जाय तो वे इतना भी नहीं बता सकते थे कि जिस जगह से वे रवाना हुए थे वह अब उनके किस तरफ है.

उन्हें खुद भी इस बात पर सन्देह होने लगा कि अब वे लौट कर मालती के पास पहुँच सकेंगे या नहीं, वे यह सब सोच ही रहे थे कि इसी समय उन्हें एक बरगद के बहुत ही पुराने पेड़ की दूर तक फैली हुई डालें दिखाई पड़ीं जिनके नीचे और जगहों की बनिस्बत कुछ ज्यादे अंधकार था.

चारों शैतान यहीं आकर रुक गये और कुछ बातें करने लगे.

पेड़ों की आड़ देते हुए कदम दबाये प्रभाकरसिंह भी उनके पास हो गये और उनकी बातें सुनने लगे.

एक ०:

लो आ तो गये.

दूसरा ०:

बस फुर्ती करो, दो आदमी पेड़ पर चढ़ जाओ और इस मूरत के गले से रस्सी अलग करके इसे लटका दो, बस हम लोग नीचे से सम्भाल लेंगे और तब कहीं ले जाकर छिपा देंगे.

फिर देखेंगे तिलिस्म तोड़ने वाला कैसे इस बाग के बाहर होता है.

तीसरा ०:

हाँ ठीक है, जब मूर्ति ही छिपा दी जायगी तो बाहर निकलने का रास्ता कैसे पैदा होगा?

अच्छा तो बस काम शुरू करो, दो शैतान तो पेड़ पर चड़ गये और दो उस पेड़ की एक मोटी डाल के नीचे जाकर खड़े हो गये जो प्रभाकरसिंह के छिपने की जगह से कुछ दूर पर थी.

गौर करने पर प्रभाकरसिंह ने देखा कि एक मोटी डाल के साथ एक बड़ी आदमकद मूर्ति लटक रही है ।

एक तो वहाँ अन्धकार था, दूसरे बहुत पुरानी हो जाने के कारण उसका रंग साफ प्रकट नहीं होने पाता था इससे प्रभाकरसिंह स्पष्ट रूप से जान न सके कि मूरत का भाव क्या है परन्तु समझ पड़ा कि वह किसी औरत की मूरत है जिसके गले में फाँसी की तरह एक रस्सी पड़ी हुई है, इस रस्सी का दूसरा सिरा ऊपर की डाल से बँधा हुआ था और वह मूरत जमीन से चार - पाँच हाथ ऊँचे कुछ - कुछ इस तरह पर लटक रही थी मानों इसे फांसी दे दी गई हो.

इस मूरत को वहाँ देख प्रभाकरसिंह को प्रसन्नता हुई क्योंकि उस तिलिस्मी किताब में इस मूरत का जिक्र था और इसी की सहायता से वे बाग के बाहर हो सकते थे, परन्तु इस समय उन शैतानों के मुँह से यह सुन कर कि वे इस मूरत को नहीं उठा ले जायेंगे.

उनकी चिन्ता बढ़ गई थी, फिर भी वे कर ही क्या सकते थे?

एक ही शैतान से लड़ कर वे जिस तरह का जक उठा चुके थे उसे याद करके इकट्ठे इन चार शैतानों का मुकाबला करना उन्हें आत्महत्या की चेष्ठा करना प्रतीत होता था.

वे लाचारी की मुद्रा से खड़े होकर देखने लगे कि चारों अब क्या करते हैं.

उन चारों शैतानों ने मिल - जुल कर उस मूरत को डाल से अलग कियाऔर पेड़ के तने के साथ लगा कर खड़ा कर दिया.

मालूम होता है कि वह मूरत बहुत ही भारी थी क्योंकि सिर्फ इतना ही काम करके वह चारों एक बगल खड़े हो गये और सुस्ताने लगे.

थोड़ी देर बाद एक ने कहा, " अब चलो इसे उठा कर कहीं छिपा भी दें ताकि इस बखेड़े से छुट्टी मिले.

" दूसरा यह सुन बोला, " हाँ सो तो करेंगे ही, मगर मुझे एक बात सूझी है.

!!

उसने धीरे से कोई बात कही जिसके सुनते ही सबके सब बोल उठे, " ठीक है ठीक है, बस ऐसा ही करो! उसे यहाँ लाकर इसी पेड़ के साथ फांसी पर लटका दो और तब इस मूरत को उठा ले जाओ.

जब तिलिस्म तोड़ने वाला आवेगा तो उसे पता लगेगा कि बिना समझे - बूझे तिलिस्मी मामलों में दखल देने वालों की क्या दशा होती है! " इतना कहते और जोश के साथ कुछ बातें करते हुए वे चारों शैतान जिधर से आये थे उधर ही को चले गये, प्रभाकरसिंह को मौका मिला, लपक कर वे उस मूर्ति के पास पहुंचे और उसे गौर से देखने लगे, देखते ही उन्हें विश्वास हो गया कि यह वही मूर्ति है जिसका हाल तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ है, किताब खोलकर उन्होंने कुछ देखा और तब बन्द कर जेब के हवाले करने के बाद बोले, “ अब वह काली राख इस पर मल करके ही यहाँ से हटना चाहिए, कौन जाने कब वे कम्बख्त यहाँ आ पहुँचे और इसे यहाँ से कहीं गायब कर दें.

" यहाँ से थोड़ी दूर पर नाला बहता हुआ दिखाई पड़ रहा था.

प्रभाकरसिंह उसके किनारे जा और शेर वाले कमरे से बटोरी धूल को उसके पानी में सात गीले आटे - सा बना कर ले आये.

इस आटे को उन्होंने इस मूरत के तमाम बदन पर लेप कर दिया और तब सन्तोष के साथ बोले, “ अब दो घंटे की मोहलत है, चलूं मालती को भी ले आऊ! " यकायक

प्रभाकरसिंह के कान में किसी औरत के चीखने की आवाज पहुँची जिसने उन्हें घबरा दिया.

वे ताज्जुब से चारों तरफ देखने लगे.

पुनः चीख की आवाज आई और इस बार प्रभाकरसिंह के मुंह से निकल गया, ' है, यह तो मालती की आवाज मालूम पड़ती है! वह किसी मुसीबत में गिरफ्तार तो नहीं हो गई?

" पुनः एक चीख की आवाज आई, अब प्रभाकरसिंह बर्दाश्त न कर सके, यहाँ से हटे और आवाज की सीध पर गौर करते हुए पश्चिम तरफ को रवाना हुए, थोड़ी ही दूर गए होंगे कि सामने से चारों शैतान आते हुए दिखाई पड़े, इस समय वे एक औरत को उठाये हुए थे जो उनके हाथों से छूटने के लिए छटपटा और चिल्ला रही थी.

छठवा व्यान।

सरयू की गठरी दारोगा साहब के हवाले करने के बाद हेलासिंह और मुन्दर लोहगड़ी में एक स्थान पर बैठ गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए.

दोनों में धीरे - धीरे इस तरह बातें होने लगीं मुन्दर ०:

दारोगा साहब ने आपको यहाँ पर देख कर पूछा नहीं कि आप यहाँ किस काम के वास्ते आये हैं?

उन्हें कुछ शक़ जरूर हुआ होगा.

हेला ०:

नहीं, भला यह उन्हें क्या खाक पता लग सकता है कि हम लोग यहाँ तिलिस्मी किताब छिपाने के लिए आये थे! मगर अब यह बताओ कि तुमने क्या करने का निश्चय किया.

इतना झगड़ा, तरदुद जो कुछ कियागया उसका नतीजा भी कुछ निकलेगा कि नहीं?

मुन्दर):

आपका मतलब भूतनाथ वाले मामले से ही है या कुछ और?

हेला ०:

हाँ उसी विषय में कह रहा हूँ, तुम्हारा कहना था कि अगर एक हफ्ते की मोहलत मिल जाय तो तुम भूतनाथ से बचने की तर्कीब निकाल सकती हो! मुन्दर ०:

जी हाँ, मैंने जरूर कहा था.

हेला ०:

तो अब तो तुम्हारे मन की बात हो गई.

लोहगड़ी की ताली ऐसी जगह छिपा दी गई कि जहाँ मौत को भी पता न लगे और तुमको भी मैंने छिपने का ऐसा स्थान बता दिया जहाँ भूतनाथ के पीर नहीं पहुँच सकते.

अब तुम क्या चाहती हो?

मुन्दर ०:

बस तो फिर मैं भी अपना काम करने को तैयार हूँ, यह तो आपको विश्वास है न कि यहाँ मेरे काम में विघ्न डालने वाला कोई नहीं आवेगा?

हेला ०:

अच्छी तरह! जमानिया के राजा के और मेरे अलावे इस लोहगड़ी का पूरा हाल सिर्फ दो ही आदमी जानते थे और वे दोनों ही मौत के मुंह में चले गये.

अब .

.

मुन्दर ०:

कौन दो आदमी?

हेला ०:

एक तो भैयाराजा और दूसरा एक पुजारी जिसे तुम नहीं जानती, बस ये ही दो यहाँ का पूरा भेद जानते थे.

इनके बाद अब मुझे ही सबसे अधिक इस जगह का हाल मालूम है, दारोगा साहब भी कुछ जानते जरूर हैं मगर ज्यादा नहीं और न वे उन जगहों में जा ही सकते हैं जहाँ से होते हुए हम लोग अभी - अभी चले आ रहे मुन्दर ०:

और वह शैतान जो प्रभाकरसिंह को पकड़ ले गया?

हेला ०:

(शैतान की याद से क़ाँप कर) उसके बारे मे मैं कुछ नहीं कह सकता! मुझे तो वह कोई तिलिस्मी आसेब जान पड़ता है.

(कॉप कर) ओफ.

क्या विकराल सूरत थी.

मुन्दर ०:

(उसकी याद से घबड़ा कर) मुझे तो यही डर लगता है कि वह आकर कहीं मुझे न सतायें.

अब भी उसकी सूरत याद कर के रोमांच हो जाता है.

हेला ०:

नहीं, यह उम्मीद मुझे नहीं है कि वह फिर दिखाई पड़ेगा.

अब जो मैं सोचता हूँ तो ऐसा जान पड़ता है कि वह कोई आसेब था जो तिलिस्म की हिफाजत के लिए मुकर्रर होगा.

प्रभाकरसिंह गैर आदमी थे, तिलिस्म में किसी तरह घुस आये थे.

उन्हें वह पकड़ ले गया और अब तक मार - खपा के छुट्टी क़िये होगा, अस्तु इस बला से भी निजात मिल गई, हम लोग जानकार आदमी हैं, हमारा वह कुछ न करेगा, फिर मैं तो यहाँ का दीवान रह चुका हूँ, मुझे तिलिस्म के मामलों सब तरह का हक भी है तुम्हें इस तरफ से डरते की कुछ जरूरत नहीं.

इत्यादि बातें कह हेलासिंह ने मुन्दर का डर क़म कियाऔर समझा - बुझा कर उसे शान्त करने के बाद पूछा, तुम्हारा क्या विचार है और मुझे क्या करने को कहती हो?

"

मुन्दर ०:

आप अब सीधे अपने घर चले जायें और मैं अपनी फिक्र में लगती हूँ अगर भूतनाथ आवे तो किसी तरह हीला हवाला करके पाँच - सात रोज बिता दें.

अगर मेरी कारीगरी काम कर गई तो दुबारा उसको शायद आपके पास पुनः आने की हिम्मत ही न पड़ेगी.

हेलाः :

आखिर मुझे भी तो कुछ बताओ कि तुमने क्या सोचा है और क्या करना चाहती हो?

मुन्दर ०:

काम पूरा हो जाने पर मैं सब कुछ बता दूंगी मगर अभी कुछ न कहूँगी.

हेला ०:

खैर मर्जी तुम्हारी, जो जी में आवे करो, मगर जो कुछ करो खूब समझ - बूझ कर करो.

ऐसा कोई काम न होना चाहिये जिसमें भूतनाथ नाराज हो जाय और न ऐसी ही कोई कार्रवाई होनी चाहिये जिसमें दारोगा साहब को बुरा मानने का मौका मिले क्योंकि तुम्हारे बारे में जो कुछ कार्रवाई वे कर रहे हैं उसमें किसी तरह का विघ्न पड़ने से नतीजा बहुत खराब निकलेगा.

मुन्दर ०:

नहीं नहीं, मैं सब तरह से होशियार रहूँगी, आप बेफिक रहिये, इतना कह मुन्दर ने अपने कपड़ों के अन्दर से ऐयारी का बटुआ निकाला तथा एक लपेटा हुआ पुलिन्दा भी बाहर कियाजिसे अब तक अपने कपड़ों में छिपाये हुए थी हेलासिंह ने पुलिन्दे को देख कर ताज्जुब से पूछा, " यह क्या चीज है ।

वह बोली, " बहुत ही काम की एक चीज जो बन्दरों वाले बंगले के अन्दर से मुझे मिली है हेलासिंह ने उस पुलिन्दे को खोल कर देखा.

यह एक तस्वीर थी जिसका पूरा हाल पाठक जानते हैं क्योंकि यह वही थी जिसे मेघराज के बंगले में भूतनाथ ने देखा और देखते ही बदहवास हो गया था.

या जिससे उसकी काली करतूत का हाल प्रकट होता था, अर्थात जिसमें उसके द्वारा दयाराम के मारे जाने का दृश्य बना हुआ था.

१.

देखिए भूतनाथ नौवाँ भाग, नौवाँ बयान.

इसमें एक छत पर खड़े कई आदमी दिखाये गये थे जिनमें भूतनाथ, दलीपशाह, शम्भू, राजसिंह वगैरह साफ पहिचाने जाते थे.

भूतनाथ के सामने खाली हाथ दयाराम खड़े थे और भूतनाथ के हाथ का खंजर दयाराम के कलेजे के पार होना ही चाहता था.

हेलासिंह को इस घटना का हाल बखूबी मालूम था अस्तु कुछ देर तक गौर के साथ इस तस्वीर को देखने के बाद उसने कुछ ताज्जुब के साथ मुन्दर से पूछा.

" इसमें तो भूतनाथ के द्वारा दयाराम के मारे जाने का हाल दिखाया गया है, यह क्या तुमने बनाई है?

" मुन्दर:

नहीं, उस बन्दरों वाले बंगले में यह तस्वीर टंगी थी और अपने काम की समझ में इसे साथ लेती आई हूँ, हेला :

(ताज्जुब से) बन्दरों वाले बंगले में यह तस्वीर टंगी थी! भला वहाँ यह कैसे आई?

मुन्दर ०:

सो तो मैं नहीं कह सकती.

एक चौखट में जड़ी थी जिस पर लाल पर्दा पड़ा था.

काट कर निकाल लाई.

हेलासिंह यह सुन कर कुछ फिक्र में पड़ गया और इधर मुन्दर भी किसी सोच में पड़ गई, मगर थोड़ी ही देर बाद वह हेलासिंह से बोली.

" चलिए अब इस जगह से बाहर निकलना चाहिए, दोनों आदमी उठे और लोहगड़ी के बाहर चले.

हेलासिंह ने उसके कई दरवाजों का भेद मुन्दर को समझा दिया बल्कि उसके हाथ से खुलवा और बन्द करवा कर उसकी तरक़ीव मुन्दर के जेहन में अच्छी तरह बैठा दी.

दोनों आदमी लोहगड़ी के बाहर निकले मगर फाटक पर पहुँचते ही यकायक हेलासिंह चौंक पड़ा क्योंकि उसकी निगाह लहू के एक बड़े - से धबे पर पड़ी जो दरवाजे के बाहर ठीक सामने ही पड़ा हुआ था और अभी एकदम ताजा था.

हेलासिंह के साथ ही मुन्दर की निगाह भी उस पर पड़ी और उसका चेहरा डर से पीला हो गया.

खून की एक पतली लकीर उस जगह से चल कर पास की एक झाड़ी तक गई हुई थी.

अपने कलेजे को मजबूत किए हुए हेलासिंह उस झाड़ी के पास पहुँचा.

सामने ही बिना सिर की लाश पड़ी दिखाई दी.

ज्यादा गौर करने की जरूरत न पड़ी और एक निगाह ने बता दिया कि यह उसका बही नौकर है जो सरयू की गठरी लेकर दारोगा साहब के रथ तक पहुँचाने के लिए गया था, मुन्दर ने डरी हुई आवाज में कहा, " हैं, इसका खून किसने किया! " हेला ०:

(अफसोस और डर के साथ) कुछ समझ में नहीं आता! क्या मैं यह मान लूँ कि दारोगा साहब ने जिनके हवाले मैंने सयुं को किया था इसकी जान ली है! मुन्दर ०:

नहीं नहीं, कभी नहीं हो सकता, यह कुछ और ही बात है और इसके सर का गायब होना बताता है कि जरूर इस बेचारे की जान किसी और ही कारण से गई है.

खैर फिर इसका पता लगाया जाएगा, इस वक्त यहाँ से चले चलना ही ठीक है.

दोनों आदमी टीले से नीचे उतरे और दो तरफ को हो गये.

हेलासिंह जमानिया की तरफ रवाना हुआ और मुन्दर ने काशी का रास्ता लिया, इस समय हम मुन्दर के साथ चलते और देखते हैं कि वह कहाँ जाती या क्या करती है, हेलासिंह से अलग हो टीले से उतर मुन्दर सीधी उस तरफ को रवाना हुई जिधर अजायबघर की इमारत थी.

जिस समय वह उससे कुछ दूर थी उसने देखा कि उसके नीचे से बहने वाले के किनारे पत्थर की चट्टान पर कोई आदमी सिर झुकाये बैठा है.

इसे देखते ही मुन्दर के चेहरे से प्रसन्नता प्रकट होने लगी.

वह लपकती हुई उसके पीछे जा पहुंची और नखरे के साथ उस मर्द की आँखें बन्द कर ली.

मुलायम हाथों को पकड़ मुन्दर को अपनी तरफ खींचते हुए उस नौजवान ने कहा, “ वाह रे तुम किसी तरह आई तो सही! मैं तो सुबह से राह देखता - देखता एकदम परेशान हो चुका था और अब निराश होकर यहाँ से लौट जाने वाला था! " मुन्दर उसके बगल में बैठती हुई बोली, " क्या बताऊँ ऐसी झंझट में पड़ गई कि किसी तरह निकासी ही नहीं हुई! बड़ी मुश्किल से इस वक्त आध घण्टे की मोहलत लेकर आई हूँ, यह तो कहो कि तुम्हें मेरी चीठी मिल गई और तुम आ गए, नहीं तो मुझे कहीं बैरंग वापस लौटना पड़ता तो बड़ा ही दुःख होता.

" इस नौजवान को हमारे पाठक बखूबी पहिचानते हैं.

यह वही आदमी है जिससे मुन्दर उस समय बातें कर रही थी जब हेलासिंह ने अचानक पहुँच कर इनके आनन्द में विघ्न डाला था ।

.

मुन्दर की बात सुन इसने कहा, " नहीं, तुम्हारी लौंडी बड़ी होशियारी के साथ मेरे घर आई थी.

मुझसे मिलकर उसने इस प्रकार तुम्हारा पत्र दिया कि किसी को कुछ भी पता न लगने पाया, मगर यह तो बताओ कि आज मामूल के खिलाफ मैं तुम्हें इस तरह जंगल -

मैदानों की हवा खातें क्यों देख रहा हूँ, तुम्हारे पिता तो एक सायत के लिए तुम्हें पर्दे के बाहर नहीं आने देते थे?

" मुन्दर ०:

हॉ.

कुछ ऐसा ही सबब हो गया.

किसी काम से वे वहाँ से थोड़ी दूर पर अपने एक मकान में आये और वहाँ कुछ जरूरी काम कर रहे हैं, सुहावने जंगल की सैर करने का बहाना करके मैंने उनसे छुट्टी ली और यहाँ चली आई हूँ, कुछ देर तक दोनों प्रेमियों में इस तरह की बातें होती रहीं जिस तरह की मनचले आशिकों और माशूकों में होती है.

इसके बाद मुन्दर ने इस तरह का भाव बना कर, मानों यह बात अचानक ही उसे खयाल आ गई हो, उस नौजवान से पूछा, " हाँ खूब याद आया, उस बात का तुमने कुछ पता लगाया जिसके बारे में उस दिन जिक्र हो रहा था.

मुन्दर:

अजी वहीं भुवनमोहिनी वाली बात! जिसके बारे में उस दिन तुमने कहा था कि उसका किस्सा बड़ा ही विचित्र है, मगर तुम्हें हाल मालूम नहीं! नौज:

हाँ मैंने उसके बारे में पता लगाया था.

मुन्दर ०:

क्या पता लगा, मुझसे कहो जरा मैं भी सुनूँ! नौज वह बड़ा ही दर्दनाक हाल है, तुम सुन कर दुःखी हो जाओगी.

मुन्दर ०:

तब तो मैं जरूर सुनूँगी, तुम बताओ.

कुछ इधर - उधर करने के बाद नौजवान ने इस तरह कहना शुरू किया:

" भुवनमोहिनी एक बड़ी ही खूबसूरत और नाजुक लड़की थी जिसके पिता राजा वीरेन्द्रसिंह के रिश्तेदारों में थे.

जमानिया में ससुराल होने के कारण वह ज्यादातर वहीं रहा करती थी, जिस सबब से कभी - कभी महाराज गिरधरसिंह के महल में भी उसका आना - जाना हुआ करता था.

" न - जाने किस तरह जमानिया की बड़ी महारानी अर्थात महाराज गिरधरसिंह की रानी को यह शक हो गया कि महाराज भुवनमोहिनी को चाहते हैं, मैं नहीं कह सकता कि इस बात में कोई सच्चाई भी थी या नहीं पर यह जरूर था कि कई कारणों से महारानी का यह शक़ पक्का ही होता गया.

' डाह बड़ी बुरी चीज है और खास कर औरतों की.

महारानी चाहे जैसी ही अच्छी औरत क्यों न हों, पर इस बात ने उन्हें आपे से बाहर कर दिया और उन्होंने निश्चय कर लिया कि जैसे भी हो भुवनमोहिनी को जमानिया से निकाल ही देंगी, महाराज पर दबाब डाल कर उन्होंने उसके पति को, जिसका नाम कामेश्वर था, कहीं दूसरी जगह भेजवा दिया, पर कुछ कारण ऐसे आ पड़े कि जिससे थोड़े ही दिनों बाद महाराज को फिर उसे जमानिया बुला लेना पड़ा, उसके साथ - साथ भुवनमोहिनी भी आ गई और फिर महारानी की आँखों में काँटे की तरह गड़ने लगी.

होत - होते यहाँ तक हुआ कि महारानी उसकी जानी दुश्मन हो गई और उसे जान से मरवा देने का विचार करने लगीं.

सुनने में आया है कि किसी से उन्होंने उसे जहर दिलवाने की कोशिश भी की मगर सफल न हुई, अवश्य ही यह खबर कहाँ तक सच है कहा नहीं जा सकता.

उन दिनों गदाधरसिंह नाम के एक ऐयार का बहुत नाम फैला हुआ था.

वह आजकल कहाँ है और मर गया या जीता भी है यह कुछ नहीं कहा जा सकता परन्तु उन दिनों वह रणधीरसिंह के यहाँ नौकर था और प्रायः उन्हीं के काम - काज से जमानिया भी आया - जाया करता था.

कहा जाता है कि महारानी को किसी तरह उसकी चालाकी और होशियारी का पता लगा.

उन्होंने अपने दुश्मन को दूर करने की इच्छा से उसी गदाधरसिंह को अपना विश्वासपात्र बनाया और बहुत रुपयों का लालच देकर उसके सुपुर्द यह काम किया कि वह

भुवनमोहिनी को इस तरह खपा डाले कि किसी को कानोकान खबर न हो कि वह कहाँ गई या क्या हुई.

न - जाने गदाधरसिंह की कोई कार्रवाई थी या उसकी मौत ही आ गई थी.

सुना जाता है कि इसके कुछ ही दिन बाद भूवनमोहिनी को साँप ने काट लिया और वह मर गई.

ठीक - ठीक क्या बात थी इसका कुछ पता नहीं लगता.

कुछ लोगों का कहना है कि गदाधरसिंह ने दारोगा साहब की सहायता से यह कार्रवाई की और भुवनमोहिनी को जहर देकर शोर कर दिया कि इसे साँप ने काट लिया, कुछ का कहना है कि इसमें चुनार के राजा शिवदत्त की भी कुछ साजिश थी, मगर असल बात क्या थी इसका कुछ ठीक - ठीक सुराग अब तक नहीं लगा, हाँ उस समय यह बात जरूर उड़ी थी कि बड़ी महारानी ने भूतनाथ को बहुत रूपया - पैसा दिया बल्कि उसे अपने दरबार का ऐयार भी बनाना चाहा था मगर वह राजी नहीं हुआ.

गदाधरसिंह ने जरूरत पड़ने पर उनका हुक्म बजा लाने की रजामन्दी तो दिखाई मगर दरबारी ऐयार होता यह कारण बता कर अस्वीकार किया कि वह खुद एक रियासत का (रणधीरसिंह का) नौकर है और बिना उनकी आज्ञा पाये दूसरे दरबार की नौकरी नहीं कर सकता.

खैर जो कुछ हुआ हो और भुवनमोहिनी की मौत मे गदाधरसिंह का कोई हाथ रहा हो या न रहा हो, इसमें शक नहीं कि इस काम के लिए गदाधरसिंह ने भरपूर दौलत महारानी से पाई.

' संक्षेप में यही वह हाल है जो भुवनमोहिनी के बारे में मुझे मालूम हुआ है.

मैंने यह भी सुना है कि इस सम्बन्ध में भुवनमोहिनी का पति कामेश्वर राजा वीरेन्द्रसिंह के पास शिकायत लेकर पहुंचा और उन्हें भी किसी तरह विश्वास हो गया कि भुवनमोहिनी अपनी मौत से नहीं मरी बल्कि किसी दुर्घटना ने उसकी जान ली जिसका नतीजा यह निकला कि उन्होंने ऐयारों को इसका पता लगाने का हुक्म दिया, मगर इस सम्बन्ध में पूरा - पूरा हाल अभी मुझे नहीं मालूम हुआ.

सिर्फ इतना पता लगा है कि भूतनाथ को अपनी जान का खौफ हो गया और वह तभी से छिपता फिरता है.

मगर इसके साथ यह भी जरूर है कि इस मामले में दारोगा साहक, जैपालसिंह और महाराज शिवदत्त का भी हाथ था.

अगर और कुछ नहीं तो क़म - से - कम इस घटना को तो वे लोग बखूबी जानते ही थे.

" इतना कह उस नौजवान ने कहा, " लो बस जो कुछ मुझे मालूम हुआ वह सब मैंने बता दिया - अब तो खुश हुई! " मुस्कुराते हुए उस नौजवान ने अपने कपड़ों के अन्दर से एक पीतल की सन्दूकड़ी तथा एक तस्वीर निकाल मुन्दर के आगे रख दी और कहा, " लीजिए वह भी हाजिर है.

और कुछ हुक्म! "

मुन्दर ने वह तस्वीर उठा ली और एक नजर खूब गौर से देख कर अपने कपड़ों में छिपाती हुई बोली, " बस और कुछ नहीं, अब मैं समझ गई कि तुम जरूर मुझे सच्चे दिल से चाहते हो! " इतना कह उसने वह पीतल की सन्दूकड़ी उठाई और उसे खोलने का उद्योग कियामगर बन्द पाकर बोली, " क्या इसी में वे कागजात हैं?

मगर यह तो बड़ी मजबूती से बन्द है, खुलेगी कैसे! " नौज:

क्या करूँ इसकी ताली बहुत कोशिश करके भी मैं पा न सका लेकिन अगर मौका लगा तो बहुत जल्द हाजिर करूंगा.

इस बीच में अगर कोई दूसरी ताली लगा कर तुम इसे खोल सको तो बेहतर ही है.

मुन्दर ०:

अच्छा मैं इसे खोलने का उद्योग करूँगी मगर तुम ताली लाने का भी खयाल रखना, नौजवान ०:

बहुत अच्छा, अब तो तुम्हारे मन की सब बातें हो गईं.

मैंने अपना वादा पूरा किया, अब तुम भी अपना वादा पूरा करो !! मुन्दर ०:

हाँ हाँ, मुझे भी तुम झूठी न पाओगे! परसों रात को तुम मेरे घर आओ, उसी मामूली रास्ते से! नौज ०:

(कुछ उदासी से) परसों! और आज क्यों नहीं?

इतने दिनों से बराबर तुम वादे करती और मुझे टरकाती आई हो! मुन्दर):

नहीं नहीं, अब की जरूर अपना वादा पूरा करूंगी.

आज हम लोग घर जा ही नहीं रहे हैं, और अब मैं चलूंगी, एक तो बहुत देर हो गई है और फिर कहीं घूमते - फिरते मेरे पिता अगर यहाँ आ गये और हम लोगों को देख लिया तो किसी तरह जिन्दा न छोड़ेंगे.

यह कहती हुई मुन्दर उठ खड़ी हुई.

लाचार वह नौजवान भी उठा, दोनों में कुछ मामूली बातें हुई जो ऐसे अवसरों पर दो प्रेमियों में होती हैं, और तब वे अलग - अलग हो गये.

नौजवान ने पूरब तरफ का रास्ता लिया और मुन्दर ने पश्चिम का.

अभी दस ही पाँच कदम आगे बड़ा होगा कि वह नौजवान पलटा और बोला, " हाँ सुनो तो.

" मुन्दर ने रुक कर पूछा,, " क्यों क्या है?

" उसने पास आकर अपना हाथ आगे बढ़ाया और कहा, " वह तस्वीर तो तुम साथ ही ले चली!

वह मुझे वापस कर दो जिसमें फिर ठिकाने रख दूं.

" मुन्दर ने एक कटाक्ष फेंक कर कहा, “ अब वह तस्वीर वापस न मिलेगी, मैं उसे अपने ही पास रखूगी.

" नौज ०:

(घबड़ा कर) नहीं नहीं, ऐसा करने का खयाल भी न करना नहीं तो गजब हो जायगा.

सन्दुकड़ी तुम भले ले जाओ क्योंकि वह जिस कोठरी में रहती है वह कभी कभी ही खुलती है मगर यह तस्वीर तो मुझे वापस कर ही दो क्योंकि यह अगर गायब पाई जाएगी तो उसको तुरंत मुझ पर शक हो जायगा क्योंकि मैं ही खोद - खोदकर उससे भुवनमोहिनी का हाल पूछा करता था.

तुम जानती हो कि मैं हर तरह से उसके अधीन हूँ, उसे किसी तरह से भी नाराज करने का तरीका मेरे हक में अच्छा न होगा तुमने सिर्फ एक बार देखने के लिए तस्वीर माँगी थी सो देख ली, अब वापस कर दो तो में ले जाकर फिर जहां की तहाँ रख दूं मुन्दर ०:

नहीं, अब इसे मैं न दूंगी, अगर तुम पर कोई शक करे तो कुछ बहाना कर देना, यह मैं तुम्हारी यादगार की तरह अपने पास रखूगी.

नौज ०:

(जिसका चेहरा पीला पड़ गया था) परमेश्वर के लिए ऐसा न करो! इस तस्वीर का गायब होना बहुत जल्द प्रकट हो जाएगा और तब मेरी बड़ी दुर्दशा होगी.

वह बड़ा ही क्रोधी आदमी है और .

.

.

मुन्दर ०:

(उदास मुँह बना कर) बस - बस, मैं जान गई कि तुम्हारा प्रेम झूठा और बनावटी है! दूसरों के गुस्से का जितना तुम्हें खयाल है उससे आधा भी अगर मेरी खुशी का खयाल होता तो कभी ऐसी मामूली बात के लिए मेरी बेकदरी न कहते - कहते मुन्दर की बड़ी - बड़ी आँखों से बेहिसाब आँसू निकल कर उसका आँचल तर करने लगे.

अब भला उस नौजवान की क्या ताब थी कि एक मामूली तस्वीर के लिये जिद्द कर सके.

मुन्दर के पास जाकर उसने अपने दुपट्टे से उसके आँसू पोंछे और कहा, " अच्छा - अच्छा जाने दो.

जब तुम्हारी यही इच्छा है तो फिर तस्वीर रक्खे रहो.

जो कुछ मुझ पर बीतेगी मैं झेल लूँगा पर तुम्हें किसी तरह से नाखुश न करूंगा.

"

जैसे बरसते हुए बादलों में बिजली चमक जाती है उसी तरह मुन्दर के चेहरे पर हँसी दौड़ गई.

उसने खुश होकर उस नौजवान के गले में अपनी बाँहे डाल दी और कहा, " बस अब मुझे विश्वास हो गया कि तुम सचमुच मुझे सच्चे दिल से प्यार करते हो! " जब वह नौजवान कुछ दूर निकल गया तो मुन्दर ने तुच्छता के साथ उसकी तरफ उँगली मटका कर कहा, " गधे, भला तू क्या समझेगा कि इस तस्वीर और इस भेद को पाने के लिए ही मुन्दर ने तुझसे प्रेम का स्वांग रचा था! " मगर दोनों में से किसी को भी कुछ पता न था कि जहाँ पर बैठ इन दोनों ने बातें की थीं उसके पास ही एक घनी झाड़ी के अन्दर छिपे हुए एक आदमी ने इन दोनों की बातें बखूबी सुन ली हैं.

सातवा व्यान।

प्रभाकरसिंह को यकीन हो गया कि जिस औरत को उन शैतानों के हाथ में पड़ा हुआ देख रहे हैं वह मालती ही है.

यह सोचते ही उनका गुस्सा भड़क उठा और वे तलवार के कब्जे पर हाथ रख उस तरफ लपक्के मगर उसी समय किसी ने पीछे से आकर उनके मोडे पर हाथ रख दिया जिससे वे यकायक चौंक पड़े, घूम कर देखा तो मालती! वे ताज्जुब से बोले, " हैं, तुम यहाँ! मैंने तो समझा था कि तुम उन शैतानों के कब्जे में पड़ गई हो और इसीलिए तुम्हें छुड़ाने के खयाल से ही उधर जा रहा था! " मालती यह सुन बोली, " यही मैंने भी सोचा और इसी से आपको होशियार किया.

मैं तो उसी समय से आपके साथ हूँ जब से आप इधर को चले.

मुझे अकेले वहाँ रहते डर लगा अस्तु मैं भी आपके पीछे - पीछे चल पड़ी.

वह कोई दूसरी ही औरत है जिसे वे सब ला रहे हैं ।

" दोनों एक पेड़ की आड़ में हो गये और देखने लगे.

कि अब वे शैतान किधर जाते या क्या करते हैं, उस छटपटाती हुई औरत को लिए वे लोग सीधे इधर ही आ रहे थे कि यकायक रुक गये जब उन्होंने देखा कि जिस मूरत को वे लोग पेड़ से उतार कर जमीन पर रख गये थे उसके सिर में से आग का एक बड़ा लुक उठा और आसमान की तरफ चला.

प्रभाकरसिंह का भी ख्याल उस रोशनी की तरफ गया और जैसे ही वे घूमे उन्होंने देखा कि उस पुतली के सिर में से पुनः एक बार वैसा ही हुआ.

आग की पहली लपट को दूर से देखते ही वे सब शैतान रुक गये.

जब दूसरी और तीसरी बार भी ऐसा हुआ तो वे सब के सब घबरा गये और एक के मुंह से निकला, " भागों भागों भागों, मालूम होता है तिलिस्म तोड़ने वाला यहाँ पहुँच गया! " उसके ऐसा कहने के साथ ही वे सब उस औरत को लिये जिधर से आये थे उधर ही को बेतहाशा भाग गये.

अब मालती और प्रभाकरसिंह के चित्त को कुछ शान्ति पहुँची, वे दोनों लौट कर उसी मूरत के पास चले गये और उससे थोड़ी दूर हट एक साफ जगह देख बैठ कर आपस में बातें करने लगे.

थोड़ी - थोड़ी देर पर उस मूरत के सर से वैसी ही आग की लपटें उठती थीं और आसमान में जाकर गायब हो जाती थीं पर प्रभाकरसिंह को इस पर कोई आश्चर्य न था क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा होने ही वाला था.

लगभग दो घड़ी तक इसी तरह गुजर गई, इसके बाद यकायक उस मूरत के सिर से इस तरह की लपट निकलने लगीं जैसी अनार या फुलझड़ी के जलने पर उसके अन्दर से निकलती हैं.

लगभग पाँच मिनट तक यह लपट निकलती रही और इसे देख कर प्रभाकरसिंह मालती को लिये अपनी जगह से हट कुछ दूर जाकर खड़े हो गये.

वे यहाँ से हटे ही थे कि यकायक उसी समय एक इतनी जोर की आवाज हुई कि जिसने कानों के पर्दे फाड़ दिये.

मालूम हुआ मानों पचासों तोपों पर एक साथ बत्ती रख दी गई हो, भयानक आवाज ने इन दोनों का सर घूमा दिया और ये अपने हाथों से अपने - अपने कानों को बन्द कर वहीं बैठ गये.

थोड़ी देर में जब सन्नाटा हुआ तो दोनों उठे और उस मूरत की तरफ चले.

पास पहुँचने पर देखा कि उस मूरत का कहीं नामनिशान भी नहीं है और जहाँ वह थी उसके सामने की तरफ जमीन में एक रास्ता दिखाई पड़ रहा है जिसके अन्दर उतर जाने के लिए पतली सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, ये लोग खुशी - खुशी नीचे उतर गये.

बारह डंडा सीढ़ियाँ उतर जाने के बाद सुरंग दिखाई पड़ी जिसके अंदर अन्धकार था.

अपने पास से सामान निकाल कर प्रभाकरसिंह ने रोशनी की और दोनों उस सुरंग के अन्दर घुसे.

यह सुरंग बहुत ही लम्बी और इधर - उधर घूमती - फिरती न - जाने कहाँ तक गई हुए थी कि तय करने में इन लोगों को बहुत समय लग गया साथ ही ये गर्मी से बहुत परेशान हो गये क्योंकि इस सुरंग में साफ हवा आने वाले मोखे बहुत दूर दूर पर थे जिससे यहाँ की हवा गर्म और कुछ भारी मालूम पड़ती थी.

आखिर किसी तरह सुरंग खतम हुई और इन लोगों ने अपने को एक छोटे दालान में पाया जिसके सामने एक खूबसूरत बाग दिखाई पड़ रहा था.

शाम का वक्त हो गया और सूरज डूबना ही चाहता था.

इस बाग को एक निगाह देखते ही मालती ने इसे पहिचान लिया क्योंकि यह वही जगह थी जहाँ इन्द्रदेव का साथ छूटने पर उसने अपने को होश में पाया था.

वह लोहे वाला ऊँचा खम्भा और उसके ऊपर वाली बारहृदरी जिसमें वह कैद थी सामने दिखाई पड़ रही थी.

उसने यह बात प्रभाकरसिंह से कहीं और उस ऊँची गोल बारहदरी की तरफ दिखा कर बोली, “ यह वहीं गोल वारदरी है जिसमें इन्द्रदेवजी से अलग होने पर मैंने अपने को

पाया था! " प्रभाकरसिंह ने कहा, " और मेरी समझ में शायद यही वह जगह भी है जिसका जिक्र तिलिस्मी किताब में घूमने वाली बारहदरी के नाम से किया गया है, मगर यह बारहदरी घूमती - फिरती तो कुछ भी नहीं, खैर जो कुछ होगा देखा जायगा.

अब आज की रात तो इसी दालान में काटनी चाहिए क्योंकि एक तो इस लम्बे सफर ने हमें एकदम थका दिया है दूसरे संध्या भी हो चली है, अब कुछ काम करने का वक्त नहीं रहा.

” प्रभाकरसिंह और मालती ने उसी दालान को अपना डेरा समझा और जरूरी कामों से निपटने की फिक्र में लगे, खोजने से बाग में एक छोटी बावली मिल गई जिसके साफ पानी में इन लोगों ने मुँह - हाथ धोया और पीकर प्यास दूर करने के बाद आवश्यक कामों की फिक्रमें लगे.

प्रभाकरसिंह ने स्नान कर संध्या - पूजा की और तब मालती के लाये हुए कुछ फलों से अपनी भूख शान्त कर उसी बारहद्दरी में अपना दुपट्टा बिछा कर लेट रहे.

मालती ने भी उनसे कुछ हट कर अपना आसन लगाया.

दोनों थके हुए थे इससे जल्दी ही नींद आ गई.

वह रात उन लोगों ने निर्विघ्न क़ाटी और दूसरे दिन सूर्योदय के पहिले नित्य कर्म से निश्चिन्त हो गये.

प्रभाकरसिंह ने तिलिस्मी किताब खोली और पड़कर मालती को सुनाने लगे.

यह काम आधे घण्टे तक जारी रहा और आज जो कुछ करना था उसकी कार्रवाई जब अच्छी तरह प्रभाकरसिंह के जेहन में बैठ गई तथा मालती भी समझ चुकी तो प्रभाकरसिंह ने किताब बन्द करके जेब में रक्खी और अपना तिलिस्मी डण्डा सम्भाल उठ खड़े हुए.

आगे - आगे प्रभाकरसिंह और उनके पीछे मालती वहाँ से उठ कर उसी गोल बारहदरी के पास पहुँचे.

जैसाकि हम पहले लिख आये हैं यह बारहदरी कोई बीस हाथ ऊँचे एक लोहे के खम्भे पर बनी हुई थी जो मोटाई में पाँच हाथ से किसी तरह क़म न होगा.

यह लोहे का खंभा सब तरफ से एकदम चिकना और साफ था और इसमें कहीं भी कोई दरवाजा या रास्ता दिखाई नहीं पड़ता था तथा इसी के ऊपर वह काले पत्थर की बाह्रदरी थी जिसमें मालती ने अपने को पाया था.

हम यह भी लिख आये हैं कि इस बारहदरी के ऊपर की तरफ एक घरहा - सा बना हुआ था जिस पर किसी धातु का बना एक उक्काब बैठा हुआ था.

प्रभाकरसिंह ने इस खम्भे के पूरब तरफ जाकर उसकी जड़ से पाँच हाथ जमीन नापी और अपने तिलिस्मी डण्डे की नोक से यहाँ की जमीन खोदनी शुरू की.

जमीन बहुत सख्त थी और वह डंडा इस लायक नहीं था कि उससे मिट्टी खोदने का काम लिया जा सकता फिर भी अपने उद्योग और आधे घण्टे की मेहनत से प्रभाकरसिंह ने वहाँ हाथ भर लम्बा - चौड़ा और करीब दो हाथ गहरा एक गड्ढा कर डाला.

तब वे उसी गड़े में उतर गए और पैरों से उसकी सतह में कुछ खोजने लगे.

खोजते - खोजते एक कोने में उनके पैर से कोई चीज अड़ी और उन्होंने झुक कर उसे देखा.

पत्थर की सिल्ली नजर आई जिसके बीच में लगी कड़ी पकड़ उन्होंने उठाया.

देखा तो नीचे एक छोटी सी जगह है जिसमें अन्दर लगभग एक बालिश्त लम्बी सोने की एक ताली रखी हुई है, प्रसन्न होकर वह ताली उठा ली और देख - भाल कर मालती के हाथ में दे दी, इसके बाद गड्डे के बाहर निकल आये.

अब दोनों पुनः उस खम्भे के पास पहुँचे.

पूरब तरफ, खंभे की जड़ में जहाँ से नाप कर उन्होंने गढ़ा खोदा था, प्रभाकरसिंह गौर से देखने लगे, देखते - देखते एक जगह कुछ लिखा हुआ मिला जो धूल - मिट्टी से ढका होने के कारण सहज में पढ़ा नहीं जाता था.

कुशल इतनी ही थी कि उस खंभे का लोहा कुछ ऐसा था कि जमाना गुजर जाने पर भी उसमें कहीं जंग का नाम - निशान न था अस्तु थोड़ी मेहनत में ही प्रभाकरसिंह ने उतनी जगह साफ कर ली और गौर से पड़ कर देखा यह लिखा हुआ था: ऊपर - दो हाथ सात अंगुल जाएं - एक बालिश्त पाँच अंगुल ४ - दाब, खोल.

कुछ देर तक प्रभाकरसिंह इस लिखावट पर गौर करते रहे इसके बाद मालती से बोले, “ इसका आशय यह जान पड़ता है कि इस जगह से दो हाथ सात अंगुल ऊपर और वहां से एक बित्ता पाँच अंगुल बाईं तरफ नाप कर दबाने से रास्ता खुल जायगा.

" ऐसा ही किया गया.

प्रभाकरसिंह ने खंभे की जड़ से दो हाथ सात अंगुल ऊपर नापा और तब उस जगह से बाएं हाथ की तरफ एक बित्ता और पाँच अंगुल नाप कर उस जगह को अंगूठे से दबाया, उन्हें उम्मीद थी कि ऐसा करने से कोई रास्ता प्रकट हो जायगा परन्तु कुछ भी न हुआ.

पुनः नापा और फिर दबाया परन्तु कोई नतीजा न निकला, ताज्जुब के साथ उन्होंने पुनः उस लिखावट को पड़ा और फिर उद्योग कियामगर नतीजा कुछ न निकला.

वे कुछ ताज्जुब और निराशा के साथ अलग हट कर सोचने लगे कि यह क्यां मामला है.

इसी समय मालती ने कहा, " ठहरिये जरा मैं तो उद्योग कर के देखू! " उसने अपने हाथ से उसी तरह नापा और उस जगह को अगूंठे से दबाया तुरन्त ही एक खटके की आवाज हुई उस जगह से लोहे का एक छोटा - सा टुकड़ा पीछे हट गया और वहाँ ताली लगाने लायक एक छेद दिखाई पड़ने लगा.

मालती ने वहीं सोने की चाभी उस छेद में डाल घुमाया.

एक हलकी आवाज हुई और सामने का कुछ भाग हट कर किवाड़ के पल्ले की तरह एक बगल को घूम गया.

अन्दर जाने के लिये पतली सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं जिन पर खुशी - खुशी आगे - आगे मालती और पीछे - पीछे प्रभाकरसिंह रवाना हुए.

इनके भीतर जाते ही वह दरवाजा आप - से - आप इस तरह बन्द हो गया कि कहीं कोई निशान तक बाकी न रहा.

चक्करदार सीड़िया चढ़ती हुई मालती बोली, " उस दिन मैं इन्ही सीढ़ियों की राह नीचे उतरी थी और इस दरबाजे को खोलने के लिए मुझे एक साँप के फन को दबाना पड़ा था.

कौन ठिकाना यहाँ से बाहर होते समय फिर हम लोगों को वही कार्रवाई करनी पड़े.

" प्रभाकरसिंह यह सुन बोले, " नहीं ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि तिलिस्मी किताब के कथनानुसार यही बारहदरी हम लोगों को ' रत्न - मंडप ' तक पहुँचाबेगी.

!! दोनों आदमी उस बारहदरी के ऊपर पहुंचे.

यहाँ के फर्श में लाल रंग के चौकोर पत्थर जड़े हुए थे जिनमें बीच - बीच में जगह - जगह सुफेद पत्थर के क़मल भी बने हुए थे.

प्रभाकरसिंह ने इधर - उधर देखा और कुछ गिन - गिना कर एक कमल के पास जाकर बोले, " यही क़मल मालूम होता है.

" मालती बोली, “ जरूर यही है.

" जिसे सुन प्रभाकर सिंह ने उसे अपने अंगूठे से दबाया जिसके साथ ही ऊपर की तरफ से एक खटक्के की आवाज आई.

सिर उठा कर देखा तो बारहद्दरी की छत में एक छेद दिखाई पड़ा जो हाथ भर से कुछ बड़ा ही होगा प्रभाकरसिंह यह देख बोले, “ लो रास्ता तो बन गया, अब ऊपर पहुंचना चाहिए, मैं जमीन पर बैठ जाता हूँ तुम मेरे कन्धे पर खड़ी हो जाओ.

मैं खड़ा होकर तुम्हें उस छेद तक पहुँचा दूंगा.

तुम वहाँ पहुँच मुझे जरा सहायता देना, मैं ऊपर पहुँच जाऊँगा.

" मालती ने कुछ संकोच के साथ कहा, " भला मैं आपके ऊपर पैर कैसे रख सकती हूँ! " जिसे सुन प्रभाकरसिंह बोले, " ओह! यह सब फजूल बाते हैं, जरूरत पड़ने पर सभी कुछ करना पड़ता है! " मगर मालती ने इसे मंजूर न किया, आखिर प्रभाकरसिंह बोले, “ अच्छा तो तुम यहाँ आकर खड़ी होओ, मैं तुम्हें उठा कर वहाँ तक पहुँचाये देता हूँ! " इसमें शक नहीं कि प्रभाकरसिंह के बदन में ताकत भरपूर थी.

जिस तरह कोई नौजवान किसी बच्चे को उठा लेता है उसी तरह उन्होंने मालती को दोनों हाथों से थोड़े ही उद्योग से उसे ऊपर पहुंचा दिया.

वहाँ पहुँच उसने अपनी चादर का एक सिरा ऊपर किसी चीज से बाँध बाकी भाग नीचे लटका दिया जिससे वात - की - बात में प्रभाकरसिंह भी ऊपर दिखाई देने लगे.

इस बारहदरी की छत ऊपर की तरफ से महराबदार बनी हुई थी और उसके बीचोबीच में करीब दो हाथ ऊँची एक लाट ऊपर की तरफ को उठ गई थी जिसके सिरे पर किसी धातु की एक उकाब की मूरत बनी हुई थी। .

प्रभाकरसिंह ने अपने कमर से कमरबन्द खोलते हुए कहा, “ लो अब अपने को इस लाट से बाँधो और उकाब की गरदन उमेठो.

" दोनों ने अपने को उस लाट के साथ खूब कस कर बाँध लिया और इसके बाद प्रभाकरसिंह ने हाथ ऊँचा कर उस उकाब की गर्दन को जोर से बाईं तरफ को उमेठ दिया, उमेठने के साथ ही उसके मुंह से एक तरह की चीख की आवाज निकली और साथ ही उसके पंख बड़े जोर से हिले.

इसी समय प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि वह बारहदरी धीरे - धीरे घूमने लगी है ।

बारहदरी के घूमने की तेजी क्षण - क्षण में बढ़ने लगी, कुछ ही देर बाद वह कुम्हार के चाक की तरह फिरने लग गई.

अगर इस समय नीचे से कोई इस बारहदरी को देखता तो जान जाता कि वह लोहे का खंभा जिस पर यह बारहदरी बनी हुई थी नहीं घूम रहा है बल्कि केवल उस बारहदरी के ऊपर वाली लाट ही घूम रही है जिसकी तेजी इतनी ज्यादे थी कि अगर प्रभाकरसिंह और मालती अपने को लाट के साथ बाँध न लिए होते तो जरूर छिटक कर दूर जा गिरते और जान से हाथ धोते.

घूमने की तेजी धीरे - धीरे बढ़ने लगी यहाँ तक कि प्रभाकरसिंह और मालती के सर में चक्कर आने लगे और अन्त में दोनों ही बेहोश हो गये.

जिस समय प्रभाकरसिंह होश में आए उन्होंने अपने को एक विचित्र ही जगह में पाया.

उन्होंने देखा कि वे एक ऐसे कमरे में है जिसमें ऊपर - नीचे अगल - बगल चारों तरफ शीशे जड़े हुए हैं यहाँ तक कि जिसका फर्श भी शीशे ही का है, चारों तरफ कहीं कोई आला - आलमारी, खिड़की - मोखा या दरवाजे का नाम - निशान न था.

इसकी छत भी एकदम चिकनी और एक बहुत ही बड़े शीशे के टुकड़े की बनी हुई जान पड़ती थी और चारों तरफ की दीवारें भी शीशे की थी जिसमें कहीं भी जोड़ या दरार

मालूम नहीं पड़ता था.

प्रभाकरसिंह ताज्जुब के साथ देखने लगे कि वह उस विचित्र कमरे में क्योंकर आ पहुँचे, मगर उसी समय उनका ध्यान मालती पर गया जो उनके पास ही बेहोश पड़ी थी मगर अब कुछ - कुछ चैतन्य हो रही थी.

प्रभाकरसिंह की कोशिश से वह भी शीघ्र ही होश में आकर उठ बैठी और ताज्जुब के साथ अपने चारों तरफ देखने लगी.

कुछ देर तक वे चुपचाप रहे क्योंकि घूमने वाली बारहदरी की बदौलत दोनों ही के सिर में बेहिसाब चक्कर अभी तक आ रहे थे मगर जब धीरे - धीरे यह बात दूर हुई तो प्रभाकरसिंह ने मालती से कहा, " मालूम होता है कि हम लोग उसी " शीशमहल ' में आ पहुँचे हैं जिसका जिक्र तिलिस्मी किताब में है " मालती ने चारों तरफ ताज्जुब से देखते हुए कहा, “ जी हाँ, यहाँ हम लोगों को अपने उद्योग से आगे जाने के लिए रास्ता पैदा करना पड़ेगा और बाहर होकर उस शेर पर काबू करना पड़ेगा जो हमें रत्न - मण्डप के दरवाजे तक पहुँचायेगा.

मगर ताज्जुब की बात यह है कि यहाँ इस बात का भी पता नहीं लग रहा है कि हम इस जगह पहुँचे किस तरह?

चारों तरफ शीशा है जो बिल्कुल एक टुकड़ा जान पड़ता है.

कहीं भी कोई जोड़ या निशान नहीं है.

" प्रभा ०:

यही तो मैं सोच रहा हूँ.

आखिर हम लोग यहाँ किसी रास्ते ही से तो आए होंगे?

और जब उस घूमने वाली बारहदरी ने यहाँ तक हमें पहुँचाने के लिए रास्ता पैदा कर लिया तो हम लोग भी जरूर जाने के लिए रास्ता पैदा कर सकते हैं.

अच्छा अब कोशिश करनी चाहिए, बैठे रहने से काम न चलेगा.

प्रभाकरसिंह उठे और इस फिक्रमें चारों तरफ घूमने लगे कि शायद कहीं कोई दरवाजा, छेद या सूराख या पेंच - पुर्जा ऐसा दिख जाय जिसके जरिए इस कमरे से बाहर हुआ जा सके.

मालती ने भी उनका साथ दिया और दोनों आदमी खूब गौर से सब तरफ देखते हुए उस कमरे - भर में घूमने लगे.

मगर एक - एक चप्पा जमीन पर खूब बारीकी से देख जाने पर भी नहीं ऐसी जगह न पाई गई जहाँ यह संदेह भी किया जा सकता कि यहाँ से आगे निकल जाने का कोई रास्ता है अथवा यहाँ पर उद्योग कोई रास्ता पैदा कर सकेगा.

आखिर हारकर दोनों आदमी एक जगह खड़े हो गए और बातचीत करने लगे.

मालती ०:

यहाँ तो कहीं कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ता! प्रभा ०:

बेशक, मगर रास्ता है भी जरूर, नहीं तो उस बारहदरी से यहाँ तक हम लोग पहुंचते ही क्योंकर?

मालती ०:

सो तो सहई है! और फिर तिलिस्मी किताब भी साफ कह रही है कि इस जगह से आगे निकल जाने का रास्ता हम लोगों को खुद पैदा कर लेना होगा प्रभा ०:

एक बात है, अगर इस कमरे में साफ हवा के आने की कोई राह न होती तो यहाँ की हवा एकदम खराब हो जाती.

मगर वैसा नहीं है और इसी से विश्वास करना पड़ता है कि यहाँ साफ हवा के आने - जाने के लिए कोई - न - कोई रास्ता जरूर बना हुआ है.

मालती ०:

बेशक यह बात तो आपने ठीक सोची.

मेरा ख्याल है कि अगर कमरे के छत की हम लोग जाँच कर सकें तो वहाँ कोई - न - कोई सूराख जरूर मिलेगा!

प्रभा ०:

इसकी छत कितनी ऊँची है इसका तो कुछ पता ही नहीं लगता.

सब तरफ शीशा ही शीशा होने से इतनी परछाइयाँ चारों तरफ पड़ रही हैं कि कुछ ठीक मालूम नहीं पड़ता.

प्रभाकरसिंह इस कमरे के छत की ऊँचाई जाँचने का उद्योग करने लगे.

उन्होंने अपने दुपट्टे को लुपेट लुपाट कर उसका एक गेंद सा बनाया और छत की तरफ फेंका.

उनके सिर से लगभग दो हाथ की ऊंचाई तक जाकर ही वह छत के साथ टकरा गया, मगर ताज्जुब की बात यह थी कि छत से टकरा कर वह दुपट्टा नीचे की तरफ वापस नहीं लौटा बल्कि उसी जगह चिपका रह गया.

प्रभाकरसिंह के साथ ही साथ मालती ने भी इस बात को ताज्जुब के साथ देखा और कहा, यह क्या मामला है?

क्या इस कमरे की छत में भी कोई विशेषता है?

" प्रभाकरसिंह ने अपना कमरबन्द जो वहीं पड़ा था उठाया और उसे भी छत की तरफ फेंका, दुपट्टे की तरह वह भी जाकर चिपक गया.

दोनों बड़े आश्चर्य और कौतूहल के साथ सोचने लगे कि आखिर यह क्या बात है मगर देर तक ख्याल दौड़ाने पर भी सिवाय इसके और कुछ न सोच सके कि इसकी छत में लासे की तरह कोई चीज लगी है जो चीज को चिपका रखती है और या फिर उसमें चुम्बक की तरह का ऐसा गुण है जो हर एक चीज को खींच रखने की सामर्थ्य रखता है.

आखिर प्रभाकरसिंह से न रहा गया, उन्होंने अपने दोनों हाथों की हथेलियाँ ऊपर की तरफ की और जोर से ऊपर को उछले, उनके हाथ उस कमरे की छत से जा लगे और ताज्जुब की बात थी कि उस दुपट्टे और कमरबन्द की तरह उनके हाथ भी इस तरह वहाँ चिपक गये कि वे लौट कर नीचे न गिरे बल्कि उसी तरह हाथों के जरिए छत के साथ झूलने लगे.

प्रभाकरसिंह के मुँह से ताज्जुब की एक आवाज निकल गई और वे अपने हाथ उस छत से छुड़ाने के लिए उद्योग करने लगे.

उन्होंने झटके दिए, नीचे को कूदने के लिए जोर लगाया, हाथों को ऐंठा और जोर लगा कर छत से छुड़ा लेना चाहा, मगर उनकी ये सभी कोशिशें बेकार गईं उनके हाथ उस तिलिस्मी छत के साथ कुछ इस तरह चिपक गये थे कि जान पड़ता था मानो अब वहाँ से छूटेंगे ही नहीं वे पाँव फटकारने और नीचे को झटके मारने लगे मगर सब बेकार हुआ.

केवल यही नहीं, मालती और प्रभाकरसिंह को और भी ताज्जुब हुआ जब उन्होंने देखा कि छत धीरे - धीरे ऊँची हो रही है.

प्रभाकरसिंह के पैर जो कमरे के फर्श से पहिले कोई दो हाथ ऊँचे पर थे धीरे - धीरे वे तीन हाथ ऊँचें हुए, चार हाथ हुए, पाँच हाथ और इसी तरह पर ऊँचे होते - होते देखते ही देखते बहुत ही ज्यादा ऊँचाई पर जा पहुँचे.

वे ही प्रभाकरसिंह जो पहिले हाथ छुड़ाने का उद्योग कर रहे थे अब यह सोच कर डरने लगे कि अगर इस समय उस छत ने उनके हाथ छोड़ दिये तो इतने ऊँचे से गिर कर उनकी हड्डी - पसली टूट जायगी.

वे डर और आशंका के साथ अपनी इस भयानक हालत को बेबसी के साथ देखने लगे और उनसे बहुत नीचे खड़ी मालती भी घबराहट और परेशानी के साथ उनकी इस खतरनाक अवस्था को देखने लगी.

आठवा ब्यान।

श्यामा के मकान से निकल कर भूतनाथ सीधे अपने मकान अर्थात नानक की माँ जहाँ रहती थी उधर को रवाना हुआ.

भूतनाथ ने रामदेई के लिए काशी में जो मकान ठीक कियाहुआ था उसमें वह बहुत ही इज्जत और शान के साथ रहती थी। .

खूब आलीशान मकान, जरूरत बल्कि ऐश की सभी चीजों से अच्छी तरह सजा हुआ था दरवाजे पर नौकर - चाकर और पहरेदारों तथा घर में लौंडियों की भी कमी न थी और सरसरी निगाह से देखने पर यही जान पड़ता कि यह किसी अमीर या ओहदेदार का मकान है, इतना जरूर था कि वह मकान कुछ गली के अन्दर पड़ता था.

मगर यह भी भूतनाथ की इच्छानुसार ही था जो अपना यहाँ आना - जाना बहुत गुप्त रखता था.

साधारण रीति से वहाँ के अड़ोसी - पड़ोसी यही जानते थे कि वह किसी रियासत का कोई ऊँचा ओहदेदार है और नौकरी से छुट्टी लेकर कभी - कभी आ जाता है.

इस बात का पता कि वह ऐयार है और ऐयार भी कौन?

भयानक और नामी ऐयार गदाधरसिंह, बहुत कम आदमियों को मालूम था.

भूतनाथ का लड़का नानक इसी मकान में रहा करता था और यहाँ उसकी पढ़ाई - लिखाई और हिफाजत का बहुत अच्छा इन्तजाम था.

जब कभी रामदेई को भूतनाथ अपने साथ लामाघाटी या किसी दूसरी जगह ले जाता था तो नानक उस समय अकेला ही इस मकान में रहता था क्योंकि एक तो नानक होशियार हो गया था दूसरे भूतनाथ अपने असली भेदों को उस पर प्रकट होने देना नहीं चाहता था.

श्यामा के मकान से निकल भूतनाथ इस मकान में पहुँचा जहाँ रामदेई राह देख रही थी.

उसने इसे बड़ी खातिरदारी के साथ लिया और सफर का हालचाल तथा इतने दिन गायब रहने का सबब पूछा जिसके जवाब में भूतनाथ ने कोई बनावटी बात गढ़ कर सुना दी और यह भी कहा कि किसी जरूरी काम से रोहतासगढ़ जा रहा है सिर्फ उससे मिलने ही यहाँ आया है.

रात के समय जब भूतनाथ भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर लेटा तो रामदेई उसके पाँव दबाने लगी.

साथ ही साथ दोनों में बातचीत भी होने लगी.

राम ०:

आपने उस विषय में क्या किया जिसके लिए वादा किया था कि काशी जाऊँगा तो जरूर पूरा करूँगा.

भूत:

वह क्या?

राम ०:

वही तिलिस्मी किताब! आपने कहा था कि इस बार वह किताब लाकर तिलिस्म की सैर जरूर करा देंगे.

भूत:

ठीक है, मुझे याद आया, मैं वादा कर चुका हूँ, तो उस काम को पूरा तो करुंगा ही, मगर एक बार फिर मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम इस फेर में मत पड़ो.

तिलिस्मी मामलों में दखल देना हमारे - तुम्हारे ऐसे मामूली आदमियों का काम नहीं है.

वह बड़ी भयानक जगह होती है और वहाँ कदम - कदम पर जान जोखिम रहती है.

अभी इसी दफे मैं जरा - सा चूक गया और ऐसी तवालत में पड़ गया कि बस जान जाने में कुछ ही क़सर रह गई थी! राम ०:

(चौंक कर) सो क्या! आप किसी मुसीबत में पड़ गये थे?

भूत:

हाँ, कुछ पूछो नहीं, जमानिया से यहाँ आने के रास्ते ही में एक कुआं पड़ता है जिस पर मैं अक्सर सुस्ताने और जल पीने के लिए रुक जाया करता हूँ.

मुझे कुछ भी पता न था कि उस कुएँ का तिलिस्म से कोई सरोकार है पर इस बार मालूम हो गया कि बात ऐसी ही है.

राम ०:

(आश्चर्य से) क्या हुआ जरा मैं तो सुनूँ?

भूतनाथ ने बात टालनी चाही परन्तु रामदेई ने इतनी जिद्द की कि कुछ उलटफेर के साथ उसने इस तरह वह हाल सुनाना शुरू किया:

भूत ०:

यहाँ से जमानिया के रास्ते पर वह कूओं बहुत ही बड़ा और आलीशान है और उसमें अथाह पानी है, पानी मीठा भी बहुत है और आस - पास पेड़ों की घनी छाया होने के कारण मुसाफिर अक्सर खास कर गर्मियों में कुछ घण्टे वहाँ काटा करते हैं जिससे कभी - कभी अच्छी चहल - पहल हो जाती है.

इस बार मैं उस जगह पहुँचा तो रात हो गई थी.

मेरी तबीयत हुई कि रात इसी कुएँ पर बिताऊँ और खतरनाक जंगल को सुबह होने पर काटूं.

यही सोच मैं उस कूएँ की तरफ बढ़ा मगर कुछ दूर ही था कि गाने की आवाज सुनाई पड़ी और देखा तो मालूम हुआ कि कूएं की जगत पर एक औरत बैठी गा रही है.

राम ०:

(ताज्जुब से) औरत! भूत ०:

हॉ.

राम ०:

(कौतूहल से) अच्छा तब?

भूत ०:

मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि रात के वक्त इस सूनसान भयानक जंगल में अकेले बैठी बेडरक गाने वाली वह कौन है, और उसे देखने के विचार से मैं कुछ नजदीक होकर एक पेड़ की आड़ में हो गया.

यकायक वह अपनी जगह से उठी और कुएँ के पास जा अन्दर झाँक कर बोली, “ कूपदेव मुझे पानी तो पिलाओ! " इतना कहने के साथ ही उस कुएँ के अन्दर से एक हाथ निकला जिस पर पानी से भरा हुआ एक चाँदी का कटोरा रक्खा था.

राम ० हैं, यह आप क्या कह रहे हैं ।

भूत:

मैं बहुत ठीक कह रहा हूँ, उस औरत का हुक्म पाते ही उस कुएँ में से एक हाथ पानी लिए हुए निकल पड़ा.

राम ०:

बड़े ताज्जुब की बात है! अच्छा तब?

.

भूत ०:

पानी पीकर वह औरत फिर अपने ठिकाने आ बैठी गाने लगी.

मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ, यहाँ तक कि मैं अपने को रोक न सका और उससे कुछ पूछने के इरादे से उसके पास जा पहुँचा.

राम ०:

(मुस्करा कर) सच कहिए, क्या वह औरत खूबसूरत थी?

भूत ०:

(हँस कर) हाँ, बड़ी ही खूबसूरत और नौजवान भी! यही कोई पैंतालीस बरस की!
राम ०:

ओह, अच्छा तब क्या हुआ?

भूत:

मगर मुझे पास आते देखते ही वह उठ खड़ी और चिल्ला कर कुएँ में कूद गई.

राम ० हैं! फिर !! भूत:

मुझे यह देख और ताज्जुब हुआ.

मैं कुएँ में झाँक कर देखने लगा कि यह औरत क्या अपनी जान देने के लिए उसमें कूद गई है या उसके अन्दर कहीं कोई सुरंग या छिपी जगह है, मगर मेरे ताज्जुब का कोई हद न रहा जब मैंने देखा कि कुआं सुखा पड़ा है और नीचे जमीन तक दिखाई पड़ रही है.

मुझसे यह देखा न गया और मैं कमन्द लगा कर कुएँ में उतर गया.

भीतर उतर के देखता क्या हूँ कि सतह के पास इधर - उधर कितनी ही सुरंगें बनी हुई हैं.

राम ०:

(आश्चर्य से) कूएँ में सुरंगें !! भूत ०:

हाँ, और मैं उसमें से एक के अन्दर घुस गया, घुसने के साथ ही पीछे का दरवाजा बन्द हो गया और मैं उस जगह कैद हो गया.

राम:

राम राम !! तब क्या हुआ?

आप कैसे छुटे?

भूत:

मैं आगे की तरफ बड़ा और बहुत दूर जाने के बाद एक मकान में पहुँचा.

वहाँ एक बाबाजी से मुलाकात हुई, उन्होंने बड़ी कृपा कर मुझे उस जगह से बाहर निकाला नहीं तो कोई उम्मीद जीते बाहर आने की न थी। .

राम:

ओफ ओह, यह तो बड़े ताज्जुब की बात आपने सुनाई, मैं तो सुन कर डर गई! मगर क्या इससे आप समझते हैं कि वह कुआँ भी कोई तिलिस्मी है?

भूत ०:

यदि तिलिस्म नहीं तो तिलिस्म से कोई - न - कोई सरोकार तो उससे जरूर ही है क्योंकि बाहर निकलने के बाद पुनः लौट कर जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा फिर पहिले की तरह अथाह पानी भरा है, आखिर मैं पुनः कभी उस कुएँ पर न जाने की कसम खाके वहाँ से हटा और सीधा तुम्हारे पास चला आ रहा भूतनाथ ने बहुत कुछ उलट - फेर के साथ जो किस्सा रामदेई को सुनाया उससे उसे यकीन था कि तिलिस्म देखने का उसका विचार बदल जायगा मगर असर इसका उलटा ही हुआ.

रामदेई के मन में तिलिस्म देखने की अभिलाषा और भी जाग उठी और उसने निश्चय कर लिया कि चाहे जो हो एक बार तिलिस्म की सैर जरूर ही करूँगी.

वह बोली, " राजा वीरेन्द्रसिंह के पास जो किताब है वह भी तो किसी तिलिस्म का ही हाल - चाल बताती है?

" भूत ०:

सुनने में तो यही आता है कि राजा साहब को चुनार का तिलिस्म तोड़ने पर यह किताब हाथ लगी थी और उसमें किसी दूसरे बहुत ही भयानक और विचित्र तिलिस्म का हाल लिखा हुआ है.

रामदेई ०:

ऐसा?

तब तो आप मुझे जरूर ही एक बार उसे दिखा दीजिए !! भूत ०:

अरे! अभी न मैंने तुम्हें सुनाया कि तिलिस्म कैसी भयानक जगह होती है और फिर तुम वही बात कहती हो?

राम ०:

(जिद्द के साथ) नहीं नहीं, आपकी बातें सुन कर तो मेरा शौक और भी बढ़ गया! अब आप जैसे भी हो सके मुझे तिलिस्म दिखा ही दीजिए, मैं बिना देखे न मानूंगी !!
भूतनाथ ने तरह - तरह की बातें कह कर रामदेई का मन इस तरफ से हटाना चाहा मगर वह तो एकदम ही मचल गई और बच्चों की तरह जिद्द कर बैठी कि चाहे जो भी हो तिलिस्म देखूगी ही, आखिर जब उसने रोना शुरू कर दिया तो भूतनाथ अपने को

सम्हाल न सका क्योंकि इसमें शक़ नहीं कि वह रामदेई को बहुत ही ज्यादा प्यार करता था और कोई भी आदमी, खास करके जो अपने को बहादुर लगाता हो अपनी प्रेयसी के आँसू बर्दाश्त नहीं कर सकता फिर भूतनाथ तो अपने को सिर्फ बहादुर ही नहीं परले सिरे का ऐयार भी मानता था.

उसने रामदेई को समझाने की कोशिश की पर उसने झुंझला कर भूतनाथ का हाथ झटकते हुए कहा, " जाइये हटिये! मैं समझ गई कि आप कितने बहादुर और कैसे नामी ऐयार हैं! अपने मुँह मियाँ मिठूं तो सभी बना करते हैं, लेकिन कुछ करके दिखाने वाला मुश्किल निकलता है.

आपकी ऐयारी की हद्द बस मैं जान गई, जाइए, जाइए, औरतों के हाथ की मार खाइये और दारोगा की गालियाँ सुनिये.

मेरी भला आप क्यों सुनेंगे?

मैंने गलती की जो आपकी इस प्रतिज्ञा पर विश्वास कियाकि मैं जरूर वह किताब लाकर तुम्हें तिलिस्म की सैर कराऊँगा ', मैं जान गई कि राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के डर के मारे आप वह किताब नहीं लाते! " इतना सुनते ही भूतनाथ तैश में आ गया क्योंकि वह सब कुछ बर्दाश्त कर सकता था मगर अपनी ऐयारी में बट्टा या बहादुरी में कलंक लगना नहीं बर्दाश्त कर सकता था.

रामदेई की बात सुन बह दमक उठा और चमककर बोला, " जब तुम यह समझती हो कि मैं डर के सबब से या बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का खौफ खाकर वह किताब नहीं ला रहा हूँ तो लो, अब जैसे होगा वैसे मैं उसे तुम्हारे हाथ में लाकर दम लूँगा.

रामदेई ने खुशी के भाव को छिपाते हुए कहा, " जाइए - जाइए, आपकी बात पर अब मैं यकीन नहीं करती! आप रोज ऐसे ही झूठे वादे करके मुझे फुसला दिया करते हैं!
भूत:

नहीं - नहीं, मैं सच कहता हूँ कि वह किताब तुम्हारे हाथ में लाकर दे ही दूंगा और उसके बाद अगर तुम्हारी तबीयत तिलिस्म की सैर करने की हुई तो वह भी करा दूंगा !!
रामदेई:

(खुशी के साथ) क्या तुम सच कहते हो?

भूत ०:

हाँ, तुम्हारी कसम सच कहता हूं.

रामदेई:

(नखरे से) मेरी कसम क्यों खाते हो, क्या मैं कुछ फिजूल की आई हुई हूँ! अगर सचमुच ही अपना वादा पूरा करना है तो अपना खंजर हाथ में लेकर खाओ तब मुझे विश्वास हो, -नहीं तो मैं आपकी कसमों पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं करने की! आप दुर्गा की शपथ खाइए और यह भी कि कितने दिन के अन्दर यह काम करेंगे?

भूत:

अब तुम मुझसे दुर्गा की कसम तो न खिलबाओ, पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जरूर अपना वादा पूरा करूँगा.

राम ०:

(सिर हिलाकर) मैं मानती ही नहीं, यह आप उससे कहिए जिसे आप पर विश्वास हो !! आखिर रामदेई की जिद्द से लाचार भूतनाथ को उसी समय उसके कहे मुताबिक खंजर हाथ में लेकर प्रतिज्ञा करनी पड़ी कि वह एक महीने के अंदर बीरेन्द्रसिंह के महल से तिलिस्मी किताब (रिक्तगन्थ) लाकर रामदेई को तिलिस्म की सैर करा देगा.

तब रामदेई का चेहरा प्रसन्नता से खिल गया और इसके बाद दोनों में दूसरे तरह की बातें होने लगीं.

दूसरे दिन दो घंटा सूरज डूबने के बाद भूतनाथ अपने घर से बाहर निकला और श्यामा के मकान की तरफ रवाना हुआ, मगर इस समय इतने तरह के खयालात उसके मन में चल रहे थे और उनमें वह इस कदर डूबा हुआ था कि वह किधर जा रहा है इसकी भी उसे होश न थी.

फिर भी वह ठीक रास्ते पर था और थोड़ी देर बाद जब उसने गौर के साथ चारों तरफ निगाह की तो अपने को उस तिरमुहानी पर पाया जहाँ से एक पतली गली सीधी श्यामा के मकान के पास निकल गई थी.

भूतनाथ उस गली में घुसा मगर मुश्किल से दस ही बारह कदम रखे होंगे कि इसे मालूम हो गया कि वह गली में अकेला नहीं है बल्कि उसके आगे आगे दो आदमी और भी चले जा रहे हैं.

चूंकि इस गली में दिनरात के वक्त भी मुसाफिरों और चलने वालों का अभाव ही रहता था, क्योंकि इसमें मकान ज्यादा न थे, इसलिए भूतनाथ कौतूहल के साथ सोचने लगा कि ये लोग कौन हैं और किस जगह या किस आदमी की खोज में हैं.

मगर उसको बहुत ताज्जुब हुआ जब उसने देखा कि ये आदमी ठीक उसी मकान के नीचे जाकर खड़े हो गए जो श्यामा का था और जिसमें वह पिछले कई दिन श्यामा के साथ काट चुका था.

तुरंत ही भूतनाथ के शक्की दिमाग में तरह - तरह के खयाल दौड़ने लगे और वह आगे बढ़कर उन लोगों के पास पहुँचने के बजाय पीछे हटकर एक तरफ आड़ में हो गया और गौर से इन दोनों की कैफियत देखने लगा.

जहाँ पर वह था वहाँ से उन दोनों की बातचीत तो सुनायी नहीं पड़ सकती थी मगर वे लोग जो कुछ करते वह साफ दिखाई पड़ सकता था क्योंकि एक खुली खिड़की की राह आती हुई रोशनी उन दोनों ही पर पड़ रही थी.

भूतनाथ के सामने ही उन आदमियों में से एक ने एक ऊपर खिड़की की तरफ इशारा करके कुछ बताया और दूसरे ने उसे सुन अपने जेब से एक सीटी निकालकर होंठों से लगाई मगर बजाने न पाया था कि पहले आदमी ने हाथ बढ़ाकर सीटी उसके मुंह पर से हटा दी और कान में कुछ कहकर अपने हाथ की कोई चीज उसे दिखलाई.

दोनों में कुछ बातें हुईं और तब वह चीज श्यामा वाले मकान के दरवाजे के अन्दर डाल वे दोनों पीछे की तरफ लौट पड़े, भूतनाथ को उनकी कार्रवाई पर बहुत ताज्जुब हुआ और वह इस फिक्र में पड़ गया कि इस बात का पता लगाए कि ये दोनों आदमी कौन हैं और श्यामा के मकान पर क्या करने आये या क्या कर चले हैं.

अस्तु जैसे वे दोनों उसके बगल से गुजरे उसने आगे बढ़ कर एक - एक कलाई उन दोनों ही की पकड़ ली और डपट के पूछा " तुम लोग कौन हो और उस दरवाजे पर खड़े क्या कर रहे थे?

यकायक भूतनाथ को सामने देख एक दफे तो वे घबड़ा गये मगर फौरन ही अपने पर काबू कर एक ने कड़े स्वर से कहा, " हम लोग कोई हो तुम्हें इससे क्या मतलब! तुम हमसे जवाब तलब करने वाले कौन?

" भूतनाथ ने कड़े स्वर में कहा, " मेरा नाम गदाधरसिंह है और मैं तुम दोनों का असली हाल जाने बिना किसी तरह तुम्हें छोड़ नहीं सकता.

" भूतनाथ को उम्मीद थी कि उसका नाम सुनते ही ये दोनों डर जायेंगे और नर्म पड़ कर सब हाल सुना देंगे मगर उन पर इसका असर उलटा ही हुआ.

इसकी बात सुनते ही वे दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े और एक ने कहा, " ओहो, गदाधरसिंह तुम्हीं हो! तब तो हम लोग बड़ी खुशी से अपना हाल सुनाबेगे क्योंकि तुम्हीं को खोजते हुए तो यहाँ तक आए ही थे! " भूत ०:

(कुछ ताज्जुब से) अच्छा तो बताओ तुम कौन हो?

एक ०:

अच्छा सुनो, लेकिन डरना नहीं.

हिम्मत के साथ सुनना, मैं अपना परिचय तुम्हें देता हूँ, मैं वह अँधेरी रात हूँ जिसमें भयानक काम किये जाते हैं, मैं वह जहर से बुझी कटार हूँ जिससे रिश्तेदारों का खून कियाजाता है, मैं वह भयानक दगा हूँ जिसकी मदद से दोस्त मौत के घाट उतारे जाते हैं और मैं वह काला सॉप हूँ,

दूसरा ०:

(पहिले को रोककर) अब मुझे भी अपना कुछ परिचय दे लेने दो! सुनो गदाधरसिंह! मैं वह जमींदोज कोठरी हूँ जिसमें दोस्त और रिश्तेदार मार डालने के बाद दफना दिये जाते हैं.

मैं वह दौलत हूँ जो ऐसे दुष्कर्म करके मिलती है, मैं वह हीरे का कंठा हूँ जो बेकसूरों की जान लेने पर.

पहिला ०:

(दूसरे को रोक कर) और मैं वह दिल का दाग हूँ जो इन कामों का फल है, मैं वह नरक की आग हूँ जो इन दुष्कर्मों का इनाम है, और मैं वह काली परछाई हूँ जो ऐसा काम करने वालों का साथ घड़ी भर के लिए भी नहीं छोड़ती.

भूत ०:

(ताज्जुब के साथ, जिसके साथ कुछ घबराहट और बेचैनी भी मिली हुई मालूम होती थी) आखिर इन पहेलियों का मतलब क्या है?

तुम लोग साफ क्यों नहीं बताते कि तुम कौन हो! दूसरा ०:

क्या तुम्हें अभी तक नहीं मालूम हुआ कि हम लोग कौन हैं! अच्छा तो मैं और भी साफ तौर पर परिचय देता हूं क्या तुम्हें उस जगह की याद है जहाँ भयानक नरपिशाच की मूरत बैठी हुई थी?

क्या तुम्हें वह चिल्लाहट याद है जो मासूम औरत के लाचार गले से निकली थी?

और क्या तुम्हें वह गुप्त रास्ता याद है जो इस खून के बाद हमेशा के लिए बन्द कर दिया गया?

भूत:

(जिसकी आवाज से साफ जान पड़ता था कि घबड़ा गया है) मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि यह क्या बेसिर - पैर की बातें तुम कर रहे हो और इनके कहने का नतीजा क्या है?

पहिला ०:

बेसिर - पैर की बातें?

क्या वह तलबार फजूल थी जिससे उस बेचारी की गरदन काटी गई?

क्या वह हीरे का कंठा फजूल था जिसे यह काम करके तुमने पाया, क्या वे कई लाख के तोड़े फजूल थे जो रवाना होते वक्त तुम्हारी सबारी के साथ कर दिये थे?

या क्या वह अंगूठी फजूल थी जिसका रंग किसी मरने वाले के खून की तरह लाल था.

भूत ०:

(जिसकी बेचैनी और बदहवासी बढ़ती जा रही थी) मालूम होता है कि तुम लोग किसी गुप्त घटना की तरफ इशारा कर रहे हो! मगर खैर, मैं यह सब दास्तान सुनना नहीं चाहता बल्कि तुम्हारे नाम जानना और सूरतें देखना चाहता हूँ,

दूसरा ०:

अच्छा पहिले मैं अपना नाम सुनाता हूँ, मगर देखो जरा सम्हले रहना, घबड़ा न जाना! मेरा नाम सेठ चंचलदास है! है, यह तुम्हारी क्या हालत हो रही है! तुम कॉप क्यों रहे हो?

पहिला ०:

और मेरा नाम सुनोगे?

मुझे लोग कहते भूतनाथ की तरफ झुक कर धीरे से उस आदमी ने न जाने क्या कह दिया कि भूतनाथ एकदम ही चिहुंक पड़ा, दूसरे ही क्षण उसकी यह हालत हो गई कि काटों तो बदन से लहू न निकले, एकदम सकते की - सी हालत में खड़ा वह नीचा सिर किए न - जाने क्या सोचने लगा वे दोनों आदमी उसकी यह हालत देख मुस्कुराने लगे और कुछ देर चुप रहने बाद बोले एक ०:

क्यों गदाधरसिंह तुम चुप क्यों हो गए?

क्या कुछ सोच रहे हो?

दूसरा ०:

या किसी गुजरे हुए जमाने की याद ने तुम्हारा सिर नीचा कर दिया है.

भूतनाथ ने एक लम्बी साँस लेकर कहा, " तुम लोग चाहे कोई भी हो मगर इसमें शक नहीं कि वह भयानक भेद जिसे मैं बरसों से अपने दिल के अन्दर छिपाए हुए था किसी तरह पर तुम लोगों को मालूम हो गया है, लेकिन खैर, गदाधरसिंह मुर्दा नहीं हो गया है, अभी उसमें अपने दुश्मनों से बदला लेने की ताकत है.

अभी भी उसके हाथ मजबूत हैं, अभी भी उसमें तुम लोगों को अपने काबू में कर लेने की ताकत है.

(डपट कर) सच बताओ कि तुम कौन हो और यह भेद तुम पर कैसे प्रकट हुआ?

, एक ०:

(हँस कर) हम इतना कह गये और तुम यह भी जान न सके कि हम कौन हैं! अच्छा मैं अपना और कुछ परिचय तुम्हें देता हूँ, भयानक रात एकदम काले बादलों से ढंकी हुई थी जिस समय वह सांडवी सवार उस बेचारी औरत को लेकर .

.

.

भूत ०:

(डरता हुआ मगर डाट कर) चुप रहो, व्यर्थ की बकवास न करो, तुम अपना असली नाम बताओ और सूरत मुझे दिखाओ, ठहरो मैं रोशनी करता हूं।

दूसरा ०:

तुम तकलीफ न करो, हम लोग खुद ही अपनी शक्ल तुम्हें दिखाया चाहते हैं ताकि तुम्हें अपने पिछले पाप याद आ जायें और मरने के पहिले तुम जान जाओ कि बूरे कर्मों का फल सभी को भोगना पड़ता है.

कहते हुए उस आदमी ने अपने कपड़ों के अन्दर हाथ डाला.

भूतनाथ चौकन्ना हुआ कि शायद वह कोई हथियार निकाल कर उस पर वार करे और इसीलिए उसका भी हाथ अपने खंजर पर गया, मगर ऐसा न हुआ.

उस आदमी ने अपनी कमर से सामान निकाल कर एक मोमबत्ती बाली जिसकी कॉपती हुई रोशनी उनके चेहरों पर पड़ी जिन पर नकाबें पड़ी हुई थीं.

उन दोनों ने भूतनाथ को कोई सवाल करने का मौका न दिया.

रोशनी होने के साथ ही एक ने अपने चेहरे की नकाब हटाई और भूतनाथ से कहा, " लो पहिले मेरी सूरत देखो! " भूतनाथ ने ताज्जुब और गौर की निगाह उसके चेहरे पर डाली और इसके साथ ही झिझक कर दो कदम पीछे हट गया.

टूटे - फूटे रूप में ये शब्द उसके मुंह से निकले, हैं! तुम यहाँ! तब क्या सचमुच ही वह गुप्त भेद प्रकट हो गया! नहीं नहीं, जरूर मेरी आँखें मुझे धोखा दे रही हैं! तुम्हें मरे बरसों हो गए! तुम यहाँ कैसे आ सकते हो! " भूतनाथ ने दोनों हाथों से अपनी आँखें बन्द कर ली और पीछे हट कर दीवार के साथ लग गया.

उसका चेहरा पीला पड़ गया था, बदन कॉप रहा था और वह लम्बी साँसे ले रहा था.

उसकी हालत देख उन दोनों आदमियों ने एक - दूसरे की तरफ देख इशारे में कुछ बात की और तब वह दूसरा आदमी बोला, " लो होशियार हो जाओ, अब मैं अपनी सूरत दिखाता हूं.

" भूतनाथ ने अपने कॉपते हुए हाथों को हिला कर कहा, " नहीं - नहीं, अब मैं कोई सूरत देखना नहीं चाहता! मैं समझ गया कि तुम कौन हो! " परन्तु वह आदमी बोला.

“ नहीं सो नहीं होगा, जब तुमने मेरे साथी की सूरत देखी है तो मेरी भी देखनी होगी! लो सम्भलो! " कह कर उसने भी अपने चेहरे पर की नकाब अलग कर दी.

उस पहिले आदमी की सूरत ने तो भूतनाथ को बदहवास कर ही दिया था अब इस दूसरी शक्ल ने उसके रहे - सहे होशहवास भी गुम कर दिए.

घबराहट में भरे हुए ये दो - चार शब्द उसके मुंह से निकले- हैं! तुम भी जिन्दा हो?

न .

.

.

या सचमुच .

.

.

.

.

.

.

.

मैं कहीं का .

.

.

.

.

" और तब बेहोश होकर उसी जगह गिर गया.

नौवा व्यान।

अर्जुनसिंह को अपने मकान में छोड़ इन्द्रदेव एक तेज घोड़े पर सवार होकर लोहगड़ी की तरह रवाना हुए.

संध्या होने में कुछ ही देर रह गई थी जब वे वहाँ पहुँचे और घोड़े को पेड़ों की एक झुरमुट में बाँधने के बाद लोहगड़ी की तरफ बढे, टीले पर पहुँच मामूली तर्कीब से रास्ता खोला और इमारत के अन्दर चले.

शीघ्र ही इन्द्रदेव उस बीच वाले लोहे के बने मकान के पास जा पहुंचे जिसके कमरे और कोठरियों की छानबीन करने पर उन्हें यह निश्चय हो गया कि प्रभाकरसिंह या सरयू! यहाँ नहीं है, अस्तु अब वे उस सुरंग में घुसे जहाँ से तिलिस्म के अन्दर अथवा उस घाटी में जाने का रास्ता था जिसका हाल हम ऊपर कई जगह लिख आये हैं.

हम नहीं कह सकते कि ऐसा करने से उनका असल अभिप्राय क्या था क्योंकि इतना तो वे बखूबी समझते ही थे कि प्रभाकरसिंह लोहगड़ी के तिलिस्म का हाल बिल्कुल नहीं

जानते और इसीलिए सरयू को लेकर उनके तिलिस्म के अन्दर चले जाने की सम्भावना बहुत ही क़म है.

पहिले के सब दरवाजे तो मामूली तरह पर खुलते चले गए मगर जब इन्द्रदेव आखिरी दरवाजे पर पहुँचे जिसके खुलने से तिलिस्मी घाटी सामने दिखाई पड़ती थी तो वह दरवाजा मामूली तरक़ीब करने से न खुला.

ताज्जुब के साथ पुनः उद्योग कियामगर फिर भी जब रास्ता न खुला तो इन्द्रदेव पीछे हट ताज्जुब के साथ सोचने लगे कि यह क्या मामला है और दरवाजा क्यों नहीं खुल रहा है.

बहुत कुछ सोचा मगर इसके सिवाय और कुछ समझ में न आया कि किसी ने भीतर से कोई तरकीब कर दी है जिससे दरवाजा नहीं खुलता.

कुछ सोचते हुए इन्द्रदेव वहाँ से वापस लौटे.

वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ एक त्रीरमुहानी की तरह पर रास्ता था अर्थात एक नया रास्ता दाहिनी तरफ को निकल गया था.

इन्द्रदेव इसमें घुसे.

पाठक इसको बखूबी जानते हैं क्योंकि यह वही रास्ता था जिसकी राह हेलासिंह सरयू को ले भागा था, जिसमें प्रभाकरसिंह ने उसका पीछा कियाथा , अथवा जहाँ से एक बाग में पहुँच तिलिस्मी शैतान से उन सभों की भेंट हुई थी.

ताज्जुब की बात थी कि पहिले रास्ते की तरह उस सुरंग के बीच में पड़ने वाले भी और सब दरवाजे तो खुलते चले गये मगर जब आखिरी अर्थात वह दरवाजा मिला जिसे खोलने पर वह बाग मिलता था जिसमें तिलिस्मी शैतान और प्रभाकरसिंह की लड़ाई हुई थी तो वह दरवाजा भी इन्द्रदेव के खोले न खुला.

कई तरह की तरक़ीब की मगर कोई असर न हुआ और इन्द्रदेव को विश्वास कर लेना पड़ा कि लोहगड़ी के तिलिस्म के अन्दर जाने के लिए इस समय कोई तरक़ीब नहीं हो सकती.

वे कुछ ताज्जुब के साथ यह कहते हुए पीछे की तरफ लौटे, " यह क्या मामला है?

इसका तो दो ही सबब हो सकता है या तो भीतर से सब दरवाजों को बन्द कर देने की कोई चीज की गई है और - या फिर - यह तिलिस्म टूट रहा है! " आखिरी बात कहते - कहते इन्द्रदेव कुछ गौर में पड़ गये और स्पष्ठ स्वर में उनके मुंह से निकला, " क्या यही बात तो नहीं है! इस तिलिस्म की उम्र समाप्त तो हो ही चली थी.

कौन ठिकाना मालती और प्रभाकरसिंह .

.

.

" यकायक वे रुक गये क्योंकि उन्हें ऐसा जान पड़ा मानो कोई उस सुरंग में आ रहा है.

उन्होंने आहट पर गौर किया और अन्दाज से पता लगाया कि दो आदमी आपस में धीरे - धीरे बातें करते इसी तरफ को आ रहे हैं.

ये लोग कौन है, यह जानने के विचार से इन्द्रदेव का इरादा हुआ कि कहीं आड़ में छिप कर इन्हें देखना चाहिए पर उस पतली सुरंग मे आड़ या छिपने की जगह हो ही कहाँ सकती थी.

फिर भी इधर - उधर देखते - देखते यकायक उन्हें कोई बात याद आ गई और वे अपनी जगह से पीछे हटे.

दस - बारह कदम लौट जाने बाद दाहिनी तरफ की दीवार में एक छोटा ताक दिखाई पड़ा जिसमें कोई मूरत बैठाई हुई थी.

इन्द्रदेव ने उस मूरत के साथ कुछ कियाजिससे बगल की दीवार की एक पटया घूम कर पीछे हट गई और एक तंग रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

इन्द्रदेव उसी में घुस गये और तुरन्त ही वह रास्ता बन्द हो गया.

जिस जगह अब वे थे वह एक बहुत ही छोटी कोठरी थी जिसमें मुश्किल से पाँच - छः आदमी खड़े हो सकते थे मगर यहाँ की दीवार में दो - एक छेद इस तरह के बने हुए थे जिनकी राह बाहर सुरंग का हाल देखा जा सकता था.

इन्द्रदेव इन्हीं छेदों की राह बाहर की आहट लेने लगे.

ये छेद इतनी कारीगरी से बने हुए थे कि सुरंग से आने - जाने बालों को इनका गुमान भी नहीं हो सकता था.

थोड़ी देर बाद बातचीत की आवाज ने इन्द्रदेव पर प्रकट कर दिया कि ये आने वाली दो औरतें हैं जो आपस में बातें करती हुई धीरे - धीरे चली आ रही हैं.

इन्द्रदेव ने उनकी आवाज पर गौर करके उन्हें पहिचानना चाहा परन्तु ऐसा न कर सके क्योंकि स्वर पहिचाना हुआ न था, सूरत देख कर पहिचानना चाहा मगर वह भी न हो सका क्योंकि दोनों के चेहरों पर नकाबें पड़ी हुई थीं.

हाँ उनकी बात - चीत का जो अंश इन्द्रदेव के कान में पड़ा वह ताज्जुब दिलाने वाला जरूर था.

उनमें से एक ने कहा, " भूतनाथ की सारी ऐयारी भूल जायगी और वह भी याद करेगा कि किसी से वास्ता पड़ा था! " जिसके जवाब में दूसरी ने कहा, “ इसमें क्या शक है?

उसका यह जो भेद हम लोगों को मालूम हुआ है उसके जरिये हम लोग उसे अच्छी तरह नचा सकती हैं! " इतना कहती हुई दोनों आगे बड़ गईं और इन्द्रदेव उनकी बातों के इतने टुकड़े पर गौर करते हुए सोचने लगे कि ये दोनों कौन हो सकती हैं, खैर देखना चाहिए तिलिस्म के अन्दर जाती हैं या मेरी तरह वापस लौटती हैं.

मगर जब मैं तिलिस्म में न जा सका तब इनका चले जाना ताज्जुब की ही बात होगी.

इन्द्रदेव का खयाल ठीक निकला और थोड़ी देर बाद वे दोनों वापस लौटती दिखाई पड़ीं.

सुरंग वाले दरवाजे के न खुलने के सम्बन्ध में दोनों में आश्चर्य की बातें हो रही थीं.

इन्द्रदेव ने यह मौका अच्छा समझा और जब वे उस जगह से कुछ आगे बड़ गई जहाँ वे छिपे हुए थे तो ये बाहर निकल आये और उस जगह को बन्द कर दबे पाँव धीरे - धीरे उनके पीछे - पीछे जाने लगे.

उनकी बातचीत का जो अंश सुनाई पड़ता था उसे गौर के साथ सुनते भी जाते थे.

यद्यपि साफ तो नहीं सुनाई पड़ता था क्योंकि फासला ज्यादे था और वे दोनों बातें भी धीरे - धीरे कर रही थीं फिर भी जो कुछ सुनाई पड़ जाता था वह भी इन्द्रदेव को चौंका देने के लिए काफी था.

एक ०:

खैर कोई हर्ज नहीं, इतने ही से हम लोग भूतनाथ को वह तमाशा दिखा देंगी कि वह भी याद करेगा.

दूसरी ०:

लेकिन इतना समझे रहो कि यह काम है बड़ा खतरनाक! अगर उसे जरा भी मालूम हो गया कि इस पर्दे के भीतर हम दोनों छिपी हुई हैं तो वह हमें कदापि जिन्दा न छोड़ेगा.

एक ०:

(लापरवाही से) अजी अपने उस पुराने पाप के बारे में दो बातों को सुनते ही तो वह अधमरा हो जायगा, तुम्हारा ख्याल कहां है! और फिर हम लोग सब तरह से होशियार रहेंगी, कुछ सहज में थोड़ी ही उसके कब्जे में आ जायंगी! क्या बताऊँ जो कागजात घाटी में गाड़ आई हूँ वे कहीं मिल जाते तो इसी समय सब बखेड़ा तय हो जाता और एक ही बार में भूतनाथ हम लोगों का गुलाम बन जाता मगर कम्बख्त दरवाजा ही नहीं खुला !! दूसरी ०:

आखिर उन कागजों में था क्या सो भी तो कुछ बताओ?

पहिली ने इसके जवाब में झुक कर जो कुछ कहा उसे इन्द्रदेव बिल्कुल सुन न सके मगर इतना जरूर जान गये कि वह कोई बहुत गूढ़ बात थी क्योंकि उसे सुनते ही वह दूसरी औरत चौंक पड़ी और ताज्जुब के साथ बोली, “ क्या तुम ठीक कह रही हो?

" इसके जवाब में उसने कहा, " हाँ बिल्कुल ठीक! " और तब दोनों की बातचीत बन्द हो गई क्योंकि सुरंग का मुहाना आ गया था और उस जगह का दरवाजा खोलने में वह पहिली औरत लग गई थी.

दरवाजा खोल कर वे दोनों औरतें बाहर निकल गई और लोहगड़ी के ऊपर वाली इमारत के एक दालान में जा बैठीं, छिपते और उनकी निगाहों से बचते हुए इन्द्रदेव भी सुरंग के बाहर निकले और उस दालान के बगल वाली एक कोठरी में जा पहुँचे क्योंकि इन्हें बड़ा कौतूहल यह जानने का हो रहा था कि वास्तव में ये दोनों कौन हैं और भूतनाथ से इन्हें क्या दुश्मनी है.

मगर उनका कौतूहल ताज्जुब में बदल गया जब उन्होंने इन दोनों की सूरतें देखीं क्योंकि इस समय दोनों ही ने अपनी अपनी नकाबें उलट दी थीं और अपने पास से सामान निकाल सूरतों पर रंग भरने का उद्योग कर रही थीं.

इन दोनों की असली सूरतें देखते ही इन्द्रदेव पहिचान गये कि इनमें से एक तो शेरअलीखाँ की लड़की गौहर है और दूसरी हेलासिंह की बेटी मुन्दर , उनके मुँह से ताज्जुब के साथ निकल गया, “ अरे.

ये दोनों शैतान की बच्चियाँ यहां !! " मगर इसके साथ ही उनके मन में और भी बहुत - सी बातें घूम गईं.

उन्हें याद आया कि मालती ने जो तिलिस्मी किताब जमीन में गाड़ी जाती देखी और बाद में निकाली थी तथा उसके साथ जो बहुत - से कागजात भी पाये थे उनके गाड़ने वाले दो मर्द और एक औरत थे.

वे समझ गए कि हो न हो वह काम हेलासिंह और मुन्दर का ही होगा, इसके साथ ही उनकी विचार - प्रणाली का ढंग भी बदल गया और वे कुछ नई बातें सोचने लगे.

इसी बीच मुन्दर और गौहर जो इस बात से बिल्कुल बेखबर थीं कि उनके पास ही में कोई छिपा खड़ा उनकी सब कार्रवाई देख - सुन रहा है, अपनी सूरत बदलने में मशगूल थीं.

उन दोनों ही के सामने एक - एक तस्वीर और एक - एक शीशा था और वे शीशे में देख - देख अपनी शक्ल उन्हीं तस्वीरों जैसी बना रही थीं, मगर वे शक्लें क्या थीं यह आड़ में पड़ने तथा मुंह दूसरी तरफ घूमा रहने के कारण इन्द्रदेव देख नहीं सकते थे.

लगभग आधे घण्टे तक वे दोनों इस काम में लगी रहीं, इसके बाद जब उनके मन मुताबिक शक्लें बन गईं तो दोनों ने सूरत बदलने का सामान बटोरकर किनारे कियाऔर उन कपड़ों की मदद से अपनी पोशाक बदलना शुरू किया जो वे साथ लायी थीं.

उस समय इन्द्रदेव को एक झलक उनके बदले हुए चेहरों की दिखाई पड़ी.

मुन्दर की सूरत एक कमसिन और नाजुक औरत की थी और गौहर एक अधेड़ मर्द बनी हुई थी.

साथ ही जान पड़ता है कि इन सूरतों को भी इन्द्रदेव पहिचानते थे क्योंकि देखते ही वे चौंक कर बोल उठे.

" हैं, मुन्दर और भुवनमोहिनी के रूप में?

तब क्या यह भेद भी प्रकट हो गया?

अब गई बेचारे भूतनाथ की जान.

"

तरह - तरह की न - जाने कितनी ही बातें बिजली की तेजी से इन्द्रदेव के दिमाग में दौड़ गई, मगर इसके साथ ही न - जाने कौन एक पुरानी याददाश्त उनकी आँखें भर लाई और, चेहरा उदास हो गया.

इधर - जल्दी - जल्दी इन दोनों ने अपनी पोशाकें बदलीं.

चेहरे पर नकाबें लगाईं और कुछ जरूरी सामान कमर में छिपा चलने के लिए तैयार हो गईं.

आगे - आगे वे दोनों और पीछे - पीछे इन्द्रदेव लोहगढ़ी के बाहर निकले.

इन्द्रदेव कहाँ जाते अथवा क्या करते हैं इसका ध्यान छोड़ हम थोड़ी देर के लिए इन दोनों कम्बख्तों के पीछे चलते और देखते हैं कि ये कहाँ जाती और क्या करती हैं.

लोहगढ़ी से निकल आपस में धीरे - धीरे बातें करती हुई गौहर और मुन्दर उस रास्ते से काशी जी की तरफ रवाना हुई जो इन्द्रदेव के कैलाश - भवन के पास से होता हुआ पहाड़ के ऊपर ही ऊपर सीधा चला गया था और जिसकी कई शाखें शिवदत्तगढ़, चुनारगढ़ और रोहतासगड़ आदि को भी निकल गई थीं, राह में एक जगह पहुँच कर कुछ देर के लिए मुन्दर रुकी क्योंकि इस जगह एक पहाड़ी गुफा में उसने घोड़ा तथा कुछ सामान छिपा रखा था, मुन्दर ने उस गुफा में पहुँच कर, जो बहुत ही लम्बी - चौड़ी और पहाड़ के अन्दर दूर तक चली गई थी और जिसकी ऊंचाई भी काफी थी, अपना घोड़ा उसके अन्दर से निकाला, अपने पास वाला कुछ सामान जिसकी जरूरत न समझी उस गुफा में पत्थरों के ढोंको के बीच में छिपाया, और तब उसी घोड़े पर सवार हो दोनों रवाना हुई और काशीजी पहुँची, वहाँ पहुँच कर भूतनाथ से किस तरह उनकी

मुलाकात हुई अथवा क्योंकर उनकी बातें सुन और सूरत देख भूतनाथ बदहवास हो गया यह हम ऊपर लिख आये हैं, इसलिए अब उसके आगे का हाल लिखते हैं.

भूतनाथ को डर और घबराहट से बेहोश होते देख मुन्दर और गौहर ने प्रसन्नता की निगाह एक - दूसरे पर डाली और तब यह निश्चय कर लेने के बाद कि कोई उनकी कार्रवाई देख तो नहीं रहा है उन दोनों ने भूतनाथ के बटुए की तलाशी लेनी शुरू की दवाओं की शीशियों और तरह - तरह के कीमती मसालों से भरी हुई डिबियों की तरफ तो उन्होंने निगाह भी न की हाँ उन बहुत - से कागजों और चीठियों को उन्होंने जरूर गौर के साथ जाँचना शुरू किया जो उसके बटुए में थीं.

मगर यकायक उनके काम में बिघ्न पड़ गया जब उन्होंने कई आदमियों के उस गली के अन्दर घुसने की आहट पाई, अपना काम बन्द कर लाचार उन दोनों को उठना पड़ा.

भूतनाथ के कागजात बटुए के अन्दर डाल बटुआ ज्यों - का - त्यों उसकी कमर में बाँधने के बाद मुश्किल से उन दोनों को इतना समय मिला कि वहाँ से हट अपने को कहीं छिपा सकें.

हम नहीं कह सकते कि भूतनाथ के कागजों में से कुछ इन लोगों ने निकाले भी या नहीं, समय ही इसका हाल बता सकता है.

ये आने वाले भूतनाथ के कई नौकर तथा शार्गिद थे जिन्हें श्यामा के मकान पर काम करने के लिए गुप्त रीति से भूतनाथ ने ठीक कियाथा.

अपने मालिक को इस तरह बीच रास्ते में बेहोश पड़े पा ये चौंक पड़े उसे होश में लाने का उद्योग करने लगे.

थोड़ी ही कोशिश में भूतनाथ चैतन्य होकर उठ बैठा और साथ ही उसके आदमियों ने पूछना शुरू किया- " यह क्या मामला है?

आप इस तरह बेहोश यहाँ क्यों पड़े थे?

क्या कोई दुर्घटना हो गई?

" इत्यादि, मगर भूतनाथ ने किसी भी बातों का जवाब पीछे पूछना, पहिले यह बताओ कि यहाँ से दो आदमियों को भागते हुए तुम लोगों ने देखा?

" भूतनाथ के एक शागिर्द ने कहा, " मुझे कुछ झलक - सी लगी थी कि कोई आदमी (उंगली से दिखा कर) उस गली में गया है पर ठीक - ठीक नहीं कह सकता! " सुनते ही भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और बोला.

" अच्छा मैं उन की टोह लगाता हूँ, तुम लोग भी इधर - उधर फैल जाओ और कहीं भी सफेद पोशाक पहिने दो नकाबपोशों को देखो तो पकड़ कर इसी मकान में लाओ.

भूतनाथ ने श्यामा के मकान की तरफ इशारा किया और तब केवल उस आदमी को अपने साथ ले जिसने उन दोनों के भागने का निशान बताया था वह उस गली में घुस गया.

उसके बाकी आदमी भी चारों तरफ फैल गये और उन नकाबपोशों को गिरफ्तार करने की कोशिश करने लगे.

गली पार कर चुकने के बाद सड़क मिली और यहाँ कर भूतनाथ को मालूम हो गया कि अभी कुछ ही देर पहिले इस जगह एक घोड़ा जरूर बंधा हुआ था.

उसे विश्वास हो गया कि वे दोनों नकाबपोश भी जरूर इसी घोड़े पर सवार होकर भागे हैं क्योंकि मिट्टी पर एक घोड़े के तेज टापों के निशान पड़े हुए थे जो सरपट दौड़ कर निकला था.

इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ दौड़ने में बहुत ही तेज था.

लगभग कोस भर जाते - जाते उनके कानों में घोड़े के टापों की आवाजें पड़ने लगीं और थोड़ी ही और जाने बाद उन दोनों नकाबपोशों की एक झलक उसने देख ली जो उस एक ही घोड़े पर सवार तेजी से बड़े जा रहे थे.

भूतनाथ के शागिर्द ने पूछा, " मेरे पास पथरकला मौजूद है, कहिए तो इन लोगों पर निशाना लगाऊँ?

मगर वह बोला.

" अभी नहीं आगे चल कर अगर जरूरत पड़ी तो वैसा कियाजायगा.

लेकिन यदि सम्भव हो तो मैं उन्हें बिना चोट पहुँचायें ही पकड़ना चाहता हूँ! " मन - ही - मन दोनों को गिरफ्तार करने की तरक़ीब सोचता हुआ भूतनाथ उनके पीछे - पीछे

जाने लगा और इस बात की तरफ उसने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया कि आसमान पर काले बादल छा रहे हैं जो न - जाने कत्र फट पड़ेंगे.

मगर उन दोनों नकाबपोशों की निगाह इस तरफ जरूर थी। .

हवा की तेजी और बढ़ते बादलों को चारों तरफ से घिरे आते देख एक ने दूसरे से कहा, " बादल तेजी से इकट्ठे हो रहे हैं, हम लोगों को जल्दी अपने ठिकाने पहुँच जाना चाहिए नहीं तो भीगना पड़ेगा.

" दूसरे ने यह सुन कर कहा, " हाँ मैं भी इसे देख रही हूँ, मगर अभी लोहगड़ी बहुत दूर है और पानी आने में कुछ भी देर नहीं मालूम पड़ती.

" इसके साथ ही उसने घोड़े को एड़ लगाकर उसकी चाल तेज की, लगभग कोस - भर और जाते - जाते पानी की बूंदे गिरने लग गईं.

एक बोली, " पानी बढ़ेगा! " दूसरी ने कहा, " तब कहीं आड़ खोजनी चाहिए, " पहली बोली, " हम लोग हैं कहाँ पर?

" दूसरी ने गौर करके कहा, " वह जगह यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है जहाँ मैं इस घोड़े को बांधती हूँ और उसी गुफा में हम लोगों को भी आड़ मिलेगी.

" इतना कह उसने घोड़े का मुँह घुमाया और धीरे - धीरे - क्योंकि अब अंधेरा बहुत हो गया था और रास्ता दिखाई देना कठिन हो रहा था, दोनों उस पहाड़ी की तरफ जाने लगीं जिधर एक गुफा के अन्दर से मुन्दर ने यह घोड़ा खोला था.

पल - पल में पानी की तेज और हवा की सनसनाहट बढ़ती जाती थी जिससे इन दोनों को रास्ता खोजने में जिस प्रकार तकलीफ बड़ रही थी उसी प्रकार भूतनाथ के लिए इनका पीछा करना सहज हो रहा था बल्कि उसने अब इनको गिरफ्तार करने की एक तर्कीब भी सोच निकाली थी.

बिजली की चमक में रास्ता देखती और गुफा की टोह लेती हुई मुन्दर उस जगह के पास पहुँच घोड़े से उतरी और उसकी लगाम पकड़े दोनों धीरे - धीरे उस गुफा की तरफ बड़ी.

बिजली की चमक से भूतनाथ ने उस गुफा को देखा और समझ गया कि इसी में ये दोनों अब डेरा लगावेंगी, अस्तु ऐयारी करने की फिक्रमें वह अपने साथी को लिए कुछ दूर हट

गया और कोई आड़ की जगह तलाश करने लगा.

मुन्दर और गौहर उस गुफा के पास जा पहुँची परन्तु यकायक उनके कानों में किसी तरह की आहट पहुँची.

मुन्दर ने गौहर का हाथ पकड़ लिया और एक तरफ आड़ में होती हुई बोली.

“ सखी, मुझे संदेह होता है कि इस जगह और भी कोई आदमी है! कहीं हमारा पीछा तो नहीं हो रहा है?

" गौहर ने गौर से चारों तरफ की आहट ली मगर उसे कुछ सुनाई न पड़ा और वह बोली, “ मुझे तो कुछ नहीं पता लगता.

फिर इस आँधी - पानी में कौन हमारा पीछा करने ही लगा है! " कुछ देर तक दोनों चुप रहीं और फिर कोई आट न पाकर दोनों गुफा की तरफ लौटी मगर धूर्ता मुन्दर ने घोड़े की लगाम एक डाल के साथ अटका उसे उसी जगह छोड़ दिया क्योंकि उसने सोचा कि अगर सचमुच कोई उनका पीछा कर रहा है तो घोड़ा बाहर ही रहना ठीक रहेगा, तब उसने गौहर का हाथ पकड़ लिया और चौकन्नी होकर सब तरह की आहट लेती हुई गुफा की तरफ बड़ी उसी समय पानी तेजी से बरसने लगा और चारों तरफ अंधेरी और भी बढ़ गई .

.

गुफा के मुहाने पर रुक कर थोड़ी देर आड लेने के बाद जब मुन्दर को उसके अन्दर किसी के होने का गुमान न हुआ तो वह भीतर घुसी और गौहर उसके पीछे - पीछे चली.

पन्द्रह - बीस कदम से ज्यादा न गई होंगी कि अचानक अन्दर की तरफ से कोई आवाज सुन चौंक पड़ी और मुन्दर ने धीरे से कहा " सखी, मुझे तो शक होता है कि इस गुफा में जरूर कोई है, " गौहर बोली, " और मुझे भी, लेकिन तब क्या करें, लौटें?

" “ यही मुनासिब जान पड़ता है.

" कहती हुई मुन्दर पीछे को घूमी मगर यकायक फिर रुक गई क्योंकि उसी समय गुफा के मुहाने की तरफ से चुटकी बजने की तरह आवाज सुनाई पड़ी.

उसने घबड़ा कर गौहर से कहा, " मालूम होता है हम दोनों तरफ से घिर गये हैं.

जरूर गुफा के बाहर भी कोई आदमी है जिसने यह चुटकी बजाई! " गौह जबाब में कुछ कहा ही चाहती थी कि यकायक गुफा के अन्दर से आती हुई एक रोशनी की तरफ उसकी नजर गई और डरते हुए उसने मुन्दर का ध्यान उधर दिलाया.

रोशनी क्षण - क्षण में बढ़ती जा रही थी जिससे गुमान होता था कि कोई रोशनी लिए हुए इधर ही को आ रहा है.

मुन्दर ने देखते ही कहा, " अपनी छुरी निकाल लो और होशियार हो जाओ.

सम्भव है यह हमारा कोई दुश्मन हो! " इसके साथ ही वह दीवार के साथ चिपक गईं और अपने हाथ में छुरी को मजबूती से पकड़े रहने पर भी काँपते हुए कलेजे के साथ उस आने वाले का इन्तजार करने लगीं क्योंकि लाख हिम्मतवर होने पर भी आखिर वह जनाना और क़मसिन ही तो थी.

रोशनी पास आई.

अन्दाज से मालूम हुआ कि गुफा के अन्दर से किसी मोड़ के दूसरी तरफ वह रोशनी लिए हुए आने वाला पहुंच गया है.

मुन्दर ने छुरी बाला हाथ ऊँचा कियाऔर उसी समय वह शकल सामने आई जो रोशनी लिए हुए थी.

मगर वह कोई आदमी न था जो रोशनी लिए हुए आ रहा था बल्कि मनुष्य की हड्डियों का एक भयानक ढाँचा था जिसके बदन पर चमड़े का नाम - निशान भी न था और जिसके खुले हुए जबड़े के बड़े - बड़े दाँत डर पैदा करने वाली हँसी हँस रहे थे.

इस भयानक मूरत के एक हाथ में तो एक टूटी हुई तलवार थी और दूसरे हाथ में वह एक दीया लिए हुए था जिसकी टिमटिमाती हुई रोशनी में वह भयानक नर - कंकाल और भी डरावना मालूम हो रहा था.

इस खौफनाक आसेब को देखते ही मुन्दर और गौहर का तो यह हाल हो गया की काटो तो बदन से लहू न निकले.

उस पर बार करना तो दूर उनके छुरे हाथ से छूट खनखानाते हुए जमीन पर गिर पड़े और दोनों चीखती हुई गुफा के बाहर भागी.

यह देखते ही उस हड्डियों के ढांचे के मुँह से एक भयावनी हँसी निकली जिससे वह गुफा एकदम गूंज उठी.

भागने वालियाँ और भी तेजी से भागी और उसी समय उस नर - कंकाल ने अपने हाथ का दीया जमीन पर गिरा दिया जिससे गुफा में फिर अँधेरा छा गया.

अँधेरे ही में ठोकरें खाती हुई मुन्दर और गौहर धड़कते हुए कलेजे के साथ गुफा के बाहर निकलीं मगर दूर न जा सकीं.

गुफा के बाहर दो मजबूत आदमी खड़े थे जिन्होंने उन्हें कस कर पकड़ लिया, उनके बचे हुए होश - हवास भी जाते रहे और वे चीखें मारकर बेहोश हो गई.

भूतनाथ तेरहवें भाग के सातवें बयान में हमने इस घटना का हाल लिखा है, इससे पाठक यह तो समझ ही गए होंगे कि जिन दो आदमियों को घनश्याम और रामु आदि ने पकड़ा था और शिवदत्तगढ़ की तरफ ले भागे थे वे ये ही दोनों गौहर और मुन्दर थीं, घनश्याम और रामू वगैरह कौन थे यह हम यहाँ न बतावेगें.

उनका हाल आगे चलकर पाठकों को आप ही मालूम हो जाएगा.

जिस समय ये लोग उन दोनों को उठा ले भागे उसी समय अपने शागिर्द को लिए भूतनाथ उस जगह पहुँचा मगर उसे कुछ देर हो गई थी.

जिससे उसका शिकार दूसरे के हाथों में पड़ चुका था.

वह बोल उठा, " मुझे देर हो गई जिससे काम बिगड़ गया.

खैर कोई हर्ज नहीं, क्या कोई भागकर भूतनाथ से बच सकता है! " कुछ देर भूतनाथ वहीं खड़ा इस बात पर गौर करता रहा कि वे दोनों नकाबपोश कौन हो सकते हैं और जो लोग उन्हें पकड़ ले गए वे भी कहाँ के आदमी होंगे, मगर उसके दिमाग ने कुछ काम न किया, लाचार वह वहाँ से हटा और कुछ सोचता - विचारता इन्द्रदेव के कैलाश - भवन की तरफ रवाना हुआ.

उसकी वहाँ उनसे जो कुछ बातें हुई वह हम ऊपर लिख आए हैं.

दसवां व्यान।

प्रभाकरसिंह उस शीशे के छत की करामात के कारण उसके साथ झूल रहे थे और मालती वेबसी के साथ उनकी खतरनाक हालत पर डर की निगाहें डाल रही थी.

यकायक किसी जगह घण्टी की आवाज मालती के कानों में पड़ी और वह आश्चर्य के साथ गौर करने लगी कि यह आवाज कहाँ से आ रही है उसी समय एक खटके की - सी आवाज आई और मालती के सामने वाली शीशे की दीवार में एक छोटा - सा सूराख दिखाई पड़ने लगा.

यह सोच कर कि शायद उसके अन्दर झाँकने से कोई नई बात जान पड़े मालती उस छेद के पास गई जो जमीन से लगभग तीन हाथ की ऊंचाई पर था और उसमें आँख लगाकर देखने लगी.

एक अद्भुत और खौफनाक नजारा उसे दिखाई दिया.

मालती ने देखा कि उस छेद के दूसरी तरफ एक बहुत लम्बा - चौड़ा क़मरा है जिसके बीचोबीच में लगभग दस हाथ लम्बी और इतनी ही चौड़ी काले संगमरमर की एक बावली बनी हुई है.

इस बाबली के एक किनारे पर वे ही चारों शैतान जिन्हें मालती और प्रभाकरसिंह कई बार पहिले देख चुके थे बैठे हुए कुछ कर रहे थे.

कुछ ही गौर करने से मालती को मालूम हुआ कि वे लोग एक लाश को काट और उसके टुकड़े करके उस तालाब में फेंक रहे हैं मालती ने यह भी देखा कि तालाब के अन्दर दो छोटे घड़ियाल हैं जो उन टुकड़ों को खाने के लिए इधर - उधर झपट रहे हैं.

यह दृश्य ऐसा भयानक था कि इसने एक बार नाजुक़ मालती का कलेजा हिला दिया और उसे अपनी आँखें वहाँ से हटा लेनी पड़ीं मगर कुछ देर बाद पुनः उसने हिम्मत की और उस छेद की राह देखना शुरू किया.

इस बार मालती उस बड़े कमरे के चारों तरफ अपनी निगाह दौड़ाने लगीं.

उसने देखा कि उस बाबली के चारों तरफ एक तरह का बनाबटी बाग या जंगल - सा बना हुआ है, तरह - तरह के पेड़ और गुलबूटे चारों तरफ बने हुए थे जो सभी बनाबटी थे क्योंकि उनमें से किसी की भी ऊँचाई तीन - चार हाथ से ज्यादे न थी। .

पेड़ों के नीचे, झाड़ियों की आड़ में अथवा उस छोटे बनावटी पहाड़ की गुफाओं में जो एक तरफ बना हुआ था, लेटे, बैठे, चरते या सोये हुए पशुओं की आकृति ऐसी साफ और सुन्दर बनी हुई थी कि जान पड़ता था मानों वे सभी जानकार हैं, उस बाबली की दूसरी ओर की सीढ़ियों पर एक बारहसींगा झुक कर पानी पीता हुआ ऐसा साफ बनाया गया था कि देख कर यकायक उसके असली होने का ही गुमान होता था.

इन सब चीजों को देखती और घूमती - फिरती मालती की आँखें पुनः उन शैतानों के ऊपर आकर रुक गई.

उसने देखा कि उन्होंने अपना काम खतम कर दिया अर्थात वह समूची लाश टुकड़े - टुकड़े करके उन घड़ियालों को खिला दी और तब उस जगह की जमीन को बावली के पानी से अच्छी तरह धोकर साफ कर देने के बाद उठ खड़े हुए.

बगल की दीवार में एक छोटा - सा दरवाजा था जिसमें एक - एक करके वे सब चले गए और तब वह दरवाजा बन्द हो गया.

उसी समय पुन:

घंटी बजी और वह सूराख जिसकी राह मालती उधर का हाल - चाल देख रही थी बन्द हो गया.

मालती ने देखा कि इधर - उधर से शीशे के चार छोटे - छोटे टुकड़े खसक के आकर उस सूराख के बीचोबीच में इस तरह बैठ गये की जोड़ का निशान तक बाकी न रह गया.

दीवार के दूसरी तरफ का तमाशा देखने की धुन में अब तक मालती इस तरफ की हालत और प्रभाकरसिंह की मुसीबत कुछ भूल - सी गई थी मगर अब उसे पुनः पिछली बातें याद आ गई और छत के साथ लटकते हुए प्रभाकरसिंह की भयानक हालत देख वह पुनः इस फिक्र में पड़ गई कि उन्हें छुड़ाने का कोई उद्योग करे, मगर बहुत गौर करने पर भी इसकी कोई तरक़ीब उसे सूझ न पड़ी, हाँ यह ख्याल उसके मन में जरूर दौड़ गया

कि जिस तरह शीशे के टुकड़ों ने उस सूराख को बेमालूम तौर पर बन्द कर दिया उसी तरह सम्भव है कि चारों तरफ की दीवारों में भी कहीं कोई दरवाजा हो जो इसी तरह बन्द हो जाता हो.

इस ख्याल ने उसके मन में आशा का संचार कियाऔर यह देखने के लिए कि देखे ऐसा करने से वह सूराख पुनः प्रकट होता है या नहीं उसने ठीक उसी जगह जहाँ बह छेद प्रकट हुआ था अपना अंगूठा रखकर जोर से दबाया.

एक खटके की आवाज हुई और शीशे के वे चारों टुकड़े अलग हट गये जिससे पुनः दूसरी तरफ देखने लायक सूराख पैदा हो गया.

मालती के मुंह पर प्रसन्नता की झलक आई और वह इस इरादे से उस कमरे की शीशे की दीवारों को जगह - जगह टटोलने, दबाने या ठोकरें देने लगी कि शायद ऐसा करने से कहीं पर कोई रास्ता पैदा हो जाय.

प्रसन्नता की बात थी कि मालती का ख्याल ठीक निकला जगह - जगह की दीवार को उटोलती और दबाती हुई मालती जब उस छेद के ठीक सामने वाली दीवार के पास पहुंची तो उस जगह हथेली से दबाते ही एक खटके की आवाज हुई और साथ ही शीशे के दो बड़े - बड़े टुकड़े इस तरह दो तरफ घूम गए मानों कब्जे पर हों, एक तंग रास्ता दिखाई देने लगा जिसके भीतर बिल्कुल अँधेरा था और जिसमें से किसी तरह की हलकी आवाज आ रही थी.

अपनी सफलता पर एक प्रसन्नता की आवाज मालती के मुंह से निकली और उसने खुशी - खुशी प्रभाकरसिंह को लक्ष्य करके कहा, " लीजिए, आने - जाने का रास्ता तो पैदा हो गया, अब आशा है आपके नीचे उतरने की भी कोई तर्कीब निकल ही आवेगी, " मगर हैं यह क्या! जब मालती ने छत की तरफ निगाह की तो देखा कि वह एकदम साफ है अर्थात प्रभाकरसिंह का कहीं पता नहीं है.

बहुत ध्यान देने से उसे यह भी पता लगा कि छत की अब वह ऊँचाई नहीं रह गई जो पहिले थी, अर्थात, वह पुनः अपनी असली जगह पर सिर से दो हाथ के लगभग की ऊँचाई पर आ पहुँची है.

प्रभाकरसिंह का वह कमरबन्द तथा दुपट्टा इत्यादि भी गायब था जो पहिले उन्हीं की तरह छत के साथ चिपका लटक रहा था.

मालती के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा, वह आँख मल - मल के चारों तरफ ऊपर - नीचे और इधर - उधर देखने लगी कि कहीं आँखें धोखा तो नहीं दे रही हैं, मगर नहीं केवल छत ही नहीं बल्कि वह कमरा भी सचमुच ही एकदम खाली था और प्रभाकरसिंह का कहीं नाम - निशान भी नहीं था.

मालती के दुःख और ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि प्रभाकरसिंह यकायक कहाँ या कैसे गायब हो गए.

किसी तरह की आवाज भी उसके कानों में नहीं पड़ी थी जिससे यह गुमान होता कि वे किसी मुसीबत में फंस गए.

तब क्या छत उन्हें खा गई या वे हवा में मिल गए! ताज्जुब और घबराहट के साथ मालती बार - बार अपने चारों तरफ निगाह दौड़ाने लगी मगर व्यर्थ, प्रभाकरसिंह वहाँ थे ही कहाँ जो दिखाई पड़ते! सब तरह से लाचार होकर उसने कई आवाजें भी लगाई मगर वह भी व्यर्थ हुआ.

दुख, रंज और अफसोस के मारे बेचारी मालती की आँखों से आँसू टपकने लगे और वह दोनों हाथों से अपना सिर थामे वहीं जमीन पर बैठ गई, मगर आखिर व्यर्थ बैठकर समय नष्ट करने से भी फायदा क्या था?

कुछ देर तक तरह - तरह की बातें सोचने के बाद अन्त में मालती एक लम्बी साँस लेकर उठी और एक आखिरी निगाह अपने चारों तरफ डाल उस दरवाजे के अन्दर घुसी जिसे उसने अपने उद्योग से पैदा किया था और जो अभी तक खुला हुआ था.

एक तंग और अँधेरी गली में उसने अपने को पाया और वह टटोलती और आहट लेती हुई होशियारी के साथ उसके अन्दर जाने लगी.

लगभग पन्द्रह - बीस कदम के गई होगी कि पीछे से किसी तरह की आहट आई जिससे मालती समझ गई कि वह रास्ता जिसे उसने खोला था पुनः बन्द हो गया मगर उसी समय सामने की तरफ से दूसरी आबाज आई और उधर एक नया दरवाजा खुल गया जिसकी राह आती हुई रोशनी और हवा उसके पास तक पहुँची.

जल्दी - जल्दी मालती ने बाकी रास्ता तय कियाऔर उस दरबाजे के बाहर निकल कर अपने को एक नई और कुछ विचित्र जगह में पाया.

बीच की खुली जगह छोड़ देने के बाद जहाँ तक निगाह जाती थी चारों तरफ मकान और इमारतें ही दिखाई पड़ रही थीं और यह बीच वाला मैदान भी लाल रंग के चौकोर पत्थर के टुकड़ों से पटा हुआ था जिनमें कहीं - कहीं काले पत्थर भी दिखाई पड़ रहे थे और बीचोंबीच में तीन - चार हाथ ऊँचे खम्भे पर कोई मूरत बैठाई हुई थी जो खुद भी लाल ही रंग के पत्थर की थी.

इसके पीछे की तरफ अर्थात मालती के ठीक सामने एक दोमंजिली इमारत थी जिसके बीचो बीच में दो तरफ से खुला हुआ एक लम्बा दालान था.

इस दालान के एक सिरे पर एक बन्द कमरा तथा दूसरी ओर एक गोल क़मरा था जिसकी छत बहुत ऊँची थी.

यह गोल क़मरा भी जिसमें चारों तरफ खिड़कियाँ थीं, इस समय बन्द था.

बाईं तरफ देखा, दक्खिन और पूरब के कोने में काले पत्थर का बना एक ऊँचा बुर्ज दिखाई पड़ा जिसकी शक्ल उस घूमने वाली बारहदरी से, जिसके जरिये मालती और प्रभाकरसिंह उस शीशमहल में पहुचे थे.

यहाँ तक मिलती थी कि पहिले तो मालती को गहरा शक हुआ कि वह पुनः उसी जगह जा पहुँची है मगर जब गौर से देखा तो उसे अपनी भूल मालूम हो गाई क्योंकि यह एक बिल्कुल दूसरी ही इमारत थी.

इस बुर्ज के सिरे पर खम्भे की तरह ऊंची हुई उठी कोई चीज थी जिसके साथ बहुत - सी तारें लगी हुई थीं.

दाहिनी तरफ भी इमारतों का एक लम्बा सिलसिला चला गया था जिसमें से कुछ के दरवाजे खुले हुए और कुछ के बन्द थे.

मालती कुछ देर अपने चारों तरफ देखती और कुछ गौर करती रही.

अन्त में उसके मुंह से निकला, " प्रभाकरसिंह जी की राह देखना व्यर्थ है, न - जाने वे किस तिलिस्मी मुसीबत में पड़ गए और इस वक्त कहाँ हैं, अब तो आगे बढ़कर जहाँ

तक का हाल मालूम है वहाँ तक का तिलिस्म तोड़ना ही उत्तम मालूम होता है फिर जो होगा देखा जायगा.

सम्भव है कि इतना हिस्सा तिलिस्म का टूट जाने से उनको नीजात मिल जाय.

अफसोस, वह तिलिस्मी किताब और डण्डा भी उनके साथ ही चला गया नहीं तो इस वक्त बहुत काम आता.

" कुछ देर तक इसी तरह की बातें मालती सोचती रही इसके बाद हिम्मत बाँध कर आगे बढ़ी और बीच के मैदान को पार कर सामने वाले गोल कमरे की तरफ बढ़ी.

आधा रास्ता तय करके मालती जरा देर के लिए रुक गई क्योंकि अब वह उस खम्भे के पास पहुंच गई थी जो बीचोबीच में बना हुआ था. सहन के उसने इस खम्भे और मूरत को गौर के साथ देखा और तब उसे मालूम हुआ कि वह कोई खम्भा नहीं है बल्कि लाल रंग के पत्थर में एक बड़ी ही भयानक सूरत के नरपिशाच की शक्ल बनी हुई है जिसका भयानक चेहरा, लाल - लाल आँखें, शेर के पंजे की तरह नाखून और विकराल आकृति देखकर उसके बेजान होने पर भी डर मालूम पड़ता था.

यह मालती को शक था या कोई वास्तविक बात कि इसे देखते ही उस नरपिशाच ने अपना मुँह खोला और जुबान से इस तरह अपने होठ चाटे मानों कोई भूखा शेर अपने सामने अपनी खुराक देख रहा हो!

परन्तु यह काम इतनी जल्दी से हो गया कि मालती को यह शक़ बना ही रह गया कि वास्तव में उस मूरत ने ऐसा कियाया नहीं मगर इतना जरूर हुआ कि फिर उसकी वहाँ ठहरने की हिम्मत न हुई और वह जल्दी - जल्दी चल कर सामने वाली इमारत के पास पहुंच गई.

इस इमारत की नीचे वाली मंजिल बिल्कुल खाली और खुली हुई थी अर्थात मोटे - मोटे खम्भों वाले एक लम्बे दालान की तरह पर बनी हुई थी जिसकी कुरसी कमर से करीब दो हाथ ऊँची थी और ऊपर चढ़ने के लिए पूरी लम्बाई में कई जगह छोटी - छोटी खूबसूरत सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, मालती सीढ़ियाँ चढ़ उस दालान में पहुंची और चारों तरफ देखने लगी.

मोटे - मोटे खम्भों पर दालान की लम्बी - लम्बी छत ढंगी हुई थी और इन खम्भों में से हर एक के बीचोबीच में एक छोटा सा ताक था जिसमें कोई - न - कोई मूरत बैठाई हुई थी.

मालती बहुत गौर से इन मूरतों को देखने लगी मगर मालूम पड़ता है कि जिस चीज की उसे जरूरत थी वह उसे दिखाई न पड़ी क्योंकि देर तक चारों तरफ देखने पर भी काम न चला तो मालती आगे बढ़ी और नजदीक जाकर देखभाल करने लगी.

पचासों खंभों को चारों तरफ से नीचे से ऊपर तक गौर से देखने और अपने जरूरत की मूरत खोजने में मालती ने बहुत देर लगा दी मगर उसका मतलब पूरा न हुआ.

आखिर लाचार हो वह कुछ बेचैनी के साथ बोली.

“ सब खंभे तो देख चुकी, इतनी मूरतें हैं मगर जिसको मैं खोज रही हूँ वह कहीं भी दिखाई नहीं पड़ती! " कुछ देर तक लाचारी के साथ खड़ी रहने के बाद यकायक मालती को कुछ सूझ गया और वह पुनः इधर - उधर घूमने लगी, इस बार उसने खंभों को देखना छोड़ दिया बल्कि उस बड़े दालान के तीन तरफ की दीवारों के साथ - साथ घूमने लगी जिनमें जगह - जगह उन खम्भों के जवाब में पत्थर के खंभे कुछ उभरे हुए दिखाए गए थे.

इस बार उसकी मेहनत सफल हुई अर्थात पूरब तरफ की दीवार के बीचोबीच में दिखाये गये एक खंभे में खुदे आले में उसे एक हरिन की मूरत दिखाई पड़ी.

मालती खुश होकर उसके पास पहुंची और गौर से उस पत्थर के हरिन को देख कर बोली, " बेशक यही है! "

मालती अपने मन - ही - मन उन बातों को दोहरा गई जो तिलिस्मी किताब से पड़ कर आज सुबह ही प्रभाकरसिंह ने उसे सुनाई थीं, और तब हिम्मत के साथ आगे बढ़ी.

अपने दोनों हाथों से उसने उस हरिन के दोनों सींग पकड़ लिए और जोर करके सामने की तरफ खींचा.

पहिले तो वे बिल्कुल नहीं हिले मगर दूसरी बार जब पैर अड़ा कर पूरी तरह पर जोर लगाया तो उस हरिन ने अपनी गर्दन झुका दी और वे सींग आगे को जुक आये.

अब मालती ने उन सींगों को दाहिने - बायें अर्थात दो तरफ करने के लिये जोर लगाना शुरू किया, बहुत कोशिश के बाद वह भी हुआ अर्थात उस हरिन के दोनों सींग दाहिने और बायें ओर को हट गये जिससे उसके सिर के बीचोबीच एक छोटी - सी दरार दिखाई पड़ने लगी, तीन - चार बार मालती ने उस छेद में वह ताली, जो लोहें बाले बुर्ज की जड़ में खोदने से मिली थी, डाल दी और घुमाया.

घूम कर ताली रुक गई, साथ ही एक आवाज हुई और दाहिनी तरफ की दीवार में एक दरवाजा खुला हुआ दिखाई पड़ा जिसके अन्दर ऊपर चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी नजर आ रही थी.

मालती ने अपनी चाभी हरिन के सिर से निकाल ली और उस दरवाजे की तरफ बढ़ी.

उसके पास पहुँच अन्दर जाने के लिए पैर बड़ाया मगर अभी एक पैर बाहर ही था कि यकायक चौंक कर रुक गई और जल्दी से पैर खींच लिया, यहीं नहीं बल्कि दो कदम पीछे हट गई और गौर तथा डर के साथ अन्दर की तरफ देखने लगी, देखा क्या कि दरवाजे के अन्दर की तरफ सामने ही एक साँप कुंडली मारे और फन ऊँचा क़िये बैठा है जिसने मालती के आगे बड़े हुए पैर पर अभी - अभी चोट की थी मगर मालती की तेज निगाहों और उसकी फुर्ती ने उसको बचा लिया था.

पहिले तो मालती को डर हुआ कि शायद वह साँप आगे बढ़ कर उस पर चोट करे मगर ऐसा न हुआ और पैर खींच लेने के बाद फिर उसने जुम्बिश न खाई मालती गौर से देर तक उसकी तरफ देखती रही और तब उसे मालूम हुआ कि यह साँप असली नहीं बल्कि बनावटी है मगर इतना सफाई और कारीगरी से बना हुआ है कि अचानक देख कर उसके असली होने का ही गुमान होता है.

उसी समय मालती को वह बात याद आ गई जो उसने तिलिस्मी किताब में पड़ी थी अर्थात- " खबरदार, जल्दी में यकायक सीड़ियों पर पैर न रख देना और सम्हल कर होशियारी के साथ जाना.

भीतर खतरा है.

" मालती कुछ गौर के साथ उस बनावटी साँप को देखती हुई सोचने लगी कि इस बला को कैसे दूर किया जाय.

आखिर कुछ देर के बाद मालती ने अपनी चादर उतारी और उसे लपेट कर एक गठरी की तरह पर बनाया.

एक सिरा अपने हाथ में रखा और बाकी उस सॉप के सामने फेंका, गठरी देखते ही उस साँप ने फन मारा साथ ही मालती का हाथ उसके फन के ऊपर पड़ा और उसने जोर से उस साँप के सिर को जहाँ - का - तहा दबा रखा.

उसने अपनी दुम उसकी बाँह के चारों तरफ लपेट ली और सिर उठाने के लिए जोर करने लगा मगर मालती ने उसे मौका न दिया और पकड़े - पकड़े ही दरवाजे के बाहर खींच लिया, ताज्जुब की बात वह बेजान की तरह जमीन पर गिर पड़ा.

मालती ने अपनी चादर से अलग कर उसे उठाया और गौर से देखा, मालूम हुआ कि वह चमड़े या वैसे ही किसी चीज का बना हुआ है.

उसके मुँह की तरफ खयाल दौड़ाया तो देखा कि कागज का एक टुकड़ा उसके अन्दर है.

बाहर निकाला और पड़ा, यह लिखा हुआ था- " इस साँप को भी अपने पास रख लो, आगे चल कर काम देगा, आगे रास्ता साफ है, बेखौफ ऊपर जाओ, मगर आखिरी सीढ़ी पर होशियारी से पैर रखना! " मालती ने खुशी - खुशी उस साँप को उठा कर अपनी कमर के चारों तरफ लपेट लिया और तब ऊपर जाने के लिए तैयार हुई. सीढ़ियाँ उसके सामने मौजूद थीं.

गौर की निगाहें चारों तरफ डालती वह धीरे - धीरे बढ़ने लगी.

पतली - पतली खूबसूरत और बहुत कम ऊँची लगभग चालीस सीड़ियाँ मिली जो घूमती हुई ऊपर को चढ़ गई थीं.

मालती उन पर चढ़ गई मगर जब आखिरी सीढ़ी के पास पहुँची तो उससे कुछ नीचे ही रुक गई और इस खयाल से चारों तरफ देखने लगी कि उस पुर्जे ने जिस खतरे की तरफ इशारा कियाहै वह कौन और कहाँ पर है.

सीढ़ियाँ खतम होने के बाद पाँच - छः हाथ लम्बी एक गली - सी पड़ती थी और उसके बाद एक खुला हुआ दरवाजा दिखाई पड़ रहा था.

मालती ने देखा कि इस गली - सी दिखाई पड़ने वाली जगह के दोनों तरफ की दीवारों के साथ तरह - तरह की चीजें चिपकी हुई हैं, गौर किया तो मालूम हुआ कि ये कई हथियार हैं जो दीवार में नक्काशी के तौर पर बनाये हुए हैं कहीं तलवार, कहीं खंजर, कहीं गड़ासा, कहीं नीमचा इसी तरह कितने ही हथियार अथवा उनकी शक्लें दीवारें पर बनी हुई थीं जिनकी तरफ मालती देर तक गौर करती रही मगर फिर भी यह निश्चय न कर सकी कि ये सब असली हथियार हैं जो दीवार के साथ टंगे हुए हैं या केवल उनकी शक्लें बनी हुई है ।

देर तक गौर करने पर भी मालती इस विषय मे कुछ निश्चय न कर सकी और न इसी बात का पता लगा सकी कि इन हथियारों के सिवाय और भी कोई खतरे की बात वहां मौजूद है कि नहीं.

आखिर उसने उस साँप को अपनी कमर से खोला और उसकी दुम हाथ से पकड़ सिर की तरफ बाला भाग सामने की तरफ को फेंका.

उसे कुछ - कुछ गुमान हुआ था कि ये हथियार अगर असली हैं अथवा कुछ नुकसान पहुंचाने के काबिल हैं तो जरूर इस साँप पर अपना जौहर दिखावेंगे मगर ऐसा कुछ भी न हुआ.

लाचार मालती ने साँप पुनः अपनी तरफ खींच लिया और फिर गौर करने लगी कि क्या मामला है, ये हथियार कैसे हैं और यहाँ कौन - सा खतरा है जिसके बारे में उसे हिदायत की गई है.

अचानक उसे उस पुर्जे के ये शब्द याद आये- " आखिरी सीढ़ी पर होशियारी से पैर रखना, " अभी वह उस आखिरी सीड़ी से दो - तीन डण्डा नीचे ही थी.

यह समझ कर कि शायद वह आखिरी सीड़ी ही कुछ करामाती हो उसने पहिले की तरह पुनः उस साँप का एक सिरा अपने हाथ में पकड़ा और दूसरे हिस्से को उस आखिरी सीढ़ी पर फेंका यह देखने के लिए कि अगर उस सीड़ी पर पैर रखने से कुछ होता होगा तो इससे पता लग जायगा.

साँप का उस सीड़ी पर गिरना था कि दीवार के साथ के हथियार गजब के तेज और फुर्तीले बन गये उन सभों को पकड़ने वाली एक - एक कलाई दीबार के अन्दर से निकल

पड़ी जिन्होंने भयानक रूप से उस साँप पर हमला किया, अगर मालती उस साँप को जल्दी से अपनी तरफ खींच न लेती अथवा उस सीड़ी पर साँप के बदले कोई आदमी खड़ा होता तो इसमें शक़ नहीं कि उसके टुकड़े कट - कट कर गिर जाते.

अब मालती को उस खतरे का पता लग गया जो उसके सामने था और उसके तेज दिमाग ने उससे बचने की तर्कीब भी तुरन्त ही निकाल ली.

उसे खयाल आ गया कि पहिली दफे जब उसने साँप को सीड़ी पर न फेंक उसके पीछे की तरफ फेंका था तो कुछ भी न हुआ था.

वह समझ गई कि यह आखिरी सीड़ी ही सब आफतों की जड़ है और अगर इस पर बोझ न पड़े तो कुछ न होगा.

इस बात की जाँच करने के लिए उसने पुनः साँप को सीढ़ी के पीछे वाली जगह पर फेंका मगर कुछ न हुआ और वे हथियार जो साँप के हटते ही अपने - अपने ठिकाने पहुंच गये थे उसी तरह दीवार के साथ चिपके रह गये.

मालती के दिल का सन्देह दूर हो गया.

उसने अपना काम आगे बढ़ाया और उस आखिरी सीड़ी पर पैर रखे बिना ही कूद कर उसे पार कर गई, उन हथियारों ने जुम्बिश न खाई और वह बेखौफ उनके पास पहुँच कर उन्हें गौर से देखने लगी.

तरह - तरह के हलके और भारी तथा खूबसूरत और डरावने हथियार वहाँ दीवार के साथ लगे हुए थे जिनकी संख्या बीस से क़म न होगी.

मालती उन्हें देखती हुई जब उस दरवाजे के पास पहुंची तो उसके ऊपर वाली दीवार पर कुछ लिखा हुआ देख कर रुक गई और पड़ने लगी, यह लिखा था:

' इन हथियारों में से जिसे चाहो उठा कर अपने पास रख लो.

ये तिलिस्मी हैं और अद्भुत और नायाब चीजें हैं जिनका गुण आगे चल कर मालूम होगा.

मगर यकायक इन पर हाथ लगाने से धोखा होगा.

हर एक हथियार के ऊपर उसके जोड़ की एक अंगूठी चिपकी है, उसे पहिले उतार कर पहिन लो तब हथियार उठाओ.

" मालती खुशी - खुशी उन हथियारों को पुनः इस निगाह से देखने लगी कि कौन सा अपने लिए पसन्द करे, आखिर सभों की देख भाल के बाद एक छोटी भुजाली उसे पसन्द आई.

यह हाथ - भर से कुछ कम ही लम्बी होगी मगर इसकी विशेषता यह थी कि इसका फल बाकी हथियारों की तरह लोहे का नहीं था बल्कि सुनहरे रंग का था और यही मालूम होता था मानों यह सोने की बनी हुई है, शायद इस बात से भी कोई विशेषता हो यह सोच मालती ने उस भुजाली के ऊपर लगी हुई सुनहरी अंगूठी उतार उँगली में पहिन ली और तब वह भुजाली उतार कमर से लगा ली.

इसके बाद आगे की तरफ बड़ी और दरवाजा पार कर बाहर एक बड़े दालान में पहुँची.

यह दालान जो बहुत लम्बा - चौड़ा था एकदम संगमर्मर का बना हुआ था.

इस का सामने की तरफ बाला हिस्सा खुला था और बाकी तीन तरफ की दीवारों में कई दरबाजे दिखाई पड़ रहे थे, मालती ने उन दरवाजों को गिना और तब कुछ सोच - विचार कर दाहिनी तरफ के चौथे दरवाजे के पास पहुंची दरवाजा बन्द था.

हाथ से धक्का दिया मगर न खुला.

मालती उसकी चौखट पर जो संगमूसा की बनी थी निगाह डालने लगीं, एक जगह कुछ लिखा हुआ नजर आया, गौर के साथ उसे पड़ा और तब उसका मतलब समझ उस जगह से दाहिनी तरफ की दीवार पर हाथ - भर जमीन नाप कर पैर से ठोकरें देना शुरू किया, आठ - दस ठोकरें खाने के बाद वहाँ से एक छोटा चौखूटा छोटा दुकड़ा हट कर एक बगल हो गया और ताली जाने का सूराख नजर आया, अपने पास वाली तिलिस्मी चाभी को उस सूराख में डाल कर घुमाते ही एक हलकी आवाज के साथ वह दरवाजा खुल गया.

मालती ने ताली सूराख से निकाल ली और दरवाजे के अन्दर घुसी.

यह एक लम्बी मगर चौड़ाई में बहुत ही क़म कोठरी थी जो सीधी सामने की तरफ दूर तक चली गई थी.

सामने के सिरे पर एक दरवाजा दिखाई पड़ रहा था मगर उसके सिवाय और कहीं कोई दरवाजा या खिड़की नजर नहीं आती थी। .

इस कोठरी के दाहिने और बाएँ दोनों तरफ वाली दीवारों पर आदमी की ऊंचाई के बराबर की तस्वीरें बनी हुई दूर तक चली गई थीं जिन पर जगह - जगह कुछ लिखा हुआ भी था.

मालती ने इन तस्वीरों को गौर और ताजुब के साथ देखा क्योंकि इनमें से कई उसकी देखी - भाली चीजों और जगहों की थीं.

वह एक तरफ की दीवार के पास चली गई और गौर से तस्वीरों को देखती और मजमून पड़ती हुई धीरे - धीरे आगे को बढ़ने लगी.

पहली तस्वीर जिस पर उसकी निगाह पड़ी देखते ही वह पहिचान गई क्योंकि उसमें लोहगड़ी की इमारत का बाहरी हिस्सा दिखाया गया था जिससे वह भली - भाँति परिचित थी.

ऊपर की तरफ एक कोने में उसने लिखा भी पाया, " लोहगड़ी - बाहरी हिस्सा ".

आगे बढ़ने पर उसके बगल ही में लोहगड़ी के अन्दर बाली लोहे की उस सुन्दर इमारत की तस्वीर बनी दिखाई पड़ी जिसमें मालती बहुत दिनों तक रह चुकी थी.

इसके ऊपर लिखा हुआ था " लोहगड़ी - भीतर बंगला.

" और आगे बढ़ी तो वह बाग और दालान दिखाई पड़ा जिसमें प्रभाकरसिंह और शैतान का मुकाबला हुआ था, और उससे भी आगे बढ़ने पर वह लोहे की ऊँची बारहदरी बनी दिखाई पड़ी जिसका घूमने वाली बारहदरी ' के नाम से पाठक परिचय पा चुके हैं.

इसी तरह उसके आगे वाला वह शीशे बाला क़मरा और तब इस जगह की तस्वीर भी बनी हुई मिली जहाँ मालती इस समय मौजूद थी.

पहिले एक बड़ी तस्वीर में बीच वाला यह मैदान और चारों तरफ की इमारतों का साधारण दृश्य दिखाया हुआ था और उसके बाद चारों तरफ की इमारतों की चार बड़ी -

बड़ी तस्वीरें बनी हुई थीं.

इस जगह पहुँच कर मालती आश्चर्य, प्रसन्नता और कौतूहल के साथ रुक गई क्योंकि यहीं एक कोने में उसे यह लिखा हुआ दिखाई पड़ा- " लोहगढ़ी के तिलिस्म का पहिला दर्जा - जिसे राजा प्रभाकरसिंह और रानी मालती तोड़ेंगे ' ताज्जुब की बात थी कि इसी जगह नीचे की तरफ मालती को एक जगह अपनी और प्रभाकरसिंह की तस्वीर दिखाई पड़ी जो इतनी ठीक और साफ बनी हुई थी कि यही मालूम होता था कि मालती और प्रभाकरसिंह सचमुच हाथ मिलाये खड़े हैं.

इन तस्वीरों के नीचे भी कुछ लिखा हुआ था मगर अक्षर इतने बारीक थे कि पड़ा नहीं जाता था.

मालती ताज्जुब के साथ गौर करने लगी कि उसकी और प्रभाकरसिंह की तस्वीर यहाँ किस तरह बनाई गई?

तिलिस्म बनते समय तो इन दोनों में से किसी का नाम - निशान भी नहीं था, फिर इनकी तस्वीरें बनाने में ऐसी आश्चर्यजनक सफलता कैसे मिली?

क्या तिलिस्म बनाने वाले पहिले से जानते थे कि जो लोग इस तिलिस्म को तोड़ेंगे उनकी सूरतें ऐसी होंगी?

मालती ज्योतिष विद्या के चमत्कार की बहुत - सी बातें सुन चुकी थी मगर यह गुमान किसी तरह भी नहीं हो सकता कि उस विद्या की मदद से भविष्य में उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों की भी तस्वीरें उतारी जा सकती हैं.

उसे गुमान हुआ कि बाद में शायद किसी मुसौवर ने यहाँ आकर ये तस्वीरें बनाई हों मगर इस ख्याल पर भी उसका दिल न जमा और वह सोचने लगी कि इस भयानक तिलिस्म के अन्दर जहाँ बनने के बाद से आज तक शायद एक चिड़िया भी पर न मार सकी होगी और जहाँ वह खुद भी बिना एक भाग तोड़े नहीं आ सकी कोई क्योंकर पहुँच सकता है।

बहुत कुछ खयाल दौड़ाया पर सिवाय इसके और कोई बात न सूझी कि उस जमाने के ज्योतिषियों ने अपनी विद्या के बल से यह चमत्कार दिखाया है.

बहुत देर तक इन तस्वीरों को देखने और तरह - तरह की बातें सोचने के बाद मालती आगे बड़ी और आगे की तस्वीरों को गौर के साथ देखने लगी क्योंकि उसे विश्वास हो गया था कि अब आगे जो कुछ आने वाला है उसका कुछ आभास ये तस्वीरें उसे दे देंगी.

अतः वह खूब गौर से एक - एक तस्वीर को देखती, उसके पास - पास लिखे मजमूनों को पड़ती, और उस पर गौर करती हुई जाने लगी.

इस काम में मालती ने बहुत देर लगा दी क्योंकि तस्वीरें उस सुरंग जैसे कमरे की पूरी लम्बाई में दोनों तरफ बनी हुई थीं और उससे बहुत कुछ पता भी लगता था मगर हम यहाँ पर इसका वर्णन नहीं करते कि मालती ने क्या - क्या देखा.

अगर आवश्यकता पड़ी तो किसी दूसरे मौके पर इसका हाल लिखेंगे.

तस्वीरों की देख - भाल कर चुकने के बाद मालती आगे की तरफ बढ़ी.

इस लम्बी जगह के अगले सिरे पर भी एक दरवाजा था जिसको मालती ने उसी तर्कीब से खोला.

ऊपर की तरफ जाती हुई सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं.

मालती को सन्देह हुआ कि पहिले की तरह शायद यहाँ पर भी किसी तरह का धोखा न हो परन्तु अच्छी तरह जाँच कर लेने पर भी जब किसी तरह का खतरा न पाया तो सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर की मंजिल में पहुँची.

अब वह उस गोल कमरे के अन्दर थी जिसे उसने नीचे से देखा था.

इस गोल कमरे में जिसके चारों तरफ खिड़कियाँ बनी हुई थीं दीवार के साथ - साथ गोलाकार रखे हुए पचासों छोटे - बड़े सन्दूक मालती को दिखाई पड़े जिनमें से कुछ के ढक्कन खुले हुए थे तथा कुछ के बन्द, मालती एक खुले हुए सन्दूक की तरफ बढ़ी और देखना चाहा कि उसके अन्दर क्या है मगर अभी उससे पाँच - छः कदम अलग ही थी कि बड़े जोर की आवाज के साथ उस सन्दूक का ढक्कन बन्द हो गया और वह जमीन के अन्दर धंस गया, फिर भी मालती की तेज निगाहों ने देख ही लिया कि वह तरह - तरह के कीमती जड़ाऊ गहनों से ऊपर तक भरा हुआ था जिनकी कीमत का अन्दाजा नहीं किया जा सकता.

वह पीछे हट कर एक दूसरे सन्दूक के पास गई तो उसे कीमती पोशाकों से भरा पाया मगर पास जाते ही वह भी पहिले सन्दूक की तरह जमीन में धंस गया.

इसी समय मालती की निगाह उस गोल कमरे की छत की तरफ गई जहाँ मोटे हरफों में उसने यह लिखा हुआ पाया " इस तिलिस्म में कई जगह ऐसे कितने ही खजाने रखे हैं मगर बिना चारों दर्जे टूटे ये हाथ नहीं लग सकते.

अगर तिलिस्म तोड़ने का काम समाप्त किये बिना ही तोड़ने वाला इन्हें हाथ लगाना चाहेगा तो उसे बहुत बड़ा नुकसान पहुँचेगा और कोई गैर यह काम करेगा तो उसका सिर कट कर गिर पड़ेगा.

" यह पड़ मालती ने इन सन्दूकों के भीतर की चीजों को देखने की ख्वाहिश छोड़ दी और आगे बढ़ कर उस सिंहासन पर जा बैठी जो इस कमरे के बीचोबीच में रखा हुआ था.

इसके बैठते ही वह सिंहासन ऊँचा होने लगा और धीरे - धीरे उस कमरे की छत के साथ जा लगा.

मालती ने अपने को उस गोल कमरे की छत पर पाया जहाँ वह उतर पड़ी और उसके उतरते ही वह सिंहासन नीचे लौट गया.

मालती ने अपने चारों तरफ गौर के साथ देखना शुरू किया.

गोल छत को चारों तरफ से एक पुरसा ऊंची दीवारों ने घेरा हुआ था जिनमें कहीं कोई खिड़की या मोखा दिखाई न पड़ता था, हाँ बीचोबीच में एक छेद - सा जरूर था जो वास्तव में वही जगह थी जहाँ नीचे की मंजिल से उठ कर उस सिंहासन ने मालती को पहुँचाया था.

मालती ने इसकी राह झाँक कर नीचे का हाल देखना चाहा मगर कुछ नजर न पड़ा.

शायद किसी चीज ने बीच में पड़ कर देखना नामुमकिन कर दिया था.

मालती ने ऊपर की तरफ देखा तो एक बहुत बड़े मेहराब पर निगाह पड़ी जो दक्षिण तरफ कहीं से उठता हुआ उस गोल छत के बीचोबीच से हो उत्तर तरफ कहीं जा आँखों से लोप हो गया था.

यह मेहराब जो देखने में लोहे का जान पड़ता था एकदम गोल चिकना बना हुआ था और उसकी मोटाई दो हाथ से किसी तरह क़म न होगी.

मालती ने जानना चाहा कि यह मेहराब किस जगह से उठता और कहाँ जाकर खत्म होता है मगर कुछ पता न लगा क्योंकि चारों तरफ वाली ऊँची दीवारें इस बात को प्रकट नहीं होने देती थीं.

मालती चारों तरफ निगाह दौड़ा रही थी कि उसके कान में पटाके की - सी आवाज पड़ी जिसने उसे चौका दिया.

ताज्जुब के साथ इधर - उधर देखने लगी.

मगर उसी समय पुनः वैसी ही आवाज आने से समझ गई कि यह उस मेहराब के अन्दर से ही निकल रही है.

इसी समय पुनः वैसी ही आवाज हुई और उसके साथ ही मालती ने देखा कि वह महराव बीचोबीच से दो टुकड़ा हो गयें और वे दोनों टुकड़े हाथी की सुडों की तरह इधर - उधर झूमने लगे .

.

.

केवल यहीं नहीं, मालती को यह देख कर भय भी मालूम हुआ कि धीरे - धीरे झूमते और हिलते हुए वे टुकड़े उसी की तरफ आगे बड़े आ रहे थे.

वह अपनी जगह से हट कर उस बड़ी छत के एक दूर के कोने में जा खड़ी हुई और महराब के उन दोनों टुकड़ो की तरफ देखने लगी.

पर उसका डर और भी बढ़ गया जब उसने देखा उस महराब के दोनों टुकड़े नीचे झुकते हुए उसकी तरफ बढ़ रहे हैं.

यहाँ तक कि उससे सिर्फ तीन - चार हाथ के फासले पर रह गये.

वह डर कर दौड़ती हुई छत के दूसरे कोने पर जा खड़ी हुई, मगर उस महराब ने यहाँ भी उसका पीछा न छोड़ा, वे दोनों टुकड़े और नीचे उतर कर छत से करीब दो - ढाई हाथ

ऊँचाई पर आ गये और मालती की तरफ इस तरह बड़े मानों किसी शैतान के हाथ हैं जो अपनी खूराक की खोज में बड़ रहे हैं.

मालती का खौफ पल - पल में बढ़ता जा रहा था.

कुछ देर तक तो इधर - उधर घूम कर उसने अपने को बचाया मगर अन्त में उनके फन्दे में पड़ ही गई.

उन महराव रूपी दोनों बाँहों ने एक जगह उसे दोनों तरफ से घेर कर दबोच लिया.

उसके अन्दर से आती हुई गर्म - गर्म और जहरीली हवा का ऐसा झोंका मालती को लगा जिसने उसका सिर घुमा दिया और वह बदहवास भी हो गई, कुछ देर बाद उसे तनोबदन की सुध न रह गई.

महराव के दोनों सिरों ने दो हाथों की तरह पकड़ कर ऊपर उटा लिया और देखते ही अपनी उसी खौफनाक ऊँचाई पर जा पहुँचे जहाँ दो टुकड़े होने के पहिले थे.

जब मालती होश में आई उसने अपने को एक दूसरी ही जगह पर पाया.

सूर्यदेव की तरफ गौर करके वह समझ सकती थी कि वह आधे घण्टे से ज्यादा देर तक बेहोश न रही क्योंकि इस समय भी वे अपनी पूरी तेजी से बीच आसमान में चमक रहे थे.

उसके सिर में हलके - हलके चक्कर आ रहे थे मगर यह तकलीफ शीघ्र ही दूर हो गई और वह बहुत जल्द ही इस लायक हो गई कि अपनी हालत पर गौर कर सके.

वह उठकर बैठ गई और तब थोड़े ही गौर ने उसे बता दिया कि वह उस ऊँचे काले पत्थर के बुर्ज पर है जिसे उसने इस जगह आने के पहिले देखा था.

उसने चारों तरफ निगाह दौड़ाई और तब देखा कि वह गोल छत जिस पर विचित्र महराब ने उसे गिरफ्तार किया था उसके सामने की तरफ दिखाई पड़ रही थी और वह महराव भी अब साफ - साफ दिखाई पड़ रहा था जो बाईं तरफ की किसी इमारत के बीच में से उठता और उस गोल कमरे के ठीक ऊपर से गुजरता हुआ दाहिनी तरफ जाकर लोप हो गया था.

मालती ने बहुत गौर किया कि उस महराब ने जब उसे पकड़ा तो उसके बाद क्या हुआ या वह इस ऊंचे बुर्ज पर कैसे आ पहुँची मगर कुछ समझ में न आया, लाचार वह उठ खड़ी हुई और आगे की कार्रवाई के खयाल में पड़ी क्योंकि तिलिस्मी किताब ने उसे बता दिया था कि यह गोल बुर्ज ही तिलिस्म के इस हिस्से का केन्द्र है और यहाँ का तिलिस्म तोड़ने के बाद ही वह आगे जा सकती है.

यह काम किस तरह होगा यह भी तिलिस्मी किताब तथा प्रभाकरसिंह की मदद से वह बखूबी समझ गई थी.

इस बुर्ज की गोल गुम्मजदार छत के साथ लटकी हुई एक मोठी लोहे की जंजीर की तरफ मालती बड़ी ही थी कि यकायक उसके कान में किसी की आवाज पड़ी जिसने उसे चौंका दिया.

उसे प्रभाकरसिंह का गुमान हुआ और यह सोच कर कि शायद वे ही कहीं पर बोल रहे हैं वह जंजीर की तरफ न जा उस बुर्ज के चारों तरफ इस ख्याल से घूमने लगी कि शायद कहीं से प्रभाकरसिंह पर उसी की निगाह पड़ जाय.

अचानक उसे पश्चिम और दक्खिन के कोने में बने बाग में तीन आदमी दिखाई पड़े जिनमें एक मर्द और दो औरतें थीं.

बह इन्हें देख एकदम चौंक पड़ी.

इस भयानक तिलिस्म में जहाँ किसी का आना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है.

ये लोग कहाँ से आ पहुँचे यह सोचती हुई वह ताज्जुब के साथ एकटक इन लोगों की तरफ देखने लगी मगर बुर्ज की ऊँचाई और वह लम्बा फासला जो उसके और उन आदमियों के बीच में था उन लोगों की शक्ल साफ - साफ देखने न देता था.

देर तक वह गौर करती रही मगर कुछ समझ न सकी कि ये लोग कौन हैं.

लेकिन हमारे पाठक बखूबी जानते हैं कि ये तीनों आदमी कौन हैं जिन पर मालती की निगाह पड़ी.

ये दयाराम, जमना और सरस्वती थे और जिस तरह मालती ने इन्हें देखा उसी तरह इन तीनों ने भी उसे देख लिया था और ताज्जुब के साथ सोच रहे थे कि यह कौन औरत है

क्योंकि जब से ये लोग इस तिलिस्म में फंसे तब से आज तक किसी गैर की सूरत इन्हें दिखाई न पड़ी थी.

मालती शायद दयाराम, जमना - सरस्वती से कुछ कहती या बातें करती मगर इसी समय उसे अपने पीछे की तरफ से आवाज सुनाई पड़ी जिसने उसे चौंका दिया.

वह घूमी और इसी समय उसकी निगाह नीचे के सहन पर पड़ी जहाँ उस भयानक पिशाच की मूरत देखती हुई वह आई थी.

उसने इस समय उस पिशाच के पास ही एक और आदमी को भी खड़ा देखा जिसे वह पहिली ही निगाह में पहिचान गई कि प्रभाकरसिंह हैं, वह खुशी - खुशी उनकी तरफ घूमी मगर यकायक उसके मुंह से डर और खौफ की एक चीख निकल गई क्योंकि उसने देखा कि प्रभाकरसिंह स्वतंत्र नहीं हैं बल्कि बहुत खतरे में हैं, वह भयानक शैतान अपने बड़े - बड़े दाँतों वाले भीषण जबड़ों को खोलकर उनके सिर को चबाया ही चाहता है.

मालती के मुँह से एक चीख निकल गई और वह सकते की - सी हालत में खड़ी एकटक उस तरफ देखती रह गई, प्रभाकरसिंह की अवस्था देखने में मालती इतनी व्यग्र हो गई कि अपनी सब सुध - बुध खो गई, यही सबब था कि उसे कुछ भी पता न लगा जब हलकी आवाज के साथ उस बुर्ज के फर्श का एक पत्थर नीचे को झूल गया और उसके अन्दर से दो तिलिस्मी शैतान बाहर निकल कर मालती की तरफ बढ़ने लगे.

१.

देखिये भूतनाथ चौदहवाँ भाग, नौवाँ बयान.

बात की बात में ये दोनों मालती के पास पहुँच गये और तब झपट कर उसे दोनों तरफ से कस कर पकड़ लिया.

अचानक इस नई मुसीबत को देख मालती के मुँह से पुन:

डर की एक चीख निकल गई.

उसने इन बेदर्द शैतानों से बचने के लिए बहुत कुछ उद्योग कियामगर कुछ न कर सकी और उसे पकड़े हुए वे दोनों गड्ढे के भीतर घुस गये जहाँ से निकले थे.

उनके जाने के बाद वह पत्थर भी पुनः ज्यों - का - त्यों अपनी जगह पर बैठ गया.

।

।

पन्द्रहवाँ भाग समाप्त ।

भूतनाथ -५

भूतनाथ -६

देवकीनन्दन खत्री

उपन्यास

खण्ड - छः

सोलहवाँ भाग

पहला व्यान।

सुबह का समय है, चुनारगढ़ से लगभग चार कोस हट कर जंगल के किनारे पर बने हुए एक बड़े और पक्के कूएँ पर हम पाठकों को ले चलते हैं ।

सूरज अभी नहीं निकला है फिर भी उसकी आभाई जान रंग - बिरंगी चिड़ियाँ जाग उठी हैं और टहनियों पर बैठ कर अपनी मनोहर बोलियों से जंगल को गुंजा रही हैं ।

इस कुएँ पर जिसका जिक्र हमने ऊपर किया है, इस समय पाँच - छ:

आदमियों की एक छोटी मंडली दिखाई पड़ रही है जो अभी यहाँ पहुँची है और अपना बोझ उतार हलकी हो रही है।

इनमें से एक आदमी सरदारी के तौर पर एक हलके बिछावन पर जा बैठा है जो इसके लिए इसके साथियों ने आते ही बिछा दिया है और बाकी के इधर - उधर बैठे हुए सुस्ताते तथा साथ - साथ बातें भी करते जाते हैं ।

पाठकों को तरददुद में न डाल हम बताये देते हैं कि ये लोग वे ही हैं जिनका हाल हम पन्द्रहवें भाग के उन्नीसवें बयान में लिख आए हैं अथवा जो उस गुफा में से गौहर और मुन्दर को ले भागे थे ।

हमारे पाठक यह भी जानते हैं कि जब तक उस आदमी के असली नाम का पता न लग जाए जो इन लोगों की सरदारी कर रहा है तब तक के लिए हमने उसका नाम घनश्याम रख दिया है ।

अस्तु इस समय हम तब तक उसे इस बनावटी नाम से ही पुकारते जाएंगे जब तक कि उसके असली नाम का पता नहीं लग जाता ।

घनश्याम के सामने कपड़े में बँधी दो बड़ी गठरियाँ पड़ी हुई हैं जिनमें बेहोश गौहर और मुन्दर बँधी हुई हैं.

इस समय घनश्याम की आँखें उन्हीं गठरियों पर पड़ रही हैं और वह उनकी तरफ गौर से देखता हुआ कुछ सोच रहा है.

कुछ देर बाद घनश्याम ने एक आदमी की तरफ देख कर कहा, " रामु, अगर तुम सुस्ता चुके हो तो जरा इधर आओ और इन गठरियों को खोल कर दोनों बेहोशों को बाहर निकालो ताकि उनके बदन में भी इस वक्त की ताजी हवा लग जाय.

" यह सुनते ही वह आदमी अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और पास पहुँचकर उन गठरियों को खोलने की फिक्र में लगा.

बात की बात में दोनों बेहोश औरतें गठरी से खोल कर जमीन पर लेटा दी गई और घनश्याम ने बारी - बारी से दोनों की नब्ज देखते हुए कहा, “ इनकी बेहोशी दूर हो रही है, हवा लगने से दोनों जल्दी होश में आ जाएगी.

" रामू यह सुन बोला, " कहिए तो इन्हें पुन:

बेहोशी की दवा सुंघा कर कुछ घण्टों के लिए मुर्दा कर दूँ, ” घनश्याम ने जवाब दिया, " कोई जरूरत नहीं, मैं चाहता हूँ कि ये होश में आ जाएं और इनसे बातचीत करके कुछ पता लगाऊँ कि ये कौन हैं.

(दोनों की सूरतें गौर से देखता हुआ) जरूर इनकी सूरतें बनाबटी हैं.

11 रामू:

हुक्म हो तो कुएँ के पानी से इनका चेहरा धोकर साफ कर डालें?

घनश्याम:

ऐसा ही करो.

(गौहर की तरफ बता कर) इसकी सूरत तो मुझे कुछ - कुछ पहिचानी सी लगती है, जरूर इसे मैंने पहिले कहीं देखा है, मगर इस दूसरी के बारे में कुछ कह नहीं सकता.

राम् :

देखिए अभी सब मालूम हुआ जाता है.

अपने सामान में से रामू ने कपड़े का डोल और पतली डोरी निकाली और बात की बात में कुएँ से पानी खींच कर बेहोशों के पास जा पहुँचा.

घनश्याम की आज्ञानुसार दोनों का चेहरा धो कर साफ किया गया.

रंग दूर होते ही और चेहरा साफ होने के साथ ही घनश्याम चौंक पड़ा और बोला, " हैं, यह तो गौहर है! तब तो बड़ा गजब हुआ! " रामू:

क्यों क्या हुआ!

घनश्याम:

(घबराहट के साथ जेब से कुछ निकाल कर रामू को देता हुआ) यह होश में आना ही चाहती है, पहिले यह चीज सुँघा कर इसे बेहोश करो तब कुछ पूछना.

बेहोशी की दवा सुंघा कर गौहर पुनः गहरी बेहोशी में डाल दी गई और तब रामू ने घनश्याम की चीज उसे लौटाते हुए कहा, " क्या यह वही गौहर है जिस पर हमारे महाराज लट्टू हो रहे हैं?

" घनश्याम ०:

हाँ.

रामू ०:

तो इन्हें देख कर आप घबरा क्यों गए?

यह तो हम लोगों के मेल ही की निकलीं, इनको तो बल्कि होश में लाकर पूछना चाहिए कि इनकी साथिन कौन है, उस गुफा में ये कैसे पहुंची और वह भयानक शैतान जिसे हम लोगों ने देखा (कॉप कर) और जिसकी याद से अब भी कँपकँपी आती है, कौन था?

घनश्याम:

तुम तो गधे हो! महाराज से जरा - सी यह शिकायत कर देंगी तो हम सब मारे जाएंगे !! राम् ०:

शिकायत! क्यों और किस बात की?

घनश्याम ०:

यही कि हम लोगों ने इन्हें बेहोश किया और बेइज्जती के साथ इस तरह गठरी में बाँध कर लाए, रामू ०:

वाह यह भी कोई बात है, हम लोगों ने कुछ जानबूझ कर ऐसा थोड़े ही कीया .

अँधेरी रात, मुसीबत की घड़ी, अनजानी जगह, तिस पर सूरत बदली हुई! भला हम लोग कोई देवता थे कि वैसी हालत में भी इन्हें पहिचान लेते! ' घनश्याम ०:

तुम्हें अभी इनके मिजाज का पता नहीं तभी ऐसा कह रहे हो, वह आनन्दसिंह वाली बात भूल गए?

रामू:

कौन सी?

घनश्याम:

ठीक है, तुम उन दिनों थे नहीं, अगर होते तो ऐसा न कहते.

राम्:

कौन सी बात! क्या हुआ था?

घनश्याम:

तुमने सुना तो होगा ही, वही जब महाराज ने राजा वीरेन्द्रसिंह के लड़कों को पकड़ने का जिक्र किया था और इसी गौहर ने इस काम का बीड़ा उठाया था.

रामू:

मैंने कुछ उड़ती खबर सुनी थी परन्तु ठीक - ठीक हाल नहीं मालूम हुआ, बल्कि मैं पूछने वाला था कि क्या हुआ था! घनश्याम:

खैर पूरा हाल तो फिर बताऊँगा, मुख्तसर यह है कि गौहर ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को गिरफ्तार करके हमारे महाराज के पास ले आने का वादा कीया , हम

कई ऐयार लोग इनकी मदद पर दिए गए, हम लोगों ने अपना जाल रचा जिसमें आनन्दसिंह तो फँस गए मगर इन्द्रजीतसिंह को रानी माधवी फँसा ले गई इससे वे हमारे हाथ न लगे.

आनन्दसिंह को गिरफ्तार करके शिवदत्तगढ़ ले जाने की मैंने सलाह दी पर इन हजरत को न जाने क्या सूझी कि एक मकान में उन्हें बन्द कर रखा जहाँ से बीरेन्द्रसिंह के ऐयार उन्हें छुड़ा ले गए.

मगर इसका इलजाम हम लोगों के सिर थोपा गया.

न जाने महाराज को क्या समझा दिया कि वे मुझे ही दोषी समझ बैठे और मुझे उनकी बहुत कड़ी डाँट सुननी पड़ी.

तब से मैं इससे बहुत डरता हूँ.

इस समय मैंने इसके काम में दख्लन्दाजी की है, अगर फिर इसने कोई शिकायत महाराज से कर दी तो मैं कहीं का न रहूँगा.

रामू इसके जवाब में कुछ कहा ही चाहता था कि यकायक इसके साथियों में से एक जो जरूरी कामों के लिए गया हुआ था दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा और कुछ घबराहट के साथ बोला, " महाराज आ रहे हैं! " घनश्याम ने यह सुनते ही चौंक कर कहा, " कौन! महाराज आ रहे हैं?

" उसने जबाब दिया, " हाँ, शिकार के लिए आज वे बहुत सवेरे ही सिर्फ दो आदमियों को लेकर निकले और इसी तरफ आ रहे थे जब रास्ते में मुझे देख कर अचानक रुक गए और सब हाल पूछ कर इधर ही को बड़े आ रहे हैं.

मैं दौड़ कर खबर देने आ गया! "

घनश्याम के मुंह से यह सुनते ही " बुरा हुआ! " निकल गया और उसने हाथ गौहर की तरफ बढ़ा कर कहा, “ जल्दी से इसकी सूरत बदल दो! " मगर इस बात का कोई भी मौका न मिला क्योंकि उसी समय पास के जंगल से निकल कर आते हुए तीन घुड़सवारों पर नजर पड़ी.

उसके मुंह से निकल पड़ा, " आ पहुँचे! " और वह कुछ बेचैनी के साथ उठ खड़ा हुआ.

उसके बाकी साथी भी खड़े हो गए बल्कि सब लोग अगवानी के लिए कूएँ से उतर कर उस तरफ बड़े जिधर से महाराज शिवदत्त सवारों के साथ आ रहे थे.

अपने आदमियों को सामने देख शिवदत्त ने घोड़ा रोका और उनके सलामों का जवाब देते हुए घनश्याम की तरफ देख कर कहा, " क्यों जी खुदाबख्श, तुमने आने में इतनी देर क्यों कर दी?

मैं आज कई दिनों से तुम लोगों की राह बेचैनी से देख रहा हूँ.

" उसकी बात के जवाब में खुदाबख्श (जिसे अब तक घनश्याम के नाम से पुकारते आए हैं) अदब के साथ बोला, " हुजूर का हुक्म पाते ही हम लोग इधर के लिए रवाना हो गए मगर रास्ते में दो दिन की देर इसलिए हो गई कि मुझे पता चला कि गौहरजी किसी मुसीबत में पड़ गई हैं.

इसी बात का पता लगाने और उनकी मदद करना जरूरी समझने से मुझे रुक जाना पड़ा.

" शिवदत्:

(चौंककर) गौहर, मुसीबत में! सो क्या, वह इस वक्त कहाँ है?

खुदाबक्ष:

बड़ी मुश्किल से मैंने उन्हें और उनकी एक साथिन को कई बदमाशों के हाथ से छुड़ाया है, (हाथ से बताकर) उस जगह कुएं पर हैं.

वे अभी तक बेहोश हैं, अभी हम लोग उन्हें होश में लाकर पूरा हाल - चाल पूछने ही वाले थे कि महाराज के आने की खबर मिली.

यह सुनते ही शिवदत्त उतावली के साथ कूएँ की तरफ बड़ा और खुदाबख्श तथा उसके साथी तथा वे दोनों सवार भी जो शिवदत्त के साथ थे उसके पीछे हो लिए.

कूएँ के पास पहुँच शिवदत्त घोड़े पर से उतर पड़ा.

खुदाबख्श ने घोड़े की लगाम पकड़ कर अपने साथी रामू के हवाले कर दी और ऐसा करते हुए धीरे से उसके कान में कह दिया, “ सभों को होशियार कर दो कि अगर

महाराज पूछे तो यही कहें कि हमने इन दोनों को दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया है.

तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ शिवदत्त कुएँ पर चढ़ गया और वहाँ गौहर को बेहोश पड़ा देखते ही उसके पास बैठकर गौर से उसकी नब्ज देखकर बोल पड़ा, " ओफ, इसे बहुत कड़ी बेहोशी दी गई है! (खुदाबख्श की तरफ घूमकर) तुमने इसे कहाँ पाया?

" खुदा:

यहाँ से आठ कोस दूर एक पहाड़ी की तलहटी में, रात के वक्त कई आदमी इन्हें और (दूसरी औरत की तरफ बताकर) इसे बेहोश लिए जा रहे थे कि हम लोगों ने पता पाकर उन्हें घेर लिया और बड़ी मुश्किल और चालाकी से उनके पंजे से छुड़ाकर सीधे इसी तरफ लिए चले आ रहे हैं.

शिवदत्त:

वे लोग कौन थे जो इसे ले जा रहे थे?

उनमें से कोई गिरफ्तार हुआ?

खुदा:

अफसोस कि कोई हाथ न आया जिससे पता लगता कि वे कौन थे, मगर शायद ये बता सकती हों कि वे कौन थे?

इन्हें होश में लाने से सब पता लग जाएगा.

यह कहकर खुदाबख्श ने लखलखे की डिबिया निकाली मगर उसी समय शिवदत्त ने रोककर कहा, " नहीं, मैं कुछ दूसरी ही बात सोचता हूँ! मेरी इच्छा है कि इसे सीधा महल ले जाऊँ और तब वहीं होश में लाकर हाल - चाल दरियाफ्त करूँ ।

तुम लोगों के सुपुर्द में एक दूसरा और बहुत जरूरी काम करना चाहता हूँ जिसे मैं अकेले में तुमसे कहूँगा.

" शिवदत् ने चारों तरफ देखा जिसके साथ ही उसका मतलब समझ और लोग कुछ दूर हट गए और केवल खुदाबख्श वहाँ पर रह गया जिसकी तरफ झुककर कान में महाराज ने कुछ कहा.

सुनते ही वह चौंक पड़ा और ताज्जुब के साथ बोला, " क्या महाराज ठीक कह रहे हैं? ! "

शिवदत्त ने कहा, " मुझे बहुत ठीक खबर लगी है और इसीलिए मैं चाहता हूँ कि बिना एक सायत की भी देरी किए तुम अपने ऐयारों को साथ ले उसी तरफ रवाना हो जाओ, देर होने से बहुत नुकसान होने की सम्भावना है! " खुदा:

बेशक, इसमें क्या शक है.

मगर हम लोगों को क्या - क्या करना होगा, बता दिया जाए, थोड़ी देर तक शिवदत्त और खुदाबख्श में धीरे - धीरे कुछ बातें होती रहीं.

इसके बाद शिवदत्त उठ खड़ा हुआ और कूएँ के नीचे उतर अपने घोड़े पर सवार हुआ, उसकी आज्ञानुसार बेहोश गौहर उसके घोड़े पर बैठा दी गई और दूसरी औरत (मुन्दर) उसके साथी सवार के घोड़े पर.

शिवदत ने ऐयारों से कुछ बातें कीं और तब घोड़े का मुँह शिवदत्तगढ़ की तरफ घुमाया.

उसके साथी दोनों सवार भी इस समय पीछे हुए.

हम खुदाबख्श वगैरह का साथ छोड़कर शिवदत्त के पीछे चलते और देखते हैं कि वह गौहर और मुन्दर को लेकर किधर जाता अथवा क्या करता है.

गौहर की जब बेहोशी टूटी तो उसने अपने को एक पहाड़ की कंदरा में पाया जो बहुत लम्बी - चौड़ी और कुशादा थी.

वह मुलायम पत्तियों के बिछावन पर पड़ी हुई थी और उसके बगल ही में उसकी साथिन अर्थात् मुन्दर पड़ी हुई थी जो अभी तक बेहोश थी.

इन दोनों से कुछ हटकर गुफा के मुहाने के पास महाराज शिवदत्त बैठे हुए कुछ कर रहे थे.

गुफा के बाहर की तरफ आग जल रही थी जिसके पास बैठे दो आदमी खाने की चीजें तैयार कर रहे थे.

एक मरा हुआ हरिण भी उसी जगह पास ही में पड़ा हुआ था.

महाराज शिवदत्त को पहिचान एक दफे तो गौहर चौंक गई और उसने पुनः अपनी आँखें बन्द कर लीं मगर कुछ देर बाद पुनः खोली और जमीन का सहारा लेकर उठ बैठी.

उसके बदन में इस समय बेतरह दर्द हो रहा था जिसका कारण वह कुछ नहीं समझ सकती थी, साथ ही यह भी उसकी समझ में नहीं आता था कि वह जहाँ पर है वह कौन सी जगह है, वहाँ वह कैसे आई और राजा शिवदत्त यहाँ क्योंकर आ पहुँचे.

गौहर इन बातों को सोच ही रही थी कि शिवदत्त ने घूम कर उस तरफ देखा और उसे होश में आया देख उठ कर उसके पास आ गया.

उसके हाथ में एक लोटा था जिसे उसने गौहर की ओर बढ़ाते हुए कहा, " वाह रे तुम होश में तो आईं! इतनी कड़ी बेहोशी तुम्हें दी गई थी कि मैं तो सब तरह की कोशिश कर लाचार हो गया था.

लो पानी से अपना मुँह धोओ ताकि दिमाग ठिकाने आवे तब बताओ कि तुम कहाँ और किस आफत में पड़ गई थीं?

" गौहर ने पानी ले लिया और अपनी आँखों पर कई छींटे दिए तथा मुँह अच्छी तरह धोया जिससे उसके सिर का चक्कर और माथे का दर्द कुछ क़म हुआ.

इसके बाद वह मुन्दर की तरफ गई और उसकी जाँच करने से उसे मालूम हुआ कि वह अभी तक बहुत गहरी बेहोशी में है.

उसने अपनी कमर से लखलखा निकालना चाहा मगर देखा कि वहां ऐयारी का बटुआ मौजूद नहीं है जिसे वह बराबर अपने साथ रखती थी.

लाचार उधर से हटी और महाराज शिवदत्त के पास पहुँची जो उसका हाल जानने के लिए बेचैन जान पड़ते थे.

हाथ पकड़ कर उसे उन्होंने अपने पास बैठा लिया और बड़ी मुहब्बत के साथ पूछा, " अब तबीयत कैसी है?

" गौहर:

सिर्फ सर में दर्द है जो बेहोशी के कारण है - मगर मुझे इस बात का ताज्जुब है कि मैं यहां किस जगह आ पहुँची और आप यहाँ कैसे दिखाई पड़?

शिवदत्:

मैं संक्षेप में बताए देता हूँ, यह जगह शिवदत्तगढ़ के पास ही है.

मैं शिकार खेलने दो रोज से इधर आया हुआ था.

आज सुबह एक हिरन के पीछे घोड़ा छोड़े सरपट जा रहा था कि यकायक पाँच - छ:

आदमी दिखाई पड़े जो गठरियाँ उठाए चले आ रहे थे.

मुझे देख वे लोग कुछ घबड़ाये और छिपने की कोशिश करने लगे जिससे मुझे शक मालूम हुआ और मैं हिरन का खयाल छोड़ उनके पास चला गया और पूछने लगा कि तुम लोग कौन हो, किधर जा रहे हो और इन गठरियों में क्या है?

मेरे सवालों का वे लोग कुछ ठीक जबाब न दे सके जिस पर मैंने डपट कर उनसे कहा कि मालूम होता है कि तुम लोग चोर हो और इन गठरियों में चोरी का माल है.

गठरियाँ खोलकर मुझे दिखलाओ कि क्या है?

जब मैंने गठरी खोलने का नाम लिया तो वे सब बिगड़ खड़े हुए, गठरी खोलकर दिखाने से इनकार किया बल्कि मेरा मुकाबला करने को तैयार हो गए.

नतीजा यह निकला कि मुझे अपनी तलवार से काम लेना पड़ा.

दो आदमी जख्मी होकर गिर पड़े और उसी समय मेरे ये दोनों सवार (गुफा के बाहर वाले दोनों आदमियों को दिखाकर) भी आ पहुँचे जिन्हें देखकर उन लोगों की हिम्मत एक दम छूट गई और वे गठरियाँ छोड़कर भाग गए, जब मैंने गठरियाँ खोल कर देखा तो एक में तुम और एक में वह औरत (मुन्दर की तरफ इशारा करके) बंधी हुई दिखाई पड़ी जिसे देख मेरे ताज्जुब का हद्द न रहा.

मैं तुम दोनों को इस गुफा में उठा लाया और होश में लाने की कोशिश करने लगा मगर जाने किस तरह की बेहोशी तुम लोगों को दी गई थी कि मेरी कोई भी कोशिश कारगर न हुई, लाचार यहाँ लेटा कर कुछ खाने की तैयारी में लगा था कि तुम होश में आ गई.

अब बताओ कि वे लोग कौन थे जो तुम्हें उठाए लिए जा रहे थे और तुम उनके पंजे में क्योंकर फंस गई?

गौहर:

मैं खुद भी कुछ नहीं बता सकती कि वे लोग कौन थे, क्या उनमें से कोई गिरफ्तार भी हुआ?

शिवदत:

अफसोस कि एक भी नहीं, सब भाग गए, मगर यह तुम ताज्जुब की बात कह रही हो कि जिन्होंने तुम्हें गिरफ्तार किया उनको तुम खुद भी नहीं जानतीं, आखिर कुछ अन्दाज तो कर सकती हो?

गौहर ०:

(कुछ सोचती हुई) सिवाय इसके और कुछ नहीं कह सकती कि सम्भव है कि वे सब भूतनाथ के साथी हों.

शिव:

(चौंक कर) भूतनाथ के साथी! गौहर:

हाँ.

शिव:

(ताज्जुब से) ऐसा शक़ तुम्हें क्योंकर होता है?

गौहर:

इसीलिए कि मैं भूतनाथ को सताकर लौट रही थी जब गिरफ्तार कर ली गई, शिवः यह तो और भी ताज्जुब की बात तुमने कही! लेकिन अब इस तरह पहेली बुझाने से कोई नतीजा न निकलेगा.

साफ सब हाल कहो तो कुछ पता लगे.

तुम तो प्रभाकरसिंह तथा इन्दुमति आदि को गिरफ्तार करने का बीड़ा उठा मुझसे विदा होकर जमानिया गई थीं! वहाँ जाकर फिर भूतनाथ के पीछे क्यों पड़ गईं !! गौहर:

(हँसकर) आप ही ने न कहा था कि अगर भूतनाथ किसी तरह आपका मददगार बन जाय तो आपका काम खूब मजे में निकल सकता है! शिव:

हाँ कहा तो था.

गौहर:

तो इसीलिए मैं भूतनाथ के पीछे पड़ी हुई थी और उसे आपकी तरफ करने का उद्योग कर रही थी.

शिव:

लेकिन देखता हूँ कि सो न करके उससे झगड़ा मोल ले बैठीं.

आखिर क्या हुआ, कुछ खुलासा बताओ भी तो! गौहर:

खुलासा हाल तो बहुत लम्बा चौड़ा है जिसे पूरा - पूरा कहने में घंटों लग जाएंगे.

इस समय संक्षेप में मैं आपको सुनाए देती हूँ कि जिस समय मैं जमानिया में थी मुझे भूतनाथ के एक गुप्त भेद का पता लग गया और उसका पूरा हाल जानने की फिक्र में मैं पड़ गई क्योंकि मुझे खयाल हुआ कि अगर मैं उस भेद का पूरा पता लगा सकूँगी तो भूतनाथ को अपने बस में करने का एक अच्छा औजार हम लोगों के हाथ में आ जायगा.

शिव:

तब क्या हुआ! उस भेद का कुछ पता लगा?

गौहर:

हाँ बहुत कुछ.

(बेहोश मुन्दर की तरफ बताकर) भाग्यवश इनसे मेरी भेंट हो गई और मुझे उस सम्बन्ध में बहुत कुछ बातें मालूम हो गई यहाँ तक कि मैं भूतनाथ से मिली और उस भेद की तरफ इशारा किया जिसे सुनते ही वह इतना डरा और घबराया कि बेहोश हो गया.

शिव:

(ताज्जुब से) ऐसा! वह भेद क्या था?

गौहर:

(मुस्करा कर) सो मैं अभी न बताऊँगी.

शिव:

ऐसा! मगर सो क्यों?

गौहर:

अभी उसका मौका नहीं आया, वक्त आने पर सब बता दूंगी.

शिव:

खैर खुशी तुम्हारी! मैं तुम्हारी मर्जी के खिलाफ उसे जानने पर जोर न दूंगा.

खैर तब क्या हुआ – जब तुम्हारी बातें सुन वह बेहोश हो गया तब तुमने क्या कीया ?

गौहर:

उसी समय उसके कुछ साथी आ पहुँचे जिससे मुझे वहाँ से भागना पड़ा.

लेकिन उसके बाद ही मैं दुश्मनों के हाथ पड़ गई और मुझे गुमान होता है कि वे लोग जिन्होंने मुझे और मेरी साथिन को पकड़ा अथवा जिनके हाथ से आपने हम लोगों को छुड़ाया जरूर भूतनाथ के वे आदमी ही होंगे.

शिव:

सम्भव है ऐसा ही हो.

जब तक मुझे पूरा - पूरा हाल न बताओ तब तक मैं कोई गुमान करने में असमर्थ हूँ,
गौहर:

मैं जरूर सब हाल पूरा - पूरा और खुलासा आपको सुनाऊँगी मगर इस समय नहीं, मौके पर, अभी तो मुझे खुद सब हाल नहीं मालूम हुआ है मगर इन (बेहोश मुन्दर की तरफ बताकर) का साथ अगर कुछ समय तक और रहा तो सब कुछ मालूम हो जायगा.

शिव:

यह कौन औरत है?

गौहर:

यह भी एक ऐयारा ही है, कुछ ही दिन से मेरा इसका साथ हुआ है.

यद्यपि यह कम उम्र है मगर बड़ी होशियार और चालाक है.

इसका भी पूरा हाल जब मैं बताऊँगी तो सुनकर आप ताज्जुब में पड़ जाएँगे.

मगर ताज्जुब है कि यह अभी तक होश में नहीं आई!

शिव:

मैंने कहा न कि तुम दोनों को न जाने किस तरह की बेहोशी दी गई थी, मैं घण्टों कोशिश करके हार गया पर किसी तरह होश में न ला सका.

मालूम होता है कि किसी अनाड़ी ऐयार की तैयार की हुई थी.

ऐसी बेहोशी प्रायः नुकसान पहुंचाती है और कभी - कभी तो दिमाग पर भी असर कर बैठती है, खुदा का शुक्र है कि तुम पर कोई बुरा असर न हुआ.

गौहर:

सिर में तो मेरे बेहिसाब दर्द था और अभी तक भी बना हुआ है, शायद स्नान वगैरह के बाद दूर हो, मगर इसे अब होश में लाना चाहिए.

शिवदत्त:

(अपनी कमर से लखलखे की डिबिया निकाल और गौहर को देकर) लो जरा इसे सुंघा कर देखो तो सही, शायद अब होश आ जाय.

गौहर ने डिविया शिवदत्त के हाथ से ले ली और बेहोश मुन्दर के पास पहुंची.

पहिले तो उसे हिला - डुला कर होश में लाना चाहा पर जब देखा कि वह अभी भी कड़ी बेहोशी में पड़ी है तो लखलखे की डिबिया उसकी नाक से लगाई मगर बहुत देर तक सुंघाने पर भी कोई असर न पड़ा.

यह देख उसने शिवदत्त की तरफ देखा और कहा, यह तो अभी भी होश में नहीं आ रही है! न जाने किस तरह की बेहोशी में पड़ी है ।

शिवदत्त ने यह सुन जल से भरा एक लोटा उठा लिया और गौहर के पास आ उसके हाथ में देकर कहा, " इसके छींटे मुँह पर दो, मैं पंखे से हवा करता हूं!! ऐसा ही किया गया और दोनों की बहुत देर की कोशिश के बाद बेहोश मुन्दर ने हाथ - पाँव हिलाए और कुछ होश में आने के लक्षण दिखाई देने लगे, शिवदत्त ने यह देख कहा, " इसे बाहर ले चलना चाहिए, साफ हवा लगने से शायद जल्दी होश में आ जायगी.

"

दोनों मिल कर बेहोश सुन्दर को बाहर मैदान में लाए.

बार - बार मुंह पर पानी छिड़कने, हवा करने और लखलखा सुंघाने से बहुत देर के बाद मुन्दर के हवास कुछ ठिकाने हुए, उसके बदन में हलकी कँपकँपी आई, दो - चार छींके आई और थोड़ी देर बाद उसने करवट बदली, गौहर उसके सिहराने बैठी हुई थी, उसने प्रेम से मुन्दर के माथे पर हाथ फेरते हुए पूछा, " बहिन, अब तबीयत कैसी है?

जरा होश में आओ.

आँखें खोलो.

” मुन्दर ने आँखें बन्द किए हुए ही पूछा, " मैं कहाँ हूँ! तुम कौन हो?

" गौहर ने जवाब दिया, " मैं तुम्हारी सखी गौहर हूँ, तुम दोस्तों के बीच में हो! इन लोगों ने तुम्हें और हमें छुड़ाया है.

जरा आँख खोलो और उठ के बैठो.

" मुन्दर ने अपने सिर को हाथों से दबाते हुए कहा, " ओफ! सिर फटा जाता है, कुछ याद नहीं पड़ता कि मैं कौन हूँ और कहाँ हूँ और तुम कौन हो! गौहर, गौहर! कौन गौहर?

" गौहर ने पुनः पानी का छींटा मुँह पर दिया जिससे मुन्दर ने आँखें खोल दी और अपने चारों तरफ देखा, मगर मालूम होता था कि अभी उसकी आँखों में देखने और पहिचानने

की शक्ति पूरी तरह से नहीं आई है, आँखें मलते हुए उसने चारों तरफ देखा और तब गौहर से पूछा, " यह कौन सी जगह है?

ये लोग कौन हैं?

तुम कौन हो?

" गौहर ने ताज्जुब से कहा, " है सखी, तुम मुझे नहीं पहिचानतीं! यह तुम्हारी क्या हालत है! मैं गौहर हूँ! अभी कल तक हम लोगों का साथ रहा है, क्या वह सब बातें तुम भूल गई?

उस भयानक पिशाच का हाल भूल गईं जिसे गुफा में देखा था! " अपना सिर दोनों हाथों से दबाती हुई मुन्दर ने कहा, " ओफ सिर फटा जाता है! गौहर! मेरी सखी, हाँ ठीक है, याद आया.

पिशाच! वह भयानक नर - कंकाल! ओफ !! यह मेरी क्या हालत हो गई है! " शिवदत्त ने झुककर धीरे से गौहर के कान में कहा, " अनाड़ी ऐयारों की बनाई बेहोशी की दवा का यही असर होता है.

इसे जरा ले जाओ और उस नाले के किनारे टहलाओ, जरा - चले - फिरेगी और ठंडी - ठंडी हवा लगेगी तो होश ठिकाने आवेगा नहीं तो घण्टों इसी हालत में रह जायगी.

वह तो कहो ईश्वर ने बड़ी कृपा कर दी कि तुम पर बेहोशी का ऐसा बुरा असर नहीं हुआ.

गौहर ने बेहोश मुन्दर का हाथ पकड़कर उठाया और कहा, " उठो, जरा घूमो तो फिर तुम्हारे हवास ठिकाने हों, " उसने कोई उज्र न किया और हाथ का सहारा लेकर खड़ी हुई.

गौहर उसे सहारा देती और तरह - तरह की बातें करती हुई उस नाले की तरफ ले चली जो वहाँ से थोड़ी ही दूर पर बह रहा था और जिसके दोनों तरफ के सायेदार पेड़ों ने उस जगह को बड़ा ही रमणीय और गुंजान कर रखा था.

दो - चार चक्कर इधर - उधर देने और ठंडी हवा लगने से मुन्दर के होशहवास धीरे - धीरे काबू में आने लगे, वह एक जगह रुक कर खड़ी हो गई और गौर से गौहर की सूरत

देखकर यह कहती हुई उसके गले से लिपट गई, “ आह मेरी प्यारी सखी! मैंने तुम्हें पहिचाना! " दोनों औरतें एक साफ पत्थर की चट्टान पर बैठ गई और बातें करने लगीं.

मुन्दर ने कहा, " ओफ, न जाने किस तरह की बेहोशी दी गई थी कि अभी सिर भन्ना रहा है और पुरानी बातें खयाल नहीं आ रही हैं.

तुम जरा फिर से बताओ तो सही कि हम लोग कहाँ तक साथ - साथ थे और मैं कैसे बेहोश होकर यहाँ पहुँची! " गौहर:

हम लोग काशीजी पहुँचकर भूतनाथ के मकान पर गई थीं और वहाँ उससे भेंट कर तथा उसे अपनी बनाबटी शकलें दिखा बदहवास कर उसके बटुए में से कुछ जरूरी कागजात लेकर निकल भागी थीं, वहाँ से हम लोग अपने ठिकाने उस गुफा में पहुंची जहाँ मैंने अपना घोड़ा रक्खा था पर उस गुफा के अन्दर एक भयानक पिशाच दिखाई पड़ा जिसके बदन में सिर्फ हड्डियाँ थी, उसे देखकर हम लोग भागीं तो किसी ने हमें पकड़ लिया और बेहोश कर दिया.

उसके बाद का हाल मैंने इन लोगों की जुबानी सुना और वह यह है कि वे लोग हम लोगों को लिए भागे जा रहे थे कि शिवदतगढ़ के राजा शिवदत्तसिंह ने उन्हें देखा और उनके पंजे से हम लोगों को छुड़ा कर यहाँ लाए,

मुन्दर:

ठीक है, अब मुझे कुछ - कुछ याद आने लगा है.

वह भयानक पिशाच और उसकी डरावनी हँसी मुझे खयाल आती है.

अच्छा तो ये लोग क्या महाराज शिवदत्त के आदमी हैं?

गौहर:

वे खास महाराज शिवदत्त थे जो तुम्हें पंखा कर रहे थे! मुन्दर:

अच्छा वे ही राजा शिवदत्त है! तुम्हारी इनकी जान - पहिचान क्योंकर और कब हुई?

गौहर:

(मुस्कराकर) क्या तुम भूल गई?

इनका हाल तो मैंने तुम्हें उस लोहगढ़ी में सुनाया था! मुन्दर ०:

सुनाया था?

मुझे याद नहीं आता! शायद धीरे - धीरे याद आ जाय.

मगर न जाने मेरे दिमाग को क्या हो गया है! कुछ काम नहीं कर रहा है.

तुम कुछ और हाल सुनाओ, भूतनाथ से हम लोगों ने क्या बातें की थीं! हम लोग किसी दूसरे की सूरत बनकर उससे मिले थे?

गौहर

हाँ हाँ, क्या तुम्हें याद नहीं?

तुम भुबनमोहिनी बनी थीं और मैंने कामेश्वर का रूप धरा था.

(हंस कर) भूतनाथ हम लोगों को देखकर इतना डरा कि बेहोश हो गया.

मुन्दर:

हाँ अब मुझे भी कुछ याद आने लगा है, शायद वहाँ किसी गली में हम लोगों की भूतनाथ से भेंट हुई थी.

गौहर:

हाँ - हाँ, गली में भेंट हुई थी और कुछ ही देर बाद वहाँ उसके कुछ साथी भी आ पहुँचे जिनके कारण हम लोगों को भागना पड़ा था नहीं तो और भी कुछ काम की चीजें हाथ लगती.

मगर वे लोग न आ जाते तो उन थोड़े से कागजों के अलावा जो उसके बटुए में से निकले थे और भी कुछ न कुछ हम लोग जरूर पाते.

मुन्दर:

वे कागजात सब कहाँ रखे तुमने?

होशियारी से रखें हैं तो?

गौहर:

हाँ हाँ यह देखो इसी से तो मैंने उन्हें अपने बटुए में नहीं रक्खा, कह कर गौहर ने अपनी चोली में हाथ डाला और साथ ही उसके मुंह से ताज्जुब और घबराहट की एक चीख निकल पड़ी.

मुन्दर ने पूछा.

क्या हुआ?

" वह घबराये हुए गले से बोली, " वे कागज किसी ने निकाल लिए " मुन्दर:

(घबड़ा कर) निकाल लिए?

तब तो बड़ा गजब हो गया! जिसके लिए इतनी जान जोखिम की गई, इतने - इतने खतरों में अपने को डाला गया, वे ही कागज गायब! गौह्र:

(परेशानी और घबराहट से) बेशक यह काम उन्हीं लोगों का है जिन्होंने हमें गिरफ्तार किया था.

अफसोस! यह बहुत ही बुरा हुआ.

हम लोगों की सारी मेहनत बेकार गई, मुन्दर:

केवल मेहनत ही बेकार नहीं गई बल्कि अगर वे कागज किसी दूसरे के हाथ लग गये तो गजब हो जायगा.

गौहर:

इसमें क्या शक़ है?

अच्छा तुम्हारे पास जो कागज थे उन्हें तो देखो, सही - सलामत हैं या नहीं?

मुन्दर ने अपने कमर में हाथ डाला और साथ ही चौंक कर बोली, “ हैं! मेरा बटुआ कहाँ गया! तो क्या वे कागज भी गये! हाय अब क्या होगा?

" उसने अच्छी तरह तलाश किया मगर कहीं कोई चीज न मिली और वह बदहवास होकर बैठ रही.

थोड़ी देर तक दोनों अपनी इतनी मेहनत बरबाद जाने का अफसोस करती रहीं, इसके बाद गौहर ने कहा, “ खैर अब अफसोस करने से कोई फायदा नहीं इस वक्त तो उठो.

जरूरी कामों से निपट कर स्नान वगैरह करें ताकि तबीयत कुछ ताजी हो, फिर सोचा जायगा कि अब क्या करना मुनासिब है, जहाँ तक मैं समझती हूँ, यह काम भूतनाथ का है ।

मुन्दर बोली, " वेशक अफसोस करने का अब कोई नतीजा नहीं- मगर मेरी महीनों की मेहनत अकारण गई! " गौहर ने दम - दिलासा देकर उसे शान्त किया और तब दोनों जरूरी कामों की फिक्र में लगी.

महाराज शिवदत्त इन दोनों की राह बेचैनी के साथ देख रहे थे.

जिस समय लगभग घण्टे भर के बाद ये दोनों उस जगह पहुँची तो उन्होंने पुकार कर कहा, " आप लोग कहाँ चली गई थीं.

राह देखते - देखते मैं तो घबरा गया था कि किसी नई मुसीबत में तो नहीं पड़ गई.

" गौहर ने जवाब दिया.

" नहीं, मुसीबत में तो नहीं पड़ी मगर एक बहुत बुरी बात हो गई, शिवदत्त ने चौंक कर पूछा, “ सो क्या?

" गौहर:

कई कागजात जो बहुत जरूरी थे और जिन्हें हम लोग बड़े एहतियात से छिपा कर अपने पास रक्खे हुई थीं गायब हो गये हैं.

मालूम होता है कि किसी ने बेहोशी की हालत में हम लोगों की तलाशी लेकर उन्हें निकाल लिया है.

शिवदत्त:

ऐसा हुआ हो तो कोई ताज्जुब नहीं क्योंकि वे लोग जरूर ऐयार थे जिनके कब्जे से मैंने तुम लोगों को छुड़ाया था, अगर उन लोगों ने बेहोशी की हालत में कोई चीज निकाल ली हो ताज्जुब क्या है! गौहर:

हम लोगों के बटुए भी नहीं दिखाई पड़ रहे हैं.

आपने तो नहीं रखा है?

शिव:

नहीं, मुझे उनकी भला क्या खबर?

वे भी उन लोगों के हाथ लग गए मालूम होता है.

खैर अब इस वक्त यह गोश्त तैयार हो रहा है खाओ और जरा सा आराम करो, फिर देखा जायगा.

अगर उन कागजों का मिलना निहायत जरूरी है तो मैं अपना एक ऐयार तुम्हारी मदद के लिए भेज दूंगा, तुम लोगों की कोशिश से उनका पता लग जाना कोई बड़ी बात नहीं जिन्होंने तुमको गिरफ्तार किया था, क्योंकि तुम्हारी चालाकी मैं खूब जानता हूँ, तुम ऐयारी में मामूली ऐयारों की नाक काट सकती हो, और ईश्वर की दया से तुम्हारी साथिन भी कम नहीं जान पड़ती! गौहर और मुन्दर अपनी तारीफ सुन मुस्करा उठीं और इसके बाद तीनों आदमी उन तरह - तरह की लजीज खाने की चीजों पर हाथ साफ करने लगे जिसे राजा शिवदत्त के आदमियों ने तैयार किया था.

शिवदत्त ने अपनी लच्छेदार बातों के जाल में मुन्दर को भी इस तरह फंसा लिया कि कुछ ही देर बाद वह भी पूरी तरह हिल - मिल गई.

भोजन के बाद शिवदत्त ने कहा, “ अब थोड़ी देर आराम करके तब कोई काम किया जायेगा.

" पेड़ के नीचे मामूली बिछावन बिछा हुआ था जिस पर एक तरफ वह और दूसरी तरफ गौहर तथा मुन्दर लेट गईं, नाले के किनारे की तरी पहुंचाने वाली ठंडी हवा आ रही थी. जिसने सभों की आँखें बन्द करनी शुरू कर दी और थोड़ी ही देर बाद शिवदत्त तो नहीं मगर गौहर और मुन्दर मीठी नींद की गोद में हिलोरे लेने लगी.

इन लोगों से थोड़ी दूर हट कर एक दूसरे घने पेड़ की आड़ में शिवदत्त के बाकी साथी पड़े गप - शप कर रहे थे.

गौहर और मुन्दर को गहरी नींद में मस्त देख शिवदत्त खड़ा हुआ और अपने साथियों के पास जा पहुँचा.

इसे देख वे सब के सब उठ बैठे और बैठने के लिए जगह करते हुए बोले- " क्या वे दोनों सो गईं?

" शिवदत्त ने हँसते हुए कहा, " हाँ गौहर पूरी तरह बेहोश हो गई मगर उसके साथ - साथ तुम्हारा बलदेव भी गाफिल हो गया अब एक आदमी जाओ और उसे होश में लाकर यहाँ बुला लाओ, गौहर तो मुझे विश्वास है कि बिना होश में लाए जल्दी न उठेगी फिर भी उसकी चौकसी का इन्तजाम कर देना, !! एक आदमी ने कहा, " जी कभी नहीं, जो बेहोशी मैंने दी है वह घण्टों के लिए काफी है! " शिवदत्त ने कहा, " तो बस ठीक तुम्हीं चले जाओ और बलदेव को ले आओ.

हाँ अब जरा वे चीजें तो मुझे फिर से दिखाओ जो इन कम्बख्तों के पास से हम लोगों को मिली हैं.

" एक आदमी तो गौहर और मुन्दर की तरफ गया और दूसरे ने उठकर एक गठरी शिवदत्त के आगे ला रखी जिसमें कई चीजे बँधी हुई थीं.

शिवदत्त ने उसे खोलने का इशारा किया और इसी समय मुन्दर को लिए हुए वह आदमी भी वहाँ आ पहुँचा, शिवदत्त ने उसकी तरफ देखकर कहा, " यहाँ बैठो.

अपनी सूरत साफ करो, और बताओ कि तुमने उस धूर्ता और गौहर के पेट से क्या बातें निकालीं.

" एक साथी ने गीला अंगोछा आगे बढ़ा दिया जिससे मुँह पोछतें ही मुन्दर की शक्ल एकदम बदल गई और नाजुक खूबसूरत औरत की जगह एक कम उम्र ऐयार की सूरत निकल पड़ी.

एक दूसरा अँगोछा लेकर शिवदत्त ने अपना मुँह भी साफ किया और शिवदत की जगह साफ भूतनाथ ऐयार की सूरत दिखाई पड़ने लगी, हमारे पाठक तो समझ ही गये होंगे कि यह भूतनाथ की ही चालाकी थी जिसने शिवदत्त बनकर खुदाबख्श वगैरह के हाथ से मुन्दर और गौहर को छुड़ा लिया था और उसका भेद जानने की फिक्र में पड़ा हुआ था.

भूतनाथ को इन दोनों का पता कैसे लगा यह भी थोड़े ही में बताये देते हैं.

जब खुदाबख्श और उसके साथी बेहोश गौहर और सुन्दर को लेकर शिवदत्तगढ़ की तरफ भाग गए तो भूतनाथ ने उनका पीछा करने का विचार छोड़ दिया और इन्द्रदेव के कैलाश भवन की तरफ चल पड़ा मगर अपने साथी के जिम्मे यह काम जरूर करता गया कि वह इस बात का पता लगावे कि वे लोग कौन हैं और दोनों बेहोंशों को लेकर किधर जाते हैं.

जिस समय वह इन्द्रदेव से मिलकर वापस लौट रहा था उस समय उसके उस साथी ने उसे सब बातों की खबर दी और उसी समय से भूतनाथ ने अपना जाल फैलाना शुरू किया जिसका यह नतीजा हुआ.

अस्तु हम आगे का हाल लिखते हैं.

भूतनाथ ने अपने शार्गिद बलदेव की तरफ देखकर कहा, “ क्यों बलदेव, उससे क्या - क्या पता लगा?

" बलदेव बोला, गुरुजी बड़ी - बड़ी बातें मालूम हुई आपकी चालाकी खूब काम कर गई! गौहर यही समझी कि सचमुच कड़ी बेहोशी ने मेरा दिमाग खराब कर दिया और मुझे पिछला कुछ भी हाल याद नहीं है, मैंने भी वह भड़ी दी कि उसने धीरे - धीरे सभी कुछ उगल दिया.

" भूत:

(खुश होकर) हाँ! क्या मालूम हुआ?

बल, पहिली बात तो यह कि आपका कोई बहुत पुराना भेद जिसके बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता इन दोनों को मालूम हो गया है.

उसी का निश्चय करने और कुछ अधिक जानने के लिए गौहर कामेश्वर ' बनी थी और मुन्दर ने " भुवनमोहिनी ' का रूप धरा था.

यह एक ऐसी बात थी कि जिसने एक बार पुनः भूतनाथ को दहला दिया और किसी पुराने पाप की याद ने उसके दिल के अन्दर पहुँच कर उसके कलेजे को जोर से ऐंठ दिया, मगर इस समय अपने ऐयारों और शागिर्दो के सामने उसने कोशिश करके अपने

को बहुत सम्हाला और चेहरे से कुछ प्रकट न होने देकर कहा, " कामेश्वर और भुवनमोहिनी! मगर इन दोनों को उनका भेद क्योंकर मालूम हुआ?

" १.

देखिये भूतनाथ तेरहवाँ भाग, सातबाँ बयान.

बलदेव:

जमानिया में रहने वाले एक नौजवान को मुन्दर ने अपने ऊपर आशिक बनाया और उसी से सब बातें जानी.

भूत:

उस नौजवान का नाम?

बलदेव:

उसका नाम श्री विलास है और वह किसी चंचलदास का भतीजा है.

चंचलदास ' इस नाम का न जाने क्या असर भूतनाथ पर पड़ा कि उसके चेहरे से फिर घबराहट और परेशानी टपकने लगी.

बड़ी कोशिश करके उसके पुनः अपने को सम्हाला और उस गठरी की देखभाल करने लगा जिसके अन्दर गौहर और मुन्दर की तलाशी लेने पर मिली हुई चीजें थीं.

कागजों के छोटे - छोटे कई मुढे, कितनी ही चीठियाँ, कुछ डिब्बियां, एक पुराना खंजर, दो - तीन अंगूठियाँ जिनके साथ पुरजे बँधे हुए थे, और कुछ कपड़ों के अलावे एक काठ का छोटा बक्स भी निकला, भूतनाथ सरसरी निगाह से उन चीजों को देख गया और उन्हीं में उसने वे कागजात भी पाए जो गौहर और सुन्दर उसे बेहोश करके ले भागी थीं.

कागजों के मुद्दों और अंगूठियों के साथ बँधे पुरजों को भूतनाथ ने कुछ गौर के साथ देखा और उनसे प्रकट होने वाले किसी भेद को याद कर उसका कलेजा पुनः धड़क उठा.

फिर भी अपने को काबू में कर उसमें से कुछ जरूरी चीजें उसने बटुए के हवाले की और तब उस काठ के बक्स की तरफ झुका जो उन चीजों के साथ निकला था.

भूतनाथ ने अपने एक शागिर्द की तरफ उसे खोलने का इशारा कीया .

मामूली ही कोशिश में वह बक्स खुल गया और उसके अन्दर से पीतल की एक छोटी सन्दूकड़ी निकल पड़ी जिस पर एक निगाह पड़ते ही भूतनाथ उसे पहिचान गया, बहुत कोशिश करके रोकने पर भी उसके मुँह से चीख निकल पड़ी और वह कुछ देर के लिए बदहवास हो गया.

भूतनाथ के शार्गिद अपने उस्ताद की यह हालत देख बड़े ताज्जुब में पड़ गए मगर डर के मारे किसी की हिम्मत न पड़ी कि उससे कुछ पूछे या उसकी बदहवासी दूर करने का कोई उपाय करे, सब लोग कुछ देर तक चुपचाप बैठे कभी उन चीजों को और कभी भूतनाथ की हालत को देखते रहे.

थोड़ी देर के बाद धीरे - धीरे भूतनाथ के हवास ठिकाने हुए और उसने एक शागिर्द की तरफ देख इशारे से पानी माँगा.

वह लोटे में ठंडा जल ले आया जिसके कई छीटे आँख पर देने और कुछ पीने के बाद उसके होशवास ठिकाने हुए और वह पुनः उठ कर बैठ गया वह सन्दूकड़ी उसने उठा ली और गौर के साथ उलट - पलटकर चारों तरफ से देखने लगा.

यह छोटी सन्दुकड़ी जो किसी पुराने जमाने की होने पर भी साफ और चमकदार थी कुछ विचित्र ढंग की बनी हुई थी किसी तरफ कहीं भी कोई जोड़ का निशान इसमें दिखाई न पड़ता था और न इसी बात का कुछ पता लगता था कि यह किस तरह खुलेगी परन्तु भूतनाथ शायद इसको खोलने की तरकीब जानता था क्योंकि कुछ देर उलट - पुलट करने के बाद उसने एक खास जगह पर हाथ रख न जाने क्या तरकीब की कि एक हलकी आवाज के साथ सन्दूकड़ी का एक तरफ का हिस्सा खुल गया और उसके भीतर की चीजें दिखाई पड़ने लगीं.

न जाने उस सन्दूकड़ी के भीतर भूतनाथ को क्या दिखाई पड़ा कि उसकी हालत खराब हो गई, उसका चेहरा पीला पड़ गया, हवास बिगड़ गए और कलेजा धड़कने लगा.

अगर अपने शागिर्दो से वह अपनी हालत छिपाया न चाहता तो शायद पुनः चिल्ला उठता परन्तु बड़ी कोशिश करके उसने फिर अपने को सम्हाला, फिर भी उस सन्दूकड़ी के

अन्दर पुनः झाँकने की उसकी हिम्मत न पड़ी उसने उसका ढकना बन्द कर दिया और अपनी आँखें बन्द कर लम्बी - लम्बी साँसे लेने लगा.

दुसरा व्यान।

जब उस तिलिस्मी छत ने प्रभाकरसिंह को गिरफ्तार कर लिया और ऊपर की तरफ उठी उस समय प्रभाकरसिंह के मन में यह बात चकर मारने लगी, " अगर ऊँचे जाकर इस छत ने मेरे हाथ छोड़ दिए तो मैं इतने जोर से नीचे गिरूँगा कि मेरी हड्डी - पसली का भी पता न लगेगा, अपनी मुसीबत वे अच्छी तरह समझ सकते थे मगर फिर भी वे घबड़ा नहीं गए थे बल्कि इस बात को सोच रहे थे कि इस आफत से छूटने की क्या तरकीब हो सकती है.

कुछ देर तक तो वे लाचारी के साथ हाथों के सहारे झूलते रहे इसके बाद उन्हें खयाल हुआ कि जिस तरह उनकी हथेलियाँ छत के साथ चिपक गई हैं उसी तरह अगर कोई और हिस्सा अपने बदन का वे छत के साथ लगावें तो क्या वह भी चिपक जायगा?

यह सोचते ही उन्होंने अपने दोनों पैर ऊपर को उछाले और दो ही तीन दफे की कोशिश में उन्हें छत तक पहुँचा दिया, ताज्जुब और प्रसन्नता के साथ उन्होंने देखा कि उनके पैर भी उस छत के साथ चिपक गए जैसे उनकी हाथों पर पड़ने वाला भयानक भार कुछ कम हुआ क्योंकि अब बदन का बोझ हाथ और पाँवों पर बराबर बँट गया था.

थोड़ी देर ठहरकर उन्होंने फिर उद्योग किया और अपनी कोहनियाँ छत से चिपका दीं इसके बाद धीरे - धीरे करके घुटने, जंघा, कमर, पेट और तब छाती छत के साथ चिपका दी और अब उनका समूचा शरीर उस छत के साथ इस तरह चिपक गया मानों किसी ने गोंद से सटा दिया हो, समूचे शरीर का छत से चिपकना था कि एक हलकी सी आबाज आई और इसके साथ ही बह छत धीरे - धीरे करवट बदलने लगी.

उसका एक तरफ का हिस्सा ऊँचा होने लगा और थोड़ी ही देर बाद वह एकदम उलट गई अर्थात अब प्रभाकरसिंह सीधे होकर छत के ऊपर और छत उनके नीचे की तरफ हो गई.

इसी के साथ - साथ शरीर को चिपका लेने वाली उसकी शक्ति भी दूर हो गई, वे उठकर बैठ गए और दो एक अंगड़ाई लेकर बदन की अकड़ाहट को दूर करने के बाद उठकर खड़े हो गए.

अब जिस जगह वे थे वह एक कमरा था जिसकी लम्बाई - चौड़ाई तो नीचे के शीशे वाले कमरे के बराबर ही थी मगर ऊंचाई पन्द्रह - बीस हाथ से किसी तरह कम न होगी, कमरे की दीवारें किसी चमकदार साफ पदार्थ की बनी हुई थीं जो देखने में तो शीशे की तरह मालूम होता था पर वास्तव में किसी तरह की पालिश था.

पुरसे भर की ऊँचाई तक तो चारों तरफ कहीं भी कोई खिड़की, दरवाजा या रास्ता दिखाई नहीं पड़ता था और इतनी दूर तक तो सब दीबारे चारों तरफ से एकदम साफ थीं मगर इसके ऊपर जाकर हर तरफ की दीवार में कई बड़ी - बड़ी खिड़कियाँ दिखाई पड़ रहीं थीं जिनमें से कई खुली हुई भी थीं.

इसी ऊँचाई पर लगभग दो हाथ चौड़ा एक बरामदा इन खिड़कियों के साथ - साथ कमरे में चारों तरफ घूम गया था और ये खिड़कियाँ या दरवाजे मानों उसी बरामदे में आने - जाने के लिए थे.

प्रभाकरसिंह के मन में यह ख्याल दौड़ गया कि अगर मैं उस बरामदे तक पहुँच सकूँ तो जरूर उन दरवाजों में से किसी की राह इस जगह के बाहर हो जा सकूँगा.

यह सोचते ही उन्होंने अपने कपड़े दुरुस्त किए, तिलिस्मी किताब और डण्डा सम्हाला.

दुपट्टा कमर में लपेटा और जोर से उछले तो एकदम बरामदे को जा पकड़ा थोड़ी ही मेहनत में इन्होंने अपने को बरामदे के ऊपर कर लिया और वहां खड़े होकर चारों तरफ की कैफियत देखने लगे.

सबसे पहिली बात जो उन्हें दिखाई पड़ी वह यह थी कि उनके बरामदे तक पहुंचते ही नीचे की वह छत जिसने उलटकर उन्हें छत के ऊपर किया था पुनः करवट बदलने लगी और थोड़ी ही देर में एकदम पलटकर पहिले की तरह हो गई अर्थात बह शीशे वाला भाग जिसके साथ चिपककर वे यहाँ तक पहुँचे थे पुनः नीचे की तरफ घूम कर इनकी आँखों की ओट हो गया.

इसके बाद ही यह भी देखा कि वह छत धीरे - धीरे नीचे को उतरने लगी.

एक हाथ, दो हाथ, चार हाथ, धीरे - धीरे वह पचीसों हाथ नीचे को उतर गई और अब प्रभाकरसिंह को ऐसा मालूम होने लगा मानों वे किसी कुएँ के ऊपर खड़े होकर नीचे को झांक रहे हों जिसमें देखने से उबाई आती थी.

यह हालत देख प्रभाकरसिंह के मुंह से निकला, “ बस मालूम हो गया, केवल यहाँ तक मुझे पहुंचाने के लिए ही इतना बखेड़ा किया गया है.

तिलिस्म बनाने वाले भी कैसे दिल्लगीमिजाज हैं! अगर तिलिस्म को तोड़ने के लिए मेरा यहाँ आना जरूरी ही था तो क्या नीचे के कमरे से यहाँ तक सीढ़ियाँ नहीं बनाई जा सकती थी.

व्यर्थ को इतना बखेड़ा, जानजोखिम और मुसीबत का सामना करने से फायदा! " यकायक किसी ने उनकी बात के जवाब में कहा, " अगर यही खयाल था तो तुम्हें तिलिस्म में आने की जरूरत ही क्यां थी ।

"

प्रभाकरसिंह चौंक पड़े.

ऐसी जगह पर उनकी बात का इस तरह जवाब देने वाला कौन ?

अगर किसी आदमी ने यह बात कही है तो वह इनका दोस्त है या दुश्मन और वह यहाँ पहुँचा ही क्योंकर?

वे तेजी के साथ घूमकर अपने चारों तरफ देखने लगे.

हम ऊपर कह आए हैं कि यह बरामदा उस कमरे में चारों तरफ घूमा हुआ था और इसमें हर तरफ कई खिड़की या दरवाजे पड़ते थे जिसमें कुछ खुले और कई बन्द थे, प्रभाकरसिंह को अपने पीछे की तरफ एक दरवाजा दिखाई पड़ा जिसके पल्ले मामूली तरह पर बन्द थे जो इनके हाथ का धक्का पाते ही खुल गए, दरवाजा खुलने के साथ ही ऐसा मालूम हुआ मानों उसकी आड़ में कोई खड़ा था जो दरवाजा खुलते ही एक तरफ को हट कर गायब हो गया, लपककर ये अन्दर घुसे, एक छोटे कमरे में इन्होंने अपने को पाया मगर यहाँ कोई न था.

और भी ताज्जुब की बात यह थी उस कमरे में सिवाय उस दरवाजे के जिसकी राह प्रभाकरसिंह उसके भीतर पहुँचे थे और कोई भी रास्ता ऐसा दिखाई न पड़ता था जिसके जरिये उसके अन्दर का आदमी कहीं दूसरी तरफ निकल जा सकता हो.

उस छोटे से कमरे के अन्दर किसी को खोजने में देर ही क्या लग सकती थी?

कुछ ही सायत में प्रभाकरसिंह को विश्वास कर लेना पड़ा कि या तो वहाँ कोई आदमी नहीं था और जो झलक उन्होंने देखी वह केवल उनकी आँखों का भ्रम था, और या इस जगह से किसी दूसरी तरफ को निकल जाने का कोई गुप्त रास्ता है.

इस दूसरी बात पर ही उनका खयाल ज्यादा जमा क्योंकि उनके कान में पड़ने वाली आवाज यह विश्वास नहीं करने देती थी कि वहाँ पर कोई आदमी था ही नहीं.

अगर कोई होता ही नहीं तो वह जवाब क्योंकर मिलता?

अस्तु वे चारों तरफ घूम - घूमकर किसी छिपे दरवाजे या रास्ते को तलाश करने लगे.

छोटी कोठरी की दीवार के साथ - साथ चारों तरफ प्रभाकरसिंह घूमने लगे.

जहाँ तक हाथ जाता था वहाँ तक की दीवार को अपने तिलिस्मी डण्डे से अच्छी तरह ठोंकते भी जाते थे, जिस समय वे बांई तरफ की दीवार के अन्दर में पहुंचे तो एक जगह पहुँचते ही उन्हें रुक जाना पड़ा क्योंकि उस जगह की दीवार ठोंकने से उन्हें कुछ पोली होने का सन्देह हुआ, उन्होंने हाथ से उस जगह को जोर - जोर से दबाना शुरू कर दिया और उनका उद्योग सफल भी हुआ अर्थात एक जगह पर जरा - सा जोर लगाते ही दीवार का एकाएक छोटा टुकड़ा इस तरह पीछे को हट गया मानों कब्जे पर हो, लगभग हाथ भर का एक छेद दीवार में पैदा हुआ जिसकी राह देखने से प्रभाकरसिंह को दूसरी तरफ एक विचित्र दृश्य दिखाई पड़ा.

एक बहुत बड़ा क़मरा तरह - तरह के ऐश - आराम के सामानों से बड़ी ही खूबसूरती के साथ सजा हुआ था छत के साथ खूबसूरत झाड़ - फानूस लटक रहे थे और दीवारगीरें भी बहुतायत से लगी हुई थीं, खूबसूरत चौखटों में तरह - तरह की छोटी - बड़ी तस्वीरें लगीं थीं तथा बीच - बीच में आदमकद शीशे अपनी बहार दिखा रहे थे.

जमीन पर सफेद फर्श बिछा हुआ था जिसके एक हिस्से में तो मोटी मखमली गद्दी लगी हुई थी जिस पर कई तकिये कारचोबी के काम के पड़े थे और दूसरे हिस्से में एक सुन्दर गंगाजमुनी काम की मसहरी बिछी हुई थी जिसके पर्दे गिरे हुए थे.

एक तरफ संगमर्मर की चौकी पर पीने के लिए सुनहरी सुराई में जल, सोने के कई गिलास और कटोरे तथा नीचे चाँदी का एक आफताब पड़ा हुआ था.

गरज यह कि किसी मनचले रईस का आरामगाह मालूम पड़ रहा था.

इन सब सामानों को देखते हुए प्रभाकरसिंह की निगाह घूमती - घामती उस तरफ पहुँची जिधर इस कमरे में आने का दरवाजा था, यह दरवाजा इस समय भिड़काया हुआ था और उसके सामने एक बारीक रेशमी पर्दा पड़ा हुआ था.

मगर उस तरफ निगाह पड़ते ही प्रभाकरसिंह को मालूम हो गया कि कोई दरवाजा खोल कमरे में आना चाहता है क्योंकि एक पल्ला खुल रहा था.

पल्ला बिल्कुल खुल गया और उसकी राह एक क़मसिन और नाजुक़ औरत ने कमरे के भीतर प्रवेश कीया , चेहरा दूसरी तरफ घूमा हुआ होने के कारण इसकी सूरत पूरी तो दिखाई नहीं पड़ती थी. पर जो कुछ हिस्सा दिखाई पड़ रहा था वह उसे एक बहुत ही खुबसूरत औरत बताता था.

साथ ही उसकी पोशाक कह रही थी कि वह या तो किसी अच्छे खानदान की औरत है या फिर किसी राजा - महाराजा के महल की महारानियों की सखी - सहेली.

कमरे के अन्दर घुस वह औरत उस पलंगड़ी की तरफ बड़ी और पास पहुँच कर उसका जालीदार पर्दा उसने हटाया.

उस समय प्रभाकरसिंह को उस पर लेटी और शायद गहरी नींद में सोई एक दूसरी औरत और दिखाई पड़ी जिसका चेहरा प्रभाकरसिंह ही की तरफ घूमा होने के कारण उसकी सूरत अच्छी तरह दिखलाई पड़ गई वह भी बहुत ही खुबसूरत कमसिन औरत थी.

इस नई आई ने यकायक पास जाकर अपने हाथों से उसकी आँखें दबा दीं और तब उसे हिला कर जगाया.

चौंक कर वह सोई हुई औरत नींद से जाग गयी और उसी समय इस औरत ने कहा, " पहिचानो तो कौन है! " " तुझ शैतान के अलावा और हो ही कौन सकता है! " कह कर वह लेटी हुई औरत इसका हाथ हटा कर उठ बैठी और तब दोनों एक - दूसरे की बाँहों में चिमट गई.

कुछ देर बाद वे दोनों अलग हुई और आकर उस मखमली गद्दी पर बैठ गई.

दोनों में कुछ बातें होने लगीं जो यद्यपि जोर से नहीं होती थीं फिर भी फासला अधिक न होने के कारण प्रभाकरसिंह उसे सुन सकते थे.

नई आने वाली औरत ने कहा, " ले सखी, आज मेरा मुँह मीठा करा, मैं तेरे लिए खुशखबरी लेकर आई हूँ, दूसरी ने चौंक कर पूछा, " कौन सी खुशखबरी सखी! " पहिली ०:

ले जिसके गम में तू सूखी जा रही थी.

वह आ पहुँचा.

दूसरी ०:

(ताज्जुब से) कौन?

कौन?

पहिली:

प्रभाकरसिंह! दूसरी:

हैं, वे आ गए! तू सच कह रही है?

पहिली:

भला मैं तुमसे झूठ कहूँगी?

मैं अभी तक उन्हें देखती आ रही हूँ, शीशमहल की छत ने अभी - अभी उन्हें यहाँ पहुँचाया है! दूसरी:

(आकाश की तरफ आँखें और हाथ उठा कर) भगवान, क्या सचमुच तूने मेरी प्रार्थना सुन ली! क्या अब सचमुच मेरे दिल की मुराद पूरी होगी.

(अपनी सहेली की तरफ देख कर) तूने उन्हें कहाँ देखा?

पहिली:

इसी बगल वाले कमरे में.

दूसरी:

अच्छा! तब तो हम लोगों को उनकी अगवानी की तैयारी करनी चाहिए.

न जाने कब वे यहाँ आ पहुँचे !! पहिली:

यही सोच कर तो मैं तुझे जगाने आ गई.

दूसरी:

तूने बहुत अच्छा कीया .

पहिली:

सबसे पहिले उनके भोजन का इन्तजाम करना चाहिए और तब उस बात की फिक्र होनी चाहिए जिसके बारे में कल हम लोगों ने बातें की थीं.

दूसरी:

बेशक, तब फिर यहाँ रुकने का वक्त नहीं है, उठना चाहिए.

दोनों उठ खड़ी हुई.

पहिले तो उन्होंने उस कमरे की अच्छी तरह सफाई की और तब कुछ बातें करती हुई कमरे के बाहर निकल गईं.

प्रभाकरसिंह हैरान थे कि यह मामला क्या है और ये औरत कौन है?

पहिले तो उन्होंने समझा कि शायद ये दोनों उनके जान - पहिचान या रिश्तेदारी की कोई हों, फिर तुरन्त ही यह सोच कर उनका खयाल बदल गया कि इस भयानक तिलिस्म में जहाँ चिड़िया भी पर नहीं मार सकती ऐसों का आना कहाँ से हो सकता है! बहुत गौर

किया मगर जब कुछ समझ में न आया तो उन्होंने अपनी तिलिस्मी किताब निकाली और खोलकर पड़ने लगे.

यह लिखा पाया:

" इनके फेर में मत पड़ो.

यह धोखा है, दीबार में जिस जगह कमल का फूल बना देखो उस जगह अँगूठे से दबाओ.

उस कमरे में जाने का दरवाजा निकल आवेगा.

बगल के कमरे में पहुंचे और वहाँ जो कुछ सामान दिखाई पड़े उन सभी में से किसी को भी न छूते हुए इन औरतों को पकड़ने की कोशिश करो, जैसे ही वे पास आ जाय अपने तिलिस्मी डण्डे से उन दोनों के सिर को छुला दो और देखों क्या होता है.

खबरदार - उस कमरे की किसी चीज के साथ तुम्हारा बदन छुने न पावे नहीं तो आफत हो जाएगी.

" प्रभाकरसिंह ने तिलिस्मी किताब बन्द करके रक्खी और उस बगल वाले कमरे में जाने की तैयारी की जैसा कि किताब में लिखा था, कमल के फूल को दबाते ही एक रास्ता निकल आया, निकल क्या आया, जिस राह से अब तक यह सब हाल प्रभाकर सिंह देख रहे थे वहीं कुछ और बड़कर इतना बड़ा हो गया कि आदमी उसके अन्दर जा सके.

अपनी चीजें सम्हाल कर प्रभाकरसिंह उस राह से निकल दूसरे कमरे में जा पहुँचे.

इस कमरे में जो कुछ सामान था उसे तो प्रभाकरसिंह पहिले ही देख चुके थे मगर उसके अलावे वहाँ कुछ चीजें सम्हाल कर प्रभाकरसिंह उस राह से निकल दूसरे कमरे में जा पहुँचे.

इस कमरे में जो कुछ सामान था उसे तो प्रभाकरसिंह पहिले ही देख चुके थे मगर उसके अलावे वहाँ कुछ चीजें ऐसी भी थीं जो आड़ में रहने के कारण उन्हें दिखाई न पड़ सकी थीं.

इनमें से एक तो कमरे की उस तरफ बाली दीवार के साथ साथ खड़ी, जो उसी तरफ थी. जिधर से अभी प्रभाकरसिंह इस कमरे में आये थे, किसी धातु की बनी आदमकद

पुतलियों की एक कतार थी जो सभी इस सफाई से बनी हुई थीं कि पहिलेपहल तो प्रभाकरसिंह यही समझे कि ये सब जीते - जागते आदमी हैं पर जब उनमें से किसी में कोई भी हरकत न देखी तो उन्हें शक हुआ और पास जाकर बहुत गौर से देखने पर यह विश्वास हुआ कि वे जीते - जागते मनुष्य नहीं बल्कि पुतलियाँ हैं, ये पुतलियाँ गिनती में दस थीं और इन में औरत, मर्द और बच्चे सभी तरह की शक्लें बनी हुई थीं.

इनके अलावा वह एक दूसरी चीज जो उन्हें दिखाई पड़ी वह एक लोहे का ऋटघरा था जो इस कमरे के एक कोने में बना हुआ था और जिसके अन्दर एक भयानक और खूखार शेर खड़ा अपनी भयानक आँखों से इनकी तरफ देख रहा था.

इसे देख कर एक दफे तो प्रभाकरसिंह चिहुंक पड़े मगर जब गौर से देखा तो मालूम हुआ कि उन पुतलियों की तरह यह शेर भी बनावटी ही है असली नहीं.

अब प्रभाकरसिंह कुछ निश्चिन्त हुए और एक तरफ खड़े होकर सोचने लगे कि किस तरह उन दोनों औरतों को गिरफ्तार किया जाय.

पहिले तो उनका विचार हुआ कि जिस दरबाजे की राह वे दोनों इस कमरे के बाहर गई हैं उसी की राह बे कमरे के बाहर हो जायें और देखें कि वे किधर गई हैं मगर तुरन्त ही उन्हें खयाल हुआ कि ऐसा करने के लिए उस पर्दे को हटाना पड़ेगा जो दरवाजे पर पड़ा हुआ है और तिलिस्मी किताब में इस कमरे की कोई चीज छूने की सख्त मनाही की गई है.

अस्तु वे रुक गए और सोचने लगे फिर क्या किया जाय.

मगर इन्हें ज्यादा तरदुद करना न पड़ा क्योंकि उसी समय कमरे के बाहर कुछ आहट मालूम पडी.

वे घूम कर एक तरफ हो गये और उसी समय उन्हीं दोनों औरतों ने उस कमरे में प्रवेश कीया.

कमरे में पहुंचते ही उन औरतों की निगाह प्रभाकरसिंह पर पड़ी.

उनके चेहरे से खुशी टपकने लगी और वे दोनों ही प्रभाकरसिंह के सामने घुटने टेककर खड़ी हो गईं.

बड़े अदब के साथ झुककर उन्होंने प्रभाकरसिंह को हाथ जोड़ा और तब एक ने मीठे स्वर में कहा, " परमात्मा को लाखों धन्यवाद हैं जिसकी कृपा से आज हम लोगों की मुराद पूरी हुई क्योंकि अगर हम दोनों धोखा नहीं खाती हैं तो इस तिलिस्म को तोड़ने वाले आप ही हैं और आप ही का नाम राजा प्रभाकरसिंह है.

प्रभाकरसिंह अपना तिलिस्मी डण्डा सम्हाल कर आगे बढ़ना ही चाहते थे पर इनकी यह बात सुन रुक गये और बोले, " हाँ, मेरा नाम प्रभाकरसिंह तो जरूर है मगर तुम दोनों कौन हो?

"

वह औरत यह सुन बोली, “ हम दोनों किस्मत की मारी और दुश्मनों की सताई हुई बेबस औरतें हैं जो बरसों से इस तिलिस्म में कैद अपनी जिन्दगी के दिन काट रही हैं! "
प्रभाकर:

तुम्हें किसने यहाँ कैद किया और तुम लोग किसके घर की औरतें हो?

औरत:

हम दोनों महाराज गिरधरसिंह के रिश्तेदारों में से हैं और हमें गिरफ्तार करके यहाँ कैद करने वाली भी दो औरतें ही हैं जो न जाने किस जन्म का बैर हमसे निकाल रही हैं!
प्रभाकर):

(ताज्जुब से) तुम महाराज गिरधरसिंह की रिश्तेदार हो?

तुम्हारा नाम क्या है?

औरत:

मेरा नाम चमेली है और (साथ वाली औरत को बताकर) इसका नाम जूही है.

आप हमें नहीं पहिचानते पर बहिन इन्दुमति अगर यहाँ होती तो जरूर हम दोनों को पहिचान जाती क्योंकि हमारा उनका साथ बराबर हुआ करता था.

प्रभाकर:

(और भी ताज्जुब से) और तुम्हें यहाँ जिसने कैद किया उसका नाम क्या है?

औरत:

उसका नाम.

.

.

कहते - कहते यकायक वह औरत रुक गई, उसका चेहरा पीला पड़ गया और बदन काँपने लगा, उसके साथ वाली औरत की भी यही अवस्था थी.

प्रभाकरसिंह ताज्जुब के साथ इसका सबब पूछने ही वाले थे कि एक ने उँगली से बताकर कहा, " देखिए, हमें गिरफ्तार करने वाली वे दोनों आ रही हैं, हाय - हाय! क्या आपके आ पहुँचने पर भी हमारा पिण्ड न छूटेगा! " प्रभाकरसिंह ने घूम कर देखा तो दरवाजे के पास दो औरतों को खड़े पाया जो गुस्से भरी निगाहों से उन्हें और इन बेचारी औरतों को देख रही थीं प्रभाकरसिंह को अपनी तरफ देखते देख दोनों कमरे के अन्दर आ गई और गुस्से भरी निगाहों से उन दोनों औरतों की तरफ एक बार देख प्रभाकरसिंह से एक ने पूछा, " तुम कौन हो और महल में किसलिए आये हो?

"

इससे पहिले कि प्रभाकरसिंह कुछ जबाब दें वह उन दोनों औरतों की तरफ घूमी और क्रोध से कॉपती हुई बोली, " मैं समझ गई कि यह तुम कम्बख्तों की शैतानी है.

तुम्हीं अपने को बचाने के लिए इस बदमाश को यहाँ बुला लाई हो, अच्छा देखो मैं तुम्हारी क्या गत करती हूँ! (अपने साथ वाली की तरफ देखकर) बहिन.

इन दोनों को पकड़कर ले जा और काल कोठरी में छोड़ दे! " काल कोठरी का नाम सुनते ही वे दोनों औरतें चिल्ला पड़ी प्रभाकरसिंह की तरफ देखकर रोती हुई बोली, " बचाइये, हम दोनों को इस राक्षसी से बचाइये.

" प्रभाकरसिंह बेचारे हैरान थे कि यह अजब बखेड़ा मचा है! उनकी कुछ अक्ल काम नहीं करती थी.

आखिर उन्होंने कुछ आगे बढ़कर इन नई आने वालियों से कहा, " मैं तुम दोनों के काम में दखल नहीं दिया चाहता मगर साथ ही साथ बिना यह जाने कि तुम दोनों कौन हो

और क्यों इन बेचारियों को कष्ट पहुँचा रही हो किसी को यहाँ से जाने देना भी नहीं चाहता.

" उनमें से एक औरत ने तनकर जवाब दिया, " हम दोनों महाराज गिरधरसिंह की रिश्तेदार हैं, मेरा नाम चमेली है (साथ वाली को बताकर) और इसका नाम जूही है.

यह मेरी बहिन है, ये दोनों शैतान की खालायें हमारी लौडियाँ थीं और हमारा ही नमक खाकर पली मगर न जाने क्या इनके मन में आया कि हम लोगों को धोखा देकर इस मकान में बन्द कर दिया और खुद हमारी जगह जा बैठीं.

किसी तरह हम दोनों इस कैद से छूटीं और इन्हें अब इनके कुकर्मों की सजा दे रही हैं ।

" उसकी यह बात सुनते ही वे दोनों पहली औरतें चिल्ला उठीं, " झूठ, बिलकुल, झूठ! यह एकदम गलत कह रही हैं, ये दोनों हमारी लौडियाँ थीं.

आप तिलिस्म तोड़ने वाले हैं और इसलिए हमारे ईश्वर के तुल्य हैं, आप ही हमारा इन्साफ कीजिए कि वास्तव में कसूरवार कौन है! "

प्रभाकरसिंह यह सुन और भी चक्कर में पड़े, उनकी कुछ समझ में नहीं आया था कि क्या करें या कहें, साथ ही जब उन्होंने गौर से इन औरतों की शक्ल देखी तो यह जान उनका ताज्जुब और भी बढ़ गया कि इन चारों की शक्ल - सूरत और पोशाक बिलकुल एक सी है, किसी की शक्ल में तिल भर भी फर्क नहीं है, चारों की चारों एक ही साँचे में ढली जान पड़ती थीं.

इस समय अचानक उन्हें तिलिस्मी किताब की वह बात याद आई- " यह सब धोखा है! " अब उन्होंने बातचीत में आगे समय नष्ट करना फजूल समझा और अपना तिलिस्मी डण्डा लेकर आगे बड़े उनका यह भाव देख औरतें चीखने - चिल्लाने लगीं पर प्रभाकरसिंह ने एक न सुनी और पारी - पारी से उन चारों के सिर अपने तिलिस्मी डंडे से छू दिये.

तिलिस्मी डंडे का उनके सिर के साथ छूना था कि वे चारों बड़े जोर से चिल्लाई और जमीन पर गिर पड़ी.

इसके साथ ही धीरे - धीरे उनकी शक्लें बदलने लगी.

वह गोरा गुलाबी चेहरा सिकुड़ कर काला और भयानक होने लगा, नाजुक कलाइयाँ मोटी भद्दी और काली हो चली, हाथ - पाँव भद्दे और बदसूरत हो गये, पोशाक भी बदल गई, और रेशमी साड़ियों के बजाय लाल जाँघिये उनकी कमर में दिखाई पड़ने लगे.

ताज्जुब और घबराहट के साथ प्रभाकरसिंह ने देखा कि दस ही मिनट पहिले जहाँ चार खूबसूरत क़मसिन औरतें उनके सामने खड़ी थीं वहीं अब वे चारों तिलिस्मी शैतान पड़े हुए थे जिन्हें कई बार पहिले देख चुके थे.

इन शैतानों की डरावनी शक्ल देख और पिछली कार्रवाई याद कर प्रभाकरसिंह घबड़ा गये और डरकर इनकी तरफ देखने लगे.

थोड़ी देर के बाद जब प्रभाकरसिंह ने देखा कि वे चारों शैतान बिलकुल जुम्बिश न खाकर बेहोश या मुर्दो की तरह पड़े हुए हैं तो उनके हवास कुछ ठिकाने हुए और वे यह सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए.

उन्होंने अपनी तिलिस्मी किताब खोली और पड़ने लगे.

यह लिखा पाया: " जो सूरतें तुम अपने सामने देख रहे हो इन्हें पहिले भी देख चुके होने पर इनसे घबराने की कोई जरूरत नहीं, ये सिर्फ पुतले हैं जो तिलिस्मी कारीगरी की बदौलत जीते - जागते आदमियों की तरह काम करते दिखाई देते हैं, इन्हें महज इस तिलिस्म की हिफाजत और सफाई के लिए यहाँ रखा गया है और आगे भी इसीय तरह के पुतले तुम्हें कई जगह मिलेंगे.

तुम्हें इनसे डरने की कोई जरूरत नहीं, अपने तिलिस्मी डंडे की बदौलत जब चाहो तुम इन्हें बेकार कर सकते हो - खैर.

" इस शीशमहल का तिलिस्म तोड़े बिना अगर तुम इसके बाहर चले जाओगे तो फिर यहाँ लौट कर आना मुश्किल होगा, अस्तु पहिले यहाँ का काम खत्म कर लो तब आगे बड़ो.

दीवार के साथ जो पुतले खड़े हैं उनके सिर से अपना तिलिस्मी डण्डा छुला दो.

आगे की कार्रवाई ये पुतले तुम्हें बतावेंगे.

" यह जानकर कि तिलिस्मी शैतान जिन्होंने उनको इस कदर परेशान किया था और कुछ नहीं सिर्फ तिलिस्मी कारीगरी है, प्रभाकरसिंह को बहुत कुछ संतोष हुआ और अब वे अपेक्षाकृत कुछ अधिक शांति के साथ आगे काम करने को तैयार हो गये.

जैसा कि हम पहिले लिख आये हैं कमरे की दीवार के साथ दस पुतले बने हुए थे, प्रभाकरसिंह इन पुतलों के पास गये और बारी - बारी से उनके सिर के साथ तिलिस्मी डण्डा छुलाने के बाद अलग जा खड़े हुए.

डंडे का छूना था कि उन पुतलों के बदन में हरकत पैदा हुई, धीरे - धीरे उनके अंग प्रत्यंग हिलने लगे.

आँखें इधर - उधर घूम फिर कर मानों अपने चारों तरफ का दृश्य देखने लगीं, कुछ देर बाद सिर और भी हिलने लगे.

प्रभाकरसिंह ने देखा कि उन पुतलों में आपस में बातें हो रही हैं.

ताज्जुब के साथ अगर उस तिलिस्मी किताब ने उन्हें आगाह न कर दिया होता तो शायद वे इन पुतलों की बातें दिलचस्पी के साथ न सुनते पर अब उन्हें कोई कौतूहल न रह गया था और वे सिर्फ यह देखना चाहते थे कि ये पुतले करते क्या है.

हम लिख आये हैं कि इन पुतलों में औरत - मर्द - लड़के सभी की शक्लें बनी हुई थीं.

कुछ देर की बातचीत के बाद उनमें से दो औरतें आगे बड़ आई और उन चारों तिलिस्मी शैतानों के पास खड़ी होकर कुछ हुकूमत के साथ बाकी पुतलों से बोली, " अब तुम लोग सिर्फ बकबास ही करते रहोगे या कुछ काम भी करोगे.

इन शैतानों की लाशों को हटाओ और यह जगह साफ कर दो.

" दो - तीन आदमी आगे बड़ आये और गौर से उन लाशों की तरफ देखकर बोले, " इन्हें कहाँ फेंके?

" जबाब में दो लड़के बोल उठे, " हमारे शेर को बहुत दिनों से खाने को नहीं मिला है, उसी के पिजड़े में डाल दो, खा जायगा! " औरतों ने कहा, " हाँ ठीक है, ऐसा ही करो! " शेर के कटघरे का दरवाजा खोला गया और बारी - बारी से वे चारों लाशें उस पिजड़े के अन्दर डाल दी गईं, जिस समय प्रभाकरसिंह ने उस शेर को उन लाशों पर टूटते देखा

तो उनके मुँह से आप से आप निकल गया, " धन्य हैं वे लोग जिन्हें इतनी बातें मालूम थीं! क्या इस समय इस शेर को देखकर कोई कह सकता है कि यह बनाबटी है! " शैतानों को शेर के हवाले करने के बाद उन पुतलों ने उस जगह का फर्श भी झाड़ - पोछकर बिल्कुल साफ कर दिया और इसके बाद कुछ देर तक इकट्ठे खड़े कुछ बातें करते रहे.

थोड़ी देर बाद बातें बन्द हो गई और एक - एक करके वे पुतले फिर अपनी जगह पर जाने लगे यहाँ तक कि कुछ देर में सब पहिले जिस तरह खड़े थे उसी तरह दीवार के साथ जा खड़े हुए, उनके बदन की हरकतें बन्द हो गई और वे पुनः पुतलों के मानिन्द बेजान हो गये.

अब तक प्रभाकरसिंह इस विचार में थे कि ये पुतले ही किसी तरह आगे की कार्रवाई उन्हें बतावेंगे जैसाकि तिलिस्मी किताब ने उन्हें बताया था पर अब जब उन्होंने देखा कि वे सब अपना काम समाप्त करके पुनः बेजान पुतलों की तरह अपनी जगह जा खड़े हुए तो उन्हें ताज्जुब हुआ और सोचने लगे की यह क्या मामला है?

कुछ देर तक तो उन्हें यह गुमान रहा कि शायद इन पुतलों के बदन में फिर हरकत हो और इनसे कुछ पता लगे पर जब दो - एक घड़ी बीत जाने के बाद भी कुछ न हुआ तो वे चिन्ता में पड़ गये कि अब क्या करना चाहिए उन्होंने अपनी तिलिस्मी किताब खोली मगर उसमें इस विषय में कुछ भी लिखा न पाया सिबाय उन बातों के जिन्हें वे पहिले पड़ चुके थे.

आखिर उन्होंने किताब बन्द कर जेब के हवाले की और सोचने लगे कि क्या करना चाहिए.

यकायक उनका ध्यान उस शेर की तरफ गया.

उनके मन में खयाल हुआ कि और पुतले तो अपना काम समाप्त करके अपनी जगह चुपचाप खड़े हो गये हैं पर इस शेर का काम अर्थात उन लाशों को चीरना - फाड़ना अभी तक जारी है.

शायद इसमें भी कोई मतलब हो, यह समझकर प्रभाकरसिंह उस पिंजरे के पास गये और कौतुहल के साथ उस शेर की तरफ देखने लगे जो इस समय जमीन पर पैर के बल

बैठा हुआ अगले पंजों से एक लाश दबाये अपने लम्बे और खूखार दांतों की मदद से उसकी हड्डियाँ चिचोड़ रहा था.

प्रभाकरसिंह का उस पिजड़े के पास जाकर खड़ा होना था कि शेर इनकी तरफ देखकर बड़ी जोर से गुर्राया.

जब वे अपनी जगह से हटे नहीं तो वह लाश पर से उठ खड़ा हुआ और अपनी भयानक आँखों से इनकी तरफ देखता हुआ दहाड़ने लगा.

जब इस पर भी ये न हटे तो वह एकदम इनकी तरफ बढ़ आया और तब बड़े जोर से गरजकर ऐसी भयानक रीति से इनकी तरफ झपटा कि यह जानते हुए भी कि वह बनावटी है, प्रभाकरसिंह को घबड़ाकर एक कदम पीछे हट जाना पड़ा.

वह शेर उसी जगह पिजड़े के पास खड़ा हो गया और अपनी भयानक आँखों से प्रभाकरसिंह को देखने लगा.

मालूम होता है कि प्रभाकरसिंह का हट कर खड़ा होना भी उस शेर को नहीं भाया क्योंकि कुछ देर तक एकटक उनकी तरफ देखने के बाद उसने फिर एक दहाड़ मारी और अपने ताकतवर पंजो से उस पिजड़े के छड़ों को पकड़ कर जोर से झकझोरा.

घबराहट और कुछ देर बाद डर के साथ प्रभाकरसिंह ने देखा कि हिलने और झोंका खाने से वह दरवाजा जिसे खोलकर पुतलों ने वे लाशें अन्दर डाली थीं और जिसे मजबूती से बंद करना शायद वे लोग भूल गये थे, खुल गया.

दूसरी सायत में वह खुंखार जानवर पिजड़े के बाहर निकल आया और प्रभाकरसिंह की तरफ बढ़ा.

इस समय प्रभाकरसिंह की कुछ विचित्र अवस्था थी.

वे जानते थे कि यह शेर बिल्कुल बनावटी और बेजान है और सिर्फ तिलिस्मी कारीगरी की बदौलत यह सब हरकतें कर रहा है परन्तु यह जानते हुए भी उसकी भयानक आकृति और डरावना ढंग उन्हें घबड़ाये दे रहा था.

जिस समय तड़पकर वह शेर उनके सामने आ खड़ा हुआ तो उनसे सिवाय इसके और कुछ न बन सका कि अपने तिलिस्मी डण्डे को हाथ में ले लें और बचाव की फिक्र करें,

केवल यही नहीं, उन्होंने उस डंडे के मुद्दे को कुछ विचित्र ढंग से इस तरह पर दबाया कि उसके सिरे से आग की लपटे और चिनगारियाँ निकलने लगी, ये लपटें और चिनगारियाँ ठीक वैसी ही थी जैसी कि सरयू को छुड़ाने जाकर दारोगा पर अपना असर पैदा करने के लिए प्रभाकरसिंह ने प्रकट की थी.

इस तिलिस्मी डंडे में जो बिचित्र गुण थे उनका कुछ परिचय पाठक उस अवसर पर पा चुके हैं और आशा है कि वे बातें उन्हें भूली न होंगी.

इन चिनगारियों और आग की लपटों ने उस शेर का जोश काफूर कर दिया कहाँ तो वह प्रभाकरसिंह पर हमला करने की तैयारी कर रहा था और कहाँ अब अपनी जगह पर दबक कर पिछले पाँव सिकोड़ धीरे - धीरे पीछे को हटने लगा.

प्रभाकरसिंह की हिम्मत बड़ी.

वे आगे बड़े और झपटकर वह डण्डा उन्होंने शेर के माथे से छुला दिया.

डंडे का सिर से लगना था कि शेर की बची - खुची हिम्मत भी जाती रही, वह एकदम बिल्ली हो गया और अपनी दुम हिलाता हुआ प्रभाकरसिंह के पैरों पर लोटने लगा.

प्रभाकरसिंह की हिचक जाती रही और डर की जगह खुशी और हिम्मत ने ले ली.

वे झुककर उस बनावटी शेर का सिर थपथपाने लगे और साथ ही साथ यह भी सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए.

मगर उन्हें ज्यादा सोचना न पड़ा.

दो एक मिनट तक उनके पैरों पर लोट - पोट करने के बाद शेर उठ खड़ा हुआ और अपनी पीठ उनके पैरों के साथ रगड़ता हुआ इस तरह का भाव जाहिर करने लगा मानों वह कहीं जाना चाहता है.

वह इस समय एक बहुत ही बड़े प्रेमी कुत्ते की तरह जान पड़ता था जो बहुत दिनों के बाद अपने मालिक को देखकर खुशी से फूला न समाता हो, अचानक प्रभाकरसिंह के मन में न जाने क्या समाया कि वे कूदकर उस शेर की पीठ पर चढ़ बैठे.

इनका बैठना था कि शेर के मुँह से खुशी की एक हलकी गुर्राहट निकली और वह इनको लिये धीरे - धीरे कमरे के बाहर की तरफ बड़ा.

इस कमरे का दरवाजा खुला हुआ था मगर पर्दा पड़ा था जिसे एक तरफ को हटाता हुआ यह शेर प्रभाकरसिंह को लिए हुए कमरे के बाहर निकल गया.

उस समय प्रभाकरसिंह ने देखा कि बाहर एक बहुत बड़ा बरामदा है जिसका सामने का हिस्सा तो खुला हुआ है मगर दायें और बायें दोनों तरफ उसका फैलाब बहुत दूर तक चला गया है, प्रभाकरसिंह को लिए हुए वह शेर बाईं तरफ को मुड़ा और मस्तानी चाल चलता हुआ सीधा जाने लगा.

प्रभाकरसिंह ने अपने चारों तरफ गौर से देखकर गुमान किया कि यह उसी ऊँचे कमरे या शीशमहल का ही ऊपरी हिस्सा है क्योंकि इस समय उनके बाई तरफ थोड़ी - थोड़ी दूर पर बंद दरवाजे दिखाई पड़ते थे और दाहिनी तरफ जिधर खुला हुआ था देखने से पेड़ों की चोटियाँ बताती थीं कि यह कोई बहुत ऊँची जगह या किसी मकान की ऊपरी मंजिल है.

खैर वह स्थान चाहें जो कुछ भी हो या जहाँ भी हो इसमें किसी तरह की विशेषता ऐसी न थी जो ध्यान आकर्षित करती.

वह केवल किसी लंबे - चौड़े महाराजी धर्मशाला का ऊपरी हिस्सा जान पड़ता था जिसमें किसी तरह की भी खूबसूरती न थी.

यकायक वह शेर एक जगह पहुंच कर रुक गया, यह एक बड़ा दरवाजा था जो किसी कमरे में जाने का था मगर बन्द होने के कारण यह पता नहीं लगता था कि इसकी दूसरी तरफ क्या है, शेर के रुक जाने से प्रभाकरसिंह को गुमान हुआ कि शायद यहीं तक आकर उसका काम समाप्त हो जाता हो और इसी दरवाजे के अन्दर जाने की उन्हें जरूरत हो, यह सोच वे शेर पर से उतर पड़े.

उनका खयाल था कि शायद वह शेर अपनी जगह लौट जायगा पर वह ज्यों का त्यों खड़ा रहा बल्कि उस दरवाजे की चौखट को अपने नाखूनों से खरोंचने लगा, अब प्रभाकरसिंह को कोई संदेह न रहा कि इसी के अन्दर उन्हें जाना है.

वे दरबाजे के पास गए और उसे धक्का देकर देखा कि वह बहुत मजबूती से बन्द है.

वे उसे गौर से देखते हुए सोचने लगे कि इसे खोलने की क्या तर्कीब हो सकती है ।

बहुत गौर से देर तक देखने के बाद भी प्रभाकरसिंह को उस दरवाजे में कोई ऐसी बात न दिखाई पड़ी जिससे उसके खोलने में उन्हें सहायता मिलती या यही गुमान होता कि इस जगह कोई कार्रवाई करने से दरवाजा खुलने की उम्मीद हो सकती है.

हाँ अगर किसी ऐसी चीज पर ध्यान जा सकता था तो सिर्फ वे पीतल के चार अंगुल के फूल जो उस दरवाजे के तीन तरफ अर्थात ऊपर, दाहिने और बांये बराबर - बराबर फासले पर लगे हुए थे.

पर ये खूबसूरती के लिये भी लगे हो सकते थे.

प्रभाकरसिंह अपनी जगह से हटकर कुछ आगे बड़े तो वैसा ही एक दूसरा दरवाजा दिखाई पड़ा जो ठीक उसी रंगडंग और नाप का था पर वैसे फूल इसमें भी न थे, अब प्रभाकरसिंह को विश्वास हो गया कि इन फूलों का केवल इसी दरवाजे पर होना जिसके सामने शेर ने उन्हें पहुंचा दिया था कोई कारण अवश्य रखता है और इस विचार के आते ही उन्होंने कुछ गौर के साथ उन फूलों को देखना और जाँचना शुरू किया.

ये फूल जो एक ही रंग - डंग के और लगभग एक बालिश्त की बराबर दूरी पर दरवाजे को घेरे हुए बने थे.

गिनती में पाँच थे, और इतने साफ और चमकदार थे कि यही जान पड़ता था मानों कोई अभी - अभी इन्हें साफ करके गया है, प्रभाकरसिंह ने इन फूलों को देखना और जाँचना शुरू किया.

हिलाते - डुलाते - दबाते और खींचते हुए वे जब अपने दायें हाथ के चौथे फूल के पास पहुंचे तो इन्हें वह कुछ हिलता हुआ दिखाई पड़ा उन्होंने उसे हिलाना - डुलाना चाहा.

घूमा तो वह नहीं पर जब जोर किया तो उसे अपनी तरफ खिंचता हुआ पाया जिससे यह शक हुआ कि अगर और जोर किया जाय तो सम्भव है कि वह आगे खिंच आबे या दरवाजे की चौखट जिस पर ये फूल जड़े थे) छोड़कर अलग हो जाय.

आखिर उन्होंने दीबार में पैर अड़ा और दोनों हाथ से पकड़कर जोर किया और साथ ही वह कोई छ:

अंगुल आगे को निकल पड़ा जिसके साथ ही एक खटके की आवाज प्रभाकरसिंह के कान में पड़ी वे अलग हो गये और उसी समय उन्होंने देखा कि उस फूल के बगल वाली दीवार पर से, जो संगीन बनी हुई थी, एक पतली सिल्ली झूलकर नीचे को गिर गई और उसके नीचे से संगमरमर का एक चौखुटा पत्थर निकल आया जिस पर बारीक अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था, खुशी - खुशी प्रभाकरसिंह उस मजमून को पड़ने लगे.

प्रभाकरसिंह को उम्मीद थी कि इस पत्थर पर उस दरवाजे को खोलने की तरक़िब लिखी होगी पर जो कुछ उस पर लिखा हुआ था वह ऐसा था कि उसका कोई मतलब ही उनकी समझ में न आया, कुछ अजीब बेमतलब की लिखावट उस पर खुदी हुई थी जिसका किसी तरह कोई अर्थ नहीं निकलता था.

प्रभाकरसिंह बहुत देर तक इस मजमून पर गौर करते रहे, आखिर बड़ी मुश्किल से तरह - तरह का खयाल दौड़ाने के बाद उन्होने उस लिखावट का अर्थ लगा ही लिया और तब खुश होकर बोले, “ समझ गया! " पत्थर पर लिखी तर्कीब से प्रभाकरसिंह ने सहज ही में वह दरवाजा खोल लिया और तब पुनः शेर पर सवार हो गये जो उन्हें लिए हुए उसी मस्तानी चाल से भीतर की तरफ रवाना हुआ.

पाठकों की जानकारी के लिए हम वह मजमून आगे लिख देते हैं

ल प छ नए hw m ꞕ : lo या ther वन क ०

हमारे पाठक जानना चाहते होंगे कि इस मजमून का क्या अर्थ था और प्रभाकरसिंह ने वह दरवाजा खोलने की क्यां तरकीब की, परन्तु इस समय हम उसे बताने में असमर्थ हैं, हाँ यह जरूर कह देंगे कि उस मजमून का मतलब लगा लेना बहुत मुश्किल नहीं है, थोड़ी ही कोशिश करने से आप उसका मतलब समझ जाएँगे.

अब हम आगे का हाल लिखते हैं.

यह जगह जिसके अन्दर प्रभाकरसिंह ने अपने को पाया एक चौखूटा सफेद संगमर्मर का बना हुआ सुन्दर क़मरा था जिसका फर्श काले और सफेद चौखूटे पत्थरों से बना हुआ और बिल्कुल खाली था अर्थात इस कमरे के बीचोबीच में कोई भी सामान न था पर हाँ इसकी दीवारों के साथ चारों तरफ पत्थर के कमर - बराबर ऊँचे गोल खम्भों पर तरह - तरह की मूरतें बनी हुई रखी थीं और प्रत्येक दो खम्भों के बीच में एक दरवाजा था जो

इस समय बन्द था, ऊपर छत की तरफ निगाह करने से प्रभाकरसिंह ने उसे रंग - बिरंगे शीशों से जड़ा हुआ पाया जो चारों तरफ बने हुए रोशनदानों की रोशनी में चमकते हुए बड़े ही सुन्दर मालूम हुए.

इन रोशनदानों के दोनों तरफ भी तरह - तरह की मूरतें बनी हुई थीं परन्तु प्रभाकरसिंह को इस कमरे की मूरतों या दूसरी चीजों को देखने की मोहलत न मिली.

जैसे ही इन्हें लिए हुए वह शेर सामने वाले दरवाजे के पास पहुँचा वैसे ही एक खटक्के की आवाज आई और उस दरवाजे के बीचोंबीच में बनी एक छोटी खिड़की खुल गई जिसके भीतर से किसी ने झाँक कर इनकी तरफ देखा और फिर तुरन्त ही मुँह हटा लिया.

अभी वे सोच ही रहे थे कि यह देखने वाला कौन है कि एक हलकी आवाज के साथ उस दरवाजे के पल्ले खुल गए और सामने दो सिपाही नजर पड़े जो फौजी वर्दी पहिने और हथियारों से लैस, बड़े ही ताकतवर और बहादुर जान पड़ते थे, इन सिपाहियों ने प्रभाकरसिंह को फौजी सलाम अदा की और तब दोनों ने बगल हटकर मानों उनको भीतर आने की जगह दे दी.

शेरसवार प्रभाकरसिंह एक अलग कमरे के अन्दर पहुँचे जो तरह - तरह के विचित्र और डरावने सामानों से भरा हुआ था.

यहाँ पहुँचकर प्रभाकरसिंह की सवारी का शेर जरा देर के लिए रुक गया और प्रभाकरसिंह अपने चारों तरफ देखने लगे.

उसी समय उन सिपाहियों ने सामने आकर पुनः सलाम किया और तब एक ने गम्भीर आवाज में कहा, " परमात्मा को धन्यवाद है कि आज आपके चरण इन स्थानों में पहुँचे.

अब हम लोगों का काम पूरा हुआ और उम्मीद हुई कि हमें इस जगह से रिहाई मिलेगी जहाँ सब तरह से स्वतन्त्र रहते हुए भी हम लोग अपने को कैदियों से बदतर समझते थे.

" प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब से पूछा, ' तुम लोग कौन हो, यहाँ कैसे आए और क्या करते हो, तथा मेरे आने की खबर तुम लोगों को क्योंकर लगी?

" उस सिपाही ने जवाब दिया, " हम लोग इस जगह के पहरे पर मुकर्रर किए गए हैं और बरसों से आपके आने का इन्तजार कर रहे हैं, आप अब आ गए हैं तो हमारा पूरा हाल सुन ही लेंगे, इस समय पहिले जो काम हम लोगों के सुपुर्द किया गया उसे हम पूरा करते हैं, आप कृपा कर इधर आने का कष्ट करें, कहता हुआ वह सिपाही कुछ आगे बढ़ गया और एक दरवाजे को खोलने के बाद इस तरह खड़ा हो गया मानों इस बात का इन्तजार करता हो कि प्रभाकरसिंह उसके भीतर आवे, प्रभाकरसिंह इसकी बातें सुनकर ताज्जुब तो कर ही रहे थे मगर साथ ही चौकन्ने होकर चारों तरफ देखते भी जाते थे और इन सिपाहियों से होशियार मालूम होते थे.

वे उस पहिले सिपाही से बातें करते जाते थे और साथ ही कनअखियों से उस दूसरे सिपाही पर भी नजर रखे हुए थे.

उनकी निगाह जरा देर के लिए उस दरवाजे की तरफ घूमी ही थी जिसे उस पहिले सिपाही ने खोला था और वे जरा सा गाफिल हुए ही थे कि उस दूसरे सिपाही ने अपनी तलवार म्यान से निकाल ली और इस जोर से प्रभाकरसिंह की गर्दन पर बार किया कि अगर वे होशियार न होते तो जरूर उनका सिर कटकर दूर जा गिरता मगर दरवाजे पर के मजमून ने उन्हें होशियार किया हुआ था और दूसरे उस शेर ने भी इस समय उनकी मदद की जो एकदम दबकर जमीन से सट गया जिससे वह तलवार उनके सिर के ऊपर से होती हुई निकल गई.

इसके साथ ही आगे बढ़कर उन्होंने अपना तिलिस्मी डण्डा उस सिपाही के सिर से छुला दिया, तिलिस्मी डण्डे का छूना था कि उस सिपाही ने बड़े जोर की चीख मारी और तब अपने सिर को दोनों हाथ से दबाए हुए पीछे को हटने लगा.

उसी समय उसके सिर से आग का फौवारा निकला जिसकी एक चिनगारी दूसरे सिपाही पर पड़ते ही वह भी चिल्ला उठा.

दूसरे ही सायत में उसका सिर भी उसी तरह भभक उठा और तब वे दोनों ही चीखते - चिल्लाते हुए उसी दरवाजे के अन्दर घुसकर गायब हो गए जिसे पहिले सिपाही ने खोला था.

कुछ देर तक उनकी चिल्लाहट की आवाज प्रभाकरसिंह के कानों में आती रही.

इसके बाद कम होती हुई बिल्कुल बन्द हो गई और तब दरवाजा भी आप से आप पहिले की तरह बन्द हो गया. अब प्रभाकरसिंह कुछ निश्चिन्त हुए और गौर के साथ अपने को चारों तरफ देखते हुए उस कमरे की चीजों पर निगाह दौड़ाने लगे.

जो कुछ सामान उस कमरे में था वह डर और घबराहट के साथ ताज्जुब भी पैदा करने वाला था.

तीसरा व्यान।

पन्द्रहवें भाग के चौथे बयान के अन्त में हम लिख आये है कि अजायबघर से निकले हुए उस जख्मी नकाबपोश को घोड़े पर बैठा कर उसका साथी जमानिया की तरफ ले चला.

ये दोनों नकाबपोश वास्तव में हमारे पाठकों के अच्छी तरह जाने - पहिचाने जमानिया के दारोगा साहब और उनके दोस्त जेपालसिंह हैं, ये लोग किस मतलब से इस समय अजायबघर में घुसे थे या वहाँ जाकर दारोगा साहब क्यों इस बुरी तौर पर जख्मी हो गये इसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते, हाँ इनकी बातचीत सुनने से मुमकिन है कुछ पता लग जाय, मगर इस समय तो दारोगा साहब की यह हालत है कि कुछ बात भी करना उनके लिए मुश्किल है.

जैपालसिंह के तरह तरह के सवालों के जवाब में वे कभी - कभी सिर्फ इतना कह देते हैं, " अभी कुछ मत पूछो, घर पहुँचने दो.

तब मैं बताऊंगा कि मेरे ऊपर क्या गुजरी है! इतना कह कर वे कॉप उठते हैं मगर यह कंपकंपी किस भयानक दृश्य की याद उन्हें दिलाती है यह हम नहीं जानते.

आखिर धीरे - धीरे चलते दारोगा को लिए जैपाल जमानिया जा पहुँचा.

इस समय रात हो चुकी थी और सड़क पर आदमियों की आमदरफ्त बहुत कुछ कम हो गई थी, फिर दारोगा साहब ने अपनी मौजूदा हालत में सदर फाटक की राह अपने मकान के अन्दर जाना मुनासिब न समझा और पीछे की तरफ के एक चोर दरवाजे के सामने जा खड़े हुए जो बाहर की तरफ से बंद था.

जैपाल ने दरवाजा खोला और दोनों आदमी अन्दर पहुंचे, जख्मों की सफाई कर अपने हाथ ही से कुछ मलहम - पट्टी करने के बाद जब जैपाल ने दारोगा साहब को पलंग पर लिटा दिया तब जाकर उनके होश कुछ ठिकाने आये और वे इस लायक हुए कि जैपाल के साबालों का जवाब दे सकें.

धीमी आवाज में रुक कर उन्होंने अपना किस्सा यों सुनाना शुरू कीया :

" अजायबघर के दरवाजे पर रथ खड़ा देख कर यह तो मैं समझ ही गया था कि कोई आदमी उसके अन्दर जरूर गया है जिसके दोस्त होने की बनिस्बत मेरा दुश्मन होने की सम्भावना ही अधिक थी.

अस्तु मैं बड़ी होशियारी के साथ सब तरह से चौकन्ना होकर इमारत के अन्दर घुसा.

जब मैं ड्योढ़ी के पास पहुँचा तो वहाँ मुझे रोशनी दिखाई पड़ी जो शीशे के एक छोटे गोले के अन्दर से निकल रही थी.

मैं यह रोशनी देख ताज्जुब में पड़ गया और एक खम्भे की आड़ में खड़ा होकर चारों तरफ देखने लगा.

कुछ ही देर बाद मैंने देखा कि वहाँ से चक्रव्यूह की तरफ जाने का जो रास्ता है उसके दरवाजे के पास एक गठरी पड़ी हुई है और वह दरवाजा खुला हुआ है, मुझे यह गुमान हुआ कि जरूर कोई आदमी उस दरवाजे के अन्दर घुसा है और यह गठरी छोड़ता गया है.

जब वह लौटेगा और अपनी गठरी उठाकर यहाँ से चलेगा तब मुनासिब समझूगा तो उससे रोक - टोक करूँगा.

यह सोच मैं अपनी जगह पर छिपा खड़ा रहा.

मगर जब देर हो गई और कोई उस दरवाजे की राह बाहर न निकला बल्कि आप एक हलकी आवाज देता हुआ वह दरवाजा बन्द हो गया तब मैंने सोचा कि शायद उसकी राह अन्दर जाने वाला अब वापस न लौटेगा.

ऐसी हालत में और देर तक राह देखना फजूल समझ मैं उस गठरी के पास पहुंचा और यह देख ताज्जुब करने लगा कि उस गठरी में इन्द्रदेव की स्त्री सयुं बंधी हुई है ।

जैपाल:

(ताज्जुब से) सरयू!! दारोगा ०:

हाँ सरयू !.

उसे वहाँ देख मैं ताज्जुब में आ गया और साथ ही यह सोच खुश भी हुआ कि यह पुनः मेरे कब्जे में आ गई सो अच्छा ही हुआ नहीं तो इसके जरिये मेरा बहुत भण्डाफोड़ हो जाता और शायद हो भी चुका हो तो ताज्जुब नहीं.

मुनासिब तो यही था कि उसी समय उसे पुन: गठरी में बाँध मैं बाहर निकाल लाता पर किस्मत की मार! यह न कर मैंने होश में लाकर यह जानना चाहा कि उसे उस जगह ले आने वाला कौन था?

बस यही करना मेरे लिये काल हो गया.

लखलखा सुंघा कर मैं उसे होश में लाया और पूछने लगा कि वह वहाँ क्योंकर पहुँची मगर उसने कुछ भी बताना मंजूर न कीया , मैं उसे मारपीट कर रास्ते पर ला ही रहा था कि यकायक चक्रव्यूह का फाटक खुल गया और उसके अन्दर किसी आदमी की आहट मालूम पड़ी जिसने डपट कर मुझे कुछ कहा, मैंने भी जवाब दिया और इसके बाद फुर्ती से तलाबार निकाल कर उसका मुकाबला करने के लिए तैयार हो गया, मगर ओफ! मेरे दोस्त! मैं तुमसे क्या बयान करूँ! मेरी निगाहें जब उस दरवाजे की तरफ उठी तो जिस भयानक चीज पर मेरी निगाह पड़ी उसे देखते ही मेरी तो रूह कॉप उठी !! (कॉप कर) ओफ! ' अब भी याद आता है तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं! " कहते हुए दारोगा ने दोनो हाथों से अपनी आँखें बन्द कर लीं.

जैपाल ने यह देख ताज्जुब से पूछा, " आखिर कुछ बताइए भी तो कि वह डरावनी चीज क्या थी?

भूत, प्रेत, पिशाच शैतान आखिर क्या आपको दिखा?

" दारोगा:

वह इन सभों से बढ़कर खौफनाक चीज थी. , भूत - प्रेत को देखकर तो आदमी दो - चार मिनट तक अपने होश हवास कायम भी रख सकता है मगर उसे देखते ही तो मेरा

यह हाल हो गया कि मानों बदन का सारा खून रगों में जम गया हो.

लो सुनो वह क्या आसेब था , वह था - आदमी की हड्डियों का एक समूचा डांचा जिसके ऊपर माँस का नाम निशान भी न था परन्तु जिसकी बिना पुतलियों की आँखों के गड़े में से खौफनाक चमक निकल रही थी.

उसके बायें हाथ में एक तलवार की मूंठ थी जिसको वह सिर से ऊपर उठाये हुए था पर जिसमें फल न था केवल मूंठ ही मूंठ थी, और दाहिने हाथ में एक छोटी सी ढाल थी जिस पर लाल स्याही अथवा खून के कुछ निशान बने हुए थे.

मेरे देखते - देखते उसका खौफनाक जबड़ा जिसके भयानक दाँत मौत के दाड़ों की तरह जान पड़ते थे, खुला और उसके अन्दर से कलेजे को दहला देने वाली एक भयानक हँसी निकली.

इतना कह दारोगा ने पुनः आँखें बन्द कर ली और इस तरह कॉप उठा मानों वह अब भी उस पिशाच को अपने सामने ही देख रहा है.

जैपाल जो बड़े गौर से उसकी बातें सुन रहा था यह देख बोल उठा, " दारोगा साहब, आप यह आँखों देखा हाल बयान कर रहे हैं या किसी तिलिस्मी खेल को देखकर भौचक्र में पड़ गये थे! " दारोगा:

ठीक हाल कह रहा हूँ, ठीक! कोई तिलिस्मी तमाशा नहीं बयान कर रहा हूँ! तुम अगर उस वक्त होते तो देखते कि वह कैसी डरावनी शक्ल थी! जैपाल:

खैर तब क्या हुआ?

दारोगा:

उसकी भयानक हंसी ने मुझको एकदम दहला दिया और मुझमें इतनी भी ताकत न रह गई कि वहाँ से भाग सकूं.

सयुं तो उस आसेब को एक ही निगाह देख चीख मार कर बेहोश हो चुकी थी पर मेरी भी वही हालत होती अगर मैं थोड़ी देर भी और उसे देखता या उससे बातें करता.

मैंने दोनों हाथों से अपनी आँखें बन्द कर लीं और उसी जगह जमीन पर बैठ गया, उस शैतान ने यह देख फिर एक भयानक हँसी हँसी और तब आहट से जान पड़ा कि वह

मेरी तरफ बढ़ रहा है.

मैंने तो समझा कि बस जान गई और यह मुझे कच्चा ही चबाकर खतम करेगा मगर नहीं, इसी समय बगल की किसी कोठरी में से कुछ आदमियों की आवाज सुनाई पड़ी जिसे सुनते ही वह पुनः एक बार गरजा और तब बिजली की तरह चमक कर गायब हो गया.

उस जगह सिर्फ थोड़ा - सा धुआँ रह गया जो थोड़ी देर बाद गयाब हो गया.

जैपाल:

(ताज्जुब से) फिर क्या हुआ?

दारोगा:

बस मुझे तो मौका मिला और मैं इस तरह वहाँ से भागा जैसे शेर के मुँह से छूटा हुआ शिकार भागता है, पर भाग के भी मेरी जान को चैन न मिला.

दस ही पाँच कदम गया होऊँगा कि एक कोठरी से निकल कर कई आदमियों ने मुझे घेर लिया.

जैपाल:

वे लोग कौन थे?

दारोगा:

क्या मेरे हवास उस वक्त इस लायक थे कि मैं दोस्त या दुश्मन को पहिचानता! उस वक्त डर और खौफ से मैं तो पागल - सा हो रहा था.

मैंने बस अन्धे की तरह इधर - उधर तलबार का हाथ मारना शुरू किया और भीड़ को चीरता हुआ आगे को भागा.

उन्होंने मेरा पीछा कीया , हम लोगों में दौड़ते - भागते हुए भी दो - चार हाथ हुए, उसी समय खम्भे से लग कर मेरी तलवार टूट गई मगर मैंने भागने में कसर न की और किसी तरह तुम्हारे पास पहुँचा.

अब जो यह सोचता हूँ कि कैसे वहाँ तक आया तो खुद ताज्जुब होता है.

जैपाल:

(कुछ देर चुप रह कर) मगर यह तो आपने बड़ी विचित्र खबर सुनाई.

बहुत कुछ घटनायें हम लोगों पर पड़ी पर आज तक कभी ऐसा मामला तो देखने में नहीं आया था.

दारोगा:

देखने में क्या सुनने में भी नहीं आया था.

उस शैतान की शक्ल जब मैं खयाल करता हूँ, मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

जेपाल:

लेकिन आखिर आप ख्याल क्या करते हैं कि वह क्या बला थी?

दारोगा:

(कुछ सोचकर) मैं तो समझता हूँ कि वह चक्रव्यूह के तिलिस्म की हिफाजत करने के लिए मुकर्रर किया हुआ कोई पिशाच है.

वह तिलिस्म बड़ा ही भयानक है जब - जब मैं उसके नजदीक गया धोखा ही उठाया.

तुम्हें याद होगा पहिली दफे जब हम लोग वहाँ गये थे तब भी यद्यपि यह डरावनी चीज तो नहीं देखी फिर भी ऐसी - ऐसी चीजें मेरे देखने में आई थीं कि हवास गुम हो गए थे और अब की भी उसी फाटक के अन्दर से यह निकला था, इसी से सोचता हूँ कि हो न हो उसी तिलिस्म में रहने वाला या उसकी हिफाजत करने वाला यह कोई है.

जैपाल:

हो सकता है.

लेकिन तब जरूर वह चक्रव्यूह बड़ी भयानक जगह हैं.

अब आपको बहुत समझ - बूझकर उस तरफ जाना चाहिए.

दारोगा

जाता! अजी अब मैं उस तरफ कभी झाँकने का भी नहीं, मैंने तो उसी वक्त कान पकड़ा और कसम खाई कि चक्रव्यूह में जाने का नाम तक न लूँगा, अब क्या फिर जाऊँगा?

जान थोड़ी ही भारी पड़ी है !! जैपाल:

अच्छा तो अब आप कुछ देर आराम करें और मुझे आज्ञा हो तो मैं चलूँ.

आज बहुत परेशानी उठानी पड़ी.

दारोगा:

अच्छा जाओ, मैं भी लेटू.

दो - चार बातों के बाद दारोगा साहब से विदा हो जैपाल उनके मकान के बाहर हुआ और अपने घर की तरफ रवाना हुआ.

जैपाल को बहुत दूर नहीं जाना था क्योंकि दारोगा साहब का अन्तरंग मित्र होने के कारण तथा इसलिए कि न जाने कब उन्हें उसकी जरूरत पड़ जाय अपने मकान से बहुत ही कम दूरी पर मगर कुछ गलियों के अन्दर के एक मकान में दारोगा साहब ने इसका डेरा कायम किया हुआ था.

लगभग आधा रास्ता जैपाल ने तय किया होगा कि एक अंधेरी गली के मोड़ पर उसे अचानक रुक जाना पड़ा.

लम्बे डील डौल का एक कद्दावर आदमी जिसका चेहरा अंधेरे के कारण साफ नजर नहीं आ रहा था गली के बीचोबीच में खड़ा हुआ था जिसने इसे देखते ही अपने हाथ की भारी लाठी आड़ी रख के गली का रास्ता रोक लिया और पास पहूंचने के साथ इसका हाथ पकड़ कर रोकता हुआ ऐंठ कर बोला.

" जरा सुनते जाइये, बाबू साहब! " जेपाल ने झटका देकर अपना हाथ छुड़ाना चाहा और साथ ही कुछ गुस्से से कहा, " कौन है वे?

कैसा बेहूदा आदमी है! " मगर इन दोनों ही का कोई असर उस आदमी पर न हुआ.

न तो उसने उसकी कलाई छोड़ी और न उसकी बात का कुछ बुरा ही माना बल्कि हंस पड़ा और कहने लगा, " आप इतना बिगड़ते क्यों हैं?

जरा ठंडे होकर मेरी बात तो सुनते जाइये !! "

और कोई वक्त होता अथवा कोई मददगार साथ में होता तो शायद जैपाल किसी दूसरी तरह पेश आता मगर इस समय एक तो गली में बिलकुल अंधेरा और सन्नाटा देखकर तथा दूसरे इस आदमी को बहुत मजबूत पा और शायद यह भी सोचकर कि यहाँ आवाज देने पर भी कोई उसकी मदद को नहीं पहुँचेगा उसने अपने मिजाज को भीतर ही भीतर बहुत क्रोध मालूम होने पर भी ऊपर से ठण्डा ही रखा और कहा, " अच्छा कहो क्या कहते हो?

" आदमी:

क्या आपका नाम जैपालसिंह है?

" जैपाल:

हाँ है तो! आदमी:

तब यह चीठी आप ही के लिए है.

कहकर उसने कमर में खोंसी हुई एक चीठी निकालकर जैपाल के हाथ पर रख दी, जैपाल ने चीठी लेते हुए कहा, " यह किसने भेजी है?

उसने जबाब दिया.

" किसने भेजी है और क्यों भेजी है यह सब आपको चीठी पढ़ने से मालूम हो जायगा.

अगर यहाँ अंधेरा समझते हो तो लालटेन के पास चले चलिए और जल्दी से पड़ डालिए.

!! थोड़ी दूर पर एक मकान के कोने से लगी हुई लालटेन अपनी फीकी रोशनी आस - पास की दीवारों पर डाल रही थी.

जैपाल कुछ सोचता - विचारता उसी की तरफ बड़ा और वह आदमी भी साथ हुआ.

मगर लालटेन की रोशनी में वह कागज खोल उस पर एक निगाह डालते ही जैपाल चौंक पड़ा और तब जल्दी - जल्दी उस चीठी को पढ़ गया जिसका मजमून इस प्रकार था:

" मेरे प्यारे मजन, मैं बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ गई हूँ! अगर मुझे जीता - जागता देखना चाहते हो तो चीठी देखते ही इस आदमी के साथ चल पड़ो.

मुख्तसर में लिखे देती हूँ कि तुम्हारा कैदी मेरे कब्जे से निकल गया और सारा भण्डा अब फूटा ही चाहता है पूरा हाल यहाँ आने पर बताऊँगी.

उसके सम्बन्ध के कुछ कागजात और कुछ दौलत भी अपने साथ जरूर लेते आना.

तुम्हारी प्यारी - बेगम " इस चीठी ने जैपाल को घबड़ा दिया.

कुछ देर तक चुपचाप खड़ा कुछ सोचता रहा और तब उस आदमी से बोला.

" मैं तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ मेरा मकान पास ही में है जहाँ चलकर कुछ सामान ले लूं, तुम्हारे साथ कोई सवारी है या सवारी का इन्तजाम करना पड़ेगा?

" उस आदमी ने जवाब दिया.

मैं डौंगी पर आया हूँ जिस पर आठ मल्लाह मौजूद हैं.

हुक्म है कि इसी नाव पर आपको ले आऊँ.

एक मिनट की भी देरी न करे.

" जैपाल:

अच्छी बात है, मेरे साथ - साथ आओ, मैं बहुत जल्द तैयार हो जाऊँगा.

उस आदमी ने कोई उज्र न किया और जैपाल के पीछे - पीछे चल पड़ा जैपाल उसे लिए अपने मकान की तरफ बड़ा इस समय उसका चेहरा देखने वाला कह सकता था कि वह किसी गहरे सोच में पड़ गया है.

घर पहुँचकर जैपाल ने जल्दी - जल्दी कई जरूरी काम निपटाए, एक चीठी दारोगा साहब के नाम छोड़ी.

इसके बाद कपड़े पहिन तैयार हुआ और तब एक मजबूत आलमारी खोलकर उसमें से कोई चीज निकालकर कमर में खोसी और वहीं से लाल रंग के कपड़े में बंधी एक छोटी गठरी जिसमें न जाने क्या चीज थी निकालकर बगल में दबाई इसके बाद आलमारी बन्द कर मकान के ऊपर वाली मन्जिल की एक कोठरी में पहुँचा.

यहाँ से भी उसने कोई सामान निकाला और एक लबादा ओढ़ने के लिए हाथ में लेकर एक छुरा क़मर में छिपाया, इसके बाद उस आदमी के पास पहुँचकर बोला, " बस मैं

चलने को तैयार हूँ !!

वह आदमी बिना कुछ कहे - सुने उठ खड़ा हुआ और दोनों नदी की तरफ रवाना हुए जो वहाँ से बहुत दूर नहीं पड़ती थी, एक लम्बी हलकी और तेज जाने वाली किश्ती जिस पर कई मल्लाह मौजूद थे किनारे से कुछ दूर जल में खड़ी थी. .

जैपालसिंह के साथी ने " रामा! रामा! " करके आवाज दी जिसके साथ ही डोंगी पर से एक आदमी ने जवाब दिया और डोंगी किनारे से आ लगी.

हाथ का सहारा देकर एक मल्लाह ने जैपाल को डोंगी पर चढ़ा लिया, पीछे की तरफ एक कम्बल बिछा हुआ था जिस पर जेपाल बैठ गया, उसका साथी वह कद्दावर जबान उसके बगल में जा बैठा, और उसके एक इशारे के साथ ही डोंगी किनारा छोड़कर बीच धारा में हो गई.

इस समय की खिली चाँदनी में गंगाजी का सुहावना और शान्त दृश्य मन को मोह लेने वाला था.

जैपाल कुछ देर तक अपने चारों तरफ की प्राकृतिक छटा को देखने में लगा रहा मगर यकायक वह चौंका जब उसे ख्याल आया कि डोंगी धारा पर चढ़ने के बजाय उल्टे नीचे की तरफ बहाव के साथ - साथ तीर की सी तेजी से जा रही है, क्योंकि खेने वाले सभी आदमी मजबूत और अपने काम में होशियार थे.

वह घबड़ा कर सोचने लगा, “ काशी तो जमानिया से ऊपर की तरफ है, ये लोग नीचे की तरफ क्यों जा रहे है! क्या कोई धोखा तो नहीं है?

" उसने अपने साथ वाले आदमी का हाथ पकड़ा जो नाब के किनारे पर सिर रखकर ऊंघ रहा था और उसे हिलाकर पूछा.

“ हम लोग नीचे को बहाव की तरफ क्यों जा रहे है काशी तो ऊपर की तरफ है?

" उस आदमी ने एक बार सिर घुमाकर चारों तरफ देखा और तब कड़ी आवाज में जैपाल से कहा, " बस चुप रहो और समझ रखों कि अपने मालिक के हुक्म से मैं तुम्हें गिरफ्तार करके ले जा रहा हूँ, अगर चुपचाप बैठे नहीं रहोंगे और शोरगुल मचाने या फसाद करने की नीयत करोगे तो बुरी तौर से पेश आऊँगा! "

जैपाल की तो यह हालत हो गई कि काटो तो बदन में लहू नहीं एक तो वह स्वभाव का ही डरपोक और बुज़दिल आदमी था, दूसरे उस मोटे - ताजे पहलबान से लड़कर पार पाना उसकी ताकत से एकदम बाहर की बात थी, और तीसरे उस पहलवान के वे साथी भी जो नाव खे रहे थे जरूर उसके ही होकर काम करेंगे यह भी उसे विश्वास था, अस्तु किसी प्रकार भी वह अकेला इतने आदमियों पर फते बाजी नहीं पा सकता था, यही सब कुछ देख और समझ वह चुपचाप अपनी जगह पर दबका रह गया मगर इतना जरूर गौर करता रहा कि ये लोग किसके आदमी हो सकते हैं और इस प्रकार धोखा देकर उसे कहाँ ले जा रहे होंगे.

एक सायत के लिए उसका ख्याल बेगम की तरफ गया जिसकी चीठी पर विश्वास करके अकेला ही इन सभी के साथ घर से निकल पड़ा था, मगर उसकी प्यारी बेगम उसके साथ दगा करेगी इस बात पर भी उसका ख्याल न जमा और उसने यही स्थिर किया की जरूर वह चीठी जाली है.

पर उस चीठी का मजमून ऐसा था कि इस बात पर उसका ख्याल न जमा और उसने यही निश्चय किया कि बेगम को धोखा देकर वह चीठी लिखा ली गई है अथवा सचमुच कोई जरूरत पड़ने पर बेगम ने किसी आदमी को चीठी देकर भेजा है और वह आदमी इन लोगो के कब्जे में पड़ गया हो.

मगर फिर ये लोग आखिर हैं कौन और इस तरह उसे गिरफ्तार करके कहाँ ले जा रहे हैं?

तरह - तरह की बातें जैपाल सोच गया मगर उसकी अक्ल ने कुछ काम न दिया और अब वह इस सोच में पड़ गया कि उस चीठी पर भरोसा करके जो दौलत और कागजात उसने साथ ले लिये हैं उनका क्या होगा?

दौलत से ज्यादा उसे उन कागजों की फिक्र थी जिनका उसके किसी दुश्मन के हाथ में पड़ जाना उसके हक में मौत से बढ़ कर बुरा होगा, इस खयाल ही से वह कांप उठा कि उसके कब्जे से निकले हुए वे कागज अब उसी को बर्बाद कर देंगे.

न जाने उन कागजों में कौन - सा भेद छिपा हुआ था कि उनका दुश्मनों के हाथ में देने की बनिस्बत एकदम खाख कर देना ही जैपाल को बेहतर मालूम हुआ उसने बहुत ही

आहिस्ते से, जिसमें किसी पर जाहिर न हो.

अपने कमर में हाथ डालकर कोई चीज जो वहाँ छिपाई थी. निकाली और छिपे ढंग से ही उसे उस गठरी में डाला जो घर से साथ लाया था और जो इस समय उसके बगल में पड़ी हुई थी.

चारों तरफ उसने जाँच की निगाह फेरी.

सब मल्लाह अपने - अपने काम में लगे थे और उसे गिरफ्तार करने वाला अपनी जगह पर बैठा ऊँघ रहा था.

मौका अच्छा था, उसने धीरे से हाथ बड़ाकर वह गठरी उठाई और फुर्ती से पानी में फेंकी.

मगर उसके बगल में बैठा हुआ वह मोटा - ताजा आदमी देखने में यद्यपि लापरबाह और ऊंघता हुआ मालूम होता था पर भीतर खूब चौकन्ना और सब तरह से होशियार था.

जैपाल के हाथ से गठरी छूटने के पहिले ही उसका हाथ उस गठरी पर जा पड़ा और उसने उसे पकड़ लिया.

उसी समय जैपाल के हाथों में एक तेज छुरा दिखाई पड़ा मगर इस आदमी की तेज निगाह ने उसे भी देख लिया.

एक हाथ से तो वह गठरी उसने ठिकाने रक्खी और दूसरे हाथ से जैपाल की कलाई पकड़कर ऐसे जोर से उसकी बाँह उमेठी कि जैपाल के मुँह से एक चीख निकल पड़ी और छुरा हाथ से छूटकर गिर पड़ा.

छुरा उठाकर उस आदमी ने जोर से दूर फेंक दिया और वह चन्द्रमा की रोशनी में चमकता हुआ एक हलके छपाक के साथ पानी में गिर गया.

इसके बाद उसने गरजकर कहा, " उस अब अगर तुमने जरा भी शैतानी की तो हथकड़ी - बेड़ी से कस दिए जाओगे! अपनी क़ुशल चाहते हो तो चुपचाप बैठे रहो और भागने का खयाल भी मत करो!

चौथा व्यान।

उस पीतल वाली संदूकड़ी के अन्दर भूतनाथ को कोई ऐसी डरावनी चीज नजर आई जिसे देखते ही वह एकदम बदहवास हो गया उसके साथी शागिर्द ताज्जुब के साथ उसकी यह अवस्था देख रहे थे और साथ ही यह भी सोच रहे थे कि इस संदूकड़ी में ऐसी कौन सी चीज थी जिसे देखकर भूतनाथ जैसा कट्टर जीबट वाला और बहादुर आदमी इस तरह बदहवास हो गया.

मगर भूतनाथ की यह हालत देर तक न रही.

उसने कुछ ही देर में अपने ऊपर काबू कर लिया और बिगड़े हुए दिमाग को ठिकाने कर पुनः उस संदूकड़ी को उठाया.

उसका विचार उस संदूकड़ी की चीजों को अच्छी तरह देखने और जाँचने का था पर उसी समय उसकी निगाह साथियों की तरफ उठ गई और उनकी नजरों को गौर ताज्जुब और कौतूहल के साथ अपने ऊपर पड़ता हुआ पा उसका विचार बदल गया.

उसने उस संदूकड़ी को ज्यों का त्यों बन्द कर अपने बटुए के हवाले किया और उन गठरियों में से निकली हुई चीजों की जाँच करने लग गया.

गौहर और मुन्दर के सामानों से भरी उन गठरियों की जाँच में भूतनाथ ने ज्यादा वक्त बरबाद न कीया , कुछ जरूरी और काम का सामान तो उसने अपने पास रख लिया तथा बाकी को पुनः गठरी में बाँध अपने शागिर्दो के हवाले करने के बाद वह उठ खड़ा हुआ और बोला, " मेरे दोस्तों, मैं तुमसे छिपाना नहीं चाहता कि इन दोनों औरतों ने मेरा एक ऐसा गुप्त भेद जान लिया है जिसका प्रकट होना मेरे हक में मौत से भी बुरा होगा, अस्तु मैं बिना इस मामले की तह तक पहुँचे.

जिन जिन ने इस भेद को जाना है उन्हें गिरफ्तार किए, और किस प्रकार और किसकी कार्रवाई से यह भेद प्रकट हुआ इसे जाने बिना चैन से बैठ न सकूँगा.

इस सामान और उन दोनों औरतों को लेकर तुम लोग लामाघाटी चले जाओ.

वहाँ जब तक मैं न पहुँचूं इन सभों की अपनी जान से बढ़कर हिफाजत करना और किसी तरह भी इन्हें कब्जे से बाहर न जाने देना.

तुममें से चार आदमी मेरे काशी जी वाले दोनों अड्डों पर चले जाओ और दो - दो आदमी हर एक पर तब तक जमे रहो जब तक मेरा दूसरा हुक्म न पहुँचे, और (एक आदमी की तरफ बताकर) तुम बलदेव मेरे साथ चलो.

" काशी के दोनों अड्डों से भूतनाथ का मतलब अपनी दूसरी स्त्री रामदेई और तीसरी नई नवेली श्यामा से था जिनके नाम उसने यहाँ पर न लिए पर उसके आदमी उसका मतलब अच्छी तरह समझकर उसी समय उठ खड़े हुए और वहाँ से डेरा कूच करने की फिराक में लग गए.

दो आदमी उधर चले गए जहाँ बेहोश मुन्दर और गौहर तथा उनकी हिफाजत के लिए मुकर्रर उनका एक साथी था और बाकी के लोग सामान बटोरने लगे.

भूतनाथ ने अपने शागिर्द बलदेव को अपने पास बुला लिया और जरा दूर - हटकर उससे कुछ बातें करने लगा मगर उसका ध्यान अचानक अपने एक शागिर्द की तरफ गया जो दौड़ता हुआ उसकी तरफ आ रहा था.

बात की बात में वह पास आ पहुँचा और घबड़ाई हुई आवाज में बोला.

" गुरुजी, वे दोनों औरतें तो कहीं गायब हो गईं! " भूत ०:

(घबड़ाकर) हैं! क्या कहा?

गायब हो गई !! सो कैसे?

शागिर्द:

जिस गुफा में वे दोनों बेहोश करके डाल दी गई थीं बह खाली पड़ी है और हमारा साथी रामेश्वर जो उनकी हिफाजत के लिए वहाँ बैठाया गया था वहाँ कहीं दिखाई नहीं पड़ता! भूत:

तो क्या यह समझा जाय कि रामेश्वर ने हमें धोखा दिया?

शागिर्द:

रामेश्वर ने ऐसा किया होगा यह बात तो दिल कबूल नहीं करता! हाँ यह हो सकता है कि उन औरतों का कोई साथी आ पहुँचा हो जो उन्हें छुड़ा कर उनके साथ ही साथ रामेश्वर को भी ले गया हो.

भूत:

खैर जो कुछ हुआ हो, चारों तरफ फैलकर अच्छी तरह उन सभों को ढूँढो, अगर कोई उन दोनों को छुड़ा ले गया होगा तो अभी दूर न गया होगा.

क्या बताऊँ इन औरतों के निकल जाने से मेरा तरदुद और भी बढ़ गया !! भूतनाथ के सब साथियों और स्वयम् भूतनाथ ने भी चारों तरफ दूर - दूर तक अच्छी तरह खोजा मगर गौहर और मुन्दर कहीं दिखाई न पड़ी, हाँ एक झाड़ी के अन्दर बेहोश रामेश्वर जरूर दिखाई पड़ा जिसे सब लोग उठाकर बाहर ले आये, भूतनाथ ने होश में लाकर उससे तरह - तरह के सवाल करने शुरू किए, मगर उसने सिर्फ यही कहा- " मैं एक पेड़ के साथ उठगा हुआ कुछ गुनगुना रहा था कि कहीं से आकर पटाके की तरह की कोई चीज मेरे पास गिरी जो गिरते ही हलकी आवाज देकर फूट गई और उसके अन्दर से इतना धूआँ निकला कि उसने देखते - देखते मुझे घेर लिया, वह धुआँ इतनी तेज बेहोशी का असर रखता था कि मैं उठकर खड़ा भी न हो पाया था कि जमीन पर गिर पड़ा और मुझे तनोबदन की सुध न रह गई.

यह हाल सुन भूतनाथ कुछ देर के लिए गौर में पड़ गया और तब बोला, “ मुझे शक होता है कि यह कार्रवाई दारोगा या उसके किसी आदमी की है क्योंकि उसे भी इस भेद से उतना ही सम्बन्ध है जितना मुझे, मगर इसके सबब से मुझे अपना विचार बदलना पड़ता है, तुमसे दो आदमी तो गौहर और मुन्दर से मिले सामानों को लेकर लामाघाटी जाओ और बाकी के लोग सीधे जमानिया पहुँचकर टोह लगाओ, मैं इस समय एक जरूरी काम के लिए जाता हूँ और परसों किसी समय तुम लोगों से अपने स्थान पर मिलूँगा.

!! कुछ जरूरी बातें और समझाने के बाद भूतनाथ वहाँ से हटा और केवल अपने शागिर्द बलदेव को लिए कुछ बातें करता एक तरफ को रवाना हुआ.

बीच - बीच में थोड़ी देर के लिए राहतता और सुस्ताता हुआ भूतनाथ संध्या बल्कि रात गए तक बराबर चलता ही गया वह किधर किस नीयत से जा रहा है यह कहना कठिन था मगर इसमें कोई शक नहीं कि अपने धुन का पक्का वह धूर्त किसी मतलब ही से यह लम्बा सफर कर रहा था.

दो घड़ी रात जाते - जाते भूतनाथ और उसका शागिर्द गंगा तट पर एक ऐसी जगह पहुँच गए जहाँ किनारे पर एक छोटा सा गाँव और उससे कुछ हट कर एक छोटा - सा शिवालय था भूतनाथ ने अपने शागिर्द के साथ इसी शिवालय में डेरा डाल दिया और रात इस जगह काटने का निश्चय कीया , दोनों आदमियों के बटुए में खाने - पीने का साधारण सामान मौजूद था.

कुछ मीठा खा और कुछ जल पीकर दोनों ने अपनी भूख शांत की और मन्दिर के सभा - मण्डप के एक कोने में लेट रहे जहाँ से गंगाजी का दूर - दूर तक का दृश्य दिखाई पड़ रहा था.

दिन भर के सफर से थका हुआ उसका शागिर्द बलदेव तो शीघ्र ही खराटे लेने लगा मगर तरह - तरह के तरदुद्दों में पड़े हुए भूतनाथ की आँखों में नींद का नाम - निशान न था.

बहुत देर तक वह इधर - उधर करवट बदलता रहा पर आखिर गंगा तट की शीतल निर्मल वायु ने थपकियां दे के उसे भी सुला ही दिया.

मगर पौ नहीं फटने पाई थी कि भूतनाथ की नींद किसी तरह की आहट पाकर खुल गई उसने कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि एक तेज डोंगी जिस पर कई डांडे चल रहे हैं उसी तरफ आ रही है और उसी की आहट ने नींद उचटा दी वह उठकर बैठ गया.

तब उसके देखते ही देखते एक पतली डोंगी किनारे लगी जिस पर से एक कद्दावर आदमी सीधा उस मन्दिर की तरफ बड़ा उसे देखते ही भूतनाथ के चेहरे पर खुशी की निशानी झलक पड़ी.

और उसने अपने शागिर्द को जगाते हुए कहा, " बलदेव, बलदेव, उठो, तुम्हारा भाई आ पहुँचा !! " बलदेव यह सुनते ही उठकर बैठ गया और उसी समय वह आदमी भी मन्दिर के पास आ गया.

भूतनाथ को बैठा देख उसने लपककर पैर छुआ और भूतनाथ ने उसे गले से लगाते हुए कहा, " तुम्हारे चेहरे से खुशी जाहिर हो रही है, मालूम होता है वह काम हो गया! " वह आदमी बोला, “ जी हाँ, आपके चरणों की कृपा से मुझे उस काम में पूरी सफलता मिली! " और तब अपने भाई से गले मिलकर भूतनाथ की इच्छानुसार वह उसके सामने बैठ गया.

भूतनाथ ने पूछा, " अच्छा अब सुनाओ क्या - क्या हुआ और क्या काम तुमने किया?

" यह आने वाला नौजवान बलदेव का भाई और भूतनाथ का शागिर्द था.

इधर थोड़े ही दिनों से यह भूतनाथ की मण्डली में आकर मिला था पर इसकी हिम्मत, बहादुरी, चालाकी, ताकत और ऐयारी ने भूतनाथ को लट्टू कर दिया था और उसे विश्वास हो गया था कि अगर यह कुछ दिन उसके साथ रह गया तो परले सिरे का ऐयार निकलेगा.

और हमारे पाठक इसे ऊपर वाले बयान में देख चुके हैं क्योंकि जमानिया में जैपाल को गिरफ्तार करने वाला यही शख्स था.

इसका नाम रामगोविन्द था।

भूतनाथ की बात सुनकर वह बोला.

रामगोबिन्द::

आपकी कृपा से सब काम पूरा - पूरा उतरा मगर सबसे पहिले मैं यह जानना चाहता हूँ कि आपने यहाँ आने में कई दिन की देर क्यों कर दी?

हम लोग कई दिन से बराबर राह देखते हुए यह सोच - सोच रहे थे कि आप किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गए! भूत:

तुम्हारा ख्याल ठीक है और बेशक मैं एक बड़े भारी तरदुद में पड़ गया था, इसी से मुझे आने में तीन - चार दिन की देरी हो गई.

इस समय तुम्हारा हाल सुनने के बाद मैं अपना हाल सुनाऊँगा बल्कि तुम्हारी मदद भी लूँगा क्योंकि एक बड़ा टेढ़ा मामला आ पड़ा है जिसमें तुम्हारे ऐसा होशियार आदमी ही मेरी मदद कर सकता है.

राम:

मैं हर वक्त दिलोजान से हाजिर रहूँगा.

अपना हाल संक्षेप ही में सुनाए देता हूँ, आपकी आज्ञा पाकर हम लोग सीधे चुनार चले गए और इधर - उधर टोह लगाने लगे.

पहिले दिन तो कुछ काम न हुआ मगर दूसरे दिन जब मैं एक चोबदार की सूरत बना हुआ इधर - उधर घूम रहा था तो दो लौडियों की बातचीत से कुछ पता लगा, मैंने उनमें से एक को अपने जाल में फंसाया और उसी की जुबानी थोड़ा बहुत हाल पाकर दीवान ह्रदयालसिंह के पीछे पड़ा, उन्हें धोखा देकर मैंने उनसे सब पता ले लिया.

जो कुछ आपने सुना था वह बहुत ठीक था.

उस घटना के बाद ही महाराज सुरेन्द्रसिंह ने अपने कुछ जासूस पता लगाने को छोड़े थे, और उन्होंने जो कुछ पता लगाया उससे जान पड़ा कि केवल जमानिया की महारानी, दारोगा साहब, और आप ही उस मामले में सने हुए न थे बल्कि जैपालसिंह और उसकी ' बेगम ' भी उसमें मुबतिला थी.

महारानी और दारोगा के बारे में तो महाराज सुरेन्द्रसिंह कुछ कर न सकते, या सम्भव है कि उनके बारे में गुप्त रीति से महाराज गिरधरसिंह को कुछ लिखा हो, पर जैपाल, बेगम और आपको गिरफ्तार करने के लिए उन्होंने कई आदमी छोड़े और साथ ही यह मुनादी करा दी कि इस मामले को ठीक - ठीक खबर देने वाले को वे मुँहमाँगा इनाम देंगे.

इस इनाम की लालच ने बेगम के मन में यह ख्याल पैदा किया कि वह सब कसूर आप पर थोंपकर खुद साफ छूट ही न जाय बल्कि मुंहमांगा इनाम भी ले, वह उसी वक्त विजयगढ़ गई और रियासत के कई ओहदेदारों से मिलकर यह बात जाहिर की कि अगर महाराज सुरेन्द्रसिंह उसे और उसके आशिक जैपाल को छोड़ दें तो वह उस मामले का पूरा - पूरा भेद तथा जिसने यह काम किया उसका नाम और पूरा - पूरा सबूत महाराज को दे सकती है.

महाराज ने यह बात स्वीकार कर ली, बल्कि यह भी कहा कि अगर वह आपको गिरफ्तार करा देगी तो मुंहमांगा इनाम ही नहीं, बल्कि और भी कुछ पावेगी.

बेगम खुशी - खुशी लौट आई और आपके खिलाफ तरह - तरह के सबूत जुटाने लगी.

लेकिन इसी बीच चुनारगढ़ के राजा शिवदत्त से महाराज सुरेन्द्रसिंह की लड़ाई लग पड़ी जिससे यह मामला ठंडा पड़ गया परन्तु अब फिर उभड़ा है और बेगम तथा जैपाल इसके सम्बन्ध में गुप्तरीति से बहुत कुछ कर रहे हैं.

यह सब हाल कुछ तो दीवान हृदयालसिंह को धोखा देकर मैंने जाना और कुछ इधर - उधर नौकर - चाकर, लौंडी - गुलामों से बातचीत और इनाम - इकराम दे - दिलाकर पता लगाया.

जो कुछ मैंने सुना उससे मुझे यही विश्वास हुआ कि इस मामले का असली भेद बेगम के पेट में है अस्तु मैं चुनारगढ़ से सीधा काशी पहुंचा और बेगम के मकान के चारों तरफ चक्कर लगाने लगा आखिर एक दिन रात के समय मौका पाकर मैं कमन्द लगाकर उसके मकान में घुस गया और चारों तरफ घूमने फिरने और तलाशी लेने लगा.

कितने ही सन्दूक, आलमारी और कोठरियों के ताले मैंने तोड़े और उनकी जाँच की मगर कामयाबी कुछ न हुई जिसका सबब यह था कि बेगम उस रात वहाँ थी नहीं, कहीं गई थी, और संभव है जरूरी कागजात कहीं छिपाकर रख गई हो या अपने साथ ही ले गई हो.

लाचार असफल होकर मैं लौटना ही चाहता था कि उसी समय एक बन्द कोठरी की जंजीर काटने पर मुझे उसके अन्दर एक कैदी दिखाई पड़ा जो इतना कमजोर और दुबला - पतला हो रहा था कि साफ जान पड़ता था कि बरसों का कैदी ही नहीं है बल्कि हद्द दर्जे की तकलीफ में रखा जाता है.

बैरंग वापस लौटने से अच्छा समझकर और यह भी सोचकर कि शायद इससे हम लोगो के काम में कुछ मदद मिले में उसको अपने साथ ही बेगम के मकान के बाहर ले आया.

भूत:

अब वह आदमी कहाँ है?

उसका नाम - धाम कुछ मालूम हुआ?

राम:

उसे आपके अड्डे पर छोड़ आया हूँ मगर नाम - धाम या हालचाल मुझे कुछ भी मालूम न हो सका, क्योंकि मैं एक दूसरे ही फेर में पड़ गया.

भूत:

सो क्या?

राम:

उस कैदी को लेकर बेगम के मकान के बाहर होने के कुछ ही देर बाद बेगम वहाँ पहुँची आते ही मालूम हो गया कि कोई आदमी चोरी की नीयत से उसके मकान में घुसा था क्योंकि अपने काम के लिए मुझे कई ताले और जंजीरे तथा कुलाचे काटने पड़े थे जैसा कि मैंने आपसे कहा.

तुरन्त ही चारों तरफ खोज - ढूंढ मच गई और कुछ ही देर में लोगों को मालूम हो गया कि वह कैदी निकल गया है.

यह हाल जानते ही बेगम घबड़ा गई और उसने उसी समय अपना एक आदमी चिट्ठी देकर जमानिया रवाना कीया .

भूत:

किसके पास?

जैपाल के पास भेजा होगा?

राम::

जी हाँ, मुझे भी यह बात मालूम हो गई और मैंने उस आदमी का पीछा करके पता लगा लिया कि बेगम ने चिट्ठी देकर जैपाल को बुलवाया है और मेरा काम बन गया.

आपने जैपाल को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया ही था, इस बेगम की चिट्ठी की मदद से वह काम बखूबी बनता था, अस्तु मैंने उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया स्वयम् उसकी जगह काशी जाकर जैपाल से मिलने का विचार कीया.

बेगम के मकान से निकले हुए कैदी और बेगम के आदमी को साथियों की मार्फत अड्डे पर भेजा, और बाकी लोगों को साथ ले काशी पहुँचा.

बेगम की चिट्ठी की बदौलत जैपाल सहज ही कब्जे में आ गया बल्कि कुछ और भी काम बन गया.

भूत:

वह क्या?

राम:

बेगम की चिट्ठी में मैंने अपनी तरफ से यह बड़ा दिया था कि उस कैदी के सम्बन्ध के सब कागज और कुछ दौलत भी लेते आना, सो जैपाल इस जाल में फंस गया और बहुत से कागजों की एक गठरी और कुछ जबाहिरात लेकर घर से निकला.

उसे गिरफ्तार करना कौन मुश्किल था?

हम लोग उसे पकड़कर नाब के रास्ते वहाँ पहुँचे जहाँ आपने मिलने का वादा किया था पर दो रोज तक आपकी राह देखने पर भी आप न मिले, लाचार मैंने जैपाल को भी दो आदमियों के साथ अड्डे पर भेजवा दिया और खुद आपकी राह देखता रह गया.

आज अगर आपसे मुलाकात न हो गई होती तो मैं यहाँ न रुकता और काशी, जमानिया या मिर्जापुर जाकर पता लगाता.

हैं भूत:

(खुश होकर और रामगोविन्द की पीठ ठोंककर) शाबाश! तुमने तो वह काम किया कि मैं भी शायद न कर सकता था, तुम्हारे ऐसा शागिर्द पाकर मैं अपने को भाग्यवान समझता हूँ अच्छा तो जैपाल के पास से मिले हुए कागजात अब कहाँ हैं?

राम:

उन्हें भी मैंने जैपाल के साथ ही अड्डे पर भेज दिया.

साथ रखने से न जाने कब क्या धोखा हो जाता.

क्या उनकी अभी जरूरत है?

भूत:

नहीं कोई बहुत नहीं, मैं यहाँ से लौटूंगा तो उनकी जाँच करूंगा.

हाँ तुम यह बताओ कि उस दूसरी बात का कुछ पता लगा जो मैंने तुमसे कहीं थीं?

राम:

वह कौन सी?

भूत:

उस तिलिस्मी किताब के बारे में जो विक्रमी तिलिस्म से निकली थी और जिसके बारे में कहा जाता है कि उसमें जमानिया तिलिस्म का पूरा - पूरा हाल लिखा हुआ है.

राम:

हाँ ठीक है, मैंने उसके बारे मे भी जाँच की थी, उस किताब के बारे में लोगों में यह मशहूर है कि वह किसी आदमी के खून से लिखी गई है और इसीलिए रिक्तगंथ के नाम से मशहूर है, उसमें किसी बहुत बड़े और भयानक तिलिस्म का हाल लिखा हुआ है मगर वह तिलिस्म जमानिया तिलिस्म ही है या कोई और यह मैं जान न सका, हाँ यह पता जरूर लगा कि उसे राजा वीरेन्द्रसिंह बहुत हिफाजत के साथ खास अपने शीशमहल में रखे हुए हैं और उनका विचार है कि उसकी मदद से खुद या अपने लड़कों के द्वारा तिलिस्म खोलें, आपकी आज्ञा न थी नहीं तो मैं उस किताब को भी लेने की कोशिश करता.

भूत:

कोई हर्ज नहीं, मैं शीघ्र ही उसके लिए या तो तुम्हें भेजूंगा और या खुद जाऊँगा.

तुम जो कुछ पता लगा लाए हो उसी से मेरा बहुत सा काम निकल जाएगा.

अच्छा लो अब मुझसे सुनो कि मैं किस फेर में पड़ गया था.

चूंकि यह मामला भी बहुत कुछ उसी भेद से सम्बन्ध रखता है जिसका पता लगाने मैंने तुम्हें चुनार भेजा था इसलिए मैं तुम्हें पूरा - पूरा हाल सुनाता हूं. भूतनाथ ने पिछला सब हाल - अपना घर से निकलना, रास्ते में कामेश्वर और भूवनमोहिनी बनी हुई गौहर और मुन्दर का मिलकर उसे धोखे में डालना, उनका पीछा करते हुए कैलाश - भवन के पास

तक पहुँचना, शिवदत्त के आदमियों के हाथ उन दोनों का फँसना, खुद शिवदत्त बनकर उन ऐयारों के हाथ से उन्हें छुड़ाना और उनका भेद दरियाफ्त करना, और अन्त में उन दोनों ही का गायब हो जाना यह सब हाल पूरा - पूरा उसने रामगोबिन्द से कह सुनाया मगर इस बीच में अपने इन्द्रदेव से मिलने का हाल न कहा और न यही बताया कि उनसे क्या - क्या बातें हुई थीं.

रामगोबिन्द सब हाल बड़े गौर से सुनता रहा और अन्त में बोला, " मुझे तो यह जान पड़ता है कि ये बेगम, गौहर और मुन्दर वगैरह मिल कर आप पर कोई बड़ा तूफान खड़ा करना चाहती हैं.

भूत ०:

बेशक यही बात है.

मगर कुशल इतनी ही है कि इस सम्बन्ध में मेरे खिलाफ काम में आने वाले जितने सबूत थे करीब - करीब वे सब मेरे कब्जे में आ गए हैं, बहुत से जरूरी कागजात तो खास मुन्दर और गौहर ही से मुझे मिले हैं और बाकी के तुम जैपाल के पास से उठा लाये हो.

मुमकिन है कि स्वयम् जैपाल की जुबानी भी कुछ पता लगे या उसे कैदी से कुछ भेद की बातें मालूम हो जिसे तुम बेगम के यहाँ से ले आए हो.

अस्तु जब तक ये सब कागज मेरे पास रहेंगे किसी को मेरे खिलाफ उंगली उठाने का मौका न मिलेगा.

राम:

बेशक, मगर आपको इन सबूतों को या तो एकदम गारत ही कर डालना चाहिए और या फिर बहुत होशियारी से रखना चाहिए क्योंकि अब जब कि इतने दिनों का छिपा हुआ भेद सिर्फ प्रकट ही नहीं हो गया है बल्कि कई आदमी इसे जान भी गए हैं तो जिसके हाथ में भी सबूत पड़े वह आपको बहुत बड़ा नुकसान पहुँचा सकेगा.

मैं यह नहीं जानता कि वह भेद क्या है और आपके दुश्मन किस बात का कलंक आप पर लगाना चाहते हैं मगर जो कुछ आप ही की जुबानी या इधर - उधर पता लगाते हुए

जान पड़ा है उसमें मैं यह गुमान जरूर कर सकता हूँ कि वह कोई बहुत ही भयानक बात है और उसका प्रकट होना आपके हक में अच्छा नहीं होगा.

भूत:

बेशक यही बात है तुम मेरे परमप्रिय शिष्य हो अस्तु मैं तुमसे कुछ भी छिपाना नहीं चाहता और तुम्हें साफ - साफ बताए देता हूँ कि वह क्या भेद है.

मेरे पास आ जाओ और गौर से सुनो मगर इतना याद रखना कि जीती जिन्दगी इसका एक भी लफ्ज किसी दूसरे के कान में न जाना चाहिए नहीं तो मैं कहीं का न रहूँगा.

बलदेव, तुम भी गौर से सुनो, मगर खबरदार, कभी यह सब हाल किसी पर प्रकट न करना! भूतनाथ के शागिर्द उसके पास खिसक आए और उसने कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि यकायक एक चीख की आवाज ने कान में पड़ कर सभी को चौंका दिया, आवाज कहीं पास ही से आई थी और किसी औरत की जान पड़ती थी. जिसने उसे कुछ कहने से रोक दिया और वह चारों तरफ निगाह दौड़ा कर गौर करने लगा कि वह किधर से आई है.

यह तो पहचानी हुई - सी जान पड़ती है.

भूतनाथ उठ खड़ा हुआ और उसके शागिर्द भी खड़े हो इधर - उधर देखने लगे.

पांचवा व्यान।

जिस तरफ प्रभाकरसिंह की निगाह उठती थी उधर ही ताज्जुब की चीज वे देखते थे.

यह क़मरा जो लम्बाई में चालीस हाथ और चौड़ाई में बीस हाथ से किसी तरह क़म न होगा बिल्कुल संगमर्मर का बना हुआ था और इसकी छत, जो ऊँचाई में पन्द्रह - बीस हाथ से कम न होगी, शीशे की बनी हुई थी जिसके कारण कमरे में खिड़की या दरवाजे खुले न होने पर भी इस जगह रोशनी की कमी बिल्कुल न थी.

पहिली चीज जिस पर प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी, कमरे के बीचों - बीच में बना हुआ एक फौबारा था जो संगमूसा का बना हुआ था मगर उसकी अनगिनत खूबसूरत टोटियों

में से पानी के बदले आग की छोटी - बड़ी पतली - लम्बी और मोटी बारीक लपटें निकल रही थीं जो तरह - तरह के रंग की थीं और केवल ऊपर ही को नहीं उठ रही थीं बल्कि इधर - उधर नीचे चारों ही तरफ फैलती हुई एक अजीब ही बहार दे रही थीं.

ये आग की लपटें हर रंग की थीं कहीं - कहीं जहां पर दो या तीन रंग की लपटें मिल जाती थीं वहां इन्द्रधनुष की तरह अजीब ही रंग की नजर आ रही थीं.

लपटों की ऊँचाई या तेजी में कभी - कभी फर्क भी पड़ जाता था और कभी क़म कभी बेश होने के इलावे उनके रंग बदला भी करते थे.

सब बातों का खयाल करते हुए कहना पड़ेगा कि ऐसा खूबसूरत फौवारा अभी तक कभी प्रभाकरसिंह के देखने में न आया था.

कुछ देर तक फौवारे को देखने के बाद प्रभाकरसिंह की निगाहें घूमी और एक - दूसरी चीज पर जा रुकी.

यह एक संगमर्मर की क़द्देआदम मूर्ति थी. जो कमरे के एक कोने में दो - तीन हाथ ऊँचे गोलाम्बर पर बैठाई हुई थी.

मूर्ति का भाव यह था कि एक सुन्दर और हाथ - पाँव से सुदृड़ स्त्री ने, जिसके हाथ में धनुष - बाण और पीठ पर तरकश था, अभी - अभी तीर से एक हंस को मार कर गिराया है और वह उसके पैरों के पास गिर कर आखिरी छटपटाहट में पड़ा है.

इस मूर्ति की शिल्पकला को देखते और सराहते हुए प्रभाकरसिंह उधर से भी घूमे और दूसरे कोने की तरफ देखने लगे.

वहाँ भी एक ताज्जुब की चीज नजर आई.

एक बनावटी पहाड़ का दृश्य काले और सफेद पत्थरों की मदद से ऐसा सुन्दर बना हुआ था कि देखने में सचमुच एक पहाड़ का धोखा होता था.

विशेषता यह थी इस पहाड़ की एक गुफा के अन्दर से निकलता हुआ एक छोटा तालाब दिखाया गया था जिसमें पानी बराबर बह रहा था.

नाले के एक किनारे पर एक सारस खड़ा था जो कभी - कभी अपनी चोंच पानी में डालता और फिर निकाल लेता था गौर से देखने पर मालूम हुआ कि पानी के साथ -

साथ खूबसूरत रंगबिरंगी मछलियाँ बह कर आ रही हैं जिनमें से कभी - कभी किसी एक को वह सारस अपनी चोंच से पकड़ता और उदरस्थ कर जाता है.

सारस का पानी में चोंच डाल कर मछली पकड़ना, चोंच को ऊँची कर उसमें पकड़ी और छटपटाती हुई मछली को सीधा करके गले में डालना, गले के अन्दर उतरती हुई उस मछली के कारण गले का थोड़ा फूलना, और मछली के पेट तक पहुँच जाने पर फिर सारस का पानी पर निगाह डालना इत्यादि ऐसा स्वाभाविक हो रहा था कि यह शक होना भी मुश्किल था कि यह सचमुच का दृश्य नहीं बल्कि एक तिलिस्मी खिड़वाड़ है.

कुछ देर यह तमाशा देखने के बाद प्रभाकरसिंह ने कमरे के तीसरे कोने पर निगाह की और यहाँ उन दोनों से बढ़कर ताज्जुब की चीज प्रभाकरसिंह को दिखी जिसने उन्हें थोडी देर के लिए घबड़ा दिया, पर जब उन्हें ख्याल आया कि यह सब तिलिस्मी तमाशा है तो उनकी तबीयत कुछ ठिकाने आई और वे कौतूहल के साथ उसे देखने लगे.

वह चीज एक जलती हुई चिता थी जिसमें मानो अभी - अभी आग लगाई गई थी, एक अधेड़ आदमी उस पर लेटाया हुआ था.

एक नौजवान जो शायद उसका बेटा होगा, झुककर एक हाथ से अपनी आँखें पोंछता हुआ दूसरे हाथ से चिता का अग्नि संस्कार कर रहा था जिसमें से कुछ - कुछ धूआँ सा भी निकल रहा था.

दूसरी तरफ एक औरत पछाड़ खा कर धरती पर गिरी हुई थी और दो - तीन व्यक्ति उसे सम्हालने में लगे हुए थे, पीछे की तरफ कई औरत - मर्दो का एक झुंड खड़ा अफसोस की निगाहों से चिता की तरफ देख रहा था यह पूरा दृश्य ऐसा स्वाभाविक और सच्चा - सच्चा बना हुआ था कि पहिली निगाह में प्रभाकरसिंह को ख्याल आया कि शायद वे सचमुच ही किसी का अन्तिम संस्कार देख रहे हैं, मगर नहीं यह भी सिर्फ एक तमाशा ही था.

इधर से भी घूमती हुई प्रभाकरसिंह की निगाह चौथे कोने की तरफ गई, यहाँ एक छोटा - सा चबूतरा बना हुआ उन्हें दिखाई पड़ा जिसके ऊपर एक बनावटी पेड़ था जो सात - आठ हाथ से ज्यादे ऊंचा न था और जिसकी एक डाली पर एक बड़ा सा हंस बैठा था.

पेड़ के पीछे एक दरवाजा था मगर उसके सामने पर्दा पड़े रहने के कारण यह पता नहीं लगता था कि दूसरी तरफ क्या है, मगर यह पेड़ और हंस भी कारीगरी से खाली न था.

थोड़ी - थोड़ी देर बाद इस पेड़ की डालियाँ और पत्ते इस तरह हिलते थे मानो मन्द हवा के झोंके उन्हें लग रहे हों और कभी - कभी वह हंस अपने बदन को झटकारता और टखनों के नीचे चोंच से इस तरह खुजलाता मानों सचमुच ही कोई चिड़िया पानी से निकल कर बाहर धूप में अपने को सुखा रही हो.

बहुत देर तक प्रभाकरसिंह अपने चारों तरफ निगाहें दौड़ाते और इन चीजों की विचित्र कारीगरी को देखते रहे.

जिधर निगाह जाती थी उधर ही होशियार कारीगर की अद्भुत रचना - कुशलता उन्हें मोह लेती थी.

आखिर उनके मुंह से निकल ही गया, " धन्य हैं वे लोग जिन्होंने ऐसी चीजें बनाई, कारीगरी की हद्द हो गई.

इससे बढ़कर और कुछ हो ही क्या सकता! भला कोई कह सकता है कि इन बनावटी चीजों तथा जानवरों में और भगवान की सृष्टि की असली चीजों में कुछ भी अन्तर है! पर खैर अब मुझे अपना काम शुरू करना चाहिए.

!!

अपने शेर पर बैठे ही प्रभाकरसिंह ने तिलिस्मी किताब निकाली और एक जगह से खोलकर खूब गौर से पढ़ने लगे.

यह लिखा हुआ था:

-- " इस जगह तुम्हें बहुत होशियारी से काम करना होगा, जरा भी धोखा खाओगे या कुछ भी चूकोगे तो इसका नतीजा बहुत खराब होगा.

' तुम्हारे बाई तरफ एक औरत की मूरत बनी हुई है जो हाथ में तीर - कमान लिए हुए है, उसके हाथ से तीर - कमान ले लो और उस सारस के पास जाओ जो नाले के किनारे बैठा मछलियाँ खा रहा है, जिस समय वह हरे रंग की मछली खाने के लिए उठावे उसी समय उस मछली को अपने तीर का निशाना बनाओ, सारस से बारह कदम पर खड़े

होकर ऐसा तीर चलाओ कि वह मछली सारस के मुंह से निकल जाय, तब उसे उठाकर उस फौबारे की ही लपटों में डाल दो.

वह फट जायगी और उसके अन्दर एक अद्भुत चीज मिलेगी जिसे लिए तुम उसी चिता में कूद पड़ो, मगर खबरदार निशाना बेकार न जाना चाहिए क्योंकि तीर एक ही है, पहिली ही बार में सफल न होने से फिर कुछ काम न हो सकेगा.

यहाँ पर जो कुछ उन्हें करना था उसे जब प्रभाकरसिंह अच्छी तरह समझ चुके तो उन्होंने किताब बन्द कर जेब के हवाले की और शेर पर से उतर पड़े.

शेर उनके उतरते ही उस छोटे नाले के किनारे गया और उसके पानी से अपनी प्यास बुझाने के बाद एक दरवाजे के सामने जाकर जमीन पर बैठ गया और इधर प्रभाकरसिंह उस पत्थर की मूर्ति के सामने पहुंचे जो हाथ में तीर - कमान लिए बनाई गई थी.

हम लिख चुके हैं कि यह मूर्ति दो - तीन हाथ ऊँचे एक गोलाम्बर पर खड़ी थी, इस गोलम्बर पर चढ़ने के लिए छोटी - छोटी कई सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, प्रभाकरसिंह सीढ़ियों की राह उस गोलाम्बर पर चढ़ गए और उस मूर्ति के हाथ से वह तीर कमान ले लेना चाहा, मगर अभी उनके हाथ उस मूर्ति के पास तक पहुँचे न होंगे कि गोलाम्बर का वह पत्थर जिस पर प्रभाकरसिंह खड़े थे एक तरफ से इतनी जोर से उठ गया कि प्रभाकरसिंह किसी तरह सम्हल न सके और पछाड़ खाकर गोलाम्बर के नीचे आ गिरे.

उनका गिरना था कि यकायक किसी तरफ से एक जनाने गले के खिलखिला कर हँसने की आवाज उस कमरे में गूंज उठी.

फुर्ती के साथ प्रभाकरसिंह पुनः उठ खड़े हुए और यह जानने के लिए चारों तरफ देखने लगे कि वह हँसने वाला कौन था, मगर कहीं कोई दिखाई न पड़ा आखिर कुछ सोचते हुए गोलाम्बर के पास जाकर खड़े हो गए और सोचने लगे, " तिलिस्मी किताब लिखती है कि इस पुतली के हाथ से तीर - कमान लेकर उस सारस के पास जाना और हरी मछली का शिकार करना होगा, मगर उस पुतली के हाथ से तीर - कमान लेना मुश्किल जान पड़ता है.

आगे न जाने क्या तरदुद आवेंगे! " कुछ सोच - विचार कर प्रभाकरसिंह पुनः गोलाम्बर पर चढ़े पर इस बार सामने की तरफ से न जाकर वे मूर्ति के पीछे की तरफ से गए और

वहाँ से तीर - कमान लेने का उद्योग करने लगे.

मगर इस बार का उद्योग भी वृथा गया.

कमान तक हाथ पहुँचने के पहिले ही उस तरफ का पत्थर भी जिसपर प्रभाकरसिंह खड़े थे पहिले वाले की तरह यकायक एक अगल से उठ गया, यद्यपि इस बार होशियार रहने के कारण वे गिरे नहीं वरन फुर्ती के साथ कूद कर गोलाम्बर के नीचे आ रहे पर फिर भी उनका उद्योग असफल ही रहा उनके नीचे आते ही पुनः उसी प्रकार किसी औरत के हँसने की आवाज गूंज उठी.

अब की बार प्रभाकरसिंह से रहा न गया और वे बोल पड़े, " यह कौन हँसा?

" उनके सामने की तीर - कमान वाली मूर्ति के होंठ हिले और उसके गले से आवाज निकली- मैं! " प्रभाकरसिंह के ताज्जुब की हद्द न रही! क्या यह निर्जीव पत्थर की मूर्ति भी बात कर सकती है! वे फिर बोले, " तुम हँसी किस बात पर?

" मूर्ति बोली, " तुम्हारी गलती पर! एक बार धोखा खाकर फिर वही काम करते हो?

" प्रभाकरसिंह ने पूछा, " मैंने क्या गलती की?

" मूर्ति बोली, " सोचो और गौर करो! "

प्रभाकरसिंह ने पूछा, “ तुम्हारे हाथ से तीर - कमान लेने की क्या तर्कीब हो सकती हैं?

" पर इसका कोई जवाब उस मूर्ति ने न दिया.

प्रभाकरसिंह ने और भी कई बातें पूछी मगर उस मूर्ति ने फिर किसी बात का उत्तर न दिया.

आखिर उसके कथनानुसार प्रभाकरसिंह सोचने और गौर करने लगे.

थोड़ी देर बाद ख्याल हुआ कि वह गोलाम्बर तो सुफेद पत्थर का बना हुआ है मगर उसकी सीढ़ी और वे पत्थर जिन्होंने उठकर उन्हें नीचे गिरा दिया था काले रंग के हैं.

यह देखते ही वे समझ गये की वे काले पत्थर ही सब आफत की जड़ हैं.

तुरन्त ही उन्हें अपनी गलती भी मालूम हो गई और वे पुनः उस गोलाम्बर पर चढ़ गए पर इस बार सीढ़ी के रास्ते नहीं बल्कि उचक कर जा चढ़े, गोलाम्बर पर कई जगह काले

पत्थर जड़े हुए थे जिन्हें बचाते हुए प्रभाकरसिंह मूर्ति के पास जा पहुंचे और उसके हाथ से तीर - कमान ले लिया, इस बार उन्हें कुछ भी तकलीफ उठानी न पड़ी और वे सहज ही में तीर - कमान लिए नीचे लौट आए.

अपनी सफलता पर प्रसन्न होते हुए प्रभाकरसिंह अब दूसरे कोने पर बने उस बनावटी पहाड़ के पास पहुंचे जहाँ नाले के किनारे खड़ा सारस मछलियों को खा रहा था.

प्रभाकरसिंह उस सारस के पास गए और वहाँ से गिन कर बारह क़दम के फासले पर हट गये यहाँ खड़े होकर वे एकटक उस सारस को देखने लगे.

थोड़ी देर बाद सारस ने अपनी गरदन पानी में डुबोई और एक मछली उठाई प्रभाकरसिंह ने तीर - कमान सम्हाला पर जो मछली वह सारस लिए था वह लाल रंग की थी और उन्हें हरे रंग की मछली को तीर का निशाना बनाना था.

यह देख वे रुक गए और इस बात की राह देखने लगे कि उस सारस की चोंच में हरी मछली कब दिखाई पड़ती है.

आखिर दस - बारह दफे के बाद उस सारस ने एक ही मछली उठाई मगर यह इतनी छोटी थी कि इसे खा जाने में उसे कुछ भी बिलम्ब न लगा.

अभी प्रभाकरसिंह अपनी कमान पर तीर खींच ही रहे थे कि मछली सारस के पेट मे उतर गई.

लाचार ये पुनः राह देखने लगे मगर इस बार उन्होंने तीर कमान पर से हटाया नहीं.

आखिर उन्हें फिर मौका मिला और लगभग घड़ी भर के बाद पुनः उस सारस की चोंच में एक हरी मछली पर नजर पड़ी.

यद्यपि मछली कुछ ही सायत के लिए दिखाई पड़ी थी मगर प्रभाकरसिंह की तेज निगाहों और मंजे हुए हाथों ने उसका निशाना लगा ही लिया.

उनकी कमान से छूटा हुआ तीर सनसनाता हुआ सारस की कुछ - कुछ खुली दोनों चोंचों के बीच में घुस कर मछली को लगा और वह छटक कर चोंच से बाहर निकल कुछ दूर जा गिरी.

खुशी - खुशी प्रभाकरसिंह ने आगे बढ़ कर मछली उठा ली और उस फभारे के पास पहुँचे जो कमरे के बीचोबीच अपनी रंग - बिरंगी लपटों से विचित्र बहार दे रहा था.

प्रभाकरसिंह इस फबारे के पास खड़े होकर राह देखने लगे कि कहीं हरी लपट दिखाई दे तो इस मछली को उसमें डालें.

हरी लपटें तो बेशक बहुत जगह दिखाई पड़ती थीं पर कभी यहाँ, कभी वहाँ, कभी ऊपर, कभी नीचे और सो भी केवल कुछ ही क्षणों के लिए नजर आती थीं.

पर आखिर किसी तरह प्रभाकरसिंह ने यह काम भी पूरा कीया.

हरी लपटों का उस मछली में लगना था कि वह आतिशबाजी की तरह उनके हाथ में एक तेज आवाज के साथ फट पड़ी और उसके अन्दर से कोई चमकती हुई चीज निकल कर नीचे जमीन पर गिर पड़ी प्रभाकरसिंह ने उठाकर देखा, यह एक ही हीरे को काट कर बनाया हुआ एक छोटा मगर विचित्र तावीज था जिसके साथ ही एक छोटे कागज पर बहुत ही बारीक अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था.

बहुत कोशिश करने के बाद प्रभाकरसिंह उस मजमून को पड़ सके.

यह लिखा हुआ था:

' यह उस तिलिस्म की ताली है जो कुछ समय के बाद तुम्हारे या तुम्हारे लड़कों के हाथ से दूढेगा.

जब तक वक्त न आवे इसे हिफाजत के साथ अपने गले से ह्रदम लटकाये रहा करो.

जिसके पास यह चीज रहेगी वह कभी किसी तरह की तिलिस्मी मुसीबत में नहीं पड़ेगा.

इस तिलिस्म के अन्दर के सब ताले और दरवाजे इसके छुलाते ही खुल जाएँगे.

इसको पहिनने वाला अगर आग में कूद पड़ेगा तो आग उसका कुछ बिगाड़ न सकेगी और पानी में वह कभी डूबेगा नहीं.

भूख और प्यास को एक हफ्ते तक रोक रखने की सामर्थ्य भी उसे हो जायगी! " यह मजमून पड़ते ही प्रभाकरसिंह की खुशी का ठिकाना न रह गया.

उन्होंने उसे पुनः दुबारा पड़ा और तब ऐसी चीज पाने के लिए परमात्मा को धन्यवाद दिया.

अब वे गौर से उलट - पलट कर उसे देखने लगे.

मालूम हुआ कि यह हीरे का एक ही टुकड़ा है जिसे कारीगर ने तराश कर लगभग तीन अंगुल चौड़ी पाँच अंगुल लम्बी और एक अंगुल मोटी तख्ती का रूप दे दिया है.

इसके एक तरफ कुछ मजमून खुदा हुआ था और दूसरी तरफ बहुत ही पतली लकीरें बनी थीं जिनका कुछ मतलब तो समझ में न आता था मगर यह मालूम होता था कि यह शायद किसी तरह का नकशा है.

यन्त्र की मुटाई देखने से प्रभाकरसिंह को एक बारीक लकीर चारों तरफ घूमी हुई दिखाई पड़ी जिससे यह सन्देह हो सकता था कि शायद यन्त्र बीच में खुल जाता हो पर कोशिश करने पर भी वह खुला नहीं.

इससे उन्होंने इसका विचार छोड़ दिया.

यन्त्र के दोनों बगल दो कड़े बने हुए थे जिनके साथ एक बहुत ही बारीक सोने की जंजीर लगी हुई थी जिसके सहारे वह यन्त्र गले में लटकाया जा सकता था.

प्रभाकरसिंह ने उसे गले में पहिन लिया और तब आगे का काम करने के लिए तैयार हो गए.

तिलिस्मी किताब ने यहाँ तक का काम कर चुकने के बाद उन्हें उस चिता में कूद पड़ने की आज्ञा दी थी जो उसे कमरे के तीसरे कोने में कुछ कुछ जलती हुई अपनी अद्भुत कारीगरी का नमूना दिखा रही थी.

प्रभाकरसिंह उस चिता के पास पहुंचे और एक बार गौर से चारों तरफ देख - भाल करने के बाद उछल कर उसके ऊपर जा चढ़े.

उनका उस पर चढ़ना था कि उधर तो उसकी आग एकदम लहरा के बल उठी और इधर उस चिता के पास खड़े, बैठे या काम करते हुए सब आदमी अपना काम छोड़ " हाँ! हाँ! "

करते हुए उनकी तरफ झपटे और विचित्र भावभंगी के साथ कोई क्रोध, कोई आश्चर्य और कोई खेद प्रकट करते हुए उन्हें चिता पर से उतर आने के लिए कहने लगे, बल्कि दो - एक ने तो उनका हाथ पकड़ लिया और जबर्दस्ती उन्हें चिता से खींच कर अलग करना चाहा परन्तु प्रभाकरसिंह ने हाथ झटका कर अपने को छुड़ा लिया और इसी बीच में आग की लपट बहुत तेज हो जाने के कारण वे लोग लाचार हो चिता से दूर हो गए.

आश्चर्य की बात थी कि यद्यपि वह चिता अब धू - धू करके जल रही थी और उसकी गर्मी से क़मरा गर्म होता जा रहा था फिर भी प्रभाकरसिंह को उसकी आँच किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुंचा रही थी.

वे आश्चर्य के साथ चिता के बीचोबीच में बैठे हुए सोच रहे थे कि इसका कारण या तो बस ताबीज है जो अभी - अभी उन्होंने गले में पहिना है और या यह आँच किसी अद्भुत तरह की है जो मनुष्य - शरीर को नुकसान पहुंचाने की कुदरत नहीं रखती.

इसी समय उनकी निगाह उस आदमी के ऊपर जा पड़ी जो उस चिता के ऊपर लिटाया हुआ था और जिसकी गरदन तक तो ऊपर की तरफ भी लकड़ियाँ सजाई हुई थीं मगर चेहरा और सिर खुला तथा पीछे की तरफ कुछ लटका हुआ था.

प्रभाकरसिंह ने देखा कि ज्यों - त्यों उस सिर में आग की लपटें लगती हैं उसकी रंगत बदलती जाती है.

झुर्रियाँ और बुढ़ापे के अन्य चिन्ह हटकर उसके बदले रंगत में सुर्खी आ रही है और चेहरा नौजवानों का - सा बनता जा रहा है.

सिर्फ यही नहीं, थोड़ी देर बाद उसकी पलकें हिलने लगी, थोड़ी देर और बीतने पर होंठ काँपने लगे.

और कुछ देर और बीत जाने बाद गर्दन भी हिलने लगी.

यहाँ तक कि कुछ ही देर में उस मुर्दे ने आँखें खोल दी और मुँह से लम्बी साँस फेंक कर इधर - उधर देखा.

उसकी निगाह प्रभाकरसिंह पर पड़ी देखते ही वह मुस्कुराया और बोला, " प्रभाकरसिंह, तुम आ गए! आज सैकड़ों वर्षों से मैं तुम्हारी ही राह देखता हुआ यहाँ पड़ा था.

" प्रभाकरसिंह ताज्जुब से बोले, " तुम कौन हो और किसलिए मेरी राह देख रहे थे?

" उस आदमी ने जवाब दिया, " मैं इस तिलिस्म का पहरेदार हूँ,

!! प्रभाकरसिंह ने हँसकर कहा, " तुम तो खुद ही मरे हुए पड़े थे, पहरेदारी क्या खाक करते होंगे, यह सुन वह बोला, “ अनाड़ी लोग मुझे सोया हुआ या मुर्दा समझते हैं, जब से यह तिलिस्म बाँधा गया है तभी से मैं यहाँ की पहरेदारी कर रहा हूँ और तब से आज तक बराबर ही मैं जीता - जागता और अपने होश - हवास में था और तब तक बना रहूँगा जब तक कि इस तिलिस्म की उम्र तमाम न हो जायगी.

" प्रभाकरसिंह को इसकी बातें कुछ ऐसी विचित्र मालूम हुई कि वे किस अवस्था में हैं या किस काम के लिए कहाँ बैठे हैं यह भूल गए और उस आदमी से बातें करने लगे प्रभाकर ०:

और इस तिलिस्म की उम्र तमाम हो जायगी तब तुम्हारी क्या दशा होगी?

आदमी ०:

तब मेरा भी काम समाप्त हो जायगा और मैं अपने बनाने वाले के पास चला जाऊंगा.

प्रभाकर:

तुम्हें बनाने वाला कौन?

आदमी:

वहीं महात्मा जिन्होंने यह तिलिस्म बनबाया.

अगर अभी तक तुम्हें उनका नाम नहीं मालूम हुआ है तो शीघ्र ही मालूम हो जायगा.

प्रभाकर:

तो तुम्हें इस तिलिस्म के टूटने से दुःख होगा?

आदमी:

नहीं, बल्कि प्रसन्नता होगी क्योंकि मैं कैद से छुटकर स्वतन्त्र हो जाऊँगा.

प्रभाकर:

अब इसकी उम्र समाप्त होने में कितना समय बाकी है?

आदमी:

सो मुझे बताने का अधिकार नहीं है.

हाँ अगर तुम बराबर ही होशियारी और हिम्मत से काम करते गए तो ज्यादा दिन नहीं, लेकिन तुमने कोई गलती की या धोखा खाया तो फिर न जाने कितनी सदियाँ मुझे यहीं पड़ा देखेंगी.

प्रभाकरसिंह और इस आदमी में बातें होती जा रही थीं और इधर उस चिता की अग्नि तेज होती हुई अब यहाँ तक बढ़ गई थी कि कमरे की शीशे वाली छत तक आग की लपटें पहुँच रही थी.

परन्तु ताज्जुब की बात थी कि प्रभाकरसिंह को उस गर्मी से कोई विशेष तकलीफ मालूम नहीं पड़ रही थी, यद्यपि पहिले की अपेक्षा कुछ अधिक गर्मी उन्हें जरूर लग रही थी पर वह ऐसी नहीं थी कि जो बहुत ज्यादा तकलीफ देने वाली कही जा सके.

वे लकड़ियों के बनावटी कुंदे जिनसे वह चिता बनी हुई थी और जो लकड़ियों की तरह नहीं बल्कि कपूर या राल की तरह जल रहे थे गलते हुए धीरे - धीरे छोटे होते जा रहे थे.

इस समय वह आदमी जो अभी तक पड़ा ही पड़ा प्रभाकरसिंह से बातें कर रहा था हिलजुल कर उठ बैठा और उनसे बोला, " लो अब होशियार हो जाओ.

" प्रभाकर सिंह ने ताज्जुब से पूछा, “ क्यों, क्यां मामला है?

" मगर इसका कुछ जवाब पाने के पहिले ही चिता के अंदर से गड़गड़ाहट की आबाज आने लगी जो क्षण भर में यहाँ तक बड़ी कि प्रभाकरसिंह को दोनों हाथों से अपने कान बन्द कर लेने पड़े.

यकायक आग का एक शोला चिता में से निकला और दूसरी ही सायत में वह चिता इस तरह फट पड़ी मानों उसके अन्दर कोई बम का गोला फूटा हो.

उसके जबर्दस्त झटके ने प्रभाकरसिंह को गेंद की तरह उछालकर दूर फेंक दिया और जब उनके हवास ठिकाने हुए हुए तो उन्होंने अपने को उस चौथे कोने में बने हुए चबूतरे पर पड़े पाया, चिता की तरफ निगाह की तो देखा कि उसकी लकड़ियाँ चारों तरफ

छितराई हुई हैं और उस जगह एक गहरा गढ़ा दिखाई पड़ रहा है जिसके अन्दर से कुछ आवाज आ रही है, उन आदमियों का कहीं पता न था जो उसके चारों तरफ खड़े थे या जिससे की प्रभाकरसिंह की बातचीत हुई थी.

आगे की कार्रवाई जानने के लिए प्रभाकरसिंह ने तिलिस्मी किताब खोली और पड़ने लगे " अगर आँच से तुम डरे या घबराए नहीं तो वह चिता तुम्हें उस चबूतरे तक पहुँचा देगी जिस पर एक पेड़ की डाल पर एक हंस बैठा हुआ है, इस हंस को पेड़ से उतार लो और पर्दा हटाकर पीछे बने दरवाजे में फेंक दो, इसके बाद फुर्ती से उस गड़े मे उतर जाओ जो चिता की जगह दिखाई पड़ रहा होगा.

अगर यह सब काम तुम फुर्ती से कर सके तो बस यहाँ की तिलिस्मी कार्रवाई खतम हो जायगी और इस तिलिस्म का वह हिस्सा मिलेगा जिसके बारे में पहिले तुम पड़ चुके हो.

" प्रभाकरसिंह ने यहाँ तक पड़ किताब जेब के हवाले की और उसमें लिखे मुताबिक काम करने को तैयार हो गए, उन्होंने इसे महज मामूली काम समझा हुआ था पर जब काम को हाथ लगाया तो उसकी मुश्किले जान पड़ी.

हंस के पास जा कर उसको पकड़ने के लिए ज्यों ही उन्होंने हाथ बढ़ाया वैसे ही उसने क्रोध से इनके हाथ पर अपनी सख्त चोंच से एक कड़ी ठोकर मारी और तब उचककर एक दूसरी डाल पर हो गया.

जब प्रभाकरसिंह वहाँ पहुँचकर उसे पकड़ने का उद्योग करने लगे तो उसने पुनः वैसा ही कीया , यहाँ तक कि दस ही पाँच मिनट की कोशिश के बाद प्रभाकरसिंह का हाथ लहू - लोहान हो गया और वे उस बनावटी हंस के पास जाते हिचकने लगे.

आखिर यहाँ तक नौबत आ गई कि वे एक बगल में चुपचाप जा खड़े हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना और किस तरह हंस को काबू में लाना चाहिए.

उनको इस तरह खड़ा देख यकायक उस पुतली के गले से जिसके हाथ से प्रभाकरसिंह ने तीरकमान लिया था और जो पहिले भी एक बार उन पर हंस चुकी थी फिर हँसी की आवाज निकल पड़ी.

यह जानकर कि वह उनकी असफलता पर हँसी है प्रभाकरसिंह कुड़ गए एक निर्जीव पुतली का जो तिलिस्मी कारीगरी की बदोलत हँसती - बोलती या काम करती हो, वे कर

ही क्या सकते थे, अस्तु उन्होंने उसकी हँसी पर कुछ ख्याल न किया और गौर करके सोचने लगे कि उस हंस को क्योंकर काबू में करना चाहिए, आखिर उन्हें एक तरकीब सूझ ही गई.

अपना क़मरबन्द खोलकर उन्होंने अपने हाथों पर अच्छी तरह से लपेटा और तब फुर्ती से हंस के पास जाकर दोनों हाथों से उसकी वह खतरनाक चोंच खूब मजबूती से था म ली.

चोंच के पकड़ते ही उसने बड़े जोर - जोर से अपने पंख फड़फड़ाए और पंजे मारने शुरू किए, मगर प्रभाकरसिंह ने इसकी कुछ भी परवाह न की और जोर लगाकर उसे पेड़ पर से उतार लिया, मजबूती से पकडे हुए वे उस दरवाजे के पास आए और पैर से पर्दा हटाने के बाद जोर से उसे अन्दर की तरफ फेंक दिया.

उसके फेंकने के साथ ही उस दरवाजे के अन्दर से एक ऐसी भयानक आवाज आई मानों पचासों शेर एक साथ दहाड़ पड़े हो.

वह समूचा क़मरा कॉप उठा वह चबूतरा जिस पर प्रभाकरसिंह खड़े थे जोर - जोर से हिलने लगा और वह पेड़ भी जोर से कॉपकर यकायक गिर पड़ा, प्रभाकरसिंह अगर होशियार न होते तो पेड़ के नीचे दबकर कुछ - न - कुछ नुकसान अवश्य उठाते पर वे बाल - बाल बच गए.

उन्होंने अपनी चीजें सम्हाली और कूदकर चबूतरे के नीचे आ गए, इसके बाद दौड़ते हुए वे उस गड़े की तरफ बड़े जो चिता की जगह पर बन गया था.

अभी वे उससे दो - कदम दूर ही होंगे कि जोर से एक बार भभककर वह आग का फौबारा जोर की आवाज के साथ फट गया और उसके टुकड़े कमरे में चारों तरफ फैल गए, कई टुकड़े ऊपर उड़कर कमरे की छत के साथ लगे जिससे छत में से बड़े बड़े शीशे के टुकड़े टूट - टूट कर गिरने लगे.

कमरे की दीवारें भी हिलने और कॉपने लगी और थोड़ी देर के बाद इस तरह भीतर की तरफ डुलक पड़ी मानो ताश का बना मकान ढह पड़ा हो.

परन्तु प्रभाकरसिंह को यह सब देखने की फुरसत ही कहाँ थीं?

वे तो दौड़ते हुए उस गड़े के पास गए और बिना कुछ सोचे - विचारे उसके अन्दर कूद पड़े गड़हा क्या वह तो एक खासा गहरा कुआं था जिसकी तह दिखाई नहीं पड़ती थी.

इस कुएँ में एक तरह का धुआँ भरा हुआ था जिसके प्रभाकरसिंह की नाक में जाते ही उनका सिर चकर खाने लगा और दम - के - दम में उन्हें तनोबदन की सुध न रह गई.

जब प्रभाकरसिंह होश में आए उस समय दिन काफी चढ़ चुका था, वे एक छोटे दालान में संगमर्मर के फर्श पर पड़े हुए थे और उनके सामने एक लम्बा चौड़ा सहन था जिसके बीचोबीच में लाल पत्थर की बनी हुई कोई मूरत खड़ी थी.

बहुत देर तक प्रभाकरसिंह गौर करते रहे कि वे कहाँ पर हैं या किस तरह वहाँ पहुँचे हैं मगर उनकी समझ में कुछ भी न आया.

तमाम बदन में मीठा - मीठा दर्द हो रहा था जिसका कारण उनकी समझ में नहीं आता था, सिर में भी हलके - हलके चक्कर आ रहे थे, और तबीयत परेशान मालूम होती थी.

उन्होंने सोच विचारकर यही निश्चय किया कि उस कुएँ के अन्दर जो जहरीली हवा उनके नाक में गई थी उसी का यह असर है और बाहर निकलकर थोड़ा घूमने - फिरने से यह दूर हो जायगा.

यह सोचते ही उन्होंने अपनी चीजें सम्हाली और सब कुछ दुरुस्त पाकर उठ खड़े हुए,

धीरे - धीरे चलते हुए प्रभाकरसिंह जब उस सहन के बीचोबीच में पहुंचे तो उस लाल मूरत ने उनका ध्यान आकर्षित किया जो किसी आदमी की आकृति की न थी बल्कि एक भयानक पिशाच की सूरत की बनी हुई थी जिसके खूंखार दाँत, डरावनी आँखें, भयानक चेहरा और शेर के पंजो की तरह भयानक नाखून देख कर डर मालूम होता था.

यह मूरत थी भी इतनी बड़ी कि उसकी खुली दाड़ों के बीच में आदमी का सिर बखूबी जा सकता था.

यह प्रभाकरसिंह की आँखों का दोष था या सचमुच उस विकराल मूरत ने उन्हें देखकर अपने होंठ फड़फड़ाए और जुबान से उन्हें इस तरह चाटा मानों कोई खूखार शेर अपना शिकार सामने देख रहा हो, मगर यह काम इतनी फुर्ती से हो गया कि प्रभाकरसिंह कुछ निश्चय न कर सके.

पहिले तो उन्होंने इसे अपने बिगड़े हुए दिमाग की उपज समझा मगर जब थोड़ी देर तक एक टक देखने पर उस मूरत ने फिर वैसा ही किया तो उनका कौतुहल बड़ा और वे कुछ और पास आकर गौर से देखने लगे.

सफेद और काले संगमर्मर के तीन - चार हाथ ऊँचे चबूतरे पर जिसमें बीच - बीच में लाल पच्चीकारी का काम किया हुआ था, लाल पत्थर की वह भयंकर आकृति मूरत बैठाई हुई थी, जिसकी ऊँचाई इतनी थी कि उन कई पतली और चौड़ी सीढ़ियों पर चढ़ जाने पर भी जो उस खंभे के चारों तरफ बनी हुई थीं, वह मूरत आदमी के सिर से ऊंची ही रहती थी.

मूरत का नीचे का धड़ तो आदमी - सा था, परंतु चेहरा इत्यादि किसी महाभयानक राक्षस या शेर का - सा था.

पालथी मारे वह पिशाच उस खंभे पर बैठा था.

उसके हाथों के नाखून बहुत लम्बे थे और शेर के पंजों की याद दिलाने वाले थे, दोनों बाँहो से लिपटे हुए दो साँप बने हुए थे जो फन काड़े हुए मूर्ति के दाएँ और बाएँ इस तरह खड़े थे मानों पास जाते ही डस लेंगे.

मूर्ति के सर पर एक लाल पत्थर ही का चाँद बना था जिस पर सिन्दूर से रंगा एक त्रिशूल लगा हुआ था.

मूर्ति जिस खंभे पर बैठी हुई थी उसके सामने वाले हिस्से में एक छोटा ताख (आला) था जिसके बीचोबीच में मनुष्य के सिर का हड्डी का एक ढाँचा रक्खा हुआ था.

कुछ देर तक वहीं खड़े प्रभाकरसिंह गौर से इस मूरत की बनावट को देखते रहे.

उनके देखते - देखते कई बार उस मूरत ने अपना भयानक मुंह खोला और लाल लम्बी जीभ से अपने होंठ चाटे,

दो या तीन दफे उन साँपों ने भी सिर घुमाकर इनकी तरफ और इस तरह फुकार छोड़ी मानों वे उन्हें सामने खड़े देख क्रोध में आ गए हों.

खूब गौर से देखने पर प्रभाकरसिंह को उस खंभे के ऊपरी हिस्से पर कुछ अक्षर खुदे हुए दिखाई पड़े जिन्हें पढ़ने के लिए उन्होंने एक कदम आगे रखा और एक सीढ़ी चढ़ कर

उसे पड़ा ही चाहते थे कि यकायक किसी तरह की आहट ने उन्हें चौंका दिया.

सिर घुमाकर निगाह उठाई तो उनके बाएँ तरफ के ऊँचे बुर्ज पर उन्हें कोई औरत खड़ी दिखाई दी.

जरा गौर करते ही मालूम हो गया कि वह मालती है.

उनके मुँह से एक खुशी भरी आवाज निकल पड़ी, यकायक वह चीख में बदल गई जब उन्होंने देखा कि उस भयानक तर - पिशाच ने अपनी लम्बी बाँहें फैलाकर उन्हें पकड़ लिया है.

देखते ही देखते उन लोहे के शिकंजों की तरह मजबूत हाथों ने प्रभाकरसिंह को जमीन से उठाकर अपने पास खींच लिया, मूर्ति का खौफनाक जबड़ा खुला और उसने प्रभाकरसिंह का सिर अपने मुँह के अंदर रख लिया.

यही वह समय था कि मालती की निगाह प्रभाकरसिंह पर पड़ी और वह उन्हें इस खौफनाक हालत में पड़ा देखकर चीख उठी जैसा कि हम ऊपर लिख आए हैं

छठवां व्यान।

काशी की पवित्रता और शोभा को सह्स्त्र गुणा बढ़ाने वाली भगवती गंगा इस आधी रात के सन्नाटे में भी अपूर्व छवि दरशा रही है.

सारे शहर में सन्नाटा है.

सिवाय उन लोगों के जिनका काम ही रात के अंधियारे की ओट में होता है और कहीं कोई भी चलता - फिरता नजर नहीं आता.

परंतु गंगातट के घाटों पर फिर भी इक्के - दुके नहाने वाले कहीं - कहीं दिखाई पड़ ही रहे हैं और हर हर महादेव ' के शब्द के साथ उसके त्रिपाप - काशी प्रभाव में गोते लगाने वाले इस समय भी मौजूद ही हैं, तारों की साड़ी पहने हुए भगवती गंगा इस सुनसान समय में मधुर शब्द करने वाली लहों का तूपुर बजाती हुई मानो भगवान विश्वनाथ की सेवा में जाने को व्याकुल जान पड़ती हैं पर करें क्या?

जो मनुष्य, दूर - दूर से उनके दर्शन और स्पर्श से जन्म - जन्म का पाप धोने के लिए उनके तट पर आन बैठे हैं उन्हें बाण दिए बिना वे वहाँ से कैसे हटें, मानों यही सोच मन मसोसकर रह जाती हैं.

रात का समय होने पर भी न तो स्नानार्थियों का तांता दुटता है और न इधर भगवती को अवकाश मिलता है कि वे बाबा विश्वनाथ के मन्दिर में जाएँ और उनकी चरण सेवा कर अपने को कृतार्थ करें प्रसिद्ध मणिकर्णिका का दृश्य तो और भी विचित्र है.

एक तरफ तो अभी - अभी आया हुआ यात्रियों का दल स्नान की तैयारी कर रहा है.

दूसरी तरफ धू - धू करती हुई एक चिता जल रही है.

उससे थोड़ा ही हट एक मड़ी पर कुछ साधु खंजड़ी की आवाज पर भजन गा रहे हैं और दम पर दम गांजे की ऊँची उठने वाली लपटें उनकी विचित्र भाव - भंगी दिखला रही हैं ।

तथा चौथी तरफ कुछ यात्री भोजनादि से निवृत्त हो घाट के किनारे लगे तख्तों पर ही लेटने की तैयारी कर रहे हैं.

गरज कि आधी रात बीत चुकने पर भी गंगा माता को विश्राम नहीं है.

परंतु हम पाठकों को ऐसे वेवक्त इन सब मामूली चीजों को दिखाने नहीं लाए हैं.

हम तो इस समय किसी और ही मतलब से यहाँ आए हैं और एक विचित्र ही दृश्य देखने में आपको अपना साथी बनाया चाहते हैं.

इधर आइए.

वह देखिए, एक बहुत बड़ा बजरा अभी - अभी आकर यहाँ लगा है.

इधर हमारे साथ चुपचाप चले आइए और देखिए कि उसके अन्दर क्या है.

रात का समय यद्यपि ठीक - ठीक यह पता नहीं लगने देता कि बजरे के ऊपर किस तरह का सामान है या कितने आदमी सवार हैं पर उसके भीतर के हिस्से में बलने वाली रोशनी की मदद से वहाँ का कुछ हाल जाना जा सकता है, जो यद्यपि डरावना तो नहीं मगर चौंका देने वाला जरूर है, दस - बारह हाथ लम्बी और करीब छः या सात हाथ चौड़ी कोठरी जो बजरे के कद को देखते हुए बता रही है कि इसके बाद इस तरह की दो

- एक कोठरियाँ और भी होंगी, तरह - तरह के विचित्र सामानों से भरी हुई है, पीछे की दीवार से सटकर बिछी ऊँची गद्दी पर कोई लेटा हुआ है पर वह औरत है या मर्द हम कुछ कह नहीं सकते.

क्योंकि लाल रंग की एक हल्की ऊनी चादर से उसका तमाम बदन सिर से पैर तक ढंका हुआ है.

उसके बाई तरफ गद्दी के नीचे और उससे कुछ हटकर दो मजबूत चौकोर पिजड़े रखे हुए हैं जिनमें दो चीते के बच्चे पुआल के ऊपर बैठे हैं मगर इधर - उधर देखते हुए वे कभी - कभी हल्की आवाज से गुर्रा उठते हैं और गर्दन ऊँची कर हवा को इस तरह सूंघते हैं मानों उन्हें कोई परिचित गंध मालूम हो रही है, पिंजड़ों के पीछे बजरे की खिड़कियों से सटे हुए दो - तीन ऊंचे - ऊँचे संदूक रखे हुए हैं मगर ढक्कना बन्द रहने के सबब से यह नहीं जाना जा सकता कि उनके अन्दर क्या है?

गद्दी के दूसरी तरफ अर्थात पिंजड़ों के सामने की तरफ एक तलवार और ढाल रखी हुई है, तलवार खून से रंगी हुई है और डाल पर भी खून के छीटे पड़े हुए हैं, पर यह खून जम कर काला हो गया है और ऐसा जान पड़ता है मानों बहुत दिन का है, तलवार का कब्जा शीशे की एक बहुत बड़ी बोतल के ऊपर पड़ा हुआ है जिसका पेट हाथ भर से किसी तरह क़म न होगा.

इस बोतल के अन्दर भी कोई चीज रखी हुई मगर वह क्या है यह नहीं जान पड़ता, क्योंकि बोतल और गद्दी के नीचे की तरफ बलने वाली रोशनी के बीच में लाल पत्थर की बनी हुई और कोई हाथ - डेढ़ हाथ ऊँची एक मूर्ति रक्खी हुई है जिसकी आड़ में वह बोतल पड़ गई है.

बजरे के चारों तरफ की दीवारों के साथ तरह - तरह के हथियार, कपड़े और दूसरी चीजें टंगी हुई हैं ।

हम अभी इस बात को देख रहे थे कि इन सामानों का मालिक भी यहाँ कोई है या नहीं कि अचानक ऊपर की तरफ घाट की सीढ़ियाँ उतरते हुए दो आदमी दिखाई पड़े, पास आने पर मालूम हुआ कि इनमें से एक तो मर्द है और दूसरी औरत, औरत जो आगे - आगे आ रही है अपना समूचा बदन एक सफेद चादर से ढंके हुए है.

इस कारण उसकी उम्र या सूरत - शक्ल का अंदाजा लगाना कठिन है, मगर वह मर्द जो कुछ बातें करता हुआ औरत के पीछे - पीछे चला आ रहा है एक नौजवान आदमी मालूम पड़ता है जिसकी पोशाक यह भी बता रही है कि वह इस पेशे की जानकारी रखने वाला कोई ऐयार है क्योंकि उसकी कमर से एक बटुआ और कन्धे से कमंद लटक रही थी.

तेजी से घाट की सीढ़ियाँ उतरते हुए दोनों आदमी बजरे के पास पहुंच गए.

उस समय उस ऐयार ने “ गोपाल, गोपाल! " करके कई आवाजें दी जिसे सुनते ही एक दूसरा नौजवान लालटेन लिए हुए बजरे के बाहर आया, हाथ का सहारा दे इस आदमी ने उस औरत को बजरे पर चढ़ा लिया और उसके पीछे वह ऐयार भी चढ़ गया गोपाल ने अपने पास से एक ताली निकालकर बजरे के अंदर वाले कमरे में जाने का दरवाजा खोला और तब से ये तीनों आदमी अन्दर उसी कमरे में जा पहुँचे जिसके विचित्र सामान का हाल हमने ऊपर लिखा है.

दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया गया.

एक सरसरी निगाह उस औरत ने वहाँ पड़े सामानों की तरफ डाली और तब अपने साथी ऐयार से गद्दी पर पड़े आदमी की तरफ उँगली दिखाकर पूछा, " क्या यही व .

.

.

.

" ऐयार:

हाँ यही वह शख्स है.

मगर मुझे यह बताते सख्त अफसोस होता है कि उस लड़ाई में जो हम लोगों को इसे अपने कब्जे में करने के लिए लड़नी पड़ी इसने हमारे दुश्मनों का साथ दिया और कैद की सख्तियों के सबब कमजोर होते हुए भी हम लोगों पर इतना कड़ा हमला किया कि हम लोग ताज्जुब में आ गए तथा गिनती में उन लोगों से बहुत ज्यादे होने पर भी हमें

अपने बचाव की फिक्र करनी पड़ गई, जब लड़ाई खत्म हो गई तो देखा क्या कि यह बहुत जगह से जख्मी होकर जमीन पर पड़ा है और उसी सबब से .

.

.

!! औरत:

(घबराकर) हाँ, हाँ, उसी सबब .

.

.

क्या हुआ?

ऐयार:

(धीमी आवाज में) थोड़ी देर हुई कि इसने दम तोड़ दिया.

यह सुनते ही उस औरत ने एक चीख मारी और यह कहती हुई कि ' आह! कम्बख्त, तूने यह क्या खबर सुनाई! ' वह बेतहाशा उस आदमी की तरफ झपटी जो गद्दी पर पड़ा हुआ था.

अपनी चादर उतारकर फेंक दी और तब हमने देखा कि यह बहुत ही हसीन, नाजुक और खूबसूरत औरत है.

उसने वह चादर जो उस आदमी पर पड़ी हुई थी उतारकर अलग कर दी .

.

एक निगाह उसके पीले मगर खूबसूरत चेहरे पर डाली और तब बेतहाशा उसके बदन से चिपककर जार - जार रोने लगी.

दोनों आदमी लाचारी की - सी हालत में खड़े उस औरत की यह बदहवासी की हालत देख रहे थे.

आखिर कुछ देर के बाद उस ऐयार ने आगे बढ़ कर उसकी पीठ पर हाथ रखा और दिलासा देने वाले मगर साथ ही साथ कुछ हुकूमत मिले लहजे में कहा, " छी:

! यह तुम्हारी क्या हालत है! क्या इसी दिल को लेकर अपना काम खतम करोगी तुम्हारी उन लम्बी - चौड़ी बातों का क्या यही नमूना है?

अरे इनको तो हम लोग आज से बरसों पहिले मुर्दा समझ चुके थे! तुम तो न - जाने कब से इनकी सब उम्मीदे छोड़ बैठी हो, अब क्या इस तरह अधीर होने से काम चलेगा! उठो, अपने को सम्हालो! गये - गुजरे के गम में अपने को बरबाद करने का यह वक्त नहीं है बल्कि यह बदला लेने का वक्त है.

जिस दिन का तुम इतने समय से राह देख रही थीं वह अब आया है! उठो.

होश ह्वास सम्हालो, और देखो कि हम लोगों की मेहनत तुम्हारे लिए क्या - क्या सामान लाई है, अब रोने बिलखने का वक्त नहीं रह गया, काम करने और बदला लेने का वक्त आया है! " इस आदमी की बातें सुन उस औरत ने आँसुओं से तर अपनी आँखें इसकी तरफ उठाई और एक सायत के लिए कुछ सोचने के बाद कहा, " ठीक कहते हो! इन्हें तो मैं आज के बरसों पहिले ही से मुर्दा समझे बैठी थी. ! मेरे लिए तो ये तब भी मुर्दा थे और अब भी मुर्दा हैं, फिर भी इनके पाए जाने की बात सुनकर मैं पागल हो गई थी.

खैर अब मैं इस कमजोरी को अपने से बिल्कुल दूर कर देती हूँ! अब इनकी मौत का बदला, सिर्फ बदला लेना ही मेरी जिन्दगी का अकेला काम रहेगा! (लाश की तरफ देखकर) प्यारे! घबराओ नहीं! तुम चले गए तो क्या हुआ! मैं तो बैठी हूँ! जो - जो तकलीफें तुमने उठाई हैं उनमें से एक - एक का ऐसा बदला मैं लूंगी कि दुश्मन को भी याद आ जाएगा.

नहीं - नहीं, एक दिन जब उसे भी तुम्हारी ही तरह जमीन पर मुर्दा पड़ा हुआ देखूंगी और उनके सिर को अपने पैरों से ठुकराऊंगी तब मेरे चित्त को शान्ति मिलेगी और तभी मैं तुम्हारी आत्मा को शान्ति दे सकूंगी! "

आवेश में भरी हुई उस औरत ने एक बार फिर उस लाश को अपने बदन से चिपटा लिया और तब उसके ठंडे होंठो पर कुछ सायत के लिए अपने क्रोध से लाल और आवेग से गर्म भए होंठो को रख दिया, इसके बाद वह उठ बैठी, एक आखिरी निगाह उस लाश

पर डाली और तब एक ठंडी साँस लेकर उसी चादर से लाश को ढांक सम्हल कर बैठ गई.

अपने आँसू पोंछ डाले और उन दोनों आदमियों की तरफ देखकर बोली, " हाँ अब बताओ क्या कहते हो?

" उस ऐयार ने जो उसके साथ आया था जबाब दिया, “ पहिले इन सब चीजों को देख लो जो इसके साथ - साथ हम लोग ले आए हैं और तब इस बात पर विचार करो कि हमें दुश्मन के साथ क्या कार्रवाई करनी चाहिए !! " औरत:

(जोश के साथ) क्या कार्रवाई करनी चाहिए! अजी उसे एकदम नेस्तनाबूद कर देना चाहिए! उसकी ऐसी हालत कर देनी चाहिए कि गली के कुत्तों को भी उसके हाल पर रहम आवे! और क्या करना चाहिए! ऐयार:

तुम भूल रही हो कि वह कितना भारी ऐयार है और कितनी जबर्दस्त ताकत रखता है! औरत:

मैं यह खूब जानती हूँ, क्या तुम समझते हो कि मैं भूतनाथ की .

.

.

.

.

ऐयार:

(रोककर) चुप - चुप - चुप! दीवारों के भी कान होते है ,.

खबरदार, कोई नाम अपनी जुबान से न निकालो और यह याद रखो कि हम लोगों की सबसे बड़ी ताकत हमारा छिपेरहना और छिपे - छिपे ही काम करना होगा, अपने को प्रकट करने या यह जाहिर करके कि हम लोग फलाने के साथ दुश्मनी की नीयत रखते हैं, हम लोग अपने को ज्यादा देर तक स्वतन्त्र नहीं रख सकते.

औरत:

बेशक तुम ठीक कहते हो?

खैर इधर आओ और मुझे बताओ कि ये क्या चीजें तुम लाए हो.

क्या यह सब सामान तुम्हें उसी जगह से मिला है?

ऐयार:

नहीं, यह किसी एक जगह से नहीं बल्कि कई जगहों से हम लोगों को मिला है.

सच तो यह है कि इस वक्त ईश्वर ही ने हमारी मदद की है और ऐसे - ऐसे सबूत हमारे हाथ में जुटा दिए हैं कि जिन्हें पाने की हम लोग स्वप्न में भी आशा नहीं करते थे.

(वह तलवार उठाकर) देखो यही वह तलवार है जिससे वह भयानक काम किया गया था.

इसी तलवार ने उस बेबस लाचार दुखिया और बेकसूर औरत की गर्दन काटी थी और इस पर पड़े हुए खून के ये दाग अभी तक उस भयानक कार्रवाई की गवाही देने को मौजूद हैं.

औरत:

(तलबार हाथ में लेकर और गौर से देखकर) इस पर इस जगह मूठ के पास कुछ अक्षर खुदे - जान पड़ते हैं.

ऐयार:

हाँ, मैंने भी उन्हें देखा मगर इन खून के छीटों की वजह से उन्हें पड़ नहीं सका, अगर ये दाग साफ किए जायें तो वे अक्षर पड़े जा सकते हैं मगर .

.

.

औरत:

ये दाग उन अक्षरों से ज्यादा क़िमती होंगे! क्यों यही तो?

ऐयार:

ठीक है, यही मेरा ख्याल है! जिस समय यह तलवार उस कातिल के सामने रख दी जायगी, ये खून के छीटे उसके काले दिल को जला - जलाकर उसे उसकी करतूतों की याद दिलाएंगे और उसे अपना कसूर कबूल करने पर मजबूर करेंगे !! औरत:

बेशक श्यामसुन्दर, यह तुम्हारा कहना बहुत ठीक है! एक सायत के लिए मैंने सोचा कि तलवार को साफ करके वह मजमून पर्दू मगर अब मैं भी तुम्हारी ही तरह सोचती हूँ कि यह तलबार ज्यों - कि - त्यों ही रहना ठीक और मुनासिब है, अच्छा इस बोतल में क्या है! " देखो और पहिचानो! " कहकर इस ऐयार ने जिसे अभी - भी इस औरत ने श्यामसुन्दर के नाम से सम्बोधित किया था.

बह बोतल उठा ली और रोशनी की तरफ की.

श्यामसुन्दर के साथी गोपाल ने लालटेन उठाकर दिखाई जिसकी रोशनी में एक ही झलक डालकर वह औरत चिल्ला उठी और दोनों हाथों से अपनी आँखें ढाँक कर बोली, “ हे है! भुवनमोहिनी का सिर है?

" सचमुच उस बड़ी बोतल के अन्दर एक क़मसिन , नाजुक औरत का कटा हुआ सर रक्खा हुआ था.

इसमें कोई शक नहीं कि वह बहुत दिन से उस बोतल में रखा हुआ होगा पर किसी तरह के मसाले में डूबा रहने के कारण वह किसी तरह से बिगड़ा न था और नाजुक़ चेहरे की एक - एक शिकन साफ - साफ दिखाई पड़ रही थी.

ओफ, कैसी भोली वह सूरत थी! पतले होंठ, नुकीली नाक, कटीली आँखें, किसी समय कैसा गजब करती होंगी, मगर इस समय किसी बेदर्द कातिल के संगदिल कलेजे की याद दिलाती हुई मौत की आखिरी तकलीफ बयान कर रही थीं.

आह! कैसा पत्थर का वह कलेजा होगा जिसने ऐसी नाजुक़ कमसिन गुलबदन की पतली गरदन पर छुरी चलाई होगी?

हाय क्या ऐसे संगदिल भी दुनिया में हैं ।

उस औरत के मुंह से ' भुबनमोहिनी ' का नाम निकला ही था कि श्यामसुन्दर ने कड़ी निगाहों से उसकी तरफ देखा और कहा, " फिर तुमने वही काम कीया ! मैंने कहा कि

दीवारों के भी कान होते हैं, जो काम तुम कर रही हो उसमें कोई नाम मुंह से निकालना कभी माफ न किया जाने वाला कसूर होगा, जिसके लिए शायद तुम्हें पछताना पड़े !! " औरत डरी हुई निगाहें उस पर डालती हुई बोली, " बेशक मुझसे गलती हुई, मगर यकायक इतने दिनों के बाद इस सूरत को अपने सामने देख मैं होश - हवास में नहीं रह गई थी.

यह सूरत मुझे क्या - क्या याद दिला रही है इसे पूरा - पूरा तुम भी नहीं समझ सकते, खैर तुमने इसे पाया कहाँ?

यह सिर किसने और किस नियत से इस बोतल में बन्द कर रखा है?

" श्याम:

यह सब हाल मैं तुम्हें खुलासा सुनाऊँगा, पहिले तुम इन बाकी चीजों को भी देख लो.

औरत:

अच्छी बात है, यह पत्थर की मूरत कैसी है?

श्याम:

यह भी उसी जगह हम लोगों को मिली जहाँ यह बोतल मिली थी.

इसका ठीक - ठीक हाल मैं नहीं जानता पर ऐसा जान पड़ता है कि इस मूरत का इस खून से कोई सम्बन्ध है.

औरत:

जरा लालटेन ऊँची करो तो मैं इसे देखू.

गोपाल के लालटेन ऊंचा करने पर उस औरत ने झुककर गौर से उस मूरत को देखा, लाल पत्थर या मिट्टी की यह मूरत राक्षस की - सी बनी हुई थी जिसका भयानक मुँह और डरावने दाँत देखने से भय मालूम पड़ता था.

इसके हाथ के पंजों मे शेरों के - से नाखून थे और इसकी दोनों बांहों पर से दो साँप फन काढ़े हुए ऊपर को उठे हुए थे.

एक निगाह इस मूरत को देखते ही वह औरत चमक उठी, मगर उसने अपने आप को सम्हाला और दिल के भाव को छिपाती हुई बोली, " अच्छा और क्या - क्या चीज तुम लोग लाए हो?

" श्याम:

उठो तो मैं तुम्हें दिखाऊँ! इन सन्दुकों में कई बहुत ही काम की चीजें हैं.

श्यामसुन्दर ने एक बगल रखे हुए संदूकों में से एक का ढक्कना खोला और उस औरत ने पास जाकर उसके अंदर देखा.

तरह - तरह के कपड़ों से वह संदूक भरा हुआ था.

श्यामसुन्दर ने उसमें से दो - चार कपड़े बाहर निकाले और रोशनी की तरफ करके कहा, " मैं समझता हूँ कि तुम इन्हें जरूर पहिचानती होगी.

!! " मैं इन्हें बख़्जी पहिचानती हूँ कहकर उस औरत ने एक लम्बी सांस ली और तब दूसरे संदूक की तरफ बड़ी.

श्यामसुन्दर ने इसका भी ढक्कना खोला.

इसमें तरह - तरह के फुटकर सामान, कुछ बरतन, बहुत से कागजात और चिट्ठियाँ, तथा कुछ जेवरात थे, जिन्हें सरसरी निगाह से वह औरत देख गई और तब तीसरे संदूक की तरफ बडी.

श्यामसुन्दर ने ढकना खोला और उसने झाँककर भीतर देखा.

न जाने इस संदूक के अन्दर क्या चीज उस औरत को दिखाई पड़ी कि उसके मुँह से एकदम चीख की आवाज निकल पड़ी और वह डर कर पीछे हटती हुई बदहवासी की हालत में जमीन पर बैठ गई.

श्यामसुन्दर ने जल्दी से संदूक का ढक्कना बन्द कर दिया और उस औरत के पास जा उसके मुंह पर हवा करने लगा.

गोपाल एक बर्तन में पानी ले आया जिसके कई छींटे चेहरे पर देने और देर तक हवा करने पर उस औरत के होश ठिकाने आये मगर उस संदूक की तरफ निगाह पड़ते ही

उसने डर कर अपनी आँखें बन्द कर लीं.

श्यामसुन्दर ने यह देख हँस के कहा, " बस ऐसा ही दिल ले के तुम इस भयानक काम में हाथ डालना चाहती हो जिसमें कदम - कदम पर खतरा है! "

औरत:

नहीं, मेरे दोस्त! मौका पड़ने पर तुम देखोगे कि मेरा दिल पत्थर से भी कड़ा हो सकता है, पर इस तरह यकायक उस चीज को देखने की आशा न थी जो इस वक्त मैंने देखी, खैर अब बस करो, अब मैं और कोई चीज इस वक्त देखना नहीं चाहती.

जो कुछ मैंने देखा वही बहुत है.

श्याम:

जैसी तुम्हारी इच्छा! तो अब यह बताओ कि तुम्हारा इरादा क्या होता है?

ये सब चीजें इसी तरह इस बजरे पर रहने दी जएं या तुम्हारे घर भेज दी जाएं?

औरतः:

क्या इस बजरे में कोई ऐसी जगह नहीं है, जहाँ बैठ कर हम लोग सलाह - मशविरा कर सकें?

इस जगह इन डरावनी याददाश्त जगाने वाली चीजों के बीच में बैठकर कुछ निश्चय करना मेरे लिए कठिन होगा.

श्याम: हॉ - हाँ, इसके बगल में एक छोटी - सी कोठरी और है, उसमें बैठकर हम लोग बातें कर सकते हैं.

इस कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर दिया गया और एक दूसरे दरवाजे को खोल ये तीनों आदमी उस दूसरी कोठरी में जा पहुँचे जो इससे सटी हुई थी और जहाँ एक मामूली फर्श के इलावे किसी तरह का कोई सामान न था.

तीनों आदमी फर्श पर बैठ गए और आपस में बातें करने लगे.

घण्टे भर से कुछ ऊपर ही समय तक इन सभों में किसी गुप्त विषय पर बातें होती रहीं.

वे बातें किस विषय की थीं या उनके जरिये क्या - क्या तय हुआ यह हम नहीं जान सके इसमें शक नहीं कि आगे चलकर इसका तो पूरा - पूरा पता लग जायेगा.

बातें समाप्त होने पर वह औरत उठ खड़ी हुई और उसके तीनों साथी भी खड़े हो गए.

तीनों बजरे के बाहर आए जहाँ श्यामसुन्दर ने उस औरत से पूछा, " तुम अकेली चली जाओगी या मैं साथ चल कर पहुंचा आऊ?

' जवाब में उसने कहा, ' मैं बखूबी चली जाऊँगी, तुम्हारे साथ की मुझे कोई जरूरत नहीं, मगर तुम अब बिल्कुल देर न करो और जहाँ तक जल्द हो सके यहाँ से रवाना हो जाओ.

इसके जबाब में श्यामसुन्दर ने कहा, " तुम विश्वास रखो कि सूरज की पहिली किरण के साथ यह बजरा घाट छोड़ देगा और जहाँ तक जल्द हो सकेगा मैं उस ठिकाने पर पहुँच कर तुम्हारी राह देखूंगा मगर तुम बहुत होशियार रहना, ऐसा न हो कि किसी को पता लग जाय और सब करी - कराई मेहनत बेकार जाय! " औरत:

नहीं - नहीं, ऐसा कभी न होगा और मुझसे किसी को कुछ भी पता न लगेगा.

हाँ तुम लोग अलबते होशियार रहना और किसी बेजाने - पहिचाने आदमी को इस वजरे के पास फटकने मत देना.

मैं समझती हूँ कि इस पर के मल्लाह सब तुम्हारे जाँचे हुए और विश्वासी आदमी होंगे.

श्याम:

हाँ इनमें से हर एक को मैं अच्छी तरह जानता और जाँचे हुआ हूँ.

इधर से किसी प्रकार का डर करने की कोई जरूरत नहीं.

औरत:

अच्छा तो फिर मैं जाती हूँ ठीक मौके पर उसी जगह तुम से मिलूँगी.

औरत बजरे पर से उतर पड़ी और तेजी के साथ सीढ़ियाँ चढ़ती हुई देखते - देखते आँखों की ओट हो गई, श्यामसुन्दर और गोपाल बजरे के अन्दर चले गए इस समय पौ नहीं फटी थी मगर पूरब तरफ का आसमान रंगत बदल रहा था.

सातवां व्यान।

लामाघाटी के नीचे वाले गुज्जान जंगल के अन्दर से दो आदमी तेजी के साथ जा रहे हैं जिनमें से एक औरत है और दूसरा मर्द पाठकों को इनका परिचय देने की जरूरत नहीं है क्योंकि इन्हें वे पहिले भी कई बार देख चुके हैं, इस मर्द का नाम तो साबलसिंह है और वह औरत गिल्लन है.

शेरअलीखाँ की लड़की गौहर के साथ इन दोनों ही को हम लोग पहिले बहुत दफे देख चुके हैं परंतु इधर बहुत दिनों के बाद ये दोनों दिखाई पड़े हैं, आइए पास चलकर इनकी बातें सुनें, शायद उससे कुछ पता लगे कि अब तक कहाँ रहे या क्या करते रहे.

सांवल:

(पीछे की तरफ देखकर हम लोग काफी दूर निकल आए और किसी तरह का डर नहीं रहा.

अब इतनी तेजी से चलने की जरूरत नहीं है.

गिल्लन:

नहीं, अभी थोड़ी दूर और निकल चलना चाहिए, क्या जाने भूतनाथ का कोई शागिर्द या नौकर देख ले तो मुश्किल हो जाएगी और हमें फिर कैद की हवा खानी पड़ेगी.

सांबल:

ऐसे खुले मैदान में हम लोगों को पकड़ लेना कुछ हँसी - खेल थोड़े ही है, खैर तुम्हारी तबीयत है तो मुझे कोई आपत्ति भी नहीं है, थोड़ी दूर और निकल चलो तब कहीं बैठकर सुस्ताओ और सोचो कि अब क्या करना चाहिए.

गिल्लन:

न मालूम गौहर इस वक्त कहाँ होगी?

सांवल:

इधर इतने दिनों में क्या हुआ यह कहना मुश्किल है पर यदि वह स्वतन्त्र है और किसी की कैद में नहीं पड़ गई है तो या तो जमानिया में होगी और या शिवगतगड़ में.

गिल्लन:

या यह भी सम्भव है कि पटने चली गई हो.

सांबल:

हो सकता है.

गिल्लन:

उससे जहाँ तक हो जल्दी मुलाकात करना चाहिए, मैं समझती हूँ कि अगर हम लोग शिवदत्तगड़ चले चलें तो उसकी कुछ - न - कुछ टोह खबर जरूर पा सकेंगे, महाराज शिवदत्त उस पर दिलोजान से फिदा हैं और उसका पता जरूर रखते होंगे.

शिवदत्तगढ़ यहाँ से बहुत दूर भी न होगा.

सॉबल ०:

दूर नहीं तो नजदीक भी नहीं है, मगर मैं चलने को तैयार हूँ क्योंकि तुम्हारा यह सोचना बेशक ठीक है कि महाराज शिवदत्तसिंह को गौहर का पता जरूर मालूम होगा.

इन दोनों ने अपना रुख बदल दिया और शिवदत्तगढ़ की तरफ जाने लगे.

लगभग दो घण्टे के ये लोग इसी तरह चलते गए.

इसके बाद एक पक्के कुएँ के पास पहुँचकर गिल्लन ने कहा, " अब मैं थक गई हूँ, इस जगह कुछ देर ठहर कर सुस्ताये बिना चल न सकूँगी.

"

सांवलसिंह भी यही चाहता था.

दोनों आदमी कूएँ की ऊँची जगत पर चढ़ गए और सांवलसिंह ने अपने सामान में से कपड़े का डोल और पतली डोरी निकाल कर पानी खींचा.

हाथ - मुँह धो उन लोगों ने जल पीया और कुछ देर तक सुस्ताने की नीयत से लेट रहे.

घण्टे भर के आराम ने इन दोनों की थकावट बहुत कुछ दूर कर दी और ये लोग फिर सफर करने लगे.

लगभग आधे घण्टे के तेजी से चले जाने के बाद ये दोनों एक ऐसी जगह पहुंचे जहाँ कुछ नीची पहाड़ियों ने इनका रास्ता रोका हुआ था जिसके आस - पास कई झरने भी दिखाई पड़ रहे थे.

इन दोनों ने पहाड़ों पर चढ़ना आरम्भ किया ही था कि यकायक गिल्लन रुक गई और सांवलसिंह का हाथ पकड़ कर बोली, " क्या मेरा शक ही है कि कहीं पास में कुछ आदमी आपुस में बातचीत कर रहे हैं ।

साँवलसिंह ने गौर किया और कहा, " वेशक कुछ आदमियों के बातचीत की आवाज आ रही है ।

गिल्लन:

क्या हर्ज है अगर हम लोग कुछ रुक कर यह जानने की कोशिश करें कि ये लोग कौन हैं! सांवल:

(कुछ सोच कर) अच्छी बात है, तुम इस पत्थर की आड़ में छिपकर बैठो मैं जाकर पता लगाता हूँ, !! अच्छा मगर जल्दी आना.

" कहकर गिल्लन आड़ में हो गई और साँवलसिंह पीछे को लौटकर थोड़ी ही देर में आँखों की ओट हो गया.

साँवलसिंह को गए देर हो गई मगर वह लौटकर न आया, यहाँ तक कि अकेली बैठी गिल्लन घबरा उठी और सोचने लगी कि कहीं वह किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ा आखिर वह अपनी जगह से उठी और टोह लेती हुई उस तरफ को बड़ी जिधर से अब तक कुछ आदमियों के बातचीत करने की बहुत ही धीमी आवाज आती हुई यह बता रही थी कि ये बात करने वाले कहीं दूर पर बातें कर रहे हैं, मगर अभी वह उधर कुछ ही कदम रखने पाई थी कि अपनी बाईं तरफ किसी तरह की आहट पाकर चौंकी और घूमकर देखा तो सॉवलसिंह पर निगाह पड़ी जो गठर पीठ पर उठाये हुए था और जिसके पीछे पीछे गौहर चली आ रही थी.

गौहर को देखते ही गिल्लन झपट कर उसके गले से लिपट गई और उसने भी प्यार से चिपका लिया मगर तुरन्त ही अलग होकर बोली, “ यहाँ जरा भी रुकने या बात करने का मौका नहीं बस चुपचाप चली आओ और जहाँ तक जल्दी हो सके दूर निकल चलो.

" यह सुन गिल्लन को कुछ भी पूछने की हिम्मत न पड़ी और वह चुपचाप गौहर का हाथ पकड़े चलने लगी.

लगभग आधे घण्टे तक बिना कुछ बातचीत कीये सब तेजी से चलते रहे, साँवलसिंह सीधी राह से नहीं जा रहा था बल्कि इधर - उधर चक्कर काटता और पेड़ों तथा पहाड़ी ढोंको की आड़ देता हुआ घने जंगल की तरफ बढ़ा जा रहा था.

जब वह पहाड़ी जहाँ से ये लोग आ रहे थे एकदम आँखों की ओट हो गई और ये लोग एक गहरे नाले के अन्दर जा पहुँचे जहाँ यकायक किसी की निगाह नहीं पड़ सकती थी तब साँवलसिंह रुका और अपनी पीठ की गठरी उतार सुस्ताने लगा.

गौहर भी थकावट की मुद्रा से एक किनारे बैठ गई और गिल्लन को पास बैठने का इशारा कीया , दोनों में धीरे - धीरे बातें होने लगी.

संक्षेप में और बहुत कुछ घटा बड़ाकर गौहर ने इधर का सब हाल, मुन्दर से उसकी मुलाकात, भूतनाथ का भेद जानने की कोशिश , और अंत में उसके हाथ पड़ जाना इत्यादि बयान कीया , मगर कामेश्वर और भुवनमोहिनी वाले भेद को बिल्कुल छिपा गई अर्थात यह न बताया कि भूतनाथ का कौन - सा भेद उसने तथा मुन्दर ने जान लिया है अंत में उसने कहा, “ मुझे और मुन्दर को भूतनाथ ने गिरफ्तार करके एक गुफा में रखा था जहाँ से साँवलसिंह ने मुझे छुड़ाया और गठरी में मुन्दर को ले भागे क्योंकि उसे होश में लाने का समय न था.

हम लोगों का पता तुम्हें या साँवलसिंह को क्योंकर लगा यह मैं नहीं जानती मगर अब सुनना चाहती हूँ कि इतने दिन दोनों कहाँ रहे और क्या करते रहे तथा इस समय ऐसे मौके पर क्योंकर यहाँ पहुँचे.

!! गिल्लन बोली, " हम लोगों का हाल कोई कौतूहलवर्धक नहीं है, हम लोगों को भी इसी भूतनाथ ने गिरफ्तार करके अपनी लामाघाटी में रखा था जहाँ से आज रात को किसी तरह हम लोग निकल भागे और तुम्हारा पता लेने शिवदत्तगढ़ की तरफ जाने का

इरादा कर रहे थे कि यहाँ रास्ते में तुमसे भेंट हुई, हाँ तुम्हारा पत्ता क्योंकर लगा यह सॉवलसिंह ही अच्छी !! तरह बता सकते हैं ।

इतना कहकर गिल्लन ने सॉवलसिंह की तरफ देखा जिसने उसकी बात सुनकर यों कहा, " तुमसे अलग होकर जब मैं आहट की सीध पर चला तो कुछ दूर जाने के बाद एक जगह मुझे कई आदमी बैठे दिखाई पड़े.

मैं छिपता हुआ उनके पास गया और उनकी बातें सुनीं तो मालूम हुआ कि वे लोग भूतनाथ और उसके शागिर्द हैं.

यह भी उनकी बातचीत से मालूम हुआ कि (गौहर की तरफ इशारा करके) इन्हें तथा मुन्दर नाम की किसी औरत को गिरफ्तार करके उन लोगों ने पास ही कहीं रक्खा हुआ है, यह सुनते ही मेरे कान खड़े हुए और मैं वहाँ से हटा.

इधर - उधर घूम - फिर कर देखा तो वहाँ से कुछ ही दूर पर एक - दो बड़ी गुफाएँ दिखाई पड़ी जिनमें से एक के आगे एक आदमी जो भूतनाथ का ही कोई शागिर्द या नौकर मालूम होता था, एक पेड़ के सहारे उठका बैठा हुआ ठंडी - ठंडी हवा के थपेड़ों में ऊँघ रहा था.

मैं समझ गया कि हो न हो इसी गुफा में ये लोग होंगी.

अस्तु कदम दबाता हुआ मैं उसके पास पहुंच गया.

भाग्य ने मेरी मदद की और उसी समय वह आदमी भी एक जंभाई लेकर आलस्य की मुद्रा से जमीन पर लेट गया तथा आँखें बंद कर लीं, मैंने चट आगे बढ़कर बेहोशी की बुकनी उसके नाक में लगाई जिसके असर से आँखें भी न खोलने पाया था कि दो - चार छींके मारकर बेहोश हो गया.

मैं उसे उठाकर एक झाड़ी में रख आया और तब गुफा में घुसा तो इन्हें तथा दूसरी औरत को बेहोश पड़े पाया, लखलखा सुंघाकर इन्हें निकल भागा, पता नहीं पीछे क्या हुआ या उस ऐयार ने होश में आने पर क्या किया अथवा अपनी गफलत का हाल भूतनाथ पर क्योंकर बयान किया मगर इतना कह सकता हूँ कि यहाँ तक आ जाने पर भी हम लोग खतरे से खाली नहीं है और जहाँ तक जल्द हो सके हम लोगों को यहाँ से भी और दूर

निकल जाना चाहिये क्योंकि कोई ताज्जुब नहीं कि पता लगाता हुआ खुद भूतनाथ या उसका कोई शागिर्द यहाँ तक आ पहुँचे, उस समय बहुत मुश्किल होगी.

" इसी समय यकायक पेड़ों की एक झुरमुट के अंदर से आवाज आई, " वेशक! मगर अब भाग कर भी कहाँ जा सकते हो?

" सब कोई यह आवाज सुनते ही चौंक पड़े, गौहर कॉपकर गिल्लन के साथ सट गई और साँवलसिंह भी छिहुँक पड़ा मगर फिर हिम्मत करके उठा और खंजर हाथ में ले उस झाड़ी की तरफ लपका जिसके अन्दर से यह आवाज आई थी.

पत्तों की चरमराहट ने किसी आदमी के भागने की सूचना दी जिस पर यद्यपि निगाह तो किसी की न पड़ी मगर आहट पर गौर करता हुआ सांबलसिंह उस तरफ लपक ही गया और गौहर तथा गिल्लन की आँखों की ओट हो गया.

गौहर ने डरी हुई आवाज में गिल्लन से पूछा, " अब क्या होगा?

" गिल्लन ने दिलासा दिलाने के ढंग से कहा, " डरो नहीं, हम लोगों के रहते तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ न सकेगा, मगर यह जरूरी है कि तुम्हारी साथिन होश में कर दी जाय, क्योंकि अगर हम लोगों को यहाँ से भागना ही पड़े तो बेहोश की गठरी लिये हुए भागने में बहुत तकलीफ होगी.

और अगर वह होश में रहेगी तो हम लोगों के साथ जा सकती है.

" गौहर ने इस राय को पसंद किया और गिल्लन ने उठकर मुन्दर की गठरी खोल उसे बाहर निकाला, ऐयारी के बटुए से बेहोशी दूर करने का मल्हम निकालकर उसे सुंघाया तथा कुछ नाक पर मला जिससे मुन्दर की बेहोशी बात - की - बात में दूर हो गई और वह कई छींके मार होश में आकर उठ बैठी तथा ताज्जुब से चारों तरफ देखने लगी, गौहर को अपने पास ही बैठी पा उसकी घबराहट कुछ दूर हुई और वह निश्चिंत - सी होकर बोली, " यह क्या मामला है?

हम लोग कौन - सी जगह आ गये, और महाराज शिवदत्त तथा उनके आदमी सब कहां चले गये?

" गौहर:

हम लोगों ने बहुत बड़ा धोखा उठाया.

वह महाराज शिवदत्त न थे बल्कि भूतनाथ ऐयार था जिसने हमें भुलावे में डालकर सब हाल जान लिया और हमारे सब सबूत भी ले लिये.

मुन्दर:

(चौंक और घबराकर) हैं! वह भूतनाथ था और हमारे सब सबूत उसके हाथ में चले गये?

गौहर:

हाँ, मेरी इस सहेली गिल्लन तथा ऐयार सॉवलसिंह ने अभी - अभी हम दोनों को उसके हाथों से छुड़ाया और यहाँ ले आये है.

मुन्दर:

(इधर - उधर देखकर) तब तो तुम्हारी सहेली और ऐयार का बहुत बड़ा एहसान मेरी गर्दन पर है.

मगर यहाँ तो में केवल (गिल्लन की तरफ इशारा करके) इन्हीं को देख रही हूँ तुम्हारे साँवलसिंह क्या कहीं चले गये हैं?

गौहर:

हाँ, यहाँ तक पहुँचकर भी हम लोग आफत से नहीं छुटे भूतनाथ को हम लोगों का पता लग ही गया और वह या उसका कोई आदमी पीछा करता हुआ यहाँ तक आ पहुँचा जिसकी बात सुनकर साँवलसिंह उसे गिरफ्तार करने गये हुए हैं.

(बाईं तरफ देखकर) यह लो सांवलसिंह आ पहुँचे.

मगर अकेले आ रहे हैं, मालूम होता है वह ऐयार निकल गया, (आवाज देकर) क्यों साँवलसिंह कुछ पता लगा, वह आवाज देने वाला कौन था?

सॉवलसिंह ने पास आकर जबाब दिया, “ जी नहीं.

वह कम्बख्त भाग गया.

मगर मेरी समझ में अब यहाँ रहना मुनासिब नहीं, कौन ठिकाना वह दो - चार आदमियों को अपनी मदद के लिये लेकर यहाँ आ जाय तो मुश्किल होगी, यहाँ से क़ुच कर देना मुनासिब है.

"गौहर

(उठती हुई) मैं भी यही मुनासिब समझती हूँ और यही समझकर मैं अपनी सखी मुन्दर को भी होश में लाई थी.

अब हम लोग कुछ सुस्ता भी चुके हैं, यहाँ से दूर निकल जाना कोई मुश्किल न होगा.

गौहर, गिल्लन और मुन्दर उठ खड़ी हुई और सॉवलसिंह के बताये रास्ते से चलती हुई बहुत जल्द उस जगह से दूर निकल गई.

जब वह नाला बहुत पीछे छूट गया और पीछा किये जाने का डर जाता रहा तो इन लोगों ने पुनः अपनी चाल धीमी की.

उस समय मुन्दर ने कहा, " हम लोग इतनी तेजी से और ऐसे अनजान रास्ते से आये हैं कि मुझे इस बात का कुछ भी पता नहीं लग रहा है कि यह कौन - सी जगह है.

क्या तुम कुछ बता सकती हो?

" गौहर ने यह सुन जवाब दिया, " जहाँ तक मैं समझती हूँ अब हम लोग महाराज शिवदत्त के इलाके में आ गये हैं और (सामने की तरफ उँगली उठाकर) उस पहाड़ी को पार करने पर हम लोगों को शिवदत्तगड़ दिखाई पड़ने लग जायेगा (साँवलसिंह की तरफ देखकर) क्यों साँवलसिंह?

"

सॉबल:

जी हाँ, यही बात है.

हम लोग शिवदत्तदगढ़ के बहुत पास आ पहुँचे हैं.

अब जहाँ तक मैं समझता हूँ कोई हम लोगों का पीछा न कर रहा होगा या अगर करता भी होगा तो हमारा कुछ बिगाड़ न सकेगा.

आप चाहें तो यहाँ कुछ देर सुस्ता सकती हैं, या नहीं तो सीधी चली चलें, शिवदत्तगढ पहुँच कर ही डेरा लगाया जायेगा.

गौहर:

(मुन्दर से) क्यों क्या राय है?

मुन्दर:

तुम्हारी जो इच्छा चाहे करो और चाहे जिधर जाना हो जाओ मगर मैं अब तुमसे अलग होऊँगी और सीधी अपने घर जाऊँगी जहाँ से निकले कई दिन हो गये और जहाँ जरूर मेरी राह बेचैनी के साथ देखी जाती होगी.

गौहर:

तो क्या तुम अकेली ही जाओगी! नहीं - नहीं, दुश्मन का डर कदम - कदम पर है और इस तरह अकेले तुम्हारे जाने से मुझे बहुत फिक्र होगी, मेरी समझ में तो तुम मेरे साथ शिवदत्तगड़ चली चलो, मैं वहाँ बहुत कम देर ठहरूंगी, बस सफर की थकावट मिटा महाराज शिवदत्त से कुछ बातें करने बाद ही मैं वहाँ से चल पड़ूंगी और जहाँ तुम कहो वहाँ चलने को तैयार रहूँगी.

मुन्दर:

नहीं - नहीं, इतना तरद्दुद करने की कोई जरूरत नहीं है.

मै अकेले बहुत लंबे सफर कर चुकी हूँ और किसी तरह डरती या घबराती नहीं, तुम बेफिक्री के साथ शिवदत्तगड जाओ और जब तक तुम्हारी मर्जी हो रहो मगर इतना बतलाती जाओ कि अब हम लोगों में कहाँ और कब मुलाकात होगी.

गौहर:

जब और जहाँ कहो, मुन्दर:

क्या आज के चौथे दिन अजायबघर वाले जंगल में दोपहर के वक्त मिल सकती हो?

गौहर:

बखूबी.

मुन्दरः:

तो बस ठीक है, वही, हम लोगों की भेंट होगी.

इतना कह मुन्दर आगे झुकी और गौहर के कान में बोली, " हम लोगों के जो सबूत भूतनाथ के हाथ में चले गए हैं उन पर फिर से दखल करना चाहिए.

तुम्हारे साथ कई मददगार हैं.

अगर हो सके तो कुछ पता लगाना, मैं भी कोशिश करूँगी! "

गौहर ने यह सुन मुन्दर का हाथ पकड़ लिया और कुछ अलग ले जाकर बातें करने लगी.

लगभग आधी घड़ी तक दोनों में धीरे - धीरे कुछ बातें होती रहीं.

इसके बाद दोनों अलग हुई और मुन्दर जमानिया की तरफ तथा गौहर, गिल्लन और साँवलसिंह शिवदत्तगढ़ की तरफ रवाना हुए.

गौहर इत्यादि का साथ छोड़कर हम मुन्दर के साथ चलते हैं और देखते हैं कि वह किधर जाती या क्या करती है.

मुन्दर गौहर से विदा होकर अभी बहुत थोड़ी ही दूर गई होगी कि अचानक उसे अपने पीछे हुई आहट सुनाई पड़ी और घूमकर देखने से साँवलसिंह पर निगाह पड़ी जो तेजी से इसकी तरफ आ रहा था.

उसे आते देख यह रुक गयी और जब वह पास आ गया तो बोली, “ क्यों क्या हुआ जो तुम इतनी तेजी से चले आ रहे हो, खैरियत तो है! " सांवलसिंह ने कहा, “ सब ठीक है, गौहर ने यह समझकर कि आपका अकेले इतना लम्बा सफर करना मुनासिब नहीं है मुझे आपके साथ - साथ जाकर जमानिया या जहाँ आप जाना चाहें पहुँचा देने को कहा है और यह भी कहा है कि अगर आप मुझे साथ रखना पसन्द न करें तो मैं हट जाऊँ मगर छिपा - छिपा पीछे - पीछे तब तक चला जाऊँ जब तक कि आप अपने ठिकाने पहुँच न जाएँ.

अब आप कहिए तो मैं आपके साथ - साथ चलूं नहीं उनका दूसरा हुक्म बजाऊ और छिप कर आपका पीछा करूं.

" मुन्दर यह सुन हँसकर बोली, “ नहीं - नहीं, छिपकर पीछा करने की जरूरत नहीं, तुम खुशी से मेरे साथ चल सकते हो और मैं उनकी शुक्रगुजार हूँ जो उन्होंने मेरा इतना खयाल कीया , मगर बात यह थी कि मैंने तुम्हें साथ न लेना इसलिए सोचा था कि तुम लोग खुद ही कैद की तकलीफ भोगकर आ रहे हो उस पर से इतना लम्बा सफर मुनासिब न होगा.

इसी खयाल से मैंने उनके कहने पर भी किसी को साथ लेना मुनासिब न समझा था.

" सॉबल:

ऐसा सोचना आपकी मेहरबानी थी. , पर फिर भी उसकी कोई जरूरत न थी.

हम ऐयारों का तो पेशा ही दौड़ धूप - परेशानी और मुसीबत उठाने का है.

जब इसी बात की रोटी खाते हैं तो कैद की तकलीफों का खयाल कहाँ तक किया जायगा, और फिर आपका साथ तो मेरे हक में इसलिए बहुत ही अच्छा होगा कि जैसा मैंने गौहर से सुना आप ऐयारी के फन में बहुत ही होशियार हैं और बड़े बड़े खतरनाक भेदों का पता लगा चुकी हैं.

सचमुन ईश्वर ने आपको जैसी खूबसूरती दी है वैसा ही दिल और दिमाग भी दिया है.

तरह - तरह की मीठी और खुशामद की बातें कहकर साँवलसिंह ने बहुत जल्द सुन्दर का मन अपने हाथ में कर लिया और तरह - तरह की बातें करते हुए दोनों आदमी जमानिया की तरफ रवाना हुए.

.

वह समूचा दिन और रात का भी कुछ हिस्सा सफर में बीत गया, सुन्दर की इच्छा एकदम सीधे अपने घर अर्थात पिता के यहाँ चले जाने की थी. मगर दूरी बहुत ज्यादा थी और कैद तथा बेहोशी की तकलीफ से वह नाजुक औरत क़मजोर भी हो रही थी.

फिर भी वह तब तक चली गई जब तक कि हर कदम पर यह न मालूम होने लगा कि अब दूसरा कदम न रख सक्केगी बल्कि कोशिश करेगी तो ठोकर खाकर गिर पड़ेगी.

साँवलसिंह ने यह देख बहुत कुछ समझा - बुझाकर उसे कुछ देर आराम करने को राजी किया और उसके यह वादा करने पर कि पौ फटने के घण्टा भर पहिले ही वह पुनः

सफर शुरू कर देगा मुन्दर ने चलना बन्द कीया.

दोनों आदमी अपना रुख बदलकर थोड़ी देर चलने के बाद ही गंगा तट पर पहुँच गए जहाँ मुन्दर ने हाथ - मुँह धोया और साँवलसिंह का दिया हुआ कुछ मीठा खाकर एकदम चूर हो गई वहीं एक पेड़ के नीचे पड़ गई जहाँ साँवलसिंह ने कुछ पत्ते बटोर और अपना दुपट्टा उस पर बिछा उसके लेटने का इन्तजाम कर दिया था.

उसे एकदम बेफिक्र होकर आराम करने को कह सॉवलसिंह जरूरी काम से छुट्टी पाने चला गया और थकी हुई मुन्दर भी जमीन से पीठ लगाने के कुछ ही देर बाद इस तरह की गाफिल नींद में सो गई कि मालूम होता था कि सुबह होने पर भी न जागेगी.

लगभग घण्टे भर बाद सब कामों से निपट जिस समय साँवलसिंह वहाँ लौटा जहाँ मुन्दर को छोड़ आया था तो उसे गहरी नींद में पाया.

उसने भी यह देख मुन्दर से कुछ हटकर एक पेड़ के नीचे आसन जमाया.

कुछ देर तक पेड़ के तने के साथ उठका हुआ वह न जाने क्या - क्या सोचता रहा मगर धीरे - धीरे थकावट और नींद ने उस पर भी कब्जा कर ही लिया और मुन्दर की तरह लम्बा हो कर वह भी गहरी नींद में बेसुध हो गया.

अचानक किसी तरह की आबाज ने मुन्दर की तो नहीं पर साँबलसिंह की निद्रा भंग कर दी.

उसने दो - एक करवटें बदलकर आँखें खोल दी और इधर उधर देखने लगा, सन्नाटा छाया था जिसके बीच केवल गंगा का मधुर कलरव या कभी - कभी दरियाई चिड़ियों या जंगली जानवरों के बोलने की आवाज सुनाई दे जाया करती थी.

मुन्दर उसी तरह मुर्दो से बाजी लगाए पड़ी हुई थी और इन लोगों का थोड़ा - बहुत सामान उसी तरह पेड़ की डाली पर रक्खा हुआ था जिस तरह रखकर साँवलसिंह लेटा था.

सब ज्यों - का - त्यों था पर फिर भी सॉवलसिंह को ऐसा भास होता था मानों कोई - न - कोई बात यहाँ पर जरूर हो रही है जिसे यद्यपि वह देख या जान न रहा था पर अनुभव कर सकता था.

आखिर उससे न रहा गया और वह उठकर बैठ गया.

बैठने के साथ ही उसे ऐसा मालूम हुआ मानों कोई झपटकर उसके बगल से होता हुआ पास की झाड़ी में घुस गया हो.

वह यह नहीं समझ सका कि यह कोई आदमी था या जंगली जानवर क्योंकि उसकी निगाह दूसरी तरफ थी पर फिर भी उसका शकी मन चंचल हो उठा और वह फुर्ती से उठ खड़ा हुआ.

साथ ही उसका हाथ उसकी कमर में गया पर उसे खाली पाया अर्थात वह खंजर जिसे रात को कमर में खोस वह सोया था मौजूद न था.

देखते ही वह चौंक पड़ा और समझ गया कि उसके सोए रहने की हालत में कोई - न - कोई वहाँ जरूर आया है, वह जो कोई भी हो.

सिर्फ उसकी कमर का खंजर लेने नहीं आया होगा बल्कि कुछ फसाद भी मचा गया होगा यह खयाल बिजली की तरह उसके मन में दौड़ गया.

वह झपटकर उस जगह पहुँचा जहाँ मुन्दर सोई हुई थी.

मुन्दर के बदन पर हाथ रखते ही वह चौंक गया और उसके मुंह से बेतहाशा चीख की आवाज निकल पड़ी क्योंकि मुन्दर का बदन बर्फ की तरह ठण्डा था.

घबराए हुए साँवलसिंह ने जल्दी - जल्दी अपना सामान उतारकर रोशनी की और पुनः सुन्दर के पास पहुँचा.

उसके मुँह से दुबारा एक चीख निकल पड़ी जब उसने देखा कि मुन्दर मुर्दा है, एक खंजर उसकी छाती में दस्ते तक घुसा हुआ है, और बहुत - सा खून निकल कर चारों तरफ फैला है, पहिली ही निगाह ने यह भी बता दिया कि जो खंजर उसकी मौत का सबब हुआ वह उसी का है.

केवल इतना ही नहीं, अभी साँवलसिंह मुन्दर को छूने जाकर अपनी उंगलियों में लग गए हुए खून की तरफ डरी हुई निगाहों से देख रहा था कि चारों तरफ से आकर कई आदमियों ने उसे घेर लिया और " यही है, इस औरत का खूनी यही है! " कहकर चिल्लाने लगे.

आठवां व्यान।

किसी तरह की आवाज सुनकर भूतनाथ चौंक पड़ा और उठकर इधर - उधर देखने लगा.

मन्दिर से कुछ फासले पर और गंगाजी से बहुत दूर मिट्टी की एक कच्ची और लम्बी दीवार भूतनाथ को दिखाई पड़ी जिसको देखने से किसी देहाती मकान के आँगन का भ्रम होता था मगर जो नई ही बनी जान पड़ती थी.

भूतनाथ का ध्यान इसी तरफ गया क्योंकि उसे सन्देह हुआ कि हो न हो वह आवाज इसी के अन्दर से आई है, आखिर उससे रहा न गया और वह मन्दिर से उतर उसी तरफ को बड़ा.

उसके शागिर्द भी साथ हुए पर उसने यह कहकर उन्हें रोक दिया कि तुम लोग यहीं रहो मैं अभी वापस आता हूँ.

अगर तुम्हारी मदद की जरूरत पड़ेगी तो सीटी बजाऊँगा.

लाचार वे दोनों वहीं रह गए और अकेला भूतनाथ उस दीवार की तरफ बड़ा.

बहुत जल्दी ही यह उस जगह पहुँच गया और तब उस दीवार के चारों तरफ इस उम्मीद में घूमने लगा कि कहीं कोई खिड़की या दरवाजा दिखाई पड़ जाय तो अन्दर के हाल - चाल का पता लगावे क्योंकि जो आवाज उसने सुनी थी इसी के अन्दर से आई जान पड़ती थी.

मगर ताज्जुब की बात थी कि चारों तरफ घूम आने पर भी कहीं कोई ऐसा रास्ता दिखाई न पड़ा जिससे अन्दर जाया या अन्दर का कुछ हाल देखा - सुना जा सके.

फिर भी यह सन्देह भूतनाथ को जरूर हो गया कि इस दीवार के अन्दर कोई - न कोई जरूर है क्योंकि कभी - कभी एक बहुत ही हलकी आवाज जो इस तरह की थी मानों कोई आदमी गहरी साँसें ले रहा हो भीतर से जरूर आती थी.

आखिर भूतनाथ से रहा न गया.

उस दीवार की ऊँचाई बहुत न थी और मिट्टी की बनी हुई तथा ऊबड़ - खाबड़ होने के कारण उसके ऊपर चढ़ जाना भी कठिन न था अस्तु वह दीवार पर चढ़ गया और भीतर झांक कर देखने लगा.

मगर न जाने भीतर भूतनाथ को क्या सामान दिखाई पड़ा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया और एक ही निगाह बाद वह कॉंपता हुआ नीचे उतर आया.

इस समय भूतनाथ की सूरत जो देखता यही समझता कि उसे जूड़ी बुखार चढ़ आया है या वह बरसों का बीमार है.

उसका चेहरा पीला हो गया था, बदन कॉप रहा था, शक्कल से हवाई उड़ रही थी और माथे पर पसीना आया हुआ था.

वह सिर नीचा करके दीवार के साथ उठंग बल्कि गिर गया और न जाने क्या - क्या सोचने लगा.

मगर ऐसी हालत भी उसकी देर तक न रही, वह फिर हिम्मत करके उठा और न जाने क्या सोच पुनः उस दीवार पर चढ़ा इस बार भी पहिले की तरह केवल सिर भीतर झुका कर देर तक वह कुछ सोचता रहा, तब दीवार पर चढ़ा और भीतर की तरफ कूद गया.

आइए पाठक, हम लोग भी भूतनाथ के साथ ही साथ भीतर चलें और वहाँ का रंग - डंग देखें.

एक छोटा - सा मैदान चारों तरफ करीब पुरसा भर ऊंची दीवार से घिरा हुआ था.

दीवार जो बाहर साफ और चिकनी थी और मालूम होता था मानों संगीन बनी हुई है पर कुछ गौर करने पर यह भ्रम दूर हो जाता था और पता लगता था कि यह मुसौवर की कारीगरी है जिसने रंग - रोगन की मदद से ऐसा भ्रम पैदा करने वाला सामान तैयार कर दिया है.

चारदीवारी के साथ चारों तरफ तरह - तरह की इमारतें बनी हुई दिखाई पड़ रही थीं, बीच की जमीन जिस पर पेड़ - पौधे की क़िस्म में घास का एक पत्ता तक न था, एकदम साफ और चिकनी थी और उसे भी सरसरी निगाह में देखने से यही भ्रम होता था मानों पत्थर का फर्श बिछा हुआ हो पर यह भी उस दीवार की तरह केबल कारीगर

की कारीगरी ही थी जिसने जमीन को रंग और उस ऊँची से लकीरें खींच संगीन फर्श की नकल बनाई थी.

मगर जो चीज वास्तव में ताज्जुब करने की थी वह इस सरजमीन के बीचों - बीच में बना हुआ एक खम्भा था जिसके ऊपर लाल रंग के एक दैत्य की शक्ल की सिर - कटी लाश पड़ी थी जिसका बदन एकदम नंगा था और जिसके धड़ से निकला हुआ खून चारों तरफ फैला हुआ था तथा सामने की तरफ एक डरावना आदमी खड़ा हुआ था जिसका समूचा बदन यहाँ तक कि चेहरा भी काले कपड़े से ढंका हुआ था, इस आदमी के दाहिने हाथ में खून से भरी एक तलवार थी और बाएँ हाथ में एक औरत का सिर था जिसे वह बालों के जरिये पकड़े हुए था.

इस सिर से टपकते हुए खून से उस मूर्ति के पैर तथा वह खम्भा लाल हो रहा था.

यह एक ऐसा भयानक दृश्य था जिसे देख बड़े - बड़े जीबट वालों की धोती ढीली हो जा सकती थी अस्तु भूतनाथ इसे देखकर घबड़ा गया.

यह कोई ताज्जुब की बात न थी.

परन्तु उसके साथ ही हमारे पाठकों के लिए भी यह डर और ताज्जुब की जगह है, क्योंकि वे पहले भी यहाँ की सैर कर चुके है और इस स्थान को देखकर जरूर चौंकेंगे क्योंकि यह जगह उन्हें कुछ पहिचानी हुई - सी मालूम पड़ेगी और वास्तव में बात भी यही है, जरा गौर करने ही से वे समझ जाएँगे कि यह उसी स्थान की सच्ची और अचानक देखने से धोखे में डाल देने वाली नकल बनाई गई है जहाँ पहुँच कर प्रभाकरसिंह के आफत में पड़ने का हाल हम दो बयानों में ऊपर लिख आए वैसा ही संगीन सहन, चारों तरफ की वैसी ही इमारतें, बीच की वही मूर्ति ठीक उस तिलिस्मी जगह की याद पैदा कर देती थी जहाँ प्रभाकरसिंह के साथ हम लोग जा चुके हैं.

अगर कुछ फर्क है तो इतना ही कि वह नकाबपोश आदमी, वह औरत की लाश और वह कटा हुआ सिर वहाँ न था जो यहाँ दिखाई पड़ रहा है, साथ ही साथ अगर पाठक कुछ भी गौर करेंगे तो एक बात ताज्जुब की उन्हें और भी दिखाई पड़ेगी जो यह थी कि यह सब सामान - नकाबपोश आदमी, सिर कटी लाश, और वह कटा सिर, असली न था

बल्कि मोम या मिट्टी का बिल्कुल बनाबटी बना हुआ था, पर कारीगर ने रंग - रंगा कर उसे कुछ ऐसा बना दिया था कि एकदम असली का धोखा होता था.

चालाक भूतनाथ ने यह बात पहली ही निगाह में जान ली थी कि यह बनावटी खेल है.

तब फिर उसके इस तरह डरने का क्या कोई खास सबब था?

वेशक ऐसा ही है क्योंकि यह लाश, यह सिर, यह मूरत और यह समय उसके एक पिछले पाप की याद दिला रहा था, ऐसा पाप जिसे उसने अपने दिल की सबसे भीतरी तहों में छिपाकर रखा था और जो अभी तक कभी किसी पर प्रकट न हुआ था.

सकते की - सी हालत में उस नकाबपोश शक्ल के सामने खड़ा भूतनाथ यही सोच रहा था कि वह स्वप्न देख रहा है या जीता - जागता यह सब हाल देख रहा है.

इस समय जो खयाल उसके मन में सबसे तेजी के साथ चक्कर मार रहा है वह यह था, जिस आदमी ने यह सब मूरतें इस तरह पर बना कर यहाँ रखी हैं वह बेशक उसके इस पुराने भेद का रत्ती - रत्ती हाल जानता है और इस तरह पर उस प्राचीन और करीब - करीब भूले जा चुके हुए दृश्य को उसके सामने लाकर जरूर कोई - न - कोई फसाद खड़ा करने का उसका इरादा है, जिस तरह रास्ता चलता हुआ कोई मुसाफिर यकायक अपने सामने खुखार शेर को देखकर चौंक उठता है और डर कर सकते की - सी हालत में खड़ा हो जाता है उसी तरह खड़ा होकर भूतनाथ अपने सामने की चीजें देख रहा था कि यकायक किसी तरह की आवाज ने उसका ध्यान बंटाया.

उसे ऐसा मालूम हुआ मानों कोई आदमी उसके पास ही कहीं खूब जोर जोर से साँस ले रहा हो.

यही आवाज उसने इस दीवार के अन्दर आने के पहले भी सुनी थी.

वह ताज्जुब से अपने चारों तरफ देखने लगा मगर कहीं किसी आदमी की सूरत दिखाई न पड़ी उसका ताज्जुब और भी बड़ा और वह गौर करने लगा कि वह आवाज कहाँ से आती है, परन्तु शीघ्र ही मालूम हो गया कि खम्भे पर बैठी हुई उस लाल मूरत के दोनों होंठ कुछ खुले हुए हैं और उन्हीं के अन्दर से वह आवाज इस प्रकार आ रही है मानों वह मूरत साँस ले रही हो.

भूतनाथ की घबराहट और भी बढ़ गई और उसने चाहा कि मूरत के कुछ और पास पहुँच कर गौर से देखे कि यह क्या माजरा है मगर वह यकायक रुक गया जब उसने देखा कि वह आवाज कुछ बदल रही है और ऐसा जान पड़ता है मानों वह मूरत कुछ बोल रही हो.

भूतनाथ ने डर और घबराहट से उस मूरत के मुँह से ये शब्द निकलते हुए सुनेः " कौन?

भूतनाथ! आओ मेरे दोस्त !! इतने दिनों तक तुम कहाँ थे?

तुम्हारी राह देखता हुआ मैं अभी तक प्यासा बैठा हुआ हूँ, न - जाने इन शब्दों में क्या असर था की भूतनाथ इन्हें सुनते ही एकदम बदहवास हो गया और इस तरह इधर - उधर देखने लगा मानों वहाँ से भाग जाने की राह खोज रहा हो, साथ ही साथ डरती हुई निगाह अपने चारों तरफ इस मतलब से भी डालने लगा कि किसी और ने तो इस मूरत के मुंह से निकले हुए वे शब्द नहीं सुन लिए, वह मूरत दो - एक सायत तक चुप रही, इसके बाद पुनः उन पत्थर के होठों में से ये शब्द निकले:

" क्या तुम यह बलि कृया पूरी न करोगे?

क्या मेरे शताब्दियों के सूखे हुए होंठों में इस सिर से निकली हुई लहू की बूंदे डाल उन्हें तर न करोगे?

अगर ऐसा न करोगे तो किस प्रकार तुम वह चीज पाओगे जिसकी आशा में तुमने यह हत्या की है?

भूतनाथ की हालत इन शब्दों को सुनकर और भी खराब हो गई.

उसने पीछे हटना चाहा मगर ऐसा मालूम हुआ मानों जमीन ने उसके पैर पकड़ लिए हैं और वे कभी छुटेंगे ही नही.

वह लाचारी की - सी हालत में खड़ा हुआ कभी उस मूरत की तरफ और कभी अपने चारों तरफ देखने लगा.

थोड़ी देर बाद वह मूरत फिर बोली " खैर तुम जानो.

मैं हजारों बरस से प्यासा हूँ, और न जाने कब तक ऐसा रहूँगा! तुमने मुझे आशा दिला के निराश किया! खैर मैं तो अब चुप हो जाता हूँ पर तुम भी यह याद रखो कि यह हत्या

व्यर्थ ही तुमने अपने सिर ली बिना इस खून की बूंदे मेरे मुँह में पड़े तुम ' शिवगड़ी का खजाना नहीं पा सकते! " इतना कहकर वह मूरत चुप हो गई मगर भूतनाथ की हालत अब इतनी खराब हो गई थी कि वह खड़ा न रह सका और आधी बेहोशी की हालत में उसी जगह जमीन पर गिर पड़ा.

न - जाने कब तक वह इसी हालत में पड़ा रहता अगर थोड़ी देर बाद किसी प्रकार की आहट ने उसे चौंकाया न होता.

उसने सिर उठाया और अपने दोनों शागिर्दो को दीवार के ऊपर से झाँकते पाया.

हम नहीं कह सकते कि इस समय अपने शागिर्दो को वहाँ देखकर भूतनाथ खुश हुआ या नाखुश, मगर अपनी बेबसी की हालत पर उसे कुछ शर्म जरूर आई, वह फुर्ती से उठ खड़ा हो गया.

इसी समय रामगोबिन्द ने दीवार पर से पुकार कर कहा, " आपको लौटने में बहुत देर करते देखकर हम लोग यहाँ चले आये.

मगर गुरुजी, यह कैसा नाटक यहाँ रचा गया है, ये सब आदमी कौन हैं?

वह राक्षस क्या है और वह लाश कैसी है?

" भूतनाथ ने कुछ रुकते हुए कहा, " यह सब किसी शैतान की शैतानी मालूम होती है.

यही सब खेल देख इसकी जाँच करने मैं यहाँ रुक गया था पर अभी कुछ निश्चय नहीं कर पाया कि यह क्या बला है.

खैर अब तुम लोग यहाँ तक आ ही गए हो तो भीतर भी चले आओ और यह जाँचने में मेरा हाथ बटाओ कि यह सब क्या और किसकी कार्रवाई है, " आज्ञा पाते ही भूतनाथ के दोनों शागिर्द अहाते के अन्दर कूद आए और भूतनाथ के पास आकर खड़े हो गए भूतनाथ बोला, “ ये सब मूरतें जो बनावटी हैं और मोम की बनी मालूम होती हैं किसी खास मतलब से यहाँ रखी गई है.

दोनों शागिर्द:

(ताज्जुब से) मूरतें बोलती हैं! भूत:

हाँ, अभी यह (हाथ से उस पिशाच की तरफ बताकर) शैतान बोल रहा था और मैं यही जानने की कोशिश कर रहा था कि यह आबाज इसके मुँह से कैसे निकली है.

इसमें तो कोई शक ही नहीं है कि मिट्टी, पत्थर या मोम की पुतलियाँ आप से आप बोल नहीं सकतीं, जरूर किसी ने कुछ चालाकी की हुई है.

मैं कई बार इस तरह की मूर्तियों को बोलते सुन चुका हूँ पर हर दफे इनके भीतर किसी - न - किसी प्रकार की ऐयारी ही पाई, इस जगह भी जरूर कुछ वैसा ही मामला है.

रामगोविन्द:

जी हाँ, आपने एक बार मुझसे कहा था कि अगस्ताश्रम नामक किसी स्थान में .

.

भूत:

(जल्दी से) हाँ हाँ, वैसा ही कुछ मामला यहाँ भी जान पड़ता है और जरूर इन मूरतों के भीतर कोई खास तरकीब की गई है जिसके जरिए ये बोलती चालती हैं.

(अपने चारों तरफ देख के) यह सब सामान मुझे नया ही बना हुआ जान पड़ता है क्योंकि पहिले इस जगह किसी तरह की कोई इमारत नहीं थी.

इसके चारों तरफ घूम - फिरकर देखने से शायद कुछ सुराग लग सके मगर इसके पहिले में इन मूरतों की जाँच करना चाहता हूँ.

(रामगोविन्द से) तुम जरा इस खम्भे पर की मूरत को धक्का देकर देखो तो सही कि जड़ी हुई है या अलग है.

रामगोविन्द उस शैतान की मूरत के पास गया और उसे हाथ से धक्का दिया जब वह न हिली तो दोनों हाथ लगा और जमीन से पैर अड़ा जोर से धक्का देना चाहा मगर इसी समय उस मूरत के मुँह से जोर से आबाज आई, " बस खबरदार! " यह अचानक की आवाज जो किसी पिशाच की आवाज की तरह भयानक मालूम पड़ती थी सुनकर रामगोबिन्द चौंक गया और कुछ डर के साथ कभी उस मूरत और कभी भूतनाथ की तरफ देखने लगा.

भूतनाथ यह देख बढ़ावा देने वाले शब्दों में बोला, " तुम उस शैतान के फेर में न पड़ो जो इस मूरत के मुँह से इस तरह की बातें कर रहा है! मैं ऐसे तमाशे बहुत देख चुका हूँ, मैंने जो कहा सो करो और जोर लगाकर उस खम्भे को उलट दो.

(बलदेव से) तुम भी जरा अपने भाई की मदद करो तो! "

दोनों भाई भूतनाथ की बात सुन आगे बड़े मगर कुछ सकपकाते हुए.

अभी दोनों ने मूरत को हाथ भी नहीं लगाया था कि एकाएक फिर जोर से आवाज आई, " कम्बख्तों! तुम्हारी शामत आई है! क्या तुम मेरी बातों पर यकीन नहीं करते! भूतनाथ के साथ - साथ क्या तुम लोग भी जहन्नुम में जाना चाहते हो?

" भूतनाथ भी मूरत के पास आ गया और अकड़ कर बोला, " वेशक मैं तुम्हारी बात पर कुछ भी विश्वास नहीं करता.

भला यह क्या कभी संभव है कि निर्जीव मूरत आदमियों की तरह बात करे, जरूर यह किसी तरह की ऐयारी है! " !! मूरत जोर से हँस पड़ी और तब बोला, " किस तरह तुम्हें यह विश्वास होगा कि यह किसी ऐयार की ऐयारी नहीं! क्या मैं अपने वास्तविक शरीर से तुम्हारे सामने आ जाऊँ.

भूत:

अगर इस मूरत के अलावे तुम्हारा कोई अलग अस्तित्व भी है तो मैं जरूर उसे देखना चाहता हूँ, मूरत:

अच्छी बात है तो मैं भी तुम्हारे सामने आने के लिए तैयार हूँ, तुम या तुम्हारे ये शागिर्द डरेंगे तो नहीं?

भूत:

नहीं, बिल्कुल नहीं बल्कि तुम्हें तुम्हारी शैतानी का मजा चखाने को तैयार रहेंगे.

मूरत:

अच्छी बात है, तो देखो, मैं आया! यकायक जोर से एक पटाके की - सी आवाज आई और इन तीनों के सामने जमीन पर कुछ धुआं दिखाई पड़ने लगा.

यह धूआं धीरे - धीरे गाढ़ा हुआ और तब उसके अन्दर कोई चीज दिखाई देने लगी जो वास्तव में मनुष्य की हड्डियों का एक ढाँचा था.

धूआं तो कुछ देर बाद हलका होकर उड़ गया मगर वह मनुष्य की हड्डियों का ढांचा (जिसे देखकर हमारे पाठक तुरन्त पहिचान जाएँगे क्योंकि यह वास्तव में वही तिलिस्मी शैतान है जिसे वे कई बार पहिले देख चुके हैं) दो कदम आगे बढ़ आया और अपने बिना ओठों के मुँह से भयानक हँसी हँसकर आसमान गुंजा देने वाले भारी स्वर में बोला, “ क्यों, मुझे देख लिया न! अब क्या चाहते हो?

क्या मैं तुम तीनों को कच्चा ही चबा जाऊँ?

"

भूतनाथ और उसके दोनों शागिर्दो का डर के मारे बुरा हाल हो रहा था.

भूतनाथ तो खैर किसी तरह होश सम्हाले हुए भी था पर उसके दोनों शागिर्द तो इस तरह कॉप रहे थे मानों उन्हें जुड़ी चढ़ आई हो.

ये लोग कॉपते हुए धीरे - धीरे भूतनाथ की तरफ खसकते जा रहे थे और जिस समय अपनी हिम्मत को हाथ में ले भूतनाथ एक - दो कदम आगे बढ़ आया तो दोनों दबक कर उसके पीछे हो गए.

उस शैतान ने डरावनी आवाज में कहा, " क्यों भूतनाथ, अब क्या कहते हो?

क्या अब कोई और भी सबूत चाहते हो?

" भूतनाथ सकपकाता - सा होकर बोला, “ आखिर आप कौन हैं और क्या चाहते हैं?

" शैतान अपनी डरावनी आवाज में बोला, " कौन हूँ?

क्या तुम्हें यह अभी तक जानना बाकी है! तुम तो आज बहुत दिनों से मुझे जानते हो?

खैर अगर भूल गए हो तो मैं तुम्हें परिचय देने को तैयार हूँ.

अच्छा मैं अपना कौन - सा परिचय तुम्हें दूं?

भिन्न - भिन्न अवस्था और भिन्न - भिन्न स्थानों में मैं भिन्न - भिन्न नाम से पुकारा जाता हूँ, तुम मेरा कौन - सा परिचय जानना चाहते हो?

" भूतनाथ कुछ जबाब न दे सका.

वह शैतान कुछ देर तक बिना होठों के मुँह की डरावनी मुस्कुराहट के साथ उसकी तरफ इस आशा से देखता रहा कि शायद वह कुछ बोले, मगर उसे चुप पा खुद ही बोला.

" अच्छा मैं अपना वह परिचय तुम्हें देता हूँ जिससे तुम बहुत सहज में मुझे पहिचान लोगे, मैं वही हूँ जिसके सामने तुम अपने एक कमीने दोस्त के साथ आए थे! मैं वही हूँ जिसके सामने तुमने भुवनमोहिनी के ' आँचल पर गुलामी की दस्तावेज लिख देने को कहा था! और मैं वही हूँ जिसके सामने तुमने शिबगड़ी का खजाना लेने की लालच में उससे की हुई अपनी प्रतिज्ञा को बिलकुल भूलकर एक बेकसूर औरत का सिर काट डाला था और उस सिर से निकले हुए खून की आखिरी बूंदे मेरे मुँह में डाल कर उस खजाने की चाबी पाना चाहा था पर कुछ विघ्न पड़ जाने से वह काम पूरा न करके और मुझे प्यासा छोड़ के भाग गए थे.

दूसरे शब्दों में मैं रोहतास मठ का पुजारी हूँ !!

कहो अब तुम मुझे पहिचान गए या कोई और परिचय देने की आवश्यकता है! " बादल की गरज की तरह गम्भीर शैतान का स्वर आकाश में फैल गया, मगर किसी ने उसका उत्तर न दिया, उसकी बातों में न जाने क्या असर था कि भूतनाथ बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा था और उसकी डरावनी शक्कल न देख सकने के कारण भूतनाथ के दोनों शागिर्द दोनों हाथों से अपना - अपना मुँह ढाँके जमीन पर औंधे पड़े हुए थे.

पृष्ठ संख्या 34 में दिए हुए मजमून का अर्थ यह है:

" 4 अक्षर आगे बढ़ाओ.

" कोने वाले फूल खींचों, मगर के पेट में तख्ती है.

उसमें लिखे मुताबिक करो.

शेर मत छोड़ो.

" " पुतलों से होशियार! ।

।

सोलहवाँ भाग समाप्त ॥

सत्रहवाँ भाग

पहला व्यान।

अपने दोनों साथियों - श्यामसुन्दर और गोपाल से विदा होकर वह औरत घाट की सीढ़ियाँ चड़ उन तंग और बदबूदार गलियों में घुसी जिनके लिए काशी बदनाम है.

कितने ही अंधेरे रास्तों को पार करती हुई वह शीघ्र ही एक ऐसे मौहल्ले में जा पहुंची जहाँ के ज्यादातर मकान यद्यपि संगीन और तिमंजिले - चौमंजिले थे फिर भी गलियाँ उसी तरह की और अँधेरी थीं जैसी कि अब तक मिलती आई थीं, यद्यपि सुबह का समय हो रहा था और इस सबब से गंगास्नान के लिए जाने वाले औरत - मर्दो की गिनती बढ़ने लगी थी फिर भी अन्त में जिस गली में पहुँच एक संगीन मकान के सामने वह औरत रुकी, उस जगह कोई भी चलता - फिरता नजर नहीं आ रहा था और सन्नाटा ऐसा था कि किसी नए आने वाले को यही मालूम होता कि इन मकानों में किसी का रहना होता ही नहीं है, मगर वास्तव में यह बात नहीं है और इन मकानों में रहने वाले गिनती में भी किसी तरह कम नहीं हैं लेकिन अगर कुछ फर्क है तो सिर्फ इतना ही कि यहाँ के ज्यादातर बाशिन्दे उन लोगों में से हैं जिन्हें दिन के सूर्य की जगमगाती रोशनी के बजाय रात की अँधेरी ही ज्यादा प्यारी होती है.

जिस मकान के सामने वह आकर रुकी उसका दरवाजा छोटा मगर बहुत ही मजबूत बना हुआ था.

औरत कुछ देर तक तो चुपचाप खड़ी कुछ सोचती या शायद आहट लेती रही.

इसके बाद बहुत धीरे से उसने लोहे का मोटा कुण्डा सिर्फ एक दफे खटखटाया.

धीमी आवाज मुश्किल से खतम हुई होगी कि ऊपर के मंजिल की एक खिड़की आहिस्ते से खुली और किसी ने सिर निकालकर नीचे की तरफ झाँका.

सिर्फ एक औरत को खड़ा पा देखने वाले ने पूछा, " कौन है?

" औरत ने जबाब दिया.

" रामधनी.

" " अच्छा " कहकर पूछने वाले ने सिर भीतर कर लिया और खिड़की पुनः बन्द हो गई, थोड़ी देर बाद दरवाजे के भारी क्रीड़े और बेंजड़े के हटने की आवाज आई और दरवाजा जरा - सा खुला.

किसी ने भीतर से पूछा, “ पहिचान बताओ.

" इस औरत ने जवाब दिया, " कामेश्वर! " मालूम होता है कि जो इशारा इस औरत ने बताया उसके सुनने के लिए पूछने वाला तैयार न था क्योंकि कामेश्वर ' शब्द सुनने के साथ ही उसके मुंह से एक आश्चर्य की आवाज निकल गई जिसे उसने तुरन्त ही दबाया और साथ ही कहा, " अरे तुम, अच्छा जल्दी भीतर आ जाओ! " आने वाले को भीतर कर दराबाजा तुरन्त ही बन्द कर लिया गया जिससे उस जगह घोर अंधकार छा गया क्योंकि वहाँ किसी तरह की रोशनी न थी, पर सामने का दालान पार कर बाद में पड़ने वाले चौक (ऑगत) में सुबह का पहिला चाँदना कुछ - कुछ झलक मारने लगा था.

आगे - आगे दरवाजा खोलने वाली (क्योंकि वह भी औरत ही थी) और पीछे - पीछे उसका इशारा पाकर बढ़ती हुई यह नई आने वाली चल कर उस चौक में पहुँची और वहां पर एक ने दूसरे की शक्ल अच्छी तरह देखी.

आने वाली के मुँह से निकला, " बेगम! " दरवाजा खोलने वाली के मुंह से निकला, “ नन्हों " और दोनों एक दूसरे के गले से लिपट गई.

बहुत दिनों के बिछुड़े हुए प्रेमियों की तरह ये दोनों बहुत देर तक एक - दूसरे से चिमटी रहीं और जब अलग हुई तब भी एक ने दूसरे का हाथ न छोड़ा.

आँगन के दक्खिन तरफ के एक बड़े दालान में चौकी के ऊपर साफ - सुथरा फर्श बिछा हुआ था जिस पर एक - दूसरे का हाथ पकड़े दोनों जाकर बैठ गईं और आपस में बातें करने लगीं.

हमारे पाठक इस बेगम को आज के पहिले कई दफे देख चुके हैं और उसे अच्छी तरह पहिचानते हैं पर नन्हों को इसके पहिले देखने का शायद उन्हें कोई मौका नहीं पड़ा है, फिर भी चन्द्रकान्ता सन्तति में इसका नाम कई दफे आ चुका है और प्रेमी पाठक इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि इसका भी भूतनाथ की जिन्दगी से किसी तरह का बहुत ही गहरा ताल्लुक था, इसलिए हम इस जगह इसका नखशिख कुछ खुलासे तौर पर बयान करके तभी आगे बढ़ेंगे क्योंकि सम्भव है कि आगे भी कई दफे इसको देखने का पाठकों को मौका पड़े क्योंकि भूतनाथ की जिन्दगी को चौपट करने बालियों में से यह भी एक ऐसी औरत थी जिसने उसको जीते जी मुर्दे से बदतर बनाकर छोड़ दिया था.

नन्हों की उम्र वास्तव में पचीस बरस से कुछ ऊपर ही होगी पर इसका नखशिख कुछ ऐसा था तथा काठी भी ऐसी अच्छी विधाता ने दे रखी थी कि खूब गौर से देखने वाला भी इसे किसी तरह पन्द्रह - सोलह बरस से ऊपर की नहीं बता सकता था.

इसका रंग साफ गोरा, चेहरा गोल और बड़ा ही नमकीन, आँखें कटीली, मगर नाक के दोनों बगल कुछ ज्यादा हट्टी हुई, और होंठ लाल, यद्यपि कुछ मोटे थे.

इसके गालों पर कुदरती गुलाबी रंग ऐसा सुन्दर मालूम होता था कि देखने वाले का मन बेतहाशा हाथ से निकल जाता था.

ठूड्डी यद्यपि कुछ चपटी और चौड़ी थी जो इसके जिद्दी स्वभाव का परिचय देती थी फिर भी बुरी नहीं मालूम होती थी.

कद नाटा, शरीर भरा हुआ, और हाथ - पाँव मुलायम तथा सुडौल थे.

गरज की सरसरी निगाह से देखने में यकायक यही मालूम होता था कि मानों इन्द्रलोक की कोई परी संसार में उतर आई पर इस औरत का दिल गजब का काला था.

और यह एक ऐसी जहरीली नागिन थी. की जिसके काटे का कोई इलाज ही नहीं था.

इस समय यह मामूली पोशाक में थी. पर यदि क़िमती और सुन्दर कपड़े पहिने रहे तो इसमें कोई शक नहीं कि बड़े - बड़े ऋषियों और मुनियों का भी मन इसे देखते ही हाथ से निकल जाये.

बेगम ने नन्हों से पूछा, " तुमको यकायक यहाँ देख मुझे आश्चर्य होता है और मैं यह पूछते डरती हूँ कि मेरी चीठी लेकर जो आदमी गया था वह तुमसे मिला या नहीं! "
नन्हों:

मैं इसी तरफ आ रही थी इससे शहर के बाहर होते ही उसकी मुलाकात मुझसे हो गई, मैंने तुम्हारी चीठी का मजमून पड़ा और उसी समय अपने दो आदमियों के साथ दोनों ऐयारों को उधर रवाना कर दिया जिधर का तुमने इशारा किया था.

बेगम:

अर्थात् लामाघाटी की तरफ?

नन्हों:

हाँ, तुम्हारे दोनों खयाल ठीक थे यानी भूतनाथ के ही आदमी उसको ले भागे थे और उसे लेकर लामाघाटी ही की तरफ गए भी थे.

बेगम:

मेरे मन में यही शक़ बैठा कि हो न हो यह भूतनाथ का काम है और मैंने सोचा कि उसका सबसे गुप्त और मजबूत अड्डा लामाघाटी ही है जो यहाँ से भी पास पड़ता है, अस्तु अगर उसके कब्जे में यह आदमी पड़ा होगा तो जरूर वहीं भेजा भी गया होगा.

तब फिर क्या हुआ?

तुम लामाघाटी का रास्ता बखूबी जानती हो.

क्या तुम्हारे आदमी वहाँ तक पहुँचे और वहाँ उसका पता मिला?

इसका जवाब नन्हों ने कुछ भी न दिया बल्कि सिर नीचा कर लिया और अपनी आँखों से गर्म - गर्म आंसू की बूंदे गिराने लगी जो शीघ्र ही यहाँ तक बड़ी कि हिचकी आने लगी और बिलख - बिलख कर रोने लगी.

बेगम को उसकी यह हालत देख कर बड़ा ही ताज्जुब हुआ, उसने प्रेम से नन्हों का पंजा पकड़ लिया और पूछा, " यह क्या बहिन, तुम रोने क्यों लगीं?

क्या उसका कुछ पता नहीं लगा या कोई और घटना हुई?

" नन्हो यह सवाल सुन और भी फूट - फूट कर रोने लगी यहाँ तक कि बेगम मुहब्बत के साथ उसके गले से लिपट गई और अपने आँचल से उसके आँसू पोंछती हुई बोली, " हैं बहिन, यह मामला क्या है.

आखिर तुम कुछ बताओ तो सही! हुआ क्या है, कुछ यह भी तो मालूम हो?

तुम इतने कड़े कलेजे वाली होकर भी इस तरह बच्चों की तरह रो क्यों रही हो?

"

बड़ी मुश्किल से हिचकियाँ लेते नन्हों के मुंह से निकला, " वह जान से मारा गया.

" चौंक कर बेगम ने कहा, " हैं, जान से मारा गया! नहीं - नहीं सो भला कैसे हो सकता है, यह तुम गलत कह रही हो.

नन्हों ने अपनी लाल आँखों को आँचल से पोंछते हुए कहा, “ नहीं बहिन, मैं बिल्कुल सही कह रही हूँ, मेरा भाग्य सम्हलता - सम्हलता फिर फूट गया और वह सचमुच ही मारा गया.

' बेगम:

जान से मारा गया! नन्हों:

हाँ.

बेगम:

आखिर कैसे?

भूतनाथ के हाथ से तो यह बात हो ही नहीं सकती, रह गए उसके शागिर्द और नौकर सो भी .

.

.

नन्हों:

बात यह है कि जिस वक्त मेरे आदमी उसको लामाघाटी से छुड़ा कर ले चले तो भूतनाथ के आदमियों ने देख लिया और लड़ पड़े, मेरे आदमियों से उनकी घमासान लड़ाई हो गई जिसमें उसने कमजोर और बीमार होते हुए भी मेरे ।

दुश्मनों का साथ दिया और मेरे आदमियों पर ऐसा सख्त हमला किया कि वे घबड़ा उठे, लड़ाई कुछ ऐसी गुत्थमगुत्था की हो गई कि उसी के दरमियान उसे कई जख्म आ गये जिनकी बदौलत कल रात उसने दम तोड़ दिया.

इतना हाल कह नन्हों फिर सिसक - सिसककर रोने लगी.

बेगम के ऊपर भी उस कैदी के मारे जाने के समाचार ने बहुत ही गहरा असर किया था पर इस समय अपनी सखी को समझा - बुझाकर शान्त करना बहुत जरूरी समझ उसने अपने को सम्हाला और नन्हो को दम - दिलासा देकर शान्त करने की कोशिश करने लगी.

बहुत तरह की बातें और तरह - तरह की कसमें दे - दिला कर उसने उसका अफसोस क़म किया और जब देखा कि कुछ शान्त हुई है तो बोली " तुम्हें तो मौत का बदला लेना चाहिए न की इस तरह पर रंज और अफसोस को पल्ले बाँधना! जो हो गया वह तो हो गया और मरा हुआ आदमी लाख अफसोस करने पर भी लौटकर आता नहीं.

तुम्हारे लिए तो अब सिर्फ यही रास्ता हो सकता है कि उसकी मौत का बदला लो और जब तक ऐसा न हो चुके शान्त न हो.

जिसकी बदौलत यह हुआ है उस आदमी को दुनिया से उठा देना ही तुम्हारे दिल में सबसे ज्यादा शान्ति देगा.

रोना और बिलबिलाना कायरों का काम है और उससे सिर्फ दिल की कमजोरी जाहिर होती है.

" नन्हो ने यह सुन आँसुओं से भरी अपनी आँखें बेगम की तरफ उठाई और कहा, " मैंने कसम खाई है और अब फिर उस कसम को दोहराती हूँ कि जैसे बन पड़ेगा वैसे भूतनाथ को इस दुनिया से उठा दूंगी जिसकी बदौलत मेरा सुख मिट्टी में मिल गया.

" बेगम:

बेशक यही अब तुम्हारे लिए मुनासिब रास्ता है और मुझे विश्वास है कि अगर तुम कोशिश करोगी तो यह कोई मुश्किल काम न होगा.

तुमको भूतनाथ की जिन्दगी के ऐसे - ऐसे अनूठे भेद मालूम हैं कि अगर चाहो तो दम के दम में उसको मिट्टी में मिला सकती हो.

रहा उस मरने वाले का गम, सो तुम इतने दिनों से बराबर उसको मरा ही समझती चली आई थीं और तुम्हारे लिये वह अब तक मरा हुआ था भी.

अब भी उसे वैसा ही समझो और हिम्मत के साथ क़मर कस कर मैदान में उतर जाओ, ईश्वर तुम्हारी मदद करेगा.

नन्हों:

(जिसकी आँखें बेगम की बातें सुन डरावने तौर पर लाल हो गईं थीं) मगर यह भी तो याद रखो सखी कि भूतनाथ गजब का कॉइयाँ, चालाक, धूर्त और हिम्मतवर ऐयार है और उसका मुकाबला करना किसी ऐसे - वैसे का काम नहीं है.

बेगम:

सो ठीक है पर तुम यह भी जानती हो कि चिऊँटी की जब जान पर बन आती है तो हाथी तक को मारने को तैयार हो जाती है.

अगर हम लोग मिलकर कोशिश करेंगी तो एक भूतनाथ क्या कितनों को जहन्नुम में मिला सकती हैं.

उसके खिलाफ जो मसाला हम लोगों के पास है वह क्या कभी बेकार जा सकता है?

तुम्हीं ने उस दिन कहा था कि कामेश्वर और भुवनमोहिनी वाले भेद के बारे में जो सबूत तुम दे सकती हो उससे भूतनाथ का पूरा कसूर साबित हो जायगा और वह किसी तरह भी अपनी बेकसूरी साबित न कर सकेगा.

क्या तुम कोशिश करके उस सबूत को कब्जे में कर सकती हो?

नन्हों:

कर सकती ही नहीं बल्कि कर भी चुकी.

बेगम:

(चौंक कर) हैं, क्या कहा तुमने?

नन्हों:

यही कि उस सबूत को मैंने अपने हाथ में कर लिया.

बेगम:

(खुश होकर) सो कैसे, सो कैसे?

नन्हों:

जब आ गई हूँ तो यह सब हाल तुम्हें सुनाऊँगी ही पर पहिले यह बताओ कि आज इस मकान में इस कदर सन्नाटा क्यों है, मनोरमाजी कहाँ हैं और उनके आदमी सब कहाँ चले गए जो घर भर में कोई दिखलाई ही नहीं पड़ता.

मैं यहाँ मनोरमाजी से ही मिलने आई थी पर अपने गम में ऐसा डूब गई कि इस बात को पूछना ही भूल गई.

बेगम:

वे एक दूसरे मकान में हैं और इस मकान में कभी - कभी ही आती हैं.

तुम तो जानती ही होगी कि आजकल उन्होंने श्यामा ' का रूप धारण किया है और भूतनाथ की व्याहता स्त्री बनी हुई हैं.

नन्हों:

हाँ, दारोगा साहब की जुबानी यह हाल मैंने सुना था, तो जान पड़ता है वे इस मकान में नहीं, किसी दूसरी जगह रहती भी हैं?

बेगम:

वे इसके ठीक पिछवाड़े के एक दूसरे मकान में रहती हैं जहाँ से यहाँ आने का एक गुप्त रास्ता है, उसी की राह कभी - कभी जब भूतनाथ के आने का डर नहीं रहता वे इधर आती हैं.

नन्हों:

ठीक है, तो अब उनसे मुलाकात हो सकेगी?

बेगम:

आज कुछ रात रहते ही उन्होंने आने को कहा था पर अभी तक आई नहीं, देखू शायद अब आ सकती हों.

इतना कहकर बेगम उठ खड़ी हुईं, जिस दालान में ये दोनों बैठी हुई थीं उसके पीछे एक बहुत लम्बी कोठरी थी जिसके पाँच दरवाजे जो सभी इस वक्त बन्द थे इसी दालान में खुलते थे.

बेगम ने एक दरवाजा खोला और कोठरी के अन्दर घुसी, कौतूहलवश नन्हों भी साथ हुई, भीतर घुसकर बेगम बाईं तरफ घूमी और इस कोठरी की पूरी लम्बाई तय कर एक दूसरे दरवाजे के पास पहुँची.

यह दरवाजा भी खोला गया और अब ये दोनों जिस कोठरी में पहुंचीं उसके अन्दर इतना अँधेरा था कि हाथ को हाथ नहीं दिखाई पड़ता था.

किसी जगह से सामान निकाल बेगम ने मोमबत्ती बाली जिसकी हलकी रोशनी की मदद से नन्हों ने कोठरी के एक तरफ की दीवार में एक आलमारी बनी हुई देखी जिसमें पल्ले या तख्ते लगे हुए न थे और इसी सबब से वह इस लायक थी कि दो आदमी उसके अन्दर बखूबी खड़े हो सकते थे.

इस आलमारी के निचले हिस्से में एक टुकड़ा रस्सी का दिखाई पड़ रहा था जिसे पकड़कर बेगम ने खींचा.

कुछ देर तक दोनों को खड़े रहना पड़ा और तब एक छोटी घण्टी दो बार बज उठी जिसकी आवाज सुन बेगम ने कहा, “ मनोरमाजी आ रही हैं.

" थोड़ी ही देर बाद खटके की आवाज हुई और उस आलमारी के पीछे की दीवार में रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

मनोरमा उस जगह के बाहर हुई जिसने कोई तर्कीब ऐसी की कि वह रास्ता बन्द हो गया, तब वह घूमी.

पहली निगाह उसकी नन्हो पर गई जिसको पहिचानते ही वह बड़ी मुहब्बत के साथ " प्यारी नन्हों, तू आ गई! " कह कर उसकी तरफ झपटी और उसे गले से लगा लिया.

कुछ देर बाद अलग हुई तो बेगम से भी मिली और तब नन्हो का हाथ पकड़े यह कहती हुई उस कोठरी के बाहर निकली- " प्यारी नन्हो मैं तेरी राह बड़ी बेचैनी के साथ देख रही थी क्योंकि तुझसे बहुत - सी बातें करनी हैं, " तीनों औरतें बाहर वाले उसी दालान में पहुंची और फर्श पर बैठ इस तरह की बातें करने लगी:

बेगम:

मैं कल ही से यहाँ बैठी तुम्हारी राह देख रही हूँ और अकेली पड़ी - पड़ी एक दम घबड़ा गई थी.

मनो:

क्या बताऊँ सखी, कम्बख्त भूतनाथ ने गुप्त रीति से तो पहरे का इन्तजाम कर ही रक्खा था, इधर उसने अपने एक शागिर्द को खास तौर पर मेरे मकान में रह कर मेरी हिफाजत करने के लिए भेज दिया है जिससे और भी परेशान हो रही हूँ

आज बड़ी मुश्किल से उसे किसी बहाने से दूर किया है तो आने पाई हूँ पर फिर भी डर बना ही हुआ है इसलिए बहुत जल्द वापस भी चली जाऊँगी क्योंकि न जाने भूतनाथ या उसका वह कम्बख्त शागिर्द कब आ पहुँचे.

मैं यह सुन कर की जाने कौन उस कैदी को निकाल ले गया, खुद तुझसे मिलने और खुलासा हाल जानने को व्याकुल थी पर मौका नहीं मिलता था, अब बतला कि कैसे - कैसे क्या - क्या हुआ?

बेगम:

बहिन नन्हों ने अभी - अभी उस कैदी के बारे में एक ऐसा दु:खदायी समाचार सुनाया है कि जिससे अब उसका कोई जिक्र करना कष्ट पहुंचाने का ही कारण होगा! मुख्तसर में तुम इतना ही सुन लो कि जिस समय मैं चुनारगढ़ राजा वीरेन्द्रसिंह के कारिन्दों से मिलने गई हुई थी उसी समय भूतनाथ के कुछ ऐयार मेरे घर में घुस कर उसे निकाल ले गए और लामाघाटी में ले जाकर बन्द कर दिया जहाँ (नन्हों की तरफ बता कर) इनके

आदमी उसे छुड़ाने के वास्ते गए पर इस काम में लड़ाई हो पड़ी और वह जान से मारा गया!((मनो) हैं, वह जान से मारा गया! बेगम:

हाँ नन्हो का तो ऐसा ही कहना है.

मनो:

(नन्हों से) क्या तुम सही कह रही हो?

नन्हों:

(जिसकी आँखें यह जिक्र उठने पर पुनः भर आई थीं और जो बड़ी मुश्किल से रुलाई रोके हुए थी) हाँ मैं अभी उनकी लाश के पास से आ रही हूँ, मनो:

(नन्हों का पंजा पकड़ कर दुःख के साथ) अफसोस, तब तो उसका मिलना - न मिलना बेकार ही हुआ, सचमुच मेरी सखी, तू बड़ी अभागिनहै. नन्हों:

(आँखों से आंसू टपकाती हुई) कैसी कुछ! इतने दिन बाद अचानक उसके जीते रहने की खबर पा मैं चौंक गई थी और मेरे मन में रह - रह कर यह खयाल उठता था कि क्या में ऐसी भाग्यवान निकलूंगी कि उसे फिर से देख सकूं, पर आखिर मेरा डर सही निकला और कम्बख्त भूतनाथ की बदौलत.

.

.

.

इतना कहते - कहते वह अपने को रोक न सकी और बिलख कर रोने लगी.

मनोरमा ने बहुत कुछ समझा - बुझा कर उसे शान्त किया और कहा – ' तेरे लिए तो वह अब तक मरा हुआ था ही.

अब मरा तो क्या और दस वर्ष पहले मरा तो क्या! अब तुझे अगर कोई कोशिश करनी चाहिए तो यही कि उसका ध्यान दिल से निकल जाय और साथ ही दुश्मन से बदला भी लिया जा सके.

" नन्हों:

उसका ध्यान तो इस जिन्दगी में मेरे दिल से निकलने वाला नहीं, हाँ, भूतनाथ से बदला लेने की कसम खा चुकी हूँ और चाहे इस कोशिश में मेरी जान भी चली जाय पर मैं अपनी कसम को जरूर पूरा करूँगी तथा भूतनाथ को बर्बाद करके छोड़ूंगी.

मनो:

बेशक ऐसा ही करना चाहिए.

हम लोगों में कोई भी अगर इस लायक है तो एक बस तू ही है, तुझे भूतनाथ के ऐसे - ऐसे भेद मालूम हैं कि जिनके ख्याल से ही वह घबराता है और जिनका भंडाफोड़ करके वह सहज ही में मिट्टी में मिला दिया जा सकता है, बल्कि अगर मेरी याददाश्त ठीक है तो आखिरी दफे जब तुझसे मेरी भेंट हुई थी तो तूने मुझसे कहा था कि उसके कुछ नये पापों का तुझे हाल ही में पता लगा है और तू उनके सबूत अपने कब्जे में करने की कोशिश कर रही है, बल्कि तूने यह भी कहा था कि उनका सामना करने की बनिस्बत भूतनाथ मर जाना पसन्द करेगा.

नन्हों:

हाँ ठीक है, मैंने यह बात कही थी और ठीक कही थी, तथा मुझे यह कहते भी बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि उन सबूतों में से कई मेरे हाथ आ भी गए.

मनो:

(खुश होकर) ऐसा, तब तो बड़ी अच्छी बात है, मगर वे चीजें क्या हैं और क्योंकर तेरे हाथ लगीं?

नन्हों:

मैं सब हाल खुलासा कहती हूँ तुम दोनों ही गौर से सुनो, क्योंकि यह एक ऐसा भेद है जो अगर दुनिया में प्रकट हो गया तो भूतनाथ कहीं का न रहेगा.

उसने जब मेरे कलेजे को चोट पहुंचाई है तो मैं कब किसी बात का ख्याल करने लगी.

(कुछ रुक कर) तुम लोगों ने कभी भुवनमोहिनी का नाम सुना है या उसका कुछ हाल जानती हो?

मनो:

हाँ, कुछ - कुछ, वह जमानिया के सेठ चंचलदास की पतोहू थी. जो साँप काटने से मर गई थी तथा उसके मरने के कुछ ही समय बाद उसका पति कामेश्वर भी दुश्मनों के हाथ

.

.

.

नन्हों:

ओह तब तुम्हें असली हाल नहीं मालूम!

बेगम:

मैंने इतना और सुना है कि जमानिया के बड़े महाराज गिरधरसिंह का उससे कुछ ताल्लुक था जिससे रंज होकर बड़ी महारानी ने उसको जहर दिलवा दिया था, और इस काम में भूतनाथ और दारोगा साहब ने उसकी मदद की थी. .

नन्हों:

नहीं, यह भी सही नहीं है, अच्छा सुनो मैं उसका ठीक - ठीक हाल सुनाती हूँ, भुवनमोहिनी राजा बीरेन्द्रसिंह के रिश्तेदार और दरबारी सरदार अजयसिंह की इकलौती लड़की थी और रिश्ते में दलीपशाह की मौसेरी बहिन लगती थी.

अजयसिंह का कुछ सम्बन्ध शिवदत्त के ससुर रणधीरसिंह से था जिनके भतीजे दयाराम को मारने का इलज़ाम बहुत से लोग भूतनाथ पर लगाते हैं.

रणधीरसिंह के महल में भुवनमोहिनी का आना - जाना बराबर होता था और वहाँ ही दामाद होने की हैसियत से अकसर शिवदत् भी जाया - आया करता था.

भुवनमोहिनी गजब की खूबसूरत लड़की थी जिस सबब से शिवदत्त की बुरी निगाह उस पर पड़ चुकी थी पर चूँकि शिवदत्त के चाल - चलन से रणधीरसिंह के खानदान वाले भी अच्छी तरह वाकिफ हो चुके थे इसलिये वे वहाँ उस पर बड़ी कड़ी निगाह रखते थे.

इस कारण शिवदत्त को अपनी ससुराल में किसी तरह की बेहूदगी की कार्रवाई करने का मौका किसी तरह नहीं मिल सकता था और यही कारण था कि भुवनमोहिनी वहाँ उसके पंजे में नहीं पड़ने पाई, खैर, भुवनमोहिनी की शादी जमानिया के सेठ चंचलदास के लड़के कामेश्वर से हुई और इसके बाद ही वह जमानिया चली गई.

इसी सबब से कुछ दिनों के लिए वह शिवदत्त की निगाहों की भी ओट हो गई पर वह उसे भूला नहीं.

जमानिया के महाराज गिरधरसिंह न - जाने क्यों सुरेन्द्रसिंह के खानदान से बड़ी ही मुहब्बत करते थे.

उन्हें जब पता चला कि बीरेन्द्रसिंह के खानदान की एक लड़की उनके शहर में व्याह कर आई है तो भुवनमोहिनी को उन्होंने अपने महल में बुलवाया और उसको अपनी लड़की से बढ़ कर इज्जत और प्यार करने लगे, बल्कि उसी के सबब से उसके पति कामेश्वर पर भी बहुत मेहरबानी की.

दारोगा साहब और चुनार के राजा शिवदत्त की पहले तो बड़ी दोस्ती थी. पर बीच में न जाने किस कारण से, शायद किसी औरत के ही सबब से, आपुस में कुछ खटक गई थी.

इधर भुवनमोहिनी के ससुर चंचलदास से भी दारोगा साहब की खटकी हुई थी, जिसका कारण शायद यह था कि वह राजदरबार में इनकी कार्रवाइयों की अकसर निन्दा किया करता था जिस कारण से दारोगा साहब भी उससे बदला लेने की बराबर कोशिश किया करते थे.

जिस समय भुवनमोहिनी का वहाँ आना हुआ और महाराज के महल में उसकी इज्जत और क़दर बड़ी तथा उसी के कारण कामेश्वर और चंचलदास का भी मर्तबा बढ़ने लगा तो दारोगा साहब को शायद डर हुआ कि अब दरबार में उनको ये लोग और ज्यादे परेशान करेंगे.

इस खयाल से वे फिक्र में पड़े कि कोई ऐसी तर्कीब करना चाहिए कि उस खानदान का डर हमेशा के लिए जाता रहे.

उन्हें महाराज शिवदत्त के भुवनमोहिनी के प्रेम का हाल किसी तरह मालूम हो गया और वे इस कोशिश में लगे कि अगर किसी तरह वह लड़की शिवदत्त तक पहुँचा दी जा सके

तो इधर तो उससे जो कुछ मनमुटाव हो गया है वह दूर हो जायेगा और उधर खानदानी बदनामी के सबब से चंचलदास फिर सिर उठाने लायक न रहेगा.

इस तरह एक ही ढेले से दो शिकार मारने की नीयत उन्होंने की और उसकी तर्कीब क्या थी कि इधर एक तरफ तो महारानी का कान भरना शुरू किया और उन्हें यह समझाने लगे कि महाराज की भुवनमोहिनी पर बुरी निगाहें पड़ती हैं और उधर दूसरी तरफ महाराज का कान इस तरह भरने लगे कि भुवनमोहिनी का चरित्र अच्छा नहीं है और वह महाराज शिवदत्त से फंसी हुई है.

मैं उन दिनों जमानिया महल में ही थी इसलिए मुझे न केवल इस बात की पूरी - पूरी खबर ही है बल्कि मुझसे दारोगा साहब ने इस मामले में कुछ मदद भी ली थी इसलिए मुझे अच्छी तरह मालूम है कि उनकी तरह - तरह की कार्रवाइयों की बदौलत एक तरफ तो महारानी को इस बात का विश्वास हो गया कि महाराज का भुवनमोहिनी से अनुचित सम्बन्ध है और वे उसको दुश्मनी की निगाह से देखने लगीं और दूसरी तरफ महाराज का दिल भी उससे कुछ फिर - सा गया.

नतीजा यह हुआ कि कामेश्वर दरबार से हटा कर कहीं दूर भेज दिया गया और भुवनमोहिनी भी उसके साथ चली गई,

ऐसा करने में दारोगा साहब ने और बातों के सिवाय यह भी सोचा था कि भुवनमोहिनी जब जमानिया से हट्टी रहेगी तो कोई - न - कोई तर्कीब ऐसी निकल सकेगी जिससे उसको शिवदत्त के हवाले किया जा सकेगा, मगर यह इच्छा उनकी पूरी उतरी नहीं.

कुछ ही दिनों बाद महाराज को विश्वास हो गया कि वह लड़की बेकसूर थी.

उन्होंने उसको माफ करके फिर जमानिया बुलवा लिया और कामेश्वर को भी आने का हुक्म दिया.

इससे उसको शिवदत्त के हवाले करने का काम तो न हो सका मगर इतना फायदा जरूर हुआ कि महारानी का शक बढ़ गया और उन्हें यह विश्वास हो गया कि महाराज को जरूर उससे कुछ लगाव है तभी तो उसके बिना रह न सके और फिर उसको बुलवा लिया, क्योंकि पहले की तरह भूवनमोहिनी का आना - जाना महल में फिर शुरू हो गया था.

वे मन - ही - मन इस बात से बहुत कुढ़ गई और उन्होंने हुक्म दिया कि भुवनमोहिनी जान से मार दी जाय.

दारोगा साहब ने खुशी - खुशी इस काम को करने का बीड़ा उठाया पर महाराज के डर से खुल्लमखुल्ला स्वयम् इस काम को करते डरते थे इसलिए उन्होंने किसी दूसरे होशियार आदमी से इस बारे में मदद लेने की सोची.

उन दिनों गदाधरसिंह ऐयार से उनकी दोस्ती खूब गठ रही थी जिसको महारानी भी कुछ - कुछ जानती थीं.

इसका सबब यह था कि जैसा कि शायद तुमको मालूम ही होगा वे रोहतासगढ़ के राजा त्रिभुवन की लड़की और दिग्विजयसिंह की बहिन थीं जिनकी रियासत में गदाधरसिंह का भाई शेरसिंह नौकर था.

उस शेरसिंह के पास गदाधरसिंह बराबर आया - जाया करता था और इसी सबब से महाराज त्रिभुवनसिंह भी उससे मुहब्बत करते थे तथा महारानी भी भूतनाथ को अच्छी तरह जानती थीं क्योंकि ऐयारों से कोई पर्दा तो रहता नहीं, दारोगा ने इसी भूतनाथ को महारानी के सामने पेश किया जिन्होंने बहुत कुछ इनाम की लालच देकर उसे इस काम के लिए राजी किया और इधर से दारोगा साहब का जोर तो था ही.

उधर महाराज शिवदत्त ने भी बहुत कुछ इनाम की लालच देकर भुवनमोहिनी को चुरा लाने का काम भूतनाथ को सौंपा था.

गरज कि सब तरफ के जोर और बहुत गहरे इनाम की लालच में भूतनाथ को इस बात पर राजी कर दिया और उसने न जाने क्या चालाकी और ऐयारी की कि कुछ ही दिनों बाद यह मशहूर हो गया कि भुवनमोहिनी को जंगल में साँप ने काट लिया.

प्रायः सॉप का काटा आदमी जलाया नहीं जाता, जमीन में गाड़ा या नदी में बहा दिया जाता है, और ऐसा ही भुवनमोहिनी की लाश के साथ किया गया जिसे उसके दो रिश्तेदार जंगल में गड्ढा खोद कर गाड़ आये जहाँ से उन दोनों के जाने के साथ ही तुरन्त शिवदत्त के आदमियों ने खोद कर उसे निकाला और उठा ले गए.

इस काम के लिए भूतनाथ ने महारानी से एक क़िमती कण्ठा और ' शिवगढ़ी ' के खजाने की ताली पाई और उधर महाराज शिवदत्त से भी गहरा इनाम पाया.

यहाँ तक सुन मनोरमा ने कहा, " शिवगढ़ी का खजाना कैसा?

" नन्हों:

शिवगढ़ी रोहतासगढ़ के इलाके में एक पहाड़ी स्थान है.

कहा जाता है कि वह कोई तिलिस्म है और उसके अन्दर बेइन्तहा दौलत रखी है जिसको निकालने की तर्कीब एक किताब में लिखी है जो वहाँ की ताली कहलाती है.

महारानी के पिता ने उस स्थान को दहेज़ में महारानी को दिया था पर चूँकि वे खुद एक बड़े तिलिस्म और बेइन्तहा दौलत के मालिक हुई थीं इसलिए उस खजाने को खोलने की उन्हें कभी जरूरत ही नहीं पड़ी और बरसों बीत जाने पर भी वह ज्यों - का - त्यों बन्द ही पड़ा रहा.

उस खजाने की ताली भुवनमोहिनी को मारने के लिए इनाम के तौर पर महारानी ने भूतनाथ को दे, और सच तो यह है कि उसी खजाने के लालच ने ही भूतनाथ से ऐसा काम कराया था.

मगर फिर यह भी बात है कि भूतनाथ को वह खजाना दिलवाने में दारोगा साहब का भी स्वार्थ था जिन्होंने यह वादा करा लिया था कि उसके अन्दर से जो कुछ दौलत निकलेगी उसका एक खासा हिस्सा उन्हें भी मिलेगा.

१.

भूतनाथ बारहवें भाग के तीसरे बयान में मालती ने इसी घटना का जिक्र महाराज गिरधरसिंह से किया है.

खैर जो कुछ हो, गरज यह कि भूतनाथ को उस खजाने की ताली मिल गई और वह उसे खोलने की नीयत से तिलिस्म के अन्दर घुसा तथा इसी मौके पर उसने वह काम किया जिसने उसको दुनिया में मुंह दिखाने लायक न रखा.

अब तक जो वह दुनिया में बना हुआ है उसका सबब सिर्फ यही है कि उसके इस दुष्कर्म का हाल सिर्फ दो - चार इने - गिने आदमी ही जानते हैं और मुझे भी उसका पूरा - पूरा हाल नहीं मालूम है पर जितना मालूम हुआ है वह यह कि भूतनाथ तिलिस्म के अन्दर

घुसा तो वहाँ उसे पत्थर की बनी हुई एक नरपिशाच की मूरत मिली जो जीते - जागते मनुष्य की तरह बोल सकती थी.

उस नरपिशाच के मुँह में आदमी का ताजा खून डालने पर ही शिवगढ़ी के खजाने का मुँह खुलता था.

कहा जाता है कि अहिल्या नामी किसी औरत को लिये हुए वह तिलिस्म में घुसा और उसी को मार कर उसका खून उस नरपिशाच के मुँह में डालना चाहा पर यकायक कोई ऐसा विघ्न पड़ गया कि यह काम पूरा उतर न सका और वह अहिल्या की लाश को तिलिस्म में ही छोड़ कर भागने पर मजबूर हुआ.

दारोगा साहब को न - जाने कैसे इस घटना का पता लगा, वे तिलिस्म में गये, उनके हुक्म से हेलासिंह और जैपालसिंह ने वह लाश बाहर निकाली और इस तरह पर भूतनाथ के इस कुकृत्य का भंडा फूटा.

मनो:

ठीक है, इस घटना का कुछ पता मुझे दारोगा साहब की जुबानी लगा था पर बहुत कुछ पूछने पर भी उन्होंने पूरा - पूरा हाल मुझे नहीं बताया और कह दिया कि वे इस मामले को छिपाने की कसम खा चुके हैं.

बेगम:

ठीक है, मैंने जैपालसिंह के मुँह से भी ऐसा ही कुछ हाल सुना था पर उन्हें यह नहीं मालूम था कि वह औरत कौन थी. जिसे भूतनाथ ने मारा था.

१.

अपना किस्सा कहते समय मालती ने इसका जिक्र भी किया है.

देखिए भूतनाथ बारहवाँ भाग, तीसरा बयान.

नन्हों:

वह अहिल्या थी. - कौन अहिल्या, समझ गईं?

मनो:

हाँ हाँ जी अच्छी तरह जान गई, वही दामोदरसिंह की भतीजी और मालती की प्यारी सखी न?

बेगम:

(हँसती हुई) हाँ, और मालती कौन ?

वहीं जिसका रूप धर कर प्रभाकरसिंह को फंसाने तुम तिलिस्म में घुसी थीं और कुछ न कर सकने के कारण बैरंग वापस लौटी थीं! मनो:

(कुछ बेरुखी से) हाँ - हाँ भया, (नन्हों से) सखी, तुम आगे का हाल कहो, फिर क्या हुआ?

वह खजाना फिर खुला या नहीं?

नन्हों:

नहीं, वह ज्यों - का - त्यों बन्द रह गया क्योंकि भूतनाथ उस घटना के बाद फिर उसके अन्दर कभी नहीं गया.

उसने उसकी ताली तक नष्ट कर डाली और फिर कभी उस तरफ जाने का नाम नहीं लिया.

मनो:

नहीं - नहीं, तब फिर तुम्हें इसका सही हाल नहीं मालूम.

वह ताली अभी तक भूतनाथ के पास मौजूद है और वह पुनः इस फिराक में है कि किसी तरह उस खजाने को खोले और वहाँ की दौलत निकाले.

नन्हों:

(ताज्जुब से) यह कैसे जानती हो?

मनोरमा इसका कुछ जवाब देना ही चाहती थी कि कहीं पर बजती हुई एक घंटी की आवाज ने उसे चौंका दिया जो कुछ रुक - रुक कर किसी खास इशारे के साथ बज रही थी.

उसने घबड़ा कर नन्हों से कहा, " अरे, भूतनाथ आ गया! मैं जाती हूँ, पर तू अभी यहीं रहियो मैं बहुत जल्दी तुझसे मिलूंगी.

" और झपटती हुई आलमारी की तरफ लपकी जिसकी राह इस जगह आई थी.

जब वह उस रास्ते के अन्दर चली गई तो नन्हों और बेगम बातें करती बापस लौटी.

नन्हों:

कम्बख्त भूतनाथ बड़े बेमौके आया, अब न - जाने कब मनोरमा जी को कब फुरसत मिलेगी और वह इधर आवेंगी!

बेगम:

देखो कह तो गई है कि जल्दी ही आवेंगी.

नन्हों:

मगर मुझे ताज्जुब है कि यह बात उन्हें किस तरह मालूम हुई कि वह ताली अभी तक भूतनाथ के पास है और वह उस खजाने को निकालने की पुनः कोशिश करना चाहता है.

बेगम:

क्यों इसमें ताज्जुब की क्या बात है?

मालूम होता है कि तुम्हें इधर के मामलों की पूरी - पूरी खबर नहीं हुई और तुम शायद इतना भी नहीं जानतीं कि मनोरमा किस काम के लिए श्यामा के रूप में भूतनाथ की व्याहता का स्वांग रचे हुए हैं.

नन्हों:

दारोगा साहब ने इतना मुझे बताया था कि भूतनाथ का कोई गुप्त भेद जानने और उसको अपने वश में कर लेने की नीयत से ही उन्होंने यह कार्रवाई की है.

बेगम:

तो इतना कहना शायद वे भूल ही गए कि उसी ताली को भूतनाथ के कब्जे से निकालने के लिए ही यह सब चालाकियाँ रची गई हैं.

मनोरमा और नागर ने इस बात का बीड़ा उठाया है कि अगर भूतनाथ के पास वह ताली होगी तो जैसे भी बनेगा उसको जरूर कब्जे में करेंगी.

मनोरमा श्यामा बन कर यहाँ विराज रही हैं और उधर नागर रामदेई का स्वांग रचे हुए उसके दूसरे घर पर जमी हुई है और इन दोनों को पूरा भरोसा है कि दोनों में से कोई - न - कोई जरूर इस काम में सफल होगी.

नन्हों:

(कुछ सोचती और गौर करती हुई) लेकिन अगर ऐसी ही बात है तो दारोगा साहब ने मुझसे यह बात क्यों छिपाई जबकि आजकल मैं सब तरह से उनकी मदद कर रही हूँ?

बेगम:

इस बारे में कुछ कहना बड़ा कठिन है, दारोगा साहब के दाँव - पेंच समझना सहज नहीं है.

नन्हो ने कोई जवाब न दिया और किसी बहुत ही गम्भीर चिन्ता में डूब गई.

बेगम कुछ देर तक उसका मुंह देखती रही और तब बोली, " खैर अब यह सब फिक्र जाने दो और ऊपर चलकर नहाने - धोने की सोचो, जब मनोरमा आबेंगी तो फिर ये सब बातें होंगी.

" दोनों मकान की ऊपरी मंजिल पर चढ़ने लगी.

दूसरा व्यान।

यकायक कई आदमियों ने आकर सांबलसिंह को चारों तरफ से घेर लिया और यही है, यही है, इस औरत का खूनी यही ' कह कह कर चिल्लाने लगे.

सांवलसिंह चौंक कर खड़ा हो गया और ताज्जुब से इन सबों की तरफ देखता हुआ सोचने लगा कि ये सब कौन हैं जो ऐसे बेमौके यहाँ आ मौजूद हुए?

बहुत गौर करने पर भी वह उन्हें पहिचान तो न सका मगर यह जरूर समझ गया कि ये ऐयार हैं और अपनी सूरतें बदले हुए हैं.

आखिर उसने एक से पूछा जो उन सभों का सरदार मालूम होता था, " आप लोग कौन और किस बात का इल्जाम मुझ पर लगाना चाहते हैं?

" उस आदमी ने गुस्से में भरे हुए जवाब दिया, " हम लोग उसी के नौकर हैं जिसका तुमने खून किया है.

सॉवलसिंह ने मुन्दर की लाश की तरफ बताकर कहा, " मेरी समझ में तो आप लोग शायद किसी भ्रम में पड़ गए हैं, यह औरत कौन है क्या आप जानते हैं?

आदमी:

हम लोग किसी तरह की भूल नहीं कर रहे हैं, यह औरत जिसका तुमने खून किया है हमारे मालिक सेठ राधाकृष्ण के घराने की है और हम लोग इसे पटना पहुँचाने जा रहे थे.

रास्ते में यकायक यह गायब हो गई और ढूँढते तथा परेशान होते हम लोग अब यहाँ इसकी लाश देख रहे साँवल

अगर सिर्फ इतनी ही बात है तो मैं आपको बहुत जल्द विश्वास दिला सकता हूँ कि यह औरत वह नहीं है.

आगे बढ़िए और गौर से लाश को देख कर पहिचानिए कि क्या यह वही औरत है?

वह आदमी आगे बड़ा और गौर से मुर्दा मुन्दर की सूरत देखने लगा.

शायद सूरत से कुछ फर्क जाहिर हुआ क्योंकि उसने ताज्जुब के साथ गर्दन हिलाई और कुछ सोचने लगा.

उसकी हालत देख उसके साथियों में से एक आगे बढ़ गया और बोला, " आप किस फेर में पड़े हुए हैं! यह ऐयार आपको अपनी बातों के जाल में फंसाना चाहता है.

आप पहिले इस बदमाश से कहिए कि अपनी सूरत धोकर साफ करे और तब इस लाश का चेहरा धोकर देखिए, आप ही सब भण्डा फूट जाएगा! " उस आदमी ने यह सुनते ही कहा, " हाँ, यह तुम बहुत ठीक कहते हो! किसी से कहो एक लोटा पानी ले आवे, हम जरूर इस ऐयार की सूरत धुलवा कर देखेंगे.

" मगर ताज्जुब की बात थी कि जब एक आदमी ने आगे बढ़कर पानी का लोटा सामने रख दिया तो सांबलसिंह ने चेहरा धोने से इनकार किया और कहा, " मालूम होता कि आप लोग मेरी बेइज्जती करने पर तुले हुए हैं.

मैंने जो कुछ कहा ठीक कहा है और मैं किसी तरह भी चेहरा धोना मंजूर न करूंगा.

" उस दूसरे आदमी ने यह सुन कहा, " देखा आपने, मैं कहता था न कि यह ऐयार आपको धोखा देना चाहता है! बताइए अगर यह सच्चा होता तो चेहरा धोने से क्यों इनकार करता?

" उस सरदार ने कहा, " वेशक यही बात है और तब सांवलसिंह की तरफ देखकर कहा, " अब खैरियत इसी में है कि चुपचाप में मेरे साथ चले चलो नहीं तो हम लोगों को जबर्दस्ती करनी पड़ेगी और हाथ - पाँव बाँध कर तुम्हें अपने मालिक के सामने पहुँचाना पड़ेगा.

" जब तक दम में दम है तब तक कदापि नहीं! " कहते हुए सांवलसिंह ने अपना खञ्जर क़मर से खींच लिया और उसकी देखा - देखी उन आदमियों ने भी अपने - अपने हथियार निकाल लिए,

सांवलसिंह को विश्वास था कि ये सब के सब एक साथ ही उस पर टूट पड़ेंगे मगर ऐसा न हुआ और उसके सामने सिर्फ वही एक आदमी हुआ जो अभी तक उससे बातें कर रहा था.

सांवलसिंह के हाथ में खञ्जर देख उसने भी अपनी तलवार क़मर में रख खञ्जर निकाल लिया और उसी से सांबलसिंह पर हमला किया.

इसमें कोई शक नहीं कि दोनों ही अपने - अपने ढंग पर बहुत ही अच्छे और होशियार लड़ाके थे जिन्होंने आधी घड़ी तक बड़ी बहादुरी, तेजी और हिम्मत से एक - दूसरे का

मुकाबला किया यहाँ तक कि दोनों ही के बदन पर हल्के - हल्के कई जख्म दिखाई पड़ने लगे और दोनों ही में दम फूलने और थकावट के चिह्न नजर आने लगे.

क्षण भर के लिए दोनों ने अपने - अपने हाथ रोके और एक - दूसरे की तरफ गौर से देखा, यककायक वह सरदार धीरे से बोल उठा, " मालूम होता कि अब पानी न बरसेगा! " जवाब में चौंककर सांबलसिंह ने कहा, " नहीं, क्योंकि हवा का रुख बदल गया.

” इतना सुनना था कि सरदार ने अपने खंजर फेंक दिया और सांवलसिंह के गले से लिपट गया जिसने अपना खंजर दूर फेंक उसको छाती से लगा लिया, कुछ देर बाद दोनों अलग हुए और सांवलसिंह ने कहा, “ भला यह किसको उम्मीद हो सकती थी कि यहाँ दलीपशाह की सूरत दिखाई पड़ जाएगी?

" जबाब में सरदार ने कहा, " और अर्जुनसिंह के ही यहाँ होने का गुमान कौन कर सकता था! " दोनों ने फिर प्रेम से एक - दूसरे का हाथ दबाया और तब बातें करते हुए थोड़ा एक तरफ हट गए.

सरदार अर्थात् दलीपशाह ने कहा, " वह तो कहो कि मुझे कुछ शक हो गया और मैंने परिचय का शब्द कहा नहीं तो आज न - जाने यह लड़ाई कहाँ खत्म होती! " सांवलसिंह बने हुए अर्जुनसिंह ने जवाब दिया, " मुझे भी कुछ - कुछ सन्देह होने लगा था.

खैर जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ, पर तुम अचानक यहाँ कैसे आ पहुँचे और यह मुन्दर किसके हाथ से मारी गई?

"

दलीप:

यह तो हम लोगों की कारीगरी है.

वह कोई असली लाश नहीं है बल्कि मोम की बिल्कुल बनावटी है और सिर्फ तुमको धोखा देने के लिए यहाँ रखी गई थी.

वास्तव में हम लोग बहुत देर से तुम दोनों का पीछा करते हुए इस बात का मौका ढूंढ रहे थे कि कोई ठिकाने की जगह आ जाए तो गिरफ्तार करें पर जाने किस तरह खबर पाकर मुन्दर होशियार हो गई और हमारे कब्जे से निकल भागी, फिर भी तुम्हें धोखे में डालने और परिचय लेने के लिए हमने.

यह कार्रवाई की थी.

अब तुम बताओ कि कैसे उस शैतान के पीछे हो लिए और किधर जा रहे थे?

अर्जुन:

मैं कल ही से उसके पीछे लगा हूँ, गौहर के साथ - साथ सुन्दर को भी भूतनाथ ने गिरफ्तार कर लिया था पर गौहर के ऐयार सांवलसिंह की मदद से दोनों छूट निकलीं.

गौहर तो शिवदत्तगड़ गई और मुन्दर अपने घर की तरफ चली.

मौका समझ मैं सांवलसिंह का रूप धर कर उसके साथ हो लिया और इस फिक्र में लगा कि जमानिया के पास पहुँच जाऊँ तब उसे बेहोश करके ठिकाने ले चलूँ पर न - जाने कैसे - जैसा कि तुमने कहा - वह होशियार हो गई और निकल भागी.

अब तुम यह बताओ कि तुमने हम लोगों की सुनगुनी कहाँ पाई और कब से उन दोनों के साथ हो?

" एक साफ जगह देख कर बैठते हुए दलीपशाह ने कहा, " तुमसे कहीं पहले से मुझे इन्द्रदेवजी ने खबर कर दी कि उन्होंने तिलिस्म के अन्दर गौहर और मुन्दर को कामेश्वर तथा भुवनमोहिनी का भेष धारण करते हुए देखा .

.

.

" पास ही बैठते हुए अर्जुनसिंह ने चौंक कर कहा, “ क्या कहा, कामेश्वर और भुवनमोहिनी का रूप धरते?

" दलीप:

हाँ, और इस पर उन्हें हद से ज्यादा ताज्जुब हुआ.

इस भेद के साथ मेरा कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है यह तुम जानते ही हो अस्तु उन्होंने इसकी खबर मुझे दी और यह पता लगाने को कहा कि ये दोनों इस रूप में कहाँ जाती हैं और कक्यां करती हैं तथा यह भेद इन दोनों को मालूम किस तरह हुआ.

बस उसी समय से मैं या मेरे शागिर्दो में से कोई - न - कोई बराबर ही इन दोनों के साथ लगे हुए हैं.

अभी तक गौहर के पीछे मेरे दो आदमी लगे हैं और इस समय मैंने यही सोचा था कि मुन्दर को पकड़ कर उधर ही जाऊँ और देखू कि उस तरफ क्या हाल है पर अफसोस, मुन्दर कम्बख्त हाथ आकर निकल गई.

इतना कह दलीपशाह ने गौहर और मुन्दर का वह सब हाल जो उन्हें मालूम था कह सुनाया.

अर्जुनसिंह गौर से और ताज्जुब से सब कुछ सुनते रहे और अन्त में बोले, " यह तो बड़े आश्चर्य की बात है! मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसा छिपा हुआ भेद जिसे गिनती के कुछ आदमी ही जानते हैं इन छोकरियों ने क्योंकर जान लिया! साथ ही जो मैं खयाल करता हूँ तो मालूम होता है कि और चाहे कुछ हो या न हो अब कम - से - कम भूतनाथ की कुशल नजर नहीं आती.

उसके कुछ पाप प्रकट हो रहे थे उन्हीं के मारे वह छिपा - छिपा और भागा - भागा फिरता था, अब यह भेद प्रकट होकर उसको कहीं का भी न छोड़ेगा! " दलीप:

इसमें क्यां शक़ है, उसे दुनिया में मुंह दिखाना मुश्किल हो जाएगा बल्कि ताज्जुब नहीं कि जान दे देनी पड़े, अर्जुन:

बहुत सम्भव है.

लेकिन उसे जब इस बात की खबर लग चुकी है और गौहर तथा सुन्दर कामेश्वर तथा भुवनमोहिनी के रूप में उससे मिल भी चुकी हैं तो वह इस फिक्र में होगा कि असल बात का पता लगाए और बन पड़े तो उस भेद को फिर से जमीन में गाड़ दे.

दलीप:

जरूर ऐसा करेगा पर इसमें कहाँ तक सफल होगा यह अभी कहा नहीं जा सकता, मगर इस सम्बन्ध में तरदुद में डालने वाली बात कुछ दूसरी ही है.

अर्जुन:

वह क्या?

दलीप:

भूतनाथ का शक घूम - फिर कर मुझी पर जाएगा और वह यही समझेगा कि मैंने ही इस छिपे हुए रहस्य को प्रकट कर दिया है.

एक तो दयाराम वाले मामले के कारण वह पहले ही से मुझ पर जला - भुना है, ऊपर से अगर यह शक भी उसे हो गया तो वह मेरा जानी दुश्मन बन बैठेगा और मुझे दुनिया से ही उठा देने की कोशिश करेगा.

अर्जुन:

बेशक यह सोचना आपका बहुत ठीक है, उसका शक सीधा आप ही पर जाएगा क्योंकि आप ही को इस मामले से सबसे गहरा सम्बन्ध है.

दलीप:

और तब.

.

.

.

(देख कर और सामने से आते हुए आदमी की तरफ गौर से देखकर) यह लो गिरिराजकुमार आ पहुँचा.

इसे मैंने मुन्दर की टोह में भेजा था, पर इसका साथी इस समय साथ नहीं है, मालूम होता है उसे कहीं छोड़ मुझे खबर देने आ रहा है.

मगर इसकी पीठ पर एक गठरी भी है, जरूर किसी को गिरफ्तार करके ला रहा है.

कहीं मुन्दर ही न हो! बात की बात में बह आदमी पास आ गया और पीठ पर की गठरी उतार जमीन पर रखने बाद एक खास इशारे के साथ प्रणाम करता हुआ बोला, " गुरुजी, आपका सोचना बहुत ठीक निकला.

उस बजरे वालों ही का वह काम था और मुन्दर को होशियार करके वे ही उसे अपने साथ ले भी गए.

" दलीपशाह ने कहा, " अच्छा आओ यहाँ बैठो, कुछ सुस्ताओ, और बताओ कि इस गठरी में किसे ला रहे हो?

" गिरिजा:

उस बजरे के एक माझी को पकड़ लाया हूँ, शायद इसकी सूरत बन कुछ काम निकाला जा सके, और सहदेव को उन लोगों का पीछा करने के लिए छोड़ आया हूँ, मगर गुरुजी, वह बजरा तो मुझे आफत का घर - सा दिखाई पड़ता है.

उसके अन्दर तो बड़ी - बड़ी ताज्जुब की चीजें मैंने देखीं जिनका हाल सुन आप आश्चर्य में पड़ जाइएगा.

दलीप:

सो क्या गिरिजाकुमार यह सुन सांवलसिंह बने अर्जुन की तरफ देखने लगा.

उसको आश्चर्य में पड़ा देख दलीपशाह ने हँस कर कहा, " घबराओ नहीं, ये वास्तव में अर्जुनसिंह हैं, किसी कारणवश सांबलसिंह बनकर मुन्दर का पीछा कर रहे थे.

" इतना सुनते ही गिरिजाकुमार ने प्रसन्न होकर अर्जुनसिंह को प्रणाम किया और तब उस बजरे पर जो कुछ देखा था उसे बयान करना शुरू किया.

इस जगह हम यह नहीं बताएँगे कि गिरिजाकुमार ने क्या - क्या कहा, हाँ यह कह सकते हैं कि इन लोगों में घण्टे भर से ज्यादा देर तक बातचीत और सलाह - मशविरा होता रहा और इस सिलसिले में गिरिजाकुमार ने जो कुछा कहा उसे इन दोनों आदमियों ने गौर से सुना और पसन्द कीया.

बातें समाप्त होने पर दलीपशाह ने गिरिजाकुमार से कहा, " बस तो तुम जाओ और अपने साथियों को लिए - लिए उस जगह पहुँचो, मैं इस माझी की सूरत बनकर बजरे

पर जाता हूँ और ये अर्जुनसिंह मदद के लिए मेरे साथ रहेंगे.

लाओ मल्लाह को मेरे सामने करो.

" गिरिजाकुमार ने मल्लाह की गठरी खोल उसे बाहर निकाला और दलीपशाह अपने बटुए में से सामान निकाल अपनी शकल उसके जैसी बनाने लगे.

जल्दी ही उन्होंने इस काम से छुट्टी पा ली और तब उस मल्लाह के कपड़े पहिन तथा अपने कपड़े गिरिजाकुमार के हवाले करने के बाद उठ खड़े हुए.

गिरिजाकुमार ने कहा, " यह बताना मैं भूल गया कि इस मल्लाह का नाम रामा है.

दलीपशाह ने कहा, " बस ठीक है, बस रामा मल्लाह हो गया.

(अर्जुनसिंह की तरफ देखकर) क्यों ठीक सूरत बनी या कोई कसर है?

" “ सिर्फ एक क़सर रह गई है.

" कह कर अर्जुसिंह ने अपने बटुए में से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क था जो दलीपशाह के हाथ में देते हुए कहा, " बस इसे थोड़ा - सा चेहरे पर मल लीजिए तो वह कसर भी दूर हो जाएगी.

" दलीपशाह ने शीशी लेकर ताज्जुब के साथ पूछा, " वह क़सर क्या है और इस शीशी में क्या चीज है जिससे वह मिट जाएगी?

" अर्जुनसिंह ने हँस कर कहा, " आप यह भूल गए कि आप मल्लाह की शकल बने हैं जिसको हरदम पानी से काम पड़ता है.

अगर आपके चेहरे पर पानी के छींटे पड़ गए या किसी कारणवश आपको पानी में उतरना पड़ा तो आपकी नकली सूरत क्यां प्रकट न हो जाएगी?

" दलीपशाह चौंक कर बोले, " ओ हो, यह बात तो मैं बिल्कुल भूल ही गया था.

आपका कहना बेशक ठीक है.

पानी रंग का दुश्मन है, और अगर मैं पानी में जाने से इनकार करूँगा तो लोगों को जरूर शक होगा, मगर यह दवा ऐसे मौके पर मेरी क्या मदद करेगी?

"

अर्जुन:

यह दवा मैंने बड़ी मेहनत से तैयार की है.

इसकी तारीफ यह है कि चाहे आप जिस तरह के भी रंग से जैसी भी सूरत बनावें, जरा - सा इस अर्ग़ को हथेली में ले उससे अपना रंगा हुआ चेहरा तर कर लें, हवा लगते ही यह सूख जाएगा और फिर लाख पानी से धोया जाए क्या मजाल कि जरा - सा रंग छूट जाए, गिरिजा:

(जो बड़े गौर से अर्जुनसिंह की बात सुन रहा था) और जब उस रंग को मिटाने की जरूरत पड़े तो क्या करना होगा?

अर्जुन:

उस समय कच्चे पपीते के अर्क से आधी घड़ी तक अपना चेहरा तर रखें.

उसकी तासीर से यह रोगन उतर जाएगा, तब नीचे बाला रंग पानी से धुल सकेगा.

गिरिजा:

(प्रसन्न होकर) वाह यह तो बड़े काम की चीज है! अर्जुन:

बेशक, और इसीलिए मैं बराबर इसकी एक शीशी अपने बटुए में रखता हूँ, इसकी एक तासीर और भी खूबी की है.

बनावटी सूरत पर अगर पानी से मुँह धोएँगे तो वह ऊपरी रंग तो छूट जाएगा और नीचे वाली सूरत जिस पर यह रोगन लगाया गया था निकल आवेगी जिस पर पानी का असर न होगा.

इस तरह पर बहुत मजेदार धोखा लोगों को दिया जा सकता है ।

क्या तुम्हें याद नहीं कि एक मौके पर मैंने भूतनाथ को गहरा धोखा दिया था, यहाँ तक कि उसने खुद अपने ही हाथों अपने शागिर्द बहादुर और पारस की जान ले ली थी जिसका गम शायद वह अब तक भूला न होगा.

गिरिजा:

हॉ - हाँ, आपने वह हाल कहा था और मैं बहुत दिनों तक इस गौर में पड़ा रहा था कि आपने कैसी ऐयारी की की भूतनाथ जैसा चालाक ऐयार इतना गहरा धोखा खा गया.

तो वह इसी अर्ग की करामात थी. ! अच्छा यह अर्क बनता किन मसालों से है?

अर्जुनसिंह गिरिजाकुमार का यह सवाल सुन जोर से हँस पड़े और बोले, " ये बातें क्या इतनी सहज में बताई जाती हैं!.

१.

देखिए भूतनाथ आठवाँ भाग, सत्रह्वाँ बयान ।

ऐसी - ऐसी दवाओं के बनाने और ईजाद करने में खून - पानी एक कर देना पड़ता है.

तब कहीं जाकर ये तैयार होती हैं, क्या इतनी मुश्किल से मिली चीज ऐसे सहज में बता दूँ?

हाँ इतना कर सकता हूँ कि तुम्हें भी इसमें की कुछ दबा दे दूं.

" पर गिरिजाकुमार ने यह बात स्वीकार न की और असल नुस्खा जानने पर ही जिद्द करने लगा.

अर्जुनसिंह ने तरह - तरह के बहाने करके चलाना चाहा पर उसने यहाँ तक खुशामद की कि जमीन पर गिर पड़ा और दोनों पैर पकड़ उन पर सिर रखता हुआ बोला- " जब तक आप बताइएगा नहीं मैं सिर नहीं उठाऊँगा! " अर्जुनसिंह ने लाख कोशिश की पर उसने पैर छोड़ना या सिर उठाना किसी तरह मंजूर नहीं कीया , दलीपशाह जो अपने शागिर्द के जिद्दी स्वभाव और किसी नई बात को जानने धुन से अच्छी तरह वाकिफ थे कुछ देर तक मुस्कुराहट के साथ यह द्वंद्व देखते रहे, आखिर देर होती देख उन्होंने कहा, " अरे लड़के, इतना घबराता क्यों है?

ये भी गुरु - तुल्य ही हैं, कभी - न - कभी बता ही देंगे, ऐसी जल्दी क्या है?

" गिरिजाकुमार यह सुन अर्जुनसिंह का पैर पकड़े ही पकड़े बोला, " कहिए अब भी बताइएगा कि नहीं?

" आखिर वे हँसकर बोले, " जब इनकी सिफारिश हो गई तो लाचार बताना ही पड़ेगा, मगर लड़कों को इतना जिद्दी नहीं होना चाहिए! (दलीपशाह से) तुमने अपने शागिर्दो को बहुत सिर चड़ा रखा है! " गिरिजाकुमार ने हँसते हुए अपना सिर उठा लिया और तब हाथ बड़ा कर कहा, " लाइए! " अर्जुनसिंह बोले, " मैंने कहा न कि बता दूंगा, ऐसी जल्दी क्या है, किसी मौके पर मालूम हो जाएगा.

" मगर उसने सिर हिला कर कहा, " सो नहीं, अभी लाइए, आखिर देर करने से फायदा ही क्या होगा?

शुभस्य शीघ्रम् न - जाने कब कैसा मौका आन पड़े.

" उनको हीला - हवाला करते देख आखिर दलीपशाह ने कहा, " अजी क्या दिल्लगी करते हो, बता कर छुट्टी भी करो, यह कम्बख्त एक जिद्दी है, क्या बिना लिए तुम्हारा पिण्ड छोड़ेगा! " लाचार हो अर्जुनसिंह ने अपने बटुए में से एक कागज निकाला और उसे गिरिजाकुमार की तरफ बढ़ाया, उसने वह कागज दोनों हाथों से ले सिर से लगाया और पीठ ठोंककर कहा, " शाबास, मैं तुम्हारी जिद्द से नाराज नहीं बल्कि खुश हूँ, अच्छी चीज के हासिल करने की इतनी लगन हुए बिना कोई अच्छा ऐयार बन नहीं सकता.

!!

अर्जुनसिंह के बटुए में एक शीशी उस अर्क की और मौजूद थी जिसे उन्होंने गिरिजाकुमार के हवाले किया और तब कहा, " लो बस तुम जाओ और इस मल्लाह को भी लेते जाओ.

जैसी सलाह हुई है उस मुताबिक काम करना और जहाँ तक जल्द हो वहाँ पहुँच कर खूब सावधानी से रहना.

हम दोनों में से कोई - न - कोई बहुत जल्द ही तुम्हारे पास पहुंचेगा.

" " बहुत अच्छा " कह कर गिरिजाकुमार ने बेहोश मल्लाह को पीठ पर लाद लिया और दोनों को प्रणाम करके वहाँ से हट अपने उन बाकी साथियों की तरफ बढ़ गया जो दलीपशाह को सलाह - मशविरे में मशगूल देख अपने काम के लिए इधर उधर फैल गए थे.

अर्जुनसिंह के बताए ढंग से दलीपशाह ने वह अर्क जहाँ रोगन इस्तेमाल हुआ था वहाँ लगा लिया तब शीशी ठिकाने रख दोनों आदमी आपस में बातें करते हुए गंगा के किनारे - किनारे नीचे की तरफ जाने लगे.

लगभग तीन - चार कोस तक तेजी से जाने के बाद गंगाजी के बीचोबीचो में से बहते हुए एक बड़े बजरे पर इनकी निगाह पड़ी.

दलीपशाह ने कहा, " मालूम होता है यही वह बजरा है.

" अर्जुनसिंह ने कहा, " जरूर वही होगा, मगर यह नीचे की तरफ जा रहा है और इससे गुमान होता है कि रामा मल्लाह की तरफ से ये लोग नाउम्मीद हो चुके हैं! ऐसी हालत में उस पार जाने में तरदुद होगा.

" दलीपशाह ने कहा, " कोई तरदुद न होगा बशर्ते कि बजरा वही हो! " इसी समय पास ही कहीं से बजती हुई एक सीटी की हलकी आवाज इन लोगों के कानों में पड़ी जो शायद किसी अपने ही आदमी की बजाई थी क्योंकि उसे सुनते ही दलीपशाह ने भी उसके जवाब में सीटी बजाई और साथ ही एक आदमी को पेड़ों के झुरमुट से बाहर निकलते देखा.

पहिली ही निगाह ने बता दिया कि यह दलीपशाह का शागिर्द सहदेव है जिसने पास आ उन्हें एक खास इशारे के साथ प्रणाम किया और जबाब पाकर कहा, " मैं बहुत देर से आपकी राह देख रहा था.

"

दलीपशाह ने जबाब दिया, " हाँ मुझे जरूर कुछ देर हो गई और शायद इसी सबब से बजरे वाले रामा मल्लाह की आशा छोड़ चले जा रहे हैं.

मैं समझता हूँ कि यह वही बजरा है जिसका गिरिजाकुमार ने मुझसे जिक्र किया था?

" सहदेव:

जी हाँ, बही है, और उस पार के लोग अपने मल्लाह से नाउम्मीद होकर नहीं गए हैं बल्कि किसी को लेने वास्ते उस पार जा रहे हैं, शीघ्र ही फिर वहाँ से वापस आदेंगे.

उनके दो आदमी और भी अभी इसी पार हैं जो किसी काम से उतर गए थे और बजड़े के वापस आने पर पुनः सवार होंगे.

दलीप ०:

तब तो सब ठीक ही है, अच्छा तो अब हमें क्या करना चाहिए?

तीनों आदमी एक आड़ की जगह में चले गए और आपस में सलाह करने लगे.

तीसरा व्यान।

पत्थर की उस विकराल मूरत ने दोनों हाथ बड़ा प्रभाकरसिंह को पकड़कर अपनी तरफ खींचा और उनका सिर अपनी दाड़ों के बीच में दबा लिया.

इस अचानक की विपत्ति ने प्रभाकरसिंह के होश - हवाश गायब कर दिए और उनके मुँह से अनजाने ही एक चीख निकल पड़ी.

पर ताज्जुब की बात थी कि इस चीख की आवाज सुन उस मूरत के गले से डरावनी हँसी निकली.

उसने अपना मुँह खोल दिया और प्रभाकरसिंह ने जल्दी से अपना सर बाहर निकाल लिया पर बहुत कोशिश करने पर भी उसके बज्र जैसे हाथों से छूट न सके.

उसी समय मूरत के मुंह से निकला, " बस खबरदार, छूटने की कोशिश न करो नहीं तो मैं जिन्दा ही चबा जाऊँगा! " बड़ी कोशिश से अपने को सम्हाल कर प्रभाकरसिंह बोले, “ आखिर कुछ मालूम भी तो हो कि तुम मुझसे क्यों इतने नाराज हो गए हो कि अकारण ही मुझे चबा जाना चाहते हो?

"

मूरत ने जवाब दिया, “ मेरा नाम भूतनाथ है, मैं रोहतासमठ का पुजारी हूँ और यहाँ पर उस खजाने की हिफाजत करने के लिए बैठाया गया हूँ जो शिवगढ़ी में बन्द है.

प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब से कहा, " मगर तब मुझसे तुम्हारी क्या दुश्मनी हो सकती है?

" भूतनाथ:

खास तौर पर तो कुछ भी नहीं मगर जब तुम मेरे कब्जे में आ ही गए हो तो तुम्हें छोड़ना भी नहीं चाहता, हाँ एक काम तुम कर सको तो अलबत्ता तुम्हें छोड़ सकता हूं. प्रभाकर:

सो क्या?

भूतनाथ:

मैं बहुत दिनों से प्यासा हूँ और मेरी प्यास खून से ही मिट सकती है.

तुम्हारे साथ एक औरत है, उसका सिर काटकर ताजा लहू अगर मुझे पिला सको तो मैं तुम्हें छोड़ दूं, यह जानकर कि यह शैतान चाहता है कि मालती का लहू पिए प्रभाकरसिंह का बदन गुस्से के मारे काँपने लगा और आँखें कबूतर के खून की तरह सुर्ख हो गईं.

क्रोध के मारे उनके मुँह से किसी तरह की आवाज न निकली, मगर उन्हें ऐसी हालत में देख वह मूरत पुनः बोली, " क्यों चुप क्यों हो गए?

शायद सोच रहे होंगे कि यदि ऐसा करने पर भी मैं तुम्हें न छोडूं तो तुम क्या करोगे?

पर मैं भी विश्वास दिलाता हूँ कि यदि तुमने ऐसा किया तो मैं न - केवल तुम्हें छोड़ ही दूंगा बल्कि शिबगड़ी का खजाना भी, जो बिल्कुल मेरे ही कब्जे में तुम्हारे सुपुर्द कर दूंगा.

उसमें इतनी दौलत है कि तुम दस जन्म में भी उसे खर्च नहीं कर सकते.

बताओ अब तो मेरी बात तुम्हें मंजूर है ।

" क्रोध के मारे प्रभाकरसिंह कुछ कह न सके पर वे जोर करके उस प्रेत के हाथों से छूटने की कोशिश अवश्य करने लगे.

उनके इस उद्योग को देख उस मूरत ने अपने हाथों को जरा कस लिया और प्रभाकरसिंह को ऐसा मालूम हुआ कि वह अगर अब जरा सा भी और दबाएगा तो उनकी हड्डियाँ कड़कड़ा जाएँगी.

अपने को मौत के मुंह से छुड़ाने की कोई तरकीब इस समय उन्हें नजर न आती थी और वे यह सोच ही रहे थे कि अब क्या करना मुनासिब है कि इसी समय वह मूरत फिर बोल उठी, " मालूम होता है कि अब भी तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं हुआ और या फिर तुमने शिवगढ़ी के खजाने की अद्भुत दौलत का हाल नहीं सुना.

उसमें ऐसी - ऐसी अनूठी चीजें हैं कि उन्हें पाकर तुम अपने को धन्य समझोगे अच्छा मैं तुम्हें छोड़ देता हूँ, जाओ अपने दोस्तों से इस खजाने के बारे में दरियाफ्त करो, इसके बाद अगर तुम्हारा मन करे तो अपनी साथिन को लेकर फिर मेरे पास आना और उसके खून से मेरी प्यास बुझाना.

बस उसी दम वह खजाना तुम्हारे लिए खुल जाएगा.

" यकायक उस मूरत के हाथ डीले पड़ गए और प्रभाकरसिंह ने अपने को छूटा हुआ पाया, मगर इस समय उनकी ऐसी बुरी हालत हो रही थी कि होश ह्वास ठिकाने न थे.

वे उसी जगह जमीन पर, उस पिशाच से कुछ ही दूर हटकर, बैठ गए और बहुत देर के बाद उनके हवास ठिकाने आए तो इस नीयत से तिलिस्मी किताब खोलकर देखने लगे कि शायद उसमें इस भयानक मूरत या इसकी खौफनाक बातों का कोई जिक्र हो, पर उसमें इसका कोई भी जिक्र न था बल्कि यह लिखा हुआ था:

' लोहगढ़ी के तिलिस्म के चार हिस्सों में से पहिले हिस्से के तोड़ने पर हम तुम्हें बधाई देते हैं.

अब तुम्हें दूसरा और तीसरा हिस्सा तोड़ने में हाथ लगाना चाहिए और इसके लिए बेहतर होगा कि अगर तुम लोग दो आदमी हो तो दोनों अलग होकर काम करो.

गोलाम्बर बाले बुर्ज के तिलिस्म को तोड़ने के लिए एक अलग हो जाय और उसी रीति से काम करे जैसे कि पहिले लिखा जा चुका है, और दूसरा जो दोनों में अधिक जिस्मानी ताकत रखता है तिलिस्म के तीसरे दर्जे को तोड़ने का काम हाथ में ले.

' तुम जिस जगह अब अपने को पाओगे उस दालान के बाहर जाने की जरूरत नहीं, अगर जाओगे तो खतरे में पड़ सकते हो.

(प्रभाकरसिंह ने दिल में कहा - ठीक लिखा है, मैंने ही इधर आकर गलती की और अपने को इस भूतनाथ के हाथ में फंसाया) उस फर्श में एक जगह का पत्थर और पत्थरों से कुछ उभरा हुआ पाओगे, उसे उखाड़ लो और उसके नीचे से जो रास्ता तीसरा हिस्सा शुरू हो उसको साफ कर उसकी राह उस बाग में पहुँचो जहाँ से तिलिस्म का तीसरा हिस्सा शुरू होता है.

" तिलिस्म का यह हिस्सा यद्यपि बहुत छोटा है और आठ पहर के अन्दर तुम इसको तोड़ सकते हो पर इसको तोड़ने में ताकत, होशियारी और फुर्ती की बहुत ज्यादा जरूरत पड़ेगी और अगर तुम कहीं से भी चूकोगे तो भारी नुकसान उठाओगे.

इसलिए आगे लिखी बातों को खूब गौर के साथ कई बार पड़कर दिल में अच्छी तरह नक्श कर लो ताकि कहीं किसी तरह की गलती न होने पावे.

" प्रभाकरसिंह ने ऐसा ही किया अर्थात् इसके आगे जो कुछ बातें लिखी हुई थीं उनको कई बार पड़ा और जब वे सब अच्छी तरह याद हो गई तो आगे काम करने के लिए उठ खड़े हुए.

जिस दालान में से निकलकर वे आँगन में पहुंचे थे अब वे लौटकर पुनः उसी दालान में पहुँचे.

कुछ ही कोशिश से उस पत्थर का पता लग गया जिसके बारे में तिलिस्मी किताब में लिखा हुआ था और उन्होंने उसको उखाड़ने की कोशिश की मगर इस काम को उन्होंने जैसा सहज समझा हुआ था वैसा न पाया क्योंकि उनके पास कोई ऐसी चीज न थी जो पत्थर उखाड़ने में काम आ सकती और इसीलिए इस काम में उनका बहुत ज्यादा वक्त खराब हुआ.

आखिर किसी तरह यह काम पूरा हुआ और प्रभाकरसिंह ने वह सिल्ली उठाकर अलग रख दी.

नीचे जाने के लिए कुछ सीढ़ियाँ नजर पड़ीं पर दो - तीन डण्डों के बाद पानी और कीचड़ नजर आया.

प्रभाकरसिंह ने कपड़े उतारे, केवल लंगोट पहिन रखा और तब उस रास्ते को साफ करने लगे.

भीतर का कीचड़ निकाल - निकालकर बाहर करने में इनको आधे घण्टे से ऊपर समय लग गया पर आखिरकार किसी तरह यह काम भी पूरा हुआ और कीचड़ सब निकल गया पर उसकी जगह - न - जाने कहाँ से आता हुआ पानी उन सीढ़ियों पर दिखाई पड़ने लगा.

वे समझ गए कि यदि इस राह से कहीं जाना होगा तो इस पानी के भीतर से होकर ही जाना पड़ेगा.

कुछ देर तक तो प्रभाकरसिंह इस नीयत से इधर - उधर सीड़ियों के चारों तरफ वाली दीवारों की जाँच करते रहे कि शायद और कोई रास्ता नजर आ जाय पर जब कोई दिखाई न पड़ा तो लाचार पानी में उतरे.

सीढ़ियाँ उतर जाने के बाद पानी गरदन तक आ पहुँचा.

लगभग सात या आठ डण्डा यह देख दम बाँधकर उन्होंने गोता लगाया और पानी के अन्दर धंसे.

सामने की तरफ बढ़कर आँखें खोली तो कुछ उजाला - सा नजर आया और ऐसा मालूम हुआ कि यह पतली सुरंग बावली, तालाब या ऐसे ही किसी खुलासे जलाशय में जाकर समाप्त हुई है जिसके ऊपर चमकने वाले आसमान की रोशनी पानी के अन्दर से इस तरह झलक मार रही है.

वे पुनः पीछे लौट आए, अपने कपड़ों के अन्दर तिलिस्मी किताब जहाँ तक सावधानी से हो सका कसकर लपेट के रखी और तब बाकी सामानों को रख एक गठरी बाँध कमर में लगाई, तिलिस्मी डण्डा हाथ में लिया और भगवान का नाम ले फिर पानी में उतरे.

खूब गहरा दम लेकर गोता लगाया और अगल - बगल की दीवारों का सहारा लेते हुए जहाँ तक तेजी के साथ बन पड़ा आगे की तरफ बढ़े.

फासला जितना कि प्रभाकरसिंह ने अन्दाज किया उससे कहीं ज्यादा निकला और यद्यपि वे अच्छे तैराक थे और एक सॉस में नदी पार करने का कई दफे उनको मौका मिल चुका था पर इस तंग और अनजानी जगह में उनका दम उखड़ने की नौबत आ गई, यहाँ तक कि जिस समय इस सुरंग को उन्होंने तय किया और उनका दम एकदम टूट चुका था.

फटते हुए कलेजे के साथ वे पानी के ऊपर आए और तब आधी बदहवासी की हालत में कुछ देर के लिए सुस्त पड़ गए कुछ देर बाद उनके होश हवास ठिकाने आए और उन्होंने अपने चारों तरफ निगाह डाली.

काले संगमर्मर से बनी हुई एक बावली के किनारे सीढ़ी पर उन्होंने अपने को पाया जो किसी बगीचे या मैदान के बीच में बनी हुई मालूम होती थी और जिसके चारों तरफ बनी इमारत का कुछ हिस्सा यहां से उन्हें नजर आ रहा था.

प्रभाकरसिंह कुछ गौर के साथ उन इमारतों की तरफ देख ही रहे थे जो उन्हें कुछ पहिचानी हुई सी जान पड़ती थीं कि यकायक अपने पास ही में जल में किसी तरह की खलबलाहट की आवाज सुन चौके और उधर देखते ही घबरा कर जल्दी जल्दी कई सीढ़ियाँ ऊपर चढ़ गए.

दो घड़ियालों पर उनकी निगाह पड़ी जिनके भयानक मुँह और बहुत बड़े - बड़े दाँत डर पैदा करते थे और जो अपनी काँटेदार दुम से पानी को मथते और क्रूर ही आँखों से उनकी तरफ देखते हुए धीरे - धीरे बड़े आ रहे थे.

दो - तीन सीढ़ियाँ और ऊपर उठ कर उन्होंने अपने को उन डरावने जानवरों की पहुँच से एकदम बाहर कर लिया और तब कुछ देर उनकी तरफ गौर से देखते रहने के बाद धीरे से यह कहते हुए बावली के बाहर हुए- " क्या ये असली जानवर हैं क्यां नकली?

" बावली के बाहर निकल कर जब प्रभाकरसिंह ने अपने चारों तरफ निगाह की तो उन्हें मालूम हुआ कि वे एक छोटे से बाग में हैं जिसे चारों तरफ से तरह - तरह की ऐसी इमारतों ने घेरा हुआ है जिनमें से कई उनकी पहले की देखी हुई हैं.

उस पहले स्थान अर्थात् ' भूतनाथ ' वाले आँगन से जो इमारतें उन्हें अपने दाहिनी तरफ दिखाई दी थीं वे ही इस समय उनके बाईं तरफ मौजूद थीं और इससे उन्होंने गुमान किया कि उस पानी वाली सुरंग के जरिए वे उन इमारतों के नीचे से होते हुए इस दूसरी तरफ आ गए हैं और इसी बात से उन्होंने यह भी समझ लिया कि ये इमारतें लम्बाई में चाहे जहाँ तक भी फैली हुई हों पर इनकी चौड़ाई या मोटाई बहुत अधिक नहीं है.

इस बाग में बड़े पेड़ तो अधिक न थे पर छोटे मेवों के दरख्त बहुतायत से थे और वे एक नहर की मदद से जो बाग के बीच में से होती हुई बह रही थी. हर दम हरे - भरे रहते थे.

उन्होंने अपने कपड़े इन पेड़ों पर सूखने को डाल दिए और तब जरूरी कामों से निपट तथा उसी नहर के पानी से स्नान कर सन्ध्या - पूजा आदि से छुट्टी पाई, इसके बाद कुछ मेवा खाया और सब तरह से निश्चिन्त हो तिलिस्म तोड़ने के काम में लगे क्योंकि तिलिस्मी किताब ने उन्हें बता दिया था कि अब आगे उन्हें इन बातों की सुविधा न मिलेगी और तिलिस्म का यह हिस्सा तोड़ने में कई पहर लग सकते हैं.

अपने कपड़े पहन तिलिस्मी किताब कमर में खोंस और तिलिस्मी डंडा हाथ में ले प्रभाकरसिंह उस बाग के चारों तरफ घूमने लगे.

उनका लक्ष्य वे इमारतें या दीवारें थीं जिन्होंने चारों तरफ से बाग को घेरा हुआ था और उन्हीं पर गौर की निगाह डालते हुए वे अपने मतलब की चीज खोज रहे थे.

आखिर घूमते - फिरते वे एक ऐसी जगह पहुंचे जहाँ से लगभग दो पुरसा की ऊँचाई तक की दीवार तो एकदम साफ थी पर उसके ऊपर की तरफ एक बड़ी बारहदरी बनी हुई दिखाई पड़ रही थी.

इस जगह की दीवार को बहुत गौर के साथ देखने पर उन्हें एक स्थान पर एक चौकोर निशान इस ढंग का दिखाई पड़ा जिससे यह गुमान किया जा सकता था कि शायद यहाँ कोई गुप्त दरवाजा या खिड़की है.

प्रभाकरसिंह गौर के साथ उस निशान को देखने लगे और साथ ही इस बात को जानने का भी उद्योग करने लगे कि किस प्रकार यहाँ पर रास्ता पैदा किया जा सकता है.

बहुत ही बारीक एक दरार चारों तरफ घूमी हुई किसी रास्ते के उस जगह होने का शक जरूर पैदा कर रही थी पर इससे ज्यादा और कुछ न था.

प्रभाकरसिंह उस स्थान को दबाने, ठोंकने, पीटने और जाँचने लगे पर किसी तरह भी यह पता न लगा कि यहाँ पर रास्ता कैसे पैदा किया जा सकेगा.

आखिर उस जगह से कुछ पीछे हट कर वे पुनः गौर करने लगे.

उस बाग के नीचे की तरफ का जमीन का एक छोटा सा हिस्सा उन्हें कुछ उभरा - सा दिखाई पड़ा, मानों उसके नीचे कोई चीज गड़ी हुई हो.

प्रभाकरसिंह उस जगह को खोदने लगे.

कुछ मेहनत के बाद वहाँ एक छोटा - सा गढ़ा हो गया जिसके नीचे की तरफ पत्थर की एक सिल्ली, जिसमें कड़ी लगी हुई थी दिखाई पड़ी.

गड़हे को और बड़ा कर प्रभाकरसिंह ने उस सिल्ली को बाहर कीया.

उसके नीचे पत्थर का एक चौकोर टांका सा नजर आया जिसकी तह में कोई चीज दिखाई पड़ रही थी.

गौर से देखने के बाद हाथ डाल कर उसको निकाला.

किसी तरह के सुफेद पत्थर की एक बालिश्त लम्बी और इससे कुछ कम चौड़ी एक तख्ती थी जिस पर बारीक अक्षरों में कोई मजमून लिखा हुआ था.

प्रभाकरसिंह उस मजमून पर गौर करने लगे, आखिर कुछ देर की मेहनत में उन्होंने उसका मतलब निकाल ही लिया.

पाठकों का कौतूहल दूर करने के लिए हम वह मजमून यहाँ लिखे देते हैं. दीरर वासाकरतर पजाबा ररह जोकर निसखीं शाकन नरलो दिठीऔ खाकोर ईतघ पबड़ि रुपया ताल्लेलों हैलीको उतखि सरला केहो ऊबा पपव ररली के उमें दाग से हिओजो नेसनु

कोबछ नेशनि कोरीले एरउ कभीसे जातउ ररा बामक एंतर जोडाय नेलहाँ क्रोनाला त्रासाओ रमी जानेर रजोइ तीक्रुसी ओछक्के केदिओं कोखाद तोईर जोपड़ा दोडेल औजोदो। प्रभाकरसिंह ने वह तख्ती वहीं छोड़ दी और पुनः दीवार के पास पहुंचे, अपने हाथ में तिलिस्मी डण्डे से किसी खास क्रम के साथ उन्होंने उस चौकोर निशान के चारों कोनों को ठोंकना शुरू किया.

कुछ ही देर बाद एक खटके की आवाज हुई तब कुछ जोर लगाते ही वहाँ का उतना टुकड़ा चूहेदानी के पल्ले की तरह नीचे से पीछे ऊपर की तरफ उठ गया और हाथ - डेढ़ हाथ लम्बा चौड़ा एक रास्ता दिखाई देने लगा.

जमीन पर लेट कर प्रभाकरसिंह ने अपना अगला धड़ उस छेद में डाल दिया और भीतर की तरफ देखने लगे.

एक बहुत लम्बी कोठरी दिखाई पड़ी जिसके पिछले हिस्से में क्या था यह अंधकार के कारण नजर न आता था क्योंकि वहाँ जो कुछ रोशनी थी वह उसी छेद की थी जिसकी राह प्रभाकरसिंह अपना धड़ अन्दर दिए हुए थे पर सामने की तरफ जमीन पर एक औरत की लाश पड़ी जरूर दिखाई दी जिसकी छाती में एक छुरा घुसा हुआ था.

यकायक एक ऐसी चीज जिसके देखने की भी उम्मीद न हो सकती थी. अपने सामने पा प्रभाकरसिंह घबड़ा गए पर फिर कुछ सोच - विचार कर उन्होंने हिम्मत की और लाश को खींच कर बाहर निकाला.

बाहर निकाल कर जब गौर से देखा तब मालूम हुआ कि वह लाश एकदम बनावटी है.

उसका सिर मोम का और नखशिख से दुरुस्त था और समूचा बदन किसी तरह के ऐसे पदार्थ का बना हुआ था जो चमड़े और माँस की तरह दिखाई देता हुआ भी वास्तव में कुछ और ही वस्तु था.

कुछ देर तक वे गौर से उसकी बनावट और कारीगरी को देखते रहे इसके बाद उसे उठा लिया और उसी बावली के पास पहुंचे जहाँ से इस बाग में आये थे.

घाट की सीढ़ियाँ उतरते हुए जल के पास पहुंचे और सीढ़ी पर लाश रख घड़ियालों की राह देखने लगे.

कुछ ही देर बाद वे दोनों जानवर पुनः तैरते हुए आते नजर आए.

प्रभाकरसिंह ने वह लाश उठाकर पानी में डाल दी और आश्चर्य के साथ देखा कि लाश को देखते ही ये उस पर झपटे और अपने खौफनाक दाँतों से उसे पकड़ कर पानी के नीचे ले गअएं। इस बात को घड़ी भर से ऊपर न बीता होगा कि यकायक वे दोनों जानवर पुन:

जल के ऊपर दिखाई पड़े पर इस बार वे दोनों बड़ी बेचैनी और घबड़ाहट के साथ इधर - उधर भाग रहे थे और ऐसा जान पड़ता था मानों किसी तरह की गहरी तकलीफ में हैं, कभी नीचे जाते कभी ऊपर आते, कभी पानी के अन्दर से बाहर मुँह निकाल कर हॉफ्ते और कभी पुनः गोता लगाते हुए उन लोगों ने समुची बावली छान डाली और तब एकाएक एक आखिरी तड़प दिखला कर सुस्त पड़ गए.

उनका पेट ऊपर की तरफ हो गया और वे उल्टे होकर इस तरह तैरने लगे जैसे मरी हुई मछलियाँ जल पर तैरती हैं, पर यह अवस्था भी उनकी देर तक न रही.

कुछ देर बाद बड़े जोर की आवाज के साथ उनके पेट फट गए और वे पुनः पानी में डूब गए.

मुर्दा घड़ियालों का डूबना था कि बावली के पानी में एक तरह की खलबलाहट शुरू हुई और उसका जल तेजी से इस तरह क़म होने लगा मानों तह के किसी छेद की राह कहीं निकला जा रहा हो.

लगभग घड़ी भर के अन्दर ही आधे से ऊपर पानी कम हो गया.

बाकी पानी भी जल्दी ही सूख गया और तह में सिर्फ कुछ कीचड़ रह गया.

अब प्रभाकरसिंह आगे बड़े और बाकी की सीढ़ियाँ तय कर नीचे पहुँचे.

दोनों घड़ियाल जिनके पेट फूट की तरह फटे हुए थे आधे कीचड़ से दबे दिख रहे थे और उनके पास ही कोई चमकती हुई चीज नजर आ रही थी जो करीब हाथ भर के पेट में होगी.

प्रभाकरसिंह ने आगे बढ़कर उस चीज को उठाना चाहा पर हाथ लगाने के साथ ही उनके बदन में ऐसा कड़ा झटका लगा कि वे बदहवास हो गए और लौट आकर पुनः सीढ़ी पर बैठ बल्कि गिर गए, उस समय झटके ने उनके शरीर का पोर - पोर हिला दिया था और ऐसा मालूम हो रहा था मानों उनके बदन पर बिजली गिर पड़ी हो.

कुछ देर बाद अपने होश ह्वास सम्हाल वे फिर उठे और उस चीज से कुछ दूर ही खड़े हो कर उसे गौर से देखने लगे.

वह मोटे दलदार शीशे का एक छोटा सन्दूक था जो न - जाने किस कारण ऐसा चमक रहा था कि उस पर निगाह नहीं ठहरती थी.

पहिली दफे जब प्रभाकरसिंह उसके पास गए थे तो इस चमक पर उनका ध्यान न गया था, यह भी सम्भव है कि पहले वह चमक न रही हो और अब चमक पैदा हुई हो, और शीघ्र ही मालूम हो गया कि वास्तव में यही बात थी.

बावली का पानी ज्यों - ज्यों कम होता जा रहा था उस वक्स की चमक भी बढ़ती जा रही थी.

प्रभाकरसिंह को यह विश्वास था कि इसी चीज को उठाकर उस जगह ले जाने के बारे में तिलिस्मी मजमून ने उनको आज्ञा दी है पर इसे उठावें तो कैसे?

इसका तो छूना तक भी गजब करता है, आखिर सोचते - विचारते उन्हें एक बात ख्याल आई.

पहली दफे जब वे उसके पास गए थे तो अपना तिलिस्मी डंडा बाहर सीड़ी पर ही छोड़ गए थे शायद पास में उसके न रहने से ही ऐसा हुआ हो यह सोच वे उसे उठा लाए और पुनः धीरे से उस चीज को हाथ लगाया.

इस बार भी कुछ झटका तो उन्हें अवश्य लगा पर वह ऐसा न था कि बर्दाश्त के बाहर हो – यद्यपि कुछ तकलीफ जरूर हुई पर वे उस बक्स को उठा सीढ़ियाँ चढ़ते बावली के ऊपर हो गए.

वह बक्स यद्यपि छोटा पर बड़ा ही भारी था यहाँ तक कि नीचे - ऊपर तक जाने में ही वे हॉफने लग गए, पर जरा सुस्ता कर फिर उन्होंने उसे उठाया और जल्दी - जल्दी चल कर उसी जगह पहुँचे जहाँ पहिले गए थे, पहिली तरक़िब से पुनः बह छेद प्रकट किया और तब जोर लगा कर उस शीशे के बक्स को उसके अन्दर फेंक दिया.

बक्स का अन्दर डालना था कि दीवार के दूसरी तरफ से तरह - तरह की आवाजें इस प्रकार की आने लगीं मानों बहुत - से कल - पुरजे तेजी के साथ चलने लग गए हों जिनके गूंजने की आवाज बाहर तक आ रही थी.

यह आवाज तेजी के साथ बढ़ने लगी यहाँ तक कि प्रभाकरसिंह को दीवार पर उनकी कंपकपी मालूम होने लगी और थोड़ी देर के बाद तो ऐसा जान पड़ने लगा मानों वह दीबार कॉप रही हो.

यह हाल देख प्रभाकरसिंह वहाँ से हटकर कुछ दूर पर जा खड़े हुए, अपनी निगाह उस दीवार की तरफ ही रक्खी.

यकायक दीबार ने एक तरह की लहर - सी खाई और तब उसका वह हिस्सा जो प्रभाकरसिंह के सामने पड़ता था जोर से कॉंप कर गिर गया, यदि वे होशियारी कर के पहले ही दूर न हट गए होते तो इसमें शक न था कि दीवार के नीचे दब कर चुटीले हो गए होते.

मगर यह क्या प्रभाकरसिंह की आँखों का भ्रम है या कोई तिलिस्मी खेल?

उनके सामने यह क्या माजरा दिखाई पड़ रहा है?

वह कौन औरत है जो सामने के खम्भे के साथ बंधी हुई है! क्या मालती है?

नहीं नहीं, मालती की यह दुर्दशा भला क्योंकर हो सकती है?

तब और कोई है?

नहीं - नहीं, मालती ही है, जरूर मालती है! और ये दोनों कौन हैं और क्या कर रहे हैं?

हैं, ये तो तलबार हाथ में लिए हैं और किसी की जान लिया चाहते हैं! हैं, ये तो मालती की गर्दन मारना चाहते हैं! उनके मुँह से बरबस निकल पड़ा, " ठहर तो जाओ कम्बख्तों, जरा मुझे आ तो जा ने दो! " तड़प कर प्रभाकरसिंह उस टूटी दीवार के अन्दर झपटे पर अफसोस, दो - तीन कदम से ज्यादा न जा सके.

लोहे की तरह मजबूत कई हाथों ने उनको दोनों तरफ से पकड़ लिया और साथ ही कहीं से यह आवाज आई, " अच्छे मौके पर यह भी आ गया.

इन्हीं दोनों ने समूचे तिलिस्म में तहलका मचा रखा था.

अब इसे भी साथ ही में बलि दे दो और हमेशा के लिए सब झंझट मिटा डालो! "

चौथा व्यान।

खास बाग के अपने सोने वाले कमरे में कुंअर गोपालसिंह अभी - अभी सो कर उठे हैं और खिड़की की राह आने वाली मन्द मन्द हवा के झोंके का आनन्द ले रहे हैं परन्तु यकायक वे चिहुँक पड़े.

पहिले तो अधलेटे - से तकिए के सहारे पड़े थे, पर अब उठकर बैठ गए और गौर से खिड़की की राह नीचे बाग की तरफ देखने लगे.

मगर इतने पर भी मन न माना, कुछ आगे को झुके और खिड़की में से झाँक कर नीचे देखने बाद आप से आपही बोल उठे, " बेशक वही है! " पर वे चमक पड़े जब किसी ने पीछे से उनकी बात के जबाब में पूछा, " कौन वही है?

" उनके सोने वाले कमरे में इस तरह बिना इतिला इस वक्त आने वाला कौन है जिसने यह बात कही?

चौककर गोपालसिंह ने गर्दन घुमाकर पीछे देखा और साथ ही इन्द्रदेव को एक काला लबादा ओढ़े पलंग के पैताने खड़े पा आश्चर्य से बोल उठे, " हैं, आप इस वक्त यहाँ?

इन्द्रदेव ने लबादा उतार कर पलंग के पैताने की एक संगमर्मर की चौकी पर रख दिया और तब सामने आकर कहा, " एक बड़े ही जरूरी काम से ऐसे बेमौके पर आपसे मिलने आना पड़ा.

वह तो कहिए आपके दिए निशान की बदौलत बेरोक टोक यहाँ तक आ पहुँचा नहीं तो न जाने कितनी देर रुकना पड़ता! " गोपालसिंह ने पलंग से उतरते हुए पूछा, " ऐसा जरूरी काम क्या निकल आया जिसने ऐसे बेवक्त आपको यहाँ आने पर मजबूर कीया ?

मगर आपकी सूरत देखने से मालूम होता है कि आप रात - भर के जगे हुए हैं और साथ ही कहीं दूर का सफर करते हुए भी आ रहे हैं.

"

इन्द्रदेव ने कहा, " हाँ आपके दोनों ही अनुमान सही हैं और मैं अभी बताऊँगा कि वह काम क्या है पर आप पहिले यह बतलाइए कि नीचे बाग में किसको इतने गौर से देख रहे थे कि मेरे आने की आहट तक आपको न मिली?

" गोपालसिंह ने यह सुनते ही चौंककर कहा, " हाँ, यह भी एक ताज्जुब की बात है! (पुनः खिड़की के पास जाकर और नीचे बाग में देख कर) नहीं है, कहीं चली गई! " इन्द्रदेव:

(खिड़की के पास पहुँचकर) क्या कोई औरत थी. ?

कौन थी. वह?

गोपाल:

आपको याद होगा कि कुछ दिन हुए इसी तरह सुबह के वक्त मैंने नीचे बाग में एक औरत को घूमते हुए देखा था और जब उसका पीछा किया तो उसको तीसरे दर्जे में पाया, पर वह वहाँ से भी गायब हो गई फिर कहीं नजर न आई! इन्द्र:

हॉ - हाँ, मुझे बखूबी याद है.

उस घटना के बाद ही एक लौंडी को हम लोगों की बातें सुनते पकड़ा था और बहुत कुछ तकलीफ उठाने पर भी उसने कुछ न बताया कि वह क्यों ऐसा कर रही थी.

गोपाल ०:

हाँ हाँ, वही औरत आज फिर नीचे घूमती - फिरती दिखाई पड़ी, मगर आपके आने के साथ कहीं गायब हो गई.

इन्द्र:

अच्छा, आश्चर्य की बात है! लेकिन क्या वह उस दिन के बाद फिर आज ही दिखाई पड़ी! इस बीच में कहीं एक दफे भी दिखाई नहीं दी?

गोपाल:

नहीं, बिल्कुल नहीं.

इन्द्र:

(चिन्ता के साथ) न - जाने कौन बला है! खास बाग के अन्दर इस तरह किसी का मनमाने आना - जाना बड़े ताज्जुब और साथ ही तरदुद की बात है! १.

देखिए भूतनाथ तेरहवाँ भाग, पहिला बयान.

गोपाल:

इसमें क्या शक है, कहीं यह भी उसी गुप्त कुमेटी की कोई कार्रवाई तो नहीं है! इन्द्रदेव:

(सोचते हुए) हो सकता है, खैर देखा जाएगा.

गोपाल:

(चौंक कर) देखिए - देखिए, फिर वह दिखलाई पड़ी! इन्द्रदेव ने खिड़की में से देखा.

एक क़मसिन औरत नीचे के बाग में रविशों पर चहलकदमी कर रही थी.

एक सायत के लिए उसकी निगाह ऊपर उस खिड़की की तरफ उठी जिसमें से ये दोनों देख रहे थे और तब तुरन्त ही न - जाने क्यों जरा चिहुँक वह पीछे की ओर हटी और चमेली की झाड़ियों में जा निगाह की ओट हो गई इसके साथ ही गोपालसिंह से यह कह झपटते हुए इन्द्रदेव कमरे के बाहर हुए- " आप यहाँ ठहरिए, मैं उसका पीछा करता हूँ, गोपालसिंह एक कुरसी खिड़की के पास खींच उस पर बैठ गए और नीचे का हाल देखने लगे.

अभी सूर्योदय होने में बहुत बिलम्ब था और इसी कारण बाग में कोई चलता - फिरता नजर नहीं आता था.

गोपालसिंह ने देखा कि इन्द्रदेव छिपते हुए उन्हीं चमेली की झाड़ियों की तरफ बड़े और एक जगह रुक कुछ आहट लेने बाद उन्हीं झाड़ियों के अन्दर जा कहीं गायव हो गए.

आखिर आधे घण्टे से ऊपर समय तक इन्द्रदेव गायब रहे और तब तक गोपालसिंह भी अपनी जगह से न टले.

झाड़ियों के आड़ से निकलते हुए इन्द्रदेव को उन्होंने देखा पर वे अकेले थे जिससे यह समझ गए कि वह औरत इन्द्रदेव के हाथ न लगी.

बीच का रास्ता तय कर जैसे ही इन्द्रदेव ने कमरे में पैर रखा वैसे ही गोपालसिंह ने पूछा - ' मालूम होता है वह आपके हाथ नहीं लगी! " परेशानी की मुद्रा में इन्द्रदेव एक कुर्सी पर बैठ गए और बोले, “ हाँ ऐसी ही बात है, उसका पीछा करता हुआ मैं बहुत दूर तक चला गया पर वह गायब हो ही गई.

न - मालूम वह क़ौन थी. या किस मतलब से यहाँ घूम रही थी, पर इसमें कोई शक नहीं कि उसे तिलिस्म का हाल बहुत कुछ मालूम है.

गोपाल:

तो क्या वह तिलिस्म के अन्दर चली गई?

इन्द्र:

हाँ मगर साथ ही एक ताज्जुब की चीज मेरे लिए छोड़ गई?

गोपाल:

वह क्या?

इन्द्रदेव ने एक छोटा - सा कागज का टुकड़ा निकालकर गोपालसिंह के सामने रख दिया और कहा, " जहाँ से वह आखिरी दफे मेरी आँखों की ओट हुई वहाँ यह कागज का टुकड़ा पड़ा हुआ मिला जिसे शायद वह मेरे ही लिए छोड़ गई थी.

" गोपालसिंह ने वह कागज का टुकड़ा उठा कर पड़ा.

किसी बहुत ही फिकी स्याही से जो शायद किसी पौधे का रस भी हो सकता था लिखा हुआ था " मुझे दुश्मनों ने चक्रव्यूह में बन्द कर रखा है.

क्या कोई दयालु वह तिलिस्म खोलकर मुझे छुड़ावे और मेरे माँ - बाप के पास पहुंचावेगा?

मैं अकेले ही वहाँ बन्द नहीं हूँ बल्कि मेरी तरह और भी कई दुखिया वहाँ बन्द मुसीबत की घड़ियाँ काट रहे हैं.

है बड़े ताज्जुब के साथ गोपालसिंह यह मजमून पड़ गए और तब देर तक कुछ गौर करते रहे.

यकायक वे उठे और एक आलमारी खोल उसमें से कोई चीज निकाल लाये.

इन्द्रदेव ने देखा कि वह भी कागज का एक छोटा - सा टुकड़ा है.

गोपालसिंह के कहने से उन्होंने उसे पड़ा, उसी तरह की फीकी स्याही से उस कागज पर यह लिखा हुआ था- " मैं चक्रव्यूह में कैद हूँ, " पड़कर इन्द्रदेव ने गोपालसिंह की तरफ देखा जिन्होंने कहा, " आपको याद होगा कि पिछली मर्तबा जब वह मुझे देखकर गायब हुई तो यह पुर्जा मिला था, पर उस समय मैं यह निश्चय नहीं कर सका था कि यह वास्तव में उसी की चीठी है या किसी दूसरी घटना का सूत्रपात है, पर आपका यह पुर्जा विश्वास दिलाता है कि यह भी उसी का लिखा हुआ है जिसकी यह पहिली चीठी थी.

"

इन्द्रदेव ने दोनों चीठियों के अक्षर मिलाकर कहा, " दोनों के अक्षर एक ही से हैं.

बेशक ये दोनों मजमून एक हाथ के लिखे हुए हैं! " गोपाल:

तब इससे क्या समझा जाय?

इन्द्र:

क्या बताऊँ, मेरी अक्ल तो आप हैरान है, अगर लिखने वाले का कहना सही है तो वह जरूर ऐसी जगह बन्द है जहाँ से बड़कर भयानक स्थान तिलिस्म भर में कोई न होगा और जहाँ से किसी को खोज निकालना या उसे छुड़ा लाना भी कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है.

फिर अगर वह बन्द ही है तो बार - बार इस तरह स्वतन्त्रता के साथ घूमती - फिरती हम लोगों को क्यों दिखाई देती है?

अगर यह कहा जाय कि यहाँ तक आने की उसे स्वतन्त्रता है तो वह तिलिस्म में कैद किस तरह मानी जा सकती है, और ऐसी हालत में फिर उसका लिखना गलत साबित होता है.

गोपाल:

बेशक ऐसा ही है और फिर अगर उसका कहना सही भी मान लिया जाय तो उसका छुड़ाना भी तो कोई मामूली बात नहीं है.

चक्रव्यूह का तिलिस्म कोई ऐसा तिलिस्म नहीं है कि जब चाहे उसके अन्दर चला जाय और उसमें फंसे हुए किसी व्यक्ति को छुड़ा लावे बल्कि मैं तो समझता हूँ कि बिना उस तिलिस्म को तोड़े यह काम हो ही नहीं सकता.

इन्द्र::

कदापि नहीं, बिना तिलिस्म टूटे उसके अन्दर से कोई कैदी किसी तरह नहीं निकाला जा सकता और तिलिस्म टूटना कोई खिलवाड़ नहीं तिस पर चक्रव्यूह का! गोपाल:

मैने चाचाजी (भैयाराजा) की जुबानी सुना था कि चक्रव्यूह ऐसा भयानक तिलिस्म है कि तिलिस्म का राजा भी अगर वहाँ के चक्कर में पड़ जाय तो कुछ कर नहीं सकता.

मगर वे यह भी कहते थे कि उसके अन्दर ऐसी - ऐसी अनूठी चीजें हैं कि देख कर अचम्भा होता है पर बिना तिलिस्म तोड़े वे किसी को मिल नहीं सकतीं.

उनका यह भी कहना था कि उस तिलिस्म के चक्कर में जो कोई फंस जाय वह बिना तिलिस्म टूटे किसी तरह भी बाहर निकल नहीं सकता.

इन्द्र:

बहुत ठीक बात है, जहाँ तक मुझे पता है उसके ऐसा भयानक तिलिस्म कोई दूसरा नहीं है.

गोपाल:

मैंने उनसे एक बार जिद्द की थी कि उसके अन्दर ले चल कर मुझे वहाँ की सैर करा दें जिस पर वे बोले कि उसका भेद बताने वाली एक तिलिस्मी किताब है, जब तक वह हाथ में न हो कोई उसके अन्दर जा नहीं सकता.

अगर जाने की कोशिश करेगा तो फँस जायगा और अपनी जिन्दगी से हाथ धोएगा.

इन्द्र:

(कौतूहल के साथ) आपने उनसे पूछा नहीं कि वह किताब कहाँ है या कैसे मिल सकती है?

गोपाल:

पूछा, पर उन्होंने कहा कि मुझे मालूम नहीं, हाँ, बड़ों से सुनने में आया है कि किसी बहुत ही गुप्त जगह पर छिपा कर रखी हुई है और तभी प्रकट होगी जब उस तिलिस्म की उम्र समाप्त होने को आवेगी.

अब मालूम नहीं कि वे सही कहते थे या बहाना करके सिर्फ ढाल देने की नीयत से उन्होंने यह बात कही थी.

इन्द्र:

नहीं - नहीं, उन्होंने बहुत सही कहा था, एक बार बड़े महाराज से बातें होने पर उन्होंने मुझसे यही बात कही थी! गोपाल:

खैर जाने दीजिए इस विषय को, अब यह बताइए कि आप इतनी सुबह किस जरूरी काम से आए थे?

इन्द्र:

हाँ मैं भी यही बताया चाहता हूँ, क्योंकि अब तक मुझे यहाँ से चले जाना चाहिए था, मैं इस वक्त दो कामों से आया था.

गोपाल:

कौन - कौन?

इन्द्र:

(एक लम्बा कागज उनके आगे रख कर) पहिला काम यह है.

गोपाल:

(कागज उठा कर पड़ते हुए ताज्जुब के साथ) ये नाम किनके हैं?

इन्द्र:

यह उस गुप्त कमेटी के बने हुए मेम्बरों के नामों की फेहरिस्त है, जिन लोगों का नाम मैं पहिले आपको बता चुका हूँ उनके इलावे ये इतने लोग उस कमेटी से सम्बन्ध रखने वाले और हैं और अगर ये गिरफ्तार कर लिए जाएँ तो बस वह कमेटी टूट जायेगी! गोपाल:

(खुश होकर) वाह - वाह, यह तो बड़ी अच्छी चीज आप लाये! (नामों को पड़ते हुए रुक कर) मगर यह मैं किसके नाम इसमें देख रहा हूँ – रामनाथ मिश्र, थी. निवासदास, गोविन्दसिंह, रघुनन्दन शुक्ल, गोकुल, छोटे, शारदा क्या आपका कहना है कि ये सभी उस गुप्त कमेटी के सदस्य हैं जिसने मेरे पिता की जान ली है?

इन्द्र:

जी हाँ.

गोपाल:

(पुनः सूची पढ़ते हुए) ताज्जुब की बात है! मुरलीधर ओझा, रामदहिन शर्मा, प्यारेलाल - क्या सचमुच ये लोग भी उस कमेटी में शामिल हैं या आपको किसी तरह का धोखा हुआ है?

इन्द्र:

(हँसकर) मुझे किसी तरह का धोखा नहीं हुआ है और ये सब लोग निश्चित रूप से उस कम्बख्त कमेटी के मेम्बर है. आप बेखटके इन लोगों को गिरफ्तार कीजिए और सजा दीजिए.

ये नाम मुझे ऐसे जरिये से मालूम हुए हैं कि इनके सही होने में किसी तरह का शक हो ही नहीं सकता.

गोपाल:

इस बात का क्या मतलब?

क्या आपको ये नाम किसी दूसरे से से मिले हैं?

क्या आपने स्वयम् इनका पता नहीं लगाया है?

तब तो माफ कीजिएगा जरूर इसमें कोई - न - कोई गलती हुई है, क्योंकि मैं मान नहीं सकता कि ये ऐसे ऐसे लोग जिनके हवाले मैं बेफिक्री से अपनी जान कर सकता हूँ उस कमेटी के मेम्बर होंगे.

इन्द्र:

(हँस कर) आपको मेरे काम में किसी तरह का भी शक करने की जरूरत नहीं है.

यह फिहरिस्त खास उस कमेटी के मन्त्री द्वारा बनाई गई थी और इसकी सच्चाई पर किसी तरह का शक नहीं किया जा सकता.

गोपाल:

(और भी आश्चर्य के साथ) सभा के मंत्री द्वारा बनाई गई! वह मन्त्री कौन है और आपको पता क्योंकर लगा?

इन्द्र:

उस समय के मन्त्री मेरे ससुर ही थे और यह सूची उन्हीं की बनाई है.

गोपाल:

आपके ससुर यानी दामोदरसिंह! क्या वे उस सभा के मन्त्री थे?

नहीं - नहीं, यह जरूर आप कोई दिल्लगी कर रहे हैं! इन्द्र:

(हँस कर) नहीं, मैं दिल्लगी नहीं कर रहा हूँ, बहुत सही कह रहा हूँ, मेरे ससुर उस कमेटी के मन्त्री थे.

पहिले - पहल वह सभा इसलिए बनी थी कि राज्य के साथ भलाई करें और इसीलिए मेरे ससुर ने उसमें भाग भी लिया था, पर जब इसका ढंग बदलने लगा और उसने राज्य के साथ दुश्मनी करना शुरू किया तो वे उसका साथ छोड़ने को तैयार हुए पर दुश्मनी के डर से खुल्लमखुल्ला ऐसा न कर सके और मौके का इन्तजार करने लगे.

उन्होंने उस कमेटी के सम्बन्ध के सब कागजात तथा सदस्यों के नाम उसकी सब कार्रवाईयों का एक कच्चा चिट्ठा तैयार किया और वह सब सामान एक विश्वासी आदमी के सुपुर्द कर दिया कि वक्त पर काम आये, पर दुश्मनों को इस कार्रवाई का पता लग गया और इसी से उनकी वह गति हुई.

मेरे एक दोस्त ने अभी हाल ही में उन चीजों का पता लगाया और तभी मुझे भी ये बातें मालूम हुई.

गोपाल:

वह कौन - सा दोस्त है?

इन्द्र:

गदाधरसिंह ऐयार! गोपाल:

गदाधरसिंह! इन्द्र:

जी हाँ, अच्छा सुनिये मैं आपको सब हाल सुनाता हूँ क्योंकि बिना पूरा हाल सुने आपका सन्देह दूर न होगा, पर इन बातों को बहुत गुप्त रखियेगा, किसी के आगे कदापि जाहिर

न होने दीजिएगा.

संक्षेप में और थोड़ा - बहुत घटा - बढ़ाकर इन्द्रदेव ने पिछला वह सब हाल उस कलमदान के सम्बन्ध में जिसमें दामोदरसिंह ने सभा के कागजात बन्द किए थे गोपालसिंह से कह सुनाया जो हम ऊपर के बयानों में लिख आये हैं, पर न - जाने क्यों दारोगा का नाम इस सम्बन्ध में न आने दिया.

या तो उसकी दोस्ती का लिहाज किया हो या भूतनाथ के साथ किए हुए अपने वादे का खयाल कर गए हों.

गोपालसिंह बड़े ताज्जुब के साथ सब किस्सा सुनते रहे और जब वे समाप्त कर चुके तो बोले, " यह तो आपने बड़े ताज्जुब की बात सुनाई, आपका गदाधरसिंह तो सचमुच गजब का ऐयार जान पड़ता है! इन्द्र:

इसमें क्या शक़ है, वह अगर जरा ऐयाश और लालची न होता तो कमाल का आदमी था.

खैर इससे अब इतना तो आपको विश्वास हो ही गया होगा कि वे सब आदमी जिनके नाम आपके सामने हैं उस सभा के सदस्य हैं.

गोपाल:

हाँ अब इस फिहरिस्त के सही होने में क्या शक हो सकता है! मैं आज ही इन शैतानों को इनकी करनी का फल चखाऊँगा.

मगर जरा सोचिए तो सही कि कैसे - कैसे लोग इस काम में शामिल थे?

क्या कभी इस बात का शक भी हो सकता था कि इस तरह के लोग मेरे साथ दुश्मनी कर रहे होंगे!

इन्द्रः:

ऐसे लोगों के हाथ में कमेटी होने के सबब से ही तो उसका भण्डा नहीं फूटता था, जिसको आप इस काम के लिए मुकर्रर करते थे कि उसका भेद लें वे खुद ही उसके सदस्य होते थे, फिर पता चलता तो क्योंकर! गोपाल ०:

यही बात है, खैर यह तो आज एक बड़ा भारी काम हो गया, अच्छा अब वह दूसरा काम बताइए जिसके लिए आपका आना हुआ, क्योंकि आपने कहा था कि दो कारणों से आप इस वक्त आये थे?

इन्द्र:

हाँ ठीक है, वह दूसरी बात यह है की मगर ठहरिए, आपने अपनी शादी के बारे में क्या निश्चय कीया ?

गोपाल:

खास तौर पर तो कुछ भी नहीं, क्यों?

इन्द्रः:

बलभद्रसिंह का एक पत्र मेरे पास आया है.

उनके ऊपर जो कुछ मुसीबतें आई उनका हाल तो आपने सुना ही होगा.

गोपाल:

हाँ मैंने बहुत अफसोस के साथ सुना कि उनका लड़का जाता रहा.

इन्द्र:

केवल लड़का ही नहीं उनकी स्त्री का भी इन्तकाल हो गया.

गोपाल:

(चौककर, अफसोस के साथ) यह कब की बात है?

मैंने नहीं सुना! इन्द्र:

परसों ही की तो.

बस लड़के के जाने के दो ही तीन पहर बाद अफसोस और गम से उस बेचारी ने भी अपनी जान देदी.

गोपाल:

(रंज के साथ) अफसोस, उनका घर बर्बाद हो गया.

इन्द्र:

इसमें क्या शक है.

बेचारे को वही एक लड़का था, और वैसी सुशीला स्त्री भी जल्दी किसी को नहीं मिलती, मगर इसी कारण से इन मौतों ने उस बेचारे को एकदम उदास कर दिया है.

कल उनकी चीठी मुझे मिली उससे उस हाल के सिवाय यह भी मालूम हुआ कि उनका इरादा जल्द - से - जल्द अपनी बड़ी लड़की का ब्याह कर इस दुनिया से अलग होने का है.

गोपाल:

मगर ऐसा करने से फायदा क्या निकलेगा?

अभी दो - दो लड़कियाँ और भी तो हैं.

इन्द्र:

उनका जिम्मा मैं उठाने को तैयार हूँ, बल्कि यह बात मैंने उन्हें लिख भी दी है.

आपसे इस सम्बन्ध में मैं यही कहने आया था कि अगर आपका विचार किसी तरह बदला नहीं है तो आप जहाँ तक जल्द हो सके लक्ष्मी देवी से विवाह कर डालें.

गोपाल आपकी सलाह मान इतना तो मैं पहिले ही निश्चय कर चुका हूँ कि इस साल विवाह कर डालूंगा.

इन्द्र:

हाँ सो तो आपने कहा था, पर अब इस बात में और भी जल्दी होनी चाहिए.

महाराज को गुजरे काफी जमाना बीत चुका, इसलिए यह बाधा भी अब नहीं रही.

अब इस काम से भी छुट्टी पा लेना ही मुनासिब गोपाल:

(कुछ सोचकर) जैसी आपकी इच्छा, मुझे किसी बात में उज्र नहीं है, मैं यह काम भी आपके ही ऊपर छोड़ता हूं, जो चाहे और जैसा चाहे प्रबन्ध कीजिए.

इन्द्र::

बस तो ठीक है, मैं आज ही से इस काम में लग जाता हूँ और दिन आदि का निश्चय कर बलभद्रसिंह को भी सूचना दे देता हूँ.

गोपाल:

जो मुनासिब समझिए करिए.

पांचवां व्यान।

घोर जंगल के बीच में से जाने वाली एक पतली पगडन्डी पर से दो आदमी धीरे - धीरे जमानिया की तरफ बढ़ रहे हैं.

हमारे पाठक इन दोनों ही को पहिचानते हैं क्योंकि इनमें से एक तो भूतनाथ है और दूसरा उसका विश्वासी साथी और प्रिय शिष्य रामेश्वरचन्द्र, और इसलिए इनमें जो बातें हो रही हैं वे भी जरूर सुनने लायक होंगी.

आइए जरा आगे बढ़ कर सुना जाय.

भूतनाथ ने एक लम्बी साँस लेकर कहा, " सच तो यह है कि अब मेरी बदकिस्मती का जमाना पूरी तरह से शुरू हो गया!

जब इतना पुराना और छिपा हुआ भेद जिसको मैं समझता था कि शायद यमराज भी न जानते होंगे इस तरह पर प्रकट हो रहा है तो अब बाकी ही क्या रह गया, सिवाय इसके कि या तो मैं अपने हाथ से अपनी जान दे दूँ और या सभी से नजरें बचाकर जानवरों की तरह जंगलों और पहाड़ों में छिपा - छिपा फिरूं.

" रामेश्वर:

नहीं - नहीं, आपको इस तरह निराश न हो जाना चाहिए पहिले भी कई दफे इस तरह की घटनाएँ आपके साथ हो चुकी हैं पर आपने हिम्मत के साथ हर बार अपने दुश्मनों का मुकाबला किया और अच्छी तरह उन्हें जैहनुम पहुँचाया.

जरूर इस बार भी आप वैसा कर सकेंगे! आपको इस वक्त स्थिर होकर खूब गौर के साथ यह सोचना चाहिए कि यह कार्रवाई किन लोगों की हो सकती है और आप उन्हें किस तरह नीचा दिखा सकते हैं.

भूत ०:

(एक साफ पत्थर की चट्टान देख उस पर बैठता हुआ) आओ तुम भी यहाँ बैठ जाओ और निर्णय करने में मेरी मदद करो कि यह काम किन लोगों का हो सकता है.

मेरी बुद्धि इस समय बेकार हो रही है, शायद तुम्हारी सहायता पाकर कुछ कर सकूं.

रामेश्वर:

(भूतनाथ के सामने बैठता हुआ) पहिले तो आप यह सोचें कि जिन लोगों का इस भेद से सरोकार था और उनमें से कौन अब तक ऐसे बने हुए हैं जो आपके साथ दुश्मनी करने की नीयत कर सकते हैं.

भूतः:

तुम ठीक कहते हो, तो लो सुनो – यों तो कइयों को इस मामले की जानकारी हो सकती है, पर जो इसके भीतरी रहस्य में शामिल थे या जिनको इस मामले से किसी प्रकार का सम्बन्ध हो सकता है वे सिर्फ इने - गिने इतने लोग हो सकते हैं - भुवनमोहिनी का पति कामेश्वर एक, महाराज गिरधरसिंह दो, भुवनमोहिनी का ससुर चंचलदास तीन, जमानिया की बड़ी महारानी अर्थात् मायारानी चार, दारोगा पाँच, हेलासिंह छः, महाराज बीरेन्द्रसिंह सात, दलीपशाह आठ, यों तो इन्द्रदेव, शेरसिंह, प्रभाकरसिंह के पिता दिवाकरसिंह आदि - आदि कुछ लोग और भी हैं जिनको इस मामले की थोड़ी - बहुत खबर होगी पर जिनका इसके साथ खास तौर पर सम्बन्ध है और जो इस विषय में कुछ कर सकते हैं ।

सिर्फ आठ आदमी हैं।

रामे:

ठीक है, अच्छा तो अब देखिए कि इनमें से कौन - कौन ऐसे हैं जो इतने दिनों के बाद अब आपसे इस पुरानी घटना की क़सर निकालने पर अमादा हो सकते हैं.

आपके बताये इन आठ आदमियों में से चार तो इस दुनिया को ही छोड़ चुके अर्थात् महाराज गिरधरसिंह, कामेश्वरसिंह, चंचलदास और महारानी, अस्तु इन चारों से तो किसी तरह का खतरा हो ही नहीं सकता.

अब रह गये बाकी के चार यानी दारोगा, हेलासिंह, राजा वीरेन्द्रसिंह और दलीपशाह.

इनमें से भी जहाँ तक मैं समझ सकता हूँ और जितना हाल आपने मुझे सुनाया है उससे जो अन्दाजा लगा सकता हूँ वह यह है कि महाराज बीरेन्द्रसिंह इतने दिनों बाद इस पुरानी घटना को लेकर उठा नहीं सकते, और अगर मेरी बुद्धि धोखा नहीं देती तो दारोगा भी स्वयम् ही इसमें इस कदर सना हुआ है कि इस मामले को उठा या अगुवा बन आपसे दुश्मनी मोल लेने को तैयार नहीं हो सकता.

क्यों, आपका क्या खयाल है?

भूत:

तुम ठीक कहते हो, राजा बीरेन्द्रसिंह इतने दिनों के बाद इस मामले को उठावें ऐसी सम्भावना मुझे नहीं दिखाई पड़ती और यद्यपि दारोगा से मेरी दुश्मनी जरूर है पर वह किसी हालत में भी मुझसे क़म इस पाप में सना हुआ नहीं है.

रामे:

अच्छा तो अब रह जाते हैं सिर्फ दो हेलासिंह और दलीपशाह.

इन दोनों के बारे में आप क्या खयाल करते हैं?

भूत:

यद्यपि उस गुप्त कमेटी के मामले में मुझे हेलासिंह के साथ बेमुरौबती करनी पड़ी थी पर फिर भी ऐसा गुमान नहीं होता कि वह इस प्रकार आगे बढ़ कर मुझ पर ऐसी चोट करेगा, क्योंकि वह खुद भी इस मामले में कुछ कम सना हुआ नहीं है.

मुझे तो कभी - कभी यह भी शक होता है कि दारोगा ने जानबूझकर के जैपाल और हेलासिंह को उस मौके पर अपने साथ रक्खा था ताकि कभी वे बिगड़कर उसी के खिलाफ न चले जाएं, और फिर आखिर उसे भी तो अपनी जान का खौफ होगा और

वह यह समझता होगा कि भूतनाथ से दुश्मनी करके वह अपने को किसी तरह सही - सलामत नहीं रख सकता.

फिर एक बात इसके अन्दर और भी है.

तुमको मैंने बताया कि वहाँ पर जो नक्शा खींचा गया था वह हूबहू उस मौके और स्थान की नकल था जब और जहाँ वह दुष्कृत्य मेरे हाथों हुआ और वह स्थान तिलिस्म के अन्दर था अस्तु उसकी ऐसी सच्ची नकल वही शख्स उतार सकता है जिसने उस स्थान को अपनी आँखों से देखा हो, इसका मतलब यह कि जो खुद तिलिस्म के अन्दर उस जगह तक गया हो जहाँ वह घटना हुई थी, और यह मैं तुमसे कह चुका हूँ कि उस समय मैं बिल्कुल अकेला था, अस्तु हेलासिंह को वह जगह देखने का न तो मौका ही मिला था और न वह ऐसी ठीक नकल उतार ही सकता है.

तो बस, अगर यह काम किसी का हो सकता है तो दलीपशाह का.

रामे:

क्या दलीपशाह तिलिस्म के अन्दर का हाल जानते हैं, या वह स्थान देखे हुए हैं जहाँ की बात यह है?

भूत::

हाँ, वह उस जगह तक पहुंच चुका है जहाँ की यह घटना है.

(कुछ गौर करने के बाद) हाँ ठीक है, मुझे अच्छी तरह ख्याल है कि जब मैं घबड़ाया हुआ उस जगह के बाहर हो रहा था तो रास्ते में दलीपशाह को मैंने देखा था, यद्यपि उस वक्त भागने की फिक्र में मैं इस बात पर बिल्कुल गौर न कर सका कि वह वहाँ किस लिए आया है या क्या कर रहा है.

ठीक है, यही बात है, यह काम जरूर दलीपशाह का ही है किसी दूसरे का नहीं.

रामे:

आपका सोचना ठीक हो सकता है, पर मुझे यह भी विश्वास नहीं होता कि दलीपशाह की यह कार्रवाई होगी.

भूत:

क्यों?

रामे:

एक तो जब इतने दिनों तक दलीपशाह ने इस बारे में कुछ न किया तो अब क्या कारण हुआ कि वे यकायक इस तरह आपके ऊपर चोट कर बैठे, दूसरे इधर आपसे उनसे बहुत दिनों से किसी तरह का कोई झगड़ा भी नहीं हुआ, तीसरे वे इस समय खुद अपनी जमींदारी की झंझटों में इस कदर सख्त परेशान हैं कि आप जैसे कट्टर आदमी को अपना दुश्मन बनाकर और भी बड़ी एक आफत मोल खरीद लें ऐसी गलती नहीं कर सकते, अस्तु यह काम उनका होगा ऐसा मेरी बुद्धि तो नहीं कहती!

भूत:

मगर उसके सिवाय किसी दूसरे का यह काम हो ही नहीं सकता! भूवनमोहिनी उसकी बहुत प्यारी बहिन थी और मुझे खूब मालूम है कि जिस समय की यह घटना है उस समय उसने तलवार हाथ में लेकर इस बात की प्रतिज्ञा की थी कि जिसने इस लड़की का खून किया है उसका सिर अपने हाथ से काटेगा.

पर वह तो कहीं घटनाकर्म कुछ ऐसा हो गया कि उसे अब तक ठीक - ठीक इस बात का पता ही नहीं लगने पाया कि वह काम वास्तव में था किसका.

अगर वह जान गया होता कि मैंने ही वह काम किया है तो वह आज तक कभी का मेरी जान पर वार कर चुका होता.

यह सम्भव हो सकता है कि अब उसे यह बात निश्चय रूप से मालूम हो गई हो और उसने यह ढंग मुझसे बदला लेने का निकाला हो.

रामे:

हो सकता है, आपसे ज्यादा इस विषय में मैं कुछ सोच नहीं सकता, मगर फिर भी दलीपशाह का यह काम है ऐसा मानने को यकायक.

.

.

भूत:

मुझे तो सौ में नब्बे दर्जे यह काम उसी का मालूम होता है और मैं यही मुनासिब समझता हूँ कि इस बारे में सबसे पहिले उसी की जांच की जाय.

इतना ही नहीं बल्कि इस सम्बन्ध में मैं तुमसे भी कुछ काम लेना चाहता हूँ, रामे:

जो कुछ भी आज्ञा हो मैं बजा लाने को तैयार हूँ पर अपनी तरफ से इतना जरूर कहूँगा कि दलीपशाह के विरुद्ध कोई कड़ी कार्रवाई करने के पहिले आपको इस बात की जाँच अच्छी तरह पर कर लेना चाहिये कि यह काम सचमुच उन्हीं का है.

मुमकिन है कि किसी दूसरे ही की यह करतूत हो और आप दलीपशाह पर केवल व्यर्थ का शक ही न कर रहे हों बल्कि उस शक के कारण उन असल में इस काम करने वालों की तरफ से बेफिक्र रह जाएं और वे बेखौफ आगे की कार्रवाई करते चले जाएं क्योंकि इसमें भी कोई शक नहीं हो सकता कि जब इतने दिन का पुराना यह फोड़ा इस तरह उभड़ा है तो अभी आपको अच्छी तरह तकलीफ दिए बिना सहज में आराम न होगा,

यह बात मैं सिर्फ इसी ख्याल से नहीं कहता कि अगर दलीपशाह बेकसूर हैं तो आपकी कार्रवाइयों पर नाराज होक आपके दुश्मन बन बैठेंगे, बल्कि यह सोचकर भी कह रहा हूँ कि जिन लोगों ने इस अद्भुत ढंग से इसका श्री गणेश किया है वे सिर्फ इतना ही करके न रह जाएँगे बल्कि और भी कुछ रंग लायेंगे.

भूत:

इसमें क्या शक है! परन्तु मैं इस तरह से बेफिक्र नहीं हूं.

इसी बात की जाँच करने के वास्ते मैं अपने दोनों शागिर्दो रामगोविन्द और बलदेव को ताकीद कर चुका हूँ कि उसी जगह रह कर बड़ी सावधानी के साथ छिपे - छिपे इस बात का पता लगावें कि उस मूरत आदि को वहाँ बैठाने और वह विचित्र तथा मेरे लिए त्रासदायक नाटक रचने वाला कौन है.

इसमें कोई शक नहीं कि उन सब चीजों की जाँच करने या उनको वहाँ से हटा देने के लिए उनका रचयिता जरूर वहाँ फिर भी कभी - न - कभी पहुँचेगा, उस समय उसको

पहिचान पाना या गिरफ्तार कर लेना कोई कठिन बात न होगी और उसी समय इस बात का भी पता लग जायगा कि इस काम का करने वाला अगर दलीपशाह नहीं है तो कौन है.

रामे:

ठीक है, यह आपने अच्छी बात सोची है, अगर बलदेव और रामगोविन्द होशियारी के साथ काम कर सके तो बेशक कुछ - न - कुछ बता लग ही जायगा.

भूत:

वे दोनों बहुत होशियार और चालाक हैं, उनकी कारीगरी पर तुम्हें किसी तरह का शक नहीं करना चाहिये.

रामे:

नहीं, मैंने उनकी कारीगरी पर शक करके यह बात नहीं कहीं बल्कि उस भयानक पिशाच को लक्ष्य करके कही जिसके बारे में आपने कहा कि वह अचानक प्रकट हुआ और फिर गायब हो गया.

भूत:

(उस पिशाच की याद से कॉप कर) हाँ ठीक है, उस नर - पिशाच से अगर वे अपने को बचाए रह सकें तभी कुछ कर पावेंगे, नहीं तो कुछ नहीं ।

रामे:

बेशक यही बात है.

मगर यह तो कहिए कि उस शैतान की उत्पत्ति को आप क्या समझते हैं?

क्या वह भी किसी ऐयारी या चालाकी की पैदाइश है या किसी तरह का आसेब है?

जैसा वर्णन आपने उस भयानक पिशाच का किया उसे सुन कर मैं तो कॉंप ही गया.

भूत:

तुम उसका विवरण सुन कर कॉप गए और मैं उसको अपने सामने प्रकट होता हुआ देखकर भी अपने होश - हवास में रहा और जब तक उसकी भयानक बातों ने मुझे बदहवास न कर दिया बराबर इसी बात पर गौर करता रहा कि यह वास्तव में कोई भूत - प्रेत या आसेब है या किसी तरह की ऐयारी!

रामेश्वर:

तब आपने क्या निश्चय कीया ?

क्या वह कोई भूत या प्रेत था अथवा.

.

?

भूत:

(हँस कर) भला तुम भी लड़कों की तरह भूत - प्रेतों का विश्वास करने लगे! बलदेव और रामगोविन्द की अभी कच्ची उमर है.

उन्होंने अगर उसे कोई अद्भुत जीव मान लिया तो दूसरी बात है पर मैं कब ऐसा कर सकता हूँ?

जो बिचित्र जीव हम लोगों के सामने प्रकट हुआ वह अवश्य ही किसी तरह की चालाकी और कारीगरी का नमूना था.

उसकी घबड़ाहट पैदा कर देने वाली बातें सुनता हुआ मैं बराबर इसी बात पर गौर कर रहा था कि वह विचित्र सूरत किस प्रकार की है और मैंने देखा कि उस शैतान का सामने का हिस्सा यद्यपि मनुष्य की हड्डियों के ढाँचे के आकार का था पर पिछला हिस्सा वैसा त था और उस तरफ से देखने से इस बात का शक हो सकता था कि किसी तरह के पर्दे के पीछे छिपी कोई चीज नाहे वह जो कुछ भी हो, यह सब काम कर रही है.

अगर मैं उसकी आखिरी बातें सुन बदहवास न हो जाता तो जरूर इस मामले पर कुछ और गौर करता और सम्भवतः इसकी जांच भी करता कि वह क्या बला है, पर अफसोस इसका मौका ही न मिला.

फिर भी यह बात मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि अबकी बार वह विचित्र शकल मेरे सामने आबे तो मैं उसके बारे में बिना कुछ पता लगाए न रहूँ! इसमें कोई शक नहीं कि वह जरूर किसी तरह की ऐयारी या तिलिस्मी कारीगरी है और यह भी ऐसी बात है जो दलीपशाह पर होने वाले मेरे शक को बढ़ाती है क्योंकि दलीपशाह इन्द्रदेव का दोस्त है और इन्द्रदेव को जरूर किसी - न किसी तिलिस्म से कोई सम्बन्ध है जिसकी बदौलत सहज ही में वे कोई चीज दलीपशाह की मदद के लिए निकाल कर दे सकते हैं.

रामे:

हो सकता है कि आपका खयाल ठीक हो, अच्छा तो अब मुझे आप क्या आज्ञा देते हैं?

भूत:

बस यही जो मैं पहले कह चुका, तुम इस बात का पता लगाओ कि दलीपशाह का इस घटना से कहाँ तक सम्बन्ध है, मगर इसके पहले कि तुम काम पर रवाना होवो कुछ देर तक और मेरे साथ रहो.

जैसाकि मैं पहले कह चुका हूँ मैं इस सम्बन्ध में सबसे पहले दारोगा से मिल कर इस बात की जाँच करना चाहता हूँ कि इस घटना से उसका कहाँ तक सम्बन्ध है, पर उसके घर जाने के लिए कुछ मदद साथ में लेकर जाना ही मुनासिब है.

इधर मैंने उसे बहुत तंग किया है जिससे वह मुझसे बेतरह जला हुआ है.

अकेले जाने से शायद वह किसी तरह का वार मुझ पर करे, इसलिए आजकल जब भी मैं उससे मिलने जाता हूँ, गुप्त रूप से कोई मददगार जरूर अपने साथ रखता हूँ, उससे मिल कर मैं खाली हो जाऊँ तो फिर रोतहतासगढ़ चला जाऊंगा और तुम मिर्जापुर चले जाना.

रामे:

रोहतासगढ़ क्या करने जाइएगा?

भूत:

वही पुराना झगड़ा और क्या?

रामे:

क्या वह अभी तक खतम नहीं हुआ?

भूत:

नहीं, कहाँ से, तुमने शायद सुना ही होगा कि अब नन्हों वहीं जाकर बस गई है और घर आने का नाम भी नहीं लेती और इससे मेरा तरदुद और भी बढ़ रहा है.

रामे:

वह कम्बख्त भी एक ही कमीनी है, मैंने उसके बारे में इधर कुछ ऐसी बातें सुनी हैं जिनसे मालूम होता है कि कभी - न - कभी उसके हाथों आपको तकलीफ उठानी पड़ेगी, भूत:

बेशक यही बात है और इसीलिए तो मैं इस फेर में पड़ा हुआ हूँ कि उसका खरखशा हमेशा के लिए मिटा दिया जाय पर मालूम होता है कि उसको किसी तरह मेरे इरादे का पता लग गया है क्योंकि जब से मैं उसके पीछे पड़ा हूँ तभी से वह भी भागी फिर रही है, कभी काशी, कभी जमानिया, कभी शिवदत्तगढ़ और कभी रोहतासगढ़ भागती रहती है.

रामे:

तो क्या आप उसे गिरफ्तार करना चाहते हैं?

भूत:

नहीं - नहीं, उसे पकड़ कर मैं क्या करूँगा! रामे:

तब फिर किस नीयत से आप उसके पीछे पड़े हैं! इधर कई बार आपके मुँह से मैं उसका नाम सुन चुका हूँ और यह भी जानता हूँ कि आपको उसके कारण बहुत कुछ तरदुद पैदा हो गया है पर ठीक - ठीक क्या बात है यह जानने में न आया.

भूत:

इसका किस्सा बहुत लम्बा - चौड़ा है, खुलासे तौर पर तो फिर कभी सुनना.

संक्षेप में बात यह है कि किसी समय इसको भी मेरे मामले में बहुत गहरा सम्बन्ध रह चुका है.

यह रिश्ते में दलीपशाह की कोई होती है और पहले रणधीरसिंह के महल में सहेलियों की तरह रहती थी.

चाल - चलन ठीक न रहने से इसको उन्होंने निकाल दिया.

स्वतन्त्र होने से यह और भी खुब खेली.

न - जाने किस तरह शिवदत्त के पास चुनार जा पहुँची.

वह जब राजा बीरेन्द्रसिंह से हार कर भाग गया तो फिर मिर्जापुर लौटी पर तब इतनी बदनाम हो चुकी थी कि दलीपशाह ने उसे उस शहर में रहने देने में अपनी बदनामी समझी और दूसरी जगह जाकर बसने के लिए कहा.

तब यह जमानिया पहुंची और दारोगा साहब की प्रेमपात्री हुई.

उनके यहाँ जब मनोरमा का जोर बड़ा तब यह उनसे रूठ कर वहाँ से भी चल दी और कई बरस तक न - जाने कहाँ - कहाँ की खाक छानती रही, अब रोहतासगढ़ में दिखाई देने लगी है.

मुझसे इसको शुरू से ही दिलचस्पी रही और इसे मेरा बहुत - कुछ हाल भी मालूम है, कुछ तो दलीपशाह के कारण, कुछ रणधीरसिंह के यहाँ रहने के कारण और कुछ शायद दारोगा और शिवदत्त के साथ की बदौलत.

पर अभी तक इसकी तरफ से कोई ऐसी बात नहीं हुई थी जिससे मुझे यह शक होता कि यह मुझसे सिवाय डरने के और किसी तरह का भाव रखती है.

राम:

तो अब क्यों वह आपसे दुश्मनी करने लगी! भूत:

ठीक - ठीक तो मैं कुछ नहीं कह सकता पर शक करने लायक बहुत - सी बातें मिली हैं, खास तौर पर जब से मुझे यह मालूम हुआ है कि रणधीरसिंह के यहाँ नौकरी के पहले

यह जमानिया महल में थी और उस समय मायारानी की बहुत मुंह लगी सहेलियों में से थी जब कि वह घटना है.

राम:

तब क्या यह सम्भव नहीं है कि उस घटना के बारे में भी यह जानकारी रखती हो! भूत:

बेशक यही बात है और इसलिए मैं अब उसकी तरफ से निश्चिन्त नहीं हूँ, रामे:

लेकिन अगर सिर्फ इतनी ही सी बात है तो यह बहुत ज्यादा परेशानी की कोई बात तो नहीं जान पड़ती.

भूत:

रोहतासगड़ में इसका जाना मतलब से खाली नहीं है.

तुम्हें शायद न मालूम होगा कि दिग्विजयसिंह को तिलिस्म से बहुत गहरा सरोकार है और साथ ही शिवगढ़ी भी उसी की रियासत के अन्दर पड़ती है जिसके अनमोल खजाने की लालच ने मुझसे वह काम कराया था.

खुद दिग्विजयसिंह बहुत दिनों से इस फिराक में है कि शिबगड़ी की ताली उसके हाथ लग जाय और वह वहाँ की दौलत अपने कब्जे में कर ले पर इस काम में सफल नहीं हो सकता क्योंकि वहाँ की ताली अब किसके पास या कहां है यह उसे मालूम नहीं है.

रामे:

मगर इससे आपको तरदुद क्यों?

क्षमा किजिएगा, अगर मैं बहुत खोद - विनोद कर रहा हूँ तो इसका कारण यही है कि आपकी बातें मेरा कौतुहल बड़ाती जा रही हैं और मैं नन्हों का ठीक - ठीक भेद जानने को ब्याकुल हूँ जिसका एक सबब और भी है जो मैं फिर कभी आपसे कहूँगा, अस्तु वह यदि कोई ऐसी बात न हो जिसको आप बहुत गुप्त रखना चाहते हैं तो मुझे बताइए, आप विश्वास रखिए कि मेरी जुबान से आपका कोई गुप्त भेद कदापि किसी दूसरे पर प्रकट नहीं होगा चाहे कोई मेरे बदन के टुकड़े भी कर डाले! भूत:

(मुस्कुरा कर) नहीं रामेश्वरचन्द्र तुम मेरे सबसे विश्वासी शिष्य हो और तुमसे मैं कोई भी बात छिपाना पसन्द नहीं करता.

अगर कभी कुछ छिपाने की जरूरत पड़ भी जाती है तो मौका आते ही मैं तुम पर सब कुछ प्रकट कर देता हूँ जिसे तुम बखूबी जानते भी हो, अस्तु मैं इस भेद को भी तुमसे छिपाऊँगा नहीं क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जीते जी कभी तुम्हारी जुबान से यह किसी दूसरे पर प्रकट न होगा.

मगर अब यहाँ बैठने से कोई लाभ नहीं, अब हम लोगों को अपना सफर शुरू कर देना चाहिए जिसमें रात होने के पहले ही जमानिया पहुंचा जा सकें.

इतना कह भूतनाथ खड़ा हो गया और रामेश्वरचन्द्र ने भी वैसा ही कीया , दोनों आदमी आपुस में बातें करते हुए जमानिया की तरफ रवाना हुए.

छठवां व्यान।

रात आधी से कुछ ऊपर जा चुकी है और भयानक जंगल सांय - सांय कर रहा है.

रह - रह कर दरिन्दे जानवरों के बोलने की आबाज आती है जो क़मजोर कलेजों को बहला सकती है पर उन दो बहादुरों पर इसका कोई असर नहीं है जो एक छोटे मन्दिर के बाहरी चबूतरे पर बेफिक्र पड़े सो रहे हैं.

पर नहीं, हमारा खयाल गलत है.

ये दोनों नींद में गाफिल नहीं हैं बल्कि होशियार और चौकन्ने होते हुए भी शायद किसी कारणवश इस तरह पड़े हुए हैं क्योंकि यकायक किसी तरह की आहट पाते ही उनमें से एक ने करवट बदली और कुछ देर तक आवाज पर गौर करने बाद दूसरे को जगाने का इरादा करके घूमा परन्तु उसे भी अपनी ही तरह जागा और उस आहट पर गौर करता हुआ पाया.

आवाज तेज होने लगी और थोड़ी ही देर में साफ मालूम हो गया कि कोई हल्की डोंगी तेजी के साथ उस तरफ आ रही है, अब एक ने दूसरे से कहा, " कोई आ रहा है.

" दूसरे ने कहा, " जरूर, और सम्भव है ये लोग वे ही हों जिनकी हम राह देख रहे हैं.

" पहिला बोला, “ यहाँ से हट जाना बेहतर होगा! " दूसरे ने जवाब दिया, " वेशक़ मगर यहाँ से दूर भी न जाना चाहिए.

" दोनों ने जल्दी - जल्दी कुछ और सलाह की और तब वहाँ से हटकर उस बड़े बरगद के पेड़ के ऊपर जा चढ़े जो मन्दिर के सामने और नदी से कुछ ही हट कर था.

अभी मुश्किल से कुछ ऊंचाई पर पहुँचकर उन्होंने अपने को पत्तियों की आड़ किया होगा कि वह आने वाली डोंगी उसी मन्दिर के नीचे पहुँचकर रुक गई और उस पर से कई आदमी उतरकर उधर ही को बढ़ते हुए दिखाई पड़े,

ये आने वाली गिनती में पांच या छः थे पर इनकी शक्ल - सूरत या पोशाक के बारे में कुछ भी जानने की इजाजत वहाँ का घना अंधकार हमें नहीं देता.

कुछ देर तक तो ये लोग उस मन्दिर के पास खड़े आपस में बातें करते रहे और तब वहाँ से हटकर एक तरफ को रवाना हुए.

उनके जाने के कुछ ही देर बाद पेड़ पर चढ़े वे दोनों आदमी भी उतरे और दबे पाँव उनके पीछे - पीछे जाने लगे.

थोड़ी दूर गए होंगे कि एक ने दूसरे से धीरे से कहा, " गोबिन्द, ये सब तो उधर ही को जा रहे हैं.

" दूसरे ने जवाब दिया, “ हाँ भैया, और जरूर इनको उस मामले से कुछ सरोकार है.

" पहिले ने कहा, " ऐसा ही मेरा भी दिल कहता है.

पाठकों की जानकारी के लिए हम बता देना चाहते हैं कि ये दोनों भूतनाथ के शागिर्द वे ही बलदेव और रामगोबिन्द हैं जिन्हें वह उस स्थान का भेद लेने के लिए छोड़ गया है और जिनका हाल हम सोलहवें भाग के अन्तिम बयान में लिख आए हैं.

नाब पर से आने वाले वे आदमी सीधे उस चारदीवारी के पास पहुंचे और बारी - बारी से एक - एक करके उसके अन्दर टप गए.

हम अब थोड़ी देर के लिए भूतनाथ के शागिर्दो का साथ छोड़ देते हैं और इन लोगों के साथ चलकर देखते हैं कि ये किस नीयत से यहाँ आए और अब क्या किया चाहते हैं.

जब वे सब के सब उस बीच वाली मूरत के पास जाकर खड़े हो गए और कुछ देर तक चारों तरफ की आहट लेते रहे.

अच्छी तरह विश्वास हो गया कि वहाँ एकदम सन्नाटा है और कोई गैर आदमी कार्रवाई देखने वाला वहाँ पर नहीं है तो एक आदमी ने अपने कपड़े के अन्दर से चोर लालटेन निकालकर बाली, उसकी हलकी रोशनी में मालूम पड़ा कि वे लोग गिनती में पाँच हैं और सब के सब काली पोशाक और नकाब से अपने बदन और सूरतें छिपाए हुए हैं.

इन पाँचों में से एक आदमी, जो सभों का सरदार मालूम होता था, आगे बढ़ा और लालटेन उठाकर उसकी रोशनी में उसने वहाँ की चीजों को खूब गौर से देखा तब अपने साथियों से कहा, " सब कुछ ठीक है, तुम लोग अपने हाथ का सामान रख दो और सब कोई मिलकर इस मूर्ति को हटाकर इसके नीचे वाला रास्ता खोल डालो.

"

लालटेन की रोशनी में दिखाई दिया कि वे सभी आदमी तरह - तरह के सामान हाथ में उठाए हुए थे जो उन्होंने वहीं जमीन पर रख दिए और तब सरदार के हुक्म के मुताबिक उस मूर्ति को जमीन से उठाने लगे.

अब मालूम हुआ कि वह मूरत जमीन में गड़ी हुई न थी और साथ ही भीतर से पोली भी थी क्योंकि मूर्ति के हटते ही उसके नीचे से एक छोटी - सी लाल रंग कि पिण्डिका निकल पड़ी जो लम्बाई - चौड़ाई में बालिश्त या डेड़ बालिश्त से अधिक न होगी.

यह पिण्डिका एक छोटे - से संगीन चबूतरे पर बनी हुई थी जो किसी वक्त जरूर जमीन की सतह से ऊँचा रहा होगा पर इस समय तो आस - पास की जमीन के मुकाबले में दबा हुआ था या दवा दिया गया था.

उस सरदार ने अपने आदमियों से कहा, " मूरत अलग रख दो और पिण्डिका के नीचे चबूतरा खाली करो.

" जमीन खोदने का सामान उनके साथ मौजूद था जिसकी मदद से बात की बात में उस पिण्डिका के चारों तरफ की हाथ हाथ भर जमीन खोद डाली गई और जब काले पत्थर का बना हुआ वह चबूतरा साफ दिखाई पड़ने लगा.

खोदी हुई मिट्टी हटाकर दूर कर दी गई और तब वह सरदार आगे बढ़कर उस चबूतरे के पास पहुँचा.

पिण्डिका पर हाथ रखकर उसने कोई खास तरकीब की जिसके साथ ही चबूतरे का पश्चिम तरफ वाला पत्थर खुलकर किवाड़ के पल्ले की तरह भीतर घूम गया और एक छोटा रास्ता जिसके अन्दर आदमी मुश्किल से जा सकता था दिखाई देने लगा.

आदमी अब पीछे हट आया और बाकी लोगों से बोला, " लो रास्ता खुल गया अब नाव से लाया हुआ सामान तथा यहाँ की सभी ये चीजें अन्दर ले चलो.

" !! उनमें से एक आदमी ने उस रास्ते के पास जाकर कहा, " और सब चीजें तो चली जाएंगी पर इस मूरत का इस छोटे रास्ते से जाना कठिन होगा.

" सरदार ने कहा, " वही तो मैं सोच रहा हूँ.

अच्छा गोपाल, तुम भीतर जाकर देखो तो सही शायद वहाँ देख - भाली करने से इस मूरत को भी अन्दर करने की कोई तरकीब निकल आवे.

"

उनमें से एक आदमी जो सब से फुर्तीला और चालाक मालूम होता था यह सुनते ही आगे बढ़ा और उस छेद के अन्दर सिर डालकर कुछ देर तक देखने के बाद भीतर चला गया.

पर अन्दर जाते ही उसने फिर सिर बाहर निकाला और कहा, " भीतर एक लम्बी - चौड़ी और काफी कुशादा सुरंग है जिसमें दो आदमी साथ - साथ बखूबी चल सकते हैं, पर इस सुरंग के अन्दर कुछ दूर पर एक रोशनी दिखाई पड़ रही है जो पल पल में तेज होती जा रही है ।

जान पड़ता है कि कोई आदमी रोशनी लिए इसी तरफ को चला आ रहा है.

" यह बात सुन सरदार ने कहा, " अच्छा तुम बाहर निकल आओ, मैं अन्दर जाकर देखता हूँ कि क्या मामला है ।

उस आदमी के बाहर आते ही वह सरदार सुरंग के अन्दर घुसा और तब उसकी भी निगाह उस रोशनी पर पड़ी जिसके बारे में पहले आदमी ने कहा था.

वह रोशनी कुछ - कुछ ह्रापन लिए हुए एक विचित्र ढंग की थी जिसको देखते ही इस आदमी ने पहिचान लिया और कहा, " गुरुजी आ रहे हैं, मगर ताज्जुब की बात कि इन्हें हम लोगों के आने की खबर क्योंकर लगी है! यह आदमी उस तरफ बड़ा और शीघ्र ही उस आने वाली रोशनी के पास पहुँच गया.

उसने देखा कि रोशनी पीतल की एक जालीदार लालटेन की है जिसे हाथ में लिए कोई आदमी, जिसकी सूरत अंधेरे के कारण साफ दिखाई नहीं पड़ रही है, तेजी के साथ उसी तरफ को आ रहा है.

पास पहुँचते ही उस आगन्तुक ने लालटेन वाला हाथ ऊँचा किया और इस सरदार की तरफ देख जिसने उसके सामने होते अपनी नकाब उलट दी थी कहा, " कौन, श्यामसुन्दर! " सरदार ने कहा, " हाँ गुरुजी, मैं ही हूँ और तब उसके पैरों पर गिर पड़ा.

उस आदमी ने प्रसन्नता के साथ इसे उठाया और गले से लगाते हुए कहा, " मालूम होता है सब काम पूरा उतरा है क्योंकि तुम्हारे चेहरे से प्रसन्नता प्रकट हो रही है.

"

श्यामसुन्दर ने कहा, “ जी हाँ गुरुजी, आपकी कृपा से हम लोग अपने काम में पूरी तरह सफल हुए और वह सभी सामान जिसके बारे में आपने कहा था यहाँ पर मौजूद है.

हमलोग इसे इस सुरंग के अन्दर लाने की ही कोशिश कर रहे थे कि आपके हाथ की रोशनी दिखाई पड़ी जिससे रुक गए.

" " वाह, शाबाश! " कह कर उस आदमी ने श्यामसुन्दर की पीठ पर हाथ फेरा और कहा, “ अच्छा चलो पहिले सब सामान अन्दर कर लें तब बताओ कि कैसे क्या हुआ.

" जब तक कि उसका नाम या असल परिचय न मालूम हो तब तक के लिए हम इस नए आदमी का नाम रामचन्द्र रख देते श्यामसुन्दर और रामचन्द्र उस सुरंग के मुहाने पर पहुंचे

जहाँ से आवाज देकर श्यामसुन्दर ने अपने बाकी साथियों को भी सुरंग के भीतर बुला लिया.

रामचन्द्र ने अपने हाथ की लालटेन ऊंची कर कोई खटका ऐसा दबाया कि उनमें से निकलने वाली रोशनी इतनी तेज हो गई कि अब उन बाकी सभी आदमियों की भी शक्ल अच्छी तरह देखी और पहिचानी जा सकती थी.

श्यामसुन्दर के इशारे पर उन लोगों ने भी रामचन्द्र के पैरों पर सिर रखा जिसने उनको प्यार के साथ गले लगाया और कहा, " श्यामसुन्दर से यह सुन मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि तुम लोगों को जिस नाजुक काम पर मैंने भेजा था उसमें तुम लोग अच्छी तरह सफल हुए.

मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ जिसने ऐसे होशियार और बुद्धिमान शागिर्द दिए.

अच्छा अब फुर्ती करो और जो कुछ सामान तुम्हें मिला है उसे भीतर करके सुरंग का रास्ता बन्द कर दो क्योंकि हमलोगों को बहुत दूर जाना और बहुत कुछ करना है.

" श्यामसुन्दर ने कहा, " और सब सामान तो आ जायगा पर वह मूरत बहुत बड़ी है और इस तंग रास्ते से अन्दर न आ सकेगी.

" रामचन्द्र ने यह सुनकर कहा, " यह तरदुद तो बहुत सहज में दूर किया जा सकता है " और तब सुरंग की दीबार में बने एक आले में हाथ डालकर कोई तरकीब ऐसी की कि उस मुहाने के बगल की एक सिल्ली और भी हटकर घूम गई और अब वहाँ पर काफी रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

श्यामसुन्दर ने यह देख अपने आदमियों से कहा, " लो अब तुम लोग फुर्ती करो.

" जिसके सुनते ही वे लोग बाहर चले गए और वहाँ का सब सामान उठाकर सुरंग के अन्दर बढ़ चले.

बाहर के मैदान में क्या - क्या चीजें थीं यह हमारे पाठक बखूबी जानते हैं क्योंकि वे इस सामान को उस समय देख चुके हैं जब भूतनाथ के साथ इस जगह आए थे, और बाकी का जो कुछ सामान नाब के जरिए वे लोग लाए थे वह भी वही है जिसे वे सोलहवें भाग

के छठे बयान में देख चुके हैं, अस्तु उन सभी का यहाँ पर जिक्र करने और उनका बयान इस जगह दोहरा कर करने की कोई जरूरत नहीं.

मुख्तसर यह कि बात की बात में वह सब सामान सुरंग के अन्दर आ गया और बाहर का मैदान एकदम साफ हो गया.

अब उस सुरंग का दरवाजा बन्द कर दिया गया, रामचन्द्र के हुक्म से वह सब सामान उठा लिया गया, रामचन्द्र आगे - आगे हुआ और उसके पीछे से सब आदमी जाने लगे.

यह सुरंग बहुत ही लम्बी, पेचीली और घुमावदार थी जिसमें जगह - जगह पर दरवाजे भी बने हुए थे जिन्हें रामचन्द्र बराबर खोलता और बन्द करता हुआ चला जा रहा था.

दो घण्टे से ऊपर समय तक ये लोग बराबर चले गए और इस बीच में गर्मी, थकावट और बन्द हवा में चलने की परेशानी से सभी लोग पसीने - पसीने हो गए.

आखिर किसी तरह सुरंग खत्म हुई और उन लोगों ने अपने को एक ऐसी कोठरी में पाया जो आठपहली बनी हुई थी और जिसके बीचोबीच में मोटे खम्भे के ऊपर एक शेर की मूरत बैठी हुई थी.

रामचन्द्र ने इस शेर की बाई आँख में अपनी उँगली डाली और जोर से दबाया, इसके साथ ही सामने की दीवार की एक सिल्ली चूहेदानी के पल्ले की तरह ऊपर को उठ गई और वहाँ एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

एक दूसरी सुरंग दिखाई पड़ी जो पहली सुरंग की बनिस्बत कुछ पतली थी पर इसकी लम्बाई ज्यादा न थी जिस कारण इसे इन सभों ने शीघ्र ही पार कर लिया और तब सब लोग एक दरवाजे के पास पहुंचे जो बन्द था.

एक खटका दबा कर यह दरवाजा भी खोला गया और सामने की कुछ सीढ़ियाँ चढ़ ये लोग एक छोटे - से बाग में पहुँचे.

हमारे पाठक इस बाग को देखते ही पहिचान लेंगे क्योंकि यह वही है जिसमें सरस्वती उस समय आई थी जब तिलिस्मी घाटी में घुस कर दारोगा और जैपाल जमना और दयाराम को पकड़ ले गए थे और वह उनका पीछा करती हुई एक चबूतरे पर चढ़ कर शेरों वाले कमरे में पहुंची थी, और यह छोटी सुरंग भी वही है जिसकी राह जमना,

सरस्वती और दयाराम को तिलिस्म में कैद कर दारोगा और जैपाल पुनः इस बाग में वापस लौटे थे.

' सब आदमियों ने अपने - अपने बोझ जमीन पर रख दिये और जमीन पर बैठ सुस्ताने लगे, पर रामचन्द्र श्यामसुन्दर को लिए हुए कुछ दूर हट गया और एक चबूतरे पर बैठ कर बातें करने लगा.

रामचन्द्र:

अच्छा अब कह जाओ कि क्या - क्या हुआ और तुम लोगों ने क्या - क्या काम किया?

श्यामः:

बहुत अच्छा, मैं सब हाल शुरू से कहता हूँ, आपका पत्र लेकर मैं सीधा दारोगा साहब के पास चला गया, वे कुछ बीमार थे पर यह सुन कर कि मैं रोहतासगड़ से आ रहा हूँ उन्होंने तुरन्त मुझे अपने पास बुलवा लिया, मैंने पत्र उनके हाथ में दे दिया.

रामचन्द्र:

पड़ कर तो वे बड़ा चकराए होंगे! श्यामः:

बेतरह, देर तक ताज्जुब के साथ मेरा मुँह देखते रहे, अन्त में बोले, इन बातों का पता उन्हें क्योंकर लगा?

मैंने जवाब दिया कि इस बारे में मैं तो कुछ नहीं कह सकता ' - जिस पर वे बहुत झुंझला कर कहने लगे, " अगर मुझसे साफ - साफ सब बातें नहीं कहनी हैं तो सीधे बैरंग वापस जाओ और अपने गुरुजी से कह दो कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकता.

" १.

देखिए भूतनाथ दसवाँ भाग, सातवाँ बयान.

रामचन्द्र:

(हँस कर) तब तुमने क्या जबाब दिया?

श्याम:

मैंने कहा कि ' बहुत अच्छा, जो कुछ आपका जबाब हो उसे इसी चीठी की पीठ पर लिख दीजिए, मैं जाकर दे दूंगा '.

इस पर बोले कि ' अच्छा कल आना मैं सोच कर जबाब लिख रख लूंगा, लेते जाना '.

मैंने कहा, " कोई हर्ज नहीं मैं कल ही आऊँगा क्योंकि आपका जबाब सुन कर अब मुझे गदाधरसिंह से मिलना जरूरी हो गया.

" इस पर वे घबराये और बोले कि ' गदाधरसिंह से तुम्हें क्या काम '?

मैंने जवाब दिया कि ' गुरुजी ने कहा है कि अगर दारोगा साहब इस बारे में कुछ न करें तो भूतनाथ के पास जाना और उससे सब हाल कहना, आशा है कि वह सब - कुछ सही बता देगा.

उसके नाम की भी एक चीठी मुझे दी है.

वह उसे दूंगा और जबाब लूँगा, इसमें आज का दिन समाप्त हो जाएगा क्योंकि वह न जाने कहाँ मिले.

आप जबाब तैयार रखिए मैं कल आकर ले जाऊँगा '.

यह सुनते ही वे तो ठण्डे पड़ गए और कहने लगे कि भूतनाथ वाली चीठी में उन्होंने क्या लिखा है क्या तुम जानते हो '?

मैंने जवाब दिया कि ' नहीं, ठीक - ठाक तो नहीं मालूम पर जो आपके पत्र का मजमून है करीब - करीब वही उनके पत्र का भी होगा ' मेरी बात सुन वे कुछ गौर में पड़ गए और देर तक सोचने के बाद बोले, " तुम जानते ही हो कि तिलिस्म कैसी भयानक जगह है और उसके अन्दर जाने वाला किस तरह कदम कदम पर खतरे में पड़ सकता है.

पर खैर वे जब ऐसा चाहते ही हैं तो मैं तुम्हें ले चल कर वह स्थान दिखा दूंगा.

मैंने खुश होकर कहा, " कब तक चलिएगा! " उन्होंने दूसरे दिन सुबह चलने को कहा.

दूसरे दिन सुबह मैं उनकी खोपड़ी पर फिर जा मौजूद हुआ.

कुछ देर बाद वे उठे और मुझे लेकर तिलिस्म में चलने को तैयार हुए उस जगह पहुँचे जहाँ का हाल आपने बताया था, और एक बार आँख से देख लेने से मेरे मन में वहाँ का

बिल्कुल नकशा बैठ गया.

जब उन्होंने पूछा कि ' बस देख चुके न '?

तो मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि ' जी हाँ, बस अब मेरा काम बखूबी बन जायगा '.

हम लोग वापस लौटे.

उनसे छुट्टी ली और तुरन्त अपने काम में लग गया.

उस मन्दिर के पास ही, जहाँ भूतनाथ अक़सर टिकता है, मेरे आदमियों ने मिट्टी का एक बाड़ा तैयार कर रखा था जिसके बीचोबीच में वह रास्ता पड़ता है जिसकी राह हम लोग अभी - अभी आए हैं.

मैंने उस स्थान को भीतर की तरफ से रंग - रंगा कर ठीक वैसा ही दुरुस्त कर लिया जैसा कि अपनी आँख से देख आया था.

इस बीच हमारे आदमी उन सामानों को जुटाने की फिक्र में पड़े हुए थे जिनका पता आपने दिया था और जिनकी फिक्र में गोपाल शुरू से ही पड़ा हुआ था.

इस काम में शिवदत्तगढ़ के आदमियों से इन लोगों को बहुत कुछ मदद मिली और थोड़ी कोशिश में वे सब चीजें इन लोगों के हाथ में आ गईं.

इसी बीच में नन्होंजी भी अपना काम खतम करने आ गईं.

वह सामान देख उन्होंने बहुत ताज्जुत्र प्रकट किया और उनके असली होने की ताकईद की, अस्तु वह जगह ठीक होते ही सब कुछ चीजें लाकर ठीक उसी जगह सजा दी गईं जैसे कि आपने बताया था.

इतना कर हम लोग इस बात की राह देखने लगे कि भूतनाथ आवे तो किसी तरह से उसे इस जगह ले चलें और देखें कि उस दृश्य को देख उसकी क्या हालत होती है.

वाह रे बहुत जल्दी ही हमारी यह इच्छा पूरी हो गई, भूतनाथ अपने दो शागिर्दों के साथ उस मन्दिर में आ के टिका और हम लोग धोखा देकर उसे उस जगह ले आए.

रामचन्द्र:

यह सब सामान देख कर उसकी क्या हालत हुई?

घबड़ाया तो बेतरह होगा! श्याम:

बेतरह पर उससे भी ज्यादा उन बातों से और वह विचित्र सूरत देख कर चकराया जो शायद आपकी कारीगरी थी.

राम:

(ताज्जुब से) सूरत और बातें कैसी?

क्या वहाँ पर कोई और भी घटना हुई थी?

श्याम:

(आश्चर्य करता हुआ) क्या वह आपकी कारीगरी नहीं थी और क्या वह विचित्र आसेब जो उस जगह प्रकट हुआ और जिसने ' रोहतासमठ के पुजारी ' के नाम से अपना परिचय दे कर भूतनाथ को परेशान कर दिया वह आप ही नहीं थे?

राम::

यह क्या कह रहे हो तुम, मेरी समझ में कुछ नहीं आता! मैं तो तब से अपने काम में इस तरह फंसा रहा कि बस आज चूँकि तुमसे वहाँ पर मिलने का वादा कर चुका था इसीलिए वहाँ गया.

आज के पहले दम - भर के लिए भी वहाँ जाने की मोहलत न मिली.

तुम सब हाल खुलासा बयान करो तो पता लगे.

इसके जबाब में श्यामसुन्दर वह सब घटना पूरी - पूरी कह गया जो हम ऊपर सोलहवें भाग के अन्त में बयान कर आए हैं.

रामचन्द्र ज्यों - ज्यों उसकी बातें सुनता था उसके चेहरे से घबराहट और परेशानी प्रकट होती जाती थी और अन्त तक सुनते - सुनते वह एकदम घबड़ा कर बोल उठा, " यह तुम सही हाल मुझसे कह रहे हो या कोई मनगढन्त कहानी सुना रहे हो! " श्याम:

मैं बिल्कुल ठीक हाल कह रहा हूँ.

उस भयानक आसेब की सूरत ऐसी डरावनी थी कि अगर उस समय हम लोग इसी गुमान में न रहे होते कि यह आपकी की कोई कारीगरी है तो जरूर भूतनाथ की तरह हम भी बेहोश हो जाते, मगर अब जो आप यह कहते हैं कि वह आप नहीं थे तो मुझे बड़ा ताज्जुब मालूम होता है.

राम:

बेशक वह मैं नहीं था और मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता कि ऐसी विचित्र बात हुई होगी ।

मैं समझता हूँ कि जरूर तुम्हें किसी तरह का धोखा हुआ है.

श्याम:

मैं आपके चरणों की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं उस वक्त पूरे होश ह्वास में था जबकि वह घटना हुई.

मैं ही क्यों, गोपाल तथा इन बाकी के सभी आदमियों ने भी वह विचित्र शक्ल देखी और मेरी तरह सभी अब तक इसी भ्रम में पड़े हुए हैं कि आपने ही भूतनाथ को छकाने के लिए किसी तरह की कारीगरी की थी.

राम::

अगर ऐसा है तो तुम मेरी यह बात अभी उन पर प्रकट न करो कि वह मैं नहीं था नहीं तो उन पर शायद इसका उलटा असर पैदा हो.

मैं इसकी जाँच करूंगा और देखूंगा कि यह क्या बात हो सकती है.

मगर उस आसेब ने जो बातें भूतनाथ से कहीं उसे सुनकर भी मुझे ताज्जुब हो रहा है क्योंकि उनमें दो - चार बातें ऐसी हैं जिनके बारे में मैं भी कुछ नहीं जानता पर भूतनाथ पर उनका जो असर हुआ उससे जान पड़ता है कि वे जरूर उसके जीवन से कोई बहुत गहरा सम्बन्ध रखती हैं.

एक बार फिर तो कह जाओ कि उस पिशाच ने भूतनाथ से क्या - क्या कहा?

" श्यामसुन्दर फिर से उन बातों को दोहरा गया और रामचन्द्र ताज्जुब और तरदुद के साथ इस पर देर तक गौर करता रहा कि असल मामला क्या हो सकता है पर उसकी समझ में ठीक तरह से कुछ भी न आया और आखिर उसने कहा, मैं कुछ भी नहीं कह सकता कि वह आसेब क्या बला थी पर इसमें शक नहीं कि वह अगर कोई भूत - प्रेत या पिशाच नहीं है और सचमुच किसी की कारीगरी है तो उसका पैदा करने वाले को जरूर भूतनाथ की जीवनी की दो - एक घटनाएँ ऐसी मालूम हैं जिनके बारे में हम लोगों को कुछ भी खबर नहीं है और जिनके प्रकट होने से भूतनाथ घबड़ाता है, खैर इसके बारे में फिर पता लगाया जायगा.

" श्याम:

जरूर पता लगाना चाहिए, लेकिन अब दो - एक सवाल में भी पूछना चाहता हूँ, अगर आज्ञा हो तो पूछूं.

राम:

हाँ पूछो क्या पूछते हो.

श्याम:

जब वह आसेव आप नहीं थे तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस स्थान की नकल करने और भूतनाथ को उसे दिखाने से आपका क्या अभिप्राय था जहाँ भूतनाथ द्वारा उस भयानक घटना के होने का हाल आप मुझसे कह चुके राम:

यह बात तो मैं पहिले ही तुम्हें बता चुका हूँ, मेरा मुख्य अभिप्राय यही है कि भूतनाथ को डरा - धमका कर किसी तरह शिवगढ़ी की ताली उससे ले ली जाय.

श्याम:

लेकिन ऐसा वह करेगा ही क्यों?

राम:

हमारी कार्रवाई से इतना तो वह समझ ही गया होगा कि उसके पुराने पापों का जानकार कोई ऐसा व्यक्ति पैदा हो गया है जिसको उसके विषय में सब बातों की पूरी - पूरी खबर है!

श्याम:

माना मैंने, मगर उससे फिर क्या?

जो कुछ कार्रवाई की गई उससे वह काम क्योंकर निकलेगा जिसके लिए हम लोग यहाँ पर आये हैं?

अपनी पिछली करतूतों का यह नाटक देखकर भूतनाथ डरे और घबरावे चाहे जितना भी पर उससे क्या वह शिवगढ़ी की ताली निकाल कर दे देगा! मैं तो समझता हूँ कदापि नहीं.

राम:

(हँसकर) तुम्हारी बुद्धि यों तो बहुत तेज है पर कभी - कभी मनुष्य की प्रकृति समझने में तुम बड़ी भारी भूल कर जाया करते हो.

क्या तुमने भूतनाथ की तबीयत को इतने दिनों तक जाँच के भी यह नहीं समझा कि वह अपने पुराने पापों की छाया से भी डरने लगा है और केवल यही नहीं चाहता कि वे पाप ढके रहें बल्कि यह भी चाहता है कि वह दुनिया में नेकनाम और ईमानदार ऐयार कहला कर प्रसिद्ध हो.

श्याम:

बेशक इस कोशिश में तो वह जरूर है! राम:

अस्तु इसी से यह बात भी सहज ही में समझी जा सकती है कि उसको जब इन दोनों बातों में से किसी एक को चुनना पड़े कि या तो उसका पिछला पाप दुनिया में प्रकट हो और या फिर उस पाप के सब सबूत उसके हाथ में इसलिए दे दिए जायं कि वह स्वयम् उन्हें नष्ट करके हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाय मगर इसके बदले में शिवगढ़ी की ताली हमें दे दे तो क्या वह बिना एक मिनट का भी आगा - पीछा विचारे यह दूसरी बात मंजूर न कर लेगा और ताली देकर अपनी नेकनामी कायम न रखेगा?

श्याम:

(कुछ सोचकर) हाँ यह बात तो आपकी ठीक मालूम होती है.

तब शायद आपका इरादा यह है कि वह अगर ताली आपको दे दे तो आप यह सब चीजें जो हम लोगों को मिली हैं उसके सुपुर्द कर दें?

राम:

बेशक, अगर वह हमारी चीज हमें दे देगा तो हम लोग भी उसकी चीज उसे वापस कर देंगे.

श्याम::

लेकिन मान लीजिए कि उसने यह बात मजूर न की?

राम::

उस हालत में हम लोग बराबर उसको तंग करते रहेंगे, जमाने - भर में उसकी बदनामी मशहूर करते रहेंगे, और तब तक उसके पीछे पड़े रहेंगे जब तक कि वह हमारी मन्शा पूरी नहीं करता.

मगर तुम इस बात का कुछ भी अन्देशा न करो.

मेरा दिल कहता है कि जहाँ एकाध बार और उसकी काली करतूतें याद कराई गई और भुवनमोहिनी के सिर या तिलिस्म के भूतनाथ से उसकी भेंट कराई गई तहाँ वह मोम हो जायगा और धीरे - से हमारी चीज उगल देगा.

मुझे इस बात का पूरा यकीन है, मगर खैर यह जिक्र इस वक्त जाने दो और यह बताओ कि नन्हो ने इन चीजों को देखकर क्या कहा?

श्याम::

वे इन चीजों को देखकर बहुत प्रसन्न हुई और उन्होंने विश्वास दिलाया कि इनकी मदद से हमारा काम जरूर निकल जायेगा.

मेरी उनकी - बहुत - सी बातें हुई और अब आगे क्या - क्या करना होगा इसके बारे में वे बहुत जल्द आपसे मिलने वाली हैं.

मैंने उनको आपका वही पुराना ठिकाना बता दिया है और यह भी कह दिया है कि भरसक कल रात को आप वहाँ पर रहेंगे और उनसे मुलाकात कर सकेंगे, उन्होंने आने

को भी कहा है.

राम:

बहुत ठीक कीया , मैं खुद उससे मिलने को उत्सुक हूँ, कल जरूर मिलूँगा.

हाँ, वह मनोरमा से मिली या नहीं?

श्याम:

जी तब तक तो नहीं मिली थीं पर अब हम लोगों से मिलने और यह सब सामान देख लेने बाद गई हैं और आशा है जरूर मिली होंगी.

राम:

उससे क्या - क्या बातें होती हैं यह सुनने लायक होगा.

श्याम:

जरूर, कल वे आपसे मिलेंगी उसी समय पता लगेगा.

(कुछ रुक कर) हाँ एक बात का जिक्र करना तो मैं बिल्कुल भूल ही गया.

राम:

सो क्या?

श्यामसुन्दर ने अपने चारों तरफ देखा.

गोपाल तथा बाकी के सब इधर - उधर बैठे, लेटे या टहलते हुए सुस्ता रहे थे और इन दोनों के पास में कोई न था.

श्यामसुन्दर ने यह देख धीरे से न - जाने कौन सी बात कही कि जिसे सुनते ही रामचन्द्र चौंक उठा और उसके चेहरे से परेशानी और घबराहट जाहिर होने लगी.

उसने दबी जुबान से कुछ कहा और तब इन दोनों में बहुत ही धीरे - धीरे इस तौर पर कुछ बातचीत होने लगी कि हम भी न सुन सके.

पर आखिर ये बातें खतम हुई और रामचन्द्र ने उठते हुए कहा, " तुम्हारे आदमी सुस्ता चुके अब चलना चाहिए.

" श्यामसुन्दर ने पूछा, “ क्या अभी और कहीं जाना है! " रामचन्द्र ने जवाब दिया, “ हाँ, यह सब सामान लोहगड़ी पहुँचाना होगा.

" जिस पर वह बोला, “ जब लोहगड़ी ही जाना था तो बाहर से ही वहाँ क्यों नहीं हम लोगों को भेज दिया?

वहाँ से वह इमारत बहुत नजदीक पड़ती है जहाँ वह नाटक किया गया था.

राम ०:

नहीं बाहर जाने में बहुत से खतरे थे जिनमें से सबसे बड़ा यह था कि शायद भूतनाथ ने इसलिए कुछ आदमी वहाँ पर छोड़ रखे हों कि कोई अगर उन चीजों को हटाने के लिए आवे तो उसके पीछे जायें और देखें कि उन्हें कौन कहाँ ले जाता है.

मुझे तो यही शक बना हुआ है कि तुम लोगों को उस जगह आते इन चीजों को उठाते उसने या उसके आदमियों ने देख न लिया हो.

श्याम:

नहीं, इसकी कोई सम्भावना नहीं जान पड़ती क्योंकि हम लोग पूरी तरह से चौकन्ने थे और इस बात से पूरे खबरदार भी कि कोई हमारा पीछा न करे, जहाँ तक मैं कह सकता हूँ हम लोगों को किसी ने नहीं देखा.

राम:

तभी खैरियत है, अच्छा चलो.

श्याम:

अब किस तरह चलिएगा?

राम:

वही बन्दरों वाले बंगले में, उसी जगह से लोहगड़ी में जाने का रास्ता है.

अपने साथियों को सब चीजें उठाकर पीछे - पीछे आने को कह रामचन्द्र और श्यामसुन्दर पुनः वहाँ से रवाना हुए.

यहाँ उस बँगले तक जाने के रास्ते का हाल जिसमें दयाराम - जमना और सरस्वती रहती थीं अथवा जिसकी छत पर बने हुए बन्दरों वाला बँगला रख दिया है हमारे पाठक जानते ही होंगे क्योंकि उन्हें कई बार हमारे साथ यहाँ से वहाँ तक आने - जाने का मौका पड़ चुका है अस्तु उसका हम कोई जिक्र न करेंगे, मुख्तसर यह कि उसी मामूली रास्ते से यह गिरोह उस बँगले के अन्दर जा पहुँचा.

उस कमरे में पहुँच कर जहाँ प्रभाकरसिंह की सूरत में आने के मौके पर भूतनाथ जोखिम में पड़ गया था या जहाँ वह शीशे वाली पुतली थी रामचन्द्र ने बाकी लोगों को रुक जाने को कहा और श्यामसुन्दर को लिए हुए बँगले की एक कोठरी की राह होता हुआ उस बँगले की छत पर पहुँच गया. यहाँ छत के मुंडेर पर बने हुए वे बन्दर दिखाई पड़ रहे थे जिन्हें मालती ने पहिले - पहिल उस वक्त देखा था जब कि उसे इन्द्रदेव की बदौलत इस घाटी में कुछ दिन रहना पड़ा था और वह छत भी यहाँ से दिखाई पड़ रही थी जहाँ से मालती ने यह सब हाल देखा था.

इस समय पौ फट चुकी थी और पूरब तरफ का आसमान लाली पक्रड़ रहा था.

रामचन्द्र पश्चिम तरफ के मुंडेर की तरफ गया जिधर थोड़ी - थोड़ी दूर पर आठ बन्दर एक - दूसरे से बराबर फासले पर बैठाये हुए थे.

ये बन्दर किसी धातु के बने हुए थे और साथ ही तिलिस्मी कारीगरी से खाली न थे.

रामचन्द्र ने एक बन्दर का दाहिना कान पकड़ा और उसके बदन को जोर से धक्का दिया.

वह अपनी जगह से खसक पड़ा.

ढकेलते हुए वह उसको एक कोने की तरफ ले चला और वहाँ ले जाकर छोड़ दिया, इसके बाद दूसरे बन्दर को उसी तरह वहाँ तक पहुँचाया,, यहाँ तक कि एक - एक करके आठों बन्दर उसी स्थान इकट्ठे हो गए, १.

देखिए भूतनाथ, आठवें भाग का अन्त ।

२.

देखिए भूतनाथ तेरहवाँ भाग, आठवाँ बयान ।

रामचन्द्र ने अब उन सभों की गर्दन उमेठनी शुरू की जो जरा से जोर में ही घूम जाती थी.

जब सबका मुंह पश्चिम और उत्तर के कोने की तरफ हो गया तो उन बन्दरों के मुँह से एक तरह की किलकारी की - सी आवाज सुनाई पड़ी जिसे सुन उसने कहा, " लोहगड़ी में जाने का दरवाजा खुल गया, चलो नीचे चलो.

!! श्यामसुन्दर ने कहा, " उस रात को जब मैं आपके साथ यहाँ आया था तब आपने कोई तर्कीब ऐसी की थी कि इन बन्दरों की आँखों से चमक निकलने लगी थी और तब दरवाजा खुला था पर आज वैसा नहीं हुआ, इसका क्या सबब है?

" रामचन्द्र ने जवाब दिया, " वह तर्कीब रात के वक्त काम लेने के लिए है.

तुम देखते हो कि इन बन्दरों का मुंह हर तरफ को घूम सकता है.

इस घाटी से आठ तरफ को जाने के लिए आठ सुरंगें निकली हैं.

जिस तरफ की सुरंग का रास्ता खोलना हो उसी तरफ सब बन्दरों का मुँह हो जाने पर उस तरफ की सुरंग का दरवाजा खुल जायगा.

इस समय चाँदना हो गया है इसलिए सहज ही में यह काम हो गया पर रात के वक्त अँधेरे में ऐसा करने में बहुत तरदुद हो सकता है क्योंकि किसी बन्दर का मुँह अगर जरा दूसरी तरफ घूमा रह जायगा तो दरवाजा न खुलेगा, उस समय काम में मदद करने के लिए इनकी आँखों से रोशनी की तर्कीब तिलिस्म बनाने वालों ने रक्खी है.

रोशनी पैदा करने की तर्कीब देखो यह है " कह कर रामचन्द्र ने एक बन्दर का बायाँ कान पकड़ा साथ ही उसकी आँखों से बहुत ही तेज और चकाचौंध डालनेवाली रोशनी निकलने लगी.

कान उलटा घुमाते ही रोशनी बन्द हो गई.

श्यामसुन्दर ने कहा, " ठीक है मैं समझ गया मगर यहाँ से जाने के पहिले एक बात मैं और पूछना चाहता हूँ, अगर कोई हर्ज न हो तो बता दीजिए.

" राम:

(हँस कर) पूछो क्या पूछते हो?

श्यामसुन्दर:

पिछली दफे हम सब लोग यहाँ उस वक्त आए थे जब मुन्दर और हेलासिंह भी यहाँ पर थे और जब नन्होंजी हम लोगों के साथ थीं.

उस समय उन्होंने न जाने क्या किया था कि सब बन्दर एक विचित्र रीति से कवायद करने लगे थे, वह क्या बात थी! राम:

(हँस कर) मैं समझ रहा था कि यही बात तुम पूछोगे.

वह कोई खास या विचित्र बात नहीं बल्कि यहाँ रहने बालों का मन बहलाने के लिए मजाक के तौर पर कारीगरों ने बना दी है.

मैं उसकी भी तरक़िब अभी तुमको बताए देता हूँ पर इसके पहिले जब जिक्र आ ही गया है तो एक बात और भी कह दूं जिसका पता शायद तुमको नहीं होगा और जिसको जानकर मुझे अफसोस हुआ क्योंकि उस मौके पर हम लोगों से एक थंडी गलती हो गई जिसका नतीजा भयानक हो सकता था.

श्याम:

(ताज्जुब से) सो क्या?

जिन आदमियों को हमने हेलासिंह और सुन्दर समझ कर उन पर हमला किया था वे वास्तव में इन्द्रदेव और मालती थे.

श्याम:

(चौंक कर) हैं, इन्द्रदेव और मालती! राम:

हाँ.

श्याम:

ओ हो, तब तो हम लोगों से भारी भूल हो गई.

(कुछ सोचकर) अवश्य वे लोग हेलासिंह और मुन्दर न होंगे क्योंकि ये दोनों उस तरह आपके हाथ के बाहर न हो सकते थे जैसा कि वे हो गये और इन्द्रदेव के सिवाय किसी की मजाल भी न थी कि हमलोगों को इस तरह परेशान करता.

आप उस वक्त बड़े मौके से पहुँचे थे नहीं तो जब मैंने अपने को कोठरी में बन्द होते देखा तो यही समझा कि बस हुआ, तिलिस्म के चक्कर में फंस गया अब जिन्दगी गई, मगर आपको यह बात किस तरह मालूम हुई! राम:

तुम लोगों को छुड़ा कर रवाना कर देने के बाद जब मैंने आलमारी में बेहोश मालती और लोहगड़ी की चाभी वाला डिब्बा पाया तब.

उसी समय मैंने अपना रुख बदल दिया और दूसरे ढंग से काम करने लगा.

श्याम:

ठीक है, अच्छा अब यह बताइये कि इन बन्दरों को नचाने की तर्कीब क्या है?

रामचन्द्र श्यामसुन्दर को लिए हुए छत के एक कोने की तरफ गया जहाँ एक अकेला बन्दर जो औरों से कुछ बड़ा था बैठाया हुआ था.

इसके पेट के पास एक छोटा - सा मुट्ठा लगा हुआ था जिसको रामचन्द्र ने घुमा दिया और अलग जा खड़ा हुआ.

मुट्ठा घुमाते ही वह बन्दर उठ खड़ा हुआ और बाकी के सब बन्दरों के बदन में भी हरकत होने लगी.

कुछ देर तक सब इधर - उधर उछलते - कूदते रहे और तब उस बड़े बन्दर ने उन सभों से कुछ इस ढंग से कवायद कराना शुरू किया कि देखते ही ये दोनों हँस पड़े.

कुछ देर तक यह तमाशा देखने के बाद इसे बन्द कर वे दोनों नीचे उतरे और बाकी आदमियों को साथ लेने की नीयत से उस कोठरी में पहुंचे जहाँ उन लोगों को छोड़ गए थे, पर ताज्जुब की बात थी कि वहाँ उन चारों में एक भी आदमी न था.

हाँ, वह सब सामान जो वे लोग उठा लाये थे वहीं जमीन पर जरूर पड़ा हुआ था.

यह समझ कर कि शायद वे लोग बाहर कहीं निकल गए हों रामचन्द्र ने कमरे की खिड़की खोल उन लोगों को कई आबाजें दीं पर उनका कहीं पता न लगा.

चारों तरफ के कमरे और कोठरियों में तलाश किया और तब बाहर निकल कर घाटी के चारों तरफ घूम - घूम कर भी खोजा पर कहीं भी ये लोग नजर न आए आखिर दोनों ताज्जुब करते हुए मैदान में खड़े हो गए और एक - दूसरे का मुँह ताकने लगे.

इतना पड़कर हमारे पाठक यह तो समझ ही गए होंगे कि ऊपर तेरहवें भाग के छठवें और नवें बयान में जो कुछ ताज्जुब की बातें हम लिख आए हैं वह इन्हीं रामचन्द्र, श्यामसुन्दर और गोपाल आदि की करतूत थी. और इन्द्रदेव ने जिस औरत को छत पर देखा वह नन्हो थी.

पर इस बात का अभी पता न लगा कि यह रामचन्द्र वास्तव में कौन है तथा वह श्यामसुन्दर, गोपाल और बाकी के लोग किसके नौकर या शागिर्द हैं.

खैर कभी - न - कभी इसका पता लग ही जायगा.

अब हम इनको इसी जगह छोड़ते हैं और पाठकों को एक दूसरे ही अनूठे स्थान की सैर कराते हैं.

सातवां व्यान।

दिन लगभग तीन पहर से ऊपर ढल चुका है.

जंगल, मैदान, पहाड़ और खेत धूप और धूल से झुलस रहे हैं और सड़कों पर संध्या के पहिले ही अपना सफर ख़तम करने की जरूरत रखनेवाले मुसाफिरों के सिवाय और कोई चलता - फिरता नजर नहीं आता.

शहरों के लोग तरी और ठंडक की खोज में तंग गलियों में बने चबूतरों या ऊँचे और अंधेरे मकानों की निचली मंजिलों में पड़े हैं और देहात के लोग बड़े - बड़े पेड़ों के नीचे खाट डाले लेटे हुए बिना सूर्यास्त का समय आए उठने की इच्छा नहीं कर रहे हैं जब तक कि उनकी जरूरत उन्हें ऐसा करने पर मजबूर न करे, परन्तु अपने पाठकों को

लेकर हम जिस स्थान पर चल रहे हैं वहाँ ऐसे समय में भी गर्मी और लू की तकलीफ बिल्कुल नहीं है और तपिश तो एकदम नहीं के बराबर है.

एक लम्बे - चौड़े बाग की हवा, जिसके ओर - छोर का कुछ ठिकाना नहीं लग रहा है, चारों तरफ बने और छूटते हुए सैकड़ों ही फौव्वारों की तरी की बदौलत इस गर्मी के वक्त भी काफी ठण्डी हो रही है और घने तथा गुंजान पेड़ों की बदौलत वहाँ धूप का भी जोर बिल्कुल नहीं होता है.

इस बाग के बीचो - बीच में संगमर्मर की बारहदरी है जिसकी कुर्सी जमीन से एक पुरसा ऊँची है और इस समय उसके ऊपर पहुंचने वाली पतली सीढ़ियों पर से न - जाने कहाँ से आता हुआ बहुत - सा पानी बहकर नीचे पहुँच उस नाले में मिल रहा है जिसका पानी छोटी - बड़ी सैकड़ों नालियों में से होता हुआ उस समूचे बाग में फैला हुआ है और इस गर्मी के मौसम में भी बाग को एदक़म हराभरा और तर बनाए हुए है.

इस बारहदरी की छत पर भी चारों तरफ कई फव्वारे बने हुए हैं जिनकी चकरदार टूटियों से निकला हुआ पानी चारों तरफ बहुत ही हलकी बूंदों में फैल कर नीचे को गिरता हुआ खासा बरसात का मजा दे रहा है और साथ ही उस बारहद्दरी को भी इतना ठण्डा बनाए हुए है कि घोर गर्मी का मौसम और तीन पहर का समय होते हुए भी वहाँ एकदम तरी है.

यह धूप की किरणें जब सीढ़ियों और खम्भों पर पड़ती हैं तो पानी से तर इस बारहदरी की चमकदार सुफेद दीवार, बारहदरी शीशे की तरह चमक उठती है और बड़ी ही सुन्दर मालूम होती है.

धूप, लू और गर्द का मारा एक नौजवान मुसाफिर जब इस बाग में पहुंचा तो यकायक चौंक कर ताज्जुब में पड़ गया कि वह कहीं स्वर्ग में तो नहीं आ पहुँचा है.

बाग की चारदीबारी देकते ही यह एक ऐसा सुहावना दृश्य और बदला हुआ मौसिम उसकी आँखों के सामने पड़ा कि वह अपनी सब थकावट और परेशानी भूल गया और एक गुंजान पेड़ के नीचे खड़ा हो एकटक उस बारहदरी की तरफ देखने लगा जो इस समय एक खिलौने की तरह उसके सामने नजर आ रही थी और जिस पर से गिरती हुई पानी की बौछारें और उनके ऊपर पड़ने वाली धूप की किरणें तरह - तरह के रंगों वाले

पचासों इन्द्र - धनुष पैदा कर उसे देवताओं का आवास या परियों का क्रीड़ास्थल - सा बना रही थीं.

बारहदरी की शोभा देखता हुआ वह नौजवान यकायक चिहुँक पड़ा और तब बड़े गौर से कुछ देखने लगा.

अब हमने भी देखा कि उसकी निगाह एक हसीन नाजनीन पर पड़ रही है जो उस बारहदरी के पीछे की तरफ से निकल कर इसी तरफ आ रही थी.

इसी समय नौजवान के मुंह से निकला, " वही तो है.

" तब उसने अपने को पेड़ों की झुरमुट के अन्दर और भी अच्छी तरह छिपा लिया पर अपनी निगाह उस पर कायम रखी.

उस औरत के पीछे - पीछे एक हिरन का बच्चा भी नजर आया जो उसके साथ बहुत हिला - मिला हुआ था.

वह औरत एक गेंद के साथ खेलती हुई बारहद्दरी में इधर - उधर घूमने लगी और वह हिरन का बच्चा भी उसके पीछे - पीछे दौड़ने और किलोल करने लगा.

कभी गेंद को जमीन पर पटक कर उछालती कभी हवा में उछाल कर रोकती, कभी जमीन पर ढुलका उसके पीछे - पीछे हिरन के साथ - साथ दौड़ती, या कभी हिरन को उसके पीछे दौड़ाती हुई वह औरत इधर से उधर घूमने लगी.

कभी - कभी वह कहीं रुक जाती, किसी फूल को तोड़ती, सूंघती या जुड़े अथवा बालों में खोंसती, कभी फुहारे की टूटी से निकल कर मेंह की तरह गिरने वाले पानी से खेलती, कभी मुलायम घास नोच कर अपने हिरन को खिलाती या कभी संगमर्मर के उन बहुत - से चबूतरों में से जो मुनासिब जगहों में बने हुए थे किसी एक पर बैठ उस हिरन से विनोद करती या उसका तकिया बना अधलेटी - सी हो किसी गौर में डूबती हुई वह औरत इस समय इस नौजवान की निगाहों में बिल्कुल एक परी - सी जान पड़ती थी.

उसकी पतली साड़ी जिसको वह बड़ी लापरवाही के साथ अपने बदन पर डाले हुए थी कभी हवा के झोंकों से इधर - उधर उड़ जाया करती थी या कभी - कभी पानी से तर होकर उसके बदन के साथ इस तरह से चिमट जाया करती थी कि मन को बेतहाशा

खींच लेने वाला बदन का गुलाबी रंग फट पड़ता और अंग - प्रत्यंग झलकने लग जाते थे.

पेड़ों के अन्दर छिपे हुए इस नौजवान का मन क्षण - क्षण भर में हाथ से निकला जा रहा था और वह बड़ी मुश्किल से अपने को सम्भाल रहा था.

यकायक कुछ देख वह हिरन का बच्चा चौंका और दौड़ कर उस औरत की गोद में आकर छिप गया जिसने उसे उठा कर अपनी छाती से भरजोर दबा लिया और तब ताज्जुब के साथ चारों तरफ देखते हुए यह जानने की कोशिश करने लगी कि किस चीज को देखकर वह डरा है.

मालूम होता है कि अपने मन की बेबसी के कारण वह नौजवान अपने छिपने की जगह से कुछ बाहर निकल पड़ा था क्योंकि सब तरफ से घूमती - फिरती आकर उस औरत की निगाह उसी ओर को रुकी जिधर वह था और वहाँ एक आदमी को छिपा देख उसके मुंह से ताज्जुब और डर की एक आवाज निकल पड़ी.

जिस संगमर्मर के चबूतरे के सहारे उउंगी हुई वह पड़ी थी उसका सहारा उसने छोड़ दिया और उठ खड़ी हुई, तब एक निगाह् दुबारा उस तरफ डाल कर फुर्ती से चलती हुई उस बारहदरी की तरफ बड़ी.

नौजवान अपनी गलती समझ गया.

अब छिपना फिजूल था.

वह पेड़ों की आड़ से बाहर निकल आया और खुद धीरे - धीरे उसी बारहदरी की तरफ बढ़ा.

उस औरत ने जो घूम - घूमकर अपने पीछे देखती भी जाती थी उसको पीछा करता पा अपनी चाल तेज कर दी और दौड़ती हुई बारहदरी की सीढ़ियाँ चड़ उसके ऊपर पहुँच गई जहाँ से वह डर और घबराहट मिली निगाहों से उस नौजवान को देखने लगी जो उसी तरफ को आ रहा था, जब वह पास आने पर भी रुका नहीं बल्कि उसका इरादा सीढ़ियाँ तय कर बारहदरी के ऊपर किसी तरह की तकलीफ पहुँचाने का इरादा लगा तो, उस औरत के मुँह से डर की चीख निकल गई मगर उसी समय उस नौजवान ने कहा, " डरो मत मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं बल्कि तुम्हारी मदद करने के लिए यहाँ आया हूँ, !!

इतना सुनते ही वह औरत रुक गई और गौर से नौजवान की सूरत देखने लगी मगर मुँह से कुछ न बोली.

कुछ ठहकर नौजवान ने फिर कहा, " तुम्हारे ही लिए बहुत दूर से इस धूप, लू गर्मी में सफर करता हुआ मैं आ रहा हूँ, तुम डरो नहीं बल्कि अपना हाल मुझसे कहो, " मैं सब तरह से तुम्हारी मदद करूंगा.

" कुछ डरते - डरते औरत ने कहा, " मैं कैसे समयूँ कि जो कुछ आप कह रहे हैं वह सही है आपके हाथों से मुझे तकलीफ नहीं मिलेगी?

आप कौन हैं, आपका नाम क्या है, आप कहाँ से आ रहे हैं तथा इस तिलिस्म के अन्दर आप क्योंकर आ पहुँचे?

" नौजवान ने जवाब दिया, " वह सबकुछ मैं बताऊँगा पर पहिले मैं तुम्हारा हाल सुन लेना चाहता हूँ " एक लम्बी साँस लेकर उस औरत ने कहा, " मुझ वेबस दुखिया का हाल ही क्या सिबाय इसके कि मुद्दत से इस जगह बन्द हूँ और तकलीफें उठा रही हूँ.

" नौज:

फिर भी अपना और अपने माता - पिता का नाम, रहने का पता ठिकाना, और किस तरह इस जगह आ फँसी यह सब तो बता ही सकती हो.

औरत:

जरूर, मगर इसको बताने से भी फायदा क्या होगा?

नौज:

मैं कह तो चुका कि तुम्हारी मदद करूँगा और तुम्हें इस जगह से छुड़ाऊंगा.

औरत:

अगर वास्तव में इच्छा है तो मेरा नाम - पता - परिचय जानने की जरूरत क्या है ?

मैं चाहे कोई भी होऊँ या किसी की भी लड़की होऊँ! नौज:

बता देने से क्या कोई हर्ज होगा?

औरत:

जब आप मेरी मदद करना ही चाहते हैं तो सिर्फ एक बेबस, गरीब दुखिया समझ कर कीजिए.

नौज:

खैर अगर तुम नहीं ही बताना चाहती हो तो मैं उसके लिए जिद्द भी नहीं करूंगा.

मैं तुम्हें छुड़ाकर जहाँ तुम कहोगी पहुँचा दूंगा और तुमसे इस संबंध में कुछ भी न पूछूंगा.

, मगर मेरी मदद के लिए इतना तो तुमको बताना होगा कि तुम इस तिलिस्म में जहाँ अनजान का पहुँचना बड़ा ही कठिन है कैसे गिरफ्तार हो गई या किस राह से यहाँ पहुँची?

यह जान लेने से मुझे तुम्हारे छुड़ाने में विशेष कष्ट नहीं करना पड़ेगा.

औरत:

अगर मुझे यह विश्वास हो जाय कि आप मुझे यहाँ से छुड़ा लेने की सामर्थ्य रखते हैं तो जरूर यह सब हाल आपको बताऊँगी, मगर यह उतना सहज काम नहीं है जितना शायद आप समझे हुए हैं क्योंकि अगर ऐसा होता तो आज के कहीं पहिले मैं इस कैदखाने से निकल गई होती.

नौज:

अगर तुम्हारी खुद इस जगह रहने की इच्छा न हो जिसे तुम कैदखाना कहती हो पर मुझे स्वर्ग का टुकड़ा नजर आ रहा है, तो क़्रम - से - क़्रम मुझे इसमें कोई तरदुद दिखाई नहीं पड़ता.

जिस राह से मैं आया हूँ वह अभी तक खुली है और मेरे साथ - साथ तुम भी बखूबी उसी तरफ निकल जा सकती हो.

औरत:

(लाचारी की मुद्रा से सिर हिलाकर) नहीं, सो नहीं हो सकता.

न तो मैं उस राह से बाहर जा सकती हूँ और न अब आपको ही वह राह खुली हुई मिलेगी.

नौज:

(आश्चर्य से) सो क्यों?

औरत:

सो मैं अच्छी तरह जानती हूँ, आज के पहिले भी कई दफे कई नौजवान यहाँ तक पहुँचे और उन्होंने मुझे यहाँ से निकाल ले जाने का दावा किया पर सभी नाकामयाब हुए.

हर मरतबे वह राह जिससे वे यहाँ आएँ थे उन्हें बन्द मिली जिससे मैं तो क्या वे खुद भी बाहर निकल न सके और आज तक इसी जगह कहीं बन्द अपनी किस्मत को अँख रहे होंगे, वही हालत आपकी भी होगी और यही जान कर मैं कहती हूँ कि अब न तो आप मुझे छुड़ा सकते हैं और न खुद ही इस जगह के बाहर जा सकते हैं.

नौज:

(ताज्जुब से) क्या आज के पहिले भी कई आदमी इस जगह आ चुके हैं?

औरत:

जी हाँ.

नौज:

(सिर हिला कर) नहीं, सो कभी नहीं हो सकता, यह तिलिस्म है और इसके अन्दर किसी का आना बहुत ही कठिन है.

औरत:

आपका कहना ठीक हो सकता है मगर मैं भी जो कह रही हूँ वह गलत नहीं है.

नौज:

लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता.

औरत:

तब लाचारी है, मैं अपनी बात के सबूत में सिवाय इसके और क्या कह सकती हूँ कि आप अगर चाहें तो इस बात की जाँच कर लीजिए कि जिस राह से आप यहाँ आए वह अभी तक खुली है या बन्द हो गई, आप खुद ही जान जाएँगे कि मेरा कहना कहाँ तक सही है ।

नौज:

खैर अगर वह राह बन्द भी हो गई होगी तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि उसे फिर खोल लूँगा और अगर किसी कारण से वह नहीं ही खुले तो मुझे और भी कितने ही रास्तों का हाल मालूम है जिनमें से किसी को भी खोल कर मैं तुम्हें इस जगह से बाहर ले जा सकता हूँ औरत:

आपकी बात सुनकर मुझे ताज्जुब होता है.

इस तिलिस्म के रास्तों के बारे में इतनी जानकारी रखने वाला अगर कोई हो सकता है तो सिर्फ एक आदमी और केवल वही मुझे यहाँ से छुड़ा भी सकता है.

अगर आप ही वह आदमी हैं तब तो आपका कहना सही है नहीं तो मैं यही कहूँगी कि आप या तो गलत कह रहे हैं और या मुझे धोखा देना चाहते हैं.

नौज:

वह कौन आदमी है?

औरत:

जमानिया के कुंअर गोपालसिंह! नौज:

(ताज्जुब करता हुआ) तुम क्योंकर जानती हो कि वह तुम्हें यहाँ से छुड़ा सकते हैं?

औरत:

यह मैं बहुत अच्छी तरह जानती हूँ और इसी से पूरे विश्वास के साथ कहती हूँ कि अगर आप कुंअर गोपालसिंह नहीं हैं तो फिर अपने को भी आज से मेरी ही तरह इस तिलिस्म का कैदी समझिए और फिर बाहर की दुनिया पुनः देखने की आशा को हमेशा के लिए तिलांजली दे दीजिए.

नौज:

(कुछ देर तक चुपचाप कुछ सोचने के बाद) मैं गोपालसिंह ही हूं। औरत:

(सिर हिलाकर) मगर मुझे विश्वास नहीं होता.

नौज:

तब तो तुम्हारी तरह मैं भी कहूँगा कि लाचारी है.

औरत:

खैर अगर आप सचमुच कुंअर गोपालसिंह हैं तो इसका सबूत तो बहुत जल्द मिल सकता है, सिवाय उनके और कोई इस बारहदरी के ऊपर नहीं आ सकेगा, अगर आप वे ही हैं तो सीढ़ियाँ चढ़कर मेरे पास आइए.

नौज:

यह क्या मुश्किल है, मैं तो यह करने वाला ही था पर तुम्हारी बातों ने रोक लिया था, मैं अभी आया.

इतना कह उस नौजवान ने बारहदरी की सीढ़ियों पर पैर रक्खा और ऊपर चढ़ने लगा, पर इस काम को जितना सहज उसने समझा हुआ था वैसा न पाया.

हम ऊपर लिख आए हैं कि इस बारहदरी की सीढ़ियों पर से भी ऊपर कहीं से बहता हुआ पानी आ रहा था जो नीचे के नाले में मिल जाता था.

जैसे ही नौजवान ने पहिली सीढ़ी पर पैर रखा वैसे ही उस पानी का जोर बढ़ गया, दूसरी सीढ़ी पर पैर रखते ही जोर और बड़ा, तीसरी पर जाने से और भी तेजी आई, मगर उस नौजवान ने इसका कुछ खयाल न किया और बराबर ऊपर चढ़ता ही गया.

परन्तु ज्यों - ज्यों वह ऊपर उठता जाता था त्यों - त्यों पानी का वेग बढ़ता जाता था यहाँ तक कि ऊपर से तीन - चार सीढ़ियाँ जब रह गईं तो पानी इतनी जोर से आने लगा कि मालूम होता था मानों एक नदी बहती हुई चली आ रही है जिसके जोर के सामने पैर टिकाना कठिन था.

उस नौजवान को यह देख ताज्जुब हुआ और कुछ अन्देशा भी मालूम हुआ और वह रुक गया.

ऊपर की तरफ वह औरत खड़ी गौर, आशंका, आशा और कौतूहल मिले भाव से देख रही थी कि अब क्या होता है.

नौजवान को रुकता पा उसके चेहरे से निराशा की एक झलक निकल पड़ी जिसे नौजवान ने लक्ष्य किया और तब हिम्मत कर उसने पुनः एक सीड़ी पर पैर रखा पर वह पैर रखना गजब हो गया.

बड़े ही जोर से पानी का एक झोंका नौजवान की तरफ आया और अगर वह तेजी से साथ दो - तीन सीढ़ियाँ नीचे न उतर गया होता तो इसमें शक नहीं कि वह पानी के बहाव के साथ - साथ लुड़कता - लुड़कता नीचे आ गिरता और अपने हाथ पाँव तुड़वा डालता, मगर उसके नीचे आने के साथ ही पानी की तेजी भी क़म पड़ गई और नौजवान कुछ सोचता हुआ और भी नीचे उतर गया तो और भी कम होकर करीब - करीब वैसी ही हो गई जैसी की शुरू में थी.

वह सीढ़ियों से हटकर खड़ा हो गया और ताज्जुब के साथ ऊपर की तरफ देखने लगा.

औरत कहिए अब आपको विश्वास हुआ कि जो कुछ मैं कहती थी वह सही था?

नौज:

क्या जब कोई ऊपर आना चाहता है तब - तब ऐसा ही होता है?

औरत:

मेरे सिवा जब - जब कोई दूसरा आना चाहता है तब ऐसा ही होता है.

नौज:

मगर तुम बेखटके जब चाहे आ - जा सकती हो?

औरत:

हाँ.

नौज:

अच्छा तो तुम ही नीचे आओ.

औरत:

इसके लिए क्षमा करें, जब तक मैं आपका ठीक - ठीक परिचय न पा जाऊँ ऐसा नहीं कर सकती, न - जाने आप कौन हैं और मेरे साथ किस तरह का बर्ताव करें.

नौज:

मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ किसी तरह की चालबाजी तुम्हारे साथ न करूंगा और तुम्हें यहाँ से निकाल कर जहाँ कहोगी पहुँचा दूंगा.

औरत:

पहिले जब आपने यही बात कही थी तो मुझे कुछ थोड़ा - बहुत विश्वास हो भी सकता था कि आप सही कहते होंगे पर अब अपनी आँखों से आपकी अभी वाली हालत देखकर मैं भला क्योंकर मान सकती हूँ कि आप मुझे इस तिलिस्म से छुड़ा ले जाने की सामर्थ्य रखते होंगे.

जब आप एक मामूली - सी तिलिस्मी कार्रवाई से घबरा कर लौट गए तो यह किस बूते पर कहते हैं कि मुझे छुड़ा लेंगे?

मैंने आपसे कहा न कि सिवाय कुँवर गोपालसिंह के और कोई भी मुझे इस जगह के बाहर निकाल नहीं सकता.

नौज:

मगर मैंने भी तो कहा न कि मैं ही गोपालसिंह हूँ, औरत:

(सिर हिलाकर) कदापि नहीं, अगर आप कुँवर साहब होते तो इस तरह सीढ़ियों पर से ही वापस न लौट जाते बल्कि मुझे साथ लेकर नीचे उतरते.

नौज:

क्या तुम उन्हें पहिचानती हो?

औरत:

नहीं.

नौज:

तब उन्हें जान किस तरह सकोगी?

औरत:

उनके करतब से! अगर आप कहते हैं कि आप वे ही हैं तो इसका सबूत मुझे दीजिए और यहाँ ऊपर तक आकर दिखाइए कि आप कुछ कुदरत रखते हैं तथा वास्तव में कुँअर साहब ही हैं, नहीं तो मैं यही समयूंगी कि आप कोई धूर्त ऐयार हैं और मुझे धोखे में डालकर अपना कोई मतलब सिद्ध करना चाहते हैं.

नौज:

(तैश में आकर) अच्छी बात है, तो ऐसी हालत में जरूरी हो गया कि मैं ऊपर आकर ही तुम्हें बताऊँ कि मैं कौन हूँ! इतना कह नौजवान कुछ और भी हट गया और कुछ दूरी पर बने हुए संगमर्मर के एक चबूतरे पर जा बैठा.

एक छोटी किताब उसके जेब में थी जिसे उसने निकाला और कुछ पन्ने उलट - पलट करने बाद एक जगह बड़े गौर से पड़ने लगा ।

उधर वह औरत भी उसी जगह पहिली सीढ़ी के पास बनी एक छोटी चौकी पर बैठ गई और ठूड्डी हथेली पर रख स्थिर दृष्टि से उसकी तरफ देखने लगी.

बारहदरी की छत से गिरने वाले फौव्वारों की नन्हीं बूंदें उसके बदन से चिपकी जा रही थीं पर उसे इस बात का खयाल न था और वह एकदम स्थिर होकर बैठी विचित्र निगाहों से उस नौजवान की तरफ देख रही थी जो बिना इसकी तरफ एक दफे भी नजर न उठाये एकदम उस किताब में डूबा हुआ था. लगभग घड़ी - भर के वह नौजवान किताब पढ़ने में लगा रहा और इस बीच में उसने एक दफे भी उस औरत की तरफ निगाह न उठाई मगर अब यकायक उसने किताब बन्द कर दी और उसे जेब के हवाले करते हुए सिर उठाकर उस औरत की तरफ देखा जिसकी निगाह एकदम बराबर उसी के ऊपर गिर रही थी.

चबूतरे से उठकर वह नौजवान फिर उन्हीं सीड़ियों के पास पहुँचा और बोला, " मुझे तुम्हारे पास तक पहुँचने की तरक़ीब मालूम हो गई! " उस औरत ने मुस्कुराकर कहा, " मैं यह देखने के लिए उत्सुक हूँ कि आप का कहना कहाँ तक सही है! " इतना कह उसने लापरवाही के साथ एक अंगड़ाई ली और तब अपनी जगह से उठ खड़ी हुई, नौजवान उस जगह से हटकर बारहदरी के पीछे की तरफ चला और वह औरत भी ऊपर घूमती हुई उसे अपनी निगाहों में रखे रही.

हम ऊपर कह आए हैं कि इस बारहदरी की कुर्सी जमीन से करीब पुर्सा - भर ऊँची थी और उस पर जाने के लिए एक तरफ सीड़ियाँ बनी हुई थीं.

जब नौजवान उस बारहदरी के ठीक पीछे अर्थात् सीड़ियों की दूसरी तरफ वाले हिस्से में पहुंचा तो रुक गया और गौर से उस बारहदरी के तरफ देखने लगा.

एक पुर्से की ऊँचाई पर जाकर एक छजली उस बारहदरी के खम्भों की जड़ से लगभग एक बालिश्त नीचे - नीचे चारों तरफ घूम गई थी और इस समय उसी की तरफ उठी हुई नौजवान की आँखें कुछ ढूंढ रही थीं तथा आखिर उन्होंने उस चीज को खोज ही निकाला जिसकी तलाश में थीं.

वह एक आले का निशान था जो संगमर्मर की सुफेद दीवार में बहुत ही हल्का दिखाई पड़ रहा था.

नौजवान उसे देखते ही उसके पास चला गया और उसके नीचे पहुँच दीवार के ऊपर अपना हाथ फेरने लगा.

संगमर्मर की दीवार साफ चिकनी सतह पर एक जगह से कुछ उभरी हुई थी जो केवल आँख से देखने से जान न पड़ती थी पर हाथ से टटोलने से उसका पता लगता था.

नौजवान ने गौर करके मालूम किया कि एक पत्थर का छोटा तिकोना टुकड़ा कुछ उभरा हुआ है.

उसने उसको जोर से दबा दिया और वह करीब दो अंगुल के भीतर धंस गया, इसके साथ ही उस जगह के ऊपर बना हुआ जो आले का निशान था उसका भीतरी हिस्सा आगे की तरफ झूल गया और वहाँ पर डेढ़ हाथ ऊँची और करीब दो हाथ चौड़ी एक सुरंग भी दिखाई पड़ने लगी.

इतना कर वह नौजवान उस तरफ से हटा और पुनः बारहदरी के सामने उसकी सीढ़ियों के पास जा पहुँचा.

वह औरत भी जो यह देखने के लिए कि यह किधर जाता या क्या करता है उसके साथ - साथ ऊपर ही ऊपर घूम रही थी सीड़ी के पास पहुँची और उसको वहाँ रुक कर ऊपर की तरफ देखते पा बोली, " यह आपने क्या किया और इसका नतीजा त्या निकलेगा?

नौजवान ने जवाब दिया, “ इसका फल यह होगा कि जो पानी पहिले सीड़ी की राह गिरकर मुझे ऊपर पहुँचने में रुकावट डालता था वह अब नाली की राह से अलग बाहर जा गिरेगा.

मैं अगर चाहूँ तो पानी के इस बहाव को एकदम से रोक भी सकता हूँ पर उसमें कुछ देर लगेगी.

" इतना कह उस नौजवान ने सीढ़ी पर पैर रखा और ऊपर चढ़ने लगा.

उस औरत ने आश्चर्य के साथ देखा कि अब सीड़ी से गिरने वाले पानी की तेजी बढ़ नहीं रही है बल्कि पहले से भी कम हो गई है, साथ ही बारहदरी के पीछे की तरफ से पानी के गिरने की आवाज आने लगी है.

यह देख वह पीछे की तरफ घूमी और वहाँ जाकर देखते ही उसे मालूम हो गया कि जो नाली नौजवान ने खोली थी उसकी राह बड़े जोर से पानी गिर रहा है.

कुछ सायत तक वह इस विचित्र बात को देखती रही और तब सीढ़ी की तरफ लौटने के लिए घूमी पर उस नौजवान को अपने पीछे ही खड़ा पाया.

वह उसे देखते ही यह कहती हुई उसके पैरों पर गिर पड़ी, " बेशक आप कुँअर साहब के सिवाय और कोई नहीं है! " और उसकी आँखों से बेहिसाहब आँसू गिरकर उस नौजवान के पैर भिगोने लगे.

राजा गोपालसिंह ने, क्योंकि यह नौजवान वास्तव में वे ही थे, उस औरत को उठाया और दम - दिलासा देकर शान्त किया, तब इसके बाद बोले, " अब तो तुम्हें यह भी विश्वास हो गया होगा कि मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ और साथ ही तुम्हें यहाँ से छुड़ा ले जाने की सामर्थ्य भी रखता हूँ, अस्तु अब तुम बेखटके अपना हाल मुझे सुना सकती हो.

" उसने जवाब दिया, " वेशक मैं अब सब हाल बेखटके आपको सुना सकती हूँ, मगर वह बहुत लम्बा - चौड़ा किस्सा है और साथ ही कोई सुखद कहानी भी नहीं है.

इसलिए अगर आपकी आज्ञा हो तो मैं इस समय बहुत थोड़े में अपनी कथा सुना दूं, फिर कभी मौका होने पर खुलासा सुना दूंगी.

दूसरे इस बारहदरी के फब्बारों के कारण आपका बदन और कपड़े भी गीले हो रहे हैं, ज्यादा देर तक यहाँ रहने से शायद आपके दुश्मनों की तबीयत .

.

.

"

गोपालसिंह ने हँसकर कहा, " नहीं, इस बात का कोई अन्देशा तुम न करो, इस गर्मी, धूप और लू में यह बारहदरी और यहाँ के फव्वारे स्वर्ग - तुल्य मालूम हो रहे हैं ।

फिर भी मैं देर तक यहाँ रहना पसन्द नहीं करता क्योंकि यह आखिर तिलिस्म है जहाँ कदम - कदम पर खतरा है.

तुम अपना नाम बताओ और यह भी कहो कि किस सबब से यहाँ आईं, बाकी हाल मैं किसी निश्चिन्ती के मौके पर सुनूँगा.

औरत पीछे रक्खी हुई चौकी की तरफ बढ़कर बोली, “ तो आप इस चौकी पर आकर बैठ जाएँ, यहाँ पानी नहीं पड़ता है, और मैं संक्षेप में अपना हाल कह सुनाती हूँ " बारहदरी की सतह के बीचोंबीच में तीन - चार हाथ का एक बहुत ही खूबसूरत कुंड बना हुआ था जो बहुत गहरा नहीं जान पड़ता था और जिसके चारों कोनों पर चार छोटी - छोटी संगमर्मर की चौकियां बनी हुई थीं.

इन्हीं में से एक की तरफ उस औरत ने इशारा किया था.

गोपालसिंह उसके कहे मुताबिक उस चौकी पर जाकर बैठ गए और वह औरत हाथ जोड़ सामने खड़ी हो गई.

गोपालसिंह ने पूछा, " तुम कौन हो और किसकी लड़की हो?

" औरत:

मैं रोहतासगढ़ की रहने वाली और वहाँ के नामी महाजन गोविन्ददास की लड़की हूँ,
गोपाल:

रोहतासगढ़ की रहने वाली! तब यहाँ कैसे आ पहुँची?

औरत:

वहाँ के कुमार दिग्विजयसिंह की बुरी नजर की बदौलत! उन्होंने न - जाने मेरी फूटी शक्ल में क्या देखा कि मुझ पर आशिक हो गए और मुझे अपने महल में डालना चाहा.

मेरी जात दूसरी थी. इससे खुले आम न तो वे इस काम को कर ही सकते थे और न मेरे माँ - बाप ही इस बात को मंजूर कर सकते थे, अस्तु उन्होंने अपने बदमाशों द्वारा मुझे मेरे घर से छुरा मँगवाया और अपने एक बाग में रखवा दिया.

जब मैंने उनका बुरा प्रस्ताव स्वीकार न किया तो पहिले तो खफा होकर जान से मार डालने की धमकी दी और तब मैं न मानी तो तिलिस्म में बन्द कर दिया.

एक मुद्दत से मैं इसी कैद में पड़ी हूँ और ईश्वर से मनाया करती हूँ कि या तो मुझे मौत दे दे और या किसी दयालु को भेजे जो मुझे इस कैद से छुड़ावे.

इतना कहकर वह रोने लग गई.

गोपालसिंह ने दम - दिलासा देकर उसे शान्त किया और तब पूछा, " क्या दो दफे तिलिस्मी बाग में तुम्हीं ने आकर अपने चक्रव्यूह में कैद होने का हाल चीठी द्वारा बताया था?

" बड़ी मुश्किल से उस औरत ने अपने को सम्हाला तब कहा, “ जी हाँ, मुझे खोजता हुआ मेरा भाई - न - जाने किस तरह यहाँ तक आ पहुँचा और उसकी जुबानी मुझे मालूम हुआ कि यह जमानिया के तिलिस्म का चक्रव्यूह नामक स्थान है जहाँ मैं कैद की गई हूँ, उसको किसी तरह यहाँ का कुछ हाल मालूम हो गया था और उसका विश्वास था कि मुझे लेकर यहाँ से बाहर हो जायगा पर ऐसा न हो सका, उसी की बताई राह से दो बार हम लोग यहाँ से निकल के एक बाग में पहुंचे जो मालूम होता है कि वही है जिसे

आप अपना तिलिस्मी बाग कहते हैं पर हर बार गिरफ्तार हो गए और फिर यहीं पहुंचा दिए गए.

गोपाल:

गिरफ्तार करके फिर यहाँ पहुँचा दिए गए! सो कैसे और किसके द्वारा?

औरत:

दिग्विजयसिंह के कुछ मददगार आपकी रियासत बल्कि आपके महल में मौजूद हैं, मैं समझती हूँ उन्हीं का यह काम होगा.

गोपाल:

(और भी ताज्जुब से) क्या तुम उन्हें जानती हो?

औरत:

मैं तो उनका नाम नहीं जानती पर मेरा भाई अवश्य उन्हें पहिचानता था, अफसोस कि इस बार बेचारा किसी दूसरी जगह कैद कर दिया गया नहीं तो .

.

.

.

इतना कहते - कहते उस औरत की आँखें पुनः डबडबा आई पर कोशिश करके उसने अपने को सम्हाला और कहने लगी औरत:

अपने भाई के साथ आते - जाते मैंने इतना समझ लिया था कि यह बाग उस जगह से ज्यादा दूर नहीं

अस्तु पहिली बार मैंने एक पत्र में यह लिख कर कि ' मैं चक्रव्यूह में कैद हूँ पानी में बहा दिया था कि शायद किसी के हाथ लग जाय, अब मालूम नहीं कि वह चीठी किसी को मिली या नहीं, गोपाल:

हाँ, मुझे वह पुर्जा मिला था, मगर कोई निश्चय न होने के कारण मैं कुछ कर न सका लेकिन कुछ दिन बाद तुम पुनः दिखाई पड़ी और एक दूसरी चीठी छोड़ गईं.

औरत:

जी हाँ, यह ठीक है, मेरे साथ मेरा भाई भी गिरफ्तार कर लिया गया पर न - जाने क्यों कुछ दिन के वास्ते वह पुनः यहाँ पहुँचा दिया गया और उस समय उसने फिर एक उद्योग यहाँ से निकलने का किया.

इस बार भी पुनः उसी बाग तक पहुँच हम लोग फिर पकड़ लिए गए पर इस दफे इतना मौका मिल गया कि वह चीठी लिखकर छोड़ती आ सकूं.

मगर इस दफे मेरा भाई किसी दूसरी जगह भेज दिया गया है और तब से मैं अकेली ही यहाँ पड़ी मुसीबत की घड़िया काट रही हूँ, अब तक मैं समझ रही थी कि मेरा कोई भी सन्देश ठिकाने नहीं पहुँचा पर आज आपके आने से जान पड़ा कि ईश्वर को मेरी हालत पर दया आई और आपको मेरा पता लग गया.

गोपाल:

हाँ मुझे दोनों ही चिठियाँ मिली थी. पहिली चीठी पर तो मुझे पूरा विश्वास न हुआ पर दूसरी जब पाई तब शक हुआ और आखिर तुम्हें खोजने निकला.

पर एक बात का सन्देह मुझे रह जाता है, तुमने कहा कि दूसरी बार जब तुम अपने भाई के साथ यहां से निकली तो तिलिस्मी बाग में फिर गिरफ्तार कर ली गई, पर मुझे तो यह मालूम हुआ कि तुम आप ही आप वहाँ से भाग गई और फिर नजर न आई.

औरत:

यह आपको किसने कहा?

उस समय क्या आपने किसी को मेरा पता लगाने भेजा था?

गोपाल:

हाँ, तुम्हें दुबारा देखते ही मैंने पहिचान लिया और अपने एक दोस्त को पता लगाने के लिए भेजा पर उसकी जुबानी सुना गया कि तुम तिलिस्म के अन्दर गायब हो गई.

औरत:

(अफसोस के साथ) ओह तब तो मुझे बहुत बुरा धोखा हुआ.

किसी को अपना पीछा करते देख मैं समझी कि मेरे दुश्मनों ने ही फिर मुझे देख लिया और इसीलिए और भागी मगर कुछ ही दूर जाते - जाते पकड़ ली गई.

अगर मुझे मालूम होता कि वह आप ही का बाग था जहाँ पर मैं पहुंच गई थी अथवा यही जान जाती कि आपने ही किसी को मेरी खबर लेने भेजा है तो काहे को भागती या क्यों फिर इस कैद में ही पड़ती.

गोपाल:

तुम जब वहाँ से भागीं तो फिर क्या हुआ?

औरत:

थोड़ी दूर जाने के बाद ही पुनः दुश्मन के हाथ पड़ गई और फिर यहाँ पहुँचा दी गई जैसा कि मैंने आपसे कहा.

मेरा भाई भी पकड़ा जाकर किसी दूसरी जगह बन्द कर दिया गया क्योंकि उस दिन के बाद से फिर मैंने उसकी शक्ल नहीं देखी.

गोपाल:

तुम उन लोगों को पहिचान सकती हो जिन्होंने मेरे बाग से भागते समय तुम्हें पकड़ा था.

औरत:

जी हाँ, नाम यद्यपि नहीं जानती पर सूरत देखकर जरूर पहिचान लूँगी.

गोपाल:

अच्छी बात है, उसका बन्दोबस्त किया जायगा.

मगर अब चलना चाहिए, ज्यादा देर करना मुनासिब नहीं.

तुम्हें मेरे साथ चलने में अब तो कोई आपत्ति नहीं है?

औरत:

(हाथ जोड़कर) जी कोई भी नहीं, जहाँ आपकी आज्ञा हो मैं बेधड़क चलने को तैयार हूँ पर एक प्रार्थना मेरी जरूर थी.

गोपाल:

सो क्या?

औरत:

आपने जब यहाँ तक आने का कष्ट उठाया है तो एक बार मेरे भाई का भी कुछ पता लगाने की चेष्ठा करें, न - जाने दुबारा कब आपका आना इधर हो, या नहीं भी हो.

उस अवस्था में वह बेचारा यहाँ ही पड़ा - पड़ा जिन्दगी की घड़ियाँ गिना करेगा.

गोपाल:

तुम इस तरफ से निश्चिन्त रहो, मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारी तरह तुम्हारे भाई को भी यहाँ से छुड़ाऊँगा, अगर वह इस तिलिस्म में होगा, लेकिन आज वह काम नहीं हो सकता क्योंकि यहाँ से लौटने का रास्ता बहुत ही बीहड़ और खतरनाक है और कम - से - कम तीन घण्टे इस जगह से बाहर जाने में लगेंगे, तथा इस वक्त संध्या होने में भी ज्यादा विलम्ब नहीं है.

औरत:

जैसी आपकी आज्ञा हो मैं करने को तैयार हूँ, पर यह सुन मुझे ताज्जुब हुआ कि यहाँ से जाने का रास्ता तीन घण्टे का समय लेगा.

मुझे जब मेरा भाई छुड़ा कर ले गया था तो मुश्किल से आध घण्टे में हम लोग आपके तिलिस्मी बाग में पहुँच गए थे.

अगर आप वहाँ ही जाना चाहते हैं और किसी दूसरी जगह नहीं तो वह स्थान यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है.

गोपाल:

आधे घण्टे में मेरे तिलिस्मी बाग में पहुँच गई थी! नहीं ऐसा नहीं हो सकता, मुझे वहाँ से यहाँ आने में कई घण्टे लग गए और मैं सुबह का चला होने पर भी धूप और गर्मी से

परेशान इस वक्त यहाँ पहुंचा था.

अवश्य ही पहिले - पहल आने के कारण ऐसा हुआ और अब कुछ जल्दी आ - जा सकूँगा पर तब भी किसी हालत में दो - ढाई घण्टे से कम का रास्ता तो नहीं ही होगा.

औरत:

जो आप कहते हैं ठीक ही होगा पर मुझे ताज्जुब जरूर है, क्या बताऊँ मेरा भाई यहाँ नहीं है नहीं तो वह हम लोगों को जल्दी पहुँचा दे सकता था.

गोपाल:

(आश्चर्य करते हुए) तुम कुछ बता सकती हो कि किस रास्ते से तुम्हें तुम्हारा भाई ले गया था?

औरत:

हॉ - हाँ, क्योंकि वह रास्ता मुझे बखूबी याद है.

इस बाग के दक्खिन के कोने में एक बहुत बड़ा हाथी सुफेद पत्थर का बना हुआ है जिसके पेट से हम लोगों ने रास्ता निकाला था.

आगे जाने पर एक सुरंग मिली थी जिसकी राह एक बाबली से होते हुए एक नहर में निकले थे और वहाँ से उस बाग में पहुंचे थे जिसे आप तिलिस्मी बाग कहते हैं.

रास्ते में आधा घण्टा भी नहीं लगा होगा.

गोपाल:

जान पड़ता है वह कोई दूसरा और सहज रास्ता है, अच्छा ठहरो मैं देखता हूँ, इतना कह गोपालसिंह ने पुनः अपनी जेब से वह तिलिस्मी किताब निकाली जिसे वे अब से पहिले भी पड़ चुके थे और जो वास्तव में वही थी जो भैयाराजा से उन्हें मिली थी और जिसमें अजायबघर का भेद लिखा था. इसी किताब की मदद से अजायबघर से होते हुए आज वे यहाँ तक आए थे मगर यह हम नहीं कह सकते कि उनके यकायक इस विचित्र औरत की खोज में इस तरह चल पड़ने का क्या कारण था.

सम्भव है कि इसमें भी कोई रहस्य हो, खैर जो कुछ होगा समय पर मालूम हो ही जायगा.

गोपालसिंह ने वह तिलिस्मी किताब खोली और उलट - पुलट कर देखने लगे, इधर बह औरत चुपचाप उनके सामने खड़ी विचित्र निगाहों से उनकी तरफ देखती रही.

बहुत देर तक उस किताब को देखने बाद गोपालसिंह ने कहा, " हाँ, यहाँ से जाने की एक दूसरी राह भी है जो जल्दी और क़म फेर से हमें पहुँचाबेगी पर अफसोस कि इस किताब में उसका पूरा हाल लिखा हुआ नहीं है.

मगर ताज्जुब की बात है, तिलिस्मी मामलों में बिना पूरी जानकारी रक्खे कोई उस राह से आ - जा नहीं सकता और तुम कहती हो कि तुम्हारा भाई तुम्हें लेकर उसी राह से गया था! " औरत:

जी हाँ, मैं बिल्कुल सही कहती हूँ, यह क्या कोई तिलिस्मी किताब है?

गोपाल:

हाँ, इस किताब में तिलिस्म में आने - जाने के रास्तों का हाल लिखा हुआ है और मैं इसी की मदद से यहाँ आया हूँ, उस औरत ने मन में कहा, " तब इसी किताब की मुझे जरूरत है और तब जहाँ वह खड़ी थी वहाँ से धीरे - धीरे बेमालूम तरीके से धसकती हुई वह कुछ बाईं तरफ को हटने लगी.

गोपालसिंह पुनः कुछ देर तक उलट - पलट कर किताब को देखते रहे.

इसके बाद यह किताब बन्द की और उस चौकी पर से उठने का इरादा किया जिस पर कि वे बैठे हुए थे मगर उस समय तक वह औरत धसकती हुई एक ऐसी जगह पहुँच गई जहाँ जमीन में क़मल का एक फूल पच्चीकारी के काम का बना हुआ था.

अभी गोपालसिंह उस चौकी पर से उठ ही रहे थे कि इस औरत ने अपना पैर बढ़ा कर उस कमल के फूल को जोर से दवा दिया और साथ ही फुर्ती से हाथ बढ़ा कर गोपालसिंह के हाथ से वह किताब भी ले ली.

बे ताज्जुब के साथ कुछ पूछने के लिए अपना मुँह खोल ही रहे थे कि यकायक वह चौकी जिस पर वे बैठे हुए थे अपनी जगह से उठी और एक तरफ को इस तरह टेढ़ी हो

गई कि वे किसी तरह सम्हल न सके और धड़ाम से उसी कुण्ड में जा पड़े जो उनके पीछे बना हुआ था उनके मुँह से ताज्जुब और घबराहट की एक आवाज निकली और वे अपने को बचाने के लिए हाथ - पाँब मारने लगे.

पर उस औरत ने इस तरफ कुछ खयाल न किया और खुशी - भरी निगाहों से उस किताब को देखती हुई तेजी के साथ सीड़ियाँ पार कर उस बारहदरी के नीचे उतर आई यहाँ भी वह न रुक्की बल्कि दौड़ती हुई बाग के दक्षिन वाले कोने की तरफ बढ़ी.

पचास कदम से ज्यादा न गई होगी कि पेड़ों की झुरमुट से निकल कर एक आदमी जिसका चेहरा नकाब से ढका हुआ था उसके सामने आ खड़ा हुआ और बोला, “ टेम गिन चाप ", औरत ने जबाब दिया, " नेह जिसे सुनते ही प्रसन्न होकर उस आदमी ने हाथ बढ़ाया और औरत ने वह किताब उसके हाथ पर रख दी, उसने उलट - पुलट कर दो - तीन बार देखा और तब कहा, ' इशा ' " इसके बाद उसने उस औरत का हाथ थाम लिया और दोनों फिर उस झाड़ी में घुस गए.

१.

टेम गित चाप- मिली वह ताली?

२.

नेह - हॉ.

३.

इशा - वही तो है.

आठवां व्यान।

संध्या होने में कुछ ही देर बाकी है.

अजायबघर के चारों तरफ वाला जंगल जिसमें यों भी बहुत मुसाफिरों की आवाजाही कभी नहीं रहती इस समय सन्नाटे के कारण सांय - सांय कर रहा है और थोड़ी - सी

चिड़ियाएँ जो अपने घोंसलों की तरफ उड़ी जा रही हैं अथवा उनके पास मंडरा रही हैं जिस समय शान्त हो जाएँगी तो एकदम ही निस्तब्ध हो जायगा.

पश्चिम की ओर से उठने वाले बादलों की मदद पाकर अंधियारी मामूली से कहीं ज्यादा तेजी के साथ झुकी आ रही है और रंग - ढंग बता रहे हैं कि दो ही चार घड़ी के बाद न - केवल पूरा अंधकार यहाँ छा जाएगा बल्कि पानी भी आ जाय तो ताज्जुब नहीं.

ऐसे समय में हम एक आदमी को अजायबघर के पूरब बाले दालान में धीरे - धीरे टहलते हुए देख रहे हैं.

इस आदमी का समूचा बदन का कोई भी हिस्सा खाली नहीं है, यहाँ तक कि हाथ की उँगलियाँ और पैर के जूते तक भी पूरी तरह से दिखाई नहीं पड़ते और चेहरे पर भी एक काली नकाब पड़ी रहने के कारण इतना भी पता नहीं लगता कि यह आदमी मर्द है या औरत.

इसके रंग - ढंग और आकृति से जो कुछ पता लग सकता है वह सिर्फ इतना ही कि यह किसी के इन्तजार में इस समय खड़ा है क्योंकि रह - रहकर निगाहें सामने के मैदान और जंगल की तरफ उठ रही हैं जिधर यह गौर से देखता पर किसी तरह की कोई आह्ट न पा फिर टहलने लग जाता है.

धीरे - धीरे काफी समय बीत गया और अँधेरा पूरी तरह से छा गया.

बादल भी जो अभी तक केवल पश्चिम की दिशा में छाए हुए थे अब पूरी तरह से समूचे आसमान को घेर कर फैल गए और पानी पड़ने का रंग नजर आने लगा.

सुनसान जंगल इस अंधेरे में और भी डरावना मालूम होने लगा और उस दालान में भी अंधकार की काली चादर फैलने लगी.

यह देख वह आदमी कुछ बेचैन हुआ और एक बार बहुत देर तक सामने की तरफ देखने बाद बोला, “ बहुत देर हो गई, अब उसके आने की आशा व्यर्थ है.

" कुछ देर तक वह चुपचाप सोचता रहा, इसके बाद हटा और बगल की कोठरी पार करता हुआ उस तरफ पहुँचा जो अयाजबघर का सदर हिस्सा था और जिधर सीढ़ियाँ पड़ती थीं.

सीढ़ियों पर भी वह कुछ देर तक इस उम्मीद में खड़ा रहा कि शायद जिसकी राह देख रहा है वह अब भी नजर आ जाय पर कोई आता दिखाई न पड़ा अस्तु एक बार धीरे से- " अब कोई उम्मीद नहीं कहता हुआ वह सीढ़ियाँ उतरने लगा.

मगर अभी दो ही तीन सीढ़ियाँ उतरा होगा कि यकायक रुक गया.

उसके कानों में किसी तरह की आहट पड़ी थी.

वह गौर से सुनने लगा.

मालूम हुआ कि कुछ आदमी तेजी के साथ आ रहे हैं जिनके पैरों के नीचे दबने वाले पत्तों की आवाज उठ रही थी.

उसके मुंह से निकला, “ आ गई, मगर जान पड़ता है कि साथ में और भी कोई है.

" वह घूमा और पुनः कोठरी में से होता हुआ उसी दालान में जा पहुंचा जहाँ अब तक टहल रहा था.

कुछ ही देर बीती होगी कि जंगल से निकल कर आते हुए तीन आदमियों पर निगाह पड़ी.

अँधेरा इस समय तक इतना बढ़ गया था कि इतनी दूर से सिवाय इसके और कुछ भी पता नहीं लगता कि ये तीनों अपना बदन और चेहरा काली पोशाकों से डाँके हुए हैं.

वात - की - बात में ये आने वाले अजायबघर के पास पहुंच गए जहाँ पहुँच एक ने सीटी बजाई.

इशारा सुनते ही इस आदमी ने जो इतनी देर से यहाँ जरूर इन्हीं लोगों के आने की राह देख रहा था जबाब में सीटी बजाई और तब स्वयं भी आगे चलकर उस बाहरी हिस्से में पहुँच गया जहाँ ये नये आए हुए तीनों आदमी पहुंच चुके थे.

इस आदमी ने कहा, " तुमने आने में बहुत ज्यादा देर कर दी! " जबाब में एक ने कहा, " जी हाँ, कुछ ऐसे तरदुद में पड़ गई कि देर हो गई.

" इसने कहा, “ यह रुकना मुनासिब नहीं, चलो ठिकाने पर पहुँच कर पूछूंगा, कि वह तरदुद क्या था.

" आगे - आगे वह और पीछे - पीछे बाकी के तीनों आदमी अजायबघर की सीढ़ियाँ उतरे और पुनः घोर जंगल में घुसे पर इस बार उधर नहीं चले जिधर से ये तीनों आने वाले आए थे बल्कि उधर को रवाना हुए जिधर लोहगड़ी की इमारत पड़ती थी.

" पाठकों को मालूम है कि अजायबघर से लोहगढ़ी की इमारत बहुत दूर नहीं है अस्तु जल्दी ही ये लोग उस टीले के नीचे पहुँच गए जिस पर वह इमारत बनी हुई थी.

यहाँ पहुँच कर भी वे लोग रुके नहीं बल्कि तेजी के साथ चलते हुए टीले के ऊपर पहुँच गए.

मामूली ढंग से उसका सदर दरवाजा खोला गया और सब कोई इमारत के अन्दर हो गए.

अभी तक ये लोग बराबर अन्धेरे में ही चल रहे थे पर अब उस आदमी ने सामान निकाल कर रोशनी की जिसकी मदद से बाकी रास्ता तय करके ये लोग, भीतर काले लोहे के बंगले में जा पहुंचे और उसके दालान में पहुँच कर ही इन लोगों ने दम लिया.

लबादे और भारी पोशाकें उतार कर रख दी गई और हल्के होकर ये लोग जमीन पर बैठ गए.

अब हमें मालूम हुआ कि जो आदमी पहिले से अजायबघर में मौजूद था उसके सिवाय बाकी नई आने वाली तीनों ही औरतें हैं.

मगर इस जगह की हलकी रोशनी पाठकों को इनका रूप - रंग देखने और पहिचानने का मौका नहीं देगी अस्तु हम इनका परिचय दे देना मुनासिब समझते हैं क्योंकि ये तीनों ही हमारे पाठकों की जानी - पहिचानी और भूतनाथ की जीवनी के आखिर दिनों में उससे बहुत गहरी दिलचस्पी रखने वाली औरते हैं जिनके नाम न जानने से आगे की बातचीत का मजा न मिलेगा.

वह देखिए जिनकी धानी रंग की महीन साड़ी में से उसके शरीर का गुलाबी रंग फूटा पड़ता है और मचलकर बातें कर रही है वह नन्हो है, उसके बगल में बैठी अपनी कटीली आँखों को तेजी के साथ चारों तरफ घुमा कर इस अंधेरे में भी कुछ देख निकालने की कोशिश करने वाली गौहर है, और इन दोनों के बीच में बैठी और कुछ सहमी - सी नजर आती हुई हेलासिंह की लड़की मुन्दर है.

इनके सामने वाले मर्द को भी पाठक पीछे के किसी बयान में देख चुके हैं और यह वही है जिसे हम रामचन्द्र के नाम से पुकार आये हैं, पर पाठकों को यह भी याद होगा कि हमने उनके सुभीते के लिए इसका यह बनाबटी नाम रख दिया था, असली नाम इसका क्या है यह अभी तक मालूम नहीं हुआ, सम्भव है कि इस समय की बातचीत से पता लग जाय.

खैर आइये पहिले इनकी बातों को गौर से सुने क्योंकि वे हमारे लिए बहुत जरूरी हैं.

नन्हों:

उम्मीद है कि मेरी इन दोनों साथिनों को आपने पहिचान लिया होगा?

रामचन्द्र:

इन बीबी गौहर को भला में कैसे नहीं पहिचानूंगा पर इनके साथ वाली को मैं नहीं पहिचान सका.

शायद कह सकता हूँ कि आज के पहिले कभी मुझको इनके देखने का मौका नहीं मिला.

नन्हों:

ये हेलासिंह की लड़की मुन्दर हैं, हेलासिंह को तो आप जानते ही होंगे?

राम; बहुत अच्छी तरह से! तब तो ये हमीं लोगों में से हैं, क्या ये ऐयारी भी जानती हैं?

नन्हों:

नहीं, मगर इनकी अक्ल बड़े - बड़े ऐयारों के कान काटती है.

इन्होंने बड़े मौके का एक काम किया है और इसी से मेरी सखी गौहर ने इन्हें अपने साथ ही नहीं कर लिया है बल्कि मुझको भी इनकी मदद लेने पर मजबूर किया है.

इनसे मुझे किसी तरह का कोई पर्दा नहीं है अस्तु आप बेखटके इनके सामने सब तरह की बातचीत कर सकते हैं.

राम:

यह तो मैं तभी समझ गया जब इनको लेकर तुम यहाँ आईं.

जरूर तुम्हारी तरह मैं भी इन पर विश्वास करूँगा मगर यह आशा रखूंगा कि ये हम लोगों का भेद धोखे में भी किसी पर जाहिर न करेंगी.

नन्हों:

उस तरफ से आप बिल्कुल निश्चिन्त रहिये, इसके लिए मैं पहिले ही इनसे कसमें खिला चुकी हूँ और आपको इत्मीनान दिलाती हूँ कि इनकी जुबान से कभी कोई भी बात जाहिर न हो सकेगी.

राम:

खैर तो अब काम की बात होनी चाहिए, सबसे पहिले मैं तुमसे कुछ बातें पूछना चाहता हूँ, नन्हों:

बहुत अच्छा पूछिये, मुझे भी कई ऐसी बातें दरियाफ्त करनी हैं जिनका ठीक - ठीक पता आपसे ही लगेगा और जिन्हें मैं बाद में पूछूंगी.

राम ०:

ठीक है, तुम भी उन्हें पूछकर अपना खुटका मिटा लेना! अच्छा पहिली बात तो मैं जानना चाहता हूँ कि उन विचित्र चीजों के होने का पता तुम्हें क्योंकर लगा जिन्होंने भूतनाथ को उस दिन इतना परेशान कर दिया?

नन्हों:

(गौहर और मुन्दर की तरफ बताकर) इन्हीं दोनों सखियों की बदौलत.

कुछ उन चीजों को छोड़कर जिनका हाल आप ही ने कहा था बाकी की कुल चीजें महाराज शिवदत्त और जमानिया के सेठ चंचलदास के घर में मौजूद थीं पर उनके होने का मुझे गुमान तक न था.

राम:

(ताज्जुब से गौहर और मुन्दर की तरफ देखकर) मगर आप लोगों को इन चीजों का पता क्योंकर लगा?

जहाँ तक मैं समझता हूँ आपमें से किसी को भूतनाथ के इस भेद से कोई सम्बन्ध नहीं है.

नन्हों:

मैं जब पूरा हाल आपसे बयान करूँगी तब आपको सब कुछ मालूम हो जाएगा.

(गौहर की तरफ देखकर) क्यों सखी, मैं सब हाल इनसे कह दूँ?

गौहर:

जब आप अपनी बातों को बिना छिपाये हम लोगों के सामने कह रहे हैं तो फिर हमारी बातें जाहिर कर देने में क्या हर्ज है?

नन्हों:

बस तो ठीक है, अच्छा सुनिये - यह तो आपको मालूम ही होगा कि (गौहर की तरफ बताकर) इनकी माँ गुजर गई हैं.

माँ का गम इन्हें बहुत ज्यादे हुआ और ये उस सदमे से दीबानी - सी हो गई.

इनकी यह हालत देख हकीमों की राय से इनके बाप ने इन्हें आजाद कर दिया तथा एक ऐयार और एक ऐयारा को इनके साथ करके जहाँ चाहे घूमने की इजाजत दे दी.

इन्हें ऐयारी सीखने का शौक हुआ और इन्होंने अपने दोनों साथियों की मदद से उसे सीखा भी.

उसी मौके पर एक दफे इन्हें भूतनाथ ने गिरफ्तार करके अपनी लामाघाटी में बन्द कर दिया जहाँ उसकी रखेल रामदेई से इनकी मुलाकात हुई.

उससे बातें करने पर इन्हें एक विचित्र बात यह मालूम हुई कि रामदेई को भूतनाथ ने बहुत धोखे में डाल रक्खा हैं अर्थात् अपना असल भेद उसे कुछ भी मालूम नहीं होने दिया यहाँ तक कि नाम भी उस पर प्रकट नहीं किया है.

बात यह थी. कि रामदेई पर सबसे पहिले जैपालसिंह की निगाह पड़ी थी जो उसे उसके घर से उड़ा लाया, मगर बीच ही में भूतनाथ ने उसी की सूरत बन उसे गायब कर दिया और तब से वह भूतनाथ के पास है.

आप जानते ही होंगे कि जैपालसिंह का असली नाम रघुवरसिंह है.

भूतनाथ ने अपने को रघुबरसिंह के ही नाम से रामदेई पर जाहिर किया और वह अब तक इसे गदाधरसिंह न जानकर रघुबरसिंह ही समझती चली आई है.

यह विचित्र बात जब इन्हें मालूम हुई तो ये बड़ी प्रसन्न हुई क्योंकि इन्हें भूतनाथ का यह एक ऐसा भेद मालूम हो गया था कि जिससे बहुत - कुछ काम निकाला जा सकता था.

इन्होंने अपनी चलती - फिरती बातों के जोर से रामदेई से दोस्ती कर ली और उसने इन्हें भूतनाथ की कैद से छुड़ा दिया.

इनका कुछ सम्बन्ध महाराज शिवदत्त से भी था जो अपना कोई काम भूतनाथ के जरिये निकाला चाहता था लेकिन उस पर कोई वश न होने के कारण लाचार था.

भूतनाथ के इस जोर पर इन्हें वह काम हो जाने की आशा बँधी, अस्तु ये तब शिवदत्त से मिलीं और उससे यह बात कही जिस पर उसने भुवनमोहिनी और अहिल्या तथा मालती की वह पुरानी कथा इनसे संक्षेप में बयान की और वे चीजें भी दिखाई जो इस सिलसिले में उसके पास मौजूद थीं.

भूतनाथ को दिखाई गई चीजों में से कई तो शिवदत्त के जरिये हम लोगों को मिलीं मगर खैर उसका हाल पीछे कहूँगी.

शिवदत्त ने सब पिछला हाल इनसे कहकर अपना वह काम भूतनाथ के जरिये करा लेने का भार इनके ऊपर सौंपा.

इन्होंने अभी मुझे बताया नहीं कि वह काम क्या था.

.

.

राम:

(मुस्कुरा कर) पर मैं बता सकता हूँ कि क्या काम था! गौहर:

(ताज्जुब से सिर हिलाकर) नहीं, नहीं आप क्योंकर बता सकते हैं, सिवाय महाराज शिवदत्त के और मेरे किसी तीसरे कान में आज तक वह बात गई ही नहीं! राम:

(हंस कर) जब वह इतनी गुप्त बात है तो मैं सबके सामने न कह कर तुम्हारे कान में कहता हूँ, सुनकर तुम आप ही कह दोगी कि मैं ठीक कहता हूँ या गलत.

गौहर ने यह सुनकर कहा, " नहीं, आप किसी तरह भी उस बात को नहीं जान सकते! " मगर अपना कान रामचन्द्र की तरफ जरूर बड़ा दिया जिसने उसकी तरफ झुक कर बहुत धीरे - से कहा, " शिवदत्त ने भूतनाथ के कब्जे से शिबगड़ी की ताली लेने का काम तुम्हारे सुपुर्द किया था.

" यह एक ऐसी बात थी कि सुनते ही गौहर की यह हालत हो गई कि काटो तो बदन से लहू न निकले.

वास्तव में यही काम शिवदत्त ने उसके सुपुर्द किया था और इसी काम के लिए कितने ही महीने से वह भूतनाथ के पीछे पड़ी हुई थी.

मगर इस भेद को उसने अपने दिल की इतनी गहरी तह के भीतर छिपाया हुआ था कि औरों को तो क्या अपनी सखी गिल्लन तक को उसने यह बात नहीं कही थी.

उसका इरादा नन्हों, मुन्दर, दारोगा, जैपाल आदि सभों को बतोला देकर यह काम कर डालने का था क्योंकि बह जानती थी कि ये लोग भी उसी शिबगड़ी की ताली के लिए ही भूतनाथ के पीछे पड़े हुए हैं और इसीलिए इन लोगों को धोखा दे खुद ताली उड़ा लेने का वह मनसूबा बाँधे हुए थी.

वह इस बात को भी खूब समझती थी कि अगर इन लोगों को उसका यह गुप्त इरादा मालूम हो जाएगा तो फिर कभी ये उसे अपना साथी नहीं बनावेंगे और उसे दूध की मक्खी की तरह न केवल निकाल ही बाहर करेंगे बल्कि और तरह से भी तकलीफ पहुँचावें तो ताज्जुब नहीं.

अस्तु इस समय रामचन्द्र के मुँह से अपने दिल का वह गुप्त भेद सुन वह यहाँ तक घबड़ा गई कि उसके होश - हवास गायब हो गए.

उस का चेहरा एकदम पीला हो गया और उसे विश्वास हो गया कि अब काम पूरा उतरना तो दूर रहा वह खुद भी इन लोगों के पंजे से छूट न सकेगी बल्कि ताज्जुब नहीं कि इसी समय गिरफ्तार कर कहीं कैद कर दी जाए और कौन ठिकाना कि इसी इरादे से उसे यहाँ लाया भी गया हो! यह विचार आते ही उसका दिल धड़कने लगा पर उसने बहुत ही

कोशिश करके अपने को सम्हाला और चेहरे से अपने दिल का हाल जाहिर न होने देने की कोशिश करने लगी.

आखिर धीरे - धीरे उसने अपने होश - हवास ठिकाने किए और बनावटी हँसी हँसकर कहा, " वाह - वाह, आप भी क्या बे - सिर - पैर की बात कह रहे हैं?

भला यह भी कभी मुमकिन हो सकता है! " रामचन्द्र ने यह सुनकर हँस कर जवाब दिया, “ इसका तो तुम्हारा चेहरा ही गवाही दे रहा है.

पर तुम निश्चिन्त रहो, मेरी जुबान से न तो कोई तुम्हारा यह भेद जान सकेगा और न कभी कोई तकलीफ ही तुम्हें मेरी तरफ से पहुँचेगी.

(नन्हों की तरफ घूमकर) हाँ तो तुम क्या कह रही थीं! " नन्हों इस समय बड़े गौर से गौहर की तरफ देख रही थी और उसे विश्वास हो गया कि रामचन्द्र ने कोई बहुत ही गुप्त भेद की बात उससे कही है मगर उसने यह भी सोच लिया कि इस समय उसके बारे में कुछ पूछने का मौका नहीं है.

रामचन्द्र की बात सुन उसने एक भेद की निगाह उस पर डाली जिसके जवाब में उसने भी विचित्र मुद्रा से कुछ इशारा किया जिसे समझ वह बोली, " हाँ मैं यह कह रही थी कि ये महाराज शिवदत्त के किसी काम को पूरा करने के लिए भूतनाथ पर अपना प्रभाव डालना चाहती थीं और उसके लिए इन्हें यही मुनासिब जंचा कि हम लोगों से दोस्ती करें, इस काम में इन्होंने रामदेई की मदद ली और उसके हाथ की सिफारिशी चीठी लेकर मुझसे मिलीं.

साथ ही साथ मेरा भी एक इतना बड़ा काम इन्होंने कर दिया कि जिसके सबब से झख मार कर मुझे इनसे दोस्ती का बर्ताव करना पड़ा, पर क्या किया जाए, मेरी किस्मत फूट चुकी थी और इनकी मेहनत का कोई फल न निकला.

" रामचन्द्र:

तुम्हारा मतलब शायद उसी कैदी से है?

नन्हों:

जी हाँ, वह इतने दिनों से बराबर महाराज शिवदत्त की जद में ही था जो न - जाने किस विचार से उसे अपने यहाँ बन्द किए हुए थे.

पर गौहर की सिफारिश से उसे मेरे लिए छोड़ देना उन्होंने मंजूर कर लिया बल्कि छोड़ कर बेगम के ' घर पहुँचवा भी दिया, पर अफसोस कम्बख्त भूतनाथ के आदमी उसी दिन चोरी से बेगम के घर में घुस, उसे निकाल ले गए और अन्त में उन्होंने उसकी जान ही लेकर छोड़ी.

इतना कहते - कहते नन्हों की आँखें डबडबा आई और गला बन्द हो गया.

कुछ देर तक वह चुप रही, इसके बाद बहुत कोशिश से अपने को सम्हाल फिर कहने लगी नन्हों:

अपने काम के लिए तब ये मुन्दर से मिलीं.

मुन्दर के पिता हेलासिंह का उस गुप्त क़मेटी से जो सम्बन्ध था वह पूरा हाल तथा एक कोई उससे भी गुप्त भेद, भूतनाथ को मालूम हो गया था और वह उनको तरह - तरह की धमकी देकर अपने चुप रहने की कीमत के तौर पर पचास हजार रुपया और लोहगड़ी की ताली उनसे माँग रहा था जिसके न पाने पर वह सब हाल गोपालसिंह से कह देगा यह धमकी भी साथ में थी अस्तु इन मुन्दर को भी भूतनाथ से बदला लेना था.

इन्होंने जब भुवनमोहिनी वाला कुछ हाल गौहर से सुना तो बाकी हाल अपने पिता से जान कर सब मामला अच्छी तरह समझ लिया और तब अपनी कारीगरी शुरु की.

चंचलदास के भतीजे श्री विलास पर इन्होंने हाथ फेरा और उससे भुवनमोहिनी का बहुत - सा हाल सिर्फ नहीं जान लिया बल्कि उसके पास उस सम्बन्ध में जो कुछ कागज - पत्र और सामान थे उन्हें भी हथिया लिया.

जो कुछ सामान हम लोगों को मिला उसका एक खासा हिस्सा इन्हीं की कारीगरी का नमूना है.

इस प्रकार हम तीनों आदमियों ने वह सब सामान जुटा लिया जो भूतनाथ को दिखाया गया था, और अब उसको डरा धमका कर अपना काम सिद्ध करने की बात सोची जाने लगी.

इसी बीच महाराज के भेजे हुए दो ऐयार गोपाल और श्यामसुन्दर आ पहुंचे और उनसे मालूम हुआ कि आप भी यहीं विराज रहे हैं.

उस समय से आगे की सब कार्रवाई आपकी मदद और राय से ही की जा रही है और इसके बाद जो कुछ हुआ आपको मालूम ही है.

जिस तरह वह सब नाटक किया गया और उन सामानों को देख कर भूतनाथ जैसा घबराया यह आपके शागिर्दो ने आप से कहा ही होगा! राम:

ठीक है, तो कहना चाहिए कि तुम्हारी इन दोनों साथिनों का बहुत बड़ा अहसान हम पर और हमारे महाराज पर है. (गौहर और मुन्दर की तरफ देख कर) हमारे महाराज को जब ये बातें मालूम होंगी तो वे बहुत ही खुश होंगे! गौहर और मुन्दर ने यह सुन कर आपस में एक - दूसरे की तरफ देख मुस्कुरा दिया और रामचन्द्र पुनः नन्हों से बोला, " अब मैं कुछ बातें उन चीजों के बारे में जानना चाहता हूँ जो उस दिन भूतनाथ को दिखाई गई थीं और इसके लिए बेहतर यही होगा कि हम लोग वहीं चलें जहाँ वह सब सामान रखा हुआ है.

वहाँ उन चीजों के सामने ही वे बातें समझने में आसानी होगी.

" नन्हों:

अच्छी बात है, तब शायद वह सामान यहां ही कहीं रक्खा गया है?

राम:

हाँ, यहाँ पास ही में मगर इस इमारत के निचले हिस्से में है और हमें वहीं चलना पड़ेगा.

नन्हों:

अच्छी बात है तो वहीं चलिए, मगर क्या कोई तेज रोशनी का इन्तजाम नहीं हो सकता?

यह लालटेन इतनी क़म रोशनी देती है कि इससे साफ कुछ नहीं दिखाई पड़ता.

" सो भी हो जायगा " कहता हुआ रामचन्द्र उठ खड़ा हुआ और तीनों औरतें भी खड़ी हो गईं.

किसी जगह से खोज कर रामचन्द्र ने एक दूसरी लालटेन भी निकाल कर बाली जिसकी दूर तक फैलने वाली तेज रोशनी ने वहाँ के अन्धकार को एकदम दूर कर दिया और अब वहाँ की हर एक चीज साफ - साफ नजर आने लगी.

नन्हों को इस स्थान तथा अन्दर के तिलिस्म का भी कुछ हाल मालूम था और वह यहाँ कई दफे आ - जा चुकी थी और मुन्दर तथा गौहर भी इस लोहगड़ी के बारे में कुछ जानकारी रखती थीं तथा पहले भी यहां आ - जा चुकी थीं अस्तु उनको भी यहाँ का सामान कुछ आश्चर्य में नहीं डाल सकता था, अतएव ये तीनों ही चुपचाप रामचन्द्र के पीछे - पीछे रवाना हो गईं जो लालटेन बालने के बाद एक क्षण भी न रुका और उस दालान के बगल से होता हुआ एक कोठरी में घुसा.

हमारे पाठक प्रभाकरसिंह के साथ इस इमारत में कुछ समय तक रह चुके हैं और इसलिए सम्भवतः उन्हें याद होगा कि इसके बाहरी हिस्से में चारों तरफ चार दालान तथा उनके कोनों में चार कोठरियाँ थीं और बीच में एक बड़ा कमरा था.

उन कोठरियों में क्या - क्या चीजें थीं यह उन्हें याद होगा अस्तु उसके फिर से यहाँ बयान करने की जरूरत नहीं है.

तीनों औरतों को साथ लिए रामचन्द्र सीधे उस कोठरी में पहुँचा जिसके अन्दर तोप, बारुद, गोले तथा इस प्रकार की अन्य चीजें भरी हुई थीं.

इस कोठरी के बीचोबीच में एक और तहखाना होने का हाल हम लिख आए हैं.

इस समय रामचन्द्र सभों को लिए हुए उसी तहखाने में उतर गया.

पतली - पतली दस - बारह सीढ़ियाँ उतर जाने के बाद फिर एक कोठरी मिली जो पहली कोठरी से नाम में शायद कुछ छोटी ही होगी.

इसी कोठरी में इस समय वह सब सामान पड़ा हुआ था जिसने भूतनाथ को बेचैन कर दिया था और जिसका हाल ऊपर लिखा जा चुका है.

१.

देखिए भूतनाथ पन्द्रवाँ भाग, नौवा बयान,

राम:

(आँख के इशारे से उसे रोककर) ठीक है और इसीलिए मैंने इन सब सामानों को इसी जगह लाकर रखना मुनासिब समझा.

इसे भूतनाथ के जीवनचरित्र की कोठरी कहना मुनासिब है.

अच्छा अब इन बातों को जाने दो, दो - चार बातें जो इन विचित्र चीजों के सम्बन्ध में पूछता हूँ बताओ और अब आगे की कार्रवाई सोचो कि क्या करना चाहिए और भूतनाथ के कब्जे से शिवगढ़ी की ताली क्योंकर प्राप्त करनी चाहिए! नन्हों:

बहुत अच्छा, आपको जो कुछ पूछना है पूछ लीजिए इसके बाद मुझे जो बातें दरियाफ्त करनी हैं उन्हें मैं पूछूंगी.

रामचन्द्र ने उस कटे हुए सिर की तरफ देख कर पूछना चाहा मगर यकायक उसकी निगाह मुन्दर और गौहर की तरफ जा पड़ी जिससे न - जाने कौन - सा खयाल उसके मन में पैदा हुआ कि वह रुक गया और अपनी बात बदल कर बोला, " हाँ, " एक बहुत जरूरी बात दरियाफ्त करना तो मैं भूल ही गया था! " नन्हो ने ताज्जुब से पूछा, " वह क्या?

" रामचन्द्र ने कहा, " गोपालसिंह के कब्जे से उनकी तिलिस्मी किताब निकाल लेने का तुमने महाराज के सामने बीड़ा उठाया था, उसका क्या हुआ?

" नन्हों के चेहरे पर यह सुनकर विचित्र तरह की मुस्कुराहट खेलने लगी जिसे देख रामचन्द्र ने कहा, " तुम्हारी प्रसन्नता कह रही है कि तुम्हें इस मामले में सफलता मिली है! जल्दी बताओ कि क्या मेरा खयाल ठीक है?

क्या वह काम हो गया?

" नन्हों:

जी हाँ.

राम:

(खुश होकर) वाह - वाह, यह तो तुमने बहुत बड़ी खुशखबरी सुनाई! क्या वह ताली मिल गई! नन्हों:

(हँसती हुई) जी हाँ.

राम:

(ताज्जुब और आग्रह से नन्हों का हाथ पकड़ कर) सो कैसे, सो कैसे, मुझे पूरा हाल सुनाओ.

नन्हों:

अच्छा - अच्छा मैं, सुनाए देती हूँ.

मेरा हाथ मत तोड़िए.

(जरा रुक कर) आपको इस सम्बन्ध में शुरु का किस्सा तो मालूम ही होगा.

राम::

केवल इतना ही कि तुम महल के अन्दर पहुँच गई हो और गोपालसिंह वह किताब कहाँ रखता है यह जानने की कोशिश कर रही हो.

नन्हों:

क्या उसके बाद का कोई हाल आपको मालूम नहीं हुआ?

यह तो बहुत दिन की बात है.

राम:

नहीं, इसके बाद का कुछ भी हाल मैं नहीं जानता.

तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि इधर कई दिनों से मैं एक दूसरे ही फेर में पड़ा हुआ था.

नन्हों:

बीच - बीच में अपने आदमी से सब हाल - चाल की खबर तो मैं बराबर भेजती ही रहती थी.

राम:

वह सब हाल मुझ तक पहुँचता तो था पर बहुत देरी से और बेसिलसिले मिलता था, मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी जुबानी सब हाल पूरा - पूरा सुनूँ.

नन्हों:

बहुत अच्छा तो मैं खुलासा ही कहती हूँ.

महल के अन्दर घुस जाने में मुझे कुछ भी तरदुद न हुआ क्योंकि वहाँ की पन्नीसों लौंडियों में मेरी जान पहिचान थी जिनमें से पांच - छ:

तो मुझे जान से बड़कर मानती थीं.

मैं जानकी नाम की एक लौंडी की बहिन के नाम से अपना परिचय देकर उन सभों में अच्छी तरह घुल - मिल गई और महल के अन्दर सब जगह मेरा जाना - आना होने लगा.

यद्यपि तरह - तरह के बहानों से मैं गोपालसिंह के कमरे में भी कई दफे गई पर इस बात का पता कुछ भी न लगा सकी कि वह तिलिस्मी किताब कहाँ रखी जाती है.

आखिर मैंने एक दूसरी तर्कीब की, मैंने सोचा कि गोपालसिंह को किसी तरह का धोखा दिए बिना काम सिद्ध न होगा.

वह धोखा क्या होगा यह भी मैंने सोच लिया और इस काम के लिए दारोगा साहब से मदद ली .

.

आप तो जानते हैं कि दारोगा साहब से मेरी गहरी जान - पहचान है.

राम::

बहुत अच्छी तरह जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि यह बात आज से नहीं बल्कि उस वक्त से है जबकि तुम बड़ी महारानी की सहेलियों में से थीं और दारोगा साहब तुम्हा

.

.

.

नन्हों:

(मुस्कुराकर) ठीक है अस्तु मैंने उसी पुरानी दोस्ती का लाभ उठाना चाहा और दारोगा साहब से मिली.

राम:

मगर यह तो तुमने गलती की, वह तो.

.

.

नन्हों:

आप सुनिए तो! उधर कुछ और ही गुल खिला हुआ मुझे दिखा अर्थात् वे खुद गोपालसिंह के कब्जे से वह किताब निकाल कर अपने हाथ में करना चाहते थे.

राम:

हाँ, यही बात मैं कहना चाहता था.

नन्हों:

मुझे जब यह मालूम हुआ तो मैं इस काम में उनकी मदद करने को तैयार हो गई, आखिर अपना मतलब तो निकालना ही था.

राम:

ठीक है, तुम्हारे चांगलेपन को मैं अच्छी तरह समझता हूँ, अच्छा तब क्या हुआ?

दारोगा साहब ने क्या किया?

नन्हों:

मुझे और मेरे एक साथी को अन्दर पहुँचाया और आने - जाने का रास्ता बताकर और बातों का भी प्रबन्ध कर दिया.

राम:

वह कौन - सी जगह थी. जहाँ उन्होंने तुमको पहुँचाया?

नन्हों:

तिलिस्म का ही कोई हिस्सा जिसको शायद चक्रव्यूह कहते हैं! वहाँ से खास बाग में जाने का एक गुप्त रास्ता था.

राम ०:

(चौंककर) चक्रव्यूह! नन्हों:

जी हाँ, चक्रव्यूह, मगर यह नाम सुनकर आप चौंके क्यों?

राम:

इसलिए कि मैं जानता हूँ कि वह बड़ी भयानक जगह है और वहाँ सहज में लोगों का आना - जाना नहीं हो सकता.

दारोगा साहब ने तुम्हें वहाँ कैसे पहुंचा दिया इसी का ताज्जुब है.

नन्हों:

आप ठीक कहते हैं.

दारोगा साहब ने मुझसे उस जगह के बारे में यही कहा था कि वह बड़ा भयानक स्थान है और इस बात की सख्त ताकीद भी कर दी थी कि जो स्थान उन्होंने बता दिया है उसके आगे या किसी दूसरी जगह जाने का उद्योग में कदापि न करूं नहीं तो तिलिस्म में फंस जाऊँगी.

मगर उनकी बातचीत से मुझे यह भी गुमान हुआ कि इस जगह का भेद उन्होंने अभी हाल में ही जाना है, पहिले वे इस बारे में कुछ भी नहीं जानते थे,

राम:

यह कुछ प्रकट नहीं हुआ, कि उस स्थान का पता लगा उन्हें क्योंकर?

नन्हों:

नहीं यह तो कुछ मालूम नहीं हुआ, मगर क्या यह कोई भेद की बात है?

राम:

क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हमारे महाराज उस स्थान का हाल जानने के लिए बहुत दिनों से व्याकुल हैं! नन्हों:

हाँ, यह बात तो मैं उन्हीं की जुबानी सुन चुकी हूँ, राम::

मगर वे इस चक्रव्यूह के बारे में सिर्फ इतना ही जानते हैं कि वह जितनी ही भयानक जगह है उतनी ही सुन्दर, सैर - सपाटे लायक और दौलत से भरपूर भी है.

मुझसे कई दफे उन्होंने यह बात कही कि अगर किसी तरह उस जगह का भेद मालूम होता तो बड़ा अच्छा होता.

मगर अब जब दारोगा साहब उस जगह का हाल जान गए तो शायद महाराज साहब को कुछ बता सकें?

नन्हों:

शायद ही कुछ, क्योंकि इतना मैं समझ गई कि यद्यपि मुझे उन्होंने उस स्थान तक पहुंचा दिया था पर फिर भी वे वहाँ आने - जाने से बहुत डरते थे और उसके बारे में विशेष कुछ जानते भी न थे.

हमारे महाराज को अगर उस स्थान के बारे में कुछ पता लग सकेगा तो उसी किताब से लग सकेगा जिसको मैं गोपालसिंह के कब्जे से लेना चाहती थी क्योंकि उसी की मदद से दारोगा साहब भी वहाँ तक पहुँचे थे.

राम::

सो तो हुई है और इसीलिए वह किताब लेने का महाराज का इतना आग्रह था, खैर तुम आगे का हाल कहो और उस जगह का कुछ हाल सुनाओ जहाँ दारोगा साहब ने तुम्हें पहुँचाया.

नन्हों:

उस स्थान में जाने का रास्ता तो अजायबघर में से था, पर खुद वह जगह थी कहीं खास बाग के आस - पास में ही, जहाँ जाने का जैसा कि मैंने कहा, एक रास्ता भी वहाँ से था

, अजायबघर की ड्योढ़ी से आगे एक महराबदार बड़े फाटक में से होकर, जिसके सामने एक पुतली लटकती है, वहाँ जाना होता है.

वह एक बड़ा ही रमणीक बाग है जिसके बीचोबीच में एक बारहदरी है.

वहाँ सैकड़ों फौव्वारे लगे हुए हैं इनको जब चाहे इच्छानुसार चलाया जा सकता है और जिनकी बदौलत वह स्थान खासकर आज - कल गर्मी के मौसिम में तो बिल्कुल स्वर्ग ही जान पड़ता है.

उस स्थान तक मुझे पहुंचा और वहाँ से तिलिस्मी बाग के आने - जाने का रास्ता बतला दारोगा साहब तो चले गए और अब मैं अपनी फिक्र में पड़ी.

एक रोज सुबह मैं गोपालसिंह के सोने वाले कमरे के सामने इस तरह पर घूमने लगी कि उनका ध्यान मेरी तरफ आकर्षित हुआ और वे मेरा पता लगाने मेरी तरफ आए मगर तब मैं गायब हो गई और उस जगह एक पुर्जा छोड़ गई जिसमें लिखा था कि मैं चक्रव्यूह में कैद हूँ! उस दफे तो कुछ न हुआ पर कुछ समय के बाद जब मैंने फिर ऐसा ही क्या तो गोपालसिंह बड़े ताज्जुब में पड़ गए.

इस दफे मैं एक खाली लम्बी - चौड़ी चीठी लिखकर ले गई थी और मेरा विचार था कि अबकी उन्हें अच्छी तरह रंग पर लाऊँगी.

यद्यपि वह विचार पूरा न उतर पाया फिर भी थोड़ा बहुत काम तो बन ही गया.

राम:

इसका क्या मतलब?

तुम्हारा क्या विचार था और वह क्योंकर नहीं पूरा उतरा.

नन्हों:

मेरा विचार इस बार उनसे हूबहू दो - चार बातें करने का था पर जिस समय मैं वहाँ पहुँची उसी समय न - जाने किस काम से इन्द्रदेव भी वहाँ पहुँच गए जिससे मुझे अपना विचार छोड़ वहाँ से भाग जाना पड़ा, क्योंकि यद्यपि गोपालसिंह तो मुझे नहीं पहिचान सकते थे पर इन्द्रदेव मुझे देखते ही फौरन पहिचान लेते तब सारा भण्डा फूट जाता,

अस्तु उन्हें वहाँ देख मैंने अपना इरादा बदल दिया और केवल वह चीठी छोड़ कर चली गई.

पर उतने से भी काम बखूबी हो गया यानी वह किताब मेरे हाथ में आ गई, मुझे देख और मेरी चीठियाँ पा गोपालसिंह अपने को रोक न सके और मेरा पता लगाने के लिए तिलिस्म के अन्दर घुसे जहाँ से उन्हें धोखा दे वह किताब कब्जे में कर लेना कोई मुश्किल न था.

इतना कह नन्हों ने वह सब पूरा हाल कह सुनाया जिस तरह कि वह किताब उसके हाथ लगी थी और जो हम ऊपर के व्यानों में कह आए हैं.

अब हमारे पाठक भी समझ गए होंगे कि दो दफे तिलिस्मी बाग में जिस औरत को गोपालसिंह ने देखा था वह यही नन्हो थी और उस बारहदरी में भी गोपालसिंह को धोखा देने वाली यही कम्बख्त थी.

अपना हाल सुनाकर अन्त में नन्हों ने कहा, " मैंने गोपालसिंह को कुण्ड में गोते खाते छोड़ दिया और यह किताब ले तिलिस्म के बाहर निकल आई.

मालूम नहीं कि फिर उनका क्या हुआ.

इधर लौटी और काशी जाकर आपसे मिलने का विचार किया तो मालूम हुआ कि आप तिलिस्म के अन्दर बिराज रहे हैं.

गोपाल और बाकी के साथियों से मिली तो वह दुःखद समाचार सुना जिसने मेरा दिल ही तोड़ दिया, पर क्या करती लाचारी थी.

ईश्वर को यही मंजूर था कि मेरा दोस्त मुझे मिलकर भी बिछुड़ जाता और मेरी सखी गौहर की मेहनत वृथा जाती.

लाचार दिल मसोस कर रह गई पर कम्बख्त भूतनाथ से बदला लेने की कसम खा कर उसे बर्बाद कर देने का पूरा इरादा कर लिया.

इसके बाद क्या हुआ और किस तरह भूतनाथ को कैसा - कैसा नाटक दिखाया गया यह सब हाल तो आपके शागिर्द गोपाल ने आपसे कहा ही होगा?

राम:

हाँ कहा था, अच्छा तो वह किताब कहाँ है! टेढ़ी निगाहों से नन्हो ने एक दफे रामचन्द्र की तरफ देखा और तब अपनी अंगिया के भीतर से एक छोटी किताब निकालकर उसकी तरफ बड़ाई.

उसने देखते ही खुशी - खुशी हाथ बड़ा कर वह किताब ले ली और तब एक नजर देख तथा दबी हुई जुबान से यह कहकर कि ' जरूर वही हैं उसे चूम कर माथे से लगा लिया.

नन्हों:

क्यों साहब, मैंने जिस बात का बीड़ा उठाया था उसे पूरा किया न! रामचन्द्र ने प्रसन्नता की निगाह से उसे देखते हुए कहा, " क्या अब भी इसमें कोई शक है! तुमने तो वह काम किया कि हम सभी को मात कर दिया.

महाराज के हाथ में जब यह किताब पड़ेगी उनकी खुशी की हद न रहेगी, तुमको .

.

यकायक जोर की आवाज कहीं से आई- " बेवकूफ! " जिसने सभों को चौंका दिया और सभी ताज्जुब से इधर - उधर देखने लगे.

उन सीढ़ियों पर जिनकी राह उतरकर अभी - अभी ये लोग यहाँ पहुँचे थे खड़े हुए एक नकाबपोश पर सभों की निगाह पड़ी जिसका तमाम बदन काले कपड़ों से ढका हुआ था और जिसके बाएँ हाथ में एक मशाल और दाहिने में कोई गोल चीज थी जो साफ - साफ नजर नहीं आ रही थी.

यकायक इस नकाबपोश को वहाँ देख इन लोगों को इतना ताज्जुब हुआ कि कुछ देर तक किसी के मुँह से कोई आवाज न निकली, इसके बाद रामचन्द्र ने पूछा, " तुम कौन हो और किसलिए यहाँ आए हो! " नकाबपोश जोर से हँस कर कहा, " तुम्हें इस बात का जवाब देने के पहिले मैं तुम्हारी इस नन्हों से कुछ बातें करना चाहता हूं इतना कहता हुआ नकाबपोश तीन - चार डण्डा सीढ़ियाँ उतर आया और अब उसका पूरा लम्बा कद इन लोगों को दिखाई देने लगा.

उसने काले परदे के अन्दर छिपा हुआ अपना सिर नन्हों की तरफ घुमाया और एक ऐसी आवाज में जिसमें क्रोध और व्यंग दोनों मिला था उससे कहा, " क्यों रे बेवकूफ, क्या तू

समझती है कि तूने राजा गोपालसिंह के कब्जे से असली तिलिस्मी किताब निकाल ली?

क्या वह नायाब चीज तुझ जैसी हरामजादियों के पास रहने लायक है?

जरा उस किताब को खोल और अच्छी तरह देख तो सही !! " इतना कह वह नकाबपोश चुप हो गया मगर सब कोई सकते की सी हालत में उसकी तरफ देखते रह गए, किसी के मुंह से कोई आवाज न निकली.

कुछ सायत तक चुप रहने के बाद वह घूमा और रामचन्द्र से बोला, “ हाँ पूछो अब तुम क्या पूछना चाहते हो?

" रामचन्द्र ने तुरन्त उससे कहा, " सबसे पहिले मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम कौन हो और किस नीयत से तथा किस तरह यहाँ पहुंचे?

उस नकाबपोश ने हंसकर जबाब दिया, “ क्या यह बेहतर नहीं होगा कि मैं यही सवाल तुमसे कहूं और तुमसे पूछूं, कि तुम कौन हो और किस नीयत से यहाँ आये हो?

" रामचन्द्र ने यह सुनते ही डपट कर कहा, " बस बस, फजूल की बातें मत करो, यह मेरे हाथ की चीज देखो और तुरन्त जवाब दो कि तुम कौन हो?

"

रामचन्द्र के हाथ में एक भरा हुआ दोनाली तमंचा दिखाई देने लगा जिसकी नली उस नकाबपोश की छाती की तरफ थी, पर उस नकाबपोश पर इसका जरा भी असर न हुआ बल्कि वह जोर से हँसकर बोला, “ क्या तुम मुझे डराने की कोशिश कर रहे हो?

पहिले अपनी फिक्र तो कर लो! मैं दोबारा पूछता हूँ कि तुम लोग कौन हो और किस नीयत से यहाँ आये?

" राम:

हम लोग अपना परिचय किसी तरह नहीं दे सकते और तुम अगर तुरन्त अपना नाम नहीं बताओगे तो अपने को मौत के मुंह में पाओगे.

नकाब:

ओह, क्या तुम यह समझ सकते हो कि मैं तुम लोगों को वास्तव में नहीं जानता! गौहर और मुन्दर को भला कौन न पहिचानेगा और उस नन्हों को भी कौन न जानेगा जो अपने को होशियारों और चालाकों का सिरताज समझती है पर वास्तव में इतनी भी अक्ल नहीं रखती कि अपने दोस्त और दुश्मन की पहिचान कर सके.

ऐ तन्हों, सुन और समझ, जो आदमी तिलिस्मी बाग में तुझसे मिला था वह तेरा ऐयार नहीं था बल्फ़ि भूतनाथ का एक शागिर्द था जिसने तुझे उल्लू बनाकर असली किताब गायब कर ली और एक नकली किताब तेरे हवाले कर दी जिसको लिए हुए तू व्यर्थ की खुशी से फूली बैठी है.

और भी सुन, यह आदमी जो तेरे सामने बैठा हुआ है और जिसे तू महाराज दिग्विजयसिंह का ऐयार शेरसिंह समझ रही है, शेरसिंह नहीं बल्कि दलीपशाह या उसका कोई शागिर्द है जिसने तुझे उल्लू बनाया है और तेरे पेट से सब भेद निकाल लिया है! क्या इसी अक्ल को लेकर तू भूतनाथ का सामना करना चाहती है !! नकाबपोश की भारी आवाज उस कोठरी में गूंज गई और वहाँ बैठे सब लोग उसे सुनकर घबड़ा गए.

खास कर नन्हो तो बड़े ही डर और चिन्ता के साथ कभी रामचन्द्र का मुँह और कभी उस किताब की तरफ देखने लगी जो इसके हाथ में थी. .

गौहर और मुन्दर डर गई थीं और रामचन्द्र किसी फिक्र में पड़ गया - सा जान पड़ता था,

उन लोगों की यह हालत देख नकाबपोश ने फिर कहा, " ऐ नन्हों, अगर तेरे मन में अब भी यह शक बाकी है कि तेरे सामने का ऐयार शेरसिंह है अथवा नहीं तो इस बात को जरा सोच कि असली शेरसिंह उस नकली किताब को तुरन्त पहिचान जाता जो तूने इस बनावटी ऐयार के हाथ में दे रखी है. देख, असली किताब यह है! " कहते हुए उस नकाबपोश ने अपने दाहिने हाथ की चीज जो एक गेंद की तरह मालूम होती थी सीड़ी पर रख दी और कपड़ों के अन्दर से कुछ निकालकर उन लोगों को दिखाया जिस पर एक निगाह पड़ते ही नन्हों ने पहिचान लिया कि यह वहीं तिलिस्मी किताब है जो उसने राजा गोपालसिंह से ले ली थी.

अब नन्हो की घबड़ाहट और बड़ गई और वह बड़े शक की निगाह से रामचन्द्र की तरफ देखने लगी, मगर इसी समय रामचन्द्र जोर से बोल उठा, “ भला तुम भी कैसी बात कर रहे हो जिस पर एक लौंडे को भी विश्वास नहीं हो सकता! पहिले तुम अपनी सूरत तो दिखाओ पीछे हम लोगों को धोखा देने की कोशिश करना! " यह सुनते ही वह नकाबपोश जोर से खिलखिलाकर हँसा.

उसने वह किताब जो नन्हो को दिखाई थी. पुनः अपने कपड़ों में छिपा ली और तब वह गेंद जो सीड़ी पर रख दिया था उठा लिया, इसके बाद वह बोला, " तुम्हारी बात सुन मुझे हँसी आती है! क्या कोई अपने को भूतनाथ की निगाहों से छिपा सकता है?

लो देखो मैं कौन हूँ! ' इतना कह उसने अपने चेहरे पर की नकाब उलट दी और हाथ की मशाल को नीचा किया जिसकी रोशनी में उन लोगों ने देखा कि सचमुच भूतनाथ उनके सामने खड़ा है.

भूतनाथ को देख उन लोगों का डर के मारे बुरा हाल हो गया.

नन्हों तो यहाँ तक डरी और घबराई कि एकदम चीख उठी और बेतहाशा उस सुरंग के मुहाने की तरफ भागी जो वहाँ से दिखाई पड़ रहा था पर वह ऐसा भी न कर सकी.

सुरंग से कुछ ही दूर ही थी कि उसका दरवाजा खुल गया और दो आदमी नंगी तलवारें हाथ में लिए वहां खड़े दिखाई पड़े जिनकी भयानक सूरत देखते ही वह कॉंप कर रक गई, दरवाजा फिर बन्द हो गया.

भूतनाथ ने पुनः भयंकर हँसी हँस कर कहा, " तुम्हीं कम्बख्तों के मारे मेरी जिन्दगी बर्बाद हो चली थी.

आज भले मौके पर एक साथ मैंने तुम सभों को पकड़ा है और तुम्हारे काले दिलों का सबूत यह सब सामान भी इसी जगह देख रहा हूँ, बस आज एक साथ ही सभों का खातमा करके निश्चिन्त हो जाऊंगा! " इतना कह उसने गेंद को ऊंचा किया जिसके साथ एक छोटी - सी रस्सी लगी हुई थी.

इस रस्सी को उसने अपने हाथ की मशाल के साथ छुला दिया और तुरन्त ही वह बारुद की तरह जल उठी.

भूतनाथ ने वह हाथ जिसमें गेंद था ऊँचा किया और डरावनी आवाज में बोला, " एक मिनट का समय मैं तुम लोगों को देता हूँ जिसमें भगवान को याद कर लो.

इसके बाद यह गेंद फटेगा और तुम सभों को मय इन सामानो के जो यहाँ दिख रहा है जहन्नुम की तरफ रवाना कर देगा.

" इतना कह भूतनाथ ने अपना हाथ पीछे किया और उस गेंद को कोठरी के अन्दर फेंक देना चाहा.

उसी समय किसी की है खबरदार ऐसा न करना! " की आवाज उसके कानों में पड़ी पर उसने कुछ खयाल न किया बल्कि यह सोच कर कि शायद कोई वहाँ पहुँच कर उसके काम में बाधा देना चाहता है अपने काम में फुर्ती की और जोर से वह गेंद नीचे तहखाने में फेंक दिया.

उस गेंद की रस्सी सुरसुराती हुई तेजी के साथ क़म होती जा रही थी और उसमें से निकलने वाले धुएँ से वह तहखाना भरने लगा था.

इतना काम कर भूतनाथ घूमा और सीढ़ियाँ चढ़ बाहर निकल गया.

बाहर होकर इसने जोर से उस तहखाने का पल्ला बन्द कर दिया और एक सिटकिनी जो इसी काम के लिए लगी हुई थी चढ़ा कर उसे खुलने लायक न छोड़ा.

इसके बाद वह घूमा और बाहर की तरफ चला.

मगर क्या यह सही है या उसकी आँखें उसे धोखा दे रही हैं! उसके सामने यह कौन खड़ा है! यह तो वहीं शैतान मालूम होता है जिसने एक बार पहिले भी उसके सामने प्रकट होकर रोहतासमठ के पुजारी ' के नाम से अपना परिचय दिया था.

यह यहाँ कैसे आ पहुँचा !!

लेकिन नहीं, भूतनाथ की आँखों ने उसके साथ दगा नहीं की थी.

वास्तव में उसके सामने इस समय तिलिस्मी शैतान ही खड़ा था जिसकी आँखों के गड्ढे में से डरावनी चमक निकल रही थी और हाथ की मूठ से चिंगारियों की बेतरह फुलझड़ी - सी छूट रही थी.

भूतनाथ उस आसेब को पुनः अपने सामने पा यहाँ तक डरा और घबराया कि एकदम सकते की - सी हालत में होकर चुपचाप खड़ा रह गया.

तिलिस्मी शैतान ने गुस्से - भरी कॉपती हुई आवाज में कहा, " शैतान के बच्चे! कम्बख्त !! तूने यह क्या कीया ?

क्या तू अपने चारों तरफ नहीं देखता कि यह सब क्या पड़ा हुआ है! क्या जब तेरे बम के गोले की आग इन बारूद के थैलों और गोलों पर पड़ेगी तो इस सुन्दर इमारत का एक जर्रा भी साबुत रहने पावेगा !! कम्बख्त, तू खुद भी जायेगा और अपने साथ - साथ इस क़िमती इमारत को भी जो दुनिया में अपना आप साहनीय थी चौपट करता जायगा! यही नहीं, कितनी ही जानों को होम करेगा! " भूतनाथ यह सुनते ही यकायक चौंक पड़ा और जैसे ही उसकी निगाह उन तोपों, गोलों और बारूद के थैलों पर पड़ी जो उसके चारों तरफ पड़े हुए थे तो उसके मुंह से एक चीख निकल पड़ी.

वह इतना डरा और घबराया कि एकदम बदहवास हो गया.

अपने हाथ की मशाल उसने जोर से एक तरफ फेंकी और तब बेतहाशा वहाँ से भागा.

मगर भाग कर भी कहाँ जा सकता था?

अभी कोठरी और दालान पार कर सामने पड़ने वाली सीड़ियाँ ही उतर रहा था कि इमारत के भीतर से भयानक गड़गड़ाहट की आवाज उसके कानों में आई, लपक कर आगे बड़ा और सामने का मैदान पार करना चाहा, पर न हो सका, कानों के परदे फाड़ डालनेवाली एक आवाज इमारत के अन्दर से आई.

सामने ही पानी का एक कुण्ड था, लपककर भूतनाथ उसके पास पहुंचा और उसके अन्दर कूद पड़ा, इसके साथ ही उसको तनोबदन की सुध न रह गई.

यकायक इमारत के अन्दर से गोलों के फटने और बारूद के उड़ने की भयानक आवाजें आने लगीं.

दम भर बाद ही पुनः बड़े जोर की एक आवाज हुई.

उस जगह की समूची छत बड़े भयानक शब्द के साथ फट गई.

आग का एक बड़ा ही ऊँचा डरावना फौव्वारा आसमान की तरफ उठा.

समूची इमारत बड़े जोर से कॉपी और उड़ गई.

सुन्दर लोहगड़ी जो कुछ ही सायत पहिले अपनी मजबूती और सुन्दरता के लिए सानी नहीं रखती थी एकदम चौपट हो गई.

उसका एक - एक खम्भा, एक - एक ईंट, एक - एक कोना उड़ गया.

कुछ ही सायत पहिले जो एक खिलौने की तरह सुन्दर मालूम हो रही थी अब एक खण्डहर हो गई जिसके बीच से आग की लपटें उठ रही थीं.

हाय भूतनाथ, यह तैने क्या किया !! ।

।

सत्रहवाँ भाग समाप्त ।

अठारहवाँ भाग

पहला व्यान।

लोहगढ़ी के उड़ जाने का समाचार बात - की - बात में दूर - दूर तक फैल गया.

यद्यपि वह इमारत घनघोर जंगल के बीच में पड़ती थी पर ऊँचे टीले पर होने के कारण उसके उड़ जाने का दृश्य बहुत दूर तक दिखाई पड़ा था, फिर जमानिया शहर से भी उसका फासला कुछ इतना अधिक न था कि किसी का आना - जाना उधर से रात - बेरात भी होता न रहता हो, अस्तु आस - पास के गाँवों में रहने और आगे जाने वालों की जुबानी यह समाचार शीघ्र ही जमानिया तक पहुँच गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि सुबह सोकर उठने के साथ ही राजा गोपालसिंह को पहली खबर यही सुनने में आई.

सुनते ही वे एकदम घबरा गए और उन्होंने उसी समय कई जासूसों को ठीक - ठीक हाल का पता लगाने के लिए उस तरफ रवाना किया.

उन लोगों ने लौटकर जो खबर दी उससे उन्हें विश्वास कर लेना पड़ा कि सचमुच ही उनके राज्य की बहुत ही सुन्दर इमारत सदा के लिए नष्ट हो गई, पर ऐसा क्यों हुआ या किसकी यह कार्रवाई थी इसका कुछ पता उनके जासूस लगा न सक्के.

आखिर राजा साहब ने खुद वहाँ जाकर सब कुछ अपनी आँखों से देखने का निश्चय कीया.

यद्यपि बहुत ही घने और डरावने जंगल में होने के कारण बहुत ही क़म आदमियों को कभी उस इमारत को अच्छी तरह से देखने का मौका मिला था, फिर भी आज उसके इस तरह यकायक और आश्चर्यजनक रीति से उड़ जाने के समाचार सुन बहुतेरे आदमी, जिनका उस इमारत से कोई भी सम्बन्ध न था, एकदम ताज्जुब में पड़ गए और तुरंत उस तरफ को रवाना हो गए.

नतीजा यह हुआ कि दोपहर होते - होते उस टीले के नीचे का स्थान सैकड़ों आदमियों से घिर गया.

सभी ताज्जुब के साथ उस सुन्दर और मजबूत इमारत को जो इस समय भयानक खंडहर के रूप में बदल गई थी हैरानी के साथ देख और उसके सम्बन्ध में तरह - तरह की बातें कर रहे थे.

इस समय यद्यपि वहाँ आग की लपटें अथवा बारूद फटने का समय नहीं था फिर भी जगह - जगह से धुआँ बहुतायत से निकल रहा था जिसके कारण लोग उसके पास जाते डरते और हिचकते थे.

फिर भी कुछ हिम्मतवर आदमी इस विचार से ऊपर पहुँच ही गए कि शायद कुछ आदमी भी इसके साथ ही उड़ या दव गए हों और उनका कुछ पता लग सकता या बचाव किया जा सकता हो, पर ऐसी किसी दुर्घटना का कोई चिह्न कम - से क़म प्रकट रूप से वहाँ दिखाई नहीं पड़ रहा था.

इन लोगों की देखा देखी, फिर तो सैकड़ों ही आदमी उस टीले के ऊपर पहुंच गए और चारों तरफ घूम - घूमकर सब हाल चाल देखने लगे, मगर थोड़ी देर बाद जब राजा साहब के भेजे हुए बहुत से सिपाहियों ने वहाँ पहुँच कर वह जगह घेर ली तो सभों को लाचार वहाँ से हट जाना पड़ा, पर इससे लोगों का कौतूहल और भी बढ़ गया.

दोपहर होते - होते राजा साहब की सवारी भी वहाँ पहुँच गई उनके साथ उनके प्रेमी मित्र इन्द्रदेव तथा कुछ थोड़े से खास लोग थे जिन्हें लिए हुए वे सीधे टीले के ऊपर चढ़ गए और घूम - घूम कर देखने लगे.

लोहगड़ी की अद्भुत इमारत की जगह वहाँ एक त्रासदायक खण्डह दिखाई पड़ रहा था जिसके चारों तरफ दूर - दूर तक पत्थर और चूने के डोंके और लोहे के सामान छिटके हुए थे क्योंकि बारूद के फटने का जोर इतना भयानक था कि बिगहों तक उसके उड़े और टूटे हुए हिस्से बिखर गए थे.

लोहगड़ी की बीच वाली असली इमारत तो एकदम ही उड़ गई थी, बल्कि उसके सदमें से उसको घेर रखने वाली जो सादी बाहरी इमारत थी वह भी दहलकर बहुत जगह से गिर गई थी और उसका जो हिस्सा अभी तक नहीं गिरा था वह भी टेढ़ा - मेड़ा और

झुका हुआ ऐसी खतरनाक हालत में हो गया था कि दम - के - दम में गिर जाने का डर दिला रहा था, अस्तु सब बातों को देखकर इन्द्रदेव की सलाह से राजा साहब ने उस हिस्से को भी गिरा देने का हुक्म दिया, और साथ ही यह जाँचने को कहा कि कहीं कोई आदमी तो इसके नीचे नहीं दबा हुआ है.

हुक्म के साथ ही ऐसा होने लगा और राजा साहब वहाँ से कुछ दूर हटकर अपने दोस्त इन्द्रदेव से बातें करने लगे.

उनका इरादा समझ साथ के लोग दूर हट गए और दोनों में इस तरह बातचीत होने लगी:

गोपाल:

क्यों भाई, तुमने कुछ समझा कि यह कार्रवाई किसकी हो सकती है! इसमें तो कोई शक नहीं कि बारूद या सुरंग के जोर से यह इमारत उड़ाई गई है.

इन्द्रदेव:

मेरी कुछ अकल काम नहीं करती है कि यह क्या हुआ और कैसे हुआ?

किसी का इसके उड़ाने में कोई स्वार्थ ही क्या हो सकता है जो ऐसी सुन्दर इमारत को खाख - भ्रष्ट कर डाले.

गोपाल:

कहीं ऐसी बात तो नहीं है कि किसी ने इस जगह का तिलिस्म तोड़ डाला हो और उसी से ऐसा हुआ हो?

तुमने एक दफे कहा था कि इस तिलिस्म की उम्र खत्म हो गई है और यह टूट जायगा.

इस बात ने इन्द्रदेव को कुछ गौर में डाल दिया.

वे कुछ देर के लिए चुप हो गए और तब बोले, " मैं इस बारे में बिना जाँचे कुछ ठीक नहीं कह सकता, मगर आपका ख्याल सही भी हो सकता है। गोपाल:

क्या इस बात का पता नहीं लग सकता कि वास्तव में अन्दर का तिलिस्म टूटा है या नहीं?

इन्द्र:

क्यों नहीं, कोशिश करने से यह बात जरूर जानी जा सकती है.

?

गोपाल:

तो तुम इसको जानने की कोशिश करोगे?

इन्द्र:

मैं जरूर कोशिश करूँगा और बहुत शीघ्र आपको बताऊँगा.

गोपाल:

तब इस समय यहाँ कुछ नहीं हो सकता, चलना चाहिए.

इन्द्र:

अपने आदमियों को हुक्म दे दीजिए कि मेहनत करके इस जगह का चूना - पत्थर सब अलग कर डालें.

ऐसा होने से अगर कोई आदमी इसके नीचे दबा होगा तो उसका ठीक - ठीक पता लग जायगा, दूसरे अन्दर जाने का रास्ता भी खाली हो जायगा, क्योंकि मुझे विश्वास है कि यह सब नुकसान ऊपर ही के हिस्से को पहुंचा है जो यद्यपि एकदम ही नष्ट हो गया है मगर अन्दर के तिलिस्म को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँच सका होगा.

इसके सिवाय अगर गुप्त रीति से कुछ आदमी यहाँ पहरा देकर इस बात की जाँच करें कि कोई रात - बिरात यहाँ पर आता जाता है या नहीं तो भी शायद कुछ पता लग सकता है.

अगर किसी बाहरी आदमी की यह कार्रवाई है और किसी ने अपने किसी मतलब से इस इमारत का सत्यानाश किया है तो वह जरूर फिर भी कभी - न - कभी यहाँ आता - जाता दिखाई पड़ेगा.

उसे गिरफ्तार करने से बहुत कुछ पता लग सकता है गोपाल:

तुम बहुत ठीक कहते हो, मैं अभी ऐसा करने का हुक्म देता हूँ, गोपालसिंह ने इन्द्रदेव की राय के मुताबिक हुक्म दे दिया और तब एक चक्कर उस टीले का लगाने के बाद

उसके नीचे उतरे, सवारी तैयार थी जिस पर बैठ जमानिया की तरफ रवाना हो गए, पर इन्द्रदेव न - जाने क्या समझकर उनके साथ वापस न हुए, उन्होंने कुछ कह - सुनकर छुट्टी ले ली और जब राजा साहब के साथ आने वाली भीड़ - भाड़ क़म हो गई तो कुछ चक्कर काटते हुए अकेले ही अजायबघर की तरफ रवाना हुए, इन्द्रदेव का ख्याल था कि लोहगड़ी को देखने आई हुई भीड़ का कुछ हिस्सा अजायबघर भी पहुंचा होगा जिससे उन्हें अपना काम करने के लिए उस जगह शायद ही मौका मिले, और उनका यह खयाल सही भी निकला.

लोहगड़ी को देखने जो लोग वहां पहुंचे थे अब लौटती समय इस विचित्र इमारत को भी, जिसके बारे में समय - समय पर तरह - तरह की बातें फैला करती थीं - देखने आ रहे थे, पर इस इमारत के अन्दर जाने की इजाजत किसी को भी न थी.

दारोगा साहब के दो सिपाही, जिनका पूरा कब्जा इस इमारत पर हो चुका था और अब प्रायः इसमें रहा भी करते थे,, सीड़ियों पर खड़े थे और किसी को भी ऊपर नहीं जाने देते थे, अस्तु लोग दूर ही से उसका रंग - ढंग देखकर विदा हो जाते थे.

इन्द्रदेव ने भी ऐसा ही किया और दूर ही से यह देख लेने के बाद कि यहाँ से उनका काम न निकल सकेगा वे वहाँ से हटे और पुनः घने जंगल के भीतर घुसे.

लगभग आधे घंटे तक तेजी से जाने के बाद इन्द्रदेव ने अपने को ऐसी जगह पाया जहाँ जंगल के बीचोबीच में से एक नाला तेजी के साथ बह रहा था.

हमारे पाठकों ने आशा है देखते ही इस स्थान को पहिचान लिया होगा क्योंकि यह तिलिस्म के अन्दर जाने वाले रास्ते में से एक है और वे हमारे साथ कई दफे यहाँ आ भी चुके हैं ।

अस्तु हम यहाँ के रास्ते का हाल विस्तार के साथ न लिखकर केवल इतना ही लिखते हैं कि इन्द्रदेव इस नाले में उतर गए और गोता मारकर उन्होंने तह की वह कड़ी खींची जिससे वहाँ का रास्ता खुलता था.

रास्ता खुलते ही पानी तेजी के साथ बना शुरू हुआ जिसके बहाब में इन्द्रदेव ने अपने को डाल दिया और कुछ ही सायत बाद उस कोठरी में जाकर निकले जिसके बीचोबीच की बनी नाली की राह पानी बहकर निकल जाता था.

कुछ देर तक सुस्ताने के बाद इन्द्रदेव ने पुनः अपने को इसी में डाला और बहते हुए उस कोठरी को पार कर किसी अंधेरी मगर खुलासी जगह में से होकर जाने लगे जिसमें से पानी की तेजी उन्हें बहाए लिए जा रही थी.

यद्यपि इस जगह इतना घना अन्धकार था कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं पड़ता था और अन्जान आदमी को इस जगह वेशक़ बहुत डर मालूम हो सकता था पर यहाँ की हवा एकदम साफ थी. और साँस लेने में किसी तरह की तकलीफ नहीं हो रही थी.

इन्द्रदेव ने अपने शरीर को पानी पर ढीला छोड़ा हुआ था और बेखौफ बहते जा रहे थे.

आखिर कुछ देर बाद यह रास्ता भी खत्म हुआ और इन्द्रदेव एक ऐसी कोठरी में पहुंचे जिसके ऊपरी हिस्से में कई रोशनदान बने होने के कारण बहाँ बखूबी चाँदना था, उनके इस जगह पहुंचते ही पानी का आना रुक गया तथा वह रास्ता भी बन्द हो गया जिसकी राह वे यहाँ तक पहुँचे थे.

१.

देखिए भूतनाथ आठवाँ भाग, दूसरा और चौथा बयान.

इन्द्रदेव पानी के बाहर निकले. कोठरी की एक तरफ की दीवार में एक दरवाजे का निशान दिखाई पड़ रहा था जिसे किसी तरकीब से उन्होंने खोला और तब अपने सामने एक छोटा - सा बाग देखा.

इन्द्रदेव बाहर निकले पर उसी समय उनका ध्यान अपने कपड़ों की तरफ गया जो एकदम गीले हो रहे थे, अस्तु वे पुनः कोठरी के अन्दर चले गए और एक छोटी आलमारी के पास पहुंचे जो एक तरफ की दीवार में बनी हुई थी.

इसका पल्ला उन्होंने किसी तरकीब से खोला.

अन्दर कई जोड़े सूखे रोगनी कपड़ों के रखे हुए थे जिनमें से एक उन्होंने पहिन लिया और गीले कपड़ों को अपने हाथ में लिए फिर कोठरी के बाहर आए.

कपड़े इधर - उधर पेड़ों की डालों पर सूखने को डाल दिए और बाग के अन्दर घुसे.

यह छोटा - सा बाग चारों तरफ से ऊँची - ऊँची चारदीवारी से घिरा हुआ था और इमारत के क़िस्म से इसके बीचोबीच में सिर्फ एक छोटी - सी संगमर्मर की बारहदरी नजर आ

रही थी.

इन्द्रदेव बारहदरी में पहुंचे जिसका फर्श सुफेद - काले पत्थर के चौखूटे टुकड़ों का बना हुआ था, और कोने के एक पत्थर के पास जाकर उसे पैर से ठोकर देने लगे.

तीन ही चार ठोकरों के बाद उस जगह के फर्श का एक भाग नीचे को झुक गया और उस जगह पतली - पतली कई डंडा सीढ़ियाँ दिखाई देने लगीं जिन पर इन्द्रदेव ने कदम रखा और नीचे उतरने लगे.

बारह डंडा सीड़ियाँ इन्हें उतरनी पड़ी और आखिरी सीढ़ी पर उतरते ही ऊपर वाला पत्थर पुनः अपने ठिकाने पर बैठ गया जिससे वहाँ पर घोर अन्धकार हो गया मगर इन्द्रदेव ने इसकी कोई परवाह न की और कमर से तिलिस्मी खंजर निकाल जिसे वे अपने कपड़ों के अन्दर छिपाए हुए थे, उसकी मदद से रोशनी करते हुए जाने लगे.

यह एक बहुत ही लम्बी सुरंग थी जिसके अन्दर एक घड़ी से ऊपर समय तक इन्द्रदेव को चलना पड़ा और जब वह समाप्त हुई तो पुनः बारह डंडा सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ी.

किसी तरकीब से रास्ता खोल इन्द्रदेव जब बाहर हुए तो उन्होंने अपने को पुनः ठीक उसी तरह की एक बारहद्दरी में पाया जैसी की यहाँ आती समय उन्हें मिली थी, फर्क अगर कुछ था तो यही कि बारहदरी एक बहुत बड़े बगीचे के अन्दर थी जिसके चारों तरफ तरह - तरह की छोटी - बड़ी इमारतें दिखाई पड़ रही थीं.

हमारे पाठक इस जगह को भी पहिचान गए होंगे क्योंकि यहाँ भी वे एक दफे भूतनाथ के साथ उस समय आ चुके हैं जबकि उसने एक बारहदरी की कड़ियों के साथ लटकती हुई प्रभाकरसिंह, गुलाबसिंह, जमना, सरस्वती आदि की लाशें देखी थीं.

इस समय भी वह ऊँची बारहदरी और उसके साथ लटकती हुई लाशे यहाँ से दिखाई पड़ रही थीं पर इन्द्रदेव का ध्यान उधर न था.

वे सिर्फ एक सायत के लिए वहाँ रुककर कुछ सोचते रहे और तब बाईं तरफ को चल पड़े जहाँ एक ऊंची दीवार और उसके ऊपरी हिस्से में बनी कुछ इमारत दूर से दिखाई पड़ रही थी.

तेजी से चलते हुए इन्द्रदेव इस दीवार की जड़ के पास पहुंचे और किसी तरकीब से उस जगह एक दरवाजा पैदा कर उसके अन्दर घुसे.

एक छोटी कोठरी दिखाई पड़ी जिसमें एक तरफ तो ऊपर चढ़ जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं और दूसरी तरफ एक खुला हुआ दरवाजा था जिसके अन्दर अँधेरा था.

इन्द्रदेव इसी दरबाजे के अन्दर घुसे.

इनके अन्दर घुसते ही वह दरवाजा बन्द हो गया पर इन्द्रदेव ने इसकी कोई फिक्र न की और तिलिस्मी खंजर की रोशनी के सहारे बेधड़क जाने लगे.

इन्द्रदेव को इस सुरंग के अन्दर बहुत दूर तक जाना पड़ा और जब एक जगह जाकर वह खत्म हुई तो उन्होंने अपने को एक छोटी कोठरी में पाया जिसके सामने की दीवार में एक बन्द दरवाजा दिखाई पड़ रहा था.

इन्द्रदेव इस दरवाजे की तरफ बड़े और इसे खोलने की चेष्ठा करने लगे पर इस जगह पहुंचते ही उनकी नाक में बारूद की गंध पड़ी जिससे वे समझ गए कि अब वे लोहगढ़ी के निचले हिस्से में पहुंच गए हैं.

दरवाजा खुला और साथ ही अपने सामने कुछ देख इन्द्रदेव चौंक पड़े.

एक आदमी इस दरवाजे के सामने ही जमीन पर पड़ा हुआ था जिसका बदन और कपड़ा जगह - जगह से झुलस गया था और चेहरा इस तरह कट - कुट गया था कि शक्ल पहिचानना मुश्किल हो रहा था.

पहिली बार में तो इन्द्रदेव ने यही समझा कि वह मुर्दा है पर नहीं, गौर से जाँच करने पर यह बात गलत साबित हुई.

वह मरा न था पर बहुत ही सख्त जख्मी और बहुत जल गया था.

इन्द्रदेव ने गौर से देर तक उसकी नब्ज देखी और तब अपना बटुआ खोल उसमें से एक शीशी निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क था.

इस अर्ग़ की कुछ बूंद उन्होंने जख्मी की जुबान पर टपका दी और तब फिर नब्ज देखी.

नब्ज में कुछ तेजी जान पड़ी और कुछ ही देर बाद उस आदमी के धीरे - धीरे साँस लेने की आहट आने लगी.

कुछ देर बाद इन्द्रदेव ने फिर कुछ अर्को उसकी जुबान पर टपकाया.

इस बार अर्को गले से नीचे उतरते ही वह सगबगाया और उसके गले से कुछ अस्पष्ट आवाज भी निकली जो समझ में नहीं आई.

हालत देख इन्द्रदेव ने बटुए में से पानी की बोतल निकाली जिसमें से कुछ उसको पिलाने और कुछ चेहरे पर छिड़क दुपट्टे से हवा करने से कुछ ही देर में उस जख्मी को होश आ गया.

उसने आँखें खोल दी और कमजोर आवाज में कहा, " पानी! " इन्द्रदेव ने पुनः उसे पानी पिलाया जिससे उसके होश कुछ ठिकाने आये और उसने बड़े गौर से इन्द्रदेव की तरफ देखकर पूछा, " आप कौन हैं?

" इन्द्रदेव ने जवाब दिया, “ मैं चाहे कोई भी होऊँ, तुम अपना हाल बताओ कि कौन हो और यह तुम्हारी यह हालत किस कारण हुई है?

" इनकी बात सुनते ही उसने कहा, " ठीक है, मैं आपकी आवाज ही से पहिचान गया कि आप कौन हैं.

आपके सिवा और कोई इस हालत में यहाँ तक पहुँच भी नहीं सकता था.

मैं गिरिजाकुमार हूँ, भूतनाथ ने बम फेंककर लोहगड़ी को उड़ा दिया जिससे मेरी यह हालत हुई, मगर आप मेरी फिक्र छोड़िये और इसके आगे वाली कोठरी में जाइए जहाँ गुरुजी और अर्जुनसिंह जी भी शायद मुझसे भी बदतर हालत में आपको मिलेंगे, उनकी फिक्र करिये.

" गिरिजाकुमार ने ये बातें बहुत ही रुक - रुककर और धीमे - धीमे कहीं और कहते ही फिर बेहोश हो गया.

इन्द्रदेव ने ताज्जुब से पूछा, " तुम लोग यहाँ कैसे आ पहुँचे?

" पर उसने कोई जबाब न दिया.

इन्दरदेव समझ गए कि इसे फिर गश आ गया है.

अस्तु उसकी जुबान पर पुनः अपने अर्क़ की कुछ बूंदे उन्होंने टपकाई और तब दवा को अपना असर करने के लिए छोड़ कर उठ खड़े हुए.

गिरिजाकुमार के मुंह से दलीपशाह और अर्जुनसिंह के भी वहीं होने बल्कि उससे भी बदतर हालत में होने का समाचार सुन वे बेचैन हो गए थे और उनकी मदद करना जरूरी समझ रहे थे.

जिस कोठरी में वे थे उसके एक तरफ दूसरी कोठरी बनी हुई थी जिसका दरवाजा इस समय खुला हुआ था.

इन्द्रदेव इस कोठरी में पहुँचे.

यह किसी तरह के धुएँ से भरी हुई थी जिसकी तीक्ष्ण गन्ध कई घण्टों के बाद भी अपना कारी असर दिखला रही थी अर्थात् उसको सुंघते ही इन्द्रदेव के सर में चक्कर आ गया वे पीछे हट आए और तब बटुए में से कोई चीज निकाल उसे नाक के आगे रखे हुए पुनः कोठरी के अन्दर घुसे.

इस कोठरी में गहरा अन्धकार छाया हुआ था जिसे उन्होंने अपने तिलिस्मी खंजर से दूर किया और तब उसकी चमक में सामने ही जमीन पर दो आदमियों को बेहोश पड़े पाया.

देखते ही वे चौंक गए क्योंकि गिरिजाकुमार की तरह वे दोनों आदमी भी बेतरह जले - भुने जख्मी हो रहे थे.

यह सोचकर कि इस जगह की जहरीली हवा उनके इलाज को सफल न होने देगी, इन्द्रदेव इन दोनों आदमियों को बारी बारी से बाहर वाली कोठरी में उठा लाए और वहाँ उन्हें जमीन पर रख तब उन्होंने अपना उद्योग शुरू किया.

बार - बार दवा पिलाने, लखलखा सुंघाने, और मुंह पर पानी छिड़कने से इन लोगों की तबीयत कुछ सुधरने लगी और अन्त में लगभग आधे घण्टे की मेहनत के बाद उन दोनों को कुछ होश आई.

पहिले एक आदमी और फिर दूसरे ने आँखें खोल कर अपने चारों तरफ देखा और तब इन्द्रदेव पर निगाह डाली जो उन पर झुके हुए थे.

उन्हें देखते और पहिचानते ही उनमें से एक बोल उठा.

' राजराजेन्द्र ' जिसके जवाब में इन्द्रदेव ने कहा ' गणपति ', और तब एक ने दूसरे का हाथ प्रेम से दबाया.

इन्द्रदेव ने पूछा, ' दलीपशाह, यह तुम्हारी क्या हालत है! "

दलीपशाह ने कहा, " यह सब भूतनाथ की करतूत है, मगर आप अगर यहाँ तक आ ही गए हैं तो अब हम लोगों की फिक्र छोड़ दीजिए, हम लोग अब दुरुस्त हो जाएँगे.

आप जरा गिरिजाकुमार की खबर लीजिए, वह बेचारा मुझे बचाने की फिक्र करता हुआ बुरी तरह जल गया है और शायद यहीं नहीं होगा.

सम्भव है उसके शरीर में प्राण मौजूद हों और इलाज कुछ असर दिखा सके.

" एक तरफ से पतली आबाज आई, " मैं बहुत राजी - खुशी हूँ गुरुजी, अर्जुन सिंहजी कैसे हैं?

" अर्जुनसिंहजी बोल उठे, " मैं एकदम ठीक हो गया हूँ.

" इनकी बातें सुनकर इन्द्रदेव हँस पड़े और कहने लगे.

" बेशक आप लोग ठीक तो हुए हैं पर अभी हिलने - डुलने की कोशिश न करें.

विशेष बातें करना भी मुनासिब नहीं है.

आप लोग चुपचाप पड़े रहें और मुझे सिर्फ इतना बता दें कि कोई और आदमी तो यहाँ पर नहीं है जिसे मेरी मदद कुछ फायदा पहुंचा सके?

आप लोगों का हाल - चाल और कैसे आप यहाँ पहुँचे तथा लोहगढ़ी की यह हालत कैसे हो गई जो मैं देखता आ रहा हूँ, यह सब मैं पीछे खुलासा दरियाफ्त कर लूंगा.

इस समय अगर और कोई जख्मी या बेहोश यहाँ पर हो तो उसकी खोज - खबर लेना जरूरी है ।

!! दलीपशाह ने कहा, " यहाँ पर अभी कम - से - कम चार आदमी और हैं, पर वे लोग उस ऊपर वाली कोठरी में होंगे जहाँ से भागकर मैं यहाँ तक पहुँच पाया था कि बेहोश हो गया.

वे चारों नन्हों, गौह, मुन्दर और भूतनाथ हैं.

आप आगे जाइए और देखिये कि इनमें से कोई बचा या सब मर गए.

दुर्घटना जितनी अचानक में हुई उसे देखते हुए मैं सोचता हूँ कि हम लोगों को यहाँ फँसा कर भूतनाथ भी बहुत दूर न जा सका होगा.

!! इन्द्रदेव ने ताज्जुब से पूछा, " नन्हों, मुन्दर और गौह! " और दलीपशाह ने कहा, " हाँ, " जिसे सुन वे फिर और न ठहरे और उठ खड़े हुए.

अपनी नाक पर उन्होंने किसी तरह की दवा से तर कर एक पट्टी बाँधी और हाथ में तिलिस्मी खंजर लिए हुए फिर उसी कोठरी में पहुंचे जहाँ दलीपशाह और अर्जुनसिंह को पाया था.

इस कोठरी से भी और आगे जाने का एक रास्ता दीवार में दिखाई पड़ रहा था जिसके अन्दर इन्द्रदेव घुसे.

पांच - छ:

डंडा पतली - पतली सीढ़ियाँ मिलीं जिन पर चढ़ने के बाद वे दरवाजे पर पहुँचे.

दरवाजा बन्द था जिसे इन्होंने खोला और तिलिस्मी खंजर वाला हाथ आगे करने पर देखा कि यह कोठरी जहरीले काले धुएँ से एकदम भरी हुई है.

आह यह क्या है! यहाँ जमीन पर सामने ही चार लाशें पड़ी हुई थीं जो इस कदर जल - भुन गई थीं कि जान बाकी रहने का तो सवाल ही क्या, यह भी पता लगाना असम्भव था कि ये मर्दो की लाशें हैं या औरतों की.

कपड़ों के अलावे जिस्म का सारा चमड़ा जल गया था और चेहरा तो चारों का ही एकदम जलकर नापहिचान हो गया था.

इन्द्रदेव ने अफसोस की निगाह से इन चारों लाशों को देखा और तब रंज भरे हुए लहजे में कहा, " अफसोस भूतनाथ, आखिर तेरा क्या यही नतीजा होने को था! " कुछ देर तक वे उसी जगह खड़े इन चारों लाशों को देखते रहे जो अब उनकी मदद या कारीगरी की पहुँच के बाहर हो गई थी, इसके बाद उन्होंने उधर से आँखें हटा ली और उस कोठरी के चारों तरफ देखा, भूतनाथ की जीवनी के संबंध में जो - जो चीजें इस समय यहाँ पर

मौजूद थीं उनका जिक्र तो हम ऊपर कर ही आए हैं, उसमें से बहुत कुछ सामान बारूद और बम की बदौलत नष्ट हो गया था पर जो कुछ बच गया था उसे उन्होंने ताज्जुब, गौर और अफसोस की निगाह से देखा और तब कहा, “ ये सब चीजें यहां! तब जरूर इन्हीं सब सामानों को नष्ट करने और दुश्मनों से बदला लेने भूतनाथ यहाँ पर आया होगा, पर अपने जाल में आप ही फँस गया और कम्बख्त नन्हों, मुन्दर और गौहर के साथ - साथ खुद भी मारा गया! आखिर जो यह कहा जाता है कि बुरे काम का बुरा नतीजा होता है सो बिल्कुल ठीक है.

फिर भी यद्यपि इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ पाप में गर्दन तक डूबा हुआ था पर बहादुरी और हिम्मत में उसका मुकाबला करने वाला ऐयार आज तक न तो कोई हुआ है और न होगा.

उसकी यह गति उसके पापों के फल के सिवाय और क्या कही जा सकती है.

मगर अफसोस, आज मेरा एक बड़ा ही प्यारा दोस्त चला गया.

"

इसी तरह की बातें देर तक इन्द्रदेव कहते और सोचते रहे मगर अब अफसोस और रंज का नतीजा ही क्या था?

उन्होंने अपने को सम्हाला और इस तरफ से ध्यान हटाकर इस बात को जाँचने लगे कि इन चारों के अलावे और भी कोई तो वहाँ पर या पास में कहीं नहीं है.

उस कोठरी में से ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ सामने ही नजर आ रही थीं जिन पर इन्द्रदेव चढ़ गए पर ऊपर न जा सके.

तहखाने के मुंह पर जो ढकना पड़ा हुआ था उस पर ऊपर की इमारत का मलबा और ईंट - पत्थर वगैहर इस कदर आकर जमा हो गया था कि लाख जोर लगाने पर भी वह पल्ला टस - से - मस न हुआ.

यही क्यों, बारूद के धमाके से इस निचली कोठरी का भी एक कोना फट गया था और उसकी छत में एक बहुत बड़ा छेद हो गया था जिसकी राह ऊपर का मलबा बहुत कुछ गिरकर एक कोने में जमा हो गया था.

इन्द्रदेव को खयाल हुआ कि शायद इस मलवे के नीचे और कोई भी पड़ा हुआ न हो और वे इस बातकी जाँच करना चाहते थे कि अपने पीछे किसी तरह की आहट सुन रुक गए.

घूमकर देखा तो दलीपशाह को खड़ा पाया जिन्हें देखते ही वे बोले, " आप बहुत कमजोर हो रहे हैं, ऐसी हालत में यहाँ आकर आपने अच्छा नहीं किया! देखिए इतनी देर बाद भी यह कोठरी जहरीले धुएँ से किस कदर भरी हुई है.

" दलीपशाह ने कहा, " मैंने दवा खाकर इसकी फिक्र कर ली फिर भी मैं यहाँ न आता अगर मुझे यह फिक्र न लगी होती कि भूतनाथ कि क्या हालत हुई, मगर यहाँ जो कुछ मैं देखता हूँ उससे तो यही जान पड़ता है कि हम लोगों को मारने आकर खुद उसने ही अपनी जान से हाथ धोया.

" इन्द्रदेव ने एक लम्बी साँस लेकर कहा, " हाँ, यह देखिए तीन लाशें तो यहाँ पड़ी हुई हैं और यह चौथी उधर पड़ी है.

अगर यहाँ पर नन्हों, गौहर, मुन्दर और भूतनाथ के इलावे कोई और आदमी न था तो मानना पड़ेगा कि ये लाशें उन्हीं तीनों की है। दलीप ०:

उन चारों और मुझ पाँचवें के इलावे और कोई छठा आदमी यहाँ पर न था,

हुआ यह कि हम लोग – नन्हो आदि तथा मैं, इस जगह बैठ कर बातें कर रहे थे कि यकायक भूतनाथ (हाथ से बताकर) उन सीढ़ियों के पास नजर आया जिसने हम लोगों को कुछ सख्त - सुस्त कह कर अपने हाथ का एक गोला इस कोठरी में फेंका और तब खुद ऊपर चढ़ने लगा.

मैं कुछ देख न पाया कि इसके बाद वह ऊपर निकल गया या नहीं क्योंकि बम का गोला देखते ही मुझे अपनी जान बचाने की फिक्र हुई, इतना तो मैं समझ ही गया था कि इसके धुएँ में बेहोशी का असर है जो थोड़े ही पलों में हम लोगों को कुछ भी करने लायक न छोड़ेगा, इसलिए मैं इस दरवाजे की तरफ दौड़ा जिसके दूसरी तरफ गिरजाकुमार और अर्जुनसिंह थे पर यह गुमान मुझे न था कि बम का धूआँ इस कदर कारी निकलेगा कि मैं दरवाजे तक भी पहुँच न पाऊँगा लेकिन हुआ यही और मैं इसी जगह बेहोश हो कर गिर गया.

मैं समझता हूँ कि नन्हो वगैह्र भी अपनी - अपनी जगह पर ही बेहोश हो गई होंगी.

खैर उस समय अर्जुनसिंह और गिरिजाकुमार मेरी मदद को दौड़े, अर्जुनसिंह ने मुझे उठा लिया और गिरिजाकुमार ने वह गोला पैर से ठोकर मार कर दूर फेंक दिया, पर ये दोनों भी उस धुएँ के कारी असर से बच न सके.

अर्जुनसिंह तो उस बाद वाली कोठरी में जाते - जाते बेहोश हो गए और गिरिजाकुमार के छूते ही वह बम फटा जिससे वह इस कदर जख्मी हो गया जैसा कि आपने देखा ही है.

बेहोश होते हुए अर्जुनसिंह के कानों में एक भयानक आवाज पड़ी जो बेशक ऊपर बाली कोठरी में रखी बारूद के फटने की होगी.

(उस कोने की तरफ जाकर जहाँ छत टूटी थी) मैं समझता हूँ कि ऊपर की इमारत को बहुत बड़ा नुकसान पहुँचा होगा, मगर – अरे यह क्या, यहाँ तो आसमान नजर आ रहा है! तो क्या ऊपर की पूरी इमारत उड़ गई! " इन्द्रदेव:

मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि समूची लोहगड़ी की इमारत उड़ गई है.

ऊपर की तरफ इस समय एक भयानक खंडहर मात्र रह गया है जिसमें राजा साहब के आदमी खोद - खाद कर रहे हैं और उस सुन्दर इमारत का कहीं नाम - निशान भी नहीं है जो कल तक यहाँ मौजूद थी.

दलीप:

अफसोस भूतनाथ, यह तैंने क्या कीया !

इन्द्र:

अपनी जान भी दी और ऐसी अनमोल इमारत को जो दुनिया में अपना सानी नहीं रखती थी जड़ - मूल से नष्ट भी कर दिया.

पर मुझे अब यह कहना है कि यहाँ खड़े समय बिताना मुनासिब नहीं है.

ऊपर बहुत से आदमी लगे हुए हैं, क्या जाने कौन ढूंढता - डाँढता यहाँ तक आ पहुँचे, यह तिलिस्म का एक हिस्सा है और यह रास्ता जिससे मैं आया हूँ तिलिस्म में जाने का है.

इसे खुला छोड़ना उचित नहीं, इसे पक्की तरह बन्द कर देना ही मुनासिब है.

अगर आप कुछ भी चलने - फिरने लायक हो गए हों तो मैं पसन्द करूंगा कि हम लोग इस जगह से निकल ही चलें.

दलीप:

मैं तो बखूबी चलने - फिरने लायक हूँ पर गिरिजाकुमार बहुत चोट खाया हुआ है, शायद उसे उठाकर ले चलना पड़ेगा.

इतने ही में पीछे से आवाज आई, " वाह, मैं तो आपको उठा के ले चल सकता हूँ, आपने क्या मुझे मुर्दा समझ रखा है! " और जब इन दोनों ने घूम कर देखा तो गिरिजाकुमार और अर्जुनसिंह पर नजर पड़ी.

इन्द्रदेव ने ताज्जुब के साथ गिरिजाकुमार से पूछा, “ क्या तुम कुछ दूर चलने लायक हो?

" जिसके जवाब में उसने कहा, " बखूबी.

" और तब उस छोटी कोठरी में दो - चार दौड़ इधर से उधर लगा गया, इन्द्रदेव यह देख हँस पड़े और बोले, " खैर इम्तिहान देने की जरूरत नहीं, मेरा कहना यह था कि ऊपर का खण्डहर साफ करने के काम में बहुत - से आदमी राजा साहब के लगे हुए हैं और कोई ताज्जुब नहीं कि वे सब खोद - खाद मचाते यहाँ तक आ पहुँचे, इसलिए इस गुप्त राह जो आप लोगों ने खोली या जिसकी राह में आया इस तरह मजबूती से बन्द कर देना चाहिए कि जिसमें कोई इसे खोल न सके नहीं तो ऐरे - गैरे सभी आदमी इसके अन्दर घुसेंगे और तिलिस्म की मुसीबत में पड़ जाएँगे.

" गिरिजा:

जरूर ऐसा कर देना मुनासिब है, मगर क्या इस राह के इलावे और भी कोई राह यहाँ से बाहर निकल जाने की है या हम लोगों को उस छेद की राह बाहर होना पड़ेगा जो इस कोठरी की छत में दिखाई पड़ रहा है?

इन्द्र::

नहीं नहीं, और राह भी है, अच्छा आप लोग इसी जगह जरा ठहरिए, इतना कह इन्द्रदेव उस कोठरी में चले गए जिसके अन्दर से गिरिजाकुमार वगैरह अभी - अभी यहाँ पहुँचे थे और करीब आधी घड़ी तक भीतर जाने क्या करते रहे.

ये लोग उनके आने की राह देख ही रहे थे कि यकायक एक खटके की आवाज आई और इन्होंने देखा कि उस कोठरी का दरवाजा जो खुला हुआ था बन्द हो गया.

केवल यही नहीं नीचे की तरफ से एक पत्थर की सिल्ली खिसकती हुई ऊपर आ गई जिसने इस तरह इस जगह को ढंक लिया कि अब वहां केवल साफ संगीन दीवार दिखाई पड़ने लगी, जिसको देखकर इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि इसके पीछे कोई दरवाजा है.

गिरिजाकुमार ताज्जुब करता हुआ उसके पास गया और पत्थर की संधि पर उंगली फेरता हुआ बोला, " वाह रे कारीगरी, देखिए जरा भी दरार नहीं मालूम होती! अब क्या कोई कह सकता है कि इस जगह कभी कोई दरवाजा था?

" दलीपशाह ने कहा, " तिलिस्म बनाने वालों की कारीगरी का कुछ कहना ही क्या है! " इसी समय यकायक पुनः एक खटके की आवाज आई और इन लोगों ने देखा कि उस पत्थर के शेर की मूरत के नीचे जो उस कोठरी में बनी हुई थी एक रास्ता निकल आया है जिसके अन्दर इन्द्रदेव खड़े हैं.

इन्द्रदेव ने इन लोगों को अपनी तरफ बुलाया और जब ये तीनों उसके अन्दर चले गए तो रास्ता फिर बन्द कर लिया.

गिरिजाकुमार ने अपने को एक पतली और बहुत ही लम्बी सुरंग में पाया जो सीधी सामने की तरफ चली गई थी.

उसने यह देख कहा, " तो क्या उन लाशों को उसी जगह छोड़ दिया जायगा?

" जिसके जवाब में इन्द्रदेव ने कहा, " हाँ, इसके सिवाय और किया ही क्या जा सकता है?

मगर राजा साहब के आदमी खोज करते हुए जरूर वहाँ तक पहुँचेंगे और उनको उठा ले जाएँगे.

" इन्द्रदेव ने आगे कदम बढ़ाया और उनके पीछे - पीछे ये तीनों आदमी रवाना हुए, १.

यहीं वह रास्ता था जिसकी राह कमलिनी दोनों कुमारों को तिलिस्म में ले गई थी.

देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति, आठवाँ भाग,

दुसरा व्यान।

यकायक प्रभाकरसिंह को कई आदमियों ने पकड़ लिया और यही है, यही है, पहिले इसी को बलि देना चाहिए " इत्यादि कह - कहकर चिल्लाने लगे.

इस अचानक की मुसीबत ने प्रभाकरसिंह को घबड़ा दिया फिर भी उन्होंने अपने होश - हवास कायम रक्खे और छूटने का उद्योग करने लगे मगर उनको पकड़ने वाले पंजे वज्र की तरह कड़े थे जिन्होंने उनके लाख उद्योग करने पर भी जुम्बीश न खाई.

वे बहुत कुछ उछले - कूदे और जोर लगाया पर किसी तरह भी अपने को छुड़ा न सके बल्कि उनके उद्योग का नतीजा यह निकला कि वे और भी कस कर दवा दिए गए.

लाचार उन्होंने छूटने का उद्योग छोड़ दिया और यह जानने की कोशिश करने लगे कि उनको पकड़ने वाले कौन हैं और जिस जगह वे आ पड़े हैं वह स्थान कैसा है.

पहिली बात का पता तो उन्हें सिर घुमाते ही लग गया, उन्हें दोनों तरफ से दो तिलिस्मी शैतानों ने पकड़ा हुआ था जिनके हड्डियों वाले हाथ उन्हें शिकंजों की तरह मालूम हो रहे थे, पर दूसरी बात का पता वे ठीक - ठीक लगा न सके.

कारण जिस जगह वे थे वहाँ ऐसा अन्धकार था कि निगाह अच्छी तरह काम नहीं कर रही थी फिर भी इतना उन्होंने समझ लिया कि यह कोई बहुत बड़ा क़मरा या बालाखाना है जिसकी छत इतनी ज्यादा ऊँची है कि बिल्कुल दिखाई नहीं पड़ती.

चारों तरफ फैले हुए तरह - तरह के कल - पुर्जे और सामान धुंधले - धुंधले दिखाई पड़ रहे थे जिनके बीच की जगह किसी तरह के सामान से एकदम खाली थी.

इसी स्थान के सामने की दीवार का वह हिस्सा गिरा हुआ था जिसकी राह प्रभाकरसिंह आए थे और उस राह से जो चांदना आ रहा था उसकी मदद से प्रभाकरसिंह ने देखा कि उनके ठीक सामने की जगह दीवार के साथ संगमर्मर का एक ऊंचा चबूतरा है जिस पर कोई मूरत बैठी हुई हैं।

उस चबूतरे पर दो औरतें लाचार खड़ी प्रभाकरसिंह को दिखाई पड़ीं जिनमें से एक का मुँह उन्हीं की तरफ घूमा होने के कारण उन्होंने तुरन्त पहिचान लिया कि मालती है पर वह दूसरी औरत कौन है यह वे कुछ जान न सके इन दोनों ही औरतों को दोनों तरफ से दो - दो तिलिस्मी शैतानों ने पकड़ा हुआ था.

प्रभाकरसिंह मालती को देखकर चौके और उससे कुछ पूछना ही चाहते थे कि उन्हें पकड़ने वालों ने उनको एक धक्का दिया और उसी मूरत के पास ले चले.

पहिले तो शायद घबड़ाहट, परेशानी और अन्धकार के कारण मालती प्रभाकरसिंह को पहिचान न सकी थी. पर जब वे पास आ गए तो उसने इन्हें पहिचाना और दर्द - भरी आवाज में कहा, " हाय, क्या आप भी इन कम्बख्तों के हाथ में पड़ गए, अब जान बचना मुश्किल है.

" प्रभाकरसिंह ने पूछा, “ यह कौन जगह है और तुम यहाँ क्योंकर पहुँची?

" जिसके जवाब में मालती ने कहा, " आपको तिलिस्म में फँसा देख यह सोचकर कि शायद इससे आपको कुछ मदद मिले में इस तिलिस्म का दूसरा दर्जा तोड़ने के काम में लग गई थी मगर महराब वाले बूर्ज तक पहुँची ही थी कि इन दोनों शैतानों ने मुझे पकड़ लिया और यहाँ ले आए डर के मारे मैं बेसुध हो गई.

होश में आई तो इस तरह अपने को बेकाबू पाया.

सुनने में आया कि इसी मूरत पर बलि दे दी जाऊँगी और इसी की तैयारी हो रही थी कि बड़े धमाके के साथ वह दीवार गिर पड़ी और आप दिखाई पड़े, मगर अफसोस कि आप भी इन शैतानों के फेर में पड़ गए, अब देखिए क्या - क्या होता है! " प्रभाकर ०:

और यह तुम्हारे साथ वाली दूसरी औरत कौन है?

मालती:

मैं नहीं जानती, मैं जब से होश में आई उसे इसी तरह देख रही हूँ, अभी तक कुछ बोली - चाली या हिली नहीं है, शायद गश में हो, मगर आप हम लोगों का ख्याल छोड़िए और अपने बचाब की फिक्र कीजिए, अगर कोई राह निकल सकती हो तो.

प्रभाकरसिंह ने यह सुन गौर के साथ अपने चारों तरफ देखा मगर उसी समय उसका ध्यान एक विचित्र आवाज की तरफ गया जो उसी मूरत के मुंह से निकलती जान पड़ती थी. .

उन्होंने उस तरफ देखा और इसी समय उस मूरत के मुंह से कड़ी आवाज में निकला, " ये लोग कौन हैं?

" प्रभाकरसिंह को पकड़े हुए दोनों शैतानों में से एक ने कहा, " कृपानिधान, ये लोग तिलिस्म की दौलत लूटने के लिए अन्दर घुसे थे इसलिए गिरफ्तार किए गए हैं, नियामानुसार इनकी बलि होनी चाहिए.

" उस मूरत ने कहा, " ठीक है, ठीक है, मैं इन बदमाशों को बखूबी पहिचान गया, अब देर करने की जरूरत नहीं है, तुम लोग अपना काम पूरा करो.

" इतना सुनते ही वे शैतान अपनी - अपनी जगह से हटे और पारी - पारी से सभों ने बेहोश औरत मालती और प्रभाकरसिंह का सर जबर्दस्ती उस मूरत के पैर से लगाया.

इसके बाद उस औरत को लिए हुए दो शैतान उस चबूतरे पर चढ़ गए जिस पर वह मूरत थी.

एक शैतान ने उस बेचारी को जोर से उस मूरत पर ढकेल दिया, साथ ही खाँड़े वाला हाथ गिरा और औरत का सिर कट कर दूर जा पड़ा.

उस चबूतरे के ऊपर वाले दोनों शैतान अपना भयानक काम पूरा कर नीचे उतर आए और अब प्रभाकरसिंह को पकड़ रखने वाले दोनों शैतान उस चबूतरे पर चड़े, यद्यपि प्रभाकरसिंह ने अपने को छुड़ाने के लिए बहुत कुछ कोशिश की और जोर लगाया पर सब व्यर्थ हुआ.

उन तिलिस्मी शैतानों के हाथ में वे बिल्कुल बच्चे के समान थे जिन्होंने उन्हें मूर्ति के पैर पर ढकेल दिया और पीछे हट गए, साथ ही उनमें से एक शैतान आगे बढ़ा और चाहता

ही था कि अपने खाँड़े से प्रभाकरसिंह की गर्दन उड़ा दे कि इतने ही में तड़प कर प्रभाकरसिंह दूर हट गए.

जो एक सायत का अवसर उन्हें मिला जब कि दोनों शैतानों के हाथ उन पर से हट गए थे उसी में उन्होंने इतना काम बना लिया था.

यह देख कि उनका शिकार उनके हाथों से निकल भागना चाहता है उन शैतानों के गले से एक डरावनी आवाज निकली और प्रभाकरसिंह को पकड़ने के लिए झपटे पर यह कतरा कर उनके सामने से निकल गए और उस मूरत के पीछे हो गए जिसके और उस कमरे की दीवार के बीच में एक आदमी के घुस जाने लायक रास्ता था, वे उस जगह पहुँचे ही थे कि यकायक उस मूरत की पीठ में उन्हें कोई चीज चमकती हुई नजर आई.

गौर से देखा तो मालूम हुआ कि कुछ अक्षर हैं जो न - जाने किस तरह के मसाले से लिखे गए हैं कि उस अन्धकार में जुगनू की तरह चमक रहे हैं.

जरूर यह बात मतलब से खाली न होगी यह सोच प्रभाकरसिंह गौर से देखने लगे.

वे अक्षर ये थे:

स प र क त ल h:

स प अ स्म ho र य थ he न अ ग अ। कुछ ही गौर ने प्रभाकरसिंह को इन हरूफों का मतलब बता दिया और तुरंत ही उन्होंने उसके मुताबिक कार्रवाई भी की.

दोनों शैतान उनका पीछा करते हुए उनके दोनों तरफ आ गए थे और हाथ बड़ा कर उन्हें पकड़ना ही चाहते थे कि उन्होंने अपना तिलिस्मी डण्डा सम्हाला और बगल से हाथ बड़ा उसका सिरा उस मूरत के दाहिने पैर के अँगूठे से छुला दिया.

डंडे का छूना था कि मूरत के गले से एक डरावनी आवाज आई और साथ ही उसके मुँह के अन्दर से आग का फौबारा - सा निकल पड़ा इस आग की एक चिनगारी सामने वाले शैतान के सिर पर गिरी जिसके साथ ही उसके सिर से भी वैसी ही लपट निकलने लगी.

उसकी यह हालत देखते ही वहां मौजूद सभी शैतान चिल्लाते हुए दूर भागे पर बच न सकें, चिनगारियाँ उनके बदन पर भी पड़ी जिसके साथ ही वे सब - के - सब भी अनार या फुलझड़ी की तरह बलने लग गए.

उन शैतानों की यह हालत देख प्रभाकरसिंह खुशी - खुशी उस मूरत की पीछे से निकले और मालती के पास पहुँचे जो डरी और सकपकाई हुई उसी जगह खड़ी थी प्रभाकरसिंह ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, " यहाँ इस तरफ निकल आओ, जहाँ तुम हो वहाँ तो चिनगारियों के मारे खड़ा होना मुश्किल है! " अभी ये दोनों मुश्किल से थोड़ी दूर हटे होंगे कि इन्होंने देखा कि चिनगारियाँ उस चबूतरे के ऊपर वाली मूरत के बदन से भी निकलने लगी हैं जो शैतानों को जला कर अब स्वयं भी जलने लग गई थी.

पर इस मूरत के बदन में एक विशेषता थी जो उन शैतानों के साथ न थी. अर्थात् इसके बदन से चिनगारियों के साथ - साथ बहुत - सा धुआँ भी निकल रहा था जिससे वह स्थान भरने लगा था.

यह धूआँ बड़ा ही कड़ुआ और तबीयत को घबड़ा देने वाला था तथा शायद इसमें कुछ बेहोशी का भी असर था क्योंकि यद्यपि प्रभाकरसिंह और मालती उस स्थान से बहुत दूर हट कर खड़े हुए थे तो भी जो कुछ धूआँ उनकी आँख - नाक में तथा साँस की राह पेट के अन्दर गया उससे उनका सिर चक्कर खाने लगा और कुछ ही देर में वे बदहवास होकर जमीन पर बैठ गए.

जब इन दोनों के होश - हवास ठिकाने हुए और इन्होंने आँखें खोली तो देखा कि दिन प्रायः अस्त हो चुका है और इस जगह का अंधेरा और भी घना हो गया है.

चबूतरा जहाँ पर वह मूरत बैठाई हुई थी इस समय एक - दम खाली था मगर उस पर तथा उसके नीचे भी बहुत - सी लाल रंग की राख गिरी हुई बता रही थी कि वह मूरत जल कर एकदम राख हो गई है.

प्रभाकरसिंह के साथ - साथ मालती भी अब होश में आ गई थी और आश्चर्य के साथ चारों तरफ देख रही थी.

आखिर उसने कहा, “ मालूम होता है कि चबूतरे वाली सूरत जल कर भस्म हो गई पर आश्चर्य की बात है कि मैं उस औरत की लाश कहीं नहीं देख रही हूँ जो हमारे सामने ही बलि दे दी गई थी.

क्या उसे कोई उठा ले गया?

" प्रभाकरसिंह ने यह देख कर कहा, " नहीं, उठा कौन ले जायगा, मगर आखिर वह लाश गई कहाँ?

वह चबूतरे से गिर कर नीचे जमीन पर आ गई थी, शायद उस दूसरी तरफ तो नहीं है, देखना चाहिए! " कह कर वे उठ खड़े हुए और मालती भी उठी.

दोनों उस चबूतरे के पास आए और चारों तरफ तलाश करने लगे मगर कहीं वह लाश दिखाई न पड़ी, हाँ जहाँ वह गिरी थी उस जगह भी बहुत - सी सुफेद रंग की राख पड़ी हुई नजर आई जिसे देख प्रभाकर सिंह ने कहा, “ मालूम होता है कि वह औरत भी कोई तिलिस्मी कारीगरी थी और उन शैतानों के साथ ही जल गई क्योंकि यहाँ तो सिवाय इस सुफेद राख के और कुछ नजर नहीं आ रहा है.

" मालती ने यह सुन कहा, " शायद ऐसा ही हो " और तब उस चबूतरे का सहारा लेकर खड़ी हो गई क्योंकि उसके सिर में अभी तक चक्कर आ रहे थे और बेतहाशा दर्द हो रहा था जो शायद उसी धूएँ का असर था। प्रभाकरसिंह ने यह देख और उसकी हालत समझ कर कहा, " बेहतर हो कि तुम इस जगह आ कर बैठो और अपना हाल मुझसे कह जाओ.

मेरा भी सर दर्द कर रहा है, तबीयत ठीक होने पर आगे की कार्रवाई शुरू की जायगी.

" मालती ने यह सुन " बहुत खूब " कहा और तब प्रभाकरसिंह उसे लिए हुए उसी टूटी दीवार के पास जा बैठे जहाँ से वे इस स्थान में पहुँचे थे और जहाँ से इस समय दिमाग को ताजगी देने वाली हवा के ठण्डे - ठण्डे झोंके आ रहे थे.

यहाँ आकर मालती की तबीयत कुछ ठीक हुई और उसने प्रभाकरसिंह को उनकी गैरहाजिरी में हुआ भया सब हाल सुनाना शुरू किया जो कि पाठक ऊपर पढ़ ही चुके हैं.

अपनी और मालती की तस्वीरें, तिलिस्मी भुजाली का पाना इत्यादि हाल सुन प्रभाकरसिंह को बहुत ही आश्चर्य और प्रसन्नता हुई मगर जब मालती ने कहा कि ' बुर्ज पर से नीचे के बाग में उसने एक मर्द और दो औरतों को देखा था ' तो ताज्जुब के साथ ख्याल दौड़ाने लगे कि वे कौन हो सकते हैं पर कुछ निश्चय नहीं कर सके.

मालती से लेकर उन्होंने भुजाली और उसके जोड़ की अंगूठी देखी और उसकी विचित्र बनाबट, अद्भुत सुनहला रंग और उसमें से निकलने वाली चमक को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए,

मालती ने यह देख कर कहा, " यह आपके लायक चीज है, आप ही इसे रखिए.

" पर उन्होंने सिर हिला कर जवाब दिया, ' नहीं, यह जब तुम्हें मिली है तो तुम्हें ही रखना वाजिब है, मेरे लिए मेरा डण्डा बहुत काफी है.

" यह सुन मालती ने इस विषय में कुछ न कहा और बोली, " मैंने अपना हाल कह सुनाया, अब आप अपना किस्सा बयान किजे.

" इसके जबाब में प्रभाकरसिंह ने अपना भी कुल वह हाल जो हम ऊपर लिख आए हैं मालती से कह सुनाया जिसे वह बड़े गौर और ताज्जुब के साथ सुनने लगी.

मगर वे पूरा हाल कह भी न पाए थे कि उनका ध्यान किसी तरह की आवाज ने अपनी तरफ खींचा जो कुछ देर से वहाँ पर पैदा हो रही थी.

वह किसी तरह के कल - पुरजों के घूमने की - सी आवाज थी और कहीं दूर से आती हुई जान पड़ती थी जिसने आखिर मालती का ध्यान भी आकर्षित कर लिया और वह चारों तरफ देख कर बोली, " यह आवाज कैसी हो रही है?

" दोनों देर तक गौर करते रहे पर कुछ निश्चय न कर सके.

इसी समय जब एक खटके की आवाज हुई और छत पर लगे हुए कई गोले चमकने लग गए जिससे वह स्थान रोशनी से भर गया तो प्रभाकरसिंह ने अपना हाल कहना बन्द कर दिया और उठ खड़े हुए.

उनकी देखा - देखी मालती भी उठ खड़ी हुई और जब ये लोग उस चबूतरे के पास पहुंचे तो मालूम हुआ कि वह आवाज उसी के अन्दर से आ रही है ।

प्रभाकरसिंह उचक कर चबूतरे के ऊपर चढ़ गए और देखा कि उस जगह जहाँ वह मूरत बैठाई हुई थी एक गहरा गड्ढा दिखाई पड़ रहा है और उसी के अन्दर से बह विचित्र आवाज आ रही है.

उन्होंने मालती से यह बात कही और उसके आग्रह पर उसको भी चबूतरे के ऊपर चढ़ा लिया.

मालती कुछ देर तक उस आवाज पर गौर करती रही और तब बोली, " हम लोगों को अब क्या काम करना है?

" प्रभाकरसिंह ने कहा, " तिलिस्मी किताब के कथनानुसार इस गड्ढे के अन्दर उतरना चाहिए.

" मालती बोली, “ तब अपना काम शुरू करिए, शायद हमारे देर करने का कोई उलटा असर हो.

" प्रभाकरसिंह ने यह सुन कहा, " अच्छी बात है तब फिर आओ " और उस गड़हे के अन्दर पैर रखा.

पतली - पतली सीढ़ियाँ दिखाई पड़ीं जिन पर आगे - आगे प्रभाकरसिंह और पीछे - पीछे मालती उतरने लगी.

करीब - करीब बीस सीढ़ियाँ उन्हें उतरनी पड़ी और तब इन लोगों ने अपने को एक विचित्र जगह में पाया.

एक अद्भुत और खुशनुमा बनाबटी बाग था जिसके बीचोबीच में एक छोटी बावली बनी हुई थी.

छोटे - छोटे बनाबटी पेड़ जो शायद किसी मसाले के बने थे, बनावटी ही फूलों से लदे हुए अपनी विचित्र शोभा दिखला रहे थे और एक तरफ बने बनाबटी पहाड़ की छोटी - छोटी खोहों और कन्दराओं में खड़े और बैठे तथा उस बाग की रविशों पर भी जगह - जगह घूमते - फिरते हुए तरह - तरह के जानवर भी दिखलाई पड़ रहे थे जो सब - के - सब बनाबटी होते हुए भी इस कारीगरी के साथ बने थे कि देखकर तबीयत फड़क उठती थी और अगर असली कद से छोटे - छोटे न होते तो जल्दी इसकी पहिचान करना भी मुश्किल होता कि ये सब जानवर असली नहीं हैं बल्कि बनावटी और किसी धातु के बने हुए हैं.

एक और विचित्रता जो सबसे बड़ी बात थी वह यह थी कि ये सभी चीजें न जाने किस शक्ति की बदौलत हरकत कर रही थीं.

पेड़ों के फल - पत्ते और डालियाँ इस तरह झूम रहे थे मानों मन्द - मन्द हवा उनमें बह रही हो, जानवर इस तरह घूम फिर रहे थे मानों अपने भोजन या आराम की तलाश में हों, नाजुक खूबसूरत चिड़ियाँ इधर से उधर फुदकती हुई कभी इस डाली पर, कभी उस डाली पर जा बैठती थीं और कभी - कभी मस्ताने स्वर में मनोहर गीत भी ऐसी सफाई से उनके कंठ से निकल पड़ता था कि सुनने वाले का मन मुग्ध हो जाता था.

चारों तरफ दीवारों के साथ लगे और बड़ी तेजी से चमकते हुए कई गोलों की रोशनी से वह बड़ा क़मरा जगमग कर रहा था जिसमें यह सब सामान प्रभाकरसिंह देख रहे थे.

यहाँ की विचित्रता के देखने में वे ऐसा मग्न हुए कि कुछ देर तक अपने तनोबदन की सुध भूल गए पर जब उन्हें होश हुआ तो वे मालती की तलाश में घूमे, देखा तो वह भी उनके बगल ही में खड़ी मुग्ध दृष्टि से वहाँ का दृश्य देख रही है.

वे उससे बोले

प्रभा:

तिलिस्मी कारिगरी की भी हद हो गई है, भला इसको देखकर भी कोई कह सकता है कि मनुष्य के लिए कोई काम असम्भव है ।

मालती:

मैं तो समझती हूँ कि तिलिस्म के बनाने वाले मनुष्य नहीं देवता थे.

ऐसी कारीगरी मनुष्यों से बन नहीं सकती.

मगर मुझे खयाल पड़ता है कि इस बाग को मैंने कहीं देखा है.

प्रभा:

यह वही बाग है जिसको तिलिस्मी किताब में " आनन्द - वन ' कह कर लिखा गया है.

यहीं पर हमें कुछ पुतलियों के हाथ से तीर - कमान लेकर एक शेर की आँखों में तीर मारना होगा जिसके बाद बावली के अन्दर से तिलिस्म के तीसरे दर्जे में जाने का रास्ता

निकलेगा.

मालती:

हाँ ठीक है, मुझे याद आ गया, मगर मैंने इसे देखा भी है.

आपको याद होगा कि मैंने कहा था कि जब आप गायब हो गए तो मैंने एक छेद की राह एक बाग में ऐसा भयानक दृश्य देखा कि जिससे मेरी तबीयत घबरा उठी.

प्रभा:

हाँ, तुमने कहा था कि दो शैतान एक लाश उठा कर लाए और उसे काट कर घड़ियालों को खिलाने लगे.

मालती:

जी हाँ, उस समय मैंने इसी बाग को देखा था.

खैर अब आगे का काम शुरू करना चाहिए.

बातचीत में समय बिताना व्यर्थ है ।

प्रभाकरसिंह ने कहा, " ठीक है " और तब आगे बढ़े.

हम ऊपर लिख आए हैं कि इस बनाबटी बाग में तरह - तरह के बनावटी जानवर मौके - मौके पर दिखाए गए थे.

इन्हीं के बीच में उस बावली के पास खड़ी दो औरतें भी थीं जो हाथ में तीर पकड़े बड़े गौर से जल के भीतर की किसी चीज को इस प्रकार देख रही थीं मानों उस पर निशाना लगाना चाहती हो.

इन दोनों ही औरतों की पीठ पर तरकस थे जिसमें तीर भरे हुए थे, " ठीक है " कहकर प्रभाकरसिंह अपनी जगह से दो चार कदम ही आगे बड़े थे कि इनमें से एक औरत यकायक घूमी और उनकी तरफ लक्ष्य करके इस फुर्ती और तेजी से उसने अपनी कमान का तीर छोड़ दिया कि अगर प्रभाकरसिंह की निगाह भी उस समय उन्हीं पर न होती और वे तुरन्त बैठ न गए होते तो तीर जरूर घायल करता पर उनकी फुर्ती के कारण ऐसा न हुआ और वह सनसनाता हुआ उनके पीछे की दीवार से टकराकर गिर पड़ा.

प्रभाकरसिंह यह देख उठे और तुरन्त कई कदम हट गए और उधर उस औरत ने एक दूसरा तीर अपने तरक़स से निकाला और कमान पर चढ़ा फिर घूमकर पहिले की तरह खड़ी हो गई.

प्रभाकरसिंह ने मालती को बताकर कहा, " हमें उस औरत के हाथ से तीर - कमान लेकर उस शेर की आँख पर निशाना लगाना पड़ेगा, पर यह काम सहज नहीं जान पड़ता.

" मालती बोली, " सहज भला काहे को होगा, मगर एक बार मुझे कोशिश करने दीजिए.

" प्रभाकरसिंह ने यह बात न मानी और कहा, " नहीं पहिले मैं देख लूँ, जब न कर पाऊँगा तो तुम खतरे में जाना.

" मालती यह सुन चुप हो रही और प्रभाकरसिंह फिर आगे बड़े मगर इस बार पहिले की तरह वे सीधे उन औरतों की तरफ नहीं गए बल्कि चक्कर काटते हुए उनकी पीठ की तरफ बड़े.

मगर इसका भी कोई नतीजा न हुआ, ठीक पीठ की तरफ होकर भी जैसे ही वे उस औरत के नजदीक बड़े वैसी ही वह फिर पहिले की तरह घूमी और पुनः उन पर अपना तीर चलाया.

अपनी तेजी और फुर्ती की बदौलत इस बार भी प्रभाकरसिंह ने अपने को बचा लिया मगर इतना वे जान गए कि जो तर्कीब उन्होंने सोची थी वह काम न देगी.

वे कुछ पीछे हटकर खड़े हो गए और सोचने लगे कि क्या करना चाहिए.

यकायक उन्हें कोई बात सूझ गई, उनके ख्याल में आया कि उन औरतों के चारों तरफ घास का एक जो रमना बना हुआ दिखाया गया है, दोनों दफे उस रमने पर पैर रखते ही उस औरत ने तीर छोड़ा था.

यह ख्याल आते ही उन्होंने पास ही में बने बनावटी पहाड़ में से एक बड़ा - सा ढोंका उठा लिया और आजमायश की तौर पर उस सब्जी पर फेंका.

पत्थर के डोके का गिरना था कि वह औरत घूमी और उसने उस ढोंके को अपने तीर का निशाना बनाया.

अब वे सब कारीगरी समझ गए.

केवल यदि उस सब्जी पर पैर न पड़े तो उन तीरों से किसी तरह का खतरा नहीं है यह जानते ही वे उस बनावटी पहाड़ पर चढ़ गए और पार कर उसकी तलहटी में बनी हुई बावली की सीढ़ियों पर जा उतरे.

पुतलियों ने जुम्बीश न खाई, जल के अन्दर ही अन्दर पैर रखते हुए प्रभाकरसिंह ने पुतली के पास जा उसके हाथ से तीर कमान ले लिए और तब उसी तरह फिर अपनी जगह आ गए.

मालती बोली, आपकी सूझ तो खूब काम कर गई! अब उस शेर पर निशाना लगाना चाहिए जो वहाँ उस झाड़ी के अन्दर दिखाई दे रहा शेर की बाईं आँख में तीर लगना चाहिए और एक ही तीर से यह काम होना भी चाहिए अस्तु निशाना चूके नहीं.

" " ईश्वर चाहेगा तो निशाना न चूकेगा.

" कहकर प्रभाकरसिंह आगे बड़े और एक मुनासिब जगह पर खड़े हो उस की आँख का निशाना लगाने लगे.

बहुत अच्छी तरह निशाना साध वे तीर छोड़ना ही चाहते थे कि यकायक चौंक गए.

कोई चीज सनसनाती हुई उनके पीछे से आई और कान के पास से निकल गई, साथ ही मालती की आवाज आई, " ठहरिए - ठहरिए, वह दूसरी पुतली दगा कर रही है! " प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब के साथ घूमकर देखा.

पहिली पुतली की साथिन वह दूसरी पुतली उनकी तरफ घूमी हुई थी और उन्हें लक्ष्य कर एक दूसरा तीर छोड़ना ही चाहती थी.

वे पीछे हट गए जिससे उस पुतली का हाथ रुक गया और उसी समय मालती ने कहा, " मैं इस झगड़े को साफ किए देती हूँ.

" जिस तरह जाकर प्रभाकरसिंह तीर - कमान लाये थे उसी तरह से जाकर मालती ने इस दूसरी पुतली के हाथ से तीर - कमान ले लिया और तब प्रभाकरसिंह के पास वापस

आकर बोली, " आप बेधड़क काम कीजिए.

" प्रभाकरसिंह फिर आगे बड़े और उस शेर की आँख पर निशाना लगा उन्होंने तीर छोड़ दिया, साथ ही मालती के मुंह से निकला, " वाह! " तीर सनसनाता हुआ जाकर ठीक शेर की बाई आँख में लगा था.

तीर का लगना था कि वह शेर गरजा और सामने की तरफ झपटा.

बाबली के पानी में झुका हुआ एक बारहसिंघा पानी पीता हुआ बनाया गया था जिसको उस शेर ने जाकर दबोच लिया और तब उसकी गर्दन पकड़ घसीटता हुआ फिर अपनी झाड़ी के अन्दर चला गया.

बाह्रसिंघे का हटना था कि एक तरह की आवाज आई और पानी में जोर - जोर की लहरें पैदा होने लगीं.

थोड़ी देर बाद ऐसा मालूम होने लगा कि बावली का पानी किसी छेद की राह भीतर समाने लग गया है क्योंकि पानी की सतह नीची होने लगी और सीड़ियाँ भी तेजी से खाली होने लगी.

पानी इस जोर से घट रहा था कि घड़ी - भर के अन्दर ही वह बावली करीब - करीब खाली हो गई.

सिर्फ नीचे की तरफ थोड़ा - सा कीचड़ - मिला पानी बच गया था जिसके अन्दर दो घड़ियाल शायद मरे पड़े नजर आ रहे थे.

बावली अन्दाज से बहुत ज्यादा गहरी थी और उसकी सीढ़ियों से करीब दस - बारह डंडा नीचे उतर कर एक रास्ता दिखाई पड़ रहा था जिसके अंदर आदमी बखूबी जा सकता था.

प्रभाकरसिंह उसी छेद की तरफ बड़े और उनके पीछे - पीछे मालती भी बावली की सीढ़ियाँ उतरने लगी.

प्रभाकरसिंह उस छेद के पास पहुंचे और उसके अन्दर जाना ही चाहते थे कि यकायक न - जाने क्या देख कर चिहुँके और रुक गए.

उनके मुँह से आश्चर्य की एक चीख निकल गई जिसने मालती को भी चौंका दिया.

वह भी आगे बढ़ी और उनके बगल में पहुँच उसने भी छेद के अन्दर झाँका.

इसके साथ ही उसके मुँह से भी आश्चर्य की आवाज निकल पड़ी और तब एक चीख मार कर वह उसी छेद के अन्दर घुस गई.

साथ ही एक खटके की आवाज हुई और वह रास्ता बन्द हो गया, प्रभाकरसिंह खड़े आश्चर्य के साथ देखते ही रह गए।

तीसरा व्यान।

डर से कॉपता हुआ भूतनाथ भागा और अपने सामने पानी का एक हौज देख उसके अन्दर कूद पड़ा.

यह हौज सिर्फ पानी का खजाना न था बल्कि एक तिलिस्मी रास्ता भी था जिसके अन्दर कूदने के साथ ही भूतनाथ को तनोबदन की सुध न रह गई.

उसे बिल्कुल न मालूम हुआ कि इसके बाद लोहगढ़ी की क्या हालत हुई अथवा उसकी करनी का क्या नतीजा निकला, मगर हमारे पाठक बखूबी जानते हैं कि इसके बाद एक ही क्षण में लोहगढ़ी की समूची इमारत उड़ गई.

मिट्टी, पत्थर, चूने और लोहे के ढोंके सब तरफ फैल गए जिससे केवल बह कुंड पट ही नहीं गया बल्कि वह समूचा स्थान इस तरह भर गया कि उस कुंड का दिखना भी बन्द हो गया.

भूतनाथ जब होश में आया उसने अपने को एक झोंपड़े के अन्दर पत्तों के बिछावन पर पड़े हुए पाया.

उसका अंग - अंग दूख रहा था और सिर में इस शिद्दत का दर्द हो रहा था कि आँख नहीं खुलती थी.

पर फिर भी किसी तरह अपने को सम्हाल जब उसने सिर उठाकर चारों तरफ देखा तो पहिली बात उसे यही दिखाई पड़ी कि उसके तमाम बदन पर पट्टियाँ बँधी हुई हैं.

वह किस तरह इतना जख्मी हो गया या किसने उसकी मरहम - पट्टी की इस बात को वह बहुत सोचने पर भी समझ न सका मगर इतना जरूर हुआ की सोचने - विचारने के लिए दिमाग दौड़ाने पर सिर का दर्द बहुत ज्यादा बढ़ गया जिससे लाचार होकर उसने यह कोशिश छोड़ दी और दूसरी बातों की तरफ ध्यान देने लगा.

उसने देखा कि वह छोटा झोंपड़ा बाँस की पत्तियों और डालों का बना हुआ है और उसकी छत किसी तरह के बड़े - बड़े पत्तों से छाई हुई है.

उसके ठीक सामने झोंपड़े का दरवाजा था जो बाँस की जालीदार टट्टी से मजबूत बन्द किया हुआ था.

उसने यह भी देखा कि उसके सिरहाने की तरफ हाथ की पहुँच के अन्दर पानी का एक घड़ा तथा लोटा रक्खा हुआ है और दूसरी तरफ एक दूसरा मिट्टी का बरतन है जिसमें शायद खाने का कुछ सामान होगा.

बस इसके सिवाय उस झोंपड़े के अन्दर कुछ भी नहीं था.

इन चीजों की देखभाल के साथ - ही - साथ भूतनाथ को एक दूसरी फिक्र पैदा हुई, उसका ऐयारी का बटुआ जिसके अन्दर बहुत - सी बेशकीमत चीजें थीं कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा था.

उसका हाथ अपनी कमर पर गया पर वहाँ कुछ भी न था.

चारों तरफ देखा, पर कहीं अपना बटुआ दिखाई न पड़ा और यह एक ऐसी बात थी. जिसने उसको एकदम से घबड़ा दिया.

यद्यपि वह बहुत ही कमजोर हो रहा था फिर भी चौंककर उठ बैठा और चारों तरफ देखने लगा.

मगर कहीं भी उसकी वह जान से प्यारी चीज, उसका ऐयारी का बटुआ, उसे नजर न आया.

वह परेशान हो गया और घबड़ाकर तरह - तरह की बातें सोचने लगा, मगर किसी तरह की भी बात सोचने के साथ ही उसके सिर का दर्द बढ़ जाता था जिससे लाचार हो कुछ

सायत बाद उसने सोचना - विचारना फिर बन्द कर दिया और यह जानने की फिक्र में पड़ा कि उसकी चोटें किस तरह की हैं और कैसे उसे लगीं.

इतना तो उसे याद था कि उस शैतान की बातों से डर और अपनी मशाल फेंक वह पानी के एक हौज में कूद पड़ा था पर इसके बाद का कुछ भी हाल उसे याद न था.

आखिर उसने बदन की एक पट्टी खोल डाली और घाब को बड़े गौर से देखने लगा.

वहाँ का स्थान अभी तक नीला था और बीचोबीच में एक इस तरह की गहरी खरोंच लगी हुई थी मानों किसी ने उसे पत्थर के ढोंके या ऐसी ही किसी नोकीली भारी चीज से मारा हो.

किसी तरह की पत्ती पीसकर उसकी लुगधी वहाँ रख पट्टी बाँध दी गई पर बूटी ने उस चोट का दर्द बहुत - कुछ कम कर दिया था और खून बहना तो एकदम ही बन्द हो गया था.

भूतनाथ ने एक दूसरी पट्टी खोली और उस घाव को भी देखा.

पहिले ही की तरह पाया और इस पर वह धीरे - से बोल उठा, " मालूम होता है, लोहगड़ी उड़ गई और उसके ढोंके पानी में गिरे जिन्होंने मुझे इस कदर जख्मी किया.

लेकिन अगर यही बात है तो जरूर मैं बहुत देर तक बेहोश रहा हूँ, बल्कि कई दिनों तक बेहोश पड़ा रहा होऊ तो भी ताज्जुब नहीं.

!! वह कहाँ पर है, जिस हौज में वह कूदा था वह कितनी दूर है, लोहगढ़ी वाला ढीला यहाँ से कितने फासले पर है, उसे यहां पर कौन लाया और किसने मलहम - पट्टी की, इत्यादि बहुत - सी बातें भूतनाथ के दिमाग में दौड़ने लगी जिसका कोई भी जवाब वह न पा सका.

आखिर वह यह सोचने लगा कि अभी वह किसी तरह का सफर करने या कहीं आने - जाने लायक नहीं है परन्तु बिना कुछ खाए - पीए इस तरह उस झोंपड़े के अन्दर भी कब तक बैठा रह सकता था.

आखिर वह उठा खड़ा हुआ और झोंपड़े के दरवाजे की तरफ बढ़ा मगर दो - एक कदम से ज्यादा जा न सका, सिर में चक्कर आ गया जिससे लाचार हो उसे झोंपड़े की दीवार

थाम खड़े हो जाना पड़ा.

मगर भूतनाथ इस तरह सहज ही में मानने वाला जीव भी न था, जरा देर रुककर वह फिर आगे बढ़ा और कई कदम चलकर झोंपड़े के बीचोबीच तक पहुँच गया मगर यहाँ आकर उसकी ताकत ने एकदम जबाब दे दिया और उसे जमीन पर बैठ जाना पड़ा.

भूतनाथ जमीन पर बैठा तो कमजोरी और सिर में चक्कर आने के कारण पर उसकी तीक्ष्ण बुद्धि ने उस वक्त भी उसका साथ छोड़ा न था तथा वह तुरन्त ही एक बात पर गौर करने लगा जिसने उसका ध्यान आकर्षित किया था और जो यह थी कि जिस जगह पर वह बैठ गया था उस जगह की जमीन उसे कुछ नर्म मालूम हुई जिसके अन्दर उसके हाथ की हथेली धंस गई थी.

उस झोंपड़ी की समूची सतह गोबर से लिपी हुई और बड़ी साफ - सुथरी तथा ठोस थी जिसके विपरीत इस स्थान को ऐसा ना पाया. उसे शक हुआ और उसने हाथ ही से वहाँ पर खोदना शुरू किया ।

शीघ्र ही मालूम हो गया कि उस जगह कोई गड्ढा था जो मामूली ढंग से मिट्टी भरकर बन्द कर दिया गया था और ऊपर से लिप जाने की वजह सरसरी निगाह से उसका पता नहीं लगता था.

भूतनाथ ने सहज ही में उस गड्डे की मिट्टी बाहर निकाल डाली और तब उसके नीचे अपना ऐयारी का बटुआ अपने ही एक कपड़े में लपेटा हुआ रखा पाया.

बटुआ पाते ही उसके मुँह से आश्चर्य की चीख निकल पड़ी.

उसकी गाँठ पर निगाह डालते ही वह जान गया कि किसी ने उसे खोला नहीं है फिर भी उसने उसको खोल डाला और भीतर की चीजों की जाँच की.

सब कुछ ठिकाने से और दुरुस्त पा वह और भी प्रसन्न हुआ.

उसने बटुए में से एक शीशी निकाली और उसमें की कुछ दवा खाने के बाद पुनः अपनी जगह यानी उस पत्तियों वाले बिछावन पर आ बैठा, तब बटुए में से एक छोटी - सी किताब निकाल कर उसे पड़ने लगा.

हमारे पाठक शायद इस किताब को पहिचान गए होंगे क्योंकि यह वही है जिसे भैयाराजा से गोपालसिंह ने पाया था और जिसे नन्हों ने उन्हें धोखा देकर ले लिया था अथवा जिसे भूतनाथ ने नन्हों को भी उल्लू बनाकर अपने कब्जे में कर लिया था.

भूतनाथ इस तिलिस्मी किताब के पढ़ने में इतना मग्न हुआ कि उसे तनोबदन की सुध न रह गई और न यही खयाल रहा कि वक्त कितना बीत गया है.

वह शायद उसे समाप्त किए बिना सिर न उठाता पर यकायक झोंपड़े का दरवाजा खुलने की आहट पा और वहां किसी की छाया देख चौंक पड़ा.

सिर उठाकर देखा तो एक वृद्ध बाबाजी को दरवाजा खोलकर अन्दर आते हुए पाया जिनके एक हाथ में लोटा तथा दूसरे में कुछ और सामान था.

उसने फुर्ती के साथ किताब बन्द कर बटुए के हवाले की और तब बटुआ अपनी कमर में बाँधता हुआ उठ खड़ा हुआ.

इस बीच में बाबाजी भी उसके पास पहुंच और उसे जाँचने वाली निगाह से देखने के बाद बोले, “ भगवान की बड़ी कृपा है जो मैं तुम्हें सब तरह से दुरुस्त और होशहवास में पाता हूं!! भूतनाथ ने गौर की निगाह से महात्मा को देखा और तब हाथ जोड़ प्रणाम करने के बाद कहा, “ मालूम होता है आप की ही कृपा से मैं इस स्थान में हूँ और आप ही की बाँधी हुई अद्भुत बूटी के प्रभाव से मेरे घाव अच्छे हुए हैं:

महात्मा ने उसे अपने स्थान पर बैठने का इशारा करते हुए कहा, “ हाँ तुम ऐसा ही समझो, अब इस समय दर्द कैसा है?

" भूतनाथ बोला, “ बहुत क़म बल्कि नहीं के बराबर है, घाव करीब - करीब पुर गए हैं, और सिवाय कमजोरी के और किसी तरह की तकलीफ नहीं जान पड़ती, मगर मैं यह जानने के लिए व्याकुल हूँ कि मैं किस तरह इस जगह पहुँचा और मुझे इस हालत में कितना समय गुजर चुका है?

" महात्मा ने जवाब दिया, " तुम अपने स्थान पर जाकर बैठो तब मैं तुम्हारी बातों का जबाब दूंगा.

तुम बहुत सख्त जख्मी हुए थे और इसमें कोई शक नहीं कि अब भी बहुत कमजोर होगे.

" भूतनाथ बोला, " नहीं, नहीं, अब मैं बिल्कुल दुरुस्त हूँ फिर भी आपकी आज्ञा मानने को तैयार हूँ, पर आप भी तो कहीं आसन ग्रहण कीजिए.

" वह अपने स्थान पर जा बैठा और महात्मा भी अपने हाथ का सामान जमीन पर रखकर उसके सामने ही मगर कुछ दूर हट कर एक जगह बैठ गए,

दोनों में बातचीत होने लगी.

भूत:

हा महाराज, अब बताइए कि यह कौन - सी जगह है और जमानिया यहाँ से कितनी दूर है?

महात्मा:

जमानिया यहाँ से दस कोस पर है और यह झोंपड़ी मेरा निवास स्थान है.

भूत:

आपने मुझे कहाँ और कब पाया?

महात्मा:

आज तीन रोज हुआ मैंने यहाँ से थोड़ी दूर पर तुम्हें जंगल में एक नाले के किनारे बहुत ही चोटिली हालत में पाया.

भूत:

तीन रोज हुए! महात्मा:

हाँ, तीन दिन हुए, तुम्हारी हालत बहुत ही खराब थी और ऐसा जान पड़ता था मानों तुम किसी बहुत ही ऊंची जगह से गिरकर चुटीले हो गए अथवा कोई भारी चीज तुम्हारे ऊपर लुढ़क पड़ी हो.

कुछ लोगों की मदद से मैं तुम्हें यहाँ उठवा लाया और इलाज करने लगा.

वाह रे ईश्वर की दया से आज तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूँ नहीं तो मैं तुम्हारी जिन्दगी से नाउम्मीद हो गया था.

भूत:

(कुछ रुकता हुआ) क्या आप कुछ कह सकते हैं कि जमानिया में किसी तरह की दुर्घटना हुई है?

महात्मा:

सिवाय इसके और कोई समाचार तो मैंने नहीं सुना कि किसी दुष्ठ ने लोहगड़ही नामक इमारत को सुरंग लगाकर जड़ - मूल से उड़ा दिया.

मगर क्यों, तुम्हारे पूछने का क्या मतलब है?

भूत:

कुछ नहीं मैंने यों ही पूछा.

महात्मा ने यह बात सुन कुछ जबाब न दिया और यद्यपि उनकी आकृति से भूतनाथ को कुछ शक़ अवश्य हो गया फिर भी इस सम्बन्ध में ज्यादा बात करने की उसकी इच्छा न थी अस्तु वह चुप रहा और न जाने क्या सोचने लगा.

महात्मा ने यह देख अपने हाथ की पोटली में से कुछ निकालते हुए कहा, " अच्छा तुम यह दवा की गोली खा लो और सिरहाने जो पानी रखा हुआ है उसमें से दो - चार घूंट पीकर लेट जाओ.

"

भूत:

(सिर हिलाकर) आपकी कृपा के लिए मैं बड़ा ही अनुगृहीत हूँ पर अब मैं एकदम ठीक हो गया हूँ और किसी दवा की मुझे जरूरत नहीं है.

मैं अब आपको धन्यवाद देकर इस जगह के बाहर चला जाना चाहता हूँ, महात्मा:

(मुस्कुराकर) मालूम होता है कि तुम मेरी दवा को शक की निगाह से देख रहे हो पर तुम्हें याद रखना चाहिये कि इसी दवा ने तुम्हारी जान बचाई है नहीं तो इस तीन दिन के

भीतर जब कि तुम एकदम बेहोश और लाचार थे कई बार मौत के किनारे पहुँच चुके थे.

भूत:

नहीं - नहीं, मुझे आपकी दवा पर किसी तरह का शक नहीं है, मेरा कहना सिर्फ यह है कि अभी - अभी मैंने अपनी निज की एक दवा खाई है जो बहुत जल्द ताकत पैदा करती है और उसका असर भी होने लगा है इसलिए आपकी दवा खाने की अब जरूरत न पड़ेगी.

महात्मा:

खैर तुम्हारी मर्जी, मैं इस बारे में जोर देने की जरूरत नहीं देखता लेकिन जब तुमने अपने पर ही मुनहत्सिर रहना चाहते हो तो मैं समझता हूँ कि उन चीजों को भी खाना पसन्द न करोगे जो मैं तुम्हारे लिये ले आया था, फिर भी क़म - से - कम यह मेवा तो तुम्हें खा ही लेना चाहिये जिसे लाने के लिये ही मैं तुम्हें अकेला छोड़कर गया था.

कह कर बाबाजी ने अपनी गठरी के अन्दर से कुछ मेवा और फल निकाल कर भूतनाथ के सामने रखा और उस लोटे की तरफ इशारा किया जो अपने हाथ में लिए हुए यहाँ आए थे तथा जिसमें दूध भरा हुआ था.

न जाने क्या सोचकर भूतनाथ ने इन चीजों को खाने में आपत्ति न की और बहुत शीघ्र ही उन्हें समाप्त कर घड़े से पानी उड़ेल हाथ - मुँह धोकर फिर अपने स्थान पर आ बैठा.

बाबाजी उससे कहना या पूछना ही चाहते थे कि इसी समय भूतनाथ उनकी तरफ देखकर बोल उठा, “ अच्छा अब बताओ कि तुमने मेरे सामने यह रूप क्यों रच रखा है? "

भूतनाथ की बात सुन बाबाजी ने चौंककर कहा, " इसके क्या माने?

" जिसके जवाब में भूतनाथ ने कहा, " इसके माने यह कि मैंने अपने दगाबाज भाई को पहिचान लिया और जानना चाहता हूँ कि वह अब किस नीयत से मेरे सामने आया है?

" बाबाजी ने और भी आश्चर्य से कहा, " मैं नहीं समझ सका कि तुमने मुझे क्या समझा जो ऐसी कड़ी बात कह दी! " भूतनाथ हँसकर बोला, “ मैंने तुम्हें शेरसिंह समझा और ठीक समझा है, अगर तुम्हें विश्वास न हो तो कहो अभी तुम्हारी दाढ़ी उखाड़कर साबित

कर दूँ! " इतना सुन वह बाबाजी भी हँस पड़े और खुद ही अपनी दाढ़ी अलग कर बोले " वेशक भूतनाथ, तुम बड़े ही होशियार आदमी हो.

" दाड़ी हटते ही शेरसिंह ऐयार की सूरत मालूम पड़ने लगी और जब उन्होंने एक रुमाल गीला कर वह हलका रंग भी पोंछ डाला जो चेहरे पर लगा हुआ था तब तो कोई शक ही न रह गया.

शेर:

इसके पहिले कि मैं यह पूछूं

कि तुमने क्योंकर मुझे पहिचाना मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुमने मुझे अपना ' दगाबाज भाई क्यों कहा?

भूत:

इसलिए कि तुमने कम्बख्त नन्हों, गौहर और सुन्दर का साथ देकर मुझे आफत में फंसाया.

शेर:

(सिर हिलाकर) कभी नहीं, मैंने किसी कारण से उन लोगों का साथ जरूर दिया पर तुम्हें किसी तरह की आफत में नहीं डाला.

भूत:

क्या तुमने उन लोगों के साथ मिलकर वह विचित्र नाटक नहीं रचा जिसने मुझे पागल बना दिया, और क्या तुमने मेरे कब्जे से शिवगढ़ी की ताली ले लेने का उद्योग नहीं कीया .

शेर:

मैं बिल्कुल नहीं जानता कि तुम किस नाटक की तरफ इशारा कर रहे हो, और न मैंने तुम्हारे कब्जे से शिबगड़ी की ताली लेने का ही कोई उद्योग कीया.

यह जरूर है कि मुझे महाराज दिग्विजयसिंह ने इसी काम के लिए यहाँ भेजा था पर वह ताली तुम्हारे पास है इसका पता तो मुझे उस दिन नन्हो वगैरह की ही जुबानी लगा,

इसके पहिले इस बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता था.

भूत:

(सिर हिलाकर) मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं होता और जब तक कि तुम इसके विपरीत साबित न कर दोगे मैं यही समझता रहूँगा कि तुम्हीं ने मेरे सत्यानाश का उपाय रचा, नन्हों, गौहर और दिग्विजयसिंह के ऐयारों को मेरा छिपा भेद - वह भेद जिसके खुल जाने की बनिस्बत मैं मौत को ज्यादे पसन्द करता हूँ - वह भुवनमोहिनी वाला भेद बताया, और तुम्हीं ने मेरी प्यारी चीज शिवगढ़ी की ताली लेने के लिये मुझे अपने जाल में फंसाया.

मुझे तुम्हारी करतूतों का सच्चा - सच्चा पता लग चुका है और तुम मुझे किसी तरह धोखा नहीं दे सकते.

शेर:

(अफसोस की मुद्रा से सिर हिलाकर) मेरी समझ में नहीं आता कि तुम किस बुनियाद पर मेरे ऊपर इतना बड़ा कलंक लगा रहे हो?

मालूम होता है कि किसी ने मेरे विरुद्ध तुम्हारा कान भर दिया है.

मैं अगर तुम्हें धोखा देना चाहता ही तो क्या अब तक वैसा न कर सकता था?

इसी बेहोशी की हालत में ही क्या मैं तुम्हारे बटुए को गायब नहीं कर सकता था अथवा उसके सामानों की तलाशी लेकर उन चीजों को निकाल नहीं सकता था जिनको तुम जान से बढ़कर मानते हो?

भूत:

बेशक, और किस सबब से तुमने ऐसा नहीं किया यही सोच - सोच मैं ताज्जुब कर रहा हूँ, जरूर इसमें भी तुम्हारी कोई गहरी चाल होगी.

खैर जाने दो, तुम मेरे साथ चाहे जैसा व्यवहार करो पर मैं तो तुमको बराबर अपना गुरुभाई और दोस्त ही समझता चला जाऊँगा और कभी किसी तरह की तकलीफ तुम्हें न दूंगा.

अब जब मैं उन सबूतों के साथ - साथ नन्हों आदि शैतान की खालाओं को भी जमीं - दोज कर चुका हूँ तो अकेले तुम मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते, हाँ, यह जरूर ।

कि आज से मैं तुम पर विश्वास कभी न करूंगा और न अपना कोई भेद ही तुम्हें बताऊँगा, अब तुम मेरा आखिरी सलाम लो और मुझे रुखसत दो.

इतना कहकर भूतनाथ उठ खड़ा हुआ मगर उसी समय शेरसिंह ने झपटकर उसकी कलाई पकड़ ली और कहा, “ नहीं, तुम इस तरह से इतना बड़ा इलजाम लगाकर बिना मुझे यह बताये हुए नहीं जा सकते कि इन बातों का सबूत तुम क्या रखते हो! "

भूतनाथ ने एक ऐसी निगाह शेरसिंह पर डाली जिसमें क्रोध और अफसोस दोनों ही मिला हुआ था, इसके बाद अपना बटुआ खोला और उसके अन्दर से एक चीठी निकाल कर शेरसिंह को दिखाते हुए कहा, " सबूत! एक सबूत तो देखो यही ' शेरसिंह ने वह चीठी उसके हाथ से ले ली और पड़ी, यह लिखा हुआ था:

" आपका खयाल ठीक है और जरूर ये चीजें भूतनाथ से ही सम्बन्ध रखती हैं, आप वही कार्रवाई कीजिए जो हम लोगों ने सोची है ।

इसके नीचे किसी का नाम न था और न यही कुछ पता लगता था कि यह किसको लिखी गई है शेरसिंह उसको पढ़कर ये दोनों ही बातें बखूबी समझ गए फिर भी अपना शक मिटाने की नीयत से उन्होंने पूछा, “ यह चीठी तुम्हें कहाँ से मिली?

" भूत:

इसको पूछकर तुम क्या करोगे?

क्या तुम इस बात से इनकार करना चाहते हो कि यह लिखावट तुम्हारी नहीं. शेर:

नहीं बल्कि मंजूर करूंगा कि यह चिठी मेरी ही लिखी हुई है और तब यह बताऊंगा कि कब और किस नीयत से यह लिखी गई.

तुम पहिले बताओ कि इसे कहाँ पाया?

भूत:

इसे मैंने नन्हों की तलाशी लेने पर पाया.

शेर:

(चौंक कर) इसे तुमने नन्हों के पास से पाया?

भूतः:

हॉ - हाँ और जरूर तुमने ही उसके पास भेजा होगा?

शेर:

नहीं, मैंने यह चीठी न तो नन्हो को लिखी और न उसके पास भेजी ही.

इसे मैंने किसी दूसरे के लिए लिखा था और यह सुनकर कि तुम्हें यह नन्हों के पास से मिली मुझे बहुत ताज्जुब हो रहा है.

मगर भूतनाथ, क्या सचमुच यह चीठी तुमने नन्हों के पास ही पाई या तुम मुझसे कोई मजाक कर रहे हो?

भूत:

नहीं - नहीं, मैं बहुत ठीक कह रहा हूँ, नन्हों गोपालसिंह के कब्जे से तिलिस्मी किताब लेने की नीयत से तिलिस्म के अन्दर घुसी थी.

मेरे एक शागिर्द ने इसकी खबर मुझे दी और मैंने नन्हों को धोखा दे वह किताब उससे ले ली.

उसी समय नन्हों की तलाशी में यह चीठी मेरे हाथ लगी.

शेर और वह तिलिस्मी किताब भी तुम्हें मिल गई?

भूत:

हाँ, वह तिलिस्मी किताब भी मुझे मिल गई.

(बटुए में से तिलिस्मी किताब निकाल और शेरसिंह को दिखाकर) यह देखो वह किताब.

उस किताब पर एक निगाह पड़ते ही शेरसिंह चौंक पड़े और हाथ बढ़ाकर बोले, " है, यह किताब तुम्हारे हाथ लग गई! जरा दो तो देखूं मैं.

" पर भूतनाथ ने उसे फिर अपने बटुए के हवाले किया और कहा, “ माफ कीजिए, अब मैं आप पर इतना विश्वास नहीं करता कि ऐसी क़िमती चीज आपके हाथ में दे दूं.

इसे तो सिर्फ अपनी बात के सबूत में मैंने दिखाया.

" शेर:

क्या तुम मुझ पर इतना अविश्वास करने लगे?

भूत:

बेशक, क्योंकि तुम मेरे साथ दगा करने लगे.

शेर:

फिर तुमने वही बात कही! मैं तुमसे कहता हूं कि आज तक कभी मैंने तुमसे किसी तरह की दगाबाजी नहीं की और न जिन्दगी रहते करूंगा.

अगर तुम सिर्फ इस चीठी के कारण मुझ पर शक करने लगे गए हो तो समझ रखो कि यह चीठी मैंने बिल्कुल दूसरे ही मतलब से किसी दूसरे ही के पास भेजी थी और मैं बड़े ही ताज्जुब में हूँ कि यह नन्हो के पास किस तरह जा पहुँची.

भूत:

तुमने किसके पास यह चीठी भेजी थी?

शेर:

यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता.

भूत:

क्यों?

शेर:

क्योंकि उस आदमी का भेद छिपा ही रहना मुनासिब है, मगर इतना मैं कह सकता हूँ कि जिस वक्त तुमको उसका नाम मालूम होगा या तुम यही जानोगे कि किस मतलब से यह चीठी लिखी गई तो बहुत ही खुश होगे.

भूत:

यह सब तुम्हारी बहानेबाजी है और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तुमने मेरे दुश्मनों के साथ मिलकर मुझे बर्बाद करने में अपने भरसक कोई बात उठा न रखी.

शेर:

इसी चीठी के सिवाय किसी और बात से भी क्या तुम्हारा मतलब है?

इतना में विश्वास दिलाता हूँ कि मौका आने पर इस चीठी की तरफ से तुम्हारी पूरी दिलजमाई कर दूंगा.

भूत:

अजी सिर्फ एक यही बात थोड़ी है! क्या तुम समझते हो कि मुझे तुम्हारे शागिर्दों गोपाल और श्यामसुन्दर की करतूतों का पता नहीं है, क्या तुम समझते हो कि उस बजड़े पर की चीजों का हाल मुझे मालूम नहीं है, क्या तुम समझते हो कि उस कैदी का हाल मुझे मालूम नहीं है जो शिवदत्त के कब्जे से गौहर की बदौलत छुटकर नन्हों के पास भेजा गया था पर जिसे बेगम के यहाँ से मेरे आदमी चुरा लाए, और क्या तुम समझते हो कि मुझे उन चीजों का पता नहीं है जिन्हें दारोगा, चंचलदास, शिवदत्त और दिग्विजयसिंह के यहाँ से तुम लोगों ने इकट्ठा किया और मुझे नाश करने का जरिया बनाना चाहा था?

इसे ईश्वर की कृपा ही कहना चाहिये कि मैं ठीक मौके पर लोहगड़ी में पहुँचकर उन चीजों के साथ कम्बख्त नन्हो और मुन्दर को भी जड़ - मूल से नाश कर सका नहीं तो क्या तुम लोगों ने मुझे चौपट करने में कोई कसर उठा रखी थी! शेर:

यह तुम कैसी बहकी - बहकी बातें कर रहे हो भूतनाथ?

एक जरा - सी चीठी देख के तुम जब इस तरह की बातें सोचने लगे हो तो मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा दिमाग ले कर किस तरह कोई भारी काम कर सकोगे?

मैं तुमसे बार - बार कह चुका कि अगर सिर्फ यही चीठी तुम्हारे सब शकों का कारण है तो किसी दिन इस बारे में मैं तुम्हारी पूरी तरह से दिलजमाई कर दूंगा.

भूत:

(गरम होकर) अजी क्या सिर्फ यहीं चीठी! तुम्हारी शैतानी के और भी कितने सबूत मेरे पास हैं.

(बटुए में हाथ डाल कर और एक दूसरी चीठी निकालकर) देखो यह चीठी भी तुम्हारी ही लिखी हुई है या नहीं?

शेरसिंह ने ताज्जुब करते हुए यह दूसरी चीठी ले ली और उसे पड़ा, इसमें यह लिखा हुआ था:

" श्री मान दारोगा साहब " एक बहुत ही जरूरी काम आ पड़ने के कारण आपको यह पत्र लिखना पड़ रहा है.

कृपा कर पत्रवाहक को अपने साथ ले जाकर एक बार ' शिवगड़ी ' दिखा दीजिए.

उस ' भूतनाथ ' के आस - पास की इमारतों को देखने की इन्हें कुछ जरूरत है.

शायद आप किसी तरह से या कोई बात सोच कर इनकार करें तो मैं कह देना चाहता हूँ कि यह बहुत ही जरूरी काम है और ऐसा न करने से आपको ' आँचल पर गुलामी के दस्तावेज ' लिखाने के जुर्म का मुजरिम बनना पड़ेगा जिसका नतीजा क्या होगा, यह आप खुद सोच सकते हैं " मैं यह भी अच्छी तरह जानता हूँ कि आप उस स्थान तक जाने या दूसरे को वहाँ ले जाने की सामर्थ्य रखते हैं.

अस्तु किसी तरह का बहाना या सुस्ती नुकसान पहुंचा सकती है.

आपका दोस्त !! शेरसिंह शेरसिंह ने इस चीठी को भी ताज्जुब के साथ पड़ा और तब भूतनाथ को वापस करते हुए कहा, " बेशक यह चीठी मैंने दारोगा के पास भेजी थी और इसके भेजने का भी एक खास सबब था, मगर इससे भी तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?

यह तो हम लोगों के बीच के एक खास काम के लिए लिखी गई थी.

भूत:

वाह क्या भोले - भाले हैं! इससे मुझे क्या सम्बन्ध?

अजी क्या तुमने भूतनाथ को इतना बेवकूफ समझ रक्खा है कि वह इतना भी नहीं समझ सकता कि इस चीठी को पा और इसमें दी गई गुप्त धमकी से डर कर दारोगा ने

तुम्हारे आदमी को शिवगड़ी पहुँचा दिया और उसने वहाँ का सब दृश्य देखकर उसकी वह नकल तैयार की जहाँ मेरे सम्बन्ध की वे सब चीजें रख कर वह नाटक मुझे दिखाया गया था जिसका मैंने तुमसे जिक्र कीया.

क्या इसको पढ़ने के बाद भी मुझे तुम्हारी शैतानी में कोई सन्देह रह सकता है?

शेर:

अफसोस कि तुम उसी ढंग की बातें कहते चले जा रहे हो! मैं इस चीठी की बारे में भी तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह किसी बुरी नीयत से लिखी नहीं गई, जरूर तुमने इसको दारोगा से पाया होगा?

भूत:

नहीं बल्कि यह भी नन्हों के पास से ही मुझे मिली.

शेर:

(यकायक खुश होकर) ठीक है ठीक है, अब मैं सब बात समझ गया.

यह सब शैतानी कम्बख्त नन्हों की है जिसने समूचा तूफान खड़ा किया है.

उस कैदी को जीता - जागता न पा कर और यह सुनकर कि तुम्हारे ही आदमियों के कारण उसकी जान गई वह तुम्हारी दुश्मन बन बैठी और इसीलिए उसने दारोगा से मिल कर वह सब कार्रवाई की.

मैं समझता हूँ कि तुम जानते होगे कि वह कैदी कौन था और उससे नन्हो का क्या सम्बन्ध था पर मुझे ताज्जुब है तो यही कि यह सब जान कर भी तुम मुझे ही दोषी समझ रहे हो! भूत:

(ताज्जुब से) मैं नहीं जानता कि वह कैदी कौन था क्योंकि मैंने उसकी सूरत नहीं देखी.

मुझे नन्हों के आदमियों की बातचीत से इतना मालूम हुआ कि उस आदमी को छुड़ाने के लिए कुछ लोग गए जिनसे मेरे आदमियों से झगड़ा हो गया और उस लड़ाई में किसी

तरह वह आदमी मारा गया जिस पर नन्हों को इतना क्रोध आया कि वह मेरी जान की दुश्मन बन बैठी.

शेर:

और तुम्हें यह पता नहीं लगा कि वह कैदी कौन था?

भूत:

नहीं क्योंकि उसकी लाश बेगम और नन्हों के आदमी उठा ले गये थे.

शेर:

ओह ठीक है, तभी तुम इस सन्देह में पड़े हुए हो और मुझ पर यह झूठी तोहमत लगा रहे हो! भूत:

(ताज्जुब से) तो वह आदमी कौन था?

शेर:

मुझे बताने की इच्छा तो न थी. पर जब तुमको मुझ पर इतने तरह के शक हो रहे हैं तो मैं बताए ही देता हूँ, लो सुनो और ताज्जुब करो कि वह आदमी.

.

.

शेरसिंह ने झुक कर भूतनाथ के कान में न जाने क्या कहा कि सुनते ही उसकी तो यह हालत हो गई कि काटो तो बदन से लहू न निकले.

देर तक वह भौचक्के की - सी हालत में खड़ा जमीन की तरफ देखता रह गया और जब उसके होश - हवाश कुछ ठिकाने हुए तो उसने शेरसिंह से कहा, " क्यां यह तुम मुझसे ठीक कह रहे हो?

" शेरसिंह ने अपनी कमर से लटकते हुए खंजर को हाथ लगाकर कहा- " मैं दुर्गा की शपथ खाकर कहता हूँ कि यह बात बिल्कुल सही है! " भूत:

मगर क्या बह आदमी अभी तक जीता था?

शेर:

हाँ, और यही बात ताज्जुब की है क्योंकि तुम्हारी तरह सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि सारी दुनिया यह समझती थी कि वह मर गया.

मगर नहीं, वह वास्तव में मरा नहीं था बल्कि महाराज शिवदत् की कैद में था.

भूत:

(कुछ सोचकर) शिवदत्त की कैद में! और नन्हों तथा मेरे आदमियों की लड़ाई में वह मारा गया?

शेर:

हाँ क़्म - से - कम नन्हों तो यही समझती है.

भूतः इसका क्या मतलब?

शेर:

इसका मतलब यह कि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि वह मारा नहीं गया.

यद्यपि उसे लड़ाई में कुछ चोट जरूर आई पर मुझे इस बात में कुछ भी सन्देह नहीं है कि इस मामले में किसी तरह की बहुत ही गहरी ऐयारी की गई और वह अभी तक जीता - जागता इस दुनिया में कहीं मौजूद है.

भूत:

जीता - जागता मौजूद है?

शेर:

हाँ.

भूत:

मरा नहीं! शेर:

नहीं.

भूत:

मगर मेरे सुनने में तो यही आया था कि वह मारा गया बल्कि उसकी लाश उस बजड़े पर लाई गई जिस पर नन्हो के आदमी सवार थे,

शेर:

ठीक है, मशहूर यही किया गया, मगर वास्तव में वह मरा नहीं.

इसी बात का ठीक - ठीक पता लगाने के लिए और यह जानने के लिए कि इसके भीतर क्या रहस्य छिपा हुआ है मैं नन्हों और उसके साथियों से मिला और उनका दिल लेने के लिए उनका कुछ काम भी मैंने किया जिनमें से एक बह था जिसके सम्बन्ध में यह चीठी मुझे दारोगा को लिखनी पड़ी.

तुम अच्छी तरह जानते हो कि उस आदमी से तुम्हारा कितना बड़ा सम्बन्ध है और उसका जीता - जागता रहना तुम्हारे लिए क्या मायने रखता है, अस्तु इस सम्बन्ध में मेरा कोशिश करना वास्तव में तुम्हारे ही फायदे के लिए था, क्या इसे तुम नामुनासिब समझते हो?

भूत:

नहीं, अगर तुम्हारा कहना ठीक है और वह आदमी सचमुच जीता है उसके बारे में तुम्हें जो कुछ करना पड़े या कराना पड़ा हो वह सभी ठीक होगा.

मगर शेरसिंह, मुझे अब भी विश्वास नहीं होता कि वह सचमुच अभी तक जीता है, कहीं तुम मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हो?

शेर:

ओफ, तुम्हारा भी कैसा शकी मिजाज है! अब तक भी मुझ पर शक बना ही हुआ है?

अच्छा तुम्हारे विश्वास के लिए उसके जीते रहने का एक सबूत मैं तुम्हें दिखाता हूँ, इतना कहकर शेरसिंह ने अपने कपड़ों के अन्दर हाथ डाला और कपड़े का एक छोटा सा पुलिन्दा बाहर निकाला जो वास्तव में एक तस्वीर थी.

शेरसिंह ने यह तस्वीर खोल कर भूतनाथ के सामने रखी और कहा, “ इस तस्वीर को गौर से देखो और वह बगल वाली लिखाबट पड़ो.

" इस तस्वीर पर निगाह पड़ना था कि भूतनाथ के मुँह से एक चीख निकल पड़ी और वह दोनों हाथों से अपनी आँखें बन्द करके बोला, " हटाओ - हटाओ, इसे मेरे सामने से हटाओ, मुझमें इस दृश्य को देखने की सामर्थ्य नहीं है! बस - बस, अब मैं बखूबी समझ गया कि वह अभी तक जीता है और मेरी असली दुर्दशा के दिन बाकी ही नहीं बल्कि शीघ्र ही आने वाले! " इतना कह भूतनाथ ने गर्दन घुमा ली और आँखें बन्द कर लम्बी - लम्बी साँसें लेने लगा.

शेरसिंह ने वह तस्वीर लपेट कर ठिकाने रक्खी और तब भूतनाथ से कहा, " कहो अब तो तुम्हें मेरे कहने का विश्वास हुआ?

" भूतनाथ ने कॉपती हुई आवाज में कहा, " हाँ अच्छी तरह विश्वास हुआ और इस बात का भी विश्वास हो गया कि मेरे लिए इस दुनिया में सुख और प्रसन्नता नहीं है.

मैं नरक का कीड़ा हूँ और नरक ही मेरा उपयुक्त स्थान है.

भला इतने दिनों के बाद भी यह आदमी जिसे मैं मरा ही नहीं बल्कि पञ्चतत्व में मिल गया हुआ समझता था जीता रह जाएगा इसका किसी को कभी विश्वास हो सकता था?

नन्हों आदि को मार और इस घटना से मेरा सम्बन्ध साबित करने वाले सब सबूतों को भी नष्ट कर मैं समझे हुए था कि अब अपने पिछले इतिहास की इस दुःखद घटना का सदा के लिए मैंने नाम - निशान मिटा दिया, पर नहीं, अब मालूम हुआ कि मेरे दुःख की घड़ी तो अब आने वाली है.

ओफ, लोहगड़ी को उठा कर मेरे हाथ कुछ औरतों को मारने का व्यर्थ का पाप ही मात्र लगा और वास्तविक लाभ कुछ भी न हुआ ।

जब यह आदमी खुद ही जीता - जागता मेरे दुष्कर्मों की कहानी कहने को मौजूद है तो भला नन्हों वगैरह को मारने से फायदा ही क्या हुआ?

सचमुच मेरी किस्मत ही ऐसी है, अपनी नेकनामी की चादर को ज्यों - ज्यों मैं धोकर साफ करना चाहता हूँ त्यों - त्यों वह और भी गन्दी होती जा रही है.

हे भगवान, अब क्या होगा !! " इसी तरह की बहुत - सी न - जाने कैसी - कैसी बातें भूतनाथ देर तक बकता रहा.

आखिर शेरसिंह ने उसे रोका और कहा, " भूतनाथ, इस तरह घबड़ा जाना तुम्हें शोभा नहीं देता.

जरा शान्त होवो और सोचो कि अब तुम्हें क्या करना मुनासिब होगा. हिम्मत न हारो बल्कि गम्भीरता से विचार करो और उस मुसीबत से बाहर होने की तर्कीब सोचो जो कि इस आदमी के प्रकट होते ही तुम्हारे ऊपर आ सकती है.

इस तरह से निराश होने से कोई फायदा नहीं है.

" भूत:

क्या तुम्हें अब भी कोई आशा बाकी है?

क्या इससे बड़ी कोई और भी निराशा हो सकती है?

शेर:

इस बात को मैं मानता हूँ कि इस आदमी का जीता - जागता प्रकट हो जाना तुम्हारे हक में बहुत ही बुरा है पर फिर भी तुम चालाक हो, बुद्धिमान हो, अगर सोचोगे और गौर करोगे तो अपने बचाव की कोई - न - कोई तर्कीब निकाल ही लोगे.

भूत:

(लाचारी की मुद्रा से सिर हिला कर) नहीं, अब सिवाय मर जाने के और कोई तर्कीब बाकी नहीं है.

सच तो यह है कि मैं इस घटना का सूत्रपात पहिले ही से देख रहा था.

जिस समय वह सन्दूकड़ी जिसे मैं नष्ट हो गया हुआ समझता था मुझे नजर आई उसी समय मेरा दिल कॉप गया था और मैं समझ गया था कि लक्षण अच्छे नहीं हैं पर फिर भी मैं आशा को अपने दिल में जगह दिये हुए था और नन्हो तथा उन सब सबूतों को मिटाकर सोचता था कि कुछ निश्चिन्त हुआ.

पर अब मालूम हुआ कि वह सिर्फ मेरा भ्रम था, मेरी मौत मेरे पीछे ही मौजूद है और उस सन्दुकड़ी का भेद प्रकट हुए बिना न रहेगा.

शेर:

तुम्हारा मतलब किस सन्दूकड़ी से है?

यह सुन भूतनाथ ने अपने बटुए के अन्दर से वह पीतल की सन्दूकड़ी निकाल कर शेरसिंह को दिखाई जिसे उसने नागर और सुन्दर के कब्जे से पाया था.

शेरसिंह इस सन्दुकड़ी के देखते ही चौंक कर और घबड़ाकर बोले, " हैं, यह सन्दुकड़ी अभी तक मौजूद है?

" उन्होंने उसे हाथ में उठाकर देखा और तब जमीन पर रख काँपती हुआ आवाज में कहा, " सचमुच भूतनाथ, तुम बड़े ही बदकिस्मत हो.

!! भूत:

आज इसका पूरा - पूरा विश्वास मुझे हो गया.

अभी तक बराबर मैं किस्मत के साथ लड़ता और पहिले जमाने में जो कुछ भूलें और गलतियाँ मुझसे हो चुकी थीं उनको मिटाने की कोशिश करता चला आया, पर अब मालूम हुआ कि वह सब कोशिशें बेकार थीं.

१.

देखिए भूतनाथ सोलहवाँ भाग, पहिले बयान का अन्त.

मुझे सिर्फ कुछ जाने लेने का पाप ही मिला और इसके सिवाय कोई नतीजा उन कोशिशों का न निकला, अस्तु अब मैं समझता हूँ कि मेरा इस दुनिया से उठ जाना ही अच्छा है.

अब और जीने से उन पापों का फल भोगने के सिवाय और कोई लाभ नहीं हो सकता.

शेर:

नहीं - नहीं, तुम इस तरह निराश न होवो.

आओ हम लोग मिलकर कोशिश करें और सोचें कि इस मुसीबत से निकलने की कौन - सी तर्कीब हो सकती है.

भूतः:

नहीं जी नहीं, यह सब सोचना अब फजूल है, अब मेरे लिये सिर्फ यही रास्ता रह गया है कि दुनिया के पर्दे से अपने को छिपा लें, किसी को अपना काला मुंह न दिखाऊँ, और जमाने में यही जाहिर कर दूं कि भूतनाथ मर गया.

मगर मेरे दोस्त, क्या एक बात में तुम मेरी मदद कर सकते हो?

शेर:

मैं हमेशा और सब तरह से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूँ मगर पहिले तुम यह बताओ कि तुम्हें मेरी तरफ से जो शक़ था वह दूर हुआ या नहीं?

तुम्हारी बातों से मुझे बेहद तकलीफ हुई जिस पर मैंने यह खबर तुम्हें दी, नहीं तो मेरा इरादा यही था कि इस बात को बिलकुल ही पचा जाता और कम - से - कम अभी तुमको इसका कोई जिक्र न करता क्योंकि मैं अच्छी तरह समझता था कि इसको सुनकर तुम्हारी क्या हालत होगी.

तुम्हारी बातों ने मुझे दिली तकलीफ पहुँचाई और इसी से मुझे तुमसे यह हाल कहना पड़ा.

भूतनाथ:

नहीं - नहीं मेरे दोस्त, मेरा तुम्हारे ऊपर अब किसी तरह का शक नहीं है और मेरी गलती थी कि मैंने तुम पर कभी भी शक कीया.

जो कुछ मैंने तुमसे कहा उसके लिये मैं सच्चे दिल से तुमसे माफी माँगता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि तुम उस बारे में मेरी तरफ से कोई बुरा भाव अपने दिल में आने न दोगे.

मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि उस आदमी के जीते रहने की खबर पाकर तुम इसके सिवाय और कुछ कर ही नहीं सकते थे.

मगर एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि नन्हों को क्योंकर इस बात का विश्वास हो गया कि वह आदमी मर गया! तुम जानते ही हो कि वह इस पर किस तरह मरती थी.

इसे जीता पाकर फिर कैसे उसने इसकी उम्मीद छोड़ दी और इसे मरा समझ लिया?

शेर:

जरूर इस बारे में कोई बहुत ही बड़ी चालाकी की गई है जिसका ठीक - ठीक पता मुझे भी अभी तक लगा नहीं है पर तब यह बात जरूर थी कि और लोगों को भी इस आदमी के जीते रहने की खबर लग चुकी थी और वे इसे छुड़ाने की फिक्र में थे, जरूर वे मौका पाकर अपना काम कर गुजरे, इसका पूरा - पूरा हाल मैं जान न सका पर जितना कुछ मैं ठीक ठीक जान सका हूँ वह यही कि यह आदमी अभी तक जीता - जागता ही है, मरा नहीं.

भूत:

वह बात तो यह तस्वीर और इसका मजमून ही बता रहा है और किसी सबूत की जरूरत क्या है?

अच्छा हाँ, यह तो मैंने तुमसे पूछा ही नहीं कि यह तस्वीर तुम्हारे हाथ कैसे लगी?

शेर:

बस यही बात तुम मुझसे मत पूछो.

यह एक ऐसे आदमी से मुझे मिली है जिसने उस कैदी से खुद बातें की हैं और जिसका नाम इस वक्त तुम्हारे सामने लेना मैं उचित नहीं समझता.

किसी दूसरे समय मौका होने पर मैं जरूर यह बात भी तुम्हें बता दूंगा पर आज नहीं.

हाँ, इस समय इतना कह सकता हूँ कि इस तस्वीर के लिए ही वह चीठी मुझे उस आदमी को लिखनी पड़ी थी जो तुमने मुझे पहिले दिखाई और कहा कि नन्हों से तुम्हें मिली है मगर मैं अभी तक इस ताज्जुब में हूँ कि वह नन्हों के पास क्योंकर पहुँची?

भूत:

खैर अब तो नन्हों रही नहीं जो इस बात का जबाब देगी और इसको जानने का मुझे कोई कौतुहल भी नहीं है, अब सिर्फ एक आखिरी अभिलाषा मेरी है जो अगर तुम पूरी कर दोगे तो मैं उम्र भर तुम्हारा शुक्रगुजार रहूँगा, शेर:

वह क्या?

तुम बेधड़क कहो, मैं जो कुछ भी तुम्हारे लिए कर सकूँगा जरूर और निःसंकोच होकर करूंगा.

भूत:

इसकी प्रतिज्ञा करते हो?

शेर:

इसकी प्रतिज्ञा की जरूरत समझते हो तो प्रतिज्ञा ही सही, कहो वह क्या काम है?

भूत:

यह तो तुम समझते ही होगे कि इस समय मेरे पुराने दुश्मन के प्रकट हो जाने के बाद अब मेरा दुनिया में रहना व्यर्थ है.

यह जगह - जगह मेरा पीछा करेगा और मेरी जिन्दगी बर्बाद कर देगा, अस्तु अब मेरा मर जाना ही मुनासिब है, जिन्दा रहने से कोई फायदा नहीं.

शेर:

नहीं - नहीं भूतनाथ, मैंने पहिले भी कहा और अब भी कहता हूँ कि तुम इस तरह निराश न हो और अपने को कलंक से बचाने की कोई तर्कीब सोचो.

बार - बार इस तरह मर जाने की बात कहना तुम्हारे मुँह से शोभा नहीं देता.

भूतः:

मैं चाहे कितनी भी कोशिश करूँ पर उसका नतीजा कुछ न निकलेगा.

मेरा यह पुराना पाप बहुत भयानक रूप धर के जहाँ - जहाँ मैं जाऊँगा वहाँ - वहाँ मेरा पीछा करेगा और मुझे मुर्दे से बदतर कर देगा.

अस्तु मेरा दुनिया से उठ जाना ही मुनासिब है, यद्यपि मेरी तरह से तुम भी जानते ही हो कि इस मामले में मेरा कसूर कहां तक था और किस तरह की लाचारी की हालत में मुझे वह काम करना पड़ा था पर फिर भी किससे मैं यह बातें कहता फिरूँगा.

शेर:

कोशिश करने से सब कुछ सम्भव है, तुम इस मामले में अपने दोस्तों की मदद लो, इन्द्रदेव से मिलो .

.

.

.

भूतः:

वाह खूब कही, वे यह खबर पाकर और इस पुराने किस्से का सच्चा हाल सुनकर खुद मेरी ही जान के ग्राहक बन जायेंगे कि मेरी मदद करेंगे! और फिर जितने समय मैं अपनी बेकसूरी साबित करने का सामान जुटाऊंगा उतने समय में तो मेरा दुश्मन मुझे बर्बाद कर डालेगा.

शेर:

हाँ यह कहना तुम्हारा कुछ अंश में जरूर सही है मगर इसकी भी यह तर्कीब हो सकती है कि तुम कुछ दिनों के लिए गायब हो जाओ और जब अपनी बेकसूरी साबित करने लायक बन जाओ तब प्रकट हो जाओ.

भूत:

ठीक यही बात मैं सोच रहा था और इस काम में तुम्हारी मदद माँगना चाहता था, इस वक्त जो लोग मुझे जानते हैं या जिन्हें मेरी पिछली कार्रवाई की कुछ खबर है उन्हें सहज में यह विश्वास दिलाया जा सकता है कि लोहगड़ी के साथ साथ भूतनाथ भी उड़ गया, क्योंकि आखिर यह बात छिपी तो रहेगी नहीं, एक दिन प्रकट होगी कि वह कार्रवाई मेरी ही थी.

शेर:

तब तुम्हारा क्या मतलब है?

भूत:

मैं यह मशहूर कर देना चाहता हूँ कि भूतनाथ मर गया, इसके बाद गायब होकर इस मामले में, जिसका डिंडोरा यह तस्वीर पीट रही है, अपनी बेकसूरी साबित करने की कोशिश करूँगा.

अगर सफल हुआ तो अपना मुँह दिखाऊँगा, नहीं दुनिया की निगाहों में मरा ही रह जाऊँगा.

शेर:

तुम्हारा यह ख्याल कुछ बेजा नहीं है, तुम कहो कि इस काम में मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ?

भूत: दो तरह से मेरी मदद कर सकते हो, एक तो जमाने पर यह जाहिर करके कि लोहगड़ी में भूतनाथ भी मर गया,

और दूसरे .

.

.

शेर:

और दूसरे?

भूत:

अगर मानों तो बताऊँ नहीं तो क्यों कहूँ?

शेर:

आखिर कुछ कहो भी तो, मैंने तो सब तरह से तुम्हारी मदद करने की प्रतिज्ञा ही कर दी है भूत:

ठीक है, तो उसी प्रतिज्ञा पर विश्वास करके मैं कहता हूँ कि यह तस्वीर मेरे हवाले कर दो जो तुम्हारे पास है.

शेर:

(चौंक कर) हैं क्या कहा?

यह तस्वीर भला मैं तुम्हें क्योंकर दे सकता हूँ?

यह एक बड़े ही ऊँचे रुतबे वाले आदमी ने मेरा बहुत बड़ा विश्वास करके एक खास काम के लिए मुझे दी है और जल्दी इसको उन्हें वापस कर देना मेरा धर्म है! भूत:

(उदास होकर) तब फिर लाचारी है, और कोई तर्कीब फिर मेरे जिन्दा रहने की नहीं है.

यद्यपि मैं समझता हूँ कि अब यह भेद छिपा रह न सकेगा पर इस तस्वीर के रहते हुए यह बात कल की होती आज ही होगी.

यह मुझे न मिली तो मुझे सचमुच ही अपनी जान दे देनी पड़ेगी.

शेर:

नहीं - नहीं भूतनाथ, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि वह तस्वीर न तो किसी ऐसे के हाथ पड़ेगी जो तुम्हारा दुश्मन होगा और न कोई आँखें इसे देख ही सकेंगी.

भूत:

(सिर हिलाकर) नहीं, सो असम्भब है, खैर, जाने दो, मैं समझ लूँगा कि मेरी जिन्दगी बस इतनी ही थी.

कहकर भूतनाथ ने सिर झुकाया और उसकी आँखों से आंसू टपकने लगे.

शेरसिंह उसकी यह हालत देख बहुत दुःखी हुए और आखिर रह न सके.

उन्होंने वह तसबीर पुनः निकाली और भूतनाथ की तरफ बड़ाकर कहा, " खैर जब तुम ऐसा ही समझते हो तो जो प्रतिज्ञा मैंने तुमसे की उसे पूरा करता हूँ, लो यह तस्वीर तुम लो और इसका जो करना चाहते हो सो करो "

शेरसिंह ने वह तस्वीर भूतनाथ की तरफ बढ़ाई जो उनकी बात सुन अविश्वास और प्रसन्नता की दृष्टि से उनकी तरफ देखने लग गया था.

उसने खुशी - खुशी तस्वीर लेने के लिए हाथ बढ़ाया मगर उसी समय यकायक कहीं से जोर की आवाज आई- " ठहरो.

" दोनों आदमी चौंक कर इधर - उधर देखने लगे.

झोंपड़े के दरवाजे पर किसी की छाया दिखाई पड़ी साथ ही एक आदमी ने झोंपड़े के अन्दर पैर रखा.

इस आदमी की सूरत - शक्ल कैसी थी. इसका कुछ भी पता न लग सकता था क्योंकि इसने सिर से पैर तक अपने को एक काली पोशाक से ढंका हुआ था और इसके चेहरे पर भी एक काली नकाब पड़ी हुई थी.

भूतनाथ और शेरसिंह के देखते देखते यह उन दोनों के सामने आकर खड़ा हो गया और कड़ी आवाज में भूतनाथ से बोला, “ गदाधरसिंह, तू अपने गुरुभाई और दोस्त को अपनी बातों से भले ही धोखा दे ले मगर मैं खूब समझता हूँ कि इस तस्वीर को ले लेने से तेरा क्या मतलब है.

तू अभी कुछ दिन और इस दुनिया में रहना तथा कुछ दिन और लोगों को अपनी चालबाजी से धोखा देना चाहता और तेरा इरादा है कि इस तस्वीर को नष्ट कर अपने पाप को कुछ दिनों तक और छिपाए रहे, मगर याद रख कि तेरा यह इरादा कभी पूरा न हो सकेगा.

" भूतनाथ जो ताज्जुब और कुछ - कुछ डर की निगाहों से इस नकाबपोश को देख रहा था कमजोर आवाज में बोला, " आप कौन हैं और मुझसे क्या चाहते हैं?

नकाबपोश ने फिर कड़क कर कहा, " क्या मेरी आवाज से तू मुझे पहिचान न सका?

शायद न पहिचान सका हो, क्योंकि कैद की सख्तियों ने मेरे शरीर के साथ - साथ मेरी आवाज को भी बहुत कमजोर कर दिया है.

अच्छा ले मेरी सूरत भी देख ले.

" कहकर उस नकाबपोश ने अपने चेहरे पर की नकाब उलट दी.

भूतनाथ ने जो इस तरह डर और कॉप रहा था मानों उसे जूड़ी - बुखार चढ़ आया हो, देखा कि उसके सामने एक दुबला पतला आदमी खड़ा है जिसका चेहरा यद्यपि इस समय बिल्कुल ही सूखा हुआ और एकदम पीला होकर यह बता रहा था कि बरसों का बीमार या शायद कोई लम्बी मुद्दत का कैदी है पर फिर भी आसार कह रहे थे कि वह किसी समय में गजब का खूबसूरत और सुडौल रहा होगा.

सूरत मगर भूतनाथ इसे देखते ही इस तरह कॉप गया मानों उसे गोली लग गई हो.

उस आदमी ने तड़पकर कहा, " क्यों? देखकर भी तूने मुझे पहिचाना या नहीं?

भूतनाथ के कॉपते गले से निकला, " आ .

.

.

.

.

.

आप! " वह आदमी गरज कर बोला, " मैं कौन हूँ यह क्या अब भी तूने नहीं पहिचाना! सुन, मेरी सूरत देख के भी अगर तू समझ सका हो तो मेरा नाम सुनकर मुझे जान जा.

मेरा नाम कामेश्वर है! कौन कामेश्वर?

वहीं जिसकी बहिन अहिल्या को तूने ' भूतनाथ ' की मूरत पर बलि चढ़ाया और अपना नाम भूतनाथ रक्खा.

कौन कामेश्वर?

वही जिसकी स्त्री भुवनमोहिनी को तूने शिवदत्त के हवाले किया और इनाम पाया, कौन कामेश्वर?

वही जिसको मारकर तूने दारोगा से इनाम लिया.

दारोगा से इनाम लिया.

और जानता है वह भुवनमोहिनी कौन ?

वही भुबनमोहिनी जिसको मारकर तूने मायारानी से शिबगड़ी की ताली पाई! मैं वही कामेश्वर इस वक्त तेरे सामने खड़ा हूँ जिसे मरा हुआ समझ अब तक तू निश्चिन्त था.

कह अब तू क्या कहता है?

" भूतनाथ के मुँह से कोई आवाज न निकली.

वह एकदम पागल - सा हो गया था और पागलों की ही तरह अपनी आँखें फाड़ फाड़ अपने चारों तरफ इस तरह देख रहा था जिस तरह हरिन जाल में फंस और अपने बचाव का कोई रास्ता न पा व्याध की तरफ देखता है.

कामेश्वर ने फिर गरजकर कहा, " ठीक्, अब भी तूने मुझे पहिचाना या नहीं.

" भूतनाथ मानों सचमुच पागल हो गया था.

उसने कुछ कहने के लिए मुंह खोला पर उसके गले से कोई आवाज न निकली, उसने जमीन से उठना चाहा पर उसके हाथ - पाँव बेकार हो गए थे, वह केवल अपलक नेत्रों से इस नए आने वाले की तरफ देखता रह गया.

उसकी यह हालत देख आगन्तुक बड़े जोर से खिलखिलाकर हँसा, इसके बाद शेरसिंह की तरफ घूमा और उससे बोला, " क्यों शेरसिंह, अपने गुरुभाई की हालत देखते हो! इस समय कैसा बिल्ली बन बैठा है, मगर किसी समय इसने मेरे ऊपर कैसा कहर ढाया था, क्या इसे तुम नहीं जानते?

" " मैं थोड़ा - बहुत जानता हूँ मगर आप यह भी देख रहे हैं कि यह आपसे इतना नहीं डरा है जितना इस बात से डरा है कि आपके द्वारा इसकी बदनामी दुनिया में जाहिर हो जाएगी.

असल में अपनी बदनामी से इस कदर डर गया है, और जो आदमी अपनी बदनामी से डरता हो, आप भी मानेंगे कि उसमें अब भी आदमीयत की वू बाकी है चाहे पूर्व में वह कैसे ही कर्म क्यों न कर चुका हो.

शेरसिंह ने कहा, वह आदमी शेरसिंह की यह बात सुन हँसकर बोला, " नहीं - नहीं शेरसिंह, तुम इस तरह की बातें करके इसकी तरफ से मेरा दिल मुलायम नहीं कर

सकते, क्योंकि शायद तुम भी नहीं जानते कि इस कम्बख्त गदाधरसिंह ने किस तरह मेरा खून सुखाया है.

इसकी सच्ची करतूतों का हाल तुम अगर जानते तो इसकी सिफारिश करने के बजाय तुम भी इससे नफरत करते और इसका मुंह देखने में पाप समझते! " शेरसिंह ने यह सुन मुलायमियत के स्वर से कहा, " आपका कहना बहुत सही है पर आपसे मैं यह कहने की जुर्रत करता हूँ कि आपने अपने मामले में इसको जितना बड़ा कसूरवार समझा है अगर ठीक तौर पर जाँच करेंगे तो शायद यह उतना बड़ा कसूरवार नहीं साबित होगा.

अभी - अभी यह मुझसे कह रहा था कि आपके बारे में अपनी बेकसूरी साबित कर सकता है और उसी काम के लिए यह कुछ थोड़ी मोहलत चाहता था.

" उस आदमी ने शेरसिंह की बात सुन घृणा के साथ भूतनाथ की तरफ एक नजर देखा और तब कहा, " हाँ, मैंने इसकी वह बात सुनी थी, पर मैं खूब जानता हूँ कि यह सिर से पैर तक कसूरवार है और तुम्हें सिर्फ धोखा देना चाहता था.

तुम्हारी इस बात को सुन मुझे विश्वास हो गया कि तुम भी इसका ठीक - ठीक और पूरा भेद नहीं जानते.

मेरे पास आओ और सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ कि मेरे और मेरी स्त्री के साथ इसने क्या - क्या कीया.

"

शेरसिंह उठा और वह नकाबपोश उसे झोंपड़े के एक कोने में ले जाकर उससे कुछ कहने लगा.

अब तक तो भूतनाथ इस तरह अपनी जगह पर बैठा हुआ था कि मानों उसकी देह में जान ही न हो पर अब उस नकाबपोश के कुछ दूर हट जाने से मानों उसके दम - में - दम आ गया.

उसने जल्दी - जल्दी कुछ सोचा और तब धीरे - से वह तस्वीर जो शेरसिंह ने उसे दिखाई थी और जिसे देख वह घबड़ा गया था उठा कर बगल में दबाई, ऐयारी का बटुआ

हाथ में उठाया और इस आहिस्तगी से झोंपड़े के बाहर निकल गया कि बातचीत में मशगूल शेरसिंह और नकाबपोश को जरा गुमान तक न होने पाया.

जिस समय उनकी बातें समाप्त हुई और उस नकाबपोश ने भूतनाथ से कुछ कहने के लिए उसकी तरफ गर्दन घुमाई तो उसे गायब पाया और तब ताज्जुब की एक आवाज मुंह से निकाल वह झोंपड़े के दरवाजे की तरफ लपका, मगर अब वहाँ क्या था?

भूतनाथ तो बाहर होते ही इस तरह सिर पर पैर रखकर वहाँ से भागा कि उसकी धूल का भी नहीं पता न था! अब हम थोड़ी देर के लिए शेरसिंह और उस नकाबपोश को यहीं छोड़ देते हैं और भूतनाथ के साथ चलकर देखते हैं कि वह कहाँ जाता या क्या करता है.

भूतनाथ उस कुटिया के बाहर निकल कर जो भागा तो उसने एक बार पीछे फिर कर भी नहीं देखा.

बस एकदम सरपट सामने की तरफ भागने का ही उसे ख्याल रहा.

अपने और उस आदमी के बीच में ज्यादे - से - ज्यादा फासला डाल देने के सिवाय, जिसे अब तक वह मरा हुआ समझता था पर जो आज ऐसी आश्चर्यजनक रीति से उसके सामने प्रकट हुआ था, उसे इस समय और किसी बात का ख्याल ही न था, अस्तु वह तब तक भागता ही चला गया जब तक की सूरज सिर पर न आ गया और गर्मी - पसीने - थकावट, धूप और कमजोरी से परेशान होकर वह कहीं देख सुस्ताने की जरूरत न समझने लग गया.

रुककर चारों तरफ निगाह की तो सामने ही ऊँची जगत का एक पक्का कुआँ नजर आया जिसके ऊपर नीम के पेड़ों की घनी छाया पड़ रही थी.

इसी जगह रुक कर कुछ दम ले लेने के विचार से कुएँ पर चढ़ गया, हाथ का और बगल का सामान जमीन पर रक्खा, और खुद उसके पक्के फर्श पर बैठकर सुस्ताने लगा.

जब कुछ शान्त हुआ तो उसने अपना ऐयारी का बटुआ खोला और उसके अन्दर से लुटिया तथा डोरी निकाल कुएँ से पानी खींचने लगा.

इसी समय न जाने कहाँ से आता हुआ एक दूसरा मुसाफिर भी उस जगह पहुँच गया.

इसके हाथ में भी लोटा तथा रस्सी थी और एक मामूली निगाह इस पर डालकर ही भूतनाथ समझ गया कि यह कोई देहाती पंडित है अस्तु उसने इस पर कोई ज्यादा ख्याल न किया मगर यह पंडित गजब का दगाबाज और बेईमान निकला.

इसने भूतनाथ के पास आते ही यकायक पीछे से उसे ऐसा धक्का दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सका और धड़ाम से कुएँ के अन्दर जा रहा.

इन नए मुसाफिर ने एक बार झाँक्र कर भी न देखा कि कुएँ के अन्दर गिरे भूतनाथ की क्या हालत हुई.

यह सीधा भूतनाथ के सामान के पास पहुंचा और उन चीजों को ध्यान से देखने लगा जो वह वहाँ छोड़ गया था.

पहिली निगाह इसकी उस पीतल की सन्दुकड़ी पर पड़ी जिसे इसने उठा लिया और देखने लगा.

बहुत गौर से देखने बाद " बेशक यही है, " कह उसे रख दिया और तब तस्वीर उठाकर देखी जो भूतनाथ उड़ा लाया था.

जरा - सा खोलकर देखते ही उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ी.

वह दूसरी निगाह उस पर डाल ही न सका, तस्वीर उसके हाथ से गिर पड़ी और वह जमीन पर बैठ लम्बी साँसें लेने लगा.

यकायक उस आदमी के कान में किसी तरह की आहट पड़ी.

सिर उठाकर देखा तो कई आदमियों को तेजी के साथ मैदान में चलते हुए इसी तरफ आते पाया जिन्हें देखते ही वह चौंक पड़ा.

बड़ी फुर्ती - फुर्ती उसने भूतनाथ के उन सब सामानों की, जो वहाँ पर पड़े थे, एक गठरी बनाई और उसे हाथ में लिए कुएँ के नीचे उतर गया.

ऊंची जगत के नीचे एक छोटी कोठरी भी बनी हुई थी जिसमें वह आदमी पहुँचा.

यहाँ पर इसका कुछ सामान पड़ा हुआ था जिसे इसने उठा लिया और कोठरी के बाहर निकल गया, मैदान की तरफ निगाह की तो उन आदमियों को बहुत नजदीक पाया.

लपकता हुआ कुएँ के पीछे की तरफ हो गया और तब बेतहाशा एक तरफ भागा.

' दाएंन तरफ थोड़ी ही दूर पर एक घना जंगल दिखाई पड़ रहा था.

सरपट भागता हुआ यह आदमी बहुत जल्द ही उस जगह पहुँच गया और जंगल ने उसे अपने अन्दर छिपा लिया.

१.

अपनी जीवनी लिखता हुआ भूतनाथ यहाँ पर नोट लिखता है- " यह आदमी जिसने इस तरह मेरे साथ दगाबाजी की वास्तव में अर्जुनसिंह था, जिसने न केवल वह पीतल की संदूकड़ी और तस्वीर ही ले ली, बल्कि मेरे बटुए के अंदर से भी कई ऐसी चीजें निकाल लीं जिनके जाने का उस समय मुझे बड़ा ही अफसोस हुआ.

सब से कीमती चीज जिसके जाने का मुझे हद्द से ज्यादा रंज हुआ और जिसके निकल जाने के कारण ही मैंने अर्जुनसिंह को जान से मार डालने की कसम खा ली, वह उन चीठियों का मुद्दा था.

जो दारोगा, हेलासिंह और जैपाल के बीच में आई - गई थीं और जिनके फलस्वरूप लक्ष्मीदेवी के बदले मुन्दर की शादी राजा गोपालसिंह के साथ हो गई, इन चीठियों को बड़ी मेहनत से बेनीसिंह बनकर और कुछ अपनी ऐयारी से मैंने इकट्ठा किया था और दारोगा, जैपाल, हेलासिंह वगैरह पर काबू रखने के लिए यही सबसे अच्छा जरिया भी मेरे पास था, था, जो इन चीठियों के निकल जाने से जाता रहा.

अगर ये चीठियां मेरे पास रहतीं तो सम्भव था कि मुझे मरने की जरूरत न पड़ती और तब शायद मुन्दर की शादी भी राजा गोपालसिंह से न हो पाती पर एक तो इस मामले से, दूसरे उस पीतल की सन्दूकड़ी वाले मामले से, तीसरे गौहर, नन्हो और मनोरमा आदि की करतूतों से, चौथे शिबगड़ी की ताली मेरे हाथ से निकल जाने से, और पाँचवे उस तस्वीर के कारण जो शेरसिंह से मैंने ली और इस तरह पर गवाँ दी थी, मैं पागल - सा हो गया और अन्त में दुनिया की निगाहों से उठ जाना ही मुझे अच्छा जान पड़ा.

ऐसी हालत में लक्ष्मीदेवी या गोपालसिंह की क्या हालत होगी, इससे भी मैं गाफिल हो गया, फिर मैं इस धोखे में भी पड़ा रह गया कि कम्बख्त मुन्दर, गौहर और नन्हों आदि को मैंने लोहगढ़ी के साथ ही नेस्तनाबूद कर दिया है, पर यह भी मेरी गलती थी.

वे किसी कारण बची ही रह गई जैसाकि पाठकों को आगे चलकर मालूम होगा और मैं उनको मरा समझ कर उनकी तरफ से निश्चिन्त बना रह गया, मेरा यह भी खयाल था कि इन चीठियों की ही बदौलत जैपाल ने प्रकट होकर मुझ पर काबू कर लिया.

जैसाकि चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है, पर वास्तव में ऐसा न था.

अर्जुनसिंह की बदौलत मेरा कोई भी नुकसान न हुआ, असल नुकसान इन्हीं चीठियों की उस नकल के चले जाने की बदौलत हुआ जो कम्बख्त रामदेई ने जपाल को दी थी पर अवश्य ही उस समय इन बातों का मुझे पता न लगा और मैं कसूर अर्जुनसिंह का ही समझ कर उन्हें ही अपना जानी दुश्मन समझता रहा, उस पीतल की सन्दूकड़ी में क्या था, वह तस्वीर किस मामले को छिपाये थी, और अर्जुनसिंह वास्तव में कौन था यह सब बातें पाठकों को आगे चलकर मालूम हो जाएंगी.

इस जगह मैं सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि अर्जुनसिंह का भी कामेश्वर और भुवनमोहिनी के भेद से बड़ा ही घनिष्ठ सम्बन्ध था और वह सन्दूकड़ी तथा तस्वीर उसी मामले का खजाना थी, यही सबब था कि अर्जुनसिंह उन्हें देख अपने को रोक न सका और उसने उन चीजों पर कब्जा कर लिया, सच तो यह है कि इतना बड़ा धोखा मैंने अपनी जिन्दगी भर में कभी न खाया था जो उस वक्त मुझसे हो गया.

अगर मैं उस वक्त परेशान और घबराया हुआ न होता तो कभी मुमकिन न था कि सूरत बदले हुए होने पर भी अर्जुनसिंह को पहचान न जाता.

असल बात यह है कि जो कुछ किस्मत में लिखा हुआ होता है वही होता है, मनुष्य का उद्योग कुछ कर नहीं सकता.

मेरी किस्मत में जगह - जगह मारे - मारे फिरना और दुनिया की खाक छानना बदा था तो उसके विपरीत क्योंकर हो सकता था?

" इसी घटना की तरफ अर्जुनसिंह ने इशारा किया था जबकि वे नकाबपोश बनकर मेरे सामने आए थे (देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति बीसवाँ भाग चौदहवाँ बयान) और यही वह तस्वीर थी जिसे दोनों कुमारों को दिखाकर अर्जुनसिंह ने कहा था कि कृपानाथ, बस मैं इसी का दावा भूतनाथ पर करूँगा! (देखिए बीसवाँ भाग दूसरा बयान) अथवा जिसे

महाराज के सामने उनकी इच्छा समझ तथा इस भेद को छिपा ही रहने देने की नीयत से उसने फाड़ डाला था (देखिए बाइसवाँ भाग

चौथा बयान).

वह पीतल की सन्दूकड़ी भी यही थी जिसे चीठियों के मुट्ठे के साथ जैपाल ने रामदेई की हमजदगी से पा लिया था और जो उस गठरी के अन्दर से निकली थी जिसे तेजसिंह ने बलभद्रसिंह बने हुए जैपाल के हाथ से ले लिया था (देखिए बारहवाँ भाग पहिला बयान) तथा जो अन्त में महाराज की प्रतिज्ञा की बदौलत मुझे बन्द की बन्द मिल गई (बाईसवाँ भाग चौथा बयान.

) असल में इन सब चीजों के मेरे हाथ में पड़ कर भी निकल जाने ही ने मुझे सब तरफ से लाचार कर दिया और इस घटना के बाद मैं कुछ भी करने लायक न रह गया.
"

चौथा व्यान।

बावली के नीचे या सुरंग के अन्दर झाँकने पर मालती को न - जाने कौन - सी ऐसी ताज्जुब की बात दिखाई पड़ी कि वह आश्चर्य की एक चीख मार कर उसके अन्दर क़ूद गई, उसके जाते ही वह रास्ता बन्द हो गया और ताज्जुब में डूबे हुए प्रभाकरसिंह खड़े देखते ही रह गए.

कुछ सायत इसी तरह बीत गए.

इसके बाद प्रभाकरसिंह ने अपने को काबू में किया और फिर से उस रास्ते को खोलने का उद्योग करने लगे जो मालती के जाने पर बन्द हो गया था मगर उनकी कोई भी तरक़ीब कारगर न हुई, जिस सुरंग के अन्दर झाँककर प्रभाकरसिंह ने कोई ताज्जुब की चीज देखी थी. अथवा जिसके अन्दर मालती गायब हुई थी उसका मुँह इस समय कुछ इस तरह पर बन्द हो गया था कि अब इस बात का भी कुछ पता न लगता था कि वह राह कहाँ पर थी.

आखिर सब तरह से लाचार हो प्रभाकरसिंह उसी जगह सीड़ी पर बैठ गए और तिलिस्मी किताब निकाल कर पड़ने लगे, यह लिखा हुआ पाया:

" तुमको मुनासिब है कि जैसे ही बावली सूखे तुम उसके अन्दर उतर जाओ.

कुछ सीढ़ियाँ उतरने के बाद बगल में एक छोटा रास्ता दिखाई पड़ेगा.

उसके अन्दर घुस जाओ और फुर्ती से जितना दूर निकल जा सको निकल जाओ क्योंकि वह रास्ता बहुत जल्द ही बन्द हो जाएगा और एक बार वह रास्ता बन्द हो जाने पर फिर तुम उसे किसी तरह भी खोल न सकोगे.

इतना पड़ प्रभाकरसिंह ने चिन्ता के साथ मन - ही - मन कहा, “ तब क्या होगा?

अब तो रास्ता बन्द हो गया.

न - जाने मालती को कौन - सी चीज ऐसी उधर दिखाई पड़ी कि वह इस तरह उतावली हो गई?

या उसे कोई ऐसी बात नजर आई जो मैं देख न पाया था?

पर अब क्या होगा?

क्या मैं इसी जगह बैठा रह जाऊँगा?

यह तो जरूर है कि मालती को आगे का पूरा - पूरा हाल मालूम है और अब कहाँ जाना तथा क्या करना है यह भी वह जानती है फिर भी औरत की जात न - जाने कहाँ कैसी गफलत कर बैठे, अगर उसने सब काम ठीक - ठीक किया तब तो फिर वह भाग टूट जाने पर मेरी उसकी भेंट हो सकेगी लेकिन अगर किसी तरह की कोई गलती हो गई तब मुश्किल होगी.

खैर देखें आगे चलकर यह किताब क्या कहती है?

" प्रभाकरसिंह पुनः बड़े गौर से मन लगा कर किताब को पड़ने लगे.

प्रभाकरसिंह की एकाग्रता को यकायक किसी मीठी सुरीली आवाज ने भंग कीया.

उनके कान में किसी कोमल कंठ के यह कहने की आवाज पड़ी, “ अब आप व्यर्थ का परिश्रम न करें और यहाँ से आगे जाने का विचार छोड़ दें, यह किताब इस बारे में

आपको कुछ न बताबेगी.

" प्रभाकरसिंह चौंक कर चारों तरफ देखने लगे.

यह कौन बोला?

सब तरफ निगाह घुमाई मगर कहीं कोई दिखाई न पड़ा.

शायद यह भी कोई तिलस्मी खेल हो यह सोच फिर किताब की तरफ झुके और उसके पन्ने उलटने लगे मगर कुछ ही देर बाद आवाज पुनः सुनाई पड़ी और उसी मुलायम कंठ ने फिर कहा, " क्या आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ?

" प्रभाकरसिंह फिर चौंक और सिर घुमाकर इधर - उधर देखने लगे.

यह कौन औरत है जो बार - बार उनको तंग कर रही है?

ताज्जुब और खोज की निगाहें सब तरफ डाल रहे थे कि एक तरफ से फिर आबाज आई, यहाँ आपके सामने ही तो हूँ ।

" क्या आप मुझको देख नहीं !! पाते? अबकी प्रभाकरसिंह ने बोलने वाले को लक्ष्य कर लिया और आश्चर्य से देखा कि वहीं तिलिस्मी पुतली जिसके हाथ से उन्होंने अभी थोड़ी ही देर पहिले तीर कमान लिया था यह बातें कह रही है.

क्या तिलिस्मी पुतलियाँ बात भी कर सकती हैं?

आश्चर्य करते हुए वे अपनी जगह से उठे और इस पुतली की तरफ मुखातिब होकर बोले, “ क्या तुम्हीं मुझसे बातें कर रही हो! "

वह पुतली कुछ मुस्कुरा कर बोली, “ जी हाँ, इस दासी ने ही आपको सम्बोधन किया था और फिर कहती है कि अब आप उस राह से आगे नहीं जा सकते जो बन्द हो चुकी है.

" प्रभा:

(ताज्जुब से) मगर सो क्यों?

पुतली:

इसलिए कि वह राह सिर्फ एक ही बार खुलने के लिए बनाई गई है.

लेकिन अगर आप इस दासी के साथ चलना स्वीकार करें तो मैं एक दूसरी राह आपको ऐसी बता सकती हूँ कि जो आपको वहाँ पहुँचा सके जहाँ वह राह जाती है, प्रभा:

(और भी ताज्जुब से) अगर आगे जाने की कोई दूसरी भी राह है और उसका हाल तुमको मालूम है तो क्या उसका जिक्र इस किताब में न होगा?

पुतली:

जी नहीं, क्योंकि वह राह सिर्फ हम लोगों के ही आने - जाने के लिए है, कोई गैर आदमी उसको इस्तेमाल नहीं कर सकता.

प्रभाकरसिंह चिन्ता के साथ सोचने लगे कि यह क्या बात है, कहीं यह कोई धोखा तो नहीं है?

मगर उनको चिन्ता में पड़ा देख वह पुतली फिर बोली.

“ आप किसी तरह सन्देह न करिए और बेखटके मेरे साथ आइए, मैं आपसे सत्य कहती हूँ कि आपको आगे जाने का रास्ता बता दूंगी.

" प्रभाकरसिंह ने कुछ सोच कर कहा, " अगर यहाँ से आगे जाने की कोई राह और भी है तथा मैं उसके जरिए बेखटके आगे जा सकता हूँ तो इस किताब में उसका जिक्र कहीं - न - कहीं जरूर होगा.

क़म - से - कम मैं इस विषय में अपना सन्देह तो दूर कर ही लेना चाहता हूँ.

" उस पुतली ने जबाब दिया, “ आप बेशक अपना सन्देह निवृत्त कर लें, मगर मैंने जो कुछ कहा वह बहुत ठीक है.

" प्रभाकरसिंह देर तक उस तिलिस्मी किताब के पन्ने उलटते रहे मगर कहीं भी इस विषय में कोई बात लिखी उन्हें दिखाई न पड़ी.

न तो उस दूसरे रास्ते का कहीं जिक्र था और न यही कहीं लिखा हुआ था कि जिस पुतली के हाथ से तुमने तीर कमान लिया वही तुमको आगे जाने का कोई रास्ता भी बतला सकेगी.

आखिर कुछ देर बाद उन्होंने किताब बन्द कर दी और चिन्ता के साथ ऊपर की तरफ देखा.

उस पुतली की निगाह एकटक उनके ऊपर पड़ रही थी जो उनको सिर उठाता देखते ही फिर बोली.

" मैं पुनः निवेदन करती हूँ कि अब आप और विलम्ब न कीजिए और मेरे साथ आइए.

" प्रभाकरसिंह ने मन में कहा, " जरूर यह भी कोई तिलिस्मी कारीगरी है और शायद इसके अन्दर भी किसी तरह का रहस्य छिपा हुआ है, कम - से - कम देखना तो चाहिए ही की यह मुझे कहाँ ले जाना या क्या करना चाहती है, और तब अपनी सब चीजें सम्हाल वे उठने को तैयार हो गए.

उस पुतली के चेहरे पर प्रसन्नता की झलक दिखाई दी और जैसे ही प्रभाकरसिंह सीढ़ियाँ चढ़ बावली के ऊपर पहुँचे वैसे ही उसने झुक कर बड़ी नम्रता से उन्हें प्रणाम कीया , इसके बाद ही वह घूम कर अपने बगल वाली दूसरी से बोली, " अरी रामकली, खड़ी क्या है, मालिक को सलाम नहीं करती! हमारे भाग्य जागे हैं जो इन्होंने हमारे साथ चलना स्वीकार किया, " उस दूसरी पुतली ने यह सुनते ही प्रणाम किया और बोली, “ हम लोग आज कृतार्थ हो गई.

" इसके बाद वे दोनों घूमीं और अपने पिछली तरफ बने बनावटी पहाड़ की तरफ दोनों हाथों से इशारा करती हुई बोली, " श्री मान इधर चलें! " प्रभाकरसिंह ने सिर हिला कर कहा, " सो न होगा, तुम लोग आगे - आगे चलो.

जब तक मेरी इच्छा होगी मैं भी तुम्हारे साथ पीछे - पीछे चलूँगा.

कौन ठिकाना तुम लोगों के मन में किसी तरह की दगा हो और तुम पीछे से मुझ पर वार कर बैठो.

" एक पुतली ने दाँत तले जीभ दबा कर कहा, “ राम - राम - राम, जो कुछ होना था सो हो गया, अब आप हमारे स्वामी हैं और हम लोग आपकी दासियाँ, फिर भी आपकी आज्ञा मान हीं आगे होने को तैयार हैं, आगे - आगे वे दोनों पुतलियाँ और पीछे - पीछे प्रभाकरसिंह उस बनावटी पहाड़ की तरफ रवाना हुए जो नकली बाग के एक हिस्से में बना हुआ उस जगह से सिर्फ कुछ ही कदमों के फासले पर था.

नकली पहाड़ के बगली हिस्से में एक छोटी सुरंग या गुफा थी जिसके अन्दर आदमी झुककर जा सकता था.

वे दोनों पुतलियाँ इसी गुफा की तरफ बढ़ रही थीं, जब उसके पास पहुंचे तो प्रभाकरसिंह को उसके मुहाने पर दाहिनी तरफ कुछ मजमून लिखा दिखाई पड़ा.

रुक्के और गौर करके पढ़ना चाहा मगर कुछ समझ में न आया.

दूसरी तरफ निगाह गई तो बाईं तरफ भी कुछ लिखा देखा मगर इस तरफ से अक्षर बड़े और मजमून साफ था.

यह लिखा पाया .

.

" तिलिस्म का यह हिस्सा सिर्फ सैर और तफरीह के लिए बनाया गया है, मगर सम्हल कर जाने वाले को बहुत - सी नई बातें भी मालूम होंगी.

" पड़कर प्रभाकरसिंह कुछ निश्चिन्त हुए मगर उनका ध्यान पुनः उस दाहिनी तरफ वाली लिखावट की तरफ गया जो समझ में न आई थी.

उसे समझे बिना अन्दर जाना मुनासिब न जान उसकी तरफ बड़े ही थे कि एक पुतली बोल उठी, “ आप रुक क्यों गए?

किसी तरह का अन्देशा न करिए और बेखटके चले आइए.

देर करना मुनासिब न होगा, " मगर प्रभाकरसिंह ने उसकी बात का कोई जबाब न दिया और आगे बढ़कर गौर से उस लिखावट को पढ़ने लगे.

पहिले तो कोई मतलब समझ में न आया मगर जरा गौर करने पर आशय प्रकट हो गया और वे मुस्कुरा उठे, पाठकों के कौतुहल के लिए हम उस मजमून को यहाँ दे देते हैं दो छ ला छु र या थि ह स्मी प म र औ ही न हो बै ओ जा जा र या शि शि हो

प्रभाकरसिंह को देर करते देख दूसरी पुतली बोली, “ क्या श्री मान कुछ विश्वास करना चाहते हैं! " प्रभाकरसिंह बोले, ' नहीं - नहीं, मैं चलने को तैयार हूँ और तब आगे बढ़े.

ये पुतलियाँ भी एक - दूसरे पर मतलब - भरी निगाह डाल आगे बढ़ी.

ज्यों - ज्यों सुरंग के अन्दर घुसते जाते थे अँधेरा बढ़ता जाता था क्योंकि इसके अन्दर किसी तरह की कोई रोशनी न थी, जो कुछ चाँदना था वह बाहर वाले कमरे से ही आता हुआ यहाँ पड़ रहा था मगर इससे जो कुछ तकलीफ होती वह इस बात से क़म भी हो रही थी कि ज्यों - ज्यों आगे बढ़ते थे सुरंग लम्बी - चौड़ी - खुलासी और ऊंची होती जाती थी.

आगे - आगे वे दोनों पुतलियाँ जा रही थीं और पीछे - पीछे प्रभाकरसिंह बेधड़क अपना तिलिस्मी डंडा मजबूती से हाथ में पकड़े बड़े जा रहे थे.

लगभग तीस - चालीस कदम के इनको जाना पड़ा और तब वह सुरंग खतम हुई, एक ड्योढ़ी - सी लाँघनी पड़ी और तब एक ऐसी जगह सब कोई पहुँचे जिसकी लम्बाई या ऊँचाई का कुछ भी अन्दाज लग न सकता था क्योंकि इस जगह घनघोर अन्धकार था, मगर यह अवस्था देर तक न रही.

एक पुतली ने आगे बढ़ कर न जाने कौन तर्कीब ऐसी की कि वह जगह तेज रोशनी से भर गई और तब मालूम हुआ कि वह एक लम्बा - चौड़ा क़मरा है जिसमें मनुष्य की साधारण जरूरतों के लायक सभी चीजें मौजूद हैं.

प्रभाकरसिंह ने एक पुतली से पूछा, “ क्या यही तुम्हारा स्थान है?

" उसने अदब से जवाब दिया.

" जी नहीं, मगर यहाँ से अब ज्यादा दूर भी नहीं है, (अपनी साथिन से) तू जा और ताली लाकर बाग बाला दरवाजा खोल, तब तक मैं महाराज को इस सिंहासन पर बैठाती और हवा करती हूँ, " वह पुतली यह सुन सिर झुका किसी तरफ को चली गई और दूसरी खूटी से टंगा पंखा उतारती हुई बोली, " श्री मान इस जगह जरा बैठ जाएं जलपान के लिए.

" प्रभाकरसिंह मुस्कुरा कर बोले, " इतनी तकलीफ करने की जरूरत नहीं और न मैं किसी तरह भूखा ही हूँ, बल्कि अगर तुम मेरी प्रसन्नता चाहती हो तो इधर मेरे पास आओ और जो कुछ मैं पूछूं उसका मुझे जबाब दो,

पुतली बेधड़क प्रभाकरसिंह के पास आ गई और उनके सामने खड़ी हो हाथ जोड़कर बोली, “ आज्ञा?

" प्रभाकर:

तुम लोगों का रंग - डंग, बातचीत, चलना - फिरना आदि देखकर मैं बड़े ताज्जुब में पड़ गया हूँ और यह जानना चाहता हूँ कि तुम आखिर हो क्या चीज?

यह तो कहा ही नहीं जा सकता कि तुम लोग जीते - जागते मनुष्य अथवा स्त्रियाँ हो, पर यदि मनुष्य नहीं हो तो क्या वस्तु हो और किस शक्ति की बदौलत ठीक मनुष्यों की ही तरह काम कर रही हो, यह मैं जानना चाहता हूँ, अगर बता सकती हो तो बताओ?

पुतली:

अब मैं क्या बताऊँ कि हम लोग क्या हैं?

बस यही समझ लीजिए कि पापी आत्माएँ हैं जो तिलिस्म के अन्दर कैद होकर अपनी मुसीबत - भरी जिन्दगी काट रही हैं और रात - दिन मनाती रहती हैं कि किसी तरह इस तिलिस्म की उम्र समाप्त हो और इसके तोड़ने वाले का प्रादुर्भाव हो जो इसको ना - नष्ट कर हम लोगों की जान को भी स्वतन्त्रता दे.

प्रभाकर):

इस तरह का गोलमोल जबाब मैं नहीं माँगता और न मैं यही विश्वास कर सकता हूँ कि तुम्हारे भीतर कोई आत्मा है.

आत्मा ईश्वरीय कृति है और वह किसी के वश में नहीं हो सकती.

पर तुम लोग तिलिस्म बनाने वालों की कृति हो और उतना ही कर रही हो जितना करने के लिए मुकर्रर की गई हो, आत्मा को जब कोई स्वतन्त्र शरीर मिलता है तो उसको अन्तःकरण अर्थात मन - बुद्धि चित्त और अहंकार भी प्राप्त होता है और उनके द्वारा स्वतन्त्र रूप से सोचने - समझने और अपनी करनी से अनुभव प्राप्त करने की स्वतन्त्रता मिलती है. अवश्य ही तुम लोगों में वह सब नहीं है यह मैं जानता हूँ और यह भी जानता हूँ कि तुम लोग कुछ कल - पुर्जे और मसालों के जोर से बनाई गई पुतलियाँ मात्र हो जो तिलिस्म बनाने वाले की कारीगरी और बुद्धिमानी का नमूना है.

जो बात मेरी समझ में नहीं आती वह यह कि वह कौन - सी शक्ति है जो तुम लोगों से ठीक मनुष्य की तरह काम करा रही अर्थात जिसकी बदौलत तुम चल - फिर या बोल

सकती हो, क्योंकि आत्मा तो किसी के बनाए बन नहीं सकती.

पुतली ०:

(हँस कर) मनुष्य - शरीर के अवयवों की तरह आत्मा भी क्या एक रासायनिक पदार्थ नहीं हो सकती महाराज! प्रभाकर ०:

इसका क्या मतलब?

पुतली:

आप पूछते हैं कि हमारे भीतर कौन - सी शक्ति है जो हमसे ठीक मनुष्य की तरह काम करा रही है.

आप यह देख ही रहे हैं कि हम लोग ठीक मनुष्य की तरह ही सब काम कर रही हैं और कर सकती हैं.

मनुष्य की ही तरह हमारे हाथ, पाँव, आँख, नाक - कान आदि अवश्य हैं.

किन पदार्थों के किस प्रकार के संयोग से मनुष्य शरीर बना है यह बात तो आजकल के क़म बुद्धि वाले वैज्ञानिक भी जानते हैं और वे उन्हीं वस्तुओं के उसी प्रकार संयोग से उसी प्रकार के पदार्थ बना भी लेते हैं बल्कि बहुत ही निम्न श्रेणी के कुछ जीव बना सकने में भी समर्थ हुए हैं.

तब जब मनुष्य के अंग - प्रत्यंग बनाए जा सकते हैं तो क्या मनुष्य की आत्मा भी नहीं बनाई जा सकती?

प्रभा:

(ताज्जुब से) क्या तुम्हारा मतलब यह कि तिलिस्म बनाने वालों ने तुम्हारे शरीर की तरह तुम्हारी आत्मा की भी रचना कर डाली है?

पुतली:

बेशक! अवश्य ही पूर्ण परमब्रह्म का अंश और स्वयमेवपूर्ण वह सूक्ष्म आत्मा नहीं जो आप जैसे भाग्यवानों के शरीरों का संचालन कर रही है पर एक तरह की निकृष्ठ अपूर्ण बन्धनयुक्त क़म प्रतिभाशाली पराधीन आत्मा या आत्मा से ही मिलती - जुलती - सी

कोई शक्ति उन प्राचीन महात्माओं ने बनाने में सफलता प्राप्त कर ली थी जिनका बनाया यह तिलिस्म है, वही शक्ति इस तिलिस्म के भीतर काम करने वाली हम पुतलियों के भीतर मौजूद है और वही हमसे काम करा रही है ।

प्रभा:

तुम्हारा उत्तर इतना गम्भीर है कि मुझे उस पर विचार करना पड़ेगा, साथ ही उसके सम्बन्ध में कई बातें भी पूछनी पड़ेंगी अगर तुम उसका जबाब दे सको, मगर पहिले इतना तो बताओ कि तुम लोग तरह - तरह का काम करने में स्वतन्त्र हो या सिर्फ उतना ही काम कर सकती हो जितना कि तुम्हारे बनाने वालों ने तुमको करने के लिए मुकर्रर कर दिया.

मसलन इस वक्त मुझसे तुम्हारी जो बातचीत हो रही है.

उसके विषय में मैं पूछता हूँ कि क्या तुम्हारे अन्दर मन की तरह की कोई चीज है जिससे तुम मेरी बातें सुनती या खुद सोच - सोच कर उनका जबाब दे रही हो अथवा यह सब बातें तुम्हारे बनाने वालों ने तुम्हारे अन्दर किसी जगह और किसी तरह भर दी हैं जिन्हें सिर्फ तुम दोहरा - भर सकती हो.

(कुछ रुक कर) लेकिन नहीं, अगर भर दी गई हैं तो मेरी इन बातों का जबाब न दे सकती क्योंकि तुम्हारे बनाने वालों को भला क्या मालूम था कि मैं यहाँ पर किस तरह की बातें तुमसे पूछूंगा, गा.

तुमने मेरी जिन बातों का जिस तरह पर जवाब दिया है उससे कोई ऐसा भान होता है मानों तुम्हारे में सोचने और समझने की ताकत हो! पुतली:

(मुस्कुरा कर) तो क्या आप समझते हैं कि आपके मन में इस समय जो सबाल उठे हैं उनका किसी को पता नहीं लग सकता था?

क्या आप उन ज्योतिषियों को भूल गए जो लोगों के मन की बातें बता देते हैं और मुख प्रश्नों का उत्तर दे देते हैं?

प्रभा:

मैंने ऐसे ज्योतिषियों की बातें सुनी ही नहीं बल्कि उनको देखा और उनकी अद्भुत सामर्थ्य का कुछ परिचय पाया भी है, पर इससे यह तो नहीं सोचा जा सकता कि आज से हजारों बरस पहिले यह तिलिस्म बनाने वाले इस बात को जान सके होंगे कि मैं आज इस तरह इस जगह पहुँचूंगा और तुमसे, एक बोलते - चालने वाली मसाले की पुतली से, इस तरह की बातें पूछूंगा?

क्यां तुम्हारा यह मतलब है कि तिलिस्म बनाने वालों को यह मालूम हो चुका था कि मेरे साथ फलाने दिन फलानी घटना घटेगी अथवा मैं तुमसे फलाने मौके पर फलानी बात पूछूंगा और इसको जान कर उस तरह का जवाब भी तभी से तुम्हारे अन्दर भर दिया गया था कि जो इस समय तुमने मुझे दिया या आगे मेरी बातों के जवाब में दोगी?

पुतली:

जी मेरा यह मतलब है कि तिलिस्म बनाने वालों को अच्छा वैज्ञानिक, अच्छा रासायनिक, अच्छा कलाविद और अच्छा ज्ञानी होने के पहिले एक बहुत ही अच्छा ज्योतिषी होने की आवश्यकता है.

भविष्य में क्या होने वाला है अगर वह जान नहीं सकता है तो न तो वह तिलिस्म ही बाँध सकता है और न फिर तिलिस्म बाँधने का असल तात्पर्य ही निकाल सकता है.

प्रभा:

(अविश्वास के साथ) क्या तुम्हारे कहने का मतलब यह है कि इस तिलिस्म के बनाने बालों ने पहिले ही से केवल यही नहीं जान लिया था कि आज के दिन कौन यहाँ पर किसलिए आवेगा बल्कि यह भी जान लिया था कि उसके मन में उस समय किस तरह के विचार होंगे?

पुतली:

(बात पर जोर देकर) अवश्य, विचार मनोविज्ञान का एक अंग है और काल, स्थान तथा पात्र से सम्बन्ध रखता है. किसके मन में कब कौन विचार उठता है साधारण रीति से उस आदमी के स्वभाव से कुछ भी परिचय रखने वाला उसका कुछ आभास पा सकता है, मगर विशेष ज्ञान रखने वाला इससे कहीं अधिक जान सकता है.

खैर हाथ कंगन को आरसी क्या?

अगर आप सहज ही में जान जायेंगे कि भविष्य तिलिस्म बनाने वालों के हाथ की पटरी पर पड़ी कुछ लकीरें मात्र था.

प्रभा ०:

(उत्कण्ठा के साथ) मैं बड़ी खुशी से उस जगह चलने को तैयार हूँ, लो तुम्हारी साथिन भी तो आ गई.

वह दूसरी पुतली भी इसी समय आ मौजूद हुई दोनों में धीरे - धीरे कुछ बातें हुई और तब वे प्रभाकरसिंह को पीछे आने का इशारा कर एक तरफ को चल पड़ीं, आगे - आगे वे दोनों पुतलियाँ और पीछे प्रभाकरसिंह को लिए हुए एक ऐसे स्थान पर पहुंची जहाँ एक बहुत ही बड़ा कमरा कई जगमगाते हुए गोलो की रोशनी से रोशन हो रहा था.

इस कमरे की छत मामूली से कहीं ज्यादे ऊँची थी. और प्रभाकर सिंह ने ऊपर देखकर अन्दाज किया कि किसी हालत में भी वह बीस गज से कम ऊँची न होगी, छत के बीचोबीच में एक गोल छेद - सा दिखाई पड़ रहा था मगर उसके अन्दर क्या था - कोई दूसरा क़मरा था अथवा खुला हुआ आसमान, इसका ठीक - ठीक पता नहीं लगता था.

बहुत बड़ा होते हुए भी वह कमरा किसी तरह के सामान से एकदम खाली था और इसकी दीवारों पर कोई रोगन इस तरह का किया हुआ था कि वे शीशे की तरह चमक रही थी.

दोनों पुतलियाँ इस जगह आकर रुक गईं और उनकी आकृति से ऐसा मालूम होने लगा मानों वे किसी विचार में पड़ गई हों जिसे देख प्रभाकरसिंह ने कहा, " क्यों रुक काहे को गई?

यह तो मणि - भवन नहीं है! " एक पुतली बोली, “ जी नहीं, यह तो नहीं है मगर इसके बाद ही वह जगह पड़ती है और वहाँ जाने के लिए (छत की तरफ दिखा कर) सिर्फ यही एक राह है.

हम लोग यही सोच रही थीं कि आपको किस तरह वहाँ तक ले जाएं?

" प्रभाकरसिंह बोले, " क्या वहाँ तक जाने की कोई तरकीब नहीं बनी है?

" जिसके जवाब में उसने कहा, " हम लोगों के जाने लायक तो रास्ता है मगर आपके जाने योग्य नहीं है " प्रभाकरसिंह बोले, “ सो क्यों?

जिस तरकीब से तुम लोग वहाँ तक पहुँच सकती हो जरूर उसी तरह से मैं भी पहुंच सकता हूँ, इसमें तरदुद कौन - सा है?

" प्रभाकरसिंह की बात सुन वह पुतली अपने साथ बाली की तरफ देखकर मुस्कुराई और तब बोली, “ अच्छी बात है, तो आप देख लीजिए कि हमारी राह आपके काम आ सकती है या नहीं.

" पुतली कमरे की दीवार के पास गई और वहाँ लगी हुई एक टूटी को उसने किसी क़रम से उमेठ दिया.

इसके बाद वह पुनः अपनी जगह पर वापस लौट आई और उसी समय प्रभाकरसिंह ने देखा कि लोहे की एक पतली तार ऊपर वाले उस छेद की राह नीचे की तरफ उतरी.

धीरे - धीरे लटकती हुई वह तार जमीन तक आ पहुंची और तब एक ने दूसरी की तरफ देखकर कहा, " बहिन, तू पहिले ऊपर जा जिसमें ये देख लें कि हम लोग किस तरह आते - जाते हैं.

" जवाब में ' अच्छा ' कह उस पुतली ने आगे बढ़ उस तार को पकड़ लिया और तब उसको दो - तीन बार हाथ में लपेटे मजबूती से थाम लिया.

इसके बाद उसने कई झटके उस तार को दिये जिसके साथ ही वह तार ऊपर की तरफ उठने लगी और उसी के साथ - साथ लटकती हुई वह पुतली भी ऊपर को जाने लगी.

दूसरी पुतली ने प्रभाकरसिंह को लक्ष्य कर कहा, “ हम लोगों का बदन हलका है इससे हम ऐसा कर सकती हैं पर आप किसी तरह ऐसा नहीं कर, सकते.

" प्रभाकरसिंह उस ऊपर को उठती हुई पुतली की तरफ देखते हुए सोचने लगे कि ऊपर जाने की क्या तर्कीब हो सकती है.

उनके देखते - देखते वह तार समूची ऊपर को उठ गई और उस छेद के अन्दर गायब हो गई तथा उसके साथ - साथ वह पुतली भी आँखों की ओट हो गयी.

अब दूसरी पुतली ने प्रभाकरसिंह से कहा, " कहिए क्या आप इस तरह ऊपर जा सकेंगे?

" प्रभाकरसिंह ने जवाब दिया, “ तार बहुत ही पतली है इससे कुछ संदेह होता है नहीं तो जाना कुछ विशेष मुश्किल तो नहीं था.

" यकायक वह पुतली बोली, " अच्छा मुझे एक तर्कीब सूझ गई है, ठहिरए मैं अभी आई.

" प्रभाकरसिंह को वहीं छोड़ वह पुतली पीछे की तरफ लौट गई और थोड़ी ही देर में कपड़े का एक झूला लिए उस जगह आ पहुँची जिसे दिखाकर उसने कहा, " मैं इसको उस तार के साथ बाँध दूंगी और आप इसमें बैठकर बेखटके ऊपर जा सकेगे.

" इतना कह बिना जबाब की राह देखे वह उसी खुंटी के पास पहुंची और पहिले की तरह फिर उसको उमेठा.

उसी तरह पुनः वह तार लटकने लगी और धीरे - धीरे जमीन से आ लगी.

पुतली ने झूले को तार के साथ मजबूत बाँधा और तब प्रभाकरसिंह से कहा, “ आइए विराजिए, यह आपको सही - सलामत ऊपर तक पहुँचा देगा.

" प्रभाकरसिंह ने दो - तीन बार कड़ा झटका देकर तार की मजबूती की थाह ली.

तार यद्यपि पतली थी मगर थी बहुत ही मजबूत अस्तु उन्हें विश्वास हो गया कि वह निर्विघ्न उन्हें ऊपर तक पहुँचा देगी.

फिर भी न - जाने क्या सोच वे बोले.

" अच्छा तुम पहिले इस पर ऊपर पहुँच जाओ तो मैं भी चलूं.

" पुतली ने हाथ जोड़कर जवाब दिया, " मुझे ऐसा करने में कोई उज्र नहीं हैं मगर ऐसा करने में मुश्किल यह होगी कि आप ऊपर न जा सकेंगे, इस तार को ऊपर से नीचे मँगाने के लिए जो खास तरकीब की जाती है वह आप कर न सकेंगे और इसीलिए ऊपर भी जा न सकेंगे.

" प्रभाकरसिंह बोले, " मैंने देखा है कि ऐसा करने के लिए तुम उस खुंटी को उमेठती हो, क्या वही तरकीब मैं नहीं कर सकता?

" पुतली ने जबाब दिया, “ जी नहीं, उसको एक खास तरक़ीब के साथ उमेठना पड़ता है जो बतलाने की इजाजत हम लोगों को नहीं है ।

!!

प्रभाकरसिंह इस बात को सुन कुछ गौर में पड़ गए, पहिले तो उन्होंने सोचा कि उस तरकीब को जानने की जिद्द करें मगर फिर यह सोचकर कि शायद यह बात पुतली नहीं ही बतावे तो झगड़ा हो पड़ेगा और फिर मणि - भवन पहुँचना भी कठिन नहीं हो जायगा, उन्होंने कुछ सोच - समझकर पुतली की ही बात स्वीकार की और पैर लटकाकर उस झूले में जा बैठे.

पुतली ने तार को तीन - चार झटके दिए और वह ऊपर को उठने लगी.

झूला धीरे - धीरे ऊपर को उठ रहा था और प्रभाकरसिंह भी क्षण - क्षण ऊँचे होते जा रहे थे कि यकायक उन्हें कोई बात खयाल आ गई, गुफा के बाहर वाले मजमून ने उन्हें कहीं भी बैठने को मना किया था

यह खयाल आते ही वे चौंके और बैठने के बजाय उस झूले में खड़े होने की कोशिश करने लगे, उसी समय उन्होंने यह भी देखा कि जमीन पर खड़ी उस पुतली का भाव बदल गया है.

उसके चेहरे से नम्रता और आधीनता के बदले घृणा और द्वेष प्रकट होने लगा है और वह बड़े ही गुस्से की निगाहों से उनकी तरफ देखती हुई अपने कपड़ों के अन्दर से कोई चीज निकालने की कोशिश कर रही है.

इधर प्रभाकरसिंह सम्हल कर अपने स्थान पर खड़े हुए ही थे कि उधर पुतली ने एक पतली तलवार जो उसके कपड़ों के अन्दर छिपी हुई थी निकाल ली और " दुष्ट, तिलिस्म तोड़ने का मजा चख, कहते हुए बड़ी तेजी से प्रभाकरसिंह पर चलाई.

उसका निशाना प्रभाकरसिंह की गर्दन पर था पर उसी सायत में वे उछक्कर खड़े हो गये जिससे निशाना बहक़ गया.

फिर भी उनकी जाँघ में तलवार जोर से लगी, चमड़ा कट गया और खून बहने लगा, परन्तु, उन्होंने इसकी परवाह न की और अपना तिलिस्मी डंडा झुक कर पुतली के सिर से छुला दिया.

तिलिस्मी डंडे का छुना था कि उस पुतली ने एक चीख मारी और फुलझड़ी की तरह जल उठी.

उधर वह झूला प्रभाकरसिंह को लिए हुए ऊपर को उठने लगा और कुछ ही देर बाद वे उस कमरे की छत वाले सुराख तक जा पहुँचे.

बाहर होते हुए उन्होंने देखा कि वह पुतली बल कर राख हो गई थी.

प्रभाकरसिंह को विश्वास था कि वह तार उन्हें छत पर पहुँचाकर ही रह जाएगी मगर ऐसा न हुआ और छत के बाहर होने के बाद वह झूला उन्हें लिए नीचे उतरने लगा.

जिस तरह के कमरे में से अभी - अभी चले आ रहे थे ठीक उसी तरह का उतना ही बड़ा और वैसी ही ऊँची छत वाला एक दूसरा क़मरा उन्हें अपने नीचे नजर आया जिसकी सतह पर उस झूले ने धीरे - धीरे नीचा होकर उन्हें पहुंचा दिया.

उसी जगह पास ही में वह पहिली पुतली भी खड़ी उनको दिखी जिसने झूले को थाम लिया और उनके उतरने में सहायता करते हुए कहा, " मेरी साथिन इसी झूले की मदद से आ जाएगी.

चलिए हम लोग आगे बढ़ें क्योंकि देर बहुत हो गई और अब सुबह होने में कुछ ही कसर बाकी होगी, सुबह हो जाने पर हमारी काम करने की शक्ति नष्ट हो जायगी.

" प्रभाकरसिंह ने जवाब में केवल इतना ही कहा, " मैं आगे चलने को तैयार हूँ, " और वह पुतली मुड़कर एक तरफ को बड़ी.

दाहिनी तरफ की दीवार के पास पहुँच कर उस पुतली ने कोई तरकीब ऐसी की कि वहाँ एक दरवाजा प्रकट हो गया जिसके अन्दर से होते हुए दोनों आदमी एक छोटे से कमरे में पहुंचे और वहाँ से भी बाहर होकर एक दालान में आए जिसके सामने एक छोटा - सा मगर खुशनुमा बाग नजर आ रहा था.

सुबह होने में कुछ ही कसर बाकी थी और अरुणोदय की लाली पूरब तरफ के आसमान को लाल करती हुई उस छोटे बाग के बीचोबीच की अद्भुत इमारत को प्रकट कर रही थी.

प्रभाकरसिंह ने देखा कि यह इमारत एक खुशनुमा बंगले के तर्ज पर बनी हुई है और उसकी दीवारों, खम्भों तथा बाहर से दिखने वाले सब हिस्सों पर रंगीन शीशे इस कारीगरी से जड़े हुए हैं कि तरह - तरह के बेल - बूटे बन गए हैं जिनकी बदौलत यह बेतरह चमक रही है.

इस समय की हलकी रोशनी में इसका जब यह हाल है तो धूप पडने पर यह कैसी चमकती होगी.

प्रभाकरसिंह इसी बात को सोच रहे थे कि उस पुतली ने कहा, “ महाराज, देखिए वह सामने मणि - भवन है, मेरी सखी आ जाए तो हम लोग उधर चलें.

" पेज.

२८८.

पर लिखे तिलिस्मी मजमून का मतलज- " होशियार हो जाओ मगर कहीं बैठो नहीं और मणि - भवन में पहुंच तिलिस्मी हथियार छुला दो.

!!

तिलिस्मी किताब में दिए निशान से प्रभाकरसिंह ने भी समझ लिया कि यही वह मणि - भवन है जिसे देखने की उनकी बहुत बड़ी उत्कंठा थी.

पुतली की बात सुन वे बोले, “ अब अपनी सखी से मिलने का ध्यान छोड़ो और अगर मुझे वहाँ तक ले चल सकती हो तो ले चलो नहीं तो मेरा सलाम लो, मैं अकेला ही चला, " इनकी बात सुनते ही वह पुतली जल्दी से बोली, “ नहीं, नहीं, आप चलिए मैं आपको ले चलती हूँ, ” और दालान से उतरकर उस बंगले की तरफ बड़ी, प्रभाकरसिंह भी साथ हुए.

यह बाग जिसके अन्दर से होकर प्रभाकरसिंह जा रहे थे बहुत बड़ा न होने पर भी तरह - तरह के गुलबूटों से बहुत अच्छी तरह सजा हुआ था.

प्रभाकरसिंह ने देखा कि इसमें तरह - तरह के मेवों के पेड़ भी बहुतायत से हैं, जिन्हें खाकर आदमी अपना गुजर बखूबी कर सकता है.

पानी की भी यहाँ कमी न थी और एक नहर की बदौलत वह बाग हर वक्त सरसब्ज बना रहा करता था.

चकरदार रविशों पर से होते हुए ये दोनों उस ' मणि - भवन ' के पास पहुंचे और तब प्रभाकरसिंह ने देखा कि जिसको दूर से उन्होंने शीशे के टुकड़े समझा था वे वास्तव में जबाहिरात हैं जो बड़ी खूबी और बहुतायत के साथ उस इमारत की दीवारों पर जड़े हुए हैं.

प्रभाकरसिंह उन्हें देखते हुए ताज्जुब के साथ सोचने लगे कि तिलिस्म बनाने बालों के पास कितनी दौलत थी जो जवाहिरात इस लापरवाही के साथ इमारतों में जड़े हुए हैं! मणि - भवन ' की इमारत क़मर - भर ऊंची कुर्सी देकर बनी हुई थी.

चारों तरफ कुछ जगह खुली छूटी हुई थी जिसके बाद एक नीचा दालान और तब कई किता ' दरवाजे पड़ते थे जो सब - के - सब बन्द थे.

वह पुतली प्रभाकरसिंह को लेकर जगत पर चड़ गई और उस दालान में पहुँच नीचे वाले दरवाजे के सामने जा खड़ी हुई जो अगल - बगल वाले दरवाजे की बनिस्बत कुछ बड़ा था.

दरवाजे के ऊपर के एक छोटे संगीन आले में एक मूर्ति गणेशजी की रक्खी हुई थी जिसके नीचे की तरफ एक छोटा चूहा भी बना हुआ था.

यह समूची मूर्ति किसी तरह के कीमती पत्थर को काटकर बनाई गई थी और देखने में दीवार के साथ जड़ी हुई मालूम पड़ती थी पर जिस समय पुतली ने उस चूहे को पकड़कर अपनी तरफ खींचा तो वह जरा - सा उठ आया और इसके साथ ही एक हलकी आवाज देता हुआ सामने के दरवाजे का एक पल्ला भी खुल गया.

* किता-- जमीन मकान लेख्य आदि की सूचक संख्या.

भीतर से पीतल के बने हुए एक सिपाही ने जो आदमी के कद का और हूबहू फौजी सिपाही के रंग - डंग और शक्ल - सूरत का बना हुआ था झाँककर बाहर की तरफ देखा

और साथ ही उसके गले से आवाज निकली, " कौन है और क्या चाहता है?

" पुतली ने जवाब दिया, " महाराज है, दरबार देखना चाहते हैं, पीतल के सिपाही ने यह बात सुनकर एक बार झाँककर प्रभाकरसिंह की शक्कल देखी तब पीछे हट गया और दरवाजा भीतर से बन्द हो गया.

प्रभाकरसिंह ने पुतली से पूछा, “ यह सब क्या मामला है और कौन से दरबार का तुमने जिक्र किया है?

" पुतली बोली, ' इस मणि - भवन के अन्दर इस तिलिस्म को बनवाने वाले महाराज सूर्यकान्त के दरबार का दृश्य दिखाया गया है.

अपनी जीवितावस्था में वे जिस तरह दरबार किया करते थे और जो - जो लोग उसमें उपस्थित रहते थे उन सब का खाका इसके भीतर खींचा गया है और विशेषता यह है कि कोई खास तरकिब करने पर, जिसका हाल मुझे मालूम नहीं, वे सब मूर्तियाँ जीवित मनुष्यों की तरह बातचीत और कामकाज करती दिखाई पड़ती हैं.

पर दरबार .

.

.

" पुतली ने अपनी बात खतम नहीं की थी कि दरवाजा फिर खुला और उसी सिपाही ने सामने होकर कहा, " हुक्म हुआ है कि इनको इज्जत के साथ हुजूर में पेश किया जाय.

" इसके साथ ही दरवाजे का दूसरा पल्ला भी खुल गया और उस तरफ खड़ा एक और सिपाही नजर आया.

दोनों सिपाहियों ने झुककर प्रभाकरसिंह को सलाम किया और एक ने हाथ का इशारा करते हुए कहा, " पधारिए, बड़े महाराज आपकी राह देख रहे हैं ।

प्रभाकरसिंह एक सायत के लिए रुके.

तेजी के साथ मन - ही - मन वे एक बार उन बातों को दोहरा गए जो तिलिस्मी किताब में ' मणि - भवन ' के बारे में पड़ी थीं और वहाँ पहुँचकर क्या करना होगा इसको भी

ध्यान में बैठा लिया, इसके बाद उन्होंने कमरे के अन्दर पैर रखा.

उसी समय बाहर खड़ी पुतली ने कहा, " मुझे क्या हुक्म होता है! " प्रभाकरसिंह ने पलटकर जवाब दिया, " सिवाय इसके कि तुम भी अपने बनाने वाले के पास जाओ और मैं कह ही क्या सकता हूँ! " और तब फुर्ती से उसके सिर से अपना तिलिस्मी डंडा छुला दिया.

छुलाने के साथ ही वह बड़े जोर से चिल्लाई और उसके सिर से आग की लपटे निकलने लगीं, मगर प्रभाकरसिंह ने उधर ध्यान न दिया और उन सिपाहियों के पीछे हो लिए जिन्होंने उनको भीतर कर दरबाजा बन्द कर लिया, इसके बाद एक सिपाही उनकी तरफ मुखातिब हुआ और अदब के साथ बोला.

" श्री मान सीधे दरबार में जाना चाहते हैं या जो कुछ चीजें यहाँ देखने लायक हैं उनको देखने के बाद वहाँ चलेंगे! " प्रभाकरसिंह ने जवाब दिया.

“ मैं सब कुछ देखता हुआ जाना चाहता हूँ, ” जिसके जवाब में उसने पुनः सलाम किया और तब " इधर से आइए " कहता हुआ एक तरफ को मुड़ा.

एक के बाद की एक कितने ही छोटे - बड़े कमरे उस जगह बने हुए थे जिनमें एक - एक करके प्रभाकरसिंह घूम आए, इन कमरों में क्या - क्या चीजें थीं और प्रभाकरसिंह को उनके देखने से क्या लाभ हुआ इसके बारे में हम इस जगह कुछ न बतावेंगे कदाचित आगे चलकर इसका हाल प्रकट हो, हाँ इतना कह सकते हैं कि इन चीजों को देखने में प्रभाकरसिंह को बहुत ज्यादा देर लग गई यहाँ तक कि सूर्य देव आसमान में बहुत ऊपर चढ़ आए.

वे समूची रात के जागे और काम करते हुए बहुत ही थक गए थे फिर भी इस जगह उन्हें कुछ ऐसी आश्चर्य की चीजें दिखाई पड़ रही थीं तथा और भी दिखने की आशा थी कि उनकी आँखों में तो नींद का नाम - निशान न था और न बदन में थकावट का चिह्न.

जब वे सब तरफ के कमरों में घूम - फिर आए तो पुनः उसी स्थान में पहुँचे जहाँ से दरवाजे की राह इस इमारत में घुसे थे.

उस समय एक सिपाही ने कहा, “ अब अगर आज्ञा हो तो आपको दरबार में पेश किया जाय! " जिसके जवाब में उन्होंने कहा, “ जरूर.

" सामने का बहुत बड़ा दरवाजा खोल दिया गया और प्रभाकरसिंह ने एक आश्चर्यजनक दृश्य देखा.

एक बहुत ही बड़ा और ऊंची छत बाला क़मरा किसी महाराजाधिराज के दरबार के रूप में सजाया हुआ नजर आया जिसमें एक - से - एक बड़कर खूबसूरत, नायाब और क़िमती चीजें इस बहुतायत से सजाई हुई थीं कि उनकी कीमत का अन्दाजा नहीं किया जा सकता था.

एक बड़े ही वृद्ध तपस्वी महात्मा बैठे हुए थे जिनकी रूई की तरह सुफेद दाढ़ी नाभी के नीचे लटक रही थी और जिनकी सूरत से तपस्या और ज्ञान का तेज चमक रहा था.

अब तक जिन - जिन कमरों में घूम - फिर कर प्रभाकरसिंह ने जो कुछ देखा - सुना था शायद उन्हीं की मदद से उन्होंने देखते ही समझ लिया कि ये इस तिलिस्म के बनाने वाले महाराज सूर्यकान्त तथा उनके गुरु सोमदत्त हैं, महाराज के सिंहासन के दोनों तरफ रक्खी हुई सोने तथा चाँदी की कुर्सियों पर एक से एक बड़कर खूबसूरत और दिलावर जवान बैठे हुए दिखाए गए थे जिनको प्रभाकरसिंह गौर और ताज्जुब से देख ही रहे थे कि यकायक किसी तरह की आवाज सुनकर चमक गए.

उनके सामने की मूरतों में से एक के मुँह से निकला, “ ये कौन है और क्या चाहते हैं?

" प्रभाकरसिंह के साथ आने वाले एक चोबदार ने अदब से कहा, " धर्मावतार, ये तिलिस्म तोड़ते हुए यहाँ तक पहुँचे हैं और दरबार का दर्शन करने के इच्छुक थे.

आज्ञानुसार हाजिर किए गए हैं, " बोलने वाले ने महाराज सूर्यकान्त की तरफ देखा, उन्होंने सिर हिला कर कुछ इशारा किया, वह मूरत फिर बोली, “ इन्हें कुर्सी दो, " दो चोबदार दौड़े हुए गए और सोने की कुर्सी लाकर बगल में रख दी जिस पर प्रभाकरसिंह बैठ गए और ताज्जुब के साथ अपने चारों तरफ देखते हुए सोचने लगे कि क्या ये मोम और धातु की बनी हुई बेजान पुतलियाँ हैं या जीते - जागते मनुष्य! प्रभाकरसिंह के बैठते ही महाराज सूर्यकान्त की मूरत ने सिर घुमाकर अपने गुरु सोमदत्त की तरफ देखा और पूछा, " गुरुदेव.

आज पहिले - पहल यहाँ मैं एक जीवित मनुष्य को देख रहा हूँ, यह क्या बात है?

" महाराज का गम्भीर स्वर उस कमरे में गूंज गया.

प्रभाकरसिंह उसे सुन कुछ कौतूहल और उत्कण्ठा के साथ जरा आगे को झुककर सुनने लगे, महाराज का सबाल सुन उनके गुरु की मूरत ने जरा - सा सिर घुमाकर प्रभाकरसिंह की तरफ देखा और तब कहा, “ राजन, क्या तुम भूल गए?

आज ही के लिए न उस रोज मैंने तुमसे कहा था! हम लोगों की इतनी मेहनत, तुम्हारे अतुलित धन - व्यय और मेरे विज्ञान - बल से बंधे हुए इस तिलिस्म की आयु शेष प्रायः होने पर आ गई है, यह बात मैंने उस दिन तुमसे कही थी.

वही शुभ घड़ी आज से प्रारम्भ हुई है.

आज इस तिलिस्म का एक भाग टूटने पर आया है और उसको तोड़ने वाला तुम्हारे वंश का दीपक यह बहादुर तुम्हारे सामने मौजूद है!! महाराज की मूरत ने जरा घूमकर आश्चर्य, उत्कण्ठा, कौतूहल और प्रेम की दृष्टि प्रभाकरसिंह पर डाली और तब अपने गुरु महाराज की तरफ घूमकर कहा, " जी हाँ, बखूबी याद है कि आपने कहा था कि अब इस तिलिस्म की उम्र समाप्त होने को आ गई है, तो क्या समयूँ कि मेरा वह सब धन अब उन लोगों के हाथ लग जायेगा जिनके लिए हम लोगों ने इतने दिनों से उसको सुरक्षित रख छोड़ा है.

" गुरु महाराज बोले, " सब तो नहीं मगर कुछ अंश अब अपना गुप्त स्थान छोड़ कर संसार में प्रकट हो जायेगा.

तिलिस्म के कुल बारह भाग करके मैंने तुम्हारी दौलत बारह जगहों में तुम्हारे बारह वंशजों के लिये छिपा कर रख दी थी, उनमें से पहिला अंश तुम्हारी लड़की के वंश में उत्पन्न यह बहादुर ले चला.

बहुत जल्द तुम्हारे छोटे लड़के जयदेवसिंह के खानदान के बहादुर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह आगे आएँगे और तिलिस्म के दो हिस्सों को तोड़कर उसका माल पाएँगे.

इसके बाद तुम्हारे बड़े लड़के धीरसिंह के खानदान में प्रतापी गोपालसिंह का समय आवेगा और वह एक भाग तोड़कर उसका धन प्राप्त करेगा.

बस इस पीढ़ी में इतना ही होकर रह जायेगा.

बाकी के आठ हिस्से अगली पीढ़ी में टूटेंगे और उस समय इस तिलिस्म की आयु एकदम समाप्त हो जायगी.

" आश्चर्य और कौतूहल के साथ प्रभाकरसिंह वे बातें सुन रहे थे.

गुरु सोमदत्त जी की बातों ने उन पर कुछ ऐसा असर किया कि वे इस बात को बिल्कुल भूल गए कि वे कुछ पुतलियों के सामने खड़े हैं या एक तिलिस्मी नाटक मात्र देख रहे हैं.

वे उनकी बात समाप्त होते ही वे यकायक अपनी जगह पर खड़े हो गए और हाथ जोड़कर बोल उठे.

" गुरुदेव, क्या मैं एक बात पूछ सकता हूँ?

" कुछ मुस्कुरा कर गुरु महाराज की मूरत बोल उठी, " तुम जो कुछ पूछोगे वह मैं जान गया हूं तथापि पूछो क्या पूछते हो.

सिर्फ यह ख्याल रखो कि समय थोड़ा है, तुम्हें अभी बहुत काम करना है, महाराज के उठने का समय हो गया है, और दरबार समाप्त होने ही वाला है.

" प्रभा:

मैं बहुत ही संक्षेप में यह जानना चाहता हूँ कि तिलिस्म किस लिए बनाया जाता है और उसको तोड़ने की क्यों जरूरत पड़ती है?

गुरु:

इसका पूरा जबाब तुम्हें एक पुस्तक में मिलेगा जो आगे चलकर तुम्हारे हाथ लगेगी.

पर संक्षेप में सुन लो कि यह लक्ष्मी अस्थिरा है, आज है और कल नहीं.

बाहु और बुद्धि के बल से कोई प्रतापी अगाध धन संग्रह करता है और उसी का लड़का राह का भिखारी हो जाता है ।

इसलिए वे लोग जिनके पास आवश्यकता से अधिक धन है अपने धन का कुछ भाग भविष्य के लिए इस प्रकार सुरक्षित कर जाना चाहते हैं कि वह नष्ट न हो बल्कि उन्हीं के वंश के किसी प्रतापी आदमी को कुछ वर्षों या शताब्दियों के बाद मिल जाय, कभी - कभी निज की सन्तान न होने या नालायक होने पर भी उसको सब धन न देकर कुछ

अंश तिलिस्म बनाकर उसके अन्दर रख दिया जाता है कि जिसमें आगे की पीढ़ियों में किसी बुद्धिमान और प्रतापी के हाथ लगे और वह उससे संसार का कुछ उपकार कर सके.

ऐसे ही धन को हिफाजत से रखने के लिए तिलिस्म बनाया जाता है और जिसके नाम पर वह तिलिस्म बाँधा जाता है उसके सिवाय और कोई उसको खोल या धन निकाल नहीं सकता.

प्रभा:

ठीक है, मैं समझ गया.

मुझे यह जान अकथनीय प्रसन्नता हुई कि मैं वृद्ध श्री महाराज के वंश का एक तुच्छ चिह्न हूँ.

आपने इस तिलिस्म के शीघ्र ही टूटने वाले जिन अन्य हिस्सों का जिक्र किया उनके तोड़ने वाले महापुरुषों को भी मैं अच्छी तरह जानता हूँ और आज यह जान मेरी प्रसन्नता की हद न रही कि उनसे मेरा कुछ सम्बन्ध भी है.

पर यह जानने का मुझे कौतूहल हो रहा है कि काल के प्रभाव से जिस तरह महाराज के वंश के चार व्यक्ति आज एकत्र और उपस्थित हो रहे हैं, उसी तरह महाराज के गुरु अर्थात आपके वंश का भी कोई ऐसा व्यक्ति क्या इस समय नहीं है जो आजकल के इस जमाने में उपस्थित हो?

गुरु:

मैं तो आजन्म ब्रह्मचारी था अस्तु मेरा वंश तो है ही नहीं पर यदि तुम मेरे शिष्य - वर्ग को मेरा वंश समझ लो तो घटनाचक्र से आज मेरे शिष्यों के चार वंशधर एकत्र हुए हैं और इस तिलिस्म के तोड़ने में उनका भी कुछ विशेष हाथ होगा और रहेगा.

प्रभा:

(कौतूहल के साथ) ऐसा! तो क्या मैं उनका परिचय पा सकता हूँ?

गुरु:

कहना उचित तो नहीं है, पर मैं जानता हूँ कि तुम इस बात को बहुत ही गुप्त रक्खोगे इसलिए कहे देता हूँ कि शेरसिंह, इन्द्रदेव, यदुनाथ और भूतनाथ मेरे ही चार शिष्यों के वंशज है और तिलिस्म के इस पीड़ी में टूटने वाले चारों हिस्सों से इन चारों का विशेष सम्बन्ध है ।

प्रभा:

है! शेरसिंह, इन्द्रदेव, यदुनाथ और भूतनाथ आपके शिष्यों की सन्ताने हैं !! गुरु:

(मुस्कुरा कर) हाँ.

प्रभा:

(बढ़ते हुए आश्चर्य से) तो क्या मैं जान सकता हूँ कि इन लोगों का तिलिस्म से किस प्रकार का सम्बन्ध है?

गुरु:

विक्रमी तिलिस्म के चार टूटने वाले हिस्सों की तालियाँ इन चार मनुष्यों की हिफाजत में थी, पड़ी या रहेंगी, तथा इनका वास्तविक कर्तव्य तिलिस्म तोड़ने वालों की सहायता करना है.

प्रभा:

क्या ये लोग खुद उन चाभियों की मदद से तिलिस्म खोल उसकी दौलत निकाल नहीं सकते?

गुरु:

केबल चाभी पास रखने ही से तिलिस्म टूट नहीं सकता.

वह तो जिसके नाम पर बाँधा गया है उसी के हाथों टूट पावेगा, फिर भी यह जरूर रहेगा और चाभियाँ जिनके पास हैं उनका तिलिस्मी मामलों में कुछ दखल जरूर रहेगा और उनको दौलत की कमी भी किसी तरह न हो सकेगी.

प्रभा:

आपने जो नाम लिए घटनाबशात मैं उन चारों ही को जानता हूँ और उसी जानकारी के बल पर यह कहने की दऋष्ठता करता हूँ कि जो नाम लिए उनमें से कुछ आज संसार में बड़े ही बदनाम हो रहे हैं.

गुरु:

(मुस्कुराकर) यह बात हम लोगों से छिपी हुई नहीं है.

यदुनाथ और भूतनाथ मेरे शिष्य सम्प्रदाय का नाम बदनाम करने वाले लोग हैं.

और शायद तुम कहोगे कि ऐसे आदमियों के हाथ में तिलिस्म की चाभी पड़ने का नतीजा अच्छा नहीं निकल सकता.

प्रभा:

(कुछ संकोच के साथ) जी हाँ, मैं यही कहना चाहता था.

मुझे इस बात का आश्चर्य है कि ऐसे लोग आप जैसे महात्मा के वंश में किस तरह आ गए! महात्मा:

किसके वंश में कब कौन जन्म लेगा इस पर सिवाय भगवान के अन्य किसी का वश नहीं है और इस बात की चिन्ता करना भी बिल्कुल व्यर्थ है.

प्रभा:

यह ठीक है, पर मुझे यह जानने का कौतूहल है कि जब आप जानते थे कि ये दोनों ऐसे होंगे तो फिर इस प्रकार का नाजुक काम .

.

.

महात्मा:

पर हम लोगों ने इसकी फिक्र कर रखी है.

ये दोनों, यदुनाथ और भूतनाथ, दो तिलिस्मी चाभियों को रखते हुए भी यह जान नहीं पायेंगे कि उनके पास कैसी क़िमती चीज है.

केवल जब समय आवेगा तभी घटनाक्रम इस बात को प्रकट कर देगा और उसी समय ये चीजें अर्थात तिलिस्म की चाभियाँ भी उनके हाथों से निकलकर उनके असली मालिकों के पास चली जाएँगी.

प्रभा:

ठीक है, मगर मुझे इन लोगों के बारे में भी कुछ कौतूहल है.

इन लोगों का अन्त क्यां होगा?

इस समय घटनाचक्र जैसा चल रहा है और ये लोग जिस तरह कार्रवाइयाँ कर रहे हैं उनको देखते हुए .

.

.

महात्मा:

इस संसार में सभी अपनी - अपनी करनी का फल भोगते हैं, ये भी भोगेगें.

इन चारों में से केवल दो ही अपना कर्तव्य ठीक तरह से पालन करेंगे.

बाकी दो को लालच पैदा होगी और वे तिलिस्म का धन खुद हड़पने की चेष्ठा करेंगे, फल यह होगा कि स्वयं भी नष्ठ होंगे और अपने साथियों को भी डुबाएँगे.

इनमें से एक भूतनाथ तो शायद सम्हल भी जाय पर दूसरा, यदुनाथ, अन्त तक अपनी कुवासनाओं को रोक न सकेगा और एकदम नष्ठ हो जायगा.

प्रभा:

सो कैसे महाराज?

यदि हर्ज न हो तो कृपा कर दीजिए, महात्मा:

भविष्य के बारे में विशेष कौतूहल रखना या उसको जानने की चेष्ठा करना कभी अच्छा नहीं होता, फिर भी तुम पूछते हो तो बताए देता हूँ कि जब गोपालसिंह के हाथों

तिलिस्म का एक भाग टूटने का समय आवेगा तो यह यदुनाथ उस काम में बाधा देगा और तिलिस्म का मालिक खुद बनना चाहेगा.

इसमें वह सफल तो होगा ही नहीं बल्कि खुद भी तिलिस्म के एक चक्कर में पड़कर दीन दुनिया से बेकाम होकर कुत्तों की मौत मारा जायगा.

प्रभा:

और भूतनाथ?

उसकी क्या गति होगी?

महात्मा:

लालच उसको भी बिनाश के गड़े में गिरावेगी.

पर अन्त में एक .

.

.

महात्मा की बात पूरी न हुई थी कि उसी समय यकायक कहीं से जोर से शंख बजने की आवाज आई जिसे सुन वे चौंक पड़े और सिर घुमाकर एक तरफ देखने लगे.

प्रभाकरसिंह भी यह देख ताज्जुब की निगाहें चारों तरफ डालने लगे, इसी समय बड़े जोर से उस कमरे का दरवाजा जो बन्द था खुल गया और कई आदमी कमरे के अन्दर आते हुए दिखाई पड़े.

न - जाने ये लोग कौन थे कि प्रभाकरसिंह उन्हें देखते ही चौंक पड़े और ताज्जुब के साथ अपनी कुर्सी पर से उठ खड़े हुए.

पांचवा व्यान।

एक तो भूतनाथ पहिले ही का जख्मी कमजोर, ऊपर से यह अचानक की विपत्ति, नतीजा यह हुआ कि कूएँ में गिरने के साथ ही वह बदहवास हो गया और उसे तनोबदन की सुध न रह गई.

जब वह होश में आया तो उसने अपने को उस कुएँ की जगत पर पड़ा हुआ पाया, उसके चारों तरफ कई आदमी थे जो बड़ी होशियारी और जानकारी के साथ उसका तरह - तरह से उपचार करते हुए उसको होश में लाने की कोशिश कर रहे थे और जिस समय उसने आँखें खोली उनमें से एक उसकी नब्ज पकड़े ऊपर झुका हुआ उसकी सूरत गौर से देख रहा था.

आँखें खुलते ही भूतनाथ की निगाह उस पर पड़ी और वह कुछ सायत तक गौर से देख ताज्जुब के साथ बोल उठा, " है.

रामेश्वर! तुम यहाँ कैसे! " रामेश्वरचन्द्र ने जवाब दिया, " जी हाँ गुरुजी, मैं ही हूँ, और परमात्मा को हजार धन्यवाद है कि हम लोग आपको जीते - जागते पा रहे हैं, " और तब भूतनाथ के पैरों पर गिर पड़ा.

भूतनाथ ने प्रेम से उसको उठाया और तब चारों तरफ के बाकी आदमियों पर भी निगाह की.

देखते ही वह पहिचान गया कि ये सब भी उसके शागिर्द हैं जो उसको होश में आया हुआ देख बड़ी ही प्रसन्नता के साथ सामने आ - आकर दण्डवत प्रणाम कर रहे थे.

भूतनाथ इन लोगों को देखकर बहुत खुश हुआ और बोला, “ मालूम होता है कि तुम्हीं लोगों ने मुझको कूएँ के बाहर निकाला है?

" रामेश्वरचन्द्र बोला, " जी हाँ, हम लोगों ने दूर ही से लक्ष्य किया कि कुएँ पर किसी तरह की दुर्घटना हुई है और जब यहाँ आए तो आपको अन्दर गिरा पाया.

" भूत:

(चौंककर) मगर तुम लोगों ने उस शैतान को पकड़ने की भी कोई कोशिश की जिसने मेरे साथ इस तरह दगा की?

रामेश्वर:

बलदेव और रामगोविन्द ने उसका पीछा किया मगर वह जंगल के अन्दर न - जाने कहाँ गायब हो गया कि पता लग न सका, मगर वह था कौन आदमी?

भूतः:

ताज्जुब की बात है, कि मैं उसको बिल्कुल पहिचान न सका.

सरसरी निगाह से देख मैंने उसे कोई देहाती पंडित समझा और धोखा खा गया (इधर - उधर देख कर) इक्यां तुम लोगों ने मेरा बटुआ और बाकी सामान कहीं रक्खा है .

.

.

.

.

रामेश्वर:

हम लोगों ने तो यहाँ सिवाय आपके कपड़ों के और कोई चीज नहीं पाई और अगर इस जगह किसी तरह का दूसरा सामान था तो मानना पड़ेगा कि वह उस शैतान के ही कब्जे में चला गया.

यह एक ऐसी बात थी कि जिसे सुनते ही भूतनाथ चमक कर उठ बैठा और बेचैनी के साथ इधर - उधर देखता हुआ बोला, " ओफ ओह, तब तो वह कम्बख्त मुझे एकदम बरबाद करके ही गया है.

तुम लोगों ने बड़ी गलती की जो उसको देखकर भी हाथ से निकल जाने दिया, अफसोस! " रामेश्वर:

क्या आपके साथ कोई कीमती चीज थी?

भूत:

ऐसी क़िमती कि उसके चले जाने की बनिस्बत मैं जान दे देना ज्यादा अच्छा समझता! केवल मेरी ऐयारी का बटुआ ही मेरे साथ न था जिसमें एक से एक बढ़कर नायाब दवाएँ

और सामान थे, बल्कि दो - एक और भी ऐसी चीजें थीं जिनके लिए मैं वर्षों से परेशान था और अपना खून - पानी एक करके जिन्हें अभी हाल ही में मैंने कब्जे में किया था.

अफसोस, रामेश्वरचन्द्र, यह बड़ी बुरी बात हुई.

तुम लोगों से पुनः मिलने की, नहीं, बल्कि अपनी जान बचाने की, मुझे जितनी खुशी न हुई उससे हजार गुना ज्यादा रंज उन चीजों के जाने का हुआ वो अगर मेरे किसी दुश्मन के हाथ में पड़ गई तो जरूर मुझे बरबाद करके छोड़ेगी और वह भी निश्चय मेरा कोई जानी दुश्मन ही होगा जिसने मेरे साथ इस तरह की दगा की, अफसोस, अफसोस, रामेश्वचन्द्र, तुमने व्यर्थ ही मेरी जान बचाई, गई हुई चीजों के गम में भूतनाथ ने अपना सिर झुका लिया और लम्बी - लम्बी साँसें लेने लगा.

रामेश्वचन्द्र कुछ देर तक तो अफसोस और रंज के साथ उसकी तरफ देखता रहा तब बोला, " आखिर कौन - सी ऐसी चीज आपकी जाती रही जिसके लिए आप इस कदर रंजकर रहे हैं?

बड़ी - से - बड़ी मुसीबत आने पर भी मैंने आपको कभी इस तरह अफसोस करते हुए नहीं पाया था.

"

भूत:

बस इसी से समझ सकते हो कि कितनी भारी चीज चली गई, सच पूछो तो आज मैं बरबाद हो गया, मेरी जिन्दगी की उम्मीद जाती रही, और जब तक मेरे हाथ में वे चीजें पुनः नहीं आ जाती तब मुझे दर - दर मारा - मारा फिरना पड़ेगा.

अफसोस रामेश्वरचन्द्र, तुमने उस शैतान को भाग जाने देकर आज बस यह समझ लो कि मेरा खून कर डाला और क्या कहूँ! रामे:

(अफसोस से) मैं बिल्कुल नहीं समझ सका कि कौन - सी चीज आपकी जाती रही फिर भी आपको इस तरह निराश होते मैं नहीं देख सकता.

अगर आप कहें तो मैं इसी समय जाऊ और जिस तरह भी हो सके उस शैतान का पता लगाकर उससे आपकी चीज वापस लाऊँ, आखिर वह बन का गीदड़ जाएगा किधर?

भूत:

जरूर ऐसा करना ही पड़ेगा और जैसे भी हो उससे वे चीजें वापस लेनी ही पड़ेंगी, मगर इस वक्त मुझे तुमसे बहुत - सी दूसरी बातें कहनी हैं, मेरा विचार यह होता है कि इस वक्त तुम अपने साथियों को तो उस आदमी का पता लगाने के लिए भेज दो और खुद यहाँ रुक कर जो कुछ मैं कहता हूँ उसे सुन लो.

विश्वास रक्खो कि उन चीजों के चले जाने से अब मेरी जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं रह गया है और न जाने कब मुझे यह दुनिया छोड़ देनी पड़े अस्तु ऐसी हालत में अपना कुछ जरूरी भेद मैं तुमसे कह जाना चाहता हूँ, इतना कह भूतनाथ ने किसी तरह का इशारा किया जिसे समझ रामेश्वरचन्द्र ने अपने साथियों की तरफ देखा और कहा, " जब गुरुजी का ऐसा जरूरी सामान चला गया है तो हम लोगों का कर्तव्य है कि जिस तरह भी हो उसको वापस लावें और जिसने इस तरह की दगा की है उसको गहरी सजा दें, अस्तु बिना किसी तरह का भी विलम्ब किए आप लोगों को इस मुहिम पर रवाना हो जाना और ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि जल्दी से जल्दी गुरुजी की चीजें वापस मिलें और उनकी तबीयत ठिकाने आवे.

" भूतनाथ के शागिर्दो ने यह सुनकर कहा, “ हम लोग अभी जाते हैं और प्रतिज्ञा करते हैं कि अगर वह आदमी पाताल में चला गया होगा तब भी उसको पकड़ कर गुरुजी के चरणों में हाजिर करेंगे! मगर कुछ अन्दाजा हमें मिल जाना चाहिए कि कौन - सी चीज गई है और किसका यह काम हो सकता है, ऐसा होने से हम लोगों को अपना काम करने में बहुत मदद मिलेगी.

भूत:

मैं उस आदमी को बिल्कुल नहीं पहचान सका, मगर इसमें कोई शक नहीं कि वह मेरे दुश्मनों में से ही कोई था.

तुम लोगों को सब तरफ निगाह रखते हुए काम करना पड़ेगा क्योंकि मेरे दुश्मन चारों ही तरफ है.

गई हुई चीजें मेरा बटुआ, एक पीतल की सन्दूकड़ी और एक लपेटी हुई तस्वीर हैं, और इन्हें ही तुम्हें खोज निकालना है.

यद्यपि इसमें कोई शक नहीं कि काम मुश्किल होगा और दुश्मन बहुत ही होशियार और बेईमान है मगर अपनी तरफ से जो कुछ मैं कह सकता हूँ वह यही है कि अगर तुम लोग मेरी गई हुई चीजों को वापस ला सके तो मैं यही समझूंगा कि मेरी जान तुमने बचाई और जिन्दगी - भर तुम लोगों को इसी तरह मानता भी रहूँगा.

शागिर्द:

अगर यह बात है तो फिर हम लोग भी कसम खाते हैं कि जिस तरह बनेगा उस शैतान का पता लगाकर उसे आपके सामने लावेंगे और जब तक ऐसा न करेंगे आपके चरणों का दर्शन न करेंगे.

बस अब देर करने की जरूरत ही क्या?

रामेश्वर:

शाबाश बहादुरों, मुझे पूरी उम्मीद है कि तुम लोग इस काम में कामयाब होगे, तो बस अब जय माया की, शुभस्य शीघ्रम.

शागिर्द:

जय माया की! (भूतनाथ से) आप हम लोगों को आशीर्वाद दीजिए कि जो काम हम लोगों ने उठाया है उसमें हमें सफलता मिले.

सब शागिर्दो ने भूतनाथ का चरण छुआ और उसने आशीर्वाद देकर सभी को विदा कीया , सका इशारा पाकर रामेश्वरचन्द्र के अलावा केवल रामगोविन्द और बलदेव उस जगह रह गए और बाकी सबके सब एक - एक कर कुएँ के नीचे उतर उसी जंगल की तरफ रवाना हो गए जिधर भूतनाथ को कुएँ में ढकेल वह दगाबाज मुसाफिर भाग गया था.

बहुत देर तक भूतनाथ उन्हीं लोगों की तरफ देखता रहा और जब वे सबके सब जंगल में घुसकर उसकी आँखों की ओट हो गए तो उसने एक लम्बी साँस लेकर उधर से सिर घुमाया.

उसके तीनों प्यारे और विश्वासी शागिर्द बेचैनी के साथ उसकी तरफ देख रहे थे जिन्हें लक्ष्य कर उसने कहा

भूत:

मेरे प्यारे शागिर्दो, इन लोगों को मैंने सिर्फ इसीलिए बिदा नहीं किया है जिसमें ये मेरे दुश्मन का पता लगावे बल्कि इसलिए भी यहाँ से हटा दिया है कि जिससे मैं तुम लोगों को एक ऐसे भेद का खुलासा हाल कह सकूँ जिसको आज तक अपनी जुबान से मैंने किसी से नहीं कहा था और जिसके बारे में मै कल तक यही समझता आया था कि कभी किसी पर उसका सच्चा भेद न तो प्रकट हुआ, न होने पावेगा, मगर अब मालूम हुआ कि मेरा वह खयाल गलत था और मेरी बदनामी का एक सबसे बड़ा जरिया पैदा हो गया है जो मुझे कहीं का न छोड़ेगा.

मगर मुझे पूरा विश्वास है कि तुम लोग इस भेद को मन्त्र की तरह छिपाओगे और जान रहते कभी किसी पर प्रकट न करोगे.

रामे:

आप विश्वास रखिए कि चाहे हम लोगों की जान भी चली जाय मगर आपका कोई भेद हमसे किसी तरह जाहिर न होगा.

भूत:

ठीक है, मुझे यही विश्वास भी है.

अच्छा तो गौर से सुनो जो मैं कहता हूँ, (कुछ रुककर) इधर चार - पाँच रोज के भीतर का हाल तो शायद तुमको न मालूम होगा?

रामे:

हम लोग सिर्फ इतना ही जानते हैं कि आप बलदेव को लेकर तिलिस्म के भीतर कहीं गए थे और वहाँ से लौटकर अकेले लोहगड़ी के अन्दर गए.

आपके जाने के कुछ ही देर बाद लोहगड़ी उड़ गई और हम लोगों ने यही समझा कि हो न हो, आप भी उसी के साथ.

(रुक कर) इस समय ईश्वर की दया से आपको जीता - जागता देख रहे हैं नहीं तो हम लोग तो बुरी कल्पना करने लगे थे.

भूत:

मैं सब हाल खुलासा कहता हूँ सुनो, नन्हों, गौहर और मुन्दर इधर बहुत दिनों से मेरे पीछे पड़ी हुई थीं और मुझे बरबाद करने की कोशिश कर रही थीं जिसका पता मुझे लग चुका था और जिसका कुछ हाल तुम लोगों को भी मालूम है.

बात असल में यह है कि इन सभी को मेरे एक गुप्त भेद का पता लग चुका था और उसी का दबाब मुझ पर डालकर ये शायद अपना कोई गूढ़ मतलब सिद्ध करना चाहती थीं.

वह भेद क्या था यह मैं अभी तुम लोगों को बताऊँगा पर पहिले इतना कह लूं कि मुझे पता लगा कि नन्हो राजा गोपालसिंह को धोखा देकर एक तिलिस्मी किताब उनसे लेना चाहती है और इस काम के लिए तिलिस्म के अन्दर घुसने वाली है.

उस किताब की मुझे भी जरूरत थी मगर मैं खुद गोपालसिंह को किसी तरह का धोखा कैसे दे सकता था, इसलिए इस खबर को सुन मैंने मौका अच्छा समझा और अपनी कार्रवाई कर डाली जिसका नतीजा यह निकला कि वह किताब मेरे हाथ आ गई और नन्हों बिल्कुल उल्लू बन गई.

रामे:

आपको इसका पता कैसे लगा कि नन्हो इस तरह की कार्रवाई करना चाहती है और वह किताब अब कहाँ है?

भूत ०:

दारोगा के एक आदमी को धोखा देकर मैंने यह बात मालूम की.

असल में खुद दारोगा को उस किताब की जरूरत थी और वह बहुत दिनों से उसे दस्तयाब करने की फिक्र में पड़ा हुआ था.

उसी ने नन्हो को इस काम पर मुकर्रर किया था और उसके जरिए अपना काम निकालना चाहता था.

मैंने किया यह कि नन्हों के साथी एक ऐयार को जिसे अपने साथ ले दारोगा की मदद से वह तिलिस्म में घुसी थी, गिरफ्तार कर उसकी जगह इस तुम्हारे साथी बलदेव को अन्दर कर दिया.

न्हों ने गोपालसिंह से वह किताब लेकर इसी बलदेव को दी और बलदेव इसको बेहोश कर बाहर - बाहर मेरे पास ले आया.

मैंने असल किताब के सूरत - शक्कल की एक बनावटी किताब तैयार करके उसके हवाले कर दी और असली.

खुद लेकर चल दिया.

वही किताब मेरे बटुए में थी. जो इस समय उस कम्बख्त ने मुझे कुएँ में गिराकर खुद ले ली.

रामे:

(बलदेव से) इतना हाल तो हम लोगों को मालूम हुआ था मगर यह हम लोग जान न सके, आपके लोहगड़ी में जाने के बाद क्या - क्या हुआ और लोहगढ़ी क्योंकर उड़ गई तथा आप किस तरह उसके बाहर हुए, भूत:

वह सब हाल भी मैं तुमसे कहता हूँ, असल में नन्हो ने उस किताब के लिए दारोगा को भी उल्लू बनाया था और यह सब कोशिश रोहतासगढ़ के राजा दिग्विजयसिंह के लिए कर रही थी जो बरसों से उस किताब की फिराक में था, रामे:

मगर आखिर उस किताब में ऐसी कौन - सी नायाब बात थी जो इतने आदमी उसकी फिराक में थे?

भूत:

मैं सब कहता हूँ तुम चुपचाप सुनते चलो.

वह किताब एक बहुत बड़े भेद का खजाना है बल्कि यह कहना चाहिए कि एक बहुत बड़े खजाने का भेद उसके अन्दर छिपा हुआ है.

मुझे उसकी क्या जरूरत थी यह हाल मैं आगे चल कर तुमसे कहूँगा, पहिले यह सुन लो कि मेरे लोहगड़ी के अन्दर चले जाने पर क्या हुआ.

जिस लिए मैं लोहगड़ी के अन्दर गया वह सबब यह था कि मुझे पता लग चुका था कि मेरे सब दुश्मन .

.

.

.

गौहर, मुन्दर, नन्हो तथा दलीपशाह और दिग्विजयसिंह के कई आदमी .

.

.

.

.

उसके अन्दर पहुँच कर एक कमेटी करने वाले हैं जिसमें मुझे बर्बाद करने की तरकीब सोची जायगी, अस्तु मैं खुद उन सभी को दीन - दुनिया से दूर कर देने का विचार करके वहाँ गया पर हुआ कुछ उलटा ही.

मैंने बम के गोले से उस सभी को उड़ा देना चाहा पर इस बात का पता न रहने के कारण कि लोहगड़ी में तोप और गोले बारूद का भी बहुत बड़ा खजाना रहता है धोखा खा गया और अपने बचाव का मुनासिब इन्तजाम कर न सका, नतीजा यह हुआ कि मेरे गोले की तासीर से उस बारूद के खजाने में भी आग लग गई जिससे वह समूची इमारत ही उड़ गई.

मेरे दुश्मन तो सब के सभी जान से मारे गए मगर मैं खुद भी उसी मुसीबत में गिरफ्तार हो गया! रामे:

फिर आप किस तरह बचे?

भूत:

मेरी जान किसी तरह मेरे गुरुभाई शेरसिंह ने बचाई जो असल में तो है राजा दिग्विजयसिंह का ऐयार और उन्हीं के किसी काम से यहाँ आया हुआ था, मगर फिर भी मुझसे मुहब्बत करता है.

न जाने किस तरह उसने वहाँ पहुँचकर मुझे बाहर निकाला जिसका ठीक - ठीक हाल उसने मुझे नहीं बताया मगर इसमें कोई शक नहीं कि मेरी जान बचने का सबब वही है.

उसी ने मेरी मलहम - पट्टी की, और उसी की लगाई हुई एक अनमोल बूटी की बदौलत मेरी जान बची.

उसने मेरा बटुआ और बाकी सब सामान भी मुझे वापस किया जिसमें और चीजों के इलावे वह तिलिस्मी किताब भी थी जो मैंने इतनी जान - जोखिम के बाद पाई थी और जिसे यह कम्बख्त मुझे कुएँ मे ढकेल कर ले भागा.

रामे:

अफसोस! मगर आप विश्वास रक्खें कि आपके शागिर्द बिना उस आदमी का पता लगाए न लौटेंगे जिसने ऐसी गंदी धोखेबाजी का काम किया है.

भूत:

मैं परमात्मा से मनाता हूँ कि वह तुम्हारा विश्वास पूरा उतारे, पर केवल वही चीज मेरे साथ न थी.

उसके साथ साथ एक ऐसी भी चीज थी कि जिसके जाने से मैं एकदम अधमूआ हो गया हूँ.

और भी मुश्किल की बात यह कि उस चीज का बयान मैं अपने आदमियों के सामने कर भी नहीं सकता था.

फिर भी उसका वापस पाना सबसे ज्यादा जरूरी है और अगर वह पुनः मेरे कब्जे में न आई तो दुनिया में मेरा जीता रहना मुश्किल हो जायगा.

रामे:

वह दूसरी कौन - सी चीज है?

भूत:

इसी बात को बताने के लिए मैंने तुम लोगों को यहाँ रोक लिया है और चाहता हूँ कि तुम उस चीज का परिचय जान लो और तब इस तरह पर उसे खोज निकालो कि किसी को

न तो उसके अस्तित्व का पता लगे और न कोई यही जानने पावे कि उसका क्या रहस्य है मगर उसका भेद बताने के पिहले मैं तुमसे यह प्रतिज्ञा करा लेना चाहता हूँ कि तुम लोगों के पेट के अन्दर ही वह भेद छिपा रह जायगा, कभी किसी कारण से भी बाहर न आबेगा.

रामे:

आपको एक पल के लिए भी यह तो सोचना ही न चाहिए कि आपका कोई गुप्त भेद हम लोगों द्वारा प्रकट हो जायगा, फिर भी अगर आप चाहते ही हैं तो मैं दुर्गा की शपथ खाकर (खंजर हाथ में लेकर) प्रतिज्ञा करता हूँ कि वह भेद कभी मेरी जुबान के बाहर न आवेगा.

भूतनाथ ने यह सुन बलदेव और रामगोबिन्द की तरफ देखा और उन्होंने भी उसका मतलब समझ खंजर हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की, इसके बाद वह बोला भूतः:

तुम लोग यह मत समझना कि मुझे तुम्हारी सचाई या बुद्धिमानी पर विश्वास नहीं है जो मैंने इस तरह की प्रतिज्ञा तुमसे करवाई, नहीं, मैं तुमको अपने लड़के से भी बढ़कर मानता हूँ और इस प्रतिज्ञा के लेने का कारण सिर्फ यही है कि जिस चीज का भेद आज मैं तुमसे कहने जा रहा हूँ उसके बारे में अगर दुनिया में किसी तरह भी कुछ प्रकट हो गया तो मैं जीते - जी मुर्दे से बदतर हो जाऊँगा और किसी को मुँह दिखाने लायक न रहूँगा.

खैर अब आगे बड़ आओ और गौर से सुनो कि मैं क्या कहता हूँ

भूतनाथ के तीनों शागिर्द आगे बड़ आए और गौर तथा ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखते हुए सोचने लगे कि कौन - सी आश्चर्य की बात अब उन्हें सुनाई जाती है.

भूतनाथ थोड़ी देर तक चुपचाप कुछ सोचता रहा, तब आँख बन्द कर एक लम्बी साँस लेने बाद उसने इस तरह कहना शुरू किया:

भूत:

तुम लोगों को यह बात मालूम है कि एक बार मैंने जमानिया की बड़ी महारानी अर्थात महाराज गिरधरसिंह की रानी का कुछ काम किया था जिसके इनाम में शिवगड़ी के

खजाने की ताली मुझे मिली थी.

रामे:

जी हाँ, यह हाल आप कह चुके हैं मगर यह अभी तक हम लोगों को न मालूम हुआ कि कौन - सा वह काम था जो आपसे बन पड़ा और शिवगड़ी कौन - सी जगह थी उसके अन्दर किस तरह का खजाना बन्द है?

भूत:

(जरा कॉप कर) वह काम जो मैंने किया था वह मैं अभी न बताऊँगा पर शिवगढ़ी कौन - सी जगह है और उसके अन्दर क्या है यह तुम लोग सुनो.

शिबगड़ी वास्तव में रोहतासगढ़ की अमलदारी में बना हुआ एक बहुत पुराना छोटा - सा किला है जिसके अन्दर कहा जाता है कि किसी पुराने जमाने की बहुत ही बेइन्तहा दौलत गड़ी हुई है.

रोहतासगढ़ के किले से दस कोस दक्खिन वह स्थान है.

एक छोटी - सी पहाड़ी जिसे इधर वाले लुटिया पहाड़ी ' के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि वह दूर से देखने में बिल्कुल लुटिया की शक्ल की दिखाई देती है- उन पहाड़ियों के लम्बे सिलसिले से एकदम अलग जो रोहतासगढ़ के इलाके में दूर तक चला गया है - पहाड़ी है, और उसकी चोटी पर एक छोटा - सा किले या गड़ी की तरह का एक मकान बना हुआ है जो यद्यपि जमाने के हाथों बहुत चोटें सह चुका है फिर भी अभी पचासों बरसातें सम्हालने लायक है.

तुम लोग जानते ही होगे कि मेरा गुरुभाई शेरसिंह रोहतासगढ़ में ही नौकर था जिस सबब से प्राय:

मुझे वहाँ जाने की जरूरत पड़ती थी.

जब कभी मैं उस तरफ जाता तो इस शिवगढ़ी का भी एक चक्कर जरूर लगाता था क्योंकि उस गडी के अन्दर एक मन्दिर पड़ता है जिसके पुजारी से मेरा परिचय हो गया था और वह मुझसे मिलकर बहुत प्रसन्न होता था.

रामे:

तो क्या शिवगढ़ी में लोग रहते भी थे?

भूत:

है तो वह एकदम सूनसान जंगल में एक वीरान स्थान पर जिसमें कोई भी रहता नहीं बल्कि आस - पास के गाँवों वाले उधर - जाते डरते हैं, क्योंकि उसके बारे में यह मशहूर है कि वहाँ भूत - प्रेतों का अड्डा है, मगर वह पुजारी न - जाने क्यों अकेला ही, सिर्फ अपनी एक लड़की के साथ उस जगह रहता था गढ़ी के अन्दर एक बहुत बड़ा मन्दिर है जिसकी एक विशेषता यह है कि प्रायः और मन्दिर तो किसी देवी - देवता के होते हैं और उन्हीं की मूरत उसके अन्दर बैठाई रहती है पर यह मन्दिर महाकाल का था जिसकी एक बड़ी ही विकराल मूर्ति उसके अन्दर बैठाई थी.

वह पुजारी उसी मूर्ति की पूजा किया करता था और खुद उस गड़ी के बाहर और पहाड़ी के नीचे लगे हुए एक छोटे मकान में रहता था जो कि साधुओं के मठ के किले का बना हुआ था और जिसे वह रोहतासमठ कह के पुकारा करता था.

उस पुजारी को रोहतासगढ़ के राजा की तरफ से कुछ महीना मुकर्रर था और जैसाकि मैंने कहा, न - जाने किस सबब से वह अपनी एक लड़की के साथ अकेला उसी मठ में रहा करता और उस मूरत की पूजा किया करता था.

उस पुजारी की लड़की का नाम नन्हो था.

रामे:

क्या नाम था?

नन्हों! क्या वह यही नन्हो तो नहीं जिसने आपको .

.

.

.

भूतः:

हाँ, वह यही नन्हो थी.

पुजारी की लड़की यह नन्हों विधवा थी और इसकी चालचलन कुछ खराब हो गई थी शायद इसी सबब से ही वह बस्ती से अलग एकदम ऐसे सूनसान और निर्जन स्थान में रहा करता था.

जब कभी मैं पुजारी के पास जाता तो यह नन्हों भी घण्टों मुझसे बातें किया करती और पहिले - पहल इसी की जुबानी यह बात मेरे सुनने में आई कि वह शिबगड़ी वास्तव में रोहतासगड़ के सदर तिलिस्म का एक हिस्सा है और उसके अन्दर बेहिसाब दौलत भरी है.

नन्हो से यह जान कर कि शिवगढ़ी के अन्दर बहुत बड़ा खजाना बन्द है मुझे उसका भी हाल जानने की फिक्र पैदा हुई और लोगों से पूछताछ कर जल्दी ही मैंने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ हाल मालूम कर लिया मुझे मालूम हुआ कि यह पुजारी वास्तव में शिवगड़ी के तिलिस्म का दारोगा है और उसके पास कोई किताब है जिसमें उस तिलिस्म का पूरा हाल तथा उसको खोल कर खजाना निकालने की सब तर्कीब लिखी हुई है, तिलिस्म की सैर करने का मुझे बहुत बड़ा शौक था और खजाना भला कौन न चाहता होगा, अस्तु मैंने जिस तरह भी हो उस शिबगड़ी का खजाना लेने का निश्चय कर लिया और इसी मतलब से वहाँ आना - जाना बहुत बड़ा दिया खूबसूरत, दगाबाज और उस जगह का बहुत कुछ हाल जानने वाली उस काली नागिन नन्हों से इस काम में बहुत मदद मिलने की उम्मीद थी. , अस्तु मैंने उसके साथ भी अपनी रफ्त - जफ्त कुछ बढ़ा दी.

खैर, किस तरह मैंने क्या - क्या किया यह सब कहने की कोई जरूरत नहीं, मुख्तसर में समझ लो कि एक रात उस पुजारी को बेबस करके मैंने वह किताब उससे ले ली और इस काम में खास नन्हों ने मेरी मदद की जो अपने बूढ़े बाप को बिल्कुल नहीं चाहती थी बल्कि उससे सख्त नफरत करती थी.

उसको भी तिलिस्म देखने और खजाना पाने का बेहद शौक था.

हम दोनों ने एक साथ ही उस किताब को पूरा - पूरा पड़ा और तब मालूम हुआ कि केवल उस एक ही किताब की मदद से शिवगड़ी का तिलिस्म नहीं टूट सकता और न असल खजाना ही हाथ आ सकता है, हाँ तिलिस्म की सैर की जा सकती है और कुछ मामूली दौलत मिल सकती है जो तिलिस्म के बाहरी हिस्सों में रखी हुई है, असल और बड़ा खजाना पाने के लिए एक और किताब की जरूरत है जो कहीं बहुत छिपा कर

रखी हुई है, बिना दोनों किताबें साथ हुए असली तिलिस्म टूट नहीं सकता, यह पड़ मुझे अफसोस हुआ मगर खैर जो कुछ मिले वही सही, यह सोच हम लोगों ने तिलिस्म के अन्दर घुस उसकी सैर करने का निश्चय किया और ऐसा ही किया भी.

किताब की मदद से गुप्त रास्ता खोल हम लोग उस तिलिस्म के अन्दर घुसे.

अब तुम लोगों से मैं क्या बताऊँ कि क्या - क्या चीजें उसके अन्दर हम लोगों ने देखीं और कैसे - कैसे नायाब सामान नजर आए.

थोड़ा - बहुत खजाना भी हम लोगों के हाथ लगा. मगर उससे असली दौलत को हासिल करने की भूख और भी बढ़ गई.

शिवगड़ी की इमारत देखने में तो बहुत छोटी और बिल्कुल मामूली - सी जान पड़ती थी. पर उसके अन्दर का तिलिस्म बहुत ही बड़ा और बड़ी दूर - दूर तक फैला हुआ था, यहाँ तक कि उसकी एक सुरंग जमानिया के खासबाग में, दूसरी अजायबघर में, और तीसरी उस लोहगड़ी के अन्दर तक गई थी जो उस दिन मेरी करनी से टूट - टाट कर नष्ट हो गई! कई दिनों बल्कि हफ्तों तक हम दोनों ने उस तिलिस्म की जहाँ तक हुआ अच्छी तरह सैर की और उसके अन्दर के अद्भुत और इन्द्र के स्वर्ग को भी मात कर देने वाले स्थानों का पूरा लुफ्त उठाया.

मगर जैसा कि मैंने कहा - इससे असली तिलिस्म को खोलने और असली खजाने को पाने की मेरी इच्छा कई हजार गुना बड़ गई और यही हाल नन्हों का भी हुआ.

मुझे मालूम था कि जमानिया के दारोगा साहब को तिलिस्मी मामलों में बहुत कुछ दखल है और वे इन बातों की अच्छी जानकारी रखते हैं, अस्तु मैंने उनसे उस विषय में अपनी इच्छा प्रकट करने का विचार कीया , असल तो यह है कि उन दिनों खास उनका भी एक बहुत जरूरी काम अटका हुआ था जिसके लिए मेरी मदद की उन्हें जरूरत थी, अस्तु इस मामले में एक - दूसरे की मदद करने की प्रतिज्ञा की, दारोगा ने कसम खाई कि शिवगढ़ी की असल कुंजी मुझे देगा और मैंने वादा किया कि उसका काम पूरा कर दूंगा.

दारोगा ही ने मुझे बताया कि उस तिलिस्म की असल ताली उसकी महारानी अर्थात महाराज गिरधरसिंह की रानी के कब्जे में है जो उन्हें अपने नैहर से दहेज में मिली थी, (

तुम लोगों को मालूम ही होगा कि बड़ी महारानी रोहतासगढ़ के राजा त्रिभुवन सिंह की लड़की थीं जिनका लड़का दिग्विजयसिंह आजकल रोहतासगड़ के तख्त पर बैठा है) और उसने यह भी कहा कि अगर महारानी साहवा का एक काम मैं बजा लाऊँ तो वह ऐसी कोशिश करेंगे कि इनाम में शिवगढ़ी की ताली मुझे मिल जाय.

मुख्तसर यह कि दारोगा की ही कोशिश से महारानी साहिबा ने मुझ पर मेहरबानी की और अपना वह काम बताया जिसको वह कराया चाहती थीं, वह काम क्या था यह मैं अभी कहना पसन्द नहीं करता.

तुम लोग फक्त इतना जान लो कि किसी - न - किसी तरह मैंने उसको पूरा उतार दिया और इनाम में वह ताली महारानी से पा ली.

पर ऐन मौके पर कम्बकत नन्हों मेरे साथ दगा कर गई.

न - जाने किसी दूसरे ने उससे यह काम कराया या वह खुद ही तिलिस्म खोल कर उस सब दौलत की अकेली मालकिन बनना चाहती थी अथवा क्या बात थी कि वह मुझे ही धोखा देने पर आमादा हो गई और एक रात कोई नशीली चीज खिला उसने मुझे बेहोश कर दिया, उसका मतलब मेरे कब्जे में वे दोनों तिलिस्मी किताबें उड़ाना था पर उसकी आधी ही इच्छा पूरी होकर रह गई.

महारानी से मिली हुई तिलिस्मी किताब तो मैं एक बड़ी हिफाजत की जगह पर रख आया था अस्तु वह तो उसे न मिली मगर वह पहली किताब जो उसके बाप से मुझको मिली थी उसने चुरा ली और कहीं भाग गई.

नतीजा यह हुआ कि महारानी से असली किताब पाकर भी मैं लंगूर ही रह गया क्योंकि जैसाकि मैंने कहा, तिलिस्म खोलने के लिए दोनों किताबों की जरूरत थी और मेरे पास पुनः केवल एक ही बच गई थी.

मैने नन्हों का पता लगाने की बहुत कोशिश की मगर न - मालूम वह कहाँ छिप गई थी कि उसका कुछ भी पता न लगा.

उस किताब की खोज में परेशान मैने महीनों जगह - जगह की खाक छानी पर न तो उसका पता लगता था और न लगा ही.

वही किताब यह थी. जो न - जाने किस तरह घूमती - फिरती राजा गोपालसिंह के कब्जे में पहुंच गई थी, जो उनसे नन्हों ने ली, और जो नन्हो को धोखा देकर मैंने ले ली थी.

वहीं किताब आज उस शैतान ने मुझसे छीन ली.

मालूम तो मुझे यह होता है कि मेरे पास से वह किताब ले लेने पर भी नन्हों उसे अपने पास रख न सकी, किसी तरह वह उसके हाथ से भी निकल गई और राजा गोपालसिंह के पास जा पहुँची.

जरूर वह उसको लेने की फिक्र में पड़ी रहा करती होगी और अन्त में उसको ऐसा करने का मौका मिल भी गया, वह तिलिस्म में घुसी और गोपालसिंह को धोखा दे उनसे वह किताब ले ली.

वह तो कहो कि अगर मैं किताब उससे उड़ा न लिए होता तो जरूर वह अपना काम कर गुजरती अर्थात शिवगढ़ी का तिलिस्म खोल उसका खजाना ले भागती और तब मैं लंड्रा ही रह जाता.

रामेश्वर:

मगर ऐसा कैसे हो सकता था?

शिवगढ़ी की असल ताली तो आपने कहा न कि अभी तक आपके पास ही है, तब अकेली उस एक किताब की मदद से नन्हों कैसे तिलिस्म तोड़ सकती थी?

भूत:

यह बात भी मुझे उसी कम्बख्त की जुबानी मालूम हुई.

(बलदेव की तरफ देख कर) क्यों बलदेव, तुम्हीं ने मुझसे कहा था न कि किताब को तुम्हारे हाथ में देकर नन्हों बोली कि बस अब दूसरी किताब राजा वीरेन्द्रसिंह बाली उसके हाथ में आई कि शिबगड़ी का तिलिस्म खुला! " बलदेव:

जी हाँ.

बेशक उसने यही बात मुझसे कही थी मगर चूँकि मैं इस बारे में कुछ भी नहीं जानता था इसलिए चुप रह गया ताकि किसी तरह की कोई ऐसी बात मेरे मुँह से न निकल पड़े जिससे उस धूर्त पर यह प्रकट हो जाये कि मैं उसका असली साथी नहीं भूत:

तुमने बहुत अच्छा किया और विशेष पूछताछ करने की कोई जरूरत थी भी नहीं.

उसकी इस बात से ही मैंने पूरा मतलब निकाल लिया.

असल बात यह है कि शिवगड़ी के तिलिस्म का हाल कई किताबों में लिखा हुआ हैं जिसमें से कोई भी दो पास में होने से वह खोला जा सकता है.

यह बात पहले मुझे मालूम न थी नहीं तो मैं अब तक कभी का अपना काम बना लिए होता क्योंकि मुझे मालूम था कि राजा बीरेन्द्रसिंह को विक्रमी तिलिस्म में एक किताब ऐसी मिली है ।

जिसमें किसी और भी बड़े तिलिस्म को तोड़ने की तरकीब लिखी हुई है.

अब तक मैं उस किताब को अपने किसी मतलब की न समझ कर उधर से बेफिक्र था पर नन्हों की बात ने मुझ पर यह प्रकट कर दिया कि अगर वह किताब भी हाथ में आ जाय तो मेरा काम निकल सकता है.

नन्हों का विचार वास्तव में यह था कि राजा गोपालसिंह बाली किताब उसे मिल जाय तो फिर वह राजा वीरेन्द्रसिंह बाली किताब को काबू में करे और इस तरह उन दोनों किताबों की मदद से शिवगढ़ी का खजाना निकाल ले.

इसके लिए उसने बहुत कुछ बाँधनु बाँधे भी थे.

रामे:

तो क्या यही काम आप नहीं कर सकते?

अर्थात आप क्या राजा वीरेन्द्रसिंह वाली वह किताब ले उसकी तथा आपके पास जो मौजूद है उसकी, इन दो किताबों की मदद से अपना काम निकाल नहीं सकते?

बेशक निकाल सकता हूँ! यद्यपि राजा साहब के कब्जे से वह किताब लेना कुछ सहज न होगा फिर भी यह किया जा सकता है अगर तुम लोग मेरी भरपूर मदद करो.

रामे: अवश्य ही हम लोग तो दिलोजान से हर तरह की मदद करने को तैयार ही हैं और फिर इस काम में तो और भी दूगुने उत्साह से मदद करेंगे.

भला आपकी बदौलत एक बार तिलिस्म की सैर तो करने को मिल जायगी.

भूत:

इसमें भी कोई शक है! बल्कि मैं तो वादा करता हूँ, कि अगर यह काम हो जाय तो जो कुछ माल मिलेगा उसमें से इतनी रकम तुम लोगों को दूंगा कि जिन्दगी - भर के लिए मालामाल हो जाओगे और फिर कभी किसी की ताबेदारी करने की जरूरत न रहेगी.

रामे:

' अफसोस, आपने पहले यह बात न कही! भूत:

मुझे इस बात की खबर ही कहाँ थी जो तुम लोगों से कहता?

कोई भी दो तिलिस्मी किताबें पास होने से यह काम हो सकेगा यह तो मैंने नन्हों की बातों से सार निकाला और न - जाने उस कम्बख्त को यह बात कैसे मालूम हुई! रामे:

तो कहीं ऐसा तो नहीं है कि उसका कथन झूठा हो और हम लोग व्यर्थ की झंझट में पड़ कर अन्त में बेवकूफ बन जायें.

भूत:

यही आशंका मुझको भी है और इसीलिए मैं उस नन्हों द्वारा मिली हुई किताब के जाने का इतना गम कर रहा रामे:

खैर तो फिलहाल आप क़म - से - कम कुछ समय के लिए तो अपना रंज और गम दूर किजे और उस आदमी की फिक्र जाने दीजिए जो आपको धोखा देकर वह किताब ले गया है, आगे का काम सोचिए और हम लोगों को बताइए.

भूत:

केवल वह किताब ही अगर मेरे कब्जे से निकल गई होती तो मैं इतना अफसोस न करता.

मैंने तुम लोगों से कहा न कि उसके साथ एक चीज और भी ऐसी चली गई है जिसके जाने के खयाल ही ने मुझे अधमूआ कर दिया है.

रामे:

वह क्या चीज?

क्या वही तस्वीर जिसका जिक्र आपने अपने शागिर्दो से किया था?

भूत:

हाँ.

रामे:

वह तस्वीर किसकी है?

भूत:

' अफसोस कि मैं उसका कोई हाल अपनी जुबान पर लाते डरता हूँ, अगर किसी तरह पर भी उसका कोई भेद किसी गैर पर जाहिर हो गया तो मैं दुनिया में कहीं का न रहूँगा.

रामे:

अगर आप यह समझते हों कि हम लोग आपका भेद प्रकट कर देंगे तो इस खयाल को तो आप हमेशा के लिए दिल से निकाल दीजिए.

हम लोगों ने अभी - अभी आपके सामने जो प्रतिज्ञा की है उसका ख्याल कीजिए और विश्वास रखिए कि हमारे जीते - जी हमारी जुबान से आपका कोई भी भेद किसी तरह पर जाहिर न होगा चाहे कुछ भी क्यों न हो जाय! भूत:

सो तो मुझे विश्वास है मगर .

.

.

रामे:

और फिर यह भी सोचिए कि अगर उस तस्वीर को आप वापस पाना चाहते हैं तो जब तक उसका कुछ हाल हम लोगों को बताइयेगा नहीं तब तक हम लोग किस तरह उसे वापस पाने का उद्योग कर सकेंगे! भूत:

(एक लम्बी सांस लेकर) सो सब भाई रामेश्वरचन्द्र, मैं सोचता - समझता और जानता हूँ, फिर भी उसका हाल प्रकट करते इस लिए डरता हूँ कि वह मेरी जिन्दगी के इतिहास का सबसे काला पृष्ठ है.

और जितने भी कुकर्म में कर चुका या जितनों का हाल संसार में प्रकट हो चुका हैं उनमें सबसे बड़ कर वही है जिसका जिक्र उस तस्वीर में है और जिसकी बदौलत में कभी अपने को दुनिया में मुँह दिखाने लायक न समझूंगा.

अगर उसका हाल लोगों पर जाहिर हो जायगा तो .

.

.

.

.

रामे:

खैर तो मैं उसको जानने के लिए बहुत आग्रह भी नहीं करता, आपकी इच्छा उसका हाल कहें या न कहें.

लेकिन अगर आप यह चाहते हों कि उसे वापस पावें या इस काम में हम लोग आपकी मदद करें तो कम - से - कम उसका कुछ परिचय तो हम लोगों को देना ही पड़ेगा.

बिना कुछ भी हाल जाने हम लोग किस तरह उसका पता लगा सकते हैं?

यही नहीं, किस तरह यह भी समझ सकते हैं कि यही वह तस्वीर है जिसकी आपको जरूरत है?

भूत:

(कुछ सोच कर) खैर इतना मैं इस जगह अभी तुम लोगों को बता सकता हूँ कि वह एक बड़ी तस्वीर पुलिन्दे की तरह लपेटी हुई है और उसके अन्दर एक भयानक घटना का चित्र खींचा हुआ है.

बस इससे ज्यादे मैं अभी तुम लोगों से कुछ नहीं बता सकता और केवल इतना ही कहता हूँ कि अब तुम लोग उसकी फिक्र छोड़ो और जो पिछली बात मैंने कहीं हैं उनको अन्जाम दो अर्थात राजा वीरेन्द्रसिंह के कब्जे से उनकी तिलिस्मी किताब को निकाल लेने की फिक्र करो.

अगर यह काम हो गया और मैं शिवगड़ी का खजाना निकाल सका तो फिर कोई हर्ज की बात न रहेगी.

दौलत मेरे सब ऐवों पर पर्दा डाल देगी और रुपये की मदद से मैं अब भी दुनिया में नेकनाम और .

.

.

.

" झूठ, बिल्कुल जुठ! " यकायक जोर की आवाज उस जगह गूंज उठी.

चारों आदमी उस आवाज को सुनकर चौंक गए और खास कर भूतनाथ तो उसे सुनते ही चिहुँक कर चारों तरफ देखने लगा क्योंकि उसको यह आवाज पहिचानी हुई - सी जान पड़ी आखिर उससे न रहा गया और वह बोलने वाले का पता लगाने की नीयत से उठना ही चाहता था कि एक काली शकल सीढ़ियाँ चड़ कुए की जगत पर आती हुई दिखाई पड़ी जिसे देखते ही वह अपनी जगह पर ठिठका हुआ रह गया.

यह आने वाला, जिसका सिर से पैर तक समूचा बदन काले कपड़े से बिल्कुल ढका हुआ था, जगत पर पहुँच कर कई कदम इन लोगों की तरफ बड़ आया और तब फिर बोला, " झूठ, बिल्कुल झूठ.

" भूतनाथ तो न जाने क्यों सकते की - सी हालत में होकर अपनी जगह पर चुप बैठा रह गया मगर रामेश्वरचन्द्र ने इस आने वाले से पूछा, " आप कौन हैं और आपकी बात

का क्या मतलब है?

" आगन्तुक ने यह सुन जबाब दिया, “ मैं कौन हूँ यह जानकर भी तुम मुझे पहिचान न सकोगे मगर तुम्हारा गुरु भूतनाथ जरूर पहिचान लेगा बल्कि शायद उसने मुझे पहिचान भी लिया हो तो कोई ताज्जुब नहीं, बेशक - बेशक, उसने जरूर मुझे पहिचान लिया है, उसकी आकृति इस बात को साफ बतला रही है.

मेरी आवाज से ही वह मुझे जान गया है.

अस्तु अब मुझे अपना परिचय देने की कोई जरूरत नहीं रह गई, यह बात कि जो कुछ मैंने कहा उसका मतलब क्या है, सो वह तो साफ है.

भूतनाथ ने अभी - अभी कहा कि दौलत सब ऐबों पर पर्दा डाल सकती है सो उसी के बारे में मैंने कहा कि यह बात एकदम झूठ है.

दौलत चाहे बड़े - से - बड़े दुष्कर्म को दबा जाय पर उस महान पाप को किसी तरह छिपा नहीं सकती जो तुम्हारे गुरु ने किया और जिसका जिक्र उस तस्वीर में किया गया है जो किसी ने उसको बेवकूफ बनाकर ले ली है और जिसे वह मेरे ही सामने से उठा कर ले भागा था! " इतना कह आगन्तुक अजीब तौर पर भूतनाथ को देखने लगा.

शायद वह सोचता होगा कि भूतनाथ बात सुन उस पर हमला करेगा या किसी और तरह से उससे पेश आवेगा मगर ऐसा न था.

भूतनाथ की तो यह हालत हो गई थी कि मालूम होता था मानों किसी ने उसके तमाम बदन का खून निचोड़ लिया हो और उसमें हिलने की भी ताकत नहीं रह गई हो.

वह केवल एकटक इस अजीब आदमी की तरफ देख रहा था.

आगन्तुक कुछ देर तक उसको देखता रहा और तब उसके शागिर्दों की तरफ घूम कर कहने लगा.

आग ०:

जिस भेद को वह तस्वीर खोल रही है वह इतना भारी दुष्कर्म है कि कुबेर का भंडार भी उस पर पर्दा नहीं डाल सकता.

क्या तुम लोग जानना चाहते हो कि उस तस्वीर में क्या था?

भूतनाथ के शागिर्दो ने तो इस बात का कोई जवाब न दिया मगर भूतनाथ ने कोशिश करके अपनी जुबान खोली और कॉपते हुए स्वर में कहा, " क्या आप .

.

.

?

" मगर उसके मुँह से स्पष्ट आवाज न निकली और वह इतना ही कह रुक गया.

आगंतुक उसकी तरफ देखकर हंसा और तब बोला, " हाँ, मैं " हाँ, मैं वही हूँ जिसको तुम पहिचान गए और अभी कुछ ही देर पहिले जिसके सामने से भाग कर आए हो, मगर मैं वह नहीं हूँ जिसने तुम्हें कूएँ में धकेल तुम्हारी चीजें ले ली हैं! " बड़ी मुश्किल से किसी तरह भूतनाथ ने कहा, " क्या आप निराले में मुझसे कुछ बात .

.

?

" जबाब में उस आदमी ने कहा, ' नहीं, मैं निराले या अकेले में कुछ कहना नहीं चाहता क्योंकि मैं तुम्हारी धूर्तता, दगाबाजी और बेईमानी का हाल अच्छी तरह जानता हूँ, अभी तुम मुझको धोखा देकर मेरी चीज लिए भागे चले आए हो और इस समय की अपनी कमजोर हालत में किसी तरह भी मैं तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता.

तुमको जो कुछ कहना हो यहीं सबके सामने कह सकते हो.

भूत:

(कॉपती आवाज में) नहीं - नहीं, मैं कसम खाता हूँ कि आपके साथ किसी तरह की दगा न करूंगा.

आग:

यह तुम उससे कहो जिसे तुम्हारी कसमों पर विश्वास हो.

मैं तो तुम्हें परले सिरे का झूठा, दगाबाज और कमीना समझता हूँ और तुम पर एक पल के लिए भी विश्वास नहीं कर सकता.

जो कुछ तुम्हें कहना हो उसे या तो सभों के सामने होते हुए कहो और या फिर चुपचाप बैठे रहो और मुझे अपना काम करने दो.

भूत:

(कमजोर आवाज में आप किस काम .

.

.

?

आग:

तुमने मेरी जिन्दगी चौपट कर डाली और मुझे मुर्दो से बदतर बना डाला.

मैंने भी प्रतिज्ञा कर ली है कि तुम्हारी भी वही हालत करके छोडूंगा तुम्हारा वह पाप जिसके प्रकट होने से तुम इतना डरते हो और जिसकी बदौलत मैं दीन दुनिया से चौपट हो गया.

में दुनिया भर के एक - एक आदमी से कहूँगा और देखूंगा कि उसके प्रकट हो जाने पर तुम्हारी क्या हालत होती है, तथा यह काम मैं तुम्हारे शागिर्दो ही से शुरू करता हूँ.

(रामेश्वरचन्द्र की तरफ देख कर) देखो जी रामेश्वरचन्द्र, जिस तस्वीर का हाल तुम्हारा गुरु तुमसे कहते डरता है वह मेरी ही बनाई हुई थी और आज सुबह उसे यह मेरे ही सामने से लेकर भागा था अस्तु उसका हाल जितना अच्छा मैं कह सकता हूँ वैसा कोई नहीं कह सकता.

लो सुनो कि उस तस्वीर में क्या था.

आगन्तुक ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था कि भूतनाथ ने हाथ जोड़ कर बड़ी बिनती के भाव से उसकी तरफ देखा और भर्राये हुए गले से कहा, “ आप दया कर मेरी

एक बात सुन लें और विश्वास रखें कि मैं आपके साथ किसी तरह की दगा नहीं करना चाहता बल्कि एक सन्देह को जो आपके मन में बैठ गया है दूर कर देना चाहता हूँ।

आग:

(बिगड़ कर) चुप रह, हरामजादा बेईमान कहीं का! तू मुझी से इस तरह की बातें करता है?

क्या तू मुझे फिर धोखा देना चाहता है?

नमकहराम कमीना कहीं का! जब तू ने दयाराम को ही जान से मार डाला तो दूसरे किसी की कब परवाह कर सकता है?

(शागिर्दो की तरफ देखकर) सुनो जी तुम लोग, तुम नहीं जानते कि तुम्हारा गुरु कितना भारी नमकहराम, पापी, हत्यारा और बेईमान आदमी है.

मुझसे सुनो कि इसने मेरे दोस्तों के साथ क्या कीया , रोहतासमठ का वह पुजारी मेरा दोस्त और गुरु था जिसकी मित्रता का अभी - अभी यह तुम्हारे सामने दम भरता था, मगर जिसकी लड़की नन्हों को इसने भ्रष्ट कर डाला.

तुम जानते हो कि इसने उस पुजारी के साथ क्या कीया ?

शिवगढ़ी की ताली पाने की नियत से इसने उस बेचारे को जीता ही हाथ - पाँव बाँध कर एक अंधे कूएं में फेंक दिया जहाँ वह भूख और प्यास के मारे तड़पकर मर गया, तुम जानते हो कि इसने बड़ी महारानी से शिबगड़ी की ताली किस तरह ली?

सुकर्म के इनाम में इसे वह ताली मिली.

(भूतनाथ की तरफ देखकर) क्यों जी भूतनाथ क्या मैं तुम्हारे उन भले कामों का पूरा - पूरा विवरण इन तुम्हारे शागिर्दो को कह सुनाऊँ?

" इस सवाल का कोई जवाब न दे भूतनाथ ने दोनों हाथों से अपना मुँह डाँप लिया और लम्बी - लम्बी साँसे लेने लगा.

उसका वह दुश्मन इस बीच में उसे क्रोध और घृणा के साथ देखता रहा.

बहुत देर के बाद भूतनाथ ने अपना मुँह उठाया और कॉपते स्वर में कहा, " जो कुछ आपने कहा वह बहुत ठीक है मगर मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इसमें मेरा कुछ कसूर नहीं था.

" आगन्तुक:

(बिगड़ कर) बेशक कुछ नहीं था और न उस बात में होगा जो मै अब इन लोगों से कहूँगा! (उन शागिर्दों की तरफ देखकर) इसने केवल इतना ही नहीं किया.

उस तिलिस्मी ताली को पाकर इसके मन में तिलिस्म को खोलने की इच्छा पैदा हुई और जाने किस प्रकार यह समझ कर कि ऐसा करने से तिलिस्म खुल जायगा इसने एक दूसरी बेकसूर औरत का सिर अपने हाथ से काट डाला और उसके गले से टपकते हुए खून की बूंदे उस महाकाल की मूरत के मुँह में डालनी चाही, पर कोई विघ्न पड़ गया जिससे न तो वह काम ही पूरा हो सका और न वह तिलिस्म ही खुला, (भूतनाथ की तरफ देखकर) क्यों जी.

यह बात भी सही है कि नहीं! या इस मामले में भी तुम बेकसूर हो?

!! डरे और दबके हुए भूतनाथ के गले से साफ आवाज नहीं निकल सकती थी.

वह इतना ज्यादा घबड़ा गया था कि बड़ी मुश्किल से टूटे - फूटे शब्दों से बोला, " मैं स

.

.

.

हत .

.

.

.

.

नहीं .

.

.

.

.

गुस्से में बिखर कर उस आदमी ने कहा, " तू वही बके जाता है! क्या तूने यह काम नहीं कीया ?

क्या तूने भुवनमोहिनी को जहर नहीं दिया! क्या तूने अहिल्या का सिर अपने हाथ से नहीं काटा?

बोलता क्यों नहीं?

चुप क्यों हो गया?

(उसके शागिर्दो की तरफ देखकर) तुम्हीं लोग देखो और बताओ कि क्या इसकी सूरत कहती है कि यह बेकसूर है?

क्या इसके चेहरे से सचाई टपकती है! " बड़ी कठिनता से एक बार फिर भूतनाथ ने कहा, " मै फिर .

.

.

.

हता.

बेकसूर .

.

.

" पर वह अपनी बात पूरी न कर सका.

आगंतुक का गुस्सा उसकी बात सुन और भभक उठा और वह गरज कर बोला, " तू फिर भी अपनी करनी से इन्कार किए ही जाता है! तब तो मुझे तेरी कुछ और भी कलई खोलनी पड़ेगी.

(शागिर्दो से) तुम लोग अपने गुरु की नमकहरामी का कुछ और सबूत सुनो, जिस मायारानी से इतना भारी इनाम पाया, अपनी प्रकृति के मुताबिक यह उससे भी दगा कर गया अर्थात उससे यह कह के कि ' भुवनमोहिनी को अपने हाथ से मार डालूंगा, यह उसको भी धोखा दे गया.

उस भूवनमोहिनी पर चुनार का राजा शिवदत्त आशिक था.

मायारानी को धोखा दे इसने भुवनमोहिनी को शिवदत्त के हवाले करने का निश्चय किया और शिवदत्त से वादा किया कि जैसे बनेगा वैसे भुवनमोहिनी को उसके हवाले करेगा.

इसने भुवनमोहिनी को ऐसा जहर दिया कि जिससे वह मरे नहीं मगर मुर्दे से बदतर हो जाय, जब उसकी यह हालत हो गई तो इसने मशहूर किया कि उसे साँप ने काट लिया जिससे वह मर गई इस पर विश्वास कर उसके रिश्तेदारों ने उसे जंगल में ले जाकर गाड़ दिया जहाँ से यह तुम्हारा ओस्ताद अपने दोस्तों की मदद से खोद लाया और शिवदत् के हवाले कर उससे भी इसने गहरा इनाम लिया, इसने स्वयं अपने हाथों उस बेहोश बल्कि मुर्दो से भी बदतर भुवनमोहिनी को ले जाकर शिवदत्त के सामने डाल दिया और कहा, ' लीजिए, अपनी प्यारी को लीजिए और इसके आँचल पर गुलामी के दस्तावेज लिखिए! "

विबाहिता स्त्री को व्यभिचार के लिए दूसरे को देने और उसकी मौत से भी बुरी हालत कर डालने वाला बही पापी यह तुम्हारा गुरु भूतनाथ है! क्यों जी भूतनाथ, क्या यह भी मैं गलत कह रहा हूँ! " आगन्तुक अपनी बात पूरी न कर पाया था कि भूतनाथ बड़ी कोशिश करके अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और बोला, ' नहीं - नहीं, आप भ्रम में पड़ गए हैं.

मैंने ऐसा नहीं .

.

.

" पर वह अपनी बात पूरी न कर सका.

उसके सर में चक्कर आया और वह लड़खड़ा कर जमीन पर गिर गया.

आगन्तुक ने लापरवाही के साथ सिर हिला कर रामेश्वरचन्द्र से कहा, " जिसने ऐसे - ऐसे काम किए उसी भूतनाथ को तुम लोग अपना गुरु बनाए हुए हो! सोचो और समझो कि दुनिया में क्या मान पैदा करोगे और किस प्रकार की इज्जत कमाओगे?

अच्छा अब इसकी हिफाजत करो मैं चला! " वह नीचे जाने के लिए मुड़ा मगर यकायक रामेश्वरचन्द्र ने उसे रोक कर कहा, " कृपा कर जरा - सा ठहर जाइये और हम लोगों की एक बात का जवाब देते जाइए आप कौन हैं और कैसे आपको इन बातों का पता लगा, तथा उस तस्वीर में क्या है?

" उसने जवाब दिया, " क्या मैं बता ही दूं?

अच्छा तो लो, मेरा नाम कामेश्वर है.

वह भुवनमोहिनी मेरी ही स्त्री थी जिसकी भूतनाथ ने वह दुर्गति की, और वह अहिल्या मेरी बहिन थी जिसे इसने भूतनाथ की मूरत के सामने मारा.

उस तस्वीर में मेरी बहिन के खून के समय का दृश्य बना हुआ है.

यह हत्यारा भूतनाथ काले कपड़ों से अपने को छिपाए महाकाल की मूरत के आगे खड़ा है और मेरी बहिन के सिर से टपकते हुए खून की बूंदे उसके मुंह में देना चाहता है, यही उस तस्वीर में बना हुआ है.

मैंने ही उसे बनाया और यह प्रतिज्ञा की थी कि जैसे बनेगा वैसे इस काम के करने वाले हत्यारे भूतनाथ को मटियामेट करके छोडूंगा मगर अफसोस, शिवदत्त ने मुझे कैद कर लिया और तब से अब तक मैं उसी के कैद में रहा जहाँ से अब छूट के आया हूँ और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने की कोशिश कर रहा हूँ! "

इतना कह आगन्तुक ने एक बार फिर भूतनाथ की तरफ देखा और तब कुएँ के नीचे उतर कर घने जंगल की ओर चला गया.

बेहोश भूतनाथ उसी तरह पड़ा रहा, उसके शागिर्द कभी उसकी तरफ और कभी उस व्यक्ति की तरफ देखते रहे मगर यह हिम्मत किसी की भी न हुई कि जाने वाले को रोके

या उससे कुछ कहे.

।

।

अठारहवाँ भाग समाप्त।

।

भूतनाथ -६

भूतनाथ -७

देवकीनन्दन खत्री

उपन्यास

खण्ड - सात

उन्नीसवां भाग

पहला व्यान।

] भूतनाथ की बदौलत श्यामा बड़े ठाठ - बाट के साथ अपनी जिन्दगी बिता रही है.

अवश्य ही उसके आलीशान मकान से भूतनाथ को काफी दौलत मिली है पर उसने अपनी तरफ से स्वयं भी वहां कई तरह की तरक्की कर डाली है, जिनमें से एक यह है कि उस (श्यामा के) मकान के बगल में एक खंडहर को खरीदकर उसके मकान के साथ मिला उसमें एक खुशनुमा बाग बना डाला है जिससे उस आलीशान मकान की और भी ईज्जत बढ़ गई है.

श्यामा के शौक की बदौलत यह बाग देखते - देखते बन - संवरकर बड़ा ही सुन्दर हो गया है और शौकीनों की तबीयत को खुश करने के लिए अब इसमें सब तरह का सामान मौजूद है.

शाम का वक्त है.

अपने इसी नये बाग में श्यामा रबिशों पर टहल रही है.

शाम की गुदगुदी पैदा करने वाली ठण्डी हवा खुशबूदार फूलों की महक से मतबाली हो उसकी रेशमी साड़ी के बारीक आंचल के साथ किलोल कर रही है मगर न - जाने क्यों इस समय श्यामा का दिल उस तरफ नहीं है उसकी स्वाभाविक मस्ती उससे कोसों दूर है और उसके चाल की ठुमुक उसकी कटीली आंखों की मचलती हुई चितवनों के साथ कहीं दूर निकल गई है.

न - जाने किस सोच में डूबी हुई वह उदासी के साथ सिर नीचा किए इधर से उधर टहल रही है और केवल कभी - कभी उसके सिर उठाकर फाटक की तरफ देखने से ही इस बात का पता लगता है कि वह किसी आने वाले की राह देख रही है, नहीं तो और कोई

भी बात इस बात को छिपाने में समर्थ नहीं है कि वह आज बहुत ही सुस्त और उदास हो रही है.

फाटक खुलने की आवाज श्यामा के कानों में पड़ी और साथ ही उसने चौंककर देखा.

एक रथ, जिसमें मजबूत बैलों की जोड़ी जोती हुई थी और जिसके ऊपर पर्दा रहने से प्रकट होता था कि कोई जनानी सवारी इसके अन्दर है, बाग में आया और साथ ही पर्दा हटाकर एक औरत रथ के नीचे उतरी.

पहली ही निगाह में श्यामा ने पहचान लिया कि यह भूतनाथ की स्त्री रामदेई है और पहचानते ही वह उसकी तरफ लपकी.

रामदेई भी उसे देखते ही उसकी तरफ बड़ी और दोनों एक दूसरे के गले से चिमट गईं.

रथवान रथ को बढ़ाकर अस्तबल की तरफ ले गया और श्यामा का इशारा पा दो - एक नौकर - चाकर जो आस - पास में मौजूद थे, दूर हट गए जिससे वहां एकदम निराला हो गया.

इसी बीच न - जाने क्यों रामदेई की आंखें डबडबा आई और श्यामा की आंख में भी जल भर आया.

बहुत देर तक ये दोनों एक - दूसरे से चिमटी रहीं और आखिर मुश्किल से अलग होकर रामदेई ने कहा, " बहिन, मैं तो उजड़ गई.

" श्यामा ने प्यार से उसके आंसू पोंछे मगर साथ ही अपनी आँखों से बूंदें टपकाते हुए कहा, " बेशक! हम दोनों की सब मेहनत व्यर्थ हो गई और कम - से - कम मेरे वास्ते तो सदा के लिए दुनिया का एक चटपटा मजा जाता रहा !! " रामदेई ने कहा, " यही बात है.

हम लोग भले ही भूतनाथ से दुश्मनी करती रहें या उसको नाच नचाती रहें, मगर इसमें कोई शक नहीं कि वह आदमी मर्दाना और परले सिरे का बहादुर था.

बहिन, मैं सच कहती हूं, उसके साथ दुश्मनी करती हुई भी मैं उसको प्यार करती थी !! " श्यामा:

वही हाल मेरा भी है.

यद्यपि दारोगा साहब के हुक्म से मैं उसे बड़ा गहरा धोखा देने का बांधनू बांध रही थी मगर जब यकायक यह खबर सुनी कि लोहगड़ी उड़ गई और उसके साथ - साथ भूतनाथ भी जल मरा तो मेरा कलेजा बैठ गया.

उस समय से अभी तक लाख दिल को समझाती और दारोगा साहब की मुहब्बत का भरोसा दिलाती हूं मगर यह कम्बख्त मानता ही नहीं.

भूतनाथ ऐसा दुश्मन था कि उसकी दुश्मनी भी कलेजे को अपनी तरफ खींचती थी.

राम:

मगर यह तो कहो कि आखिर हुआ क्या?

भूतनाथ ने क्या कर दिया कि लोहगड़ी की समूची इमारत ही नष्ट नहीं हो गई बल्कि साथ - साथ उसको खुद भी जान से हाथ धोना पड़ा?

तुम्हारे पुर्जे से इस बात का कोई पता न लगा और मैं उसको पढ़ते ही घबराई हुई दौड़ी चली आई.

श्यामा:

मैं सब हाल तुमसे कहती हूं, मगर यहां खड़े - खड़े बात करने की बनिस्बत बेहतर होगा कि हम लोग कहीं बैठ जायें.

थोड़ी ही दूर पर एक लताकुंज था जिसके अन्दर बैठने की मुनासिब जगह भी बनी हुई थी.

दोनों औरतें वहीं चली गई और एक तरफ बैठ बातें करने लगीं.

श्यामा ने कहा श्यामा:

बहिन नागर सुन, दारोगा साहब के आदमी ने जो कुछ हाल मुझसे कहा सो मैं तुझसे कहती हूं, बात यह है कि नन्हों ने रोहतासगढ़ के राजा दिग्विजयसिंह से बादा कर दिया था कि जैसे बनेगा वैसे भूतनाथ के कब्जे से लोहगड़ी की ताली निकालकर उसे देगी.

भूतनाथ को कब्जे में करने के लिए उसने गौहर से दोस्ती पैदा की और दोनों ने मिलकर यह मनसूबा बांधा कि भूतनाथ के कई पुराने पापों का भेद खोल देने की धमकी उसे दें

और उससे लोहगड़ी की ताली ले लें.

गौहर से नन्हो को यह पता लगा कि उसका पुराना प्रेमी कामेश्वर मरा नहीं, बल्कि राजा शिवदत्त की कैद में पड़ा हुआ है.

उसको कैद से छुड़ा गौहर ने बेगम के मकान पर भिजवा दिया मगर उसी रात भूतनाथ के आदमी बेगम के मकान में घुसे और उस कैदी अर्थात् कामेश्वर को छुड़ा ले गये, मगर उसकी किस्मत खराब थी और वह कुछ ही समय बाद बेगम और भूतनाथ के आदमियों की लड़ाई में मारा गया.

इस बात पर नन्हों भूतनाथ से और भी जल उठी और उसे एकदम तहस - नहस करने की कसम खा बैठी.

उसने रोहतासगड़ से कई ऐयार बुलाए और भूतनाथ के पापों के बारे में जो कुछ वह जानती थी उसके तरह - तरह के सबूत इकट्ठे करवाए मगर न जाने किस तरह भूतनाथ को इस बात का पता लग गया.

ऐन मौके पर वह लोहगड़ी में पहुंचा जहां सब लोग इकट्ठे होकर सलाह - मशविरा कर रहे थे और उसी जगह उन लोगों को मारने के लिए उसने कोई कार्रवाई की जिससे न केवल समूची लोहगड़ी ही तहस - नहस हो गई बल्कि खुद वह भी उसके अन्दर ही जल मरा.

कई लाशें उस इमारत के साफ होने पर अन्दर से निकलीं जिनमें से एक उसकी भी थी ऐसा गुमान किया जाता है.

राम:

मगर बहिन मनोरमा, तुमने यह सब हाल बहुत संक्षेप में कहा.

जरा खुलासा कहो तो कुछ मेरी समझ में आये.

लोहगढ़ी कहां है?

कामेश्वर कौन था?

नन्हों से उसका क्या सम्बन्ध था?

भूतनाथ का कौन - सा पिछला पाप नन्हों और गौहर प्रकट करना चाहती थीं.

यह सब कुछ जरा खुलासा कहो तो मेरी समझ में आवे.

श्यामा:

अच्छा मैं खुलासा कहती हूं तू सुन.

मैंने तो इसलिए संक्षेप में कहा कि शायद तुझे भूतनाथ की मौत का हाल सुनने से तकलीफ हो, क्योंकि यह मैं अच्छी तरह जानती हूं कि उसके साथ दुश्मनी करती हुई भी तू उससे मुहब्बत करती थी.

इन दोनों - श्यामा बनी हुई मनोरमा, और रामदेई बनी हुई नागर में - बहुत देर तक न - जाने क्या बातें होती रहीं, यहाँ तक कि दिन बिल्कुल डूब गया और संध्या का अंधकार घिरने लगा.

फिर भी इनकी बातें न - जाने कब तक चलती रहतीं अगर एक लौंडी ने सामने पहुंचकर इन दोनों के एकान्त में बाधा न पहुंचाई होती.

मनोरमा ने कुछ बेरुखी के साथ उसकी तरफ देखा और पूछा, " क्या तुम लोग थोड़ी देर के लिए भी मुझे निश्चिन्त छोड़ नहीं सकतीं?

" लौंडी ने डरकर कांपते हुए कहा, " महारानी, एक आदमी अभी - अभी दौड़ता - दौड़ता आया है और आपसे मिलना चाहता है.

हम लोगों के बहुत रोकने पर भी नहीं मानता और यही कहता है कि चाहे जो भी हो इसी दम उनसे मुलाकात करूंगा, मुलाकात न होगी तो भारी आफत आ जायेगी बल्कि जान पर भी आ बने तो ताज्जुब नहीं.

उसकी बातें सुन लाचार आपको खबर देनी पड़ी! " मनोरमा ने ताज्जुब से पूछा, " वह कौन आदमी है?

अपना क्या नाम उसने बताया?

" लौंडी ने जवाब दिया, “ जी नाम तो कुछ भी नहीं बताया मगर कहता था कि नाम जानने का अगर ऐसा ही शौक हो तो कह देना पहाड़ी भेड़िया आया है ।

" ' पहाड़ी भेड़िया ' इस नाम में न - जाने क्या भेद था कि सुनते ही मनोरमा कांप गई और उसका चेहरा पीला पड़ गया, मगर तुरन्त ही उसने अपने को सम्हाला और लौंडी से बोली, “ उसको बहुत जल्दी इज्जत के साथ मेरे पास ला और किसी से कह एक कुर्सी यहां पर रख जाये! "

लौंडी ' बहुत खूब ' कहकर चली गई और जरा ही देर बाद एक कुर्सी वहां पर लाकर रख दी गई.

नागर ने मनोरमा से पूछा, यह कौन आदमी है और तुम इसका नाम सुनकर चौंक क्यों गईं! " मनोरमा ने जवाब दिया, “ यह बड़ा भयानक आदमी है.

इसका पूरा - पूरा हाल सिर्फ दारोगा साहब को मालूम है वे इससे बहुत ही घबराते हैं.

भूतनाथ से इसका गहरा सम्बन्ध है और यह उससे बड़ी दुश्मनी रखता है मगर इस बारे में .

.

.

लो वह आ पहुंचा! " नागर ने देखा कि लम्बे कद का एक दुबला - पतला आदमी जिसके बदन पर कफनी के तरह का लाल रंग का एक बहुत ही लम्बा कुरता पड़ा हुआ था और हाथ में एक टेढ़ी - मेढ़ी काले रंग की लाठी थी, एक पहरेदार के साथ उस तरफ आ रहा है.

उसके सिर पर बहुत बड़ी - बड़ी भूरे रंग की जटा थी और उसने अपने चेहरे इतनी ज्यादा राख मल रखी थी कि शक्ल का ठीक - ठीक पता ही नहीं लग सकता था.

जिस समय मस्तानी चाल से झूमता हुआ वह उस तरफ आ रहा था उसकी आंखें इस तरह बंद थीं मानो नशे की झोंक में हो.

एक तो शाम के वक्त का अंधेरा, दूसरे फासला और तीसरे चेहरे पर राख मली रहने के कारण नागर बहुत कोशिश करने पर भी उसकी ठीक - ठीक सूरत देख न सकी मगर इतना जान गई कि यह उसके देखे - भाले आदमियों में से कोई नहीं है ।

देखते - देखते वह विचित्र आदमी पास आकर इन लोगों से कुछ दूर ही रुक गया.

मनोरमा ने उठकर इज्जत के साथ कहा, " आइये विराजिये! " मगर उसने सिर हिलाकर कहा, " उस - बस - बस, खतरे को ज्यादा पास आने देना उचित नहीं! दूर ही से जो कुछ कहता हूं उसे सुन लो और फिर जो जी में आबे सो करो! " मनोरमा बोली, " बहुत अच्छा, जैसी आपकी मर्जी! कहिए क्या कहते हैं! " मगर यह बात खत्म होने के पहले ही वह बोल उठा, " तो क्या तुम लोग चाहते हो कि तुम्हारे नौकर - चाकरों के सामने ही सब हाल कह डालूं?

खैर मेरा क्या, यह तो तुम्हारे खयाल करने की बात है! लो सुनो कि तुम्हारा आशिक भू.

"

उसको आगे कहने से रोक मनोरमा ने पहरेदार को वहां से चले जाने का इशारा किया और जब वह दूर निकल गये तो बोली, " वेशक मेरी गलती थी जो मैं सभी के सामने आपसे कुछ पूछना चाहती थी! अब कहिए क्या आज्ञा है?

" वह विचित्र आदमी बोला, “ आज्ञा क्या है! बस यही कहने आया हूं कि तुम्हारा काम बन गया और अब तुम लोगों को खुशी का जलसा करना चाहिए! जिसके लिए इतने दिनों से परेशान थीं वह काम होना ही चाहता है !! " मनोरमा:

(ताज्जुब से) सो क्या?

विचित्र आदमी:

(गौर से नागर की तरफ देखकर) तुम्हारे साथ यह कौन औरत है?

जब इसको तुमने नहीं हटाया तो जरूर यह कोई ऐसी होगी जो तुम्हारे भेदों में शामिल है और अगर मैं गलती नहीं करता तो जरूर यह नागर होगी! मनोरमा:

जी हां, यह मेरी प्यारी सखी नागर ही है और इससे मेरा किसी तरह का पर्दा नहीं है.

आपको अगर मुझसे कुछ पूछना है तो बेधड़क इसके सामने कह सकते हो मगर मैं फिर भी आपसे विनती करूंगी कि आप इस जगह आकर विराज जायें और शान्ति के साथ जो कुछ कहना हो सो कहें या नहीं तो आज्ञा करें कि मैं ही आपके पास आ जाऊं .

.

.

विचित्र आदमी:

(हाथ आगे बढ़ाकर) नहीं - नहीं! न तो मैं ही नजदीक आना चाहता हूं और न तुमको ही पास बुलाना चाहूंगा.

उन नागिनों से दूर ही रहना अच्छा जिनको देखने से जहर चढ़ता है! मुझे जो कुछ कहना है उसको यहीं से कहूंगा, तुम्हें सुनना हो तो सुनो नहीं तो अपने रास्ते लगता हूं, यह लो मैं चला.

विचित्र आदमी पीछे को मुड़ा मगर मनोरमा ने रोककर कहा, " अच्छा - अच्छा जो कुछ आपको कहना हो वहीं से कहिए, मैंने तो सिर्फ इसलिए कहा था कि जोर से बातें करने से शायद कोई गैर आदमी सुन ले तो मुश्किल हो जायेगी! अगर विचित्र आदमी:

तो मुझे कहना ही क्या है, सिर्फ इतना ही सुन लो कि हवा चल पड़ी और बादल फट गया, काई बाले तालाब में केला पड़ गया, धतूरे के बीज लग गये और कनेर के फूल को गन्धक का धुआं मिल गया.

बस इतना ही तो मुझे कहना था, सो मैंने कह दिया और अब यह लो चला.

मनोरमा:

(नम्रता से) बेशक आप तो अपनी बात कह गए मगर मैं निर्बाध कुछ भी समझ न सकी! कृपा कर जरा साफ साफ समझा दीजिए तो जान जाऊं कि आपने क्या कहा?

विचित्र आदमी:

राम - राम, कैसे मूर्खों से पाला पड़ा है! इसी से बड़े लोग कहते हैं कि बेवकूफ की संगत नहीं अच्छी! खैर फिर से साफ - साफ कह देता हूं, जिस चीज की बरसों से तलाश थी वह मिल गई, गदहे को कूड़े का ढेर मिल गया, और सूअर गड़हिया पा गया.

अब तुम लोगों की पौ बारह है, मौज करो, तुम्हारी मनशा पूरी हुई !! मनोरमा:

मेरी कौन - सी मनशा पूरी हुई !! विचित्र आदमी:

अजी वही जिसके लिए तुमने श्यामा का और बीबी नागर ने रामदेई का स्वांग लिया हुआ है! मनोरमा:

मगर हम लोगों की मेहनत तो मिट्टी में मिल गई.

आपको शायद नहीं मालूम है कि भूतनाथ .

.

.

विचित्र आदमी:

मालूम है, तुम लोगों से हजार गुना ज्यादा मालूम है! भूतनाथ लोहगड़ी में मरा नहीं बल्कि लोगों की आंखों में धूल झोंककर साफ निकल गया और अब लोहगड़ी की तालियां पाकर हंसी - खुशी उसके खजाने को हथियाने की कोशिश कर रहा है.

बस लो अब तो मैंने सभी कुछ साफ - साफ यानी बेवकूफों की भाषा में कह सुनाया, अब तो जाऊ न?

मनोरमा:

(हाथ जोड़कर) कृपा कर जरा और ठहर जाइये तथा दो - एक बातें और बताते जाइये.

विचित्र आदमी:

(घूमता - घूमता रुककर) खैर पूछ लो कि क्या पूछती हो, मगर इतना समझ लो कि मैं आधे पल से ज्यादा नहीं रुक सकता क्योंकि भूतनाथ की सबारी पहर - भर के भीतर ही पहुंचना चाहती है और उसके आने के बाद तुम लोग सड़े हुए मांस को खाकर खुश हुए भए गिद्ध की तरह डैने फड़फड़ाकर यहां से उड़ जाना चाहोगी.

नहीं - नहीं, अब मैं यहाँ बिल्कुल नहीं ठहरूंगा, न जाने क्या से क्या हो जाये, जो कुछ मैंने कहा उसी से जो मतलब निकाल सको निकाल लो, मैं चला.

वह आदमी पुनः घूमा मगर मनोरमा ने लपककर उसका पैर पकड़ लिया और बोली, " नहीं - नहीं, मेरी एक बात का जबाब देकर ही तब आपको जाना होगा! "

लाचार वह रुक गया और बोला, " खैर तो तब सिर्फ एक बात और पूछ लो, मगर याद रक्खो कि उससे ज्यादा मैं और कुछ न बताऊंगा! " मनोरमा बोली, " बहुत अच्छा, मैं सिर्फ एक ही बात पूछूंगी! आप सिर्फ यह बता दीजिए कि क्या भूतनाथ जीता - जागता है?

" विचित्र आदमी ने मुंह बनाकर कहा, " कह तो दिया कि हां - हां - हां, अब के दफे कहूं?

तुम लोगों की भी क्या अक्ल है?

इसी अम्ल को ले के भूतनाथ का मुकाबला करने चली हो! झाडू लेकर पहाड़ बुहारना चाहती हो और सुई से शेर मारना चाहती हो! लो सुनो और फिर से सुन लो कि भूतनाथ बच गया और राजा वीरेन्द्रसिंह के कब्जे से रिक्तगंथ ' लेकर अब पहुंचा ही चाहता है ।

!! इतना कहते - कहते वह आदमी पलट पड़ा और तब मनोरमा के ठहरिए, ठहरिए, जरा - सा सुनते जाइए " की जरा भी परवाह न कर सीधा ही चला गया.

फाटक बालों को भी उसे रोकने की हिम्मत न पड़ी और वह बाहर निकल कर न - जाने किधर चला गया.

मगर उसकी जुबानी जो बात सुनने में आई थी उसने मनोरमा और नागर दोनों को ही हद से ज्यादा ताज्जुब में डाल दिया था.

ये दोनों ही सकते की - सी हालत में खड़ी एक - दूसरे की तरफ देख रही थीं.

आखिर कुछ देर के बाद नागर ने कहा, " सखी, यह क्या कह गया?

क्या इसकी बात सही हो सकती है?

" मनोरमा ने जबाब दिया, " इसकी कही हुई कोई खबर आज तक गलत न निकली! यही तो सबब है कि दारोगा साहब तक इसकी बेहूदगियों पर कोई ध्यान न देते हुए इसके कहने में चला करते हैं और साथ ही इससे डरते भी हैं क्योंकि जिस बात का पता उनके जासूस और ऐयार लाख सिर मारने पर भी नहीं लगा पाते उसका सच्चा - सच्चा हाल यह जान जाता है और होने वाली घटनाओं की खबर पहरों और महीनों पहले दे देता है.

तुम इसकी दी हुई इस खबर की सच्चाई में जरा भी सन्देह न समझो और अब आगे क्या करना है इसे पूरी तरह से सोच डालो.

"

नागर:

सोचना क्या है?

अगर सचमुच भूतनाथ जीता - जागता है, रिक्तगन्थ उसके हाथ लग गया है, और वह यहां आ रहा है, तो बस जैसे हो वैसे उसके कब्जे से वह किताब निकाल लेनी पड़ेगी, देर होने से न - जाने क्यां हो जाये, वह किताब को कहीं छिपा दे या खुद ही तिलिस्म तोड़

दें। मनो:

बेशक यही बात है.

तो तुम अब तुरन्त अपने मकान पर चली जाओ और इधर मैं भी यहां का सब बन्दोबस्त करे डालती हूं, क्या जाने वह कहां पहुंचे! नागर:

बेशक बेशक, तो बस मैं जाती हूं.

अगर वह उस किताब को लेकर मेरे पास आया तो जिस तरह भी होगा उससे रिक्तगन्थ लेने की कोशिश करूंगी, मगर जरा मुश्किल यही दिखाई पड़ती है कि अगर उसने वह किताब मुझे देना मंजूर न किया तो .

.

.

.

मनो:

जैसे हो वैसे रिक्तगन्थ तो उससे लेना ही होगा, राजी से हो या जबर्दस्ती से हो, उसे बेहोश करके हो या जान से मारकर ही हो, वह काम तो पूरा उतारना ही पड़ेगा जिसके लिए बरसों से हम लोग कोशिश कर रहे हैं?

क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि रिक्तगन्थ को महाराज बीरेन्द्रसिंह के काबू से निकालने की कोशिश में दारोगा साहब के ग्यारह होशियार ऐयार और जासूस नौगढ़ का जेलखाना आवाद कर रहे हैं और न जाने कितने ही जान से हाथ धो चुके.

यह भूतनाथ का ही कलेजा है कि वह उनके यहां से रिक्तगन्थ ले के निकल आया और फिर भी जीता बच गया !! नागर:

अब क्या जाने बहिन, यह खबर सच भी निकलती है या नहीं !! मनो:

इस खबर की सचाई में तुम तनिक भी सन्देह न करो और यह बताओ कि क्या तुमको किसी तरह की मदद की जरूरत है या तुम सब काम बना लोगी?

नागर:

मुझे कुछ होशियार आदमियों की जरूरत पड़ सकती है.

जैसा कि मैंने कहा - अगर उसने सहज में वह किताब मुझे देना मंजूर न किया .

.

.

मनो:

तो जबर्दस्ती वह किताब उससे लेनी होगी - ठीक है, और इसके लिए मैं एक बहुत ही होशियार आदमी तुमको देती हूं.

इतना कह मनोरमा ने जोर से ताली बजाई जिसके साथ ही एक लौंडी दौड़ती हुई उस जगह आ मौजूद हुई, मनोरमा ने उसके कान में कुछ कहा और वह फिर पिछले पांव उसी तरह दौड़ती हुई चली गई, मनोरमा नागर की तरफ देखकर बोली, " मैं अपने बहुत ही विश्वासी ऐयार साधोराम को तुम्हें देती हूं जिसको तुम बखूबी जानती हो.

वह सब काम बहुत अच्छी तरह कर सकेगा और उसके साथ कई मजबूत दिलावर आदमी भी रहेंगे जो तुम्हारी मदद करेंगे ।

बस अब तुम चल पड़ो, ज्यादा देरी करना खतरनाक होगा !! " दोनों औरतें उठ खड़ी हुई.

दूसरा व्यान।

आधी रात का समय है.

अपने आलीशान मकान में श्यामा पश्चिम की तरफ के एक कमरे में पलंग के मुलायम बिछावन पर पड़ी हुई है जिसकी मसहरी का जालीदार पर्दा हवा के मद्धिम झोकों से लहरें मार रहा है.

नाजुक श्यामा गहरी नींद में पड़ी हुई और उसकी नाक से हल्के खुर्राटे की आवाज आ रही है.

यकायक चौंककर श्यामा ने आंखें खोल दी और घबराकर उठ बैठी.

उसने देखा कि कोई आदमी पलंग पर झुका हुआ धीरे धीरे उसके बदन पर हाथ फिरा रहा है.

इस कमरे में बहुत मामूली - सी रोशनी हो रही थी फिर भी उसने इस आदमी को पहचान लिया और तुरन्त पलंग से उतर उसके पैरों पर सिर रखती हुई बोली, “ नाथ! आह्, आप हैं?

भला आपको मेरी याद तो आई! मगर हैं, यह आपकी हालत क्यांहो रही है! आप तो जख्मी मालूम होते हैं! "

सचमुच आने वाला भूतनाथ ही था जो श्यामा की बात सुन बेचैनी और थकावट की मुद्रा से उसके पलंग पर बैठ गया और अपने माथे पर हाथ फेरता हुआ बोला, " हां, मैं बहुत दूर से भागा - भागा और परेशान चला आ रहा हूं और साथ ही कुछ जख्मी हो गया हूं.

राजा बीरेन्द्रसिंह के आदमी मेरा पीछा कर रहे हैं और उन्हीं से भागकर मैं यहाँ पहुंचा हूं, श्यामा:

(भूतनाथ के कपड़े उतारती हुई) राजा वीरेन्द्रसिंह के आदमी! उनसे आपका क्या झगड़ा हो गया?

मगर तब मालूम होता है कि उन्हीं लोगों ने आपको जख्मी भी किया है! भूत:

नहीं, जख्मी तो दूसरे हाथों ने मुझे किया है जिन्हें अपनी बेवकूफी से मैंने अपने गले में डाल लिया था, पर खैर इन बातों से इस समय कोई मतलब नहीं, अगर तुम्हारी कोई लौंडी जागती हो तो बुलाओ मैं जरूरी कामों से फारिग हो स्नान करूंगा और तुरंत ही यहां से चला जाऊंगा, श्यामा:

लौंडी आपकी आपके सामने खड़ी है, और किसी को बुलाने की जरूरत नहीं! मैं अभी सब बन्दोबस्त कर देती हूं, मगर इस समय आपको जाने किसी तरह नहीं दे सकती, आपकी इस हालत में मैं क्या, आपका कोई दुश्मन भी आपको बाहर निकलने की सलाह नहीं दे सकता.

श्यामा ने भूतनाथ की सब तरह से पूरी सेवा की और अपने चाल - चलन और कामों से जाहिर कर दिया कि कुलीन स्त्रियां किस किस तरह का बर्ताव अपने पति के साथ करती हैं, उसने भूतनाथ को नहलाया - धुलाया और अपने हाथ ही से उसकी मलहम - पट्टी भी करके कुछ जलपान कराने के बाद पलंग पर लिटा दिया.

थकावट का मारा भूतनाथ मन - ही - मन श्यामा के वास्तविक प्रेम की सराहना करता हुआ शीघ्र ही गहरी नींद में डूब गया और उसको इस बात का कुछ भी पता न लगने पाया कि उसकी इस बेवफा और बनावटी स्त्री ने दवा की जगह जहर का बर्ताव किया है.

उसके जख्मों पर जो मलहम लगाया गया था उसमें आराम पहुंचाने की बनिस्बत गहरी बीमारी पैदा करने की भयानक ताकत थी, जिसका नतीजा यह निकला कि कुछ ही देर के बाद भूतनाथ घावों की तकलीफ के कारण पुन:

जाग उठा और उसको बहुत तेज बुखार भी चढ़ आया जिसका सबब उसने अपने घावों को ही समझा.

मगर सिर्फ इतने ही पर बस न हुआ, इसके साथ ही साथ उसका दिल और दिमाग भी इस लायक न रह गया कि कारण को ठीक तरह सोचकर किसी मुनासिब नतीजे तक पहुंचे क्योंकि उस पर भी उस दूसरी दवा का असर हो चुका था जो ताकत पैदा करेगी यह कहकर श्यामा ने उसको खाने के बाद ही पिला दी थी.

कुछ ही समय के बाद उसके बदन की गर्मी यहां तक बढ़ गई कि वह बेचैनी के कारण हाथ - पांब पटकने लगा और दोपहर बीतते - बीतते तो बकने - झकने भी लगा.

घण्टों तक भूतनाथ की यही हालत रही और वह बराबर बकता - झकता और हाथ - पांव मारता रहा.

इस बीच श्यामा हरदम उसके पास बनी रही.

इसमें शक नहीं कि भूतनाथ की सेवा उसने सब तरह से की और जब तक बीमारी का जोर बना रहा एक पल के लिए भी उसके पास से न हटी मगर ऐसा करने में भी उसकी असल नीयत क्या थी इसे समझना जरा कठिन है, कुलटा और धूर्ता स्त्रियों के चरित्र ब्रह्मा भी समझ नहीं सकते! वह रात का और बाद का समूचा दिन इसी तरह बीत गया, भूतनाथ की वह बक - झक बराबर जारी रही और इस दरमियान में वह हजारों ही तरह की बातें बक गया जिन्हें उसके पास हमेशा बैठी रहने वाली श्यामा बराबर गौर से सुन रही थी और जिसके साथ - साथ यह इन्तजाम भी कर रखा था कि कोई गैर कान भूतनाथ की वह बक - बक सुनने न पावे.

हम ठीक नहीं कह सकते कि श्यामा ने कौन - सी चीज भूतनाथ को खिला दी थी जिससे उसके दिलोदिमाग को इस कदर डीला कर दिया मगर इसमें शक नहीं कि यह बात जिस तरह यकायक पैदा हुई थी उसी तरह यकायक बन्द भी हो गई.

कई दिनों के बुखार, बदहवासी और दिमागी फितूर के बाद एक दिन आप - से - आप ही भूतनाथ ने अपने को बहुत अच्छा और होश ह्वास में और श्यामा को पलंग की पैतानी बैठे अपने पैर दबाते पाया.

उसका उबलता हुआ दिमाग इस समय ठंडा और शान्त था और तबीयत फरहर में मालूम होती थी.

बुखार भी उतरा हुआ था.

अवश्य ही वह बहुत ही कमजोर और दुर्बल हो गया था, फिर भी उसकी मानसिक शक्तियां ठीक हालत में थीं और यही सबब था कि आखें खुलने के साथ ही उसने श्यामा को पहचाना और कमजोर आवाज में पानी मांगा.

चांदी की सुराही से जल ढालकर श्यामा ने उसे ठंडा पानी पिलाया और तब प्रेम में डूबे हुए स्वर में पूछा, “ नाथ, अब आपकी तबीयत कैसी है?

"

भूतनाथ ने जवाब दिया, “ बहुत ठीक है, मगर न जाने क्यों कमजोरी हद से ज्यादा मालूम होती है और ऐसा जान पड़ता है मानों मैं बरसों का मरीज हूं.

हाथ - पैरों में बिल्कुल दम नहीं पड़ता और तुमने भी देखा होगा कि जब तुम्हारे हाथ से गिलास लेकर मैंने जल पीया तो मेरी कलाई कांपती थी, न - जाने इसका क्या सबब है!! " श्यामा ने कुछ जबाब न दिया और जरा देर के बाद फिर से ऊपर दोनों हाथ जोड़कर भगवान से प्रार्थना करती हुई बोली, " परमात्मा की दया है कि उसने आपकी तकलीफ दूर की और मेरी इज्जत रख ली! " भूतनाथ ताज्जुब के साथ बोला, “ यह तुम क्या कह रही हो?

मगर तुम खुद भी बहुत कमजोर और थकी हुई - सी जान पड़ती हो?

इसका मतलब क्या है?

" श्यामा:

सब कुछ ठीक है, जब आपको होश आ गया है तो अब कोई बात नहीं, लेकिन आप कृपा कर ज्यादा बातचीत न करें और चुपचाप पड़े रहें.

अब कुछ ही देर में बैद्यजी आते ही होंगे, वे आपको देखकर जैसा कुछ कहेंगे वैसा किया जायेगा.

भूत:

तुम्हारी बातें तो अजीब हो रही हैं.

आखिर बात क्या है?

मैं क्या कुछ ज्यादा समय तक बीमार रह गया?

श्यामा ने पहले तो कुछ ना नूकर किया मगर भूतनाथ की जिद्द पर बोली, " आपकी तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गयी थी.

वैद्यों से पता लगा कि जिस दुश्मन से आपकी लड़ाई हुई थी उसने जहरीले हथियारों का इस्तेमाल किया जिससे घावों में जहर आ गया.

बहुत तकलीफ पैदा हुई और आपको बेहिसाब बुखार आ गया.

पहरों तक तो आप एकदम बेहोश पड़े रहे, और बीच में तो एक दफे ऐसा हो गया कि वैद्यों ने नाउम्मीदी जाहिर की जिस पर एकदम दु:खी और निराश होकर मैंने भगवान से प्रार्थना और प्रतिज्ञा की अगर तीन दिन के अन्दर आपकी तकलीफ दूर न हुई तो मैं भी अपना शरीर त्याग दूंगी.

तीन दिन से मैंने जल तक नहीं पिया.

भगवान ने मेरी सुन ली और आज आप बहुत स्वस्थ हैं!! भूतनाथ ताज्जुब के साथ उसकी बातें सुन गया और तब अपनी हालत पर गौर करके बोला, " बेशक जैसा तुमने कहा वही बात मालूम होती है.

हो न हो दुश्मन जहरीले हथियारों का बर्ताव कर गया जिन्होंने मुझे किसी काम का न छोड़ा.

चोट खाते समय ही मुझे ऐसा कुछ शक हुआ था.

खैर तुम्हारी सेवा और प्रेम से जब मैं जीता - जागता बच गया तो अब कोई हर्ज की बात नहीं है, सब कुछ ठीक हो जायेगा और मैं उससे भी समझ लूंगा जिसने मेरी यह हालत की है.

मगर तुम यह बताओ कि मैं कितने दिनों तक बीमार रहा, आज कौन - सा दिन है; और बीमारी की हालत में किसी तरह की बक - झक तो नहीं किया करता था?

" श्यामा ने जवाब दिया, “ आप पांच दिनों तक बीमार पड़े रहे, आज रविवार शुक्ल पक्ष की एकादशी है, बीमारी में आप बक - झक तो नहीं करते थे मगर कराहते बहुत थे और तकलीफ के सबब से बराबर करवटें बदलते रहते थे ।

" इसके बाद देर तक भूतनाथ और श्यामा में तरह - तरह की बातें होती रहीं और जब वृद्ध वैद्यराज भूतनाथ को देखने आए तो उन्होंने उसकी हालत बहुत ही अच्छी पाकर प्रसन्न होते हुए कहा, " बेशक मेरी किमती दबा ने पूरा असर किया और अब किसी तरह

का खतरा नहीं है! " श्यामा ने उनसे पूछा, " कितने दिनों में ये घूमने - फिरने लायक हो जायेंगे! " जिसके जवाब में उन्होंने कहा, " बस एक हफ्ते के भीतर तुम देखना मैं इन्हें खड़ा कर दूंगा! " यह बात सुन भूतनाथ हंस पड़ा मगर इस हंसी का सबब उसने बहुत पूछने पर भी न बताया.

वैद्यराज के जाने के बाद ही भूतनाथ उठ गया और श्यामा से बोला, " मेरा हाथ पकड़ लो और बाग में ले चलो.

" पहले तो श्यामा ने उज्र किया पर बाद में उसकी जिद से लाचार हो मंजूर करना पड़ा.

भूतनाथ कुछ देर तक इधर - उधर टहलता रहा और तब यकायक बोल उठा- " बस अब मैं तुमसे जुदा होऊंगा.

" श्यामा ने उसकी बात सुन आश्चर्य से पूछा, " क्यों?

" जिसके जवाब में उसने कहा, " मेरा एक बहुत ही जरूरी काम अटका हुआ है जिसे पूरा करना ही पड़ेगा.

" श्यामा ने यह सुन सिर हिलाकर कहा, “ नहीं नहीं, अभी कम - से - कम एक हफ्ते तक मैं आपको किसी तरह कहीं आने - जाने नहीं दे सकती! जब तक वैद्यराज यह न कह देंगे कि हां अब आपमें ताकत पूरी तरह आ गई और आप घूमने - फिरने के लायक हो गए तब तक आप कहीं नहीं जा सकते! " मगर भूतनाथ ने इस बात को सुन - हंसकर कहा, " अब मैं सब तरह से ठीक हो गया हूँ, भले ही इस समय तुम्हारे हाथ का सहारा लेकर मरीजों की तरह घूम रहा होऊ मगर वास्तव में अब कोई तकलीफ बाकी नहीं है, फिर भी मैं तुम्हारा आग्रह मानकर यहां से न जाता अगर वह काम निहायत जरूरी न होता! "

श्यामा:

नहीं - नहीं, आप लाख कहें मैं किसी तरह आपको जाने न दूंगी.

आप अभी तक एकदम कमजोर हैं और अगर कहीं किसी दुश्मन से मुलाकात हो गई तो न - जाने .

.

.

! कहकर श्यामा ने आँखें डबडबा लीं.

भूतनाथ ने बहुत कुछ कहा - सुना मगर वह किसी तरह भी इस बात पर राजी न हुई कि उसको जाने दे.

अन्त में जब भूतनाथ ने यह कहा कि यदि वह उस समय नहीं जायेगा तो बहुत बड़ा नुकसान हो जायेगा तो वह बोली, " आप जहां कहीं भी जायें मुझको भी साथ लेते चलिए ताकि मैं आपकी हिफाजत कर सकूं " इस बात को सुन भूतनाथ हंस पड़ा और देर तक श्यामा को समझाता रहा.

आखिर जब उसने वादा किया कि आठ पहर के अन्दर आवेगा और फिर कई दिनों तक वहां से कहीं नहीं जायेगा तब लाचार होकर या न - जाने किस कारण अन्त में श्यामा ने उसकी बात मंजूर कर ली.

स्थिर हुआ कि दूसरे दिन सूरज निकलने से पहले भूतनाथ रथ पर बैठकर रवाना हो जायेगा, मगर किस तरफ जाना या क्या करना है इसके बारे में बहुत पूछने पर भी भूतनाथ ने कुछ बताना मंजूर न किया.

दूसरे दिन अंधेरा रहते ही भूतनाथ का सफर शुरू हो गया.

कोई नौकर, सिपाही यहां तक कि बहलवान भी अपने साथ न लिया और खुद ही रथ हाँकता हुआ मकान के बाहर निकल गया.

उसने श्यामा को कुछ भी न बताया कि वह किधर जाना चाहता है मगर उसके पीछे जासूस लगाकर श्यामा ने इस बात का पता लगा लिया कि रथ काशी के बाहर हो गंगा पार कर सीधा उस सड़क पर चल पड़ा है जो रोहतासगढ़ को जाती है.

भूतनाथ के रवाना होने के दो घण्टे के बाद ही श्यामा ने भी अपनी सवारी का घोड़ा मंगाया और अपने नौकरों को बहुत कुछ समझाने - बुझाने के बाद उस पर सवार हो केवल एक विश्वासी सिपाही साथ ले वह भी न - जाने किधर को रवाना हो गई.

मगर इस समय हम उसका साथ नहीं करते और भूतनाथ के साथ चलकर देखते हैं कि वह किधर जाता या क्या करता है.

दोपहर तक भूतनाथ बराबर चला गया, इसके बाद एक मुनासिब जगह देख उसने रख को रोका, बैलों को खोलकर उनके चारे - पानी का इन्तजाम किया, और तब अपने खाने - पीने की भी व्यवस्था की.

उसकी अनूठी स्त्री ने भोजन का सब सामान साथ रख दिया था और लोटा - डोर आदि भी मौजूद था इससे किसी तरह की तकलीफ न हुई और दोपहरिया उसने उसी घने जंगल के नीचे काटी जिससे होकर वह अपने रथ को ले जा रहा था.

उस समय से बहुत पहले ही उसने सीधी सड़क को छोड़ दिया था और ऐसे जंगल से होता हुआ जा रहा था जिसमें से किसी अनजान आदमी के लिए रास्ता निकाल लेना कठिन था मगर इसमें शक नहीं कि वह अब भी रोहतासगढ़ की तरफ ही बढ़ रहा था.

थोड़ी देर सुस्ताकर भूतनाथ ने फिर सफर शुरू किया और इस बार वह बिना रुके बराबर तब तक चला गया जब तक कि रोहतासगढ़ की सरहद पार न हो गई और नीची पहाड़ियों का वह सिलसिला उसके सामने न आ पहुंचा जो दूर - दूर तक फैला हुआ था.

अब उसने अपने बैलों की चाल कम की और बड़ी सावधानी के साथ इधर - उधर देखता हुआ धीरे - धीरे जाने लगा.

शायद उसे अपना पीछा कीये जाने का डर हो, मगर उस भयानक जंगल में सूनसान सन्नाटे में दरिन्दे जानवरों के सिवाय वहां और होगा ही कौन जो उसके रात के इस सफर को देख सके?

कुछ देर सीधा चले जाने के बाद भूतनाथ ने रथ को मोड़ा और दाहिनी तरफ को चला.

अब रास्ता बहुत ही ऊंचा - नीचा और जमीन पथरीली मिल रही थी, जिसके सबब से रथ बेतरह उछल रहा था और जानवरों को चलने में तकलीफ हो रही थी, मगर भूतनाथ को इस बात का कुछ भी खयाल न था.

वह अपने चारों तरफ के निशानों से अपना रास्ता खोजता हुआ चला ही जा रहा था, यहां तक की उसने एक गहरे पहाड़ी नाले को काटकर सामने से बहते हुए पाया.

सावधानी के साथ भूतनाथ अपना रथ इस नाले के अन्दर उतार ले गया और तब कुछ दूर जा एक जगह खड़ा कर दिया.

बैलों को खोलकर लम्बी रस्सी से बांध दिया और कुछ घास आदि जो साथ में मौजूद थी उनके सामने डाल यहां से हटा.

इस जगह जहां उसने रथ को खड़ा किया नाले की गहराई इतनी थी कि ऊपर जंगल से होकर जाने वाले किसी शख्स को इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि यहां कोई रथ खड़ा है और शायद इसीलिये भूतनाथ रथ को यहां उतार भी लाया था.

थोड़ी देर तक इधर - उधर देखभाल करने और आहट लेने के बाद भूतनाथ नाले के बाहर निकला.

उसके सामने की तरफ लगभग चौथाई कोस के फासले पर एक पहाड़ी उस आधी रात के धुंधलके में अस्पष्ठ - सी दिखाई पड़ रही थी जिसकी शक्ल कुछ विचित्र ही तरह की थी अर्थात् दूर से बस यही जान पड़ता था मानो पत्थर के ढोंके पर कोई लुटिया रखी हुई हो, भूतनाथ कुछ देर तक सब तरफ देखता रहा.

न जाने क्यों उसके मुँह से एक लम्बी सांस निकल पड़ी, तब वह उसी तरफ को बढ़ा.

यहां हम थोड़ी देर के लिए भूतनाथ का साथ छोड़ देते हैं और उस सवार की तरफ चलते हैं जो भूतनाथ के नाले के बाहर होते ही उसके अन्दर उतरता दिखाई पड़ता है.

यह सवार घोड़े पर चढ़ा नहीं है बल्कि घोड़े की लगाम इसके हाथ में है और पैदल धीरे - धीरे और बड़ी होशियारी से आहट लेता हुआ चला आ रहा है.

हो न हो यह भूतनाथ का पीछा करता हुआ यहां तक पहुंचा है.

इसके पास चलकर देखना चाहिए कि इसकी नियत क्या है.

इस सवार के घोड़े के पैरों पर चमड़े के मुलायम गद्दीदार पाताचे चढ़े हुए हैं और खुद इस सवार ने भी मटमैले रंग का अबा पहनने के सिवाय पैरों पर कोई ऐसी चीज चढ़ाई हुई है कि जिससे चलने में किसी तरह की आवाज ऐसी नहीं होती जो दूर के लोगों को होशियार कर सके, फिर भी झाड़ी के अन्दर छिपे हुए उस आदमी ने इसको देख ही लिया जो न - जाने कब से वहां बैठा हुआ था.

क्या जाने वह इसी आने वाले की राह देख रहा था या क्या बात थी कि इसके इस जगह पहुंचते ही वह भी अपने छिपने की जगह से बाहर निकल आया.

आने वाले ने कुछ चमक कर पूछा, " कौन?

" जिस पर इसने जवाब दिया, “ मेवालाल.

" आने वाले ने प्रसन्नता के साथ कहा, “ अरे तुम यहां मौजूद हो! " इसने जवाब दिया, " जी हां, बाबाजी ने ठीक - ठीक पता हम लोगों को बता दिया था जिससे हम लोग कभी के यहां मौजूद हैं.

" आने वाले ने पूछा, “ क्या तुम लोग कई आदमी हो?

' जवाब मिला, " हां, तीन आदमी इस तरफ हैं और दो पिछली तरफ उस पहाड़ी के पिछवाड़े नाले में छिपे हुए हैं बल्कि और भी कुछ लोग हो तो ताज्जुब नहीं.

बाबाजी का कहना था कि चाहे जिधर से भी आवे मगर भूतनाथ जरूर यहां ही पहुंचेगा और यहीं से आगे उसका पीछा करने की जरूरत पड़ेगी !!

आने वाले ने फिर पूछा, “ तो क्या कुछ लोग उसके पीछे भी गए हैं?

" उसने जवाब दिया, " जी हां, मेरे दोनों साथी गए हुए हैं.

" आने वाले ने सन्तोष की एक सांस फेंककर कहा, " यह बहुत अच्छा हुआ मैं सफर करने से बची, इसी लम्बे सफर ने मुझे एकदम चूर - चूर कर डाला था.

कहीं बैठने की जगह बताओ तो मैं जरा आराम करूं.

इस भारी लबादे ने तो और भी .

.

बोलने वाला बल्कि यह कहना चाहिए कि बोलने वाली, क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह औरत ही थी, यकायक चौंकी और रुक गई क्योंकि उसके तेज कानों में किसी तरह की आहट पड़ी थी.

इधर - उधर देखने के साथ ही एक काली शक्ल पर निगाह पड़ी जो तेजी के साथ इधर ही को आ रही थी और जिसके पीछे कुछ फासले पर दो आदमी और भी थे.

उस आदमी ने जिसने अभी - अभी मेवालाल के नाम से अपना परिचय दिया था उस तरफ गौर से देखा और बोल उठा, " लीजिए बाबाजी खुद ही आ पहुँचे! " जिसे सुन

उस औरत ने अपना लबादा उतारने में जल्दी की और अब हमने भी पहचान कि यह बीबी मनोरमा हैं, अपने नये श्यामा के रूप में नहीं. बलकी असल रूप में.

उस आने वाले ने भी इनको देख अपनी चाल तेज कर दी और तुरन्त ही पास पहुंचकर कहा, " वाह - वाह तुम भी यहां आ पहुंची! चलो अच्छा ही हुआ, नहीं तो यद्यपि मैं तुमसे मिलने को व्याकुल था पर फिर भी भूतनाथ के खयाल से काशी आते या तुमको ही बुलाते डरता था.

" हमारे पाठकों ने तो आशा है आवाज ही से इनको पहचान लिया होगा क्योंकि ये हमारे जाने - पहचाने दारोगा साहब ही है जो अपनी शक्ल नकाब के पीछे छिपाये और समूचे बदन को कपड़े की आड़ में किये न - जाने कहां से चले आ रहे हैं कि तमाम पोशाक धूल और मिट्टी से भरी है और चेहरा पसीने से तर है.

उनके दोनों साथियों की भी यही हालत हो रही थी जिस पर मनोरमा ने ताज्जुब के साथ गौर किया और बोली, " मगर यह तो कहिये दारोगा साहब, कि आप इस वक्त कहां से आ रहे हैं?

आपकी हालत देखकर तो ऐसा जान पड़ता है मानो बीसों कोस की मंजिले मारते चले आ रहे हों! " दारोगा साहब ने जवाब दिया, " बेशक यही बात है.

मैं बड़ी दूर से लगातार मारा मारा चला आ रहा हूँ और रास्ते में एक सायत के लिए भी कहीं नहीं रुका.

मगर जरा ठहर जाओ, पहले मैं इन आदमियों के सुपुर्द कुछ काम कर लूं तो तुमसे बात करूं.

" दारोगा साहब ने मनोरमा को उसी जगह रुके रहने का इशारा कर पीछे घूम गये और अपने साथ के दोनों आदमियों तथा मेवालाल से बातें करने लगे जो मनोरमा को मिला था.

मगर उनकी बातचीत बहुत जल्दी ही समाप्त हो गई जिसके बाद दो आदमी तो वह नाला पार कर उसी तरफ को बढ़ गये जिधर भूतनाथ गया था और तीसरा पीछे की तरफ कहीं चला गया, तथा दारोगा साहब पुन:

मनोरमा के पास आ पहुंचे जो उसी जगह पत्थर की एक चट्टान पर बैठकर आंचल से मुंह पर हवा करती हुई सफर की गर्मी दूर करने की कोशिश कर रही थी.

ये भी उसके बगल में ही जमीन पर बैठ गये और भारी कपड़े उतार एक तरफ रखते हुए बोले, " अच्छा सबसे पहले तुम यह बताओ कि इस भयानक जंगल में आधी रात के समय अकेली कैसे आ पहुंची या क्या कर रही हो?

" मनो:

मगर यही सबाल मैं आपसे करना चाहती थी.

आप कैसे यहां आ गये यहां इतने आदमियों का इन्तजाम आपने कैसे और कब कर डाला तथा भूतनाथ यहां आ पहुंचेगा इस बात का पता आपको किस तरह लगा!
दारोगा:

(हंसकर) क्यों, इस बात पर तुम्हें इतना ताज्जुब क्यों हो रहा है?

क्या तुम्हीं ने वे बातें मुझे लिख नहीं भेजी थीं जो बदहवास भूतनाथ के मुंह से तुमने सुनी थीं?

उन बातों को सुनकर उनका असल मतलब निकाल लेना ही न तो कठिन था और न यह जान लेना ही कोई मुश्किल था कि होश में आते ही और जरा भी स्वतंत्रता मिलते ही भूतनाथ सीधा इसी जगह पहुंचेगा और अपनी थाती की जांच करेगा कि वह सही - सलामत है या नहीं! मनोरमा:

ताज्जुब की बात यह है कि आपने अंड - बंड और अनाप - शनाप बातों का मतलब लगा लिया और मैं उन्हें दिन रात सुनती हुई भी उनका कोई मतलब न लगा सकी.

यद्यपि यह तो मैं जान गई थी कि आपकी दवा के वश में होकर भूतनाथ जो कुछ बक रहा है उसके अन्दर कोई गूढ़ तात्पर्य अवश्य है पर वह क्या है इसको जानने का कोई जरिया मेरे पास न था.

दारोगा:

वह सिर्फ इसलिए कि भूतनाथ की जीवनी के एक बड़े ही भयानक भेद को तुम बिल्कुल नहीं जानती पर मैं जानता हूं और इसीलिये मैं उन बातों का पूरा मतलब समझ गया जो

भूतनाथ ने बेहोशी की हालत में कहीं थीं.

मनो:

तब कृपा करके जरा मुझे भी बताइए कि आपने क्या समझा, किस तरह आप यहां आ पहुंचे, तथा अब आपका क्या इरादा है?

दारोगा:

मैं सब कुछ तुमको बताऊंगा मगर तुम जरा एक दफे पिछला सब हाल खुलासा मुझे कह सुनाओ.

यद्यपि तुम्हारी चिट्ठियां बहुत लम्बी होती थीं और उनमें बहुत कुछ हाल रहा करता था फिर भी मुझे शक है कि शायद कोई बात लिखना भूल गई हो और उसको न जानने के कारण मेरी कार्रवाई में जो अब मैं करना चाहता हूं और बिघ्न पड़ जाये.

जहां तक मैं समझता हूं इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि इस समय भूतनाथ ही के पीछे यहां तक आ पहुंची हो?

मनो:

जी हां, यही बात है.

आपने ताकीद की थी कि अभी कई दिनों तक भूतनाथ का साथ किसी तरह भी न छोड़ना, इसलिए लाचार होकर मुझे इस जगह आना पड़ा, मगर यहां तक पहुंचकर मैं एकदम थक गई थी और सोच रही थी कि अगर भूतनाथ का सफर आगे भी जारी रहा तो क्या होगा, तब आपका आदमी मेवालाल यहां मिल गया और मेरी जान में जान आई.

दारोगा:

एक मेवालाल ही क्यों इस वक्त मेरे दस - बारह आदमियों ने इन पहाड़ियों के चारों तरफ अड्डा जमा रक्खा है और इस बात को जानने की फिक्र में हैं कि भूतनाथ किधर जाता है और क्या करता है.

मनो:

ठीक है, मगर यह क्यों?

दारोगा:

सो पीछे पूछना, इस वक्त पहले जो मैंने पूछा वह हाल पूरा - पूरा कह सुनाओ.

मनो:

अपनी तरफ का पूरा - पूरा हाल मैं रोज की चिट्ठियों में लिख ही दिया करती थी फिर भी अगर मेरी जुबान से ही सुनना चाहते हो तो सुन लीजिये.

किस तरह आपकी आज्ञानुसार बल्कि आपकी करनी से मैं भूतनाथ की अर्धांगिनी बनी हुई अरसे से काशी में मौजूद हूं और उधर नागर रामदेई बनी हुई भूतनाथ का दूसरा घर उजाला करे बैठी है इसके बारे में तो आप सब कुछ जानते ही हैं ।

और इस बात को भी आपसे कहने की जरूरत नहीं कि हम दोनों ही भूतनाथ के कब्जे से शिवगढ़ी की ताली निकालने के उद्योग में लगी हुई हैं.

दारोगा:

(कुछ खिजलाकर) अब तुम एक दम क ख से अपना पाठ सुनाना प्रारम्भ मत करो, इधर की बात करो और ताजे समाचार सुनाओ.

मुझे बहुत चिन्ता लगी हुई है कि भूतनाथ किधर गया और क्या कर रहा है.

जिस समय मेरा कोई जासूस उसकी किसी कार्रवाई की खबर देगा वैसे ही मुझे यहां से चले जाना पड़ेगा, अस्तु तुम्हें जल्दी - जल्दी अपनी बात खत्म कर डालनी चाहिए, तुम मुझे उस समय से हाल सुनाओ जब से एक कि नन्हों, मुन्दर और गौहर का गुट तुम लोगों से आकर मिला और तुम्हें रोहतासगढ़ के ऐयारों की मदद मिलने लग गई.

मनो:

(हंसकर) अच्छी बात है तो वहीं से सुनिये, मुन्दर और नन्हों का गुट क्योंकर बना यह तो आपको मालूम ही होगा?

दारोगा:

सिर्फ उतना ही जितना कि तुमने अपनी चिट्ठियों में मुझे लिखा परन्तु मैं खुलासा हाल जानना चाहता हूं, कारण अभी तक मुझे इस बात का पता न लगा कि वे तीनों यकायक कहां गायब हो गई.

मनो ०:

(ताज्जुब से) क्या आपको इस बात का पता नहीं लगा कि तीनों ही लोहगड़ी के साथ - साथ उड़ गईं जिनके साथ भूतनाथ भी उड़ गया.

ऐसा ही पहले मैं समझी थी पर पीछे उतना ही हिस्सा गलत साबित हुआ क्योंकि भूतनाथ जीता जागता मौजूद है.

दारोगा:

(ताज्जुब के साथ) वे तीनों लोहगड़ी के साथ उड़ गई?

नहीं - नहीं, ऐसा नहीं हो सकता.

तुम किस बिना पर यह बात कह रही हो?

मनो:

सुनिए मैं सब खुलासा कहती हूं.

हेलासिंह से भूतनाथ ने कहा था कि अगर उसको पचास हजार रुपया और लोहगड़ी की ताली नहीं दी जाएगी तो वह उसका सब भेद अर्थात् कमेटी से उसका सम्बन्ध और साथ ही यह बात भी कि वह आपकी मदद लेकर अपनी लड़की मुन्दर की शादी गोपालसिंह के साथ करना चाहता है, गोपालसिंह पर प्रकट कर देगा.

हेलासिंह तो यह सुनकर डर गया मगर मुन्दर इस बात पर भूतनाथ की जानी दुश्मन हो गई, उसने अपने बाप से लेकर लोहगड़ी की ताली कहीं छिपा दी और भूतनाथ को तहस - नहस कर देने की कोशिश शुरू की.

सेठ चंचलदास के भतीजे श्रीविलास को अपने ऊपर आशिक कर उसने कामेश्वर और भुवनमोहिनी वाला पुराना हाल जान लिया जिनके बारे में अपने बाप से भी उसे कुछ मालूम हुआ था.

भूतनाथ को वश में करने के लिए कई सबूत भी उसने झटक कर, तब उसे अंगूठा दिखादिया.

उसका इरादा यह था कि इन भेदों का डर दिखला भूतनाथ को काबू में करेगी और उससे यह वादा करा लेगी की वह उसके बाप का भेद प्रकट न करेगा और उसके मायारानी बनने में कोई पेंच न लगायेगा.

दारोगा:

ठीक है, यह हाल मैं हेलासिंह की जुबानी सुन चुका हूं.

मनो:

मुन्दर की मददगार बनकर यह गौहर उससे आ मिली.

आपको शायद न मालूम होगा कि राजा शिवदत्त को आजकल रुपये पैसे की बहुत जरूरत पड़ी हुई है और वह भूतनाथ को काबू में लाकर शिवगढ़ी का खजाना उससे लेना चाहता है जिसके बारे में वह जानता है कि यद्यपि बड़ी महारानी से खजाने की ताली वह इनाम में पा चुका है मगर किसी कारण से खजाना अभी तक ज्यों का त्यों बन्द ही पड़ा रह गया है.

शिवदत्त का विचार यह था कि किसी तरह यदि वह खजाना उसके हाथ लग जाये तो वह मालामाल हो जाये और फिर से अपने दुश्मनों से बदला ले सके और गौहर ने इस काम को पूरा करने का बीड़ा उठाया.

१.

देखिए भूतनाथ चौदहवां भाग, चौथा बयान, २.

देखिए भूतनाथ पन्द्रहवां भाग, आठवां बयान.

इसी सिलसिले में किसी तरह गौहर की भेंट मुन्दर से हो गई दोनों ने एक दूसरे की मदद करना तय किया.

दारोगा:

ठीक है, इन बातों की भी कुछ खबर मेरे जासूस मुझे दे चुके हैं, मनो:

इन दोनों, गौहर और मुन्दर ने मिलकर कामेश्वर और भुवनमोहिनी का भेष धरा और भूतनाथ को परेशान कर अपना काम बनाना चाहा मगर न जाने क्या विघ्न पड़ गया कि इनकी मंशा पूरी न हुई, तब इन लोगों ने नन्हों से मेल किया जिसके बारे में गौहर शिवदत्त से सुन चुकी थी कि उसको भूतनाथ के पुराने हाल - चाल की बहुत कुछ खबर है.

यह नन्हो भी रोहतासगड़ के राजा दिग्विजयसिंह के हुक्म से आजकल भूतनाथ के पीछे पड़ी हुई थी और उसके कब्जे से शिवगढ़ी की ताली लेना चाहती थी क्योंकि दिग्विजयसिंह भी अपने बाप के मर जाने और नया राज पाने से अन्धा हो रहा है और अपनी दौलत और ताकत बढ़ाना चाहता है, तथा उसको भी यह मालूम है कि उसकी बहन जमानिया की बड़ी रानी ने भूतनाथ को शिवगढ़ी की ताली तो दे दी है मगर भूतनाथ उस खजाने को अब तक निकाल नहीं पाया है.

नन्हो ने भूतनाथ के कब्जे से शिवगड़ी की ताली निकाल लाने का उससे बादा किया और इसलिए उन दिनों वह भी यहीं विराज रही थी.

नतीजा यह हुआ कि एक ही मतलब से इकट्ठी इन तीनों मुन्दर, गौहर और नन्हों में दोस्ती हो गई और तीनों ने एक साथ होकर अपना काम सिद्ध करने का विचार किया मगर अपने - अपने दिल का असली भेद सभी अपने अपने भीतर ही छिपाए रहीं.

नन्हों सेठ चंचलदास के लड़के कामेश्वर पर आशिक थी, यह बात तो आप जानते ही होंगे, मगर यह शायद आपको मालूम नहीं होगा कि कामेश्वर मारा नहीं गया बल्कि कुछ समय पहले तक जीता और राजा शिवदत्त की कैद में था.

१.

देखिए भूतनाथ सोलहवां भाग, आठवां बयान.

गौहर ने नन्हों की सहानुभूति और मदद पाने की लालच से उसे यह खबर दी, बल्कि शिवदत्त से सिफारिश करके कामेश्वर को नन्हों के पास भिजवा दिया, मगर बदकिस्मत नन्हों से उसकी भेंट भी न होने पाई थी कि भूतनाथ के आदमी कामेश्वर को पकड़ ले गए थे और उसी के यहां अन्त में वह मारा गया.

इस बात पर नन्हों और भी जल - भुन गई और उसने भूतनाथ को एकदम से तहस - नहस करने के विचार से कामेश्वर और भुवनमोहिनी - संबंधी उसका सब भेद प्रकट कर देने का निश्चय किया और इसी विचार से इस संबंध के बहुत - से सबूत भी इकट्ठे कर डाले.

गौहर और मुन्दर के पास जो कुछ सामान मौजूद था वह तथा नन्हों के पास की चीजें मिलाकर किसी जगह रख के भूतनाथ को दिखाई गईं जिन्हें देखते ही वह इतना घबराया कि पागल - सा हो गया और उन सबूतों के साथ - साथ इन औरतों को भी गारत कर डालने की कोशिश करने लगा.

उसको इसका मौका उस दिन मिला जब लोहगढ़ी में इकट्ठी होकर वे तीनों रोहतासगड़ के ऐयारों के साथ सलाह मशविरा कर रही थीं और आगे किस तरह क्या किया जाए इसको सोच रही थीं.

न जाने कैसे पता पाकर ठीक उसी वक्त भूतनाथ भी वहाँ जा पहुंचा और उसने इन लोगों को बम के गोले से उड़ा देना चाहा, मगर शायद उस लोहगड़ी में कहीं पर बारूद का खजाना भी रहा करता था जिसमें उस बम के गोले से आग लग गई जिसका नतीजा यह हुआ कि वे सब और उनके साथ वह समूची गड़ी ही उड़ गई.

दारोगा:

(ताज्जुब से) मगर इन बातों का पता तुम्हें किस तरह लगा?

मनो:

कुछ तो खास भूतनाथ की ही जुबानी जबकि वह बीमारी की झोंक में पड़ा अनाप - शनाप बक रहा था और कुछ एक खास बजह से जिसका जिक्र मैं अभी आपसे करूंगी.

पहले आप मेरा पूरा हाल हो जाने दीजिए, दारोगा:

अच्छा कहो, तब?

१.

देखिए भूतनाथ सोलहवां भाग, आठवां बयान.

मनो:

लोहगड़ी के साथ नन्हों, गौहर, मुन्दर और बाकी के सब आदमी तो उड़ गए मगर भूतनाथ की जान एक तालाब में कूद पड़ने के कारण बच गई और वह वहां से जीता - जागता निकल भागा.

बाहर होकर उसने कोई तरकीब न - जाने कैसे की कि राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे से रिक्तगन्थ निकाल लिया.

उसको लेकर अपने घर लौटा तो नागर बीबी ने अपना काम साधा और भूतनाथ को जख्मी कर वह किताब उससे ले ली.

बहुत ही निराश हो वह वहां से भागा और रास्ते में पीछा करते हुए आने वाले राजा वीरेन्द्रसिंह के आदमियों से लड़ता भिड़ता और छिपता - छिपाता रात के समय किसी तरह मेरे घर पहुंचा.

मैंने उसकी हालत देख मौका अच्छा जाना और कुछ दिन पहले जो दवा आपने वैवजी से बनवाकर मेरे पास भेजी थी और जिसके बारे में कहलाया था कि अगर किसी तरह खून के साथ मिल जाए तो आदमी के दिल और दिमाग को एकदम डीला कर देती है जिससे वह अपने पेट की तमाम बातें उगल देता है, कुछ छिपाकर नहीं रख सकता, भूतनाथ के जख्मों पर लेप कर दी.

दवा ने अपना असर किया और भूतनाथ उसकी झोंक में कहनी - अनकहनी हजारों तरह की बातें बक गया जिससे बहुत कुछ मतलब मैंने निकाल लिया और जिन बातों का मतलब न निकाल सकी उनका हाल आपको लिख भेजा.

दवा का असर कम होने पर भूतनाथ को होश हुआ और वह यकायक कहीं जाने को व्याकुल हो उठा.

मैंने एक आदमी आपके पास रवाना किया और खुद उसका पीछा करती हुई यहां तक पहुँची, पर यह मुझे मालूम नहीं कि वह कम्बख्त यहां किस इरादे से आया है या क्या करना चाहता है! मगर जान पड़ता है, आपको इस बारे में कुछ मालूम है.

दारोगा:

हां, इस बारे में मैं तुम्हें बहुत कुछ बता सकता हूं.

तुमने जो यह बात मुझे लिख भेजी थी कि भूतनाथ अपनी बेहोशी की हालत में कई दफे बक चुका है .

.

.

सोने का उल्लू.

.

जो लुटिया पहाड़ी में है .

.

.

उसी फिकरे से मैं उसका इरादा बहुत कुछ समझ गया.

मनो:

क्या इस फिकरे का कोई खास मतलब है?

दारोगा:

जरूर! बात यह है कि महारानी ने जो ताली भूतनाथ को दी वह सोने से बने एक जड़ाऊ उल्लू के अन्दर छिपाई हुई थी.

देखने में तो वह खिलौना सा जान पड़ता है मगर वास्तव में शिवगढ़ी के खजाने की चाभी उसके पेट के अन्दर छिपी हुई है और लुटिया पहाड़ी वही पहाड़ी है जो वह देखो वहां दिखाई पड़ रही है और उसकी शक्ल लुटिया की तरह मालूम हो रही है.

शिवगढ़ी उसी पहाड़ी के ऊपर है.

बस फिकरे से ही मैं समझ गया कि भूतनाथ ने वह ताली कहीं आस - पास में ही छिपाई हुई है और इस बात को समझ कर सोच लेना कोई मुश्किल न था कि जब वह

अपनी बीमारी से उठेगा तो जरूर इस बात की जांच करना चाहेगा कि वह किमती चीज जहां उसने छिपाई थी वहां पर है या नहीं.

यह बात सोच तुम्हारी चिट्ठी में वह मजमून पढ़ने के साथ ही मैंने अपने आदमी इस तरफ रवाना कर दिए और उन्हें ताकीद कर दी कि अगर भूतनाथ इस तरफ आता दिखाई पड़े तो उसका पीछा करें और पता लगावें कि वह किधर जाता या क्या करता है, और देखता हूँ, मेरा यह ख्याल ठीक भी निकला! मनो:

बेशक, होश में आते ही भूतनाथ एक मिनट भी न रुका और अपनी थाती की सम्भाल करने इधर को चल पड़ा.

मैं तो समझती हूं कि आपका यह विचार है कि छिपकर देख लें कि भूतनाथ ने वह सोने का उल्लू कहां छिपाया है और जब वह चला जाए तो उसे निकाल लें?

दारोगा:

बेशक यही बात है.

(रुक कर) देखो कोई आता है.

मनो:

आप ही का कोई आदमी होगा! दारोगा:

मालूम तो ऐसा ही होता है.

तेजी से आता हुआ एक आदमी उन्हीं दोनों की तरफ बढ़ रहा था जो बात - की - बात में उनके पास आ पहुंचा और तब दारोगा साहब को सलाम कर बोला, " भूतनाथ को अभी - अभी हम लोगों ने उस पहाड़ी पर एक कुएं के अन्दर कूदते देखा है.

मगर न जाने वह कुआं कैसा है कि कूदने के बाद से ही उसके अन्दर से अजीब तरह की आवाजें निकल रही हैं ।

"

दारोगा यह सुनते ही चौंककर उठ खड़ा हुआ और बोला, " ओह, उस कुएं को तो मैं जानता हूं.

क्या भूतनाथ उसके अन्दर गया है?

अच्छा चलो मैं चलता हूं !! " मनोरमा को वहीं रहने को कह दारोगा तेजी के साथ अपने आदमी के पीछे चला गया.

तीसरा व्यान।

रात आधी से ऊपर जा चुकी है.

एक लम्बे - चौड़े दालान में प्रभाकरसिंह सिर्फ अपना दुपट्टा फर्श पर बिछाये सो रहे हैं.

हल्के कर्राटे यह भी बता रहे हैं कि इस समय वे गहरी नींद में हैं.

अंधेरा इस बात को अच्छी तरह जानने नहीं देता कि उस स्थान की लम्बाई - चौड़ाई या सजावट किस प्रकार की है तो भी इसमें शक नहीं कि यह दालान किसी बाग में बना हुआ है और तीन तरफ से खुला होने पर भी कि इसके चौथी तरफ कोई बड़ी इमारत है जिसके बन्द दरवाजों की आभा दिखाई पड़ रही है.

यह क्या, हमारी आंखें हमें धोखा दे रही हैं या सचमुच प्रभाकरसिंह के सिरहाने वाला एक दरवाजा धीरे - धीरे खुल रहा है! नहीं - नहीं, यद्यपि पूरा अंधेरा है फिर भी कोई शक नहीं कि वह दरवाजा कोई खोल रहा है, वह देखिए किसी ने उसके अन्दर से सिर निकालकर बाहर की तरफ देखा, जरा पास हो जाएं और देखें कि क्या माभला है.

काले लबादे में अपने समूचे बदन को छिपाए कोई आदमी उस दरवाजे के बाहर निकला और अच्छी तरह की आहट लेने के बाद प्रभाकरसिंह की तरफ बड़ा, उनके सिरहाने कुछ देर खड़ा रहने के बाद उसको विश्वास हो गया कि वे गहरी नींद में है तो उसने पीछे की तरफ देखा और कोई इशारा किया.

एक आदमी और दरवाजे के बाहर आया जो इस आदमी ही की तरह से लबादे के अन्दर अपना समूचा बदन ढांके हुए था.

दोनों ने ही धीरे - धीरे कुछ बातें कीं और तब एक ने जरा आगे बढ़ और झुककर कोई चीज प्रभाकरसिंह की नाक के साथ लगाई, कुछ बेचैनी के साथ प्रभाकरसिंह ने गर्दन

घुमाई और उनका एक हाथ हिला मगर फिर अपने स्थान पर गिर गया.

गहरी सांसों ने बता दिया कि वे बेहोश हो गए.

ज्यादा इतमीनान के लिये और भी कुछ देर तक वह चीज सुंघाने के बाद उस आदमी ने प्रभाकरसिंह की नब्ज़ देखी और तब अपने साथी से कहा, " बेहोश हो गए.

" वह बोला, ' तो बस ठीक है, उठा ले चलो, देखो, वह सामान भी काबू में कर लो, कोई चीज छूटने न पावे.

एक आदमी सिरहाने हुआ, दूसरा पैताने, दोनों ने मिलकर उसको उठा लिया और उस दरवाजे के भीतर चले गये.

इनके जाते ही दरवाजा पुन:

पहले की तरह बन्द हो गया, किसी तरह के धमाके की आवाज सुन प्रभाकरसिंह की नींद टूटी और वे चौंक कर उठ बैठे.

उन्होंने देखा कि रात की स्याही करीब - करीब समाप्त हो चुकी और सामने का आसमान सफेदी पकड़ रहा है.

किस आहट पर उनकी नींद टूटी वे इस पर गौर करने लगे मगर कोई बात समझ में न आई, हां चारों तरफ देखते ही इतना वे जान गए कि यह वह स्थान नहीं है जहां कल रात सोये थे, बल्कि दूसरी ही जगह है.

यह समझ में आते ही वे चौंक पड़े.

उन्होंने फिर गौर के साथ अपने चारों तरफ देखा और आप ही आप कहने लगे, “ हैं, यह कौन - सी जगह है! मैं रात को तो उस बाग वाले दालान में सोया था मगर यह तो दूसरा ही स्थान है.

यहां सब तरफ इमारतें ही नजर आ रही हैं और किसी बाग का कहीं नाम निशान तक नहीं यह कैसे हो गया?

क्या मैं किसी भ्रम में पड़ गया हूँ?

नहीं - नहीं, यह भ्रम नहीं हो सकता! यह जरूर कोई दूसरी ही जगह हैं लेकिन तब मैं यहां किस तरह पहुंचा?

" चौंककर प्रभाकरसिंह ने अपने सामानों की जांच की मगर सब कुछ ठीक पाया और कुछ स्वस्थ हुए, तब उठ खड़े हुए और चारों तरफ घूम - घूमकर गौर करने लगे.

थोड़ी ही देर में छानबीन ने उन्हें बता दिया कि यह न - केवल कोई दूसरी जगह ही बल्कि ऐसी है जहां आज तक वे कभी आए ही न थे.

रात जहां वे सोए थे वह एक दालान था जिसके सामने की तरफ मणि - भवन की सुन्दर इमारत नजर आती थी पर इस समय जहां वे थे वह स्थान चारों तरफ ऊंची - ऊंची इमारतों से घिरा हुआ एक आंगन था जिसके एक हवादार कमरे के बाहर वाले बरामदे में वे इस समय खड़े थे.

यह तो हो ही नहीं सकता था कि सोए के सोए ही किसी तिलिस्मी कार्रवाई से वे कल वाली जगह से इस जगह तक पहुंच गए हों.

जरूर उस जगह से कोई इस जगह उन्हें लाया और किसी मतलब से लाया, पर वह लाने वाला कौन हो सकता है और किस तरह उन्हें लाया, यही विचार और संदेह की बात थी.

प्रभाकरसिंह ने अपनी हालत पर गौर किया तो बदन में थोड़ा दर्द और सिर में हल्के चक्कर मालूम पड़े जिन्होंने बता दिया कि जरूर वे रात को बेहोश करके यहां लाये गए लेकिन अगर ऐसा ही है तो यह कार्रवाई किसकी हो सकती है?

जरूर किसी दुश्मन की ही होगी, मगर इस जगह इस भयानक तिलिस्म के अन्दर कोई भी, वह उनका दोस्त हो या दुश्मन, कैसे उन तक पहुंच ही सकता है! इसी तरह उधेड़ - बुन में प्रभाकरसिंह पड़े हुए थे तथा उनकी चंचल निगाहें आमने - सामने चारों तरफ किसी आदमी या निशानी की खोज में दौड़ रही थीं और यही सबब था कि उन्होंने अपने सामने की इमारत के ऊपर बाली मंजिल की एक खिड़की को आहिस्ता - आहिस्ता खुलते हुए देख लिया और अपनी निगाहें उसी तरफ जमा दी.

उनके देखते - देखते खिड़की के दोनों पल्ले पूरी तरह खुल गए और कोई कमसिन औरत उसके अन्दर खड़ी दिखाई पड़ी.

यद्यपि फासला बहुत था और पूरी तरह से चांदना भी नहीं हुआ था तो भी कद, आकृति और पोशाक से प्रभाकरसिंह को मालती का गुमान हुआ और वे बरामदे के नीचे उतर उसी तरफ को बढ़े.

चौखूटे पत्थरों से पटे बीच वाले आंगन को पार कर प्रभाकरसिंह बहुत जल्द उस खिड़की के नीचे जा पहुंचे और तब वहां खड़े होकर ऊपर की तरफ देखने लगे इसी बीच में उस औरत की निगाह भी उन पर पड़ चुकी थी और वह खिड़की से कुछ आगे को झुक गौर से नीचे की तरफ देख रही थी.

यही सबब था कि एक ने दूसरे को तुरन्त पहचान लिया और प्रभाकरसिंह ने खुशी भरी आवाज में पुकार कर कहा, “ मालती, तू यहां कहां?

मैं कल तमाम दिन तुमको ढूंढता हुआ परेशान हो गया! "

जबाब में मालती ने (क्योंकि ऊपर वाली औरत मालती ही थी) कहा, " मैं क्या बताऊं कि कैसे आ पहुंची! बस इतना ही कह सकती हूँ कि मेरी बदकिस्मती मुझे इस जगह ले आई जहां से जीते - जीते - जी निकलने की कोई उम्मीद नहीं.

खैर आखिरी बार एक बार आपका दर्शन कर लेने की थी सो ईश्वर ने पूरी कर दी, अब जो होना हो सो हो.

मालती की यह विचित्र बात जो उसने बड़ी उदासी के स्वर में कही थी सुन ताज्जुब से प्रभाकरसिंह बोले, " तुम यह क्या कहरही हो मेरी समझ में कुछ न आया.

तुम्हारी बातों से निराशा का भाव क्यों टपक रहा है और तुम्हारी सूरत से बदहवासी और परेशानी क्यों जाहिर हो रही है?

इन कुछ ही पहरों के भीतर कौन - सी ऐसी नई बात हो गई जिसने तुमको परेशान और लाचार कर दिया है?

" मालती:

(उसी लाचारी - भरे स्वर से) अब आप पूछते ही हैं तो सुन लीजिए कि यह मकान जिसमें आप मुझको देख रहे हैं एक कैद खाना है जिसमें वे लोग बन्द किए जाते हैं जो तिलिस्म तोड़ने की कोशिश करते हुए किसी तरह की भारी भूल कर बैठते हैं.

यहाँ से लोग किसी तरह जीते - जी निकल नहीं सकते बल्कि तरह - तरह की तकलीफें उठाते हुए इस स्थान में उन्हें अपनी जान दे देनी पड़ी है.

प्रभा:

यह तो तुमने ऐसे ताज्जुब की बात सुनाई जिस पर जल्दी विश्वास होना मुश्किल है! खैर तो कौन - सी ऐसी भूल तुमसे बन आई जिसने तुम्हें इस स्थान में जा पहुँचाया?

मालती:

आपसे अलग होकर मैं एक बड़ी ही गहरे चक्कर में पड़ गई और उसी सिलसिले में कुछ ऐसी नादानी कर बैठी जिससे यह नौबत आ पहुंची.

प्रभा:

(कुछ सोचकर) अच्छा, उसका हाल मैं पीछे सुनूंगा पहले तुम यह बताओ कि इस मकान के अन्दर आने की कौन सी राह है ताकि मैं तुम्हारे पास पहुँच सकूं.

मालती:

(अफसोस की मुद्रा से) मुश्किल तो यही है कि यहां से बाहर निकल जाना तो एकदम नामुमकिन है ही, अपनी मर्जी से किसी का इस मकान के अन्दर आना भी बहुत कठिन है.

प्रभा:

(ताज्जुब से) आखिर तुम किस रास्ते से इसके अन्दर गई थीं! मालती:

मैं अपनी मर्जी से यहाँ नहीं आई बल्कि लाचार और मजबूर करके लाई गई.

इस जगह के कुछ पहरेदार हैं, वे ही इसके अन्दर आ - जा या किसी को निकाल ले जा या ले जा सकते हैं.

उनके सिवाय और किसी का स्वतन्त्र रूप से यहां आना या यहां से जाना असम्भव है.

प्रभा:

तुम्हारी बातें सुन मेरा ताज्जुब बढ़ता जा रहा है और मेरी समझ में नहीं आता कि तुम किस ढंग की बात कर रही हो! आखिर किसी राह ही से तो तुम इस मकान के अन्दर गई या ले जाई गई होगी.

मालती:

जहां आप खड़े हैं उसके सामने की तरफ दीवार में एक मूरत बनी हुई है जिसके साथ कोई तरकीब करने से इस मकान के अन्दर आने का रास्ता खुलता है.

मैं नहीं जान सकी कि वह तरक़ीब क्या है पर इतना जानती हूं कि कोई गैर आदमी न तो उस रास्ते को खोल सकता है न इस दीवार के पास ही आ सकता है.

अगर किसी तरह दीवार के पास आ भी जाए तो दीवार को हाथ लगाते ही बेहोश हो जायेगा और तब ताज्जुब नहीं कि उसकी भी वही गति हो जो मेरी हुई है! है हैं! यह क्या करते हैं! आप इस तरह क्यों बढ़ रहे हैं?

नहीं - नहीं, हटे रहिये.

आगे मत आइये, आगे मत.

" मालती रोकती ही रही मगर प्रभाकर सिंह किसी तरह न माने और अपनी जगह से कुछ कदम आगे बढ़कर गौर से उसके सामने की तरफ देखने लगे.

यह मकान जिसके सामने बे खड़े थे कुछ बिचित्र ढंग का बना हुआ था.

इसकी निचली मंजिल में कहीं कोई दरवाजा - खिड़की यहां तक कि आला या मोखा तक भी न था और दीवार सब तरफ से एकदम साफ और चिकनी बनी हुई थी पर ऊपर की तरफ जो तिमंजिली इमारत बनी हुई थी उसमें जगह - ब - जगह दरवाजे, खिड़कियां और रोशनदान इत्यादि बहुतायत के साथ दिखाई पड़ रहे थे.

उन्हीं में से तीसरे मंजिल में बनी एक खिड़की की राह मालती उनसे बातें कर रही थी.

नीचे की तरफ की लगभग दो पुरसा दीवार चिकने लाल और काले पत्थरों की बनी हुई थी जिसमें से एक चौखूटा पत्थर अपनी सतह से कुछ उठा हुआ था और उस जगह संगमरमर की बहुत ही छोटी - सी मूरत किसी साधु की बनी हुई दिखाई पड़ रही थी.

शायद इसी सूरत से मालती का अभिप्राय हो और यही मकान के अन्दर जाने वाले दरवाजे को खोलने का भेद छिपाये हो, यही सोचकर प्रभाकर सिंह उसकी तरफ बढ़े थे मगर अफसोस, अपनी जगह से तीन - चार कदम से ज्यादा आगे बढ़ न सकें और दीवार से तीन - चार हाथ के फासले पर ही होंगे कि वह पत्थर का टुकड़ा जिस पर इनका पैर था अपनी जगह से पल्ले की तरह इस जोर और झटके के साथ उठा कि वे किसी तरह सम्भाल न सके और पछाड़ खाकर पीछे की तरफ जा गिरे.

उनके उठते ही वह पत्थर का टुकड़ा पुनः अपनी जगह पर ज्यों - का - त्यों बैठ गया.

प्रभाकरसिंह उठकर खड़े हुए और ताज्जुब तथा क्रोध की निगाह से अपने चारों तरफ देखकर इस बात पर गौर करने लगे कि कैसे इस तिलिस्म से बचकर मालती को छुड़ाया जा सकता है.

इसी समय मालती ने ऊपर से पुन:

आवाज दी, " मैंने आपको मना किया फिर भी आपने वही किया और तकलीफ उठाई! इस इमारत के चारों तरफ लगे हुए सभी पत्थरों में यही करामात है और किसी तरफ से भी चलकर आप इस मकान की दीवार के पास पहुंच नहीं सकते.

इसकी असल तरकीब केवल उन्हीं कुछ आदमियों को मालूम है जिनको मैं यहाँ का पहरेदार समझती और कहती हूं.

(चौंककर और आवाज को कुछ तेज करके) देखिए - देखिए, वह उनमें से एक आदमी आ रहा है! " प्रभाकर सिंह ने चौंककर पीछे की तरफ देखा और सचमुच ही पीछे से एक दालान से उतरकर उन्हीं की तरफ आते हुए एक विचित्र आदमी पर उनकी निगाह पड़ी.

इस आदमी की सूरत - शक्ल, चाल - डाल और नक्शा कुछ ऐसा था कि वे ताज्जुब के साथ उसकी तरफ देखने लगे.

लम्बे कद का एक दुबला - पतला आदमी इनकी तरफ चला आ रहा था जिसका समूचा बदन सफेद पोशाक से ढंका हुआ था और जिसके चेहरे और हाथ के उस हिस्से पर भी जो खुला हुआ था सफेद चूने के ढंग की कोई चीज मली होने के कारण सूरत बड़ी अजीब - सी हो रही थी.

उसके हाथ में चांदी की बनी हुई एक नुकीली बरछी थी जिसे चलते समय वह एक विचित्र डंग से अपने दाएं - बाएं, ऊपर और नीचे घुमाता आ रहा था मानो सामने की हवा में कोई मनचाहा नक्शा बनाता आ रहा हो.

बात - की - बात में वह आदमी पास आ गया.

उस समय प्रभाकरसिंह को यह देख और भी आश्चर्य हुआ कि जिसको वे सफेद रंग या चूना समझ रहे थे उस तरह की कोई चीज उसके चेहरे पर मली हुई न थी बल्कि उसके चमड़े का रंग ही एकदम सफेद कागज की तरह का था.

चेहरे पर की छोटी मूछे बल्कि बरौनी और पलक आदि के बाल सब भी बिल्कुल सफेद रंग के थे जिनके बीच में उसकी आँखों की काली पुतली एक अजीब ढंग से चमक रही थी जैसी अभी तक प्रभाकरसिंह ने किसी जीव की देखी न थी.

प्रभाकरसिंह को गुमान था, पास पहुंचने पर वह आदमी उनसे कुछ बोले या रोक - टोक करेगा मगर उसने इनकी तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा, मानो उसे इनके अस्तित्व का भी पता न हो, इस ढंग पर वह बगल से निकल गया और उस मकान की दीवार की तरफ बढ़ा.

इस कौतूहल के साथ कि देखें उसकी गति क्या होती है, प्रभाकरसिंह उसको देखने लगे लेकिन इन्होंने अपने दिल में यह सोचा हो कि जो गति उनकी हुई थी वही शायद उसकी भी होगी तो ऐसा कुछ भी न हुआ.

उसने अपनी लम्बी बरछी से एक बार खन्न से जमीन पर एक ठोकर मारी और तब बेधड़क आगे बढ़ता हुआ दीवार की उस मूरत के पास तक चला गया.

प्रभाकरसिंह के देखते - देखते अपनी बरछी की नोक उस मूरत की नाभी में गड़ाकर किसी खास ढंग से घुमाया जिसके साथ ही उसके पैरों के पास के दो - तीन पत्थर इधर - उधर खिसक गये और नीचे उतरने की सीढ़ियां नज़र आने लगी.

प्रभाकरसिंह ने देखा कि बिना उनकी तरफ एक भी निगाह डाले वह उन सीढ़ियों पर उतरने का उपकम कर रहा है, अस्तु वे घूमे और एक कदम उसकी तरफ बढ़कर बोले, " ठहरों, पहले मेरी बात सुनकर उसका जबाब दे लो तब मकान के अन्दर जाओ !! "

अब उस आदमी ने पहले - पहल निगाह उठाकर प्रभाकरसिंह की तरफ देखा बल्कि कुछ देर तक इनके चेहरे पर नजर गड़ाए रहा और तब बोला, ' क्या चाहते हो?

' उसकी आवाज एक अजीब कर्कश ढंग की थी जो बड़ी कर्णकटु मालूम होती थी और जिसे सुनकर प्रभाकरसिंह यकायक यह निश्चय न कर पाए कि यह किसी आदमी की आवाज है या कल - पुर्जे के पुतले में किसी तरकीब से आवाज भर दी गई है फिर उन्होंने जवाब दिया, “ मैं इस मकान के अंदर जाना चाहता हूँ,

सिर हिलाकर वह आदमी बोला, " मुझे अभी तुम्हें गिरफ्तार करने का कोई हुक्म नहीं मिला है इसलिए मैं तुम्हें इसके अन्दर नहीं ले जा सकता.

" यह जवाब देते ही वह मुड़ा और अन्दर जाने के लिए उसने सीढ़ी पर एक पैर रखा मगर प्रभाकरसिंह ने पुन:

उसे रोका और कहा, " अगर तुम बिना मेरी बातें पूरी सुनें और उनका ठीक - ठीक जबाब दिये यहां से जाने की कोशिश करोगे तो मैं तुम्हें जबरदस्ती रोकुंगा और जिस तरह भी हो सकेगा अपनी बातों का जबाब लूंगा.

" उस विचित्र आदमी ने यह सुन पुन:

एक अजीव निगाह से प्रभाकरसिंह को देखा और तब कहा, " मुझे इस वक्त फुर्सत नहीं वह मेरा साथी जो आ रहा है तुमसे बातें करेगा.

" कहते हुए उसने एक तरफ हाथ से इशारा किया और जैसे ही प्रभाकरसिंह ने घूमकर उस तरफ देखा, वह सीढ़ियां उतरकर कहीं गायब हो गया.

उसके जाते ही सीड़ी वाला पत्थर भी पुन:

अपनी जगह पर ज्यों - का - त्यों बैठ गया मगर प्रभाकरसिंह को इन बातों की खबर न हुई, वे उस दूसरी शक्ल की तरफ देखने में इतना डूबे हुए थे (जिसकी तरफ उस आदमी ने बताया था) कि इधर की बात ही एकदम भूल गये थे, यह नवीन शक्ल पहले वाली से भी कुछ विचित्र थी.

वह आदमी तो सफेद रंग का और सफेद ही पोशाक पहने हुए था मगर यह एकदम पीले रंग का था.

इसका पहनावा यद्यपि ठीक वैसा ही था जैसा उस पहले आदमी का था मगर रंग इसके कपड़ों का एकदम पीला था और इसकी सूरत और बदन का उतना हिस्सा जो दिखाई पड़ रहा था वह भी एक दम पीला था.

पीले चेहरे और पीले ही रंग के बालों को देखकर प्रभाकरसिंह सोचने लगे, " या भगवान्, यह कौन - सी सृष्छि दिखाई पड़ रही है कि जिस आदमी को देखो वही एक नये रंग का दिखाई पड़ता है.

" प्रभाकरसिंह के देखते - देखते धीरे - धीरे चलता हुआ यह आदमी उनके पास जा पहुंचा मगर जिस समय वह पहले आदमी की तरह उनके पास से होकर जाने लगा तो उन्होंने टोका और कहा, “ ठहरों और आगे बढ़ने के पहले मेरी बातों का जबाब देते जाओ.

" अभी तक इसने भी सिर उठाकर प्रभाकरसिंह की तरफ देखा न था मगर अब चौंककर इनकी तरफ गर्दन घुमाई और कुछ देर बाद उसी तरह की कर्कश आवाज में कहा, “ क्या है?

" प्रभाकर:

तुम लोग कौन हो और तुम्हारा मालिक कौन है?

पुतला:

हम लोग तिलिस्म के नौकर है.

प्रभाकर:

क्या काम तुम लोगों के सुपुर्द है?

पुतला:

तिलिस्म के कैदियों की हिफाजत प्रभाकर:

तुम्हारे कैदी कौन और कहाँ हैं?

पुतला:

(हाथ से बताकर) इसी मकान में बन्द हैं.

प्रभाकर:

मेरा भी एक साथी इसमें बन्द हो गया, है मैं उससे मिलना और उसे छुड़ाना चाहता हूँ,
पुतला:

(सिर हिलाकर) सो किसी तरह नहीं हो सकता, सिबाय कैदी के और कोई इस मकान के अन्दर नहीं जा सकता और न कोई कैदी इसके बाहर ही आ सकता है.

प्रभाकर:

(कुछ सोचकर) तब तुम अपने साथ मुझे इस मकान के भीतर ले चलो.

पुतला:

सो भी नहीं हो सकता, तुमको कैद करने का हुक्म हम लोगों को नहीं मिला है और हम लोग सिबाय कैदी के और किसी को इस मकान के अन्दर जाने नहीं दे सकते.

प्रभाकरसिंह अब झुंझला और बिगड़कर बोले, " तुम्हारी इजाजत की मुझे परवाह नहीं है, जैसे होगा मैं इस मकान के अन्दर जाऊंगा, अगर तुम मुझे रोक सकते हो तो रोको! " प्रभाकरसिंह की बात का कोई जवाब न दे बल्कि लापरवाही की मुद्रा से एक बार अपना कन्धा हिलाकर वह आदमी आगे जैसा कि उस पहले पुतले ने किया था ठीक उसी तरह और उसी स्थान पर इसने भी ठोकर मारी और तब आगे बड़कर उस मूर्ति की नाभी में नोंक धंसाकर रास्ता पैदा किया , पहले ही की तरह कई पत्थर हटकर अगल - बगल हो गये और सीढ़ियां निकल आईं जिन पर पैर रखता हुआ वह आदमी नीचे उतरने लगा, बिना कुछ सोचे - विचारे प्रभाकरसिंह ने भी कदम आगे बढ़ाया और सीड़ी के पास पहुँचा चाहते ही थे कि उसी पुतले के पीछे - पीछे सीढ़ियों के नीचे उतर जायें कि यकायक कहीं से आवाज आई, " खबरदार! ऐसा कभी न करना, नहीं तो उम्र - भर पछताओगे! "

चिहुंककर प्रभाकरसिंह रुक गए.

पीछे को सिर घुमाकर देखा तो पुनः एक अनूठी शक्ल खड़ी नजर आई, जिस तरह के दो सफेद और पीले पुतले उनके सामने से गुजर चुके थे उसी तरह की एक तीसरी शक्ल पास खड़ी दिखाई दी, फर्क सिर्फ इतना ही था कि यह एकदम लाल रंग की थी.

इसका कपड़ा - लत्ता, सूरत - बाल आदि सभी गहरे लाल रंग में डुबाये हुए - से थे जिसे देख प्रभाकरसिंह घबराकर बोल उठे, “ क्या यहाँ की दुनिया रंगीन आदमियों से ही बसी हुई है! " इनकी बात का कोई ख्याल न कर वह पुतला बोला, " किस हिम्मत पर तुम इस मकान के अन्दर जाने की कोशिश कर रहे हो?

क्या तुम नहीं जानते कि एक बार इसके अन्दर चले जाने पर फिर जीते - जी बाहर होने की कोई उम्मीद नहीं रह जाती?

क्या तुम्हें अपनी जिन्दगी भारी पड़ी है जो इस तिलिस्मी कैदखाने में अपनी मर्जी से जा रहे हो?

" !! प्रभाकरसिंह ने कुछ झुंझलाए हुए स्वर में जबाब दिया, " अगर तुम मेरी कुछ मदद कर सकते हो तो करो वरना चुप रहो और मेरे काम में बाधा न डालो, अपने स्वाभाविक कर्कश स्वर में उस पुतले ने कहा, " कम - से - कम इतना तो बतला दो कि तुम्हारा इरादा क्या है?

" प्रभा:

मेरा इरादा इस मकान के अन्दर जाने और अपने एक साथी को छुड़ाने का है जो इसमें बन्द है.

पुतला:

तब शायद तुमको यह खबर नहीं है कि इस मकान के अन्दर कोई चला भले जाये मगर वापस लौट नहीं सकता?

प्रभा:

हां, कहा तो ऐसा ही जाता है मगर मैं इस बात की सच्चाई की जांच करना चाहता हूं, पुतला:

और अगर यह बात सच निकली तो जन्म - भर के लिए बरबाद होने को भी तैयार हो?

प्रभा:

बेशक, मगर मुझे विश्वास नहीं कि ऐसा होगा.

पुतला:

क्या तुम्हें तिलिस्मी ताकत पर विश्वास नहीं है?

प्रभा:

बेशक है, मगर तुम लोगों पर नहीं.

पुतला:

(हंसकर) तुम समझते हो कि हम लोग तुमसे झूठ बोल रहे हैं?

प्रभा:

हाँ, ऐसा ही कुछ, कम - से - कम अब तक का मेरा अनुमान तो यही कहता है.

पुतला:

मगर तुम विश्वास रखो कि मैं बहुत ठीक कह रहा हूं और मेरी बात न मानकर तुम इस मकान के अन्दर चले जाओगे तो जन्म - भर के लिए बन्धन में पड़ जाओगे, प्रभा:

खैर इन बातों से कोई मतलब नहीं, अगर मेरी कुछ मदद कर सकते हो तो करो वरना मुझे अपनी इच्छा पूरी करने दो.

पुतला:

और अगर मैं तुम्हें ऐसा करने से रोकूं तो! प्रभा:

खुशी से रोक सकते हो! तुम्हारे दोनों पहले साथी तो केबल बकवास करके ही चले गए, तुम ही कुछ नई बात करके दिखाओ! पुतला:

उन दोनों को तुम्हारे बारे में कोई हुक्म नहीं मिला था मगर मुझे हुक्म मिला है कि तुम्हें इस मकान के अन्दर जाने से रोकूं और अगर न मानो तो कैद कर लूं! प्रभा:

यह हुक्म तुम्हें किसने दिया?

पुतला:

हमारे मालिक ने.

प्रभा तुम्हारा मालिक कौन है?

पुतला.

इस तिलिस्म की रानी! क्या यहां कोई रानी भी है !! पुतला:

जरूर है.

प्रभा:

वह कहां रहती है?

क्या तुम मुझे उसके पास ले चल सकते हो?

पुतला:

तुम्हारी इत्तिला कर सकता हूं?

अगर इजाजत मिले तो ले भी जा सकता हूं, प्रभा:

तो मैं इसी जगह बैठता हूं, तुम जाओ और अपने मालिक को खबर करो.

मैं बहुत जल्दी आया.

कहता हुआ वह पुतला पीछे हटकर एक तरफ को चला गया और प्रभाकरसिंह उसी जगह एक पत्थर पर बैठकर सोचने लगे- " यह क्या माभला है?

यह कौन - सा स्थान है?

वे आदमी या पुतले कौन हैं?

यह कैदखाना क्या बला है और मालती इसमें क्योंकर फंस गई?

यह रानी कौन - सी पैदा हो गई है?

इस जगह या इन बातों का कोई जिक्र तिलिस्मी किताब में क्यों नहीं है?

यह भी मालूम नहीं होता कि मैं यहां आया किस तरह इसका भी कुछ पता नहीं लगता कि इस मकान के अन्दर जाने या इसके बाहर निकलने की ठीक तरकीब क्या होगी.

(ऊपर देखकर) मालती अब दिखाई नहीं पड़ती और वह खिड़की भी बन्द नजर आती है, नहीं तो उसी से पूछता कि वह इस जगह किस तरह से आई.

उसकी बातों से तो यही .

.

.

यकायक प्रभाकरसिंह के कानों में किसी औरत के चीखने की आवाज पड़ी जो उसी मकान के अन्दर से आती हुई जान पड़ती थी.

आवाज पहचानी हुई सी जान पड़ी और प्रभाकरसिंह ताज्जुब के साथ इधर - उधर देख ही रहे थे कि ऊपर की मंजिल वाली वही खिड़की खुली और एक औरत की डरी हुई आवाज उसके अन्दर से आई- " बचाइए, बचाइए, इन दुष्ठों से मेरी जान बचाइए! " प्रभाकरसिंह चौंककर खड़े हो गए और उसी समय उन्होंने देखा कि मालती उस खिड़की में से झांक ही नहीं बल्कि उसी राह नीचे कूदने की कोशिश कर रही है मगर दो मजबूत हाथ उसे रोककर भीतर की तरफ खींच रहे हैं.

मालती ने एक बार नीचे उनकी तरफ झांक करुणा - भरे स्वर से कहा - ' इन दुष्टों से मुझे बचाइए! " पर इसके पहले कि प्रभाकर सिंह उससे कुछ पूछ सकें या वही इनसे कुछ और कह सके, उन हाथों ने आगे बढ़कर उसको भीतर खींच लिया और वह खिड़की भी जोर से बन्द हो गई, प्रभाकरसिंह ने दुःख के साथ हाथ भला और बोले, " ओफ क्या वेबसी है! मालती बेचारी पर न - जाने क्या बीत रही है ।

खैर अब चाहे जो भी हो एक बार तो मैं .

.

.

" उन्होंने अपना तिलिस्मी डंडा सम्भाला और आगे बढ़ने को कदम उठाया मगर उसी समय बगल से आवाज आई, " चलिए, रानी साहिबा ने आपको दरबार में बुलाया है! " प्रभाकरसिंह ने क्रोध भरे स्वर में जबाब दिया, " देखो जी, तुम चाहे जो भी हो और तुम्हारी रानी साहिबा भी जो चाहें हों, आदमी हों, राक्षस हों, बैताल हों, भूत हो या

तिलिस्मी पुतली ही हों, मैं यह जानना चाहता हूं कि किस हिम्मत पर तुम लोगों ने मेरे साथी से हाथापाही करने की जुर्रत की है !! " उस लाल पुतले ने कुछ ताज्जुब के ढंग से कहा, " सो क्या?

"

प्रभाकरसिंह ने जवाब दिया, " मेरी साथी, एक औरत, तुम लोगों की शैतानी से इस मकान में बन्द हो गई जिसे मैं छुड़ाना चाहता था पर अभी - अभी मैंने देखा कि तुम्हारे दोनों साथी वह सफेद और पीले पुतले उससे हाथापाई कर रहे थे.

" लाल पुतला:

(ताज्जुब का मुंह बनाकर) नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता.

प्रभा:

(अपनी बात पर जोर देकर) जरूर ऐसा ही है.

यद्यपि उनकी सूरत तो यहां से नहीं देख सका मगर उनके रंगीन हाथ और सफेद तथा पीली पोशाकें मैंने जरूर देखीं.

अवश्य वे ही दोनों थे इसमें कोई शक नहीं.

लाल पुतला:

नहीं, नहीं, मेरा, मतलब अपने उन दोनों साथियों से नहीं है बल्कि उस औरत से है जिसे आप ' अपना साथी ' कहकर पुकार रहे हैं, वह यहां क्योंकर हो सकती है?

मैं उसे अभी - अभी दरबार में देखता आ रहा हूं, प्रभा:

वाह, सो कैसे हो सकता है?

भला मैं अपनी आंख और कान को कैसे झूठा समझ सकता हूं, अब इसके जवाब में मैं सिवाय इसके और क्या कह सकता हूँ कि दरबार में पहुंचते ही आपको मेरी बात की सच्चाई का पता लग जाएगा.

लाल पुतला:

प्रभाकरसिंह बड़े ताज्जुब में पड़कर कितनी ही तरह की बातें सोचने लगे.

आखिरकार उन्होंने पूछा, " तुम्हारी रानी के दरबार में जाने के लिए कितनी दूर चलना पड़ेगा?

" पुतले ने जवाब दिया, " बिल्कुल थोड़ी दूर, मुश्किल से दो सौ कदम.

" एक बार ऊपर सिर कर उस खिड़की को देख प्रभाकरसिंह बोले, " खैर चलो, एक बार तुम्हारी बातों की सच्चाई की भी जांच कर देखें! " बिना कुछ कहे वह लाल पुतला मुड़ा और प्रभाकरसिंह को पीछे आने का इशारा करने के बाद तेजी से एक तरफ रवाना हुआ.

जिस कमरे के बाहर वाले बरामदे से उतरकर वे यहां तक आये थे उसी के बगल से होता हुआ यह तिलिस्मी पुतला उन्हें एक बड़े फाटक के अन्दर ले गया जिस पर पहले भी प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ चुकी थी, और उसको पार करने के बाद उन्होंने अपने को एक छोटे मगर खुशनुमा बाग के अन्दर पाया.

प्रभाकरसिंह का यह सन्देह अभी दूर न होने पाया था कि इस बाग में वह पहले भी आ चुके हैं या नहीं कि लम्बे - लम्बे डग मारते हुए उस पुतले ने उस बाग को भी तय किया और एक दूसरे आलीशान फाटक पर पहुंचा.

इस जगह पहुंचकर प्रभाकरसिंह को कुछ राजदरबारी गंध मिली अर्थात् इस फाटक पर कई आदमी हथियार से सजे पहरा देते नजर पड़े, जिनकी शक्ल - सूरत और पोशाक ठीक उन्हीं पुतलों जैसी थी जिनमें का एक उनके साथ था, फर्क कुछ था तो केवल इतना ही कि ये शक्ल - सूरत और पोशाक में हरे रंग के थे.

एक सरसरी निगाह से ज्यादा प्रभाकरसिंह अपने चारों तरफ डाल न सके क्योंकि उनके साथ वाले आदमी (पुतले) के एक इशारे के साथ ही फाटक जो बन्द था खुल गया और वह इन्हें लिए उसके अन्दर हो गया.

जिसके साथ ही भारी फाटक पुनः बन्द हो गया.

प्रभाकरसिंह को शायद इस बात पर कुछ आपत्ति होती पर उनकी आंखें किसी ऐसी चीज पर पड़ीं जिसने उन्हें चौका दिया और वे इस बात पर बिना कुछ गौर किए कि

पीछे जाने का रास्ता बन्द हो गया है और वे ऐसे स्थान पर आ खड़े हैं जहां से बाहर होने की राह शायद उन्हें सहज में न मिले, आश्चर्य और कुछ उत्कण्ठा से आगे की तरफ बड़े.

वह चीज जिसने उन्हें इस तरह चौंका दिया था एक औरत थी जो प्रभाकरसिंह के सामने फैले हुए खुशनुमा नजरबाग की एक रविश पर इधर - से - उधर चहलकदमी कर रही थी.

प्रभाकरसिंह की सरसरी निगाह में वह मालती जान पड़ी और जब कुछ आगे बड़कर गौर से उन्होंने देखा तो वह शक और भी बढ़ गया.

यहां तक कि वे अपने को रोक न सके और कुछ तेजी के साथ आगे बढ़कर उस औरत के पास जा पहुंचे जो इस समय एक झाड़ी के पीछे खड़ी कुछ फूलों को तोड़ने की कोशिश कर रही थी.

बहुत पास से देखने पर भी वह मालती ही जान पड़ी तो प्रभाकरसिंह ने खुशी - खुशी उसके पास जा के पूछा, " मालती, तुम यहां कहां?

" ताज्जुब की बात थी कि प्रभाकरसिंह को पास आते देख और उनकी बात सुन वह औरत (मालती) एक चीख मारकर पीछे हट गई और तब कुछ क्रोध की निगाह से उस लाल पुतले की तरफ देखने लगी जो प्रभाकरसिंह को आगे बढ़ता पा उन्हें रोकने की मुद्रा से इधर ही बड़ रहा था.

इसके पहले कि ताज्जुब में पड़े हुए प्रभाकरसिंह किसी से कुछ पूछे या कहें उस पुतले ने उनसे कहा, " आप उधर क्यों जाते हैं, इधर मेरे साथ आइए! " उसके लहजे में कुछ हुकूमत और कुछ क्रोध मिला हुआ था जिसने प्रभाकरसिंह में भी क्रोध पैदा कर दिया और वह बिगड़कर बोल उठे, " ठहरों जी, मैं पहले इनसे कुछ बातें कर लूं तो चलूंगा !! " और तब पुनः उस औरत की तरफ घूमकर बोले, " यह क्या मालती, तुम्हारा ढंग बदला क्यों नजर आता है! क्या तुम मुझसे कुछ नाराज हो?

" मगर अफसोस, इस बार भी मालती ने उस इज्जत, कद्र और आधीनता मिश्रित प्रेम की निगाह से न देखा जिससे कि बराबर उन्हें देखा करती थी बल्कि और भी क्रोधित होकर कड़ी निगाह से उस पुतले की तरफ देखती हुई वह बोल उठी, " क्या इसी तरह नौकरी अदा की जाती है?

चल महारानी से तेरी शिकायत करके तुझे सजा दिलाती हूं! " तब प्रभाकरसिंह की तरफ देखकर बोली, " तुम कैदी हो, सीधे - सीधे कैदी की तरह अपने पहरेदार के साथ चले जाओ.

और तुम बार - बार मालती - मालती ' किसे कहते हो?

मैं नहीं जानती कि तुम्हारी मालती कौन है और न मैंने उसको कभी देखा है! " इतना कहती वह तेजी के साथ घूमी और रविंशों पर से होती हुई देखते - देखते प्रभाकरसिंह की आँखों की ओट हो गई.

बेचारे प्रभाकरसिंह सकते की - सी हालत में खड़े उस तरफ देखते ही रह गए.

इस समय उस पुतले ने उन्हें सम्बोधन कर कहा, " कृपा कर अब तो आप आगे बड़िये! आपने जो कुछ किया अच्छा किया , अब मालूम नहीं ये मेरी कौन कौन - सी शिकायत महारानी से करेंगी और क्या सजा दिलायेंगी, अब और देर करके मुझे एकदम सूली ही तो मत दिलाइये! " प्रभाकरसिंह ने अप्रतिभ होकर कहा, “ क्या ये कोई दूसरी हैं?

जिन्हें मैंने समझा वह मालती देवी नहीं हैं?

" पहरेदार बोला, " यह महारानी की मुंहबोली सखी सुलोचना हैं.

वह मालती कौन है जिसे आप बार - बार पूछ रहे हैं सो मैं तो कुछ भी नहीं जानता.

खैर अब आप इधर से आइए, और देर मत कीजिए.

" इतना कहता हुआ पहरेदार घूम पड़ा और चकरदार रबिशों पर से होता हुआ उस बड़े मकान की तरफ बड़ा जो उस जगह से दिखाई पड़ रहा था.

दस ही बीस कदम गये होंगे कि प्रभाकरसिंह उचककर फिर रुक गए.

उनके बाईं तरफ एक लता - मण्डप के अन्दर दो औरतें खड़ी आपस में कुछ बातें कर रही थीं जिनमें से एक की पीठ इनकी तरफ पड़ती थी मगर दूसरी जिसका मुंह इनकी ओर था ठीक मालती की तरह मालूम पड़ी.

इसे देख फिर वे चमके और आगे बढ़ना ही चाहते थे कि पहले धोखे का ख्याल आ गया और इन्होंने उस पहरेदार को रोककर कहा, " क्यों भाई, क्या इस बार भी मेरी आंखें

धोखा खा रही हैं या वह जो उस लता - मण्डप के अन्दर खड़ी हैं, मालती हैं?

" पहरेदार ने एक मामूली निगाह उस तरफ डाली और हंसकर कहा, " वे महारानी की सखी सुभद्रा हैं.

ताज्जुब की बात है कि आपकी आँखों में कुछ शिकायत आ गई है.

आइये चलिये, आगे बढ़िये.

" यद्यपि प्रभाकरसिंह इस औरत को भी मालती ही समझ रहे थे पर पहरेदार की बात सुनकर उनकी और कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी और मन - ही - मन यह कहते हुए आगे बड़े, " क्या मेरी आंखें मुझे धोखा दे रही हैं या यहां की सभी औरतें मालती की - सी सूरत - शक्ल वाली हैं?

" कुछ ही दूर आगे चलकर ये लोग उस आलीशान मकान के पास पहुंच गये और इस जगह प्रभाकरसिंह ने उसी पहरेदार की सूरत - शक्ल के और भी बहुत - से आदमियों को पहरा देते तथा और भी तरह - तरह के काम करते हुए पाया जो सब के सब हरे रंग के थे, सिर्फ यही नहीं, मकान के अन्दर वाले भीतरी हिस्से में तथा ऊपर के बरामदे में काम करती हुई कई औरतें भी प्रभाकरसिंह को दिखाई पड़ीं और उन्होंने धड़कते हुए कलेजे के साथ देखा कि वे सभी - की - सभी सूरत - शक्ल में मालती ही मालूम पड़ रही है.

पहरेदार ने एक दूसरे आदमी से कहा, " जाओ महारानी से इत्तिला करो कि वह आदमी आ गया है.

" और जबाब में यह सुनकर कि हुक्म मिला है कि आते ही दरबार में हाजिर किया जाए इत्तिला की जरूरत नहीं, उसने प्रभाकरसिंह की तरफ देख के कहा, “ आप भीतर जाइए! " आप सीधे सामने चले जाइए, ठीक स्थान पर पहुँच जाएंगे.

"

इधर - उधर देखते हुए प्रभाकरसिंह ने मकान के अन्दर पैर रखा और एक छोटा - सा रास्ता तय कर एक बहुत ही बड़े आलीशान और सजे हुए कमरे में पहुँचे जो बड़ा ही खूबसूरत और नायाब चीजों से सजा हुआ था, मगर यहाँ पहुंचते ही जिस बात ने इनका

ध्यान अपनी तरफ खींच लिया वह कुछ औरतें थीं जो साफ चमकदार संगमरमर के फर्श पर बनी हुई एक बिसात के चारों तरफ बैठी हुई गोटी खेल रही थीं.

उनमें से जो औरत इनके ठीक सामने पड़ती थी उस पर निगाह जाते ही इनको मालती का भ्रम हुआ ही क्यों, जरा - सा ठिठककर गौर से देखने पर भी उसे इन्होंने मालती समझा और उनकी तरफ कदम बढ़ाने को मजबूर हुए, मगर अफसोस, उसने इनकी तरफ कुछ भी ध्यान न देकर लापरवाही की मुद्रा से कहा, " उधर उस सामने वाले दरवाजे से जाओ, महारानी हरे दालान में हैं.

" और तब फिर अपने खेल में लग गई.

प्रभाकरसिंह चिहुंककर रुक गए और तब गौर करने पर उन्हें मालूम हुआ कि वहाँ जितनी औरतें बैठी हैं वे सभी देखने में मालती ही जान पड़ती हैं.

यह क्या बात है, एक ही सूरत - शक्ल की इतनी औरतें यहाँ पर क्यों इकट्ठी हैं और इसमें क्या भेद है, यही सब सोचते हुए वे आगे बड़े और दरवाजे के अन्दर घुसे जिसकी तरफ उस औरत ने बताया था.

एक छोटा सहन दिखाई पड़ा जिसके चारों तरफ सफेद और काले संगमरमर के दालान बने हुए थे.

सामने की तरफ का दालान दोहा और हरे रंग से रंगा हुआ था और वहीं पर प्रभाकरसिंह को एक छोटे - से दरबार का अनूठा और बहुत ही रोबदार दृश्य दिखाई पड़ा.

सोने और चांदी की मीनाकारी के काम की कुर्सियों पर लगभग पन्द्रह - सोलह औरतें बड़े ठाठ - बाठ और सज - धज से बैठी थीं जिनके गहनों और कपड़ों की चमक - दमक से वह स्थान रोशन हो रहा था.

उनके बीचोबीच में एक जड़ाऊ सिंहासन रखा हुआ था जिस पर कोई बैठा न था मगर उस दरबार की सभी बैठने बालियों की निगाहें उसी तरफ घूमी हुई थीं और उसके पीछे की तरफ खड़ी दो बंदियां जड़ाऊ मोरछल और पंखी इस तरह झल रही थी मानों कोई उस पर बैठा हुआ हो.

प्रभाकरसिंह ने उस जगह के साज - सामान और कैफियत से पहली ही निगाह में इतना तो समझ ही लिया कि यहां की रानी और चाहे जो भी हो, उसे कम - से - कम धन - दौलत और जवाहीरात की कमी नहीं है, क्योंकि एक - से - एक किमती चीजें चारों तरफ दिखाई पड़ रही थीं.

मगर वे उस जगह ज्यादा देर तक खड़े न रह सके.

जाने कहां से आकर दो लौंडियां उनके दोनों तरफ खड़ी हो गईं जिन्होंने उनसे कहा, " आगे बढ़िए, " सामने का सहन पार करके उन लौंडियों ने प्रभाकरसिंह को उस खाली सिंहासन के सामने लाकर खड़ा कर दिया तब अदब से झुककर यह कहने के बाद कि ' वह आदमी हाजिर है कुछ पीछे हट गईं.

प्रभाकरसिंह ताज्जुब के साथ यह सोच ही रहे थे कि वे खाली सिंहासन के सामने क्यों खड़े कर दिए गये हैं कि उस सिंहासन पर से आवाज आई, " कौन है?

" प्रभाकरसिंह के बगल वाली एक लौंडी बोली ' “ हुजूर, ये वे ही हैं जिनके बारे में पहरेदारों ने इत्तिला की थी कि सरकारी कैदखाने में से किसी कैदी को निकालने कि कोशिश कर रहे थे! " सिंहासन पर से आवाज आई, “ इनका नाम क्या है?

" इस लौंडी ने प्रभाकरसिंह से इशारा किया और इन्होंने जबाब दिया, " मेरा नाम प्रभाकरसिंह है, मगर इसके पहले कि मैं किसी और सबाल का जवाब दूं, यह जानना चाहता हूं कि मैं कहां और किसके सामने खड़ा हूं! " सिंहासन के बगल वाली कुर्सी पर बैठी एक औरत ने जवाब दिया, " आप हम लोगों की महारानी के हुजूर में खड़े हैं.

प्रभाकरसिंह बोले, “ मगर वे कहां हैं! मेरे सामने तो सिर्फ एक खाली सिंहासन है.

" उस औरत ने जवाब दिया, " वे सिंहासन पर विराज रही हैं पर जब तक उनकी मर्जी न हो मामूली आँखें उन्हें देख नहीं सकतीं.

आपको जो कुछ कहना हो अर्ज किजे , बराबर जवाब और हुक्म मिलेगा.

" ताजुब के साथ सिंहासन को नीचे - ऊपर से गौर के साथ देखते हुए प्रभाकरसिंह बोले, " अगर जो कुछ मैं सुन रहा हूँ वह सही है और इस तिलिस्म की कोई रानी हैं जो

मेरे सामने अलक्ष्य रूप से इस सिंहासन पर बैठी हैं तो मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरा एक साथी आपके कैदखाने में बन्द हो गया है जिसे मैं वापस चाहता हूं.

" सिंहासन पर से जवाब मिला, " वह कौन है?

उसका क्या नाम है?

इस बार प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब और गौर के साथ लक्ष्य किया कि आवाज इस ढंग से आ रही है मानों कोई उसी सिंहासन पर बैठा हुआ बोल रहा हो, मगर उस पर दिखाई तो कोई भी नहीं दे रहा था! यह क्या है इस पर आश्चर्य करते हुए वे बोले, " वह एक स्त्री है, उसका नाम मालती है,

सिंहासन से आवाज आई, " वह किस कसूर में पकड़ी गई है?

" आवाज का ऐसा ढंग था मानों बोलने वाले ने बगल की तरफ घूमकर किसी दूसरे से यह सवाल किया हो.

प्रभाकरसिंह के कुछ जवाब देने के पहले सिंहासन के बगल वाली उसी औरत ने जिसने पहले उनसे बातें की थी सिंहासन की तरफ घूम और हाथ जोड़ उत्तर दिया महारानी, उस औरत पर बड़े - बड़े इल्जाम लगाए गए हैं, उसका सबसे भारी कसूर यह कहा जाता है कि उसने तिलिस्मी खजाना चुराने की कोशिश की और महारानी की सूरत बन तथा अपने को रानी बतला सरकारी नौकरों को धोखा देना चाहा.

" !! सिंहासन से आवाज आई, " और इन पर भी क्या कोई इल्जाम है?

" उस औरत ने जवाब दिया, " ये भी सरकारी तिलिस्म तोड़ और सरकारी नौकरों के काम में रोक टोक कर रहे थे, सिंहासन से फिर सवाल हुआ, " कहिए इन बातों के जवाब में आपको क्या कहना है! " इस बार की आवाज के रुख तथा औरत के इशारे से वह समझ गये कि यह सवाल उन्हीं से किया गया है अस्तु वे बोले, “ मालती देवी के बारे में जो कुछ कहा जाता है उसका तो मैं कोई जवाब नहीं दे सकता मगर अपने बारे में कह सकता हूँ कि जो कुछ यह कह रही हैं वह बहुत ठीक है.

मैं आज ही कल से नहीं बल्कि महीनों से इस तिलिस्म में रहकर इसे तोड़ रहा हूं तथा बहुत जल्द बचा हुआ हिस्सा तोड़कर इसके बाहर भी हो जाने की उम्मीद रखता हूँ, !!

सिंहासन से प्रश्न हुआ " क्या आप नहीं जानते कि इस तिलिस्म की रानी मैं हूं और बिना मेरी इजाजत के मेरे घर में घुस आना और तोड़ - फोड़ मचाना आपके लिए मुनासिब नहीं था.

" प्रभा:

अफसोस कि मुझे इस बात की कुछ भी खबर न थी कि इस तिलिस्म की कोई जीती - जागती रानी भी मौजूद हैं, अगर जानता तो शायद मेरे काम करने का ढंग दूसरा होता.

सिंहासन से:

अब तक नहीं जानते थे तो खैर अब तो जान गये, अब आप क्या करना चाहते हैं?

प्रभा:

अफसोस कि मुझे अब तक यह विश्वास नहीं हुआ कि वास्तव में इस तिलिस्म की कोई रानी हैं या नहीं, अथवा यह सब सिर्फ कोई तिलिस्मी तमाशा है अस्तु इस सवाल का जवाब मैं तब तक नहीं दे सकता जब तक कि मुझे आपके अस्तित्व का विश्वास न हो जाए.

कुछ रुक कर सिंहासन से जबाब मिला, " आपके उत्तर में उदंडता की बू नहीं है इससे मैं समझती हूं कि आपके सामने प्रकट हो जाने में कोई हर्ज नहीं है ।

!! बात पूरी समाप्त भी न हो पाई थी कि सिंहासन के बीचोबीच में एक छोटी रोशनी इस तरह की दिखाई पड़ी मानों दीये की एक ज्योति जल रही हो, मगर देखते - ही - देखते वह ज्योति बढ़ने लगी, उसकी तेज चमक और डील - डौल बढ़ने लगा और आधी घड़ी के अन्दर ही वहाँ एक भयानक अग्नि - शिखा दिखाई पड़ने लगी जिसकी ऊँचाई कोई सात - आठ हाथ के लगभग और सबसे चौड़े हिस्से का पेटा करीब तीन हाथ के होगा.

अग्नि - शिखा एक दफे खूब ही तेज हुई मगर आंखों में चकाचौंध डालने वाली उसकी चमक धीरे - धीरे कम होने लगी और साथ ही उसका कद भी छोटा होने लगा.

अब उसके अन्दर किसी व्यक्ती की अस्पष्ठ आभा प्रभाकरसिंह को दिखाई पड़ने लगी.

ताज्जुब के साथ उन्होंने देखा कि ज्यों ज्यों वह अग्नि - शिखा छोटी होती जा रही है, भीतर वाली मूर्ति स्पष्ट होती जा रही है यहाँ तक कि धीरे - धीरे वह ज्योति एकदम ही गायब हो गई और उसके स्थान पर एक सुन्दर कमसिन औरत जड़ाऊ गहनों और कीमती पोशाक से सजी बैठी दिखाई पड़ने लगी.

और भी ताज्जुब की बात यह कि सिंहासन पर की यह औरत जिसने अपने को तिलिस्म की रानी कहा था और जिसके प्रकट होते ही उस दरबार में बैठी सब औरतें अदब से उठकर खड़ी हो गई थीं.

शक्ल - सूरत में ठीक मालती ही जान पड़ी यहाँ तक की इस जगह की तेज रोशनी में दो हाथ के फासले से देखकर भी प्रभाकरसिंह को किसी तरह का यह शक न हुआ कि वह मालती के अलावा और भी कोई हो सकती है.

मगर वे पहले दफे धोखा खा चुके थे अस्तु इस बार उन्होंने पुनः अच्छी तरह उस औरत की तरफ देखा और तब यकायक बरबस बोल उठे, " मालती! तुम यहां?

यह क्या बात है?

"

चौथा व्यान।

इन्द्रदेव की अद्भुद और जादू का - सा असर करने वाली दवाओं और उनके अद्भुद निबास - स्थान की दिल को कूबत और फरहत पहुंचाने वाली आबोहवा की बदौलत दलीपशाह, अर्जुनसिंह और गिरिजाकुमार बहुत जल्दी ही तन्दुरुस्त हो गये और कुछ ही दिन बाद तो उन तकलीफदेह चोटों का कोई नाम - निशान भी उनके बदन पर बाकी न रहा जो लोहगढ़ी में भूतनाथ की बदौलत उन्हें खानी पड़ी थीं.

हमारे लेखक यह तो समझ ही गये होंगे कि लोहगढ़ी में से निकालकर इन्द्रदेव इन तीनों को अपने साथ ले गये थे और इन्हें अपने मकान और अपनी देखरेख में रखा था मगर

जिस बात पर इन तीनों को बहुत ही ज्यादा अचम्भा हो रहा था वह यह थी कि उस दिन के बाद से आज तक इन्द्रदेव की एक बार भी उन लोगों ने शक्ल तक न देखी थी.

न जाने वे किस काम में मशगूल थे या किस झंझट में पड़े हुए थे कि अपने इन मरीजों के हाल - चाल की पूरी खबर रखते और दवा का पूरा बन्दोबस्त करते हुए भी उन्हें उनके सामने आने की मोहलत नहीं मिल रही थी.

शायद कभी रात - बिरात जबकि उनके मरीज गहरी निद्रा में पड़े हों वे आकर देख गये हों तो दूसरी बात है नहीं तो इन तीनों ने उस दिन के बाद से आज तक एक बार भी उनकी शक्ल देखी न थी.

आज अपने हवादार कमरे की खिड़की के सामने मसनद पर गावतकीये के सहारे उठकर बैठे दलीप शाह अपने सामने बैठे अर्जुनसिंह से इसी विषय पर बातें कर रहे थे.

दलीप:

मेरी समझ में नहीं आता कि इन्द्रदेव किस जरूरी काम में लगे हुए हैं जो उन्हें आधी घड़ी के लिए भी इतनी फुरसत नहीं मिलती कि यहाँ आवें और हम लोगों से दो बातें तो कर जाएं! अर्जुन:

और दिल्लगी तो यह है कि जब उनसे पुछवाया जाता है कि हम लोग बाहर जाना चाहते हैं तो कहला भेजते हैं कि अभी आप लोग बाहर जाने लायक नहीं हुए, अभी कुछ दिन और रहकर पूरी तरह से अच्छे हो जाइये तब बाहर जाने का ख्याल किजे.

दलीप:

और इस कमरे, दालान और बाहर वाली दोनों कोठरियों की हद से दूर जाने की हम लोगों को इजाजत नहीं है, मानो हम लोगों को कैदी बना रखा हो.

गिरिजा:

(जो वहां से कुछ दूर पर बैठा खरल में कोई दवा घोंट रहा है) मुझे तो गुरुजी, कुछ ऐसा जान पड़ता है कि वे किसी खास सबब से हम लोगों को यहाँ रोके हुए हैं और बाहरी दुनिया में जाने नहीं देना चाहते.

दलीप:

कैसे तुम यह सोचते हो?

गिरिजा:

एक दिन रात के समय किसी तरह की आहट पाकर मेरी नींद उचट गई, बाहर से किसी के बोलने की आवाज आ रही थी मगर जब तक मैं उठूं और कमरे के बाहर होऊ तब तक वह आवाज बंद हो गई.

दलीप:

हां, यह बात तुमने हम लोगों से कही थी! गिरिजा:

उसी दिन से रात को कई दफे बाहर वाली छत तक का चक्कर लगा आने का मैंने नियम बना लिया है और इसलिए वह दरवाजा (हाथ से कोठरी की तरफ बताकर) मैं सोते समय बन्द नहीं करता बल्कि खुला ही छोड़ देता हूं कि जिसमें आहट किये बगैर जब चाहूं बाहर निकल जा सकूं, अब तक मेरी इस कार्रवाई का कोई नतीजा न निकला था पर आज मुझे एक अजीब - सी बात जान पड़ी जिसे आपसे कहूं या न कहूं, यही मैं सोच रहा था.

दलीप:

वह क्या?

गिरिजा:

रात आधी से ज्यादा जा चुकी होगी.

मैं छत पर घूम - फिरकर कोठरी की राह भीतर वापस आना ही चाहता था कि नीचे कुछ आहट सुनाई पड़ी ठिठककर सुनने लगा तो कोई कह रहा था, " देखो खबरदार, चाहे जो कुछ भी हो पर ये लोग यहां से बाहर न होने पावें, अभी बाहर खतरा है! जबाब में किसी ने कहा, " क्या आप उन लोगों को देखियेगा भी नहीं?

" जिसे सुनकर वह बोला, “ यद्यपि इसकी जरूरत नहीं क्योंकि वे लोग अब बिल्कुल ठीक हो गये हैं फिर भी मैं उन्हें एक बार देखूगा जरूर! "

इस पर दूसरे आदमी ने पूछा, “ मगर आप फिर व्यर्थ इन लोगों को यहां रोके हुए क्यों हैं?

" इस बात का जबाब इतना धीरे से दिया गया कि मैं सुन न सका मगर उसी समय सीढ़ी वाले दरवाजे के खुलने की आहट आई जिससे मैं समझ गया कि वे बात करने वाले, चाहे जो भी हों, ऊपर आना चाहते हैं, इसलिए मैं चुपचाप जाकर अपनी खाट पर पड़ा रहा और कुछ ही देर बाद मैंने दो आदमियों को कमरे में आता पाया.

मैं जान - बूझकर आंखें बन्द कर खुर्राटे लेने लगा फिर भी छिपी निगाहों से मैंने देख लिया कि उन्होंने आप लोगों को अच्छी तरह देखा.

दलीप:

तुमने पहचाना नहीं कि वे लोग कौन थे?

एक तो इन्द्रदेवजी ही थे मगर दूसरा कौन था सो मैं जान न सका क्योंकि उसने नकाब से अपनी सूरत छिपाई हुई थी.

आप लोगों को देख वह नकाबपोश मेरी तरफ बढ़ा पर इन्द्रदेवजी ने कहा, " उधर जाने की जरूरत नहीं, वह लड़का पूरा मक्कार है, कौन ठिकाना जागा हुआ पड़ा हो और आपको पहचान ले! " इसके बाद दोनों निकल गये.

रामा नौकर दरवाजे पर खड़ा था उसे कुछ खाने - पीने के बारे में बताया और तब नीचे उतर गये.

दलीप:

यह तो तुमने बड़े ताज्जुब की बात सुनाई! इसका मतलब तो फिर यह हुआ कि इन्द्रदेव छिपकर आते, हमा लोगों को देखते और हमारी फिक्र करते हैं, फिर भी हमारे सामने नहीं होना चाहते !! गिरिजा:

जी हां और इसी से मैंने कहा कि जरूर वे किसी खास सबब से हम लोगों को यहां रोके हुए हैं.

अर्जुन:

मगर यह खास सबब हो क्या सकता है! (रुककर और बाहर की तरफ देखकर) रामा नौकर आ रहा है और उसके हाथ में कोई चिट्ठी जान पड़ती है, शायद हम लोगों के लिए हो.

इन्द्रदेव का खास खिदमतगार रामा जिसे इन लोगों की सेवा - सुश्रूषा के लिए उन्होंने दिया हुआ था कमरे के अन्दर आया और सलाम कर एक चिट्ठी दलीपशाह की तरफ बड़ाकर बोला, “ इसका जवाब अभी मांगा गया है, " दलीपशाह ने चिट्ठी ली और लिफाफा खोलकर पढ़ने के साथ ही उनके मुंह से ताज्जुब की एक आवाज निकल पड़ी और चिट्ठी अर्जुनसिंह की तरफ बढ़ाते हुए उन्होंने रामा से पूछा, “ इन्द्रदेवजी कहां हैं?

रामा ने जवाब दिया, ' वे जमानिया गये हैं और नौकर को हुकुम दे गए हैं कि चिट्ठी का आप लोग जो जबाब दें वह तुरन्त उनके पास जमानिया पहुंचाया जाय.

"

गिरिजाकुमार ने देखा कि अर्जुनसिंह ज्यों - ज्यों चिट्ठी पड़ रहे हैं उनके चेहरे पर भी ताज्जुब की झलक पड़ती जा रही है यहां तक कि पूरी चिट्ठी पड़ते - पढ़ते उनके मुंह से आश्चर्य की आवाज निकल पड़ी और उन्होंने दलीपशाह की तरफ सवाल की निगाह से देखा.

दलीपशाह ने मतलब - भरी निगाह उनकी तरफ उठाई और कहा, " इस चिट्ठी का जबाब तो खुद हमीं लोग हो सकते हैं! " अर्जुनसिंह बोले, " इसमें भी कोई शक है! " दलीपशाह ने रामा की तरफ देखकर कहा, “ हम लोग अभी जमानिया जाना चाहते हैं, क्या तुम हमारे लिए सवारी का इन्तजाम कर सकते हो?

" रामा:

सरकार के हुक्म से एक रथ फाटक पर तैयार है और उन्होंने जुबानी कहलाया है कि अगर आप लोग आना चाहें तो उसी पर आ सकते हैं.

अर्जुन:

(दलीपशाह से) इसके माने तो यह कि खुद उन्हें भी यही उम्मीद थी कि यह खत पाते ही हम लोग उताबले हो जाएंगे और तुरन्त उस तरफ को रवाना हो जाना चाहेंगे! दलीप:

जरूर यही बात है, तो बस हम लोगों को तैयार हो जाना चाहिए.

अर्जुन:

बेशक, और तैयार होने ही को क्या है?

सिर्फ कपड़े पहनने की देर है! (रामा से) बस हम लोग तैयार ही हैं, तुमको और कोई इन्तजाम करना हो तो कर लो.

रामा:

जी सरकार का हुक्म है कि मैं भी आप लोगों के साथ - ही - साथ आऊं अगर आप लोग आना चाहें, मगर कुछ सामान भी साथ लाने का हुक्म हुआ है जिसे ठीक करने में कुछ समय लगेगा.

दलीप:

तो तुम जल्दी करो, ज्यादा देरी हम लोग नहीं सह सकते.

रामा:

मैं बहुत जल्दी करूंगा, जलपान का सामान उस कोठरी में रखा है.

कहता हुआ रामा कमरे के बाहर चला गया और इसी समय गिरिजाकुमार ने कहा तो मुझे कितने दिनों तक यहां रहने का हुक्म होता है?

"

दलीप:

(ताज्जुब से) यहां रहने का हुक्म! क्यों, यहां रहकर तुम क्या करोगे?

गिरिजा:

आप लोगों ने मुझे उस गुप्त भेद में शामिल नहीं किया जो आपके चेहरे से प्रकट हो रहा है इससे मैंने समझा कि शायद मुझे यहीं रहने का हुक्म दिया जाय.

अर्जुन:

(बहुत जोर से हंसकर) यानी तुम्हें वह चिट्ठी पड़ने को नहीं दी गई -- यही तो! दलीपशाह ने हंसकर कहा, " बड़ा बदमाश लड़का है! " यह कहते हुए उन्होंने वह चिट्ठी गिरिजाकुमार की तरफ फेंक दी जिसने लपककर उसे उठा लिया और उत्कंठा के साथ पढ़ने लगा.

चिट्ठी का मजमून यह था:

-- " प्रिय बन्धु कानों को विश्वास नहीं होता न मन को भरोसा, फिर भी हमारा प्रेम विश्वास दिलाता है कि ' आंचल पर गुलामी की दस्ताबेज ' के लिखने वाले प्रकट हो रहे हैं.

इसी खबर को सुन दौडादौड़ा जमानिया जा रहा हूँ, तुम लोगों से बहुत मदद मिलने की उम्मीद थी पर मालूम नहीं तकलीफों ने तुम्हारा साथ कहां तक छोड़ा है.

तुम्हारा जल्दी में गिरिजाकुमार एक नहीं बल्कि दो बार इस चिट्ठी को पड़ गया जिसने दलीपशाह और अर्जुनसिंह को इस कदर ताज्जुब और खुशी में डुबा दिया था मगर उनकी समझ में कुछ भी न आया कि इस चिट्ठी का मतलब क्या है, आखिर उसने पूछा, " गुरुजी, मुझे तो इस चिट्ठी का मतलब कुछ समझ में नहीं आया! " दलीपशाह ने हंसकर जवाब दिया, " और न हम लोग अभी तुम्हें कुछ समझाएंगे ही, इसलिए तो यह चिट्ठी तुम्हें दी नहीं गई थी जिसका तुम कोई दूसरा अर्थ लगाने लगे, अब जो कुछ होता है या होने वाला है उसे चुपचाप मुंह बन्द करके देखते चलो और तुरन्त कूच की तैयारी करो, अब एक सायत की भी देर मुझे अच्छी नहीं लग रही है.

"

गिरिजा:

बहुत खूब, बस आप सिर्फ इतना बतला दीजिए कि ' आंचल पर गुलामी का दस्तावेज ' से क्या मतलब है, बस मैं और कुछ नहीं पूछूगा.

दलीप:

(बिगड़कर) मैं कुछ भी न बताऊंगा और अगर तुम देर करोगे तो तुम्हें इसी जगह छोड़कर चला जाऊंगा.

लाओ चिट्ठी इधर, लाचार गिरिजाकुमार को अपनी इच्छा मन ही में दवानी पड़ी और अपनी जगह से उठना ही पड़ा.

तीनों आदमी सफर की तैयारी करने लगे और इतनी फुर्ती - फुर्ती सब सामान ठीक कर लिया कि रामा अपने हाथ में एक बड़ी गठरी लिए वहां पर आया तो उसने इन लोगों को कपड़े - लते से एकदम लैस पाया.

उसने देखते ही कहा, “ मालूम होता है आप लोगों ने चलने की जल्दी में जलपान भी नहीं किया! " दलीपशाह ने जवाब दिया, “ नहीं, मगर साथ में कुछ सामान रख जरूर लिया है जो अगर जरूरत पड़ी तो रास्ते में काम आवेगा.

तुम यह बताओ कि चलने का सब बन्दोबस्त हो गया या अभी कुछ कसर है?

" रामा बोला, " जी सब तैयारी पूरी है, आप लोग आइए.

" कुछ ऐसी सीढ़ियों और राहों से जो मकान के भीतरी हिस्से से कोई संबंध नहीं रखते थे रामा इन तीनों को मकान के बाहर ले आया जहां सदर दरवाजे पर एक हल्का रथ जिसमें बैलों की मजबूत जोड़ी जुती हुई थी इनकी राह देख रहा था.

पास में दो रथ और भी तैयार खड़े थे जिन्हें देख दलीपशाह ने पूछा, “ क्या ये रथ भी हमारे साथ ही चल रहे हैं?

" जिसके जबाब में रामा ने कहा, “ जी हां, कुछ भारी सामान जो सरकार ने मांगा था इन पर जा रहा है, मगर ये जमानिया न जाकर किसी दूसरी ही जगह जायेंगे.

" दलीपशाह ने फिर कुछ न पूछा, तीनों आदमी रथ पर सवार हुए, रामा रथबान के बगल में बैठ गया और सवारियां तेजी से रवाना हुई.

इसमें कोई शक नहीं कि रथों के बैल बहुत ही मजबूत और तेज जाने वाले थे क्योंकि दोपहर होते - होते उन्होंने जमानिया का आधे से ज्यादा रास्ता तय कर लिया.

दलीपशाह वगैरह की मर्जी तो रास्ते में भी नहीं रुकने की त थी मगर रामा के यह कहते पर कि सरकार का हुक्म है कि बहुत लम्बा सफर न किया जाय और रास्ते में आराम करते हुए आया जाय ' लाचार होकर उन लोगों को एक बड़े तालाब के किनारे जहां

किसी पुराने जमाने का एक मन्दिर और कुआं तथा छोटा - सा धर्मशाला के ढंग का एक मकान भी था, थोड़े समय के लिए रुकना ही पड़ा.

कुछ देर के लिए ये लोग बिछावन पर जा बैठे जो रामा ने इनके लिए बिछा दिया था, बैलों के कंधों पर से जुआ हटा दिया गया और साथ के बलवान तथा नौकर - चाकर वगैरह भी इधर - उधर हो गये.

किसी काम से गिरिजाकुमार भी वहां से हट गया और तब एकदम निराला पाकर दिलीपशाह और अर्जुनसिंह में बातें होने लगीं.

अर्जुन:

क्यों भाई, क्यां इन्द्रदेव की खबर सही हो सकती है?

क्या सचमुच हम लोग अपने पुराने प्रेमियों को देख पाएंगे?

दलीप:

यकायक विश्वास नहीं होता मगर इन्द्रदेव की खबर झूठ भी नहीं हो सकती, इसी से उम्मीद होती है कि शायद असम्भव सम्भव होना चाहता है ।

अर्जुन:

मगर क्या मरा हुआ आदमी भी जीता हो सकता है?

जिनको हम लोग गया गुजरा और पंचतत्व में मिला हुआ समझे बैठे हैं और सो भी आज से नहीं इन कितने ही बरसों से वे भी क्या पुनः प्रकट हो सकते हैं?

दलीप:

दुनिया में सभी कुछ सम्भव है.

क्या दयाराम और उनके माता - पिता के जीते रहने की कोई उम्मीद थी?

उन लोगों को हम भी तो मिटा हुआ ही समझा करते थे! वे आखिर जीते - जागते प्रकट ही हो गये.

अर्जुन:

बेशक यह बात सही है, मगर यह तो कहिये कि उस चिट्ठी में जो इशारा दिया गया है उससे क्या एक से अधिक का भी मतलब हो सकता है?

अभी तक कई दफे मेरा मन इस बात के पूछने का हुआ मगर रास्ते में इस कारण यह जिक्र न उठाया कि नौकर - चाकरों के कान तक न जाने पाए.

कुछ गिरिजाकुमार का भी ख्याल था कि शायद आप उसके सामने इस मामले को छेड़ना पसन्द न करते हों.

दलीप:

गिरिजाकुमार से तो खैर उतना बचाव करने की जरूरत नहीं यद्यपि अभी मैं उसे इस भेद में शामिल करना नहीं चाहता क्योंकि हजार होशियार हो फिर भी वह आखिर लड़का ही है, न जाने कब कैसी भूल कर बैठे, मगर नौकर चाकरों का ख्याल जरूर था और इसी से मैंने भी अभी तक इस बारे में कोई जिक्र नहीं उठाया पर यह ख्याल बराबर मेरे मन में भी दौड़ रहा है.

(कमर से इन्द्रदेव वाली चिट्ठी निकालकर) यह देखो इस पत्र में वह लिखते हैं- ' आंचल पर गुलामी की दस्तावेज के लिखने वाले प्रकट हो रहे हैं.

बस इतने से ही जो कुछ भी मतलब हम लोग चाहे निकाल सकते हैं.

अर्जुन:

जरूर इन्द्रदेव जी ने जान - बूझकर इस मामले को अस्पष्ठ छोड़ दिया और केवल इशारा मात्र कर दिया है जिसके दो कारण हो सकते हैं, या तो दूसरे के सामने कुछ भेद प्रकट न हो जाय इस ख्याल से ऐसा किया हो और या शायद उन्हें भी अभी ठीक पता न लगा हो कि कौन - कौन - से लोग प्रकट हुए या होने वाले हैं.

दलीप:

दोनों ही बातें हो सकती हैं, कुछ ठीक - ठीक निश्चय करना तो कठिन है जब तक कि उनसे भेंट न हो जाए, या फिर भी मेरा दिल कहता है कि इससे सम्बन्ध रखनेवाले भी लोगों से उनका मतलब है.

अर्जुन:

(धीरे से) यानी कामेश्वर और अहिल्या दोनों?

दलीप ०:

केवल वे ही दोनों नहीं, बल्कि तीसरी भुवनमोहिनी भी! अर्जुन:

(चौंककर) भुवनमोहिनी भी! क्या वह भी अभी तक जीती रह सकती है! भगवान, क्या यह सम्भव है !! दलीप ०:

मेरा दिल तो यही कहता है और इसका एक खास सबव और भी है जो भूतनाथ से संबंध रखता है.

नाराज हो गये थे.

अर्जुन:

वह क्या?

दलीप बहुत दिन की बात है जब भूतनाथ एक दफे इन्द्रदेवजी के पास आया जो उससे किसी बात पर बहुत ही ज्यादा इनकी लानत - मलामत के जवाब में जिसमें उस घटना की तरफ भी इशारा था जिसका जिक्र यह जुभला कर रहा है या जिसने हमारे - तुम्हारे दिलों पर एक न मिटने वाली लकीर खींच दी है, भूतनाथ के मुंह से कुछ ऐसी बातें निकलीं जिनका अर्थ यह निकलता था कि वह इस मामले में उतना दोषी नहीं जितना हम लोग उसे समझते हैं.

अर्जुन:

(चौकाकर) इसका क्या मतलब है?

क्या उसने अहिल्या को नहीं मारा या क्या कामेश्वर और भुवनमोहिनी के सत्यानाश का कारण वह नहीं हुआ?

दलीप:

अहिल्या के बारे में तो कुछ बोला नहीं मगर कामेश्वर और भुवनमोहिनी के बारे में जो कुछ उसने कहा उसका मतलब यह था कि वे मरे नहीं बल्कि किसी तरह की घटना ऐसी हो गई जिससे अछूते ही बच गए.

अर्जुन:

भला यह भी कभी सम्भव है?

हम लोग जिस बात को अच्छी तरह जानते हैं उसके बारे में क्या कभी इतना बड़ा धोखा हो सकता है?

हमें अच्छी तरह मालूम है कि भुवनमोहिनी को बड़ी महारानी की आज्ञा से भूतनाथ ने जहर दे दिया और कामेश्वर को भी उसी ने गिरफ्तार करके यमलोक पहुंचाया अगर इस बारे में वह कुछ कहता था तो बिल्कुल झूठ बोलता था और इन्द्रदेवजी को धोखा देने की कोशिश करता रहा होगा! दलीप:

मगर उसकी बातें सुन कम - से - कम इन्द्रदेवजी का ख्याल तो बदल गया.

अर्जुन:

अर्थात् वे समझने लगे कि भूतनाथ ने इन दोनों की जान नहीं ली! दलीप:

भूतनाथ ने जो कुछ उनसे कहा उसका मतलब कुछ - कुछ इस तरह था कि उसने भुवनमोहिनी को जहर तो जरूर दिया मगर वह जहर जान से मार डालने वाला नहीं था बल्कि गहरी बेहोशी से मौत की - सी हालत पैदा करने वाला था.

तुम जानते ही हो कि उस वक्त यह मशहूर हुआ था कि भुवनमोहिनी को सांप ने काट लिया है.

अर्जुन:

हां मशहूर यही हुआ था मगर वास्तव में उसे जहर दिया गया था और जहर को देने वाला यह भूतनाथ ही था, यह बात मैं अपनी तरफ से बहुत अच्छी तरह जानता हूं! दलीप:

बहुत ठीक है मगर भूतनाथ उस मौके पर जो कुछ बोला उसका मतलब यह था कि उसने भुवनमोहिनी को जान से नहीं मारा.

उसके लिए जहर से वह मौत की - सी हालत में पहुंच गई बल्कि मुर्दा समझ के जंगल में गाड़ दी गई, क्योंकि सांप के काटने से मरे हुए लोगों को अक्सर जलाते नहीं है, जहां से भूतनाथ ने पुन:

उसे निकाल लिया और तब जिन्दा ही शिवदत्त के हवाले कर दिया.

अर्जुन:

क्या भूतनाथ ने ऐसा कहा?

दलीप:

हां, साफ शब्दों में तो नहीं, मगर उसके मुंह से जो कुछ निकला उसका यही तात्पर्य इन्द्रदेवजी ने निकाला और तभी से अपनी तरफ से इस बात की जांच शुरू कर दी.

अर्जुन:

उस जांच से क्या कुछ पता लगा?

दलीप:

हां, वही बात मालूम हुई जो मैंने कही, अर्थात् भुवनमोहिनी मरी नहीं बल्कि शिवदत्त के सुपुर्द कर दी गई और कामेश्वर भी मरा नहीं बल्कि दारोगा के हवाले कर दिया गया.

यद्यपि इन बातों से भूतनाथ की कोई बेकसूरी साबित नहीं होती बल्कि उसकी लालच और दगाबाजी ही जाहिर होती है फिर भी यह पता लगता है कि कम - से - कम भूतनाथ के हाथों उनकी जान नहीं गई.

अर्जुन:

अफसोस कि तुमने इस बारे में मुझसे कुछ नहीं कहा! था.

दलीप:

मैं तुम्हारे मन में किसी तरह की झूठी आशा पैदा करते डरता था और दूसरे इन्द्रदेव जी ने भी मना कर दिया उनका कहना यह था कि भले ही भूतनाथ के हाथों ये दोनों मारे न गए हों मगर इसी बात का क्या विश्वास कि शिवदत्त और दारोगा ने उनको जीता छोड़ा होगा! आखिर उनका मरना तो मशहूर है ही, अब चाहे भूतनाथ ने उन्हें मारा हो या शिवदत्त और दारोगा ने.

अर्जुन:

ठीक है मगर यदि तुम मुझसे इस बात की खबर कर देते तो मैं कम - से - कम कुछ छानबीन तो करता.

दलीप:

इन्द्रदेवजी से बढ़कर इस मामले में तुम या हम कुछ नहीं कर सकते और वे उस दिन भूतनाथ की जुबानी इतना सुन के ही दिलोजान से इस भेद का पता लगाने में लग गए थे जिसका सबूत आज की उनकी चिट्ठी है.

अर्जुन:

खैर अब उनसे भेंट होने पर ही पूरी - पूरी खबर लगेगी.

मगर हां यह तो बताओ कि अगर कामेश्वर और भुवनमोहिनी के जीते रहने में कोई सन्देह हो भी जाए तो अहिल्या के बारे में क्या शक रह सकता है?

उसे तो जरूर ही भूतनाथ ने मारा और अपने हाथों से मारा!

दलीप:

नहीं, उस बारे में भी कुछ भेद है, भूतनाथ .

.

.

.

.

कहते - कहते दलीपशाह रुक गए क्योंकि उनकी निगाह गिरिजाकुमार पर पड़ी जो बेतहाशा दौड़ता हुआ उनकी तरफ आ रहा था.

बात - की - बात में वह पास आ पहुंचा और हांफता - हांफता बोला, " गुरुजी, गुरुजी! मैंने अभी - अभी भूतनाथ को इधर से भागते हुए देखा है! एकदम बदहवास की तरह भागा जा रहा था और कुछ जख्मी भी मालूम होता था क्योंकि उसके बदन पर जगह - जगह पट्टियां चढ़ी हुई थीं! " दलीपशाह उनकी बात सुन चौंककर उठ खड़े हुए और बोले, " हैं, भूतनाथ को भागते देखा है !! नहीं, नहीं! वह तो लोहगढ़ी के अन्दर अपनी

जान दे चुका है, मगर तुम्हें धोखा हुआ! " गिरिजाकुमार अपनी बात पर जोर देकर बोला, " नहीं, मुझे कोई धोखा नहीं हुआ, वह जरूर भूतनाथ ही था.

सिर्फ यही नहीं, बल्कि मेरी समझ में उसका पीछा करने की भी जरूरत है क्योंकि उसके हाथ में एक लम्बा - सा पुलिंदा और बगल में एक पीतल की सन्दूकड़ी है जिसे वह बड़ी हिफाजत से दबाए बेतहाशा भागा जा रहा है.

जरूर कोई मतलब की चीज उसके हाथ लगी है या फिर वह कुछ करके भागा है.

आप मुझे इजाजत दीजिए तो मैं उसके पीछे जाऊ.

" दलीप:

तुम क्या दौड़ने से उसका मुकाबला कर सकोगे?

गिरिजा:

क्यों नहीं, फिर एक तो वह जख्मी है दूसरे दूर से दौड़ते आने के कारण थक गया है और तीसरे आप लोगों की सवारियों को इधर - उधर खड़ा देख चक्कर खाकर घूमता हुआ उधर से गया है, अगर मैं सीधा इस महुए के जंगल में से होता हुआ निकल जाऊं तो जरूर उसे पा लूंगा.

वह बहुत दूर किसी तरह नहीं जा सकता.

दलीप:

मगर मैं अकेले तुम्हें उसका पीछा करने जाने देते डरता हूं, तुम ताकत या चालाकी में उसका किसी तरह मुकाबला नहीं कर सकते, चाहे वह जख्मी ही क्यों न हो, मगर साथ ही मैं इसका भी पत्ता जरूर लगाना चाहता हूँ कि वह जीता कैसे बच गया और इस वक्त कहां जा रहा है.

अर्जुन:

(खड़े होकर) तुम यहां रहो कोई फिक्र न करो, मैं गिरिजाकुमार के साथ जाता हूं और सब बातों का पता लगाकर अभी लौटता हूं.

दलीपशाह बोले, " तो क्यों न मैं भी तुम दोनों के साथ चलूं.

" मगर अर्जुनसिंह के इस कहने पर कि ' ज्यादा आदमी पीछा करेंगे तो उसे जरूर आहट लग जाएगी और वह चौकन्ना हो जाएगा ' वे लाचार रुक गए.

अर्जुनसिंह और गिरिजाकुमार घूम पड़े और लपकते हुए बात - की - बात में दलीपशाह की आँखों की ओट हो गए.

दलीपशाह कुछ देर तक इन्हीं दोनों की तरफ देखते रहे, इसके बाद पुन:

अपनी जगह पर बैठ गए और कुछ सोचने लगे.

बहुत काफी देर तक दिलीपशाह उसी तरह बैठे रहे यहां तक कि सब तरह के कामों में निपटकर रामा उनके पास आ पहुंचा और बोला, " बैलों ने आराम कर लिया है और नौकरों ने भी खाना - पीना खत्म कर लिया अब अगर हुक्म हो तो सफर शुरू कर दिया जाए.

" दलीपशाह उसकी बात सुन चिन्ता के साथ बोले, “ मैं तो चलने को बिल्कुल तैयार हूं मगर मेरे साथी किसी काम से चले गए हैं जिनकी राह देखना जरूरी है.

" इसी समय पीछे से आबाज आई, “ हम लोग भी आ पहुंचे! " जिसे सुन उन्होंने चौंककर पीछे देखा और अर्जुनसिंह को गिरिजाकुमार के साथ आते देख खुश होकर बोले, " अब आप लोग आए तो सही, मैं तो देर होते देख तरह - तरह की बातें सोचने लगा था! " अर्जुनसिंह ने कहा, " किसी फिक्र की जरूरत न थी " और तब रामा की तरफ देखकर बोले, " तुम बैल जुतबाओ, हम लोग सब तरह से तैयार हैं ।

रामा जो हुक्म ' कहकर चला गया और दलीपशाह बोले, “ कहिए गिरिजाकुमार का कहना कहां तक ठीक था और उस पुलिन्दे तथा गठरी में क्या है जो आप लिए हैं.

" अर्जुन:

गिरिजाकुमार ने भूतनाथ को वास्तव में ठीक - ठीक ही नहीं पहचाना बल्कि बहुत मौके पर देखा और यह सब सामान भी उसी के पास से मुझे मिला है जिसे आप देखेंगे तो ताज्जुब करेंगे!

अर्जुनसिंह ने हाथ की गठरी जमीन पर रखकर खोली.

उसके अन्दर एक पीतल की सन्दूकड़ी, एक मुट्ठा लपेटे हुए कागजों का तथा कुछ और भी सामान था जिन पर दलीपशाह की निगाह गई, मगर सबसे ज्यादा जिसने उन्हें चौंकाया वह वही पीतल की सन्दूकड़ी थी.

अर्जुनसिंह की तरफ देख उन्होंने कहा, " क्या यह सन्दूकड़ी वही है, या मेरी आँखें धोखा खा रही हैं?

" जबाब में अर्जुनसिंह बोले, " नहीं, यह वही सन्दूकड़ी है और यह कागजों का मुट्ठा भी भेद से खाली नहीं है, मगर जिस चीज ने मुझे व्याकुल कर दिया वह तस्वीर यह है.

अर्जुनसिंह ने यह लपेटा हुए पुलिन्दा उठाकर दिलीपशाह के हाथ में दे दिया.

यह वही तस्वीर थी जिसे भूतनाथ शेरसिंह के सामने से उठाकर भागा था और दलीपशाह उसे खोलकर देखते ही चौंक पड़े.

उस तस्वीर में एक भयानक दृश्य बना हुआ था.

लाल रंग की एक बड़ी ही विकराल मूर्ति थी जिसके सामने एक आदमी काले नकाब से अपनी सूरत छिपाये और काले ही कपड़ों से अपना बदन ढांके खड़ा था.

इस आदमी के दाहिने हाथ में खून से सनी नंगी तलवार थी और बाएं हाथ में किसी कमसिन खूबसूरत औरत का ताजा कटा हुआ सिर जिसमें से खून की बूंदे टपक रही थीं.

उसके भाव से ऐसा जान पड़ता था मानों इन बूंदों को उस मूरत के मुंह में टपकाने की कोशिश कर रहा हो.

पीछे के तरफ एक औरत की सिर कटी नंगी लाश पड़ी हुई थी.

जिसकी गर्दन से निकला हुआ लहू चारों तरफ फैल रहा था.

एक निगाह से ज्यादा दिलीपशाह इस तस्वीर को देख न सके.

पुलिन्दा उनके हाथ से छूटकर गिर पड़ा और वे आंखें बन्द कर लम्बी - लम्बी सांस लेने लगे बड़ी मुश्किल से कुछ देर के बाद उन्होंने अपने को सम्भाला और अर्जुनसिंह से बोले, " इतने दिनों तक यह तस्वीर कहां थी और आज एकाएक इसका प्रकट होना क्या

कहता है! " इसके पहिले कि अर्जुनसिंह कुछ जबाब दें किसी ने पीछे से कहा- " यही कि भूतनाथ की मौत आ गई !! " चौंककर सब लोग पीछे की तरफ घूमे और देखा कि इन्द्रदेव हैं जो इन लोगों की हालत देखकर मुस्करा रहे थे.

उनको देखते ही दलीपशाह के मुंह से एक चीख निकल पड़ी और वे बेतहाशा उनके गले से चिमटकर बोले, " प्यारे भाई, यह सब क्या तमाशा है?

"

इन्द्रदेव ने सबको शान्त करते हुए कहा, “ तमाशा नहीं, यह बिल्कुल, सही बात है मगर ताज्जुब की जरूर है.

क्या तुम उस तस्वीर को पहचानते हो?

" इसके पहले कि दलीपशाह कुछ कहें अर्जुनसिंह बोल उठे, " यह बात तो मुझसे पूछिए जो इसका बनाने वाला है! मैंने इसको बहुत अच्छी तरह पहचान लिया और सिर्फ इतना जानना चाहता हूं कि यह तस्वीर इतने दिनों तक कहा रहीं और अब कैसे प्रकट हो गई?

" इन्द्रदेव ने यह सुनकर कहा, " इस तस्वीर के प्रकट होने का हाल सुनकर ही मुझे पहले - पहल यह विश्वास हुआ कि हमारे वे प्रेमी अभी तक जीते हैं जिन्हें हम मुर्दा समझ रहे थे.

अगर वे मर गए होते तो यह तस्वीर भी नष्ट हो गई होती! " अर्जुनसिंह ने कहा, " इसमें क्या शक है, मगर अब आप देरी न कीजिए और यह बताइए कि आपने किन - किन बातों का पता लगाया और हमारे कौन - कौन - से प्रेमी पुनः हमारे सामने आना चाहते हैं?

" !! इन्द्रदेव ने मुस्कराते हुए कहा, " यही बात बताने और इस मामले में आप लोगों की मदद लेने के लिए ही तो मैंने आप लोगों को बुलाया था मगर इस तरह खड़े - खड़े बात करने से काम न चलेगा.

आइए, बैठ जाइए तब गौर से मेरी बात सुनिए इन्द्रदेव उसी जगह बिछावन पर बैठ गए और ताज्जुब, उत्कण्ठा और खुशी में डूबते - उतराते हुए दलीपशाह और अर्जुनसिंह

उनके सामने जा बैठे.

गिरिजाकुमार भी कुछ हटकर एक तरफ बैठ गया और ताज्जुब करता हुआ राह देखने लगा कि देखें कौन - सा आश्चर्यजनक भेद उसे सुनाई पड़ता है.

पांचवा व्यान।

नौकरों की जुबानी यह सुनकर कि भूतनाथ एक कुएं के अन्दर कूद गया, दारोगा उठा और तेजी के साथ उसी तरफ रवाना हुआ.

कंटीले पेड़ों और गुंजान झाड़ियों के बीच की पेचीली पगडंडियों पर से चक्कर लगाते हुए दारोगा ने बहुत जल्द उस जंगल को समाप्त किया जिसमें वह मनोरमा के साथ बैठा बातें कर रहा था और तब सीधा उस पहाड़ी की तरफ बढ़ा जो वहां से दिखाई पड़ रही थी और जिसका नाम उसने लुटिया पहाड़ी बताया था.

सचमुच ही दूर से देखने से यह पहाड़ी गोलमटोल बिल्कुल एक लुटिया की शक्ल की दिखाई पड़ती थी और यह समझ में नहीं आता था कि इसके ऊपर जाने का रास्ता किधर से होगा, मगर पथरीले ढोकों और चट्टानों के अगल - बगल से घूमता फिरता दारोगा बहुत जल्दी उसकी आधी से ज्यादा ऊंचाई पार कर गया.

जिस समय वह एक बड़े इमली के पेड़ के पास से होकर जा रहा था उसी समय उसकी आड़ से एक आदमी बाहर निकल आया और दारोगा को सलाम करके बोला, " बहुत अच्छा हुआ जो आप आ गए! हम लोग तो डर और घबराहट से परेशान हो यही सोच रहे थे कि क्या करें क्या न करें! " दारोगा ने पूछा, “ क्यों क्या बात है?

" जिसके जबाब में वह बोला, “ हम दोनों आदमी भूतनाथ का पीछा करते हुए यहां तक आ पहुंचे थे कि यकायक वह (हाथ से बताकर) उस कुएं की जगत पर चढ़ गया और एक निगाह अंदर झांकने के बाद उसी में कूद पड़ा.

कूदने के साथ ही कुएं के अन्दर से तरह - तरह की आवाजें आने लगी.

हम लोग इस डर से कुएं पर न गए कि शायद यह कुआं तिलिस्मी हो और उस पर जाने में कोई खतरा हो या भूतनाथ ही वहां किसी तरह हम लोगों को न देख ले.

आखिर मैंने महावीर को आपकी तरफ भेजा और खुद यहां छिपा बैठा हुआ हूं.

अब आप आ गए, अब जो मुनासिब समझें, किजे ! " उस आदमी ने मुश्किल से अपनी बात खत्म ही की होगी कि यकायक एक डरावनी आवाज जो किसी शेर की गरज की तरह मालूम होती थी चारों तरफ फैल गई.

यह आवाज उसी कुएं की तरफ से आती मालूम हो रही थी जिधर बताकर वह आदमी फिर बोला, " वह देखिए, फिर आवाज आई, रह - रहकर इसी तरह की आवाजें कुएं के अन्दर से आ रही हैं.

" दारोगा यह सुनकर बोला, " कोई हर्ज नहीं, मैं इस आवाज को पहचानता हूं और जब चाहूं इसे बन्द कर सकता हूं.

तुम दोनों इसी जगह रहो और चारों तरफ की आहट लेते रहो, मुझे थोड़ी देर के लिए उस कुएं के अन्दर उतरना पड़ेगा.

"

वह आदमी बोला, " मगर सरकार, वह कुआं तो बड़ा खतरनाक मालूम होता है.

" जिसे सुन दारोगा ने जवाब दिया, " नहीं, नहीं, सो बात नहीं है रघुनाथ, मैं जान - बूझकर किसी तरह के खतरे में पड़ने वाला आदमी नहीं हूं, यह तुम अच्छी तरह जानते हो.

तुम बेफिक्री से यहां रहो, मैं बहुत जल्ही वापस लौटूंगा.

" अपने बदन का कुछ फाजिल और बोझ बाला सामान दारोगा ने उसी जगह छोड़ा और तब कुएं की तरफ बड़ा जिसकी पनी जगत उस जगह से कुछ - कुछ दिखाई पड़ रही थी.

छोटी - छोटी तीन - चार सीढ़ियों पर से होता हुआ दारोगा जगत पर चढ़ गया और आहिस्ता से चलता हुआ कुएं के पास पहुंचा.

वहां पहुंच वह जमीन पर लेट गया और तब कुएं के अन्दर से सिर बढ़ा भीतर झांकने लगा.

कुआं पहाड़ी के कारण बहुत ही गहरा था और उसके अन्दर के पानी की कोई आहट यहां से मिल न रही थी मगर जिस चीज ने दारोगा का ध्यान अपनी तरफ खींचा वह एक बहुत ही हल्की रोशनी थी जो कुएं की गहराई के बीचोंबीच में दिख रही थी.

बहुत गौर करने पर मालूम हुआ कि कुएं की गहराई का लगभग आधा फासला तय करने पर वहां की दीबार कुछ टूटी हुई - सी नजर आती है और एक गड्डा - सा दिखता है जिसके अन्दर से वह रोशनी की आभा निकल रही है.

बहुत देर तक देखते रहने पर यह भी दिखा कि इस कुएं में ऊपर से नीचे तक थोड़ी दूर पर लोहे की कड़ियां लगी हुई है जिनकी मदद से नीचे उतरा जा सकता है.

कुछ देर दारोगा अपने चारों तरफ कुएं के अन्दर की आहट लेता रहा और जब कहीं से कोई खतरा नजर न आया तो उन्हीं कड़ियों को पकड़ धीरे - धीरे नीचे उतरने लगा.

अभी दारोगा दो ही गज नीचे उतरा होगा कि उसे छेद के अन्दर से आती हुई रोशनी की आभा कुछ हिलती - सी जान पड़ी और साथ ही फिर उसी तरह की एक डरावनी आवाज कुएं के अन्दर से आई, मगर दारोगा ने उस पर कुछ ख्याल न किया और बेधड़क नीचे उतरता हुआ बहुत जल्द ही उस जगह के पास जा पहुंचा जहां से रोशनी बेधड़क निकल रही थी.

लोहे की कड़ियां उस जगह के बिल्कुल पास से ही आती हुई नीचे पानी तक चली गई थीं.

दारोगा इस छेद के पास पहुंचकर रुक गया और तब उसने देखा कि उस जगह बड़े आले की तरह का एक गड्डा कुएं की दीवार में बना हुआ है जो यद्यपि बाहर से तो छोटा है मगर भीतर से खूब प्रशस्त और दूर तक गया हुआ जान पड़ता है.

जरा - सी कोशिश में दारोगा कड़ियां छोड़ इस ताक में उतर गया और तब कुछ दूर तक अन्दर चला गया जहां वह रास्ता फैल के तथा लम्बा, ऊंचा और गहरा होकर किसी सुरंग की शक्ल में बदल गया था.

दारोगा इस मोड़ तक पहुंचा और यहां उसने एक विचित्र दृश्य देखा.

इस जगह सुरंग बढ़कर एक चौड़ी और एक ऊँची कोठरी की शक्ल में हो गई थी जिसके बीचोबीच के छोटे - से चबूतरे पर लाल रंग की एक मूरत बैठी थी.

उस मूरत के सामने एक मोमबत्ती जमीन पर खड़ी जल रही थी जिसकी महिम रोशनी चारों तरफ फैल रही थी और इसमें कोई शक नहीं कि इसी की आभा को दारोगा ने कुएं के ऊपर से देखा था.

इस रोशनी ने उस कोठरी के चारों तरफ कोने में बैठाये हुए और शायद किसी धातु के बने चारों शेरों की शक्ल दिखाई जो कुछ अजीब ढंग के थे और न - जाने किस ताकत से असली जानवरों की तरह हरकत कर रहे थे.

दारोगा के देखते - देखते एक ने मुंह खोलकर जम्हाई ली और तब अपने गले से एक गुर्राहट की डरावनी आवाज निकाली जो इस बन्द जगह में गूंज गई.

आवाज के साथ - ही - साथ उसके मुंह से आग की एक लपट निकली जो बहुत डरावनी मालूम होती थी, मगर दारोगा ने उस पर कोई ख्याल न किया, वह बेधड़क शेर के पास चला गया और उसके कान के पास हाथ रखकर कोई खटका ऐसा दबाया कि जिसके साथ ही उसका खुला हुआ मुंह बन्द हो गया और वह अपनी जगह चुपचाप बैठ गया.

दारोगा वहां से हटा और घूमकर उस मूरत के पीछे की तरफ पहुंचा.

जो सुरंग कुएं से यहां तक आई थी वह इस मूरत के पीछे से होती हुई फिर आगे को निकल गई थी.

दारोगा इसी तरफ बड़ा मगर दो - चार कदम से ज्यादा न गया होगा कि भीतर से घनघोर अन्धकार में से उसे किसी के पैर की आहट सुनाई पड़ी.

उसने दबी जुबान से कहा, " मालूम होता है, कम्बख्त भूतनाथ लौट रहा है.

अफसोस मैं यह न देख पाया कि उसने किताब कहाँ छिपाई है " और तब पिछले पांव लौट उस मूरत के सामने की तरफ आकर खड़ा हो गया.

उसके कुछ ही देर बाद एक आदमी उस अंधेरी सुरंग में से आता हुआ दिखाई पड़ा और जब वह घूमकर मोमबत्ती की रोशनी में आया तो दोनों ने एक दूसरे को पहचाना,

यह आने वाला सचमुच ही भूतनाथ था जो दारोगा को इस जगह खड़ा देखते ही चौंक पड़ा.

उसकी भृकुटी चढ़ गई और हाथ खंजर की मूठ पर पहुंचा, मगर दारोगा उसे देखते ही बड़े दोस्ताना ढंग से आगे बढ़ा और उसे गले से लगाता हुआ बोला, " ओफ मेरे दोस्त, क्या तुम सचमुच गदाधरसिंह ही हो या मेरी आँखें धोखा दे रही हैं! " भूतनाथ ने कुछ घृणा की मुद्रा से अपने को दारोगा से अलग किया और कहा, " नहीं, मैं सचमुच गदाधरसिंह हूं और यह जानना चाहता हूं कि आप कितनी दूर से मेरा पीछा कर रहे हैं जो अब यहां भी आ पहुंचे तथा अब आप मेरे साथ क्या सलूक करना चाहते !! दारोगा:

(अफसोस की मुद्रा से) तुम्हारा ढंग तो अजीब बेरुखी का हो रहा है मेरे दोस्त! मैं तो तुम्हें देखकर बेतरह खुश हुआ क्योंकि मुझे यह खबर लगी थी कि लोहगड़ी में जो दुर्घटना हुई उसके सबब से उस खूबसूरत इमारत के साथ तुम्हारा भी इस दुनिया से नाम - निशान उठ गया.

इस वक्त मुझे यह देख बेहद खुशी हुई कि वह खबर गलत थी और ईश्वर की कृपा से तुम जीते - जागते और तंदरुस्त हो मगर तुम्हारा रंग - ढंग मेरी खुशी को अफसोस में बदल रहा है.

भूत:

बेशक आपको अफसोस हो रहा होगा कि आपकी चाल व्यर्थ गई और मैं जीता - जागता बच गया .

.

दारोगा:

मेरी चाल?

क्या तुम मुझ पर किसी तरह का इलजाम लगा रहे हो?

भूत:

बेशक क्योंकि आपके ही कहने से मैं लोहगड़ी में गया था! दारोगा:

तो क्या मेरी खबर झूठ निकली?

क्या तुमने वहां नन्हों और गौहर वगैरह को मौजूद और अपने बर्खिलाफ साजिश करते हुए नहीं पाया?

भूत:

जरूर पाया, सिर्फ उन्हीं को नहीं, बल्कि उनके साथ - साथ आपकी मुन्दर को भी मैंने वहां देखा और मुझे इस बात की खुशी है कि और सबों के साथ मैं उसको भी मिट्टी में मिला सका, जिससे वह आपका षड्यन्त्र व्यर्थ हो गया और अब मुमकिन है कि बेचारे गोपालसिंह और बलभद्रसिंह की जान बच जाए.

नहीं, मेरे कहने का मतलब यह नहीं था कि

आपकी दी हुई खबर गलत थी, बल्कि यह था कि आपने मुझे बहुत गहरा धोखा दिया जो यह नहीं बताया कि उस कम्बख्त इमारत में आपने बारुद का खजाना भी इकट्ठा कर रखा है.

अगर मैं इस बात को जानता तो न उस इमारत के सत्यानाश होने का कारण ही बनता और न मेरी जान ही खतरे में पड़ती! दारोगा:

(जोर से हंसकर) ओह, अब मैं समझा! तुम शायद यह समझ रहे हो कि मैंने उस जगह बारुद का खजाना इकट्ठा किया और सो भी तुम्हें नुकसान पहुंचाने की गरज से! (फिर हंसकर) मगर वाह, तुम भी कैसे शकी और कितने भुलक्कड़ आदमी हो! तुम तो पहले उस इमारत में जा चुके हो! मर्दे आदमी, बारुद तो न - जाने कितने बरसों से उस जगह इकट्ठी है! तुम तो पहले उस इमारत में जा चुके हो, क्या तुम्हें याद नहीं कि एक मुद्दत से वहां की कई कोठरियां इसी तरह के सामानों से भरी हुई हैं?

भला मुझे वहां बारूद रखने की गरज ही क्या थी और मैं ऐसा करता ही क्यों?

और फिर यह तो सोचो कि उस बारुद में आग किसने लगाई?

क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हें खुद वहां भेजा और जब तुम गए तो तुम्हारे पीछे - पीछे जाकर बारुदखाने में आग लगा दी! अगर ऐसा होता तो भला मैं जीता क्योंकर

बचता?

भूत:

नहीं, नहीं, आग तो मेरी गलती से लगी.

मैंने वहां एक ऐसी डरावनी चीज देखी कि घबराहट में हाथ की मशाल इस बारूद पर ही फेंक दी.

दारोगा:

ठीक है, ऐसे ही किसी तरह की दुर्घटना का खयाल मैं भी कर रहा था क्योंकि मेरी समझ में यह न आ रहा था कि आखिर लोहगड़ी उड़ क्यों गई?

अब मालूम हुआ कि तुमने अपने हाथ से ही खुद वह काम किया था, मगर तब फिर तुम मुझ पर क्यों खफा हो?

मुझ पर क्यों इलजाम लगा रहे हो?

भूत:

इसलिए, कि अगर आपने वहां बारूद इकट्ठी न कर रखी होती तो इतनी बड़ी दुर्घटना न घटती और न मेरी जान ही जोखिम में पड़ती.

दारोगा:

मेरे दोस्त, मैं तुमसे बार - बार कह चुका हूँ कि तुम्हारी याददाश्त तुम्हें धोखा दे रही है और वह बारूद वहां बहुत पहले से इकट्ठी है.

अगर तुम्हें विश्वास न हो तो तुम हेलासिंह से पूछ सकते हो.

भूत:

खैर जो कुछ भी हो, मगर अब आप मुझसे क्या चाहते हैं.

दारोगा:

तुम्हारी एक - एक बात से शक टपकता है.

खैर इसमें तुम्हारा कसूर नहीं, तुम्हारा मिजाज ही ऐसा है.

इस समय भी तो तुम यही समझ रहे हो कि मैं तुम्हारा पीछा करता हुआ आ पहुंचा हूं,
भूत:

बेशक मेरा यही ख्याल है! आपके इस बेवक्त यहां आने का और कारण भी क्या हो सकता है?

दारोगा:

जरूर एक कारण है और वह ऐसा है कि जिससे तुम्हारा भी बहुत गहरा संबंध है। भूत:

क्या मैं उसे सुनने लायक हूं.

दारोगा:

जरूर मगर पहले यह बता चुकने के बाद कि तुम यहां क्यों आए और क्या कर रहे हो?

भूत:

मेरे आने का कारण तो सीधा है.

मैं दुश्मनों के डर से भागता हुआ यहां आकर छिप गया था और अब तक सब डर दूर न हो जाए तब तक यहीं रहने का विचार था मगर अब आप आ गए तो कोई बात नहीं, शायद मैं आपके साथ ही यहां से लौट चलूँ! दारोगा:

(जोर से हंसकर) भूतनाथ और दुश्मनों के डर से छिपता फिरे! क्या तुमने मुझे इतना बड़ा बेवकूफ समझा है कि मैं इस बात पर विश्वास कर लूंगा?

भूत:

नहीं, मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूं.

दारोगा:

अगर ठीक है तो और भी बड़े ताज्जुब की बात है.

ऐसा कौन तुम्हारा दुश्मन निकल आया जरा मैं भी नाम सुनूं.

भूत:

राजा वीरेन्द्रसिंह के कई ऐयार मेरा पीछा कर रहे हैं जिनमें से दो ऊपर वाली पहाड़ी तक मेरे पीछे - पीछे चले आए, लाचार उनसे अपना पिण्ड छुड़ाने और कुछ देर सुस्ताने के लिए इससे अच्छी और कोई तरकीब मुझे न मिली कि यहां आ छिपू.

दारोगा:

राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार और तुम्हारा पीछा कर रहे हैं?

मगर सो क्यों?

भूत ०:

(कुछ हिचकिचाहट के साथ) सो सब पूंछ के आप क्या किजे गा?

दारोगा:

यह न समझो कि मैं केवल कौतूहलवश ये सब बातें पूछ रहा हूं.

सच तो यह है कि मुझे भी उड़ती - उड़ती खबरें लगी हैं और इसी से मैं असल माभला जानने को उत्सुक हूं.

भूत:

आपने क्या सुना है?

दारोगा:

तुम चाहे मुझसे अपनी बातें छिपाओ मगर मुझे साफ - साफ कह देने में कोई हर्ज नहीं मालूम होता है.

मैंने यह सुना है कि तुमने राजा बीरेन्द्रसिंह के महल से रिक्तगन्थ चुराया था मगर कोई आदमी तुम्हें उल्लू बना उसे तुम्हारे कब्जे से निकाल ले गया.

वह आदमी कौन था इसके बारे में भी कुछ खबर लगी है मगर अभी मैं कुछ निश्चित रूप से नहीं कह सकता.

भूत:

(ताज्जुब से) खैर कुछ तो बताइए कि वह कौन था?

दारोगा:

अगर सुनना ही चाहते हो तो सुन लो, मगर यह जाने रहो कि इसकी सच्चाई का मैं कोई दावा नहीं करता, केवल सुनी - सुनाई बात कहता हूं.

भूत ०:

खैर कुछ भी कहिए.

दारोगा:

सुनो, तुम्हारे कब्जे से रिक्तगन्थ ले जाने वाला दलीपशाह था.

भूत:

दलीपशाह! (कुछ गौर से) नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता.

बेचारे दलीपशाह को आप इस मामले में व्यर्थ घसीटते हैं, उसको भला उस किताब से क्या मतलब हो सकता है?

दारोगा:

तुम्हें असली बात की खबर ही नहीं है तभी ऐसा कह रहे हो.

दलीपशाह को उस किताब की बहुत सख्त जरूरत है और जहां तक मेरा ख्याल जाता है उसके सिवाय और किसी की वह कार्रवाई हो ही नहीं सकती.

भूत:

नहीं, नहीं, यह आप मुझसे धोखा देने के लिए कहते हैं.

रिक्तगन्थ की जरूरत अगर किसी को है तो आपको और अगर किसी की यह कार्रवाई हो सकती है तो आपकी.

मगर आप यह न समझिए कि मैं इस मामले में ठंडा पड़ जाऊंगा.

नहीं - नहीं, मैंने अपने जासूस चारों तरफ छोड़े हुए हैं और जिस समय मुझे विश्वास हो जाएगा कि आप ही ने धोखा देकर रिक्तगन्थ मुझसे छिनवा लिया है मैं आपके साथ इस तरह पेश आऊंगा कि आप भी समझिएगा कि भूतनाथ से पाला पड़ा था.

देखिए दारोगा साहब, अभी तक मैं जान - बूझकर तरह दिया जाता था.

मगर अब आप साफ सुन लीजिए कि इस मामले में मुझे पूरा शक आपके ऊपर है और दृढ़ निश्चय है कि आप ही ने धोखा देकर यह कार्रवाई मेरे साथ की है.

अगर आप कुशल चाहते हैं तो अब भी साफ - साफ अपनी कार्रवाई मंजूर करके मेरी चीज मेरे हवाले कर दीजिए नहीं तो याद रखिए कि भूतनाथ सहज में पिण्ड छोड़ने वाला आदमी नहीं है, जरूरत पड़ने पर वह मौत के घर में जाकर वहां से भी अपना भेद निकाल लाता है.

आपकी बेईमानी भी छिपी न रहेगी, जरूर कभी - न - कभी प्रकट होगी और जब प्रकट होगी तो फिर भगवान ही आपको बचावे मनुष्य में आपको बचाने की सामर्थ्य नहीं, सो आप अच्छी तरह समझिए, दारोगा:

(जिसका चेहरा भूतनाथ की बातें सुन कुछ फीका पड़ गया था) भूतनाथ तुम व्यर्थ ही मुझ पर शक कर रहे हो.

मैं तुमसे बार - बार और जोर देकर कहता हूं कि अगर तुम वह किताब लाकर मुझे दो तो लाख दो लाख ग्या मुंह मांगा इनाम तुम्हें दे सकता हूं मगर फिर भी मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुम्हारे कब्जे से रिक्तगन्थ ले लेने वाला मैं नहीं हूं, मुझे इस मामले की कोई खबर नहीं थी और जो कुछ मेरे जासूसों ने मुझसे कहा सिर्फ उतना ही मैं जानता हूं, हां इतना मैं जोर देकर कह सकता हूं कि इस मामले से दलीपशाह का संबंध जरूर है और अगर तुम जांच करोगे तो जरूर असलियत तक पहुंच जाओगे.

भूत:

आप लाख सफाई दें मगर मैं कदापि न मानूंगा कि आप इस मामले में एकदम बेकसूर हैं, हां, मैं तब तक कोई कार्रवाई न करूंगा जब तक कि पूरी - पूरी खबर न पाऊंगा, इतना आप विश्वास रखिए, क्योंकि मैं जानता हूं कि आप मुझसे भागकर कहीं जी नहीं सकते.

फिर यह तो मुझे विश्वास है कि दो - चार रोज के अन्दर जो कुछ सही - सही माभला है और जिस किसी की भी वह कार्रवाई है वह मुझ पर जाहिर हो जाएगी.

अस्तु आप अपनी कुशल चाहते हों तो अब भी साफ कह दीजिए वरना मर्जी आपकी, और आप जो बार - बार दलीपशाह का नाम लेते हैं सो बिल्कुल व्यर्थ है, मैं खूब जानता हूं कि मेरे साथ वह और जो कुछ भी करे या कर चुका हो, मगर इस रिक्तगन्थ वाले मामले में बिल्कुल बेकसूर है.

रिक्तगंथ की उसे कोई जरूरत न थी और न है बल्कि उसने शायद इसका नाम भी न सुना होगा.

दारोगा:

यही तो तुम्हारे सोचने की भूल है.

तुमको इधर का हाल कुछ मालूम ही नहीं है और न यही जानते हो कि दलीपशाह को उस किताब की जरूरत क्यों पड़ गई! भूत:

मुझे तो मालूम नहीं, अच्छा तो आप ही वह बात मुझे बता दीजिए, दारोगा:

हां सुनो, लेकिन जो कुछ भी मैं कहूं गौर से सुनो और अपनी अक्ल से जांच कर तब तय करो कि जो मैं जो कहता हूं वह सही है या नहीं.

(धीरे से और भूतनाथ के कान के पास मुंह ले जाके.

) तुम्हें मालूम ही होगा कि लोहगड़ी वाला तिलिस्म टूट रहा है.

भूत:

हां, आप यह बात मुझे कह चुके हैं.

दारोगा:

अच्छा तो अब सुन लो कि वह तिलिस्म टूट गया और उसके अंदर कई ऐसे कैदियों का पता लगा जिनको अब तक हम लोग मुर्दा समझे हुए थे.

भूत:

वे कौन?

दारोगा:

उनके नाम भी बताता हूं.

इतना कह दारोगा भूतनाथ के और पास हो गया और उसके कान में धीरे - धीरे कुछ कहने लगा.

हम कह नहीं सकते कि उसने क्या कहा, मगर जो कुछ भी कहा उसे सुनते ही भूतनाथ का चेहरा फक हो गया और उसकी शक्ल से मुर्दनी टपकने लगी.

वह घबराकर कई कदम पीछे हट गया और बेचैनी के साथ दारोगा का मुंह देखता हुआ बड़ी मुश्किल से बोला, “ क्यां जो कुछ आप कहते हैं वह सही है?

" दारोगा:

बिलकुल सही है ।

भूत:

मगर ऐसा कैसे हो सकता है.

ये लोग किस तरह अभी तक जीते ही रह सकते हैं! (सिर हिलाकर) नहीं, नहीं, या तो आपको गलत खबर लगी है और या आप मुझे धोखा देना चाहते हैं.

दारोगा:

(हंसकर) ताज्जुब की बात है कि मेरा इस मामले से जो संबंध है उसको जानते हुए भी तुम यह कहते हो कि मुझे गलत खबर लगी है.

मैं जो कुछ कह रहा हूं विश्वास रखो कि वह बिल्कुल सही है और जिनके नाम मैंने तुमसे लिए वे लोग जीते - जागते मौजूद हैं मगर खैरियत इतनी ही है कि अभी तक वे तिलिस्म के अन्दर ही बन्द हैं, तुम्हें अब विचार करने की बात सिर्फ इतनी ही रह जाती है कि इस खबर को जब दलीपशाह सुनेगा तो उस पर क्या असर होगा और वह रिक्तगन्थ पाने के लिए व्याकुल हो जाएगा या नहीं?

भूत:

(कुछ देर तक सोचकर) वेशक अगर यह खबर सही हो और दलीपशाह के कानों तक पहुंच भी गई हो तो लोगों को छुड़ाने के लिए वह सब कुछ कर सकते हैं, फिर भी यह

सोचना कठिन है कि वह रिक्तगन्थ मुझसे छीन कर अपना काम निकालना चाहता है ।

दारोगा:

तुमने सब तरह से मुझे झूठा ही मान लेने का अगर निश्चय कर लिया हो तो बात ही दूसरी है वरना कोई भी बुद्धिमान् आदमी जिसे तुम्हारी तरह सब बातों की खबर हो सिवाय इसके और किसी नतीजे पर पहुंच ही नहीं सकता कि रिक्तगंथ को तुम्हारे कब्जे से ले लेने की सबसे बड़ी जरूरत इस वक्त दलीपशाह को है.

खैर मर्जी तुम्हारी, जितना कुछ मैं जानता था वह मैंने तुमसे कह दिया, उसके बारे में अगर जांच करोगे तो तुम्हें खुद मालूम हो जाएगा कि मैं बिल्कुल बेकसूर हूं.

इसमें शक नहीं कि दारोगा की चलती - फिरती बातों ने भूतनाथ को एकदम चक्कर में डाल दिया.

अब तक के सोच - विचार के बाद वह इसी नतीजे पर पहुंचा था कि उसके कब्जे से रिक्तगंथ छीन लेना सिवाय दारोगा के और किसी का काम हो नहीं सकता मगर इस समय जो - चार बातें दारोगा ने कहीं उन्होंने उसका दिमाग फिरा दिया और वह कुछ दूसरे ही सोच में पड़ गया! यकायक बिना कोई सबूत हाथ में आए वह दारोगा के खिलाफ कोई कार्रवाई करना नहीं चाहता था और यद्यपि अभी थोड़ी देर पहले उसने यह निश्चय कर रखा था कि दारोगा से भेंट होते ही चाहे जिस तरह से भी हो उसके पेट से यह बात निकाल लेगा कि रिक्तगंथ के मामले में उसका हाथ है मगर इस जगह उसे पाकर भी वह यकायक कोई कार्यवाही नहीं कर सकता था, क्योंकि वह इस बात को बखूबी समझता था कि बिना पूरी मजबूती किए दारोगा कदापि इस जगह आया न होगा! आखिर सब तरह की बातें सोच इस समय मौका बचा जाना ही उसने मुनासिब समझा और अपने मन को यह तसल्ली देकर कि आखिर यह ' वन का गीदड़ जाएगा किधर ' वह दारोगा से दूसरे ढंग की बातें करने लगा.

भूत:

क्या आपके पास इस बात का कोई सबूत है कि दलीपशाह को रिक्तगंथ का हाल मालूम है और वह उसकी मदद से अपना काम निकालना चाहता है?

दारोगा:

इसमें भी क्या किसी सबूत की जरूरत है?

दलीपशाह को रिक्तगंथ के बारे में तुमसे कहीं ज्यादा हाल मालूम है और खुद तुम कई दफे यह बात मुझसे कह चुके हो कि अगर दलीपशाह के हाथ में रिक्तगंथ पड़ जाए तो वह गजब कर दे.

भूत:

क्या ऐसा मैंने कहा था?

शायद कहा हो, मुझे याद नहीं पड़ता.

सच तो यह है कि तरह - तरह के तरदुदों ने इस समय मेरा माथा फिरा दिया है और मैं आप में नहीं हूं, दारोगा:

(बनावटी सहानुभूति के स्वर में) बेशक तुम्हारे चेहरे से परेशानी और बदहवासी जाहिर होती है.

मैं तो तुम्हें यह राय दूंगा कि तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें शान्ति की एक जगह ले जाकर बैठा दूंगा, जब तक तुम्हारा मन चाहे वहां रहना.

वहां किसी तरह का कोई खतरा तुम्हारे पास फटक नहीं सकता और तुम पूरे आराम से अपना समय काट सकते हो (कुछ मुस्कराकर) अगर तुम चाहो तो तुम्हारे आनन्द का साधन भी वहीं जुटा सकते हो.

भूत ०:

(कुछ सोचता हुआ) ऐसी कौन - सी जगह है?

दारोगा:

वह एक बाग है जो असल में तो तिलिस्म का ही हिस्सा है, मगर बाहर की तरफ होने के कारण वहां तक की आवाजाही बहुत मुश्किल नहीं है.

तुम्हारा कोई दुश्मन वहां फटक नहीं सकता.

जिसको तुम वहां का रास्ता बताओगे केवल वही तुम्हारे पास पहुंच सकेगा और या फिर मैं आ - जा सकूंगा कहो ऐसी जगह रहना तुमको मंजूर है?

अगर चाहो तो मैं अपने साथ ले जाकर अभी वह जगह तुम्हें दिखा दूं, कारण वह यहां से बहुत दूर भी नहीं है.

स्थान इतना रमणीक और सुन्दर है कि मैं तो समझता हूं कि देखते ही तुम मोहित हो जाओगे और वहां से आने की इच्छा न करोगे.

दारोगा की इस बात ने भूतनाथ को एक नए सोच में डाल दिया वह वास्तव में खुद एक ऐसी जगह की तलाश में था जहां लोगों की निगाहों से बच कर कुछ दिन आराम और शान्ति से रह सके क्योंकि उसे राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का बहुत खौफ हो रहा था और बराबर यही डर बना रहता था कि न जाने कब वह मिट्टी सूंघते और रिक्तगंध की खोज लगाते हुए उसके पास पहुंच उसकी दुर्गति कर डालें.

वह अपनी जान - पहचान की लामा घाठी, पिपलिया घाठी, तिलिस्मी गुफा तथा और बहुतेरी अन्य जगहों की बात सोच चुका था मगर किसी - न - किसी तरह का ऐव सभी जगहों में पाकर वहाँ छिपने का ख्याल न करता था.

शायद दारोगा सचमुच ऐसी कोई जगह उसे बता दे जहां वह छिपकर आराम से रह सके और उसके दुश्मन पास न फटक सकें, यह विचार उसके मनोनुकूल था.

अस्तु बहुत सोच - विचार के बाद वह बोला, " वास्तव में मैं एक ऐसी जगह की तलाश में तो जरूर हूं जहां कुछ दिन लोगों की निगाह से बचकर रह सकूं मगर मालूम नहीं, आप किस जगह का जिक्र कर रहे हैं और जिसे तिलिस्मी भी बता रहे हैं वह मेरे काम की कहां तक सिद्ध होगी?

दारोगा:

इसकी जांच करना तो कोई मुश्किल नहीं! यहां से मुश्किल से घण्टे - भर के रास्ते पर वह जगह होगी.

तुम इसी समय मेरे साथ चलो और इस जगह को देख लो, पसन्द आवे तो वहां रुक जाना नहीं वापस लौट आना.

जो चाहो तो अपना कोई विश्वासी आदमी या शागिर्द भी अपने साथ लेते चलो मगर वह ऐसा होना चाहिए जो तिलिस्मी रास्तों को गुप्त रख सके.

दारोगा के इस प्रस्ताव ने कि ' अगर जो चाहो तो अपना कोई शागिर्द भी साथ लेते चलो ' भूतनाथ का रहा - सहा शक़ भी दूर कर दिया.

अभी तक चाहे उसके मन में यह ख्याल रहा भी हो कि शायद दारोगा अपने किसी गुप्त स्थान में उसे बन्द करके अपना कोई मतलब निकालना चाहता है मगर उसकी इस बात ने इस शक की जगह भी न छोड़ी और उसने सोचा कि मेरे शागिर्द के साथ रहते शैतानी करने की दारोगा को क्या हिम्मत पड़ सकती है.

जल्दी - जल्दी उसने कई बातें सोची और तब दारोगा से बोला, “ बहुत अच्छा, मैं आपके साथ चलने को तैयार हूं, अगर कोई निराली और गुप्त जगह हुई तो मैं जन्म - भर आपका अहसान मानूंगा मगर अपने दो शागिर्दो को मैं उस जगह तक जरूर ले चलूंगा! " दारोगा ने हंसकर जवाब दिया, " तुम्हारे मन से शक कभी दूर नहीं होगा.

खैर दो ही लेते चलो मगर यह भी समझ लो कि वह स्थान तिलिस्मी है और वहां आने - जाने का रास्ता पेचीदा है, थोड़ी सी भूल करने से ही आदमी भटक और तकलीफ उठा सकता है.

अच्छा, मेरे साथ आओ.

" कहकर दारोगा घूमा और बाहर की तरफ चला तथा भूतनाथ ने भी उसके पीछे कदम बढ़ाया.

मगर यकायक इन दोनों ही के पैर रुक गए.

हम पहले लिख आए हैं कि जिस कोठरी में ये दोनों इस समय थे उसके बीचों बीच में एक चबूतरे पर लाल रंग की मूरत बैठी हुई थी और कोठरी के चारों कोने में चार शेर किसी धातु के बने बैठे थे, जिस समय दारोगा इस मूर्ति के बगल में से होकर निकला यकायक इस मूर्ति के मुंह से आवाज आई- " उहो, उहो! " इस आवाज ने जो डरावनी और गूंजने वाली थी इन दोनों के ही पैर रोक दिए और दोनों आदमी घबराहट के साथ उस मूरत की तरफ देखने लगे कुछ ही सायत बाद वह मूरत फिर बोली, “ मेरी एक - दो बातों का जवाब देकर तब तुम लोग यहां से जाओ.

" दारोगा और भूतनाथ ने एक - दूसरे की तरफ ताज्जुब भरी निगाहों से देखा.

यह सम्भव हो सकता है कि आज के पहले भी दोनों ने इस मूरत को देखा हो, पर बोलते अभी तक कभी न देखा था और यही सबब उनकी घबराहट का था.

आखिर बहुत कुछ सोच - विचार कर दारोगा ने कहा, " तुम कौन हो और क्या कहना चाहते हो?

"

उस मूरत के गले से डरावनी आवाज निकली, " मैं इस जगह का पहरेदार हूं.

बिना मेरी इजाजत के कोई न तो यहां आ और न यहां से जा सकता है.

" दारोगा एक सूखी हंसी हंसकर बोला, " तुम चाहे जो भी हो मगर मैं भी इस तिलिस्म का दारोगा हूं और इसलिए खूब जानता हूं कि ऐसा कोई पहरेदार तिलिस्म का पैदा नहीं हुआ जो मेरी आवाजाही को रोक सके! " मूरत डरावनी हंसी हंसकर बोली, " जब तुम ऐसी बातें कहते हो तब मुझे जांच कर देखना पड़ेगा कि तुम सचमुच इस तिलिस्म के दारोगा हो या नहीं और अगर हो तो क्या कुदरत रखते हो, अच्छा देखो! " " अच्छा देखो " कहने के साथ ही उस मूरत के मुंह से आग का एक फब्बारा - सा निकल पड़ा जिसकी चमकदार चिनगारियां उस गुफा - भर में फैल गई.

ये चिनगारियां धीरे - धीरे बढ़ने लगीं और कुछ ही देर में यहां तक बड़ीं कि वह समूची सुरंग जिसमें से होकर दारोगा और भूतनाथ को जाना था अर्थात् इस जगह से निकलकर बाहर वाले कुएं में जाने का पूरा रास्ता इन चिनगारियों से भर गया.

दोनों आदमी डर और घबराहट के साथ इस भयानक दृश्य को देखने लगे बल्कि अपनी जगह से कई कदम पीछे की तरफ हटकर मूरत की आड़ में हो गये जिसमें चिनगारियां उनके बदन को नुकसान न पहुंचा सकें.

कुछ देर इसी तरह बीत गया और तब मूरत के मुंह से यह आवाज निकलती सुनाई पड़ी, " अगर तुम सचमुच इस तिलिस्म के दारोगा हो तो यहां से बाहर निकल जाओ! " दारोगा अब तक बेचैनी के साथ यह सोच रहा था कि यह कौन - सी बला पैदा हो गई और इसके फंदे से निकलने की क्या तरक़ीब हो सकती है मगर अब अपने को सम्भालकर उसने कहा, “ बेशक यह तो मुझे विश्वास हो गया कि तुम हो चाहे जो भी पर सचमुच कुछ कुदरत रखते हो मगर अफसोस यही है कि इस वक्त मेरे पास कोई

चीज नहीं है जिसमें मैं कोई ताकत तुम्हें दिखाता मगर खैर अब तुम अपना आग का फब्बारा बन्द करो और बताओ कि तुम हम लोगों से क्या चाहते हो?

"

दारोगा की बात सुनते ही मूरत पुन:

ठठाकर हंसी और इसके साथ ही वे चिनगारियां जो उसके मुंह से बेतहाशा निकल रही थीं कम होने लगीं.

कुछ देर में वे सब कम होती गई और एकदम बन्द हो गई और अब सिवाय एक तरह के पीले धुएं के उस सुरंग में और कुछ रह न गया.

कुछ सायत बाद वह मूरत फिर बोली, " मुझे तुम दोनों आदमियों से सिर्फ कुछ बातें पूछनी हैं.

उनका जवाब देकर तुम लोग खुशी से चले जा सकते हो! " दारोगा:

अच्छा पूछो, क्या पूछना चाहते हो?

मूरत:

पहले तो तुम्हारे उस साथी से कुछ पूछूंगा जो तुमसे पहले इस जगह आया है और उसकी पोशाक और रंग - ढंग उसका कोई ऐयार होना बता रहा है.

भूत:

(जो अब तक बड़े गौर से मुरत की सब कार्रवाइयों को देख रहा था मगर जुबान से कुछ भी न बोला, कुछ आगे बड़कर) अच्छा, मुझसे ही पूछो क्या पूछते हो! मूरत:

तुम जिस चीज को खोजने आये थे वह तुम्हें मिली भूत:

(चौंककर) तुम्हें कैसे मालूम कि मैं किसी चीज की तलाश में यहां आया था?

मूरत:

(जोर से हंसकर) कह तो दिया मैं कि इस जगह का पहरेदार हूं और यहां की सब चीजों की हिफाजत करना आने जाने वालों पर निगाह रखना ही मेरा काम है.

अगर कहो तो मैं बता दूं कि तुम यहां आकर कहां - कहां गए और क्या - क्या किया ! खैर जाने दो जबकि मुझे मालूम ही है कि जिस चीज की तुम्हें तलाश थी वह तुम्हें मिल गई और तुमने उसे पुनः हिफाजत की जगह में रख दिया, तो मेरा तुमसे यह सवाल करना ही व्यर्थ है.

अच्छा यह बताओ कि अब तुम पुनः कब यहां आओगे?

भूत:

इस सवाल का भी क्या मतलब?

क्या तुमको मेरे पुनः आने में कोई आपत्ति है या तुम उसमें बाधा डालना चाहते हो?

मूरत:

(पुन:

हंसकर) नहीं, दोनों में से कुछ भी नहीं, अगर मेरा कुछ मतलब है तो बस इतना ही कि जान जाऊं कि तुम्हारा अब क्या इरादा है.

भूत:

इसको जानकर तुम क्या करोगे?

मूरत:

तुम्हारी चीज की हिफाजत! भूत:

क्यों?

क्या बिना मेरी मर्जी के उसे कोई ले जा सकता है?

मूरत:

वेशक! भूत:

सो कौन और कैसे! सो तुम खुद ही अच्छी तरह सोच सकते हो -- जिसे उस चीज की जरूरत हो और जो उसके छिपाने की जगह जानता हो! भूत ०:

क्या ऐसा भी कोई आदमी हो सकता है?

मूरत:

एक तो वहीं है जिसने तुमसे रिक्तगंथ छीन लिया.

भूतनाथ मूरत की यह बात सुनकर चुप हो गया और किसी गौर में पड़ गया.

उसके चेहरे से मालूम होता था कि मूरत की बातों ने उसे किसी गम्भीर चिन्ता में डाल दिया है.

सम्भव है कि इन बातों का कोई ऐसा गूढ़ तात्पर्य हो जो सिर्फ वही समझ सकता हो.

दारोगा पर भी मूरत की बातों का कुछ अजीब असर पड़ा था और वह भी किसी चिन्ता में पड़ गया - सा जान पड़ता था मगर साथ - ही - साथ वह कभी - कभी छिपी निगाहों से भूतनाथ की तरफ भी देखता हुआ इस बात को जानने की कोशिश कर रहा था कि मूरत की बातों का उस पर क्या असर पड़ा रहा है.

आखिर कुछ देर बाद भूतनाथ ने सिर उठाया और लम्बी सांस लेकर कहा, " तुम्हारी बातों का जो गूड़ मतलब है वह मैं अच्छी तरह समझ गया मगर जिस तरह तुमने इस बात से मुझे होशियार किया है उसी तरह क्या कुछ और भी मदद मेरी नहीं कर सकते और यह नहीं बता सकते कि मेरे हाथों से रिक्तगन्थ छीन लेने वाला कौन आदमी था?
"

मूरत:

शायद मैं यह बात तुमको बता सकू पर यह विश्वास नहीं होता कि तुमको मेरे कहे पर यकीन होगा.

भूत:

सो क्यों?

मैं समझता हूँ कि तुम जो कुछ कहोगे ठीक कहोगे.

मूरत:

शायद आगे मैं जो कुछ कहूं उस पर इतना विश्वास तुम्हें न हो.

भूत:

तो भी अगर कहने में कोई हर्ज न हो तो कह डालो.

सुनकर मैं स्वयं ही निश्चय कर लूंगा कि तुम्हारा कहना कहां तक सही है.

क्या तुमको कहने में कोई परहेज है?

मूरत:

कुछ भी नहीं! खैर तो मैं बताए देता हूं! तुम्हारे कब्जे से वह किताब ले लेने वाला वही है जो इस वक्त तुम्हारे बगल में खड़ा है !! यह एक ऐसी बात थी जिसने भूतनाथ और दारोगा दोनों ही को चौंका दिया.

भूतनाथ ने ताजुब - भरी निगाह दारोगा पर डाली और मूरत से कहा, " क्या तुम्हारा मतलब है कि इन दारोगा साहब ने मुझसे रिक्तगन्थ छिनवा लिया है! मूरत:

छिनवा लिया है न कहकर छिनवा लिया था कहना ज्यादा मौजू होगा क्योंकि यद्यपि इसके ऐयारों ने तुमसे वह किताब ले ली मगर वह उसके भी कब्जे में पहुंच न पाई, कोई तीसरा उसे उड़ा ले गया.

दारोगा अपनी सूरत पर बहुत बड़ा काबू रखे हुए था जिसमें भूतनाथ कुछ देख या समझ न पावे मगर मूरत की इस बात ने उसके चेहरे पर भी क्षण - भर के लिये बल पैदा कर ही दिया जिसे उसने एक बनावटी गुस्से के साथ यों कहकर छिपाया:

-- दारोगा:

क्यों झूठी - मूठी बातें कहकर हम दो दिली दोस्ती में झगड़ा लगाने की कोशिश कर रहे हो! तुम्हारी कोशिश का कोई नतीजा न निकलेगा क्योंकि मेरे दोस्त भूतनाथ को कभी मेरे ऊपर इस तरह का कोई शक हो ही नहीं सकता.

मैं अच्छी तरह समझ गया कि इस मूरत की आड़ में छिपे हुए तुम कोई धूर्त आदमी हो और जरूर अपना कोई मतलब साधना चाहते हो.

मूरत:

(जोर से अपनी डरावनी हंसी हंसकर) तुम चाहे जो कुछ भी समझो, उससे मेरा कुछ बिगड़े - बनेगा नहीं, फिर भूतनाथ को तुमसे झगड़ने की कोई बात भी अब नहीं रह गई है क्योंकि मैंने कह दिया कि वह किताब अब तुम्हारे कब्जे में नहीं रह गई, कहीं और ही चली गई.

खैर अब मुझे तुम लोगों से और कुछ कहना या पूछना नहीं है, तुम लोग अपने रास्ते जा सकते हो.

इतना कहकर मूरत चुप हो गई, भूतनाथ और दारोगा दोनों ही ने उससे तरह - तरह के कितने ही सवाल कीये मगर उसने फिर किसी बात का कोई उत्तर न दिया.

लाचार हो वे दोनों आदमी वहां से हटे और सुरंग के बाहर की तरफ चले.

जिस तरह से दारोगा उस सुरंग तक पहुंचा था उसी तरह से कड़ियों की मदद लेते हुए दोनों आदमी कुएं के बाहर हुए और कुएं की जगत पर पहुंचे.

रास्ते में कोई बात न हुई पर दारोगा ने जो किसी तरह की फिक्र में डूबा हुआ था यहां पहुंचकर भूतनाथ से कहा, " मेरे दोस्त, मैं नहीं समझ सकता कि उस पत्थर की मूरत के मुंह से निकली हुई ऊलजलूल बातों ने तुम्हारे दिल पर किस तरह का असर किया होगा जो जरूर किसी शैतान की शैतानी है, पर इतना अवश्य कह सकता हूं कि अगर तुम यह सोचते हो कि मैंने तुमसे रिक्तगंथ ले लिया है या ऐसा करने का इरादा भी किया है तो यह बिल्कुल गलत बात है, तुम खुशी से चलकर मेरे घर की तलाशी ले सकते हो, मेरे नौकरों से पूछ सकते हो या जिस तरह से चाहो अपनी दिलजमाई कर सकते हो.

मैं तुमसे सच कहता हूं कि मैंने उस किताब को कभी आंख से भी नहीं देखा.

" भूतनाथ यह सुन बोला, " नहीं - नहीं, दारोगा साहब, भला मैं आपकी बात पर इस कदर यकीन न करूंगा कि आपकी तलाशी लूंगा !! और फिर उस मूरत ने खुद ही जब यह कह दिया कि वह किताब आपके पास भी नहीं रही और किसी तीसरे के कब्जे में चली गई तब फिर आपसे मेरा झगड़ा ही क्या रह गया?

" दारोगा:

मगर इसके माने तो यह होते हैं कि तुम्हें मूरत की बात पर विश्वास है! खैर मर्जी तुम्हारी, अब यह कहो तुम्हारा इरादा क्या है?

मेरे साथ चल कर वह स्थान देखना चाहते हो या वह भी नहीं?

भूतः:

मैं जरूर आपके साथ चलकर वह स्थान देखूगा और अगर वह ठीक जंचा तो कुछ समय तक वहां रहूंगा भी, मगर अभी नहीं.

इस समय मेरे ध्यान में कुछ नई बातें घूमने लगी हैं जिनकी फिक्र में जाना मैं ज्यादा जरूरी समझता हूं.

अगर आपका विशेष हर्ज न हो तो मैं दो - तीन रोज बाद आपके पास आऊं और वह स्थान दिखाने के लिए कहूं, दारोगा:

कोई हर्ज नहीं, तुम जब चाहे तब आ सकते हो.

दारोगा और भूतनाथ में कुछ मामूली बातें हुई और तब दोनों आदमी अलग - अलग हो गए, मगर हम अब इस समय इन दोनों में किसी के भी साथ न चलकर पुन:

कुछ देर के लिए कुएं के अन्दर वाले उसी स्थान में पाठकों को ले चलना चाहते हैं जहां से अभी - अभी ये दोनों आ रहे हैं.

वह मूरत और उसके चारों तरफ के चारों शेर तो ज्यों - के - त्यों हैं मगर मूरत के सामने की जमीन में एक छोटे - से तहखाने का खुला हुआ मुंह दिखाई पड़ रहा है और अन्दर कुछ सीढ़ियां नजर आ रही हैं.

इन सीढ़ियों की राह आइए नीचे उतर चलें और देखें भीतर क्या हाल है.

एक छोटी कोठरी में जो लम्बाई - चौड़ाई में ऊपर वाली कोठरी के समान ही होगी मगर किसी भी तरह के सामान से बिल्कुल ही खाली है हम कुछ आदमियों को खड़े देख रहे हैं और उस मोमबत्ती की रोशनी में जो एक आले में जल रही है उनको बखूबी पहचान भी सकते हैं.

इनमें से एक तो अर्जुनसिंह हैं और दूसरे दलीपशाह, और ये दोनों ही कोठरी के बीचोंबीच में खड़े ऊपर की तरफ देख रहे जहां एक बड़ा - सा छेद इस तरह का दिखाई पड़ रहा है मानो वहां ऊपर की तरफ कोई पोली जगह या कोठरी बनी हुई हो.

अचानक कुछ खटके की - सी आवाज आई और उस छेद में से एक छोटी - सी सीढ़ी नीचे को लटक पड़ी जिस पर होता हुआ गिरिजाकुमार नीचे उतर आया और उसने इस सीड़ी को ऊपर की तरफ जोर से डक्केल दिया जिससे वह सरसराती हुई पुन:

ऊपर चली गई और तभी एक खटके की आवाज के साथ वह गड्ढा या छेद बन्द हो गया.

दोनों तरफ से दो पत्थर की सिल्लियों ने आगे बढ़कर उस मुंह को इस तरह ढांक लिया कि अब वहां की छत एकदम बराबर साफ और चिकनी दिखाई पड़ने लगी.

गिरिजाकुमार ने नीचे आते ही पूछा, " कहिये गुरुजी, मैंने दोनों शैतानों से ठीक बातों की तो?

अब दोनों आपस में लड़ मरेंगे! भूतनाथ यों तो बहुत ही चालाक है पर कभी - कभी बातों में आ जाता है, खास कर दारोगा की! " अर्जुन:

हां, उसने भूतनाथ को यकीन करा दिया था कि रिक्तगन्थ ले लेना उसका काम नहीं था और न - जाने कैसे भूतनाथ को इस बात पर यकीन आ भी गया.

दलीप:

नहीं, मैं तो समझता हूं कि भूतनाथ को दारोगा की इस बात पर यकीन बिल्कुल नहीं हुआ और वह उसे रिक्तगन्थ का चोर समझता ही रहा मगर शायद इस वक्त उससे झगड़ना नहीं चाहता था या किसी कार्रवाई की फिक्र में था इसी से उसकी बात मान बैठा.

अर्जुन:

यह भी हो सकता है, खैर अब क्या करना चाहिए?

दलीप:

इन्द्रदेवजी आ जाएं तो बस यहां से चलना चाहिए.

गिरिजा:

लीजिये वे भी आ ही पहुंचे.

सीढ़ियों पर कुछ आहट मालूम हुई और साथ ही नीचे उतरते हुए इन्द्रदेव दिखाई पड़े जिन्होंने इस कोठरी में पहुंच कोई तरकीब ऐसी की कि उस तहखाने का मुंह बन्द हो गया.

इन्द्रदेव को देखते ही दलीपशाह ने पूछा, " गये वे दोनों शैतान?

" जिसके जबाब में उन्होंने कहा, " हां, मगर दोनों दो तरफ को गए, इस पाजी ने (गिरिजाकुमार की तरफ बताकर) दोनों में झगड़ा लगा ही दिया.

" गिरिजा:

(हंसकर) मगर मैंने कोई बात गलत नहीं कहीं, क्या दारोगा ही ने नागर को भेजकर उसके जरिये भूतनाथ से रिक्तगन्थ नहीं छिनवा मंगवाया था! इन्द्र:

खैर, तुमने जो किया ठीक किया , अब इधर बड़ो और वह किताब मेरे हवाले करो.

(अपनी कमर में से कपड़े की कई तहों में लपेटी हुई एक पोथी निकाल और इन्द्रदेव की तरफ बढ़ाकर लीजिए, यह अनूठी किताब.

गिरिजा:

इन्द्रदेव ने आग्रह के साथ वह पुस्तक जो कुछ अजीब ढंग की थी ले ली और उसका एक पृष्ठ खोलकर जांचने की निगाह से उसे देखा, इसके बाद इज्जत के साथ उसे माथे से लगाया और यह कहते हुए कि ' वेशक रिक्तगंथ ही है अपनी जेब के हवाले किया , इसके बाद गिरिजाकुमार की पीठ ठोंककर बोले, " आज तुमने ऐसा काम किया है कि जिसका कोई जोड़ नहीं हो सकता, यह चीज अगर उन शैतानों के हाथों में पड़ जाती तो गजब कर डालते! " गिरिजाकुमार का चेहरा इन्द्रदेव की बात सुनकर खिल गया और वह प्रसन्नता के स्वर से बोला, " इतना तो मैं समझ गया था कि यह कोई बहुत ही विचित्र चीज मेरे हाथ लग गई मगर यह पता आप ही से लगा कि यह ऐसी अनूठी वस्तु है.

मगर अब आप इसको क्या किजे गा?

राजा बीरेन्द्रसिंह के पास पहुंचा दीजिएगा?

" इन्द्रः:

उचित तो यही होता मगर ऐसा नहीं होगा.

अब इस पुस्तक के काम में आने के दिन आ गए हैं और यह शीघ्र ही ऐसे हाथों में चली जायेगी जो इसकी मदद से तिलिस्म तोड़कर उसका खजाना निकालेंगे.

अच्छा अब यहां से चल देना चाहिए.

इन्द्रदेव इस कोठरी की पूरब तरफ वाली दीवार के पास गए जहां छोटे - से आले पर एक मूरत गणेशजी की बनी हुई थी.

इस मूरत के पेट में अंगूठे से दबाते ही आले के एक तरफ की दीवार में छोटा सा छेद दिखाई पड़ने लगा जिसके अन्दर हाथ डालकर इन्द्रदेव ने कोई पेंच दबाया, साथ ही आले के नीचे की तरफ दीबार में छोटे तहखाने का मुंह निकल पड़ा जिसमें उतरने के लिए छोटी - छोटी सीढ़ियां बनी हुई थीं.

आगे - आगे इन्द्रदेव और पीछे - पीछे ये तीनों आदमी उस तहखाने में उतर गए और इनके जाते ही एक खटके की आवाज के साथ उस तहखाने का मुंह बन्द हो गया.

छठवां व्यान।

सिंहासन पर बैठी औरत को देख प्रभाकरसिंह चौंक पड़े और बरबस बोल उठे, “ हैं, मालती! तुम यहां! " मगर तुरन्त ही उन्हें मालूम हो गया कि उन्होंने मालती को पहचानने में फिर वैसी ही गलती की जैसी पहली कई बार करके शर्मिन्दगी उठा चुके थे, क्योंकि सिंहासन पर बाली उस औरत ने जिसे लोग रानी के नाम से सम्बोधित कर रहे थे उनकी बात सुन ताज्जुब की निगाह से अपने बगल वाली औरत की ओर देखा और उससे पूछा, " महारानी, इनका दिमाग कुछ खराब हो गया है.

ये जिस औरत को भी देखते हैं उसे ही मालती - मालती कहकर पुकारने लगते हैं! "
रानी:

मालती तो शायद वही औरत है जिसके बारे में कहा जाता है कि उसने तिलिस्मी खजाना चुराने की कोशिश की और सरकारी कैदियों को छुड़ाना चाहा! औरत:

जी हां, महारानी! रानी ने पुन:

ताज्जुब की एक निगाह प्रभाकरसिंह पर डाली जो उस औरत की बात सुन अपने होंठ चबाने लगे थे और तब कुछ इशारा किया जिससे दरबार की सब औरतें जो उसके प्रकट होते ही उठ खड़ी हुई थीं अपने - अपने ठिकाने पर बैठ गईं, केवल वही एक औरत खड़ी रही जिससे रानी बातें कर रही थी.

रानी कुछ देर तक प्रभाकरसिंह की तरफ देखती रही और तब उस बगल वाली औरत से कहा, " महारानी, अगर इनके साथ - ही - साथ उस औरत का मुकदमा भी ले लिया जाय जो इनके पहले गिरफ्तार हुई है और जिसका नाम मालती है तो अच्छा होगा क्योंकि ये दोनों साथी थे और दोनों का कसूर करीब - करीब एक ही सा है रानी ने यह सुन कहा, " अच्छी बात है, उसको भी हाजिर करो! " उस औरत ने सामने की तरफ अदब के साथ हाथ जोड़े खड़ी बंदियों को कुछ इशारा किया तब वे सिर घुमाकर पीछे की तरफ हटीं और तब उस दालान के बाहर हो गईं जिसमें यह छोटा - सा दरबार लगा हुआ था.

कुछ ही देर बाद वे दोनों बंदियां हथकड़ी - बेड़ी से मजबूर और सब तरह से लाचार मालती को कैदियों की तरह वहां ले आयीं.

मालती की कमर में एक मोटा रस्सा बंधा हुआ था जिसे वे दोनों पकड़े हुई थीं और साथ ही उसे दोनों तरफ से सहारा भी दिये हुए थीं क्योंकि इस थोड़े ही अरसे में मालती एकदम सुस्त और बीमार हो गई थी उसकी सूरत से ऐसा जान पड़ता था मानो महीनों की बीमार हो.

जिस समय ऐसी हालत में मालती लाकर रानी के सामने खड़ी की गई तो इसकी तरफ एक निगाह देखते ही प्रभाकरसिंह की आंखों में खून उतर आया और जब मालती ने दीन और निराश दृष्टि उनके ऊपर डाली और असहाय की तरह सिर झुकाकर हाथ

जोड़ा, तब तो वे किसी तरह भी अपने को रोक न सके और एकदम बगल में जा उसके कंधे पर हाथ रखते हुए बोले, " मालती, तुम्हारी यह दशा कैसे हो गई! " मालती ने दुःख - भरे शब्दों में कहा, " क्यां बताऊं कि कैसे हो गई, अभी तक जीती हूं सो शायद इसीलिए कि इस जन्म में एक बार और आपका दर्शन बदा था, नहीं तो .

.

.

.

" मालती की बात पूरी न हो पाई क्योंकि उसी समय रानी के बगल वाली वह औरत कुछ कर्कश डंग से बोल उठी, " प्रभाकरसिंह, इधर अपने ठिकाने पर आकर खड़े हो तुम भूल जाते हो कि तुम कैदी हो! लौंडियों, तुम लोग क्या मुंह ताक रही हो! दोनों कैदियों को अलग - अलग करो ताकि इनका मुकदमा शुरू हो! " कई लौंडिया प्रभाकरसिंह और मालती की तरफ बढ़ीं मगर प्रभाकरसिंह ने डपटकर कहा, खबरदार जो किसी ने हम लोगों के बदन को हाथ भी लगाया, बस अपने - अपने ठिकाने खड़ी रहो और समझ रखो कि मैं अब तक तुम लोगों के औरत होने का जो लिहाज करता आ रहा था वह अब न करूंगा !! " प्रभाकरसिंह की डांट सुनकर सब लौंडियां झिझककर रुक गई मगर अब उस रानी का भाव बदला.

उसकी भृकुटी चढ़ गई और उसने अपने बगल वाली औरत की तरफ टेढ़ी निगाह से देखा.

साथ ही वह औरत बिगड़कर बोली, " प्रभाकरसिंह यह क्या बेहूदगी है !!

क्यांतुम चाहते हो कि तुम्हारी मालती की तरह तुम भी बेबस कर दिये जाओ और कैदियों की हालत में नजर आओ?

हम लोगों ने तुम्हारी इज्जत का ख्याल किया जो बैसा बर्ताब तुम्हारे साथ नहीं किया, वरना तुम भी अभी तक कभी के हथकड़ी - बेड़ी से जकड़े नजर आते.

हटो, अपनी जगह पर जाओ, और अदब और कायदे से अपना मुकदमा सुनकर जो - जो इल्जाम तुम पर और तुम्हारी इस मालती पर लगाये जाते हैं उनका जबाब दो, वरना

समझ रखो कि तुम्हारे साथ बहुत बुरा सलूक किया जायेगा और इस औरत की तो तुम्हारे सामने ही पूरी दुर्गति कर डाली जायेगी! " " इस औरत की यह बात सुनना था कि प्रभाकरसिंह का क्रोध और भी भड़क उठा और उन्होंने भृकुटी चड़ाकर कहा, मजाल है कि मेरे जीते जी इसके साथ किसी तरह की बेहूदा हरकत कर सके.

आवे क्रिसकी हिम्मत है?

" इतना सुनते ही उस औरत ने पीछे की तरफ घूमकर देखा और जोर से तीन दफे ताली बजाई.

ताली की आवाज के साथ ही रानी के सिंहासन के पीछे की तरफ एक परदा हट गया और उसके अन्दर से कई हथियारबन्द औरतों ने तेजी से निकलकर प्रभाकरसिंह और मालती को सब तरफ से घेर लिया.

प्रभाकरसिंह ने भी अपना डण्डा सम्भाला जो अभी तक उनके हाथ में मौजूद था.

उसका मुट्ठा दबाने के साथ ही उसमें से आग की भयानक चिनगारियां निकलने लगीं जो कुछ ही क्षण में यहां तक कि बड़ीं कि चारों तरफ कई - कई हाथ तक उन लपटों और चिनगारियों ने फैलकर उनके और मालती के इर्द - गिर्द एक घेरा सा बना लिया.

पर यह अग्नि - वर्षा भी उन थियारबन्द औरतों को रोक न सकी जिन्होंने बहादुरी और हिम्मत के साथ प्रभाकरसिंह पर हभला शुरू किया था अगर उस रानी के एक इशारे ने उनके हाथ रोक न दिये होते.

वे औरतें कुछ पीछे को हट गई और रानी अपनी जगह से उठकर प्रभाकरसिंह की तरफ बढ़ी हुई बोली, " प्रभाकरसिंह, मालूम होता है तुमको अपने इस डण्डे पर बहुत घमण्ड और भरोसा है.

मैं तुमको बतला देना चाहती हूं कि हम लोगों के सामने इसकी कोई भी हक़ीक़त नहीं.

तेजी के साथ बीच का फासला तय कर रानी प्रभाकरसिंह के पास पहुंची और फुरती से उसने वह कलाई पक्रड़ ली जिसमें तिलिस्मी डण्डा था.

कलाई पकड़ने के साथ ही प्रभाकरसिंह की अजीब हालत हो गई.

उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानो किसी फौलादी पंजे ने उनकी कलाई पकड़ ली हो जो इस कदर ठण्डा था कि प्रभाकरसिंह का हाथ सुन्न होने लगा.

तेजी के साथ दौड़ती हुई सनसनाहट प्रभाकरसिंह के समूचे बदन में फैल गई जिससे वे ऐसा बेबस हो गये कि उनका खड़ा रहना भी मुश्किल हो गया.

वह तिलिस्मी डण्डा उनके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ा और साथ - ही - साथ वे भी कांपते हुए जमीन पर बैठ गये.

उसी समय रानी ने अपना दूसरा हाथ उनके सिर पर रखा, उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानो सैकड़ों हण्डे बर्फीले पानी के उनके ऊपर उंडेल दिये गये हों.

उनके बचे हुए होश भी गायब हो गये और बेहोश होते हुए उन्होंने रानी के ये शब्द सुने, " ले जाओ और इन दोनों को इनके सब सामान सहित अंधकूप में डाल दो.

" प्रभाकरसिंह खुद नहीं कह सकते थे कि वे कितनी देर के बाद होश में आये, मगर उनकी आंख खुली तो उन्होंने अपने को ' घोर अंधकार में पाया.

उनका सिर किसी की गोद में था और अन्दाज से उन्होंने समझा कि वह मालती है.

उन्होंने पुकारा, " कौन, मालती?

" जबाब मिला, " जी हां, मैं ही हूं, अब आपकी तबियत कैसी है?

" प्रभाकरसिंह ने जवाब दिया, " बिल्कुल ठीक है, सिर्फ सिर में चक्कर आ रहा है सो भी शायद कुछ देर में ठीक हो जायेगा, मगर यह बताओ कि यह जगह कौन - सी है?

" मालती ने जवाब दिया, " यह उन शैतानों का कोई कैदखाना है जो एकदम कुएं की तरह है, यहां नाम को कहीं से चांदना नहीं आता! प्रभाकरसिंह उठकर बैठ गये.

सिबाय सिर में कुछ चक्कर आने के उन्हें इस समय और किसी तरह की कोई तकलीफ जान न पड़ती थी.

उन्होंने अपने चारों तरफ के अंधकार में टटोला और यह देख ताज्जुब किया कि उनका सब सामान, यहां तक कि तिलिस्मी किताब और डंडा भी उसी जगह उनके आसपास में मौजूद है.

यह देख उनका चित्त कुछ शान्त हुआ और मालती से बोले, " ताज्जुब की बात यह है कि उन लोगों ने मेरी कोई भी चीज नहीं ली और अब मेरा सब सामान मौजूद है.

ऐसी हालत में तिलिस्मी किताब और डंडे के सही - सलामत रहते, यहां से बाहर निकलना कुछ कठिन न होना चाहिए, अस्तु तुम पहले यह बताओ कि उस बावली के अन्दर तुमने मेरा साथ क्यों छोड़ा, उस सुरंग में तुम्हें कौन - सी चीज दिखाई पड़ी जिससे तुम चीख पड़ी, उसके अन्दर जाने के बाद से अब तक तुम्हारे साथ क्या - क्यांघटना घटी, तथा अन्त में तुम उस रानी और उनके कम्बख्त रंगीन आदमियों के फेर में क्योंकर पड़ गई?

" मालती:

(एक ठंडी सांस लेकर) कुछ पूछिये मत कि मेरे साथ क्या - क्या हुआ! ऐसे - ऐसे चक्करों में मुझे पड़ना पड़ा और ऐसी - ऐसी तकलीफें उठानी पड़ी कि आपको क्या बताऊं.

फिर भी मैं आपके दर्शन कर पाई इसलिए सब ठीक ही होना चाहिए.

प्रभाकर:

(अफसोस के साथ) तो क्या तुम किसी तिलिस्मी चक्कर में पड़ गईं या किसी तरह की मुसीबत तुम पर पड़ गई?

मैंने तो यह समझा कि तुम तिलिस्म के अन्दर चली गई और उस हिस्से को तोड़कर ही बाहर निकलोगी और इसी ख्याल से मैंने आगे की तरफ ध्यान न दिया था मगर अब मालूम होता है कि वैसा नहीं हुआ.

मालती:

जी नहीं, सो कहां से?

तिलिस्म तोड़ने का तो जिक्र ही छोड़िये, मैं तो उस सुरंग के अन्दर घुसते ही जंजाल में पड़ गई, प्रभाकर:

खैर क्या हुआ बताओ तो सही.

मालती:

सुनिये, बाह्लदरी के सूख जाने पर जो सुरंग निकली उसके अन्दर आपने झांका था और ताज्जुब की चीज देखी थी.

१.

देखिये भूतनाथ अट्ठारहवां भाग, दूसरा बयान.

प्रभाकर:

हां, मैंने उस सुरंग के दूसरी तरफ एक आंगन - सा देखा जिसमें कुछ आदमी ऐसे दिखलाई पड़े जिन्हें देखते ही मैं ताज्जुब पड़ गया.

मालती:

ठीक है, मुझे भी वे आदमी दिखाई पड़े और उन्हें देख मुझे इतना ताज्जुब हुआ कि मैं अपने को किसी तरह रोक न सकी और उस सुरंग के अन्दर घुस पड़ी, मगर अन्दर जाने के साथ उस सुरंग का मुंह बन्द हो गया और वहीं मेरा आपका साथ छूट गया.

प्रभाकर:

ठीक है, अच्छा तो तुम उन आदमियों के पास पहुंची और तुमने उनको पहचाना?

मालती:

(एक लम्बी सांस लेकर) जी हां, मैं उनके पास पहुंची और मैंने उन्हें पहचाना भी, मगर अफसोस, उनको छुटकारा दिलाने के लिए कुछ कर सकने के पहले ही मैं इन कम्बख्तों के हाथ पड़ गई.

प्रभाकर:

तुमने उनको ठीक - ठीक पहचाना कि वे कौन थे?

फासले के इलावे उनकी शक्ल कुछ ऐसी वहशियाना हो रही थीं कि पहली निगाह में मैं उनको ठीक - ठीक पहचान न सका, उन्हें पहचानने की कोशिश कर ही रहा था तब तक तुम सुरंग के भीतर चली गई और उसका मुंह बन्द हो गया! मालती:

जी हां, मैंने उन लोगों को अच्छी तरह पहचाना.

बेशक वे ही लोग थे जिनका आपको गुमान हुआ था और जिन्हें हम लोग बरसों से मुर्दा समझते आ रहे ।

प्रभाकरसिंह:

अर्थात् .

.

.

?

मालती ने प्रभाकरसिंह की तरफ झुककर उनके कान में धीरे - धीरे कई नाम कहे जिन्हें सुनते ही प्रभाकरसिंह का चेहरा खिल गया और उन्होंने हाथ जोड़कर आकाश की तरफ देखते हुए कहा, " हे भगवान्! क्या तू असम्भव सम्भव कर दिखाना चाहता है?

क्या मैं अपने प्रेमियों को तेरी कृपा से इस तिलिस्म के अन्दर जीता - जागता पाऊंगा जिनको अब तक मुर्दा बल्कि मुर्दे से भी गया गुजरा समझ रहा था! तू धन्य है, तेरी कृपा अनन्त है! तेरी महिमा अपार है! (कुछ देर तक आंखें मूंदकर कुछ सोचने के बाद मालती से) अब मैं समझने लगा कि मेरा और तुम्हारा इतना परिश्रम - इतना कष्ट - सहना सार्थक हुआ और हम लोग दुनिया में कुछ कर दिखाने वाले कहला सकेंगे, अच्छा तुम कहो, फिर क्या हुआ?

मालती:

आपने ठीक - ठीक क्यां देखा था सो तो मैं नहीं कह सकती पर जो कुछ मैंने देखा वह यह था कि एक लम्बी सुरंग के उस पार एक आंगन की तरह पर जगह है जिसके पहले लोहे का जंगला लगा है और उस आंगन तथा जंगले के बीच में तरह - तरह का काम करते हुए कई आदमी हैं जो इस सुरंग का मुहाना खुलता देख अथवा और कोई आहट पा मेरी तरफ देख रहे हैं.

उन लोगों में से जिसको मैंने सबसे नजदीक और साफ - साफ देखा वह मेरी मुंहबोली बहिन और सखी थी जिसका नाम मैंने अभी आपको बताया और जिसे वहां उस हालत

में देखते ही मैं इस कदर चौंकी और खुश हुई कि आपको बिना कुछ कहे सुरंग के अन्दर घुस गई.

इसके साथ ही सुरंग का मुंह बन्द हो गया और मेरा - आपका साथ छूटा.

प्रभाकर:

तुम्हारी - उनकी कुछ बातचीत हुई?

मालती:

सुरंग का मुहाना बन्द होने की आहट पाते ही जो मैंने चौंककर पीछे देखा तो रास्ते को बन्द पाया और समझ गई कि अब आपसे भेंट होना मुश्किल हुआ.

मगर खैर, अपने सामने के आदमियों को देखकर मैं इस कदर बौखला - सी गई थी कि उस वक्त इस बात की मैंने ज्यादा सोच - फिक्र न की.

असल में तो मेरी किस्मत में इतनी तकलीफ उठाना बदा था, तब काहे को और कुछ कर ही सकती थी! मैं दौड़ती हुई सामने की तरफ बड़ी, दस - पन्द्रह क़दम गई हूंगी कि बगल की दीवार में खटके की आवाज के साथ एक दरवाजा खुल गया और एक बड़ा कमरा तरह - तरह के सामानों और कलपुर्जों से भरा हुआ दिखाई पड़ा.

तिलिस्मी किताब में मैं पड़ चुकी थी कि सुरंग के अन्दर घुसकर हम लोगों को उसी कमरे में जाना और वहां का तिलिस्म तोड़ना चाहिए मगर उस कमरे के अन्दर अच्छी तरह भर निगाह देखा भी नहीं और सामने को बडी.

तीन - चार कदम गई हूंगी कि फिर एक खटके की आवाज आई और बगल की दीवार पर एक जगह कुछ अक्षर चमकते हुए दिखाई पड़ने लगे.

मैंने उन्हें पड़ा, यह लिखा था- " बिना यहां का तिलिस्म तोड़े इस सुरंग के बाहर निकल जाने वाले का फिर यहां तक आना नहीं होगा.

” पर शामत की मार, इस बात पर भी मैंने ध्यान न दिया और दौड़ती हुई अपनी सखी की तरफ चली जो मुझे आती देख ताज्जुब से दोनों हाथ फैलाए हुई मेरी तरफ बढ़ रही थी.

उस लम्बी सुरंग के बाहर मेरा होना था कि उसका दूसरा दरवाजा भी मेरे पीछे बन्द हो गया और बस मैं इन कम्बखतों के फेर में पड़ गई,

मैंने आपसे कहा कि सुरंग के बाहर लोहे का जंगला था और उसके बाद एक आंगन - सा दिखाई पड़ रहा था जिसमें वे आदमी थे जिन्हें देख मैं चौंकी थी और जो मुझे देख अपना काम छोड़ मेरी तरफ बढ़ रहे थे.

मैं जंगले के पास पहुंची ही थी कि उनमें से एक ने कहा, " हां - हां, खबरदार! इन जंगले को मत छूना! " मैं चौंककर खड़ी हो गई और मैंने पूछा, क्यों?

" जिस पर जवाब मिला, “ उसको छूते ही आदमी बेहोश हो जाता है! " मैं रुक गई तब उस जंगले से कुछ दूर रह कर ही मैंने उन लोगों से बातें करना शुरू किया परन्तु दो - चार मिनट से ज्यादा बातें कर न पाई हूंगी कि उस आंगन के पीछे की तरफ बाले हिस्से में कहीं एक घण्टा जोर से बजने लगा जिसकी आवाज के साथ ही मेरे चारों तरफ कई दरवाजे खुल गये और उनके अन्दर के लाल, हरे, पीले आदि - आदि तरह - तरह के रंग वाले इसी रानी के कई सिपाहियों ने निकलकर मुझे घेर लिया.

मैं अपने प्रेमियों को छुड़ाने का जरा भी उद्योग न कर पाई और इन कम्बख्तों की कैदी बन गई जिन्होंने मुझे दम मारने की भी फुरसत न दी.

न - जाने उनके बदन फौलादी थे या पत्थर के बने हुए थे कि मेरे तिलिस्मी हथियार का भी उन पर कोई असर न पड़ा और उन्होंने मुझे पकड़ ही लिया.

कितनी ही जगहों से घुमाते - फिराते वे लोग मुझे उसी दरबार में ले गये जो आपने देखा.

मैं उस खाली सिंहासन के सामने खड़ी की गई और मेरे पकड़ने वालों ने तिलिस्मी खजाना चुराने और कैदियों को छुड़ाने की कोशिश करने का इल्जाम मुझ पर लगाया.

खाली सिंहसान पर से ये आवाज हुई कि इसे कैदखाने में रखो, फिर कभी इनका मुकद्मा सुना जायेगा.

' और मैं उसी मकान में बन्द कर दी गई जिसमें आपने मुझे देखा और बातें की थीं.

बस यही तो मेरा किस्सा है.

इतना कह मालती फिर बोली, “ इस दो ही दिन के कैदखाने ने मेरी हालत मुर्दा - सी बना दी.

सबसे भारी जो तकलीफ मुझे थी वह यह कि मेरी समझ में नहीं आता था कि मैं अपने गिरफ्तार करनेवालों को क्या समझू?

आदमी वे नहीं, उनका विचित्र रंग और उनका फौलाद से भी कड़ा जिस्म उन्हें आदमी नहीं मानने देता था, मगर उधर बोलचाल काम - करतब बिल्कुल मनुष्य की तरह का था जिसको देख - देख कर मन में यह घबराहट उठती थी कि हे भगवान्, अगर इस तरह का काम तिलिस्मी कर सकते हैं तो कहीं वे लोग भी तो कोई तिलिस्मी पुतले ही नहीं थे जिनको मैंने उस सुरंग में देखा था.

यही सोच - सोच दिल में ऐसा हौल उठता था कि कुछ पूछिए नहीं.

!! प्रभाकरसिंह ने उसे दिलासा देते हुए कहा, “ घबराओ नहीं, जो कुछ सही - सही माभला है वह आप - से - आप प्रकट हो जाएगा.

अब तुम और बातों की फिक्र छोड़ो और यह सोचो कि हम लोगों को क्या करना चाहिए?

" मालती:

सबसे पहले तो आपको तिलिस्मी किताब देखनी चाहिए.

शायद उसमें इन बातों या इस जगह का कोई जिक्र हो.

प्रभाकर ०:

हां, यही विचार तो मेरा भी था, मगर इस जगह अंधेरा इतना .

.

.

.

.

मालती:

इस अंधेरे को तो मैं अभी दूर कर देती हूं, इतना कह मालती ने सुनहरी भुजाली जिसे उसने तिलिस्मी में पाया था और जो इस हालत में भी उसके पास मौजूद थी उठा ली और उसका कब्जा दबाया.

बहुत तेज रोशनी पैदा हुई जिसने उस जगह के एक - एक कोने का अंधकार दूर कर दिया.

प्रभाकरसिंह ने देखा कि वे कुएं के ढंग के किसी स्थान में हैं जो एकदम गोल और बहुत ऊंचा है.

सब तरफ की दीवारें संगीन और चिकनी थीं जिसमें कहीं कोई दरवाजा या बाहर निकल जाने की राह दिखाई न पड़ती थी.

ऊपर की तरफ देखने से छोटे कुएं की तरह दिखाई पड़ता था मगर ऊपर के अंधकार के कारण कुछ समझ में नहीं आता था कि इसका ऊपरी भाग किस तरह का है.

प्रभाकरसिंह कुछ देर तक इधर - उधर देखते रहे, इसके बाद उन्होंने अपनी तिलिस्मी किताब उठाई और एक जगह से खोल उसे ध्यान से पढ़ने लगे.

१.

देखिए भूतनाथ पन्द्रहवां भाग, दसवां बयान.

यकायक उनका ध्यान टूट गया.

मालती ने उनके बदन पर उंगली रखी थी.

उन्होंने सिर उठाकर उसकी तरफ देखा मगर यह पूछने की जरूरत न पड़ी कि क्यों उसने इनको सावधान किया था मालती अपने सिर के ऊपर की तरफ देख रही थी जिधर निगाह करते ही प्रभाकरसिंह भी ताज्जुब में आ गए और किताब पढ़ना छोड़ ऊपर को देखने लगे.

उन्होंने देखा कि उस कुएं जैसे स्थान में ऊपर, बहुत ही ऊपर, एक तेज रोशनी हो रही है जो क्षण - क्षण में बढ़ती जा रही है.

ऐसा मालूम होता था मानों बहुत तेज रोशनी की कोई मशाल जलती हुई नीचे उतर रही है.

प्रभाकरसिंह ने मालती से कहा, " तुम अपनी भुजाली की रोशनी बन्द कर दो, शायद तब कुछ स्पष्ट दिखाई पड़े! " मालती ने ऐसा ही किया और आँखों के सामने की रोशनी बंद होने पर अब ऊपर का हाल कुछ साफ - साफ दिखाई पड़ने लगा.

प्रभाकरसिंह ने देखा कि झूले की तरह की कोई चीज नीचे उतर रही है जिस पर एक औरत जलती मशाल हाथ में लिए बैठी है.

बात - की - बात में वह झूला नीचे उतरकर जमीन से आ लगा और वह औरत उस पर से उतर इन लोगों के सामने आ खड़ी हुई.

अब प्रभाकरसिंह ने पहचाना कि यह वही औरत है जिसे उन्होंने दरबार में रानी के बगल में खड़े उससे बातें करते हुए देखा था और उसके बर्ताव को याद कर प्रभाकरसिंह की पुनः भृकुटी चढ़ गई मगर उद्योग कर उन्होंने अपने को शान्त रखा.

उधर वह औरत झूले से उतरकर सीधी इनकी तरफ बड़ी और सामने खड़ी होकर बोली, “ ऐ प्रभाकरसिंह और मालती! क्यों तुम लोग व्यर्थ की आशा में पड़े हो !! समझ लो कि तुम लोग तिलिस्म की रानी के कब्जे में पड़ गए और अब तुम्हारी तिलिस्मी किताब या तुम्हारे तिलिस्मी हथियार तुम लोगों को हमारी कैद से छुड़ा नहीं सकते.

हां, अगर तुम लोग जो कुछ मैं कहती हूं उसे ध्यान से सुनो और उसके मुताबिक कार्रवाही करो तो मैं वायदा करती हूं कि न केवल तुम लोगों को इस कैद से छुड़ा ही दूंगी बल्कि इस तिलिस्म के तोड़ने और इसका खजाना पाने के काम में भी तुम्हारी मदद करूंगी.

" अपने मन के गुस्से को दबाकर प्रभाकरसिंह बोले, " अच्छा, कहो तुम क्या कहती हो?

" वह औरत बोली, " तुम दोनों से अलग बातें करनी हैं और मैं नहीं चाहती कि एक से हुई मेरी बात दूसरा सुने, अस्तु पहले एक आदमी मेरे पास आए और मेरी बात सुने.

प्रभाकरसिंह ने मालती की तरफ देखा.

उसने धीरे से इनकी तरफ झुक कर कहा, क्या हर्ज है अगर इसकी बात सुन ली जाय.

प्रभाकरसिंह बोले खैर जब तुम्हारी यही मर्जी है तो पहले मैं जाता हूं और सुनता हूं कि क्या कहती है.

न जाने उस औरत ने प्रभाकरसिंह के कान में क्या कहा कि सुनते ही वे एक दम लाल हो गए और बिगड़कर बोले कभी नहीं यह हरगिज नहीं हो सकता खबरदार जो फिर ऐसी बात जुबान पर लाई तो! मगर उस औरत ने उन्हें दिलासा देने के ढंग से कहा, " आप इस तरह बिगड़िये नहीं.

जरा मेरी बातों को गौर से सोचिये, समझिये और उस पर विचार कीजिये, उससे होने वाले फायदे की तरफ ध्यान दीजिये तब जो कुछ जबाब देना हो, दीजिये, अच्छा, आप यहीं खड़े रहें, मैं जाकर मालती से भी बातें कर लूं !! वह औरत अब मालती के पास आई और उनके कान में भी न - जाने कौन - सी बात कही.

प्रभाकरसिंह उस बात को तो न सुन सक्के मगर यह देखा कि इसे सुन मालती खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली, " मुझे स्वीकार है.

मगर यह समझ रखो कि मैं तुम्हारी बात तब मंजूर करूंगी जब तुम उन सब कैदियों को छुड़ा दोगी जो तुम्हारे तिलिस्म में बन्द हैं और जिनसे मैं उस दिन बातें कर रही थी जब तुम्हारे आदमियों ने मुझे पकड़ा.

" औरत ने अपनी छाती पर हाथ रखकर कहा, " मुझे यह बात मंजूर है.

" मालती ने जवाब दिया, “ तब मुझे भी तुम्हारी बात मंजूर है, जाओ अपनी रानी से कह दो.

!! वह औरत खुशी भरी आवाज में बोली, " तुमने मेरी तबियत खुश कर दी.

तुम बुद्धिमान हो और स्थिति देखकर काम करना जानती हो अब अगर तुम्हारे साथी ये प्रभाकरसिंह भी मेरी बात मंजूर कर लें तो बस फिर एकदम ही छुट्टी हो जाय और सब खरखशा जाता रहे.

(प्रभाकरसिंह की तरफ देखकर) देखिए इन्होंने मेरी बात मान ली, अब आप भी मान जाइए और राजी - खुशी तिलिस्म की दौलत और अनूठे खजाने पर कब्जा कर जिन्दगी

का आनन्द लीजिए, नहीं मैं कहे देती हूं कि सिर भटक कर रह जाइएगा और इस कैदखाने के बाहर न हो पाइएगा.

यहां न आपकी तिलिस्मी किताब मदद करेगी और न तिलिस्मी हथियार! "

प्रभाकरसिंह ने बिगड़कर कहा, " जाओ, जाओ मेरे सामने से दूर हो जाओ; अपनी दौलत और खजाना अपने पास रखो, मुझे लालच नहीं है! " वह औरत तेजी से चलकर उनके पास आई और गुस्से से बोली, " तब तुम इसी अन्धकूप में पड़े रहो और भूखे प्यासे अपनी जान दो.

" इतना कह वह पुनः उसी झूले पर जा बैठी और झूला उसे लिए तेजी के साथ ऊपर की तरफ उठ गया.

।

।

उन्नीसवां भाग समाप्त ।

।

बीसवां भाग

पहला व्यान।

] कुएं से निकलने के बाद दारोगा और भूतनाथ अलग - अलग हो गए और दोनों ने दो तरफ का रास्ता लिया, दारोगा ने तो पश्चिम की तरफ को पैर बढ़ाया और भूतनाथ ने जंगल - ही - जंगल पूरब की ओर का रास्ता पकड़ा.

जब दारोगा को विश्वास हो गया कि भूतनाथ दूर निकल गया तो वह रुका और चक्कर काटता हुआ उस जगह पहुंचा जहां अपने आदमियों को छोड़ गया था.

उसे विश्वास था कि वे लोग अभी तक उसका इन्तजार करते होंगे पर ताज्जुब की बात थी कि उस झाड़ी के अन्दर उन लोगों का कहीं नाम - निशान भी नजर न आया.

उसने इधर - उधर तलाश किया पर जब कहीं उन्हें न पाया और न यही समझ में आया कि वे किधर चले गए तो उसने अपनी जेब से जफील निकाली और उसे अपने होठों से लगाया मगर बजाने के पहले ही उसे ख्याल आ गया कि भूतनाथ अभी बहुत दूर न गया होगा बल्कि कौन ठिकाना उसका पीछा करता हुआ लौट आया हो और जफील की आवाज सुन चौकन्ना हो जाए बल्कि सम्भव है कि मेरे काम में विघ्न डाले.

अस्तु उसने जफील पुनः जेब में रख ली और एक तरफ को चल पड़ा मगर चारों तरफ की आहट लेते हुए और इस बात का भी बहुत ध्यान रखते हुए कि कहीं भूतनाथ उसका पीछा न कर रहा हो! बीच का फासला तय कर दारोगा बहुत शीघ्र ही उस जगह पहुंचा जहां मनोरमा को छोड़ गया था मगर उसने मनोरमा को भी वहां न पाया और बड़े ताज्जुब के साथ सोचने लगा कि आखिर ये सब लोग चले कहां गए! तरह - तरह की उधेड़ - बुन में पड़ा चिन्तित दारोगा ताज्जुब के साथ न - जाने क्या - क्या सोच रहा था कि यकायक किसी ने पीछे से उसके कन्धे पर हाथ रखा.

वह चौंककर घूम पड़ा और साथ ही उसका हाथ उसके कपड़ों के अन्दर चला मगर तुरन्त ही रुक गया जब उसकी निगाह उस आदमी की सूरत पर पड़ी जो उसके पीछे अजीब ढंग से मुस्करा रहा था.

हमारे पाठक भी इस आदमी को देख चुके है ।

यह वही है जिसने अपना परिचय पहाड़ी भेडिया ' के नाम से देकर मनोरमा और नागर को लोहगड़ी के उड़ जाने पर भी भूतनाथ के बचे रह जाने की खबर दी थी.

इस समय भी वह उसी रंग - रूप और ठाठ में था अर्थात लाल रंग की बहुत ही लम्बी एक कफी पहने हुए, हाथ में टेढ़ी - मेड़ी काले रंग की एक लाठी लिए, सिर पर भूरी जटा का जुड़ा बांधे और चेहरे पर राखी मले हुए था, मगर हां, उसकी आंखों में इस समय किसी नशे की - सी मस्ती न थी बल्कि एक विचित्र तरह की चमक मौजूद थी.

न - जाने क्यों दारोगा इस आदमी को देखते ही ' घबरा गया और चौंकता हुआ बोला, “ अरे वाह, आप हैं! आप .

.

.

हां .

.

.

मेरे .

.

.

" वह विचित्र मनुष्य मुस्कराता हुआ बोला, “ घबराओ नहीं यदुनाथ, मुझे देख - कर घबराओ नहीं! मैं एक अनूठी खबर लेकर तुम्हारे पास आया हूं और उसे सुना तुरन्त ही चला जाऊंगा.

" दारोगा वैसे ही घबराये हुए ढंग से रुकता - रुकता बोला, " आप .

.

.

आप तो ज .

.

.

खबर सुनाते हैं .

.

.

खरा .

.

.

" मगर वह आदमी उसकी बात काटकर कहने लगा, " अब यह तुम्हारी किस्मत की बात है कि मेरी खबरे तुम्हारे अनुकूल नहीं पड़ती मगर इतना तो मान ही लोगे कि जो कुछ खबरें में सुना जाता हूं वे अनूठी और एकदम ताजी होती हैं.

जिन मामलों का पता तुम्हारे जासूस लाख सिर पीटने पर भी नहीं लगा पाते उन्हीं के बारे में मैं ऐसी सच्ची और पते की खबर देता हूँ कि तुम हजार बरस सिर पीटकर मर जाओ तो भी नहीं जान सकते! " दारोगा जिसका खून न - जाने क्यों इस आदमी को देखते ही सूख गया था, अपने पर मुश्किल से काबू करके बोला, " खैर तो मालूम हो गया कि इस वक्त भी आप कोई वैसी ही खबर लेकर मेरे पास आए हैं.

अब आप दया करके कह जाइए कि वह क्या है मगर कृपया थोड़े में और बिना भूमिका के कहिए! " १.

देखिए उन्नीसवां भाग, पहला बयान.

विचित्र आदमी:

(हंस कर) मालूम होता है कि तुम्हें अपने पुराने दोस्त और प्रेमी को इतने दिनों बाद देखकर भी प्रसन्नता नहीं हुई! खैर इसे मैं सिवाय तुम्हारी बदकिस्मती के और क्या कहूँ?

मैंने तो जब भरसक प्रयास किया तुम्हारे फायदे ही का काम किया और हमेशा इसी कोशिश .

.

दारोगा:

बेशक, यह तो बिल्कुल सही है, हां, तो आपकी खबर क्या है?

विचित्र आदमी:

मालूम होता है कि तुम इस वक्त किसी जल्दी में हो! मगर मेरे यार, तुमसे बार - बार कह चुका हूं कि जल्दी बुद्धिमानी की दुश्मन, शैतानी की बहिन और मायूसी की मौसी होती है.

अपनी जल्दबाजी के सबब से तुम कभी - कभी अपना बहुत बड़ा नुकसान कर डालते हो और फिर पीछे अफसोस के साथ हाथ मलते हो.

क्या तुमको .

.

.

?

दारोगा:

मालूम होता है आपको कहना कुछ भी नहीं हैं और सिर्फ इधर - उधर की बातें बनाकर ही मेरा समय नष्ट करने का इरादा है.

विचित्र आदमी:

यह तुमने कैसे कहा कि मुझे कुछ कहना ही नहीं है! अजी मर्दे आदमी, अगर ऐसा ही होता तो मैं तुम्हारे पास आता ही क्यों?

भला यह तो कहो कि इस बियाबान जंगल में, आधी रात के पिछले पहर, कोई भला आदमी किसी ऐसी जगह में जहां सिवाय उल्लू और गीदड़ों के किसी भले जानवर का भी गुजर मुश्किल से होता होगा, तुम्हारे पीछे - पीछे आयेगा ही क्यों अगर उसे कोई बहुत ही जरूरी बात कहनी न होगी! दारोगा:

मैं चाहे लाख कहूं या करोड़ बार समझाऊं मगर आप अपनी आदत से भला क्यों बाज आने वाले हैं! आप तो अपनी उसी चाल से चलिएगा और हनुमान की दुम की तरह लम्बी होती जाने वाली आपकी बातें कभी भी खत्म न होंगी.

विचित्र आदमी:

बस .

.

.

स - बस! अब मैं प्रसन्न हो गया, क्योंकि तुमने ऐसे तक मेरी बातों की तुलना पहुंचा दी जो मेरे इष्टदेव हैं और नित्य उठकर जिनका नाम तीन बार लेकर तभी मैं तुम्हारे बारे में कुछ सोचता हूं, जब तुमने अंजनीनन्दन की दुम से मेरी बातों की तुलना कर डाली तो फिर मैं भी प्रसन्न होकर बताए देता हूं कि इस वक्त तुम्हारे पास किसलिए आ पहुंचा.

मगर तब एक काम और करो.

यहीं कहीं बैठ जाओ.

(एक पत्थर की चट्टान की तरफ इशारा करके) यह शिला तुम्हारे और हमारे दोनों ही के लायक है, इस पर बैठकर तब मेरी बातें सुनो क्योंकि ताज्जुब नहीं कि मेरी बात सुन तुम्हें गश आ जाय और तुम यहां की कड़ी जमीन पर गिरकर कुछ चोट - चपेट खा जाओ.

आखिर मुझे हर वक्त तुम्हारे फायदे का ही ध्यान तो रखना पड़ता है.

दारोगा:

(चट्टान की तरफ बढ़ता हुआ) तब तो साफ मालूम होता है कि आपकी खबर हर दफे की तरह मनहूस और घबरा देने वाली है, खैर लीजिए, मैं बैठ जाता हूं.

अब कह डालिए.

(बैठकर) यह क्या, आप बैठिएगा नहीं?

विचित्र आदमी:

नहीं, क्योंकि जो खबर मैं तुमसे कहने वाला हूं उसे सुनकर तुम्हारे कलेजे से इतनी बड़ी आह निकलेगी कि मुझे डर है कि कहीं मेरे शरीर पर पड़ वह मुझे भस्म न कर डाले.

दारोगा:

खैर तो आप खड़े ही रहें मगर कुछ कहें भी तो.

आपकी बात सुनने के पहले उसकी भूमिका ही सुनकर मेरे कलेजे में हौल होने लगी है.

विचित्र आदमी:

खैर कोई डर नहीं, मेरी भूमिका अब समाप्त हुई और ग्रन्थ आरम्भ होना चाहता है जिसकी प्रथम पंक्ति ही तुम्हारे कलेजे को ऐसा सुखा देगी कि फिर उसमें हौल पैदा ही न होने पायेगी.

अच्छा, यह बताओ तुम अभी यहां चारों तरफ घूमकर किसे खोज रहे थे?

दारोगा:

अपने कुछ नौकरों की तलाश में था जिन्हें यहां ही छोड़ गया था.

विचिक्त्र आदमी:

(हंसकर) मुझसे छिपाओ नहीं, मैं सब जानता हूं, साफ - साफ कहो कि अपनी मनोरमा बीबी की तलाश कर रहे थे जिन्हें यहां रहने का हुक्म देकर तब तुम भूतनाथ के पीछे गए थे, मगर याद रखो कि अब उससे जल्दी भेंट नहीं होगी और होने पर भी क्या होगा?

तुम्हारा मतलब अब उसके जरिये कुछ भी बनने का नहीं! दारोगा:

सो क्यों?

विचित्र आदमी:

उसे नागर अपने साथ ले गई.

दारोगा:

नागर! वह यहां कहाँ?

वह तो जमानिया .

.

.

.

विचिक्त्र आदमी:

सो ही तो, वह जमानिया नहीं जाने पाई, कोई आदमी रास्ते में ही उससे मिला और तुम्हारी सूरत बन धोखा दे उससे वह रिक्तगन्थ ले भागा जो वह तुम्हें देने के वास्ते लिए जा रही थी! दारोगा:

(चौंक और घबराकर) हैं, यह आप क्या कह रहे हैं?

नागर से किसी ने रिक्तगन्थ छीन लिया !! विचित्र आदमी:

हां, छीन लिया, या यों कहो कि ले लिया, क्योंकि वह तुम्हारी सूरत बना हुआ था और नागर तब तक इसी भरोसे रही कि उसने तुम्हीं को वह खूनी किताब दी है जब तक कि वह यहां लौटकर मनोरमा से न मिली और उससे यह न सुन लिया कि आप तो बहुत देर से इसी जगह विराज रहे हैं और उसने किताब जरूर किसी दूसरे को दे दी है, अब वे दोनों फिर उधर ही उसी ' कुटिया की तरफ गई हैं मगर अब वह किताब मिलने वाली थोड़ी ही है! दारोगा इस अजीब खबर को सुनकर एकदम बदहवास हो गया.

कुछ देर तक तो ऐसा मालूम हुआ मानों उसे अपने तन बदन की होश न रह गई हो.

आखिर बहुत मुश्किल से अपने को सम्भाल उसने कहा दारोगा:

क्या आप इसके बारे में कुछ और भी मुझे बताइएगा?

जरूर ही जब आप यह बात मुझसे कह रहे हैं तो सच ही होगी, मगर फिर भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा है!

विचित्र आदमी:

मैं तो तुम्हें पूरा - पूरा हाल कहता मगर तुम्हारी शुरू - शुरू की जल्दीबाजी में बहुत - सी बातें मेरे दिमाग से उड़ गईं.

अब जो कुछ मुझे याद रह गया वह सिर्फ इतना ही है कि तुमने नागर के आदमी को कहा था कि कुटिया पर पहुंचकर ठहरे और .

.

.

दारोगा:

हां, मैं जमानिया से चलकर बहुत दूर इधर आ गया था जब मेरी नागर के उस आदमी से भेंट हुई जिसे उसने सब समाचार के साथ यह खुशखबरी देकर अपने आगे - आगे मेरे साथ रवाना किया था कि ' आपका काम हो गया और मैं वह चीज लेकर जमानिया आ रही हूँ.

मैंने उस आदमी से कहा कि अब जमानिया जाने की जरूरत नहीं, तुम नागर से कह दो कि वह ' कुटिया ' पर पहुंचकर रुक जाय और मैं एक काम निपटाता हुआ सीधे वहीं पहुंचता हूं.

खैर तब?

इसके बाद फिर क्या हुआ?

विचिक्त्र आदमी:

जिस जगह तुम्हारी उस आदमी से बातें हुई थीं वहां ही एक धूर्त ऐयार भी छिपा हुआ था जिसने तुम्हारी बातें सुन लीं.

वह उस आदमी के पीछे - पीछे चल पड़ा और तुम्हारा भेष बना नागर से रिक्तगन्थ ले नौ दो ग्यारह हुआ! अब तुम बैठो और अपने करम को झखो, मैं चला.

दारोगा:

(विचित्र मनुष्य का हाथ पकड़कर) नहीं, जब आपने इतना बड़ा दु:खदायी समाचार सुना दिया है तो थोड़ी कृपा और भी किजे और यह बताइए कि वह अभागा कौन है जो इस तरह से मेरी .

.

.

(रुक कर और अपने बढ़ते हुए गुस्से तथा निराशा को दबाकर) क्या वह भूतनाथ .

.

.

?

विचित्र आदमी:

नहीं - नहीं - नहीं, भूतनाथ तो खुद ही आफत में पड़ा हुआ था, यह काम किसी और ही का है.

दारोगा:

(अपने कलेजे को हाथ से दबाता हुआ) किसका?

विचित्र आदमी:

अब क्या करोगे सो सब पूछकर! सुनकर तुम्हारा कष्ठ बड़ेगा ही.

घटेगा नहीं, अब तुम यह फिक्र तो जाने दो और .

.

.

.

.

विचित्र मनुष्य उठने लगा मगर दारोगा ने फिर उसे रोका और हाथ जोड़ कर कहा, " नहीं - नहीं, जब आपने इतनी बातें बताई हैं तो अब इतना भी बता ही दीजिए ताकि मैं जान जाऊं कि किसकी हिम्मत हुई जो उसने मुझसे बैर बांधा और जिस चीज की मैं बरसों से तलाश में था उसे मेरे कब्जे से निकालने की जुर्रत की.

ताकि मैं जल्दी - से - जल्दी उस शैतान को उसकी करनी का फल चखा सकूं.

विचित्र आदमी:

(जोर से हंसकर) इस बात की आशा छोड़ो, यह उम्मीद मत करो कि अब रिक्तगन्थ फिर तुम्हारे हाथ आएगा या तुम उस आदमी को ही देख पाओगे जिसकी यह कार्रवाई है, तुम्हें कुछ बसन्त की खबर भी है या यों ही लोगों को उनकी करनी का फल चखाने की हिम्मत बांध रहे हो! दारोगा:

(ताज्जुब से) सो क्या?

वह कौन आदमी है?

ऐसा कौन है जो मेरा इतना बड़ा नुकसान कर जाय और फिर भी जिससे मैं बदला न ले सकूं?

विचिक्त्र आदमी:

तो फिर बता ही दूं?

अच्छा तो लो सुनो, लेकिन जरा इस कंकड़ का सहारा ले लो नहीं तो गिरकर चोट खा जाओगे! सुनो कान फटफटाकर अच्छी तरह सुनो और समझो कि तुम्हारे कब्जे से वह तिलिस्मी किताब ले जाने वाला वहीं था जिसकी बहिन को तुमने हद दर्जे की तकलीफ पहुंचाई और बहनोई को मौत से भी लाख दर्जे बुरी हालत में पहुंचाकर छोड़ा और इस काम में उसका मददगार वही था जिसकी बहिन के आंचल पर गुलामी की दस्ताबेज.

, हैं, यह क्या, तुम्हारा चेहरा पीला क्यों होता जा रहा है! तुम्हारी सूरत पर हवाई क्यों उड़ने लग गई है! सम्भलो - सम्भलो, होश मे रहो, बदहोश मत बनो! मगर सचमुच दारोगा की बुरी हालत हो रही थी.

उसका चेहरा एकदम मुर्दो की तरह हो गया था और वह हाथों के बल पीछे की तरफ लटक इस तरह लम्बी - लम्बी सांसें लेने लगा मानों उसे तन - बदन की सुध न रह गई हो, वह विचित्रमनुष्य उसकी यह हालत देख संगदिली के साथ खिलखिलाकर हंस पड़ा और तब बोला, " मैं कहता न था कि उस आदमी का नाम मत पूछो जिसका यह काम है, पर तुम्हीं ने जिद्द कर मेरे पेट से वह बात निकलवा ली.

खैर, अब इतना घबराए क्यों जाते हो! आखिर उस आदमी को भी तो इस खूनी किताब की उतनी ही जरूरत थी जितनी तुमको, वह भी तो अपने प्रेमियों को ति .

.

.

.

!! यकायक विचित्र आदमी रुक गया, उसके तेज कानों में किसी तरह की आहट आई थी जिसे सुन उसने गौर से पीछे की तरफ देखा और अचानक उठ खड़ा हुआ.

कुछ देर तक एकटक उस तरफ देखता रहा तब बोल उठा, " हैं, ये दोनों शैतान की खालाएं यहां भी आ पहुंचीं! " दारोगा ने उसकी बात सुन ताज्जुब के साथ उस तरफ देखा और साथ ही चौंक पड़ा क्योंकि उसी समय पेड़ों की झुरमुट से निकलकर आती हुई मनोरमा और नागर पर उसकी निगाह पड़ी जिनके पीछे - पीछे दो - तीन आदमी और भी आ रहे थे.

इन्हें आता देख अपनी हालत छिपा वह उठ खड़ा हुआ और तब तक मनोरमा भी दौड़ती - दौड़ती उसके पास आकर बोल पड़ी, " कहिए दारोगा साहब, जल्दी कहिये, आप ही ने न ' कुटिया ' पर नागर के हाथ से तिलिस्मी किताब ली थी?

"

दारोगा ने ताज्जुब का भाव दिखाते हुए कहा, नहीं - नहीं, मैं तो अभी - अभी भूतनाथ के पास से होकर चला आ रहा हूं और अपने इस दोस्त से बातें करता हुआ ताज्जुब में था कि तुम कहां चली गई! " इतना कह दारोगा उस आदमी की तरफ घूमा मगर वह विचित्र मनुष्य वहां न था.

मनोरमा और नागर को आता देखते ही वह न जाने कब कहां गायब हो गया था.

लाचार दारोगा फिर मनोरमा की तरफ झुका जो उसकी बात सुन बदहबासों की तरह चट्टान पर बैठ या गिर गई थी और उससे पूछने लगा, " क्यों, आखिर क्या बात है?

तुम्हारे सवाल का क्या मतलब है और यह नागर यहां तुम्हारे पास कैसे आ पहुंची! " रंज और अफसोस - भरे स्वर में मनोरमा बोली, " अब क्या बताऊं कि क्या बात है, बस, यही समझ लीजिए कि हम लोगों की बरसों की मेहनत चौपट हो गई और हमारे सब किए - कराए पर पानी फिर गया! कोई शैतान आपकी सूरत बन इन नागर बीबी के पास पहुंचा और इनसे रिक्तगन्थ ले चम्पत हो गया.

इन्होंने भी बेवकूफ की तरह धीरे से उसके हाथ पर किताब रख दी और यह भी न पूछा कि आखिर तू है कौन! मनोरमा की बात सुनकर नागर रोआंसा मुंह बनाकर बोली, " बहिन, मेरी इसमें क्या खता है! मुझसे तो नारायण बोला कि दारोगा साहब ने कहा कि अब जमानिया आने की जरूरत नहीं तुम कुटिया पर रुककर मेरा इन्तजार करो, मैं एक जरूरी काम निपटा बहुत जल्दी वहां आकर तुमसे मिलता और तुम्हें मुबारकबाद देता हूं, मैं यह बात सुन वहीं रुक रही जहां कुछ देर बाद कोई शैतान दारोगा साहब की सूरत बन पहुंचा और मुझसे किताब ले चलता बना.

बताओ, अब इसमें मेरा क्या कसूर है?

नारायण यह मेरे साथ मौजूद है, पूछो इसी से, इसने मुझसे ऐसी बात कही थी कि नहीं?

" पीछे वाले आदमियों में से एक कुछ आगे बड़ आया और बोला, " जी हाँ, मैंने जरूर यह बात कही और ठीक - ठीक कहीं ।

सरकार सामने खड़े हैं, पूछिये इनसे कि इन्होंने यही तो मुझसे कहा था कि कुछ और?

"

दारोगा:

बेशक नारायण ठीक कह रहा है और इसको मैंने यही बात कहने तुम्हारे पास भेजा था.

खैर अब जो हुआ सो हुआ, अब घबराने और रोने - कलपने से गई हुई चीज वापस तो आ नहीं सकती.

आओ यहां पर बैठ जाओ और संक्षेप में मुझे बताओ कि कैसे क्या हुआ आखिर! मनोरमा और नागर दारोगा साहब के पास बैठ गई और उनका इशारा पा बाकी के आदमी पीछे हटकर इधर - उधर हो गए.

नागर बोली, “ हुआ यह दारोगा साहब, कि भूतनाथ से मैंने रिक्तगन्थ ले लिया तो इतनी खुशी हुई और उसे आपके हाथ में देने के लिए ऐसी उतावली हो गई कि मनोरमा बहिन से मिलने के लिए भी न रुक सकी, दूसरे मुझे यह भी डर था कि कहीं शैतान भूतनाथ इनके घर न जा पहुंचा हो अस्तु एक आदमी भेज इन्हें तो सब हाल कहला भेजा और इस नारायण को एक तेज घोड़ा दे सरपट मारामार आपको जाकर खबर देने को कहा, तब मैं सीधी बह किताब लिए जमानिया की तरफ आपके पास रवाना हो गई, मगर यह नारायण जमानिया जा भी न पाया, रास्ते ही में इसकी भेंट आपसे हुए और आपने इसे कहला भेजा कि तुम कुटिया पर रुको मैं एक जरूरी काम करके अभी आता हूं नतीजा यह हुआ कि मैं जमानिया का आधा रास्ता भी तय न कर पाई थी कि यह फिर मुझसे आन मिला और आपका सन्देश कहा.

आपके उसी स्थान पर जिसका नाम आपने ' कुटिया ' रखा है पहुंचकर रुक गई और आपका इन्तजार करने लगी.

घड़ी - भर भी न बीती होगी कि आप ही की सूरत - शक्ल बनाये एक ऐयार (जरूर ही वह ऐयार होगा) मेरे पास पहुंचा और बहुत - सी इधर - उधर की बातें कर तथा रिक्तगन्थ मुझसे ले कहीं चला गया, उसके चले जाने के बाद मुझे कुछ सन्देह हुआ और मैं सोचने लगी कि कहीं मैंने धोखा तो नहीं खाया.

आपको खोजने निकली, भाग्यवश इस तरफ को निकल आई, यहाँ मनोरमा बीबी का एक आदमी मुझे मिला जिससे मालूम हुआ कि ये यहीं हैं और आप भी अब तक इसी जगह थे और अभी - अभी कहीं गये हैं, सुनकर और भी शक बड़ा और इनसे मिलकर

जब यह सुना कि आप जमानिया से सीधे इधर ही आए हैं रास्ते में न तो कहीं रुक्के और न मुझसे ही मिले तो और सन्देह बड़ा सब हाल इनसे कहा और तब इनको भी विश्वास हो गया कि जरूर मैंने धोखा खाया! ये भी मेरे साथ कुटिया तक गई और सब तरफ खोज की मगर उस पाजी का पता कहां लगने को था जिसने मुझको इतना बड़ा धोखा दिया!

बस घबराती रोती - रोती कलपती चली आ रही हूं, इतना ही तो हाल है! हाय रे किस्मत, मेरा करा - धरा सब चौपट हो गया !! " बिलखती हुई नागर अपना सिर पीटने लगी और मनोरमा ने भी रोने में उसका साथ दिया मगर दारोगा ने इन दोनों को शान्त किया और दम - दिलासा देकर कहा, “ घबराओ नहीं, अब जो होना था सो तो हो ही चुका.

मुझे इन बातों की खबर पहले ही लग गई और मैं यह भी जान गया कि यह कार्रवाई किसकी .

.

.

मनोरमा:

(चौंककर) आपको इस बात की खबर लग गई और आप जानते हैं कि यह काम किसका है !! !! नागर:

(जल्दी से) जल्दी बताइये कि यह शैतानी किसकी है?

दारोगा:

(झुक कर और धीरे से यह कार्रवाई गुलाबसिंह की है और इस काम में दलीपशाह उसका मददगार है.

नागर:

(घबराकर) है, यह आप क्या कह रहे हैं?

मनोरमा:

(ताज्जुब से) यह कार्रवाई गुलाबसिंह की है! नहीं - नहीं, सो कैसे हो सकता है! गुलाबसिंह तो भूतनाथ के हाथों मारा गया ।

नागर:

मनोरमा बहिन ठीक कह रही है, भूतनाथ ने खुद मानी - मानी में ऐसा मुझसे कबूल किया था, यद्यपि खुलासा तो नहीं था पर जो कुछ उसने कहा उसका साफ माने यही था कि गुलाबसिंह उसके हाथों मारा गया.

दारोगा:

हां, उस समय सुनने में तो यही आया था मगर अब जो कुछ मैं तुम लोगों से कह रहा हूं उसकी सच्चाई में भी किसी तरह का शक नहीं हो सकता.

मनोरमा:

तो आपको इसका यकीन है कि नागर के हाथों से रिक्तगन्थ लेने वाले गुलाबसिंह और दलीपशाह हैं?

दारोगा:

हां, पूरा - पूरा.

१.

देखिए भूतनाथ आठवां भाग दसवां बयान.

नागर:

अफसोस, मुफ्त को मैं बदनाम हुई, भूतनाथ के हाथों भी बुरी बनी और आपका काम भी न बना! अब भूतनाथ जरूर मेरा जानी दुश्मन हो जायेगा अगर कभी उसको यह पता लगा कि मैंने ही रामदेई का रूप धर कर रिक्तगन्थ उससे लिया था.

मनोरमा:

(कुछ सोचती हुई) नहीं, सो बात नहीं, अगर जो कुछ दारोगा साहब कह रहे हैं सही है तो अभी भी हम लोग भूतनाथ को धोखा देकर अपनी तरफ कर ही नहीं सकते बल्कि उससे अपना काम भी निकाल सकते हैं.

दारोगा:

(अविश्वास के साथ) भला सो कैसे?

नागर:

यह भी क्या मुमकिन है?

मनोरमा:

हां, है और मजे में है, मुझे एक बात सूझी है, आप लोग भी सुनिये और बताइये कि मेरा ख्याल कहां तक सही है. मनोरमा खसककर दारोगा साहब के पास हो गई और नागर को भी अपनी तरफ खींच उसने धीरे - धीरे कुछ कहना शुरु किया.

हम नहीं कह सकते कि उसने क्या कहा या किस बात की उम्मीद दारोगा और नागर को दिलाई मगर यह जरूर है कि जब उसकी बातें खत्म हुई तो इन दोनों चेहरों की मायूसी और नमी बहुत कुछ दूर हो चुकी थी और उसकी जगह पर आशा ने अपनी दमक फैला दी थी.

.

मनोरमा की बातें खत्म होने पर दारोगा ने मुहब्बत के साथ उनके कन्धे पर हाथ रखा और कहा, " बात तो तुमने लासामी सोची! अगर ऐसा हो जाए तो अब भी कुछ बहुत बिगड़ा नहीं है, मगर मानता हूं तुमको, सूझ तुम्हारी खूब हैं! " नागर ने कहा, " क्या बात है, इनकी सूझ ही तो गजब करती है और तभी तो मैं इनको अपना उस्ताद मानती हूं! मैं तो समझती हूं कि अगर इनका ख्याल ठीक निकला और भूतनाथ को हम लोग अपने चंगुल में फंसा सके तो खुद उसी के हाथों दलीपशाह और गुलाबसिंह को चौपट कराकर अपना काम निकाल लेंगे और भूतनाथ को हम लोगों पर रत्ती - भर भी शक न होगा.

"

दारोगा:

बेशक यही बात है.

मनोरमा:

लेकिन अगर ऐसा करना ही है तो फिर देर न होनी चाहिये.

जितनी जल्दी काम में हाथ लगा दिया जाय बेहतर है, दारोगा:

इसमें भी शक नहीं और देर लगाने की जरूरत भी क्या है?

उठो और अपने काम मे लग जाओ.

दुसरा व्यान।

भूतनाथ भी अजीब आदमी है! उसके मन में क्या तरंग उठेगी और अपने किस विचार को पूरा करने के लिए वह कब कौन - सा काम कर बैठेगा यह कुछ भी कहा नहीं जा सकता.

जाहिर में तो वह दारोगा से खफा हो उसका साथ छोड़ किसी दूसरी तरफ को चल दिया था मगर वास्तव में मूरत की जुबानी सुनी हुई बातों ने उसके दिल में हौल पैदा कर दिया था और यही सबब था कि थोड़ा समय इधर - उधर घूमने फिरने के बाद वह चक्कर काटता हुआ पुनः उसी कुएं की तरफ आ निकला - अगर वह चाहता तो दारोगा का पीछा कर सकता था मगर उसका इरादा कुछ दूसरा ही था और यही सबब था कि इधर - उधर की अच्छी तरह आहट लेकर यह निश्चय कर लेने के बाद कि कुएं के चारों तरह सन्नाटा है और किसी आदमी के वहां मौजूद रहने का कोई निशान नहीं है, वह उसी कुएं के अन्दर उतर गया.

धूर्त और चालाक भूतनाथ को अपने काम में किसी रोशनी की मदद लेने की जरूरत न पड़ी.

वह अन्धकार में ही टटोलता हुआ नीचे उतरकर न - केवल उस सुरंग तक जा पहुंचा जो उस कुएं के बीचोंबीच बनी हुई थी बल्कि उसे पार कर उस मूरत के पास पहुंच गया.

यहां पहुंच और उस मूरत की अद्भुत बातों और तिलिस्मी करामात को याद कर वह एक बार कॉप गया और उसकी इच्छा हुई कि और कुछ नहीं तो कम - से - कम रोशनी तो

कर ही ले मगर उसके दिल ने कबूल न किया और वह हिम्मत बाँध मूरत के बगल से होता हुआ उस आगे वाली राह में घुस गया जिसमें से आते हुए उसे दारोगा ने देखा था.

लगभग आधी घड़ी तक भूतनाथ उस अंधेरी भयावनी और तंग सुरंग में चलता रहा.

इस बीच में सिवाय एक बार एक सायत के लिए रोशनी करके अपने नीचे की जमीन पर कुछ देखने के उसने बिल्कुल अन्धकार में जाना ही पसन्द किया और कहीं भी रोशनी की मदद न ली.

हम नहीं कह सकते कि उसने ऐसा क्यों किया या रास्ते में इस सुरंग के अन्दर वह किन - किन या कैसी - कैसी चीजों के बगल से गुजर गया मगर अब अपना यह सफर समाप्त कर वह जहाँ पर रुका और मोमबत्ती जलाई वह जरूर एक अद्भुत और डरावना स्थान था.

एक बड़ा कमरा जिसकी छत उसकी लम्बाई - चौड़ाई के ख्याल से नीची थी, तरह - तरह के खौफनाक सामानों से भरा हुआ था, जिस पर भूतनाथ के हाथ की मोमबत्ती अपनी कॉपती हुई रोशनी डाल रही थी.

चारों तरफ की दीवारों के साथ सजाकर रखी हुई तरह - तरह के जानवरों की ठठरियों की कतार नजर आ रही थी जिनमें से कुछ तो पूरी थी मगर कुछ टूट - फूटकर अपने स्थान के नीचे ही जमीन पर बिखर गई थीं.

छोटी - बड़ी तरह - तरह की ठठरियां सब जगह मौजूद थीं जिनको देखने से डर के साथ - साथ यह भी ख्याल होता था कि शायद ही ऐसा कोई जानवर होगा जिसकी ठठरी यहाँ मौजूद न हो, इस कमरे के बीचोबीच हड्डियों का एक ढेर चबूतरे की तरह पर बना हुआ था और उस ढेर के ऊपर मनुष्य की हड्डियों का एक ढांचा कुछ विचित्र ढंग से रखा हुआ था अर्थात उसकी गर्दन एक लोहे की जंजीर से बंधी हुई थी जो ऊपर छत तक चली गई थी और उसके दोनों हाथों को दो तरफ से खींचे हुए पतली जंजीरें दोनों बगल की जमीन के अन्दर घुस गई थीं.

इसके चारों तरफ चार हड्डियों के ढांचे और थे जो किसी छोटे जानवर सियार या कुले के मालूम होते थे.

यकायक देखने से ऐसा मालूम होता था मानों कोई आदमी फांसी पर लटका दिया गया है और ये जानवर उसके चारों तरफ बैठे उसके मरने की राह देख रहे हैं.

यह सब सामान ऐसा था जो किसी देखने वाले के दिल में डर और घबराहट पैदा कर सकता था मगर भूतनाथ के मजबूत दिल में ऐसी बातों के लिए बहुत ही कम जगह थी.

वह बिना इधर - उधर एक निगाह भी डाले सीधा उन हड्डियों के ढेर पर चढ़ गया और जिस जगह वह आदमी बैठा हुआ था उसके नीचे की तरफ हाथ डाल हड्डियों के ढेर के अन्दर कुछ टटोलने लगा.

मगर यकायक वह घबरा गया.

शायद जो कुछ वहां खोज रहा था वह चीज उसे नहीं मिली अथवा क्या बात थी, कि वह घबराकर फुर्ती - फुर्ती हाथ चलाने लगा और जब इस पर भी काम न चला तो वहां की हड्डियाँ उठा - उठाकर चारों तरफ फेंकने लगा, मगर इससे भी उसकी इच्छा पूरी न हुई.

उस जगह की बहुत - सी हड्डियां हटा डालने पर भी जिसकी खोज में वह था सो चीज उसे न मिली और अन्त में परेशान और बदहवास - सा होकर जमीन पर बैठ माथे पर हाथ रख कुछ सोचता हुआ बोला, " आखिर, जिसका मुझे डर था वही हुआ और कम्बख्त दुश्मन वह ताली ले ही गए.

हो न हो यह काम भी शैतान दारोगा का ही है ।

!! मगर यकायक भूतनाथ चौंक पड़ा.

उसके कान में किसी के खिलखिलाकर हंसने की आवाज पड़ी थी जिसे सुन वह ताजुब के साथ अपने चारों तरफ देखने लगा मगर किसी की सूरत दिखाई न पड़ी.

अपने कानों का भ्रम समझ वह फिर अपनी बात सोचने लगा मगर थोड़ी देर के बाद उसी तरह की हंसी की आवाज सुन वह फिर चकराया और उठकर गौर से चारों तरफ देखने लगा पर कहीं किसी नई शकल पर उसकी निगाह न पड़ी.

चारों तरफ केवल वे ही भयानक ठठरियां अपने विकराल दाढ़ों से हंसती हुई खड़ी थीं.

बड़े ताज्जुब के साथ उसके मुंह से निकला, “ क्या बात है! मेरे कान खराब हो गये हैं या सचमुच यहां कोई हंसा?

" यह सवाल भूतनाथ ने अपने ही से किया था और उसे भी गुमान न था कि कोई जवाब भी मिलेगा, मगर उसके ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा जब उसके कान में यह आवाज गई, " नहीं, तुम्हारे कानों का भ्रम नहीं, सचमुच ही मैं तुम्हारी बेवकूफी पर हंस पड़ा था! "

यह क्या, यह कौन बोला?

कहीं किसी आदमी की सूरत तो दिखाई नहीं पड़ती! तब यह बात किसने कही?

आवाज बाईं तरफ से आई है.

इधर तो वह सामने मनुष्य की हड्डियों का ढांचा खड़ा है और कुछ नहीं है.

तब वह कौन बोला?

भूतनाथ परेशानी के साथ कुछ देर चारों तरफ देखता रहा, तब बोला, " किसने यह बात कही?

" देखकर भी भूतनाथ को विश्वास न हुआ.

उसके सामने जो मनुष्य की हड्डियों का ढांचा खड़ा था उसके दाढ़ जरा - सा हिले और उसके बिना जुबान के विकराल मुंह से यह आवाज निकली, " मैंने ही वह बात कही थी! " भूतनाथ का हाथ उसके खंजर पर गया और वह झपटकर उस ढांचे के पास पहुंचा मगर जान तो क्या लहू, मांस, खून और चमड़े से भी रहित एक बेजान हड्डियों के ढांचे से वह कहे भी तो क्या और उससे बदला भी ले तो कैसे?

वह परेशान हो उस ढांचे के सामने खड़ा हो रहा.

उसके कानों के साथ - साथ क्या उसकी आंखें भी खराब हो गईं! क्या हड्डियों का निर्जीव ढांचा सिर्फ बोल ही नहीं सकता बल्कि चल - फिर भी सकता है! भूतनाथ ने ताज्जुब के साथ देखा कि हड्डियों का डांचा अपनी जगह से हिला और लड़खड़ाता हुआ उसकी तरफ दो कदम बढ़कर बोला, " क्यों भूतनाथ, तुम्हें ताज्जुब किस बात का हो रहा है जो इस तरह मेरी तरफ देख रहे हो?

" बड़ी हिम्मत के साथ अपने होश - हवास ठिकाने रख भूतनाथ ने जवाब दिया, " भला हड्डियों की एक ठठरी को चलता फिरता और बोलता देख किसे ताज्जुब न होगा! " डांचे ने जवाब दिया, “ तुम्हें मालूम है कि यह तिलिस्म का एक हिस्सा है जहां तुम हो और यह भी जानते हो कि तिलिस्म में सभी कुछ सम्भव है.

" भूत:

बेशक पहली बात मैं जानता हूं पर यह नहीं जानता कि यहां सब कुछ सम्भव है.

जो काम मनुष्य के लिए नहीं हो सकता वह कोई तिलिस्म भी नहीं दिखा सकता.

मैं तो समझता हूं कि तुम कोई धूर्त और चालाक ऐयार हो जो इस तरह अपने को छिपाकर मुझे डराना और अपना काम निकालना चाहते हो.

साफ - साफ कहो कि तुम कौन हो और तुम्हारा क्या मतलब है?

" डांचा:

जो कुछ मैं कहूं वह तो तुम देख ही रहे हो और जो मैं करना चाहता हूं वह जानने से अब तुम्हारा कोई फायदा न होगा क्योंकि उसे मैं कर गुजरा.

भूत:

सो क्या?

डांचा:

किसी चीज को लेने मैं आया था और उसे लेकर अब मैं जा रहा हूं! भूत:

वह कौन - सी चीज है, क्या मैं जान सकता हूं?

डांचा:

हा - हां क्यों नहीं.

इसके जानने के पहले हकदार तो तुम्हीं हो.

अच्छा मैं वह चीज तुम्हें दिखाता हूं, हड्डियों के ढांचे का हाथ जिसमें केवल कलाई और उंगलियों की हड्डियां ही दिखाई पड़ती थीं हिला और एक क्षण के लिए उसके पीछे की

तरफ गया.

इसके साथ ही बह सामने की तरफ बढ़ा और भूतनाथ को उसके हाथ में एक ऐसी चीज दिखलाई पड़ी जिसने उसे इतना घबरा दिया कि उसके मुंह से एक चीख निकल पड़ी.

सोने का बना हुआ और जिसमें जगह - जगह बेशकीमती जवाहरात जड़े हुए थे ऐसा करीब बालिश्त भर ऊंचा एक उल्लू था जो हड्डियों के हाथ में अपनी बिचित्र चमक - दमक से चकाचौंध पैदा कर रहा था.

इसी उल्लू को देख भूतनाथ चौंका और बदहवास हो गया था.

भूतनाथ की घबराहट देख वह हड्डियों का ढांचा भयानक रीति से हंस पड़ा और उसकी डरावनी आवाज उस बन्द जगह में गूंज गई, उसने भूतनाथ की तरफ सिर घुमाया, " अच्छा भूतनाथ, तुमने देख लिया कि मैं किसलिए यहां आया और क्या चीज लेकर चला, अस्तु अब मैं जाता हूं.

मगर इतना सुनते ही भूतनाथ ने चौंककर अपना खंजर निकाल लिया और गुस्से में भरकर बोला, खबरदार! वह चीज मेरे जिगर का खून है जो तुम्हारे हाथ में दिखाई पड़ रही है.

समझ रखो भूत हो, प्रेत हो, जिन्न हो या कोई तिलिस्मी आसेब ही क्यों न हो, पर अब तुम भूतनाथ के हाथों अपनी जान बचा नहीं सकते !! " इसमें कोई शक नहीं कि भूतनाथ बड़े जीवट का आदमी था.

जिन हड्डियों की ठठरी को देख साधारण मनुष्य के डर से होश - हवास गुम हो जाते उसी पर उसने बड़ी हिम्मत और दिलावरी से हभला किया और खंजर का एक हाथ पैंतरे के साथ उसकी तरफ चलाया.

मगर इसका नतीजा वैसा न हुआ जो कि भूतनाथ सोचे हुए था.

वे हड्डियां थीं या फौलादी कि उनसे टकरा भूतनाथ का खंजर कब्जे से अलग हो गया और झनझनाहट की आवाज के साथ जमीन पर गिर पड़ा.

भूतनाथ ताज्जुब के साथ उस आसेब का मुंह देखने लगा जिसने उसके ताज्जुब को देख हंसकर कहा, " " और कोई हथियार तुम्हारे पास है या मैं दूं?

" भूत:

(जिस पर गुस्से ने अपना पूरा असर कर लिया था मगर जो अपने को हर तरह से लाचार पाता था कहा.) कम्बख्त शैतान, मैं समझ गया कि तू जरूर कोई चालाक ऐयार है जो इस पर्दे के अन्दर अपने को छिपाए हुए है.

अच्छा रह मैं तुझे इस शैतानी का मजा चखाता हूं बड़ी फुर्ती के साथ भूतनाथ ने अपना बटुआ खोला और उसके अन्दर से छोटे - छोटे दो गेंद निकाले जिनमें से एक उसने अपनी पूरी ताकत से उस शैतान की तरफ चलाया.

गेंद उस ढांचे से टकराते ही बड़े जोर की आवाज के साथ फूटी और उसमें से आग की लपट, शोले और धुएं के बादल निकलने लगे.

वह शैतान दो कदम पीछे को हटा ही था कि तब तक भूतनाथ का फेंका दूसरा गेंद पहुंचा और इसने और भी गजब कर दिया.

इन दोनों गेदों से निकालने वाले आग और धुएं से शैतान एकदम ढंक गया.

आग के शोलों से वह शैतान ही क्यों समूचा कमरा ढंक गया था और इसमें कोई शक नहीं कि मामूली आदमी तो क्या वहां अगर कोई पत्थर का पुतला भी होता तो साबुत न बचता मगर वह शैतान न - जाने किस चीज का बना था कि इस हमले ने भी उसका बाल न बांका किया.

धुएं के अन्दर से उसकी भयानक गरज भूतनाथ को सुनाई पड़ी और तभी उसने देखा कि जहां वह शैतान खड़ा था उस जगह आग का एक फव्वारा - सा पैदा हो रहा है जिसकी लपट और तेजी से क्षण क्षण में बढ़ती जा रही है और जो कुछ ही सायत में यहां तक बड़ी कि भूतनाथ के फेंके बम के गोलों की लपट और आंच उसके आगे की फीकी पड़ गई.

भूतनाथ ताज्जुब के साथ यह तमाशा देख रहा था कि उस आंच के बीच में से आवाज आई, “ अच्छा भूतनाथ होशियार रहना! तुमने मुझ पर हभला किया है, उस पर- जो तुम्हारी पिछली सब करतूतों से अच्छी तरह वाकिफ है, जो तुम्हारी नस - नस को पहचानता है! तुम्हारी वह प्यारी चीज जिसके लालच में तुमने बड़े - बड़े पाप किए

अर्थात् शिवगड़ी की चाबी तो मैं ले ही जा रहा हूं साथ ही यह भी सुन रखो कि भानुमति का पिटारा भी मेरे कब्जे में आ गया है.

बहुत जल्द उसका भेद इस दुनिया में सब पर जाहिर करके मैं तुम्हें जीते जी दोजख में पहुंचा दूंगा! " न - जाने इन शब्दों के भीतर कौन - सा भेद छिपा हुआ था कि इन्हें सुनने के साथ ही भूतनाथ के मुंह से एक चीख की आवाज निकल पड़ी और वह बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ा.

जब भूतनाथ होश में आया, उसने अपने को एक नाले के किनारे ही - हरी दूब पर पड़ा हुआ पाया.

पौ फट चुकी थी और पूरब की तरफ का आसमान लाली पकड़ रहा था.

अपने रंगीन पंखों की खूबसूरती के साथ - साथ सुरीली तानों से मन को प्रसन्न कर देने वाली नाजुक चिड़ियों ने इस डाल से उस डाल पर फुदकना शुरू कर दिया था और दक्खिन तरफ से आने वाली खुशबूदार जंगली हवा के झपेटे दिलोदिमाग के साथ तन - बदन को भी मस्ती और ताकत देने लगे थे.

मगर भूतनाथ के परेशान दिमाग को इन सब चीजों को देखने - समझने और इनका आनन्द लेने की फुरसत ही कहाँ?

वह तो होश में आने के साथ ही उठकर बैठ गया और इधर - उधर देखता हुआ ताज्जुब के साथ बोल उठा, " हैं, मैं कहां हूं?

" इसके साथ ही उसकी निगाह एक आदमी पर पड़ी जो इसके सिरहाने की तरफ बैठा हुआ था और अब तक शायद उसके माथे को पानी से तर कर रहा था.

उसको देखते ही वह ताजुब के साथ बोल उठा, " है, शेरसिंह, तुम यहां कहां! " शेरसिंह ने कहा, " पहले यह बताओ कि तुम यहां कहां?

ऐसी सुनसान निराली जगह में एकदम बेहोश और अकेले तुम क्यों और कब के पड़े हुए हो?

" भूत:

(ताज्जुब से) मैं इस मैदान में पड़ा हुआ था! शेर:

हाँ, और ऐसी गहरी बेहोशी की हालत में कि बार - बार लखलखा सुंघाने माथा तर करने और हवा खिलाने पर भी बड़ी मुश्किल से तुम्हें होश आई है.

वह तो कहो कोई खूखार जानवर इधर से नहीं गुजरा, नहीं तो .

.

.

भूत:

अफसोस कि ऐसा न हुआ, नहीं तो अच्छा ही होता और मेरी मुसीबतों का खात्मा हो जाता! शेर:

(ताज्जुब से) इसके क्या माने?

भूतः:

इसके माने यह कि भूतनाथ की जिन्दगी का खात्मा हो गया, आज से जीते - जी कोई मुझे इस सूरत और हालत में देख नहीं सकता.

शेर:

अब इस तरह पहेली बुझाने से तो काम नहीं चलेगा.

तुम जरा खुलासा और साफ - साफ कहो कि क्या माभला है और तुम्हारा मतलब क्या है?

" भूत:

साफ - साफ कहने की जरूरत ही क्या है मेरे भाई.

तुम्हें तो मेरा सब हाल शुरू से आखिर तक मालूम ही है.

तुम अच्छी तरह जानते हो कि किस चीज की लालच मुझे सबसे ज्यादा थी और किसके लिए मैंने जमाने - भर के पाप किए और दुनिया भर में बदनाम हुआ.

बस इतने से ही समझ जाओं कि वह सोने का उल्लू ' मेरे कब्जे से निकलकर मेरे दुश्मन के पास चला गया! शेर:

(चौंककर) हैं! यह तुम क्या कह रहे हो?

भूत:

बस वही जो मैंने कहा.

शेर:

सोने का उल्लू तुम्हारे दुश्मन के कब्जे में चला गया?

किस दुश्मन के?

भूत:

उसी तिलिस्मी शैतान के?

शेर:

कौन तिलिस्मी शैतान?

भूतः:

वही जिसका हाल मैं तुमसे कह चुका हूं, गंगापुर के पास एक मैदान में जिसको मैंने देखा था, या जिसने ' रोहतासगढ़ के पुजारी ' के नाम से अपना परिचय दिया था.

' शेर:

मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो! तुम साफ - साफ सही - सही माभला पूरा मुझसे कहो तो मेरी समझ में आए और मैं कोई राय कायम कर सकूं.

इसके जवाब में ' बहुत अच्छा ' कह भूतनाथ कुछ घटा - भड़ा के साथ वह सब किस्सा बयान कर गया जो पिछले हिस्से में पाठक पड़ चुके हैं, अर्थात् जिस समय झोंपड़े के अन्दर शेरसिंह के सामने कामेश्वर ने उसके आगे प्रकट होकर उसके किसी पुराने पाप का भण्डा फोड़ा था और वहीं मौका पा उस पीतल की सन्दूकड़ी और तस्वीर को ले उस झोंपड़े के बाहर गया था उस समय से लेकर अब तक का सब क़िस्सा यानी वह तस्वीर और पीतल की सन्दूकड़ी लेकर भागना, किसी का उसे कुएं में ढकेलकर उन दोनों को ले लेना, शागिर्दो की मदद से कुएं के बाहर निकलना, राजा वीरेन्द्रसिंह के महल से रिक्तगन्थ चुराना, उसे लाकर रामदेई को देना (भूतनाथ अभी तक नहीं जानता कि यह

नागर का काम है), नानक के मुंह से उसका विचित्र हाल सुनना और रिक्तगन्थ वापस लेने जाकर जख्मी होना, नानक को अपने गायब होने की बात कह श्यामा के पास जाना, वहां कुछ दिन बीमार रहने के बाद उस लुटिया पहाड़ी पर तिलिस्मी कुएं में अपनी चीज खोजने जाना.

१.

देखिये सोलहवें भाग का अन्त.

२.

देखिये भूतनाथ अट्ठारहवां भाग, तीसरा बयान.

उसको सही - सलामत देख वापस लौटना, रास्ते में दारोगा से भेंट और पुतले की विचित्र बातचीत और अन्त में पुन:

उस ठठरियों वाले कमरे में जाकर उस चीज को गायब और शैतान के हाथ में पाना, यह लम्बा किस्सा वह बयान कर गया.

शेरसिंह चुपचाप ध्यान से सब कुछ सुनता रहा और जब अपना हाल कह भूतनाथ चुप हो रहा तो एक लम्बी सांस फेंककर बोला, " देखो भूतनाथ, मैं बार - बार जिस बात से तुमको होशियार करता था वही आखिर सामने आई! जिस चीज की लालच में तुमने सब दुष्कर्म किए वह चीज भी तुम्हारे हाथ से निकल गई और अब तुम्हारे पिछले भेद प्रकट होकर तुम्हें दुनिया में किसी के आगे मुंह दिखाने लायक भी न रखेंगे.

तुम्हें याद होगा कि मैंने तुमसे कहा था कि शिवदत्त, दारोगा और मायारानी तीनों को चकमा देकर अपना काम निकालना तो चाहते हो मगर इस काम का नतीजा अच्छा न होगा, अगर कभी भंडा फूटा तो तुम दुनिया भर में अपना मुँह छिपाते फिरोगे और किसी काम के न रह जाओगे, क्यों कही थी न मैंने यह बात! " भूतनाथ की आँखों से आंसू गिरकर उसके कपड़ों को तर कर रहे थे.

वह भरे हुए गले से बोला, “ बेशक मेरे भाई, तुमने यह बात कही थी और जो कुछ कहा उसका एक - एक हरुफ अब सामने आना चाहता है.

अफसोस मैं भी कैसा अभागा हूँ! शेर अभागा नहीं बल्कि ये कहो कि अपने सुख - सौभाग्य को अपने पैर से ठुकरा देने वाला! कैसे मजे में तुम रणधीरसिंह के यहां रहते थे, अपनी स्त्री और लड़के - बच्चे के साथ सुख की जिन्दगी बिताते थे! तिलिस्म खोल तिलिस्मी खजाना लेकर अमीर बनने की लालच तुम्हारे मन में उठी.

दारोगा के दिखाए सब्जबाग में तुम फंस गए और शिवदत्त की बातों में पड़ तुमने वह काम कर डाला जिसे छोटी - से - छोटी तबीयत का आदमी भी न करता.

उस शिबगड़ी की ताली पा तुम फूले न समाते थे, मगर मैंने तुमसे उसी वक्त कहा था कि तुम बदनाम हो जाओगे और कहीं के न रहोगे.

कहो, हुई न वहीं बात?

भूत:

बेशक, जो - जो आपने कहा वही - वही हुआ.

अफसोस मैं कहीं का न रहा! शेर:

' खैर तो अब क्या विचार है?

अब तुम क्या चाहते हो?

भूत:

अब भी मैं क्या कुछ करने लायक रह गया?

क्या आपने गौर नहीं किया कि उस शैतान ने आखिरी बात मुझको क्या कही थी?

' भानुमति का पिटारा ' इस जुमले के माने पर क्या आपने गौर नहीं किया?

शेर:

बेशक गौर किया और अच्छी तरह समझ लिया कि अब तुम दीन - दुनिया कहीं के न रहे.

इसी से तो मैं पूछ रहा हूं कि अब तुम्हारा क्या विचार है?

क्या अभी तिलिस्मी खजाना लेकर अपना घर भरने की इच्छा तुम्हारे मन में बनी है?

भूत:

(हाथ जोड़कर) अब बार - बार उन्हीं बातों को दोहरावें नहीं मैं कह जो चुका कि अब मैं कहीं का न रहा.

उस झोंपड़े में ही मैंने आपसे कहा था कि अब जीते रहने की इच्छा मेरे मन में नहीं है, अब आज वाली घटना हो जाने के बाद भी क्या मैं पुन:

इस दुनिया में रह सकता हूं?

शेर:

तुम्हारा क्या विचार है?

क्या तुम अपनी जान दे देना चाहते हो?

भूत:

बेशक दे देना चाहता हूं, मगर अभी नहीं पहले अपने दुश्मनों से पूरा - पूरा बदला लेकर जिनके सबब से मैं इस हालत को पहुंचा जमाने के आगे इस बात को रखकर कि मैं उतना बड़ा कसूरवार नहीं जितना दुनिया मुझे समझती है, तभी मैं अपनी जान दूंगा.

बचने की कोई साध मेरे मन में बाकी नहीं है.

शेर:

अपने माथे की बदनामी दूर करने का ख्याल तो जितना कुछ बना रहे अच्छा ही है मगर मैं यह समझ नहीं पाया कि तुम कैसे अपने को बेकसूर साबित करोगे?

खैर यह सब तुम्हारे सोचने की बात है जैसा चाहो करो और जो उचित समझो करो, मैं इस बारे में कर ही क्या सकता हूं, भूत:

नहीं - नहीं मेरे भाई, इस वक्त अगर कोई मेरी मदद कर सकता है तो तुम्हीं हो.

तुम्हारी मदद के वगैरह जो कुछ मैंने सोचा है, वह किसी तरह पूरा नहीं हो सकता.

शेर:

(ताज्जुब के साथ) तुमने क्या सोचा है और मेरी कैसी मदद तुम चाहते हो?

भूत:

बस दो काम तुम मेरे लिए कर दो, एक तो यह कि कोई छिपने की जगह मुझे ऐसी बताओ जहाँ रहकर मैं दुनिया का हाल - चाल मालूम कर सकूँ और दूसरा यह कि मैं इस दुनिया से उठ गया इस खबर को सब तरफ फैला दो, इस खूबी के साथ कि किसी को इसमें कोई सन्देह न रह जाय.

शेर:

(कुछ सोचता हुआ) दोनों ही काम कुछ मुश्किल तो हैं मगर असम्भव नहीं.

लेकिन मेरे दोस्त, मैं अब तक न समझा कि तुम क्या सोच रहे हो, तुम्हारा असली मतलब क्या है और अपने को मरा मशहूर करके तुम क्या करना चाहते हो?

भूत:

बदनामी की कालिख में मैं अपना चेहरा खूब अच्छी तरह रंग चुका.

पहले जब दयाराम बाला भण्डा फूटा था तो मैं कलेजे पर सिल रखकर बैठा रह गया था और बेहयाई के अन्दर अपना मुंह छिपा इन्द्रदेव के वायदे पर विश्वास कर इस कारण चुप रह गया था कि वह सब किस्सा दुनिया की निगाहों से छिपा ही रह जायेगा.

मगर उसके बाद इधर मेरे इस दूसरे और उससे भी भयानक तीसरे पाप का भण्डा फूटने को हुआ है और अब मेरे लिए किसी को मुंह दिखाना असंभव हो गया है.

अब अगर कुछ हो सकता है तो यही कि कोशिश करके इस दुनिया में नेकनाम बनू और यह बताऊं कि इन मामलों से पूरा कसूर मेरा ही नहीं है और मैं व्यर्थ ही बदनाम किया जा रहा हूं.

अगर दस काम मेरे हाथ से बुरे हो चुके हैं तो सौ काम अच्छे करके मैं इस दुनिया की निगाहों को पलट देना चाहता हूं.

कहो मेरे दोस्त, क्या इस काम में मेरी मदद करने की हिम्मत तुममें है?

शेर:

(जोश के साथ) बेशक है, हज़ार बार है! भला नेकनामी का ख्याल तो तुम्हारे मन में उठा! मैं हमेशा ही सब तरह से तुम्हारी मदद करने को तैयार था और अब भी हूं, मगर पहले तुम साफ - साफ मुझसे बताओ कि तुम्हारा विचार क्या है?

कहीं ऐसा न हो कि तिलिस्म खोलकर अमीर बनने के तुम्हारे उस पिछले विचार की तरह नेकनाम बनने का तुम्हारा यह इरादा भी कुछ उल्टा रंग लाए और पीछे तुम्हारे साथ - साथ मुझसे भी दीन - दुनिया छुड़ा दे! भूत:

(कुछ अफसोस के साथ शेरसिंह का मुंह देखकर) अफसोस तुमने कभी मुझ पर सच्ची तरह से यकीन न किया ! तुम हमेशा मेरे सब कामों को शक की निगाह से देखते रहे !! शेर:

और तुम मंजूर करोगे कि मेरा शक हर हालत में सही निकला.

मगर खैर, यह बात मैं ताने के साथ नहीं कह रहा हूं.

मुमकिन है कि अब दुनिया के ये थपेड़े खाकर, तुम ठीक - ठीक तौर पर सब बातें सोचने - समझने लायक हो गए हो.

बताओ कि तुम्हारा विचार किस तरह पर क्या करने का है?

भूतनाथ घसकर शेरसिंह के पास चला आया और धीरे - धीरे उससे बातें करने लगा.

घण्टे - भर से ऊपर समय तक भूतनाथ अपने दिल की बातें शेरसिंह से कहता रहा.

इस बीच उसके मन में जो कुछ था उसने सब सच - सच शेरसिंह से बयान किया और शेरसिंह के मन में जिन - जिन बातों की शंका उत्पन्न हुई उन्हें भी पूरी तरह से दूर किया , यहां तक कि उसकी बातों को सुनकर शेरसिंह प्रसन्न होकर बोल उठे, " बेशक भूतनाथ, मैं तुम्हारे विचारों की तारीफ करता हूं, तुमने जो कुछ सोचा उसे अगर पूरा उतार सको तो जरूर दुनिया में फिर से नेकनामी के साथ मशहूर हो सकते हो.

मगर यह याद रखना कि अगर तुम्हारी नीयत बदली और तुम लालच या ऐयाशी के फेर में पड़े तो कहीं के न रहोगे और मरकर भी तुम्हारी जान को चैन न मिलेगा !! " भूतनाथ बोला, " मैं इस बात को खूब समझता हूँ और सब कुछ सोच - समझ कर ही

अपना विचार मैंने तुम्हारे सामने रखा तुम विश्वास रखो कि या तो अब मैं नेकनाम होकर दुनिया के आगे आऊंगा और या फिर आज से कोई मेरी यह सूरत ही न देखेगा.

" !! शेरसिंह ने कहा, “ तो मैं भी दिलोजान से तुम्हारी मदद करने को तैयार हूं, भूत:

तो फिर वही दोनों काम कर दो जिनके लिए मैंने तुमसे कहा, अर्थात् मुझे मुर्दा मशहूर कर दो और छिपने की कोई ऐसी जगह बता दो जहां दुनिया की निगाहों से दूर रहता हुआ भी मैं चारों तरफ की खोज - खबर लेता रह सकूं.

शेर:

अच्छी बात है, मैं यह दोनों ही काम कर दूंगा.

मगर यह तो कहो कि शान्ता को तुम किस तरह अपने साथ .

.

.

भूत:

नहीं - नहीं, उसे मैं अपने साथ नहीं रखना चाहता, खासकर तो उसी की निगाहों से अपने को दूर करना चाहता हूं और उसी के विषय में तुम्हारी मदद चाहता हूं, तुम्हें ऐसी कार्रवाई करनी होगी जिससे उसे विश्वास हो जाए कि मैं अब इस दुनिया में नहीं रहा.

शेर:

यह तो बड़ी कठिन बात है.

भूत:

कुछ भी कठिन नहीं.

आज सारा जमाना, कम - से - कम जानकार जमाना जानता है कि भूतनाथ के हाथों लोहगड़ी उड़ गई और वह खुद भी उसी में ढेर हो गया! शेर:

सो बात नहीं, मुश्किल से मेरी मुराद उस सच्ची औरत को यह झूठी खबर पहुंचाने से हैं! भूतनाथ, सचमुच तुमने अपनी उस सती - साध्वी औरत को अभी तक नहीं पहचाना

और न उसके दिल की गहराई की थाह पाई! भूत:

बहुत कुछ पाई और इसी से अब उसके सामने जाना नहीं चाहता हूं.

(हाथ जोड़कर) बस आप मेरा विचार बदलने की कोशिश मत कीजिये और चाहे जैसे भी हो शान्ता को यकीन करा दीजिए कि मैं इस दुनिया से उठ गया.

शेर:

(एक लम्बी सांस लेकर) बहुत अच्छा, मैं करा दूंगा.

अपने कलेजे पर पत्थर रखकर तुम्हारी स्त्री को यह झूठी खबर मैं सुनाऊंगा.

और कहो?

भूत:

बस वही -- कोई गुप्त स्थान मेरे लिए ठीक कर दो.

शेर:

अच्छा तो सुन लो.

गयाजी की रामशिला पहाड़ी तुमने देखी ही है?

भूत ०:

हां, बहुत अच्छी तरह.

वही तो जिसके पूरब पुराना मसान है और जहां नदी के बीचोंबीच एक भयानक टीले के ऊपर हम लोगों के गुरु महाराज के गुरुदेव की समाधि शेर:

हा - हां, वही, मेरी उसी जगह से मुराद है, उस समाधि के पास ही आजकल एक साधु महाराज रहते हैं.

भूत:

हां, मैंने सुना है कि वहां कोई पहुंचे हुए सिद्ध अपनी कुटिया बनाकर रहते हुए उस भयानक स्थान में योग साधना कर रहे हैं.

तब?

शेर:

उन महात्मा के पास कभी - कभी मैं जाया करता हूं.

अभी हाल ही में जब मैं उनके दर्शन करने को गया तो उनसे सुना था कि वे अब उस स्थान को छोड़ उत्तराखण्ड की ओर चले जाना चाहते हैं.

उन्होंने अमाबस वाले दिन वह स्थान छोड़ देने का अपना विचार प्रकट किया था और साथ ही यह भी कहा था कि अपना यह विचार वे और किसी पर प्रकट नहीं होने देना चाहते हैं.

भूत:

तब?

शेर:

मेरा विचार है कि जब महात्मा वह स्थान छोड़कर चले जाएं तो तुम उनकी जगह वैसा ही भेष बनाकर उस कुटिया में रम जाओ.

उनके भक्त और शिष्य लोग तुम्हें खाने - पीने की तकलीफ न होने देंगे और उन्हीं के जरिए तुम्हें दुनिया का हाल भी मालूम होता रहेगा.

भूत:

(कुछ सोचकर) विचार तो तुम्हारा अच्छा है, मगर कहीं से महापुरुष मेरी इस कार्रवाई से रुष्ट न हो जाएं! शेर:

नहीं - नहीं, इसका प्रबन्ध मैं कर लूंगा, चिन्ता करने की जरूरत नहीं.

भूत:

तो ठीक है, मुझे भी वह स्थान मंजूर है, मेरे मन के लायक ही वह जगह है भी.

शेर:

अच्छा तो फिर उठो, उधर ही चला जाए.

रास्ते में और बातें तय कर ली जायेंगी.

भूतनाथ और शेरसिंह उठ खड़े हुए और गयाजी की तरफ रवाना हो गए.

१.

यहां पर भूतनाथ नोट लिखता है- शेरसिंह की मदद से मैं फलगू नदी के मसान के उस साधक के रूप में बरसों तक छिपा रह गया.

दुनिया - भर में यही मशहूर हुआ कि भूतनाथ मर गया मगर भूतनाथ वास्तव में साधु बना हुआ उसी मसान पर विराज रहा था.

मैं नहीं कह सकता कि मेरे विषय में शेरसिंह ने क्या कार्रवाई की या किस तरह शान्ता तथा दूसरों को विश्वास दिला दिया कि मैं अब इस दुनिया में नहीं रहा मगर इसमें कोई शक नहीं कि मेरे खास एक - दो दोस्त या दुश्मन को छोड़ तमाम जमाना यहीं जानता रहा कि गदाधरसिंह मर गया.

इस जगह.

अखण्डनाथ बाबाजी के भेष में रहकर मैं दुनिया से अलग रहता हुआ भी उसके हाल - चाल पर नजर रखता था.

इस स्थान और इस भेष के बाहर निकलने का मौका इस बीच में सिर्फ दो ही चार दफे मुझे पड़ा (जिसका जिक्र आगे आयेगा) नहीं तो अपनी जिन्दगी के कई वर्ष बराबर इसी जगह मैंने बिताए, वहीं पर जब इन्द्रजीत सिंह के इश्क में माधबी पड़ गई थी तो मुझसे सलाह लेने मेरे पास आई थी, और वहीं पर आकर देवीसिंह मुझे मिले थे तथा उन्होंने मेरा रूप धारण कर इन्द्रजीतसिंह की मदद की थी जिनके असली हाल - चाल का पता उन्हें मुझसे लगा था.

जब प्रतापी राजा वीरेन्द्रसिंह का जमाना बढ़ता हुआ मैंने देखा, उनके शेरदिल लड़कों का दौरदौरा हुआ और कमलिनी ने मायारानी से अलग होकर सिर उठाया तब मौका अच्छा जान मैं फिर से भूतनाथ के रूप में जमाने के आगे आया (मै पहले कई जगह लिख चुका हूं कि अभी तक मैं गदाधरसिंह के नाम से ही मशहूर था मगर लोगों में मेरा '

भूतनाथ ' नाम प्रचलित होने के कारण इस ग्रन्थ में भी मैं यही नाम लिखता हूं) और राजा वीरेन्द्र सिंह का ऐयार बनने की धुन मुझे लगी.

यहीं और इसी रूप से निकलकर मैं तहखाने में शेरसिंह से मिला था और इनसे मैंने अपना विचार प्रकट किया था पर इस बीच में इतना कुछ फेर - बदल हो गया और दुष्टों और शैतानों ने तरह - तरह की बदमाशियों का जाल इस कदर फैला दिया था कि शेरसिंह को मेरा प्रकट होना न भाया बल्कि मुझको प्रकट होता देख वे स्वयं ही कहीं लुप्त हो गए.

मगर खैर उन्होंने चाहे जो कुछ भी सोचा हो, पर मेरे लिए तो मेरा प्रकट होना शुभ ही हुआ और प्रतापी महाराज सुरेन्द्रसिंह की दया और उनके सत्यवादी ऐयार देवीसिंह की कृपा से मैं राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों की पंक्ति में बैठने योग्य हुआ.

१.

देखिए चन्द्रकांता सन्तति दूसरा भाग, पन्द्रहवां बयान.

२.

देखिए चन्द्रकांता सन्तति तीसरा भाग, तेरहवां बयान.

तीसरा व्यान।

उस अंधेरे और भयानक अंधकूप में प्रभाकरसिंह सुस्त और उदास अकेले पड़े हैं.

इस स्थान में उनको आए आज यह तीसरा दिन है.

जिस दिन उस औरत से उनकी बात हुई थी उस रात को ही मालती न - जाने कहां गायब हो गई थी और दूसरे दिन सुबह सोकर उठने पर (यद्यपि इस अंधेरी जगह में दिन - रात और सुबह शाम सब एक - सा ही था) इन्होंने उसे वहां न पाया.

इस छोटी - सी जगह की बिसात ही क्या फिर भी अपने तिलिस्मी डण्डे की मदद से उन्होंने एक - एक कोना तलाश किया और कहीं मालती को न पाया और न उसकी कोई

निशानी ही देख वे सुस्त बैठे रहे थे.

उनकी सब बुद्धिमानी, समूची कोशिश और तिलिस्मी किताब और हथियार की मदद उनके किसी काम न आई और वे अपने को इस कैदखाने से छुड़ा न पाए.

न - जाने यह कौन - सी जगह थी और यह तिलिस्मी रानी और उसकी सहेलियां कौन बला थीं क्योंकि तिलिस्मी किताब में इनका कोई भी जिक्र नहीं था और इस समय उदास मन से अकेले अपनी बांह पर सिर रखे लेटे हुए यही सोच रहे थे.

अचानक प्रभाकरसिंह चौके और इधर - उधर देखने लगे.

उनके कानों में किसी के खिलखिलाकर हंसने की आवाज पड़ी थी.

उन्होंने सिर घुमाकर इधर - उधर देखा पर कहीं कोई न था.

वह भयानक अंधकुप पहले ही की तरह अकेला अंधेरा और निर्जन था.

तब यह आवाज किधर से आई?

ऊपर की तरफ कहीं से कोई आहट मिल न रही थी और उधर की ऊंचाई इतनी अधिक थी कि वहां की आवाज नीचे इस तरह सुनाई भी न पड़ सकती थी.

तब फिर यह हंसने की आवाज किधर से आई?

ताज्जुब के साथ वे यही सोच रहे थे कि फिर वैसी ही आवाज आई.

अब प्रभाकरसिंह लेटे न रह सके.

उठ खड़े हुए और इधर - उधर घूम - घूम कर तलाश करने लगे कि बार - बार यह आवाज किधर से आ रही है.

कुएं की दीवार के साथ - साथ घूमते हुए एक जगह पहुंचकर यकायक प्रभाकरसिंह चौंक गए,

न तो उन्हें कोई रोशनी दिखी थी और न उन्हें कोई आहट मिली थी, फिर भी जो वे रुके उसका कारण यह था कि उन्हें एक जगह से कुछ हवा आती हुई - सी जान पड़ी.

हाथ से टटोलकर देखा तो एक छोटा - सा छेद गर्दन की ऊंचाई पर मालूम हुआ जिसके अन्दर से तेजी के साथ हवा आ रही थी.

कुछ नीचे झुककर आँख लगाई तो सचमुच देखा कि एक छोटा सुराख था और दूसरी तरफ कुछ रोशनी - सी भी मालूम हुई.

इसकी जांच कर ही रहे थे कि फिर उसी तरह हंसने की आवाज सुनाई पड़ी और इस बार साफ मालूम हो गया कि यह आवाज भी इसी सुराख की राह आ रही है.

कुछ बातचीत की आहट मिली और ये गौर से सुनने लगे.

कोई कह रहा था, “ भला यह भी तो सोचो कि वह इस बात को कैसे मंजूर कर सकती है.

जिसके जवाब में दूसरा कोई बोला, " तो इन्दुमति भी फिर अपने जान की खैर नहीं मना सकती.

आखिर वह भी तो कैद ही में है और न - जाने कब महारानी उसका सिर काटने की आज्ञा दे दें! " प्रभाकरसिंह चौंक पड़े.

यह क्या बात है?

इन्दुमति का जिक्र यहां कैसा?

क्या वह भी इन शैतानों के फेर में आ फंसी है?

ओफ, कितने दिनों से मेरी - उसकी भेंट नहीं हुई है.

न - जाने वह बेचारी किन - किन मुसीबतों में पड़ी या क्या - क्या आफतें उस पर आई !! इन्दुमति के ख्याल ने इन्हें बेचैन कर दिया और वे उतावले के साथ इस जगह से बाहर होने की कोई राह तलाश करने लगे.

जिस जगह वह छोटा - सा छेद उन्हें दिखा था उसके चारों तरफ हाथ फेरने पर उससे जरा ही ऊपर एक और छेद उन्हें मिला जो उस पहले सुराख से कुछ बड़ा था मगर उसकी बनिस्बत ज्यादा ऊंचाई पर भी था, जमीन से उचक कर ही उसमें आंख लगाई जा सकती थी.

पैर की उंगलियों पर बोझा दे प्रभाकरसिंह ऊपर को उठे और छेद तक अपना सिर पहुंचाया.

देखा तो मालूम हुआ कि यह सुराख पहले से बड़ा है और इसकी राह दूसरी तरफ का कुछ - कुछ दृश्य भी दिखाई पड़ रहा है.

एक जंगले का कुछ हिस्सा, उसके बाद आंगन का और तब पीछे वाले एक दालान का कोना इनकी आंख के सामने पड़ा जिसे देखते ही ये चौंक गए क्योंकि जट इन्हें याद आ गया कि यह वही जगह है जहां बावली बाली राह से सुरंग के भीतर कुछ कैदियों को देखा था अथवा जिसका हाल मालती ने इस तरह बयान किया था कि - सुरंग के अन्दर के तिलिस्म को खोलने के बजाय मैं उन कैदियों के पास चली गई और उनसे बात करना चाहती थी कि रानी के आदमियों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया!

प्रभाकरसिंह इस स्थान को सिर्फ एक झलक ही बावली में से देख पाये थे अस्तु इस समय कुछ ताज्जुब और कौतूहल के साथ इसको देखने लगे.

उन्होंने देखा कि किसी बहुत बड़े मकान का आंगन है जिसके चारों तरफ दालान बने हैं, आंगन का एक बड़ा हिस्सा और उसके पीछे का दालान लोहे के छड़दार जंगलों से घेर कैदखाने की तरह बना दिया गया है जो ऊपर की तरफ से भी लोहे के मजबूत जाल से बन्द है.

उसके पीछे वाले दालान के बाद भी कई कोठरियों के खुले या बन्द दरवाजे नजर आ रहे थे जो शायद उन कैदियों के रहने के काम में आती होंगी जो इस वक्त उस दालान में बैठे कुछ कर रहे थे और उनके पीठ इधर उधर होने तथा फासला ज्यादा होने और पूरा - पूरा दिखाई भी न पड़ने के कारण जिन्हें प्रभाकरसिंह पहचान नहीं सकते थे.

मगर प्रभाकरसिंह उन कैदियों की तरफ ज्यादा गौर दे भी न सके क्योंकि इसी समय उनका ध्यान उन दो औरतों की बातचीत ने खींच लिया जो उनके सामने ही दिखाई न पड़ने पर भी कपड़ों की झलक और बातचीत की आवाज से साफ मालूम पड़ रही थीं.

प्रभाकरसिंह बड़े गौर से उनकी बातें सुनने लगे.

एक:

अगर प्रभाकरसिंह महारानी की बात न मानेंगे तो क्या इन्दुमति मार डाली जायेगी?

दूसरी:

जरूर, और सिर्फ इन्दुमति ही क्यों, इसके बाद एक - एक करके इन सब कैदियों का सिर उतार लिया जायगा जो यहां बन्द हैं और सबके अन्त में मालती को सूली दे दी जायेगी.

मगर प्रभाकरसिंह इनकार करेंगे ही क्यों?

क्या वे इतना नहीं समझ सकते थे कि किस काम में उनका फायदा है?

इन्कार करके अपने प्रेमियों की जान लेने और खुद अपनी जान भी इस अंधकूप में भूखे - प्यासे पड़े रहकर देने में या महारानी का हुक्म मानकर इतने कैदियों को छुड़ाने और खुद वेशबहा - दौलत हीरे - मोती - जवाहीरात और ऐसा खूबसूरत रत्न पाने में.

पहली:

ठीक है, तभी तो उनकी मालती ने हमारी महारानी की बात तुरन्त मान ली.

मगर अफसोस.

प्रभाकरसिंह अपनी जिद्द पर कायम रहकर उसकी जान लेंगे.

क्योंकि महारानी ने हुक्म दिया है कि अगर वे यह बात न मानें तो मालती भी सूली पर चढ़ा दी जाय.

दूसरी:

सो ही तो! मगर मैं समझती हूं, वे मान जायेंगे.

यों तो वह लड़कपन के जिद्दी हैं मगर इस समय इतना गहरा नुकसान पहुंचाने वाली जिद्द पर अड़े न रहेंगे ऐसा विश्वास है.

पहली:

सो न समझो! अगर वे तुम्हारी बात न मानें तो तुमको इन्दुमति का सिर काटने का हुक्म मिला है, ऐसा जब प्रभाकरसिंह सुनेंगे तो फिर वे तुम्हारी बात कभी भी न मानेंगे! भूखे

- प्यासे रहकर अपनी भी जान भले ही दे दें पर डरा धमकाकर उनसे कोई काम नहीं लिया जा सकता, यह तुम जान रहो.

दूसरी:

सो तो मैं खूब जानती हूं और इसी से इस वक्त जैसे भी होगा समझा - बुझाकर ही उन्हें राजी करूंगी.

वे बुद्धिमान आदमी हैं, अपना नफा - नुकसान अच्छी तरह सोच सकते हैं और इसलिए मुझे विश्वास है कि जरूर मेरी बात न मान लेंगे.

पहली:

कोशिश कर देखो, मुझे तो यकीन नहीं होता.

बातचीत की आवाज बन्द हो गई और तब किसी दरवाजे के खुलने की आहट मिली जिसके साथ ही अपने ऊपर की तरफ प्रभाकरसिंह को कुछ रोशनी मालूम हुई, तुरन्त ही वे उस जगह से हट गए और अपनी जगह पर पहुंच उसी तरह लेट रहे जैसे पहले पड़े हुए थे.

प्रभाकरसिंह के देखते - देखते पहले ही की तरह झूला पुन:

नीचे को उतरा और उस पर से हाथ में विचित्र ढंग की मशाल लिए जिसमें लबर और रोशनी तो थी मगर धुआं बिल्कुल न था, एक औरत नीचे उतरी.

प्रभाकरसिंह को गुमान था कि वह वही होगी जिसने उस महारानी के दरबार में उनसे बातें की थीं या जो यहां भी एक बार आकर उन्हें धमकियां दे गई थी मगर सो न था.

उस औरत के बजाय इन्होंने एक दूसरी ही को अपने सामने पाया जो इसकी बनिस्बत उम्र में तो कुछ कम मगर खूबसूरती में कहीं ज्यादा थी और जिसने बहुत ही सुन्दर और किमती गहने - कपड़ों से अपने को सजा रखा था.

प्रभाकरसिंह इसे देख उठ बैठे और सवाल की निगाह उसके ऊपर डालने लगे.

उस औरत ने इन्हें नमस्कार किया और तब एक चिट्ठी इनकी तरफ बढ़ाते हुए कहा, " यह चिट्ठी मालती देवी ने आपके पास भेजी है ।

!!

" मालती ने?

" ताज्जुब और खुशी के साथ प्रभाकरसिंह ने हाथ बढ़ा चिट्ठी ले ली.

उस औरत के हाथ की मशाल के सबब से वहां काफी उजाला था अस्तु प्रभाकरसिंह वह चिट्ठी पड़ने लगे.

यह लिखा हुआ था:

अब " पूज्यपात, बहुत बड़ी - बड़ी आशाएँ लेकर तिलिस्म के तोड़ने में आपका अनुसरण कर रही थी पर वह सब आशाएं मिट गई.

आपके दर्शन फिर कभी हो सकेंगे यह तो सम्भावना ही नहीं है, जीती बचूंगी कि नहीं, नहीं जानती! बड़ी - बड़ी कोशिशों के बाद यह चिट्ठी आपको लिखने की इजाजत उसने दी है जिसकी मैं कैदी हूं.

बस यही मेरा - आपका आखिरी मिलन होगा.

खैर भगवान् की इच्छा! बात यह है कि यहां तिलिस्म में जहां आप हैं उसमें कुछ ही दूर पर हमारे कुछ प्रेमी कैद में सड़ रहे हैं.

आप उन्हें देख चुके हैं और मैं भी उनका जिक्र आपसे कर चुकी हूं.

उनमें मेरी सहेलियों और आपके भी कई लड़कपन के साथी हैं उनकी जान बचाने की गरज से मैंने इस तिलिस्म की महारानी का एक हुक्म मानने की प्रतिज्ञा कर अपने को उसके हाथों बेच दिया था मगर उन कैदियों को छोड़ देने का वचन ले लिया था.

पर अब सुनने में आया है कि मैं तो गई ही, उन कैदियों की भी जान न बचेगी जिनको बचाने की नीयत से मैंने इतना बड़ा त्याग किया क्योंकि आपने शायद महारानी की कोई बात मानने से इन्कार कर दिया है जिस पर रुष्ठ हो उन्होंने उन कैदियों के साथ ही मुझे भी जान से मार डालने का हुक्म दिया है.

आपने जो किया उचित और सोच - विचार कर ही किया होगा, अस्तु मेरा आखिरी प्रणाम स्वीकार करें.

इस दासी को सदा के लिए विदा दीजिए.

किसी समय में आपकी- पर अब?

केवल- मालती.

प्रभाकरसिंह ताज्जुब और अफसोस के साथ वह विचित्र चिट्ठी पड़ गए जिसके शब्दों के अन्दर छिपी हुई व्यथा उनकी निगाह के सामने स्पष्ट नजर आ रही थी.

इसके बाद उन्होंने पत्र लाने वाली की तरफ सवाल की आँखें उठाई, उसने हाथ जोड़कर इनकी तरफ देखा जिस पर इन्होंने पूछा, " मालती अब कहां हैं?

" औरत:

वे हम लोगों की महारानी के पास हैं.

प्रभाकर:

कैद में हैं या स्वतन्त्र?

औरत:

यों तो हाथ - पांव खुले हुए हैं मगर स्वतन्त्र नहीं कहीं जा सकतीं, क्योंकि तिलिस्म के बाहर होने की उनकी ताकत नहीं और अब तो शायद हाथ - पांव भी बेकाबू हो चुके होंगे क्योंकि महारानी उन्हें समझा - बुझाकर हार चुकी थीं और उन्हें शेरों की गुफा में फेंकने की धमकी दे रही थीं जब मैं इधर के लिए चली.

प्रभाकर:

सो क्यों?

औरत:

क्योंकि महारानी जिस मजमून की चिट्ठी लिखवाना चाहती थीं वैसा लिखने से उन्होंने इन्कार कर दिया था.

महारानी चाहती थीं कि वे आप पर जोर दें कि आप उनकी बातें मान लें और वे कहती थीं कि मैं आपकी (प्रभाकरसिंह की) इच्छा के विरुद्ध कुछ करने की बात लिख नहीं

सकती.

प्रभाकर:

क्या वे जानती हैं कि महारानी ने मुझसे क्या काम करने को कहा है जिससे कि मैंने इन्कार किया ?

औरत:

जी नहीं, महारानी ने उनसे कहा नहीं और हम लोगों को भी वह मालूम नहीं जो उनसे कहें, हां आप ही से उन्हें कुछ मालूम हो गया हो तो मैं नहीं कह सकती.

प्रभाकर सिंह ने इसका कोई जवाब न दिया और सिर नीचा कर कुछ सोचने लगे.

हम नहीं जानते कि महारानी ने कौन सी बात उनसे कही थी या क्या काम करने को कहा था कि जिससे इन्कार कर वे अपनी और अपने प्रेमियों की जान जोखिम में डाल रहे थे, पर उनको गहरी चिन्ता में डूबा देख कुछ देर बाद वह औरत हाथ जोड़कर बोली, " मैं एक बेवकूफ औरत की जात और मामूली लौंडी हूं, आपको कुछ कहने, बताने या समझाने की बात भी जबान पर ला नहीं सकती मगर फिर भी अगर मेरी एक अर्ज सुन ली जाए तो कुछ हर्ज न होगा! "

प्रभाकरसिंह ने सिर उठाकर उसकी तरफ देखा.

उसने फिर कहा, " मैं अभी - अभी महारानी का हुक्म सुनाने के लिए उन कैदियों के पास गई थी जो पास ही में बन्द हैं.

उनमें से एक ने जिसका नाम तो मैं नहीं जानती पर जिन्हें उनके साथी ' इन्दु ' कहकर पुकारते हैं आपसे कहने के लिए एक सन्देश बड़ी गुप्त रीति से मुझे दे दिया! "
प्रभाकरसिंह चौंककर बोले, “ इन्दु! क्या वह भी तुम्हारी कैद में है?

" औरत:

मेरी या हम लोगों की नहीं, बल्कि इस तिलिस्म की कैद में कहिए.

प्रभाकर:

हां, हां, वही बात है जल्दी कहो उसने क्या कहा है?

उस औरत ने झुक कर कोई बात प्रभाकरसिंह के कान में कहीं, न - जाने वह क्या बात थी कि प्रभाकरसिंह चौंक पड़े और बोल उठे, " उसे यह कैसे मालूम हुआ?

" औरत बोली, “ सो तो मैं नहीं कह सकती! " प्रभाकरसिंह ने पूछा, " क्या तुम मेरी भेंट उससे करा सकती हो?

" औरत ने जवाब दिया, “ जी भेंट तो नहीं करा सकती मगर आपका संदेश उन तक ले जा और उनका जबाब आप तक जरूर पहुंचा सकती हूं, " प्रभाकरसिंह बोले, " अच्छा, अगर यही कर सको तो बहुत है.

" औरत ने कहा, " कहिए क्या हुक्म है?

" प्रभाकरसिंह ने झुककर उसके कान में कोई बात कहीं.

औरत ने गौर से उनकी बात सुनी और तब कहा, “ बहुत अच्छा, मैं अभी इसका जबाब लेकर आती हूं, " प्रभाकरसिंह ने पूछा, " कितनी देर तुम्हें लगेगी?

" उसने जवाब दिया, " घड़ी - भर से कम ही! " और उनके देखते - देखते उस झूले पर बैठ ऊपर को चली गई मगर अपनी मशाल उसी जगह छोड़ती गई.

तरह - तरह की चिन्ताओं में डूबे हुए प्रभाकरसिंह न - जाने क्या - क्या सोच ही रहे थे कि ऊपर की तरफ से पुन:

आहट मिली और देखते - देखते वही औरत फिर उनके सामने आ मौजूद हुई.

इस समय उसके हाथ में एक मोड़ा हुआ कागज था जिसे उसने यह कहते हुए प्रभाकरसिंह की तरफ बढ़ा दिया, " लीजिए, उन्होंने अपने हाथ से लिखकर यह चिट्ठी आपके पास भेजी है! "

उत्कंठा और आश्चर्य के साथ प्रभाकरसिंह ने वह कागज ले लिया.

पहले तो उन्होंने उसकी लिखावट पर गौर किया तब धीरे से यह कहकर कि " बेशक इन्दे, तेरी ही लिखावट है! उसे गौर से पड़ने लगे.

एक बार, दो बार, तीन बार, वे उस कागज के छोटे मजमून को पड़ गए, इसके बाद एक लम्बी सांस लेकर उन्होंने उस औरत से कहा, " अच्छा, जाओ अपनी रानी से कह

दो कि मुझे उसकी बात मंजूर है!

चौथा व्यान।

काशी की जिन तंग और बदबूदार गलियों के अन्दर बेगम का मकान है उन्हीं में एक बार फिर हम पाठकों को लेकर चलते हैं.

रात के करीब दस बजे होंगे.

शहर के उन कुछ खास - खास हिस्सों को छोड़ जिनकी रौनक रात के साथ - साथ बढ़ती है, बाकी हिस्से धीरे - धीरे अंधेरे की ओट में जा नींद में गाफिल हो रहे हैं और कुछ गलियां तो ऐसी सूनसान हो गई हैं कि मालूम पड़ता है मानों इसमें कोई मकान ही नहीं है या अगर है भी तो उनमें कोई रहता नहीं क्योंकि एक चिराग तक कहीं नजर नहीं आता.

ऐसे समय में दो आदमी काले लवादों से अपने को छिपाये दबे पांव उधर को जा रहे हैं जिधर बेगम रहती है.

अंधेरा इनके काम में कुछ भी विघ्न नहीं डाल रहा है और बेखटके एक से निकलकर दूसरी गली में जाते, सीड़ियों और ठोकरों से बचते, अंधेरे में फैल पड़े पागुर करते हुए बड़े - बड़े सांडों के पैने सींघों से बचाते - बचाते चले जा रहे हैं जिससे मालूम होता है कि अगर इन हिस्सों के रहने वाले नहीं हैं तो कम - से - कम इधर से इनका आना - जाना तो बराबर ही होता रहता है.

एक औरों की बनिस्बत कुछ और भी गंदी गली में घुसते हुए आगे वाले आदमी ने दबी जबान में पूछा, " क्यों यही गली है न?

" जिसके जवाब में दूसरे ने उसी तरह धीरे से जवाब दिया, " हां, इसके अन्दर बाईं तरफ का तीसरा दरवाजा है.

पन्द्रह - बीस कदम गली के अन्दर जा दोनों खड़े हो गए, आपस में धीरे - धीरे कुछ बातें कीं और एक ने कमर से कमन्द निकाल ऊपर की तरफ फेंकी.

एक ही दफे की कोशिश में वह कहीं अटक गई और तब उसके सहारे दोनों आदमी उस मकान के ऊपर चढ़ गए जो बहुत ऊंचा तो न था मगर संगीन और मजबूत बना हुआ था.

मालूम होता है कि इस मकान में कोई रहता न था क्योंकि इसकी छतों पर से बेखटक्के चढ़ते - उतरते वे दोनों इसके पिछवाड़े वाले उस हिस्से में पहुंच गए जिधर एक दूसरे मकान की ऊपर वाली मंजिल अंधेरे में अपना काला सिर उठाए खड़ी थी.

एक ने दूसरे से कहा, " यही मकान बेगम का है.

यद्यपि यह उसका पिछवाड़ा है और इधर कोई रहता नहीं फिर भी अब हमें होशियारी से काम लेना चाहिए क्योंकि वह कम्बख्त एक चांगली है! " दोनों ने धीरे - धीरे कुछ सलाह की और तब पुन:

कमन्द फेंकी गई जिसके सहारे एक आदमी बेगम के मकान पर चढ़ गया.

कुछ देर तक तो वह ऊपर इधर - उधर घूम - फिरकर देखभाल करता रहा तब उसने अपनी कमन्द को हिलाया जिसके साथ ही वह दूसरा आदमी भी ऊपर चढ़कर उसके पास पहुंच गया.

पहले आदमी ने एक तरफ की मुंडेर के नीचे झांककर कहा, " वह देखो, दूसरी मंजिल के उस दालान में रोशनी हो रही है.

मालूम होता है आज इधर कुछ आदमी हैं.

" दूसरा कुछ देर तक गौर से नीचे देखता रहा, इसके बाद बोला, “ जो कुछ भी हो हमें अपना काम तो पूरा करना ही पड़ेगा! " अब थोड़ी देर के लिए हम इन दोनों का साथ छोड़ देते और नीचे चलकर देखते हैं कि वहां क्या हो रहा है.

यह एक बहुत बड़ा दोहरा दालान है जिसके दोनों तरफ छोटी - छोटी कई कोठरियां हैं.

दालान में फर्श बिछा हुआ और कई तकिए रखे हैं जिनके सामने दो रोशनदान जल रहे हैं मगर वहाँ बैठा हुआ कोई नहीं है.

हां, उस दाहिनी बगल वाली कोठरी में से कुछ आवाज जरूर आ रही है जिसका दरवाजा मामूली तरह पर भिड़काया हुआ है.

आइए उसके अन्दर चल कर देखें कि क्या हो रहा है.

इस कोठरी में एक बड़ी चौकी है जिस पर मामूली फर्श बिछा हुआ है.

इसके पीछे की तरफ एक बड़ा - सा कद्दे आदम शीशा खड़ा हुआ है जिसके दोनों तरफ छोटे - बड़े तरह - तरह के बक्स जिनमें कुछ खुले हुए भी हैं, रखे हैं.

तीन तरफ दीबारों में कई बड़ी - बड़ी अलमारियां बनी हुई हैं जिनमें से कुछ बन्द और कुछ इस वक्त खुली हुई हैं.

जो बक्स और अलमारियां खुली हुई दिखाई पड़ रही हैं उनमें तरह - तरह के औजार, दवाइयां, कपड़े, हथियार, दाढ़ी - मूंछ, बाल, चेहरे और नकाब इत्यादि भेष बदलने की चीजें दिखाई पड़ रही हैं और उन्हीं में से सामान निकालकर अपने दोनों तरफ रखे वह औरत जो शीशे के सामने बैठी है तरह - तरह के रंग, कूंचियां, प्याले और दवा आदि की मदद से अपने चेहरे और बदन को रंग और सजा रही है.

इस समय इसका चेहरा बदला हुआ और पल - पल में बदलता जा रहा है जिससे शायद हमारे पाठक यकायक इसे पहचान न सकें मगर हम बखूबी जानते हैं कि यह बेगम है जो शैतानी का कोई जाल फैलाने की नीयत से अपने को रंग - रंगाकर एक नौजवान लड़के के भेष में सजाने की कोशिश कर रही है. बेगम से कुछ हटकर उसकी सहेली जमालो बैठी हुई है जो दवा और सामान इत्यादि निकालने, मिलाने और तैयार करने आदि के काम में उसकी मदद करने के साथ ही रंग भरने में राय देती हुई उससे बातें भी करती जाती है.

जमालो:

मैं नहीं जानती थी कि तुम सूरत में इतनी उस्ताद हो! बेगम:

बहुत दिनों से यह काम करने की जरूरत नहीं पड़ी इसी से तुझे देखने का भी मौका न मिला.

अब तो हाथ खराब हो गया है मगर किसी जमाने में मैं इस काम में पक्का समझी जाती थी.

जमालो:

मगर तुम्हें यह सब सीखने की जरूरत कब और क्यों पड़ी?

बेगम:

उस वक्त मैं मिर्जापुर में रहा करती थी और गदाधरसिंह मेरे आशिकों में से था.

अपने मालिक रणधीरसिंह के डर से वह बहुत छिप - लुककर मेरे पास आया करता था और जब कभी मुझे कहीं ले जाना होता था तो बराबर सूरत बदलकर ले जाया करता था.

उसी की बदौलत मुझे भेष बदलना आ गया.

अगर कुछ दिन मेरा - उसका साथ और रहता तो मैं ऐयारी के फन में भी उस्ताद हो जाती क्योंकि भूतनाथ अक्सर तरह - तरह के अनूठे - अनूठे नुस्बे मेरे सामने बनाता और उनसे तरह - तरह के काम लिया करता था, मगर अफसोस!

जमालो:

अफसोस क्या?

बेगम:

रघुबरसिंह की बदौलत मेरी और भूतनाथ की खटक गई और तभी से वह फिरन्ट हो गया और तो खैर जो कुछ था सो था ही वह हाथ का बड़ा शाहखर्च था, उससे दौलत खूब मिला करती थी.

जमालो:

रघुबरसिंह से भी तो तुम्हें कुछ कम माल नहीं मिला! बेगम:

हां, सो तो है मगर (एक लम्बी सांस लेकर) गदाधरसिंह की बात दूसरी ही थी, वह आदमी बड़ा मर्दाना था.

जमालो:

लेकिन अगर ऐसा ही था जो तुम्हें उसको भी बनाए रखना चाहिए था, उससे बिगाड़ क्यों कर लिया?

बेगम:

तुमसे कहा न कि वही रघुबरसिंह की बदौलत.

जब इनका साथ हुआ तो उससे खटक गई.

जमालो:

तुम्हें दोनों को बनाकर रखना चाहिए था.

वह रण्डी ही क्या जो एक साथ ही दो - तीन या चार आशिकों को अपने ऊपर दीवाना न बनाए रहे और सभी को यह जताती रहे कि वह मरती है तो एक उसी पर! बेगम:

(मुस्कुराकर) तू मुझे निरी बौड़म समझती है क्या?

मैंने क्या ऐसा करने की कोशिश नहीं की?

जमालो:

कोशिश क्या खाक की?

होशियारी से काम लिया होता तो यह नौबत ही क्यों आती?

बेगम:

अरी कम्बख्त, बरसों तक मैं उन दोनों ही को उल्लू बनाए रही और दोनों ही मुझे पर मरते रहे, मगर आखिर एक माभला ऐसा आन पड़ा कि मुझे किसी एक से बिगाड़ करना जरूरी हो गया.

तब गदाधरसिंह छूटा कि यों ही सहज में! तू अपने ऐसा सबको समझती है?

१.

रघुवरसिंह से बेगम का मतलब जैपालसिंह से है.

जमालो:

(झुंझलाकर) अपने ऐसा न सही.

बहुत होशियार ही सही मगर आखिर वह बात कौन - सी आ पड़ी?

मैं तो बराबर यही देखती हूं कि अक्सर गदाधरसिंह का नाम लेकर लम्बी सांसें लिया करती हो जिससे मालूम होता है कि दिल से उसका ख्याल अभी तक नहीं उतरा है, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि अगर ऐसा ही था तो उससे बिगाड़ ही करते क्यों गई?

बेगम:

अच्छा तो सुन, तुझे बता ही दूं मगर किसी से कहियो नहीं, हम दोनों में बिगाड़ का सबब बनी यही रामदेई जमालो:

रामदेई! कौन रामदेई! वही जो भूतनाथ के पास थी और आजक .

.

.

.

.

बेगम:

हां, वही.

जमालो:

इसने क्या किया?

बेगम:

यह कैसी खूबसूरत है वह तो तुमने देख ही लिया है.

आज कल बड़ी उम्र में, जब यह हाल है तो लड़कपन में क्या रही होगी सो सोच भी सकती हो.

ऊपर से यह शैतान रही भी चुलबुली.

इसका एक भाई था जो नागर के आशिकों में था और उसी के यहां अक्सर मेरी उसकी देखाभाली भी हुआ करती थी.

वही से जान - पहचान बड़ी और तब मेरे यहां भी वह आने - जाने लगा बल्कि एकाध दफे मुझे घर भी ले गया जहां उसकी इस रामदेई को मैंने देखा, दो ही चार दफे की देखाभाली के बाद मैं समझ गई कि यह रामदेई भी हसीं लोगों का मुहल्ला आबाद करने वालों में से हैं. उससे गृहस्त बन के रहना न सकेगा.

जमालो:

अच्छा, क्या वह मनचली भी थी?

बेगम:

हां, खूब! जैसी खूबसूरत, वैसी चंचल और वैसी ही मनचली.

सब जोड़ लिए हुए थे.

ऊपर से हुआ यह कि इसके भाई ने जहां इसकी शादी पक्की की वह घर और बार इसको पसन्द न आया.

सोने की सुगन्ध मिली.

मैं ऐसी चेलिन की तलाश में थी ही, उसे झांसा पट्टी दे उसके घर से उड़ा लाई और सोचा यह कि अपनी छोटी बहिन बनाकर मशहूर करूंगी और उसकी कमाई से अपना घर भरूंगी.

जमालो:

मगर उसके भाई ने कुछ कहा नहीं?

तुमने कहा न कि वह भी तुम्हारे यहां आता - जाता था?

बेगम:

उस बेवकूफ को पता ही कौन लगने देता था.

स्वयं उसकी बहिन यह रामदेई ही जब उसे उल्लू बनाने और दुनिया की मौज लेने पर तुली हुई थी तब उसे अन्धा बना रखना कौन मुश्किल काम था?

जमालो:

ठीक है, अच्छा तब?

रामदेई को तुमने कहां रखा?

बेगम:

मुझसे गलती यही हुई कि उसे रखा अपने ही साथ और उसके भाई की नजरों से तो छिपा रखा मगर इन गदाधरसिंह और रघुबरसिंह से उसका पर्दा न किया.

जमालो:

उन्हें भी नई चिड़िया का शिकार चखाना चाहती होगी.

बेगम:

(हाथ की कूंची का रंग जमालों के गाल लगाकर) शैतान कहीं की! जमालो:

(बेगम की साड़ी से गाल का रंग पोंछती हुई) अच्छा, अच्छा, जाने दो तब क्या हुआ?

ये दोनों ही उस पर लट्टू हो गए, तब?

बेगम:

दोनों ही उस पर जान देने लगे और उसे अपनी बनाने की फिक्र में पड़े.

इसमें कोई शक नहीं कि कुछ दिन तक उसकी बदौलत मुझे गहरी रकम मिलती रही मगर अन्त में नतीजा वही हुआ जो तुम देखती हो अर्थात् गदाधरसिंह से खटक गई, बात यह हुई कि यह कम्बख्त रघुबरसिंह पर आशिक हो गई, भूतनाथ इस बात को ताड़ गया और बड़ी चालाकी कर गया.

रघुबरसिंह का भेष बनाकर एक दिन उसे वह मेरे घर से उड़ा ही तो ले गया.

पहले तो उसे पटना ले जाकर रखा, फिर वहां से अपनी न - जाने किस गुप्त घाटी में ले जाकर बहुत दिन तक छिपाए रहा, तब अन्त में काशी ले गया और इतने दिनों तक बराबर खूब अपने को रघुबरसिंह जाहिर करता रहा और उसे इसी धोखे में रखा कि वह रघुबरसिंह के ही पास है, यहां तक कि उसे एक लड़का भी हो गया पर वह जान न पाई कि वह गदाधरसिंह से है.

मगर आखिर वह भंडा फूटा ही.

शेरअलीखां की लड़की गौहर ने गदाधरसिंह की कार्रवाइयों को मटियामेट कर दिया.

न जाने उसे किस तरह इस भेद का पता लग गया और उसने रामदेई को असली मामले की खबर कर दी.

एक दिन जब भूतनाथ ने किसी सबब से रघुबरसिंह को गिरफ्तार किया और गलती से उसके शागिर्दो ने उसको वहीं पहुंचा दिया जहां रामदेई थी (शायद रामदेई की भी इसमें कुछ कारस्तानी रही हो) तब दोनों की भेंट हुई! पुराने - आशिकों ने एक - दूसरे को पहचाना और खुब खेले.

रामदेई रघुवरसिंह के साथ निकल भागी और साथ - साथ गदाधरसिंह की बहुत कुछ दौलत और कितने ही गुप्त कागज - पत्र और चीजें भी लेती गई.

इसके बाद किस तरह नागर उसकी सूरत बना गदाधरसिंह के मत्थे मड़ी गई और फिर क्या - क्या हुआ, यह सब तुम जानती ही हो.

जमालो:

हा - हां, यह सब तो इधर का हाल है और इसे मैं बाखूबी जानती हूं मगर तुम यह बताओ कि तुम्हारी और गदाधरसिंह की क्यों बिगड़ गई?

बेगम:

हां, वह किस्सा तो कहना मैं भूल ही गई, जब रामदेई मेरे घर से निकल गई तो पहले मुझे यह पता ही न लग पाया कि यह किसकी कार्रवाई है.

कम्बख्त गदाधरसिंह पहले ही की तरह मेरे पास बराबर आता - जाता रहा और इस भेद को ऐसी खूबी से छिपाये रहा कि मुझे जरा भी शक उस पर न हुआ और मैं यही समझती रही कि वह शैतान अपने मन से ही किसी तीसरे के साथ निकल गई मगर धीरे - धीरे मुझे इस शैतान का पता लगा, खासकर तब जब कि भूतनाथ ने मेरे यहां आना - जाना कम कर दिया.

उस समय किसी तरह मुझे यह हाल मालूम हुआ और मैंने गुस्से में आ रघुबरसिंह से इस बात का जिक्र कर दिया जो खुद रामदेई के गायब हो जाने के सबब से सख्त फिक्र में

पड़ गया था और मुझ पर भी तरह - तरह के शक करने लगा था.

उसने गदाधरसिंह का पीछा किया, उसके कई छिपे भेदों का पता लगाकर उसे दबाना और डराना चाहा, और दो - एक काम ऐसे कर डाले जिससे गदाधरसिंह को सख्त मुसीबत में पड़ना पड़ा.

किसी तरह उसे मालूम हो गया कि मेरे ही होशियार करने से रघुबरसिंह को रामदेई वाले मामले की खबर लगी है.

बस तभी से उसने मुझसे दुश्मनी अख्तियार कर ली और बहुत कुछ तकलीफ भी पहुंचाई.

बेगम यह सब किस्सा सुनाती जाती थी और फुर्ती - फुर्ती अपना काम भी करती जाती थी अर्थात् इसी बीच में उसने अपनी सूरत एक कम - उम्र नौजवान की - सी बना डाली जिसकी मसें भी न भीगी थीं.

तरह - तरह की पोशाकों की उस जगह कमी न थी जिसमें चुन - चुनकर उसने कुछ किमती कपड़ों और सूफियाने जेवर - अंगूठी आदि से अपने को सजाया और तब एक रेशमी साफा सिर पर रख अपने बड़े - बड़े बालों को उसके अन्दर छिपाती हुई शीशी के सामने खड़ी होकर बोली, " क्यों, कैसी लगती हूं?

" जमालो देखकर बोली, “ क्या बताऊं, कुछ दिन पहले की उम्र होती तो अपने बगल से तुम्हें उठने न देती! " जिसे सुन उसने मुस्कराकर एक चिकोटी उसे काटी और तब जल्दबाजी दिखलाती हुई बोली, " अच्छा, अब चलना चाहिए, बहुत देर हो गई! " दोनों ने जल्दी - जल्दी वहां चौकी पर फैले हुए सामानों को ठिकाने किया और तब अलमारियों और संदूकों को बन्द करती हुई कोठरी के बाहर निकल गई एक बड़ा ताला जो उसी जगह ड्योड़ी पर रखा हुआ था कुण्डे में लगाया और तब नीचे की मंजिल में उतरी जहां से इस मकान के अगले चौक में जाने का रास्ता था, हमारे वे दोनों ऐयार भी, जिनके साथ - साथ हम यहां आए हैं, उसी जगह कहीं छिपे खड़े बेगम और जमालो की बातों को बड़े गौर से सुन रहे थे.

अब उन दोनों के नीचे चले जाने पर इनमें धीरे - धीरे आपस में बातें होने लगीं एक:

इनकी बातचीत से तो नई बात मालूम हुई! दूसरा:

हां, अफसोस कि हम लोग कुछ और पहले न पहुंचे नहीं तो और भी कुछ सुनते.

अब भी अगर इनका पीछा किया जाए तो जरूर और कुछ मालूम होगा.

पहला:

नहीं, अब उसका वक्त नहीं रहा.

तुम जानते हो कि अब यह यहां से सीधी जमानिया जाएगी और वहां .

.

.

बात कहते - कहते यह रुक गया.

क्योंकि नीचे की तरफ कुछ आहट मालूम पड़ी.

दोनों आदमी दबे पांव छज्जे की तरफ आए और वहां से आड़ लेकर देखने लगे.

नीचे के दालान में, जहां से अलग चौक में जाने का रास्ता था, दरवाजे के सामने ही दोनों खड़ी दरवाजे के दूसरी तरफ वाले किसी आदमी से कुछ बातें कर रही थीं.

बहुत कोशिश करने पर भी उस तीसरे की सूरत उस जगह से दिखाई न पड़ी मगर बातें कुछ - कुछ जरूर सुनाई पड़ी.

बेगम:

(फिक्र की आवाज में) यह तेरा क्या हाल है?

तू इस तरह घबराई और परेशान दौड़ती क्यों आ रही है?

क्या कोई नई बात हुई है?

वह:

हां, नई ही नहीं, एक बड़ी भयानक बात हो गई !! बेगम:

सो क्या?

वह अपनी बैठक में चलो वहीं सब कहूंगी.

अब तुम्हें जमानिया जाने की जरूरत नहीं जैपालसिंह खुद यहीं आए हैं और तुम्हारी राह बेचैनी के साथ देख रहे हैं. बेगम हैं! कहां हैं वे?

वह:

तुम्हारी बैठक में.

बेगम जमालो को लिए घबराई हुई आगे की तरफ बढ़ गई और लपकती हुई अपनी बैठक में पहुंची जो अगले चौक (मकान) की बिचली मंजिल में थी, मगर जाने की जल्दी में वह बीच का दरवाजा खुला ही छोड़ती गई जिसका नतीजा यह हुआ कि ये दोनों ऐयार भी ऊपर से उसकी बातें सुन रहे थे उस अगले चौक तक सहज ही में पहुंच गए.

वहां के गहरे सन्नाटे और अंधकार ने उनकी मदद की और वे दोनों शीघ्र ही उस जगह तक आ पहुंचे जहां बेगम अभी - अभी पहुंची थी और जहां जैपाल एक गावतकिए के साथ चिन्ता - निमग्न बैठा हुआ कुछ - कुछ सोच रहा था.

बेगम के आने की आहट पा जैपाल ने सिर उठाकर उसकी तरफ ताज्जुब के साथ देखा (क्योंकि वह इस समय एक लड़के की शक्ल में थी) मगर उसका एक खास इशारा देखते ही उसे पहचान गया और उसका हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचता हुआ बोला, “ मालूम होता है तुम जमानिया जाने को तैयार हो चुकी थीं.

" बेगम उसकी बगल में बैठकर बोली, " हां, दारोगा साहब के हुक्म के मुताबिक तैयार होकर बाहर निकल ही रही थी जब तुम्हारे आने की खबर मिली.

मगर मेरे प्यारे मजनूं, तुम इतने गमगीन क्यों नजर आ रहे हो?

" जैपाल:

कुछ पूछो मत, बड़ी बुरी खबर है.

बेगम:

आखिर क्या?

जैपाल:

(बेगम के कान की तरफ झुक कर) रिक्तगंथ हम लोगों के हाथ में आकर निकल गया.

बेगम:

(चौंककर) सो कैसे?

जैपाल:

अब आया हूं तो तुम्हें सब किस्सा सुनाऊंगा ही.

बेगम:

मनोरमा और नागर कहां हैं?

कुशल से तो हैं! जैपाल:

हां, है तो कुशल से मगर इसी गम से परेशान वे भी इस समय दारोगा साहब के साथ जमानिया में ही हैं.

बेगम:

मगर उन लोगों ने कार्रवाई तो बहुत पक्की की थी! आखिर हुआ क्या?

जैपाल:

कार्रवाई बेशक बहुत पक्की थी, रिक्तगन्थ को भूतनाथ राजा वीरेन्द्रसिंह के महल में से ले आया और जाकर रामदेई बनी हुई नागर को दिया.

वह उसे लेकर दारोगा साहब को देने चली, मगर रास्ते ही में किसी शैतान ने दारोगा साहब की सूरत बन उससे वह किताब उड़ा ली.

बेगम हैं, दरोगा साहब की शक्ल बनकर किताब ले ली !! जरा खुलासा कहो, मेरी तबीयत उलझन में पड़ रही है.

इसके जवाब में जैपाल ने पूरा किस्सा जो हम ऊपर के व्यानों में लिख आए हैं जैसाकि उसने दारोगा साहब से सुना था बयान कर डाला.

बेगम ताज्जुब के साथ चुपचाप सुनती रही और तब अफसोस से बोली, " यह किसकी कार्रवाई हो सकती है?

" जेपाल:

कुछ कहां नहीं जा सकता.

दारोगा साहब बहुत बड़ी चिन्ता में पड़ गए हैं और इसीलिए मुझे यहां भेजा है कि तुम्हारी मदद लेकर इस बात का पता लगाऊं कि किस शैतान की यह कार्रवाई है.

बेगम:

यो तो मैं हमेशा ही जो कुछ कर सकती हूँ करने के लिए तैयार रहती हूँ और इस वक्त भी मौजूद हूँ मगर मेरी समझ में नहीं आता कि इस मामले में क्या मदद पहुंचा सकती हूं.

जैपाल:

दारोगा साहब का ख्याल है कि इस वक्त तुम्हारी ही मदद की जरूरत है और तुमसे बहुत कुछ काम निकल सकता है.

बेगम:

तब मालूम होता है कि उनके मन में किसी ऐसी कार्रवाई की बात उठी है जिसमें मैं कुछ मदद कर सकती हूँ, अगर ऐसा हो तो मुझे बताओ, मैं सब तरह से तैयार हूँ, जैपाल:

बेशक ऐसा ही है.

दारोगा साहब को किसी आदमी पर शक है और उस आदमी की जांच करने और अगर उसी ने रिक्तगंथ लिया है तो उसके कब्जे से निकालने का काम जैसा अच्छा तुम कर सकती हो वैसा कोई और नहीं कर सकता क्योंकि तुम उसके भेदों से अच्छी तरह वाकिफ हो! बेगम:

तो जल्दी बताओ कि वह कौन आदमी है?

जैपाल:

(बेगम के कान की तरफ झुककर बहुत धीरे से) दारोगा साहब को पता लगा है कि यह काम दलीपशाह का है और गुलाबसिंह ने इस काम में उसकी मदद की है.

बेगम:

(चौंककर) दलीपशाह का यह काम है और गुलाबसिंह उसका साथी है! कौन गुलाबसिंह?

जैपाल:

वही भानुमति वाला.

बेगम:

मगर वह तो मर गया! मैंने तो सुना था कि भूतनाथ से उसका झगड़ा हो गया और उसी के हाथों उसकी जान गई.

जैपाल:

हां, सुनने में तो ऐसा ही आया था मगर वास्तव में वह मरा नहीं और अभी तक जीता - जागता मौजूद है.

इसका पता दारोगा साहब को बहुत पक्की तरह से लग चुका है.

बेगम इस बात को सुन किसी चिन्ता में पड़ गई और सिर झुकाकर कुछ देर तक न - जाने क्या सोचती रही.

बड़ी देर के बाद एक लम्बी सांस लेकर उसने सिर उठाया और बोली, " बड़ा मुश्किल काम दारोगा साहब मुझ पर डाल रहे हैं.

इसमें शक नहीं कि किसी जमाने में इन दोनों ही आदमियों से मेरा गहरा ताल्लुक़ था पर वह कैसे टूट गया और फिर कैसी गहरी दुश्मनी मुझमें और दलीपशाह में हो गई इसको दारोगा साहब बखूबी जानते होंगे, वे ही नहीं, तुम भी जानते ही हो.

जैपाल:

हां, मैं जानता हूं और दारोगा साहब से भी यह बात छिपी नहीं है, मगर इस वक्त मौका ही ऐसा पड़ा है कि सिवाय तुम्हारे और किसी के सुपुर्द यह काम किया नहीं जा सकता.

बेगम:

(कुछ चिन्ता के साथ) क्या मनोरमा या नागर इस काम को .

.

.

?

जैपाल:

वे इस काम को वैसी खूबसूरती के साथ नहीं कर सकतीं जैसाकि तुम कर सकती हो और यह भी बात है कि वे दोनों अब जमानिया से हट नहीं सकतीं?

बेगम:

सो क्यों?

जैपाल:

क्या तुम्हें मालूम नहीं कि राजा गोपालसिंह की शादी की सब बातें पक्की हो गई हैं और बहुत जल्दी ही वह काम हो जाना चाहता है! बेगम:

मुझे मालूम है, मगर इससे क्या?

जैपाल:

इससे क्या?

आज तुम्हारी अक्ल को क्या हो गया है?

गोपालसिंह की शादी के बारे में दारोगा साहब के क्या क्या ख्यालात हैं और वे उसके लिए हेलासिंह से किस तरह की बातें तय कर चुके हैं यह सब क्या तुम भूल गईं?

बेगम:

भूली बिल्कुल नहीं, मुझे यह अच्छी तरह मालूम है कि दारोगा साहब चाहते थे कि उनके दोस्त हेलासिंह की लड़की मुन्दर बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी की जगह राजरानी बना दी जाए, मगर अब जबकि वह मुन्दर ही नहीं रही, जबकि लोहगड़ी के साथ वह भी उड़ गई और केवल वही क्यों, उसके साथ - साथ मेरी प्यारी नन्हों और गौहर भी इस दुनिया से उठ गई, तो फिर अब उस कार्रवाई का जिक्र ही क्या उठ सकता है?

नन्हो का जिक्र करते हुए बेगम का गला भर आया और उसकी आँखें डबडबा आई मगर जैपाल ने उसे अपनी तरफ खींच रूमाल से उसके आंसू पोंछे और दिलासा देते हुए कहा, " ठीक है, मगर तुम यह भी तो समझ सकती हो कि दारोगा साहब अपनी धुन के कितने पक्के आदमी हैं और गोपालसिंह के राजमहल में अपनी किसी को बैठाने का कितना पक्का निश्चय किया हुआ है.

मुन्दर की मौत से उनके काम को जबरदस्त धक्का लगा मगर वे अपने विचार से एक पल के लिए भी नहीं टले.

अब उन्होंने यह निश्चय किया है कि मुन्दर की जगह कोई और राजरानी बनाई जाए और इस काम के लिए जल्दी ही वे किसी दूसरे को चुन लेना चाहते हैं.

बेगम:

(चौंककर हैं, यह तुम क्या कह रहे हो?

जैपाल ०:

मैं बहुत ठीक कह रहा हूं, दारोगा साहब अब इसी फिक्र में पड़े हुए हैं कि वे मुझे भी एक पल के लिए अपनी निगाहों से ओट होने दिया नहीं चाहते, मगर तुम्हें सब माभला समझाकर इस काम में लगा देना जरूरी था इसीलिए मुझे भेजा है.

अब तुमको इस बारे में कुछ समझना हो समझ लो और मुझे रुख़सत दो ताकि मैं मारामारा पुन:

जमानिया लौट जाऊं.

शादी का दिन बहुत नजदीक आ गया और वहां हजार तरह के तरदुद हैं. बेगम जैपाल की बात सुन किसी तरह के गौर में पड़ गई थी.

अब बोली, “ मैं तो सब तरह से तैयार हूं, तुम बताओ कि दारोगा साहब ने इसके लिए क्या सोचा है और मुझे किस तरह की कार्रवाई करनी चाहिए?

मगर एक बात तो बताओ, मुन्दर और लक्ष्मीदेवी की जगह कोई और औरत भला कैसे बैठाई जा सकती है?

इस काम में बहुत ही बड़ी.

" जैपाल:

दारोगा साहब की सूझ कितनी तेज है इसको तो तुम बखूबी जानती हो, मगर इन बातों के कहने का वक्त मौका .

.

.

(कुछ रुक और सोच कर) अच्छा.

सुनो मैं तुम्हें संक्षेप में बता ही दूं कि दारोगा साहब ने क्या सोचा है.

जैपाल और बेगम में बहुत धीरे - धीरे बातें होने लगीं.

रात करीब - करीब बीत चुकी थी और पूरब की तरफ का आसमान अपनी कालिमा को खो बैठा था जब जैपाल और बेगम की बातें समाप्त हुई और दोनों एक साथ ही उस मकान के बाहर हुए, गलियों में से ही घूमते - फिरते ये लोग शहर के बाहर निकल आए जहां एक खास जगह पर बेगम के कई घोड़े बराबर मौजूद रहा करते थे.

इनमें से दो तेज घोड़े कसबाए गये और उनकी पीठ पर सवार हो ये दोनों किसी तरफ को रवाना हो गए.

पांचवां व्यान।

तिलिस्मी महारानी के जिस दरबारी कमरे या दालान में हमारे पाठक पहले एक बार जा चुके हैं उसी में आज उन्हें कुछ देर के लिए पुनः

चलना पड़ेगा.

आज उस जगह का छाउ बिल्कुल निराले ही ढंग का हो रहा है.

यद्यपि वे किमती झाड़ - फानूस दीवारगीरें और सजावट के सामान तो पहले की तरह इस वक्त भी मौजूद हैं मगर उन जड़ाऊ कुर्सियों और सिंहासनों तथा कारचीबी के काम की गद्दियों आदि का वहां नाम - निशान भी नहीं है और इसके बदले उस दालान के बीचोंबीच में किसी तरह के धार्मिक कृत्य का सब सामान नजर आ रहा है.

बीचोंबीच में बहुत ही सुन्दरता के साथ और कीमती सामानों से सजी हुई एक छोटी वेदी बनी हुई है जिसके सामने अग्निकुण्ड और उसके चारों तरफ के साफ मखमली फर्श पर कई सुन्दर रेशमी आसन बिछे हुए हैं.

फूल, पत्तों, गुच्छों आदि से वह दालान बहुत ही सूफियानेपन के साथ सजाया हुआ है और तरह - तरह के अन्य बहुत सामान जो वहां चारों तरफ फैले हुए हैं बता रहे हैं कि शायद यहां कोई शादी ब्याह या इसी तरह का कार्य अभी - अभी होकर समाप्त हुआ है.

और हमारा ख्याल ठीक भी है.

वह देखिए बगल वाले उस छोटे कमरे में खड़े प्रभाकरसिंह एक तस्वीर की तरफ एकटक निगाहों से देख रहे हैं और किमती गहने - कपड़ों से आरास्ता दो क़मसिन लौंडियाँ उनके बदन पर से उस खास पोशाक को उतार रही हैं जो हमारे यहां केवल शादी के मौके पर ही पहनी जाती है.

यह बात हमें बताती है कि जरूर यहां किसी की शादी हुई है और हो न हो प्रभाकरसिंह ही उस बारात के दुल्हा हैं.

देखिए, जो कुछ है अभी पता लग जाता है.

आइए, हम लोग चलकर पहले यह देखें कि वह तस्वीर किसकी है जिसकी तरफ प्रभाकरसिंह इस तरह हसरत - भरी निगाहों से देख रहे हैं.

हैं, सोने की किमती जड़ाऊ चौखटे में जड़ी यह तस्वीर तो मालती की है! मगर यहां कहां से आई?

और प्रभाकरसिंह ही इसे इस तरह निगाहों से क्यों देख रहे हैं कि मानों अब जिन्दगी - भर उसे देखने की आशा न हो! प्रभाकरसिंह ने आखिर एक लम्बी सांस लेकर उस तस्वीर से आँखें हटा ली और एक लौंडी की तरफ देखकर कहा, “ तो क्या मैं मान लूं

कि जो कुछ तुमने कहा है वह सही है और अब मैं मालती को किसी तरह नहीं देख सकता.

" लौंडी ने यह सुन हाथ जोड़कर जबाब दिया, " मैंने महाराज से बहुत सही - सही अर्ज किया.

सचमुच मालती रानी का व्याह हमारी महारानी के ही एक रिश्तेदार से अभी - अभी होने वाला है और इस जगह से सब लोग, खुद महारानी और उनके वे संबंधी जिन्हें आपने अभी - अभी यहां देखा, इसी दूसरे व्याह की तैयारी के लिए यहां से चले गए हैं.

मैंने महारानी का वह संदेशा अभी - अभी आपको सुनाया कि उन्होंने हाथ जोड़कर आपसे अर्ज किया है कि वे एक दूसरे व्याह की फिक्र में पड़ गई हैं और इसीलिए कुछ समय की मोहलत आपसे चाहती हैं.

व्याह के काम से फारिग होते ही वे आपकी खिदमत में हाजिर होंगी.

" प्रभाकर:

(एक लम्बी सांस लेकर) मगर मेरी समझ में नहीं आता कि मालती ने यह बात कैसे मंजूर की?

लौंडी:

इस बारे में लौंडी की कुछ कहने की ताब नहीं .

.

.

प्रभाकर):

(कुछ चौंककर) इसका क्या मतलब?

क्या तुम्हें इस बारे में कोई जानकारी है या तुम जान - बूझकर इस भेद को छिपा रही हो?

लौंडी:

(कुछ घबराकर) .

.

.

हीं मेरा .

.

.

यह मतलब .

.

.

हीं .

.

.

प्रभाकर:

नहीं - नहीं, जरूर ऐसी ही कोई बात है! तुम्हारी सूरत से जाहिर होता है कि तुम कुछ जानती हो मगर मुझसे बताने से हिचकती हो.

लौंडी:

(हाथ जोड़कर) महाराज, हम लौंडियों की मजाल ही क्या जो ऐसा कर सकें और फिर हम लोगों का रुतबा ही कितना कि राजदरबार की गुप्त बातों की हमें खबर हो?

यों ही उड़ती - उड़ती कभी - कभी कोई बात सुनने में आ जाती है जिस पर पूरी तरह विश्वास नहीं किया जा सकता.

प्रभाकर:

(कुछ डपटकर) जल्दी कहो तुम्हें इस मामले में क्या मालूम है?

खबरदार, सब बात सच - सच मुझसे कहो और जल्दी कहो, नहीं तो याद रखो, तुम्हारे हक में अच्छा न होगा.

लौंडी:

(जो इनकी डपट से बिल्कुल ही डर और घबरा गई थी) महाराज .

.

.

मेरी .

.

.

जान! प्रभाकर:

मेरे जीते - जी तुम पर किसी तरह की आंच नहीं आ सकती.

तुम जल्दी कहो मगर जो कुछ कहो, सच कहो.

लौंडी:

महाराज से जो कुछ कहूंगी वह बिल्कुल सच - सच कहूंगी मगर महारानी के कानों तक अगर वह बात चली गई तो मालूम नहीं वे क्या करें! प्रभाकर):

कोई हर्ज नहीं, मैं उनसे तुझे छुटकारा दिला देने का वचन देता हूं.

बस अब देर न कर, जल्दी कह कि मालती क्योंकर दूसरे से व्याह करने के तैयार हो गई?

लौंडी:

(हिचकिचाती हुई) मैंने .

.

.

मैंने उड़ती - उड़ती .

.

.

यह खबर सुनी थी कि मालती रानी बहुत दिनों से उसको चाहती थीं जिसके साथ व्याह करने का महारानी ने उनसे आग्रह किया.

इसी तिलिस्म में ही कहीं उनसे भेंट हुई थी और यहीं दोनों में प्रेम .

.

.

प्रभाकरसिंह के कानों को विश्वास न हुआ.

वे यह क्या सुन रहे थे! मालती और बेवफा! मालती और गुप्त रीति से किसी गैर से मुहब्बत करे, जो बार - बार उनसे यह कहा करती थी कि मेरी शादी आप ही से ठीक हुई थी और मैं तो आप ही को अपना पति समझती हूँ,

अगर इस लोक में नहीं तो परलोक में जाकर आपसे मिलूंगी, वहीं मालती ऐसी कुटिला निकली! नहीं - नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता.

मालती ऐसी दगाबाज कभी नहीं हो सकती.

जरूर यह लौंडी झूठ बोल रही है और मालती की तरफ से झूठा शक उनके मन में पैदा कर अपना कोई गंदा मतलब पूरा करना चाहती है इत्यादि बातें सोचते - सोचते उन्हें गुस्सा चड़ आया और उन्होंने अपने कमरबंद में खूंसे खंजर के कब्जे पर हाथ रखकर कहा, " बस, खबरदार जो इस तरह की झूठी बात जुबान पर लाई! भला मालती कभी जीते - जी ऐसा कर सकती है ।

लौंडी ने कुछ जबाब न देकर सिर झुका लिया.

प्रभाकरसिंह बेचैनी के साथ कभी उस लौंडी और कभी मालती की उस तस्वीर की तरफ देखते हुए अजीब ही पशोपेश में हो गये.

कुछ देर चुपचाप खड़े वे अपने होंठ चबाते रहे और इसके बाद डपटकर उस लौंडी से कुछ कहना ही चाहते थे कि उनके पीछे की तरफ किसी दरवाजे के खुलने की आहट हुई और उन्होंने घूमकर देखा तो एक दूसरी औरत को हाथ में भोजन के सामानों से भरा एक सोने का थाल और उसके पीछे दो लौंडियों को जल तथा अन्य सामान उठाए लाते पाया.

इस औरत को प्रभाकरसिंह पहचानते थे.

यह वही थी जो उस तिलिस्मी अन्धकूप में आखिरी बार उनसे मिली थी और जिसने इन्दुमति की चिट्ठी लाकर उन्हें दी थी.

प्रभाकरसिंह उसे देखते ही घूमे और उसकी तरफ दो कदम बढ़कर बेचैनी के साथ बोले, " यह मैं क्या सुन रहा हूं संज्ञा! क्या मालती का किसी गैर के साथ विवाह होने वाला है?

" उस औरत ने जिसका नाम संज्ञा था, एक कड़ी निगाह उन दोनों पहली बाली लौंडिया पर डाली (जिसे देखते ही उन्होंने कॉपकर सिर नीचा कर लिया) और तब बोली, “ महाराज, व्याह हो गया कहना ज्यादा ठीक होगा क्योंकि विवाह का अन्तिम कृत्य अभी - अभी थोड़ी देर हुई पूरा हो चुका है! मगर महाराज!, उनकी फिक्र अब छोड़ दें, मालती रानी सब तरह से प्रसन्न हैं.

महाराज अब भोजन करें कई घण्टे से .

.

.

' प्रभाकरसिंह की छाती में संज्ञा के ये शब्द बाण की तरह लगे.

" मालती का व्याह हो गया ", यह सुनके ही उनकी अजीब हालत हो गई, उनके सिर में चक्कर आने लगा और उन्होंने सहारे के लिए दीवार थामकर अपनी आंखें बन्द कर ली.

!!

संज्ञा ने देखते ही दबी जुबान में उन दोनों लौंडियों से कहा, " कम्बख्तों, सब चौपट किया न! " और तब हाथ का थाल उनमें से एक को पकड़ा बगल की एक कोठरी की तरफ कुछ इशारा किया जिससे वे दोनों तथा उसके साथ - साथ आने वाली पिछली

दोनों लौडियां सब उस तरफ चली गई और इस कमरे में केवल प्रभाकरसिंह और संज्ञा ही रह गए.

संज्ञा ने पास आकर बड़ी नम्रता से हाथ जोड़कर कहा, “ महाराज, जो हो गया उस पर अफसोस करना बुद्धिमानों का काम नहीं, अब आपको आगे की फिक्र करनी चाहिए.

अपने शरीर की तरफ देखिए और उन कई कैदियों की तकलीफ पर ख्याल किजे जो अभी तक बन्द पड़े हैं और जिन्हें छुड़ाने के लिये ही मालती रानी ने इतना बड़ा त्याग किया है.

महारानी आपसे अर्ज कर चुकी हैं कि उन कैदियों को पूरी स्वतन्त्रता दिलाने के लिये तिलिस्म के एक छोटे हिस्से को तोड़ने की जरूरत पड़ेगी जिसके बिना आप की उन पर कैदियों से भेंट हो न सकेगी.

" प्रभाकरसिंह ने चौंककर पूछा, " क्या उन कैदियों के छुटकारे और मालती के व्याह में कोई संबंध है?

' संज्ञा ने जवाब दिया, “ जी हां, वही तो मुख्य कारण है, नहीं मालती रानी क्या .

.

.

.

" प्रभाकर:

क्या - क्या?

क्या बात है, जरा साफ - साफ मुझसे कहो तो सही! संज्ञा:

(हाथ जोड़कर) लौंडी आपसे सब कुछ अर्ज करने को तैयार है मगर मेरी विनती है कि आप पहले कुछ भोजन कर लें नहीं तो अगर आपके दुश्मनों की तबीयत कुछ भारी हो गई तो मुफ्त में मैं मारी जाऊंगी.

महारानी मुझे कभी माफ न करेंगी क्योंकि उन्होंने आपके आराम का बिल्कुल बोझ मुझ पर डाल दिया है.

प्रभाकर:

(चिड़कर) अजी, जाने भी दो, तुम्हें भोजन की फिक्र पड़ी हुई है जबकि मेरा हृदय जल रहा है! तुम पहले यह बताओ की कैदियों के छुटकारे का मालती से क्या संबंध था?

संज्ञा:

(नम्रता से) अच्छा, महाराज भोजन न करें पर उस कोठरी में चल कर हाथ - मुंह धो लें और उचित रीति से बैठ ही जाएं, आज सुबह से ही आपका समूचा समय ब्याह के तरदुदों और परेशानी में बीता है.

बड़े आग्रह के साथ संज्ञा प्रभाकरसिंह को बगल वाली कोठरी में ले गई जिसमें एक तरफ तो जड़ाऊ काम का सुनहरा पलंग बिछा हुआ था और दूसरी तरफ संगमरमर की चौकियों पर भोजन के तरह - तरह के सामान सजाये हुए थे.

संज्ञा ने प्रभाकरसिंह के हाथ - पांब धुलाए और तब पलंग पर उन्हें बैठा नीचे के सामानों में से एक गिलास खुशबूदार शर्बत का उठाकर कहा, " कम - से - कम यह शर्बत तो महाराज पी लें, इसके बाद मैं सब कथा आपको सुनाती हूं उसके विशेष आग्रह से प्रभाकरसिंह शर्बत पी गए और तब तकिये पर उठक कर बोले, " इन सबों को यहां से जाने को कहो और मुझसे सब बातें खुलासा बयान करो.

" यह सुन संज्ञा ने पीछे घूमकर उन लौडियों को कुछ इशारा किया जिसे देखते ही वे सब कोठरी के बाहर निकल गई और तब वह बोली, " महाराज, क्या जानना चाहते हैं?

" प्रभाकर:

क्या उन कैदियों को छुड़ाने के लिए ही मालती ने ऐसा किया?

संज्ञा:

जी हां, जब वे आपके साथ अन्धकूप में थी उसी वक्त महारानी ने अपनी एक सखी के हाथ यह सन्देश उनके पास भेजा था कि अगर वे उनके कहे अनुसार एक काम करें तो मैं उन सब कैदियों को छोड़ दूंगी जिनको छुड़ाने की कोशिश करने का जुर्म उन पर लगाया गया था.

शायद आपकी मौजूदगी में ही .

.

.

?

प्रभाकर:

हां, हां, एक कम्बख्त औरत मेरे पास आई थी और उसने अलग ले जाकर मालती से कुछ बातें भी की थीं! संज्ञा:

जी हां, वे बातें यही थीं और मालती जी ने उसी समय इस बात को मंजूर कर लिया था.

शायद उन कैदियों में उनकी कोई मुंहबोली सखी भी थी जिसको उन्होंने बरसों से सिर्फ देखा ही न था, , बल्कि उसे मरा हुआ समझ रही थीं.

प्रभाकर):

मैं जानता हूं, अहिल्या उसकी बहुत ही प्यारी .

.

.

संज्ञा:

जी हां, तो उन्हीं को छुड़ाने के लिए वे सब करने और महारानी का हुक्म तक मानने को तैयार हो गईं, यद्यपि बाकी के सब कैदी भी मैं सुनती हूं उन्हीं के रिश्तेदार और जान - पहचान के थे.

प्रभाकर:

हां, जरूर हैं.

अच्छा, तो महारानी ने मालती से क्या कहा?

क्या किसी से व्याह करने को कहा?

वह कौन आदमी है जिससे मालती ने .

.

.

संज्ञा:

इस विषय में मैं ठीक - ठीक तो कुछ नहीं कह सकती क्योंकि इन बातों की मुझे खबर नहीं है.

तो भी इतना कह सकती हूं कि यह आदमी भी कहीं का राजा, हमारी महारानी का कोई रिश्तेदार और बड़ा ही खूबसूरत दिलावर नौजवान है.

प्रभाकर:

(बल खाकर) और उसके साथ मालती की शादी हो गई?

संज्ञा:

(हाथ जोड़कर) जी हां, महाराज! प्रभाकरसिंह ने यह सुनकर एक लम्बी सांस ली और तब माथे पर हाथ रख कर कुछ सोचने लगे.

सोचते - ही - सोचते प्रभाकरसिंह कब बेहोश होकर उसी मसहरी पर लेट गए वे खुद ही नहीं समझ सके, मगर हम बाखूबी जानते हैं कि जो शर्बत संज्ञा ने उन्हें पिलाया था उसमें हल्की और बेमालूम तौर पर काम करने वाली बेहोशी का गुण था जिसने प्रभाकरसिंह को बहुत जल्द बेखबर कर दिया.

कुछ देर के लिए प्रभाकरसिंह का साथ छोड़कर अब हम इस तिलिस्म के एक दूसरे हिस्से की तरफ पाठकों को ले चलते हैं.

एक छोटा - सा बाग है जिसको चारों तरफ ऊंची - ऊंची दीवारों ने घेरा हुआ है.

इसमें के पेड़ तो नाममात्र के ही हैं मगर फलों की बहुतायत है और यही सबब है कि न - जाने कितने बरस इस अकेली और सूनसान जगह में बिताने वाली उस नाजुक औरत की जान बचती जा रही है जो देखिए वह उस झरने से नहाकर अभी - अभी बाहर निकली है और धूप में खड़ी हो अपने बाल सुखा रही है.

इस औरत के बदन पर कपड़ों के नाम पे तो बहुत ही कम कोई चीज दिखाई पड़ती है क्योंकि जो कुछ भी किसी समय में इसके पास रहा होगा वह कभी का बर्बाद हो चुका था और इस समय पेड़ों की छाल तथा पत्तियां वगैरह ही मुख्य रीति से इसकी लज्जा - निवारण का सहारा हो रही हैं मगर हम यह भी कह सकते हैं कि उसको आजकल कपड़ों की कोई भारी जरूरत, सिवाय सर्दी बचाने के, कभी नहीं पड़ती क्योंकि जब से किस्मत की बदनसीबी ने इस जगह बन्द किया तब से आज तक उसने एक बार भी किसी आदमी की सूरत नहीं देखी.

इस बाग के बीचोंबीच में एक दुमंजिली बारहदरी है जो सब तरफ से बिल्कुल खुली है, सिर्फ उसकी ऊपर की मंजिल को जाने वाली सीढ़ियां एक छोटी - सी कोठरी के अन्दर से होकर गई हैं.

इस कोठरी में घास - पत्तियाँ वगैरह बटोर - बटोरकर उसने एक बिछावन - सा बना रखा है जिनके अन्दर घुसकर वह जाड़े की ठण्डी हवा और दिल दहला देने वाली सर्दी से किसी तरह अपनी जान बचा लेती है.

उसी जगह को उसने अपना घर बनाया हुआ है और जिसे किसी समय मखमली गद्दों पर भी शायद मुश्किल से नींद आती होगी जमाने के हेर - फेर से वही आज इस प्रकार चिड़ियों की तरह घोंसले में रहने पर मजबूर हो रही है.

इस औरत की उम्र या नखशिख के बारे में इस समय कुछ कहना इनके साथ अत्याचार करना होगा क्योंकि जो भी नाजुक खूबसूरत और बरसों से अपने संगी - साथियों से भी अलग सूनसान बियाबान में बिना उचित खाते - कपड़े और सामान अकेली रहने पर मजबूर हो जिसे मौसिमों की ज्यादती अपने नंगे बदन पर सहने को लाचार होना पड़े वह किस हालत तक पहुंच जाएगी इसे सभी सोच सकते हैं, फिर भी हम कह सकते हैं कि किसी जमाने में नाजुकपन और खूबसूरती में यह अपना सानी न रखती होगी.

वह देखिए इसके बाल सूख गए और इसने पेड़ों की छाल और लताओं को ऐंठकर बनाई गई रस्सियों के कपड़े से अपने बदन को किसी तरह ढक लिया.

अब ये पत्थर के उस कटोरे में पानी लेकर किसी तरफ को जा रही है जो उसे शायद कहीं से मिल गया है ।

झरने के पश्चिम तरफ थोड़ी दूर पर कमर बराबर ऊंचे चबूतरे पर एक नन्दी की मूर्ति बनी हुई है, उसी के सामने की तरफ इसने मिट्टी के एक शिवजी की मूर्ति बनाई हुई है, और नित्य सुबह - शाम वहां जल और फूल मिल सके तो फूल चढ़ाकर पार्थिव पूजन करती हुई यह रोज संसार को भिक्षा देने वाले भगवान् शिव से या तो स्वतंत्रता या मृत्यु की भिक्षा मांगती है.

आज भी यह वही कर रही है मगर यह क्या! शिवजी पर जल और पुष्प चढ़ाकर आंखें मूंद कुछ ध्यान करते - करते यह चमक क्यों गई है और उसके चेहरे से डर और ताज्जुब क्यों प्रकट हो रहा है?

ओह, अब हम समझे, इस नाजुक - बदन की घबराहट की सबब वह पत्थर का नन्दी ही है.

हैं, हमारी आँखें का दोष है या पत्थर का निर्जीव नन्दी सचमुच ही अपनी गर्दन इधर - उधर हिलाकर मानो बेचैनी के साथ कुछ देख रहा है.

नहीं नहीं, हमारी आँखों का कसूर नहीं है, सचमुच ऐसी ही बात है और मालूम होता है इस जगह कोई तिलिस्मी तमाशा होना ही चाहता है.

आइए, हम भी इस तरफ पेड़ों की आड़ में खड़े होकर देखें कि अब क्या होता है?

हैं, यह तेज आवाज कहां से आई! ओह, नन्दी के सामने वाले पार्थिव शिव से जरा ही - सा हटकर चबूतरे का फर्श फट गया है और उसके अन्दर से धीरे - धीरे उठता हुआ एक नौजवान बाहर आ रहा है.

हैं, इस नौजवान को तो हम पहचानते हैं यह तो प्रभाकरसिंह हैं ।

मगर वह यहां कहां?

पत्थर की छोटी - छोटी सीढ़ियां चढ़कर प्रभाकरसिंह उस चबूतरे के बाहर आए, मगर उनकी पीठ उस तरफ होने के कारण जिधर वह नन्दी या वह औरत थी अभी तक उनकी निगाह इस पर पड़ी न थी और वे सिर्फ उस बाग ही को देख रहे थे जिसमें उन्होंने अपने को पाया था, मगर अब अपने पीछे ताज्जुब और डर की एक पतली आवाज सुन उन्होंने चौंककर सिर घुमाया और साथ ही चिहुंक गए.

यह औरत, जिसकी लज्जा सिर्फ इसके बाल और पेड़ों की पत्तियां और छाल ही निवारण कर रहे थे, उनके पैरों की तरफ झुकी हुई करुण स्वर में कह रही थी, ' भगवान्! आप जरूर सर्वशक्तिमान् शिव या कोई देवता हैं और मेरा कष्ट दूर करने आए हैं.

दयानिधान अब मेरे अपराध क्षमा कर आप मुझे इस भयानक स्थान से बाहर कीजिए.

"

अगर और कोई मौका होता तो प्रभाकरसिंह जरूर खिलखिलाकर हंस पड़ते क्योंकि उस औरत ने अवश्य ही इन्हें कोई देवता या अलौकिक पुरुष समझ लिया था, मगर इस समय उस बेचारी की लाचारी और बेबसी उनकी आंखों में आंसू भर लाई.

उन्होंने सिर्फ एक निगाह उसके सूखे हुए चेहरे और कमजोर शरीर पर जिसमें हड्डियां दिखाई पड़ रही थीं डाली और तब पीठ मोड़ते हुए बोले, “ बहिन, तुम चाहे जो कोई भी हो, जरूर इस तिलिस्म में कैद और मुसीबतजदा हो.

लो, पहले तुम इस कपड़े से अपना बदन डांको और तब मुझे बताओ कि तुम्हारा नाम क्या है और तुम कब से इस मुसीबत में गिरफ्तार हो जिसमें से आज तुम बाहर होने वाली हो! मेरे बारे में सिर्फ यह समझ लो कि मेरा नाम प्रभाकरसिंह है और मैं तुम्हारी ही तरह आफत का मारा एक आदमी हूं जो तिलिस्म तोड़ता हुआ यहां तक आ पहुंचा है.

प्रभाकरसिंह ने अपना क़मरबन्द उतारकर उस औरत को दिया और तब चबूतरे के नीचे उतरकर एक तरफ आड़ में चले गए जहां एक पेड़ के नीचे बैठे वे अपनी तिलिस्मी किताब पढ़ने लगे.

पर वे अपना मन उस पुस्तक में न लगा सके, बार - बार उनको यही ख्याल आ सताता था कि यह कौन औरत है और कब से इस तिलिस्म में बन्द है.

अस्तु जैसे ही कमरबन्द से किसी तरह अपना बदन ढांके उस औरत को प्रभाकरसिंह ने अपनी तरफ आते देखा, उठ खड़े हुए और उसकी तरफ बढ़कर पूछना ही चाहते थे कि वह दौड़कर इनके पैरों पर आ गिरी और न रुकने वाले आंसुओं से इनके पैर धोने लगी.

प्रभाकरसिंह ने उसे बहुत कुछ दम - दिलासा देकर अलग किया और कहा, “ बहिन, तुम अवश्य किसी भले घर की और बरसों से इस तिलिस्म में बन्द मालूम होती हो.

मगर जान लो कि अब तुम्हारे मुसीबत के दिन बीत गए क्योंकि इस तिलिस्म की उम्र तमाम हो चुकी है और साथ - साथ तुम भी बहुत जल्दी ही इसके बाहर निकलकर अपने को स्वतन्त्र पाओगी.

अस्तु अब बिल्कुल न घबराओ और मुझे यह बताओ कि तुम कौन और कहां की रहने वाली हो तथा तुम्हारी यह हालत किसने की?

आओ, इस जगह बैठ जाओ और मेरी बातों का जवाब दो.

"

एक मुनासिब जगह पर प्रभाकरसिंह ने उस औरत को भी बैठने को कहा.

वह उनकी आज्ञानुसार उनके सामने बैठ गई और हाथ जोड़कर बोली, " जिस तरह आपका नाम सुनते ही मैं आपको पहचान गई, उसी तरह शायद मेरा नाम भी आपको परिचित मालूम हो.

मैं नौगड़ के राजा सुरेन्द्रसिंह के रिश्तेदार और दरबारी सरदार अजयसिंह की लड़की हूं और मेरा नाम भुवनमोहिनी है.

" प्रभाकरसिंह इतना सुनते ही चौंककर, हैं, तू भुवनमोहिनी है! तब तो मैं तुझे बाखूबी जानता हूं, सेठ चंचलदास के लड़के और मेरे दोस्त कामेश्वर से तेरा ही व्याह हुआ था न?

" उस औरत ने सिर झुकाकर ' हा ' कहा और तब प्रभाकरसिंह बोले " और मेरे दोस्त गुलाबसिंह की मौसेरी बहिन है! " उसने फिर हाँ कहाँ और जब प्रभाकर सिंह ने चिन्ता के साथ कहा, " मगर मैंने तो तेरे बारे में बहुत तरह की बातें और अंत में यह भी सुना था कि तुझे जंगल में सांप ने काट लिया जिससे तू मर गई.

" तो वह सिर नीचा किए आंसू बहाने लगी.

प्रभाकरसिंह ने बहुत कुछ दम - दिलासा देकर उसे शान्त किया और पूछा, " तेरा पूरा हाल तो किसी फुर्सत के वक्त सुनूंगा क्योंकि मुझे तिलिस्मी - संबंधी कई जरूरी काम

करने हैं, जिसमें देर करना उचित नहीं, मगर संक्षेप में तू यह बता कि तेरी यह हालत कैसे हुई और यहां किसने पहुंचाया तथा तेरा मरना क्योंकर मशहूर हुआ! " उस औरत ने रोष - भरे स्वर में जबाब दिया, " मुझे मालूम है कि मेरे बारे में तरह - तरह की बदनामी फैलाई गई है पर मैं परमात्मा को साक्षी देकर कहती हूं कि मैं बिल्कुल बेकसूर हूं?

मेरी यह सब दुर्दशा और मेरे यहां बन्द होने का कारण जमानिया के महाराज का मुसाहिब यदुनाथ शर्मा और मेरे बुजुर्ग रणधीरसिंहजी का ऐयार गदाधरसिंह है, जिन दोनों ने मेरी यह हालत की.

रोष और उद्वेग के मारे भुवनमोहिनी का चेहरा लाल हो आया था.

इतना कहते - कहते उसे हिचकी आने लगी और वह जोर - जोर से रोती हुई पुनः प्रभाकरसिंह के पैरों पर गिर पड़ी मगर उन्होंने उसे उठाया और दिलासा देने वाले शब्दों में कहा, " नहीं - नहीं बहिन भुनमोहिनी, तू बिल्कुल गलत सोच रही है!

तेरे दुश्मन तो सजा पाएंगे ही मगर तू भी अब अपनी मुसीबतों को भूल जा.

तेरे दु:ख के दिन बीत गए.

शीघ्र ही तू जब इस तिलिस्म के बाहर निकलेगी तो अपने सब रिश्तेदार और प्रेमियों को सही सलामत और सुखी देखेगी.

जमाने के उलट - फेर के कारण मैं तेरे हाल - चाल से बहुत परिचित नहीं हूं फिर भी इतना कह सकता हूं कि तू सब तरह से निष्कलंक और तेरी बुराई फैलाने वालों को ईश्वर सजा दे चुका और दे रहा है.

तू शान्त हो और संक्षेप में अपना हाल सुना! " बड़ी कठिनता से भुवनमोहिनी ने अपने को शान्त किया और तब प्रभाकरसिंह की आज्ञानुसार इस तरह अपना किस्सा सुनाने लगी .

.

.

.

भुवन मेरा किस्सा तो बहुत बड़ा है मगर आपकी आज्ञानुसार मैं संक्षेप ही में सुनाती हूं.

मुझे लड़कपन का हाल कहने की कोई जरूरत नहीं क्योंकि उससे शायद आप वाकिफ भी होंगे और उसमें कोई ऐसी अनूठी घटना हुई भी नहीं.

मेरी मुसीबतों का चक्कर तब से शुरू हुआ जबकि मैं व्याह के जमानिया आई और यहां यदुनाथ शर्मा जो जमानिया के महाराज का मुँह लगा मुसाहिब और सरदार था उसकी निगाह मुझ पर पड़ी.

उसको उस समय कुछ लोग दारोगा साहब भी कहते थे क्योंकि महाराज ने उसे अपने तिलिस्म के सामानों का दारोगा बनाया हुआ था.

मालूम नहीं, आजकल वह है या नहीं या कहां है.

प्रभाकर हैं, जमानिया में ही और अपनी शैतानियों का जाल चारों तरफ फैलाया हुआ है.

तुझे महाराज गिरधरसिंह के देहांत की खबर तो न होगी! भुवन:

(चौंककर) है, महाराज गुजर गए! ओफ, यह मैं क्या सुनती हूं.

उनकी मुझ पर असीम दया रहा करती थी, मगर तब यह भी सच है कि उनकी कृपा ही मेरी दुश्मन बनी! प्रभाकर::

उनका देहान्त हुए बहुत - बरस से ऊपर हो गया, उनकी महारानी उनसे पहले ही गुजर चुकी थीं.

अब कुंवर गोपालसिंह राजा हैं, लोगों का तो यह कहना है कि बड़े महाराज के देहान्त में भी इस कम्बख्त दारोगा का ही कुछ हाथ था, खैर, तू अपना हाल कह

भुवन:

(अपनी आंखें पोंछती हुई) अफसोस! अच्छा, तो मैं जब व्याह के आई तो महाराज को इस बात की खबर हुई क्योंकि कायदे के मुताबिक मैं महल में महारानी साहिबा की खिदमत में पेश की गई थी.

महाराज ने इस पर बहुत ही मेहरबानी का बर्ताव किया और मेरे ही सबब से मेरे खानदान की भी इज्जत बढ़ाकर मेरे पति को एक अच्छा रुतबा दिया.

अब तो मैं सोचती हूं कि उनकी इस कृपा के कारण मैं मुसीबत में पड़ गई क्योंकि लोगों को मेरे बारे में तरह - तरह की बातें उड़ाने का मौका मिला, खासकर वह दारोगा तो मेरा दुश्मन ही बन बैठा क्योंकि मेरे पति और ससुर की तरफ से उसका दिल साफ न था और वह न - जाने क्यों उनसे बहुत खार खाता था.

महाराज की हम लोगों के ऊपर कृपा उसे फूटी आँख न सुहाती थीं.

प्रभाकर:

महाराज की दयालु प्रकृति का हाल मुझे अच्छी तरह मालूम है जो दुश्मन पर भी कृपा किया करते थे, पर तेरे ऊपर मेहरबानी करने का क्या कोई खास कारण था?

भुबन:

(जरा - सा रुकावट के साथ) आप मेरे प्राणदाता हैं इससे आपसे साफ - साफ कह देने में कोई हर्ज नहीं, फिर अब जब महाराज का शरीर ही न रहा तो मेरी कसम भी कोई बाधा नहीं डालती.

बात यह है कि महाराज ने एक दिन खुद मुझसे कहा था कि तू राजा बीरेन्द्रसिंह की भान्जी है और वे मेरे भाई हैं इसलिए मैं भी तुझे अपनी भांजी और बेटी समझता हूं और तू मुझे अपना पिता ही समझ.

प्रभाकर:

(चौंककर ताज्जुब से) महाराज राजा वीरेन्द्रसिंह के भाई थे! भुवन:

जी हां, महाराज ने कहा था कि यह रिश्तेदारी बहुत ही गुप्त है और साथ ही यह भी बताया कि इस रिश्ते के प्रकट होने का समय अभी नहीं आया है अस्तु तू अपनी अपनी जुबान से किसी से भी इसका हाल न कहियो और मैंने ऐसा ही करने की कसम खा ली थी.

प्रभाकर:

(ताज्जुब से मन - ही - मन) उस दरबारी कमरे में जो कुछ मैंने देखा उससे मुझे भी यह ख्याल उठा था.

जरूर महाराज को इसका पता तिलिस्म के जरिये से लगा होगा! अच्छा, तब?

भुवन:

महल में ही जहां अक्सर मेरा जाना - आना होता रहता था एक बार उस कम्बख्त दारोगा की निगाह मुझ पर पड़ गई और वह मुझ पर आशिक हो गया.

न - जाने इस निगोड़ी शक्ल में उसने क्या देखा कि मुझे कब्जे में लाने के लिए उसने तरह - तरह के सब्जबाग दिखाने शुरू किए.

मैंने इसकी शिकायत महाराज से की.

सुनकर उन्होंने उसे डांटा बल्कि कुछ दिनों के लिए अपने दरबार से निकाल रीठा के जंगलों का दारोगा बनाकर सरहद पर भेज दिया, और यह बड़ा चालबाज, आदमी था अस्तु किसी - न - किसी तरह महाराज को खुश कर जमानिया लौट आया मगर उसी दिन से यह मेरा जाने दुश्मन हो गया.

मगर सीधे महाराज से कुछ कहने की हिम्मत तो इसकी न पड़ी मगर महारानी के कान भरने इसने शुरू किए और मेरी तरह - तरह की झूठी शिकायतें कर उन्हें इसने मेरी तरफ से नाराज कर दिया.

राजदरबारों में किस - किस तरह के कुचक्र चला करते हैं.

इसका पता तो मुझे नौगढ़ में ही लगा करता था अस्तु मैंने पति से सब हाल कहा और उन्होंने महाराज से अर्ज कर जमानिया से दूर एक जगह जाकर रहना शुरू किया मगर वह आबोहबा मुझे माफिक न आई, मैं बीमार पड़ गई और जब महाराज ने समाचार सुना तो हम दोनों को फिर जमानिया बुलवा भेजा.

इसी जगह से मेरी मुसीबत का असली जमाना शुरू हुआ.

मेरे कुंआरेपन ही में चुनार के राजा शिवदत्त की बुरी निगाहें मुझ पर पड़ चुकी थी.

आप तो जानते ही होंगे कि वह रणधीरसिंह का दामाद है जो मेरे मामा लगते हैं.

वहां अकसर वह भी आते और मैं भी रहती.

वहीं उसने मुझे पहले - पहल देखा था मगर उसकी बुरी नीयत पहचान, जब कभी वह वहां रहे मैंने वहां जाना ही छोड़ दिया था पर अब मेरे जमानिया आने पर कम्बख्त की बुरी नीयत ने फिर जोर मारा और इस काम में उसके मददगार बने ये साहब और मेरे मामा का एक शैतान ऐयार गदाधरसिंह गदाधरसिंह का नाम आपने जरूर सुना होगा और इन्हीं की करतूतों ने मुझे एकदम मिट्टी में मिला दिया.

प्रभाकर:

मगर मैंने उड़ती हुई यह खबर सुनी थी कि जमानिया की महारानी का भी इसमें कुछ हाथ था और वे भी तुम्हारी दुश्मन बन गई थीं.

भुवन:

अगर हो तो मैं कुछ कह नहीं सकती.

वे मुझसे नाराज तो जरूर रहा करती थीं क्योंकि यह दारोगा तरह - तरह की मेरी झूठी शिकायतों से उनके कान भरता था, मगर उन्होंने मेरे खिलाफ सिवाय महाराज को दो - एक दफे कुछ कहने के और कुछ किया हो इसकी खबर तो मुझे नहीं! प्रभाकर खैर, जाने दो, तब क्या हुआ?

भुवन:

मेरे ससुर का एक बहुत बड़ा और सुन्दर बगीचा तथा आलीशान कोठी जमानिया से दो कोस बाहर एक पहाड़ी नाले के किनारे पर थी जहां अक्सर हम लोग जाकर रहा करते थे! एक दिन की बात है, मैं अपने पति के साथ उसी बाग में थी कि मुझे खबर लगी कि एक सपेरा बहुत - से अद्भुत् - अद्भुत सांप लेकर आया है.

मैंने उन्हें देखने की इच्छा की और पति से आज्ञा लेकर उस सपेरे को भीतर बुलाया.

बड़े ही विचित्र - विचित्र सांप उसके पास थे जिन्हें वह मुझे दिखला ही रहा था कि यकायक लाल रंग के पतले और करीब डेढ़ - दो हाथ लम्बे सांप ने झपटकर मुझे काट लिया.

डर और तकलीफ के कारण मैं बदहवास हो गई और जब उसने बताया कि यह एक जहरीला सांप है कि जिसके काटे का कोई इलाज नहीं और जिसका जहर कुछ देर बाद

में चढ़ता है तो मैं एकदम ही सुध - बुध खो बैठी.

उस सपेरे ने अपने पास से निकालकर और बहुत तारीफ कर किसी दवा की एक पुड़िया मुझे खिला दी.

इस दवा के खाने के कुछ ही देर बाद वह आधी बेहोशी में भी मुझे जान पड़ने लगा कि मेरा तमाम बदन जल रहा है और कलेजे में एक अजीब किस्म की धड़कन और दर्द शुरू हो रही है.

धीरे - धीरे मेरे हाथ - पांव सुन्न होने लगे और होश था मगर ऊपर से मैं एकदम मुर्दे जैसी हो गई, मेरी आँखों से कुछ दिखाई न देता था और मेरा शरीर एकदम सुन्न हो गया था.

एक उंगली तक मैं हिला नहीं सकती थी मानों उसे लकवा मार गया हो.

मैं मुर्दे की तरह जमीन पर पड़ गई और मेरे घर में कोहराम मच गया.

सब कोई और खासकर मेरे पति जो मुझे बहुत ही प्यार करते थे जोर - जोर से रोने और चीखने चिल्लाने लगे मगर सपेरे ने उन्हें दिलासा दिया. और उसी दवाई की एक और पुड़िया जबरदस्ती मेरा मुंह खोलकर खिला दी.

उस पुड़िया की गर्मी और तेजी से चढ़ी और मैं एकदम बेहोश हो गई,

इसके बाद कैसे क्या हुआ, मैं कुछ कह नहीं सकती क्योंकि मुझे कुछ भी होश नहीं है, पर जंगल की ठंडी - ठंडी हवा लगने से मुझे कुछ होश आया और मुझे ऐसा याद पड़ता है कि मैंने देखा कि कुछ लोग मुझे कम्बल में लपेटे कहीं लिए जा रहे हैं, पर ये लोग कौन हैं या मुझे कहां ले जा रहे हैं इसका मुझे पता न लग सका क्योंकि मेरे होश ह्वास पूरी तरह दुरुस्त न हुए थे और न आंख खोलने या बदन हिलाने की सामर्थ्य लौटी थी.

मैं किसी मकान के अन्दर लाई गई जहां एक कम्बल पर मुझे लेटा वे लोग बाहर निकल गए.

थोड़ी देर बाद कोई आदमी वहां आया और उसने मुझे कोई चीज सुंघाई तथा कोई दवा खिलाई जिससे मेरे होश लौटने लगे और कुछ ही देर बाद भला - बुरा समझने लायक हो

गई, तब कई बार आंखें खोलकर मैंने देखा और पहचाना कि वह आदमी गदाधरसिंह था.

प्रभाकरसिंह यह सुन चौके और उन्होंने पूछा, " तुमने पहचाना कि वह गदाधरसिंह था?

" भुबनमोहिनी ने जवाब दिया, " हाँ, अच्छी तरह क्योंकि अपने मामा के यहां बराबर ही उसे देखा करती थी.

" प्रभाकरसिंह ने पूछा, “ अच्छा तब?

" भुवन:

मुझे सकबकाता और होश में आता पा किसी दवा से तर एक रूमाल मेरी नाक पर रख गदाधरसिंह बाहर चला गया और थोड़ी ही देर बाद उसकी यह बात मैंने सुनी.

लीजिए, महाराज मैंने अपना काम पूरा कर दिया! जिसे आप मुर्दा समझ रहे थे वह देख लीजिए कि जीती - जागती और पूरे होश - हवास में है.

जाइए, अपनी प्यारी को काबू में कीजिए और उसके आंचल में गुलामी की दस्तावेज लिखिये! " और इसके बाद ही मैंने राजा शिवदत्त को वहां आते पाया.

एक निगाह उस क़मीनी सूरत पर डालते ही कांप गई.

क्योंकि मुझे विश्वास हो गया कि यह सब हरकत इसी की है.

और अपनी लालसा पूरी करने के लिए ही इसने मेरे साथ इस तरह की कार्रवाई की है.

अब उस वक्त की शिवदत्त की बातों का क्या जिक्र मैं आपसे करूं?

मुख्तसर यह कि उसने तरह - तरह के सब्जबाग मुझे दिखलाये और हजारों तरह की बातें कहकर मुझे बहकाना चाहा मगर मैं किस तरह उसकी बात मंजूर कर सकती थी उसकी लानत - मलामत करके उसे गालियां देने लगी.

आखिरकार उसे क्रोध चढ़ आया और वह खंजर खींच मेरी छाती पर सवार हो गया.

मुझे खुशी हुई कि अब सब किस्सा खतम हो जाएगा और मैं मरकर ठंडे - डंडे स्वर्गलोक को चली जाऊंगी मगर फूटी किस्मत में यह सुख भी नहीं बदा था.

नजदीक ही था कि खंजर मेरी छाती में घुस जाता और मेरा काम तमाम हो जाता कि कोठरी के बाहर कहीं से किसी औरत के चिल्लाने की आवाज आई जिसे सुन शिवदत्त चौंक पड़ा और मुझे छोड़ दरवाजे पर जा पूछने लगा, " कौन है?

कौन चिल्लाया?

" कुछ आदमियों के बातचीत की आवाज आई और तब एक आदमी बोला, “ महाराज, यह क़म्बखत मालती है! " इतना सुनते ही मैं ताज्जुब में आकर सोचने लगी कि यह कौन मालती हो सकती है कि इसी समय शिवदत् फिर मेरे पास आया और बोला, " देख री क्रमबख्त मैं तुझे आधी घड़ी की मोहलत देता हूं! इसी बीच में तू सब कुछ सोच - समझ ले और अपना भला - बुरा विचार ले.

आधी घड़ी के बाद मैं फिर आऊंगा! अगर तूने मेरी बात मान ली और मेरे महल में रहना मंजूर कर लिया तो ठीक ही है नहीं तो याद रख बोटी - बोटी काटकर मैं कुत्तों को खिला दूंगा! " इतना कह वह बाहर निकल गया और मैं उसी जगह पड़ी किस्मत पर आंसू गिराने लगी.

आधी घड़ी बल्कि इससे भी ज्यादा बीत गया और शिवदत्त लौटकर न आया तब मुझे कुछ आशा का संचार हुआ.

सोचने लगी कि शायद वह कहीं चला गया या किसी मुसीबत में पड़ गया हो और मुझे इस मकान के बाहर जाने का मौका मिल सके.

उस कोठरी का दरवाजा तो वह कम्बख्त जाते वक्त बाहर से बन्द करता गया था मगर वहां और भी कई दरवाजें दिखाई पड़ रहे थे.

मैं हिम्मत करके उठी और सब दरवाजों को जांचने पर एक मुझे भीतर ही की तरफ से बन्द मिला अर्थात् उसकी सांकल उसकी कोठरी में से लगी हुई थी.

मैंने आहिस्ते से सांकल खोली और पल्ला खोले दूसरी तरफ देखने लगी.

जो कुछ मैंने देखा उसने मुझे चौंका दिया अर्थात् उस जगह जमीन ही पर एक बेहोश औरत पड़ी हुई थी.

मैं कोठरी में घुस गई और झुक कर देखने पर पहचाना कि वह अहिल्या थी.

इतना सुनते ही प्रभाकरसिंह चौंके और बोल उठे, “ अहिल्या! कौन अहिल्या?

" भुवन:

आप उसे जरूर जानते होंगे वह मेरे पति की प्यारी बहिन जिसका विवाह .

.

.

प्रभाकर:

ठीक - ठीक, मैं समझ गया! वही जो भूतनाथ के हाथों मारी गई.

भुवन:

जी, इस बारे में तो .

.

.

प्रभाकर:

' खैर, तुम आगे का हाल कहो! भुवन:

जो आज्ञा! अहिल्या को देख मैं चौंक पड़ी और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी पर मैं कुछ कर न पाई क्योंकि उसी समय पहली कोठरी (जिसमें से मैं आई थी) का दरवाजा खुलने की आहट सुनाई पड़ी और मैंने देखा कि शिवदत्त और उसके साथ - साथ गदाधरसिंह उसके अन्दर आए.

मुझे उस कोठरी में न पा शिवदत्त चौंका और इधर - उधर देखने लगा मगर उसी समय गदाधरसिंह हंस पड़ा और जिस कोठरी में मैं थी उसकी तरफ बताकर कहने लगा, " जरूर वह उस कोठरी में गई होगी.

” मैंने यह सुनते ही उस कोठरी का दरबाजा बन्द कर लेना चाहा मगर वह झपट पड़ा और दरवाजा धक्केल करके अन्दर घुस आया.

उसके पीछे शिवदत्त भी वहां आ गया और मुझे डर के मारे दीवार से चिपकता देख दोनों शैतान हंसने लगे.

इसके बाद भूतनाथ ने शिवदत्त से कहा, " अच्छा महाराज शिवदत्त, अब मैं आपका हुक्म पूरी तौर पर बजा चुका अब लाइए मेरी चीज मेरे हवाले कीजिए.

" यह सुन शिवदत्त बोला, " हां, मैं आपकी कार्रवाई से बहुत ही खुश हूं और खुशी के साथ आपकी चीज आपको देने को तैयार हूं.

आपने जो कुछ किया वह आपके सिवाय और किसी के लिए करना नामुमकिन था.

यह लीजिए अपनी चीज! " शिवदत्त ने अपनी कमर में कोई चीज निकालकर गदाधरसिंह को दी जिसने उसे एक दफे गौर से देख और तब खुश होकर अपनी जेब में रख लिया! प्रभाकर ०:

वह कौन - सी चीज थी क्या तुम कह सकती हो?

भुवन:

नहीं, मैं इस कदर डरी और घबराई हुई थी कि उन लोगों की तरफ देखने में कांप उठती थी और फिर उस जगह कुछ अन्धकार भी था.

प्रभाकर:

खैर, तब.

भुवन:

गदाधरसिंह उस चीज को ले शिवदत्त को सलाम कर पीछे को मुड़ा मगर शिवदत्त ने रोककर कहा, “ गदाधरसिंह तुम जा ही रहे तो अहिल्या को भी लेते जाओ क्योंकि यह कम्बख्त मेरे काबू में किसी तरह नहीं आती और जब तुमने (मेरी तरफ बताकर) इसे मेरे हवाले कर दिया है तो मुझे उसकी जरूरत भी नहीं रही.

तुम उसे ले जाओ और जो चाहो सो करो.

" शिवदत्त की बात सुनते ही गदाधरसिंह की बाछे खिल गईं.

खुशी - खुशी शिवदत्त को सलाम कर अहिल्या की तरफ झुका गठरी बनाई और तब अपनी पीठ पर लाद कोठरी के बाहर निकल गया.

अब शिवदत्त मेरी तरफ झुका और एक कदम आगे बढ़कर पूछने लगा, “ बता तूने क्यांसोचा! मेरी बात मंजूर है या अपनी जान देना! " उसको अपनी तरफ बढ़ते देख मैं डरकर दूसरी तरफ हट्टी.

उस कोठरी के एक तरफ एक छोटा - सा चबूतरा बना था जिसके ऊपर लाल रंग की कोई मूरत बैठी हुई थी.

इस चबूतरे और उस कोठरी की दीवार के बीच हाथ डेड़ हाथ के करीब जमीन छूटी हुई थी और वहां दीवार में एक अलमारी बनी थी जिसमें पल्ले तो थे मगर खाने अर्थात् दर बने हुए न थे, शिवदत्त के हाथ से बचने की नीयत से मैं इसी चबूतरे के पीछे भागी और उस मूरत को मैंने कसकर पकड़ लिया जो मेरा हाथ पड़ते ही कुछ घूम - सी गई, जब शिवदत्त वहां पहुंचे तो मैं उस अलमारी के अन्दर घुस गई जो काफ़ी लम्बी - चौड़ी और ऊंची थी तथा उसके पल्ले भीतर से बंद कर लिए.

पल्लों का बन्द करना ही था कि एक खटके की आवाज हुई और उस आलमारी के पीछे की तरफ एक छोटा - सा रास्ता निकल आया.

मैंने गनीमत समझा और उसी रास्ते के अन्दर घुसने के साथ ही मुंह के बल नीचे जा गिरी क्योंकि भागने की जल्दी में मैंने इस बात पर गौर न किया कि उस रास्ते के अंदर की सतह बराबर नहीं है बल्कि वहां कई डण्डा सीढ़ियां हैं.

क्योंकि मुझे बहुत सख्त चोट आई थी मगर साथ ही यह देखकर कि वह रास्ता जो जरूर तिलिस्मी होगा इस तरह से बन्द हो गया था कि इस बात का कुछ पता ही नहीं लगता था कि यहां कोई रास्ता कभी था भी.

प्रसन्नता भी हुई कि मैं हत्यारे शिवदत्त के हाथों से बच गई.

बहुत देर तक जमीन पर बैठी रही और जब मेरे होश - हवास ठिकाने हुए तो उठ कर एक तरफ को रवाना हुई मैंने अपने को एक लम्बी सुरंग में पाया.

इधर - उधर घूमती और विचित्र ढंग में ऊपर - नीचे मुड़ती हुई वह सुरंग न - जाने कितनी दूर चली गई थी कि चलते - चलते मैं एकदम थक गई.

आखिर किसी तरह उस सुरंग का खातमा हुआ और कुछ डण्डा सीड़िया तय कर मैं एक दालान में पहुंची! मेरे यहां पहुंचते ही सुरंग का मुंह इस तरह बन्द हो गया कि उसका नाम निशान भी बाकी न रह गया मगर इस बात पर गौर करने का मुझे मौका न मिला क्योंकि अपने सामने जो कुछ मैंने देखा उसने मुझे घबरा दिया.

एक लम्बा - चौड़ा आंगन पत्थरों से पटा हुआ मेरे सामने था जिसके बीचोंबीच में लाल पत्थर की एक भयंकर आकृति की मूरत बनी हुई थी.

काले कपड़े से अपना तमाम बदन डांके और अपने मुंह को भी काली नकाब से छिपाये एक आदमी उस मूरत के सामने खड़ा था और उसके पैरों के पास एक बेहोश औरत पड़ी हुई थी.

मूरत के मुंह से कुछ शब्द निकल रहे थे जिसे मैंने सुना, “ मेरा नाम भूतनाथ है, मैं रोहतासगड़ का पुजारी हूं और यहां पर उस खज़ाने की हिफाजत करने के लिए बैठाया गया हूं जो शिवगड़ी में बन्द है ।

" वह नकाबपोश उस मूरत की यह बात सुनकर बोला, " मगर मैंने तो अब सारी शर्ते पूरी कर दी हैं अब वह खजाना मुझे मिल जाना चाहिए.

" जिसे सुन मूरत विकराल हंसी हंस कर बोली, " मैं बहुत दिनों का प्यासा हूं और मेरी प्यास रक्त से ही मिट सकती है.

तुम्हारे साथ एक औरत है.

उसका सिर काटकर ताजा लहू अगर मुझे पिला दो तो मैं अपना खजाना तुम्हें दे दूंगा! " नकाबपोश यह सुनकर बोला, " मैं इसके लिए भी तैयार हूं.

" वह मूरत यह सुन खिलखिला कर हंसी और बड़े ही डरावने ढंग से उसने अपनी जबान निकालकर ओठ चाटे, इधर नकाबपोश ने अपनी कमर से तलवार निकाली और उस औरत की तरफ झुका.

नोट - ये ही शब्द प्रभाकर सिंह ने सुने ।

जब भूतनाथ की मूरत ने उन्हें पकड़ा था- देखिए भूतनाथ सब्रह्वां भाग, तीसरा बयान.

उस समय ज़रा देर के लिए नकाब उसके चेहरे पर से हट गई और मैंने पहिचाना कि वह गदाधरसिंह है.प्रभाकर:

कौन, गदाधरसिंह! और वह औरत कौन थी?

भुवन:

जी हां वह गदाधरसिंह ही था, और वह औरत अहिल्या थी क्योंकि उसी समय एक हाथ से गदाधरसिंह ने उसके बाल पकड़कर उसका सिर सीधा किया तब उसकी भी सूरत मैंने देखी, मगर इसके पहिले कि मैं कुछ कर सकूं, दूसरे हाथ से तलवार निकालकर गदाधरसिंह ने उस बेचारी की गरदन पर मारी.

खून का फब्बारा चल पड़ा और सिर कटकर गदाधरसिंह के हाथ में आ गया जिसे ऊंचा कर उसने मूरत की जुबान पर लहू टपकाना शुरू किया.

ओह! यह ऐसा दृश्य था जिसे मैं देख न सकी और एक चीख मारकर बेहोश हो गई, इस भयानक घटना की याद ने इतने दिन बाद भी बेचारी भुवनमोहिनी का शरीर कंपा दिया और उसने कॉप कर आंखें बन्द कर लीं, प्रभाकरसिंह ने उसे बहुत कुछ दम - दिलासा देकर शान्त किया और तब कहा, " तू बाकी हाल कह मगर जल्दी कर क्योंकि समय बीतता जाता है और मुझे आगे का काम शीघ्र निपटा डालना जरूरी है, नहीं तो हम लोग मुसीबत में पड़ सकते हैं.

तिलिस्म का बाकी हिस्सा तोड़ते हुए मैं जल्दी बाहर निकल जाना चाहता हूं! " भुवनमोहिनी ने जवाब के लिए मुंह खोला ही था कि यकायक प्रभाकरसिंह के पीछे से किसी के हंसने की डरावनी आवाज सुनकर रुक गई, प्रभाकरसिंह ने चौंककर पीछे घूम के देखा और जब किसी पर निगाह न पड़ी तो ताज्जुब के साथ पूछा, " यह कौन हंसा?

" एक डरावनी आबाज आई " मैं! " प्रभाकरसिंह चौंक गए.

यह आवाज उन्हें पहचानी हुई - सी जान पड़ी.

उन्होंने पूछा, " तुम कौन?

" जवाब मिला, " मैं वही तिलिस्मी शैतान! " प्रभाकरसिंह बोले, " तुम कहां हो और क्यों हंस रहे हो?

" जबाब मिला, " मैं यही हूं और तुम्हारी बात पर हंस रहा हूं! क्या तुम समझते हो कि अब जीते - जी इस तिलिस्म के बाहर निकल सकोगे! " प्रभाकरसिंह बोले, “ क्या इसमें भी कोई शक है.

" जबाव आया, “ जरूर.

"

प्रभाकरसिंह ने कुछ सोचकर जवाब दिया, " ख़ैर फिर देखा जाएगा मगर इस समय तो तुम्हारी कहीं सूरत भी नहीं दिखाई पड़ती जो मैं कुछ बातें कहूं और पूछूं कि ऐसा क्यों.

" इसके जवाब में फिर वही डरावनी हंसी सुनाई दी और तब आवाज आई, " अच्छा तो मैं प्रकट होता हूं, तुम्हें जो कुछ पूछना हो पूछो मगर होशियार रहना, डरना नहीं.

इसके साथ ही एक पटाखे का शब्द हुआ और बहुत डेर - सा धुंआ दिखाई पड़ने लगा.

इस धुएं ने हल्का होकर मनुष्य की हड्डियों के एक ढांचे का रूप धारण किया और जब निगाह जमी तो प्रभाकरसिंह ने उसी भयानक तिलिस्मी शैतान को अपने सामने पाया जिसे पहले भी कई बार देख चुके थे.

प्रभाकरसिंह तो बहादुर और दिलेर थे साथ ही इस आसेब को कई बार देख भी चुके थे जिससे उन्होंने अपने होश - हवास कायम रखे मगर बेचारी भुवनमोहिनी इसे देखते ही इतना घबराई और डरी कि उसने बेतहाशा एक चीख मारी और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ी.

छठवां व्यान।

लोहगढ़ी के टीले से जहां पहले वह सुन्दर इमारत थी मगर अब डरावना खंडहर सांय - सांय कर रहा है लगभग आध कोस उत्तर की तरफ एक छोटा - सा शिवालय है जिसको चारों तरफ से बेल के अनगिनत पेड़ों ने कुछ इस तरह पर घेर रखा है कि वहां एक

गुंजान कुंज का - सा दृश्य बन गया है और दिन को भी उस जगह कुछ अन्धकार ही रहा करता है.

शिवालय यद्यपि छोटा - सा ही है मगर काले पत्थर का है उस पर बहुत ही सुन्दर नक्काशीदार काम बना हुआ है और इसके भीतर जो शिवलिंग बना हुआ है वह भी बहुत ही सुन्दर और किमती है.

किस धातु का बना है इसका तो पता नहीं लगता मगर प्राचीन बहुत मालूम देता है और उसके सामने की तरफ संगमर्मर के छोटे चबूतरे पर ताम्बे का एक छोटा - सा - नन्दी भी बना हुआ है.

बस इसके सिवाय और कोई सामान उस मन्दिर में नहीं है.

इस समय दोपहर की कड़कती धूप में भी इस शिवालय में और इसके आसपास ठंडक है और यही सबब है कि उस नौजवान ने जो एक तेज घोड़े पर सरपट अभी पहुंचा है आकर सन्तोष की एक बहुत लम्बी सांस खींची है.

और घोड़े को बागडोर से बांध खुद दुपट्टे से हवा करता हुआ मन्दिर के क़मर - भर ऊंचे सभा मण्डप पर एक खम्भे से उठंग कर बैठ गया है.

इस नौजवान का चेहरा एक हल्की नकाब से ढंका होने के कारण इसकी सूरत देखी नहीं जा सकती फिर भी हम पाठकों को बताये देते हैं कि ये जमानिया के राजा गोपालसिंह हैं मगर इसकी हमें कुछ भी खबर नहीं कि ये इस समय यहां इस तरह अकेले और बगैर - सामान यहां तक कि बिना एक प्यादा भी साथ लिए क्यों नजर आ रहे हैं.

राजा गोपालसिंह को यहां आए आधी घड़ी भी न हुई होगी कि बेल के पेड़ों की झुरमुट के बाहर पुनः घोड़े के टापों का शब्द हुआ और एक सवार आता हुआ दिखाई पड़ा जिसे देखते ही गोपालसिंह उठ खड़े हुए, इस सवार का चेहरा भी नकाब से ढका हुआ था मगर गोपालसिंह पर निगाह पड़ते ही इसने अपनी नकाब उलट दी और अब मालूम हुआ कि ये इन्द्रदेव हैं.

इन्द्रदेव ने गोपालसिंह को अपनी तरफ आते देख घोड़े से उतरने में जल्दी की और उसकी लगाम एक डाल में अटका उनकी तरफ बढ़े.

दोनों दोस्त गले मिले और तब उसी सभामण्डप पर आकर इस तरह बातचीत करने लगे-
इन्द्र:

वाह रे आप आ तो गये! मुझे उम्मीद न थी कि कामकाज और व्याह की झंझटों में पड़े हुए आपको इतनी फुरसत मिल सकेगी.

गोपाल:

भला तुम्हारा हुक्म पहुँचे और मैं आऊं नहीं! हां यह ताज्जुब जरूर है कि वह कौन - सा ऐसा काम आ पड़ा जिसके लिए तुमने मुझे यहां बुलाना जरूरी समझा और साथ ही यह भी लिख भेजा कि ' तुम्हारे व्याह में मैं शरीक न हो सकूंगा '.

इन्द्र:

एक ऐसा ही काम आ गया .

.

.

गोपाल:

(बात काटकर) तुम जानते ही हो कि मेरी इस शादी के बारे में कैसी - कैसी नोकझोंक हुई, बेचारे बलभद्रसिंह को कैसी - कैसी - मुसीबतें उठानी पड़ीं खुद पिताजी की जान सम्भवत:

इसी कारण गई, और मैं भी कैसी - कैसी मुसीबतों में पड़ा कि अभी तक बड़ी मुश्किल से अपनी जिन्दगी कायम रक्खे हुआ हूँ, और अब तुम कहते हो कि व्याह में न आऊँगा, भला तुम ही न रहोगे तो मैं कैसे क्या करूंगा और कैसे अपने को निरापद ही समझूंगा?

वेदी पर बैठा - बैठा भी मैं कातिल के खंजर से डरता रहूंगा! इन्द्र:

(हंस कर) नहीं - नहीं, ऐसी कोई बात नहीं, ऐसी काली तस्वीर मत खिचिए, अब न तो बलभद्रसिंह ही को और न आपको ही इस ब्याह से किसी तरह का खतरा है.

गोपाल:

यह कैसे आप कह सकते हैं! क्या आप भूल गए की खुद आप ही की राय से मैंने ऐयार विहारी और ह्रनाम को बलभद्रसिंह की हिफाजत के लिए भेजा हुआ है और मेरी जान की हिफाजत आपका वह शागिर्द कर रहा है जिसे आपकी आज्ञानुसार मैंने अपना खास खिदमतगार बनाकर महल में रख छोड़ा है. इसीलिए तो मैंने आपको यहां बुलाने की तकलीफ ही दी है जिसमें आप कुछ जान लें और बेफिक्री से सब कामकाज और हंसी - खुशी का जश्न करें क्योंकि एक बहुत ही जरूरी कारण आ पड़ने से मैं तिलिस्म के अन्दर जा रहा हूं जहां से कितने दिनों बाद लौट सकूंगा कुछ कह नहीं सकता! गोपाल:

आप तिलिस्म में जा रहे हैं! इन्द्र:

जी हां, और किस वास्ते सो भी सुन लीजिए क्योंकि आपके लिए यह बात जान रखना जरूरी है.

आपको यह तो मालूम है कि प्रभाकरसिंह आजकल लोहगड़ी का तिलिस्म तोड़ रहे हैं.

गोपाल:

हां, आपने मुझसे कहा था कि लोहगड़ी का तिलिस्म प्रभाकरसिंह और मालती के नाम पर बांधा गया है और वे उसे तोड़ रहे हैं ।

इन्द्र:

वे दोनों अपना काम करीब - करीब समाप्त कर चुके हैं.

अगर बीच ही में एक नई झंझट पैदा न हो गई तो आज इस समय उन्हें इसी शिवालय की राह वहां से बाहर निकल आना चाहिए था.

गोपाल:

झंझट कौन - सी पैदा हो गई?

इन्द्र:; तिलिस्म के अन्दर न - जाने किस तरह से कोई दुष्छ जा पहुंचा है जो अपने को तिलिस्मी शैतान ' कहता है.

उसने उन दोनों को बहुत तंग किया है.

कई कैदी जो इस तिलिस्म के अन्दर से मिले थे उन्हें कहीं उठा ले गया है, मालती को कहीं बन्द कर दिया है और खुद प्रभाकरसिंह की जान का ग्राहक बन गया है.

वह तो कहिए कि प्रभाकरसिंह बहुत ही बहादुर ताकतवर और दिलेर आदमी है नहीं तो अब तक न जाने क्या गजब हो गया होता.

गोपाल:

(ताज्जुब से) ऐसा! मगर तिलिस्म के अन्दर किसी गैर का घुस जाना और इस तरह की कार्रवाइयां करना तो बड़ी असम्भव बात मालूम होती है.

इन्द्र:

बेशक ताज्जुब की और तिलिस्मी नियमों के एकदम खिलाफ बात है और इसीलिए मेरे लिए तिलिस्म के अन्दर जाकर इस बला को दूर करना जरूरी हो गया है.

जिस तरह की खबरें सुनने में आई हैं उनसे तो यही जान पड़ा कि प्रभाकरसिंह का यह दुश्मन बहुत ही जबरदस्त है और उसे खोजकर तिलिस्म के बाहर निकालने में मुझे काफी तरदुद उठाना पड़ेगा.

इसमें कितने दिन लग जायेंगे इसका भी कुछ ठीक नहीं है और साथ ही यह काम है भी जरूरी इसलिए मैं आपकी शादी के जलसे में शरीक होने से माफी चाहता हूं.

गोपाल खैर जब ऐसा बीहड़ माभला है तो मैं आपको रोक नहीं सकता मगर फिर कहिये कि मेरी हिफाजत कैसे होगी?

इन्द्र:

मैंने कहा न कि आपको अब किसी तरह से कोई डर नहीं रह गया है.

जो आपका सबसे बड़ा दुश्मन था वह जान से हाथ धो चुका और अब आप बिल्कुल निश्चिन्त होकर काम कर सकते हैं बशर्ते कि आपने मेरे कहे मुताबिक सब कार्रवाई कर डाली हो.

गोपाल:

जो - जो काम आपने कहा था वह सब मैंने पूरा कर दिया है.

हेलासिंह और उसकी स्त्री जेलखाने में भेज दिये गये हैं, सुकान गिरफ्तार कर लिया गया है और वे सभी लोग जिनके बारे में आपने बतलाया था इस समय हिरासत में हैं, हां सिर्फ एक बात रह गई है, रघुबर सिंह यानी जैपालसिंह का कहीं पता नहीं चलता, वह एक वही सिर्फ मेरे काबू में नहीं आया या फिर आपके गुरुभाई साहब छूटे हुए हैं ।

इन्द्र:

हां जैपाल आपको नहीं मिला होगा, उसे भूतनाथ ने पकड़ लिया और कहीं भेज दिया है.

गोपाल:

मगर आपकी वह बात मेरी समझ में नहीं आई जो आपने कही कि मेरा बड़ा दुश्मन जान से हाथ धो चुका है?

इन्द्र:

(मुस्कुरा कर) मेरा इशारा मुन्दर की तरफ था.

आपके दुश्मनों का इरादा यही था कि लक्ष्मी देवी से आपकी शादी न होने देकर मुन्दर को आपके गले मड़े और उसके जरिये आप पर हुकूमत करें, लोहगड़ी उड़ाकर भूतनाथ ने अपनी जान तो दी मगर आपको निष्कंटक कर गया यानी मुन्दर और उसके साथ - साथ नन्हों तथा गौहर की जीवन - लीला समाप्त करता गया अस्तु आपको अब इधर से कोई डर नहीं है.

गोपाल:

(चिन्ता के साथ) और अगर वे किसी दूसरी को उसकी जगह भरती करने की कोशिश करें तब?

इन्द्र:

इसीलिए मैंने आपको राय दी है और बलभद्रसिंह को भी इस बात पर राजी कर लिया है कि शादी में आप लड़की वाले के यहां न जाय बल्कि बलभद्रसिंह आपके महल में अपनी लड़की को लाकर उसका विवाह आपके साथ कर दें, विवाह के पहले ही वे दोनों

जब आपके घर में और आपकी हिफाजत के अन्दर आ जायेंगे तो फिर कौन - सा तरदुद या डर पैदा हो सकता है! गोपाल:

खैर आप समझ लीजिए, मुझे तो जैसे - जैसे जो - जो कहिएगा करता जाऊंगा, भला - बुरा सब आपके सिर रहेगा.

१.

चन्द्रकांता सन्तति में यह नाम आ चुका है!

इन्द्र:

(हंसकर) खैर तो आप अपना ईश्वर कुछ देर के लिए ही मुझे ही समझ लीजिये इसमें भी आपका कुछ अनिष्ठ न होगा इसकी जिम्मेदारी मैं उठाये लेता हूं.

गोपाल:

मगर हां यह तो कहिए कि आप अपने गुरुभाई साहब को क्यों अछूता छोड़ते जा रहे हैं! मुझे तो बार - बार उन्हीं के ऊपर क्रोध आता है.

इन्द्र:

(एक लम्बी सांस लेकर) अभी समय नहीं आया- इसके सिवाय इस विषय में मैं भी अभी और कुछ न कहूंगा! गोपाल:

तो खैर फिर मैं भी इस विषय में कुछ न कहूंगा और आपके भरोसे अपनी जान सूली पर टांगे रहूंगा?

इन्द्र:

(दिलासा देने के ढंग से) घबराइये नहीं, सब काम का एक समय होता है.

दारोगा की किस्मत का फैसला होने का समय भी एक दिन जरूर आयेगा पर अभी नहीं.

अभी तो आपको उससे मीछे बने ही रहना होगा, और मुझे आशा है कि उसे अपने ऊपर शक पैदा करने की कोई जगह आप दे न रहे होंगे?

गोपाल:

जरा भी नहीं.

आपकी आज्ञानुसार उसे मैं अपना बड़ा बुजुर्ग और रक्षक बनाए हुए हूँ.

हर वक्त उसे भाई साव - भाई साहब कहते मेरा मुंह सूखा करता है, और उसकी इज्जत और खातिरदारी करता हुआ मैं सोचा करता हूं कि क़ब आप असली रहस्य मुझे बतायेंगे और कम्बख्त को फांसी की रस्सी में झूलता मैं देखूगा.

इसका जबाब इन्द्रदेव ने कुछ न दिया और सिर्फ मुस्कराकर रह गए, तब अपने बटुए में हाथ डाल उन्होंने एक चिट्ठी निकाली और गोपालसिंह की तरफ बढ़ाते हुए कहा, " इन्दिरा आपके यहां आ गई?

गोपालसिंह बोले, “ आज किसी वक्त आ पहुँचेगी.

" इन्द्रदेव ने कहा, " तब उसे मेरी तरफ से प्यार देकर यह चिट्ठी दे दीजिएगा क्योंकि शायद मैं उससे भी जल्दी मिल न सनूंगा.

गोपाल:

(चिट्ठी लेकर) आखिर तिलिस्म के काम से खाली होकर तो जमानिया आवेंगे या तब भी नहीं?

इन्द्र:

हां हां, तब तो जरूर ही आऊंगा, मेरा मतलब सिर्फ इस शादी के मौके से था.

अच्छा अब कुछ दो - एक जरूरी बातें और भी सुनकर अपने दिल में तवश कर लीजिए और तब मुझे इजाजत दीजिए क्योंकि देर हो रही है.

इन्द्रदेव राजा गोपालसिंह की तरफ खसक गये और धीरे - धीरे कुछ समझाने लगे.

आधे घण्टे से ऊपर समय तक दोनों में बातें होती रहीं जिसके बाद दोनों उठ खड़े हुए.

गोपालसिंह अपने घोड़े पर सवार हुए इन्द्रदेव ने उन्हें मन्दिर की सरहद के बाहर पहुंचा दिया और तब साहब सलामत के साथ उन्हें विदा कर पुन:

मन्दिर की तरफ लौट पड़े,

अभी मन्दिर की सीढ़ियों पर पैर रख ही रहे थे कि पीछे से किसी की आहट पा घूमे.

देखा तो अपने एक शागिर्द को बड़ा सा गठर पीठ पर लादे तेजी के साथ लपके आते पाया.

बात की बात में वह इनके पास पहुंच गया और सीड़ी के करीब पहुंच इन्हें प्रणाम कर खड़ा हो गया.

इन्द्रदेव ने गठरी उतारने में उसकी मदद करते हुए पूछा, " तुम्हारे आने में कुछ देर हो गई, कोई नई बात तो नहीं हुई?

" उसने जबाब दिया, " जी कुछ नहीं, मैं कुछ पहले ही यहां आ गया होता पर राजा गोपालसिंह को यहां देख सामने आना मुनासिब न समझ बाहर ही रुका रह गया.

” इन्द्रदेव ने पूछा, “ बाकी के लोग कहां?

" उसने जबाब दिया, " उसी सुरंग वाले मुहाने पर पहुंचते होंगे.

" जिसे सुन इन्द्रदेव ने फिर कुछ बात न की और दोनों आदमी गठरी उठाये मन्दिर के भीतर चले गये.

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस मन्दिर के अन्दर शिवजी के सामने की तरफ छोटे चबूतरे पर ताम्बे का एक नन्दी बना हुआ था.

इन्द्रदेव इसी नन्दी के सामने गये और उसकी दोनों सींघों को पकड़ जोर कर दाहिने और बाएं तरफ झुकाने लगे.

भरपूर जोर लगाने के बाद वे सीधे अपनी जगह से कुछ - कुछ टेढ़ी होने लगी और तब धीरे - धीरे एकदम झुक गईं.

सींघों का झुकना था कि नन्दी का मुंह खुल गया.

इन्द्रदेव ने मुंह में हाथ डाल दिया और उसकी जुबान को किसी खास ढंग से ऐंठा.

एक हल्की - सी आवाज हुई और साथ ही उस चबूतरे का जिस पर नन्दी बैठा हुआ था सामने वाला हिस्सा अलग होकर नीचे उतरने लायक रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

वह गठरी उठाये हुए इन्द्रदेव और उनका शागिर्द उसी रास्ते में उत्तर गये और उनके जाने के कुछ देर बाद एक आवाज के साथ वह पुन:

ज्यों - का - त्यों बन्द हो गया, एक पतली और लम्बी सुरंग के अन्दर आगे - आगे इन्द्रदेव और उनके पीछे - पीछे गठर उठाये उनका शागिर्द जाने लगा.

सुरंग पेचीली और बल खाई हुई थी तथा जगह - जगह पर उसमें दरवाजे भी पड़ते जाते थे जिन्हें इन्द्रदेव किसी तरकीब से खोलते - बन्द करते हुए जा रहे थे.

लगभग दो घड़ी के इन दोनों को इस सुरंग में चलना पड़ा और तब एक आखिरी दरवाजा खोलने पर इन्द्रदेव ने अपने को एक छोटे दालान में पाया जिसके सामने छोटा - सा मैदान और उसके अन्त में कई इमारतें दिखाई पड़ रही थीं.

अपने शागिर्द को इन्द्रदेव ने अपना बोझ जमीन पर रख कुछ देर सुस्ता लेने को कहा और खुद दालान की तरफ बढ़ गये जहां की दीवार में पच्चीकारी के काम की एक इमारत की तस्वीर पड़ रही थी.

इन्द्रदेव इस तस्वीर के पास पहुंच उसे गौर से देखने लगे.

कुछ देर बाद उन्होंने तस्वीर के कोने में एक जगह हाथ रखा और जोर से दबाया, इसके साथ ही उस तस्वीर के कई हिस्से चमकने लगे.

इन्द्रदेव ने चमकते हुए हिस्सों को बड़े गौर से देखा और कहा, " अभी तक तो सब ठीक मालूम होता है, खैर आगे चलना चाहिए.

" इन्द्रदेव ने कोई तरक़ीब ऐसी की जिससे तस्वीर का चमकना बन्द हो गया और वे पुन:

उस जगह लौटे जहां अपने साथी को सुस्ताने छोड़ गए थे, मगर ताज्जुब की बात यही थी कि न तो उनका शागिर्द कहीं दिखाई पड़ा और न उसका गट्ठर ही नजर आया.

शायद किसी जरूरी काम से सामने के मैदान में चला गया हो यह सोचकर इन्द्रदेव दालान के सिरे तक चले गये और " शंकर, शंकर " करके आवाज देने लगे.

उनकी तेज आवाज सब तरफ गूंज उठी मगर कहीं से जवाब न मिला और न उनका शागिर्द ही कहीं नजर पड़ा यह एक ऐसी बात थी जिसने इन्द्रदेव को घबड़ा दिया और वे कुछ चिन्ता के साथ नीचे वाले मैदान में उतर उस आदमी की तलाश करने लगे, उस

छोटे - से मैदान में किसी को तलाश करने में देर ही क्या लग सकती थी और किसी को छिपने के लिये भी क्या जगह मिल सकती थी.

फिर भी इन्द्रदेव ने अच्छी तरह उसका कोना - कोना ढूंड डाला बल्कि उसके बाद पड़ने वाली इमारतों तक भी जाकर देखा आए जिनकी निचली मंजिलों में कोई दरवाजा ऐसा न था जो इस मैदान में खुला हो, मगर कहीं शंकर का पता न लगा अस्तु बहुत चिन्तित होकर थोड़ी देर बाद फिर अपने स्थान पर लौट आए और एक जगह खड़े होकर सोचने लगे कि शंकर कहां चला गया या क्या हो गया! कहीं आपसे आप किसी तिलिस्म राह से नहीं चला गया हो इसकी उम्मीद तो हो ही नहीं सकतीं थी क्योंकि उसको तिलिस्मी हाल कुछ भी मालूम न था, और कोई दुश्मन आकर उसे पकड़ ले गया होगा इसकी भी आशंका न थी क्योंकि एक तो इस जगह किसी दुश्मन का आना असम्भव था.

दूसरे अगर किसी से हाथापाई हुई तो भी शंकर ऐसा क़मजोर न था कि सहज ही पकड़ा जाता और एक आवाज तक न दे पाता, अस्तु बात विचित्र और घबरा देने वाली जरूर थी.

इन्द्रदेव कुछ देर तक दालान में सोचते रहे और तब पुन:

दो बार " शंकर, शंकर " पुकारने और कोई उत्तर न पाने पर उसी तस्वीर की तरफ पलटे जिधर से इस दालान में आते ही रुक्क गये थे मगर उसी समय अपने पीछे कुछ आहट सुन वे चमक कर रुक गये, एक खिलखिलाहट की आवाज सुनाई पड़ी जिसने उन्हें चौंका दिया और वे कुछ घबराकर बोले, " यह कौन हंसा?

" जवाब में फिर वैसी ही हंसी सुनाई पड़ी और तब एक डरावनी आवाज आई- " मैं! " इन्द्र:

तुम कौन?

आवाज:

मैं वहीं जिसे खोजने तुम यहां आये हो.

इन्द्र:

अर्थात्?

आवाज:

तिलिस्मी शैतान.

इन्द्र:

तुम कहां हो?

आवाज:

इसी जगह, तुम्हारे सामने ही तो खड़ा हूं. इन्द्र:

मगर मैं तो तुम्हें देख नहीं पाता! आवाज:

तब इसी से समझ लो कि तुम मुझे किस तरह गिरफ्तार करके तिलिस्म के बाहर निकाल सकोगे जिस काम की अभी - अभी तुम गोपालसिंह से डींग मार रहे थे.

इन्द्र:

(ताज्जुब से) यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

आवाज:

(हंसकर) मैं वहां तुम दोनों के पास ही खड़ा तुम्हारी बातें सुन रहा था मगर तुम लोग मुझे देख नहीं सकें.

इन्द्र::

अगर ऐसा ही है तो जरूर तुममें एक ऐसी शक्ति है जिसकी बदौलत तुम जो चाहो सो कर सकते हो?

मगर यह तो कहो कि तुम मेरे सामने प्रकट भी हो सकते हो या नहीं!

आवाज:

हाँ हाँ, मैं तुम्हारे सामने प्रकट हो सकता हूं मगर अभी वैसा करने की मेरी भी इच्छा नहीं है.

इन्द्र:

क्यों?

आवाज:

मेरी खुशी! इन्द्र:

(कुछ देर चुप रहकर) तब तुम क्या चाहते हो?

आवाज:

बस यही कि तुम मेरे मामले में दखल न दो और चुपचाप इस तिलिस्म के बाहर चले जाओ.

इन्द्र:

मगर ऐसा तो नहीं हो सकता, मुझे यहां कुछ बहुत ही जरूरी काम करने हैं.

आवाज:

(हंसकर) जिनमें एक मेरा गिरफ्तार करना भी है.

मगर खैर, मैं तुम्हें होशियार किये देता हूं, अगर तुम मेरी बात न मानोगे तो तुम्हारी भी वही गति होगी जो तुम्हारे शागिर्द शंकर की हुई है.

इन्द्र:

सो क्या?

आवाज:

उसे मैंने चुपचाप यहां से चले जाने को कहा मगर वह नहीं गया, लाचार मुझे उसे तिलिस्म में बन्द कर देना पड़ा. इन्द्र:

क्या तुम मेरे साथ भी वही करना चाहते हो?

आवाज:

बेशक अगर तुम चुपचाप इस जगह के बाहर न हो जाओगे और मुझे जो कुछ मैं कर रहा हूं करने न दोगे तो लाचार मुझे ऐसा ही करना पड़ेगा.

इन्द्र:

मगर ऐसा नहीं हो सकता.

इन्द्रदेव यद्यपि उस तिलिस्मी शैतान से बातें कर रहे थे, मन ही मन बहुत परेशान और घबराये हुए भी थे कि यह क्या बला है, इस जगह कैसे आ पहुंचा, और अब क्या करना चाहता है?

वे जो कुछ देख - सुन रहे थे वह तिलिस्मी नियमों के बिल्कुल खिलाफ बात थी.

इन्द्रदेव जमानिया तिलिस्म के दारोगा थे और तिलिस्म के अन्दर बेरोकटोक आने - जाने की शक्ति अगर किसी में थीं तो केवल उन्हीं में यद्यपि उसके कुछ हिस्से ऐसे भी थे जिनमें वे भी हर वक्त नहीं जा सकते थे.

ऐसी अवस्था में एक अनजान अद्भुत व्यक्ति का तिलिस्म के अन्दर आ जाना और खुद उन्हीं पर रोब जमाना बेशक ताज्जुब की बात थी जिसका रहस्य क्या हो सकता है इसे बहुत सोचने पर भी वे समझ न पा रहे थे, इन्द्रदेव को फिक्र में पड़ा और कुछ सोचता पा फिर आवाज आई, " इन्द्रदेव तुम बेकार सोच में पड़े हो! शायद मैं कौन हूँ और कैसे मुझे अपने बस में कर सकते हो यही तुम सोच रहे होगे! मगर इसका पता तुम पा नहीं सकते.

जब तक मैं खुद न बताऊं मेरा कोई असली भेद नहीं जाना जा सकता और न कोई यह समझ सकता है कि मैं कौन हूं.

मगर खैर, तुम्हें कोई फिक्र करने की जरूरत नहीं, मैं अगर तुम्हारा दोस्त नहीं हुआ तो दुश्मन भी नहीं हूँ और कम - से - कम इस वक्त तुम्हारा कोई अनिष्ठ करने की मेरी कोई इच्छा नहीं है, लेकिन तुम अगर अपनी कोई कार्रवाई करोगे तो मेरे काम में बाधा पड़ेगी और तब शायद मुझे अनिच्छा - पूर्वक तुमको भी नुकसान पहुंचाना पड़ जाय, इन्द्र:

तुम्हारा काम कौन - सा?

आवाज:

मैं तिलिस्मी शैतान हूं और तिलिस्म की हिफाजत मेरे जिम्मे है.

इस तिलिस्म को नुकसान पहुंचाने की नीयत से कुछ लोग यहां घुस आए हैं जिनका हाल तुम्हें कुछ भी नहीं मालूम मगर जिन्हें मैं आज और अभी इस जगह के बाहर कर सकता हूं.

अगर वे शीघ्र ही निकाल न दिये गये तो बहुत बड़ा फसाद वर्षा करेंगे.

इन्द्र:

इसका सबूत?

आवाज:

सबूत?

अच्छा देखो सबूत भी मैं तुम्हें दिखाता हूं! कुछ देर के लिए सन्नाटा हो गया और तब उस दालान के दूसरे सिरे पर कुछ हल्की - सी खटके की आवाज आई, और आओ देखो.

" इन्द्रदेव आगे बड़े और उस दरवाजे के पास पहुंचकर देखने लगे.

" एक छोटी कोठरी दिखाई पड़ी जिसका सफेद चूने का फर्श इस समय खून के छींटों से लाल हो रहा था.

कोठरी के बीचोंबीच में किसी औरत की कटी हुई कलाई पड़ी हुई थी! झुककर देखने से दरवाजे के बगल ही में मगर जरा आड़ में, एक लाश भी दिखाई पड़ी और दूसरे कोने में खून से लथपथ किसी औरत का सिर दिखाई पड़ा.

जिसके बड़े - बड़े बाल जमीन पर छिटके हुए थे.

यह सब एक ऐसा दृश्य था जो मामूली कलेजे वालों का सिर घुमा देता मगर इन्द्रदेव ने कोशिश कर अपना दिल मजबूत रखा और अपना सिर कोठरी के अन्दर कर यह देखने लगे कि वह लाश किसकी है.

न - जाने इन्द्रदेव को क्या दिखाई पड़ा कि वे एकदम से चौंक पड़े और बेतहाशा उस कोठरी के अन्दर घुस गये.

एक भारी आवाज हुई जिसके साथ ही उस कोठरी का दरवाजा बेमालूम तौर पर बन्द हो गया और शैतान की डरावनी हंसी सब तरफ गूंज उठी.

अब हम थोड़ी देर के लिए इन्द्रदेव का साथ छोड़ तिलिस्म के अन्दर चलते और देखते हैं कि प्रभाकरसिंह की क्या कैफियत है.

दोपहर का वक्त है.

एक खुशनुमा बाग में नहर के किनारे प्रभाकरसिंह बैठे अपनी तिलिस्मी किताब पड़ रहे हैं.

उसे थोड़ी दूर पर भुवनमोहिनी पेड़ों और झाड़ियों में कुछ फल तलाश करती हुई फिर रही है, चारों तरफ एकदम सन्नाटा है.

यकायक प्रभाकरसिंह ने सिर उठाया.

उनके कान में किसी तरह की भारी आवाज गई जिसने उनका ध्यान भंग कर दिया.

वे चारों तरफ देखने लगे, फिर वैसी ही आवाज हुई और अबकी बार प्रभाकरसिंह समझ गए कि यह आहह्ट उधर ही से आ रही है जिधर पेड़ों के झुरमुट समझ भुवनमोहिनी फल तलाश करती हुई घुसी थी.

वे उसे आवाज देकर उससे कुछ पूछा ही चाहते थे कि यकायक खुद भुवनमोहिनी दौड़ी हुई उस जगह आ पहुंची और घबराहट के स्वर में प्रभाकरसिंह से बोली, " भैया - भैया, देखिए उस जगह झाड़ी में एक विचित्र चीज नजर आ रही है! " १.

भुवनमोहिनी प्रभाकरसिंह को भैया कहकर पुकारने लगी थी.

प्रभाकरसिंह ने किताब बन्द करके जेब में रख ली और उसी तरफ चले जिधर भुवनमोहिनी ने बताया था.

जंगली मकोय की एक घनी झाड़ी के अन्दर भुवनमोहिनी उन्हें ले गई जहां पहुंचने पर प्रभाकरसिंह ने देखा कि जमीन में हाथ - डेढ़ हाथ के पेटे का एक छोटा - सा कुण्ड बना हुआ है, जो बिल्कुल मिट्टी से भरा है.

प्रभाकरसिंह ताज्जुब से बोले, " यहां कौन - सी ताज्जुब की बात है?

" भूवनमोहिनी ने जवाब दिया, “ यह देखिए " और तब पैर से उस कुण्डे का, जो किसी काले पत्थर के एक टुकड़े का बना मालूम होता था, एक कोना जोर से दबाया.

कोना दबाने के साथ ही कुंड के बीचोंबीच में से एक छोटी - सी सूरत शेर की निकल आई जिसके गले से हल्की आवाज भी निकलती सुनाई पड़ी.

भुबनमोहिनी ने कोने पर से पैर हटा लिया और वह मूरत फिर कुंड के अन्दर समा गई, प्रभाकरसिंह यह तमाशा देख बोले, " जरूर ताज्जुब की बात है, मगर तिलिस्मी किताब में इसका कोई जिक्र नहीं है-- अच्छा मैं फिर देखता हूं !! प्रभाकरसिंह वहीं एक साफ जगह बैठ गए और किताब निकालकर पड़ने लगे.

यह लिखा हुआ था- " यहां तक का काम निर्विघ्न समाप्त कर लेने पर हम तुम्हें बधाई देते हैं.

अब सिर्फ आखिरी टुकड़ा तोड़ना और उस खजाने को लेना बाकी रह जाता है जो यहां पर तुम्हारे लिए ही रखा हुआ है.

नाहरकुण्ड के भेद को अगर तुम जान सको तो आगे का काम बिल्कुल सहज होगा क्योंकि वह कुण्ड ही तुम्हें तिलिस्म के उस आखिरी दर्जे तक पहुंचावेगा जिसका हाल हमने ऊपर लिखा.

उस दर्जे को तोड़ तुम रत्न - मण्डप में पहुंचों और वहां के खजाने पर कब्जा करो-- " इसके आगे दूसरा विषय था जिससे इस जगह की बात से कोई मतलब न था और इसके पहले भी अब तक कोई ऐसा जिक्र आया न था जिससे प्रभाकरसिंह कोई मतलब निकाल सकते अस्तु वे पुनः गौर के साथ इस मजमून को पड़ गये.

यकायक नाहरकुण्ड ' इस शब्द पर उनका ध्यान गया और वे चौंककर बोले, " कहीं यही तो नाहरकुण्ड नहीं है! कम से कम वह मूरत जो कुण्ड का कोना दबाने से पैदा होती है शेर की ही मालूम होती है और उसकी आवाज भी वैसी ही डरावनी थी! " प्रभाकरसिंह आगे बड़े और उन्होंने उस कोने को पैर के अंगूठे से दबाया.

फिर उसी तरह शेर की वह छोटी मूरत कुण्ड के बीचोंबीच में से निकली जिसके मुंह से वैसी ही आवाज सुनाई पड़ी.

प्रभाकरसिंह गौर से उस मूरत को देखते हुए उस स्थान को दबाये रहे.

उनका ख्याल यह था कि जब तक वह स्थान दबा रहेगा वह मूरत भी निकली रहेगी मगर ऐसा न हुआ और सूरत की वह विचित्र भारी आवाज बन्द होते ही वह फिर कुण्ड में समा गई! प्रभाकरसिंह ने भुवनमोहिनी से कहा, " इस जगह जरूर कुछ भेद है.

यह कुण्ड मिट्टी से भरा है और इसके चारों तरफ भी बहुत बड़ा कूड़ा - पतवार है, इसे साफ करना चाहिए.

" दोनों ने हाथ लगाया और देखते - देखते वह कुंण्ड और उसके चारो तरफ की जमीन बिल्कुल साफ हो गई अब गौर करने पर प्रभाकरसिंह को मालूम हुआ कि उस जगह जहां पर दबाने से मूरत प्रकट होती थी कुछ अक्षर भी खुदे हुए हैं जो इतने बारीक हैं कि साफ पड़े नहीं जाते.

उन्होंने गौर करना शुरू किया और कुछ ही देर में खुश होकर बोले-- " समझ गया.

" प्रभाकरसिंह ने पुन:

उस कोने को दबाया.

फिर वह शेर की मूरत निकल पड़ी पर इस बार जैसे ही वह मूरत निकली दूसरे हाथ से प्रभाकरसिंह ने उसे मजबूती से थाम लिया और इसके बाद उस कुण्ड के बाकी तीनों कोनों को भी किसी खास क्रम से बारी - बारी दबाने के बाद उस मूरत को हाथ से छोड़ अलग हो गए.

वह पहले की तरह गायब नहीं हुई और न ही किसी तरह की आवाज उसमें से निकली.

प्रभाकरसिंह ने अपना सामान सम्हाला और उस कुण्ड से उतरकर उस मूरत को दोनों हाथों से मजबूत पकड़कर ऊपर की तरफ उठाने लगे.

मुरत मजबूती से जुड़ी हुई थी मगर प्रभाकरसिंह में भी ताकत भरपूर थी जिसका नतीजा यह निकला कि वह मूरत धीरे - धीरे ऊपर उठने लगी.

ज्यों - ज्यों वह ऊपर हो रही थी वह कुण्ड नीचे जमीन में धंसता जाता था यहाँ तक कि जब मूरत करीब हाथ भर के बाहर निकल आई तो एक अजीब किस्म की आवाज हुई और साथ ही वह कुण्ड इस तेजी से जमीन के अन्दर धंस गया कि प्रभाकरसिंह न तो

उछलकर उसके बाहर निकल सके और न भुवनमोहिनी से ही कुछ कह सके जो उनसे ही दो हाथ फासले पर खड़ी गौर से उनकी कार्रवाई देख रही थी.

प्रभाकरसिंह के बदन में एक झटका इस तरह का लगा मानों कोई तिलिस्मी हथियार उनके बदन से छुलाया गया हो और इसके बाद ही बेहोश हो गए.

जब प्रभाकरसिंह को होश आया उन्होंने अपने को एक ऐसी जगह में पाया जहां वे पहले भी एक बार आ चुके थे.

पत्थरों से पटा हुआ लम्बा चौड़ा आंगन चारों तरफ से तरह - तरह की इमारतों से घिरा हुआ था जिसके बीचोंबीच में लाल रंग की भयानक मूर्ति एक ऊंचे चबूतरे पर बनी हुई थी.

यह वही मूरत थी जिसके हाथ में एक बार प्रभाकरसिंह पड़ चुके थे मगर अपनी खुश किस्मती से बच गये थे, और उस घटना को यादकर इस समय, तिलिस्म की इस आखिरी मंजिल में उन्हें फिर इसी मूरत से मोर्चा लेना था.

प्रभाकरसिंह खड़े होकर अपना सामान सम्हाल ही रह थे कि यकायक उस मूरत ने जो जहां वे थे उसके ठीक सामने ही पड़ती थी उनकी तरफ देख अपने होठ फड़फड़ाए और जबान से उन्हें इस तरह चाटा मानों कोई शेर अपना शिकार सामने देख रहा हो.

प्रभाकरसिंह उसका यह काम देख हंस पड़े और बोले, " घबड़ाओ नहीं भूतनाथ, आज मैं तुम्हारी प्यास सदा के लिए बुझाये देता हूं और जो अद्भुत चीज तुम्हारे पास है वह भी लिये लेता हूं.

' जिस जगह प्रभाकरसिंह खड़े थे, वह एक छोटा दालान था जिसमें संगमरमर का फर्श बिछा हुआ था.

प्रभाकरसिंह इसी फर्श को बड़ी गौर से देखते हुए इधर से उधर घूमने लगे.

यकायक उनकी निगाह संगमरमर के एक ऐसे टुकड़े पर पड़ी जो औरों से कुछ बड़ा था और जिसका रंग कुछ गुलाबीपन लिए हुए था.

इस टुकड़े को देखते ही वे खुश हो गये और इसके पास जा पैर से जोर - जोर से ठोकरें मारने लगे.

कुछ ही देर बाद पत्थर एक तरफ से जमीन के अन्दर धंसकर दूसरी तरफ से ऊपर निकल आया, इस तरह मानों बीचोंबीच में से किसी क़मानी पर जड़ा हुआ हो.

प्रभाकरसिंह अब जमीन पर बैठ गये और उस पत्थर को पंखे की तरह घुमाने लगे.

पहले दाहिनी तरफ १.

देखिए भूतनाथ सोलहवां भाग, पांचवां बयान, भूतनाथ की मूर्ति

सात दफे, फिर बाई तरफ पांच दफे और पुन:

दाहिनी तरफ नौ दफे घुमाकर उन्होंने उस पत्थर को सीधा किया और तब पुन:

पहले की तरह अपनी जगह पर रख हाथ से दबाकर बैठा दिया मगर इसी समय उन्होंने बगल की दीवार में एक खिड़की खुलती हुई देखी.

वे उस खिड़की के पास गये और उसके अन्दर देखने लगे.

एक बड़ा - सा कमरा तरह - तरह के विचित्र सामानों से भरा हुआ नजर आया जिन पर से घूमती हुई प्रभाकरसिंह की निगाहें उस कमरे के एकदम अन्तिम कोने पर पहुंची जहां एक पलंग बिछा हुआ था.

इस पर कोई लेटा - सा दिखाई पड़ रहा था मगर सिर से पैर तक चादर पड़ी रहने के कारण यह पता नहीं लगता था कि वह कौन हैं.

प्रभाकरसिंह गौर से देख ही रहे थे कि उनकी निगाह एक दूसरे दरवाजे की तरफ गयी जो खुल रहा था.

उन्होंने देखा कि एक क़मसिन औरत वह दरवाजा खोलकर कमरे में आई मगर खुली खिड़की की राह प्रभाकरसिंह पर निगाह पड़ते ही चौंककर झपटती हुई उस पलंग के पास सोने वाले के पास पहुंची और उसके पैर को हाथ से दबाती हुई बोली, " महारानी उठो! महारानी उठो! देखो महाराज कब से यहां आकर खड़े हैं !! " प्रभाकरसिंह ने देखा कि उसकी बात सुनकर पलंग पर लेटी औरत (क्योंकि वह औरत ही थी) सकबकाई और तब उठाकर अपनी बड़ी - बड़ी आंखों से इनकी तरफ देखने लगी.

यह देख प्रभाकरसिंह का कलेजा बल्लियों उछलने लगा कि वह औरत सूरत - शक्ल से ठीक मालती ही लगती थी मगर बड़ी मुश्किल से उन्होंने अपने पर काबू रखा और गौर से चुपचाप देखते रहे कि अब क्या होता है.

पलंग वाली औरत जिसे प्रभाकरसिंह ने मालती समझा था और जिसे उस दूसरी औरत ने महारानी के नाम से संबोधित किया था, उठी और सीधी इनकी तरफ बड़ी.

खिड़की के पास पहुंचकर उसने इनको प्रणाम किया और तब अदब से बोली, " महाराज, भला दासी पर कृपा तो की! नहीं तो मैं समझती थी कि व्याह करके महाराज मुझे एकदम ही भूल गये !! " ये शब्द चौंका देने वाले थे, ' व्याह करके इस जुमले ने प्रभाकरसिंह को तरदुद में डाल दिया और वे गौर से उस औरत की तरफ देखने लगे जो अपनी साथिन से कह रही थी, " तू यहां खड़ी मुंह क्या ताक रही है.

जल्दी से दरवाजा खोल और जाकर महाराज के लिए कुछ जलपान का बन्दोबस्त कर.

" ' जो हुक्म ' कह वह औरत कमरे के एक दूसरे कोने में जाकर प्रभाकरसिंह की आंखों के ओट हो गई और कुछ सायत बाद प्रभाकरसिंह ने उसी खिड़की के बगल में जिसमें से वे देख रहे थे, एक बड़े दरवाजे को पैदा होते पाया, उनके देखते - देखते पत्थर के चार बड़े टुकड़े चारों तरफ खसक गये और बीच में एक बड़ा दरवाजा खुलता दिखाई पड़ा.

वह औरत जिसे महारानी के नाम से सम्बोधन किया गया था, इस दरवाजे के पास आ खड़ी हुई और हाथ जोड़कर प्रभाकरसिंह से बोली, “ महाराज, भीतर पधारिये और कुछ देर के लिए इस दासी की मेहमानदारी कबूल कीजिये.

" तरह - तरह की बातें सोचते हुए प्रभाकरसिंह दरवाजे के पास गये जहां उस औरत ने बड़ी इज्जत और प्रेम के साथ इनका हाथ पकड़ लिया और अपने पलंग पर ले जाकर बैठाया.

इसके बाद ही एक तरफ जा झारी और आफताबा ले आई और इनके हाथ - पैर धुलाये.

जिस समय वह प्रभाकरसिंह के पैर धो रही थी, उसकी उंगलियों में कोई चीज देख यकायक प्रभाकरसिंह चौंककर बोल बैठे, हैं! यह क्या है?

" उस औरत ने ताज्जुब से इनकी तरफ देखा और इन्होंने उसकी उंगली में पड़ी एक अंगूठी की तरफ दिखाकर पूछा, " यह अंगूठी तुम्हारे पास कैसे आई?

" ताज्जुब की मुद्रा से वह बोली, " महाराज, इतनी जल्दी भूल गये! यह आपकी ही अंगूठी है जो आपने व्याह के बाद मुझे दी थी और मेरी अंगूठी वह देखिये महाराज की उंगली में स्थान पाकर मुझे कृतार्थ कर रही है ।

!! वास्तव में यही बात थी.

उस औरत की उंगली में प्रभाकरसिंह की अंगूठी थी और प्रभाकरसिंह के हाथ में उस तिलिस्मी महारानी की जिनके साथ उनका व्याह हुआ था.

उस महारानी की सूरत - शक्ल ठीक मालती की तरह थी और यह भी ठीक वैसी ही है तब क्या इसी के साथ उसका विवाह हुआ था! मगर तिलिस्मी किताबों में तो !! प्रभाकरसिंह घबराकर बोले, " तब क्या सचमुच तुम्हारे ही साथ मेरा विवाह हुआ?

" जबाब में उसने ताज्जुब के स्वर में कहा, “ जी हां, मगर क्या महाराज को इसमें कोई शक है?

क्या दासी से कोई कसूर बन पड़ा है या महाराज ही मुझसे कुछ रंज हो गए हैं जो इस तरह के ख्याल कर रहे हैं! "

प्रभाकरसिंह की जान अजीब पशोपेश में पड़ी हुई थी.

वास्तव में इस औरत की शक्ल - सूरत बातचीत चाल - ढाल सब कुछ उसी तिलिस्मी महारानी की - सी थी जिसके दरबार में वे कैदी की तरह पेश कीये गए थे.

अथवा बाद में फिर जिसके साथ बहुत ही अनिच्छापूर्वक उन्हें विवाह करना पड़ा था मगर विवाह के बाद से फिर जिसकी सूरत देखने का उन्हें मौका न पड़ा था.

तब बात क्या थी जो प्रभाकरसिंह इतना बौखला रहे थे?

अगर एक सुन्दरी जिसके साथ उनका शास्त्रीय रीति से विवाह भी हो चुका था, उन्हें दिखाई पड़ती है तो इसमें घबराने की क्या बात थी?

देखिए अभी - अभी सब भेद खुल जाता है.

प्रभाकरसिंह के पैर धो अपने आंचल से उस औरत ने उन्हें पोंछा और तब हाथ जोड़कर बोली, " दो मिनट के लिए मेरी गैरहाजिरी माफ हो.

मालूम नहीं कम्बख्त लौंडियाँ जलपान लाने में क्यों देर कर रही हैं, मैं जाऊ और ले आऊ.

प्रभाकरसिंह ने कहा, " हां खुशी से जाओ! " और तब उठंग कर मानों अच्छी तरह पलंग पर बैठ गये, मगर जैसे ही वह औरत उस कमरे से बाहर गई प्रभाकरसिंह ने अपनी तिलिस्मी किताब निकाली और एक जगह से खोलकर पढ़ने लगे.

यह लिखा हुआ था " घुमाकर पत्थर को पुन:

अपनी जगह पर जमा देना.

इसके साथ ही तुम देखोगे कि तुम्हारे पास ही में एक खिड़की खुल गई है जिसकी राह एक औरत आकर तुमसे बातें करने लगी है.

वह कोई औरत नहीं तिलिस्मी पुतली है.

उसके भुलावे में न पड़ना और न उसकी बातों पर ही जाना जिस किसी तरह भी हो उसे काबू में लाना और उसे उठाये हुए सीधे इस लाल मरत के पास ले आना, उसकी गर्दन को पेंच की तरह बाईं तरफ घुमाना, वह अलग हो जायेगी और उसमें से बहुत - सा खून निकलेगा.

सिर का खून तो उस मूरत को पिला देना और धड़ के खून से मूरत का मुंह, सिर, गर्दन, और सारा बदन अच्छी तरह तर करके फौरन ही उसके पास से हट जाना, १.

देखिए उन्नीसवां भाग, तीसरा बयान.

मगर देखो खबरदार! यह सब करते समय तिलिस्मी हथियार कदापि तुम्हारे बदन से अलग होने न पाये नहीं तो .

.

.

' इसके बाद महीन अक्षरों में और भी बहुत - सी बातें लिखी हुई थीं जिन्हें प्रभाकरसिंह कई बार पढ़ चुके थे अस्तु उन्होंने पुस्तक बन्द कर दी और उसे जेब के हवाले करने के बाद मन - ही - मन कहने लगे, " किताब की लिखावट बहुत स्पष्ट है मगर इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि इसी औरत या पुतली के साथ उस दिन मेरा ब्याह भी हुआ था क्योंकि इसकी उंगली में अभी तक मेरी अंगूठी मौजूद है.

तब क्या मैं सभी पिछली बातों को भी केवल एक तिलिस्मी खेल समझ लूं! लेकिन अगर ऐसा ही था तब मालती मेरे पास से क्यों अलग हो गई?

और अगर मेरा व्याह सिर्फ एक खेल था तो उससे ब्याह की बात भी .

.

.

?

" प्रभाकरसिंह का विचार पूरा न हुआ क्योंकि उसी समय चांदी के एक थाल में तरह - तरह के पदार्थ लिए वही औरत (महारानी) वहां आती हुई दिखाई पड़ी.

प्रभाकरसिंह ने जल्दी से मन में कहा, " खैर, अब चाहे जो भी हो और चाहे इस बात में कोई धोखा ही हो मगर मेरे लिए वही करना बाजिब है जो तिलिस्मी किताब में लिखा है! " और तब पलंग से उठ हाथ का थाल एक संगमरमर की चौकी पर रख वह औरत इनकी तरफ घूमी ही थी कि ये उसके पास जा पहुंचे और कमर में हाथ डाल उसे जमीन से उठा लिया.

वह घबरा गई और उसके मुंह से एक चीख की आवाज निकल पड़ी मगर प्रभाकर सिंह ने उसका कुछ ख्याल न किया और उसे उठाये हुए कमरे से बाहर निकल आये.

बाहर का दालान और उसके नीचे का सहन पार करते हुए वे उस बीच वाली विकराल मूर्ति के पास पहुंचे जो उन्हें आते देख भयानक रीति से अपने होंठ चाटने लगी.

मूरत के पास पहुंचते ही जैसा कि किताब में लिखा था उसी ढंग से उन्होंने उस औरत की गर्दन को उमेठा.

उन्होंने उस औरत की गर्दन को आसानी से पेंच की तरह घूमते और तब अलग होते हुए पाया.

तब जाकर कहीं प्रभाकरसिंह की जान में जान आई और उन्हें विश्वास हुआ कि वे अपनी ब्याहता स्त्री की हत्या करने पर मजबूर नहीं किये जा रहे हैं.

गर्दन अलग होते ही उसके सिर और धड़ से खून की तरह कोई चीज बेतहाशा निकलने लगी.

प्रभाकरसिंह ने सिर को उठाकर उस मूरत के होंठों के पास कर दिया और वह मूरत अपनी जबान निकाल - निकाल वह खून पीने लगी.

कुछ देर बाद जब सिर से खून का निकलना बन्द हुआ तो उस मूरत के गले से एक सन्तोष की सांस निकली और उसने कहा, " आह्, आज हजारों बरसों की मेरी प्यास इस बहादुर के कारण दूर हुई.

" मगर प्रभाकरसिंह ने उसकी बातों पर कोई ख्याल न किया और धड़ से निकलने वाले खून से उस मूरत का तमाम बदन तर करना शुरू किया .

बहुत जल्दी - जल्दी उन्होंने यह काम भी निपटाया और तब उस औरत की लाश को वहीं फेंक वे अलग जा खड़े हुए क्योंकि उस खून में तेजाब की तरह की कोई तेज गन्ध निकल रही थी जिसने उनका सिर घुमा दिया था.

खून मूरत के बदन से लगाना था कि उसमें एक तरह का पीले रंग का धुंआ उठने लगा और साथ ही एक पीले रंग का पानी उसके बदन से चू - चूकर जमीन पर बहने लगा.

प्रभाकरसिंह ने ताज्जुब के साथ देखा कि वह मूरत गल - गलकर छोटी होती जा रही है, यहां तक कि घड़ी - भर बीतते - बीतते उसका कद आधे से भी क़मतर हो गया और उसका आकार भी मूर्ति से बदलकर एक पिण्डी - सा दिखाई पड़ने लगा.

थोड़ा समय और बीतने के बाद यह पिण्डिका भी गायब हो गई और कुछ ही देर बाद चारों तरफ फैले हुए उस पीले पानी के सिवाय वहां और कुछ भी इस बात को बताने के लिए न बचा कि यहां पर अभी - अभी एक विचित्र और भयानक मूर्ति बैठी हुई थी.

अब प्रभाकरसिंह अपनी जगह से उठे.

हम पहले लिख आये हैं कि वह डरावनी मूरत एक चबूतरे के ऊपर बनी हुई थी.

प्रभाकरसिंह उस चबूतरे के पास पहुंचे और उसकी ऊपरी सतह को गौर से देखने लगे.

उन्होंने देखा कि चबूतरे के बीचोंबीच में एक छोटा - सा गड्ढा बन गया है जिसमें वहीं पीले रंग का पानी भरा हुआ है जो मूर्ति के बदन से निकल कर चारों तरफ फैल गया था.

प्रभाकरसिंह ने अपना तिलिस्मी डण्डा निकाला और गड्ढे के पीले पानी में डुवा दिया.

आश्चर्य की बात थी कि डण्डे का स्पर्श होने के साथ ही उस पानी का रंग बदलने लगा और हल्का होकर यह साफ, निर्मल, सफेद रंग का हो गया, यहां तक कि कुछ ही देर में ऐसा मालूम होने लगा मानो हाथ भरकर पेटे का एक सफेद संगमरमर का बना कुण्ड स्फटिक की तरह साफ पानी से भरा है जिसके अन्दर एक अद्भुत चीज पड़ी हुई झलक दिखा रही थी.

प्रभाकरसिंह ने कुण्ड में हाथ डाला और वह चीज निकाल ली.

वह चीज क्या थी?

पन्ने के एक बड़े टुकड़े को काटकर बनाई हुई एक बेशकीमती चाभी जो लम्बाई में एक बलिश्त से कम न होगी.

न - जाने वह किस खजाने या तिलिस्म की चाभी थी.

प्रभाकरसिंह उसे पाते ही एकदम गद् हो गये, उन्होंने उसे माथे से लगाया और तुरन्त फिर बड़ी हिफाजत के साथ अपनी कमर में खोंस लिया.

अब फिर प्रभाकरसिंह ने उस कुण्ड में हाथ डाला.

इस बार वे उसकी तह में किसी चीज या निशानी को खोज रहे थे और शीघ्र ही उन्हें वह भी मिल गई.

एक खास जगह पर हाथ रख उन्होंने जोर से दबाया जिसके साथ की एक खटके की आवाज आई और उस चबूतरे का बगली हिस्सा हट वहां एक रास्ता दिखाई पड़ने लगा.

पतली सीढ़ियों का एक सिलसिला नजर आया जिस पर प्रभाकरसिंह ने कदम रखा और जल्दी - जल्दी नीचे उतरने लगे.

लगभग पन्द्रह या बीस डण्डा सीढ़ियां उतरने के बाद प्रभाकरसिंह को बीस या पच्चीस गज लम्बी सुरंग मिली और उसको भी पार करने पर एक छोटी कोठरी.

इस कोठरी को पार कर वे दूसरे कमरे में पहुंचे जिसमें तरह - तरह का सामान भरा हुआ था और एक तरफ बहुत - से सन्दूक भी पड़े हुए थे जिनकी तरफ प्रभाकरसिंह ने कुछ विशेष ध्यान न दिया और उस दरवाजे की तरफ बढ़े जो कमरे के दूसरे सिरे पर दिखाई पड़ रहा था, इसे खोलने पर उन्हें पुनः एक छोटी कोठरी और उसमें से ऊपर को गई सीढ़ियों का ऊंचा सिलसिला मिला जिसे तय करने के बाद उन्होंने अपने को एक बहुत लम्बे - चौड़े और ऊंचे कमरे में पाया जो अपने दाहिनी बाएं तरफ की कई - कई खिड़कियों की बदौलत बहुत ही रोशन और हवादार हो रहा था.

दाहिनी तरफ की खिड़कियों से प्रभाकरसिंह को बही आंगन दिखाई पड़ा जिसमें कभी भूतनाथ की मूरत थी और बाई तरफ एक खुशनुमा बाग नज़र आया जिसमें जाने की कोई राह दिखाई न पड़ती थी.

सामने और पीछे की तरफ कुछ बन्द दरवाजे भी दिखाई पड़े, जिनके बारे में खिड़कियों से झांककर प्रभाकरसिंह समझ गए कि वे इमारत के उसी लम्बे सिलसिले में जाने के लिए हैं जो नीचे आंगन में उन्हें दिखाई पड़ा था.

एक बहुत बड़े और आलीशान कमरे में जो तरह - तरह की सजावट के सामानों तथा झाड़फानूस दीबारगीर शीशे आदि से अच्छी तरह अटा था. प्रभाकरसिंह को एक ही नाप के इक्कीस बहुत बड़े - बड़े सन्दूक दिखाई पड़े जो दीवार के साथ जगह - ब - जगह रखे हुए थे मगर जिसमें ताले लगे हुए न थे.

प्रभाकरसिंह ने इसमें से एक सन्दूक का ढक्कना उठाया और देखा कि वह सोने के किमती बर्तनों से भरा है, दूसरे को खोला और उसे जड़ाऊ गहनों से भरा पाया, तीसरे को खोला और उसमें जवाहरात के ढेर पाये, इसी तरह हर एक बक्स में उन्हें एक - से - एक अनूठी बेशकीमती और बादशाहों के भी मन में लालच पैदा कर देने वाली ऐसी दौलत दिखाई पड़ी जिससे उनकी तबियत दंग रह गई और वे बेतहाशा बोल उठे, "

ओफ, जब तिलिस्म के सिर्फ इस हिस्से में इतनी दौलत भरी है तो उस महापुरुष के पास न जाने कितनी दौलत होगी जिसने इस पूरे तिलिस्म को बनवाया.

" सब तरह से घूमते हुए प्रभाकरसिंह एक दरबाजे के सामने आकर रुके जिसके ऊपर मोटे - मोटे हर्फों में लिखा हुआ था.

" अगर तुम्हारा नाम प्रभाकरसिंह है तो यह सब दौलत तुम्हारे ही लिए है.

तिलिस्म तोड़ने पर हम तुम्हें बधाई देते हैं और यह तुच्छ भेंट तुम्हें अर्पण करते हैं साथ ही तुम्हारी स्त्री के लिए कुछ सौगात देते हैं जो दरवाजे के अन्दर मिलेगी.

" हाथ से धक्का देते ही वह दरवाजा खुल गया और प्रभाकरसिंह ने अपने को एक गोल कमरे में पाया जिसके बीचोंबीच में सोने का एक सिंहासन रखा हुआ था.

इस कमरे के चारों तरफ गोलाकार छोटे - बड़े पचासों ही सन्दुक पड़े हुए थे जिनमें ढकने कुछ खुले हुए थे और कुछ के बन्द थे.

प्रभाकरसिंह एक सन्दूक के पास पहुंचे और उसे किमती कपड़ों से भरा पाया, दूसरे में सोने के जनाने गहने भरे देखे, तीसरे में जड़ाऊं गहनों की भरमार पाई, चौथे में किमती - कीमती साड़ियां भरी थी.

मालती इसी कमरे में पहुंचीथी. देखिए पन्द्रहवां भाग, दसवां बयान,

इसी तरह हर एक को कीमती सामानों से भरा पाया जिनकी सैर करते हुए पूरे कमरे का चक्कर लगा आये और तब एक दूसरे दरवाजे के सामने पहुंचे जिस पर यह लिखा हुआ था, " यह सब सामान तुम्हारी स्त्री के लिए है इसके अलावा कौतूहल के तौर पर अपने दोस्तों को दिखलाने के लिए कुछ तिलिस्मी खिलौने इस कमरे में रखे हुए हैं जिनसे काम लेने की तरकीब उनके साथ है ।

प्रभाकरसिंह ने इस दरवाजे को भी खोला और साथ ही चौंक गए क्योंकि अपने सामने ही तिलिस्मी शैतान को खड़े पाया।

सातवां व्यान।

रामशिला पहाड़ी के पूरब की तरफ फलगू नदी के बीचोबीच के जिस भयानक टीले का हाल चन्द्रकांता सन्तति में लिखा जा चुका है उसी तरफ अब हम पाठकों को ले चलते हैं क्योंकि किस्से का सिलसिला हमें उधर ही चलने को मजबूर कर रहा है.

यह स्थान कितना भयानक है इसका हाल हमारे वे पाठक अच्छी तरह जानते हैं जो हमारे साथ पहले कभी इस जगह ही आये हैं, यहाँ, उस कुटिया और समाधि के चारों तरफ जिसमें पहले तो कोई सिद्ध महापुरुष रहा करते थे पर आजकल तो भूतनाथ उन्हीं के रूप में बना हुआ बिराज रहा है, न - जाने किस जमाने की अनगिनत हड्डियाँ पड़ी हुई हैं.

चाहे जिधर से आप जाना चाहें छोटी - बड़ी, टूटी और साबुत हजारों ही खोपड़ियां, हाथों और पैरों की नलियां, पिंजर और धड़ चारों तरफ फैले आपको इस बहुतायत से मिलेंगे कि उन पर पैर रखे बिना कुटिया तक किसी तरह पहुँच ही न सकेंगे.

मगर खैर जैसे भी हो इस वक्त तो आप किसी तरह हमारे साथ - साथ चले ही आइए और उस कुटिया तक पहुंचिए जो वह देखिए अब ज्यादा दूर नहीं रह गई है.

मोटे - मोटे पत्थरों के ढोकों से बनी दीवारों और मैदान की छत वाली यह कुटी जिसमें आजकल साधु - महात्मा बने हुए भूतनाथ का डेरा पड़ा हुआ है इस समय एकदम सन्नाटा है.

नाममात्र के लिए भी किसी चिराग की रोशनी उसके अन्दर नहीं हो रही है जो यह बतावे कि इसके अन्दर कोई इस वक्त है या नहीं, मगर उन दो आदमियों को इस विषय में कुछ भी सन्देह नहीं है जो बेधड़क हड्डियों पर पैर रखते इसी तरफ बड़े आ रहे हैं और जिनमें से एक ने आगे बढ़कर मजबूत दरवाजे पर हल्की थप्क्की मारी। थपकी की आवाज के साथ भीतर से किसी ने पूछा, “ कौन?

" वह आदमी बोला, " रमेश! " जिसके साथ ही भीतर से आवाज आयी, " अच्छा ठहरो! " और तब चिराग के बाले जाने की आहट और रोशनी मिली, किसी ने आकर दरवाजा खोला और इन दोनों के भीतर चले जाने पर फिर बन्द कर लिया, इन दोनों के अन्दर होते ही भीतर से किसी की आवाज आई, " नारायण, कौन है! " कोठरी की सामने वाली दीबार में एक छोटा दरवाजा दिखाई पड़ रहा था जो भिड़काया हुआ था,

आवाज इसी के अन्दर से आई थी जिसे सुनते ही जबाब में वह आदमी जिसने अभी दरवाजा खोला था बोल उठा, " गुरुजी, रामेश्वर और रामगोबिन्द हैं, कुछ ठहरकर भीतर से आवाज आई, " अच्छा, भेज दो, मगर पहले आकर रोशनी कर जाओ !! दोनों आने वाले उस दरवाजे की तरफ बड़े दरवाजा बहुत ही छोटा और तंग था.

ऊंचाई मुश्किल से दो - ढाई हाथ और चौड़ाई में हाथ - भर होगी और उसके भीतर जाने पर जो कोठरी मिलती थी वह भी छोटी और नीची थी, सीधा तो कोई उसमें मुश्किल से हो सकता था और लम्बी - चौड़ी इतनी कि मुश्किल से दस - बारह आदमी उसमें बैठ सकते थे.

उसी कोठरी या गुफा में साधु बने हुए भूतनाथ का आसन था.

हाथ - भर ऊंचे पत्थरों के बड़े चबूतरे पर, जिसके सामने धूनी लगी हुई थी, बाघचर्म बिछाये पद्मासन बांधे एक वृद्ध महापुरुष बैठे हुए थे जिन्हें एकाएक देखकर कोई भी न कह सकता था कि यह कोई ऐयार होगा, मगर हमें उस सफेद नामी तक की दाड़ी और संत जैसे बालों से धोखा नहीं हो सकता और हम खूब जानते हैं कि यह भूतनाथ ही है जिसने सर्वसाधारण को धोखा देकर अपने को मरा हुआ मशहूर कर रखा है और खुद इस साधु के जाने में छिपा बैठा है.

मगर साधु के भेष में रहते हुए भी उसका चंचल मन उसके काबू में नहीं आया है और वह अपने शागिर्दो और जासूसों को चारों तरफ दौड़ाता हुआ बराबर दुनिया की खबरें लेता रहा है.

इन दोनों आने वालों ने भूतनाथ के चरण छुए और उसने आशीर्वाद देकर उन्हें उन आसनों पर बैठ जाने का इशारा किया जो उसके चेले नारायण ने धूनी के बगल में बिछा दिये थे.

भूतनाथ ने उन दोनों का कुशल - मंगल पूछा तब कहा.

“ अच्छा, अब कहो क्या समाचार है?

तुम लोग इस वक्त किधर से आ रहे हो?

" रामेश्वर समाचार सब अच्छा ही है.

मैं तो मिर्जापुर से आ रहा हूँ और (साथी की तरफ बताकर) यह जमानिया से - रास्ते ही में हम दोनों की भेंट हुई! भूत:

मिर्जापुर में सब शान्ति है?

रणधीरसिंहजी कुशल से है?

रामे:

जी हां, कुशल से ही है, आजकल कहीं दूसरी जगह गये हुए हैं.

कमला की मां भी आजकल उनके यहां नहीं है, अपनी बहिन के यहां है, जो उन्हें देखने आई थीं और जबरदस्ती उन्हें अपने घर ले गई है.

भूत:

बहिन कौन?

क्या दलीपशाह की वीबी.

रामे:

जी हां! भूत:

तुम उनसे मिले नहीं?

रामे:

जी हां, मैं मिलता हुआ ही आ रहा हूँ, उनकी हालत बहुत खराब हो रही है, सच तो यह है कि मुझे उन पर बड़ी दया आती है.

आपके मरने की खबर जब से उन्होंने सुनी है खाना - पीना सब छोड़ दिया है और दिन - रात रोती रहती है.

मैं तो उन्हें सच - सच कह दिये होता मगर आपके डर से चुप रह गया, मैं समझता हूं कि अगर यही हालत रही तो उनका बचना मुश्किल हो जायेगा.

कम - से - कम उन्हें तो आपको कहला ही भेजना चाहिए कि आप मरे नहीं जीते हैं.

भूत:

नहीं - नहीं, अभी मौका नहीं आया है.

मगर तुम बराबर उस पर ध्यान रखना और उसके हालचाल की खबर मुझे देते रहना.

अच्छा नानक का क्या हाल है?

उसकी मां की कुछ खबर लगी?

रामे:

जी, कुछ नहीं, नानक वहीं घर पर रहते हैं और अच्छे ही हैं.

भूत:

जमानिया की क्या खबर है?

दारोगा साहब का क्या रंग - ढंग है?

रामे:

(अपने साथी की तरफ देखकर) इनकी जुबानी सुना कि राजा गोपालसिंह की शादी कल ही परसों में होने वाली है. दारोगा साहब ने राजा गोपालसिंह पर भी वही रंग जमा लिया है जैसा उनका बड़े महाराज पर था.

सुनते हैं राजा साहब आजकल उनसे योग की शिक्षा ले रहे हैं.

भूत:

(हंसकर) वाह - वाह, खुब गुरु चुना! मालूम होता है कि गोपालसिंह भी पूरा बेवकूफ ही है जो दारोगा का हाल जानकर भी उस पर भरोसा करता और उसे अपना पूज्य समझता है! रामे:

मुमकिन है उन्हें उसके असल हाल - चाल की खबर ही न हो.

भूत:

ऐसा हो नहीं सकता.

भैया राजा और दारोगा की नोंक - झोंक का हाल उन्हें अच्छी तरह मालूम है और खुद इन्द्रदेव उन्हें सब बातों से होशियार कर चुके हैं.

खैर, (गोबिन्द से) क्यों जी रामगोबिन्द, जैपाल का कुछ पता लगा?

रामे:

जी हां, वह काशी में उसी बेगम के यहां है, कुछ पता नहीं लगा कि लामा घाटी से कैसे निकल भागा, इतने दिन कहां छिपा रहा या अब कैसे प्रकट हो गया.

भूत:

असल में उसे लामा घाटी भेजना ही गलती हुई.

(कुछ देर तक चुपचाप कुछ सोचने के बाद) उसके बारे में मुझे कुछ दूसरा ही शक है.

रामे सो क्या?

भूत:

यही कि नानक की मां के गायब होने में भी कुछ उसी कम्बख्त का हाथ है.

खैर, देखा जायेगा, यह कहो कि राजा गोपालसिंह की शादी के सम्बन्ध में क्या हो रहा है?

रामः परसों शादी है, धूमधाम कुछ विशेष नहीं है, मगर दारोगा साहब के ही हाथ में कुल इन्तजाम है और वे बड़े टीमटाम से काम कर रहे हैं.

रामे:

मगर मैंने सुना है कि व्याह राजा साहब के खास बाग में ही होगा.

बलभद्रसिंह लक्ष्मीदेवी को लेकर वहीं जायेंगे और वहीं कन्यादान करेंगे, न - जाने यह राय क्यों की गई, भूत:

शायद दुश्मनों के ख्याल से ऐसा किया गया होगा.

मगर इसकी जरूरत न थी.

अब जब मुन्दर ही न रही तो फिर डर क्या क्योंकि उसकी सूरत लक्ष्मीदेवी से मिलती - जुलती थी और वही एक ऐसी चतुर औरत थी जिसको दारोगा साहब लक्ष्मीदेवी की जगह पर बैठा सकते थे.

मगर फिर भी तुम लोगों को होशियार रहना चाहिए क्योंकि दारोगा कम्बख्त बड़ा कांइया है, न - जाने वह क्या कर बैठे.

मुन्दर की जगह मुमकिन है कोई दूसरी औरत उसने ठीक कर रखी हो.

रामे:

मैं सोचता था कि इस व्याह के मौके पर आप खुद अगर जमानिया में मौजूद रहते तो अच्छा था.

भूत:

नहीं - नहीं, रामेश्वरचन्द्र, इसकी कोई जरूरत नहीं, तुम और रामगोविन्द पूरे होशियार हो और अपने सब भेद भी मैंने तुम लोगों से पूरे - पूरे कह दिए हैं जिससे तुम लोगों से कोई बात छिपी रह नहीं गई है तुम लोग अपने साथियों समेत वहां मौजूद रहना और दारोगा तथा जैपाल की कार्रवाई पर निगाह रखना.

मैं अब इस भेष को छोड़ना नहीं चाहता, कम - से - कम तब तक जब तक कि कामेश्वर और भुवनमोहिनी वाला कलंक मेरे सिर से दूर नहीं हो जाता.

हां, यह कहो उस मामले में तुम लोगों ने कुछ पता लगाया?

रामे:

जहां तक मालूम हो सका आपसे कह चुका हूँ, उसके बाद कोई नई बात मालूम नहीं हुई.

हां, दलीपशाह को कई बार कुएं तक जाते हम लोगों ने जरूर देखा है जिसके अन्दर वह ताली .

.

.

भूतः बेशक वह वहां जाता - आता होगा क्योंकि अगर मेरा शक सही है और कामेश्वर जीता है तो उसने जरूर दलीपशाह को अपनी तरफ मिलाया होगा, (लम्बी सांस लेकर) अब सिवाय इसके और क्या कहूं कि तुम लोग पता लगाने की कोशिश करते रहो.

अगर चाहते हो कि तुम्हारा गुरु किसी दिन आजादी की दुनिया में घूमने लायक बने तो ये दो काम तुम्हें करने ही होंगे.

एक तो क्रामेश्वर को पुनः कब्जे में करता, दूसरे शिवगड़ी की ताली का पता लगाना.

(कुछ रुककर) अच्छा.

इसका पता लगा कि मुझे कुएं में ढकेलकर मेरा बटुआ ले लेने वाला कौन था?

रामे:

नहीं, इसका भी कुछ पता न लगा.

भूत:

गोपालसिंह और मुन्दर के मामले वाली दारोगा जैपाल और हेलासिंह की चिट्ठियों की नकल मेरे उसी बटुए में थी जिसकी मुझे सबसे ज्यादा फिक्र है, क्योंकि अगर मेरे किसी दुश्मन के हाथ में वह चीज लग गई तो वह मुझे पूरी तरह से चौपट कर देगा.

मगर इस बारे में मुझे ख्याल और होता है.

रामे:

वह क्या?

भूत:

इधर बड़ आओ और गौर से सुनो कि मैं क्या चाहता हूँ.

गोविन्द, तुम भी आगे आ जाओ क्योंकि यह बड़ी गुप्त और साथ ही बड़े मार्के की बात है. रामेश्वर और रामगोबिन्द आगे बढ़ आये और भूतनाथ देर तक उनसे न - जाने क्या - क्या कहता रहा, मगर इसमें कोई शक नहीं कि बात आश्चर्य की जरूर थी क्योंकि उसके दोनों शागिर्दो के चेहरे इस बात को प्रकट कर रहे थे कि वे कोई विचित्र बात सुन रहे हैं ।

बहुत देर बाद भूतनाथ की बातें खत्म हुईं और तब रामेश्वर और गोविन्द उठ खड़े हुए.

चलते - चलते भूतनाथ के एक सवाल के जवाब में रामेश्वरचन्द्र ने कहा, " मैं जरूर ख्याल रखुंगा! " और तब भूतनाथ के चरण छूकर दोनों आदमी उस गुफा के बाहर

निकल गये.

भूतनाथ कुछ देर तक अपने स्थान पर बैठा न - जाने क्या सोचता रहा, इसके बाद एक लम्बी सांस के साथ उसने आवाज दी - ' नारायण! " " जी हां, गुरुजी " कहता हुआ उसका वही चेला भीतर आया जिसने रामेश्वर और रामगोविन्द को कुटिया के अन्दर किया था और जो खुद भी अपने जटाजूट भस्म और गेरुए कपड़ों से एक पहुंचा हुआ साधु ही जान पड़ता था.

भूतनाथ ने इससे कहा, “ नारायण, मैं अब सोऊँगा, बहुत थक गया हूं, रात भी बहुत चली गई है, अब और कोई अगर आवे तो रात को मेरे पास न लाना, कल सुबह मुलाकात करूंगा! " नारायण हाथ जोड़कर बोला.

" बहुत अच्छा, गुरुजी! आप बेफिक्र हो आराम करें.

मैं किसी को आने न दूंगा! " तब उसने उसी चबूतरे पर भूतनाथ का बिस्तरा ठीक कर दिया सिरहाने की तरफ पानी इत्यादि रखा और दीया बुझाता हुआ कोठरी के बाहर निकल गया जिसका भारी दरवाजा उसने बाहर से खींच लिया, भूतनाथ ने उठकर उस दरवाजे की सांकल भीतर से लगा ली और आकर बिछावन पर पड़ गया मगर ज्यादा देर तक लेटा न रहा, जैसे ही बाहर से आने वाली आहटों से उसने समझा कि नारायण भी अपने बिछावन पर गया वैसे ही वह अपनी जगह से उठ बैठा.

पत्थर के जिस चबूतरे पर उसका बिस्तर या आसन था उसके सिरहाने की तरफ गया और झुककर कुछ करने लगा, एक हल्की आवाज हुई और पत्थर की एक सिल्ली हट गई.

भीतर शायद सीढ़ियों का एक लम्बा सिलसिला था क्योंकि अंधेरे ही में अन्दाज से टटोलता हुआ भूतनाथ नीचे उतरने लगा.

उसके जाते ही वह सिल्ली पुनः अपने ठिकाने पर इस तरह बैठ गई कि दिन की रोशनी में बहुत गौर के साथ देखकर भी कोई समझ न सकता था कि यहाँ पर कोई गुप्त रास्ता या सुरंग है.

कई खंड सीढ़ियां उतर जाने के बाद भूतनाथ रुका और उसने रोशनी की.

यह एक छोटी कोठरी थी जिसमें तरह - तरह के सामानों से भरे कितने ही सन्दूक कायदे से रखे हुए थे.

यहां भूतनाथ ने अपना साधु का पहनावा उतारकर रख दिया और एक सन्दूक से सामान निकालकर अपना भेष बदलना शुरू किया .

कुछ ही देर में वह एक नौजवान और आशिक - मिजाज जमींदार की सूरत बनकर तैयार हो गया.

एक बड़े शीशे में जो एक तरफ ढंगा था उसने अपनी सूरत गौर से देखी और तब ' बस ठीक है कहता हुआ उठ खड़ा हुआ.

बाकी सामान कायदे से रखा, ऐयारी का बटुआ और खंजर कपड़े के अन्दर छिपाया.

एक छोटे सन्दूक से कुछ निकाल कर कमर में खोंसा और कोठरी की पूरब की तरफ दीवार के पास पहुंचा.

इस जगह पैर से कई ठोकरें देकर उसने एक रास्ता पैदा किया और उसके अन्दर घुस गया, उसके जाते ही वह राह ज्यों - की - त्यों हो गई.

यह रास्ता कोठरी और सुरंग भूतनाथ की बनाई हुई न थी बल्कि इस कुटिया में पहले ही से मौजूद थी मगर किसी को इसके होने का गुमान तक न था.

भूतनाथ की तेज निगाह और कारीगरी ने ही उसका पता लगाया था और उसी ने यहां पर यह सब सामान इकट्ठा किया था.

इसी रास्ते से वह बराबर बाहरी दुनिया में आता - जाता और खोज - खबर लेता रहता था.

इस सुरंग का दूसरा हिस्सा फलगू नदी के नीचे - ही - नीचे तय करता हुआ एक भयानक जंगल के बीच ऐसी जगह निकला था जहां किसी को इसका पता न लग सकता था.

आठवां ब्यान।

प्रभाकरसिंह वह दरवाजा खोलते ही चौंक गए क्योंकि उन्होंने तिलिस्मी शैतान को अपने सामने खड़ा पाया.

मगर नहीं, तुरन्त ही उन्हें मालूम हो गया कि यह केवल उनका भ्रम था.

वह तिलिस्मी शैतान नहीं बल्कि ठीक उसी शक्ल का हड्डियों का एक ढांचा था जो उस कोठरी की सामने वाली दीवार के साथ, एक खूंटी के सहारे, कुछ ऊंचे पर टंगा हुआ था.

वे उसके पास गये और बड़े गौर से उस ढांचे को देखने लगे क्योंकि अब से पहले कई बार तिलिस्मी शैतान को देख उन्हें बहुत कौतूहल हो चुका था कि यह क्या बला है और किस तरह अपना आश्चर्यजनक काम करता है.

दीवार पर उस ढांचे के बगल ही में, एक तांबे की तख्ती लगी हुई थी जिस पर उनकी निगाह गई, उस पर कुछ लिखा हुआ देख वे पड़ने लगे.

तख्ती का मजमून यह था " घबराओ नहीं, ये डांचे हड्डियों के नहीं हैं बल्कि तरह - तरह के मसालों को जमा कर तिलिस्मी कारीगरी का नमूना बनाया गया है.

इनको आदमी अगर अजा या पोशाक की तरह अपने बदन पर पहन ले तो ये उसके बदन को इस तरह ढक्क लेंगे कि उसका कोई हिस्सा न दिखेगा और वह इनकी आड़ में तरह - तरह के डरावने करतब दिखा सकेगा.

इन ढांचों में कई तरह की सिफ्त है.

एक तो यह कि ये बहुत ही मजबूत जिरह बख्तर का काम करते हैं, अर्थात इनके पहनने वाले पर चाहे जो भी हो हथियार चलाया जाय पर कोई असर न होगा, दूसरे अगर इनको पहनने वाला भीतर से इनके साथ कोई लोहा छुआ दे तो इनमें से आग का फव्वारा निकलने लगेगा और तीसरे अगर इनके साथ कोई तिलिस्मी हथियार छुला दिया जाय तो ये मनुष्यों की दृष्टि से लोप हो जाएंगे और तब जो आदमी इन्हें पहने रहेंगे उन पर किसी की भी निगाह न पड़ सकेगी.

" इन ढांचों के अलावा इसी तरह के और बहुत से आदमियों और जानवरों के ढांचे तुम्हें उस कोठरी में मिलेंगे जो इस तिलिस्म में आने की राह में पड़ती है या जहां से होते हुए

तुम तिलिस्म के बाहर निकलोगे.

तिलिस्मी कारीगरी का नमूना दिखाकर लोगों को डराने और ताज्जुब में डालने के लिए ही ये चीजें खिलवाड़ की तौर पर तुम्हारे लिए रखी गई हैं.

" बस इतना ही उस तख्ती का मजमून था और इसे पढ़ प्रभाकरसिंह बड़े ही विस्मित हुए.

कुछ देर तक तिलिस्म बनाने वालों की कारीगरी और अक्ल की तारीफ करने के बाद वे पुनः ढांचे को गौर से देखने लगे.

उन्होंने देखा कि मोटे गद्दीदार कपड़े पर बहुत ही बारीक तारों से ठीक हड्डियों की तरह दिखने वाले ये मसाले के टुकड़े इस कारीगरी के साथ लगाये गए थे कि इसे बहुत ही आसानी के साथ जिरह बख्तर की तरह बदन पर पहना जा सके.

उन्होंने उसे पहना और तब दरवाजे के ऊपर लगे हुए एक शीशे में देखा कि अब उनकी शक्ल ठीक उस तिलिस्मी शैतान के जैसी हो गई.

उन्होंने उसकी दूसरी तारीफों की भी जांच की और उन्हें ठीक वैसे ही पाया जैसाकि उस तख्ती में लिखा था या जैसाकि उस तिलिस्मी शैतान को करते कई बार देख चुके थे.

अगर कोई कसर थी तो सिर्फ इतनी ही कि वह टूटी हुई तलबार और ढाल इस समय उनके हाथ में न थी.

तिलिस्म बनाने वाले कारीगरों की अक्ल की तारीफ करते हुए उन्होंने यह पोशाक उतारकर फिर खूंटी पर टांग दी मगर अब उन्हें एक - दूसरे तरदुद ने आ घेरा.

वे सोचने लगे कि वह जरूर कोई आदमी ही होगा जो इस तिलिस्मी शैतान के रूप में कई बार उनसे मिलकर उन्हें जक पहुंचा चुका है.

वह कौन आदमी होगा और इस तिलिस्म के अन्दर उसका आना किस तरह मुमकिन हुआ इस पर देर तक गौर करते रहने पर भी उनकी समझ में कुछ न आया, हां, उनका ध्यान इस बात पर जरूर गया कि उस तख्ती का मजमून या उस डांचे के बगल की खाली जगह साफ बता रही थी कि इस जगह इस तरह के दो ढांचे रहे होंगे जिनमें से

एक उनके और एक शायद मालती के लिए रहा होगा, मगर अब यहां एक ही नजर आ रहा है! तब दूसरा कहां गया?

जरूर उनके किसी दुश्मन के हाथ पड़ गया और उसी की मदद से वह सब कार्रवाई कर रहा है.

" आखिर कभी - न - कभी पता लगेगा ही कि वह कौन था! " कहते हुए प्रभाकरसिंह वहां से हटे.

उस कोठरी की बाईं दीबार में एक दरवाजा और था जो मामूली तौर पर बन्द था और वे उसे खोल उसके अन्दर चले गये, यह एक बहुत ही बड़ा कमरा था और मालूम होता है कि इसके अन्दर कुछ और भी ताज्जुब की चीजें प्रभाकरसिंह को दिखलाई पड़ी क्योंकि जब काफी देर के बाद वे इसके बाहर निकले तो आश्चर्य के साथ उनके मुंह से निकला, " ओफ, वे मनुष्य नहीं, देवता थे जो इस तरह की कारीगरी की चीजें बना सकते थे.

क्या कोई कह सकता है कि वे जीते - जागते मनुष्य और पशु नहीं बल्कि केवल कुछ तिलिस्मी खिलौने थे जिनके करतब देखता हुआ मैं चला आ रहा हूँ! " प्रभाकरसिंह फिर उसी बड़े कमरे में आए जिसमें कि जेवरों और जवाहारातों से भरे सन्दुक उन्हें दिखाई पड़े थे.

इस कमरे के चारों कोनों से सोने के चार सिंहासन रखे हुए थे जिनमें से एक पर वे बैठ गए और उसकी पीठ (अड़ानी) में लगे हुए किसी खटके की बात को खास तरक़ीब के साथ दबाया.

उसके साथ ही वह सिंहासन हिला और जमीन के अन्दर धंस गया.

प्रभाकरसिंह नहीं कह सकते कि उस जगह से कितना नीचे वह सिंहासन चला गया मगर इसमें कोई शक नहीं कि काफी गहराई तक चला गया होगा, क्योंकि उस जगह की हवा बन्द और दम घोंटने वाली थी जहां पहुंचकर वह रुका और तब फिर एक झटके के साथ एक तरफ को चलने लगा.

गन्दी हवा के असर से प्रभाकरसिंह बदहवास हो गए और इसलिए वे कुछ भी न समझ सके कि वह सिंहासन उन्हें लिए किधर को जा रहा है मगर जब उन्हें होश आया तो उन्होंने अपने को एक ऐसी जगह में पाया जिसे वे पहले भी एक बार देख चुके थे.

एक लम्बी - चौड़ी कोठरी, जिसकी जमीन पर तरह - तरह की हड्डियां पड़ी हुई थीं, और चारों तरफ के भयानक मनुष्यों और पशुओं के उन कंकालों से बहुत डरावनी लग रही थी.

जो दीवार के साथ खड़े किए हुए थे.

बीचोबीच में एक कुएं की तरह गहरा स्थान था जिस पर एक देह मोटी जंजीर के सहारे लटक रहा था और जिसे देखते ही हमारे पाठक पहचान जाएंगे क्योंकि यह वही स्थान है जहां तिलिस्मी शैतान प्रभाकरसिंह और मालती को तिलिस्म से पकड़ने के बाद लाया था और इसी देग में रखकर उसने उन दोनों को कुएं में लटकाया था, मगर कुछ फर्क था तो यही कि उस दिन की तरह आज इस कुंए से आग की लपट या धुआं न निकल रहा था बल्कि बहुत - सी राख चारों तरफ फैली हुई थी.

!! प्रभाकरसिंह ने भी देखते ही इस स्थान को पहचान लिया और उनके मुंह से निकला- " मालूम होता है कि यह देग ही मुझे उस शेरों वाले कमरे तक पहुंचायेगा और हड्डी के ढांचों के बारे में उस पट्टी पर लिखा था कि ये भी उस तिलिस्मी ढांचे - सा ही गुण रखते हैं ।

प्रभाकरसिंह ने उन ढांचों के पास जाकर उन्हें गौर से देखा.

दीवार के साथ - साथ पचासों ही तरह के जानवरों, आदमियों और पक्षियों के ढांचे सजाये हुए थे मगर गौर से देखने से सबमें वही बात मालूम हुई अर्थात सभी मोटे काले कपड़े पर इस तरह से मसाला जमाकर बनाये गए थे कि इन्सान इन्हें सहज ही में अपने ऊपर लगाकर काम कर सकता था.

दो - चार ढांचों को देखकर प्रभाकरसिंह वहाँ से हट आए और उस बीच वाले देग के पास पहुंचे जो जंजीर के सहारे कुएं के बीचोबीच में लटक रहा था.

कुछ देर खड़े सोचते रहे तब कोशिश कर उसके अन्दर जा बैठे, इसके बाद उन्होंने कोई तरकीब ऐसी की कि जिसके साथ ही वह देग ऊंचा होने लगा और देखते - देखते छत के साथ जा लगा.

इस कोठरी की छत के बीचोबीच एक छेद था जिसकी राह उस देग ने इन्हें ऊपर की मंजिल तक पहुंचा दिया और वहां प्रभाकरसिंह उस पर से उतर पड़े.

१.

देखिए - भूतनाथ चौदहवें भाग का बयान.

एक छोटी कोठरी मिली जिसमें अंधेरा था पर प्रभाकरसिंह अन्दाज से टटोलते हुए उसके दरवाजे के पास जा पहुंचे जिसे खोलते ही उसके मुंह से एक प्रसन्नता की आवाज निकल पड़ी क्योंकि उन्होंने अपने सामने इन्दुमति को खड़े पाया, वे उसे देखते ही उसकी तरफ झपटे और इन्दु तो उनकी तरफ इस तरह दौड़ी जैसे कोई प्यासा पौसरे की तरफ लपकता है.

बेतहाशा उनके पैरों पर गिर वह जोर - जोर से आँसू बहाने लगी मगर प्रभाकरसिंह ने जबरदस्ती उसे उठा हृदय से लगा लिया और प्रेम से साथ कहा, “ इन्दे! आह्, आज कितने जमाने के बाद तुझे देख रहा हूं ।

! " इन्दुमति ने प्रेम - भरी चितवन से इन्हें देखते हुए सकुचाहट के साथ कहा, " क्या इस बीच में दासी की याद भी कभी आपको आई थी?

" प्रभाकरसिंह आश्चर्य से बोले, " क्यां इसमें भी तुम्हें सन्देह हो सकता है! क्या मैं जिन्दगी रहते कभी, तुम्हें भूल सकता हूँ! " इन्दु ने मुस्कराकर कहा, " मगर मैंने तो सुना कि आपने तिलिस्म ही में किसी से शादी कर ली और उसके साथ रंगरेलियां मना रहे हैं! प्रभाकरसिंह का चेहरा उदास हो गया.

उन्होंने एक ठण्डी सांस लेकर कहा, " की तो नहीं, मगर मुझे आशा थी कि बाहर निकलने पर जरूर कर सकूंगा लेकिन अफसोस, वह आशा निराशा में बदल गई और मुझे केवल परेशानी और दुःख ही हाथ लगा क्योंकि उसका व्याह किसी और के साथ हो गया! " इन्दुः:

(कौतूहल से) यह कैसी बात?

क्या मैं जान सकती हूं कि वह कौन भाग्यवान है जिसके साथ आप शादी करना चाहते थे और ऐसी क्या बात हो गई जिससे शादी न हो पाई?

प्रभाकर:

वह मालती थी, कौन मालती समझी! वही तुम्हारी चचेरी बहिन जिसके साथ मेरी शादी पहले तय हुई थी मगर जो ऐन व्याह के मौके पर, जब मैं बारात लेकर पहुंचा - घर से गायब पाई गई और तब तुम्हारे साथ मेरी शादी की गई.

इन्दु:

(आश्चर्य के भाव से) है! तो क्या मेरी वह बहिन अभी तक जीती है! हम लोग तो समझ रहे थे कि दुश्मनों की करतूत से वह मारी गई! प्रभाकर:

नहीं, वह जीती थी.

इस तिलिस्म के तोड़ने के काम में उसने बराबर मेरा साथ दिया बल्कि कई मौके पर उसी के सबब से मेरी जान बची.

इन्दु:

तब वह कहां चली गई?

प्रभाकर:

अब यह सब हाल फुरसत के समय सुनना ही ठीक होगा! इस समय मैं थका - मांदा और परेशान चला आ रहा हूं और कहीं बैठकर आराम करूंगा.

तुम फकत यह बता दो कि इस समय तुम यहां पर जो तिलिस्म का ही एक हिस्सा है, क्योंकर आ पहुंची और इतने समय के बीच तुम पर क्या - क्या बीती?

इन्दु:

केवल मैं ही नहीं, बल्कि बहुत - से लोग आपको तिलिस्म तोड़ राजी - खुशी बाहर निकल आने पर बधाई देने के लिए यहां मौजूद हैं और आपकी राह बेचैनी के साथ देख रहे हैं, रहा मेरा किस्सा, तो सभी के साथ आप सुनियेगा ही.

मुख्तसर में इतना ही जान लीजिए कि किस तरह - तरह की मुसीबतें उठाकर भी मैं अभी तक जीती हूं और इस समय आपको सही - सलामत पाकर अपने जैसा भाग्यवान किसी को नहीं समझती! अब आप यहां देर न कीजिए और मेरे साथ आइए.

कैसे - कैसे लोग आपकी राह देख रहे हैं! जिस जगह ये दोनों खड़े थे वह एक सुन्दर दालान था जिसके सामने एक बाग नजर आ रहा था और दोनों तरफ दाहिने और बाएं, कई दरवाजे दिखाई पड़ रहे थे.

इन्दुमति ने इनमें से एक दरवाजा जो मामूली ढंग से बन्द था.

खोला और प्रभाकरसिंह को लिए कई कोठरियों में से होती और दरवाजों को खोलती - बन्द करती एक बहुत बड़े कमरे में पहुंची.

यह वही कमरा था जिसमें आज से पहले कई दफे हमारे पाठक आ चुके हैं, जो लोहगड़ी के तिलिस्म में जाने का पहला रास्ता था और जिसे हम शेरों वाले कमरे के नाम से पुकारते आये हैं.

इस समय इस क्रमरे में साफ - सुन्दर फर्श बिछा हुआ था और उस पर कई आदमी, औरत और मर्द बैठे हुए थे जो प्रभाकरसिंह को इन्दु के साथ आते देखते ही खुशी में भरकर उठ खड़े हुए और उनकी तरफ बड़े.

सबसे पहले जिन पर प्रभाकरसिंह की निगाह पड़ी वे दयाराम थे जिन्होंने झपटकर इन्हें गले से लगा लिया और खुशी से भर्राये हुए कण्ठ से कहा, " मैं नहीं कह सकता कि आपको राजी - खुशी तिलिस्म तोड़ने पर मुबारकबाद दूं या अपने और इन इतने अन्य दोस्तों को उस भयानक तिलिस्म से छुड़ाने के लिए धन्यवाद! " प्रभाकरसिंह मुस्कराते हुए बोले, " आप इन दोनों में से कुछ भी न करके मुझे सिर्फ इतना बता दीजिए कि क्या मैं उन जमना, सरस्वती और भुवनमोहिनी के पीछे खड़े अपने लंगोटिया दोस्त कामेश्वर को देख रहा हूँ?

नहीं - नहीं, यद्यपि ये बिल्कुल ही दुबले - पतले और बरसों के मरीज मालूम हो रहे हैं फिर भी मेरी आंखें धोखा नहीं खा सकतीं और मैं कह सकता हूं कि ये जरूर वे ही हैं ।

" दयाराम बोले, " जी हां, ये कामेश्वर ही हैं और इनके पीछे इनकी बहिन अहिल्या है.

" प्रभाकरसिंह ने झपटकर कामेश्वर को गले से लगा लिया और दोनों मित्रों की आंखों से प्रेमाश्रु बहने लगे.

प्रभाकरसिंह रुंधे हुए गले से बोले, " ओह, क्या मुझे स्वप्न में भी विश्वास हो सकता था कि आपको जीता जागता देखूंगा जिनकी मौत की खबर इतनी सच्चाई के साथ उड़ाई गई थी! मगर क्या आप भी इसी तिलिस्म में बन्द थे?

" कामेश्वर:

जी नहीं, मैं चुनार के राजा शिवदत्त की कैद में था जहां से एक विचित्र रीति से मेरा छुटकारा हुआ.

मगर मेरी स्त्री और यह बहिन अहिल्या जरूर इसी लोहगड़ी में कैद थीं जहां से आपकी और मालती रानी की कृपा से उन्हें छुटकारा मिला.

प्रभाकरसिंह जमना, सरस्वती, भुवनमोहिनी और अहिल्या से भी मिले और इसके बाद सब कोई फर्श की तरफ बड़े मगर उसी समय दयाराम चिल्लाकर बोल उठे, " वाह वाह, लीजिए चाचाजी भी आ पहुंचे क्या अच्छे मौके पर आए हैं! और उनके साथ दलीपशाह भी हैं ।

सभी की निगाह बाहर की तरफ चली गई और सभी ने प्रसन्नता के साथ देखा कि इन्द्रदेव दलीपशाह के साथ चले आ रहे हैं.

।

।

बीसवां भाग समाप्त ।

।

इक्कीसवां भाग

पहला व्यान।

] रात पहर - भर के लगभग जा चुकी है.

संगमरमर के चबूतरे पर जिसे खुशबूदार फूलों से लदी झाड़ियों ने चारों तरफ से घेर रखा इन्द्रदेव, दलीपशाह, प्रभाकरसिंह, दयाराम तथा हमारे नवीन पात्र कामेश्वर बैठे हुए हैं तथा इनसे जरा हटकर एक दूसरे रेशमी गलीचे पर इन्दुमति, जमना, सरस्वती, भुवनमोहिनी और अहिल्या बैठी हुई हैं, बीच में तेज रोशनी का एक शमादान बल रहा है ।

अहिल्या अपना किस्सा सुना रही है जब मैंने देखा कि मालती भी मेरे साथ नहीं है, न - जाने कहां चली गई तो मुझे तुरन्त ख्याल हुआ कि हो - न - हो जो शक मुझे हुआ है वही उसे भी हुआ है और इसी से वह कहीं टल गयी है.

मैं भी मौका पाकर खसकने की बात सोच ही रही थी कि यकायक शेरसिंह बना वह ऐयार पलट पड़ा और उसी समय मैंने देखा कि इधर - उधर छिपे कई आदमी पेड़ों की आड़ से निकल मेरी तरफ बड़े आ रहे हैं.

उन सभी के हाथों में मशालें और नंगी तलवारें थीं और उनको देखते ही वह ऐयार बोल उठा.

" इस कम्बख्त को पकड़ लो और दूसरी औरत को खोजो.

जरूर वह भी यहीं कहीं छिपी होगी.

” मेरी मुश्क्के बांध दी गईं और कई आदमी मालती को खोजने के लिए चारों तरफ फैल गये उसका कहीं पता न लगा, न - मालूम वह कहां जा छिपी थी.

१.

अहिल्या का इससे पहले का हाल पाठक मालती के मुंह से सुन चुके हैं.

देखिये बारहवां भाग, तीसरा बयान.

बहुत देर तक तलाश करने पर भी जब मालती न मिली तो वह ऐयार बोला, " खैर, जाने दो उस कम्बख़्त को.

इसी को उठा लो और चलो.

महाराज राह देख रहे होंगे, " मैं उठाकर जबरदस्ती एक डोली में डाल दी गई जो उन शैतानों के साथ थी और सब लोग एक तरफ को रवाना हुए.

हाथ - पांव के साथ - साथ मेरा मुंह भी बंधा था जिससे न मैं चिल्ला सकती थी और मैं अपने को छुड़ाने की कोई कोशिश ही कर सकती थी, दूसरे डोली के अन्दर जो कपड़ा बिछा हुआ था उसमें से किसी तरह की गन्ध आ रही थी जिसने मुझे बदहवास कर दिया और कुछ ही देर बाद मुझको तनोबदन की होश न रह गई, इससे मैं नहीं कह सकती कि वह सफर कितना लम्बा था या मैं वहां से कितनी दूर ले जाई गई, मगर जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कि मेरे हाथ - पांव खुले हुए हैं और मैं एक छोटी कोठरी में कम्बल के ऊपर पड़ी हुई हूं.

एक आदमी मेरे ऊपर झुका हुआ मुझे कोई चीज सुंघा रहा था और जैसे ही मेरी आंख खुली उसे देख मैं कांप गई क्योंकि वह चुनार का राजा शिवदत्त था.

मैंने डरकर अपनी आँखें बंद कर लीं मगर वह बेरहमी के साथ हंस पड़ा और इस तरह की वाहियात बातें करने लगा जिन्हें मैं अपने मुंह से नहीं निकाल सकती! आखिर उसकी बातें सुन मैंने नफरत के साथ उसके मुंह पर थूक दिया जिससे वह बहुत लाल - पीला हुआ और मेरे मुंह पर उसने जोर से एक घूंसा मारा, शायद वह मेरी और दुर्गति करता मगर उसी समय बाहर से किसी के ताली बजाने की आवाज सुन उठ खड़ा हुआ और मुझसे यह कहता हुआ कि ' रुक़ कम्बख्त, मैं अभी आता हूं तो तेरी दुर्दशा करता हूँ बाहर निकल गया.

मैं डर से कांपती हुई उसी तरह पड़ी रह गई और ईश्वर को मनाने लगी कि मुझे मौत आ जाय तो अच्छा.

जिस कोठरी में मैं थी उसमें एक तरफ एक छोटा - सा चबूतरा था जिस पर कोई मूरत बैठाई हुई थी.

शिवदत्त के बाहर जाते ही यकायक इस कोने में से किसी तरह की आवाज आई जिससे मैं चौंकी और उधर देखते ही मुझे मालूम हुआ कि वह मूरत हिल रही है.

मेरे देखते - देखते वह अपनी जगह से एक बगल हट गई और उस स्थान पर शेरसिंह खड़े दिखाई पड़ने लगे.

पहले तो डर और घबराहट के मारे मैं उन्हें पहचान न सकी मगर जब वे मेरे पास आये और मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोले कि बेटी, घबरा मत, मैं शेरसिंह ही हूं और दुश्मनों के एक चक्र में पड़ गया था तो मुझे ढांढस हुई और मैं रोकर बोली.

" चाचाजी, किसी तरह मुझे दुष्ठ शिवदत्त के पंजे से बचाइये! " उन्होंने कहा, " तू घबरा मत! मुझे सब हाल मालूम हो गया है.

यह शैतानी जैपाल और हेलासिंह की है और दारोगा का इसमें हाथ है.

पर डर नहीं, मैंने सब इन्तजाम कर लिया है, तो तु उठ और फुर्ती से मेरे साथ आ !! " मेरे दम में दम आया.

मैं उठी और उनके पीछे - पीछे चलकर चबूतरे पर पहुंची जिस पर से उतरकर शेरसिंह मेरे पास आये थे.

मैंने देखा कि उस मूरत की जगह चबूतरे के बीचोबीच में एक गड्ढा है जिसमें उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं.

शेरसिंह के पीछे - पीछे मैं उस गड्ढे में उतर गई.

नीचे एक छोटी कोठरी मिली जिसमें बहुत ही अंधेरा था मगर शेरसिंह के कहने से मैं बेधड़क उस जगह खड़ी रही और वे कहीं पड़ी एक गठरी उठा कर यह कहते हुए फिर ऊपर चले गये, " तू यहां खड़ी रह मैं अभी आया! " बहुत जल्दी ही वे लौट आये और अबकी दफे कोई तरकीब ऐसी भी करते आये जिससे चबूतरे के ऊपर वाली वह मूरत फिर अपने ठिकाने जा बैठी और बह रास्ता बन्द हो गया.

मैंने उनसे पूछा, " आप क्या करने गए थे और वह गठरी जो आप साथ ले गये थे कहां छोड़ आए?

" जिसके जवाब में उन्होंने कहा, " शिवदत्त अपने साथ कुछ लौडियां भी लाया है.

उन्हीं में से एक को बेहोश कर तेरी सूरत बना मैं ऊपर छोड़ आया हूँ! इतना सुनते ही प्रभाकरसिंह बोल उठे, " तब मालूम होता है कि भुवनमोहिनी ने कोठरी में जिस बेहोश अहिल्या को देखा और जिसे गदाधरसिंह ने ले जाकर ' भूतनाथ ' की मूरत पर बलि दिया वह यही शिवदत्त की लौंडी ही थी.

"

बेशक़ यही बात थी और भूतनाथ व्यर्थ ही उस डर में पड़ा रह गया और अब तक भी डर रहा है कि उसने असली अहिल्या को मार डाला.

इसका सही क़िस्सा यों है कि भूतनाथ को इस बात का पता लग गया था कि शिवगढ़ी एक तिलिस्म है और उसके अन्दर बेइन्तहा खजाना भरा हुआ है.

यह बात उसे नन्हों की जुबानी मालूम हुई थी जिसके बाप के पास जो रोहतासगड़ के पुजारी के नाम से मशहूर था उस तिलिस्म की ताली भी थी.

नन्हो के कहने से भूतनाथ ने उस पुजारी को धोखा दे एक अंधे कुएं में फेंक दिया और वह तिलिस्मी किताब ले ली.

उस किताब को पड़ने से उसे तिलिस्म का कुछ हाल मालूम हुआ और कुछ दौलत भी मिली मगर साथ ही यह भी पता लगा कि इसी तरह की कोई तिलिस्मी किताब और भी है वह अगर मिले तभी यह तिलिस्म टूटकर पूरा खजाना हाथ लग सकता है.

उसी समय से वह उस दूसरी तिलिस्मी किताब को पाने की फिक्र में लगा.

दारोगा की जुबानी जब एक दफे उसने सुना कि जमानिया की महारानी के पास एक तिलिस्मी किताब है तो वह उसको पाने की कोशिश करने लगा.

दारोगा भी उससे अपना एक काम निकालने की फिक्र में था.

इन कामेश्वर और इनके पिता सेठ चंचलदास से वह बहुत चिड़ता था और जिस तरह भी हो इनका नाम - निशान मिटाने की फिक्र में पड़ा था जिसका जरिया उसने भूतनाथ को बनाया.

(भुवनमोहिनी की तरफ देखकर) उसने महारानी को यह पट्टी पड़ाई कि महाराज तुम पर मोहित हो गये भुवन:

(चौककर) शिव शिव शिव! उसने ऐसा कहा! कामे:

और इस बात का महारानी को विश्वास भी हो गया !! इन्द्र::

हां! और यह भी उनके जीवन का एकमात्र कलंक है क्योंकि और सब तरह से महारानी एक आदर्श औरत थीं.

१.

भूतनाथ ने इसके बारे में कुछ हाल अपने शागिर्दो से कहा, भूतनाथ अट्ठारहवां भाग, पाँचवा बयान देखिये.

मैं खूब जानती हूं कि इस बात में जरा भी सच्चाई न थी और अब तो भुवनमोहिनी की जवानी उसका किस्सा सुन कर मुझे यह भी मालूम हो गया कि महाराज इसे राजा वीरेन्द्रसिंह की भान्जी जान कर अपनी लड़की के समान समझते और मानते थे मगर खैर.

जो बात हुई वह यह थी कि महारानी ने भूतनाथ से कहा कि तुम अगर भुवनमोहिनी को मार डालो तो मैं वह तिलिस्मी किताब तुम्हें दे दूंगी.

इधर चुनार का राजा शिवदत्त भी भुवनमोहिनी पर आशिक था और इसके पाने के लिए मुंहमांगी कीमत देने को तैयार था अस्तु भूतनाथ ने किसी तरह इसके (भुवनमोहिनी के) रिश्तेदारों को तो यह विश्वास दिला दिया कि यह सांप काटने से मर गई और उधर जहां यह गाड़ी गई थी वहां कोई दूसरी लाश गाड़ इसे निकाल होश में ला शिवदत्त के हवाले कर दिया.

इस तरह उसने महारानी से तिलिस्मी किताब पाई और शिवदत् से भी कोई बहुत ही कीमती चीज ली.

(प्रभाकरसिंह की तरफ देखकर) तिलिस्म के अन्दर जो भूतनाथ की मूरत तुम्हें मिली थी वहां तक पहुंचने के कई रास्ते हैं जिनमें से एक शिव गड़ी से, दूसरा अजायबघर से और तीसरा किताब से तुम्हें मालूम ही हुआ होगा कि वह मूरत कुछ खास - खास शब्दों को बार - बार दोहराया करती और जो उसके कब्जे में पड़ जाए उससे यह कहा करती थी कि किसी औरत का खून मुझे पिलाओ तो मैं तिलिस्मी खजाना दूंगा, इन्हीं शब्दों ने भूतनाथ को धोखे में डाल दिया.

जब अहिल्या की गालियों से नाराज हो इसे शिवदत्त ने भूतनाथ के सुपुर्द कर दिया तो वह इसीलिए उस भूतनाथ की मूरत के पास पहुंचा और अपनी समझ में उसने अहिल्या को उस मूरत पर बलि चढ़ा दिया मगर वास्तव में वह शिवदत्त की एक लौंडी थी जिसे शेरसिंह ने अहिल्या की सूरत बनाकर छोड़ दिया था और जिसका हाल अभी तुम लोगों ने सुना.

खैर, यह तो दूसरी बात हुई मगर वह बलि चढ़ा देने पर भी कोई काम न हुआ क्योंकि यह सब बातें तो केवल एक तिलिस्मी तमाशा थीं.

उस मूरत ने भूतनाथ को पकड़ लिया और उसे इतना डराया कि वह घबराकर (नकली) अहिल्या की लाश वही छोड़ वहां से भागा.

उसके पीछे - पीछे जाकर दारोगा और जैपाल ने यह तमाशा देख लिया था.

वे अहिल्या की लाश उठा ले गये और दारोगा के हुक्म से जैपाल ने हेलासिंह की मदद से उस लाश का हेसतेस किया अर्थात उसे काटकर चील - कौवों को खिला दिया जिस घटना को मालती ने देखा था.

इसी घटना के बाद गदाधरसिंह को चिढ़ाने या डराने की नीयत से जैपाल ने अपना नाम भूतनाथ रख लिया था.

भूतनाथ इसी भ्रम में पड़ा रह गया कि उसने असली अहिल्या को मार डाला और तब से अब तक वह इसी भ्रम में पड़ा हुआ है.

इसीलिए वह दलीपशाह को अपना दुश्मन समझता है और इसी कारण वह इन कामेश्वर से भी घबराता है ।

दलीप:

आपको यह सब बातें कैसे मालूम हुई?

इन्द्र:

मुझे यह सारा किस्सा शेरसिंह ने सुनाया, जब वे एक दफे अपने मालिक राजा दिग्विजयसिंह की आज्ञा से जमानिया आये तो उन्हें पता लगा कि मालती जीती है और दारोगा की कैद में है.

वे उसे छुड़ाने के लिये गए और वहां प्रभाकरसिंह को भी कैद पा इन्हें भी छुट्टी दी.

प्रभाकर:

(चौंककर) हैं.

क्या वे शेरसिंह थे जिन्होंने मुझे दारोगा की कैद से छुड़ाया था?

इन्द्र:

हां, और घटनावश वे उस समय मेरी शक्ल बने हुए थे.

' तुमको छुड़ाने के बाद उन्होंने जाकर मालती को भी कैद से छुट्टी दी, केवल यही नहीं बल्कि उसे लाकर लोहगड़ी मे रखा क्योंकि वह एक ऐसी हिफाजत की जगह थी जिसका पूरा - पूरा हाल उन्हें अच्छी तरह मालूम था.

१.

देखिए मालती का किस्सा.

२.

देखिए भूतनाथ दसवां भाग, ग्यारहवा बयान.

३.

देखिये भूतनाथ नौबां, भाग पांचवां बयान.

प्रभाकर:

जी हाँ, यह किस्सा मुझे मालूम है, क्योंकि मालती ही मुझे शिवदत्त के ऐयारों की कैद से छुड़ा लोहगढ़ी में ले गई बल्कि बहुत दिनों तक उसने मुझे वहां रखा भी था.

पर उस समय मैं उसे पहचान न सका था, जब तिलिस्म में उसने यह हाल मुझसे कहा तब मैंने जाना.

इन्द्र::

केवल तुम्हीं क्यों मैं और दलीपशाह भी उस समय भ्रम में पड़ गये क्योंकि यह गुमान ही हम लोगों को कब हो सकता था कि मालती जीती होगी.

शेरसिंह की जुबानी यह हाल सुनकर ही मैं होशियार हुआ और तब मुझे बहुत सी बातों का पता लगा.

खैर वे बातें पीछे होंगी (अहिल्या से) पहले तू अपना हाल समाप्त कर डाल.

अहिल्या:

मेरा हाल और कुछ बहुत नहीं है, शेरसिंह मुझे कई रास्तों से घुमाते - फिराते एक बाग में लाये और मुझे वहां यह कहकर कि बेटी तू यहीं कुछ देर तक रह, मालती अभी तक उन दुष्टों के चंगुल में पड़ी हुई है, मैं उसे भी छुड़ाकर यहीं लाता हूं, तब तुम दोनों को एक साथ ही तुम्हारे घर पहुंचा दूंगा, वे कहीं चले गये.

अकेले बैठे - बैठे मेरा जी घबराने लगा और मैं उस बाग में घूमने लगी.

शेरसिंहजी मुझे मना कर गये थे कि यहां की किसी चीज को छूना नहीं मगर मेरी किस्मत में तो तकलीफ उठाना बदा था.

मैं घूमती - फिरती उस बाग के एक कोने में पहुंची जहां एक चबूतरे के ऊपर एक हिरन की मूरत बनी हुई थी, मुझे देख उस हिरन ने विचित्र तरह से सींग टेड़ा कीया जिससे मुझे बड़ा क़ौतुहल हुआ और मैं नजदीक से देखने की नीयत से उस चबूतरे पर जा चड़ी.

मेरे चढ़ते ही वह चबूतरा क़ांपा और तब तेजी से जमीन में धंस गया कि मैं उस पर से कूदकर भाग भी न सकी.

बस उसी के बाद मैं तिलिस्म की कैद में जा फंसी जहां बरसों तक किसी की सूरत देखने को न मिली, हां, जब (दयाराम की तरफ बताकर) आप और जमना, सरस्वती वहां पहुंची तो कुछ ढांढस हुई पर आखिर उस दिन बहिन मालती की कृपा से ही हम लोगों को छुटकारा मिला.

१.

देखिये मालती का किस्सा.

दयाराम:

तो शेरसिंह ने फिर आकर तुम्हें ढूंढा नहीं?

अहिल्या:

मैं इस बारे में कुछ कह नहीं सकती.

इन्द्र:

शेरसिंह कुछ ही देर बाद मालती को लिए हुए वहां पहुंचे और उन्होंने इसे बहुत ढूंढा मगर जब उन्हें विश्वास हो गया कि यह तिलिस्म में कैद हो गई तो वे लाचार हो गए क्योंकि तिलिस्म के कैदी को छुड़ाने की ताकत उनमें न थी.

दलीप:

मालती उन्हें क्योंकर और कहां मिली?

इन्द्रः:

मालती घूमती - फिरती अजायबघर तक पहुंच गई थी जहां वह जैपाल और हेलासिंह के कब्जे में पड़ गई.

ये दोनों उसे लोहगढ़ी में उठा ले आये पर बेहोशी की दवा क़मजोर होने के कारण वह उनके कब्जे से छूट गई.

नकली अहिल्या (जिसे अपनी समझ में उसने असली समझा था) की लाश देख वह डर गई और वहाँ से भागी जा रही थी कि शेरसिंह वहां जा पहुंचे जिन्हें देख उसे ढांढस हुई.

उन्हीं की जुबानी उसने सुना कि जिस लाश को उसने देखा वह अहिल्या की न थी शिवदत्त की एक लौंडी की थी और असली अहिल्या एक हिफाजत की जगह में बैठी उसकी राह देख रही है.

वह खुशी खुशी उनके साथ वहां गई मगर अहिल्या से भेंट न हो सकी क्योंकि वह तिलिस्म में फंस गई थी.

लाचार शेरसिंह केवल मालती को ही लिए तिलिस्म के बाहर निकले, मालती को तो उन्होंने उसके बाप के पास पहुंचा दिया और अहिल्या के बारे में उन्हें उसके मर जाने की खबर उड़ानी पड़ी.

मगर मालती अपने घर आराम से रहने न पाई.

दारोगा, हेलासिंह, शिवदत्त और गदाधरसिंह सभी को यह डर लगा हुआ था कि उनकी गुप्त कार्रवाइयों की पूरी - पूरी खबर उसे लग चुकी है, वह जब चाहे उन्हें तहस - नहस कर सकती है, अस्तु उन लोगों ने मिल - जुलकर उसे घर पर रहने न दिया, ऐन व्याह के मौके पर वह गायब कर दी गई और लोगों में उसके बारे में तरह - तरह की झूठी - सच्ची खबरें फैलाई गईं, यहां तक कि दलीपशाह और कामेश्वर तक धोखे में पड़ गए, १.

देखिए भूतनाथ दसवां भाग बारहवाँ बयान.

पर वास्तव में दुष्ठ दारोगा ने उसे अपनी कैद में रख छोड़ा था.

तब से कई वर्ष तक यह उसी की कैद में रही और अन्त में शेरसिंह ने इसे छुड़ाया जैसाकि मैंने पहले कहा, मगर दारोगा ने इस बात को भूतनाथ से इतना छिपाया कि वह अभी तक यहीं समझ रहा है कि अहिल्या का खून उसने ही किया और मालती भी उसी के हाथों पंचतत्व में मिल गई.

भुवनमोहिनी के बारे में तो वह कसूरवार था ही, अस्तु यही सबब था कि जब (कामेश्वर की तरफ बताकर) ये प्रकट हुए और उसने इनकी बातें सुनी तो अपनी जिन्दगी से एकदम नाउम्मीद होकर बदहवास हो गया क्योंकि वह समझ गया कि ये अपनी स्त्री और बहिन के खून का बदला उससे जरूर बुरी तरह लेगें.

दया:

मुमकिन है कि उसने यह भी समझा हो कि राजा बीरेन्द्रसिंह के पास तक इस मामले की खबर जायेगी और वे उसे बहुत बुरी सजा देंगे क्योंकि रिक्तगन्थ के लिए उनके ऐयार बद्रीनाथ और रामनारायण पहले ही से उसके पीछे पड़े हुए थे और यह भी सम्भव है कि इसीलिए उसने अपने को मरा मशहूर किया हो ताकि वे लोग उसका पीछा छोड़ दें, इन्द्र:

बहुत मुमकिन है! भूतनाथ दुनिया में अगर किसी से डरता है तो राजा वीरेन्द्रसिंह के ऐयारों से और यह बात तो वह सुन ही चुका है कि राजा वीरेन्द्रसिंह की ओर से रिक्तगन्थ के चोर को पकड़ लाने वाले को मुहंमांगा इनाम दिये जाने की मुनादी करवा दी गई है, फिर जिस समय भुवनमोहिनी वाली घटना हुई थी उस समय भी राजा वीरेन्द्रसिंह को इस मामले में भूतनाथ का हाथ होने की खबर लग चुकी थी और वे उसी समय से इसकी तरफ से केवल चौकन्ने ही नहीं हो चुके थे बल्कि इसे पूरी सजा देने की नीयत भी कर चुके थे.

(कामेश्वर से) खैर, अब तुम भी अपना हाल बयान कर जाओ तब यह सभा बर्खास्त की जाय क्योंकि देर बहुत हो चुकी है.

१.

नोट (भूतनाथ द्वारा) बेशक यही बात थी.

मुझे मरना मशहूर करने के जो कारण पड़े उनमें कामेश्वर का प्रकट हो जाना मुख्य था.

मेरे हाथ से यों तो कितने ही पाप हुए मगर उनमें दयाराम वाली और यह कामेश्वर तथा भुवनमोहिनी वाली घटनाएं मुख्य थीं.

मुझे इस समय तक इस बात की तो कोई खबर थी ही नहीं कि मेरे सबब से मौत से भी अधिक तकलीफ उठा चुकने पर भी दयाराम, जमना और सरस्वती तथा कामेश्वर, भुवनमोहिनी, अहिल्या और मालती आदि जीते बच गये हैं.

मैं इन सभी को मरा हुआ समझ रहा था और इन सभी के खून का कलंक अपने ऊपर माने हुए था.

दयाराम वाले मामले की खबर जब दुनिया में फैली तो उस समय दोस्तों के समझाने में रह गया, मगर जब कामेश्वर को मैंने जीता - जागता पाया तो यह समझ लिया कि भुवनमोहिनी, अहिल्या और मालती वाला मेरा कुकृत्य भी अब छिपा न रहेगा और अब मैं न सिर्फ दुनिया में किसी को मुंह दिखाने लायक ही न रहूँगा बल्कि राजा बीरेन्द्रसिंह भी मुझे किसी तरह जीता न छोड़ेंगे और मुझे पकड़वाकर जरूर सूली दे देंगे क्योंकि भूवनमोहिनी उनकी भांजी है और अहिल्या तथा मालती भी उन्हीं के खानदान की है ।

मैंने यह सोचा कि रिक्तगन्थ की चोरी करने के कारण उनके ऐयार मेरे पीछे पड़े ही हुए थे अब कामेश्वर का हाल सुन राजा साहब और भी कड़े हुक्म लगावेंगे और मैं बेमौत मारा जाऊंगा अस्तु सब कुछ सोचकर मैंने दुनिया से गायब हो जाना ही उत्तम समझा.

यद्यपि इसमें कुछ कारण और भी थे जो पाठकों को आगे चलकर मालूम होंगे.

अपने प्रकट हो जाने के बाद भी इस सम्बन्ध में मैं राजा वीरेन्द्रसिंह से डरता ही रहा था और इसीलिए प्रकट होने के साथ ही रोहतासगढ़ के तहखाने में मैंने इन्हीं कसूरों की उनसे माफी चाही थी (चन्द्रकान्ता सन्तति पांचवा भाग ग्यारहवां बयान).

इस जगह मैं अपने दोस्त इन्द्रदेव की भी यह शिकायत कर सकता हूँ कि उन्होंने दयाराम, जमना, सरस्वती, भुवनमोहिनी, अहिल्या, मालती आदि के जीते रहते हुए भी मुझ पर यह भेद प्रकट न किया और मुझे अपने को इन सभी का खूनी समझने दिया.

मगर शायद वे जवाब में यह कहें कि ' अगर मैं ऐसा न करता तो तू कभी सुधरता भी नहीं, अपने को इतने पापों का पापी समझकर ही तेरे मन में पछतावा हुआ और तुझे अपने को सुधारने की इच्छा हुई.

मैं इस बात को मानता हूँ,

कामे:

जो आज्ञा, परन्तु मेरा किस्सा कुछ लम्बा या विचित्र नहीं है.

मुख्तसर हाल यही है कि जब (भुवनमोहिनी की तरफ दिखाकर) मेरी बीवी मेरी समझ में सांप के काटने से मर गई और इसकी लाश गाड़ दी गई तो मैं दुनिया से एक - दम मुंह मोड़ बैठा और अपने को जीते - जी मुर्दा मानने लगा.

जमानिया के बाहर जिस बाग में (मेरी समझ में) इसने अपना प्राण त्याग किया था उसी में मैं भी अपनी समाधि बनाऊंगा, यह सोच मैं रात - दिन वहीं रहकर अपना समय ग्रन्थों के पाठ और भजन - पूजन में काटने लगा.

सुबह - शाम केवल घंटे भर के लिए मैं बाहर जंगलों में घूमने के लिए घोड़े पर चढ़कर निकला करता था.

एक दिन शाम के वक्त इसीलिए निकला था कि बेतरह आंधी - पानी के चक्कर में पड़ गया और कहीं आड़ की जगह तलाश करता हुआ एक झोंपड़ी में जा पहुंचा जो एक पहाड़ी की तलहट्टी में नाले के किनारे बड़े ही मनोरम स्थान में बनी हुई किसी ऋषि के आश्रम की झलक दिखा रही थी.

मैं उसके दरवाजे पर पहुंचा और वहां मैंने नन्हो को देखा.

इन्द्र:

(आश्चर्य से) नन्हो को !! कामे:

जी हाँ, आप लोग जानते ही होंगे कि नन्हों के बाप पुजारीजी से मेरा परिचय था और उनसे मैं कई बार मिल भी चुका था.

अलबत्ता इधर बहुत दिनों से मेरा आना - जाना उधर नहीं हुआ था और इसीलिए मुझे इस बात की खबर न थी कि वे मारे गये हैं.

मुझे इस बात की भी कुछ खबर न थी कि यह कम्बख्त नन्हों मुझे प्यार करने लगी है और इसकी वह मुहब्बत पाक नहीं है.

मुख्तसर यह कि इस नन्हों ने मुझे अपने जाल में फंसा लिया.

मुझसे यह कहकर कि दुश्मनों ने उसके बाप को मार डाला और खुद उसे भी मारने की फिक्र में पड़े हुए हैं, जिस कारण उसे इस तरह छिपकर यहां जंगल में अपने दिन बिताने पड़ रहे हैं, उसने मेरी सहानुभूति प्राप्त की.

मैंने उससे कहा कि अगर चाहे तो मेरे घर में चलकर दुश्मनों से एकदम बेखौफ रह सकती है, मगर उसने वह मंजूर न किया , तब मैंने उसे रणधीरसिंह के यहां रखवा दिया जहां भी वह रह न पाई और अन्त में निकाल दी गई.

मगर खैर उस बात से मेरे किस्से से कोई सम्बन्ध नहीं, गरज यह कि उसी ने मुझे यह खबर दी कि मेरी स्त्री अपनी मौत से नहीं मरी बल्कि इसमें कोई गहरी कारीगरी हुई है जिसमें दारोगा साहब तथा राजा शिवदत्त का हाथ है जो गदाधरसिंह ऐयार की मदद से कोई कार्रवाई कर गुजरे हैं.

इस बात को उसने कुछ इस ढंग से कहा कि भुवनमोहिनी के जीते रहने की उम्मीद हुई और साथ ही यह भी सन्देह हुआ कि वह (नन्हों) इस बारे में कुछ ज्यादा हाल जानती है मगर मुझे बताती नहीं.

इसका पूरा पता लगाने के लिए मैंने उनके पास आना - जाना बड़ा दिया और तब उसी से मुझे खबर लगी कि मेरी बहिन अहिल्या भी जिसके मरने की खबर शेरसिंह ने हम लोगों को दी थी, मरी नहीं बल्कि दारोगा या शिवदत्त की कैद में है.

इसके कुछ ही दिन बाद जब वह मालती वाला माभला हुआ तो मेरा शक और भी बड़ा और तहकीकात करने पर मुझे मालूम हुआ कि यह काम दारोगा, शिवदत्त और गदाधरसिंह का ही है, मैं इन लोगों की फिक्र में लगा और शायद कुछ कर भी डालता क्योंकि मैंने अपना शक गुलाबसिंह से कहा और उन्होंने इस मामले में मेरी मदद करने का वायदा किया पर अफसोस, गदाधरसिंह, दारोगा और शिवदत्त भी मेरी तरफ से गाफिल न थे बल्कि मुझे कब्जे में करने की फिक्र में पड़े हुए थे.

शायद उन्हें पता लग गया था कि मैं उनकी करतूतों का हाल जान गया हूं, नतीजा यह हुआ कि ऐन मौके पर जबकी नन्हों और गुलाबसिंह की मदद के कुछ कर गुजरने की उम्मीद कर रहा था, ऐयारों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया और तब से बराबर मैं कैदी ही बना रहा, अब आप लोगों की बदौलत छुट्टी मिली है.

इन्द्र:

तुम्हारे कैद से छूटने का किस्सा भी बड़ा विचित्र है जिसका पूरा हाल शायद तुम्हें मालूम नहीं है.

शेरअलीखां की लड़की गौहर का इसमें हाथ है, उसकी माँ के मरने के बाद उसका दिमाग कुछ खराब हो गया और सौतेली माँ से भी खटपट होने लगी, जिससे हकीमों की

राय से शेरअली ने उसे घूमने - फिरने की स्वतन्त्रता दे दी, किसी तरह जगह - जगह की खाक छानती हुई यह राजा शिवदत्त के पास जा पहुंची और कुछ दिन वहां रही.

वहीं शिवदत्त की जुबानी उसे मालूम हुआ शिवदत्त ने कामेश्वर को इसलिए अपने पास रख छोड़ा था कि वह समझता था कि इनके कब्जे में उस तिलिस्म की ताली है पर पीछे उसे मालूम हुआ कि उसकी ताली जमानिया की महारानी ने भूतनाथ को दे दी.

यह खबर सुन भूतनाथ से ताली लेने की फिक्र में शिवदत्त लगा मगर कुछ कर न सका था, इस गौहर ने वह काम पूरा करने का बीड़ा उठाया और इसके लिए कुछ ऐयार और ऐयारा लेकर वह निकली, भूतनाथ का आना - जाना नागर और मनोरमा के यहां बहुत होता है ऐसा सुन वह उनसे मिली तथा रामदेई और नन्हों से भी मिली.

बात - ही - बात में नन्हों से उसने सुना कि वह इन कामेश्वर पर आशिक थी और इनके मर जाने से दुनिया छोड़ बैठी है.

गौहर को यह बात मालूम थी कि ये मरे नहीं, जीते और शिवदत्त की कैद में हैं और साथ ही उसने यह भी सुन रखा था कि नन्हो को भूतनाथ के कई गुप्त भेद मालूम हैं, जिनकी बदौलत उस पर कब्जा किया जा सकता है, अस्तु भूतनाथ पर काबू कर शिवगड़ी की ताली उससे लेने की नीयत से उसने नन्हों को मिलाना उचित समझा.

उसने उससे कहा कि अगर वह (नन्हों) उसकी (गौहर की) मदद एक काम में करने की प्रतिज्ञा करे तो वह कामेश्वर को जीता - जागता उसे दिखला सकती है.

नन्हों को पहले तो इस बात पर विश्वास न हुआ कि ये जीते हैं मगर जब उसने जाना कि नहीं ये सचमुच मरे नहीं है और राजा शिवदत्त की कैद में हैं तो वह इनको पाने के लिए सब कुछ करने को तैयार हो गई.

भूतनाथ के सब भेद जो उसे मालूम थे उसने गौहर को बता दिए और कई अद्भुत और डरावनी चीजें भी इसे दी और बदले में गौहर ने इन कामेश्वर को शिवदत्त की कैद से छुट्टी दिला दी, उसके आदमी इन्हें बेगम के यहां पहुंचा गये.

पर भाग्यवश उसी रोज भूतनाथ का एक शागिर्द न जाने किस काम से वहां जा पहुंचा जो इन्हें निकालकर लामा घाटी में ले गया.

इनके एक दोस्त ने लामा घाटी से इन्हें छुट्टी दी और इनकी जगह किसी दूसरे को इनकी सूरत बना वहां छोड़ आया.

प्रभाकर:

वह कौन दोस्त था?

इन्द्र:

मैं अभी बताता हूं, पहले इनका किस्सा खत्म हो जाने दो.

बेगम और नन्हों के आदमी खोजते हुए लामा घाटी पहुंचे और वहां से इनके बदले इनकी सूरत वाले उस दूसरे आदमी को ले भागे मगर भूतनाथ के आदमियों ने देख लिया और लड़ाई हो पड़ी.

जिसमें कई आदमियों के साथ - साथ वह आदमी भी मारा गया जो इनकी सूरत बना हुआ था, लाचार नन्हों के आदमी उसकी लाश ही को उठा ले गये और नन्हों इन्हें पाकर भी न पा सकी, इससे उसका क्रोध भूतनाथ पर और भी बड़ा और उसने उसका नाश करने में कोई कसर न छोडी.

शिवगढ़ी की ताली की खोज में केवल शिवदत्त ही नहीं था बल्कि रोहतासगढ़ का राजा दिग्विजयसिंह भी था और इस काम के लिए उसने कई आदमियों के साथ शेरसिंह को लगा रखा था.

शेरसिंह को यह तो मालूम था कि शिवगढ़ी की ताली भूतनाथ के पास है पर वे उससे मांगना न चाहते थे और न उन्हें यही उम्मीद थी कि वह उनके मांगने से देगा.

अस्तु वह दूसरी तरह से उसे दस्तयाब करने की कोशिश में लगे थे.

अपना मतलब साधने के लिए वे भी इन्हीं - मनोरमा, नन्हों और गौहर से मिले और तब इन्हें (कामेश्वर को) छुट्टी दिलाई क्योंकि उन्हें यह शक हुआ कि अगर भूतनाथ इन्हें पहचान लेगा तो बिना जान से मारे न छोड़ेगा, इस सिलसिले में उन्हें मालूम हुआ कि नन्हों गोपालसिंह को भुलावा दे उनसे कोई तिलिस्मी किताब ले आई है अस्तु उन्होंने इन सभी को ही गहरा धोखा दिया और गौहर, सुन्दर और नन्हों को झांसा दे वह किताब अपने कब्जे में कर ली.

प्रभा:

मुन्दर का साथ इन सभी के साथ कैसे हो गया?

१.

देखिए सोलहवां भाग छठा तथा आठवा बयान.

रामचन्द्र के नाम से जिस आदमी का जिक्र हम कर आये हैं वह यही शेर सिंह थे और इन्हीं के हाथ में नन्हों ने वह तिलिस्मी किताब दी थी.

श्यामसुन्दर वगैरह वे सब रोहतासगड़ ही के ऐयार थे जिन्होंने नन्हों मुन्दर और गौहर की मदद से भूतनाथ को वह नाटक दिखाया था जिसका जिक्र सोलहवें भाग के आठवें बयान में आया है.

इन्द्र:

मुन्दर के बाप हेलासिंह से भूतनाथ पचास हजार रुपया और लोहगड़ी की ताली मांग रहा था और न देने पर लक्ष्मीदेवी वाले मामले और गुप्त कमेटी में उसके शामिल होने का भंडाफोड़ कर देने की धमकी दे रहा था इसीलिए मुन्दर भूतनाथ को मार डालने या उस पर काबू करने की फिक्र में पड़ गई थी और इस तरह पर इन तीनों कम्बख्तों का साथ हुआ था.

प्रभाकर:

शेरसिंह ने गोपालसिंह वाली तिलिस्मी किताब क्यों ली और अब वह कहां है?

इन्द्र:

शेरसिंह राजा दिग्विजयसिंह के यहां नौकर थे और वह नन्हों भी दिग्विजयसिंह के पास थी जहां यह न - जाने कैसे घूमती - फिरती पहुंच गई थी.

नन्हों को भी दिग्विजयसिंह ने शिबगड़ी की ताली लाने और जरूरत पड़े तो इस काम में शेरसिंह की मदद करने को कहा था मगर इन्हें उसकी मदद लेना मंजूर न था अस्तु ये भेष बदलकर उससे मिले और धोखा देकर उससे किताब ले ली.

वह किताब अब भी उन्हीं के पास है.

प्रभा:

यह सब हाल भी शेरसिंह की ही जुबानी आपको मालूम हुआ होगा?

इन्द्र:

हां, और इस सिलसिले में उनकी भी जान बाल - बाल बची.

जिस समय वे नन्हों, मुन्दर और गौहर से बातें कर रहे थे उसी समय भूतनाथ वहां जा पहुंचा और उसने बम का गोला फेंक उन सभी को उड़ा देना चाहा मगर शेरसिंह सम्भल गये.

एक तिलिस्मी रास्ते से वे तो बाहर निकल गये मगर नन्हों मुन्दर और गौहर वहां फंसी ही रह गईं जिसका नतीजा यह हुआ कि लोहगड़ी के साथ - साथ वे सब तीनों भी उड़ गईं और यह भी अच्छा ही हुआ नहीं तो वे सब शैतान अगर जीती रहतीं तो न - जाने क्या आफत वर्षा करतीं और उनकी बदौलत हम लोगों और राजा गोपालसिंह को भी न - जाने किन - किन मुसीबतों में पड़ना पड़ता.

भूतनाथ ने उनका नाश कर सिर्फ अपने ही सिर का जंजाल नहीं उतारा बल्कि हम लोगों के सिर पर से भी बड़ा भारी बोझ दूर कर दिया, अगर मुन्दर जीती रहती तो आज मैं यहां बेफिकी से बैठा आप लोगों से बातें न करता बल्कि इस समय गोपालसिंह के पास होता जो शादी का जश्न मना रहे होंगे.

प्रभाकर:

मगर लोहगड़ी उड़ाकर भी जब भूतनाथ बच गया तो क्या यह संभव नहीं है कि वे तीनों भी जीती रह गई हों! इन्द्र:

नहीं, यह मुमकिन नहीं, लोहगड़ी के अन्दर से निकलने वाली लाशें इसकी गवाह हैं.

वे तीनों अवश्य ही जान से मारी गई.

" नहीं, तुम्हारा ख्याल गलत है! " यह भारी और डरावनी आवाज यकायक चारों तरफ गूंज गई और सब लोग चौंककर इधर - उधर देखने लगे, कहीं कोई दिखाई न दिया और इन्द्रदेव ने ताज्जुब के साथ पूछा.

“ यह कौन बोला?

" " मैं! " यह आबाज और भी पास से आई थी और इसके बाद ही एक पटाखे की - सी आवाज हुई जिसके साथ - ही - साथ बहुत - सा धुंआ चारो तरफ फैल गया, थोड़ी ही देर में यह धुआं हल्का होकर उड़ गया और तब सभी ने तिलिस्मी शैतान को वहां खड़े पाया जिसने अपनी गूंजने वाली आवाज में कहा, " इन्द्रदेव, तुम धोखे में पड़ गये.

वह सब कार्रवाई दारोगा की थी जिसने भूतनाथ को चंग पर चढ़ा अपने और कई कैदियों के साथ - साथ मालती और प्रभाकरसिंह को भी साफ कर डालने की नियत से लोहगड़ी उड़वा दी मगर मुन्दर, गौहर और नन्हों को बचा ले गया, मुन्दर की शादी गोपालसिंह से हो गई बलभद्रसिंह ने जान से हाथ धोया और लक्ष्मीदेवी दारोगा की कैद में है, हो! हो !! हो! तुम अपने को बहुत ही चालाक लगाते हो पर समझ रखो कि हम लोगों के आगे तुम बिल्कुल नादान बच्चे हो! " सब लोग यह बात सुनते ही चौंक पड़े, खासकर इन्द्रदेव तो एकदम ही घबरा गये और चिल्लाकर बोले, " है! क्या यह बात सही है! " मगर उनकी बात का कोई जवाब नहीं मिला.

तिलिस्मी शैतान गायब हो चुका था.

दूसरा व्यान।

तिलिस्मी शैतान के गायब हो जाने के बाद क्षण - भर तक सन्नाटा रहा और सभी लोग अपने - अपने मन में तरह - तरह की बातें सोचने लगे मगर इसके बाद इन्द्रदेव ने कहा, " अगर इस आसेब का कहना सही है तो जरूर बड़ी भारी मुसीबत आ खड़ी हुई.

!! दलीपशाह बोले, “ मगर मुझे विश्वास नहीं होता कि यह ठीक कह रहा होगा.

" प्रभाकर:

कुछ मालूम नहीं होता कि यह शैतान कौन है और हम लोगों का दोस्त है या दुश्मन?

मेरा इसका तिलिस्म के अन्दर कई बार सामना पड़ चुका है और अब तो मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूं कि तिलिस्मी पोशाक पहने यह कोई जरूर ऐयार है, फिर भी मैं इसे

पहचानने में बिल्कुल असमर्थ हूं, इन्द्र:

यही ताज्जुब तो मुझे होता है और फिर यह भी मेरी समझ में नहीं आता कि यह तिलिस्म के अन्दर जहां हम लोगों का आना - जाना तक मुश्किल है किस तरह हर जगह बेधड़क पहुंच और निकल जाता है.

मगर खैर, यह चाहे जो भी हो और हमारा दोस्त हो या दुश्मन, इसमें शक नहीं कि अगर इसकी दी हुई खबर सही है और मुन्दर जीती ही नहीं रह गई बल्कि गोपालसिंह के साथ उसका व्याह भी हो गया है तो बहुत बड़े खौफ की बात है और गोपालसिंह की जान पर बड़ा भारी खतरा है, अब मैं एक पल भी यहां रुक नहीं सकता और इसी वक्त जमानिया के लिए रवाना होऊंगा.

आप सब लोग यहां रहिये और आराम कीजिये.

मैं जमानिया से लौटकर आप लोगों से मिलूंगा और तब आप लोगों को इस तिलिस्म से बाहर ले चलूँगा, अभी कुछ समय तक आप सभी का यहीं रहना मुनासिब है, क्यों शाहजी?

इतना कह इन्द्रदेव ने दलीपशाह की तरफ देखा जो तुरन्त बोल उठे, " बेशक कम - से - कम मालती, अहिल्या, भुवनमोहिनी को तो तब तक जमाने के सामने आना ही न चाहिये जब तक कि दारोगा, हेलासिंह और शिवदत्त खुले हुए और स्वतन्त्र हैं.

वे सब इनके जीते रहने की खबर पाते ही इनकी जान के दुश्मन हो जायेंगे और इनका रहना मुहाल कर देंगे, बल्कि मेरी तो यह राय थी कि ये कामेश्वर, दयाराम तथा प्रभाकरसिंह भी अपनी - अपनी स्त्रियों के साथ अभी दुनिया की निगाहों से हटे ही रहते तो अच्छा था, यद्यपि मैं इस बात पर जोर नहीं दे सकता.

" दयाराम ने यह सुन कहा, " नहीं - नहीं, आपका कहना बहुत ठीक है और हम लोगों को जमाने के हाथों जैसे - थपेड़े खाने पड़े हैं उनको याद रखते हुए हमें जमाने से कोई लगाव भी नहीं रह गया है, मगर इन बातों पर पीछे विचार होता रहेगा.

(इन्द्रदेव की तरफ देखकर) आप इस वक्त जाएं और जहां तक जल्द हो सके बेचारे गोपालसिंह की हिफाजत का इन्तजाम करें.

मैं ईश्वर से सिर्फ यही मनाता हूँ कि जो खबर हम लोगों ने सुनी है वह सही न निकले! " थोड़ी देर कर कुछ और सलाह - मशविरा होता रहा जिसके बाद इन्द्रदेव दलीपशाह को लेकर एक तरफ चले गये, और यह सभा बरखास्त हुई, औरों को छोड़ हम प्रभाकरसिंह के साथ चलते हैं जो सभी के साथ उस तरफ नहीं गये जिधर वह शेरों वाला कमरा तथा वह बहुत ही आलीशान इमारत थी जिसमें इन लोगों का डेरा था बल्कि उन लोगों से कुछ कह - सुनकर दाहिनी तरफ को घूम गये जिधर एक सुहाना बाग और गुंजान लताकुंज था.

इस समय बाग में जगह - जगह पर रोशनी हो रही थी अतएव अंधकार से कही कोई तकलीफ न थी.

हम नहीं कह सकते कि प्रभाकरसिंह का इधर आने में क्या अभिप्राय था या वे कहां जाना चाहते थे पर चालीस - पचास कदम से ज्यादा न गये होंगे कि उन्हें पीछे से यह आवाज सुनाई पड़ी, " जरा ठहरिये.

" वे चौंककर रुक गये और पीछे देखा तो सरस्वती पर निगाह पड़ी जो लपकती हुई उन्हीं की तरफ आ रही थी.

सरस्वती अकेली न थी बल्कि उसके पीछे - पीछे एक औरत और भी थी जो चाल - ढाल तथा पोशाक से साथियों की लौंडी या सहेली मालूम होती थी.

प्रभाकरसिंह इसे देखते ही चौंककर रुक गये और सरस्वती से बोले, “ क्या है?
"

सरस्वती:

किसी की भेजी हुई यह औरत यहां आई है जो कहती है कि तिलिस्म की महारानी ने मुझे भेजा है और आपको कुछ सन्देश कहा है, इसका बयान है कि आप इसे पहचानते हैं और सूरत देखते ही सब बात समझ जायेंगे.

प्रभाकरसिंह ने यह सुन गौर से उस औरत की तरफ देखा और पूछा, " क्या तुम्हारा नाम संज्ञा है! " उसने हाथ जोड़कर कहा, " जी महाराज! और अपनी स्वामिनी की भेजी हुई

मैं यह पूछने आई हूं कि क्या वे भी दस मिनट के लिए महाराज के दर्शन कर सकेंगी! " प्रभाकर ०:

(ताज्जुब से) तुम्हारी स्वामिनी कौन?

संज्ञा:

वही तिलिस्मी महारानी जिनके साथ श्रीमान का विवाह हुआ था.

प्रभाकर:

क्या वे अभी तक जीती हैं! क्या वे केवल एक तिलिस्मी पुतली नहीं थीं! और क्या मैंने भूतनाथ की मूरत पर बलि चढ़ाकर उनकी वह लीला समाप्त नहीं कर दी थी! संज्ञा:

(दांत तले जीभ दबाकर) शिव शिव शिव! यह महाराज क्या कह रहे हैं! महाराज के वियोग में कुछ व्यथित और दुःखी होती हुई भी वे कुशल से हैं और बिल्कुल स्वस्थ हैं! प्रभाकर:

(एक लम्बी सांस खींचकर) आश्चर्य की बात है कि तिलिस्म तोड़ चुकने पर भी ये तिलिस्मी पुतलियां अभी तक मेरी जान के पीछे पड़ी हुई हैं.

हे भगवान क्या इनसे मेरा छुटकारा न होगा! प्रभाकरसिंह ने यह बात कुछ ऐसे लहजे में कही कि सरस्वती सुनते ही खिल खिलाकर हंस पड़ी और बोली, " यह क्या माभला है जो आप इस तरह पर निराश और बदगुमान हो रहे हैं?

कुछ मुझे भी तो बताइये, शायद मैं आपकी मदद कर डूं.

" प्रभा:

माभला और कुछ नहीं सिर्फ इतना ही है कि जिस तिलिस्म को मैंने तोड़ा उसमें ठीक मनुष्य की तरह बोलने और काम करने वाले पुतलों और पुतलियों की ऐसी भरमार है कि मैं तो परेशान हो गया, उन्हीं में एक कोई तिलिस्मी महारानी भी थी जिसके साथ मेरे व्याह का नाटक रचा गया था!

उस पुतली को बाद में मैंने एक मुरत पर बलि चड़ाकर तिलिस्म का आखिरी हिस्सा तोड़ा, मगर अब यह कह रही है कि वह अभी तक जीती है.

संज्ञा:

(सरस्वती की तरफ देख हाथ जोड़कर) जी हां, मैं बहुत ठीक कहती हूं और इसके सबूत में उनकी दी हुई यह अंगुठी पेश करती हूं जो उन्होंने (प्रभाकरसिंह की तरफ बताकर) महाराज को अपनी प्रतिज्ञाओं का स्मरण कराने के लिए चिन्ह की तरह पर मेरे हाथ भेजी है इतना कहकर संज्ञा ने एक अंगूठी निकाली और सरस्वती के हाथ पर रख दी जो उसे देखते ही चौंककर बोली, " जीजाजी, इस बात से आप इन्कार नहीं कर सकते कि यह अंगूठी बेशक आपकी ही है क्योंकि मैं इसे बराबर आपकी उंगली में पड़ी देखा करती थी! " प्रभाकरसिंह ने भी इस अंगूठी को देखा और पहचाना.

बेशक यह वही अंगूठी थी जो उन्होंने व्याह के बाद उस तिलिस्मी महारानी की उंगली में पहना दी थी मगर यही अंगूठी तो उन्होंने उस पुतली की उंगली में पड़ी देखी थी जिसे ' भूतनाथ की मूरत पर बलि चढ़ाया.

फिर यह यहां कैसे आ गई?

यह सब क्या जंजाल है! प्रभाकरसिंह एकदम घबरा - से गये और तरह - तरह की बातें सोचने लगे, मगर सरस्वती ने फिर कहा, " क्यों आप सोचने क्या लगे.

क्या यह अंगूठी आपकी नहीं है?

क्या यह औरत बिल्कुल झूठ कह रही है! " जिसे सुन वे बोले, " नहीं, यह अंगूठी अवश्य मेरी ही है और इसको जरूर मैंने उस औरत को दिया था जिसके साथ मेरा विवाह हुआ और जो तिलिस्म की महारानी के नाम से मशहूर थी, मगर साथ ही यह बात भी मैं बिल्कुल सही कह सकता हूं कि वह कोई मनुष्य या स्त्री नहीं.

केवल एक तिलिस्मी पुतली थी और उसी का खून एक मूरत पर लेप कर मैंने तिलिस्म का आखिरी हिस्सा तोड़ा था.

"

सरस्वती ने यह बात सुन ताज्जुब से उस औरत की तरफ देखा और कहा, " और तुम कहती हो कि वे जीती - जागती मौजूद है?

" संज्ञा ने जवाब दिया, “ जी हां, निःसंदेह! " सरस्वती प्रभाकरसिंह से बोली, “ तब सबसे अच्छा तो यही होगा कि आप खुद जाकर उससे मिलें और अपना शक दूर कर लें, अगर इसका कहना सही है और वह तिलिस्मी महारानी अब तक जिन्दा है तो फिर किसी तरह अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते! जिसके साथ आपने व्याह किया , जिसको अपनी जीवन - संगिनी बनाया, उसे एकदम छोड़कर अलग हो रहना आपके लिए किसी तरह भी उचित नहीं हो सकता! " प्रभाकरसिंह को चुप देख सरस्वती फिर बोली, “ मेरी समझ में नहीं आता कि आप इतना घबरा क्यों रहे हैं?

अगर आप अकेले जाते डरते हों तो कहिये मैं आपके साथ चली चलूं या इन्दु बहिन को साथ कर दूं.

(हंसकर) मगर यह तो बताइये, हम लोगों से आपने अपने व्याह की खबर छिपाई क्यों?

अगर कह दिये होते तो हम लोग भी न खुशी के जश्न में शरीक हो जाते! " प्रभाकरसिंह चिढ़कर बोले.

" मेरी जान आफत में पड़ी है और तुमको मजाक सूझा है, (संज्ञा से) अच्छा, चल तू किधर चलती है.

मगर याद रखियो, तेरी बात झूठ निकली और यह सब धोखा ही साबित हुआ तो और जो कुछ होगा सो होगा, कम - से - कम तुझे मैं कदापि जिन्दा न छोडूगा.

" अपनी गर्दन झुकाकर संज्ञा ने कहा, ' मेरी बात झूठ निकली तो खुशी से मैं अपना सिर देने को तैयार रहूँगी.

" और तब " महाराज, इधर से आवे.

" कहकर आगे को हो ली, प्रभाकरसिंह ने उसके पीछे कदम रखा.

सरस्वती ने कुछ कहने को मुंह खोला, पर फिर न - जाने क्या समझकर चुप रह गई और जब प्रभाकरसिंह कुछ आगे बढ़ गये, तो दौड़ती हुई एक तरफ को निकल गई.

तेजी के साथ उस बाग को तय करती हुई संज्ञा एक कोने में पहुंची जहां छोटा - सा एक बुर्ज बना हुआ था.

इस बुर्ज के नीचे एक छोटी कोठरी भी बनी हुई थी मगर उसके अन्दर वह न गई बल्कि उसी जगह दीवार में किसी तरकीब से उसने एक रास्ता पैदा किया.

आगे - आगे संज्ञा और पीछे - पीछे प्रभाकरसिंह उस रास्ते के अन्दर चले गये और उनके जाते ही वह राह बन्द हो गई.

प्रभाकरसिंह ने अपने को इमारतों के एक नये ही सिलसिले में पाया जिसमें जगह - ब - जगह रोशनी हो रही थी और कहीं कहीं कुछ लोग चलते - फिरते भी नजर आ रहे थे मगर रात का वक्त होने के कारण वे यह निर्णय न कर सकते थे कि यहाँ वे कभी आये हैं या नहीं.

यद्यपि इस बात का शक उन्हें जरूर होता था कि इस जगह वे पहले आ चुके हैं फिर भी उन्होंने इस पर ध्यान न दिया.

जाने वे किस तरदुद में पड़े हुए थे कि सिवाय नीचा सिर कीये संज्ञा के पीछे - पीछे चले जाने के उन्होंने एक दफे भी सिर उठाकर इधर - उधर नहीं देखा और तब तक बिना कुछ पूंछे - ताछे चुपचाप उसके पीछे - पीछे चले गए जब तक कि एक दरवाजे के पार पहुँच बह रुक न गई और यह कहकर एक बगल हो गई " महाराज, इस कमरे में पधारें! " प्रभाकरसिंह ने अपने सामने रेशम का एक किमती पर्दा लटकता देखा जिसमें मोतियों की झालर लगी हुई थी.

एक क्षण के लिए उन्होंने अपने चारों तरफ देखा और तब एक लम्बी सांस ले पर्दा हटा भीतर की ओर घुसे.

एक बहुत बड़ा कमरा तरह - तरह के कीमती सामानों से सजा हुआ नजर आया.

जिसके बीचोंबीच एक जड़ाऊ सिंहासन रखा हुआ था.

कमरे में काफी रोशनी हो रही थी, जिसमें चारों तरफ निगाह फेरकर भी उन्हें किसी गैर की सूरत दिखाई न पड़ी और वे सोचने लगे कि शायद इस कमरे के बाद कोई दूसरा कमरा होगा जिसमें उन्हें जाना पड़ेगा.

मगर इन्हें इस कमरे में और कोई दूसरा रास्ता या दरवाजा भी नजर न आया, यहाँ तक कि जब उन्होंने पीछे की तरफ देखा तो उस दरवाजे का भी कोई - नाम - निशान न

पाया जिसकी राह अभी - अभी वे यहाँ पहुँचे थे.

ताज्जुब और घबराहट के साथ वे बोले, " जरूर मुझे धोखा दिया गया! " मगर उसी समय यकायक रुक गए क्योंकि कहीं से आवाज आई, " महाराज, खड़े क्यों हैं?

आइये और इस सिंहासन पर विराजिये! " प्रभाकरसिंह ताज्जुब से बोले, " क्या मेरे सिवाय और भी कोई यहाँ मौजूद है?

अगर हो तो मेरे सामने आये !! "

" जो आज्ञा महाराज की! " ये शब्द सुनाई पड़े और साथ ही उस सिंहासन के बगल में एक छोटी - सी शिखा अग्नि की इस तरह की दिखाई पड़ी मानों कोई दीया जल रहा हो.

शिखा देखते - देखते बड़ी होने लगी और कुछ ही देर में इतनी बड़ी हो गई कि भयानक आग की ज्योति वहाँ पर दिखाई पड़ने लगी जिसका ऊंचाई छः सात हाथ और पेटा दो - तीन हाथ से कम न होगा और जिसकी चमक आँखों में चकाचौंध पहुंचा देने वाली थी.

मगर एक दफे बढ़कर वह चमक तुरन्त ही कम होने लगी और उस जगह एक अस्पष्ठ आभा किसी व्यक्ती की दिखाई पड़ने लगी.

जैसे - जैसे अग्निशिखा कम होती गई वह स्त्री - मूर्ति स्पष्ट होती गई और कुछ ही देर बाद बड़े ही किमती गहने - कपड़ों से सजी हुई वहीं तिलिस्मी महारानी वहां खड़ी दिखाई पड़ने लगी.

इस समय भी उसकी सूरत - शक्ल और पोशाक वैसी ही थी जैसी कि प्रभाकरसिंह पहले देख चुके थे ।

अस्तु वे उसे देखते ही पहचान गये और बोल उठे, “ हैं, क्या तुम ही वह तिलिस्मी महारानी हो जिसके साथ मेरा विवाह हुआ था?

" तिलिस्मी महारानी ने बहुत नम्रता के साथ प्रभाकरसिंह के चरण छूकर के उन्हें प्रणाम किया और तब कहा, “ जी हां, दासी ही है! पर महाराज को सन्देह क्यों हो रहा है?

" प्रभाकरसिंह बोले, " मैंने तिलिस्म में तुम्हारी ही शक्ल - सूरत की एक पुतली को देखा था जिसे उसी समय मुझे एक मूरत पर बलि चढ़ा देना पड़ा और इसी कारण मैं

समझ रहा था कि अब तुमसे देखाभाली नहीं हो सकेगी.

मगर तुम यह तो बताओ कि तुम वास्तव में मनुष्य हो या कोई चलती - फिरती तिलिस्मी पुतली ही हो! " महारानी हंसकर बोली, " नहीं महाराज, मैं सचमुच की स्त्री हूं और कोई तिलिस्मी तमाशा नहीं हूं.

हां, तब यह जरूर है कि तिलिस्म के इस हिस्से में जितनी पुतलियां काम कर रही हैं उन सबकी सूरत मेरी ही जैसी बनी हुई है.

पर ऐसा क्यों है यह मैं नहीं कह सकती.

" १.

देखिए भूतनाथ उन्नीसवां भाग, तीसरा बयान.

प्रभाकर:

केवल यही नहीं, उन सबकी और साथ - साथ तुम्हारी भी सूरत मैं ठीक अपनी मालती जैसी पाता हूं, इसका क्या सबब?

महा:

इसके बारे में कुछ बता नहीं सकती, मगर दो मनुष्यों की सूरत - शक्ल एक - सी होना कोई असम्भव तो नहीं है.

प्रभाकर:

क्या तुम बता सकती हो कि मालती अब कहाँ हैं?

महा:

हा - हां उनका विवाह उसी दिन मेरे ही एक सम्बन्धी के साथ हो गया जिस दिन कि मैं आपकी दासी बनी और उनका पति उनको अपने राजमहल में ले गया जहां वे इस समय आनन्द कर रही होंगी.

आप अगर चाहें तो मैं आपकी उनसे भेंट करा सकती हूं क्योंकि वह यहां से दूर नहीं है.

मगर हैं, यह क्यां महाराज का चेहरा इस बात को सुन उतर क्यों गया?

क्या महाराज को इस खबर से किसी तरह का दु:ख पहुंचा?

मेरी समझ में तो पहले की बनिस्बत अब वे बहुत ज्यादा प्रसन्न और सुखी हैं!
प्रभाकरसिंह ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया.

मगर इसमें कोई शक नहीं कि महारानी के इस जवाब ने उनके कलेजे पर मुक्का मारने का - सा काम किया था, लड़खड़ाते हुए वे आगे बड़े और उसी सिंहासन पर जाकर बैठ गये.

उनका सिर लटक गया और वे लम्बी - लम्बी सांस लेने लगे.

इस समय उनकी सूरत से साफ प्रकट हो रहा था कि उन्हें बड़ी ही भारी निराशा हुई है और वे बड़े ही कष्ट में है.

मगर प्रभाकरसिंह की यह हालत देखते ही महारानी का भाव एकदम बदल गया.

वह यकायक यह कहती हुई उनके पैरों पर गिर पड़ीं- “ नहीं - नहीं, मैं आपको किसी तरह धोखा नहीं दे सकती और न किसी प्रकार की मनोव्यथा ही पहुंचा सकती हूं!
महाराज, आपकी दासी मालती ही आपके सामने है.

" प्रभाकरसिंह पर मानों बिजली गिरी.

वे चौंककर, बोले, " यह क्या बात! " और तब महारानी को पैरों पर से उठाते हुए बोले,
“ सच बताओ तुम कौन हो?
"

पर उसी समय यकायक किसी तरह की आहट सुन उन्होंने अपना सिर घुमाया, ताज्जुब के साथ उन्होंने देखा कि उस कमरे के पूरब तरफ वाली दीवार में लगा एक बड़ा आईना एक बगल को हट गया है और उसके अन्दर से इन्दुमति चली आ रही है जो सीधी इन दोनों की तरफ बड़ी और महारानी की तरफ देखती हुई बोली, “ छी:

-छी:

बहिन, तुमसे एक जरा सा भेद थोड़ी देर तक भी छिपाकर रखा न गया.

" प्रभाकरसिंह इन दोनों की बातें सुन और ताज्जुब में पड़ गये और कभी इन्दुमति तथा कभी महारानी की तरफ देखते हुए बोले, " आखिर कोई मुझे यह तो बताएगा कि बात क्या है या सब कोई मेरी जान के ही ग्राहक बनें रहेंगे !! " इन्दुमति यह सुन हंसती हुई बोली, " जब इन्होंने सब गुड़ - गोबर कर ही दिया तो अब छिपाने से क्या फायदा! लीजिए सुनिये, यह और कोई नहीं आपकी मालती ही हैं जिन्हें न पाकर आप इतना उदास हो रहे थे! " प्रभाकरसिंह ताज्जुब के साथ उसका हाथ थामकर बोले, " क्या सचमुच! " इन्दु ने कहा, " हां, सचमुच! " और प्रभाकरसिंह ने फिर पूछा.

" और इनका व्याह किसी से हुआ नहीं?

" इन्दु बोली, " जी, व्याह तो जरूर हुआ पर किसी दूसरे से नहीं, आप ही से हुआ! " प्रभाकर ०:

तब मुझे इतने समय तक भ्रम में क्यों डाल रखा गया?

इन्दु ०:

आपने बिना मेरी इजाजत अपना दूसरा ब्याह कर लिया इसी की सजा आपको दी गई !! प्रभाकरसिंह यह सुनते ही हंस पड़े और दोनों को लिए सिंहासन पर बैठते हुए बोले, " अच्छा, सही - सही बताओ कि ऐसा क्यों किया गया.

” मालती ने तो जो सिर नीचा किया तो फिर जुबान ही नहीं खोली मगर इन्दुमति बोली, “ सुनिये, मैं संक्षेप में सब कहे देती हूँ, विस्तार से फिर इन्हीं से सुनिएगा.

आप तो उस बाबली में ही रह गए और ये उस सुरंग में घुसकर वहां पहुंच गई जहां हम लोग क़ैद थे.

और जहां का तिलिस्म तोड़ इन्होंने हमें कैद से छुड़ाया.

भाग्यवश उसी समय वहां शेरसिंह रणधीरसिंहजी को लेकर पहुंच गए.

आप जानते ही होंगे कि रणधीरसिंह हम सभी के बुजुर्ग हैं.

उनको किसी तरह इन लोगों यानी दयाराम, कामेश्वर, भुवनमोहिनी, अहिल्या, मालती आदि के जीते रहने की खबर लग गई थी और तिलिस्म के अन्दर उनकी उन सभी से भेंट कराने के ख्याल से ही शेरसिंह उन्हें अपने साथ लाए थे.

वे वहां इन लोगों से तथा मुझसे मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और उसी जगह उन्होंने आज्ञा दी कि इनका (मालती का) विवाह आपके साथ तुरन्त कर दिया जाए.

हम लोग सब - के - सब कोई भी तब तक तिलिस्म के बाहर न निकलें जब तक कि बाहर मैदान दुश्मनों से खाली न हो जाए! उनकी आज्ञानुसार ही तिलिस्म में आपका ब्याह इनके साथ किया गया.

बस इतनी ही तो बात है.

" प्रभाकर:

लेकिन जब ऐसा ही था तो यह सब ऊटक नाटक रचने की क्या जरूरत थी?

इन्दु::

जमना, सरस्वती, अहलया वगैरह आपकी सालियां आपके साथ मजाक करना चाहती थीं और मजाक का वक्त तो अब आया था पर इन्होंने सब चौपट ही कर दिया! प्रभाकर:

तब फिर इन्हीं की शक्ल की महारानी और तिलिस्मी पुतलियां बगैरह क्यों बनाई गई?

इन्दु:

इनकी इस जिद पर कि मैं महाराज को (आपको) कदापि किसी तरह का धोखा नहीं दे सकती और अगर विवाह करना ही पड़ा तो अपनी असली सूरत में ही करूंगी, किसी बनावटी सूरत में नहीं.

प्रभाकर:

ओ हो, यह बात है! अब मेरी समझ में सब बातें आईं! मालती से सच्चाई कायम रखते हुए मेरे साथ दगा की जा रही थी.

खैर, समझ लूंगा.

१.

देखिए भूतनाथ अट्ठारहवां भाग, दूसरा बयान.

मालती ने तो शरमाकर सिर नीचा कर लिया मगर उसी समय किसी ने प्रभाकरसिंह की बातों का जबाब दिया, " आप भी तो बहिन इन्दु के साथ दगा कर रहे थे! " उन्होंने चौंककर सिर घुमाया और देखा कि जमना, सरस्वती, भुवनमोहिनी और अहिल्या चली आ रही हैं जिन्होंने वहां पहुंच मालती से कहा, " छी:

बहिन, हम लोगों का सारा मजा तुमने किरकिरा कर दिया.

अगर हम लोग जानतीं कि तुम इतने कमजोर दिल की निकलोगी तो कभी तुम्हें यहां न भेजती.

तीसरा व्यान।

अब वह जमाना आ गया है जब दारोगा और हेलासिंह की बदौलत लक्ष्मीदेवी की जगह मुन्दर को जमानिया के राजमहल में दाखिल हुए खासा समय हो गया था और वह गोपालसिंह के दिल पर कब्जा करने के साथ ही अपनी हुकूमत और धाक भी बढ़ाने की कोशिश करने लग गई थी.

लक्ष्मीदेवी की शादी के समय जो घटनाएं हुईं, किस तरह मुन्दर के साथ लक्ष्मीदेवी का अदल - बदल हुआ, बलभद्रसिंह किस तरह से दारोगा की कैद में गये और लक्ष्मीदेवी को किस - किस तरह के दु:ख उठाने पड़े यह सब हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में खुलासे तौर पर लिखा जा चुका है, अस्तु इस जगह हम वह सब कुछ भी न लिखकर सिर्फ वे ही बातें लिखेंगे जिनसे हमारे किस्से का सम्बन्ध है या जिनके लिखे बिना सिलसिला ठीक नहीं होगा अथवा जो बातें चन्द्रकान्ता सन्तति में प्रकट होने से रह गई हैं.

दिन लगभग पहर भर बाकी रह गया है.

सूर्यदेव तेजी के साथ अस्ताचल की तरफ चले जा रहे हैं और ऊँचे - ऊँचे पेड़ों ने अभी से उनकी आखिरी किरणों को अपनी डालियों में उलझाना शुरू कर दिया है जिसके कारण उन्हें यह मौका नहीं मिलता कि घने जंगल की जमीन तक पहुंच सकें जिसके अन्दर से दो औरतें घोड़ों पर सवार चली जा रही हैं.

यद्यपि इस समय दोनों ही के चेहरे नकाब से ढंके हुए हैं फिर भी हम इनके पहचानने में धोखा नहीं खा सकते क्योंकि ये दोनों ही हमारे पाठकों की जानी - पहचानी गौहर और नन्हों है.

इन दोनों का लक्ष्य इस समय अजायबघर है और इनका इरादा जल्द वहां पहुंच जाने का मालूम होता है क्योंकि बीच बीच में बातें करना छोड़ ये अपने घोड़ों की तरफ ध्यान देती हैं जो इस घने जंगल में मुश्किल से रास्ता पाते हुए उतना तेज नहीं चल सकते जितना कि उनके सबार चाहते हैं और इसीलिए हमारे लिए भी यह सम्भव है कि हम इनके साथ होकर इनकी बातें सुन सकें.

आगे बढ़ आइये और सुनिए कि ये क्या बातें कर रहीं है, एक नीची डाली से अपना सिर बचाती हुई नन्हो ने कहा, " सखी गौहर, सच तो यह है कि तुमने मुझे गहरा धोखा दिया.

तुमने मुझे विश्वास दिलाया था कि कामेश्वर जीते हैं और इसलिए उसको पुनः पाने की लालच से मैंने वे सब चीजें तुम्हारे हवाले कर दी थीं जिन्हें मैं जान रहते कभी जाने न देती और जो भूतनाथ पर काबू करने की नीयत से मैंने बड़ी मेहनत से इकट्ठी की थीं.

कामेश्वर की तो मुझे शक्ल देखने को मिली ही नहीं उल्टा अब मुझे विश्वास हो गया है कि तुमने उस मामले में मुझसे बिल्कुल गलत बात कही और तुम्हारे ही सबब से खुद मेरी जान भी आफत में पड़ गई.

गौहर:

(हंसकर) तब शायद तुम यह भी समझती होगी कि कामेश्वर जीता नहीं था?

नन्हों:

बेशक मैं यही समझती हूं.

मेरे ख्याल में तुमने राजा शिवदत्त के साथ मिलकर मुझसे वे सब चीजें ले लेने के इरादे से ही यह जाल रचा.

गौहर:

अभी थोड़ी ही देर में तुम्हारा यह भ्रम दूर कर दूंगी और तुम्हें विश्वास दिला दूंगी कि वह कैदी कामेश्वर ही था जिसे राजा शिवदत्त के आदमी बेगम के यहां पहुंचा गये थे.

केवल यही नहीं बल्कि इस बात को भी तुम जान जाओगी कि वह फिर भी मारा नहीं गया बल्कि अभी तक जीता है और खुद तुम्हारे ऐयारों ने गहरा धोखा खाया जो तुमसे यह कहा कि वह भूतनाथ या उसके शागिर्दों के हाथ मारा गया, नन्हों:

(चौंककर) क्यों कामेश्वर अब भी जीता है?

गौहर:

हां, और यह बात खास दारोगा साहब की जुबानी मैंने सुनी है.

यही नहीं, अगर तुम्हारी किस्मत तेज हुई तो तुम अब भी उस पर काबू पा सकती हो

नन्हों:

(अफसोस की मुद्रा से सिर हिलाकर) ओफ मगर मैं तुम्हारी इस बात को सही नहीं मान सकती !! गौहर:

यदि अभी नहीं तो थोड़ी देर बाद तुम्हें इस पर शक करने का कोई कारण न रह जाएगा, बस हम लोगों के अजायबघर तक पहुंचने की बात है.

मगर हमें देर हो रही है, कहीं ऐसा न हो कि वहां तक पहुंचने के पहले ही अंधेरा हो जाय और हमें भयानक जंगल में रात के वक्त भटकना पड़े, अपना घोड़ा तेज करो और रोशनी रहते निकल चलो.

दोनों ने बातें करना बन्द कर अपने - अपने घोड़े तेज किये.

लगभग घण्टे के अन्दर ही ये अपने ठिकाने पर पहुंच गई और अजायबघर की सफेद इमारत इन्हें सामने दिखाई पड़ने लगी.

तालाब वाला पुल पार करते हुए गौहर ने नन्हों से कहा, " हम लोग बड़े वक्त पे पहुंचे.

फाटक पर रथ खड़ा है.

मालूम होता है दारोगा साहब जाना ही चाहते हैं, अगर वे चले गये होते तो बड़ी मुश्किल होती! बात - की - बात में ये लोग फाटक के पास जा पहुंचे और अपने - अपने घोड़े से

उतर उनकी लगाम पेड़ों की डालियों से अटकाने के बाद सीढ़ियों की तरफ बड़ी मगर अभी आखिरी सीड़ी तक न पहुंची होंगी कि एक आदमी ने जो वहां मौजूद था इनका रास्ता रोका और पूछा, " आप लोग कौन हैं और कहां जाना चाहती हैं?

" गौहर ने यह सुन एक दफे सिर से पैर तक उस आदमी को देखा और तब जवाब दिया, " हम लोग दोस्त हैं और दारोगा साहब से मिलना चाहते हैं, उस आदमी ने यह सुन कहा, " मगर अफसोस है कि इस वक्त उनसे मुलाकात नहीं हो सकती, वे बहुत ही जरूरी काम में मशगूल हैं और उनका हुक्म है कि इस वक्त किसी की भी इत्तिला उनसे नहीं की जाए.

" गौहर और नन्हों ने यह सुन एक - दूसरे की तरफ देखा और तब कुछ मुस्करा कर गौहर ने अपनी कमर से कोई चीज निकाली जिसे उस आदमी के हाथ में देते हुए उसने कहा, " अच्छा, तुम यह चीज उन तक पहुंचा दो.

" " बहुत अच्छा.

" कह कर उसने वह चीज ले ली और इन दोनों को वहीं रहने को कह भीतर चला गया.

ये दोनों आपस में बातें करती हुई उसी जगह टहलने लगीं मगर इन्हें ज्यादा देर रुकना न पड़ा और वही आदमी पुनः इनके पास आकर बोला, " दारोगा साहब ने कहा है कि आप दोनों थोड़ी देर तक रुक जाएं मैं अपने काम से खाली होकर तुरन्त आता हूं, तब तक आइये इधर कमरे में आकर बैठिये.

"

उस आदमी ने इन दोनों को बीच बाले कमरे में ले जाकर बैठा दिया जो इस समय मामूली तौर से सजा हुआ था और तब बाहर निकल गया.

गौहर एक तस्वीर की तरफ जो वहां लगी हुई थी दिखाकर नन्हो से कुछ कहना ही चाहती थी कि इसी समय एक पर्दा हटा और उसके अन्दर से मनोरमा निकलकर उनके पास आ पहूंची जिसे देखते ही गौहर ने कहा, " अहा, अरी सखी तुम कहां! मगर आज यह नया रंग - डंग क्या हम लोग देख रही हैं?

" उसके बगल में बैठती हुई मनोरमा ने कहा, " दारोगा साहब एक बहुत ही जरूरी काम में फंसे हुए हैं और मुझे इसलिए भेजा है कि तुम दोनों को रोक रखूं जिसमें तुम कहीं नाराज हो चली न जाओ.

इतना कहकर वह मजाक के साथ हंसी और गौहर ने भी हंसते हुए जबाब दिया.

" मैं तो कभी नाराज हो ही नहीं सकती, हां ये नन्हों बीबी नाराज हो जाएं तो भले ही, इस समय भी ये बड़ी मुश्किल से मेरे साथ आई थीं.

किसी तरह आती ही न थीं.

" मनोरमा:

ऐसा क्यों?

(नन्हों से) क्यों सखी, क्या गौहर सही कह रही है?

नन्हों:

(मुस्कराकर) इस झूठी की बात का तुम्हें विश्वास हो सकता है?

भला जिन दारोगा साहब की बदौलत मेरी जान बची क्या उन्हीं से मैं किसी तरह नाराज भी हो सकती हूँ?

मैं तो खुद अपनी मर्जी से सिर्फ उन्हें धन्यवाद देने यहां आई हूँ.

मनोरमा:

हा - हां ठीक याद आया! मैं तुम दोनों को मुबारकबाद देना तो भूल ही गई क्योंकि मैंने सुना है कि तुम्हें भूतनाथ ने अपने चंगुल में फंसा लिया था और दारोगा साहब अगर वक्त पर पहुंच न जाते तो शायद तुम लोगों की जान न बचती.

यह बात सही है न?

नन्हों:

बिल्कुल सही है, हम लोग तीनों आदमी, मैं, गौहर और (धीरे से) मुन्दर लोहगढ़ी के भीतर एक दोस्त के साथ कुछ सलाह - मशवरा कर रहे थे कि उसी समय कम्बख्त

भूतनाथ आ पहुंचा और उसने हम लोगों को बम के गोले से उड़ा देना चाहा.

कम्बख्त को वहां का रास्ता भी न - जाने किस तरह मालूम हो गया था.

मगर क्या तुम्हें यह किस्सा नहीं मालूम?

गौहर:

भला इन्हें न मालूम होगा?

ये तो दारोगा साहब की जान ही ठहरीं!

मनो:

नहीं नहीं, मैं सच कहती हूं कि मुझे पूरा हाल बिल्कुल नहीं मालूम, क्योंकि उस घटना के बारे में मेरी दारोगा साहब से एक बार भी खुलकर बात न हुई.

आज मैंने सोचा भी था कि पूछूंगी तो जब से मैं आई हूं वे ऐसे काम में मशगूल हैं कि मुझसे दो बातें करने का भी उन्हें समय नहीं मिल रहा है.

गौहर:

आखिर क्या माभला है?

वे किस काम में पड़े हुए हैं?

क्या हम लोगों के जानने लायक वह नहीं है?

मनो:

(कुछ हिचकिचाहट के साथ) मैं बता तो सकती हूं पर यही डर है कि दारोगा साहब कहीं नाराज न हो जाएं, गौहर:

तो हम लोग भला उनसे कुछ कहने थोड़े ही जाएँगे (अफसोस का मुंह बनाकर) बहिन, तुम भी अब हम लोगों से दुराव करने लगी.

मनो:

(प्यार से गौहर का हाथ पकड़कर) नहीं - नहीं, नाराज न हो, मैं बताये देती हूं पर याद रखना, जीते जी किसी से कहना नहीं.

बात यह है कि आज मुन्दर दारोगा साहब से मिलने यहां आई है.

दोनों:

(चौंककर) हैं, मुन्दर! उसे राजा साहब ने महल से निकलने की इजाजत कैसे दे दी !!
मनो:

चुप चुप, कोई नाम मुंह से मत निकालो और धीरे - धीरे बातें करो.

वह बड़ा छिपकर तिलिस्मी रास्ते से खास बाग के अन्दर ही से सीधी यहां तक आई है और अभी ही चली भी जायेगी.

राजा गोपालसिंह कहीं गये हैं और कल लौटेंगे इसीलिए उसे इतनी मोहलत मिली है.

गौहर:

फिर भी उसका यहां आना! अगर किसी तरह गोपालसिंह को पता लग गया .

.

.

मनो:

तो गजब हो जायेगा.

मगर लाचारी से - बल्कि मजबूर होकर उसे यहां आना पड़ा है.

गौहर:

वह लाचारी कैसी?

मनो:

किसी तरह गोपालसिंह को यह बात मालूम हो गई है कि उनका ब्याह लक्ष्मीदेवी के साथ नहीं बल्कि किसी दूसरे के साथ हुआ है और इस मामले में दारोगा साहब का मुख्य हाथ है!

गौहर:

(चौंककर) है, यह उन्हें कैसे मालूम हुआ !! मनो:

उनके खास दोस्त और विश्वासपात्र भरतसिंह ने यह बात उनसे कही है.

गौहर:

भरतसिंह ने! मगर भरतसिंह को यह खबर क्योंकर लगी! मनो ०:

यह बताना तो कठिन है, मगर इस बात का असर क्या हो सकता है सो तुम खुद सोच सकती हो, गोपालसिंह भरतसिंह का कितना विश्वास करते हैं और दोनों में किस कदर दोस्ती है यह तुमसे भी छिपा न होगा.

गौहर:

मुझे यह अच्छी तरह मालूम है कि दोनों एक जान दो शरीर हैं.

तब फिर?

अब दारोगा साहब क्या करेंगे?

मनोरमा इस बात का कोई जवाब देना ही चाहती थी कि परदा पुनः हटा और दारोगा साहब की सूरत दिखाई पड़ी! ये तीनों इन्हें देखते ही उठ खड़ी हुई और उनके बैठ जाने पर आग्रह से उनके पास ही बैठ गई, बैठते ही दारोगा साहब ने नन्हों और गौहर से कहा, " माफ करना, मैं एक बड़े जरूरी काम में फंसा हुआ था जिससे तुम दोनों को रुकना पड़ा.

तुम लोगों ने मनोरमा की जुबानी सुना होगा कि मैं कैसे तरदुद में पड़ गया हूं.

" गौहर:

इन्होंने कुछ साफ तो नहीं बताया मगर .

.

.

दारोगा:

मैं बताता हूं सुनो न, साफ - साफ यह है कि गोपालसिंह को मालूम हो गया कि मैंने लक्ष्मीदेवी के बदले मुन्दर से उसकी शादी करा दी है और यह उसे खास भरतसिंह ने कहा है जिसकी बातों को वह ब्रह्मवाक्य समझता है.

नन्हों और गौहर:

तो अब आप क्या करेंगे?

दारोगा:

मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूं, मगर कम - से - कम इतना तो निश्चय है कि इस समय अगर तुम लोग मेरी मदद न करोगी तो मैं कहीं का न रहूंगा! सच तो यह है कि इसीलिए मैंने तुम दोनों को इस समय बुलवाया भी है, दोनों:

हम लोग तो हमेशा ही दिलोजान से तैयार हैं, जो काम चाहे आप हमसे ले सकते हैं, मगर हम तुच्छ औरत की जात, कर ही क्या सकती हैं !!

दारोगा:

तुम लोग इस समय वह कर सकती हो जो बड़े - से - बडे ऐयार भी नहीं कर सकते.

खासकर (नन्हों की तरफ देखकर) तुम! नन्हों:

(ताज्जुब से) मैं?

दारोगा:

हां, तुम! बात यह है कि भरतसिंह को इस मामले की खबर देने वाला दलीपशाह है जो आजकल बराबर उसके यहां आया - जाया करता है.

तुम लोगों ने यह तो सुना ही होगा कि (मनोरमा की तरफ देखकर) इनके और नागर के कब्जे में आकर भी रिक्तगन्थ ' जो निकल गया वह काम इसी दलीपशाह का ही था.

नन्हों:

जी हां, नागर ने यह बात मुझसे कही थी कि आपको इस बात का शक है.

दारोगा:

शक नहीं, अब मुझे पूरा यकीन हो गया कि यह काम उसी का है.

नन्हों:

मगर उसे ऐसा करने की जरूरत क्या पड़ी?

उसे तो तिलिस्म से किसी तरह का सरोकार नहीं है.

दारोगा:

पहले तो बेशक नहीं था मगर अब बहुत गहरा हो गया है, उसके बहिन और बहनोई तिलिस्म में जा फंसे हैं जिन्हें छुड़ाने की वह दिलोजान से कोशिश कर रहा है.

नन्हों:

(चौंककर) बहनोई और बहिन?

दारोगा:

(गौर से उसकी तरफ देखते हुए) हां! मेरा मतलब कामेश्वर और भुवनमोहिनी से है!
नन्हों:

(लड़खड़ाती हुई आवाज से) क्या वे लोग अभी तक जीते हैं?

दारोगा:

जरूर! तुम्हें क्या इसमें कोई शक है?

गौहर:

बात यह है कि इन्हें न - जाने कैसे विश्वास हो गया है कि कामेश्वर मर गया.

इनके ऐयारों ने ही तो खुद इस बारे में इन्हें धोखा दिया और आज ये रास्ते - भर मुझसे इसके लिए झगड़ती आई हैं.

मैं लाख कहती हूं कि वह अभी तक जीता है मगर इन्हें विश्वास ही नहीं होता.

(नन्हो से) लो सुनों, क्या अब भी मुझे झूठी और दगाबाज कहोगी?

दारोगा:

(नन्हों से) मैं थोड़े में सब किस्सा सुनाए देता हूं, जिससे तुम्हारा शक दूर हो जाए.

बात यह हुई कि जब शिवदत्त ने इन गौहर के कहने से तुम्हारे लिए कामेश्वर को छोड़ दिया बल्कि बेगम के मकान तक पहुंचवा दिया तो वहां से भूतनाथ का कोई शागिर्द उसे उठा ले गया.

अगर भूतनाथ के पास तक वह पहुंच जाता तो मैं नहीं कह सकता कि वह उसके साथ क्या बरताव करता पर उसके किसी दोस्त ने और मुझे शक है कि इस काम को करने वाला भी दलीपशाह ही था, उसे भूतनाथ के ऐयारों के फन्दे से छुड़ा दिया.

स्वतन्त्र होते ही उसे अपनी स्त्री की चिन्ता लगी जिसके बारे में न - जाने कैसे उसे यह खबर लगी थी कि वह मरी नहीं बल्कि लोहगड़ी के तिलिस्म में बन्द है.

वह उसे छुड़ाने के लिए तिलिस्म में घुसा.

तुम लोगों को शायद न मालूम होगा कि उसे तिलिस्म के हाल - चाल से बहुत कुछ वाक़ीफियत है.

मुझे भाग्यवश यह बात मालूम हो गई, मैं खुद इस फिक्र में पड़ा हुआ था कि किसी तरह से लोहगढ़ी के तिलिस्म को नेस्तनाबूद कर दूं क्योंकि मालती, जमना, सरस्वती तथा मेरे और भी कई दुश्मन उसी तिलिस्म के अन्दर बन्द थे जिसे खोलकर उन लोगों को छुड़ाने की कोशिश प्रभाकरसिंह कर रहे थे, भूतनाथ को भी लोहगड़ी के तिलिस्म का कुछ हाल मालूम है और वह उसके अन्दर जा सकता है, अस्तु उसे चंग पर चढ़ाकर मैंने उस तिलिस्मी इमारत को एकदम से नेस्तनाबूद कर देने का रंग गांठा.

भाग्यवश वह उसी दिन जबकि तुम लोग उसके भीतर बैठी उस पर काबू पाने की तरक़ीब सोच रही थीं, लोहगड़ी में घुसा.

मुझे इस बात की खबर लग गई और मैं भी उसके पीछे लग गया.

जिस समय उसने बम का गोला चलाकर लोहगड़ी को उड़ाना चाहा, ईश्वर की कृपा से मुझे इतना मौका मिल गया कि मैं तिलिस्मी राह से अन्दर पहुंचकर तुम लोगों की जान बचा सकूं.

किस तरह से भूतनाथ उस बम के गोले से बच गया यह तो मैं नहीं कह सकता पर तुम लोगों को मैंने जरूर बचा लिया.

खैर, मेरा विश्वास था कि लोहगड़ी के उड़ जाने से भीतर का तिलिस्म भी नष्ट हो जायेगा और उसके कैदी मर जायेंगे पर हाल ही में मुझे मालूम हुआ कि यह सोचना मेरी नादानी थी, लोहगड़ी की इमारत के उड़ जाने पर भी उसका भीतरी हिस्सा नष्ट नहीं हुआ और कैदी लोग उसके भीतर जीते ही बच गये.

हां, यह जरूर हुआ कि उनके बाहर निकलने का रास्ता इस तरह बन्द हो गया कि अब वे उसके अन्दर ही पड़े सड़ा करेंगे.

इतना भी बहुत है मगर कम्बख्त दलीपशाह चाहता है कि रिक्तगन्थ की मदद लेकर तिलिस्म में घुसे और उन लोगों को छुड़ावे.

साथ - ही - साथ वह मेरी भी जड़ खोदने पर लग गया है और चाहता है कि भरथसिंह के जरिये गोपालसिंह को उभाड़कर मुझे नेस्तनाबूद कर दे.

नन्हों:

यह तो बड़े ताज्जुब की बात आपने सुनाई! मगर क्या रिक्तगन्थ की मदद से उन कैदियों का छुड़ाना सम्भव है?

दारोगा:

सम्भव हो सकता है और इसीलिए मैं चाहता हूं कि तुम उस किताब को दलीपशाह के कब्जे से निकालने में मेरी मदद करो, बल्कि अगर हो सके उसे मेरा कैदी बना दो.

मैंने इस काम के लिए अपने कई ऐयार लगाये बल्कि बेगम को भी भेजा पर अफसोस, वे लोग कुछ न कर सके.

नन्हों:

आपने बेगम को भेजा था !! दारोगा:

हां, उसके और दलीपशाह के गुप्त सम्बन्ध का हाल तो शायद तुम्हें .

.

.

नन्हों:

मुझे बहुत - कुछ मालूम है.

दारोगा:

इसी ख्याल से मैंने उसे इस काम पर लगाया, क्योंकि मैंने सोचा कि शायद पुरानी दोस्ती कुछ काम करे, मगर वह कम्बखत एक ही चांगला है, बेगम का जरा रंग चढ़ने न दिया और उसे बैरंग वापस आना पड़ा बल्कि मेरे कई ऐयार भी उसकी बदौलत न - जाने किस जहन्नुम में पड़ गये.

खैर, अब मैं तुम्हें इस मुहिम पर लगाना चाहता हूँ और तुमसे खास तौर पर उम्मीद रखता हूं, क्योंकि एक तो तुम्हारा भी इसमें कुछ स्वार्थ है दूसरे बेगम की बनिस्बत तुम बहुत ज्यादा होशियार भी हो.

गौहर:

इनका स्वार्थ कैसा?

क्या आपका मतलब यह है कि अगर रिक्तगन्थ मिल जाए तो कामेश्वर को पुनः पा सकती है?

दारोगा:

हां, मेरा बिल्कुल यही मतलब है !!

इतना कहकर दारोगा ने गौर से नन्हो की तरफ देखा जिसका चेहरा इस समय लाल हो रहा था और जो आंखें नीची कीये न - जाने क्या सोच रही थी.

पर कुछ देर बाद उसने एक लम्बी सांस ली और कहा, " दारोगा साहब, आपकी बातों को गलत कहने का साहस तो मेरा नहीं होता मगर फिर भी इतना कहने की हिम्मत मैं बांधती हूं कि एक दफे इसी तरह की बातों पर झूठी उम्मीदों की दुनिया मैंने बांधी थी और उसके भरोसे भूतनाथ जैसे कातिल ऐयार से दुश्मनी मोल लेने पर तैयार हो गई थी.

पर आप जानते ही हैं कि उसका नतीजा कुछ न निकला, कामेश्वर को पाना तो दूर रहा उल्टा भूतनाथ पर काबू रखने वाली जो कुछ चीजें मेरे पास थीं वे भी हाथ से निकल गई.

आज आप फिर वही उम्मीद मुझे दिला रहे हैं और उसके भरोसे पुनः दलीपशाह से मेरा सामना करा रहे हैं, क्या मैं आपसे पूछ सकती हूं कि इस बार भी उम्मीद हकीकत न बन पाई तो मेरे दिल की क्या हालत होगी, इसे आपने कुछ सोचा है! " नन्हों ने यह बात कुछ ऐसे ढंग से कहीं कि वहां बैठे हुए सभी पर उसका गहरा असर हुआ.

यद्यपि हम यह नहीं कह सकते कि मतलबी दारोगा के दिल पर इसका क्या प्रभाव हुआ मगर उसने अपना चेहरा बहुत ही गम्भीर बनाकर नन्हों से कहा, " देखो नन्हों, मैं तुमको और तुम्हारी पिछली बातों को बहुत अच्छी तरह जानता हूं मुझे खूब मालूम है कि तुमने कामेश्वर के इश्क में अपने को बर्बाद कर दिया, उसके फेर में पड़कर अपने - आपको दीन - दुनिया कहीं का न रखा और उसके सबब से तुमने सख्त मुसीबतें उठाई, मुझे यह भी मालूम है कि अन्त में जब सबको यह विश्वास हो गया कि कामेश्वर इस दुनिया में नहीं रह गया तब भी तुमने उसका ध्यान नहीं छोड़ा और जोगिन की तरह उसके नाम की माला जपती रहीं और यह भी मालूम है कि किस तरह ये गौहर तुमसे मिलीं और किस काम के होने की उम्मीद में किस तरह तुम्हें कामेश्वर के जीते रहने की खबर और उसके पाने की उम्मीद दिलाई.

तुम विश्वास रखो कि इन्होंने अपना वायदा पूरा करने में कोई कसर न उठा रखी और मैं इसकी ताक़ीद करूंगा कि वह कामेश्वर ही था जिसे बेगम के मकान से भूतनाथ के शागिर्द उड़ा ले गये थे और तुम्हारे दिल ने उसे मुर्दा समझकर दोबारा जो कड़ी ठेस खाई वह हाल भी मुझे मालूम है, यह सब जान - सुन और समझकर भी मैं आज जो कुछ तुमसे सच्चे दिल से कह रहा हूं उसे तुम किसी तरह भी गलतफहमी न समझो मैं तुमसे सच्चे दिल से कहता हूं कि कामेश्वर अभी तक मरा नहीं है बल्कि जीता और इस समय लोहगड़ी के तिलिस्म के अन्दर है और मैं इस बात को भी जोर देकर कह सकता हूं कि अगर किसी के खून से लिखी हुई वह तिलिस्मी किताब मेरे हाथ लग जाए तो मैं उसे तिलिस्म के अन्दर से जीता जागता बाहर ला सकता हूं, क्या बताऊं, लोहगड़ी की इमारत उड़ गई और जिन रास्तों से हम लोग उस तिलिस्म के भीतर जा सकते थे वे सब

- के - सब नष्ट हो गये, नहीं तो मैं तिलिस्मी कायदों की कोई परवाह न करके तुम्हें अपने साथ साथ ले चलता और तुम अपनी आंखों से कामेश्वर को वहाँ देखकर विश्वास करतीं कि मैं न तो झूठ बोल रहा हूं और न तुम्हें किसी तरह का धोखा ही देना चाहता हूं " दारोगा की बातों से सच्चाई की कुछ ऐसी बू आ रही थी कि उसने नन्हों के दिल पर गहरा असर किया और बोल उठी, " मुझे आपकी बात पर पूरा भरोसा है दारोगा साहब! और उसी विश्वास के भरोसे में एक बार फिर अपनी किस्मत आजमाई करना चाहती हूं.

आप विश्वास रखिये कि अगर दलीपशाह के पास वह तिलिस्मी किताब होगी तो आठ दिन के अन्दर वह आपके हाथ में दिखाई पड़ेगी !! " नन्हों अपनी धुन की कितनी पक्की और साथ ही कैसी धूर्त और चालाक है यह बात दारोगा को पूरी तरह मालूम थी अस्तु यह बात सुन उसके दिल की कली खिल गई और वह खुश होकर बोला, “ मुझे तुमसे बहुत - कुछ उम्मीद है और विश्वास है कि तुम जरूर अपना काम पूरा करोगी मगर यह भी समझ रखो कि दलीपशाह बड़ा ही चांगला है और उसके कब्जे से तिलिस्मी किताब निकाल लेना हंसी - खेल नहीं साबित होगा.

मैं तुमसे कह चुका हूं कि खुद बेगम को मैंने इस काम पर भेजा था पर वह बुरी झपेड़ खाकर वापस लौटने पर मजबूर हुई.

"

नन्हों:

आप भी किसका जिक्र करते हैं दारोगा साहब! यह सब काम बेगम वगैरह के करने के हैं?

इसके करने के लिए नन्हों का कलेजा, नन्हों का दिल, नन्हों की अक्ल चाहिए, नन्हो की! आप देखियेगा कि मेरी बात सही निकलती है या नहीं, मैं फिर आपसे कहती हूं कि अगर दलीपशाह के पास वह रिक्तगन्ध है तो आठ दिन के भीतर वह मेरे हाथ में आ जाएगा और अगर वह मुझे न देगा तो मैं उसे मिट्टी में मिला दूंगी.

हां, अगर उसके पास हो ही नहीं तो दूसरी बात है.

दारोगा:

नहीं - नहीं, मेरी खबर कदापि गलत नहीं हो सकती और यह किताब जरूर उसी शैतान के पास है, मगर कुछ मुझे भी बताओ कि तुमने क्या सोचा है और कैसे यह काम पूरा करना चाहती हो?

तुम्हारी बातों से मालूम होता है कि तुमने कोई तरकीब सोच निकाली है.

नन्हों:

बेशक ऐसा ही है और मैं इस काम को खुद न कर दूसरे के हाथों से कराऊंगी शेर से लड़ने के लिए शेरबबर को भेजूंगी दारोगा:

अर्थात्?

नन्हों:

भूतनाथ को दलीपशाह के पीछे लगाऊंगी! मैं खूब जानती हूं कि उसे भी इस किताब की सख्त जरूरत है और इसके लिए वह जमीन - आसमान एक करने को तैयार हो जाएगा.

दारोगा:

मगर भूतनाथ को पाओगी तुम कहां?

नन्हों:

क्यों, क्या दूसरों की तरह आप भी समझते हैं कि भूतनाथ मर गया! दारोगा:

नहीं - नहीं, यह भला मैं कैसे समझ सकता हूं! जब वह खुद मुझसे आकर मिल गया.

मेरे कब्जे से इन्दिरा को निकाल ले गया और सरयू की खोज में आफत मचा चुका है, तब मैं मरा हुआ उसे क्योंकर समझ सकता हूं, १.

देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति सोलहवां भाग, पहला बयान.

पर मेरा मतलब यह है कि उसने अपने पिछले अड्डों को एकदम छोड़ दिया है और न - जाने कहां छिपकर रहता है कि खोजने पर भी कहीं उसका पता नहीं लगता, अपनी मर्जी से ही कभी - कभी वह प्रकट होता है और कोई - न - कोई आफत मचाकर फिर गायब हो जाता है.

नन्हों:

मुझे उसके गुप्त स्थान का पता है और मैं जानती हूं कि उससे किस तरह मुलाकात हो सकती है, मगर मैं इन बातों की खबर अभी आपको न दूंगी.

दारोगा:

मुझे पूछने की इच्छा भी नहीं है.

मुझे तो काम होने से मतलब है, मगर तब इतना समझे रहो कि अगर भूतनाथ के हाथ में रिक्तगन्ध पड़ गया तो फिर उससे लेना सहज न होगा.

नन्हों:

मैं इस बात को भी खूब अच्छी तरह समझती हूं और सब - कुछ समझ - बूझकर ही यह काम करने का बीड़ा उठा रही हूँ थोड़ी देर तक इन लोगों में और भी बातें होती रहीं.

दारोगा ने मनोरमा और गौहर के सुपुर्द भी कुछ जरूरी और गुप्त काम किए जिसके बाद सब लोग अपने - अपने रास्ते लगे.

अजायबघर के बाहर खड़े रथ पर सवार हो दारोगा साहब जमानिया की तरफ रवाना हुए.

अपने - अपने घोड़ों पर सवार हो मनोरमा और गौहर किसी दूसरी तरफ को चल पड़ीं और नन्हों अपने तेज घोड़े पर सवार हो अकेली गयाजी की तरफ रवाना हुई.

अपने मतलब की धुन में उसने इस बात पर भी ध्यान न दिया कि रात का वक्त है और घोर जंगल में दरिन्दे जानवरों का डर कदम - कदम पर है.

चौथा व्यान।

इन लोगों को वहां से गए मुश्किल से आधी घड़ी बीती होगी कि उसी बड़े कमरे के अन्दर से जहां अभी - अभी बैठे दारोगा, मनोरमा, गौहर और नन्हों बातें कर रहे थे, एक आदमी बाहर निकला और नहर के ऊपर वाले बरामदे में आकर टहलने लगा.

हम नहीं कह सकते कि यह अब तक कहां छिपा हुआ था या इसने दारोगा वगैरह की बातें भी सुनीं या नहीं और न हम इसकी सूरत - शक्ल के बारे में ही कुछ कह सकते हैं क्योंकि एक काले लबादे से इसने अपने को इस तरह डंका हुआ है कि इसके बदन का कोई भी भाग जाहिर नहीं हो रहा इसे बाहर आये अभी कुछ ही सायत बीती होगी कि नाले के उस पार से किसी चिड़िया के बोलने की आवाज दो बार आई जिसे सुनते ही यह चौंक गया और जवाब में इसने भी विचित्र प्रकार का शब्द मुंह से निकाला, कुछ देर के लिए सन्नाटा हो गया और तब पैरों की आहट ने बताया कि कोई आदमी अजायबघर की सीढ़ियां चढ़कर इधर ही आ रहा है.

आहट सुनते ही यह खुद भी उसी तरफ को बड़ा, जिससे कोने में पड़ने वाली कोठरी में ही दोनों की भेंट हो गई.

आने वाले ने धीरे से कहा, ' चासूपति इस आदमी ने जवाब दिया- ' छायापुत्र ' और तब दोनों एक - दूसरे के गले लग गये, मगर फिर तुरन्त ही अलग होकर उस पहले आदमी ने इस नये आने वाले का हाथ पकड़ लिया और कहा, " यहां हम लोग निश्चिन्ती से बातें न कर सकेंगे, मेरे साथ आओ, " वह पुनःउसी बीच वाले कमरे में गया जहां से अभी - अभी निकला था और उसके दक्खिन तरफ वाली एक अलमारी के पास जाकर उसका पल्ला खोला.

यह अलमारी भीतर से किसी तरह के साजोसामान से बिल्कुल खाली थी और साथ ही इतनी लम्बी - चौड़ी भी थी कि तीन आदमी इसके भीतर बखूबी खड़े हो सकें.

नये आने वाले को इसने अपने साथ अलमारी के भीतर ले लिया और तब पल्ला बन्द कर लिया.

कोई खटक्का दबाते ही उस अलमारी की जमीन नीचे की तरफ जाने लगी, कुछ देर बाद नीचे उतरना बन्द हुआ और एक खटके की आवाज आई.

अपने साथी का हाथ पकड़े वह पहला आदमी एक तरफ को हट गया और तब अन्दाज से मालूम हुआ कि इन्हें उतार लाने वाली चीज फिर ऊपर चली गई.

इस आदमी ने अपने पास से सामान निकाल रोशनी की और अपना भारी लबादा उतारते हुए कहा, “ यद्यपि इस जगह गर्मी है मगर यहां बैठकर हम लोग निश्चिन्ती से बातें कर

सकेंगे, " जबाब में उस नये आने वाले ने भी अपना लबादा उतार नकाब जो मुंह पर पड़ी हुई थी उलट दी और अब हमने पहचाना कि यह आदमी तो भूतनाथ है और वह पहला आदमी उसका गुरुभाई शेरसिंह, शेर:

बहुत दिनों के बाद तुमसे मुलाकात हुई! पर तुम अपने वायदे के सच्चे निकले, मैं तो समझता था कि शायद तुम न आओ! भूत:

भला ऐसा भी कभी हो सकता है! मैं तो खुद आपसे मिलने के लिए व्याकुल था और इस बात की राह देख रहा था कि किसी तरह कम्बख्त दारोगा का दौरा यहां से हो जाए और आपसे भेंट हो.

क्योंकि मुझे बहुत - सी बातें आपसे दरियाफ्त करनी थीं.

शेर:

जब तुमने दारोगा को देखा तो शायद उन लोगों को भी देख लिया होगा जिनसे वह यहां बातें कर रहा था.

भूत:

हां, नन्हों, गौहर और मनोरमा तीनों को ही मैंने देखा, मगर यह न मालूम हो सका कि ये कम्बख्त यहां बैठे क्यांबांध रहे थे.

शेर:

इसका कुछ हाल मैं तुम्हें बता सकूँगा, क्योंकि इसी इमारत में छिपा हुआ तुम्हारी ही तरह मैं भी उन लोगों के जाने की राह देख रहा था और उनकी बातें भी यद्यपि पूरी - पूरी तो नहीं मगर कुछ - कुछ मैंने सुनीं, पर उनका जिक्र पीछे होगा, पहले तुम अपना हाल कह सुनाओ कि तुमने क्या - क्या किया ?

लक्ष्मीदेवी का कुछ पता लगा?

भूत:

(अफसोस के साथ) नहीं, कुछ नहीं और न बलभद्रसिंह का ही नहीं पता लगा.

मगर इसमें भी शक नहीं कि वे दोनों हैं इसी कम्बख्त दारोगा के ही कब्जे में और अभी तक जीते भी हैं!

शेर:

इसमें कोई शक नहीं, मगर मुझे जो सन्देह है और जिस लिए मैं इन दोनों का पता लगाने को व्याकुल हो रहा हूं वह यही है कि अपना काम हो जाने पर दारोगा कहीं उन दोनों को मार न डाले, क्योंकि जब तक वे दोनों जीते रहेंगे मुन्दर का भेद प्रकट हो जाने का डर बना ही रहेगा.

भूत:

बेशक ऐसा ही है और इसीलिए तो मैं भी परेशान हो रहा हूं मगर क्या बताऊं कुछ पता ही नहीं लगता! बेचारी सरयू मर ही गई और इन्दिरा भी मेरे कब्जे में आकर पुनः कहीं गायब हो गई, जो शायद आपने सुन ही लिया होगा.

शेर:

हां, तुम्हारे शागिर्द ने संक्षेप में यह हाल भी मुझसे कहा था, मगर मुझे ठीक - ठीक मालूम न हो पाया कि इन्दिरा कहां चली गई! भूत:

मैं खुद इस बात को नहीं समझ सका.

मालूम होता है कि मेरा ही कोई आदमी दगा दे गया.

अपने उन शागिर्दो को जिनके सुपुर्द उस लड़की को कर गया था मैंने सख्त सजा भी दी पर उसका कोई नतीजा न निकला.

बात यह हुई कि दारोगा के घर से इन्दिरा को छुड़ाकर मैं अपनी पिपलिया घाटी में रख गया था और उसके साथ उसकी धाय अन्ना ' को छोड़ स्वयं सरयू का पता लगाने चला गया था.

वहां दारोगा के घर पर ही सरयू के होने का हाल मायाप्रसाद की जुबानी सुन मुझे रुक जाना पड़ा.

जब सरयू वाले मामले का बिल्कुल हेस - नेस हो गया अर्थात उसका देहान्त हो गया और उसके कृया कर्म से मैं खाली हुआ, तब कहीं जाकर मुझे इतनी फुरसत मिली कि किसी दूसरी तरफ अपना ध्यान दे सकूँ, तब मैं अपनी घाटी की तरफ लौटा और वहां जाते ही सुना कि इन्दिरा गायब हो गई. शेर:

(अफसोस के साथ) और फिर कहीं उसका पता न लगा?

१.

इन्दिरा को दूसरी बार दारोगा के कब्जे से निकालकर ले जाने तथा नकली सरयू की मृत्यु दारोगा के यहां देखने का पूरा - पूरा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में भूतनाथ खुद बयान कर चुका है.

(देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति इक्कीसवां भाग, दूसरा बयान.

)

भूत:

बिल्कुल नहीं! मैंने बहुत कुछ खोजा, बल्कि अब तक उसी फिराक में हूं मगर कुछ भी पता न लगा और तब से मैं उस तरफ से बिल्कुल ही निराश हो गया जब से इन्द्रदेव की बातों ने मेरा दिल तोड़ दिया.

शेर:

सो क्या?

भूत ०:

सरयू की दाह - कृया कर मैं पूरे हाल - चाल की खबर देने खुद इन्द्रदेव के पास गया था.

वे आजकल अपनी एक तिलिस्मी घाटी में रहते हैं जिसके अन्दर आने - जाने का रास्ता बहुत ही गुप्त है और सिवाय उनके खास - खास आदमियों के और कोई भी वहां आ - जा नहीं सकता.

बड़ी मुश्किल से दिन - भर राह देखने के बाद शाम को कहीं जाकर उनके ऐयार छन्नूसिंह की मदद से इत्तिला हुई और मैं अन्दर पहुंच सका.

इन्द्रदेव से जब भेंट हुई तो उनकी बातें और भी रूखी निकली.

सब बातों का कलंक उन्होंने मेरे ही माथे थोपना शुरू किया बल्कि यहां तक कह दिया कि सरयू और इन्दिरा की यह दुर्दशा भी मेरे सबब से हुई.

मैंने कितना ही समझाया और कहा कि इन बातों में मेरा कसूर कुछ नहीं है, पर वे कुछ भी न माने और अन्त में यहां तक कह गए कि बेहतर यही था कि तुम जिस तरह दुनिया में मरे हुए मशहूर हो वैसे ही बने रहो और कहीं जंगल, पहाड़ों में रहकर ही अपनी जान दे दो, अगर फिर दुनिया में प्रकट होगे तो पुनः अंधेर मचाना शुरू करोगे.

वह बात सुनकर मेरा जी एकदम खट्टा हो गया और मैं उनसे यह कहकर कि जब आपकी यही मर्जी है तो ठीक है, अब मैं अपना काला मुंह आपको कभी न दिखाऊंगा ', उनके पास से उठ आया.

शेर:

अफसोस, न - जाने उन्होंने ऐसा बर्ताव तुम्हारे साथ क्यों किया! मालूम होता है उन्हें किसी ने तुम्हारे बारे में उल्टी - सीधी खबरें पहुंचाई है.

भूत:

बेशक यही बात है, मुझे यह कार्रवाई दलीपशाह की मालूम होती है.

वह आजकल मेरा दुश्मन बन बैठा है और सब तरफ मेरी बदनामी फैलाता फिरता है.

शेर:

नहीं - नहीं, तुम्हारा ख्याल बिल्कुल गलत है.

दलीपशाह तो तुम्हारा दोस्त और रिश्तेदार है, वह ऐसा भला क्योंकर कर सकता है !!

आप सीधे - सादे आदमी हैं और उसके दिल का हाल नहीं जानते! कामेश्वर और भुवनमोहिनी का असली भेद जब से उसे मालूम हुआ है तब से वह मेरा दुश्मन हो गया

है! यह बात सुनकर शेरसिंह चौंक पड़े और भूतनाथ से कुछ पूछना ही चाहते थे कि न - जाने क्या समझकर चुप हो रहे और मन - ही - मन कुछ सोचने लगे.

थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, " अच्छा, इन्द्रदेव से तुमने मुन्दर के बारे में कोई जिक्र किया था?

" भूत:

नहीं, मैंने तो नहीं किया, पर खुद से ही मुझसे बोले थे कि तुम्हारे सजग से बेचारी लक्ष्मीदेवी की जगह एक चुडैल जमानिया की रानी बन बैठी है.

शेर:

मगर वे इस बारे में कुछ कर रहे हैं या नहीं इसका कुछ पता चला?

भूत:

कुछ भी नहीं, मगर जहां तक मैं समझता हूं जब तक लक्ष्मीदेवी का पता न लगाया जायेगा वे इस बात को उभाड़ेंगे नहीं, क्योंकि बात - ही - बात में उन्होंने कहा कि मुन्दर का जादू गोपालसिंह पर ऐसा चल गया है कि इस मामले में हाथ देना अब व्यर्थ है, मगर उनका यह ख्याल केवल गलत ही नहीं बल्कि खतरनाक भी है क्योंकि मुन्दर अपना जाल फैलाती जा रही है और अगर उसका कोई इलाज न किया गया तो ताज्जुब नहीं कि बेचारे गोपालसिंह की जान पर आ जाएं! शेर:

(चौंककर) सो क्या?

भूत. जमानिया के रईस भरथसिंह को इस मामले में कुछ शक हो गया था.

उनके पुराने नौकर ह्रदीन से मेरी मित्रता है, उसी के जोर देने पर मैं जाकर भरथसिंह से मिला था और उनसे मुन्दर और दारोगा की सब बातें कहीं थीं.

उन्होंने यह हाल गोपालसिंह से कहा, मगर गोपालसिंह को उन पर कुछ भी विश्वास न हुआ, उल्टा उन्होंने सब बातें मुन्दर से कह डालीं, नतीजा यह निकला कि दारोगा और जैपाल भरथसिंह की भी जान के दुश्मन बन बैठे और कब उन्हें जहन्नुम में पहुंचा दें, कोई ठिकाना नहीं.

१.

भरथसिंह का पूरा हाल चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है देखिये चन्द्रकान्ता सन्तति तेरहवां भाग नौवां बयान,

शेर:

अफसोस! वह बेचारा सीधा - सादा आदमी, इन लोगों के हथकंडों से अपने को किसी तरह भी बचा न सकेगा ।

तब?

तुमने इस बारे में कुछ किया ?

भूत:

मैं कर ही क्या सकता हूं, उन्हें होशियार अलबत्ता कर दिया है और दारोगा वगैरह की जिस नई कार्रवाई का पता लगता है वह हरदीन से कहता जाता हूं! इसके सिवाय मेरे हाथ में क्या है?

क्योंकि मुझे भी बहुत बचकर चलना पड़ता है.

अगर खुलेआम बाहर निकलकर कोई कार्रवाई करूं तो लोगों में आमतौर पर जो यह मशहूर है कि भूतनाथ मर गया, वह बात जाती रहे और फिर मैं कुछ भी करने लायक न रहूं.

मगर हां, इतना मैं आपसे भी कह देना चाहता हूं कि गोपालसिंह की जान बहुत खतरे में है और अगर उनकी हिफाजत का पूरा प्रबन्ध न किया गया तो कम्बख्त दारोगा उन्हें ले बीतेगा फिर वह चाहे उन पर रहम भी कर जाए मगर शैतान की खाला मुन्दर जो उनके सिर बैठी हुई है, वह कभी उन्हें छोड़ने की नहीं.

मैंने उड़ती खबर सुनी है कि उसने तिलिस्मी मामलों में भी हाथ डालना शुरू कर दिया है और जमानिया की सच्ची रानी बना चाहती है, कौन ठिकाना कि लालच उसकी आंखों पर पर्दा डाल दे और उसे स्वतन्त्रतापूर्वक जिन्दगी के ऐशोआराम का लुफ्त उठाने पर उतार लावें! आखिर वह बदकार, पाजी तो एक ही नम्बर की है.

शेर ।

इसमें क्या शक है.

खैर, मैं इस बारे में इन्द्रदेव से बातें करूंगा और अगर हो सका तो गोपालसिंह को भी होशियार करने की कोशिश करूंगा मगर तुम भी इस मामले में बेफिक्र न रहो अगर तुम चाहते हो कि पिछली बदनामी की कालिख को धो बहाओ, तो आजकल ईश्वर ने जो स्वतन्त्रता तुम्हें दे रखी है उसका पूरा फायदा तुम्हें उठाना होगा.

भूत:

जो कुछ मुझसे बन पड़ेगा मैं करने से कुछ बाकी न रखूगा.

कुछ देर के लिए सन्नाटा हो गया जिसके बीच दोनों आदमी न - जाने क्या - क्या सोचते रहे, इसके बाद भूतनाथ ने कुछ हिचकिचाते हुए शेरसिंह से पूछा, “ आपने मेरा काम कुछ किया ?

" शेर:

(चौंककर) तुम्हारा कौन - सा काम?

भूत:

वही कामेश्वर के बारे में! आपने कहा था कि पता लगाकर बतलायेंगे कि कहां गया या क्या कर रहा है.

शेर:

हां, ठीक है, उसका जिक्र तो मैं तुमसे करना ही भूल गया.

मुझे उसका पता लगा और पूरी तरह से लगा, तुमको उससे डरने या घबराने की कोई भी जरूरत नहीं रह गई, भूत:

(चौंककर) सो क्या?

शेर:

मैं उस आदमी से मिला और उससे अच्छी तरह बातें कीं पहले तो उसने बहुत कुछ काबा काटा पर अन्त में मुझे पता लग ही गया कि वह कामेश्वर नहीं बल्कि उसका भेष बनाये हुए राजा शिवदत्त का कोई ऐयार है जो तुम्हें धोखे में डालकर अपना कोई काम साधने की नीयत से आया था.

भूत:

अगर आपकी बात सही है तो इससे बढ़कर कोई खुशखबरी मेरे लिए नहीं हो सकती.

मगर क्या मैं खुद उस आदमी से मिल नहीं सकता?

बार - बार जिस तरह की बातें उसने मुझसे कहीं मुझे सहज में यह विश्वास नहीं हो सकता.

अगर वह खुद कामेश्वर नहीं है तो कम - से - कम उसका कोई संगी - साथी तो जरूर ही है क्योंकि मेरे कई बहुत ही गुप्त नुकसान पहुंचाने वाले भेद उसे बहुत अच्छी तरह मालूम हैं.

शेर:

मैं खुशी से उसके साथ तुम्हारी मुलाकात भी करा देता क्योंकि वह मेरे कब्जे में आ गया था, पर अफसोस अब ऐसा होना सम्भव नहीं.

भूत:

सो क्यों?

शेर:

एक तिलिस्मी चक्कर में पड़कर वह तिलिस्म के अन्दर चला गया और वहीं बन्द हो गया.

अब जीते - जी उसके बाहर आने की कोई उम्मीद नहीं और न अब कोई उससे भेंट ही कर सकता भूत:

(खुश होकर) ऐसा! मगर क्या आप सही कह रहे हैं?

शेर:

मैं बिल्कुल सही कह रहा हूं, क्या तुम समझते हो कि मैं झूठ बोलकर तुम्हें धोखा दूंगा और सो भी एक ऐसे मामले

में ।।

भूत:

नहीं, मैंने इस तात्पर्य से ऐसा कहा कि ऐसी खबर जो वास्तव में मेरे लिए बहुत बड़ी खुशखबरी है, सुनकर भी जल्दी उस पर विश्वास नहीं होता! खैर, तो अब मैं उस तरफ से अपने को निश्चिन्त समझ लू?

शेर:

पूरी तरह से और हमेशा के लिए! भूत:

बहुत अच्छी बात है.

(कुछ रुककर) अच्छा, अब आप यह बताइये कि आपने आज यहां मुझे किसलिए बुलाया था?

शेरसिंह यह सुन भूतनाथ के कुछ पास खिसक आए और धीरे - धीरे कुछ बातें करने लगे.

हम नहीं कह सकते कि वे बातें क्यां या किस विषय पर थी.

हां, इतना कह सकते हैं कि रात आधी से कुछ ज्यादा ही जा चुकी थी जब बातों का यह सिलसिला खत्म हुआ और दोनों आदमी उस इमारत के बाहर आये.

पांचवां व्यान।

अजायबघर से रवाना होकर दारोगा साहब अपने घर नहीं गये बल्कि सीधे नागर के मकान पर पहुंचे.

गलियां अन्धेरी और सुनसान हो रही थीं मगर उस हिस्से में अभी तक भी थोड़ी - बहुत चहल - पहल थी जिधर नागर का मकान था, फिर भी दारोगा साहब पर किसी की

निगाह न पड़ी क्योंकि उन्होंने रथ का पर्दा चारों तरफ से गिराया हुआ था और रथ को देखते ही नौकरों ने फाटक खोलकर उसके भीतर होते ही बन्द कर दिया था.

बह छोटी खिड़की भी बन्द कर दी गई जिसके जरिए फाटक बन्द रहने पर भी लोगों की आवाजाही होती थी.

रथ जब भीतर जाकर नागर के रहने वाले मकान के दरवाजे पर रुका तब पर्दा हटाकर दारोगा साहब उसके बाहर हुए और बिना किसी तरफ एक भी निगाह डाले झट से मकान के अन्दर दाखिल हो गए.

नागर को इनके पहुंचने की इत्तिला हो चुकी थी और वह इनकी अगवानी के लिए दरवाजे पर मुस्तैद थी अस्तु वह इन्हें लिए सीधे सबसे ऊपर वाले बंगले में पहुंची जहां इस समय जैपाल भी बैठा इनके आने की राह देखता हुआ उन बोतलों तथा प्यालों की निगहबानी कर रहा था जो दारोगा साहब का इन्तजार कर रहे थे.

दारोगा को देखते ही जैपाल उठ खड़ा हुआ और इनकी अगवानी के लिए आगे बढ़कर बोला.

" आपको आने में बहुत देर होती देख हम लोग तो सोच रहे थे कि आज शायद न आ सकें.

मगर मालूम होता है कि कोई नई बात हुई है क्योंकि आपके चेहरे से कुछ परेशानी जाहिर हो रही है !! " दारोगा साहब ने गद्दी पर बैठते हुए कहा, " वेशक ऐसा ही है और जब तक बीबी नागर हम लोगों के लिए कुछ खाने - पीने का इन्तजाम करती हैं उसी बीच मैं तुम्हें सब हाल सुनाता हूं! " नागर समझ गई कि दारोगा साहब तखलिये में जैपाल से कुछ बातें करना चाहते हैं अस्तु उनके आराम के लिए कुछ तकिये उनके चारों तरफ रख वह भोजन का इन्तजाम करने का जिक्र करती हुई नीचे चली गई और दारोगा साहब ने जैपाल को अपने पास आ जाने का इशारा किया.

दोनों में धीरे - धीरे इस तरह बातें होने लगी दारोगा:

कहो भरथसिंह वाले मामले में क्या हुआ?

जैपाल

(अफसोस के साथ गर्दन हिलाकर) कुछ नहीं, जो जाल हम लोगों ने फैलाया था उसमें वह फंसा नहीं! दारोगा:

सो क्या?

जैपाल:

जिधर हम लोगों ने सब तैयारी कर रखी थी उसने उधर जाने से इन्कार किया और यहाँ तक जिद्द बाँधी कि मेरे साथ आने की नौबत ही न आई.

हम लोग बैरंग वापस लौट आए, दारोगा:

इसका क्या सबब हुआ?

क्या किसी ने उसे होशियार कर दिया.

जैपाल:

अब तो यही शक करना पड़ता है चाहे हम लोगों की तैयारी कितनी भी होशियारी से क्यों न की गई हों! खैर, वह वन का गीदड़ जाएगा किधर?

आज नहीं कल, कल नहीं परसों! आखिर हमारे हाथ में आएगा ही तो कभी - न - कभी.

दारोगा:

हां, मगर यह काम जल्दी होना चाहिए, अगर देर होगी तो इस बीच में वह न जाने क्या गजब वर्षा कर दे! गोपालसिंह को उस पर बहुत विश्वास है और यद्यपि इस दफे मुन्दर ने उसे उल्लू बना दिया है पर किसी दूसरे मौके पर भी वह ऐसा कर सकेगी यह सम्भव नहीं.

जैपाल:

जी हां, यह तो ठीक है मगर मैं उधर से बेफिक्र नहीं हूं और बहुत जल्द कोई दूसरी कार्रवाई करूंगा.

दारोगा:

उसका डर मुन्दर को भी बहुत ज्यादा है.

आज वह अजायबघर में मुझसे मिलने आई थी और उसने जो दो - एक बातें कहीं वह बेशक घबराहट पैदा करने वाली थीं, उसका कहना था कि इन्द्रदेव दो - तीन रोज हुआ गोपालसिंह से मिलने आया था और तखलिये में बहुत देर तक न - जाने क्या बातें करता रहा.

मैंने उसे इन्द्रदेव का सामना करने से मना किया हुआ है क्योंकि वह लक्ष्मीदेवी को बखूबी पहचानता है इसलिए वह खुद उन लोगों के पास न जा सकी मगर छिपकर उनकी बातें जानने की कोशिश उसने जरूर की.

ज्यादा तो सुन न सकी मगर जो कुछ उसने सुना वही उसे घबरा देने के लिए काफी था.

जैपाल:

वह क्या?

दारोगा:

उसने गोपालसिंह को यह कहते सुना- " अगर हेलासिंह को पकड़ कर सताया जाए तो वह जरूर बता देगा कि लक्ष्मी .

.

.

" बस इतना ही वह सुन पाई मगर इसी से जाहिर हो गया कि इन दोनों में लक्ष्मीदेवी के विषय में ही बात हो रही थीं.

जैपाल:

बेशक ऐसा ही है लेकिन अगर उन लोगों के मन में मुन्दर के बारे में कुछ शक हो गया तो उसे दूर करना तो उनके लिए मुश्किल न होगा.

और कुछ नहीं अगर किसी बहाने से एक दफे गोपालसिंह इन्द्रदेव ही को मुन्दर की शक्ल दिखा दें तो सब भंडाफोड़ हो जाएगा.

इसका इन्तजाम आपने किया है?

मेरी समझ में तो उन सब आदमियों को जो लक्ष्मीदेवी को पहचानते हैं रास्ते से हटा देना ही आपके लिए सबसे मुनासिब बात है.

दारोगा:

हां, ठीक तो यही है और यह बात मैं कई दफे सोच भी चुका मगर अभी ऐसा करने की जरूरत नहीं है.

मुन्दर के पहचाने जाने का अभी तुरन्त कोई ज्यादा डर नहीं है.

तुमसे मैं कह चुका हूं कि जमानिया के राजकुटुम्ब में यह रिवाज है कि जो लड़की व्याह कर आती है वह फिर जन्मभर अपने मायके लौटकर नहीं जाती यही नहीं बल्कि पाँच बरस तक मायके का कोई आदमी औरत या नौकर - मजदूरनी तक भी महल में नहीं आ सकते.

फिर मुन्दर अब जमानिया की महारानी यानी मायारानी है और तिलिस्म पर भी उसकी हुकूमत है इस लिए तिलिस्मी कायदे के मुताबिक कोई भी मायारानी अपने पति या देवरों के सिवाय और किसी भी गैर मर्द के सामने नहीं हो सकती.

तिलिस्मी नियम कितने कड़े होते हैं तथा गोपालसिंह उनसे कितना डरता है और इन्द्रदेव उन्हें कैसा मानता है यह तुम जानते ही हो इसलिए जल्दी इस तरफ कोई डर नहीं है.

जैपाल:

मगर मुन्दर भरथसिंह के सामने तो अक्सर आती - जाती है! दारोगा:

भरथसिंह को गोपालसिंह अपना भाई समझते और कहते हैं तथा इस तरह पर मुन्दर ने उससे देवर का रिश्ता लगाया था मगर मैंने जैसे ही यह बात सुनी वैसे ही होशियार कर दिया और अब वह कभी भी किसी मर्द के सामने न होगी.

बलभद्रसिंह के महल में बहुत कड़े पर्दे का रिवाज था और हेलासिंह भी सुन्दर को बहुत हिफाजत से रखता था अस्तु बहुत संभव नहीं कि कोई गैर मर्द इन लोगों को सहज ही पहचान सके मगर इस सबका यह मतलब भी नहीं है कि इस बात का खतरा ही नहीं.

खतरा है और बहुत बड़ा है और हम लोगों को हर वक्त होशियार रहना चाहिए, जैपाल:

तब इस खतरे को दूर करने की तरकीब?

दारोगा:

तरकीब है और सिर्फ एक ही है.

जैपाल:

सो क्या?

दारोगा:

गोपालसिंह को किसी मौके.

(हाथ मारने का इशारा करता है)! जैपाल:

(चौंककर) हैं ऐसा.

दारोगा:

हां ऐसा ही मगर अभी इसका वक्त नहीं आया है.

अभी तो शादी हुए थोड़ा ही जमाना हुआ है जरा दो एक साल और बीत जाएँ तब ऐसा करना मुनासिब होगा.

अभी तो फिलहाल (धीरे से) हेलासिंह को रास्ते से दूर करना चाहिए.

जैपाल:

हां, इधर से डर तो जरूर है मगर मुन्दर कब इसकी इजाजत देगी! दारोगा:

उसे तुम जानते नहीं! इजाजत की तो बात क्या खुद उसी ने इस बात का इशारा किया.

जैपाल:

क्या खुद उस .

.

.

.

.

?

दारोगा:

हां, उसने मुझसे कहा कि गोपालसिंह ने अगर मेरे पिता पर कुछ जोर - जबरदस्ती की और उन्हें सताया तो वे बहुत कमजोर दिल के आदमी है, ताज्जुब नहीं कि सब बातें खोल दे, अस्तु उन्हें किसी ऐसी जगह पहुंचा देना चाहिए जहां गोपालसिंह का हाथ उन तक पहुंच न सकें. जैपाल:

क्या सचमुच उसने ऐसा कहा?

दारोगा:

हां, और वह यह भी बोली कि ' मैंने उन्हें कहीं दूर जाकर बसने को कहा था पर मालूम नहीं वे किस लालच में पड़े हैं कि अभी तक अपने मकान पर ही बने हुए हैं जहां न जाने कब गोपालसिंह का धावा हो जाय '! जब वह स्वयं यह कह रही है तो मेरी राय है कि हेलासिंह को बहुत जल्द अपने रास्ते से दूर कर देना चाहिए.

जैपाल:

अगर आपका हुक्म हो तो मैं इस काम को उठा लूं, मगर क्या उसे .

.

.

?

दारोगा ने झुककर जैपाल के कान में कुछ कहा जिसे सुनकर वह बोला, " हां, ठीक है, यही मुनासिब है, मगर इसके लिए मुन्दर की लिखी हुई इजाजत आपके पास रहनी चाहिए.

आपने उसे बहुत ऊंचे रुतबे पर बैठा दिया है और उसकी लोगों से या मुझसे फिरन्ट हो जाय और कहे कि मैंने ऐसा करने को थोड़ी ही कहा था.

उस वक्त अगर आपके लिए नहीं तो कम - से कम मेरे लिए मुश्किल होगी.

दारोगा:

तुम्हारा ख्याल सही है, अब की दफे भेंट होने पर मुन्दर से इस बारे में कुछ लिखवा लूंगा.

दारोगा ने जैपाल से धीरे - धीरे और भी कुछ बातें कहीं और तब आखिर में कहा, " बस, अब इससे ज्यादा तुमसे कुछ कहने की जरूरत नहीं क्योंकि तुम खुद होशियार हो.

अच्छा, अब यह बताओ बेगम से मिले थे?

उसने कुछ किया ! " जैपाल:

जी हां, मिला था.

वह पुनः मिर्जापुर गई थी और दलीपशाह से मिलने की भी बहुत कोशिश की मगर कुछ काम न हुआ और उसे बैरंग लौट जाना पड़ा.

उसका यह भी कहना है कि इस बारे में दलीपशाह को उस पर पूरा शक हो गया है.

उसने अपने कई शागिर्द उसके पीछे ऐसे लगा दिये हैं जो पल - भर के लिए भी उसका साथ नहीं छोड़ते और न उसे कोई कार्रवाई करने का ही मौका देते हैं.

उसका तो यहां तक कहना है कि उसके मकान के अन्दर भी दलीपशाह के आदमी अक्सर घुस आते और टोह लिया करते हैं और इस बात से वह इस कदर घबराई हुई थी कि मुझसे भी पूरी तरह से बातें करते डर रही थी.

कहती थी मैं अपना घर छोड़ कहीं दूसरी जगह चली जाऊँगी, मगर जरूर यह उसका शक है, ऐसा भला कैसे हो सकता है! दारोगा:

नहीं - नहीं, बहुत मुमकिन है कि उसका शक ठीक हो.

जब से इन्द्रदेव के यहां मेरी दलीपशाह की कहा - सुनी हो गई है तब से वह जरूर चौकन्ना हो गया और सब तरह की टोह लेता रहता होगा.

इसी नीयत से बेगम के यहां भी उसने अपने जासूसों को लगा दिया हो तो कोई ताज्जुब नहीं.

जैपाल:

उस कम्बख्त को आपने फजूल ही छोड़ दिया.

वह बड़ा ही शैतान और कांइयां है और उसकी जान - पहचान भी बहुत दूर - दूर तक है.

१.

भूतनाथ बीसवें भाग के चौथे बयान में इन्हीं आदमियों का जिक्र आया है.

२.

चन्द्रकान्ता सन्तति में अपना क़िस्सा बयान करते समय इस बात का जिक्र दलीपशाह ने किया है.

(सन्तति २३ वां भाग ११ वां बयान देखिए

दारोगा:

क्या बतावें उस रोज कुछ ऐसा हो ही गया.

रिक्तगन्ध वाले मामले में मुझे उस पर गुस्सा चढ़ा ही हुआ था, उसकी जली - कटी बातें बर्दाश्त न हो सकीं.

जैपाल:

खैर, यह तो बताइये कि रिक्तगन्थ उसके कब्जे में से लेने के लिए अब आप क्या कर रहे हैं?

मायासिंह और गोविन्द को इस फेर में भेजा गया था पर तब से फिर उनका पता ही नहीं लगा.

मालूम नहीं कहां चले गये .

.

.

.

दारोगा:

चले कहां गये, जरूर उसी क़म्बख्त का कैदखाना आजाद कर रहे होंगे! मुश्किल तो यह है कि जब तक मैं रिक्तगन्थ काबू में नहीं कर लेता उस कम्बख्त के साथ कोई सख्ती भी नहीं कर सकता.

कौन ठिकाना वह शैतान उस किताब को ऐसा गायब कर दे कि फिर वह मेरे हाथ ही नहीं लगे, तब तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी.

इसीलिए मैं उसे गिरफ्तार भी नहीं करवा रहा हूँ.

नहीं तो वह है क्या चीज! मैं उसे बात की बात में मिट्टी में मिला सकता हूं !! जेपाल:

हां, सो तो सही है, आपका - उसका मुकाबला ही क्या है, मगर कहीं ऐसा न हो कि रिक्तगन्थ के ख्याल से आप तो उस पर तरह देते जाएं और वह आपकी जड़ काटने पर आमादा हो जाए! लेकिन सच तो यह है कि मुझे अभी तक इस बारे में अन्देशा बना ही हुआ है कि नागर के हाथ से रिक्तगन्थ लेना उसी का काम है, आपने मुझे अभी तक कुछ ठीक - ठीक बताया भी नहीं कि वह विश्वास आपको किस तरह हुआ, कहीं ऐसा तो नहीं की आपका शक झूठा हो और वह दारोगा:

नहीं - नहीं, मुझे बहुत पक्के तौर पर यह खबर लगी है.

जैपाल:

आखिर किसने कहा! क्या मैं उसका नाम नहीं जान सकता?

दारोगा:

क्यों नहीं जान सकते! मैं बहुत जल्दी ही तुम्हें उसका सब हाल बताऊंगा.

जैपाल:

(झुंझलाकर) तो आज ही क्यों नहीं बताते.

मालूम होता है आपको मुझ पर विश्वास नहीं है या आप मुझे धोखेबाज समझते हैं !! दारोगा:

(दांत तले जीभ दबाकर) राम - राम - राम! कैसी बात कहते हो! भला मैं तुम पर अविश्वास करूंगा! जैपाल:

(सिर हिलाकर) तो फिर बताते क्यों नहीं! आज क्या है और दो रोज बाद कौन - सी नई बात पैदा हो जायगी?

दारोगा:

अच्छा मैं बता दूँगा.

जैपाल:

नहीं, मैं आज ही सुनूंगा और नहीं तो फिर कभी न सुनूंगा.

इतना कह जैपाल ने अपना मुंह लटका लिया और अफसोस की मुद्रा बनाकर बैठ गया.

आखिर दारोगा ने कहा, " अच्छा - अच्छा, तो मैं बताये देता हूं मगर इसको अपनी जान की तरह छिपाकर रखना और कभी प्रकट न करना नहीं तो मैं कहीं का न रहूंगा.

लो सुनो - इस बात की खबर कि नागर के हाथ से रिक्तगन्थ ले लेना दलीपशाह का काम है और गुलाबसिंह ने इस मामले में उसकी मदद की है, मेरे भाई ने मुझे दी थी! "
जैपाल:

आपका भाई! क्या वह तो नहीं जिसे आपने एक दफे भैयाराजा के धोखे में महाराज के बाग में गिरफ्तार कर लिया था और बाद में छोड़ दिया और जो आजकल अपना नाम ' पहाड़ी भेड़िया ' रखे हुए पागलों और वहशियों की तरह जंगल - जंगल पहाड़ - पहाड़ मारा फिरता है! दारोगा:

हां, वही! उस समय दया करके मैंने उसे छोड़ दिया जिसका नतीजा यह हुआ कि वह अपने को बहादुर और ऐयार समझने लगा, मेरे कामों की टोह रखने लगा और मौके पर तरह - तरह से मुझे बदनाम और बेइज्जत करने लगा.

तरह - तरह के आदमियों से उसने दोस्ती की हुई है और ऐसा रूपक साधे हुए है कि बहुत - से लोग तो उसे पूरा औलिया या पहुंचा हुआ फकीर और जादूगर समझ उसकी इज्जत करते और उससे सलाह या आशीर्वाद लेते रहते हैं, मगर इसी कारण उसे कभी - कभी ऐसी बातों का भी पता लग जाया करता है जिन्हें हम लोग किसी तरह जान नहीं पाते.

जैपाल:

ठीक है, मैं समझ गया.

शायद उन्हीं के बारे में मनोरमा जी कहती थीं कि एक दिन आये और मुझे खबर दे गये कि भूतनाथ लोहगड़ी के उड़ने पर भी बच गया और रिक्तगंथ पर भी उसने काबू पा लिया.

१.

देखिए भूतनाथ चौथा, तेरहवां बयान.

२.

देखिए भूतनाथ उन्नीसवां भाग, पहला बयान.

जिक्र तो उनका मैं अक्सर सुना करता था पर यह मुझे नहीं मालूम था कि वे आपके वही भाई हैं! अच्छा, तो उन्होंने आपको यह खबर दी! मगर कौन ठिकाना, उनकी खबर गलत भी तो हो सकती है.

दारोगा:

नहीं, यही तो उसकी एक खूबी है जिसके सबब से मुझे बार - बार तरह दे जाना पड़ता है कि वह कोई खबर गलत अभी मुझे नहीं देता, जो बात कहता है सही कहता है और पते की कहता है, आज तक कभी एक बात भी उसकी झूठी न निकली! जैपाल:

मगर भूतनाथ की खबर उन्हें कैसे लगती है?

दारोगा:

इस बात का कुछ पता नहीं चलता.

मैंने बहुत कोशिश की मगर वह कुछ बताता नहीं, बस आता है और एक - न एक मनहूस खबर देकर चला जाता है.

जैपाल:

मगर क्या ऐसा आदमी किसी दिन आपके लिए खतरनाक नहीं साबित हो सकता?

दारोगा:

जरूर! और इसलिए मैं बराबर उसको अपने कब्जे में करने की तरकीब सोचा करता हूं मगर वह हाथ आवे तब तो! उस खास बाग वाली घटना के बाद से वह कभी मेरे पास रुकता नहीं.

हां, यह जरूर है कि अब तक उसने कभी मेरा कोई गुप्त भेद किसी गैर पर जाहिर नहीं किया है.

यही सबब है कि मैं भी उस पर तरह दे जाया करता हूं और उसके साथ किसी तरह की जोर - जबरदस्ती नहीं करता.

जैपाल:

मगर वे आपको दूसरों के गुप्त भेद क्यों बताते रहते हैं?

दारोगा:

यह भी मैं कुछ कह नहीं सकता, शायद इसलिए कि .

.

.

दारोगा और कुछ कहना ही चाहता था कि यकायक नागर घबराई हुई उस जगह आ पहुंची और बोली.

' पहरे बालों को डरा - धमकाकर एक अजीब आदमी भीतर घुस आया है जो आपसे मिलना चाहता है और कहता है कि मैं बिना मिले किसी तरह जाऊंगा ही नहीं.

वह यह भी कहता है कि अगर उससे तुरन्त न मिलेगे तो आपका बड़ा भारी नुकसान हो जाएगा बल्कि जान पर भी आ बने तो ताज्जुब नहीं.

दारोगा:

(चौंककर) वह कौन आदमी है और उसे कैसे पता लगा कि मैं यहां हूं?

तुम्हारे पहरेदारों ने उसे अन्दर आने ही क्यों दिया?

वह उन्हें तरह - तरह की बातें कहकर डराने और खुलेआम आपका नाम ले - लेकर सड़क ही पर से पुकारने लगा जिससे उन लोगों ने उसे भीतर कर लेना ही मुनासिब समझा.

जैपाल:

आखिर वह है कौन?

नागर:

सो मैं कुछ भी नहीं कह सकती क्योंकि वह न तो अपना नाम बताता है न कुछ अपना हाल, हां, इतना कह सकती हूं कि यह वही आदमी है जो एक दिन मेरे सामने ही मनोरमा बहिन के यहां आया था और अपने को ' पहाड़ी भेड़िया कहता था.

' पहाड़ी भेड़िया ' यह नाम सुनते ही दारोगा चौंक उठा और उसने एक गहरी निगाह जैपाल पर डालते हुए कहा, " तुम खुद जाओ और उसे यहीं ले आओ.

नागर:

मगर वह यहां आने पर भी राजी नहीं होता और कहता है कि दारोगा साहब से कहो कि नीचे उतरकर मुझसे मिलें.

मैंने कहा भी कि भला वह कैसे आ सकते हैं, तो बोला कि न आयें तो उनसे कह देना कि ' रोहतासमठ का पुजारी ' आया है.

रोहतासमठ का पुजारी ' यह शब्द सुनते ही दारोगा चौंक पड़ा, उसकी सूरत से हवाई उड़ने लगीं.

बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला उसने कहा, “ अच्छा, चलो मैं ही चलता हूं देखता हूं कि क़म्बख्त मुझसे क्या चाहता है.

" घबराये हुए दारोगा साहब जिनके चेहरे से परेशानी और बेचैनी साफ जाहिर हो रही थी जैपाल का हाथ पकड़े हुए जल्दी - जल्दी सीढ़ियां उतरे और नीचे उस जगह पहुंचे जहां दरवाजे के पास ही वह विचित्र मनुष्य खड़ा हुआ था जिसे कई दफे पहले भी हमारे पाठक देख चुके हैं.

इस समय भी वह उसी सूरत - शक्ल और लिबास में था जिसमें कि पहले कई बार दिखाई पड़ चुका है लेकिन इतना फर्क था कि इस समय उसके हाथ में एक छोटी - सी डलिया मौजूद थी जिसमें कोई चीज रखी हुई थी.

जैसे ही दारोगा साहब उसके सामने आये, वह जोर से खिलखिला - कर हंस पड़ा और बोला, " आइये भाई साहब! आप तो अब इतना छिपकर रहते हैं कि आसमान में उड़ने वाली चिड़िया को भी आपका पता लगाना मुश्किल पड़ जाए, वह तो कहिये कि मैं आपका अड्डा जानता था इसलिए शिकारी बाज की तरह मैंने आपको घोंसले के अन्दर ही पकड़ा और अब यहां से जाकर एक ऐसे समुद्र के अन्दर डाल देना चाहता हूं जिसके

.

.

.

वह न - जाने क्या - क्या बकता पर दारोगा साहब ने उसका हाथ पकड़ लिया और एक तरफ निराले में ले जाकर धीरे - से बोलें, “ अपनी बकबक बन्द करो और जल्द बताओ कि क्या खबर देने आये हो.

रोहतासमठ के पुजारी ' का नाम तुमने क्यों लिया?

बिचित्र मनुष्य:

(जोर से हंसकर) हो - हो - हो - हो.

क्या नब्ज पर हाथ रखा है, मैं जानता था कि ऐशमहल से बाहर निकालने के लिए आपको धतूरे की गोली ही देनी पड़ेगी नहीं तो .

.

.

दारोगा:

बस - बस, बको मत और तुरन्त बताओ कि क्यां माभला है?

तुम नहीं जानते कि इस शब्द ने मुझको किस तरह घबरा दिया है ।

विचित्र आदमी:

अभी क्या, अभी तो आगे देखिये क्या होता है! जब आप मेरे मुंह से आगे की खबरें सुनेंगे उस वक्त अपनी घबराहट देखियेगा !! दारोगा:

खैर, तो कुछ सुनाओ भी तो सही, या खाली यों ही मेरा कलेजा जलाओगे! जो कुछ भी कहना हो कह डालो मगर जल्दी कहो !! विचित्र आदमी:

अच्छा, तो सुनो मैं कहता हूं, मगर देखो जरा इस तिनके का सहारा लिए रहना नहीं गिरोगे और चोट - चपेट खा जाओगे! लो, कान फटफटा - कर अच्छी तरह सुन लो कि तुम्हारा सोचा - विचारा और करा - धरा सब पड़ा रह गया और लोहगड़ी के कैदी बाहर आ ही गये.

दारोगा:

हैं, सो कैसे?

और कौन - कौन?

विचित्र आदमी.

सो भी सुन लो - जमना एक, सरस्वती दो, दयाराम तीन, इन्दुमति चार, प्रभाकरसिंह पांच, मालती छः, अहिल्या सात, भुवनमोहिनी आठ, कामेश्वर नऔ .

.

.

विचित्र मनुष्य अपनी लम्बी फिहरिस्त भी पूरी न कर पाया था कि दारोगा घबराकर लड़खड़ाता हुआ पीछे हटा, अगर दीबार का सहारा उसे न मिल जाता तो इसमें शक नहीं कि वह जरूर बदहवास होकर जमीन पर गिर जाता.

बड़ी मुश्किल से कांपते हुए ये शब्द उसके मुंह से निकले- “ मालती, अहिल्या, भुवनमोहिन .

.

.

" मगर विचित्र मनुष्य पर दारोगा की इस बेचैनी का कोई भी असर न पड़ा! वह उसकी हालत देख खिलखिलाकर हंस पड़ा और बोला, “ अभी एक नाम तो आपने सुना ही नहीं दारोगा साहब! उसे जब सुनियेगा तो आपके होश ह्वास और भी काफूर हो जाएंगे !! " दारोगा इस तरह उस आदमी की तरफ देखने लगा जिस तरह जाल में फंसी चिड़िया बहेलिये की तरफ देखती है, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और तमाम बदन थर - थर कांप रहा था.

उसमें बोलने की ताकत न रह गई थी और उसकी लड़खड़ाती हुई जुबान ने बड़ी मुश्किल से पूछा, “ सो कौन?

" विचित्र मनुष्य आगे बड़ा और उसके कान के पास अपना मुंह ले जाकर बोला, " आपका दोस्त और लंगोटिया साथी श्यामलाल! " जैसे मरता हुआ आदमी बिच्छू के डंक की चोट खाकर तड़प उठता है उस तरह लहर खाकर दारोगा ने कहा.

" श्यामलाल! नहीं, नहीं, वह अब कहां.

नहीं, तुम गलत कहते हो और झूठी खबरें सुनाकर मुझे परेशान करने की नीयत से ही ऐसे नाम मेरे आगे ले रहे हो !! " हंसकर उस आदमी ने कहा, " नहीं, ऐसा नहीं है दारोगा साहब मैं केवल आपको परेशान करने की नीयत से यह नहीं कह रहा हूं बल्कि बहुत ठीक खबरे दे रहा हूं.

आप विश्वास रखिये कि आपके द्वारा हद दर्जे की तकलीफ भोगने और मौत से भी बढ़कर कष्ट उठाने के बाद भी श्यामलाल जीता बच गया और अब तिलिस्म के बाहर होकर आपकी अगवानी करने की तैयारी कर रहा है.

"

यद्यपि इतना सुन दारोगा का मुंह और भी सूख गया मगर न - जाने किस कारण से उसने फिर अपना सिर हिलाया और कहा, " नहीं, मैं इस बात को मान नहीं सकता.

विचित्र आदमी यह सुन जोर से हंसा और दारोगा के और पास होकर बोला, " मैं जानता था कि आपको जल्दी मेरी बात पर यकीन न होगा इसलिए मैं उसके जीते होने का सबूत भी अपने साथ लेता आया हूं, इतना कह उसने हाथ की डलिया रोशनी की तरफ उठाई और दारोगा को उसके अन्दर देखने को कहा.

उसके अन्दर गुलाब के फूलों से दबी कोई एक चमकती हुई चीज थी जिस पर घबराये हुए दारोगा की डरती - डरती निगाहें पड़ी मगर न - जाने वह क्या चीज थी कि उसे देखते ही दारोगा का तमाम बदन कांप उठा और उसके मुंह से बेतहाशा एक चीख की आवाज निकल पड़ी जिसके बाद ही वह बदहवास होकर जमीन पर गिर गया.

वह विचित्र मनुष्य दारोगा की हालत देख डरावने से ढंग से हंसा और तब अपने उस चंगेर को सावधानी से कपड़ों के अन्दर छिपाने के बाद घूमकर मस्तानी चाल से चलता हुआ फाटक की ओर बड़ा.

दूर से नागर, जैपाल तथा और कई नौकर - चाकर दारोगा और उस विचित्र मनुष्य की मुलाकात को ताज्जुब के साथ देख रहे थे और दारोगा की हालत देख वे लोग उस तरफ लपके मगर उस विचित्र मनुष्य को रोकने की हिम्मत किसी की न हुई और वह उसी तरह धीरे - धीरे कदम रखता हुआ फाटक तक पहुंच उसके बाहर निकल गया.

छठवां व्यान।

रात लगभग आधी जा चुकी होगी.

एक सुन्दर सजे हुए कमरे में गंगा - जमुनी काम की मसहरी पर प्रभाकरसिंह लेटे हुए हैं, इन्दुमति पैताने बैठी उनका पांव दबा रही है और मालती नीचे रेशमी गलीचे पर बैठी पान लगाती हुई उन बातों को बहुत गौर से सुन रही है जो प्रभाकरसिंह धीरे - धीरे कह रहे हैं, कमरे में हल्की रोशनी हो रही है और दरवाजा मामूली ढंग पर भिड़काया हुआ है

प्रभाकर:

महाराज के दरबार में गुरु महाराज के मुंह से मैंने जो बातें सुनीं उनसे मुझे विश्वास हो गया कि तिलिस्म के बनाने वाले भूत, भविष्य और वर्तमान का हाल अच्छी तरह जानते थे और कोई बात उनसे छिपी हुई न थी.

तुम इतना समझे रहो कि भूतनाथ या दारोगा वगैरह चाहे जितनी भी शैतानी करें और तिलिस्मी दौलत पर कब्जा पाने के लिए चाहे जो भी करें पर होगा कुछ भी नहीं और

अन्त में वह सम्पत्ति उसी के हाथ लगेगी जिसके नाम वह छोड़ी गई है.

तुम लोगों को इसका बिल्कुल खौफ न करना चाहिए कि दारोगा के हाथों गोपालसिंह का कोई अनिष्ठ हो सकेगा.

मैंने अभी तुमसे कहा न महात्माजी की जुबानी मैंने सुना - कि - ' गोपालसिंह के हाथों जब तिलिस्म टूटने का मौका आयेगा तो दारोगा उस काम में रुकावट डालेगा और अन्त में असफल हो कुत्तों की मौत मारा जाएगा.

बस इसी से तुम समझ सकती हो कि चाहे दारोगा ने मुन्दर को गोपालसिंह के गले मड़ दिया हो मगर उसकी मंशा पूरी न होगी और वह असफल होकर अन्त में जरूर मारा जायेगा.

अब इस वक्त जरूरत यही है कि जमाने का हेर - फेर जो कुछ ईश्वर दिखलावे उसे धीरज के साथ देखते चला जाए और हिम्मत भी कायम रखी जाए, इन्दु ०:

हां, सो तो ठीक ही है.

मालती:

क्या हम लोग महाराज साहब का वह दरबार नहीं देख सकते?

आपके मुंह से उसका जिक्र और गुरु महाराज की बातें सुन मेरा तो ताज्जुब के मारे अजीब हाल हो रहा है.

अगर तिलिस्म बनाने वाले ऐसे पुतले - पुतलियां बना सकते हैं जो न केवल आदमी की तरह चलें - फिरें और बातें करें बल्कि जो पूछने पर सवालों का जवाब दें और भूत, भविष्य वर्तमान का हाल बता सकें तो फिर उनके बनाने वालों और देवताओं में फर्क ही क्या रह गया! प्रभाकर:

तुम ठीक कहती हो.

तिलिस्म बनाने वाले अगर देवता नहीं तो देवताओं से कुछ कम भी नहीं थे.

मगर उस दरबार को फिर से हम देख सकेंगे इस बारे में मुझे कुछ सन्देह है.

१.

देखिए भूतनाथ अट्ठारहवां भाग चौथा बयान.

मणि - भवन में महाराज सूर्यकान्त का दरबार और उनके गुरु महाराज के साथ प्रभाकरसिंह की बातचीत.

मैंने अभी कहा न कि महाराज के दरबार में गुरु महाराज से बातें करते - करते ही मुझे इतनी देर लग गई कि तिलिस्मी कार्रवाई शुरू हो गई और लाचार मुझे वहां का तिलिस्म तोड़ने के काम में हाथ लगा देना पड़ा.

अब जबकि उस जगह का तिलिस्म टूट गया और वहां की इमारतों का भी एक काफी बड़ा हिस्सा टूट - फूटकर बरबाद हो गया तो मुझे इस बात में सन्देह हैं कि मणिभवन ' बचा होगा या महाराज का वह दरबार कायम होगा.

मालती:

हां, ठीक है, आपने कहा था कि गुरु महाराज से बातें करते - करते ही कई पुतले एक बहुत बड़े उक्काब को उठाये भीतर आये जिसके पेट को चीर आपको .

.

.

.

.

इन्दुः:

(मालती को रोककर) हां, ठीक याद आया.

आपने कहा था कि मणि - भवन का तिलिस्म तोड़ने पर आपको कई कैदी भी मिले थे जिन्हें आपने कहीं रख दिया था.

वे कैदी कौन थे और अब कहां हैं?

प्रभाकर:

हां, मुझे मणि - भवन के तिलिस्म के अन्दर बन्द तीन कैदी मिले.

मैं उन्हें उस समय अपने साथ नहीं रख सकता था इसलिए मैंने उन्हें एक हिफाजत की जगह रखवाकर इन्द्रदेवजी से उनका जिक्र कर दिया.

मुझे उम्मीद है कि उन्होंने उन कैदियों को तिलिस्म के बाहर करके कहीं ठिकाने पहुंचवा दिया होगा.

इन्दुः:

मगर वे लोग कौन थे?

क्या आपने उन्हें पहचाना नहीं?

प्रभाकर:

ठीक तरह पर तो मैं न पहचान सका मगर मुझे कुछ शक जरूर हो गया और उस शक को भी मैंने इन्द्रदेवजी से कह दिया.

उम्मीद है कि वे उस बारे में हम लोगों से पूरा हाल कह सकेंगे! मालती:

आखिर आपको क्या शक हुआ और उन लोगों ने अपने नाम क्या बताये?

प्रभाकर:

मैं अभी कहता हूं पर इस जगह एक बात आ गई जिसे पहले पूछ लेना चाहता हूं, जब मणि - भवन का तिलिस्म तोड़ने के बाद थकावट से लाचार होकर मैं एक दालान में बेखबर सोया हुआ था तो रात को क्या हुआ जो नींद खुलने पर मैंने अपने को (मालती की तरफ देख और मुस्कराकर) तिलिस्मी महारानी के चंगुल में पाया?

मालती ने तो यह सुन लजाकर सिर नीचा कर लिया मगर इन्दुमति बोली, " वह कार्रवाई असल में हमी लोगों की थीं.

उधर आपने मणि - भवन वाला तिलिस्म तोड़ा और इधर मालती बहिन ने बाबली बाला तिलिस्म तोड़ हम लोगों को कैद से छुट्टी दी जिसके बाद ही रणधीरसिंहजी की आज्ञानुसार आपका इनके साथ विवाह कर देने का काम जारी कर देना पड़ा.

हम लोग आपको बेहोश कर दालान से उठा ले गये.

प्रभाकर:

ठीक है, मैंने भी यही समझा था.

इन्दु:

अच्छा, तो अब बताइए कि वे कैदी कौन थे?

प्रभाकर:

मैं बताने को तो तैयार हूं मगर तुम लोगों के मन में झूठी आशा जगाते डरता हूं.

मुमकिन है कि मेरा ख्याल गलत हो और वह आदमी कोई दूसरा ही निकले अस्तु बेहतर होगा कि तुम लोग इन्द्रदेवजी से उनके बारे में पूछो.

मालती:

नहीं - नहीं, हम लोग आप ही से सुनना चाहते हैं कि वे लोग कौन थे?

इन्दुः:

आप ही बताइए कि वे कौन - कौन थे?

प्रभाकरसिंह उन कैदियों के बारे में कुछ कहते हिचकिचाते थे मगर मालती और इन्दुमति इस तरह उनके पीछे पड़ गई कि आखिर उन्हें बताना ही पड़ा.

लाचार होकर उन्होंने कहा, " अच्छा तो लो सुनो मैं बताए देता हूं, मगर यदि पीछे से मेरा ख्याल गलत साबित हुआ, यह पता लगा कि वे लोग कोई दूसरे ही थे तो फिर मुझे दोष न देना! उस तिलिस्म में मुझे कुल तीन कैदी मिले जिनमें से दो तो बहुत ही सीधे - सादे आदमी थे जिनसे हम लोगों का कोई सम्पर्क नहीं और जिन्हें हेलासिंह ने दुश्मनी की वजह से दारोगा के जरिये तिलिस्म में फंसा दिया था मगर तीसरे आदमी, अगर मेरा सन्देह सही है, तो तुम्हारी अहिल्या के पति और कामेश्वर के बहनोई श्यामलालजी थे.

" १.

देखिए भूतनाथ उन्नीसवां भाग, तीसरा बयान.

ये तीनों अपनी बातों में इस तरह गर्क थे कि किसी ने भी उस चुटकी की आवाज न सुनी जिसे कमरे के बाहर खड़ी एक औरत बजा रही थी, जब उसने भीतर से आने वाली बातचीत की आवाज सुनी और साथ ही अपनी चुटकी का कोई जबाब न पाया तो

लाचार पल्ला खोला और कमरे में दाखिल हो गई जिसका नतीजा यह निकला कि प्रभाकरसिंह के मुंह से निकलने वाली यह आखिरी बात उसने बखूबी सुन ली, मगर न - जाने इस बात का क्या असर उस पर हुआ कि वह एकदम चौंक पड़ी.

उसके सिर में चक्कर आ गया, मुंह से एक चीख की आवाज निकली और वह बदहवास होकर वहीं गिर गई.

तीनों आदमी चौंककर उधर देखने लगे और साथ ही इन्दुमति के मुंह से निकल पड़ा, " ओह, यह तो अहिल्या है! मालूम होता है कि यह किसी काम से यहां आई थी और इन्होंने आपकी बात सुन ली! " जिसके जवाब में प्रभाकरसिंह ने पलंग से उठते हुए कहा, “ अब बताओ! अगर मेरा ख्याल गलत साबित हुआ तो इस बेचारी के दिल की क्या हालत होगी! " मालती और इन्दुमति ने अहिल्या को बड़े प्रेम से उठाया और बिछावन पर डाल होश में लाने की कोशिश करने लगीं.

सुन्दरी अहिल्या का चेहरा जो रंज, अफसोस और गम से यों ही सूखा रहा करता था इस वक्त बिल्कुल पीला हो गया था और सूरत देखने से यही जाहिर होता था मानो उसके तन में प्राण नहीं है, मगर फिर भी इन्दुमति और मालती के बार बार लखलखा सुंघाने, मुंह पर केवड़ा छिड़कने और चेहरे पर हवा करने से वह कुछ होश में आने लगी.

इसी समय यकायक प्रभाकरसिंह की निगाह उसके हाथ की तरफ गई जिसमें एक चिट्ठी देख वे चौके और उसे निकालते हुए बोले, “ मालूम होता है यह चिट्ठी देने ही यह हम लोगों के पास आ रही थी.

मगर यह हो किसकी सकती है! " लिफाफे पर के अक्षर देखते ही वे चौंककर बोल बैठे, " हैं, यह तो इन्द्रदेवजी की लिखावट है और उन्होंने चिट्ठी मेरे पास भेजी है! " इन्दुमति बोली, “ जल्दी पढ़िए इसमें क्या लिखा है! " प्रभाकरसिंह ने चिट्ठी खोली और पड़ने लगे.

आशीर्वाद आदि के बाद यह लिखा हुआ था

" अफसोस कि मुझे यहां इतनी भी फुरसत नहीं मिल रही है कि तुम लोगों के पास आकर खुद यह खुशखबरी सुनाता इसलिए सबार के हाथ यह चिट्ठी भेजकर उसे दौड़ा दौड़ जाने का हुक्म दिया है.

तुम्हारा ख्याल ठीक निकला.

वह कैदी जिसे तुमने मणि - भवन से निकाला मेरे दोस्त श्यामलाल ही थे जिनकी मैंने अच्छी तरह जांच कर ली और जो इस समय मेरे साथ ही काम कर रहे हैं, अपने इस दोस्त को तिलिस्म से बाहर करने पर मैं तुम्हें बधाई देता हूं और साथ ही एक खुशखबरी अपनी तरफ से भी तुम लोगों को देता हूं लक्ष्मीदेवी और बलभद्रसिंह का पता लग गया है, दोनों अभी तक जीते हैं मगर दुष्ट दारोगा के कब्जे में हैं और उस पाजी ने उन्हें ऐसी जगह बन्द कर रखा है कि छुड़ाना कठिन हो रहा है, फिर भी आशा है कि श्यामलाल की मदद से मैं इस काम में कृतकार्य होऊंगा! " वे दोनों दूसरे क़ैदी भी वे ही हैं जिनका तुम्हें शक़ था.

बेचारी तारा को बहुत संभालकर यह खुशखबरी सुनाना, कहीं ऐसा न हो कि इस खबर को सुन वह बेचारी जिसका बदन रंज और अफसोस से यों ही सूखकर कांटा हो रहा है अपने को संभाल न सके और खुशी के मारे उसकी जान ही निकल जाए! " बस इतना ही उस चिट्ठी का मजमून था और इसके नीचे इन्द्रदेव का दस्तखत तथा एक खास निशान जिसे गौर से देख अपना दिल भर लेने बाद प्रभाकरसिंह बोले, " बस कोई शक नहीं रहा और इस बेचारी की जिन्दगी यों ही बरबाद होने से बच गई! " इन्दुमति ने पूछा, " अब तो इस खबर की सच्चाई में किसी तरह का संदेह नहीं हो सकता न?

” जवाब में प्रभाकरसिंह ने कहा, " जरा भी नहीं.

" जिस पर इन्दुमति बोली, " तब देखिये मैं इन्हें बात - की - बात में होश में लाये देती हू.

" इन्दुमति झुकी और अहिल्या के कान के पास अपना मुंह ले जाकर बोली, " वहिन उठो, बहिन उठो! देखो जीजाजी कब से खड़े तुम्हें पुकार रहे हैं, वाह खूब! इतने दिन पर वे आये और तुम यों बेखबर पड़ी हो! " इन शब्दों ने जादू का काम किया .

अहिल्या का बदन कांपा और पलकें जरा सी हिली.

इन्दु फिर बोली, " उठो बहिन, देखो कौन ' तारा तारा ' पुकार रहा है! क्या तुम श्याम जीजा से नाराज हो गई हो! "

अहिल्या ने यकायक आँख खोल दी और कहा, " हैं! कौन! " इन्दुमति ने उसे उठाया और प्रेम से अपनी गोद में लेते हुए कहा, “ बहिन उठो, ऐसी खुशी के मौके पर तुम्हें क्या इस तरह बेखबर होना चाहिए !! " अहिल्या चारों तरफ देखती हुई बोली, मैंने क्या सुना?

क्या .

.

.

?

" इन्दु ने जवाब दिया, " हां, तुम्हारे पति जीते - जागते मौजूद हैं और इस समय इन्द्रदेवजी के साथ जमानिया में बैठे दुष्ट दारोगा का सत्यानाश करने की तैयारी कर रहे हैं, देखो यह चिट्ठी पड़ो ", इन्दु ने इन्द्रदेव की चिट्ठी अहिल्या के हाथ में दे दी जिसे उसने धड़कते हुए कलेजे के साथ पड़ा मगर पढ़ते - ही - पढ़ते उसके सिर में चक्कर आ गया और वह यह कहती हुई इन्दु की गोद में गिर गई - “ बहिन! क्या सचमुच मैं ऐसी भाग्यवान् हो सकती हूं! " तरह - तरह के उपचार से थोड़ी ही देर में अहिल्या फिर होश में आ गई और सम्हलकर बैठ गई, पहला सवाल उसनेप्रभाकरसिंह से यही किया , " आपने पहले मुझे इस बात की खबर क्यों नहीं की?

प्रभाकरसिंह बोले, उन्हें तिलिस्मी जाल से छुड़ाते समय मुझे जरा भी सन्देह न था कि वे मेरे साडू होंगे क्योंकि उन्होंने अपना कुछ भी हाल बताने से एकदम इनकार कर दिया था.

वह तो कहो कि दो - एक बातें उनके मुंह से ऐसी निकल गई जिनसे मुझे कुछ शक हो गया जो आज अभी इन्द्रदेवजी का खत पाकर ही निश्चय में बदला है.

" अहिल्या:

उनकी सूरत - शक्ल तो एकदम बदल गई होगी?

प्रभाकर:

बिल्कुल ही, एक तो मैंने उन्हें सिर्फ एक ही दफे तुम्हारी बहिन (इन्दुमति की तरफ बताकर) के व्याह में ही देखा था फिर कभी देखने की नौबत न आई, दूसरे जमना, सरस्वती तथा अन्य लोगों बल्कि खुद इन्द्रदेवजी की भी जुबानी बराबर यही सुनने में आया कि उनका शरीरान्त हो गया, अस्तु इतने समय बाद यकायक उन्हें उस जंगली और वहशियों की - सी हालत में देख मैं बिल्कुल ही न समझ सका कि ये कौन हैं.

उस पर यदि अपना कुछ परिचय देते तो भी एक बात थी, उन्होंने मेरे बार - बार पूछने पर भी सिर्फ यही कहा कि मैं एक आफत का मारा हुआ दुखिया हूं, मेरा नाम पता पूछकर क्या कीजियेगा.

फिर मैं कर ही क्या सकता था?

अहिल्या:

तब आपको उन पर शक कैसे हुआ?

प्रभाकर:

बातचीत के सिलसिले में एक दफे उनके मुंह से निकला कि मेरी तारा भी इसी तिलिस्म में कहीं बन्द थी, क्या वह अब तक जीती होगी ' तब मुझे यकायक इस बात का शक हुआ कि कहीं ये अहिल्या के पति श्यामलालजी तो नहीं है क्योंकि मैं जानता था कि इनके ससुराल वालों ने इनका नाम ' तारा ' रखा हुआ है, सरस्वती ने जब इनकी सूरत बनकर मुझे धोखा दिया उस समय उसने यह सब हाल मुझे सुनाया था, अस्तु मेरा शक उधर चला गया और इसी के बाद मैं उनकी तरफ दूसरी निगाह से देखने लगा.

धीरे - धीरे मेरा शक बढ़ता गया मगर मैं उन तीनों कैदियों को ज्यादा समय तक अपने साथ रख नहीं सकता था क्योंकि मुझे तिलिस्म तोड़ने की कार्रवाई करनी थी जिसमें उनको साथ रखने से तरदुद पड़ता था अस्तु उन लोगों को मैंने एक हिफाजत की जगह पर छोड़ दिया.

बाहर निकलने पर इन्द्रदेव से मैंने अपना शक़ बयान किया और उन्हें यह भी बता दिया कि मैं उन्हें फलां जगह छोड़ आया हूं, अब यह पत्र पाने से मालूम हुआ कि उन्होंने उन तीनों कैदियों को बाहर निकाल और साथ ही उन्हें पहचान भी लिया.

अब वे यहां आये तो हम लोग भी उनसे बातें करें और समझें कि उनके मरने की झूठी खबर क्योंकर उड़ी और वे तिलिस्म के अन्दर कैसे जा पड़े !! इन्दुमति ने यह सुन कहा, " हां, सो सही है मगर मैं समझती हूं कि औरों को भी यह खुशखबरी इसी समय सुना देना चाहिए! इन्द्रदेव न - जाने कब आवें और कब हमें जीजाजी के दर्शन मिलें क्योंकि जब उन्हें पता लगा कि बलभद्रसिंह और लक्ष्मीदेवी जीते हैं तो बिना उन्हें छुड़ाये वे वापस लौटने के नहीं.

" प्रभाकरसिंह बोले, " हां, इस बात को हम लोग बिल्कुल भूल ही गये थे.

मगर यह भी बड़ी खुशी की खबर सुनने में आई! अब कम्बख्त दारोगा, हेलासिंह और मुन्दर अपनी करनी का फल पाये बिना न रहेंगे.

चलो मैं भी चलता हूं और दयाराम और कामेश्वर को यह खुशखबरी सुनाता हूं! " सब कोई उठ खड़े हुए और इसके बाद की समूची रात सभी की बातचीत और हंसी - खुशी में ही कट गई.

१.

देखिए भूतनाथ पहला भाग, चौथा बयान.

सातवां व्यान।

संध्या होने में अभी घण्टे - भर से ज्यादा की देर फिर भी मौसम पर ध्यान दे जंगली चिड़ियों ने अपने घोंसलो की ओर लौटना शुरू कर दिया है और उस जंगल में सन्नाटा बढ़ता जा रहा है जिसमें एक छोटे टीले के ऊपर बैठी हुई दो औरतें आपस में कुछ बातें कर रही हैं, हमारे पाठक इन दोनों औरतों को पहचानते हैं क्योंकि इनमें से एक तो बेगम है और दूसरी नन्हों.

उस ढीले की जड़ के साथ एक छोटा - सा नाला बह रहा है जिसके किनारे इन दोनों औरतों के घोड़े लम्बी बागडोरों से बंधे चर रहे हैं.

नाले के दूसरी तरफ घना जंगल है जिसमें, से कभी - कभी किसी जंगली जानवर की आवाज आ जाती है.

इन दोनों औरतों का मुंह उसी जंगल की तरफ है और बातें करते - करते बीच - बीच में इनके उस तरफ देखने से यह भी जाहिर होता है कि शीघ्र ही उस तरफ से कोई आने वाला है जिसका ये इन्तजार कर रही हैं, ये दोनों शैतान की खालायें क्या बातें कर रही हैं इन्हें सुनना चाहिए.

नन्हों:

दारोगा साहब को तुमसे बहुत कुछ उम्मीद थी क्योंकि उन्हें तुम्हारी और दलीपशाह की पुरानी मुहब्बत का हाल मालूम था और वे समझते थे कि तुम जरूर कुछ - न - कुछ कर सकोगी.

बेगम:

मैं खुद यही सोचती थी क्योंकि एक जमाना था जब वह मुझ पर मरता और मेरे लिए जान देने को तैयार रहता था.

इसी भरोसे मैं उसके यहां गई और उस पर अपना जाल रचना चाहा मगर अफसोस, कुछ काम तो बना नहीं उल्टा उसने मुझे बेइज्जती के साथ निकाल दिया.

नन्हों:

तुम जल्दीबाजी कर गई होगी, तुमको उसका रुख देखते हुए टटोलकर चलना वाजिब था!

बेगम:

अजी तो क्या तुम मुझे पूरा बेवकूफ ही समझती हो! वैसा ही तो मैंने किया ही था.

अपनी तरफ से तो मैंने उस पर यह भी जाहिर न होने दिया कि मैं उसके पास उससे मिलने आई हूं.

वह रोज सुबह घोड़े पर हवा खाने निकलता है और आठ - दस कोस का चक्कर लगाकर तब घर वापस होता है.

मैंने पहले से पता लगाकर ऐसा नाटक रचा कि जिस समय वह घर लौट रहा था उसी समय मैं दो तेज घोड़ों के रथ पर कई नौकरों के साथ उधर से जा रही थी कि यकायक घोड़े भड़के और कोचवान की गलती से रथ सड़क के नीचे जाकर उलट गया जिससे मैं सख्त चोट खा गई.

दलीपशाह मेरी मदद को आया और मुझे पहचानने पर मुझे अपने घर ले गया क्योंकि मेरी हालत सफर के लायक न रह गई थी.

नन्हों:

(मुस्कराकर) चालाकी तो खूब की! तब फिर क्या हुआ?

रिक्तगन्थ का पता लगाने के लिए तुमने क्या किया ?

शायद उस मामले में तुम कुछ उतावली कर गई हो! बेगम:

नहीं, सो भी मैंने नहीं किया.

कई दिनों तक जबकि मैं बीमार पड़ी थी और चलने - फिरने लायक भी नहीं थी, मैं यही सोचती रह गई कि कैसे पता लगाऊं कि किताब इसके पास है कि नहीं और अगर है तो कहां है.

इसके लिए कई बार छिप - छिपकर उसकी बातें सुनने की भी मैंने कोशिश की क्योंकि यह तो तुम समझ ही गयी होगी कि मेरी चोट और बीमारी का बहाना सब नकली था.

मगर बिल्कुल पता न लगा आखिर एक दिन जब मेरी उसकी बातचीत हो रही थी तो भूतनाथ का जिक्र चल पड़ा.

वह बोला कि भूतनाथ मर गया, नहीं तो गोपालसिंह को इस समय उससे बहुत मदद मिलती.

मैंने कहा कि वह मरा नहीं बल्कि कहीं छिपकर बैठा है, उसने इसका सबूत मांगा, मैं बोली सबूत की क्या जरूरत, वह खुद ही दो - चार दिन में तुमसे मिलेगा क्योंकि उसकी एक बहुत ही प्यारी चीज तुम्हारे कब्जे में आ गई है.

इस पर वह चौंका और घबराकर पूछने लगा सो कौन - सी चीज?

मैंने कहा - किसी के खून से लिखी किताब.

इस बात को सुन उसके मुंह का रंग जिस तरह बदल गया उससे मैं समझ गई कि जरूर वह किताब उसी के पास है मगर फिर और कुछ पता न लग सका क्योंकि इतना सुनते ही वह मेरे पास से उठ गया और थोड़ी ही देर बाद मैंने उसे घोड़े पर सवार हो कहीं जाते देखा.

मैं समझी कि वह कुछ देर में लौट आवेगा मगर वह न लौटा और नौकरों से पूछने पर मालूम हुआ कि पन्द्रह रोज के लिए कहीं गया है.

मैं शायद दो - चार रोज वहां रहकर उसका इन्तजार करती पर उसी दिन शाम को उसके एक शागिर्द ने मुझसे कहा कि मेरे लिए पालकी और कहारों का प्रबन्ध हो गया है, कल बहुत सुबह ही मुझे चले जाना होगा, इसे सुन मुझे बहुत गुस्सा आया और मैं बोली, " पालकी और कहारों की क्या जरूरत?

मेरे पास अपनी सबारी मौजूद है और कल के बदले आज ही मैं यह घर छोड़ देती हूं! " इसके बाद रहना गलती थी, मैं उसी शाम को वापस लौट आई, बस यही तो सारा किस्सा है, अब बताओ तुम क्या कर रही हो?

नन्हों:

मैं दूसरी तरक़िब पर चल रही हूं.

भूतनाथ जहां छिपा है वह जगह मुझे मालूम है .

.

बेगम:

तुम्हें मालूम है! कहां है वह?

नन्हों:

अभी नहीं बतलाऊंगी, अगर ज्यादा आदमी वहां पहुंचने लगे और उसे कुछ शक हो गया तो सब भंडाफोड़ हो जाएगा.

बेगम:

तुम्हारे जाने से उसे शक न हुआ और मेरे जाने से शक हो जाएगा! नन्हों:

अजी तो मैं इस तरह भद्देपन से उसके पास थोड़ी ही गई हूँ.

वह एक सिद्ध महात्मा के रूप में एक जगह रहता है, मैं उसकी भक्त और शिष्या के रूप में उस के पास जाती हूं और उसकी बहुत पूजा - सेवा करती हूं, वह समझता है कि मैं उसे नहीं पहचानती और उसे कोरा बाबाजी समझकर ही यह सब कर रही हूं, बेगम:

तो इस तरह तुम्हारा काम कैसे बनेगा?

नन्हों:

बड़े मजे में बनेगा और क्या बन गया है! मैं असली रूप में उससे मिलती हूं और प्रकट में कोई बात उससे छिपाती नहीं, मैंने उस पर प्रकट किया हुआ है कि मैं दारोगा साहब का गुप्त भेदिया हूं, दारोगा साहब आजकल दलीपशाह से मदद के लिए बातचीत चला रहे हैं, यह तो तुम्हें मालूम ही होगा.

१.

चन्द्रकान्ता सन्तति में दलीपशाह ने अपना किस्सा कहते समय इस पत्र - व्यवहार का हाल कहा है.

अस्तु उनकी चिट्ठी लाने ले - जाने का काम मेरे ही सुपुर्द है यह मैंने उस पर जाहिर किया है.

अक्सर वह, यह जाहिर करता हुआ कि मानो मजाक में ऐसा कर रहा है, उनकी चिट्ठियां मांगता है और मैं भी इसे एक सन्त महात्मा की सनक समझने का - सा भाव दिखाती हुई बेखटके दिखा देती हूं और इस तरह पर, उन चिट्ठियों के जरिये से अपना काम बना रही हूं क्योंकि दारोगा साहब उन चिट्ठियों में वहीं बातें लिखते हैं जो मैं उनसे लिखने को कहती हूं, बेगम:

(ताज्जुब से) अच्छा! यह तरकीब तो तुमने खूब निकाली! और वह इस जाल को समझ नहीं रहा है! नन्हों:

बिल्कुल नहीं, और इसे धोखा समझने के कारण ही उसे क्या मिल सकता है! खास दारोगा साहब के हाथ की लिखी चिट्ठी मैं उसे दिखाती हूं और उसके बाद खास दलीपशाह के हाथ का लिखा हुआ उस चिट्ठी का जबाब इसमें धोखे की जगह ही भला कहां या क्या हो सकता है.

बेगम:

बेशक यह तो ठीक ही कहती हो.

बलिहारी है तुम्हारे सूझ की.

क्या इस वक्त भी कोई चिट्ठी तुम्हारे पास मौजूद है?

उसे देख सकती हूं?

" हां - हां, क्यों नहीं! " कहकर नन्हों ने अपनी अंगिया में हाथ डाला मगर उसी समय सामने की तरफ कुछ देखकर चौंक पड़ी और बोली.

" हैं! यह लो दारोगा साहब तो खुद ही चले आ रहे हैं.

" बेगम ने भी चौंककर उस तरफ देखा और तब यह कहती उठ खड़ी हुई- " हां, ठीक तो है ।

" वास्तव में सामने के घने जंगल के अन्दर से निकलकर जमानिया के दारोगा साहब इसी तरफ को आ रहे थे, मजबूत मुश्की घोड़े पर सवार थे और उनके साथ उनके दोस्त जैपालसिंह भी थे जिनके घोड़े पर पीछे की तरफ एक बड़ी गठरी भी रखी हुई थी.

जिस समय नन्हों और बेगम टीले पर से उतरकर नीचे तक पहुंची उसी समय ये दोनों भी उनके पास आ पहुंचे और नन्हो को देखते ही दारोगा और जैपाल घोड़े से उतर पड़े.

दारोगा के चेहरे से परेशानी जाहिर हो रही थी और उसके घोड़े की हालत देखने से जाहिर होता था कि कहीं दूर से सफर करता हुआ आ रहा है.

दारोगा ने आगे बढ़ बेचैनी के साथ नन्हों का हाथ पकड़ लिया और पूछा.

' कहों उससे भेंट हुई?

उसने कुछ जवाब दिया?

" नन्हो ने मुस्कराते हुए जवाब दिया.

“ जी हां.

" और तब एक चिट्ठी निकालकर दारोगा साहब के हाथ पर रख दी.

यह चिट्ठी जो उस तरह की थी जैसी अक्सर एक रियासत से दूसरी रियासत को भेजी जाती है, एक खलीते के अन्दर थी जिसे दारोगा ने जल्दी - जल्दी खोला और पड़ा, यह लिखा हुआ था " मेरे प्यारे दोस्त दारोगा साहब " आपका खत मिला.

आपने एक ताज्जुब की बात लिखी है जो अगर सही हो तो मेरे लिए बहुत बड़ी खुशी का सबब भी हो सकती है मगर अफसोस तो यही है कि मुझे उस पर विश्वास ही नहीं होता.

भला जिस आदमी को इतने दिनों से जमाना मुर्दा समझे हुआ है उसके जीते - जागते होने की भला क्या उम्मीद की जा सकती है! " फिर भी जैसाकि आप लिखते हैं, अगर आप मुझे यह यकीन करा दें कि मेरा लगोटिया दोस्त श्यामलाल जीता है और मैं उसे सही - सलामत देख सकता हूं तो मैं वह खूनी किताब आपके हवाले करने के लिए तैयार हूं.

आपका दलीपशाह इस चिट्ठी के नीचे दलीपशाह का खास निशान और मोहर की हुई थी जिसे दारोगा साहब ने गौर से देखा और तब नन्हों की तरफ देखकर कहा, “ क्या यह चिट्ठी तुमने उसको दिखाई?

" नन्हों ने कहा, " हां! " जिस पर दारोगा बोला, " इसे पड़कर उसने कुछ कहा?

" नन्हों बोली, “ इस बारे में तो कुछ भी नहीं, मगर कुछ ऐसी बातें आप - से - आप उसके मुंह से जरूर निकल पड़ीं जिन्होंने मुझे ताज्जुब में डाल दिया.

मगर आप थोड़ी देर के लिए कहीं बैठ जाएं तो उन्हें आपसे कह सुनाऊं! "

दारोगा यह सुन एक साफ चट्टान की तरफ बढ़ा जो नाले के किनारे बड़ के एक बहुत बड़े और पुराने पेड़ के नीचे पड़ी हुई थी और उसी पर बैठ इन चारों में आपस में कुछ सलाह - बात होने लगी.

बातें बहुत देर तक होती रहीं यहां तक कि रात की अंधियारी चारों तरफ घिर गई जंगल खौफनाक मालूम होने लगा.

आखिर जब जैपाल ने सभी का ध्यान इस तरफ दिलाया तब इनकी बातों का सिलसिला टूटा.

दारोगा साहब ने अपनी जस्ते की कलम से एक कागज पर कुछ लिखकर नन्हों को दिया और तब उस गठरी में से जो जैपाल के साथ थी, कोई चीज निकाल उसे देने के बाद और भी कई बातें समझाई जिसके बाद वह मजलिस बर्खास्त हुई.

दारोगा, जैपाल और बेगम अपने - अपने घोड़ों पर सवार हो एक तरफ को रवाना हुए और अकेली नन्हो दूसरी तरफ चली जिसे अपने काम की धुन में इस बात का कोई भी डर न था कि जंगल अकेला सुनसान और भयानक है और दरिन्दे जानवरों का खतरा कदम - कदम पर है.

अब हम थोड़ी देर के लिए नन्हो का साथ छोड़ते हैं और भयानक टीले पर चलते हैं जहां भूतनाथ का डेरा है.

पाठक भूले न होंगे कि गयाजी के पास फलगू नदी के बीच के एक भयानक टीले के ऊपर एक तपस्वी साधु के भेष में भूतनाथ विराज रहा है और दुनिया से अलग रहता हुआ भी अपने जासूसों और शागिर्दो के जरिये सब तरफ की रत्ती - रती खबर रखता है, इस समय हम उसकी तरफ चलते और देखते हैं कि वह क्या कर रहा है.

आधी रात से ज्यादा जा चुकी है मगर भूतनाथ की आंखों में नींद नहीं है वह अपनी उसी भीतर वाली कुटिया में धूनी के सामने आसन जमाये बैठा है और उसके दो - तीन विश्वासी शागिर्द उसके सामने बैठे हुए हैं जिनसे वह धीरे - धीरे कुछ बातें कर रहा है.

यकायक कुटिया के बाहरी दरवाजे पर थपकी की आवाज सुन भूतनाथ की बातों का सिलसिला टूटा और उसने एक शागिर्द की तरफ देखकर कहा, " बलदेव, देखो तो कौन है! " बलदेव उठकर बाहर चला गया और एक दूसरे शागिर्द ने भूतनाथ की इच्छानुसार उस चिराग की रोशनी तेज कर दी जो एक बगल में जल रहा था.

इसी समय बलदेव एक आदमी को साथ लिए हुए भीतर आया जिसे देखते ही भूतनाथ ने खुश होकर कहा, " वाह जी रामेश्वरचन्द्र, तुम तो खूब मौके पर आये! इस समय मैं

तुम्हारा ही इन्तजार कर रहा था.

"

रामेश्वरचन्द्र ने साधुरूपी भूतनाथ के पैरों पर सिर रखा और उसने आशीर्वाद देकर सामने बैठने का इशारा करते हुए कहा, " वेशक़ यही बात है और मैं केवल बहुत दूर ही से नहीं आ रहा हूं बल्कि एक बड़ी ही भयानक खबर भी अपने साथ ला रहा हूं.

" भूत:

(चौंककर) सो क्या?

रामे:

राजरानी बनकर मुन्दर का दिमाग एकदम बदल गया.

उसने अपने बाप हेलासिंह को तो मरवा ही डाला था .

.

.

भूत:

हां, यह खबर तो मैं सुन चुका हूं रामे:

अब वह राजा गोपालसिंह के जान की ग्राहक बन बैठी है.

अगर उनकी हिफाजत न की गई तो दो - चार दिन के अन्दर ही आप सुन लीजिएगा कि वे इस दुनिया से उठ गये! भूत:

(घबराकर) हैं! यह तुम क्या कह रहे हो !! रामे:

मैं बहुत सही कह रहा हूं.

भूत::

किस तरह तुम्हें यह बात मालूम हुई?

रामे:

खास कम्बख्त मनोरमा की जुबानी.

आपको यह खबर तो लगी ही होगी कि दारोगा की बदौलत मनोरमा का आना - जाना राजमहल तक हो गया है जहां उसने मुन्दर पर वही रंग गांठ लिया है जैसा दारोगा गोपालसिंह पर जमाये हुआ है.

भूत:

हां, मुझे यह बात मालूम है और मैं अक्सर अफसोस के साथ सोचा करता हूं कि गोपालसिंह की बुद्धि को क्या हो गया है जो वह रंडियों और बदकारों को अपने महल में आने की इजाजत देकर अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मार रहा है, क्योंकि मैंने यह भी सुना है कि मनोरमा का कोई भाई है जो मुन्दर का पहले ही से कृपापात्र था और मनोरमा की बदौलत अब महल में भी आने - जाने लगा है.

रामे:

तो आपने पूरी बात नहीं सुनी, वह केवल आने ही जाने नहीं लगा.

मुन्दर उस पर इस कदर मोहित हो गई कि उसने उसे लौंडी का भेष बनाकर अपने महल में रख लिया है और इस बात का पता किसी को भी यहां तक की दारोगा साहब को भी नहीं है, धनपति के नाम से वह मशहूर है और रिश्ते में वह मनोरमा का भाई नहीं बल्कि भांजा है.

मैंने उसे देखा है.

उसकी शक्ल - सूरत बिल्कुल जनानी है मगर उसके बदन में ताकत बहुत है, मुन्दर पर उसका ऐसा रंग जम गया है कि वह उसके लिए एकदम दीवानी हो रही है और शायद उसी की राय से या सम्भव है कि खुदमुख्तार होकर खुद तिलिस्म की रानी बनने की लालच से अब वह गोपालसिंह को इस दुनिया से उठा देना चाहती है.

भूत:

यह तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

रामे:

मैंने मनोरमा की एक लौंडी से दोस्ती पैदा कर ली है और उससे मिलने के बहाने अक्सर उसके यहां आता - जाता हूं जिससे छिपे तौर पर मनोरमा की बातें सुनने का मुझे कभी - कभी मौका मिल जाया करता है.

कल नागर उससे मिलने आई थी और मनोरमा की उसकी खूब घुल - मिलकर बातें हो रही थीं जिसे मैंने सुन लिया और यह खबर पाई, मनोरमा की जुबानी ही मुझे यह भी पता लगा कि दारोगा साहब इस बात की इजाजत नहीं दे रहे थे नहीं तो अब तक कभी की मुन्दर अपने वाली कर गुजरी होती और इसीलिए उसने मनोरमा के सुपुर्द यह काम किया था जैसे हो दारोगा को इस बात के लिए राजी कर ले.

मनोरमा और नागर की बातचीत से जाहिर हुआ कि दारोगा साहब ने इस बात की इजाजत दे दी और मेरी समझ में तो अब बेचारे गोपालसिंह कुछ ही दिनों के मेहमान है.

भूत:

अफसोस, यह तो तुमने बहुत ही बुरी खबर सुनाई, तब फिर क्या करना चाहिए?

भूतनाथ ने अपना सिर नीचा कर लिया और देर तक़ - न - जाने क्या - क्या सोचता रहा, आखिर बहुत देर के बाद एक लम्बी सांस लेकर अपना सिर उठाया और रामेश्वरचन्द्र से बोला.

" चाहे जिस तरह भी हो गोपालसिंह की जान बचानी होगी.

इसके लिए मैंने कई बातें सोची हैं.

आओ आगे बढ़ आओ और मेरी बातें सुनो.

(बाकी शागिर्दो से) तुम लोग भी खसक जाओ क्योंकि तुम्हें मैं कई नाजुक़ काम सौंपना चाहता हूं.

"

बहुत देर तक भूतनाथ अपने शागिर्दो के साथ तरह - तरह की बातें करता और उन्हें न - जाने क्या - क्या समझाता रहा नहीं कह सकते कि उसके मन में इस समय क्या - क्या बातें उठ आई थीं या वह किस - किस काम का बांधनू बांध रहा था मगर इतना कह सकते हैं कि इस बातचीत और सलाह - मशविरे में उसने बहुत ज्यादा समय लगा दिया

और रात दो घण्टे से ज्यादा नहीं रह गई थी जब उसके शागिर्द उसकी आज्ञानुसार उस जगह के बाहर हुए और सब तरफ फैल गए.

अकेला भूतनाथ अपनी जगह पर बैठा रहा, पर इस समय भी वह किसी सोच में डूबा हुआ था और उसका चिन्तित मन तरह - तरह के बांधनू बांध रहा था.

हम नहीं कह सकते कि रामेश्वरचन्द्र की लाई हुई खबर ने उसे क्यों इस कदर परेशान कर दिया था या अब वह किस फिराक में पड़ा हुआ था मगर कम - से - कम उसका चेहरा यह जाहिर कर रहा था कि वह किसी गम्भीर चिन्ता में निमग्न है, अभी वह न - जाने कब तक इसी तरह बैठा रहता मगर किसी के पैरों की आहट ने उसे चैतन्य किया और सिर उठाने पर उसने अपने एक शागिर्द को देखा जो उसके साथ साधु के भेष में बराबर यहां रहता हुआ उसकी सेवा किया करता था.

भूतनाथ ने इशारे से पूछा, " क्या है?

" जिसके जवाब में उसने फूलों से भरा हुआ एक चंगेर उसके सामने रखते हुए कहा, " अभी एक लड़का इसे दे गया और कहता गया है कि इसमें महात्माजी की एक बहुत ही प्यारी चीज है " !! ताज्जुब करते हुए भूतनाथ ने वह चंगेर हाथ में उठाया.

सुन्दर और खुशबूदार फूलों से वह भरा हुआ था जिसकी गमक चारों ओर फैल रही थी, उसने उसके अन्दर हाथ डाल एक मुट्ठी फूल उठाये मगर उसी समय चौंक पड़ा क्योंकि उसके हाथ में कोई ठंडी नुकीली चीज लगी.

उसने गौर से देखा, तब शागिर्द से रोशनी पास लाने को कहा.

दीये की रोशनी में फूलों को हटा भूतनाथ ने उस चंगेर में देखा.

नीचे की तरफ कोई चमकती हुई चीज उसे दिखाई पड़ी जिस पर एक निगाह पड़ने के साथ ही वह चौंक पड़ा, उसने फिर गौर से उस चीज को देखा और तब चिल्लाकर बोल पड़ा, " हैं! यहां यह कैसे?

तब क्या वह अभी तक जीता है !! जरूर ऐसा ही होगा! ओफ, तब नहीं तो अब गई बेचारे गोपालसिंह की जान! "

चंगेर भूतनाथ के हाथ से गिर पड़ा और वह बदहवास - सा होकर दोनों हाथों से अपना मुंह ढांप लम्बी सांसे लेने लगा.

आठवां व्यान।

दारोगा और मुन्दर की चालबाजियों के कारण जमानिया के राजसिंहासन ने जिस तरह के उलट - पलट देखे, भरथसिंह और दलीपशाह तथा अर्जुनसिंह से दारोगा की जिस तरह दो - दो चोंचे हुई, और राजा गोपालसिंह की नकली मौत जिस प्रकार जाहिर की गई यह सब हाल खुलासा तौर पर चन्द्रकान्ता सन्तति में लिखा जा चुका है और उसके पाठकों को अच्छी तरह याद भी होगा अतएव यहां पर उसे दुबारा लिखने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती, इस जगह सिर्फ एक जरूरी घटना का हाल लिख देना ही आवश्यक मालूम होता है जिसका जिक्र चन्द्रकान्ता सन्तति में नहीं आ सका और जिसके कारण ही दारोगा के लिए गोपालसिंह को मार डालना तथा दलीपशाह, अर्जुनसिंह और भरथसिंह आदि को रास्ते से जल्दी - से - जल्दी हटा देना जरूरी हो गया.

रात आधी के लगभग जा चुकी होगी.

अपने मकान के एक छोटे कमरे में दारोगा साहब सुस्त और उदास एक गाबतक़ीये का सहारा लिए बैठे हैं और रह - रहकर लम्बी सांस लेते हुए इस तरह चारों तरफ देखते हैं मानों वे किसी ऐसी खौफनाक जगह में जा फंसे हों जिसके बाहर निकलने की कोई राह दिखाई नहीं देती.

उनके सामने उनका दोस्त जैपाल बैठा हुआ है मगर दारोगा साहब की यह हालत देख वह भी घबराया सा हो रहा है.

बार - बार वह उनसे कुछ पूछना चाहता है मगर मुंह खोलने की हिम्मत नहीं पड़ती और चुप रह जाता है.

आखिर एक दफे हिम्मत कर दारोगा का पंजा पक़ड़ जैपाल बोला- " आखिर आप कुछ तो मुझे बताइए कि उस आदमी ने आपको क्या चीज दिखाई जिसने आपकी यह हालत

कर दी है और आप क्यों इस तरह बदहवास हो रहे हैं! आखिर मैं भी तो आपका मुहब्बती और दोस्त ही हूं, आपके लिए जान देने को हमेशा तैयार रहता हूं! आप क्यों नहीं मुझ पर विश्वास करते मुझसे अपने दिल का हाल कहते! "

दारोगा एक लम्बी सांस लेकर बोला, " मेरे दोस्त, मुझसे कुछ पूछो मत कि उस चंगेर में मैंने क्या देखा, बस इतने से ही समझ लो कि जो कुछ मैंने उसमें देखा उसके कारण मेरा अब तक का किया - कराया सब केवल नष्ट ही नहीं हुआ चाहता बल्कि मुझे अपनी जान का भी खतरा हो रहा है, मैं नहीं समझ पाता कि अब मेरी जान किस दुर्दशा से जायेगी.

" जैपाल:

आप तो मेरा आश्चर्य और भी बढ़ा रहे हैं, भला मैं इस बात को कैसे मान सकता हूं कि आपके ऐसा आदमी जो इस समय जमानिया का बेताज बादशाह बन रहा है, जिसके हाथ में हजारों आदमियों की जाने हैं और जमानिया के राजा और रानी जिसकी मुट्ठी में हैं, वह ऐसा पस्त - हिम्मत हो जाएगा कि अपनी जान की तरफ से ना उम्मीद हो जाए और इस तरह की बातें करे जब तक कि कोई बहुत भारी माभला न हो.

दारोगा:

यह तो मैं खुद ही कह रहा हूं कि कोई ऐसी बात हो गई है कि जिससे मैं अपनी जान से नाउम्मीद हो रहा हूं, तब फिर वह क्या कोई भारी माभला नहीं होगा! तुम भी कैसी पागलो की - सी बातें कर रहे हो !! जैपाल:

(झुंझलाकर) मैं पागल नहीं हुआ हूं बल्कि आपका मिजाज खराब हो गया है जो एक पगले की बातों में पड़ और उसके किसी जादू में फंस अपने को इस तरह बेकाबू कर बैठे हैं.

दारोगा:

(कुछ देर रुककर) तुम ठीक कहते हो और उस चीज ने ऐसा ही जादू मुझ पर कर दिया है जो उस आदमी ने मुझे दिखाई.

मगर मैं देखता हूं कि तुम बिना सब हाल जाने मेरा पिंड न छोड़ोगे, अस्तु लो मैं बताये देता हूं कि असल में क्या माभला है, अच्छा श्यामलाल का नाम कभी तुमने सुना है?

जैपाल:

श्यामलाल! कौन श्यामलाल?

दारोगा:

तुम भी उसे भूल गये! अरे वही राय गोपालचन्द्र का भतीजा, भरथसिंह का फुफेरा भाई और बड़े महाराज के समय में जमानिया की फौज का सेनापति.

जैपाल:

अच्छा, उसके बारे में कुछ पूछ रहे हैं, उसे क्या मैं कभी भूल सकता हूं?

वहीं न जिसका साथ गोपालसिंह से बहुत रहा करता था और इन्द्रदेव का भी लंगोटिया दोस्त था.

दारोगा:

हां - हां, वही.

जैपाल:

जिसकी आपके दलीपशाह से भी कोई रिश्तेदारी थी क्योंकि वह अक्सर .

.

.

.

दारोगा:

दलीपशाह की मौसेरी बहिन और प्रभाकरसिंह की सगी साली अहिल्या, इन्दुमति की बहिन उससे व्याही थी.

जैपाल:

ठीक - ठीक, समझ गया, वही अहिल्या जो आपके कामेश्वर की बहिन लगती थी और राजा शिवदत्त जिस पर .

.

.

दारोगा:

हा - हां, वही. जैपाल:

आपको शिकार का बहुत शौक था और इसी शौक ने उसकी जान भी ली क्योंकि एक दिन शेर के शिकार में एक शेर के ही पंजों से सख्त घायल होकर उसने जान से हाथ धोया था.

मुझे बह बात अच्छी तरह मालूम है क्योंकि उस शिकार में गोपालसिंह और भरथसिंह भी शामिल थे और उन्हें इस दुर्घटना का इतना दुःख हुआ था कि उन्होंने दो रोज तक खाना नहीं खाया था.

वास्तव में गोपालसिंह उसे बहुत ज्यादा प्यार करते थे.

अच्छा तो उसका जिक्र आप क्यों कर रहे हैं?

दारोगा:

इसलिए कि उस कार्रवाई की तह में मैं था.

श्यामलाल से मेरी दुश्मनी हो गई थी और मैंने ही एक बनावटी लाश रखकर जाहिर किया कि उसे शेर ने मार डाला पर खुद उसे काबू में कर उससे अपना बदला लिया था और अन्त में उसे तिलिस्म में बन्द कर दिया था जहां मैं समझ रहा था कि इतने दिनों में वह मर - खप गया होगा और उसका नाम निशान भी बाकी न होगा, मगर अब मुझे मालूम हुआ कि मेरा ख्याल गलत था.

वह अभी तक जीता है और अब तिलिस्म के बाहर होकर मेरी दुर्दशा करने की तैयारी कर रहा है.

जैपाल:

यह बात आपको कैसे मालूम हुई?

दारोगा:

उसका वह जड़ाऊ भुजबन्द जो उसकी कलाई में हमेशा पड़ा रहा करता था और जो उसे तिलिस्म में बन्द करते समय भी उसके हाथ में था उस चंगेर के अन्दर मैंने देखा और समझ लिया कि जब यह चीज मौजूद है तो इसका पहनने वाला भी जरूर मौजूद होगा और यही खबर मेरे उस पागल भाई ने मुझे दी! जैपाल:

मगर आश्चर्य की बात है कि आप एक अकेले और बेबस आदमी से इतना डर रहे हैं .

.

.

दारोगा:

उसे अकेला या वेबस मत समझो! गोपालसिंह, इन्द्रदेव, कामेश्वर, भरथसिंह और श्यामलाल का किसी जमाने में बड़ा गहरा गुट था.

लोग मजाक में अक्सर उन्हें पांच पाण्डव कहा करते थे.

श्यामलाल की मौत ने उस समय इन सभी पर ही गहरा असर किया था और अब जब उसके जीते रहने की खबर इन सभी को मिलेगी और ये लोग इस बात को सुनेंगे कि मेरे ही कारण उसकी इतनी दुर्दशा हुई तो वे सब - के - सब मिलकर मेरी जो दुर्गति न कर डालें थोड़ी ही है खासकर गोपालसिंह तो जो अब राजा और खुदमुख्तार हो गया है मुझे सूली चड़वा दे तो भी ताज्जुब न समझो! तुम उसके प्रकट होने को मामूली बात समझते हो! जैपाल:

ठीक है.

ऐसा सोचना मेरी गलती थी, मगर आपकी उसकी दुश्मनी का कारण क्या हुआ?

दारोगा:

बस मेरी ऐयाशी और क्या कहूं! उन दिनों यह कम्बख्त नागर नई - नई उभरी थी, दयाराम, भूतनाथ और यह श्यामलाल - उस पर बेतरह मर रहे थे बल्कि मैंने तो सुना कि

इन्द्रदेव और गोपालसिंह भी उसके आशिकों में से थे पर खैर, इसका कोई सबूत मेरे पास नहीं है.

मेरी उस पर तबीयत आ गई थी, मगर थी वह कम्बख्त एक ही चांगली.

वह हम सभी को उल्लू बनाये रखना चाहती थी, हर एक पर यही जाहिर करती कि वह बस उसी पर मरती है और बाकी सभी को सिर्फ अपना काम चलाने के लिए उल्लू फंसाये हुई है, उसी के मकान पर मेरी और श्यामलाल की एक दिन कहा - सुनी हो गई और उसने मेरी शान में कुछ ऐसी बातें कह दी कि जिन्हें मैं बर्दाश्त न कर सका.

उसे गोपालसिंह की दोस्ती और जमानिया की सिपहसालारी का घमण्ड था पर मैंने भी दिखला दिया कि मैं कितनी ताकत रखता हूं, उससे ऐसा बदला लिया कि वह भी जन्म - भर याद रखेगा, मगर इतने दिनों के बाद यह पुराना फोड़ा फिर उभरा है और अबकी शायद मेरी जान ही लेकर छोड़े.

इतना कह दारोगा ने पुनः सिर नीचा कर लिया और कुछ सोचने लगा तथा जैपाल तरह - तरह की बातें कहता हुआ उसे दिलासा देने और उम्मीद बंधाने लगा.

उस कमरे के बाहर जिसमें दारोगा और जैपाल बैठे थे एक दालान था दोनों तरफ ऐसी कोठरियां थी जिनका एक दरवाजा इस कमरे में भी पड़ता था.

इस समय इन्हीं में से बाईं तरफ बाली कोठरी के अन्दर दो आदमी जिनका समूचा बदन यहां तक कि चेहरा भी काली पोशाक से ढंका हुआ था अंधेरे में दुबके हुए इन दोनों की बातें खूब गौर से सुन रहे थे, जब दारोगा चुप हो गया और जैपाल उसे समझाने - बुझाने लगा तो एक ने दूसरे की तरफ देख बहुत ही धीरे से कहा, " भाई साहब, देखा आपने! दुष्ठ दारोगा असल बात अपने लंगोटिया दोस्त से भी छिपा गया इसने जैपाल पर भी जाहिर न किया कि इसने वास्तव में तिलिस्म की ताली लेने के लिए मेरी बह दुर्दशा की थी और अन्त में उस पर काबू कर भी लिया.

" उसकी बात सुन दूसरे ने कहा, " ठीक है यह ऐसा ही चांगला है, मगर अब यहां ठहना मुनासिब नहीं, जिस मतलब से हम लोग यहां आये थे वह काम हो गया अस्तु अब चल देना चाहिए.

कौन ठिकाना इस कम्बख्त को कुछ शक हो जाए और अपने इस शैतान की आंत जैसे मकान में फंसाकर हम लोगों को गिरफ्तार ही कर ले.

" पहला बोला, " जैसी मर्जी आपकी, मगर मेरी इच्छा यही थी कि इसी समय इस कम्बख्त से बदला लेता! जैसी - जैसी तकलीफें इसने मुझे दी हैं मेरा ही दिल जानता है और मैं उन्हें किसी तरह भूल नहीं सकता! " दूसरे ने कहा, " ईश्वर ने चाहा तो उनकी वैसी ही सजा भी यह पावेगा मगर किसी मौके से, अभी इस वक्त बोलने का समय नहीं है, अच्छा अब आओ! " यह आदमी घूमा और दूसरा उसके पीछे हुआ, उसी कोठरी में से ऊपर की मंजिल में जाने के लिए काठ की सीढ़ी लगी हुई थी जिसके जरिये ये दोनों ऊपर निकल गये और तब कितने ही कमरों, दालानों और सीढ़ियों को पार करते हुए मकान के सबसे ऊपर वाली छत पर जा पहुंचे.

इस जगह मुण्डेर के साथ कमंद अभी तक लटक रही थी.

उस दूसरे आदमी ने नीचे की तरफ झांककर देखा और तब सब तरफ सन्नाटा पा क़मन्द को झटका दिया.

किसी ने जबाब में नीचे से क़मन्द को दो दफे हिलाया जिसके साथ ही इसने कहा, " बस सब ठीक है, आओ! " पहले वह और उसके बाद उसका साथी बारी - बारी से उसी क़मन्द की राह नीचे उतर गये और तब कमन्द को भी खींच लिया.

नीचे गली के अन्धकार में दबका हुआ एक आदमी न - जाने कब से खड़ा था जिससे इन दोनों ने पूछा, " क्यों सब ठीक है न?

” उसने जवाब दिया, " जी हां, सब ठीक है, किसी ने आप लोगों का जाना और आना नहीं देखा.

" जिस पर इन लोगों ने एक सन्तोष की सांस ली और तब तेजी के साथ एक तरफ को रवाना हो गये.

मगर तीनों में से किसी को भी इस बात की खबर न थी कि इनसे कुछ ही दूर पर के दूसरे मकान के बन्द दरवाजे की आड़ में कम्बल ओड़े पड़े एक आदमी ने इन सभी की पूरी कार्रवाई देख ली है जो इनके जाते ही उठा और तेजी के साथ दौड़ता हुआ दारोगा साहब के मकान में बने एक चोर दरवाजे के अन्दर घुस गया.

यह आदमी कौन है या इसका क्या इरादा है इसका जिक्र छोड़ हम इस वक्त उन्हीं तीनों के पीछे चलते और देखते हैं कि वे सब किधर जाते या क्या करते हैं.

रात आधी से कुछ ज्यादा जा चुकी है.

अपने खास बाग बाले महल के एक बड़े कमरे में सुन्दर मसही पर राजा गोपालसिंह सो रहे हैं.

कमरे में बहुत ही मद्धिम रोशनी हो रही है और सिर्फ एक को छोड़कर और सब दरवाजे भी बन्द है मगर उसके बाहर पड़ने वाले दालान में काफी रोशनी ही नहीं हो रही है बल्कि कड़ा पहरा भी पड़ रहा है.

चार आदमी डाल, तलवार और तीर - कमान लिए मुस्तैदी के साथ इधर से उधर घूम रहे हैं और उनमें से कोई - कोई कभी उस भिड़के हुए दरबाजे की दरार में आँख लगाकर भीतर की तरफ देख यह निश्चय भी कर लेता है कि सब ठीक तो है न?

यों तो मामूली तौर पर राजाओं के आस - पास पहरा पड़ता ही रहता है पर इधर राजा गोपालसिंह ने न - जाने क्यों अपनी हिफाजत का ख्याल बहुत ज्यादा बढ़ा दिया है और खास कर रात के वक्त तो वे जहां भी सोएं, महल में हथियार - बन्द लौंडियों द्वारा और बाहर विश्वासी सिपाहियों के जरिए अपनी पूरी हिफाजत रखते हैं.

राजा साहब किसी सबब से महल में नहीं गये हैं यहीं सो रहे हैं जो राजमहल का एक बाहरी हिस्सा है.

कमरे के सन्नाटे को एक बहुत ही हल्के खटके की आवाज ने तोड़ा.

कमरे की उस दीवार के साथ लगा हुआ एक बड़ा शीशा जिधर गोपालसिंह का पलंग था.

जरा - सा हिला और तब एक हल्की आवाज देता हुआ पीछे को हट गया जिससे उस जगह एक खिड़की - सी दिखाई पड़ने लगी जिसमें से निकलने वाली एक काली सूरत ने हाथ बढ़ाकर गोपालसिंह को हिलाया.

चौंककर उन्होंने आंखें खोल दी और उस काली शक्ल को देख घबराकर कुछ कहना ही चाहते थे कि उसने कोई अद्भूत चीज उनको दिखाई और साथ ही होंठ पर उंगली रख

चुप रहने का इशारा किया , वह न जाने कौन - सी चीज थी जिसे देखते ही फिर गोपालसिंह कुछ भी न बोले बल्कि धीरे - से पलंग से उठ उसी खिड़की में चले गये.

उनके जाने के बाद उसी काली शक्ल ने पुनः हाथ बढ़ाकर ओड़ने को इस ढंग से कर दिया कि यकायक देखने वाला यही समझे कि गोपालसिंह मुंह डांके सो रहे हैं और तब वह भी उस खिड़की के भीतर चला गया, खटके की हल्की आवाज हुई और वह शीशा ज्यों - का त्यों अपने ठिकाने बैठ गया.

यह जगह जहां अब गोपालसिंह थे एक पतली और अन्धेरी सुरंग थी जिसके अन्दर हाथ को हाथ नहीं दिख सकता था मगर उस काली शक्ल ने उनकी कलाई पकड़ ली और आगे की तरफ ले चला.

पन्द्रह - बीस कदम से ज्यादा जाना न पड़ा, पुनः एक खटान की आवाज आई, सामने एक छोटी खिड़की खुल गई और उसके पीछे एक कोठरी नजर आई जो किसी तरह के साज - सामान से एकदम खाली थी मगर जिसके अन्दर एक ओर जलती हुई लालटेन की हल्की रोशनी उस दुबले पतले आदमी की सूरत दिखाने को काफी थी जो वहां खड़ा था और जिसे देखते ही गोपालसिंह तेजी से झपटकर बड़े और उसके गले से लिपट गये.

इसमें कोई शक नहीं कि यह आदमी गोपालसिंह का कोई बहुत ही गहरा दोस्त था क्योंकि गोपालसिंह बहुत देर तक इसे अपने गले से लगाये रहे इस बीच में वह दूसरा आदमी जिसने उन्हें जगाया था पास खड़ा मुस्कराता हुआ उनकी तरफ देखता रहा मगर अंत में उसे कहना ही पड़ा, " अब बस किजे , अपने दोस्त को छोड़िए और एक जरूरी बात पर ध्यान दीजिए जो बहुत ही गौर से सुनने लायक है क्योंकि हम लोग अभी जाएँगे! "

गोपालसिंह यह सुन चौंककर अलग हो गए मगर उस आदमी का हाथ पकड़े - ही - पकड़े बोले, " क्या वह चीज नहीं मिली जिसके लिए आप परेशान थे! " इसका जवाब कुछ न दे उस आदमी ने अपना हाथ बड़ाकर कोई तरकीब ऐसी की कि उस लालटेन की रोशनी बहुत तेज हो गई और तब वहां की हर एक चीज साफ नजर आने लगी.

अब हमने भी पहचाना कि यह व्यक्ति इन्द्रदेव हैं मगर इस दूसरे आदमी को हम न पहचान सके जिसके साथ गोपालसिंह इतनी मुहब्बत से मिले थे क्योंकि वह हमारे लिए

बिल्कुल ही नया था.

देखिए, शायद इन लोगों की बातचीत से इसका कुछ परिचय मिले.

गोपालसिंह की बात सुन यह आदमी बोला, " मिली क्यों नहीं?

क्या इन्द्रदेव की मेहनत अकारण जा सकती है! यद्यपि कम्बख्त दारोगा ने उसे बेठिकाने छिपाया हुआ था पर इन्होंने खोज निकाला और मैंने भी देखते ही कह दिया कि यही चीज है.

गोपालसिंह ने यह सुन इन्द्रदेव से कहा, " क्या मैं भी देख सकता हूं कि वह कौन - सी ऐसी अनोखी चीज है जिसके लिए आप इस कदर परेशान थे कि तीन रोज वक्त से मुझे अपने दोस्त की सूरत देखने से भी वंचित किए हुए थे! क्या वह चीज इस वक्त आपके पास मौजूद है !! " इन्द्रदेव ने इसके जवाब में " हां, है! " कहा और तब अपने कपड़ों के अन्दर से कोई चीज निकाल गोपालसिंह के हाथ पर रख दी.

गोपालसिंह ने ताज्जुब के साथ उस चीज को देखा.

वह आठ अंगुल लम्बा और इससे कुछ कम चौड़ा एक जड़ाउ डिब्बा था जिस पर चारों तरफ किमती जबाहिरात हीरे - मानिक - पन्ना पुखराज मोती आदि जड़े हुए थे मगर ऊपर की तरफ किसी तरह के मसाले में डूबी हुई एक विचित्र चीज बैठाई हुई थी.

गौर से देखने से मालूम हुआ कि यह पन्ने के एक बड़े टुकड़े को तराश कर बनाई हुई कोई चाभी है जो मोम की तरह के किसी मसाले के साथ उस डिब्बे के साथ इस मजबूती से बैठाई हुई है कि जोर करने पर भी अलग नहीं हो सकती.

गोपालसिंह कुछ देर तक गौर से इस डिब्बे और उस विचित्र चाभी को देखते रहे और तब उस दुबले - पतले आदमी की तरफ देखकर बोले, " क्यों श्यामजी, क्या इसी के लिए हरामजादे दारोगा ने तुम्हें इस कदर तकलीफ दी थी!

अवश्य ही उसके लिए यह कोई बहुत ही किमती चीज होगी, तभी ना उसने तुम्हारे साथ ऐसा बर्ताव किया , क्योंकि इतना तो वह भी जरूर ही समझता होगा कि अगर कभी मेरे कान तक उसकी इन कार्रवाइयों की सुनगुन पहुंची तो मैं उसे बुरी - से - बुरी सजा देने में भी परहेज न करूंगा?

मगर क्या आपने इस डिब्बे को खोला भी है! " यह सुन श्यामलाल ने जबाब दिया, " यह चीज बहुत ही थोड़ी देर मेरे पास रही और इस पर ज्यादा तवज्जो नहीं दे पाया, मगर अब इन्द्रदेव की जुबानी सुनता हूं कि इसके पेट में एक बहुत ही किमती चीज छिपी हुई है ।

गोपालसिंह ने यह सुन ताज्जुब के साथ इन्द्रदेव की तरह देखा जो कुछ हंसकर बोले, " अभी तक मैंने आपसे साफ - साफ नहीं बताया था कि वह कौन - सी चीज है जो दारोगा के कब्जे में हैं और जिसके अपने हाथ में आये बिना उस पर किसी तरह की जोर - जबरदस्ती या जुल्म नहीं किया जा सकता मगर अब, इस चीज के कब्जे में आ जाने के बाद, मैं बेखौफ आपसे कह सकता हूं कि अब आपको दारोगा से डरने - दबने, उसे तरह देते जाने या उसका जरा भी ख्याल करने की बिल्कुल जरूरत नहीं है और अब आप उससे जिस तरह का चाहें बर्ताव कर सकते हैं.

इस चीज का पूरा - पूरा हाल सिर्फ भैयाराजा और महाराजा ही जानते थे, पर मैं अपने बड़े - बुजुर्गों के मुंह से सुनकर इतना कह सकता हूं कि यह तिलिस्म के उस हिस्से की एक चाभी है जो आपके हाथों से टूटने वाला है और इसके अन्दर क्या है यह भी मैं अभी आपको दिखाये देता हूं इतना कह इन्द्रदेव ने हाथ बढ़ाकर उस डिब्बे के सामने की तरफ जड़े एक मोती को किसी खास तरकीब के साथ दबाया जिसके साथ ही उसका ऊपरी हिस्सा डकने की तरह खुल गया और उसके अन्दर एक छोटी - सी भोजपत्र की बनी हुई पोथी नजर आने लगी जिसे गोपालसिंह ने निकालकर माथे से लगाया और तब दो - एक पन्ने उलट - पलटकर इधर - उधर से देखने के बाद कहा, “ जरूर इस किताब में उस तिलिस्म को तोड़ने की तरक़ीब लिखी हुई होगी?

" इन्द्रदेव ने जबाब दिया, " हां, और अब आपको मुनासिब है कि इसे खूब गौर से दो - तीन बल्कि चार बार पढ़ जायें जिसमें अगर कभी यह किताब आपके पास न भी रहे तो भी इसकी खास - खास बात आपके जेहन से उतरे नहीं, यह आपकी चीज है इसे मैं आपके पास ही छोड़े जाता हूँ मगर मुनासिब यही है कि इस चीज की अपनी जान से बढ़कर हिफाजत करें और इसको किसी तरह भी कब्जे के बाहर जाने न दें.

बस, इसी को दारोगा के कब्जे से निकालने के लिए मैं इन श्यामलाल को यहां रोके हुए था क्योंकि सिर्फ ये ही इसे काबू में कर सकते थे.

अब मैं इन्हें लेकर अपने घर जाता हूँ जहाँ इनकी राह बड़ी बेचैनी के साथ इनकी वीवी और रिश्तेदार लोग कर रहे होंगे.

उन लोगों का ख्याल करना भी जरूरी है, कामेश्वर और प्रभाकरसिंह के सवार पर सवार आ रहे हैं.

गोपाल:

आपने ऐसी बात कही मैं इन्हें रोकने से मजबूर हो गया मगर फिर भी इतना जरूर कहूंगा कि आप इनको जल्दी - से - जल्दी पुनः मेरे पास ले आवें और या नहीं तो मुझे ही इस बात की इजाजत दें कि मैं वहां आकर अपने सब प्रेमियों से मिलूं.

इन्द्रदेव:

नहीं - नहीं, अभी नहीं, इस मामले में जल्दी करने से सब बात बिगड़ जाएगी.

जो काम करना चाहिये खूबसूरती से करना चाहिये अभी तो दारोगा साहब से सभी का सामना कराने और यह पूछने की जरूरत है कि कहिये जनाब, इन बेचारों ने आपका क्या बिगाड़ा था जो आपने इस कदर तकलीफें इन्हें दी?

गोपाल ०:

माफ कीजिये, बाज आया मैं आपके खूबसूरती से काम करने से! अब तो मैं खुले आम दरबार करके दारोगा पर राय श्यामलाल के साथ दगा करने का इल्जाम लगाऊंगा और उसे जेलखाने भेजवा कर कोई अच्छी सजा तजवीज करूंगा बल्कि उसी के साथ उस कम्बख्त मु .

.

.

इन्द्र:

हैं हैं! अभी आप ऐसा करने की बात भी न सोचिये.

अभी आपको सब .

.

.

गोपाल:

(झुंझलाकर) अलग रखिये आप अपने सब्र को! (हाथ से श्यामलाल की तरफ बताकर) मेरे ऐसे - ऐसे लंगोटिया दोस्तों पर वह ह्रामजादा सफाई के हाथ फेरे और मैं सब्र किए बैठा रहूं, नहीं यह मेरे लिए नहीं हो सकता.

अभी तक जो मैं उसकी हरामजादगियों का हाल सुन - सुनकर भी चुपचाप बैठा रह जाया करता था, सिर्फ यही नहीं उस कम्बख्त से दबकर चलता था वह आपके सिर्फ इस कहने पर कि कोई चीज शैतान के पास है जिसके पाये बिना मैं तिलिस्म तोड़ न सकूंगा, अब आपकी कृपा से मैं अनमोल चीज को पा गया हूं तो अब मुझे कुछ भी परवाह नहीं रह गई है और मैं एक बार अपने दिल की कर गुजरना चाहता हूं, बस अब मुझ पर दया किजे और मुझे रोकने या दबाने की कोशिश न कीजिए.

इन्द्र:

(हंसकर) अरे भाई, मैं कुछ हमेशा के लिए थोड़ी ही आपको कह रहा हूं! मैं तो सिर्फ कुछ दिन तक आपको और रोके रखना चाहता हूं, कम - से - कम .

.

.

.

गोपाल:

जी नहीं, अब क्रमबेश कुछ भी मैं सुनने को तैयार नहीं !! गोपालसिंह का हठ देख इन्द्रदेव कुछ चिन्ता में पड़ गये और जरा देर के लिए चुप हो गये.

आखिर उन्होंने कहा, " अच्छा, मेरी सिर्फ एक बात आप सुन लीजिए और जो मन में आवे सो कीजिए! " गोपालसिंह और इन्द्रदेव में धीरे - धीरे कुछ बातें होने लगीं जिन्हें हम भी सुन न सके मगर बातों का यह सिलसिला ज्यादा देर तक न रहा और बहुत जल्द ही इन्द्रदेव ने यह कहकर समाप्त किया , जो कुछ मेरे दिल में था मैंने आपको कह सुनाया, अब आपके जी में जो आवे सो कीजिए और दारोगा के साथ जैसा चाहे बर्ताव

करिए, मगर मेरी आखिरी राय अब भी यही है कि कम - से - कम तीन दिन तक आप इस मामले में शान्त रहें और जब श्यामजी को घर पहुंचाकर मैं वापस लौट आऊं तब मेरी मौजूदगी में ही जो जी में आवे सो करें, बस, अब चलिए आपको ठिकाने पहुंचा दूं! " गोपालसिंह कुछ कहना चाहते थे मगर न जाने क्या समझकर रुक गये, इन्द्रदेव ने उनका हाथ पकड़ लिया और उसी सुरंग की राह ले जाकर पुनः उनके पलंग तक पहुंचा दिया.

इसके बाद वे लौटे और तब श्यामलाल को साथ लिए तिलिस्मी राह से राजमहल और खास बाग के बाहर हो गए.

अफसोस इन्द्रदेव! क्या तुम्हें इस बात की भी खबर है कि तुम्हारे कैलाशभवन के लिए रवाना होते ही गोपालसिंह किस मुसीबत में पड़ जायेंगे?

क्या तुम्हें मालूम है कि दारोगा के किसी जासूस ने उसे होशियार कर दिया और वह जान गया कि कोई ऐयार उसके घर में घुसकर वह बहुत ही कीमती चीज निकाल ले गया जिसे वह बड़ी हिफाजत से रखे हुए था और जिसके पाने के लिए गोपालसिंह के दिली दोस्त श्यामलाल पर भी बार करने में चूका न था यद्यपि वह जानता था कि अगर कभी भण्डा फूटा और गोपालसिंह को इन बातों की खबर हुई तो वे उसे सूली दिये बिना न रहेंगे?

क्या तुम जानते हो कि दारोगा का ख्याल तुरन्त तुम्हारे और श्यामलाल की तरफ चला जाएगा और वह समझ जाएगा कि यह तुम्हीं लोगों की कार्रवाई हो सकती है, और वह उसी दम एक ऐसी कार्रवाई जारी कर देगा जिसका नतीजा गोपालसिंह और जमानिया के राजसिंहासन के लिए बहुत ही बुरा निकलेगा!

नोवां ब्यान।

उपरोक्त घटना के दूसरे ही दिन राजा गोपालसिंह के सख्त बीमार हो जाने और तीसरे दिन मर जाने की खबर चारों तरफ फैल गई जिसने जमानिया में एकदम तहलका मचा दिया.

चन्द्रकान्ता सन्तति पड़ने वाले पाठक भरतसिंह और दलीपशाह के किस्से के द्वारा और खुद गोपालसिंह की भी जुबानी इस मामले का खुलासा हाल जान गये हैं अस्तु इस जगह हमें वे सब बातें विस्तार के साथ लिखने की कोई भी जरूरत नहीं और इसीलिए अब हम सिर्फ उन्हीं बातों का जिक्र करते हैं जिनके लिखने की इस भूतनाथ के किस्से में जरूरत है, मगर हां, इतना कहे बिना हम नहीं रह सकते कि गोपालसिंह की इस नकली मौत के सिलसिले में कम्बख्त मुन्दर और धूर्त दारोगा ने वह रूपक साधा कि राज्य और राजमहल के उन बहुत थोड़े - से आदमियों को छोड़ जिनको कि इस घटना के भीतरी हाल की जानकारी थी बाकी शहर और राज्य - भर के तमाम लोगों को यह विश्वास हो गया कि राजा साहब के मरने का सबसे भारी गम इन्हीं दोनों को हुआ महल में मुन्दर ने पहले तो गोपालसिंह की लाश के साथ ही जल मरने की कोशिश की मगर जब लोगों ने ऐसा न करने दिया तब खाना - पीना, नहाना - धोना सब कुछ त्याग दिया और केवल एक कम्बल ओड़ और एक बिछाकर राजा साहब की तस्वीर सामने रखे उनके नाम की माला फेरते हुए सात दिन और सात रात तक एक ही आसन से बैठे रहकर सब पर यह जाहिर कर दिया कि अगर राज - कर्मचारियों ने उसे गोपालसिंह की चिता पर उनके साथ जलकर सती नहीं होने दिया है तो वह इस प्रकार अन्न - जल और निद्रा का त्याग कर बहुत जल्दी ही वे जिस लोक में होंगे वहीं जाकर उनके साथ मिलने की तैयारी करेगी.

और इधर हमारे दारोगा साहब ने भी कुछ कम नाटक नहीं रचा.

बड़े महाराज की मृत्यु के समय जैसा कुछ रंग वे लाये थे उससे कहीं बड़कर इस समय उन्होंने दिखाया और हर तरह से सभी पर साबित कर दिया कि अब इस पाप - भरी दुनिया में रहने की इच्छा उनकी जरा भी नहीं है और वे भी यही चाहते हैं कि किसी प्रकार उनके दु:खमय जीवन का अन्त हो जाए.

मगर खैर, समझने वाले सब कुछ समझते और जानते ही थे और इन दोनों व्यक्तियों की कार्रवाइयों ने जमानिया की प्रजा और राजकर्मचारियों को चाहे जिस कदर भी धोखे में डाला हो पर इन्द्रदेव, दलीपशाह भूतनाथ, प्रभाकरसिंह या कामेश्वर और श्यामलाल आदि पर इसका कोई असर न पड़ा और ये लोग चुपचाप अपनी कार्रवाई में लगे रहे.

इन्द्रदेव क्या सोच या कर रहे थे इसकी तो हमें खबर नहीं मगर भूतनाथ जिस फेर में था उसका पता हमें है और हम उसी का जिक्र इस जगह करना चाहते हैं.

रात लगभग पहर - भर के जा चुकी होगी.

भूतनाथ की कुटिया में एकदम सन्नाटा है क्योंकि आज अपनी तबीयत खराब होने का बहाना करके उसने उन सभी को ही धता बताया है जो साधु - महात्मा समझकर इसके पैरों की धूल के लिए अक्सर शाम के वक्त यहां आ इकट्ठे हुआ करते थे.

इस समय बाहर वाली कोठी में साधु का बाना धारण किये हुए उसके केवल दो - तीन शागिर्द मात्र ही एक धूनी के चारो तरफ बैठे धीरे - धीरे कुछ बातें कर रहे हैं और या फिर भीतर बाली कोठरी में, जो अपने नीचे दरवाजे तथा नीची पाटन की बदौलत ' गुफा ' के नाम से प्रसिद्ध है अकेला पड़ा भूतनाथ कुछ सोच रहा है ।

इस समय भूतनाथ के मन में क्या - क्या बातें घूम रही हैं इसका कहना बहुत ही कठिन है.

हम केवल इतना ही बता सकते हैं कि वह बहुत देर से इसी तरह अधलेढा पड़ा अपने ख्याल में इस तरह गर्क हो रहा है कि उसे इस बात की भी खबर नहीं कि किसी ने एक खास इशारा करके बाह्री दरवाजा खुलवाया है और अब उसकी ' गुफा ' के दरवाजे पर आकर खड़ा हुआ इस बात की राह देख रहा है कि ' महात्मा ' का ध्यान उस पर पड़े और वह भीतर घुसे, मगर जब उसे इस बात की राह देखते खड़े बहुत देर हो गई और भूतनाथ ने सिर न उठाया तो आखिर लाचार होकर उसने धीरे - से खांसा जिस पर भूतनाथ का ध्यान टूटा और उसने उधर देखकर कहा, ' कौन है?

" उसने जवाब दिया- मैं हूं, बलदेव! " जिसे सुनते ही चौंककर भूतनाथ बोला, " हां तुम! आ गये?

बड़ी जल्दी लौट आये !! अच्छा इधर आओ और सुनाओ क्या खबर है?

" तब वह आदमी गुफा के भीतर चला गया और अब उस दीये की रोशनी में जो भूतनाथ के सिरहाने जल रहा था, यह देख हमें बहुत ताज्जुब हुआ कि यह एक औरत है और औरत भी कौन?

वही सारी जानी - पहचानी नन्हों! यह क्या माभला है खैर देखिये, जो कुछ भेद है आप ही खुल जाएगा.

भूतनाथ बोला, “ आओ बलदेव, इधर निकल आओ बताओ क्या खबर लाए! मगर पहले इस दीये को जरा तेज कर दो.

मैं देकूं तुमने कौन शक्ल बनाई है! आने वाले ने रोशनी तेज कर दी और भूतनाथ ने गौर से उसकी शक्ल देखने के बाद कहा, " वेशक अच्छा भेष धरा है.

मैं समझता हूँ दारोगा तुम्हें कभी पहचान न सका होगा.

हाँ, दलीपशाह को कुछ शक हो गया तो मैं नहीं कह सकता क्योंकि वह् कम्बख्त बड़ा ही धूर्त है और उसकी निगाह बड़ी तेज है.

बलदेव:

यही डर तो मुझे भी था मगर भाग्यवश ऐसा न हुआ.

जब मैं दलीपशाह के पास पहुंचा तो तबीयत कुछ खराब होने के कारण उन्हें पलंग पर पड़े पाया और उन्होंने मुझ पर ज्यादा ध्यान न दिया बल्कि साधारण तौर पर दो - चार बातें कर दारोगा की चिट्ठी ली और पड़कर जबाब लिख देने के बाद तुरन्त ही बिदा कर दिया.

मगर दारोगा साहब से मेरी बहुत देर तक खुलकर बातें होती रहीं फिर भी वे मुझे बिल्कुल पहचान न सके.

भूत:

अच्छा, तो अब खुलासा बता जाओ कि क्या हुआ?

बल:

आपकी आज्ञानुसार हम दोनों ने नन्हों का पीछा किया .

वह यहां से निकलकर सीधी मिर्जापुर की तरफ रवाना हुई और जब हमें विश्वास हो गया कि उसका इरादा दलीपशाह ही के घर जाने का है तो हमने उसे गिरफ्तार कर लिया और

तब एक आड़ की जगह ले जाकर मैंने अपनी शक्ल उसके जैसी बनाई तथा उसके कपड़े वगैरह भी पहन ठीक उसी की तरह बन गया.

उसके जैसा ऐयारी बाला बटुआ खुद लगाने बाद उसे अपने भाई के सुपुर्द कर मैं दलीपशाह के पास पहुंचा.

जो कुछ करना था वह आपने समझा ही दिया था अस्तु मैंने दारोगा साहब की चिट्ठी उन्हें दी.

वे अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए थे और नौकरों से मैं सुन चुका था कि उनकी तबीयत कुछ खराब है, अस्तु मेरा डर बहुत कुछ कम हो चुका था.

उन्होंने चिट्ठी पड़ी और दारोगा साहब के बारे में दो - चार मामूली सवाल किए, तब खुद अपने हाथ से चिट्ठी का जबाब लिखकर मुझे दिया और बोले कि इस समय मेरी तबीयत खराब है, यह चिट्ठी दारोगासाहब को दे देना और कह देना कि बाकी बातों का जवाब मुलाकात होने पर खुद दूंगा, मैंने भी कोई बात छेड़ना उचित न समझा और वहां से चलकर अपने भाई के पास जा पहुंचा जो नन्हो की हिफाजत करता हुआ मेरी राह देख रहा था.

भूत:

दलीपशाह की चिट्ठी कहां है?

बल:

' असली चिट्ठी तो दारोगा को दे दी मगर उसकी नकल मेरे पास मौजूद है.

इतना कह बलदेव ने एक मोड़ा हुआ कागज निकालकर भूतनाथ को दिया उसने उसे चिराग की रोशनी में पड़ा, यह लिखा हुआ था: आपका खत मिला, राजा गोपालसिंह की मौत ने मुझे एकदम बेकाबू कर दिया है और मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है कि क्या करूं, क्या न करूं.

आपको तो जरूर ही उनके उठ जाने का बहुत गहरा गम हुआ होगा पर मुझ पर उनका जितना प्रेम था उसका हाल भी आप अच्छी तरह जानते हैं, अस्तु इस समय मैं कुछ भी करने - धरने लायक नहीं हूं, आप कुछ दिन सब किजे , मेरी तबीयत आजकल खराब

रहती है, जरा ठीक होने पर मैं खुद ही आपसे मिलूंगा और इस बारे में बातें करूंगा, लेकिन इतना मैं कह सकता हूं कि अगर आपका शक सही निकला और इस कार्रवाई में भूतनाथ का कोई हाथ पाया गया तो मैं उसके साथ कड़ी - से - कड़ी कार्रवाई जो कर सकूँगा करने में परहेज न लगाऊंगा और इस बात का जरा भी लिहाज न करूंगा कि वह मेरा रिश्तेदार है.

मगर हाँ, यह तो अभी आपने बताया ही नहीं कि मैं आपका काम कर डालूं तो आप मुझे क्या देंगे?

आपका दलीपशाह

दारोगा:

(कुछ चिन्ता करके यह बात तो ठीक नहीं है, मैं आपसे बहुत बड़ी उम्मीद रखता हूँ और आपके लिए सब कुछ करने को तैयार हूं ।

गदाधरः:

माफ कीजिएगा, मेरी तरफ से आपका दिल भी स्वच्छ नहीं है, यदि स्वच्छ होता तो आप दयाराम वाला भेद मुझसे कदापि न छिपाते.

दारोगा:

छिःछिः! आपके दिल से अभी तक यह भ्रम दूर नहीं होता! न - मालूम किस कम्बख्त ने आपसे कह दिया कि दयाराम अभी तक जीते हैं और मेरी कैद में हैं! इस काम के कर्ता - धर्ता तुम खुद होकर फिर ऐसी बात कहते हो! गदा:

स्वयम् ध्यानसिंह ने यह बात मुझसे कही है और यह भी समझा दिया है कि दयाराम के विषय में मैं बिल्कुल ही निर्दोष हूँ, दारोगा:

वह झक मारता है जो ऐसा कहता है, आपके और हमारे बीच में लड़ाई लगा कर फायदा उठाया चाहता है! भूत:

शायद ऐसा ही हो, खैर देखा जायगा.

अच्छा अब मैं अपना काम कर चुका, दुश्मनों की कार्रवाई से आपको सचेत कर दिया, अब जाता हूँ, दारोगा ०:

वाह - वाह, अभी तो मैंने इस बारे मे आपसे कुछ पूछा ही नहीं.

भूत(मुस्कराते हुए) अच्छा पूछिये, क्या पूछते हैं?

दारोगा:

पहिले तो यह बताइये कि मेरा वह दुश्मन कौन है जिसने मेरे साथ ऐसी धूर्तता की, और जैपालसिंह का क्या हाल है, दुश्मनों के हाथ से किस तरह उसकी जान बचेगी, और इस मामले में आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं?

भूत मैं आपके उस दुश्मन को अभी तक पहिचान न सका क्योंकि वह हरदव ही अपनी सूरत बदले रहता है.

हाँ भैयाराजा और इन्द्रदेव वगैरह उसे जरूर जानते होंगे मगर उसका असल भेद वे लोग मुझसे कुछ भी नहीं कहते.

मेघराज के नाम से वे लोग उसे सम्बोधन करते हैं बस इतना ही मुझे मालूम है.

बड़ी मुश्किल से मैंने उसके स्थान का पता लगाया मगर उस तक पहुँचना अथवा उसको धोखा देना बड़ा ही कठिन है.

भूतनाथ ने चिट्ठी पड़कर हाथ से मसल डाली और क्रोध की मुद्रा से कहा, " अच्छा कम्बख्त, ठहर जा और देख कि तू मुझसे क़ड़ा बर्ताव करता है या मैं तुझे मिट्टी में मिला देता हूं! अच्छा बलदेव, कहो तब क्या हुआ?

" बल:

आपकी आज्ञानुसार नन्हों को हम लोगों ने लामा घाटी में पहुंचाया और तब दारोगा साहब की तरफ रवाना हुए.

उसी अजायबघर में उनसे भेंट हुई.

आप जानते होंगे कि राजा साहब के मरने के बाद से उन्होंने शहर में रहना एकदम छोड़ दिया है.

उसी बंगले में रहते हैं, कपड़ा - लत्ता क्या भोजन तक त्याग कर एकदम साधुओं का ढंग अख्तियार किया है, केवल एक कोपीन लगाये शरीर में विभूति लपेटे, बाघम्बर पर बैठे मृगछाया ओड़े रहते हैं और दिन - रात भगवद् स्मरण किया करते हैं, केवल सुबह - शाम एक घंटा रियासत का जरूरी काम जो उनके सामने आ जाता है उसे देखते हैं बाकी किसी वक्त कोई उनसे भेंट नहीं कर सकता.

भूतः:

जरूर उसने ऐसा ही रूपक साधा होगा, वह अव्वल दर्जे का ढोंगी है.

बड़े महाराज की मौत के समय भी उसने ऐसा ही नाटक रचा था, खैर, तो तुम्हारी उससे भेंट हुई?

बल:

जी हां, उसी अजायबघर की एक कोठरी में रात के वक्त वे मुझसे मिले.

सफर का हाल पूछा, आपकी और दलीपशाह की कैफियत दरियाफ्त की .

.

.

भूत:

मेरी कैफियत?

बल:

जी हां, आपकी.

उसकी बातों से मुझे मालूम हो गया कि नन्हो उसी की भेजी हुई आपके पास आती है और उसके इशारे से उसकी और दलीपशाह की चिट्ठियां आपको दिखाई जाती हैं.

बल्कि गुरुजी, मुझे तो यह भी सन्देह होता है कि कम्बखत दारोगा नन्हों के जरिये आपको किसी जाल में फंसाना चाहता हैं.

भूत:

यही तो मेरा भी ख्याल हो रहा था, यही सोच मैंने तुम्हें नन्हों को गिरफ्तार करने को कहा था.

अच्छा, तुम्हारी उसकी क्या - क्या बातें हुई और कैसे तुम्हें यह शक हुआ?

बल:

जब मैंने दलीपशाह का खत उसे दिया तो पहला सवाल उसका यही हुआ- " क्या चिट्ठी भूतनाथ को दिखला चुकी हो?

" मैंने जवाब दिया " जी नहीं, मैं मिर्जापुर से सीधी इधर ही चली आई " जिस पर वह बोला, " तुमने गलती की! खैर, यह खत जो अब मैं लिख देता हूं उसे दिखाये बिना मत जाना.

" उसने दलीपशाह की चिट्ठी का एक जबाब मुझे लिखकर दिया और तब देर तक तरह - तरह की बातें करता रहा.

मगर गुरुजी, उसकी बातों से मुझे यह विश्वास होता है कि वह किसी भारी चिन्ता में पड़ा हुआ है और सचमुच यह चाहता है कि आप और अगर आप नहीं तो दलीपशाह उसकी मदद करे.

वह आप लोगों से अपना कोई भारी - भरकम काम निकलवा लेने की उम्मीद रखता है और साफ - साफ यह कहता है कि अगर आपमें से कोई या दोनों ही उसकी मदद पर तैयार न हुए तो वह कहीं का न रहेगा मैं तो समझता हूं कि अगर आप एक दफे उनसे मिले तो जरूर कोई मतलब की बात मालूम होगी.

भूत:

मैं यही सोच रहा हूं और चाहता हूं कि उससे मिलूं.

खैर उसने क्या चिट्ठी लिखी है जरा दिखलाओ.

बलदेव ने यह सुन एक चिट्ठी जो खलीते के अन्दर रखी हुई थी भूतनाथ की तरफ बढ़ाई.

खलीता खोल भूतनाथ ने खत निकाला और पड़ा.

यह लिखा था " मेरे प्यारे दोस्त दलीपशाह, " मुझे नन्हों से यह जान बहुत अफसोस हुआ कि आपकी तबीयत खराब हो गई है.

मैं इसी उम्मीद में था कि आपसे भेंट होगी और मैं अपना शक पूरा - पूरा बयान कर सकूंगा, खैर, इस हालत में आपको तकलीफ देना भी मैं पसन्द नहीं करता और खुद ही आपसे मिलने आना चाहता हूं, आप बताइये कि कहां किस दिन और किस समय मैं आपके दर्शन करूं, आपसे कहने की जरूरत नहीं कि मेरी निगाह में यह काम इतना जरूरी है कि राजा साहब की मौत का गम भी मुझे रोक नहीं सकता और मैं जल्दी - से - जल्दी अपने दिल का हाल आपको सुना देना चाहता हूं क्योंकि मुझे यह भी शक है कि न - जाने किस दिन दुश्मनों का बार मुझ पर हो जाए और वह भेद मेरी छाती के अन्दर ही छिपा रह जाए.

चिट्ठी में कुछ कहते डर - सा लगता है.

यद्यपि एक विश्वासी व्यक्ति के हाथ भेज रहा हूं तो भी कौन ठिकाना दुश्मनों के हाथ पड़ ही जाए, अस्तु इस जगह सिर्फ इतना ही इशारा कीये देता हूं कि जिस चीज को बड़ा भारी पाप करके भूतनाथ ने जमानिया की बड़ी महारानी से पाया था वह मेरे हाथ लग गई है और मैं उसे आपको दे देने को तैयार हूं बशर्ते कि आप मेरा काम पूरा कर दें इस चिट्ठी के नीचे दारोगा का दस्तख्त और मोहर थी जिस पर भूतनाथ ने बड़े गौर से निगाह डाली और तब खत हाथ में लिए किसी चिन्ता में पड़ गया.

बलदेव ने उससे कुछ कहना चाहा मगर जब देखा कि वह गहरे सोच में डूबा हुआ है तो चुप रह गया.

बहुत देर तक भूतनाथ की यही हालत रही तथा और अभी न - जाने कब तक वह सोच - सागर में निमग्न रहता अगर गुफा का दरवाजा खुलने की आहट उसके कानों में न पड़ती.

दरवाजा खोलकर किसी नये आदमी के भीतर आने से उसका ध्यान भंग किया और उसने चौंककर कहा, " कौन?

रामेश्वरचन्द्र! तुम इतनी जल्दी कैसे लौट आए! तुम्हारी यह हालत क्या हो रही है! क्या तुम जख्मी हो?

" यह आने वाला सचमुच ही भूतनाथ का शागिर्द रामेश्वरचन्द्र था जो सीधा भूतनाथ के पास पहुंचा और घबराहट - भरी आवाज में बोला, " गुरुजी - गुरुजी, गोपालसिंह अभी मरे नहीं हैं और यद्यपि बहुत बड़े खतरे में है फिर भी हम लोग अगर कोशिश करें तो उनको बचा सकते हैं! भूतनाथ चौंक गया और एक ताज्जुब की आवाज उसके मुंह से निकल पड़ी अधलेटा पड़ा था, सो उठ बैठा और ताज्जुब से साथ रामेश्वरचन्द्र से बोला, हैं! यह तुम क्या कह रहे हो?

" रामेश्वर बोला, " मैं बहुत ठीक कह रहा हूं! उनके मरने की एकदम झूठी खबर मुन्दर और ह्ननामसिंह वगैरह ने मिलकर उड़ाई है.

असल में वे कहीं छिपा दिये गये हैं और लोगों को एक बनावटी लाश दिखलाकर जला दी गई है, मैं यह बात बहुत पक्के तौर पर कहता हूं! "

भूतनाथ चौंक पड़ा मगर अपने को शान्त रखे हुए उसने कहा, " अच्छा तुम जरा ठंडे हो, कपड़े बदलो और कुछ मलहम पट्टी करो, तब मुझे बताना कि क्या माभला है और कैसे तुमने यह बात जानी?

" जिसके जवाब में रामेश्वचन्द्र बोला, " मेरी चोट का ख्याल न करें और मेरी बातें सुनकर तुरन्त निश्चय करें कि अब हम लोगों को क्या करना चाहिए क्योंकि देर होने से मुमकिन है कुछ गड़बड़ी हो जाए.

भूतनाथ ने यह सुन रामेश्वरचन्द्र को अपनी बगल में बैठने का इशारा किया और धीरे - धीरे बातें करने लगा.

दसवां व्यान।

रात आधी से कुछ ज्यादा जा चुकी थी.

अजायबघर की छोटी मगर सुन्दर इमारत में इस समय एकदम सन्नाटा और अन्धेरा है, केवल पूरब तरफ बाली कोठरी में से कुछ आहट आ रही है जिसमें जलने वाले एक मामूली चिराग की हल्की रोशनी दरवाजे की उस संध से बाहर आकर फीकी - फीकी

कुछ दूर तक फैल रही है जिसमें आंखें लगाये एक आदमी न जाने कब से खड़ा भीतर की हालत पर गौर कर रहा है.

कोठरी के अन्दर कुछ ज्यादा सामान नहीं है.

न कुछ विशेष आदमी ही हैं, बीचोंबीच में काठ की एक चौकी पड़ी हुई है जिस पर बाघम्बर बिछा हुआ है और उस पर मृगचर्म ओड़े सारे शरीर में भस्म लगाये, सफेद दाढ़ी और सफेद जटा फैलाये, माथे पर त्रिपुण्ड धारण किए एक महात्मा बैठे मोटे - मोटे दानों की हज़ारा माला फेर रहे हैं, केवल इस माला के दानों की परसपर की रगड़ या कभी - कभी महात्माजी के होंठों से आप - से - आप निकल पड़ने वाले किसी बीज मन्त्र की ध्वनि ही उस स्थान का सन्नाटा तोड़ती है नहीं तो वहां जरा भी शब्द नहीं होता.

काला कम्बल ओड़े बाहर खड़ा वह आदमी कुछ देर तक तो भीतर की कैफियत देखता रहा और तब उसने गौर से अपने चारों तरफ देखा.

सब तरफ सन्नाटा था, कहीं किसी की आहट या किसी आदमी के होने का खटका तक न था, मगर फिर भी उसका मन न माना और वह दबे पांव एक बार उस इमारत - भर में घूम आया, केबल उत्तर तरफ वाली कोठरी को छोड़कर, जो सब तरफ से बन्द थी, बाकी सब जगहों के दरवाजे खुले थे और वह एक - एक करके सब देख आया पर न तो उसे कहीं कोई आदमी ही सोया, बैठा या लेटा दिखा और न किसी तरह का सामान ही कहीं नजर आया.

वह सदर दरबाजे तक भी पहुंचा मगर उसे भी साधारण तौर पर भीतर से बन्द पाया जिससे हमें यह सोचना पड़ता है कि यह किसी तरह क़मन्द लगाकर या कोई और तरकीब कर यहां पहुंचा है, खैर, जो कुछ हो.

सब तरह से घूम - फिर और अपना मन भरकर वह आदमी फिर उसी पहली कोठरी के दरवाजे पर पहुंचा और एक बार अन्दर झांककर देखने और सब कुछ ज्यों - का - त्यों पाने के बाद उसने धीरे - से कोठरी का पल्ला खोला.

उसे सन्देह था कि चौकी पर बैठे महात्मा दरवाजा खुलते देख चौके और कुछ कहेगें पर ऐसा कुछ भी न हुआ यहाँ तक वह उनके बहुत पास तक चला गया और तब उसकी तरह हमने भी देखा कि महात्माजी के नेत्र बन्द हैं और उनके चेहरे पर और आंखों के

चारों तरफ लगी हुई भभूत - स्थान - स्थान से गीली होकर अपनी नीरव कथा कह रही है.

काला कम्बल ओड़े वह आदमी कुछ देर तक यहां खड़ा रहा पर उसने देखा कि अपने जप में डूबे उन महात्माजी को उसके आने की कुछ भी खबर नहीं है तो वह कुछ मुस्कराया, उसने बगल के आले पर जलते हुए चिराग की बत्ती तेज की और तब जोर से खांसकर महात्माजी का ध्यान भंग किया , उसके बदन में हल्की फुरही आई, उंगलियों तक पहुंचा हुआ सुमेरू हाथ से माथे से लगाया, कुछ अस्पष्ठ स्तुति के शब्द सुनाई पड़े और तब माला रख महात्मा ने अपने नेत्र खोल चारों तरफ देखा, रोशनी के पास किसी आदमी को खड़ा देख उन्होंने पूछा, " कौन?

" वह आदमी उठकर हंसा, फिर एक कदम उनकी तरफ बढ़कर बोला, " वाह दारोगा साहब वाह! रूपक तो आपने बड़ा सच्चा रचा है! मगर यह तो बताइए कि इस निराले में ऐसा ढोंग करने की क्या जरूरत थी?

इस समय तो कोई भी यहां है नहीं जो आपकी इस हालत को देख सके !!

हैं, यह क्या बात?

क्या वे बाघम्बर पर बैठे महात्मा और कोई नहीं जमानिया के दारोगा साहब हैं !! बेशक वे ही हैं क्योंकि उनका कंठ - स्वर इस बात में सन्देह नहीं रहने देता.

इस आदमी की बात सुन उन्होंने कहा- " क्या मैं भूतनाथ की आवाज सुन रहा हूं या मेरे कानों का भ्रम है?

इधर आओ भूतनाथ, अपने दोस्तों को भी पहचान नहीं सकता! आओ और बताओ कि आज इतने दिनों बाद तुम्हें यकायक इस पापी की याद कैसे आ गई! " उस आदमी ने काला कम्बल दूर किया और अपना चेहरा रोशनी की तरफ घुमाकर कहा, " हां, मैं भूतनाथ ही हूं, आप अच्छी तरह देखिये और पहचानिये, जरूर आपकी आंखें और साथ ही कान भी कमजोर हो रहे होंगे जो आपको मेरे यहां आने की आहट न लगी और न आपने मुझे देखा ही! " दारोगा साहब बोले, " तुम्हारी बातों में व्यंग्य की ध्वनि है मगर मुझे उसका बुरा नहीं लगा भूतनाथ! मुझ पर चारों तरफ से दोस्त, दुश्मन सभी की ओर से, इतने वाकबाण छोड़े गये हैं कि मेरा मन जर्जर हो गया है, अब तो मैं रात - दिन

भगवान से अपने पापों के लिए क्षमा मांगता हुआ यही प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे जल्दी - जल्दी इस दुनिया से उठा ले.

क्यां बताऊं, अगर आत्महत्या करना बड़ा भारी पाप न होता तो मैं वह भी कर गुजरता.

पर डरता हूं कि मुझ पापी की आत्मा जिसका सारा जीवन नारकीय कृत्यों में ही बीता, ऐसा करके कहीं और भी कष्ठ में न पड़ जाए.

आओ, इधर आओ, लो यह कम्बल लो और इस पर बैठकर तुम भी जो कुछ खरी - खोटी मुझे सुनाना चाहो सुना लो और विश्वास रखो कि तुम चाहे जो कुछ भी कहोगे मैं उसका जरा भी बुरा न मानूंगा, क्योंकी मैं उसी के योग्य हूं! " भूतनाथ खिलखिलाकर हंसा और तब दारोगा की तरफ बड़कर उसके बताये हुए कम्बल पर बैठता हुआ बोला, " बहुत खूब, दारोगा साहब, तारीफ करता हूं मैं आपकी! क्या सच्चे भाव से आपने ये बातें कहीं हैं! " दारोगा:

तुमको मुझे जो कुछ भी सुनाना हो सुना जाओ मगर अन्त में दया कर इतना जरूर बता देना कि तुम आजकल कहां छिपे हुए हो जो मेरी इतनी दफे की पुकार भी कारगर न हुई और जमानिया की इस मुसीबत के वक्त भी तुम मेरे काम न आ सके क्योंकि इस बात को मैं नहीं मान सकता कि मेरे सन्देशे तुम तक नहीं पहुंचे होंगे.

भूत:

जरूर पहुंचे थे और तभी तो मैं आया हूं, आने में जल्दी मैंने नहीं की और सो भी सिर्फ इसलिए कि शायद वैसा करने से आपके काम में विघ्न पड़ता.

आपको जरूर यह बात मालूम है कि आप ही की तरह मैं भी आजकल महात्मा और तपस्वी होने का ढोंग रचे हुए एक ऐसे स्थान पर विराज रहा हूं जहां इस समय यद्यपि अपनी सूरत में एक चेले को बैठा आया हूं फिर भी मेरा जल्दी लौट जाना जरूरी है क्योंकि तरह - तरह के लोग वहां आते रहते हैं, अस्तु इस समय भी मैं सिर्फ दो ही एक बातें आपसे पूछूंगा और फिर तुरन्त चला जाऊंगा.

दारोगा:

पूछो - पूछो, शौक से पूछो, मुझे सब बातों का सच - सच जबाब देने में जरा भी रुकावट करते न पाओगे.

भूत:

पहला सवाल तो मैं यह करूंगा कि क्या नन्हों आपके ही इशारे से मेरे पास आया और आपकी तथा दलीपशाह की चिट्ठियां मुझे दिखाया करती थी?

भूतनाथ समझता था कि यह सवाल सुनते ही दारोगा चौंक उठेगा मगर उसने जरा पलक तक न हिलाई और तुरन्त जबाब दिया, “ हां और नहीं तो क्या.

" उसके इस जवाब ने बल्कि उल्टा भूतनाथ को चौंका दिया और वह कुछ देर के लिए एक - सा गया जिसे लक्ष्य कर दारोगा फिर बोला, " और मुझे यह भी मालूम है कि तुम्हारे दो शागिर्दो ने उसे गिरफ्तार करके तुम्हारे ही किसी गुप्त स्थान में पहुंचा दिया है तथा वह भी तुम्हारा ही कोई शागिर्द था जो आखिरी दफे नन्हो का भेष धर के मेरे पास आया था.

" दारोगा की यह बात सुन भूतनाथ कुछ परेशान - सा हो गया मगर इस बात को उसने बड़ी खूबी से छिपाया और जरा - सा हंसकर कहा, “ अगर इन बातों की खबर आपको है तो फिर मेरा काम बहुत ही सरल हो गया मगर फिर मैं यह भी आशा करूंगा कि जैसे इस समय तक आपने साफ - साफ बातें कहीं हैं उसी तरह मेरे एक दूसरे सवाल का भी जवाब देंगे.

दारोगा:

उसे भी पूछ देखो.

भूत:

अपनी आखिरी चिट्ठी में दलीपशाह को आपका काम कर देने के लिए कौन चीज देने की लालच आपने दिखाई है?

दारोगा:

अगर वह चिट्ठी तुमने पड़ ली है तो तुम खुद ही समझ गये होगे.

भूत:

तो भी, मैं आप ही के मुंह से सुनना चाहता हूं.

दारोगा:

अच्छी बात है, तो सुन लो.

वह वही ' सोने का उल्लू है जो बड़ी मायारानी ने तुम्हें दिया था.

भूतनाथ इस बात को सुनकर कांप गया फिर भी उसने अपने पर खूब काबू रखा और बड़ी होशियारी से अपनी आवाज शान्त रखता हुआ बोला, " वह आपके कब्जे में कैसे आया?

" दारोगा:

(उसी शान्त भाव से, मगर जिसकी तेज निगाहों से भूतनाथ की बेचैनी छिपी न थी) एक ऐसे आदमी के जरिये जो तुम्हारा जाने - दुश्मन है, जिससे बढ़कर तुम्हारा बुरा चाहने वाला कोई नहीं है और जिसके जीते रहने का तुम्हें गुमान तक भी नहीं हो सकता.

भूत:

(घबराकर) वह कौन?

दारोगा:

रोहतासमठ का पुजारी.

न - जाने इस नाम में क्या असर था कि भूतनाथ इसे सुनते ही सन्न हो गया.

उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसकी आंखों के सामने उस वक्त का दृश्य घूम गया जबकि हड्डियों के अन्दर बहुत खोजने पर भी उसे अपनी चीज नहीं मिली थी और तिलिस्मी शैतान ने प्रकट होकर उससे कहा था कि - शिवगढ़ी की चाभी तो मैं ले जा ही रहा हूं, साथ ही भानुमति का पिटारा भी मेरे कब्जे में आ गया है.

उसके माथे में चार आ गया फिर भी बड़ी कोशिश से उसने अपने को काबू किया और दारोगा की तरफ देख जिसकी तेज निगाहें उसके चेहरे पर पड़ रही थीं यों कहा- भूत:

क्या आप सही कह रहे हैं और क्या आपकी बात का मैं यह मतलब लगाऊं कि वह अभी तक जीता है?

१.

देखिए भूतनाथ बीसवां भाग, दूसरा बयान.

दारोगा:

बेशक !! भूतनाथ का सिर नीचा हो गया और बहुत देर तक वह न जाने क्या सोचता रहा.

आखिर उसने आगे बढ़कर दारोगा का हाथ पकड़ लिया और गमगीन आवाज में उससे कहा, " दारोगा साहब, आप जिस तरह साफ - साफ ढंग से मुझसे बातें कर रहे हैं उससे मुझे विश्वास होता है कि मेरी तरफ से कम - से - कम इस समय किसी तरह का बुरा ख्याल आपके मन में नहीं है और आप मेरी उन बातों को सुनने और समझने को तैयार हैं जो यद्यपि बड़ी ही गुप्त हैं मगर फिर भी जिनका आपसे जिक्र कर देना मैं जरूरी समझता हूं, दारोगा ने यह सुन कहा, “ तुम्हें जो कुछ कहना हो खुले दिल से कहो मैं खुशी - खुशी सुनूंगा, मगर यह ख्याल रखो कि सवेरा होने में ज्यादा बिलम्ब नहीं है और उसके साथ - ही - साथ यहां उन कम्बख्त आदमियों की भीड़ लग जाएगी जिनसे मैं लाख कहता हूं कि मुझे अब जमानिया के राज या उसके काज में किसी तरह की कोई दिलचस्पी नहीं रह गई अस्तु तुम लोग मेरे पास आकर मुझे तंग न किया करो, फिर भी वे नहीं मानते और परेशान करते रहते हैं.

भूतनाथ ने यह सुन कहा, " मैं अपनी बातें बहुत जल्दी समाप्त करूंगा.

" और तब दारोगा की तरफ बड़कर धीरे - धीरे कुछ कहने लगा.

भूतनाथ की बातें काफी देर तक होती रहीं और इसके बाद दारोगा ने भी बहुत - सी बाते कहीं जिनका सिलसिला करीब घण्टे - भर तक जारी रहा.

इन बातों का तात्पर्य क्या था यह तो हम नहीं जानते फिर भी इतना जरूर कह सकते हैं कि दोनों ने दिल खोलकर बातें कीं और अन्त में दारोगा ने उठकर भूतनाथ को गले से लगाते हुए कहा, " बस अब मेरा दिल तुम्हारी तरफ से पूरी तरह साफ हो गया और मैं

तुम्हें खुशी - खुशी वह चीज देने को तैयार हूं जो मेरे पास अमानत के तौर पर रख दी गई है.

मगर याद रखना तुम्हें अपना वायदा पूरा करना होगा! " इसके जवाब में भूतनाथ ने दारोगा का काम पूरा करने की कसम खाई और तब दोनों आदमी उस कोठरी के बाहर निकले.

आगे - आगे दारोगा और पीछे - पीछे भूतनाथ उस उत्तर तरफ वाली कोठरी के पास पहुंचे जो बंद थी.

कमर से ताली निकालकर दारोगा ने कुंडे में लगा भारी ताला खोला और तब अन्दर जा और भूतनाथ को भी अपने साथ भीतर कर किबाड़ बन्द कर लिया.

इस छोटी कोठरी के चारों तरफ की दीवारों में छोटी - बड़ी कितनी ही आलमारियां बनी हुई थीं जिनमें से एक के पास दारोगा गया जिसके पल्ले लोहे के थे.

अपने गले के साथ लटकती हुई एक छोटी ताली से ताला खोल दारोगा ने उसके मुट्ठे पर हाथ रखा और भूतनाथ से कहा, “ लो, तुम्हारी बहुत ही प्यारी चीज तुम्हारे सामने आती है, होशियार हो जाओ! " दारोगा ने दोनों पल्ले खोलकर अलग किये और भूतनाथ को आगे बढ़ने का इशारा किया , मगर यह क्या?

आलमारी एकदम खाली थी और उसमें किसी तरह का सामान न था.

दारोगा के मुंह से यह देख ताज्जुब की एक चीख निकल गई और वह भौचक्का - सा होकर इधर - उधर देखने लगा.

भूतनाथ ने एक दफे उस खाली आलमारी की तरफ और दूसरी दफे दारोगा की तरफ देखा और तब बिना पूछे ही समझ लिया कि जिस चीज को उसको देने के लिए दारोगा यहां उसे लाया था वह कहीं गायब हो गई, वह दारोगा, को हटा खुद आगे बड़ा और गौर से उस आलमारी के अन्दर देखने लगा मगर वहां था ही क्या जो उसे दिखाई पड़ता हां, उसके निचले खाने में पड़े एक काले लिफाफे पर उसकी निगाह जरूर पड़ी जो वहां पड़ा हुआ था.

भूतनाथ के साथ - ही - साथ दारोगा ने भी लिफाफे को देखा और हाथों से दारोगा ने कागज निकालकर पड़ा तथा उसी के साथ भूतनाथ ने भी उसके मजमून पर निगाह डाली.

यह लिखा था) " दारोगा साहब, सलाम! मैं समझ गया कि आप कितने बड़े धूर्त और मक्कार हैं! मुझे धोखे में डाल भूतनाथ का काम करना और मुझे उसके फन्दे में फंसाना चाहते थे?

समझ लीजिये कि मैं आपके जाल में नहीं फंस सकता.

इस आलमारी के अन्दर जो कुछ आपने रखा हुआ था वह तो मैं ले ही चला.

साथ - ही - साथ यह भी समझ रखिये कि अब तीन दिन के भीतर आपको और आपके हिमायती भूतनाथ को दुनिया भर में बदनाम करके आप लोगों की सच्ची कलअई खोल दूंगा जिसके लिए आप दोनों अब तैयार हो रहिये.

आपका दोस्त दलीपशाह

दारोगा तो यह चिट्ठी पढ़ते ही बदहवासी के साथ जमीन पर बैठ गया मगर भूतनाथ ने उसके हाथ से वह कागज ले लिया और एक दफे पुनः गौर से पड़ा, इसके बाद उसी काले लिफाफे में रख उसने कपड़ों में छिपा लिया और तब गुस्से से दांत पीसता हुआ बिना दारोगा से कुछ भी कहे बल्कि उसे उसी तरह छोड़ वह कोठरी के बाहर निकल गया.

आधी रात का वक्त है.

घनघोर बदली छाई है और बिजली क्षण - क्षण में चमकती और कड़े - से - कड़े कलेजों को भी दहलाती हुई बता रही है कि बात की - बात में मूसलाधार पानी बरसना ही चाहता है.

दलीपशाह के आलीशान मकान के पिछवाड़े की तरफ पड़ने वाले बहुत बड़े बाग के एक कोने में, आम की कई बिगहों तक फैली घनी बारी के अन्त में और बांस के सघन कुंज से घिरा हुआ एक छोटा बंगला है जो इस कदर आड़ में पड़ता है कि यहां तक आ जाने पर भी उस पर यकायक किसी की निगाह नहीं पड़ सकती.

भूतनाथ की बेचारी इसी बंगले के अन्दर जिसमें छोटी - छोटी केवल दो - तीन कोठरियां और सामने एक बरामदा है, असली पहली स्त्री शान्ता का डेरा है.

दलीपशाह की स्त्री ने जो शान्ता की बहिन होती है उसे लाकर यहां रखा है और यहाँ वह दुनिया की निगाहों से छिपकर अपने पति की शुभ - कामना करती हुई इस तरह रहती है कि किसी को भी उसके होने की खबर नहीं है बल्कि उसकी जिद्द से लाचार होकर दुनिया में दलीपशाह को यह मशहूर करना पड़ा है कि वह मर गई.

ऐसी ही खबर भूतनाथ के भी कानों तक पहुंच चुकी है.

बाहर के बरामदे में दलीपशाह एक चौकी पर शमादान के आगे बैठे हुए कुछ लिख रहे हैं और भीतर कोठरी में उनकी स्त्री और शान्ता बैठी भोजन करती हुई साथ - साथ आपस में कुछ बातें भी करती जा रही हैं.

दलीपशाह का छोटा बच्चा शान्ता की गोद में है और शान्ता का छोटा लड़का, भूतनाथ की आखिरी सन्तान, बाहर एक खाट पर उस गहरी नींद में सोया हुआ है जो बहुत जल्द ही उसकी आखिरी नींद साबित होने वाली है.

दलीपशाह शायद भूतनाथ ही के संबंध में कोई बात लिख रहे हैं क्योंकि वह पीतल की सन्दूकड़ी जिसे देखने से भूतनाथ का खून सूखता है उनके सामने पड़ी हुई है और आस पास और भी बहुत - से कागज - पत्र फैले हुए हैं.

बिजली की एक गहरी चमक देख दलीपशाह ने अपनी कलम रोकी और भीतर की तरफ देखकर कहा, " बहिन शान्ता, अब पानी बरसना ही चाहता है.

लड़के का बाहर रहना ठीक नहीं, इसे तुम अन्दर ले जाओ और मैं भी बैठक में चलता हूँ साथ ही इस गठरी को भी लिये जाता हूं जिसके अन्दर भूतनाथ की किस्मत बन्द है, क्योंकि शेरसिंह ने वायदा किया है कि वह आज रात को श्यामजी को लेकर जरूर मेरे पास पहुंचेंगे.

उनके आते ही मैं उन दोनों को यहां ले आऊंगा और तुम्हारी आंखें अपने बहुत दिनों से बिछड़े हुए भाई को देखकर ठंडी होंगी.

मगर ठहरो, मालूम होता है वे दोनों आ पहुंचे, क्योंकि महाबीर दौड़ा हुआ मुझे कोई खबर देने चला आ रहा है.

सिर्फ इसी को मालूम है कि मैं इस समय यहां हूं! " अपनी जीवनी लिखता हुआ भूतनाथ यहां पर नोट लिखता है- " जितना बड़ा धोखा मुझे इस जगह उठाना पड़ा उतना जिन्दगी - भर में कहीं कभी भी उठाना न पड़ा था और सच तो यह है कि इसने मेरी जिन्दगी ही बर्बाद कर दी.

यह एक नाटक था जो हरामजादे दारोगा ने मुझे धोखा देने और दलीपशाह को मेरा दुश्मन बनाकर मेरे ही हाथों उसे चौपट करने के लिए रचा था क्योंकि चन्द्रकान्ता सन्तति के पड़ने वाले पाठक जानते हैं कि इसके बाद ही मैं दलीपशाह का जानी दुश्मन हो गया और उसे बर्बाद कर देने में कोई कसर न उठा रखी यहां तक कि अन्त में उसे गिरफ्तार कर दारोगा के हवाले कर ही दिया, पर असर में यहां पूरा जाल रचा गया था.

वह चिट्ठी जो उस काले लिफाफे के अन्दर मुझे मिली (जैसाकि हाल में दलीपशाह, इन्द्रदेव वगैरह से मिलने पर मालूम हुआ है) दलीपशाह के हाथ की लिखी हुई थी ही नहीं बल्कि खुद दारोगा ने जैपाल से लिखवाकर मुझे धोखा देने के लिए उस जगह रखी थी.

वास्तव में जैपाल ने दलीपशाह के अक्षर बड़ी खूबी से बनाये थे जिन्होंने मुझे पूरा धोखा दिया और सच तो यह है कि उस वक्त मैं अपनी गर्ज में अन्धा भी हो रहा था.

उस आलमारी में कुछ भी न था और दारोगा ने केवल मुझे फंसाने के लिए वह नाटक रचा था क्योंकि उस समय तक वह सोने का उल्लू किसी दूसरे ही शुभ हाथों में जा चुका था जहां उसकी असल जरूरत थी और जिसका हाल शायद आगे चलकर पाठकों को मालूम हो.

"

सचमुच ही एक नौजवान दौड़ता आ रहा था जिसने आते ही दलीपशाह से कहा, " गुरुजी, बड़ा गजब हो गया! भूतनाथ आया है और आपसे अभी मिलना चाहता है.

" दलीपशाह, जो कोई दूसरी ही खबर सुनने की उम्मीद में थे, यह समाचार सुन जरा - सा चौंके मगर तुरन्त ही हंसकर बोले, " अरे तो इसमें गजब क्या हुआ! चलो उसे बैठक

में बैठाओ मैं अभी आता हूं.

मगर देखो ख्याल रखना कि वे लोग अगर आवें जिनके बारे में मैंने कहा था तो उन्हें भूतनाथ के सामने न लाकर किसी दूसरी जगह बैठाना और मुझे खबर करना! " महावीर बोला, " जो हुम्म, मगर आप जरा जल्दी ही आइये क्योंकि वह न जाने क्यों पागल - सा हो रहा है और बड़े ही गुस्से में है! " उसे जाने को कह दलीपशाह औरतों की तरफ घूमें और कुछ हँस कर उनसे बोले, " मै जाऊँ और जरा देखकर आऊं यह पागल इस वक्त क्या करने आया है?

" शान्ता हाथ जोड़कर बोली, " लेकिन जो कुछ भी हो, उन पर दया रखियेगा, यही मेरी प्रार्थना है! " जिसे सुन दलीपशाह उठकर हंसे और तब इशारे से किवाड़ बन्द कर लेने को कहा क्योंकि उसी समय बिजली बड़े जोर से चमकी और उसकी रोशनी में उन्होंने किसी आदमी को काले कम्बल की घोघी लगाए आम की बारी में से निकलकर अपनी तरफ आते पाया.

यह आने वाला भूतनाथ था.

क्यांअजीब हालत हो रही थी इस समय भूतनाथ की! सिर और दाढ़ी - मूंछ के बाल बड़े - बड़े और वहशियों की तरह पर फैले तथा उलझे हुए.

आंखें लाल, बदन में सिर्फ एक लंगोटी लगाए, ऊपर से काला कम्बल ओड़े था जिस पर से गिरता हुआ पानी यह बता रहा था कि बाहर बारिश शुरू हो गई है.

दिल में यह निश्चय रूप से पहचान न सके क्योंकि उसके चेहरे पर एक छोटी - सी नकाब जिससे केवल उसका आधा ही चेहरा छिपा हुआ था, पड़ी थी.

इस नकाब और कम्बल पर खून के छीटे पड़े हुए थे और उसके हाथ में खून से तर एक खंजर था जिसे देखते ही दलीपशाह समझ गये कि वह जरूर पहरे पर के आदमियों को जख्मी करता हुआ यहां तक पहुंचा है.

मगर इसमें कोई शक नहीं कि दलीपशाह जीबट का आदमी था.

भूतनाथ की ऐसी हालत और उसके हाथ का खूनी खंजर देखकर भी वह जरा न डरा बल्कि उठकर खड़ा हो गया और डपटकर बोला, " कौन हो और किसलिए यहां आये

हो?

"

आने वाले ने इसका जवाब न दिया और सीधा उस गठरी की तरफ झुका जो दलीपशाह के आगे खुली पड़ी थी और जिसके कागज - पत्र सब तरफ फैले हुए थे मगर दलीपशाह ने उसी समय हाथ बढ़ा उसकी नक़ाब खींच ली और तब ताज्जुब से कहा, “ है! भूतनाथ तुम !! मगर यह तुम्हारी क्या हालत हो रही है?

" लेकिन भूतनाथ ने इसका कुछ भी जवाब न दिया.

उसके मुंह से अस्पष्ठ स्वरों में कोई बात निकली और वह नीचे की तरफ झुका जहां कागजों के बीच में चमकती हुई वह पीतल वाली सन्दुकड़ी दिखाई पड़ रही थी.

दलीपशाह की निगाह भी उधर ही को उठ गई और उस सन्दुक्रड़ी को देखते ही वह भूतनाथ का मतलब समझ गया.

हाथ बड़ाकर उसने भूतनाथ की कलाई पकड़ ली मगर भूतनाथ ने झटका देकर हाथ छुड़ा लिया और एक हाथ से वह सन्दूकड़ी उठाते हुए दूसरे से दलीपशाह पर खंजर का बार किया.

अगर दलीपशाह फुर्ती से अपने को बचा न लेते तो इसमें कोई शक नहीं कि खंजर की चोट खाकर बेतरह जख्मी हो जाते.

मगर पैंतरे के साथ पीछे हटकर उन्होंने अपने को बचा लिया और साथ ही अपनी कमर से खंजर निकालते हुए डपटकर बोले, “ खबरदार! यह मेरे जिगर का खून है जिसे तुम उठा रहे हो.

उसे लेने का इरादा मत करो! " भूतनाथ पागलों की तरह उठाकर हंसा और जल्दी - जल्दी उस सन्दूकड़ी को अपने कपड़ों में छिपाने लगा जिससे एक काला लिफाफा उसकी बगल से निकलकर जमीन पर गिर पड़ा.

भूतनाथ का ध्यान उस तरफ नहीं गया और सन्दूकड़ी ठिकाने से रख वह दलीपशाह की तरफ घूमकर बोला, " यह सन्दूकड़ी तो - जिसे तुम भानुमति का पिटारा कहा करते थे मेरे हाथ लग गई, अब तुम सीधे से मेरी दूसरी चीज, वह सोने का उल्लू भी दे दो जिसे

दारोगा साहब की आलमारी से चुरा लाये हो, नहीं याद रखो मैं तुम्हें कहीं का न छोड़ूंगा! " दलीपशाह चौंककर बोले, " तुम पागल हो गये हो क्या! किसने तुमसे .

.

.

?

मगर उनकी बात खत्म न हो सकी.

भूतनाथ, जो उस समय गुस्से में पागल हो रहा था और जो अपनी एक चीज वहां पर पा समझ गया था कि बाकी चीजें भी जरूर इसी के पास होंगी, डपटकर बोला, " मैं जानता हूं कि तुम सीधे से मानने वाले नहीं हो!

इसीलिए तो मैं खुद यहां पहुंचा हूं.

(खाट की तरफ देखकर) यह तुम्हारा बच्चा है न !! (अपना खंजर उसके कलेजे पर रखकर) अभी - अभी वह सोने का उल्लू मुझे दो और साथ ही रिक्तगंथ भी मेरे हवाले करो नहीं तो याद रखो मेरे हाथ का खंजर अभी तुम्हारे बच्चे को यमलोक भेज देगा! " दलीपशाहू हंसकर बोले, " भूतनाथ, पागल मत बनो.

किसने तुमसे कह दिया कि ये सब चीजें मेरे पास हैं?

तुम व्यर्थ मुझ पर उनके चुराने का इल्जाम लगा रहे हो.

विश्वास रखो कि मेरे पास वे चीजें नहीं हैं और साथ ही यह भी समझ रखो कि वह लड़का जिसे तुम.

" मगर भूतनाथ सचमुच ही पागल हो रहा था.

उसने दलीपशाह की बातों पर कान न दिया और गुस्से से गरजकर कहा, ' नहीं दोगे तुम मेरी चीज! अच्छा, तो.

" एक हल्की पतली चीख जो तुरन्त ही खत्म हो गई, हवा में फैली और भूतनाथ का खंजर उस मासूम बच्चे के कलेजे के पार हो गया! दलीपशाह की आंखों से खून टपक पड़ा और गले से कलेजा दहला देने वाली भयानक चीख निकली.

वे झपटकर आगे बड़े और खंजर का एक भरपूर हाथ इस जोर से भूतनाथ पर चलाया कि अगर कहीं ठिकाने पड़ गया होता तो भूतनाथ के दो टुकड़े नजर आते, पर वह चौंककर काबा काटता हुआ अलग हो गया और बोला, " अपने लड़के की हालत देखो और याद रखो कि भूतनाथ से दुश्मनी करने का नतीजा क्या होता है !! अभी तो यह श्रीगणेश है, अभी देखो मैं क्या करता हूं और तुम्हें किस तरह जहन्नुम में पहुंचाता हूं! " भूतनाथ न - मालूम और भी क्या - क्या बकता पर उसका ध्यान यकायक बंट गया जब उसने देखा कि दलीपशाह के कई नौकर - चाकर और शागिर्द हाथों में नंगी तलवारें और मशालें लिए हुए इधर ही को आ रहे हैं.

उन पर निगाह पड़ते ही वह पीछे हटा.

दलीपशाह क्या कह रहा है इस पर उसने कुछ भी गौर न किया , झपटकर एक छलांग में वह बरामदे के नीचे उतर गया और तब उस आम की घनी बारी में घुसकर बात - की - बात में आंखों की ओट हो गया.

ओफ, भूतनाथ! यह तूने क्या किया ! एक निःसहाय, कोमल अबोध बालक का इस तरह खून करते हुए भी तुझे दया न आई?

और वह भी कौन, खुद तेरा लड़का! हमने माना कि उस समय तू दारोगा का बटकाया हुआ और अन्धा हो रहा था, गुस्से ने तेरी आंखों पर पर्दा डाल दिया था और तू नहीं जानता कि वह बच्चा तेरा ही है, फिर भी क्या ऐसा करना तुझे मुनासिब था! क्या ऐसे - ऐसे काम करता हुआ तू समझता है कि अपने को लेकनाम बना सकेगा?

या सोचता है कि अपनी बदनामी को छिपा सकेगा?

विचारता है कि इस दुनिया में सुख और प्रसन्नता का भागी होगा?

नहीं.

अगर तू ऐसा समझता है तो तेरी गलती है और तू बहुत जल्द अपनी भूल का फल भोगेगा! तू दर - दर की ठोकर खायेगा, गली के कुत्तों को भी तेरी हालत पर तरस होगा और नरक में जाकर तेरी आत्मा को तड़पते हुए युग बीतेंगे! नेकनामी का, अपनी बदकारियों को छिपाने का, रास्ता दूसरा ही है, यह नहीं है जो तूने अख्तियार किया है.

खैर मर्जी तेरी, तू समझ या न समझ!

ग्यारहवां ब्यान।

दोपहर का समय है.

एक घने और भयानक जंगल में जहां इस समय भी सूर्य की रोशनी को जमीन तक पहुंचने में मुश्किल हो रही है, पत्थर की चट्टान पर एक साधु सुस्त और उदास चुपचाप बैठा हुआ कुछ सोच रहा है.

यह साधु कौन है?

इसकी सूरत तो पहचानी हुई - सी जान पड़ती है और यह स्थान भी कुछ परिचित - सा नजर आता है ।

हां, ठीक है, यह तो वही जगह है जहां फलगू के बीच, अखण्डनाथ बाबाजी के टीले पर से, उनकी ' गुफा ' के अन्दर से आई हुई सुरंग निकलती है.

देखिए बह एक भयानक गुफा का जंगली लता - पत्तों से दबा हुआ मुहाना नजर भी आ रहा है और ये साधु भी तो वे ही अखण्डनाथ बाबाजी ही हैं, जिनकी सूरत बना हुआ भूतनाथ उस टीले पर निवास कर रहा है.

तब क्या यह भूतनाथ ही है?

नहीं - नहीं, वह तो देखिए सामने अपनी असली सूरत में चला आ रहा है और जल्दी - जल्दी कदम उठा रहा है, फिर यह साधु कौन है?

" अब तो बड़ी देर हो गई! मुझे अपने स्थान पर वापस जाना जरूरी है, नहीं लोगों को शक होगा! जान पड़ता है आज भी गुरुजी नहीं आयेंगे! ' कहते हुए बेचैनी के साथ उस साधु ने अपने चारों तरफ देखा और तुरन्त उठ खड़ा हुआ क्योंकि उसी समय उसकी निगाह पेड़ों के झुरमुट के बीच में से निकलते हुए भूतनाथ पर पड़ गई.

देखते ही वह चौंका और तेजी से उस तरफ बढ़ा, आगे जाकर उसके पैरों पर गिरता हुआ बोला, " गुरुजी, आप कहां हैं और क्या कर रहे हैं?

हफ्तों से हम लोग बड़ी बेचैनी के साथ आपकी राह देख रहे हैं, आखिर आप कहां थे और क्या कर रहे थे! " भूतनाथ ने बड़े प्रेम से उसे उठाते हुए कहा, " उठो रामेश्वरचन्द्र उठो! सचमुच मैं बहुत दिनों तक गायब रह गया और तुम लोगों से भेंट तक न कर सका.

मगर इस बीच में मैंने अपने दुश्मनों से पूरा बदला लिया और इस समय एक ऐसा काम करता चला आ रहा हूं कि सुनोगे तो खुश हो जाओगे.

उठो और बताओ कि मेरी कुटिया में तो सब ठीक - ठाक है न! तुम मेरी सूरत बने आराम से तो हो?

किसी को इसका पता तो नहीं लगा कि भूतनाथ कहीं और चला गया और अपनी जगह रामेश्वरचन्द्र को अखण्डनाथ बाबाजी की सूरत बनाकर छोड़ गया है?

" रामेश्वरचन्द्र उठा मगर उसके चेहरे का उदासी का भाव दूर न हुआ.

वह उसी स्वर में बोला, " जी नहीं, इसका पता तो किसी को नहीं लगा मगर हम लोग यह जानने को परेशान हैं कि इधर की खबरें भी आपको लगीं या नहीं?

" भूत:

(पत्थर की चट्टान की तरफ बढ़ता हुआ) कौन - सी खबर?

आओ यहां बैठो और बताओ कि तुम लोग क्यों परेशान हो तथा यह भी कहो कि आज इस जगह में तुम्हें क्यों देख रहा हूं क्योंकि मैं तो समझता था कि तुम कुटिया में होगे और इसीलिए गुफा की राह वहीं पहुंचने की नीयत से इधर आया था.

रामे:

(भूतनाथ के सामने बैठता हुआ) वह सब हाल मैं आपको सुनाऊंगा, पहले यह बताइए कि आपने क्या किया और इस समय आपके चेहरे से जो प्रसन्नता जाहिर हो रही है उसका कारण क्या है?

भूत:

सचमुच इस समय मुझ - सा सुखी कोई न होगा! दलीपशाह से मैंने जिस तरह बदला लिया और अन्त में जैसे उसे जहन्नुम में पहुंचा दिया वह तो तुमने सुना ही होगा, अब यह भी देख लो कि मैं क्या सौगात तुम लोगों के लिए लाया हूं.

'

भूतनाथ ने अपने कपड़ों के अन्दर से एक किताब निकालकर रामेश्वरचन्द्र के सामने रख दी जिसने उसे उलट - पुलटकर देखा और तब पूछा, " यह क्या चीज है?

" भूत ०:

यह तिलिस्म की चाभी है.

इस किताब में शिवगड़ी के तिलिस्म का पूरा हाल लिखा हुआ है और इसकी मदद से हम लोग उसे तोड़कर वहां के पूरे खजाने के मालिक बन जायेंगे.

बस, अब तुम हम लोगों के मुसीबत के दिन दूर हो गए ही समझो क्योंकि शिवगढ़ी के अन्दर इतना भारी खजाना बन्द है कि जिसे एक - दो आदमी तो क्या सैकड़ों आदमी उम्र भर बेकदरी के साथ लुटाते हुए भी खर्च नहीं कर सकते और मैं तुम लोगों को बहुत जल्द इतना मालदार कर दूंगा कि जितना तुमने कभी सपने में भी न सोचा होगा.

मगर भूतनाथ की इस खुशी - भरी बातों ने भी रामेश्वरचन्द्र के दिल की कली न खिलाई, उसके चेहरे पर कोई रौनक दिखाई न पड़ी उसने साधारण भाव से पूछा, " मगर यह किताब तो आपके किसी दुश्मन के हाथ न लग गई थी?

आपको कैसे मिली?

और आपने मुझसे एक बार कहा था कि बिना दो तिलिस्मी किताबें हुए वह तिलिस्म खोला नहीं जा सकता, तो अब सिर्फ इस किताब की मदद से आप कैसे उस तिलिस्म को खोल और मालदार बन सकेंगे?

" भूत:

यह किताब वही है जो मैंने जमानियाँ की बड़ी महारानी से पाई थी.

यह सोने के एक जड़ाऊ खिलौने के अन्दर बन्द थी और इसे मैं एक तिलिस्मी कुंए के अन्दर हड्डियों के ढेर के पीछे छिपाये हुए था जहां से मेरे पुराने दुश्मन रोहतासमठ के पुजारी ने इसे निकाल लिया था.

उसके हाथ से यह दारोगा साहब के पास पहुंची और उनके कब्जे से इसे दलीपशाह ले गया जिसके मन में बहुत दिनों से तिलिस्मी खजाना पाने की लालच लगी हुई थी.

मैंने दारोगा साहब की मदद से दलीपशाह को मटियामेट कर दिया और उसी के सामानों में यह किताब मुझे मिली, वह दूसरी किताब रिक्तगंथ भी जिसे मैं बड़ी मुश्किल से राजा वीरेन्द्रसिंह के महल से निकालकर लाया था और जिसे दलीपशाह चुरा ले गया था अब मेरे कब्जे में आना ही चाहती है क्योंकि मुझे उसका पूरा - पूरा पता लग चुका है.

रामे:

और वह सोने का उल्लू कहां है जिसके अन्दर यह पुस्तक बन्द थी?

" वह भी तुम्हारे सामने बैठा है.

यह तेज आवाज जो कहीं पास ही से आई थी चारों तरफ गूंज उठी और इसने भूतनाथ और रामेश्वरचन्द्र दोनों ही को चौंका दिया.

भूतनाथ को किसी दुश्मन का ख्याल हुआ.

उसका हाथ खंजर की मूठ पर चला गया और उसने चारों तरफ देखते हुए पूछा, “ यह कौन बोला?

" जबाब मिला- " मैं, जो तुम्हारी बगल ही में खड़ा हूं मगर तुम मुझे देख नहीं सकते! ऐ रामेश्वरचन्द्र, तुम किस शैतान के फेर में पड़े हुए हो जो तुम्हें भी नष्ट करेगा और खुद तो नष्ठ हो ही चुका है! सचमुच यह उल्लू है, सोने का उल्लू और सोने के लिए उल्लू! जिसने इसे माल दिया उसने इससे जो चाहा सो करा लिया और रुपये के लिए इससे जो कुछ बना सो इसने किया ! भूतनाथ, क्या तू समझता है कि दारोगा से तूने असली किताब पाई है !! नहीं, उसने तुझे चकमा देकर बेवकूफ बनाया और अपना काम निकालकर एक छोटी चीज तेरे हाथ में पकड़ा दी है, देख तेरी असली चीज यह मेरे पास

है. यकायक एक पटाखे की - सी आवाज आई और इन लोगों के एक बगल ढेर सा धुआं सब तरफ फैल गया जिसने हल्का होकर तिलिस्मी शैतान की सूरत पैदा कर दी.

इस आसेब को हमारे पाठक कई बार पहले भी देख चुके हैं अस्तु इस जगह उसका परिचय या नखसिख बयान करने की जरूरत नहीं है.

इस तिलिस्मी सूरत को देख दोनों ही आदमी घबरा उठें मगर उसी समय भूतनाथ ने उसके हाथों में कोई ऐसी चीज देखी जिसने उसके डर को गुस्से में बदल दिया.

यह वही सोने का जड़ाऊ उल्लू था जो भूतनाथ के कब्जे से निकल गया था और जिसे वह समझता था कि दलीपशाह ने चुरा लिया है मगर इस जगह उसे उन्हीं हाथों में देख जिसने पहले उसे ले लिया था वह अपने को रोक न सका और खंजर निकालकर उस तरफ बड़ा.

मगर उस शैतान ने उसी समय डांटकर कहा, " बस खबरदार! जहां हो उसी जगह बने रहो, नहीं तो मैं अभी बात - की - बात में तुम्हें भस्म कर दूंगा.

तुमने क्या मुझे भी दलीपशाह समझा हुआ है?

और देखो, जरा इसे भी तो देखो.

"

तिलिस्मी शैतान ने उस उल्लू के दोनों जड़ाऊ पंख खींचे जिससे वे बाहर की तरफ फैल गये और उसके भीतर छोटी - सी एक जगह नजर आने लगी जिसमें हाथ डाल कोई किताब शैतान ने बाहर निकाली और भूतनाथ को दिखाकर बोला, " देखो, असली चाभी यह है! वह नहीं जिसे बेईमान दारोगा से तुमने पाया और जिसके लिए दलीपशाह का लड़का नहीं, तुम्हारा ही लड़का था जिसका तुमने उस भयावनी रात को खून किया .

तुम्हारी शान्ता मरी नहीं थी बल्कि अपनी इज्जत बचाने के लिए छिपकर दलीपशाह के यहां रहती थी.

मगर अफसोस, दौलत की लालच में तुमने उसकी आंखों के सामने उसके और अपने लड़के का खून किया और इस तरह दोहरे पाप के भागी बने क्योंकि इस सदमें को वह

बर्दाश्त न कर सकी और उसी जगह अपने लड़के की लाश पर ही अपना दम तोड़ दिया.

" भूतनाथ चौक गया, उसका चेहरा पीला पड़ गया और बदन में कंपकंपी आ गई.

उसने डर और घबराहट से भरी आंखें रामेश्वरचन्द्र की तरफ उठाईं जिसने उसकी तरफ देख अपना सिर नीचा कर लिया, भूतनाथ ने फिर तिलिस्मी शैतान की तरफ निगाह् घुमाई मगर इसी बीच में वह - न - जाने कहां गायब हो चुका था.

पागलों की तरह पुनः रामेश्वरचन्द्र की तरफ घूमकर भूतनाथ ने उसका हाथ पकड़ लिया और पूछा, " यह क्या कह गया, यह क्या कह गया! क्या यह बात सही है?

" रामेश्वरचन्द्र ने सिर नीचा करके जबाब दिया- " जी हां, बिल्कुल सही! " धोखे में हो या जान - बूझकर, आपने अपने हाथ से अपने ही लड़के की जान ली और अपनी सती - साध्वी बेचारी असली स्त्री की भी जान के ग्राहक बने! मैं यह बात आपसे कहने वाला था मगर एक तो मौका न मिला दूसरे मैंने सोचा कि शायद आपको इसकी खबर हो! " भूतनाथ ने सुनते ही अपने माथे पर हाथ मारा और उसी जगह जमीन पर गिर गया.

थोड़ी देर तक वह पागलों की तरह इधर - उधर देखता रहा मगर फिर बोला- " नहीं - नहीं, ऐसा नहीं हो सकता! तुम्हें धोखा हुआ है रामेश्वरचन्द्र और या फिर तुम मेरे साथ दुश्मनी कर रह हो जो मेरी आत्मा को क्लेश पहुंचाने की नीयत से ऐसी बदखबर मुझे सुना रहे हो.

!!

अफसोस के साथ रामेश्वरचन्द्र बोला, " जी नहीं, मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूं और इसका यह सबूत भी मेरे पास मौजूद है! " इतना कह उसने एक चिट्ठी अपने पास से निकाली और भूतनाथ की तरफ बढ़ाकर फिर सिर नीचा कर लिया.

कांपते हुए हाथों में वह कागज पकड़ भूतनाथ उसे जल्दी पड़ गया और तब एक चीख मारकर उसी जगह बेहोश होकर गिर पड़ा, रामेश्वरचन्द्र खुद भी कुछ देर तक उसी जगह बैठा रह गया मगर आखिर वह उठा और भूतनाथ को होश में लाने की कोशिश करने लगा.

बड़ी कोशिश के बाद मुश्किल से किसी तरह वह होश में आया मगर उसकी अवस्था एकदम पागलों की - सी हो रही थी और वह उसी तरह जमीन पर पड़ा आंसू गिराता हुआ न जाने क्या बकने लगा.

" हाय, क्या अन्त में आज मेरा इस दुनिया में यही परिणाम होना था! क्या अपने लड़के का खून मुझे अपने ही हाथों करना बदा था! क्या मेरी स्त्री की मौत मेरे ही कारण लिखी थी! इस दुनिया में सुख और धन की खोज करने जाकर मुझे क्या यही मिलने को था! ओफ, इतने दिनों की मेहनत का नतीजा क्या यही हुआ! " हाय, अब तक मैंने क्या - क्या न किया ! कौन - कौन से पाप मेरे हाथों से न हुए! अपने प्यारे से प्यारे दोस्तों का खून मेरे हाथों ने किया

अपने भक्त शिष्यों का खून मैंने किया , अपने मालिक को धोखा मैंने दिया, अपने रिश्तेदारों के साथ बेईमानी मैंने की! क्या - क्या नहीं किया?

सब कुछ किया! इस दुनिया में रुपये और सुख की खोज में बुरे - से - बुरे काम जो कुछ हो सकते थे वह मैंने किये, मगर उनका नतीजा क्या निकला?

यही कि अपनी स्त्री और लड़के की हत्या मेरे हाथों से क्यांइससे बढ़कर भी और कुछ पाप हो सकता है?

इसी तरह की न - जाने कितनी ही बातें बहुत देर तक भूतनाथ बकता रहा.

उसकी आंखों से चौधारे आंसू बह रहे थे और उसकी हालत त्रासदायक हो रही थी.

रामेश्वरचन्द्र चुपचाप बैठा उसकी हालत पर अफसोस कर रहा था पर उसकी हिम्मत न पड़ती थी कि उसे कुछ समझाये या कहे.

मगर यकायक भूतनाथ चुप हो गया.

किसी तरह के एक नये ख्याल ने उसके मन में उठकर उसके आंसू सुखा दिये और वह कुछ और ही सोचने लग गया.

जमीन पर पड़ा था सो उठकर बैठ गया.

कुछ देर तक किसी गहरी चिन्ता में पड़ा रहा और तब हाथ मारकर बोला, “ बस अब यही करना मुनासिब है, यही एक रास्ता अब मेरे लिए रह गया है.

जल्दी - जल्दी भूतनाथ ने अपने कपड़े उतारे, ऐयारी का बटुआ कमर से खोल कर रख दिया, खंजर निकालकर एक बगल रख दिया, वह तिलिस्मी किताब सामने रख दी और कितनी ही दूसरी चीजें भी जो बदन पर जगह - ब - जगह छिपाये रखता था निकालकर सामने रखी.

इसके बाद वह रामेश्वरचन्द्र से बोला, ' देखो रामेश्वरचन्द्र, तुम मेरे सबसे पुराने और सबसे विश्वासी शिष्य हो! तुमसे मैंने कभी कोई बात नहीं छिपाई, मेरा - गुप्त प्रकट सभी भेद तुम्हें रत्ती - रत्ती मालूम है और अब तक बुरा - भला जो कुछ मैंने किया वह भी तुम सब जानते हो.

यह आखिरी पाप जो मेरे हाथ से हुआ है मेरे जीवन का घातक सिद्ध होगा.

अब मेरी इस दुनिया में रहने की जरा भी इच्छा नहीं अब, आज के बाद, कोई मुझे न देखेगा क्योंकि मैंने दुनिया से उठ जाने का निश्चय कर लिया, अस्तु मुझे अब जो कुछ कहना है वह सुन लो और जो कुछ देना है वह ले लो.

देखो, यह तो एक तिलिस्मी किताब है जो कमीने दारोगा ने मुझे दी है, यद्यपि अब मुझे मालूम हो गया कि वह असली चीज नहीं है जिसकी मुझे खोज थी फिर भी मैं इतना कह सकता हूं कि इसमें बहुत कुछ हाल तिलिस्म का जरूर लिखा हुआ है.

इससे जो काम लेना चाहो तुम लेना.

यह मेरा ऐयारी का बटुआ है.

इसमें तरह - तरह की बहुत ही बेशकीमती दवाइयां जिनके लिए और ऐयार बरसों टक्कर मारा करते हैं और नहीं पा सकते मौजूद हैं और बहुत कुछ दौलत भी इसके अन्दर है जो सब कुछ मैं तुम्हें देता हूं.

इसके अन्दर और भी एक कीमती चीज है जिसे पाकर तुम बहुत खुश होगे, उसके भी तुम्ही योग्य हो और वह भी मैं तुम्हीं को देता हूं रह गये ये कागज - पत्र, इन्हें तुम सम्हालकर उठा लो और जितना सम्भव हो इन्द्रदेव के पास पहुंचा दो क्योंकि इनमें कई बहुत गहरे - गहरे भेद भरे हैं जिनके जानने के लिए वे ही हकदार रह जाते हैं.

तुमसे अगर हो सके तो इसी अखण्डनाथ बाबाजी के भेष में उसी कुटिया में रहना, नहीं, जहां चाहे रम जाना.

मेरी स्त्री, नानक की मां, दुष्टों के फेर में पड़ गई हैं, मालूम नहीं जीती भी है या मर गई और तीसरी स्त्री श्यामा के पास रुपये - पैसे की कोई कमी नहीं है.

अस्तु इन दोनो की फिक्र करने की तुम्हें जरूरत नहीं, बस सिर्फ हनामसिंह, कमला और नानक बच जाते हैं, तुमसे अगर बन सके तो इन पर निगाह रखना नहीं तो फिर जो इनकी किस्मत में बदा होगा सो तो होगा ही.

बस अब दो - एक बात तुमसे और कहकर मैं रुखसत होता हूं.

भूतनाथ ने कुछ बातें और भी रामेश्वरचन्द्र से कहीं और तब उठ खड़ा हुआ.

अपनी कमन्द उसने हाथ में उठा ली और रामेश्वरचन्द्र को भरपूर छाती से लगाने के बाद चट्टान से उतर एक तरफ का रास्ता पकड़ा रामेश्वरचन्द्र उसके साथ चला मगर उसने डांटकर कहा, " खबरदार, जहां हो वहीं रहो और मेरा पीछा करने या मुझको पलटा लाने की कोशिश मत करो.

' लाचार रामेश्वरचन्द्र को वहीं रुक जाना पड़ा और भूतनाथ घने जंगल में घुस बात - की - बात में आंखों की ओट हो गया.

रामेश्वरचन्द्र उसी चट्टान पर बैठा तरह - तरह की बातें सोचने लगा.

अपने गुरु की अवस्था पर ध्यान दे उसका कलेजा मुँह को आ रहा था और बार - बार आंसू आंखों में भर आते थे.

बड़ी देर तक वह उसी तरह बैठा रह गया और न जाने कब तक बैठा रहता अगर किसी के ये शब्द उसके कान में न पड़ते " क्यों जी रामेश्वर, भूतनाथ कहां गया?

"

रामेश्वरचन्द्र ने चौंककर सिर उठाया और देखा कि भूतनाथ के गुरुभाई शेरसिंह, जिन्हें वह अच्छी तरह पहचानता था.

उसके सामने खड़े हैं.

इन्हें देखते ही वह घबराकर उठा और उनके पैरों पर गिरकर आंसू बहाता हुआ बोला, " चाचाजी, गुरुजी तो अपनी जान देने की प्रतिज्ञा करके कहीं चले गये.

" शेरसिंह चौंककर बोले, “ हैं! भूतनाथ जान दे देने की प्रतिज्ञा करके कहीं चला गया! सो क्यों?

और तुम यहाँ बैठे क्या कर रहे हो जो उसे इस ख्याल से रोकने की कोई कोशिश तुमने नहीं की! " रामेश्वर बोला, " मैंने बहुत कुछ समझाया मगर उन्होंने डांटकर मेरा मुंह बन्द कर दिया और मैं लाचार हो गया.

" रामेश्वर ने उस दु:खदायी घटना का हाल कहना चाहा जिसके कारण भूतनाथ को ऐसा निश्चय करना पड़ा था, शेरसिंह उसे रोककर बोले, " रहने दो वह सब हाल मुझे मालूम है, उसे कहने की जरूरत नहीं तुम उठो और मेरे साथ चलकर खोजो कि वह आखिर गया किधर?

" शेरसिंह की आज्ञानुसार रामेश्वरचन्द्र ने वहां फैला हुआ सब सामान उठा लिया और तब दोनों आदमी जंगल में घुसे.

१.

भूतनाथ यहां पर लिखता है- " मेरा पूरा हाल जानने वालों को बताना नहीं पड़ेगा कि मेरी यह मौत नकली थी.

इसमें कोई शक नहीं कि अपने लड़के को अपने ही हाथ से मारने की खबर सुन मुझे बहुत बड़ा धक्का लगा था.

पर मैंने उस पर जो निश्चय किया था वह यह न था कि अपनी जान दे बल्कि यह था कि जिन लोगों के सबब से ऐसा हुआ उन्हें पूरी - पूरी सजा दूं, मेरे यहाँ इस कुटिया पर साधु भेष में रहने का हाल कुछ खास - खास आदमियों को मालूम हो चुका था इसलिए उन्हें भी धोखे में डालने और पूरी तरह से छिपकर अपनी कार्रवाई कर सकने के लिए मैंने यह आत्मा हत्या का नाटक रचा था जिसके बारे में शुरू से अब तक मेरा यही ख्याल रहा है कि वह कायर और डरपोक लोगों का रास्ता है.

मगर मुझे अफसोस है तो यही कि इस जगह मेरी इस नकली मौत ने, शेरसिंह वगैरह मेरे कुछ सच्चे हितेशुओं को भी धोखे में डाल दिया और उन्हें थोड़े समय की तकलीफ दी क्योंकि इस समय शेरसिंह की समझ में मैंने सचमुच ही जान दे दी और यही खबर उन्होंने मेरी स्त्री और दोस्तों को दी.

"

ज्यादा दूर जाने की जरूरत न पड़ी.

वहां से कुछ ही दूर पूरब में जाकर एक तराई पड़ती थी जहां से एक पहाड़ी नदी घनघोर शब्द के साथ तीचे को गिरती हुई बड़ा भयानक दृश्य दिखला रही थी.

इस जगह पहुंचते ही रामेश्वरचन्द्र ठिठका और तब शेरसिंह को भी रोक उसने उंगली से सामने की तरफ इशारा किया.

यहां पर इनके ठीक सामने ही, कगार के किनारे पर के एक बहुत ही पुराने पीपल के पेड़ की डाल से बंधी लम्बी कमन्द के दूसरे सिरे के साथ उस जगह से पुरसों नीचे की तरफ लटकती हुई एक लाश हवा में झूल रही थी जिसे देखते ही शेरसिंह चौंक पड़े और बोले, " हैं, क्या यह भूतनाथ है?

हाय - हाय मालूम होता है, इस पेड़ के साथ अपनी कमन्द बांध और दूसरा सिरा फन्दे की तरह अपने गले में डाल भूतनाथ पहाड़ से नीचे कूद पड़ा है और इस तरह पर उसने आत्महत्या कर ली है.

" हाय - हाय प्यारे गदाधरसिंह, क्या अन्त में तेरी यही दशा होने की थी! " दोनों आदमी उस पीपल की तरफ झपटे पर उसी समय उन्होंने देखा कि कमन्द जिसकी गांठ शायद ढीली पड़ गई थी डाल से खुल गई और अपने साथ लटकती लाश को लिए पचासों पुरसा नीचे जाकर नदी के अतल तल में समा गई, शेरसिंह ने दोनों हाथों से अपना सिर पीट लिया और वहीं जमीन पर गिर आंसू बहाने लगे.

रामेश्वरचन्द्र ने भी उनका साथ दिया.

।

।

समाप्त।

Edit by Sanjeev Kumar

E-Mail ID: meetwithstar@gmail.com

भूतनाथ -७